[illegible]

Registered No. B 288.

नियमावली ।

[१] इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य [डा]क डाकव्ययसहित केवल २) [र]क्खा गया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटा-ने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है ।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है ।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छ-पेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रो-त्तरके लिये जवाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
मोरेना (ग्वालियर) ।

ॐ जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

वर्ष ८ वां] कार्तिकशुक्ला २ संवत् १९६३ विक्रमाब्द । ता० १९ अक्टूबर सन् १९०६ईस्वी । [अंक १ला ।

जैनमित्रके फाइल ।

सप्तमं वर्षके थोडेसे फाइल हमारे पास मौजूद हैं । हम उन्हें जल्दी बेचना चाहते है, इस लिये इस समय बहुत थोड़ी कीमतमें ग्राहकोंको मिल जावेंगे । देर करनेसे दूनी कीमतमें भी नहीं मिल सकेंगे । जैनमित्रके सप्तम वर्षमे कैसे २ बढ़ियां लेख छपे हैं, सो किसीसे भी छुपे नहीं हैं । हिन्दीके किसी भी जैनपत्रमें आज तक ऐसे बढ़िया संग्रह करने लायक लेख नहीं छपे हैं । समाचार और थोडेसे समाज सम्बन्धी लेखोंके सिवाय बाकी सब ही लेख हमेशा पढने योग्य और कामके है । इसके सिवाय जैनसिद्धान्तके १० फार्म और सुशीला उपन्यासका पूर्वार्द्ध (१० फार्म) भी उसके साथ मिलते हैं, जिन दोनोंकी कीमत प्रथक् छपने पर कमसे कम १।) रु० होगी । ऐसे उत्तम फाइलको दिसम्बर महीनेके अखीर तक हम सिर्फ १॥) में ही देना चाहते हैं, जिल्द सहित मंगाने वालेको १॥।) लेंगेगे और भी सुभीता यह है कि, डाकखर्च हम अपना लगा देंगे ।

सुशीला उपन्यास

प्रथम भाग ।

रायलके बड़े २ अस्सी पेजोंका बहुत बढ़ियां उपन्यास जिससे कि मनोविनोदके सिवाय धार्मिक शिक्षायें भी मिलती हैं, तयार है । एक बार पढ़ना शुरू करनेसे फिर छोड़नेको जी नहीं चाहता है, मूल्य सर्व साधारणसे दश आना जैनमित्रके ग्राह-कोंसे आठ आना । डांक खर्च माफ ।

नमूनेका अंक ।

जिन महाशयोंके पास हमारा यह अंक पहुंचै उन्हें चाहिये कि, एक कार्डके जरिये ग्राहक श्रेणीमे अपना नाम लिखनेकी सूचना हमको दे देवें । अन्य-था दूसरा अंक उनके पास विना मगाया नहीं भेजा जावेगा । जो महाशय ग्राहक नहीं होना चाहें, वे भी कृपा करके सूचना दे देवें ।

ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा !

विज्ञापन छपानेवालोंको और बँटानेवालोंको ।

——:o:——

अबकी वार हमने जैनियोंके अतिरिक्त सर्व सा-धारण लोगोंके भी विज्ञापन छापने और बांटनेका बन्दोबस्त किया है । और बहुत थोडा चार्ज लेकर किया हैं । सिर्फ इस साइजके तीन पेजके विज्ञा-पनोंके लिये हमारे पास जगह है, इस लिये विज्ञा-पन छपानेवालोंको शीघ्रता करनी चाहिये । प्राय: पूरे वर्ष भरके लिये हम ऐसे विज्ञापनोंका ठेका करेंगे, इसलिये जगह भर जानेपर फिर गुंजाइश न रहेगी । जैनियोंमें हमारे पत्रका प्रचार बहुलतासे है, जिससे विज्ञापनवालोंको फायदा भी खूब होगा । विज्ञापन बँटानेवालोंको "जैनमित्र अंक अमुकका क्रोडपत्र" छपानेके सिवाय कमसे कम एक कालिम समाचार भी अपने विज्ञापनोंमें छपाना होगा । अ-श्लील विज्ञापन न तो इस पत्रमें छपेंगे और न बँटेंगे । विज्ञापन छपाने बटानेकी दर पत्रद्वारा तय करनी चाहिये ।

पत्रव्यवहार इस पतेसे कीजिये
मैनेजर—जैनमित्र
पो. मोरेना (ग्वालियर)

जरूरी नोटिस ।

——:o:——

जैनमित्रमें छपनेके लिये, सिर्फ ताजे समाचार, और सवाद नीचे लिखे पतेसे आना चाहिये । बाकी सब प्रकारके लेख और पत्रादि सम्पादकके पास ही भेजना चाहिये ।

नाथूराम प्रेमी—
चन्दावाडा पो० गिरगाव-बम्बई ।

विज्ञापन।

बुंदेलखड और मध्यप्रान्तवासियोंको सूचना दी जाती है कि, दिगम्बरजैनबोर्डिंगहाउस जबलपुरके मंत्री बाबू दयालचन्दजी अकाउन्टेंटका तबादला सिवनीछपाराको हो गया है और उनकी जगहपर बाबू नारायण रावजी क्लर्क भार्गवबेंक सैक्रेटरी नियत हुए हैं, इसलिये दि० जै० बो० हाउस सम्बन्धी पत्रव्यवहार उन्हींके नामसे होना चाहिये।

सवाई सिंगई वेणीप्रसाद
ज्वाइंट सेक्रेटरी।

भा० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमैटीकी

तरफसे आवश्यक सूचना।

विदित हो कि तीर्थक्षेत्र कमैटी जो कि दि० जैन महासभाके प्रस्ताव न १ संवत् १९५९ के अनुसार स्थापित हुई थी उसका दफ्तर ता १-८-१९०६ ई से हीराबागमें अलग खोला गया है। इसके पूर्वमें आजतक सब तीर्थक्षेत्रोंका हिसाब किताब लेनदेन दि० जै० प्रान्तिकसभा मुंबई तथा शेठ माणिकचन्द पानाचन्द मुम्बईके द्वारा होता रहा था। श्री सम्मेदशिखरजीसम्बन्धी सोठी, टोंक तथा बीसपंथी कोठीके वास्ते मुकद्दमेमें तथा पावापुराके मुकद्दमें आदिमें जो कुछ आमद वा खर्च हुआ है, वह सब बम्बई प्रा सभाके द्वारा हुआ है। अब दफ्तर तीर्थक्षेत्र कमैटीमें हिसाबादि रखनेके लिये भिन्न ही बहियें खोली गई हैं। इस लिये बम्बई प्रा सभा तथा शेठ माणिकचन्द पानाचन्दकी बहियोंसे समस्त तीर्थोंका जमाखर्च तथा बाकी इस दफ्तरके बहीखातोंमें तबदील कर ली गई हैं। प्रगट हो कि उपर्युक्त मुकद्दमोंके खातोंमें आजपर्यन्त प्राय साडसात हजार रुपयका अनुमान बाकी नामें (देने) निकलते हैं। इसका सविस्तर हिसाब तीर्थक्षेत्र कमैटीकी रिपार्टमें प्रकाशित किया जावेगा।

२ निवेदन है कि जहां कहीं सम्मेदशिखरजीकी कोठीके मुकद्दमके सहायतार्थ द्रव्य एकत्र हुआ हो, वह यहां भेज देवें जिससे कि तीर्थक्षेत्र कमैटी कर्ज चुकानेकी चेष्टा करे।

३ सर्व तीर्थक्षेत्रोंकी व्यवस्था तथा वार्षिक हिसाब मंगानेके लिये इस दफ्तरसे सम्पूर्ण तीर्थोंपर फार्म भेज दिये गये हैं, इस लिये सर्व तीर्थक्षेत्रोंके प्रबन्धकर्ता तथा मुनीमोंसे निवेदन है कि वे फार्मोंमें सम्पूर्ण वृत्तान्त लिखकर दफ्तर तीर्थक्षेत्रकमैटीको भेज देवें और वार्षिक हिसाब दिवालीतक अवश्य लिखकर भेजें इसके सिवाय तीर्थोंके विषयमें जिसभाईको जो कुछ वृत्तान्त मालूम हो, वह इस दफ्तरमें लिखकर भेजनेकी कृपा करें जिससे प्रत्येक तीर्थका पूर्ण समाचार प्रगट होनेपर इस कमैटीकी रिपोर्टके साथ प्रकाशित किया जाय। तथा तीर्थोंकी सम्हाल वा प्रसिद्धताका यत्न किया जाय।

दफ्तर
हीराबाग, मुम्बई,
ता. ११-९-०६

प्रार्थी—
जौहरी माणिकचन्द हीराचन्द,
महामंत्री तीर्थक्षेत्र कमेटी।

जैनमित्र.

कार्तिक शुक्ला २ श्रीवीर निर्वाण स० २४३३

श्रीशारदाष्टक ।

[बनारसीविलाससे उद्धृत ।]

भुजंगप्रयात ।

१

जिनादेशजाता जिनेन्द्रा विख्याता ।
विशुद्धा प्रबुद्धा नमों लोकमाता ॥
दुराचार दुर्नैहरा शंकरानी ।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी ॥

२

सुधाधर्मससाधिनी धर्मशाला ।
सुधाताप–निर्नाशनी मेघमाला ॥
महामोह–विध्वमनी मोक्षदानी ।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी ॥

३

अखैवृक्षशाखा व्यतीनामिलाखा ।
कथा संस्कृता प्राकृता देशभाखा ॥
चिदानन्द–भूपालकी राजधानी ।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी ॥

४

समाधानरूपा अनूपा अछुद्रा ।
अनेकान्तधा स्यादवादाङ्क मुद्रा ॥
त्रिधा सप्तधा द्वादशाङ्गी बखानी ।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी ॥

५

अकोपा अमाना अदंभा अलोभा ।
श्रुतज्ञानरूपी मतिज्ञान–शोभा ॥
महापावनी भावना भव्यमानी ।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी ॥

६

अतीता अजीता सदा निर्विकारा ।
विषैवाटिकाखंडिनी खड्गधारा ॥
पुरापापविक्षेप–कर्त्री कृपाणी ।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी ॥

७

अगाधा अबाधा निरंधा निराशा ।
अनन्ता अनादीश्वरी कर्मनाशा ॥
निशंका निरंका चिदंका भवानी ।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी ॥

८

अशोका मुदेका विवेका विधानी ।
जगज्जन्तु–मित्रा विचित्रावसानी ॥
समस्तावलोका निरस्ता निदानी ।
नमो देवि वागेश्वरी जैनवानी ॥

सम्पादकीय टिप्पणियां ।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं सर्वकल्याणकारकम् ।
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयतु शासनम् ॥

वर्षारम्भ । वर्षके अतिशय उत्कृष्ट और मंगलमय प्रथम दिवसमें बडे हर्षके साथ हम अपने अष्टम वर्षमें प्रवेश करते हैं । इस दिन जगद्गुरु भगवान् महावीरने परमकल्याणकी प्राप्ति की थी, अतएव हम भी इस शुभ दिनमें अपनी और अपने पाठकोंकी कल्याणकामना करते हुए कर्तव्यमें आरूढ होते हैं । त्रैलोक्यपूज्य जैनशासन हमारा सहायक हो, और जिनवाणी माता हमको शक्ति देवे, जिसमे हम अपने मनोरथोंको सफल करें ।

जैनमित्रका कायापलट । अनेक मित्रोंकी प्रेरणासे आज जैनमित्र अपने सात वर्षके पुराने आकारका परित्याग करके एक नवीन आकारसे उपस्थित होता है । आशा है कि, पाठकगणोंको इसका यह कायापलट अरुचिकर नहीं होगा । इस आकारसे ताजे समाचार देनेमें बहुत कुछ सुभीता होगा । पुस्तकाकार छपनेमें दबाने, सिलाने, काटनेमें बहुत विलम्ब हुआ करता था, वह अब नहीं होगा और नियत तिथिको निकला करेगा । जबसे जैनमित्र निकला है, तबसे यह प्रतिवर्ष कुछ न कुछ वृद्धि प्रतिवर्ष करता गया है । इस वर्ष भी इसके कुछ फार्म बढ़ाये जाते हैं और यदि हमारे पाठकोंकी कृपा रही, तो आगे इसी वर्षमें और भी कुछ बढ़ानेकी इच्छा है । परन्तु मूल्य २) ही रहेगा ।

ग्राहकोंकी न्यूनता । गतवर्ष जैनमित्रको सर्वप्रिय और उपयोगी बनानेके लिये हमने जो कुछ प्रयत्न किया था, वह पाठकोंसे छुपा हुआ नहीं है, और इस वर्ष कहीं उससे भी अधिक प्रयत्न करनेकी इच्छा है, परन्तु दुःखका विषय है कि, इसे जितने ग्राहक मिलना चाहिये, उतने ग्राहक नहीं मिलते और इस कारण प्रतिवर्ष कुछ न कुछ घाटा रहता ही है । सदाकी नाईं गतवर्ष भी इसका घाटेहीमें गया और यदि इस वर्ष इसे यथेष्ट ग्राहक न मिलेंगे, तो यह घाटेमें दब जावेगा । क्योंकि पहलेकी अपेक्षा अब इसका खर्च ज्योदा हो जावेगा । इसलिये अपने उत्साही धर्मात्मा पाठकोंसे हमारा निवेदन है कि, वे कृपाकरके कमसे कम एक२ ग्राहक और बनाकर भेजें । आप लोगोंके थोडेसे प्रयत्नसे जैनमित्रकी आर्थिक दशा बहुत अच्छी हो सकती है ।

प्रार्थना । इस अंककी ६००–७०० कापियां नमूनेके तौरपर भेजी जाती हैं । जिन सज्जनोंके पास यह अंक पहुंचे, उन्हें उसी समय एक कार्डके द्वारा ग्राहकश्रेणीमें अपना नाम लिखवाना चाहिये और अपने मित्रगणोंसे प्रेरणा करके उन्हें भी ग्राहक बनाना चाहिये । जो महाशय ग्राहक नहीं बनना चाहें, और इस जातिधर्मके सेवक पत्रको अच्छा नहीं समझें, उन्हें कृपाकरके सूचना देना चाहिये, जिसमें आगामी अंक उनकी सेवामें नहीं भेजा जावे ।

दिगम्बरजैन प्रान्तिक सभा बम्बईके सभापति । हर्षका विषय है कि, श्रीगजपंथक्षेत्र पर होनेवाले दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बईके अधिवेशनमें स्वर्गीय मुसब्बरजंग राजा बहादुर दीनदयालजीके सुयोग्यपुत्र राजा ज्ञानचन्द्रजीने सभापतिका आसन ग्रहण करना स्वीकार किया है । आप हमारी जातिके एक अतिशय प्रतिष्ठित राजमान्य और विद्वान् पुरुष हैं, यह सब ही जानते हैं । प्रान्तिक सभाके परिचालकोंने बडी दूरदर्शिताके साथ आप जैसे एक जातिशिरोमणि पुरुषको इस कार्यके लिये चुना है । आपके प्रभावसे यह अधिवेशन अच्छी सफलता प्राप्त करेगा । बम्बई प्रान्तवासियोंको अबकी वार खूब उत्साह और एकतासे अधिवेशनमे सम्मिलित होना चाहिये ।

रिसेप्सन कमेटी । अधिवेशनकी स्वागतसभा (रिसेप्सन कमेटी) बहुत जल्दी संगठित होनी चाहिये । दिन बहुत निकट आ रहे हैं । हमने नीचे लिखे हुए थोडेसे महाशयोंके नाम कमेटीके लिये तजवीज किये हैं । शेठ चुन्नीलाल जवेरचन्द–बम्बई (चेअरमन), शा. जीवराज नेमिचन्द–शोलापुर, रा. रा. नेमिनाथ पांगल-बार्सी, शा. लल्लूभाई प्रेमानन्द-बम्बई, लाला प्रभुदयालजी-बम्बई, शा. ठाकुरदास भगवानदास–बम्बई, बाबू शीतल-

प्रसादजी बम्बई, बुधमल पाटणी–बम्बई, और माणिकचन्द रावजी–बम्बई, इसके सिवाय अन्य उत्साही सज्जनोंको भी एक २ पत्रद्वारा सूचना देकर इस पुण्यकार्यके स्वागत करनेवालोंमें अपना नाम लिखवाना चाहिये। प्रत्येक ग्रामकी पचायतियोंसे प्रतिनिधियोंकी तजवीज भी शीघ्र होनी चाहिये।

बारह जातियोंका भोजनव्यवहार।

जैनियोंको ८४ जातिया हैं। उनमें परस्पर भोजनव्यवहार अवश्य होना चाहिये। परन्तु देशभेद तथा बुद्धिभेदके कारण कन्याव्यवहारकी नाई भोजनव्यवहार भी जैनियोंमे बन्द हो गया है। कालचक्रके प्रभावसे उक्त चौरासी जातियोंमेंसे वर्तमानमें केवल २८-२९ जातिया शेष रही हैं, और सब नष्ट हो गई हैं। इनमेंसे १२ जातिकी कच्चीरसोईका परस्पर सम्बन्ध बहुत समयमे चला आता है, ऐसा कामा(भरतपुर)के भाई झम्मनलालजी के द्वारा ज्ञात हुआ है। आप लिखते है कि, "सोनागिरके भट्टारक महाराजसे पूछनेपर तथा एक प्राचीन पुस्तकका लेख पढनेसे ज्ञात हुआ है कि, अग्रवाल, खडेलवाल, जैसवाल, श्रीमाल, पद्मावती पोरवाल, लमेचू, गोलालारा, गोलसिंघाडा, परवाल (२), बुढेले, पोरवाल, और सहवाल इन बारह जातियोंमें कच्चीरसोईका सम्बन्ध था।" आजकल इन जातियोंमेंसे किन २ का भोजनसम्बन्ध है, किन २ का बन्द हो गया है, और कबसे बन्द हो गया है तथा इन बारह जातियोंके सिवाय और किन २ जैनजातियोंमें भोजनसम्बन्ध है, इन बातोंका पता लगाकर प्रत्येक भाईको चाहिये कि, हमारे पास प्रकाशित करनेके लिये भेजें।

कटनी मुड़वारेकी जैन पाठशाला।

हर्षका विषय है कि, हमारे जैन समाजमें जगह २ धार्मिकविद्याप्रचारक जोश बढा हुआ दिखाई देता है। जगह २ पाठशालायें स्थापित हो रही है। कटनी मुडवारेकी पाठशाला बुंदेलखंडमें एक नामी पाठशाला होगी। ग्यारह हजार रुपयेका चन्दा होकर पाठशालाके लिये एक सुन्दर मकान बनके तयार हो गया है। दिवालीको उक्त मकानमें पाठशालाका मुहूर्त होनेवाला था। इस पाठशालामें स्थानीय विद्यार्थियोंके सिवाय बाहरके विद्यार्थी भी भरती किये जावेंगे, जिनके रहनेके लिये पाठशालाके मकानमें ही कोठरियां तयार हो रही हैं। असमर्थ विद्यार्थियोंको मासिक सहायता देनेका भी प्रबन्ध होगा। इस विषयमें मुड़वारेके भाइयोंको हम अनेकानेक धन्यवाद देते हैं। जिस उत्साहसे उन्होंने पाठशाला स्थापित की है, यदि उसी उत्साहसे एकतापूर्वक वे चला सके, तो बुंदेलखंडका बहुत कुछ अज्ञानाधकार दूर हो जावेगा, इसमें सन्देह नहीं हैं।

महाविद्यालयकी दशा क्या सच-मुच अच्छी है?

कुछ दिन पहले जैनमित्र और जैनगजटमें महाविद्यालयकी दशा वर्तमानमें बहुत सतोषजनक है, यह समाचार प्रकाशित हो चुके हैं। परन्तु हाल ही सहारणपुरसे जो हमारे पास एक लेख आया है, उससे यह जानकर कि महाविद्यालय बड़ी दुर्दशामें है, हमको बहुत दुःख हुआ है। लेखका शीर्षक "महाविद्यालयपर सुविचार" है और उसके लेखक "एक जैनी" महाशय है। खेद है कि, आपने उसमें अपना नाम नहीं लिखा। लेख बहुत लम्बा चौडा है, और हमारे जैनमित्रमें स्थानका बड़ा भारी अकाल रहता है, इस कारण हम उसे सम्पूर्ण रूपमें प्रकाश न करके साराश मात्र लिख देते हैं। "महाविद्यालयके पुराने विद्यार्थी भाग गये हैं। जो २९ विद्यार्थी भरती है, वे सख्या मात्र हैं, और नये सिरेसे भरती किये गये हैं। ऐसे विद्यार्थियोसे महाविद्यालयनामको लज्जा आती है। महाविद्यालयके कार्यकर्ताओंमें विरोधाग्नि दहक रही है। द्रव्यकी आमदनी सर्वथा बन्द हो गई है, क्योंकि महासभा और महाविद्यालयसे हर प्रान्तके भाइयोंमें अरुचि बढ रही है। इस वर्ष महाविद्यालयभंडारका हद्दसे ज्याद रुपया खर्च हुआ है। परीक्षा न होनेसे और भी बहुत हानि हुई है। अन्तमें लेखक कहते हैं कि, महाविद्यालयके मंत्रीमहाशय जो महाविद्यालयकी दशा "बहुत अच्छी" "बहुत अच्छी" बतला रहे हैं, उसके कुछ प्रमाण भी देना चाहिये। विद्यार्थियोंकी योग्यता प्रकाश करनेसे ही सब कलई खुल जावेगी। महाविद्यालयकी प्रशंसा कर करके उसके सहारे जो आप हाईस्कूल खोलना चाहैं, सो नहीं खुलेगा। अप्रैलकी मैनेजिङ्ग कमेटीमें रुपया वसूल करनेके लिये आपने कितने दिनोंका वादा किया था, फिर वह क्यों वसूल नहीं हुआ? महाविद्यालयके लिये नहीं हाईस्कूलके ही वसूल किया होता। सच तो यह है कि, लोग एक छोड़कर दूसरीके लिये दौड़ते हैं, और फिर दोनोंको बरबाद कर देते हैं। हाईस्कूल बनना तो बहुत दूर है, महाविद्यालय ही बरबाद हो रहा है। जैनी भाइयोंको चाहिये कि, वे अपने प्यारे महाविद्यालयकी दशा पर तरस खावें और उसके सुधारनेका प्रयत्न करें। जब तक महाविद्यालयके लिये योग्य स्थान निश्चित न हो, तब तक उसे मथुरामे ही रक्खें। इत्यादि" इस लेखमें सत्यका अश कितना है, महाविद्यालयके कार्यकर्त्ताओंको प्रकाशित करना चाहिये। ता० ९ अक्टूबरको चौरासीके मेलेपर महाविद्यालयके विषयमे विचार करनेके लिये एक स्पेशलमीटिंग हुई हैं, देखें उसका क्या फल निकलता है। आशा है कि, महाविद्यालयकी उक्त मीटिंगसे अवश्य ही कुछ दशा सुधरेगी।

दिवसानुष्ठान।

(३)

देव गुरु और धर्मकी सेवा करनेके विषयमें अपने चित्तको डांवाडोल नहीं रखना चाहिये। मनको संकुचित रखनेसे, क्रोधके आवेशमें भ्रूविक्षेप करनेसे और भौहोंके चढानेसे सम्पूर्ण इन्द्रिया निस्तेज (मन्द) होती हैं। प्रत्येक जीवधारीके लिये स्वच्छन्दवृत्ति (स्वतत्रता) एक उत्कृष्ट रसायन है। देखिये! जगलमें इच्छानुसार स्वच्छन्द विहार करनेवाले हाथीको व्याधिया कभी स्पर्श भी नहीं करती। ससारमें निरन्तर सेवनकरनेयोग्य दोही पदार्थ सुखकारी हैं, एक तो रसिकजनोंके साथ स्वच्छन्द वार्तालाप और दूसरे ताम्बूलभक्षण। जो हमेशा उर्द्धस्थ रहता है अर्थात् चारपाई पलंग वा कुर्सीपर बैठा रहता है, उसकी रसवाहिनी (धमनी) नलिया अकड़ जाती हैं। और जो निरन्तर बैठा रहता है, वह अपने पेटको तुन्दल बनाता है। वाणी, मन और शरीरको अधिक खेद पहुचानेसे बुढापा शीघ्र ही आ घेरता है।

घरमे अपने इष्टदेवकी मूर्ति अवश्य ही स्थापन करनी चाहिये। देवकी आवश्यकताके विना केवल अपने ही लिये घर-महल बनवाना अनुचित है। देव, गुरु और धर्मरहित पुरुषका कोई भी विश्वास नहीं करता है। क्लेश (राग द्वेष) और कर्मविपाकका जिससे तिलमात्र भी सम्बन्ध नहीं है, ऐसे पुरुषविशेषको देव कहते हैं। अर्हन्, अज, अनन्त, शंभु, बुद्ध और तमोन्तक आदि उसके नामान्तर हैं।

अपने सुखमें किसी प्रकारकी बाधा न आवे, इस प्रकारसे कामकाज करनेके लिये दिन और रात्रिके

नियमित विभाग कर रखने चाहिये। समयको अनियमित रखके काम करना मरण-तुल्य है। आत्यान्तिक कार्योंमें धर्म प्रधान है। अर्थात् एक समयमें यदि बहुतसे काम आ पड़ें, तो उनमें सबसे पहले धर्मकार्य करना चाहिये। अपनी रक्षा करनेमें कभी प्रमाद नहीं करना चाहिये।

राजाको सवत्स (बछड़ेवाली) गायकी प्रदक्षिणा करके पश्चात् न्यायासनपर बैठना चाहिये। जो किसी भी कामपर नियत नहीं है उसे, और जो बुलाया नहीं गया है उसे, राजसभामें प्रवेश नहीं करना चाहिये। सभामें सिंहासनपर बैठनेके पश्चात् जो पूज्य पुरुष आवें, उन्हें उत्थापन देकर (उठकर) नमस्कार करना चाहिये। देव, गुरु और धर्मसम्बन्धी कार्योंकी देखरेख स्वयं करना चाहिये। अन्यान्यकार्य अपने सरीखे किसी दूसरे विश्वासनीय पुरुषकी देखरेखमें छोड़ दिये जावें, तो कुछ चिंता नहीं है।

कपटी और जारण मारण करनेवाले लोगोंके साथ कभी नहीं चलना चाहिये। ऐसी कोई भी क्रीडा (शिकारादि) नहीं करनी चाहिये, जिसमें दूसरे जीवोंका घात हो। परस्त्रीके साथ चाहे वह माता ही क्यों न हो, एकान्तमें कभी नहीं रहना चाहिये। अतिशय क्रोध आनेपर भी गुरुजनों तथा मान्य पुरुषोंका अपमान किंवा अतिक्रम नहीं करना चाहिये।

विश्वास योग्य पुरुषोंने जिसका अच्छी तरह शोध नहीं किया हो, उस स्थानमें न तो कभी बैठना चाहिये और न गमन करना चाहिये। जिस वाहनपर अपने आत्मीयजन कभी न बैठे हों, उसपर एकाएक आपको नहीं बैठना चाहिये। जो तीर्थस्थान, व्यापार तथा तपस्वी अपने पुरुषोंके द्वारा परीक्षित न हों, उनमें न कभी जाना चाहिये, न हाथ डालना चाहिये और न विश्वास करना चाहिये। जिसका शोधन अंगरक्षकोंने न किया हो, उस मार्गमें कभी नहीं जाना चाहिये। विषनाशक औषधि और मणिकी उपासना नहीं करनी चाहिये। विषविद्या जाननेवालोंकी विद्याको कंठमें धारण नहीं करना चाहिये। राजाको मन्त्री वैद्य और ज्योतिषीके विना नहीं रहना चाहिये। खाने पीनेके पदार्थोंको अग्निमें डालकर और अंजन सुरमा वगैरह पदार्थोंकी दूसरोंकी आंखोंमें डलवाकर स्वयं परीक्षा कर लेनी चाहिये।

अमृतवायुके चलनेपर सम्पूर्ण कृत्य करने चाहिये। दक्षिणानिल (दक्षिण तरफकी हवाके) चलनेपर भोजन, स्त्रीसंभोग और युद्धकी इच्छा करना चाहिये।

चन्द्रगुप्त।

पूर्व कालमें चन्द्रगुप्त नामके दो राजा हो गये है। जिनमसे एक तो प्रसिद्ध नन्दवंशीय राजा महानन्दका पुत्र था, जो कि मुरा नामकी रानीसे पैदा हुआ था और पीछेसे मौर्यवंशी राजा कहलाया। और दूसरा गुप्तवंशीय राजा था, जिसके पितादिकोंका नाम ज्ञात नहीं है।

प्रथम मौर्यवंशीय राजा चन्द्रगुप्त हमारे जैन ग्रन्थोंमें बहुत प्रसिद्ध है। इतिहासकारोंके मतसे इसका राज्याभिषेक ईस्वी सन्के ३१६ वर्ष पूर्वमें निश्चित हुआ है और २९२ वर्ष पूर्वमें २४ वर्ष राज्य करके उसकी मृत्यु मानी जाती है। अनेक लोगोंका मत है कि, यह चन्द्रगुप्त शूद्राके गर्भसे उत्पन्न हुआ था, और इसे अनेक मोरिय नाम नगरके राजाका पुत्र मानते हैं। परन्तु यथार्थ बात क्या थी, सो निश्चय नहीं होता। हमारे यहां जो श्रीरत्ननन्दि आचार्यकृत भद्रबाहुचरित्र है, उसमें चन्द्रगुप्तको उज्जैनका राजा बतलाया है, पर पितादिकोंका नाम नहीं लिखा है। अन्य सब इसे पाटलीपुत्रका (पटनाका) राजा सिद्ध करते हैं, और इस विषयमें दृढ़ प्रमाण देते है। परन्तु इससे उसके उज्जैनके राजा होनेमें कोई विरोध नहीं आता है। क्या आश्चर्य है कि किसी विशेष समयमें पटनामें उसकी राजधानी रही हो, और पीछे उज्जैनको उसने राजधानी बनाई हो।

चन्द्रगुप्त राजा श्रेणिककी ७–८ वीं पीढ़ीमें था। इतिहासकार श्रेणिकको शिशुनागवंशीय राजा बिम्बिसार और कोणिकको उसका पुत्र अजातशत्रु मानते है। प्रसिद्ध बौद्धधर्मीय राजा अशोक चन्द्रगुप्तका पोता था।

पटना जिससमय चन्द्रगुप्तकी राजधानी था, बड़ा भारी नगर था। ग्रीकके प्रसिद्ध इतिहासज्ञ मेगास्थनीजने उस समय पटनाको अपनी आँखोंसे देखकर ८ मील लम्बा और १९ मील चौड़ा लिखा है। उस समय उसमें १९ लाख मनुष्य निवास करते थे। यह मेगास्थनीज चन्द्रगुप्तके दरबारमें बहुत दिन तक रहा है। उसने चन्द्रगुप्तके विषयमें बहुत कुछ लिखा है। सिकन्दरका सेनापति वाबिलका बादशाह सिल्यूकस जब हिन्दुस्थानमें आया था, तब उसने पटनेसे सिंधुनदीके किनारे तकका प्रदेश चन्द्रगुप्तके अधिकारमें पाया था। उसने लिखा है कि, चन्द्रगुप्त बड़ा बहादुर था। शेरने एक वार उसका पसीना चाटा था और हाथीने उसके साम्हने सिर झुका दिया था।

चन्द्रगुप्त जैनधर्मावलम्बी था, प्रयत्न करनेसे इसके अनेक प्रमाण मिल सकते हैं। मेगास्थनीजने लिखा है कि "राजा चन्द्रगुप्त श्रमण अर्थात् जैनियोंसे उपदेश लिया करता था।" मि. एडवर्ड थामसने लिखा है कि "अशोकके प्रपिता चन्द्रगुप्तके समय जब बौद्धधर्म सिर निकाल रहा था, तब जैनधर्मके क्षीण होनेके चिन्ह दिखलाई देने लगे थे। चन्द्रगुप्त जैनी था, वंशावलीमें इसके लिये अनेक दृढ़ प्रमाण हैं, " भद्रबाहु चरित्रमें चन्द्रगुप्तको भद्रबाहाचार्यका परमभक्त लिखा है। जिस समय चन्द्रगुप्तको सोलह स्वप्न हुए थे, और भद्रबाहुके द्वारा उनका दुष्फल सुनकर चन्द्रगुप्तको संसार देहभोगोंसे वैराग्य उत्पन्न हुआ था, उसी समय उसने जिनदीक्षा ले ली थी, और फिर देशमें बारह वर्षका घोर दुर्भिक्ष पडनेसे अपने १२००० मुनियोंके संघके साथ उसने दक्षिणकी ओर गमन किया था, जहां भद्रबाहुके स्वर्गगमन तक एक निर्जन गुहामें रहकर उसने उनका वैयावृत्य किया था। इससे चन्द्रगुप्त जैनी था, इसमें कोई सन्देह नहीं रहता है। माइसोरके चन्द्रगिरि (श्रवणबेलगोल) नामक स्थानमें जो शिलालेख है, उसमें भी भद्रबाहुके दक्षिणकी ओर जानेका, चन्द्रगुप्तके समयमें दुर्भिक्ष पडनेका, तथा उसके जैनी होनेका वृत्तान्त ज्ञात होता है।

हमारे ग्रन्थोंके अनुसार महावीरभगवान्के निर्वाणके पश्चात् १६२ वर्षमें अर्थात् ईस्वीसनके २६४ वर्ष पूर्वमें भद्रबाहुका परलोक हुआ है, परन्तु यूनानी मुवर्रखों और अशोकके शिलालेखोंसे चन्द्रगुप्तका समय सन् ईस्वीसे ३२० वर्ष पहलेका निश्चय हुआ है। इस अवस्थामें चन्द्रगुप्त और भद्रबाहुका साक्षात् होना असंभव जान पड़ता है। परन्तु विचार करनेसे ऐसा ज्ञात होता है कि, इतिहासोंसे जिस चन्द्रगुप्तका समय ३२० वर्ष पहले निश्चित हुआ है, वह कदाचित् दूसरा चन्द्रगुप्त होगा, जिसका कि वर्णन भद्रबाहुचरित्रमें भद्रबाहुके स्वर्गगमनके पश्चात् श्वेताम्बरीय धर्मकी उत्पत्ति बतलाते समय किया है। इस चन्द्रगुप्तकी एक रानीका नाम चन्द्रश्री और पुत्रीका शशि लिखा था, जो वल्लभीपुरके राजा प्रजापालके पुत्र गुणपाल-

को व्याही गई थी। यह दूसरा चन्द्रगुप्त स्थूलभद्रादि आचार्योंके समयमें था। श्वेताम्बरीय ग्रन्थोंसे भी इसी बातका पता लगता है। इस तरहसे निश्चय होता है कि, जिस राजाने स्वप्न देखे थे, वह चन्द्रगुप्त प्रथम है, और मगाग्थनीज जिसके दरबारमें रहा था, वह चन्द्रगुप्त द्वितीय है। द्वितीय चन्द्रगुप्तको भी उज्जैनका राजा और (कदाचित्) उसी वंशका बतलाया है। राजाओंमें प्राय प्रपिताका जो नाम होता है, वही पोतेका रख देनेकी प्रथा बहुत कालसे है। क्या आश्चर्य हैं कि, द्वितीय चन्द्रगुप्त पहलेका पोता ही हो। दोनोंका मध्यवर्ती काल ६० ७० वर्ष मान लेनेसे प्रथम चन्द्रगुप्तका साक्षात् भद्रबाहुके साथ और द्वितीयका स्थूलभद्रके साथ बन सकता है।

अब इन दोनोंसे पृथक् जो गुप्तवंशीय चन्द्रगुप्त नामका राजा हुआ है, उसका समय ईस्वीसन्‌की पांचवीं शताब्दिके प्रारंभमें निश्चित हुआ है। इसका राज्य सिन्धुनदीसे लेकर मथुरातक फैला हुआ था और राजधानी उज्जैनमें थी। अजितविक्रम, श्रीविक्रम, प्रविक्रम, विक्रमादित्यादि इसके नामान्तर माने जाते हैं, जो उस समयके अनेक सिक्कोंसे प्रतीत होते हैं। यद्यपि यह चन्द्रगुप्त राजा भी जैन था, इस विषयमें हमारे पास कोई सुनिश्चित प्रमाण नहीं हैं, परन्तु उसके राज्यकी व्यवस्था देखकर चीनके फाहियान नामक यात्रीने अपनी डायरीमें उस समय जो कुछ लिखा है, उससे तो यही जान पड़ता है कि, वह अवश्य ही जैन होगा। हम अपने पाठकोंके जाननेके लिये फाहियानकी डायरीसे वह लेख नकल किये देते हैं,—

भारतवर्षके मनुष्य चीनी लोगोंकी अपेक्षा भाग्यवान् हैं। इन्हें न तो घरसम्बन्धी बातोंकी सरकारमें रिपोर्ट करनी पड़ती है और न उठते बैठते हुए राज्यकर्मचारियोंके पास जाना पड़ता है। यहा पर राज्यसे जाने आनेकी आज्ञा लेनेकी आवश्यकता नहीं है। चाहे जिसे जब चाहे तब जहा चाहे तहा जानेकी स्वतंत्रता है। यहां बहुतसे अपराधियोंको दंड दिया जाता है, परन्तु देहान्तदंड (शूली वगैरह) किसीको नहीं दिया जाता। देशके राज्यकर्मचारियोंको बादशाही दी गई है, इस लिये उन्हें कभी देशकी आयमें हाथ लगानेके आवश्यकता नहीं होती। **यहां न कभी कोई किसी प्राणीको मारता है, न कोई मद्यपान (शराब) करता है और न कोई कंदमूल खाता है। यहां न तो शराबकी दूकानें हैं, और न कसाइयोंकी।** सरकारी कर्मचारी लोगोंके व्यावहरिक कार्योंमें बिलकुल हस्तक्षेप नहीं करते। केवल चोर लुटेरोंका बन्दोबस्त करना ही उनका कार्य है। सम्पूर्ण राज्य भरमें हथेली पर सोना रक्खे फिरो, उसकी ओर कोई देखेगा भी नहीं। इतना नीतिमान धर्मराज्य पूर्वमें कभी नहीं हुआ था। ...."

अहा! कैसा सुन्दर धर्मराज्य था। सभ्यताकी डींग हाकनेवाले और न्यायी कहलानेवाले इंग्रेजी राज्यकी चन्द्रगुप्तके राज्यसे तुलना करनेमें लज्जा आती है। आज भारतवर्षमें इस राज्यके प्रभावसे प्रतिदिन लक्षावधि निरपराध गौयें काटी जाती हैं, लक्षावधि लोग अकालके मारे भूखे मरते है, लक्षावधि शराबकी दूकानें और कसाईखाने हैं। कन्दमूल खानेकी तो कौन कहै, आज इस पुण्यराज्यमें उच्चजातिकी ब्राह्मण जैनादि प्रजा भी हड्डी और बैलके खूनसे बनी हुई शक्करका भोग लगाते है, और **कार्डलिवरआईलको** जीवनदायिनी औषधि समझके गटगटाती है। न जाने भारतवर्षको चन्द्रगुप्त जैसे धर्ममूर्ति राजा फिर कब मिलेंगे। श्रीजी करें हमारे अंग्रेज प्रभुओंके हृदयमें दया उत्पन्न हो। और वे चन्द्रगुप्त जैसा धर्म राज्यस्थापन करनेमें समर्थ हों।

साधनाभावोंसे यह लेख जैसा अच्छा बनना चाहिये था, नहीं बना है। यदि कोई हमारे ग्रेज्युएट महाशय इस विषयमें प्रयत्न करें, तो अंग्रेजी इतिहासोंसे दोनो तीनों चन्द्रगुप्तके समयादिका निर्णय बहुत कुछ हो सकता है। इत्यलम्

चन्दावाडी—**बम्बई**। ८-१०-०६ ई०

जातिका सेवक—
नाथूराम प्रेमी।

आर्यमित्र और जैन।

(३)

सहयोगी आर्यमित्रने अपने ८ सितंबर सन् हालके अंकमें हमारे १८-१९ वें अंकमें प्रकाशित लेखका उत्तर दिया है। जिसको वांचनेसे प्रतीत होता है कि, सहयोगीने कुछ न कुछ लिखकर ही पत्रके कालम पूरे किये हैं, सयुक्तिताकी उसमें गंध भी नहीं है।

हमने लिखा था कि; 'ध्यानकी मूर्ति' इस पदका अर्थ 'ध्यानारुढ मनुष्यकी मूर्ति' है। जैसे कि, 'घीके घड़े' का अर्थ 'घीसे भरा हुआ घड़ा' है। इसके उत्तरमें सहयोगी लिखता है कि "घीके घड़े इस पदके दो अर्थ हो सकते हैं, एक तो घीसे भरा हुआ घडा और दूसरा घी भरनेका खाली घड़ा। इसी प्रकार ध्यानकी मूर्ति इस पदके भी प्रकरणानुसार अनेक अर्थ हो सकते हैं, तो ध्यानकी मूर्ति इस पदसे पद्मासन और खड्गासन इन दो प्रकारकी मूर्तियोंमेंसे कौनसी मूर्ति समझी जाय। इनमेसे किसको ध्यानकी और किसको कुध्यानकी समझें।" सो सहयोगीका ऐसा लिखना भ्रममूलक है। क्योंकि जैसे, किसी घीवालेके पास कोई मनुष्य घी खरीदनेको आया और घीवालेने अपने लड़केसे कहा कि, भीतरसे घीका घडा उठा ला। भीतर कोठेमें दो घडे रक्खे हुए है, जिनमेंसे एकमें पीला घी है और दूसरेमें सफेद। अब सहयोगीको बतलाना चाहिये कि, वह लडका पीले घीके घड़ेको लावेगा या सफेद घीके घड़को? हमारी समझमे या तो लडका दोनोंमिसे चाहे जिस घडेको लाकर कृतकार्य हो सकता है, या अपने पितासे पूछ सकता है कि, पीले घीका घड़ा लाऊ या सफेद घीका? उत्तर मिलनेपर आज्ञानुसार घड़ा ला सकता है। इसी प्रकार ध्यानकी मूर्ति मगाये जानेपर भी पद्मासन खड्गासन दोनोंमेसे किसी एक प्रतिमाको लानेपर कृतकार्य हो सकता है और या पूछ सकता है कि, पद्मासन प्रतिमा लाऊ कि खड्गासन? उत्तर मिलनेपर आज्ञानुसार ला सकता है। "भरने योग्य घड़ा और घीसे भरा हुआ घडा" यह लिखकर सहयोगीने स्वय स्वीकार कर लिया है कि, मूर्तिमे "ध्यानकी मूर्ति" यह उपचार हो सकता है। अब वह चाहे खड्गासन हो चाहे पद्मासन, हमारे इष्टकी सिद्धि हो चुकी।

फिर सहयोगीने लिखा है कि, "ध्यानका कोई नियमित आसन नहीं है" सो भी केवल भ्रम है। ध्यानप्ररूपक शास्त्रोंमें ध्यानके आसनोंका नियम किया है,, उन्हीं आसनोंसे ध्यान किया जाता है और दूसरोंसे नहीं। इन अनेक आसनोंमेंसे तीर्थंकर दो ही आसनोंसे मोक्ष जाते है, या तो पद्मासनसे या खड्गासनसे, और इसी लिये मूर्तिया भी दो ही आसन अर्थात् पद्मासन या खड्गासनरूप होती हैं। पद्मासन और खड्गासन ये दोनों ही ध्यानके आसन हैं, कुध्यानके नहीं। ध्यान शब्दसे धर्मध्यान और शुक्लध्यान समझना चाहिये, आर्त्त और रौद्र ये दोनों कुध्यान हैं। ध्यानस्थताकी अपेक्षासे तीर्थंकर और प्रतिमामें जो सदृशता बतलाई थी, सो इस वाक्यमें ध्यान शब्दका वाच्य धर्मध्यान और शुक्लध्यान ही

है आर्त और रौद्र नहीं। इस कथनसे सहयोगीके "ध्यानस्थताकी अपेक्षासे तो आर्त रौद्र ध्यानारूढ़ मनुष्य भी तीर्थंकरोंके सदृश हो सकते हैं" इस वाक्यका भी उत्तर हो गया।

आगे सहयोगी लिखता है कि, "ऋषभादि तीर्थंकरोंके वृषभादि चिन्ह थे, तो चरणमें अरु नीचे प्रस्तरमें बनाने लिख दिये, यह प्रतिष्ठातिलक तथा शिल्पशास्त्रके कर्त्ताकी क्या कपोलकल्पना नहीं है? प्रत्यक्ष ही है।" किन्तु ऐसा लिखना सर्वथा अविचारित-रम्य है। क्यों कि हम कईवार लिख चुके हैं कि, तीर्थंकरोंकी प्रतिमा सर्वथा तीर्थंकरोंके सदृश नहीं है। किन्तु ध्यानस्थताकी अपेक्षासे तीर्थंकरोंकी प्रतिमा तीर्थंकरोंके सदृश है।

फिर आगे चलकर सहयोगीने हमारी सम्प्रदायके ग्रंथोंके नाम पूछनेमें आकाश पाताल एक करते हुए "नाच न जानों आंगन टेढ़े" की कहावतको चरितार्थ की है। पाठकोंको समझना चाहिये कि, प्रथम ही सहयोगीने लिखा था कि "फीरोजाबादके मेलेमें अनेक तीर्थंकरोंकी प्रतिमा एकत्र हुई, सो यह कार्य जैनशास्त्रोंके विरुद्ध हुआ" इसपरसे हमने सहयोगीसे पूंछा था कि, अनेक तीर्थंकरोंकी प्रतिमाओंका एकत्र होनेका निषेध कौनसे जैन-शास्त्रमें लिखा है? इसके प्रत्युत्तरमे सहयोगीने लिखा कि, "तुम्हारी कौनसी सम्प्रदाय है दिगम्बर या श्वेताम्बर? तथा तुम कौन २ से ग्रंथोंको प्रमाण मानते हो? ग्रंथोंके नाम लिखनेपर शास्त्रका प्रमाण दिया जायगा, कि जिससे तुम पीछे यह न कह सको कि, हम इस ग्रंथको प्रमाण नहीं मानते" इसके उत्तरमें हमने लिखा कि, हम दिगम्बर सम्प्रदायके हैं, हमारे दिगम्बर ऋषियोंने अनेक ग्रंथ रचे हैं, सब ही ग्रंथोंको हम प्रमाण मानते हैं, उनमेंसे कुछ थोड़ेसे नाम भी लिख दिये और यह भी लिख दिया कि, इन ग्रंथोंके सिवायऔर भी अनेक ग्रंथ हैं, जिनको यदि सहयोगी हमारे दिगम्बर ऋषिप्रणित सिद्ध कर देगा तो, हम उन ग्रंथोंको भी प्रमाण मानेंगे। अथवा जो सहयोगीको इससे भी संतोष न होय, तो इस शास्त्रार्थके संबधमें प्रमाण देनेके लिये सहयोगीके पास कौन२ शास्त्र हैं, उनका नाम लिखे कि जिससे हम बता सकें कि, अमुक ग्रंथको प्रमाणभूत मानते हैं और अमुकको नहीं। इसके उत्तरमें सहयोगी लिखता है कि "सहयोगी जैनमित्रने अपनी सम्प्रदायके ऋषिप्रणित ग्रंथोकी सर्व संख्या और नाम लिखनेमें बहुतसी बातें बनायकर टालमटोल की है। परतु हम फिर भी लिखते हैं कि जैसे गोमट्टसार ग्रंथमें द्वादशाग तथा चयदे(?) पूर्वके नाम तथा पदादि सख्या लिखी है, इस ही प्रकार अपने माननीय सर्व ग्रंथोंके नामसंख्या सहित लिखे। एवम् उस ग्रंथका नाम लिखे कि जिसमें सर्व ग्रंथोंके नाम लिखे हों य अन्यथा ये झगड़ा कभी नहीं मिटेगा। क्योंकि प्रथम तो सहयोगी जैनमित्रने ३१ प्रचलित ग्रंथोंके नाम लिखे और उत्तर देनेके लिये अप्रचलित-प्रतिष्ठातिलक तथा शिल्पशास्त्रकी शरण ली, ये बात उचित नहीं। सहयोगीको समझकर लिखना चाहिये।" इसके उत्तरमें कुछ लिखकर हम अपने पत्रके पेज काले करना व्यर्थ समझते हैं। क्योंकि सहयोगीके लिखनेसे स्पष्ट सिद्ध होता है कि, अनेक तीर्थंकरोंकी प्रतिमा एकत्र होनेके निषेधमें जैनशास्त्रसम्बधी कोई भी प्रमाण उसके पास नहीं हैं। मथुराके चौबोंकी तरह भंगकी तरंगमें पहिले तो लिख मारा है, परन्तु अब 'गये थे रौजा बख्शाने और गले पडी नमाज' की कहावत चरितार्थ हो रही है। अस्तु अब इन शास्त्रोंकी सूची लिखनेके विसवादको आगे न बढाकर हम इसके निर्णयका भार अपने सुयोग्य पाठकोंकी बुद्धि पर छोडते हैं आर सहयोगीसे प्रार्थना करते हैं कि, ऐसे मिथ्या हटाग्रहसे तत्त्वनिर्णय कदापि नहीं हो सकेगा। आगेसे उसे ऐसे हठीले लेख लिखनेकी कृपा नहीं करनी चाहिये।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि, "हमारा प्रश्न प्रथमसे ही यह है कि, तीर्थंकरोंके ४६ गुण दिगम्बर आम्नायमें मानें हैं। तिन गुणोंमेंसे किस गुणका प्रतिमामें सादृश्य है। ध्यानावस्था कुछ तीर्थंकरोंका गुण नहीं अरु न तीर्थंकर सदैव आजकल मूर्तियोंके तरह पद्मासनस्थ तथा खड्गासनस्थ रहते थे। ध्यानारूढ़ मनुष्यकी मूर्तिको तीर्थंकर सदृश मानना यह बड़ा भारी भ्रम है!" परन्तु यह लिखना भी सहयोगीका भ्रम विलास है। क्योंकि जिस प्रकार तीर्थंकरोंके ४६ गुण हैं, उस ही प्रकार ध्यानारुढ़ता आदिक पर्याय (अवस्थाविशेष) भी हैं। उस ध्यानारुढतारूप अवस्थाविशेष की अपेक्षासे तीर्थंकर और तीर्थंकरोंकी प्रतिमामें सदृशता है। ऐसा नियम नहीं है कि, गुणोंकी अपेक्षासे ही सदृशता होय अवस्थाकी अपेक्षासे सदृशता न होय।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि "तीर्थंकरोंमें प्रयोजनभूत तीन बातें सहयोगी बताता है यह भी भ्रम है। क्योंकि सहयोगी प्रथम तो तीर्थंकरोंके आत्माको निष्प्रयोजन लिखता हैं क्या स्ववचनविरोध दूषणका भी भय सहयोगीको नहीं है इससे मालूम होता है कि, हमारे लेखको सहयोगीने ध्यानपूर्वक नहीं बाँचा। इस लिये हम जैनमित्र अक १९ वेंकी उन पक्तियोंको जिनका कि उसने ऊपर इशारा किया है, यहां उद्धृत करते हैं। अर्थात् जिससमय साक्षात् तीर्थंकर मौजूद थे, उस समय उन तीर्थंकरोंमें तीन बातें थीं, अर्थात् एक तो तीर्थंकरोंका आत्मा दूसरे तीर्थंकरोंका उपदेश और तीसरे उनका शरीर। तीर्थंकरोंका आत्मा तो अमूर्त्त था, इस लिये हमारे इंद्रियज्ञानका विषय ही नहीं था। हम उसको देख ही नहीं सकते थे। केवल श्रोत्रेन्द्रियद्वारा उनका उपदेश सुनते थे और नेत्रइंद्रिय द्वारा उनके शरीरको देखते थे। वे ही दोनो बातें हमारे मंदिरोंमें मौजूद हैं अर्थात् जैसा धर्मोपदेश हमको तीर्थंकरोंसे मिलता था, वैसा ही हमको शास्त्रद्वारा मिलता है। क्योंकि उनका ही उपदेश ऋषियोंद्वारा शास्त्रोंमें लिखा गया है, और जो आनद उनके रागद्वेषचेष्टाविवर्जित शरीराकारके दर्शनसे प्राप्त होता था, वैसा ही आनंद उनकी रागचेष्टाविवर्जित प्रतिमाकारके दर्शनसे होता है। क्योंकि जैसा आकार उनके शरीरका था, वैसा ही आकार इन प्रतिमाओंका है। इस लिये उपदेश—दातृत्वेन (उपदेशदातापनेसे) जैनशास्त्र तीर्थंकर सदृश हैं, और आकारत्वेन तीर्थंकरोंकी प्रतिमा तीर्थंकर सदृश हैं।" अब सहयोगीको ये पंक्तियां बांचकर बताना चाहिये कि, हमारे परस्पर दो वाक्योंमें कौनसा स्ववचनविरोध है। मिथ्या उपालम्भ देकर अपनी बुद्धिमत्ता प्रगट करनेमें लाभ नहीं है।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि, "कंठ-तालु आदि स्थान क्या सर्वांगसे बाहिर हैं, जो उनसे वाणी नहीं निकलती। इस अनक्षरी वाणीसे तो यह प्रतीत होती है कि, तीर्थंकरोंके समीप अद्दष्टभूत कोई देव वादित्र बन जाते होंगे। यह भी ज्ञात होता है कि, कर्णेद्रियवाले सुनते तो होंगे, परन्तु अक्षररहित ध्वन्यात्मक शब्दमें समझ नहीं सकते होंगे, यदि समझते थे तो कैसे समझते थे, ये प्रमाण लिखना योग्य है। केवल प्रभुकी लीला अपार कहनेसे कोई बुद्धिमान् मान नहीं सक्ता" सो ऐसा कहना भी भ्रमात्मक है। क्योंकि तीर्थंकरोंकी वाणी एकान्तसे अनक्षरी नहीं है, किंतु जिस प्रकार अस्मदादिकोंके कंठ तालु आदिक स्थान चलनेसे शब्द निकलते हैं, उस प्रकार तीर्थंकरोंके नहीं निकलते किंतु सर्वांगसे निकलते हैं। इस अपेक्षासे तीर्थंक-

रोंकी वाणी अनक्षरी है और जिस प्रकारसे अस्मदादिक शब्द सुनते हैं, उस ही प्रकार तीर्थंकरोंके श्रोता भी अक्षर-पद-वाक्यरूप उनकी वाणीको सुनते हैं, इस अपेक्षासे तीर्थंकरोंकी वाणी अक्षरात्मक है ।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि, "उपदेशके अतिरिक्त शास्त्रको तीर्थंकरके सदृश कहना सर्वथा अनुचित है । यदि उचित है तो सहयोगी (जैनमित्र) लिखे कि, किस अपेक्षासे उचित है।" सो सहयोगीका यह लिखना भी विना विचारे है । इसका उत्तर हम पंद्रहवें अंकमें लिख चुके है और फिर भी लिखते है कि, जैसा धर्मोपदेश हमको तीर्थंकरोंसे मिलता था, वैसा ही धर्मोपदेश हमको शास्त्रद्वारा मिलता है । क्योंकि उनका ही उपदेश ऋषियोंद्वारा शास्त्रोंमें लिखा गया है । इसलिये उपदेश निमित्तत्वकी अपेक्षासे जैनशास्त्र तीर्थंकर सदृश है ।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि, "तीर्थंकरोंका ध्यानारूढ शरीर वीतरागभावका द्योतक नहीं होता, किन्तु तीर्थंकरोंका निरवद्य उपदेश वीतरागभावका द्योतक भव्य जीवोंको होता है । तीर्थंकरोंके उपदेशको सुनकर अनेक भव्य जीवोंको वीतरागभावकी प्राप्ति हुई है, और अब भी होती है न कि शरीर व प्रतिमासे । प्रतिमा तीर्थंकरोंके सदृश किसी प्रकार सिद्ध नहीं हो सकती । क्योंकि वीतराग भावके अक्सकी प्रतिमा कभी वीतरागभावकी द्योतिका नहीं होती[1]।" सो सहयोगीका ऐसा लिखना भी भ्रम मात्र है । जिस प्रकार सुंदर वेश्या तथा उसकी फोटोको देखने मात्रसे देखनेवालेके चित्तमें रागका (कामविकारका) प्रादुर्भाव होता है, उस ही प्रकार ध्यानारूढ अवस्थावाली प्रतिमा भी वीतरागभावकी द्योतिका है ।

सहयोगीको समझना चाहिये कि जैनसम्प्रदायवाले प्रतिष्ठित प्रतिमाके अतिरिक्त अन्य पाषाणखण्डको पूज्य नहीं मानते । इत्यलम्

स्त्रीशिक्षा ।

(गतांक २१ से आगे ।)

(लेखक—एम् आर दोसी फलटणकर और देवरी निवासी बुद्धूलाल श्रावक ।)

मुसलमानी अमलदारीमें हम लोगोंकी शिक्षामें अनास्था होने लगी और स्त्रीशिक्षाके विषयमें हमारी दृष्टिके आगे नाना प्रकारके कुतर्क मँडराने लगे कि, स्त्रीशिक्षासे पतिप्रेममें अन्तर पड़ता है, विनयादि गुण नष्ट हो जाते हैं, संसारमें अपकीर्ति होती है, स्वधर्मसे श्रद्धा उठ जाती है, सेव्यसेवकभाव पर पानी फिर जाता है, स्वतंत्र होकर दुष्कृत्य करने लग जाती हैं, इत्यादि इत्यादि । परन्तु प्यारे भाइयो ! ऐसे कुतर्कोंका होना बड़ी भारी मूर्खता है । शिक्षा पर यदि ये अपराध लगाये जावेंगे, तो फिर सबको अविद्याकी ही उपासना करनी चाहिये । विद्याका कभी नाम नहीं लेना चाहिये । जो विद्या अथवा जो शिक्षा मनुष्यको क्रमशः त्रैलोक्यपूज्य बनाती है, वह शिक्षा दुष्कृत्यशील बनावेगी, यह सर्वथा असंभव है । हां ! यह अवश्य है कि, कोई कोई शिक्षित स्त्रियां सुमार्ग पर नहीं चलतीं, परन्तु यथार्थमें वह शिक्षाका दोष नहीं है, कुशिक्षाका दोष है । उनके चित्तो पर सुशिक्षाका यथोचित संस्कार न होनेसे ऐसा होता है । मामूली पढना लिखना सिखा देनेका और उसके साथ धर्मशिक्षा नहीं देनेका परिणाम ऐसा ही होता है । अपक्व अन्न सबहीको हानि पहुंचाता है और **अल्पविद्या भयङ्करी होती** ही है । जिस प्रकार अमृत विषरूप नहीं हो सकता, उसी प्रकार सुशिक्षाका फल बुरा नहीं हो सकता । कोरे कागज पर जैसा अच्छा बुरा मजमून लिखोगे, वैसी ही अच्छी बुरी पुस्तक होगी । इसी प्रकार स्त्रियोंके कोमल हृदयों पर जैसी शिक्षाका रंग जमाया जावेगा, वैसे ही उनके आचरण होंगे । धर्मशिक्षाका फल बहुत अच्छा होता है ।

मानवशास्त्रके जाननेवाले विद्वानोंने बड़े २ प्रमाणोंसे यह निश्चित किया है कि, दुराचारकी ओर चित्तकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है, किन्तु उसे यदि सुशिक्षा दी जावे, तो उसके हाथसे दुराचार कम होते हैं,और जो नैसर्गिक सदाचारप्रिय है, उसपर सुशिक्षणका दूना प्रभाव पड़ता है । सुशिक्षासे मर्यादामें कमी न होकर उसे सहायता मिलती है और स्त्री पुरुषकी उन्नतिका ज्ञानवृद्धि और ज्ञानप्रसारके सदृश कोई दूसरा साधन नहीं है और न मानसिक वा शारीरिक शक्ति क्षीण, दरिद्र, परतन्त्रतासे व्याप्त, धर्मविमुख, आलसी और मरणोन्मुख जाति, देश वा राष्ट्रको सुधारनेके लिये शिक्षाके सिवाय कोई दूसरा अच्छा उपाय है । इससे सिद्ध होता है कि लड़कोंकी अपेक्षा लड़कियोंको सबसे पहले सत्कृत्य करके पुण्य सम्पादन करने, समाजोन्नति करने, और पूर्वाचार्योंके बनाये हुए पूज्यग्रंथोंका अध्ययन करके आत्मकल्याण करनेके लिये शिक्षा अवश्य ही देना चाहिये । वियोगके कारण यह रमणीय संसार जिसे दुःखप्रद जान पड़ता है और हाथोंके कङ्कण और कंठसे मंगलसूत्र अलग किये जानेसे जिसको सृष्टिसौन्दर्य शोकमय दृष्टि पड़ता है, ऐसी पतिशोकदग्ध अनाथ अबलाओंको शान्ति और धैर्य्य देनेके लिये धर्मशिक्षाके समान कोई दूसरा कल्याणकारी उपाय नहीं है ।

हमारे देशकी स्त्रियोंको अज्ञानांधकार चारों ओरसे घेरे हुए है । स्त्रियोंका धर्म क्या है, और उसके पालनेकी विधि क्या है, यह उन्हें सर्वथा मालूम नहीं रहता । जिनमंदिरोंमें जाकर आप स्त्रियोंको पुंज चढाते हुए देखेंगे, और बहुत देरतक भगवत्‌के साम्हने खडी हुई देखेंगे, तो समझेंगे कि, स्त्रियां बडी भक्तिचित्ता होती हैं । परन्तु यथार्थमें वे जो कुछ करती है, प्रायः दिखावटी करती है । रसोईकी चिन्ता, बाल बच्चोंकी कलकल, सासससुरका भय, और घरके विविध व्यापारोंसे विश्राम लेनेका वह एक सरल उपाय है । स्त्रियोंमें कम पुरुषोंमें अधिक अथवा पुरुषोंमें कम स्त्रियोंमें अधिक भक्ति होती है, ऐसा नियम नहीं है । वरन भक्तिका स्थान ज्ञान है । अज्ञानावस्थामें किसीको स्मशानवैराग्यके समान कदाचित् भक्ति हो भी तो वह अधिक समय तक नहीं रहती । इसलिये किसी गिनतीमें भी नहीं है । केवल तन्दुल चढाने और मालाके गुरिया सटकानेके सिवाय बहुत हुआ तो पूरी आदि सेकनेपर प्रथम नैवेद्य (छिटकी) अर्पण करती है । परन्तु जैनधर्म क्या वस्तु है । इसका उन्हें तिलमात्र भी ज्ञान नहीं है ।

संततिके सम्बन्धमें उन्हें शिक्षणकी अत्यावश्यकता है, यह फिर भी कहे विना नहीं रहा जाता । पाठको ! विचार करो कि स्त्रियोंसरीखा उत्तम शिक्षक दूसरा नहीं है । परन्तु शिक्षककी उत्तमता उसके मनःसंस्कार पर अवलम्बित है । संसारके सम्पूर्ण कार्य सुज्ञान स्त्री जैसी चतुराईसे कर लेती है, अज्ञान स्त्रीसे कभी नहीं हो सकते । सन्तानका योग्य अयोग्य, मूर्ख विद्वान्, अच्छा बुरा, सुशील कुशील, और रोगी निरोगी, बनाना सब माता पर निर्भर है । बालकोंके कोमल चित्तपर माताके आचरण वा उपदेशका जैसा असर होता है, वैसा बड़े २ तजुर्बेकार और होशियार मास्टरोंके उपदेशादिका नहीं होता । मनुष्यकी अच्छी बुरी प्रकृति बनानेवाली उत्तम शिक्षिका स्त्री है । सुशिक्षित माताकी सदाचारी और अशिक्षित माताकी दुराचारी निरी अज्ञान सन्तति होती है । सिवाय इसके स्त्रीके मूर्ख होनेसे पतिका जन्म कठिन कारागृहमें पड़े हुए व्यक्तिके सदृश

---

१ तीर्थंकरोंका उपदेश वीतरागभावका द्योतक नहीं है किन्तु बोधक है । द्योतक प्रतिमा ही हो सकती है ।

बीतता है। उसकी शारीरिक और मानसिक शक्तिका ह्रास होकर स्वतंत्रता जाती रहती है। वह गुलाम होकर अपनी आयु पूरी किया करता है। और ऐसी स्त्रियोंकी सन्तति शूर, तेजस्वी, स्वतत्र, और उद्योगशील कदापि नहीं हो सकती। आजकलकी निकम्मी और तेजहीन सन्तान ऐसी ही स्त्रियोंकी है। कन्याये दस बारह वरसकी होनेतक मातापिताके गृहमें रहती हैं। इसलिये ६ से १२ वर्ष तक उनकी शिक्षाका ठीक समय है। परन्तु आजकल इस विषयमें बिलकुल प्रयत्न वा चिन्ता न करके उलटे लाड प्यारसे मूर्ख, हठी, मत्सरी, क्रोधी और कलही बना देती हैं। कारण जब स्वत ज्ञानकी गध नहीं है, तो दूसरोंके लिये प्रयत्न कैसे करें? मैं तुमसे बहुत जेठी हूं, मुझे आये बहुत दिन हो गये, मेरे बाल पक गये हैं, मैं बुड्ढी हुई, ऐसा कहके समय समयपर अपनी होशयारी दिखाकर वे दूसरोंकी उन्नतिकी शिखा काटती हैं। कन्याका व्याह होनेके पश्चात् ससुराल जानेपर सासेरेवाले शिक्षणके किवाड वन्दकर देते है। कदाचित् कोई पंडितशिरोमणि पति अपनी अर्धाङ्गनीको शिक्षित बनानेमें दत्तचित्त भी हों तो, मडलीकी ओरसे उत्साह बढाना तो दरकिनार रहा, वरन उसका चित्त उद्विग्न करनेकी इच्छासे निन्दा की जाती है, इतना ही नहीं कितने एक पति इतने मूर्खशिरोमणि होते हैं कि, यदि उन्हें भाग्यसे शिक्षित स्त्री प्राप्त हुई हो, तो माहरेमें सीखी हुई उसकी विद्या शून्य हो जानेका वे यत्न करते हैं। कभी २ स्त्रिया स्वत कुछ पढने लगती हैं, तो उलटी डाट दिखाई जाती है। इत्यादि अनेक कारणों व पूर्व कथित निर्मूल विचारोंसे हमारी जैन स्त्रियां विद्याविमुख हो गई हैं। स्त्रियोंके कोमल अन्तःकरणपर शिक्षणसस्कार न होनेसे क्रोध, कपट, अभिमान, मत्सर, कुटिलता, तामस और अमर्यादा आदि अनेक प्रकारके दुराचार आ विराजते है। जिससे वे भाई बधुओमें कलह उत्पन्न होने और अलहदा २ रहनेका प्रथम कारण होती हैं। यह सब अज्ञानताहीका कारण है; और वह अज्ञानता शिक्षाके बिना कभी दूर नहीं हो सकती। और जबतक अज्ञानता दूर नहीं होगी तब तक नीतिमत्ता वा बुद्धिमत्ता कभी नहीं बढ़ सकती और न आत्मकल्याण हो सकता है। इतना ही नहीं, वरन स्त्रीके सुशिक्षित हुए बिना कोई भी समाज उन्नतावस्थाको नहीं पहुंच सकता।

कंजूस।

कृपणेन समो दाता न भूतो न भविष्यति।
अस्पृशन्नेव वित्तानि यः परेभ्यः प्रयच्छति॥ १॥

कंजूसके समान न कोई दाता हुआ है, और न होगा, जो विना छुए ही अपना धन दूसरोंको दे जाता है। सारांश यह है कि, दाता तो अपने धनको दान करके दूसरे जन्मके लिये साथ ले जाता है, परन्तु कंजूस अपने धनको हाथ भी नहीं लगाता है और मरते समय सबका सब दूसरोंके लिये छोड़कर खाली हाथ जाता है। कहो, कंजूसके समान दानी कौन है?

त्यागभोग विहीनेन धनेन धनिनो यदि।
भवामः किं न तेनैव धनेन धनिनो वयम्॥ २॥

दान और भोगरहित धनसे यदि कोई धनी कहलाता है, तो उसी धनसे हम क्यों धनी नहीं हैं? अर्थात् कंजूस जैसे अपने धनसे धनी है, उसी प्रकार उसके धनसे हम भी धनी हैं। जैसे उस धनसे हम दानभोग नहीं कर सकते, उस प्रकार वह भी नहीं कर सकता है। दोनो बराबर है।

यदधोऽधः क्षितौ वित्तं निचखान मितपच।
तदधो निरयं गन्तु चक्रे पन्थानमग्रतः॥ ३॥

जो कंजूस अपने धनको जमीनमें गढा खोदकर गढ़ाता है, वह नरकको जानेके लिये मरनेके पहले ही रास्ता बनाता है।

उपभोगकातराणां पुरुषाणामर्थसञ्चयपराणाम्।
कन्यामणिरिव सदने तिष्ठत्यर्थः परस्यार्थे॥ ४॥

जो लोग धनको केवल जोड़जोड़के रखना जानते है, उसका उपभोग नहीं कर सकते हैं। उनके घरमें जो धन है, वह उत्तम कन्याके समान केवल दूसरोके लिये ही है। अर्थात् जैसे कन्या दूसरेके भोगके लिये होती है, उसी प्रकार कंजूसोंका धन दूसरोंके लिये ही होता है।

ते मूर्खतरा लोके येषां धनमस्ति नास्ति च त्यागः।
केवलमर्जनरक्षणवियोगदुःखान्यनुभवन्ति॥ ५॥

वे लोग बड़े मूर्ख हैं, जिनके धन तो है, परन्तु दान नहीं होता है। बेचारे केवल उसके कमानेके, रक्षा करनेके और जानेके दुःखका अनुभवन करते हैं।

लुब्धो न विसृजत्यर्थं नरो दारिद्र्यशङ्कया।
दातापि विसृजत्यर्थं तयैव ननु शङ्कया॥

कहीं मैं दरिद्र (कंगाल) न हो जाऊं, लोभी इस शंकासे धन खर्च नहीं करता है परन्तु दाता इसी डरसे अपने धनको खूब खर्च करता है। इच्छा दोनोंकी एक ही है, पर विचारोंमें अन्तर है। कंजूस समझता है, मैं इस धनको खर्च करूंगा, तो यह फिर रहेगा नहीं। और दाता यह समझता है कि, मैं दान पुण्य नहीं करूंगा, तो पापके उदयसे दरिद्री हो जाऊंगा। क्योंकि दान पुण्यादि करनेसे ही धन मिलता है। ६

प्राप्तामपि न लभन्ते भोगान्भोक्तुं स्वकर्मभिः कृपणाः।
मुखपाकः किल भवति द्राक्षापाके बलिभुजां हि॥

धन पाकरके भी कंजूस लोग अपने कर्मोंके फलसे भोगोंको नहीं भोग सकते। जिस समय अंगूर पकते हैं, उस समय पापी कौए के मुखमें एक प्रकारका (मुखपाक) रोग उत्पन्न हो जाता है, जिससे बेचारा उन्हें खा नहीं सकता।

न दातुं नोपभोक्तुं च शक्नोति कृपणः श्रियम्।
किं तु स्पृशति हस्तेन नपुंसक इव स्त्रियम्॥

कंजूस लक्ष्मीका न तो दान कर सकता है, और न उपभोग ही कर सकता है, केवल हाथसे स्पर्श किया करता है। जैसे नपुंसक (षंढ) स्त्री को।

चार पुरुषार्थ।

[१]

रे मन! समुझि सोच तू अब लौं, यह दुनिया भ्रमवारी।
पावन चहत बावरे तू तो, 'खांड स्वाद खा खारी'॥
मान सुधा बैठो है जा कँह, सो विष विषम दुखारी।
रे! रे मूरख!! द्रुम करीर तें, कुसुम चहै मुदकारी॥

[२]

जो इत सब प्रकारके श्रमसे, नर सुख शाता चाहैं।
सो यह उनकी भूल सरासर, उलटे दुख अवगाहैं॥
जग प्रपञ्चमय बना हुआ है, यहां कहां सुख पाओ।
सुख सच्चा तो मोक्षधाममें, उसे खोज हरषाओ॥

[३]

यद्यपि वह अति कष्टसाध्य है, किन्तु धर्मसेवनसे।
मिल सकता है गृहीजनोंको, अर्थ-काम-युत क्रमसे॥
इन तीनोंमें अहै परस्पर, अति अविरोधी नाता।
जैसे बीज, वृक्षसे होवे, बीज, वृक्ष उपजाता॥

[४]

धर्मतत्वकहँ समुझ मनुज जे, साधन सबै निबाहीं।
अर्थ—काम नहिं त्यागहिं ता कहँ, ज्यो तनको परछाहीं॥
जहां धर्म है अर्थ—काम तहँ, बसत, आप ही नेरे।
ज्यों सुगन्ध—मकरन्द, सुमन कहँ, रहत सदा ही घेरे॥

[५]

बिना अर्थके धर्म सधै नहिं, कौनहु बने न कामा॥
भोजनके बिन पुष्ट न जैसे, जीव देह अभिरामा॥
अर्थ बहुलता निश्चय ही है, धर्म—कामकी नैया।
बिना साधना धर्म कामके, चल न सकहि वह भैया॥

[६]

पौरुष दीपक अर्थ तेलसम, बाती काम प्रमानो ॥
धर्म ज्योति है सारभूत त्यों, प्रभा मुक्ति कहँ जानो ॥
समझो 'मीर, भेद यह दीपक, करहु भक्ति इन केरी।
जासों सधै लोक अति सुखसों, अन्त मुक्ति व्है चेरी॥

सय्यद अमीरअली–देवरी।

अपवित्र केशरकी सहज परीक्षा।

विदित हो कि जैनगजट अंक ३६ ता. २४ सितम्बर सन् १९०६ में जो केशरके विषयमे लेख छपा था, वह बालसभाके साप्ताहिक अधिवेशनमें पढ़कर सुनाया गया और केशरका प्रचार बंद करनेकी कोशिश की गई। सौभाग्योदयसे यहापर एक बजाजने जो कि वैष्णव हैं, इसकी परीक्षा इस भांतिकी कि, थोडीसी केशर रातका एक मोटे कपड़ेमें बांधकर पानीमें डाल दी। उसको सुबहको पानी डालकर मलनेसे तमाम रंग उसका निकल गया और सफेदी आ गई। तब उसको खुर्दवीनसे देखा, तो उसमें मासादिकके टुकडे दिखाई दिये। यह समाचार लाला होतीलालजी उपमंत्री बालसभाने मंदिरजीमें कहे। परन्तु किसीको विश्वास नही हुआ। तब लाला रामस्वरूपजीने यह निश्चय किया कि, हम भी इसकी परीक्षा कर लें। तब उसी समय रात्रिको केशर मासे ६ सूरजमार्की जो सबसे बढियां गिनी जाती है, लेकर एक मोटे कपडेमें बांधकर पानीके लोटेमें डाल दी गई। सुबहको करीब १ घंटे तक उसको पानी डालकर खूब मली, जिससे उसका तमाम रंग निकल गया और थोडासा फोक रह गया था, जो छूनेसे चिकना मालूम होता था, उसमें तंतु भी छूटते थे। फिर उसको खुश्क करके कोयलोंकी आगपर रक्खी सो रखते ही उसमें बडी दुर्गंध (चिड़ाद) निकली जैसी कि चर्बी या मांसके जलनेसे निकलती है। यह परीक्षा दशपंद्रह भाइयोंके सामने लाला रामस्वरूपजीने खुद अपने हाथसे की थी। तब सर्व भाइयोंने यही निश्चय किया कि, जरूर इसमें मांसादिक का मिलाप है और बहुत पश्चाताप किया कि, हाय ऐसी अशुद्ध वस्तु हमने अवतक पूजनमें क्यों चढाई? पश्चात् उसी दिनसे यहांके समस्त मंदिरोंमे केशर बिलकुल बंद हो गई और चकला चंदनका मुठ्ठा पूजनके छनने इत्यादिक सर्व बदल दिये गये। अब यहांपर हारसिंगारके फूल सामग्रीमें पुष्प और दीपके बनानेके लिये इस्तैमाल होते हैं। पुजारी सुबहको थोड़ेसे फूलपानीमें भिगो देते हैं और थोडी देर बाद उनको पीसकर चावलादिक रगते हैं। इनका रंग भी केशरके समान हो जाता है। अब सर्व नगरोंके भाइयोंसे मेरी प्रार्थना है कि, इस लेखको सर्व भाइयोंको सुनाकर इस भ्रष्ट पदार्थको तत्काल बंद कर दें। ऐसा करनेसे आपको महान् पुण्यकर्मका बंध होगा। यदि आपको विश्वास न हो, तो अपने यहां परीक्षा करके देख लें और अपनी परीक्षाका फल जैनमित्र तथा जैनगजटमें छपवा दें। मुझे पूर्ण आशा है कि आप जरूर २ आलस्य छोडकर कानपुरके भाइयोंकी तरह इसकी परीक्षा करके इसके प्रचारको रोकेंगे। क्योंकि अब तक जो कुछ प्रमादके वश भूल हुई सो हुई परन्तु हे महाशयो! अब जान बूझकर कुवेंमें नहीं गिरना चाहिये। जैसे कहा भी है कि, "गई सो गई अब राख रहीको।"

आपका सच्चा हितैषी—
शम्भुदयाल मंत्री–जैनबालसभा कानपूर।

पत्रोंका सार और समाचार।

बडौदा—यहा एक दिगम्बर जैन पाठशालाकी स्थापना हुई है। जो आसोज सुदी १९ शुक्रवारको श्री कुंथुसागर महाराजके हाथसे खोली गई है। पाठशालाके एक वर्षके खर्चके लिये सब भाइयोंने उसीसमय चन्दा किया था। शा कहानदास मलूकचन्द, वीरचन्द टीकमदास, नारायण दास गंगादास इन तीन महाशयोंने चौवीस २ रुपया शा जयसिंह गंगादास, कालीदास मूलजी, अंबादास ईश्वरदासने बारह २ रुपया और वस्ताभाई किशुन, शा. मोतीचन्द, लाला पर्मानद. शा. नानचन्द तलकचन्दने छह छह रुपया चंदा दिया है। २३।) पुस्तकादिके लिये दो भाइयोंने दिये थे, कई भाइयोंने पुस्तकादि सामान अर्पण किया था। पाठशालाकी स्थापनाके समय सत्रह विद्यार्थी हाजिर थे। शा.

छगनलाल हरीलाल मंत्री।

बम्बई—हीराबाग—गत जुलाई, अगस्त, सितम्बर महीनेंमे शेठ हीराचन्द गुमानजी धर्मशालामें कुल १५९२ यात्री तथा मुसाफिर ठहरे थे, जिनमें जैनियोंकी संख्या ९७१ थी। वैष्णव मुसाफिरोंमेंसे १६ मनुष्य आफ्रिकादि देशों से लौटनेवाले और १९ वहां जानेवाले थे। यहांके औषधालयसें जिसमें कि, परोपकारके लिये औषधि बांटी जाती है, गत तीन महीनेंमें ८८४ रोगियोंने लाभ उठाया है।

माणिकचन्द रावजी।

बड़गांव- कोल्हापुर–धारवाड़ जिलेमें मुलगुंट मौजेके पास श्री जिनेन्द्रदेवके दो विशाल मंदिर है। ये दोनों अतिशय प्राचीन हैं परन्तु ऐसे जान पडते हैं, कि हालहीमें बने हैं। इस गावमें श्रावकका केवल एक ही घर है, और मिथ्यातियोंक प्राबल्य है। मन्दिरोंमें जो प्राचीन मूर्तियां हैं, दुष्ट लोगोंने इस लोभसे कि उनके नीचे गडा हुआ धन मिलेगा, मूर्तियोंको वहासे हटाकर एक कोनेमें डाल दी हैं, जिससे मिट्टी पत्थर तथा जानवरोंकी विष्टासे उनका हृदयविदारक अविनय होता है। विधर्मी लोग मन्दिरोंमे जाकर बैठते हैं, और वहां स्वेच्छाचारसे जो चाहै, सो दुष्कृत्य करते हैं। इन मंदिरोंकी जो कोई धर्मात्मा उचित व्यवस्था कर देगा, तथा जीर्णोद्धार करावेगा, उसको महान् पुण्य होगा। पाच रुपये महीनेका एक पुजारी रखनेसे और कुछ थोडासा खर्च करनेसे यहाका सब प्रबन्ध ठीक हो सकता है। नवीन मंदिर बनानेकी अपेक्षा जीर्णोद्धारका फल बहुत बडा है।

देवेन्द्र जिन्हाप्पा हंजे किणीकर।

बनारस—दिगम्बरजैनधर्मकी सफेद संगमर्मरकी एक मूर्ति जिसकी उंचाई करीब १ बेंत है, मेरे घरमें निकली है। प्रतिमा सर्वांगोपांगोसे परिपूर्ण और १००० वर्षके अनुमान प्राचीन है। मैं जैनी नहीं हूं। यदि किसीको चाहिये, तो मुझे चिट्ठी लिखना चाहिये।

पं० राधाकृष्ण गौड़ब्राह्मण राजमंदिर ठि० नं. २०२

छावनी नीमच—दि० जैन प्रान्तिकसभा मालवाके लिये एक उपदेशककी आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार १९)से २९) तक दिया जावेगा। पत्रव्यवहार हमसे कीजिये।

हजारीलाल मंत्री–उप० मंडार।

दानवीर शेठ माणिकचन्द पानाचन्दजीकी सम्मतिसे मालवा सभाके उपदेशकका दौरा दिवालीके पश्चात् बागड़ प्रान्तमें होगा। मालवा प्रान्तिकसभाके उपदेशभंडारमें उक्त शेठजीने १०० रु० प्रदान किये है।

निश्चय हुआ है कि, तम्बाकूसे नानाप्रकारके ९० से भी अधिक रोग उत्पन्न होते हैं। इन रोगोंमें अधापन और मुखरोग भी शामिल है। इंग्लैंडमें तम्बाकूका उपयोग बहुत होता है, इसलिये वहां प्रतिवर्ष तम्बाकू सेवन करनेसे उत्पन्न हुए रोगोंके कारण बीस हजार मनुष्योंको अपने प्यारे प्राण देना पडते हैं। तम्बाकू बड़ी बुरी चीज है।

साठ वर्ष पहले हिन्दुस्थानकी पाठशालाओंमें १९०००० बालक शिक्षा पाते थे। आजकल ४०००००० बालक पढते हैं। परन्तु यह सख्या जापानादि देशोंकी अपेक्षा बहुत थोडी है। विद्यार्थियोंकी संख्या इससे १० गुणी होनेपर यह देश दूसरे देशोंकी बराबरी कर सकेगा।

पाश्चात्य देशोंके राजनीतिज्ञ और विद्वान् लोग दीर्घायु होते हैं। वहांके ग्लाडस्टन, पामरस्टन, बिस्मार्क, अर्लरसेल, ड्यूक आफ वेलिंगटन और अर्ल ग्रे आदि प्रसिद्ध पुरुष ८० और ९० वर्षकी वीचकी आयु पाकर मरे हैं।

जैनियोंमें स्त्रीशिक्षाकी बहुत आवश्यकता है। इसी अभिप्रायसे गत विजयादशमीके दिन बम्बईकी मागरोल जैनसभाकी ओरसे एक स्त्रीपाठशाला स्थापित हुई है। इस पाठशालामें स्त्रियोंको दो पहरके फुरसतके वक्तमें धार्मिक शिक्षाके अतिरिक्त सब प्रकारकी सांसारिक व्यवहारिक शिक्षा भी दीजाय करेगी। शहरोंमें ऐसी पाठशालाओंसे बहुत कुछ लाभ होनेकी संभावना है।

श्रीमक्सीजीका दिगम्बरीय श्वेताम्बरीय झगडा फिरसे सुलगा है। बम्बईसे श्वेताम्बर जैन कान्फ्रेंसके सक्रेटरी मि० चुन्नीलाल दलाल, मि० महेशरीको वकील लेकर हालही ग्वालियरको रवाना हुए हैं, जरूरत पड़ेगी तो आप वहांसे बैरिष्टर भी बुलावेंगे। जान पड़ता है, मुकद्दमा खूब जोरसे चल रहा है। न जाने हमारे भाइयोंके जीमें इस मुकद्दमेबाजीमें रुपया बरबाद करनेसे कब घृणा उत्पन्न होगी।

सूचना—जैनसिद्धान्त और सुशीलाके फ़ेरम पाठकगण सम्हालके रक्खा करें। खोजानेपर फिर नहीं मिल सकेंगे। ये दोनों फ़ेरम सुभीतेके लिये हमने पहले साइजमें ही पृथक् पेज देकर छपाये हैं।

विनामूल्य जैनमित्र।

जैनमित्रके ग्राहकोंको अपूर्व लाभ।

जो भाई जैनमित्रका पेशगीमूल्य १) रुपया अगहन सुदी १५ तक भेज देवेंगे और उसके साथ सवा रुपया अधिक भेजेंगे, उन्हें निम्नलिखित पांच ग्रन्थ उपहारमें दिये जावेंगे।

१ स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा।

वैराग्य और जैनधर्मका रहस्य बतलानेवाला अपूर्वग्रन्थ मूल, संस्कृतच्छाया और हिन्दीभाषाटीका सहित है। इसमें वैराग्यके साथ साथ जैनधर्मका प्रायः सम्पूर्ण रहस्य भरा हुआ है। हम समझते हैं, जिसने इस ग्रन्थका स्वाध्याय नहीं किया, उसे वैराग्यका सच्चा आस्वाद ही नहीं मिला। यह रायल अठपेजी २०४ पेजका ग्रन्थ है। निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई सफाई देखने ही योग्य है। यह ग्रन्थ १॥) से कममें किसीको नहीं मिल सकता।

२ परीक्षामुख।

यह जैनियोंका सर्वमान्य संस्कृत न्यायका ग्रन्थ है। इसकी प्रशंसा करना व्यर्थ है। यद्यपि यह केवल संस्कृतमें है, परन्तु प्रत्येक मंदिर और भंडारमें संग्रह करने योग्य है। यह डेमी साइजके १२८ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ॥) है।

३ पंचाध्यायी।

यह ग्रन्थ अभीतक सर्वथा लुप्त था। हमने बडे परिश्रमसे ग्रन्थ लगाकर इसका जीर्णोद्धार कराया है। इसके पढनेवाले विद्वान् कहते हैं, कि जिसने इस ग्रन्थको नहीं पढा उसने जैनधर्मका असली मर्म नहीं पाया। यह संस्कृत ग्रन्थ डेमी साइजके २०० पेजका है। मूल्य ॥) है।

४ इन्ट्रोडक्शन टू जैनिज्म

Introduction to Jainism—इस अंग्रेजी ग्रन्थको जिनविजयके सम्पादक मि० लट्ठे, एम्. ए ने बडी योग्यतासे लिखा है। अन्यधर्मी विद्वानोंके दिखाने योग्य डेमी १३६ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ॥) है।

५ जैनधर्मपर व्याख्यान

मि० आपटे, बी ए का लिखा हुआ हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओंमें मिल सकता है। इसका मूल्य ।) है।

इस प्रकार सिर्फ १।) में ३।) के ग्रन्थोंका ग्राहकोंको लाभ हो सकता है अथवा सवा तीन रुपयेमें सवातीनके ग्रन्थ मिल जावेंगे और जैनमित्र वर्ष भरतक मुफ्तमें पढनेका मिलेगा। अर्थात् आमके आम और गुठलीके दाम मिल जावेंगे। इतने पर भी यदि जैनमित्रके ग्राहक न बढें, तो हम समझेंगे कि जैनियोंमें ग्रन्थोंके पढनेका शौक ही नहीं है। ऐसे सुन्दर और अमूल्य ग्रन्थोंका उपहार जैनियोंमें यह सबसे पहला है।

यह उपहार केवल उन्हीं ग्राहकोंको मिलेगा, जो नवीन वर्ष अर्थात् अष्टम वर्षका मूल्य पेशगी भेजेंगे और पिछला बकाया चुका देवेंगे। नवीन ग्राहकोंको पेशगी मूल्य ही भेजना पडेगा।

रुपया आनेपर उपहारकी पुस्तकें मैनेजर जैनमित्र द्वारा भेज दी जावेंगी। परन्तु इतना ख्याल और रखना चाहिये कि ३।) रु० के साथ ग्रन्थोंके डांक खर्चके लिये छह आना अधिक भेजना होगा।

नियत तिथिके बाद यह उपहार किसीको भी नहीं मिलेगा, एक महीनेकी मुद्दत और भी बढाई जाती है, इसलिये शीघ्रता करनी चाहिये।

यह नोटिस जैनमित्रके ग्राहक बढें, और समाजमें एक अच्छे पत्रके पढनेवालोंकी संख्या बढे, केवल इसी इच्छासे निकाला जाता है। इसमें हमारा स्वार्थ कुछ भी नहीं है। उपहारक सब ग्रन्थ तयार हैं।

जैनजातिका हितैषी—
नाथारंगजी गांधी, शोलापूर.

श्रीजैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालयमें मिलनेवाले

जैनग्रन्थोंका सूचीपत्र।

शाकटायनव्याकरण।

पाठक महाशय! जो व्याकरण पाणिनिआदि प्रचलित व्याकरणासे प्राचीन है और जिसके कर्ता दिगम्बर जैनाचार्यवर्य ुतकवलदेशीय **शाकटायनाचार्य** हैं, जिस प्राचीन जैनव्याकरणकी श्रेष्ठताके साम्हने पाणिनीयादि व्याकरण कुछ भी नहीं है, जिसके पवित्र दर्शन आपको मैकडों वर्षोंसे दुर्लभ थे, जिसकी प्रशंसामें पूर्वाचार्योंने—

इन्द्रचन्द्रादिभिः शाब्दैर्यदुक्तं शब्दलक्षणम्।
तदिहास्ति समस्तं च यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्॥

ऐसे २ प्रशंसावाक्य कहे हैं, जिसके जीर्णोद्धारार्थ हमने कई वर्ष पहिले विज्ञापन देकर प्रयत्न किया था परन्तु धर्मात्माओंकी सहायताके विना कुछ भी नहिं कर सके थे। आज एक भिन्नधर्मी पुस्तकविक्रेताकी सहायतासे उसी प्राचीन ग्रंथरत्न **शाकटायनव्याकरणकी** अनेक टीकाओंमेंसे श्रीमदभयचन्द्रसूरिविरचित **प्रक्रियासंग्रह** नामकी टीका और प्राचीन टिप्पणी तथा मू० सूत्रपाठ सहित छपाकर पुनरुद्धार किया है। मूल्य प्रथम जीर्णोद्धारके १०) रुपये थे, परन्तु हमने सर्वसाधारणके हितार्थ केवल मात्र ३।) रुपये ही रक्खे हैं डांक खर्च जुदा है।

समस्त जैनपाठशालाओंके प्रबंधकर्त्ता महाशयोंसे प्रार्थना है कि, अब पाणिनीयादि अन्यमतके व्याकरणोंको न पढाकर समस्त पाठशालाओंमें इसीका प्रचार करके आचार्यमहाराजके परिश्रमको सफल करें, जिससे हम भी इस व्याकरणकी अन्यान्य टीकाओंके जीर्णोद्धारमें लग जावे।

पाठक महाशय! यह व्याकरण ऐसा वैसा नहीं है किन्तु प्रत्येक संस्कृत पाठशालाओंके अतिरिक्त प्रत्येक जिनमंदिरजीमें भी इसकी एक एक प्रति रखनी चाहिये। क्यों कि आपके यहां जब कोई अन्यमती विद्वान् आवें तो उनके सामने इस ग्रंथको रख देनेसे वे आपको और अपनेको बडा धन्यवाद देंगे कि आज हमको एक प्राचीन व्याकरणरूपी रत्नके पवित्र दर्शन हुए और साथ ही साथ जैनाचार्योंकी प्रशंसा भी करेंगे। अतएव सब जगहके भाइयोंको एक एक प्रति लेकर अपने यहांके सरस्वतीभंडारमें अवश्य ही विराजमान करना चाहिये।

अध्यात्म तथा भक्तिरसका भंडार.

भाषासाहित्यका शृंगार-

बनारसीविलास।

ग्रंथकर्ता कविवर बनारसीदासजीके

बृहत् जीवनचरित्रसहित।

बहुत थोडे लोग ऐसे होंगे, जिन्होंने आगरा निवासी स्वर्गीय कविवर बनारसीदासजीका नाम न सुना हो आपकी कविता ऐसी मनोरम और चित्ताकर्षक है कि, एकवार पढकर फिर छोडनको जी नहीं चाहता, निरंतर पढते रहना ही सुहाता है। भाषासाहित्यमें आपसरीखी सुंदर रसालंकारादि काव्यके अंगोंसे परिपूर्ण कविता बहुत थोडी है। जिन्होंने नाटकसमयसारग्रंथकी अध्यात्मरससे सराबोर कविताका पाठ किया है, वे जानते हैं कि, आप कैसे प्रतिभाशाली कवि थे। आपके बनाये हुए कई ग्रन्थ हैं, उनमेंसे अभीतक नाटकसमयसारके सिवाय और कोई भी ग्रंथ मुद्रित नहीं हुआ था। इसलिये हमने बडे परिश्रम और अथक्क यत्नसे आपका यह दूसरा ग्रंथ **बनारसीविलास** छपाके तैयार किया है। यह ग्रन्थ बनारसीदासजीकृत जिनसहस्रनाम, सूक्तमुक्तावली (संस्कृत सहित), ज्ञानबावनी, वेदनिर्णयपञ्चासिका, अध्यात्मफाग, शारदाष्टक परमार्थवचनिका, उपादाननिमित्तकी चिट्ठी, अध्यातमपद संग्रह आदि—

५९ ग्रंथरत्नोंका—

संग्रह है। इस संग्रहसमूहको ही **बनारसीविलास** कहते हैं। बनारसीदासजी सरीखे प्रसिद्ध कविवरकी कविताकी प्रशंसा करना एक प्रकारसे व्यर्थ ही है, परन्तु हम अपने ग्राहकोंसे इस विषयमें इतना कहे विना नहीं रह सकते कि, यदि आपको अध्यात्म, भक्ति और विविधप्रकार उपदेशयुक्त वैराग्यादि रसोंका अपूर्व आनंदका अनुभव करना है, तो एक बार इस ग्रन्थसरोवरमें अवश्य ही गोता लगाइये।

इस ग्रन्थके प्रारंभमें ११३ पृष्ठोंमें ग्रन्थकर्ता कविवर बनारसीदासजीका सविस्तर जीवनचरित्र दिया गया है। हिन्दीमें इतना बडा और इतना विश्वस्त जीवनचरित्र आजतक किसी भी कविका प्रकाशित नहीं हुआ है। इसे पढकर अवश्य ही प्रसन्न होंगे। इसमें न केवल ग्रन्थकर्ता और उनके समयका इतिहास ही विदित होता है, परन्तु अनेक अनुकरणीय शिक्षायें भी प्राप्त होती हैं। प्रत्येक साहित्यप्रेमी तथा स्वाध्यायनिरत जैनीभाइयोंको इस ग्रन्थका संग्रह अवश्य करना चाहिये। जगत्प्रसिद्ध निर्णयसागरके सुंदर टाईपमें चारों तरफ बेल लगाकर बडी सुंदरतासे इसकी तयारी हुई है लगभग ४०० पृष्ठोंमें यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ है। सर्वसाधारणके सुभीतेके लिये मूल्य भी सिर्फ १॥) रक्खा है, डाक खर्च ≤) जुदा पडेगा।

सुकुमाल उपन्यास।

सुकुमाल चरित्रको प्राय सब ही जैनी जानते हैं, यह एकवार जैनबोधक मासिकपत्रमें छपकर पृथक् भी प्रकाशित हो चुका है, परन्तु इसकी कथा इतनी मनोहर है कि, वह १) रु मूल्य होने पर भी हाथों हाथ विक गया।

उसकी भाषा ढूंढाडी थी, जिसको सब देशके जैनी भाई नहीं समझ सकते थे। इसकारण हमने अब प्रसिद्ध लेखक आरानिवासी श्रीयुत बाबू जैनेन्द्रकिशोरजी मन्त्री आरानागरीप्रचारिणी सभासे उपन्यासके ढंगमें उपन्यासकी मनोहर भाषामें लिखवाकर छपाया है मूल्य ।≈) डाक खर्च जुदा।

नित्यनियम पूजा बडी।

संस्कृत और भाषा।

जिसमें सिद्धोंकी द्रव्यपूजा और भावपूजा दोनों हैं, तथा द्यानतरायजीकृत देवगुरुशास्त्रकी भाषा पूजा और तथा बीस विहरमानकी भाषा पूजा और लघु अभिषेक, शान्तिपाठ, विसर्जन, अन्तकी स्तुति भी संग्रहीत है। बडे २ अक्षरोंमें बलदार निर्णयसागरमें पुष्ट कागजोंपर बहुत शुद्ध छपाया है मूल्य ।-)

संस्कृत जैनग्रंथ.

न्यायदीपिका मूल	।।।)
परीक्षामुख प्रमेयरत्नमाला टीका	।।)
कातन्त्ररूपमाला व्याकरण	१)
सर्वार्थसिद्धि पूज्यपादस्वामिकृत	२।।)
सुभाषितरत्नसंदोह-अमितगत्याचार्यविरचित मूल	।।।)
जैननित्यपाठसंग्रह १६ पाठोंका रेशमी गुटका	।≈)
सनातनजैनग्रन्थमाला प्रथमगुच्छक—(१४ ग्रंथ)	१)

भाषा जैनग्रंथ.

जैनविवाहपद्धति भाषाटीकासहित		।।।)
भक्तामरमूल हिंदी अर्थ और गुजराती पद्यसहित		।)
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला हिंदी और मराठी अर्थसहित		।≈)
द्रव्यसंग्रह मूल, छाया, अन्वय, हिंदी मराठी अर्थसह		।≈)
रत्नकरंडश्रावकाचार अन्वयार्थसहित द्वितीयावृत्ति		।)
धनंजयनाममाला संस्कृतका जैनकोष भाषाटीकासहित		।)
जैनधर्मामृतसार दूसरा भाग हिंदी और मराठी अर्थसहित		१)
सप्तभंगितरंगिणी भाषाटीकासहित		१)
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय नाथूराम प्रेमीकृत अन्वय और भाषाटीकासहित		१।)
पंचास्तिकाय संस्कृत छाया, अन्वय तथा संस्कृतटीका और भाषाटीकासहित		१।।)
अजनासुंदरी नाटक—बहुत बढिया		।।)
सुकुमाल उपन्यास*		।≈)
जैनबालबोधक प्रथमभाग पन्नालालकृत		।)
जैनबालबोधक पूर्वार्ध	,,	-।।)
जैनबालबोधक दूसरा भाग	,,	।।)
हिंदीकी पहिली पुस्तक	,,	=।।)
हिंदीकी दूसरी पुस्तक	,,	।)
हिंदीकी तीसरी पुस्तक	,,	।=)
जैनस्त्रीशिक्षाप्रथमभाग	,,	=)
स्त्रीशिक्षा दूसरा भाग	,,	≡)
नारीधर्मप्रकाश	,,	≡)
कातंत्रपंचसंध्या भाषाटीकासहित	,,	=)
बालबोधव्याकरण संस्कृतका हिंदीमें प्रथमभाग		।=)
बालबोधव्याकरण दूसराभाग		।=)
दंपतिसुखसाधन प्रथमभाग		=)
चौबीसठाणाकी चर्चा नयी छपी		।-)
ब्रह्मविलास (भगवतीविलास)		१।।)
निर्वाणकांड मूल भाषा और महावीरस्वामीकी पूजा		)।।।
सहस्रनाम भाषा बनारसीदासकृत		-)
इष्टछत्तीसी बम्बईका छपी सार्थ		)।।
दर्शनपाठ संस्कृत, दौलतदर्शन व बुधजनकृतस्तुति		-)
छहढाला दौलतरामजीकृत बम्बईका छपा		-)
भक्तामरभाषा और संस्कृत	,,	-)।।
पंचमंगल रूपचंदजीकृत बम्बईका छपा असली शुद्धपाठ		-।।)

सब प्रकारके ग्रंथोंके मिलनेका ठिकाना—

पन्नालाल जैन पो० गिरगांव-बम्बई.

'कर्नाटक' प्रेस, बम्बई

Registered No. B 288.

जैनमित्र

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने, तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशागी लिया जाता है ।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मैनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
मोरेना (ग्वालियर)।

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—**गोपालदास बरैया** ।

वर्ष ८ वां] मार्गशीर्ष कृष्णा २ संवत् १९६३ विक्रमाब्द । ता० ३ नवम्बर सन् १९०६ ईस्वी । [अंक २ रा ।

जैनमित्रके फाइल ।

सप्तम वर्षके थोडेसे फाइल हमारे पास मौजूद हैं । हम उन्हें जल्दी बेचना चाहते हैं, इस लिये इस समय बहुत थोड़ी कीमतमें ग्राहकोंको मिल जावेंगे । देर करनेसे दूनी कीमतमें भी नहीं मिल सकेंगे । जैनमित्रके सप्तम वर्षमें कैसे २ बढ़ियां लेख छपे हैं, सो किसीसे भी छुपे नहीं हैं । हिन्दीके किसी भी जैनपत्रमें आज तक ऐसे बढ़ियां संग्रह करने लायक लेख नहीं छपे हैं । समाचार और थोडेसे समाज सम्बन्धी लेखोंके सिवाय बाकी सब ही लेख हमेशा पढ़ने योग्य और कामके हैं । इसके सिवाय जैनसिद्धान्तके १० फार्म और सुशीला उपन्यासका पूर्वार्द्ध (१० फार्म) भी उसके साथ मिलता है, जिन दोनोंकी कीमत प्रथक् छपने पर कमसे कम १।) रु० होगी । ऐसे उत्तम फाइलको दिसम्बर महीनेके अखीर तक हम सिर्फ १॥) में ही देना चाहते हैं, जिल्द सहित मंगाने वालेको १॥।) लेंगेगे और भी सुभीता यह है कि, डांकखर्च हम अपना लगा देंगे ।

सुशीला उपन्यास

प्रथमभाग ।

रायलके बड़े २ अस्सी पेजोंका बहुत बढ़ियां उपन्यास जिससे कि मनोविनोदके सिवाय धार्मिक शिक्षायें भी मिलती हैं, तयार है । एक बार पढ़ना शुरू करनेसें फिर छोड़नेको जी नहीं चाहता है, मूल्य सर्व साधारणसे दश आना जैनमित्रके ग्राहकोंसे आठ आना । डांक खर्च माफ ।

ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा !

—:o:—

विज्ञापन छपानेवालोंको और बँटानेवालोंको ।

अबकी वार हमने जैनियोंके अतिरिक्त सर्व साधारण लोगोंके भी विज्ञापन छापने और बांटनेका बन्दोबस्त किया है । और बहुत थोड़ा चार्ज लेकर किया हैं । सिर्फ इस साइजके तीन पेजके विज्ञापनोंके लिये हमारे पास जगह हैं, इस लिये विज्ञापन छपानेवालोंको शीघ्रता करनी चाहिये । प्राय. पूरे वर्ष भरके लिये हम ऐसे विज्ञापनोंका ठेका करेंगे, इसलिये जगह भर जानेपर फिर गुंजाइश न रहेगी । जैनियोंमें हमारे पत्रका प्रचार बहुलतासे हैं, जिससे विज्ञापनवालोंको फायदा भी खूब होगा । विज्ञापन बँटानेवालोंको "जैनमित्र अंक अमुकका क्रोड़पत्र" छपानेके सिवाय कमसे कम एक कालिम समाचार भी अपने विज्ञापनोंमें छपाना होगा । अश्लील विज्ञापन न तो इस पत्रमें छपेंगे और न बँटेंगे । विज्ञापन छपाने बटानेकी दर पत्रद्वारा तय करनी चाहिये ।

पत्रव्यवहार इस पतेसे कीजिये

मैनेजर—जैनमित्र
पो. मोरेना (ग्वालियर)

पहले अंककी रवानगीमें गड़बड़ ।

—:o:—

गलतीसे पहला अंक रवाना करते समय ठिकानोंकी दो लिष्टें मिल जानेके कारण हमारे अनेक ग्राहकोंके पास पहले अंककी दो २ कापियां पहुंची होंगी और अनेकोंके पास बिलकुल नहीं पहुंची होंगी, ऐसी संभावना है । इसलिये प्रार्थना है कि, जिन ग्राहकोंके पास पहला अंक नहीं पहुंचा हो, वे एक २ कार्ड लिखकर हमको सूचना दें, हम तत्काल ही उनके पास पहला अंक भेज देंगे । और जिनके पास दो २ कापिया पहुंच गयी हैं, वे कृपाकरके एक कापी अपने किसी इष्ट मित्रको देकर और प्रेरणा पूर्वक उन्हें ग्राहक बनाकर भेजें । कार्ड ग्राहक बननेका साथ में रवाना किया गया है ।

जैनमित्र.

मार्गशीर्ष कृष्णा २ संवत् १९६२ विक्रमाब्द।
ता० ३ नवम्बर सन् १९०६ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

समालोच्य और समालोचक।

समालोचना की जाती है, इसलिये कि आलोच्य विषयके दोष दूर हो जावे। परन्तु यदि आलोचक इस अपराधपर छिद्रान्वेषी और शत्रु बतला दिया जावे, तो समझना चाहिये कि, वह (आलोच्य) अपने दोषोंको सुधारना नहीं चाहता और उन दोषोंसे उसकी अत्यन्त प्रीति है। यद्यपि समालोचकके आगे वह अपने दोषोंको गुणरूप सिद्ध करके नहीं बतला सकता और लोग भी उसे दोषी ही समझते है, परन्तु अकसर दोषोंसे ऐसी प्रीति सी हो जाया करती है, कि वह उनके छोड़नेका प्रयत्न स्वप्नमें भी नहीं करता, उलटा समालोचकको बुरा भला कहनेकी ढीटता दिखाकर हँसी कराता है। परन्तु फिर समालोचकको आवश्यकता नहीं है कि, उससे विवाद करै। आलोचनाका कार्य था, सो कर चुका। फिर कभी उचित समझेगा, तो टूटी फूटी दो बातें कह देगा।

नयेनगरकी खंडेवाल जातिके नियम।

नयेनगरकी खंडेलवाल जैनजातिकी एक नियमावली हमारे पास आई है, उसके देखनेसे हमको हर्ष हुआ। प्रत्येक जातिमें इस प्रकारके नियम बननेकी बहुत आवश्यकता है। जब तक प्रत्येक जातियों और पंचायतियोंके बंधन सुदृढ़ नहीं किये जावेगे, तब तक हमारे सामाजिक तथा धार्मिक कार्य चलना कठिन है। नयेनगरके भाइयोंने जो २ नियम बनाये हैं, उनमें निम्नलिखित बड़े अच्छे हैं—१ जो भाई अपनी लड़कीकी सगाई रुपया लेकर करेगा, उसे उसी व्याहमें जातिसम्बधी ज्योंनार की इजाजत नहीं दी जावेगी। २ फेरेके दिन तथा और प्रत्येक मंगल कार्यमें जो स्त्रियां भंड गालिया गाती है, और उसी तरह बकती हुई बाजारोंमेंसे निकलती हैं, वे बन्द रहेंगी। ३ विवाह शादियोंमें आतिशबाजी छोड़ना और फुलवाड़ी लुटाना बन्द रहेगा। ४ मरने पर उठावनेके वक्त स्त्रिया मन्दिरोंको रोती हुई जाती हैं, आयन्दा उनका रोता हुआ जाना बन्द रहेगा।

सोनागिरके भट्टारक महाशय।

पाठकोंको स्मरण होगा कि, बम्बईवालोंने श्रीसम्मेदशिखरजीकी वीसपंथी कोठीका मुकद्दमा ग्वालियरके भट्टारक महाराजपर दायर किया था। उसमें यतिजीने जवाबदेहीमें यह साबित किया था कि, हिन्दुस्थानके किसी जैनीको हमसे हिसाब लेनेका हक नहीं है। इस मुकद्दमेमें यतिजीने बड़े सबूत दिये, परन्तु वे हार गये। अदालतने यह तजबीज किया कि, कोई तीर्थक्षेत्र मदिर या धर्मस्थान किसी एक पुरुषकी जायदाद नहीं है। धर्मस्थान प्रत्येक मनुष्यके धर्मसेवनके लिये है। फिर जिस तीर्थक्षेत्रपर सारे भारतवर्षके जैनी द्रव्य चढाते हैं, उसपर किसी एकका स्वामित्व कैसे हो सकता है? ऐसा ही स्वामित्व अब श्रीसोनागिर तीर्थपर वहांके भट्टारक महाशय समझकर तीर्थक्षेत्रकमेटीको वहाका हिसाब नहीं देते है। परन्तु यह स्वामित्व अब चल नहीं सकेगा। भट्टारकजीको चाहिये कि, वे इस निकम्मेपक्षको छोडकर तीर्थक्षेत्रकमेटीको अदालत तक न जाने दें, और उस प्रान्तके दश पाच प्रतिष्ठित पुरुषोंको नियुक्त करके वहांका सुप्रबंध करें। ऐसा करनेसे यश और पुण्यलाभ दोनों हो सकते हैं। उस प्रान्तके भाइयोंको भी चाहिये कि, भट्टारक महाराजको समझाकर सुमार्ग पर ले आवें।

विलायती शक्कर और देशी कारखाने।

हम लोगोंकी असावधानीसे थोड़े ही दिनोंमें विलायती शक्करकी इतनी खप बढ गई है, और देशी कारखाने इस तरह डूब गये हैं कि, यदि थोडे ही दिन और न चेतते, तो भारतवर्षमें देशी शक्कर शायद खोजनेसे भी नहीं मिल सकती। परन्तु हर्षका विषय है कि, लोगोंमें अब विलायती शक्करसे इतनी घृणा उत्पन्न हुई है और इतना जोश फैला है कि, यदि कुछ दिन यह जोश इसी तरह जारी रहा, तो यहाके कारखाने बढ़कर फिर ज्योंके त्यों हो जावेंगे और विलायती शक्करका देशसे काला मुंह हो जावेगा, जिसने कि हमारे धर्म, धन और शरीर तीनोंको नष्ट कर डाला है। भारतवर्षमें सन् १८८४–८५ में विलायती शक्कर २ करोड़ १४ लाख ८ हजार तीनसौ अस्सी रुपयेकी आई थी, परन्तु सन् १९०३–०४ में यहापर उसकी खप ९ करोड़ ९३ लाख ९७ हजार ७३९ रुपयेकी हो गई। और १८८४–८५ में यहांके देशी कारखानोंसे जो १ करोड़ १९ लाख ५ हजार २७१ रुपयेकी शक्कर तयार होती थी, उसकी जगह अब सिर्फ एक करोड़ १४ लाख रुपयके अनुमान तयार होने लगी है। इसको सुनकर किसे दुःख नहीं होगा कि, सन् १८९४ में हमारे यहां जो २६४ शक्करके कारखाने थे, वे घटते घटते ऐसे घटे कि, १९०३–०४ में सिर्फ २१ रह गये। सिर्फ १० वर्षमें इस विलायती राक्षसिने हमारे २४३ कारखानोंका भक्षण कर डाला।

एक नया मासिक पत्र।

हमारा दिगम्बरजैनसमाज हिन्दी, मराठी, गुजराती, कानड़ी, उर्दू, और अंग्रेजी इस प्रकार छह भाषाओंका जाननेवाला है। इनमेंसे एक गुजराती ही एक ऐसी भाषा थी कि, जिसमें हमारा कोई पत्र नहीं निकलता था शेष पाच भाषाओंमें एक एक दो दो पत्र निकलते हैं। हर्षका विषय है कि, अब इस त्रुटिकी पूर्ति भी शीघ्र होनेवाली है। अहमदाबादके शेठ प्रेमचन्द मोतीचन्द दि० जैन बोर्डिंगस्कूलकी ओरसे "दिगम्बरजैन" नामका एक मासिकपत्र आगामी महीनेसे प्रकाशित होने लगेगा। श्रीयुत हरजीवन रायचन्दजी आमोदवाले इसके सम्पादक होंगे। धार्मिक आचरणोंसे और धार्मिक जागृतिसे हमारा गुजराती समाज सर्वथा शून्य हो रहा है। हमको आशा है कि, "दिगम्बरजैन" इस पवित्र नामको धारण करनेवाला उक्त पत्र अब गुजरात प्रान्तको बहुत जल्दी प्रबुद्ध कर देगा। गुजराती भाइयोंको इस पत्रके ग्राहक बनकर लाभ उठाना चाहिये और प्रकाशकका उत्साह बढ़ाना चाहिये।

दिवसानुष्ठान।

(४)

जो दूसरोंको अपने समान जानता है, उसका कोई भी शत्रु नहीं होता। परिजन, दिन, शकुन और वायुकी अनुकूलता ये सिद्ध होनेवाले कार्यके चिन्ह हैं। अर्थात ये सब अनुकूल हों, तो समझना चाहिये कि, कार्यसिद्धि अवश्य होगी। रात्रिको अथवा दिनमें

अकेले नहीं घूमना चाहिये। मन, वचन और शरीरको सदा नियमित रखना चाहिये। नक्षत्रोंका दर्शन होनेतक दिनमें सन्ध्याकी उपासना करना चाहिये। इसके पश्चात् (राजाको) समाविस्थ होकर "**चतुःपयोधिपयोधरां धर्मवत्सवती उत्साहवालधिं वर्णाश्रमखुरां नय-प्रतापविषाणा सत्यशौचचक्षुर्षी न्यायमार्गाभिमुखी अहमिमां गां गोपयामि, अतस्तमहं मनसापि न सहे योऽपराद्धेदेनस्यै**" इस मन्त्रका जाप करना चाहिये। इस मन्त्रका अर्थ यह है कि "जिसके चारो समुद्ररूपी स्तन है, धर्मरूपी बछडा है, उत्साहरूपी पूछ है, चारों वर्णरूपी चार खुर है, नय और प्रतापरूपी सींग है, सत्य तथा शौचरूपी नेत्र है और न्यायमार्गरूप मुख है, ऐसी पृथ्वीरूपी गायकी मैं रक्षा करता हू। इसलिये मै उसे मनसे भी सहन नहीं कर सकता, जो इसका अपराध करता है, अर्थात् प्रजाको दुख देता है।

किसी २ का मत है कि, दिनमें चक्रवाक पक्षीकी नाईं कामसेवन करनेकी इच्छा करनेवाले पुरुषको रात्रिमे भोजन करना चाहिये और चकोर पक्षीकी नाईं रात्रिरमणकी इच्छावालेको दिनमे भोजन करना चाहिये। परन्तु अनेक वैद्यविद्याविशारद कहते है कि, रात्रिको हृत्कमल और नाभिकमल सकुचित हो जाता है, इसलिये रात्रिभोजनका परिणाम अच्छा नहीं होता है। पारावतकी (कबूतरकी) नाईं कामेच्छावालोको पुष्टयोगोंका सेवन करना चाहिये। जिसने एक ही वार बछडा दिया हो, ऐसी गायके उत्तम दूधमें सिद्ध की हुई उडदकी दालकी खीर कामवृद्धि करनेके लिये उत्कृष्ट रसायन है। जिसे पुरुषकी इच्छा नहीं हो, ऐसी स्त्रीका सेवन नहीं करना चाहिये।*

भूख, प्यास, पाखाना और पेशाबकी हाजतसे व्याकुल अवस्थामे स्त्रीसंभोग करनेसे अच्छी संतान नहीं होती। संध्या (प्रात साय) कालमे, दिनमें, जलमें, और देवमन्दिरोमे मैथुन वर्जित है। पर्वकी (अष्टमी चतुर्दशीकी) संधिमें, उपद्रवयुक्त दिनमें और दिनमें कुलस्त्रीका सेवन नहीं करना चाहिये। किसी भी स्त्रीके साथ उसके घर जाकर शयन नहीं करना चाहिये।

वंश, अवस्था, आचरण, विद्या, और वैभवके प्रतिकूल वेषधारण तथा आचार किसको विडम्बित नहीं करता? राजमंदिरमें अपरीक्षित और अशोधित किसी भी पुरुषको न तो जाने देना चाहिये और न वहासे निकलने देना चाहिये। सुनते है कि, कुन्तलदेशके राजाके भेजे हुए स्त्रीवेषधारी जासूसने छुपी हुई तलवारसे पल्हवनरेन्द्रको मार डाला था और हयपतिने मेढेके (मेषके) सींगमे छुपाये हुए विषसे कुशस्थलके राजाका वध कर डाला था। परन्तु ऐसा होनेपर भी सर्वत्र अविश्वास नहीं करना चाहिये, क्योंकि अविश्वाससे कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होता है। (नीतिवाक्यामृत)

नाथूराम प्रेमी।

मेवाड़में जैनी।

(टाड राजस्थानसे उद्धृत)

जैनसम्प्रदायके अनुयायियोंकी सख्या और शक्तिके विषयमे यूरोपवासियोंको बहुत थोडा ज्ञान है। वे जानते है कि, जैनियोकी सख्या बहुत थोडी है, और वे जहा तहा बिखरे हुए है। परन्तु ऐसा नहीं है। उनके राजकीयबलका विस्तार बतलानेके लिये इतना ही कहना बस होगा कि, इस धर्मके अनेक गच्छोंमेसे एक खडतरगच्छके धर्माधिकारियोंके (आचार्योंके) ही भारतवर्षमे जुदी २ जगहोंपर ११००० धर्मोपदेश करनेवाले अनुयायी है! और उनकी सिर्फ एक जाति ओसक अथवा ओसवालोंके ही १००,००० कुटुम्ब है। भारतवर्षके व्यापारी—धनका आधेसे भी अधिक भाग जैनी गृहस्थोके हाथोंके नीचेसे निकलता है। राज्यके और टैक्सोंके अधिकारी बहुधा जैनी ही है। इसी प्रकार लाहौरसे लेकर समुद्रपर्यन्तके सराफोका भी बहुभाग जैनियोका है। उदयपुर और राजपूतानेके मुख्य २ शहरोंके न्यायाधीश और न्यायके पच तथा अधिकारी इसी सम्प्रदायके माननेवाले हैं। मेवाड जैनधर्मके अनुयायियोंको प्राचीनकालसे आश्रय स्थान देता आया है, क्योंकि जैनधर्म राणाके पूर्वजोंके प्रथम मुख्यनगर बल्लभीका धर्म था। और इस धर्मके विद्वानोंने प्रारब्धकी न्यारी न्यारी आपत्तियोंमें राणाके कुटुम्बको आश्रय दिये थे, जिनके प्रदर्शित करनेवाले अनेक स्मारक हैं। चित्तौड़में अतिशय उत्तम रीतिसे रक्षा किया हुआ एक खडहररूप विशालस्तंभ है, जिसपर अत्यन्त परिश्रमसे नक्शानिगारीका काम निकाला गया है। यह ७० फीट ऊंचा है और पार्श्वनाथको अर्पण किया गया है। पवित्र इमारतोंकी ढंगके उत्तमोत्तम खंडहर मारवाडमें ही नहीं, किन्तु सारे पश्चिम भारतमें केवल बौद्ध और जैनियोंके ही हैं और अनेक प्राचीन नगरोंमें जिनमें कि इस धर्मका पालन होता था, ऐसे सैकडों लेख मिले हैं कि, जो इस देशमें जैनियोंके अपार वैभवको सिद्ध करते है और जिनका इतिहासके साथ घनिष्ट सम्बन्ध है। वशावली सम्बन्धी लेख भी यह अच्छी तरहसे साबित करते हैं कि, राजपूत समाजमें जैनी एक उत्कृष्ट स्थितिका उपभोग करते थे और अद्यापि उन्हें जो हक (स्वत्व) मिले हुए हैं, वे यह बतलाते है कि, यहा किसी भी विषयमें जैनियोंकी उपेक्षा नहीं की जाती।

इस धर्मके अनुयायियोंके प्राचीन अथवा अर्वाचीन इतिहासके सम्बन्धमें यह बतलानेके लिये कि, उनकी स्थापना किस बुनियादपर हुई है, मैं कुछ अधिक नहीं कहना चाहता। यहा केवल उनको मिली हुई इनामें, सनदें और उनके लाभके लिये बनाये हुए नियमोंकी नकलें देना ही इस विषयमे बस होंगी। राजस्थानके इन केवलीके माननेवालोंके सम्बन्धमें अब तक जो कुछ प्रकाश हुआ है, उसमें वृद्धि करनेके लिये मै कभी फिर प्रयत्न करूंगा।

जैनियोकी पृथक् पडी हुई ये जातियां ज्ञानकी आकर है। मेरी समझमें अब तक उस ज्ञानकी बराबरी यूरोपियन लोग नहीं कर सके है। जैनधर्मके स्तभरूप अणहलवाडाके अरण्यमें जो जैसलमीर है वहां, खभातमे, और दूसरे अनेक अप्रख्यात स्थलोमें जो भडार है, उनमें जैनियोंके हजारों प्राचीन ग्रथ है। ये ग्रन्थ केवल साधु मुनियोंके ही अधिकारमें नहीं है, किन्तु जातिके श्रीमन्त और माननीय श्रावकोंके अधिकारमें भी है। ये सब ग्रन्थ उनके मन्दिरोमें जो भोहरे होते हैं, उनमें बडी हिफाजतसे रक्खे गये है। इस जातिके (भोहरे वगैरहके) रक्षा करनेके उपायोसे उस समय ग्रन्थोकी नाईं इनकी ईश्वररूप प्रतिमाओंकी भी अच्छी तरहसे रक्षा होगई है। मुसलमान चढाई करनेवाले उनके मन्दिरोंका शिव और विष्णुकी अपेक्षा भी अधिक नाश करते, परन्तु जिनेन्द्रकी प्रतिमाओंकी रक्षा होनेका कारण उनकी स्वाभाविक बनावट ही जानी जाती है। क्योंकि उस समय जब कि लाहोरसे लेकर रामेश्वर तक सूर्य तथा विष्णुकी प्राचीन प्रतिमायें एक दो भी शेष नहीं रही होंगी, आदिनाथ, नेमि और पार्श्वनाथकी प्रतिमायें हथोडा पडती हुई बच गई हैं। इन आस्तिक्यवादियोंके दोनों हाथ (कायोत्सर्ग मूर्ति-

* इसके आगे छह सात वाक्य कामशास्त्र सम्बन्धी हैं, जिन्हें अनुपयोगी जानके लिखना उचित नहीं समझा।

योंके दोनों प्रलम्बभुज) ही उनकी रक्षाके लिये बस थे, परन्तु वहेश्वरवादियोंकी प्रतिमायें मुसलमानोंकी दया नहीं पा सकी थीं।

पांचवे अंककी पूर्तिमें औरगजेबके प्रतिपक्षी और प्रख्यात विजयी योद्धा राणाराजसिंहकी दी हुई सनदका अनुवाद दिया गया है। उक्त सनद सामान्य और विशेष दो प्रकारकी है और जैन समुदायके प्राचीन हकोंको साबित करनेवाली है तथा मनु नामके प्रतिष्ठित मुनिकी ओर जो भाव थे, उनकी चिन्हस्वरूप है। यह प्रसिद्ध है कि, प्राचीन एथेनियन कानून बांधनेवाले ट्रीप्टोलीमसकी नाईं जैनियोंका प्रथम कानून यह है कि, "किसीकी हिंसा मत करो!" यह आज्ञा सूक्ष्मसे सूक्ष्म प्राणियोंकी भी रक्षा के लिये है। इस आज्ञापत्रकी पहली कलम उत्साहपूर्वक स्वीकार किये हुए उपर्युक्त सिद्धान्तका उल्लंघन करनेसे अर्थात् दूसरे प्रकारका मार्ग ग्रहण करनेसे रोकती है। दूसरी कलम कहती है कि, जो जीव बध होनेके अभिप्रायसे जैन स्थानोंके निकटसे निकलता है, वह अमर हो जाता है। तीसरी कलम प्रगट करती है कि, कोई भी अपराधी जैनियोंके उपाश्रयकी शरण लेवे, तो वह बच जाता है। इस प्रदेशके लोगोंके लिये यह उत्तमसे उत्तम हक है। चौथी कलम खेती और व्यापारके लाभपर दशांश लेनेकी आज्ञा देती है और आयसम्बन्धमें शिव तथा विष्णुके भक्तों और जैनियोंके अनुयायियोंमें कुछ भी अन्तर नहीं रखती है। इसकी विशेष चरचा नाथद्वारेके वर्णनमें की जावेगी। पांचवीं कलममें इस सनदके प्राप्त करनेवाले साधुको दी हुई खास भेंटका जिकर है और इस आज्ञापत्रके विरुद्ध वर्ताव करनेवालेको उस समयकी पद्धतिके अनुसार आन (कसम) दी गई है। राम्मी और वारकोल शहरके स्तंभोंपर खुदे हुए लेख छट्ठे और सातवें अंककी आज्ञायें है, जो कि प्रगट करते है कि, राणाके कुटुम्बीजन जैनियोंके नियम बड़े आदरसे पालते थे। और जैनियोंके खास सिद्धान्तके अनुसार वर्षाके चार महीनोंमें जब कि जीवजंतुओंका अतिशय उपद्रव होता है, कोल्हू और कुंभारका चाक चलानेका निषेध करते हैं। इस प्रकारके अनेक हक बतलाये जा सकते हैं, परन्तु जैनियोंका राजपूत समाजपर कितना बल था, यह बतलानेके लिये इतना ही बस होगा।

नाथूराम प्रेमी।

आज्ञापत्रकी नकल।

मेवाड़के दश हजार ग्रामोंके सरदार महाराणा श्रीराजसिंह अपने मंत्रियों और माल्गुजारोंको आज्ञा देते हैं कि,—

१. जैनियोंको प्राचीनकालसे मंदिरों और अन्य दूसरे स्थानोंका हक मिला हुआ है, इससे कोई मनुष्य उनकी सीमामें जीवबध नहीं करै, यह उनका पुराना हक है।

२. जो जीव बध होनेके अभिप्रायसे उनके स्थानोंके पाससे निकलता है, वह अवध्य हो जाता है।

३ राजद्रोही, लुटेरे, अथवा कारागृहसे भागे हुए अपराधी यदि जैनियोंके उपाश्रयोंकी शरण जा कर लेवे, तो राज्य कर्मचारी उसे नहीं पकड़ें।

४. फसलके मौसमकी मुट्ठी, करानाकी मुट्ठी, दान की हुई भूमि अथवा जमीन और अनेक शहरोंमें बनाये हुए उपाश्रय कायम रहेंगे।

५. यह आज्ञापत्र मनुमुनिकी प्रार्थनासे जारी किया जाता है, जिन्हें १५ बीघा भूमिका और २५ मलेटी (?) का दान किया गया है। नीमच और निम्बहारके परगनेमें हरेक यतिको इतनी पृथ्वी दी गई है।

इस आज्ञापत्रके दिखलाते ही जमीनका माप करके सुपुर्द कर देना चाहिये। कोई मनुष्ययतियोंको दुःख नहीं देवे, बल्कि उनके हक्का रक्षण करै। जो उनके हक्का उल्लंघन करै, उसको धिक्कार है। हिन्दूको गाय और मुसलमानको शुअर और मुर्दार कसम है।

माह सुदी ५ संवत् १७४९ (ईस्वी सन् १६९३) — आज्ञासे— **शाहदयाल (मंत्री)**

खुशामद और बगुलाभक्ति।

खुशामद आजकलकी दुनियांका अमोघमंत्र और विलक्षण जादू है। जहां इसकी चुटकी बजाई अथवा फूंक मारी कि, फिर कार्यसिद्ध होनेमें देर नहीं लगती। कोई न कोई "आखके अंधे गांठके पूरे" मिल ही जाते है। जहां मिले कि चेले हुए, फिर खुशीसे उनके सिरपर एक भी बाल न रहने दीजिये। इस महामंत्रके सिद्ध करनेमें और तत्काल फलप्रद बनानेमें बकव्रतका अनुष्ठान बड़ा सहायक होता है। पीछे भले ही लोगोंके गले काटते रहिये, परन्तु सम्मुख तो "शनैः शनैः पदं धत्ते जीवानां बधशङ्कया" जैसे बने रहिये। बस भोले भाई आपके भक्त बन जावेंगे। "सर्वमेकं भूयात्" के उपासक यार दोस्तोंसे धर्मके विषयमें पीछे भले ही यह राय देते रहिये कि, "यथार्थमें है तो यह सब भेडियाधसान, धर्मकर्मसे कुछ नहीं हो सकता, असली तरक्की तो पेट पालनेकी विद्यासे होगी" परन्तु सबेरे शाम मंदिरमें बकध्यान लगाकर उंगलीपरसे मालाको चार छह चक्कर अवश्य खिला दिया कीजिये और हो सकै तो पोथियोंके दो चार पन्ने भी लौट जाया कीजिये। बस इतनेहीमें आप परम सज्जन और महा महा विद्वानोंमें अपना नाम लिखा सकते है। "दुनिया चन्दरोजा सराय है। थोड़ेसे जीवनके लिये किसके साथ राग करना और किसके साथ द्वेष? जर, जमीन, जोरू न किसीके साथ आईं और न जानेवाली हैं, फिजूल हाय! हाय! है" ऐसे २ वैराग्यके दो चार चुटपुटे लतीफे सुनाकर चेहेरेको कुछ विकृत बना लिया कीजिये, परन्तु हामें हा मिलानेकी आदतको न भूल जाइये। बस आप विश्वासपात्रोंकी दुम बन जावेंगे। अन्त पुरमें भी जाने आनेमें आपकी रोकटोक नहीं होगी और न वहां आपके लिये कोई पर्दा होगा। वहा आप अपनेको ब्रह्मचारी जाहिर कीजिये, परन्तु समय समयपर यह रुचिकर उपदेश जरूर दिया कीजिये कि, "स्त्रियोंको स्वतंत्रताकी बहुत आवश्यकता है। पुरुषोंसे स्त्रियां किसी विषयमें कम नहीं हैं। जो कार्य पुरुष करते हैं, वे स्त्रियां भी कर सकती हैं। इत्यादि इत्यादि।"

जो लोग धनवानोंकी हामें हा मिलाना नहीं जानते है, और जो "बादशाहकी नौकरी छोड़के बैंगनकी नौकरी" भी बजाया करते है, वे बड़ी गलतीपर हैं। धनवानोंकी भूलें बतलाना अच्छा नहीं है। इस आदतसे निस्पृह मनुष्य उनको शत्रु जैसे सूझने लगते हैं और खुशामदीटट्टू जो सदा "देहि पदपल्लवमुदारं" कहा करते हैं, सच्चे मित्र बन बैठते हैं। यह खूब समझ लेना चाहिये कि, यद्यपि खुशामद एक खोटा रुपया है, परन्तु वह मूर्ख जीवोंके पास चोखेकी नाईं बेरोकटोक चलता है। जो विद्वान् है, वह दूसरेकी अतिशय प्रशंसा कभी नहीं करेगा, क्योंकि उसकी वृत्ति सच्ची और निस्पृह होती है। परन्तु मूर्ख अपने मतलबके लिये तारीफके ढेर लगा देता है। मूर्ख और विद्वान्की यही पहिचान है। एक कवि

कहता है कि, "खुशामद ईश्वरकी एक कन्या है। वह अभी तक कुमारी है। क्योंकि वह जिस विद्वान और गुणवान् वरको चाहती है, वह तो उसे पसन्द नहीं करता और जो मूर्ख किन्तु प्रतिष्ठित पुरुष उसे वरना चाहता है, उसे वह स्वयं नहीं चाहती। अर्थात् मूर्ख खुशामदप्रिय होते है, विद्वान् नहीं।" आजकल खुशामदप्रियताका रोग धनवान् और प्रतिष्ठित लोगोंमें बेहद बढ़ रहा है, जिससे सच्चे विद्वानोंका तो तिरस्कार होता है, और मूर्ख पार्श्वर्तियोंके "पौ बारह" हो रहे हैं। विद्वानोंका निरादर और मूर्खोंका आदर जिस देशमे होता है, समझना चाहिये कि, उसके दिन अच्छे नहीं हैं।

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूज्या ह्यायान्त्यपूज्यताम्।
त्रीणि तत्र भविष्यन्ति दारिद्र्य मरण भयम्॥

आजकल हमारी इस वीरप्रसू वीरभूमिमें ऐसे ही कायर कापुरुष और पाखंडियोंकी भरमार है, जिन्हें अपनी स्वार्थसाधनाके सिवाय दूसरी ओर देखनेका अवकाश ही नहीं है। देश चाहे डूब जावे, धर्मरसातलको चला जावे, जाति जहन्नुम रसीद हो, पर इनकी "चार चपातीं और चम्मच भर दाल" में खलल नहीं पडना चाहिये। भगवान् ऐसे भूमिभारोंसे बचावे।

नन्हेलाल ताराचन्द।

पंचामृताभिषेकका विचार।

— * —

"पचामृताभिषेक शास्त्रविहित है, या नहीं? यदि है, तो इसकी प्रवृत्ति करनी चाहिये और नहीं है, तो रोकना चाहिये" किसी महाशयके इस प्रश्नपर कुछ दिन पहले पचामृताभिषेककी चर्चा जोर शोरसे चली थी। यद्यपि मराठीके जैनबोधकमें श्रीयुक्त जयकुमारजीचवरेका अन्तिमलेख इसकी पुष्टिमें ही रहा था, परन्तु प्रश्नकर्ताकी जो इच्छा थी, वह उत्तरप्रान्तमें एक प्रकारसे अधूरी ही रह गई और अन्तिम निर्णय होनेके पहले ही वह चर्चा रोक दी गई। यह विषय शास्त्रीय है इसका जितना ही विचार किया जावेगा, फल अच्छा निकलेगा। इसलिये मैं अपनी बुद्धिके अनुसार इस विषयको विद्वानोंके सम्मुख फिरसे उपस्थित करना चाहता हूं। आशा है कि, वे इसपर निष्पक्ष दृष्टिसे विचार करेंगे।

पंचामृताभिषेक करनेके लिये जिनेन्द्रदेवकी आज्ञा है, शास्त्रोंके पर्यालोचनसे इस विषयमें नीचे लिखे प्रमाण मिलते हैं —

१. भगवान्कुन्दकुन्दाचार्यकृत षट्पाहुड ग्रन्थकी श्रुतसागरी टीकामें लिखा है कि —तथा चकारात पाषाणघटितस्यापि जिनबिम्बस्य पञ्चामृतैः स्नपनं, अष्टविधैः पूजाद्रव्यैश्च पूजनं कुरुत यूयं, वन्दना भक्तिश्च कुरुत। यदि तथाभूतं जिनबिम्बं न मानयिष्यथ गृहस्था अपि सन्तस्तदा कुम्भीपाकादिनरकादौ पतिष्यथ यूयमिति।

अर्थात्—यहापर वैयावृत्यका प्रकरण है। इसमें चकारसे पाषाणकी जिनप्रतिमाका पञ्चामृतकरके अभिषेक और अष्टप्रकार पूजनद्रव्यकरके पूजन करो, तथा वन्दनाभक्ति भी करो। जो इस प्रकारके जिनबिम्बको नहीं मानोगे, तो गृहस्थ होते हुए भी कुम्भीपाकादिक नरकोमे पडोगे।

२ श्री योगीन्द्रदेवकृत श्रावकाचारमें कहा है कि —

जो जिण, एहावई घयपयहिं
सुरहिं एहाविज्जई सोई।
सो पावइ जो जंकरई
एहु पसिद्धउ लोये॥

अर्थात्—जो पुरुष जिनेन्द्र भगवान्का घी और दूधसे स्नान कराता है, वह सुरेन्द्रोंकरके स्नान कराया जाता है। यह लोकमें प्रसिद्ध है कि, जो जैसा करता है वह वैसा ही पाता है।

३ श्रीनमिदत्तविरचित श्रावकाचारमें,—

पञ्चामृतैर्जिनेन्द्रार्चा,
ये नित्यं स्नपयन्ति च।
ते स्नाप्यन्ते महाभव्याः
सुराधीशैः सुराचले॥

अर्थात्—जो पचामृत करके जिनेन्द्रका अर्चन और अभिषेक करते हैं, वे पुण्याधिकारी भव्यपुरुष इन्द्रादिक महापुरुषोंके द्वारा मेरुपर्वतके ऊपर अभिषिक्त किये जाते हैं।

४. श्रीधर्मसंग्रह ग्रन्थमें —

गर्भादिपञ्चकल्याण—
मर्हतां यद्दिनेऽभवत्।
तथा नन्दीश्वरे रत्न—
त्रयपर्वणि चार्चताम्॥
स्नपनं क्रियते नाना
रसैरिक्षुघृतादिभिः।
तत्र गीतादिमाङ्गल्यम्
कालपूजा भवेदियम्॥

अर्थात्—जिस दिन अरहत भगवान्के गर्भादि पंचकल्याण हुए हैं उस दिन, नन्दीश्वर पर्वके दिन, तथा रत्नत्रयपर्वमें, नानाप्रकार इक्षुरसादिकोंकरके अभिषेक तथा सङ्गीतादि मंगलीक कार्य करनेको काल पूजन कहते हैं।

५. श्रीपालचरित्रमें लिखा है कि,—

कृत्वा पञ्चामृतैर्नित्य—
मभिषेकं जिनेशिनां।
ये भव्या पूजयन्त्युच्चै—
स्ते पूज्यन्ते सुरादिभिः।

अर्थात्—(किसी कन्याको मुनिका उपदेश) जिनेन्द्रके पञ्चामृतसे नित्य अभिषेक करके जो पूजन करते हैं, वे सुरादिकों करके पूजन किये जाते हैं।

६. षट्कर्मोपदेशरत्नमालामें —

पञ्चामृतैः सुमंत्रेण
मंत्रितैर्भक्तिनिर्भरः।
अभिषिच्य जिनेन्द्राणां
प्रतिबिम्बानि पुण्यवान्॥

७ भगवत्सोमदेवसूरिरचित यशस्तिलकचम्पू महाकाव्यमें —

द्राक्षाखर्जूरचोचेक्षु—
प्राचीनामलकोद्भवैः।
राजादनाम्रपूगोत्थैः
स्नापयामि जिनं रसैः॥

८. श्रीमूलसघाचार्यी हरिवंशपुराणमें —

पञ्चामृतभृतैः कुम्भै—
र्गन्धोदकवरैः शुभैः।
संस्नाप्य जिनसन्मूर्तीः
विधिना नर्चुरुत्तमाः॥

इत्यादि अनेक शास्त्रप्रमाणोंसे पचामृताभिषेक अच्छी तरहसे सिद्ध होता है, परन्तु जो महाशय इसके विरुद्ध हैं, वे नीचे लिखी शंकायें उपस्थित करके इसे सदोष बतलाते है —

१. पञ्चामृताभिषेक वीतराग धर्ममें योग्य नहीं है। क्योंकि इसके करनेसे वीतरागप्रतिमाके आवर्णका दोष आता है।

२. जब साधुओंके लिये मूलाचारमें गन्धजलका भी निषेध हैं, तो पञ्चामृताभिषेक प्रतिमापर कैसे सिद्ध हो सकता है, क्योंकि प्रतिमा भी तो पञ्चपरमेष्ठीकी है।

३. पञ्चामृताभिषेककी सामग्रीका योग मिलानेमें बहुत आरंभ होता है और जैनोपदेश आरंभके कम करनेका है।

४ पञ्चामृताभिषेक सम्बन्धके श्लोक शास्त्रोंमें किसीने अपनी धूर्त्ततासे मिला दिये हैं। और पञ्चामृताभिषेकादि सम्बन्धके ग्रन्थ भट्टारकोंने प्राचीनाचार्योंके नामसे बना दिये हैं। वास्तवमें मूल ग्रन्थकारोंके नहीं हैं।

५. यदि पञ्चामृताभिषेक माना जाय, तो इसके साथ श्राद्ध, तर्पण, आचमन, आदि भी मान्य होंगे। यदि ऐसी क्रिया भी जैनमतमें हैं, तो वैष्णव और जैनमें अन्तर क्या है?

६. पञ्चामृताभिषेक काष्ठासंघसे चला है।

७. मूलसंघमें केवल शुद्ध जलाभिषेक है, पञ्चामृताभिषेक इसके विरुद्ध है।

८ पञ्चामृताभिषेक करनेसे लाभ क्या है?

मेरी बुद्धिके अनुसार उपर्युक्त शंकाओंके समाधान इस प्रकार हो सकते हैं —

१ पञ्चामृताभिषेक वीतराग धर्ममें सर्वथा उचित है। जिनमंदिर बंधवाना, रथयात्रा निकलवाना, प्रतिष्ठादि करवानी आदि कार्य जिस प्रकार सरागताके कारण नहीं हैं, उसी प्रकार यह भी नहीं है। जिस प्रकार ये सब प्रभावनांगके कारण हैं, उसी प्रकार ये भी हैं। देखिये भगवत्सोमदेवने इसके विषयमें क्या कहा है —

श्रीकेतनं वाग्वनितानिवासं
पुण्यार्चने क्षेत्रमुपासकानाम्।
स्वर्गापवर्गागमनैकहेतुं
जिनाभिषेकं श्रयमाश्रयामि॥

और इससे प्रतिमाको कुछ आवरण भी नहीं होता है, जिस तरह जलाभिषेकसे नहीं होता है। और जलाभिषेकको आप स्वीकार करते ही है।

२. मुनियोंके और प्रतिमाके कथनकी समानता नहीं होती। इतनेपर भी यदि पञ्चामृताभिषेक नहीं किया जाय, तो मुनियोंके स्नानका त्याग है। फिर प्रतिमापर स्नान क्यों? यदि कहो कि, मुनि भी तो अस्पर्श्य शूद्रादिकोंके स्पर्श होनेपर मंत्रस्नान करते हैं, तो क्या प्रतिमाओंको भी प्रायश्चित्तकी आवश्यकता पड़ती है, जो तुम्हारे कथनानुसार स्नान कराना माना जाय?

३. प्रथम तो गृहस्थ आरंभका त्यागी ही नहीं होता है। यदि थोड़ी देरके लिये तुम्हारे ही मतानुसार मान लिया जाय, तो क्या मंदिर बंधवाना, प्रतिष्ठा करवाना, रथयात्रा निकलवाना आदि कार्योंमें आरंभ नहीं होता? और वह पञ्चामृताभिषेककी अपेक्षा कितना होता है? देखिये धर्मसंग्रहमें पूजादि आरंभके विषयमें क्या कहा है —

जिनार्चानेकजन्मोत्थं
किल्विषं हन्ति या कृता।
सा किन्न यजनाचार-
भवं सावद्यमङ्गिनाम्॥
प्रेरन्ते यत्र वातेन
दन्तिनः पर्वतोपमाः।
तत्राल्पशक्तितेजःसु
दंशकादिषु का कथा॥
भुक्तं स्यात्प्राणनाशाय
विषं केवलमङ्गिनाम्।
जीवनाय मरीचादि-
सदौषधविमिश्रितम्।
तथा कुटुम्बभोग्यार्थ-
मारम्भः पापकृद्भवेत्।
धर्मकृद्दानपूजादौ
हिंसालेशोमतःसदा॥

अर्थात्—जो जिनेन्द्र भगवान्‌की की हुई पूजा, अनेक जन्मोंके उत्पन्न पापोंका नाश करती है, क्या वह अर्चनके आचारसे उत्पन्न तत्कालीन सावद्य पापोंको नाश नहीं करेगी? जहां वायुसे पर्वत जैसे हाथी उड जाते हैं, वहां अल्पशक्तिके धारक दंशमशकादिकोंकी तो कथा ही क्या है? देखो। जिस प्रकार खाया हुआ विष प्राणोंके नाशके अर्थ होता है, परन्तु मरीचादि श्रेष्ठ औषधियोंके साथ खाया हुआ वही विष जीवनके अर्थ होता है। इसी प्रकार जो आरंभ कुटुम्ब और भोगके अर्थ (संसारिक प्रयोजनके लिये) किया जाता है, वह पापके लिये ही होता है। परन्तु धर्मके कारणभूत दान पूजादिकोंके लिये जो आरंभ होता है, वह निरंतर हिंसाका लेश माना जाता है, उससे स्वर्गादि सुख मिलते हैं।

४. यह बात कैसे प्रमाण मानी जाय कि, इस विषयके श्लोक किसीने मिला दिये हैं? क्योंकि यदि परीक्षाप्रधानियोंके मतानुसार ऐसा सत्य भी मान लिया जाय, तो एक दो स्थानोंके शास्त्रोंके विषयमें साध्य हो सकता है न कि सर्व स्थानोंके शास्त्रोंमें। और उक्त विषयके प्रतिपादक श्लोक तो प्रत्येक श्रावकाचार, प्रतिष्ठापाठ, संहिताशास्त्र, पूजनप्रकरणके शास्त्र कथाकोषादि अनेक ग्रन्थोंमें है। इस कथनसे तो यही सिद्ध होता है कि, जो बात अपने दिलको पसंद आई, वह तो आचार्योंने कहीं है, और जो दिलको पसन्द नहीं आई वह आधुनिक है।

यदि यह काम भट्टारकोंका ही किया हुआ तुम्हारे कथनानुसार मानें, तो फिर पंडितवर्य्य आशाधर आदि विद्वानोंके ग्रन्थोंमें इस विषयका प्रकरण नहीं होना चाहिये। क्योंकि भट्टारकोंकी उत्पत्ति विक्रम सवत् १३१६ में हुई है, और आशाधर विक्रम सवत् १२०० के अनुमानमें हुए हैं। यह बात दोनों पक्षवाले स्वीकार करते हैं कि, भट्टारकोंकी उत्पत्तिके पहले जैनधर्ममें किसी प्रकार पाखंड नहीं था, यथार्थ अनादिकालीन प्रवृत्ति थी। तो फिर क्योंकर उक्त पंडितवर्य्यके ग्रन्थोंमें इस विषयका आन्दोलन देखा जाता है?

५ हां यदि जैन शास्त्रोंमें इस विषयका कथन है, तो हमको स्वीकार है। हममें प्राचीन ऋषियोंके अर्चनीय वचनोंके तिरस्कार करनेकी शक्ति नहीं है। परन्तु यह तो कहिये कि, आपको श्राद्ध आदि शब्दोंसे ही द्वेष क्यों है? उसका अर्थ भी तो समझना चाहिये। श्राद्धका अर्थ मरे हुए पुरुषोंको भोजन पहुंचानेका नहीं है, जो मिथ्यातका करनेवाला होता, किन्तु श्रद्धापूर्वक दान देनेका है।

यहां यह प्रश्न होता है कि, इन तर्पणादिक क्रियाओंसे पारमार्थिक लाभ क्या है? तो इसके उत्तरमें सिर्फ इतना ही कहना बस है कि, पारमार्थिक लाभ धर्मक्रियाओंके आश्रित है और यह तर्पण आचमनादि क्रिया लौकिक क्रियाओंसे सम्बन्ध रखती हैं। अतः इनमें कोई पारमार्थिक लाभ दृष्टि नहीं पडता। ये क्रियायें तो केवल वहिः शुद्धिके अर्थ नित्य क्रियाओंमें लिखी गई हैं। क्योंकि जब तक वहिःशुद्धि न होगी, तबतक देवपूजनादिक सत्क्रियाओंका वह अधिकारी ही नहीं कहा जा सकेगा।

पाठक! क्या कारण है कि आज जैनियोंके संस्कारादि देखते हैं, तो एक नमस्कारमंत्रका भी स्पष्ट उच्चारण नहीं होता और पंडितोंमें अपनी गिनती करवाते हैं। मेरी समझमें तो जैनियोंमें लौकिक विधिका उठजाना ही इसका कारण है। यदि आज जैनियोंमें उन प्राचीन संस्कारादि क्रियाओंका सद्भाव होता, तो काहेको हरेक बातोंमें यह जैन जाति हीनभाव धारण करती।

६. पञ्चामृताभिषेक यदि काष्ठासंघसे ही चला होता, तो मूलसंघके ग्रन्थोंमें उसका विधान क्यों मिलता? खेद है कि काष्ठासंघके पद्मपुराणादिक

तो आप रुचिसे पढते हैं और मानते भी हैं, परन्तु नहीं मालूम जहांपर इस विषयका प्रकरण है, उसको क्यों नहीं मानते।

७. पञ्चामृताभिषेक मूलसंघमें नहीं है, तो क्या भगवान्कुन्दकुन्दस्वामि, उमास्वामि, वामदेव, योगीन्द्रदेव, सोमदेव, अकलंक देव और श्रुतसागरमुनि आदि मूलसंघी नहीं थे जिन्होंने श्रावकाचार, भावसंग्रह, नवकार श्रावकाचार, यशस्तिलक, प्रतिष्ठातिलक, आदि शास्त्रोंमें आज्ञा दी है? यदि कोई इस बातको सिद्ध कर देंगे कि, वे आचार्य मूलसंघी नहीं थे, तो उनका बडा उपकार होगा। क्योंकि अनेक भाई यथार्थमार्गमें प्रवृत्त होने लगेंगे और इससे जैनधर्मकी भी उन्नति होगी।

८. जिस प्रकार जलाभिषेकसे लाभ है, उसी प्रकार पञ्चामृताभिषेकसे भी मानना पडेगा। यह तो भक्तिमार्ग है, इसमें जितनी परिणामोंकी शुद्धता होगी, उतना ही पुण्यबंध होगा। क्योंकि गृहस्थोंका धर्म ही दानपूजादि मय है। इनके विना गृहस्थोंको परिणामोंके निर्मल करनेके लिये दूसरा अवलम्बन नहीं है।

इस विषयमें मुझे जो कुछ वक्तव्य था, वह कह चुका। शास्त्रोंकी आज्ञाके आगे लोगोंकी शंकायें जिनका समाधान मैं कर चुका हू, कोई चीज नहीं हैं। विद्वानोंको यथार्थ निर्णय करके शास्त्रानुसार प्रवृत्ति करनी चाहिये, और मिथ्याआग्रह छोड देना चाहिये। अलमतिविस्तरेण

बडनगर (मालवा) } जैन जातिका दास—
उदयलाल-जैन.

पतिभक्ति।

पतिमाहात्म्य।

(१)

पति-पत्नीका प्रेम अनोखा,
कहिगे ग्रन्थनमें धीमान।
मनो प्रकृतिने उन्हें बनाया,
प्रेममूर्ति औ ममतावान॥
पति शरीर यदि तो पत्नी है,
अति अभिन्न परछाहींरूप।
जैसे चन्दा और चांदनी,
मिले रहैं सुखदाइ अनूप॥

(२)

पतिमहात्मका पूरा वर्णन,
किया गया है ग्रन्थन बीच।
पत्नीका पति ही है जीवन,
उस बिन उसकी अच्छी मीच॥
जप, तप, संयम, तीरथ आदिक,
माने पतिमय जो पटुनारि।
स्वर्गलोककी सो देवी हो,
कहैं प्रज्ञ जन यही बिचारि॥

भक्ति।

(३)

धन्य विधाता! तुझको जो मुहि,
नारीका है रूप दिया।
मुदित रहै जिसके हाथोंमें,
मैने अपना हाथ दिया॥
पति मेरे वह हुए है उनको,
सौंपा मैने स्वत्व सभी।
वह शरीर तो मै परछाहीं,
बिलग न जीवित होहु कभी॥

(४)

पतिका जीवन सुखमय बीतै,
तब सुख मुहिका होहि दई!
प्राणोंसे भी प्यारा पति हो,
रहै कामना हिये ठई॥
मेरे पतिके ही पदतलमें,
सकल कर्म है पुण्यमयी।
इससे उनहींमें अविरल हो,
भक्ति हमारी जगज्जयी॥

(५)

पतिपर प्राण निछावर होवहिं,
तो निज मानहु भाग बडे।
प्राण कढैं जब तब मेरे हो,
स्वामी मेरे अछत खडे॥
हेम अभूषण माला मुकता,
अरु जरतारी चीर सबै।
मिलै चहै ना मिलै जियै पति,
जासों सब शृङ्गार फबै॥

(६)

पति मेरे नैनोंका तारा।
पतिसे है मुझको सुख सारा॥
मै शरीर पति मेरे प्राना।
पतिपद मानहु स्वर्ग समाना॥

(७)

पति शासन सिरपै मै धारों।
बात बातपर प्रानहिं वारों॥
करहुं न सपनेहु पतिसों रोषा।
देखहु कबहुं न ताकर दोषा॥

(८)

मैं रानी पति मेरा राजा।
प्रजा लगे मुहि सकल समाजा॥
पति मारै चाहे प्रतिपाले।
पतिपदसों मन तनिक न चाले॥

(९)

पति प्रसन्न जो मुहिपै रहहीं।
मिलि है स्वर्ग विज्ञ अस कहहीं।
यासों तजके सब इक नेमा।
करहु प्राणपतिके पद प्रेमा॥

(१०)

जा तियके अस होंहिं सुलच्छन।
ताके वश पति रहहिं प्रतिच्छन॥
यासो हे भारतकी तिय गन।
धरहु नीरकी सिख सब निजमन॥

सय्यद अमीरअली-देवरी।

सर्वोन्नतिका एक यह भी उपाय हैं!

अत्यन्त हर्षका विषय है कि, महासभा और प्रान्तिकसभाके अधिवेशनोंका समय निकट आ रहा है कि, जिनमे धर्मोन्नति जात्युन्नति और देशोन्नतिपर अनेक उत्तम उपायोंका विचार किया जाता है। इसलिये निवेदन है कि, महाशयगण उस समय इस लेखपर भी विचार करें।

एकहिं साधे सबसधे, सब साधे सबजाय।
जो तुम सेवो मूलको, फूलै फलै अघाय॥

आजकलके समयमें जैनी लोग प्राय व्यापारी ही है। इससे उनकी उन्नतीकी सुलभ रीति व्यापार ही है। जब तक जैनियोंमे व्यापारोन्नतिके उत्तम २ उपाय प्रचलित करनेका प्रयत्न नहीं किया जावेगा, तबतक ऊपरके विषयोंमें जैसी चाहिये, तैसी उन्नति होना कठिन मालूम पडती है। क्योंकि आजकल द्रव्यका बल सर्वोपरि है और द्रव्योपार्जनके लिये सबसे उत्तम उपाय व्यापार ही है। इसलिये प्रथम इसकी उन्नति होगी, तो सभा उन्नतिके विषयमें खर्चके जितने मद खोलेगी, सबमे द्रव्यज्यादा एकत्रित होगा और उससे वैसे ही खर्च करनेपर हर कामोंमें अद्वितीय सफलता प्राप्त कर सकेगी। उसके लिये इस किसमके उपाय किये जावें, तो अत्यन्त लाभकारी हों।

१. महासभाकी सेवामें जैन ब्रदर्स ट्रेडिंग कम्पनी खोली जावे ।

२ बडे २ शहरोंमें जहांपर व्यापारकी मडी हों, एक २ आढतकी दूकान उन स्थानोंके धनाढय जैनी महाशयोंके हिस्सोंमें कि, जहांपर वहाका माल जाता और आता हो खोले । नियत रकमके शेअर्स उक्त स्थानके महाशयोंको वेचकर पूजी एकत्र करें । जहा तक हो सके, 'शेअर होलडर्स' की गिनती ज्यादा रहे । इस वास्ते कि, जिसमें उनको यह गौरव रहे कि, हमारी दूकान अमुक स्थानमे है । हमको वहासे माल बुलाना चाहिये । वहामे उनको इस किस्मका माल ऐसे सुभीतेसे मिल सके और बिक सके कि, जो खुद जानेसे उतनी किफायतके साथ न मिल सक्ता और न बिक सक्ता । और जैनियोंके सिवाय सब लोगोंको भी विश्वासयोग्य और हितकारी हो ।

दूसरे किस्मकी दूकाने हर जगहपर जहा २ पर कि जैनी है, वहाके पचोंके हिस्सोंसे होना चाहिये । वे उस किस्मकी व उस पूजीकी दूकाने खोली जावे कि, जो वहाके पच मुनासिब समझे और उनकी निगरानी व जाच भी उन्हींके तरफ दी जावे ।

४. ऐसी दोनो किस्मकी दूकानोंमें पूजी शेअर होलडर्सकी रहेगी और वे उसका व्याज पानेके हकदार रहेंगे, महासभा उसका मुनाफा उठा सकेगी ।

५ महासभा अपने खर्चके हर एक मदका हक एक रुपयाकी औसतपर लगाकर मुकर्रर कर देवे और उसी मुताबिक मुनाफेकी आधी रकम हिसाबसे हर एक मदमे तकसीम कर देवे और आधी उसी दूकानके पूजीकी उन्नतिमे रहने देवे ।

६. इन दूकानोंमे काम ईमानदारीका होवे कि, जिसमे सिर्फ मुनाफा ही नहीं, बल्कि हर एक लोगोंको विश्वास जमे । हर किस्मके लोगोंको सुभीता और फायदा पहुचे, जैनियोंको सच्चा व्यापार करनेके लिये नमूना और उपदेश हो ।

७. जहातक हो सके इसमें कर्मचारी ऐसे विद्वान् और विश्वासनीय जैनी रक्खे जावे कि, जो अपने काममें पूर्ण योग्य होनेके सिवाय सभाकी सेवा और सामान्य जैनियोंके साथ धर्मोपदेशकके समान हित कर सकें ।

८. दूकानोंके नियम, कर्मचारियोंके काम, और उनके वेतनका प्रबन्ध, इस तरह किया जावे कि, जिसे उनको तनमन और ईमानदारीसे काम करनेका उत्साह बढ़े, और जैनियोंको अपनी २ दूकानोंका भी ऐसा ही प्रबंध करनेको नमूना बने ।

९. विद्वान् और सुयोग्य जैनियोंको इसके जरिये अथवा और तरहसे हर जगह फैलानेका प्रयत्न किया जावे कि, जिससे जैनियोंको धर्ममें दृढ रखनेके लिये और सभाकी उत्तम प्रकार सेवा करनेके लिये कारण रहै ।

१० जहा २ पर जैनी है तहां २ पर ऐसी दुकाने कायम करानेकी तजवीजके सिवाय ऐसी जगहोमे भी कि जहा जैनी होना अवश्यक है, चन्द दूकानोंकी मददमे दूकाने खोली जा सकें ।

११. बहुतसे ऐसे लोग हैं कि जिनके पास पैसा है और कमानेवाला नहीं है और न आप कमा सक्ते है, ऐसे लोगोंको कोर्टआफवार्डस सरीखा लाभ पहुंच सके ।

१२. दूकानोंके कर्मचारी मातहत महासभाके रहें और महासभाको तरक्की तनज्जुली बरखास्तगीका हक रहे ।

१३ महासभा एक कन्ट्रोलर आफिस रक्खे कि, जिसमें हर दूकानका साप्ताहिक हिसाब जरिये एक गोशवाराके आमद व्यय मालमौजूदाका हिसाब जाच कर सके ।

१४. सभाकी तरफसे साप्ताहिकपत्र ज्यादा बढा दिया जावे, जिसमे हर दूकानकी साप्ताहिक रिपोर्टपरसे हर जगहकी मुखिया चीजोंके भाव छप सकें और वह पत्र हरजातीय व्यापारियोंको भी लाभकारी हो ।

१५ चन्द मेम्बर ऐसे रक्खे जावें कि, जो कामकी त्रुटिओंको निकालकर उत्तम २ उपायोका सग्रह करें कि जिससे इसकी जड इतनी मजबूत होती जावे कि, बडे २ कारखाने भी कुछ दिनके पश्चात् निर्विघ्न खोल सकें और हर जैनीको कम्पनी कायमकरके रोजगार करनेका अच्छा तरीका मालूम हो जावे ।

इस कार्यकी हर जगह नीव डालनेके लिये धनाढ्य और विद्वान महाशयोंकी मडली दौरा करे । यद्यपि एक ही मंडली सब जगह दौरा नहीं कर सकती है, तो भी अनेक सहायक मडलियोंके द्वारा इस कार्यको तन मन धनसे प्रयत्न करके करे । आशा है कि, यह कार्य जैनियोंको धर्मोन्नति आत्मोन्नति और देशोन्नतिमें कल्पवृक्षके समान फलदायी होगा ।

सेवक—

बिलासपुर, सी.पी. } हुकमचंद मेनेजर, व खूनकेलाल रे. इन्सपेक्टर,

दि॰ जै॰ प्रान्तिकसभा बम्बईका अधिवेशन ।

इस विषयपर विचार करनेके लिये बम्बईके हीराबागमे एक साधारण सभा हुई, जिसके सभापतिका स्थान शेठ माणिकचन्दजीने स्वीकार किया था । राजा साहब ज्ञानचन्दजी, शेठ सुखानदजी आदि सभ्यगण उपस्थित थे । सभाने बहुसम्मातिसे निम्नलिखित प्रस्ताव पास किये ।

१. इस अधिवेशन सम्बन्धी प्रबन्ध करनेके लिये एक स्वागतकमेटी नियत की जावे ।

२. स्वागतकमेटीके मेम्बरोकी सख्या २५ होगी, जिसमे १ नासिक, ४ शोलापुर, ३ नादगाव और १७ महाशय बम्बईके रहेंगे ।

३ स्वागत कमेटीके चयरमेन शेठ चुन्नीलाल मवेरचन्द, मत्री दोसी पानाचद रामचन्द, सहायकमत्री मि॰लल्लूभाई प्रेमानन्द और पंडित लालारामजी, तथा कोषाध्यक्ष शेठ सुखानन्दजी नियत किये जावें ।

४. अधिवेशनके खर्चके लिये ११००) रु॰ का बजट पास किया जाय । २५०) मंडप खर्च, १५०) चिट्ठी पत्री छपाई खर्च, २५०) डेरोंका खर्च, १५०) रोशनी वगैरहका खर्च और ३००) फुटकर नौकरो वगैरहो का खर्च । प्रस्ताव पास हो चुकनेपर निश्चय हुआ कि, ११००) का चिट्ठा करनेके लिये और प्रत्येक सभासदके जिम्मे कार्य बाटनेके लिये आगामी रविवारको एक सभा होगी । सभापतिका उपकार मानके सभा विसर्जन हुई ।

स्वागत कमेटीके सभ्यगण ।

१–५ चयरमेन, मंत्री, आदि ।
६ शा ठाकुरदास भगवानदासजी बम्बई ।
७ बाबू शीतलप्रसादजी ,,
८ लाला फूलचन्दजी ,,
९ शेठ नन्दलालजी पाटोदी ,,
१० प॰ धन्नालालजी काशलीवाल ,,
११ मि॰ ए. बी. मालगांवे ,,
१२ पं॰ लालारामजी ,,
१३ शेठ लक्ष्मीचन्दजी सौगाणी ,,
१४ बाबू बुद्धमलजी पाटनी ,,
१५ वैद्यराज कन्हैयालालजी ,,
१६ दोसी माणिकचन्द रावजी ,,
१७ लाला मिश्रीलालजी बाकलीवाल ,,
१८–२१ शोलापुरवाले ।
२२ नासिकवाले ।
२३–२५ नांदगाववाले ।

प्रेरित पत्र ।

शाकटायन व्याकरण ।

अब आपको विधर्मियोंकी उच्छिष्ट खाना नहीं पड़ेगी, अब आपको पूर्वापर विरुद्ध ग्रन्थोंमें सिर खपाना छोड देना होगा, और अब जैनविरुद्ध कर्तृवादादि दूषित उदाहरणोंमें बुद्धिभ्रष्ट नहीं करनी होगी। क्योंकि वैयाकरणभानु भगवान् श्रमणसघाधिपति श्रुतकेवल्देशीय निर्ग्रन्थाचार्य शाकटायन विरचित व्याकरण शास्त्र जो कि अतिशय प्राचीन है, और पाठमात्रसे भी भक्तामर स्तोत्रवत् पुण्यकर है, प्रसिद्ध हो गया है। इसकी प्रक्रिया दिगम्बराचार्य श्रीमान् अभयचन्द्रसूरिने ऐसी उत्तम की है कि, अल्पबुद्धि बालक भी थोडे परिश्रमसे इस महाव्याकरणका पारंगत हो सकता है, और अधिक लाभ उठा सकता है। क्योंकि इसमें अक्षर स्वरुप होनेपर भी तात्पर्य अधिक है। आशा है कि, अब जैनपाठशालाओंमें इसका प्रचार शीघ्र ही किया जावेगा। बम्बईके जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालयने इस ग्रन्थको छपाया है।

(पंडित) गौरीलाल—इन्दौर।

उपदेशक।

मंत्री उपदेशकभंडारको चाहिये कि, उपदेशकोंको जाडेके मोसममें तीर्थक्षेत्रोंपर भेजा करें। क्योंकि तीर्थोंपर हर प्रान्त हर ग्रामके सैकड़ों हजारों भाई इकट्ठे होते हैं। यदि उनको वहा उपदेश दिया जावेगा, तो वे भाई अपने २ ग्रामोंमें जाकर धर्मप्रवर्तानेकी चेष्टा करेंगे। और मेलोमे भी उपदेशक जाना चाहिये। जिन २ प्रान्तिकसभाओंमें उपदेशककी आवश्यकता है, और उपदेशक नहीं मिलते हैं, उनके उपदेशकभंडारके मंत्रियोको चाहिये कि पंडितों, तथा उपकारी बाबू लोगोंको उत्साह बढ़ाकर आनरेरी उपदेशक बनानेकी चेष्टा करें और मंत्री उपदेशकभंडार स्वयं महीने पन्द्रह दिनके लिये उपदेशको जाया करें। उसकी देखादेखी और भाइयोंको भी उपदेशको जानेका शौक बढ़ेगा। इस विषयपर मंत्रियोंको खूब ध्यान देना चाहिये

रघुनाथदास रहीस।
सरनौ (एटा)

पत्रोंका सार।

देवबन्द (सहारणपुर)—यहांपर दो माहसे ज्वर प्रकोप अधिक रहा अब दिन २ शान्ति होती जाती है। इस समय बाबू जयप्रकाशजी साबिक सब ओवरासियर जयपुरने गरीब और अनाथ रोगियोंको मुफ्तमें दवा देकर बडा उपकार किया है। सैकडों रुपयोंकी दवाके अलावा आपने खाने पीनेको भी रुपया बांटा है। आप हमेशा विनामूल्य औषधि देते हैं, नगरमें आपकी खूब कीर्ति है। महासभाको आप जैसे धर्मात्माओंसे कुछ काम लेना चाहिये। ज्योतिः प्रसाद।

उज्जैन (मालवा)—यहाकी जैन पाठशालाकी परीक्षा कार्तिक बदी १३ को मैंने ली। जिसमें २२ लडकोंने पूजन, पाठ, स्तोत्र, सूत्र, भक्तामर, चौवीस ठाणा आदिमें उत्तर देकर उपस्थित जनोंको परितुष्ट किया। विद्यार्थियोंके पाठपठनमें अशुद्ध उच्चारणके सिवाय अन्य दोष नहीं थे, जो कि अध्यापककी सावधानी और पंचोंकी देख भालसे शीघ्र दूर हो सकते हैं। इस समय शेठ मुन्नालालजीने विद्यार्थियोंको (१९)–२०) का पारितोषिक वितरण किया। परीक्षासे अनेक लाभ होते हैं।

गौरीलाल जैन।

जयपुर (राजस्थान)—हर्षका विषय है कि, इस वर्ष यहा शीलचन्द्रजीवृती श्रावकका चातुर्मास अच्छी तरहसे हुआ। आपने इस अवसर पर एक बडा भारी कार्य यह किया कि, पंडित मोतीलालजीके द्वारा एक बिंबनिर्माणपुस्तक प्राचीन ग्रन्थोंसे संग्रह करके भाषा सहित तयार करा डाली। इस पुस्तकके ज्ञानसे शास्त्रोक्त विधिसे बहुत उत्तम प्रतिमा तयार होती हैं। यह पुस्तक लिखी हुई शेठ मूलचन्दजी सोनीकी दूकान पर तयार मिल सकती है। जो भाई, प्रतिमाजी खरीदें अथवा प्रतिष्ठा कराना चाहें, वे इस पुस्तकके अनुसार जाच करके लेवें क्योंकि अयोग्य प्रतिमा अमगलीक और अशुभकर होती हैं। पुस्तकमें चित्रादि भी दिये गये हैं।

सुंदरलाल।

विविध समाचार।

जयपुरप्रान्तके अन्तर्गत सीकरके महाराजने एक बडे पुण्यका कार्य किया है। आपने अपने अधीनके ५५५ ग्रामोंमें विदेशी शक्कर आना सर्वथा बन्द करके प्रजाके धर्मकी रक्षा की है। अन्य राजालोग उक्त महाराजका अनुकरण करें, तो सहज ही इदेशका पापिनी मोरिस शक्करसे छुटकारा हो सकता है।

"बृटिशट्रेडरिव्यू" अंग्रेजोंका व्यापारी पत्र है, उसकी रिपोर्टसे विदित हुआ है कि, इस साल कलकत्तेसे विलायती कपडेकी जो साढे इक्कीस हजार गाठोंकी मांग भेजी गई है, उसमें उन्नीस हजार गांठ केवल सूतकी है। जहां प्रतिवर्ष तीस तीस चालीस चालीस हजार गांठोंकी मांग केवल कपडेकी होती थी, वहा अब हजार दो हजारमे ही कमामसी हो रही है। इससे अन्दाज कर लेना चाहिये कि, बगालमे विदेशी कपडेसे लोगोंको कितनी घृणा हो गई है।

गत १६ अक्टूबरको कलकत्तेमें, जो बगभगका शोक मनानेके लिये सभा हुई थी, उसमें एक लाख मनुष्योंकी विशाल भीड थी। लोगोंने एक दूसरेके गले मिलकर अपनी स्वदेशी प्रतिज्ञाकी रक्षाके लिये रक्षाबधनकी विधि की थी। दूसरे २ शहरोंमें भी उक्त तिथिको बडी २ भारी सभायें हुई थीं।

अमेरिकाकी वेराकूज पहाडोंमे एक पारेसे भरे हुए तालावका पता लगा है, जो तीन मील विस्तरित और १० से ५० फुट तक गहरा है।

गत २२ अक्टूबरको बम्बईकी हीराबाग धर्मशालामें एक स्त्रियोंकी सभा हुई थी, जिसमें "स्त्रियोको क्या और किस तरह पढना चाहिये," इसपर व्याख्यान हुए थे। अनेक प्रतिष्ठित पढी लिखी स्त्रियोंने इस सभामें योग दिया था।

विलायती स्त्रीस्वतन्त्रताकी बलिहारी है। कहते हैं कि, वहांकी स्त्रिया अपनी पतियोंको जहर देकर मार डालती हैं और दूसरेको पति बना लेती है। पहले पतिसे अनबन होनेपर अकसर ऐसा होता है।

आष्ट्रेलिया की सरकारने जुआरियोंके विरुद्ध कुछ दिन पहले एक कडा नियम बनाया था, उसकी देखादेखी अब न्यूजीलेंडकी सरकारने भी जुआ खेलनेवालोंके लिये एक कठोर दड देनेकी व्यवस्था की है। जुआ सात व्यसनोंका राजा है। राजाको उससे अपनी प्रजाको अवश्य बचाना चाहिये।

मि॰ थर्स्टन नामक एक अमेरिकाके जादुगार कलकत्ते आये हुए हैं। वे अपनी जादूलीलासे लोगोंको चकित कर रहे हैं। ता॰ २७ को उन्होंने एक स्त्रीको हवामें उडती हुई दिखलाई थी और एक पानीके हौजमेंसे दो स्त्रियोंको निकालके बतलाया था।

स्त्रियोंको इग्लेंडकी पार्लीमेंटमें बोलनेका हक मिलना चाहिये, इस विषयमें वहां बहुत दिनसे वादविवाद चल रहा है। अभी हाल ही इस पक्षकी २० स्त्रियोंने पार्लीमेंटके सभाभवनपर हल्ला किया था, और बडी गडबड मचानी प्रारंभ की थी। परन्तु तत्काल ही पोलिसने आकर उन्हें

धक्के देकर बाहर निकाल दिया था । इस विषयमें उद्दंडता दिखलानेवाली ११ स्त्रियां पहले जहल जा चुकी हैं । धन्य री स्वतन्त्रता! तेरे मीठे २ फल अब इंग्लेंडवासियोंको भी मिलने लगे हैं ।

मद्रासकी मेसर्स आर्बटनॉट नामकी विलायती कम्पनीने तीन करोड रुपयेका दिवाला निकाला है ! इस कम्पनीमें सैकडों धर्मस्थानों और मदिरोंके रुपये जमा थे । कम्पनीके मालिकने और मैनेजरने लन्दनमें रेलगाडीकी पटरीपर पडके आत्महत्या कर ली है ।

खुर्जा (बुलन्दशहर) में शेठ हरसुखराय अमोलकचन्दजी रानीवालोंकी ओरसे अगहन वदी ६ से ९ तक रथयात्राका समारोह होगा । इसमें विशेष बात यह होगी कि, जैनियों और आर्यसमाजियोंका शास्त्रार्थ होगा । जैनियोंकी ओरसे शेठ मेवारामजी शास्त्रार्थ करेंगे ।

कार्तिक शुक्ला १४ को बम्बईकी दिगम्बरजैन लोकल सभामें शेठ माणिकचन्दजी जौहरीके सभापतित्वमें एक सभा हुई थी, जिसमें बाबू शीतलप्रसादजीनें बम्बईमें जैनियोंकी एक ऐसी पाठशालाकी आवश्यकता दिखलाई, जिसमें नागरिक बालक शुद्ध हिन्दी लिखना पढना और महाजनी हिसाब किताब सीखें । जैनधर्मका रहस्य जाननेके लिये और जो कि एक मुख्य कर्तव्य है, संस्कृत प्राकृत भाषाओंके ज्ञानकी आवश्यकता है । किन्तु व्यापारी जैनियोंके बालकोंको इतना समय अध्ययनके लिये नहीं मिल सकता है, इस लिये कमसे कम भाषाका उत्तम ज्ञान तो होना ही चाहिये, जिसमें भाषा ग्रन्थोंको वे अच्छी तरह समझ सकें ।

कारणवश इस अंकमें जैनसिद्धान्त और सुशीला उपन्यास नहीं दिया जा सका, पाठक गण क्षमा करें ।

बम्बईके शेठ हीराचन्द गुमानजी बोर्डिंग स्कूलमें स्वर्गीय शेठ प्रेमचन्दकी माता रूपाबाईकी ओरसे जो वार्षिक उत्सव होता है, वह परसों कार्तिक शुक्ला १५ को आनन्दके साथ हो गया । दिनमें पूजन विधान और रात्रिको गीतनृत्यादिकोंका अपूर्व आनन्द रहा ।

पावागढ हमारा परम पूज्य सिद्धक्षेत्र है । वह बडौदा राज्यमें चांपानेर ग्रामके निकट है । इस पर्वतपर रांगेकी खानिका पता लगा है, इसलिये किसी ठेकेदार महाशयने गोधराके कलेक्टर साहबसे पर्वत और उसके आसपासकी अनुमान दो मीलकी जमीन ठेकेसे मांगी है । चूंकि यह सब जमीन उक्त सिद्धक्षेत्र सम्बन्धी है, और खानि खुदनेसे जिन मन्दिरोंको हानि पहुंचनेकी सम्भावना है । इसलिये वहांके प्रबन्धकर्ता शेठ [illegible] दासजी [illegible] ठेका मिलनेके विरुद्ध दरख्वास्त दी है । तीर्थ [illegible] ओरसे भी इसका विरोध होना चाहिये ।

दि० जै० प्रान्तिकसभा बम्बईके अधिवेशनके लिये चुने हुए प्रस्ताव ।

१ दानवीर शेठ माणिकचन्दजीको जे पी पद मिलनेके उपलक्षमें हर्ष प्रकाशित किया जाय ।

२ होली, दशहरा, दिवाली मकबुर्गी आदित्यवारोंपर होनेवाली जीवहिंसाका प्रचार रोकनेके लिये एक मन्त्री नियत किया जाय ।

३ परीक्षालयके लिये एक ध्रुवभंडार खोला जाय ।

४ स्त्रीशिक्षाप्रचार, संस्कार विधिप्रचार, और शाखा सभाओंको उत्तेजन देनेके लिये तथा प्रबन्ध करनेके लिये एक एक स्वतन्त्र मन्त्री नियत किया जाय ।

५ स्वदेशीवस्तुप्रचार तथा वाणिज्य वृद्धिके लिये इस सभाकी अधीनतामें एक वाणिज्य वर्धनी-सभा नियत की जाय ।

६ सभाकी रजिष्ट्री की जाय।

७ संस्कृतविद्यालयभंडार की वृद्धिके लिये एक डेप्यूटेशन पार्टी नियत की जाय ।

८ विद्याविभागके प्रबन्धके एक सब कमेटी नियत की जाय ।

९ प्रबन्ध कारिणीसभा तथा कार्याध्यक्षोंमें यथोचित परिवर्तन किया जाय ।

१० जैनमित्रके लिये एक जैनमित्र प्रेस खोला जाय ।

११ जैन डाइरेक्टरी तयार करनेका प्रयत्न किया जाय ।

विज्ञापन ।

हुकमचन्द्र दि० जैनबोर्डिंगमें सुयोग्य संस्कृत धर्मशास्त्र, न्याकरण, न्यायादि पढनेवाले जैनबालकोंकी आवश्यकता है । जिनको भोजनवस्त्र स्थान आदि पारितोषिकरूप दिया जावेगा । जिनको अपने विद्वान् चारित्रोपकारी बनाने हों, वे शीघ्र सूचना भेजें ।

सुपरिंटेंडेंट,
हुकमचंद दि० जैनबोर्डिंग,
नाशियां, जी. इन्दौर ।

लेखक गण ।

जो महाशय जैन मित्रमें लेख छपाना चाहें, उन्हें चाहिये कि लेख कागजके एक ही तरफ स्पष्ट अक्षरोंमें हासिया छोडकर लिखा करें, अन्यथा उनके लेखोंका रद्दीमें आसन लगा दिया जावेगा ।

सम्पादक ।

विनामूल्य जैनमित्र ।

जैनमित्रके ग्राहकोंको अपूर्व लाभ ।

जो भाई जैनमित्रका पेशगीमूल्य डेढ रुपया अगहन सुदी १५ तक भेज देवेंगे और उसके साथ सवा रुपया अधिक भेजेंगे, उन्हें निम्नलिखित पांच ग्रन्थ उपहारमें दिये जावेंगे.

१ स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा ।

वैराग्य और जैनधर्मका रहस्य बतलानेवाला अपूर्वग्रन्थ मूल, संस्कृतच्छाया और हिन्दीभाषाटीका सहित है । इसमें वैराग्यके साथ साथ जैनधर्मका प्रायः सम्पूर्ण रहस्य भरा हुआ है । हम समझते हैं, जिसने इस ग्रन्थका स्वाध्याय नहीं किया, उसे वैराग्यका सच्चा आस्वाद ही नहीं मिला । यह रायल अठपेजी २०४ पेजका ग्रन्थ है । [illegible] सुन्दर छपाई सफाई देखने ही योग्य है । यह ग्रन्थ १॥) से कममें किसीको नहीं मिल सकता ।

२ परीक्षामुख ।

यह जैनियोंका सर्वमान्य संस्कृत न्यायका ग्रन्थ है । इसकी प्रशंसा करना व्यर्थ है । यद्यपि यह केवल संस्कृतमें है, परन्तु प्रत्येक मंदिर और भंडारमें संग्रह करने योग्य है। यह डेमी साइजके १२८ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ॥) है ।

३ पंचाध्यायी ।

यह ग्रन्थ अभीतक सर्वथा लुप्त था । हमने बडे परिश्रमसे द्रव्य लगाकर इसका जीर्णोद्धार कराया है । इसके पढनेवाले विद्वान् कहते है, कि जिसने इस ग्रन्थको नहीं पढा, उसने जैनधर्मका असली मर्म नहीं पाया । यह संस्कृत ग्रन्थ डेमी साइजके २०० पेजका है । मूल्य ॥) है ।

४ इन्ट्रोडक्शन टू जैनिस्म

Introduction to Jainism—इस अंग्रेजी ग्रन्थको जिनविजयके सम्पादक मि० लठ्ठे, एम् ए ने बडी योग्यतासे लिखा है । अन्यधर्मी विद्वानोंके दिखाने योग्य डेमी १३६ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ॥) है ।

५ जैनधर्मपर व्याख्यान

मि० आपटे, बी. ए का लिखा हुआ हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओंमें मिल सकता है । इसका मूल्य ।) है ।

इस प्रकार सिर्फ १।) में ३।) के ग्रन्थोंका ग्राहकोंको लाभ हो सकता है । अथवा सवा तीन रुपयेमें सवातीनके ग्रन्थ मिल जावेंगे और जैनमित्र वर्ष भरतक मुफ्तमें पढनेको मिलेगा । अर्थात् आमके आम और गुठलीके दाम मिल जावेंगे । इतने पर भी यदि जैनमित्रके ग्राहक न बढें, तो हम समझेंगे कि जैनियोंमे ग्रन्थोंके पढनेका शौक ही नहीं है । ऐसे सुन्दर और अमूल्य ग्रन्थोंका उपहार जैनियोंमें यह सबसे पहला है ।

यह उपहार केवल उन्हीं ग्राहकोंको मिलेगा, जो नवीन वर्ष अर्थात् अष्टम वर्षका मूल्य पेशगी भेजेंगे और पिछला बकाया चुका देवेंगे । नवीन ग्राहकोंको पेशगी मूल्य ही भेजना पडेगा ।

रुपया आनेपर उपहारकी पुस्तकें मैनेजर जैनमित्र द्वारा भेज दी जावेगी । परन्तु इतना ख्याल और रखना चाहिये कि ३।) रु० के साथ ग्रन्थोंके डाक खर्चके लिये छह आना अधिक भेजना होंगे ।

नियत तिथिके बाद यह उपहार किसीको भी नहीं मिलेगा, एक महीनेकी मुद्दत और भी बढाई जाती है, इसलिये शीघ्रता करनी चाहिये ।

यह नोटिस जैनमित्रके ग्राहक बढें, और समाजमें एक अच्छे पत्रके पढनेवालोंकी संख्या बढे, केवल इसी इच्छासे निकाला जाता है । इसमें हमारा स्वार्थ कुछ भी नहीं है । उपहारके सब ग्रन्थ तयार हैं ।

जैनजातिका हितैषी—
नाथारंगजी गांधी, सोलापूर ।

जरूरी नोटिस ।

जैनमित्रमें छपनेके लिये, सिर्फ ताजे समाचार, और सवाद नीचे लिखे पतेसे आना चाहिये । बाकी सब प्रकारके लेख और पत्रादि सम्पादकके पास ही भेजना चाहिये । प्रत्येक पक्षकी द्वादशीतक आये- हुए समाचार ले लिये जावेंगे ।

नाथूराम प्रेमी—

चन्दाबाडी पो० गिरगांव-बम्बई

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई-

प्रमेहनाशक और अपूर्वताकतकी दवा ।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनको सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिसा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना प्रसगकी इच्छा न होना नपुंसकता,नाताकती, कमरमें दरद, थोडा चलनेसे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुराकी वा जर्दी, बदनमें फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्ब्बलता, रगोकी कमजोरी, उठती जवानीमें कुचालसे पैदा हुई नामर्दी, आदि सब रोग जडसे नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है । जिसमें उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आंखोंमें रोशनी, बदनमें फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है । मूल्य १ डिब्बाका २।।।), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १३) खर्च माफ.

श्वासारिष्ट ।

इससे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है । कीमत १।।।)

नपुंसकत्वारि तैल ।

इसके लगानेसे गुप्तभागसंबंधी सर्व प्रकारके रोग दूर होत हैं । फी सीसी १) डाकखर्च ≈)

पंचतिक्तवटिका ।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है । इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते हैं । किं०।।)डां.≡)

प्रदरांतक चूर्ण ।

इस्से स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस संबंधीं सर्व विकार दूर होते हैं । कीमत १) डां० ≡)

मनरञ्जन तेल ।

हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको मथनकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है । इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठंडक पहुचती है । बदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूरकर लहू और ताकत बढती है । फी सीसी ।।≥) डा. ख. ।)

निमकसुलेमानी ।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, बदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, ववासीर प्रमेहनाशक । है स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है । फी शीशी ।।) डा. ख. अलग ।

दंतकुसुमाकर ।

इसके लगानेसे दांतोंका हिलना मसूडोंका फूलना खूनदर्द आदि आराम हो दांत मोतीकी तरह चमकते है । रोज लगानेसे दात आजन्म दृढ बने रहेंगे । फी डिब्बी ।)

नयनामृत सुरमा ।

इसके लगानेसे आखोंका जाला धुन्ध, फुली, पानी, बहना, सुर्खी, पखर आदि नेत्ररोग दूर होते हैं और ज्योति बढाता, ठंडक रखता और पढते २ आंखों नहीं थकती हैं । फी शीशी १) लगानेकी सलाई ।)

दवा दादकी ।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर मगाती है । फी डिब्बी ।)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य,

आयुर्वेदीय औषधालय—इटावा (U. P)

जैन धर्मप्रचारक पुस्तकालय ।

नीचे लिखी पुस्तकोंमेंसे जो भाई ५) रुपयेंसे कम मगावेंगे, उनको एक आना रुपया कमीशन काटकर पुस्तक भेजी जायगी और ५) से अधिक मगानेवालेको ≈) रुपया और १०) रुपयेसे अधिक मगानेवालेको ।) रुपया अर्थात् पौनीमूल्यमें ग्रंथ भेजे जायगे । ऐसा अवसर कदापि चूकना नहिं चाहिये ।

तेरहद्वीप पूजनाविधान	३)
दर्शन कथा	।≈)
शीलकथा	।)
दानकथा	।–)
रविव्रतकथा	≠)
रक्षाबंधनकथा	≈)
निशभोजनकथा	≡)
जैनव्रतकथासंग्रह	।≈)
ब्रह्मविलास	१।।)
बनारसीविलास	१।।)
दौलतविलास	।।)
प्रभुविलास	≈।।)
न्यामतविलास	≈)
जैनभजननाटकचाल	≈)
जैनभजन मुक्तावली	≈)
चिदानदसुदरीनाटक	।≈)
जैन भजन शतक	।)
ज्ञानानद रत्नाकर जैन भजन	।।)
भजन सग्रह	≈)।।
पूजन सग्रह बडी बम्बई	।–)
सप्तरिषी पूजा	)।।।
नाटकसमयसार भाषा	।।≈)
रत्नकरण्डमूलार्थ	।–)
द्रव्यसग्रह बम्बई	।≈)
सुकमाल उपन्यास	।≈)
बिवाह पद्धति बडी	।।।)
पचमगल बम्बई टाईप	)।।।
सर्वार्थसिद्धि सस्कृत बम्बई	२।।)
जैनग्रथसार प्रथम पुस्तक	।)
तथा दूसरी पुस्तक	।।)
सूक्तमुक्तावली	।)
बालबोध व्याकरण	।≈)
तथा दूसरा भाग	।≈)
सज्जनचित्तवल्लभ काव्य	≡)
भक्तामर भाषाटीका	≈।।)
कल्याणमदिर कोष सहित	–)।।
एकीभाव कोष सहित	–)।।
भूपाल चौबीसी कोष०	–)।।
बिषापहार भाषा	)।।।
पंचस्तोत्र सस्कृत	।–)
दर्शन स्तोत्र	–)।।
छहढाला दौलतराम	–)
छहढाला बुधजन	≡)
छहढाला द्यानतराय	≈)।।
सूत्रजीमूल	–)
सूत्रजी भाषा	।–)
आलोचना पाठ सटीक	–)।।
पीपलरासा	)।।
नवकारमत्र बेल बूटेदार	–)
गौरी सग्रह	–)।।
बारहभावना बडी	।।।)
उपदेशसिद्धांत रत्नमाला	।।।)
चेतनचरित्र	।)
समाध शतक	≈)
स्तोत्र शतक	।)
जम्बू स्वामी चारित्र	≡)
जैन ग्रथ सग्रह ४० पुस्तक है जिल्दबध	१)

लाला जैनीलाल जैन

मालिक—जैनधर्मप्रचारकपुस्तकालय

मु०देवबन्द जि. सहारनपूर

"कर्नाटक" प्रेस, बम्बई.

Registered No. B 288.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापन तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

जैनमित्र

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
मोरेना (ग्वालियर)।

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—**गोपालदास बरैया।**

वर्ष ८ वां] अगहनशुक्ला २ संवत् १९६३ विक्रमाब्द। ता० १८ नवम्बर सन् १९०६ ईस्वी। [अंक ३ रा।

जैनमित्रके फाइल।

सप्तम वर्षके थोडेसे फाइल हमारे पास मौजूद हैं। हम उन्हें जल्दी बेचना चाहते है, इस लिये इस समय बहुत थोड़ी कीमतमे ग्राहकोंको मिल जावेंगे। देर करनेसे दूनी कीमतमें भी नहीं मिल सकेंगे। जैनमित्रके सप्तम वर्षमें कैसे २ बढ़िया लेख छपें हैं, सो किसीसे भी छुपे नहीं हैं। हिन्दीके किसी भी जैनपत्रमें आज तक ऐसे बढ़िया संग्रह करने लायक लेख नहीं छपे हैं। समाचार और थोडेसे समाज सम्बन्धी लेखोंके सिवाय बाकी सब ही लेख हमेशा पढ़ने योग्य और कामके हैं। इसके सिवाय जैनसिद्धान्तके १० फार्म और सुशीला उपन्यासका पूर्वार्द्ध (१० फार्म) भी उसके साथ मिलता है, जिन दोनोंकी कीमत प्रथक् छपने पर कमसे कम १।) रु० होगी। ऐसे उत्तम फाइलको दिसम्बर महीनेके अखीर तक हम सिर्फ १॥) में ही देना चाहते हैं, जिल्द सहित मंगाने वालेको १॥।) लेंगे और भी सुभीता यह है कि, डांकखर्च हम अपना लगा देंगे।

सुशीला उपन्यास
प्रथमभाग।

रायलके बड़े २ अस्सी पेजोंका बहुत बढ़ियां उपन्यास जिसमें कि मनोविनोदके सिवाय धार्मिक शिक्षायें भी मिलती हैं, तयार है। एक बार पढ़ना शुरू करनेसें फिर छोड़नेको जी नहीं चाहता है, मूल्य सर्व साधारणसे दश आना जैनमित्रके ग्राहकोंसे आठ आना। डाक खर्च माफ।

ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा!

विज्ञापन छपानेवालोंको और बँटानेवालोंको।

अबकी बार हमने जैनियोंके अतिरिक्त सर्व साधारण लोगोंके भी विज्ञापन छापने और बांटनेका बन्दोबस्त किया है। और बहुत थोडा चार्ज लेकर किया हैं। सिर्फ इस साइजके तीन पेजके विज्ञापनोंके लिये हमारे पास जगह है, इस लिये विज्ञापन छपानेवालोंको शीघ्रता करनी चाहिये। प्राय. पूरे वर्ष भरके लिये हम ऐसे विज्ञापनोंका ठेका करेंगे, इसलिये जगह भर जानेपर फिर गुँजाइश न रहेगी। जैनियोंमें हमारे पत्रका प्रचार बहुलतासे हैं, जिससे विज्ञापनवालोंको फायदा भी खूब होगा। विज्ञापन बँटानेवालोंको "जैनमित्र अंक अमुकका क्रोड़पत्र" छपानेके सिवाय कमसे कम एक कालिम समाचार भी अपने विज्ञापनोंमें छपाने होंगे। अश्लील विज्ञापन न तो इस पत्रमें छपेंगे और न बँटेंगे। विज्ञापन छपाने बँटानेकी दर पत्रद्वारा तय करनी चाहिये।

ताजे विज्ञापन।

१ जैनमित्रके बहुतसे ग्राहक जैनमित्रके पुराने अंक विनामूल्य मँगाया करते हैं। परन्तु उन्हें जानना चाहिये कि, वे विनामूल्य नहीं मिल सकते। यदि जरूरत हुआ करे, तो =। के टिकट भेजकर मंगाया करें, अन्यथा उनके पत्रका उत्तर नहीं दिया जावेगा।

२ उन ग्राहकोंको अंक विनामूल्य मिल सकते हैं, जो आगेका अंक पहुंचनेके पहले पिछला अंक न पहुंचनेकी शिकायत करेंगे। अकसर लोग अंक खो देते है, और पीछे हमसे मंगाकर फाइलमें रखना चाहते हैं।

३ ग्राहकोंसे अग्रिम मूल्य भेजनेके लिये प्रार्थना बहुत दिनसे की जा रही है। परन्तु अब विलम्ब नहीं है। ग्राहकोंको चाहिये कि, शीघ्र भेजनेकी कृपा करें अथवा हमको वी. पी. भेजनेकी आज्ञा दें। वी. पी. भेजनेका क्रम बहुत जल्दी प्रारंभ होनेवाला है।

• पत्रव्यवहार इस पतेसे कीजिये

मैनेजर—जैनमित्र

पो. मोरेना (ग्वालियर)

जैनमित्र.

अगहन शुक्ला २ श्रीवीर निर्वाण संवत् २४३३
ता० १८ नवम्बर सन् १९०६ इस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

मुलगुंदके मंदिरोंका जीर्णोद्धार।

गत पहले अंकमें रा. रा. देवेन्द्र जिन्हाप्पा हजे की चिट्ठी धारवाड़ जिलाके मुलगुट मौजेके दो दुर्व्यवस्थित मन्दिरोंके विषयमे छपी थी, उसे हमारे पाठकोंने पढी होगी। जिनके हृदयमें धर्मवासना है, और जो जिन मन्दिरोंको कोई चीज समझते हैं, उन्हें उस चिट्ठीसे अवश्य ही खेद हुआ होगा। हर्षका विषय है कि, कानपुरकी जैनबालसभाने दयार्द्र होकर उक्त मन्दिरोंके जीर्णोद्धारके लिये ५०) रुपया इकमुश्त और वहा जो पुजारी नियत किया जावे, उसके लिये एक रुपया महिना हमेशाके लिये देना स्वीकार किया है। बालसभाका यह कार्य अतिशय स्तुत्य और अन्य वृद्धसभाओंके अनुकरण करने योग्य हुआ है। श्री देवेन्द्र जिन्हापाने भी १०) रुपयाकी सहायताका वचन दिया है। "नवीन मन्दिर बनवानेकी अपेक्षा किसी प्राचीन मंदिरके जीर्णोद्धार करनेमें अधिक पुण्य है।" इस शास्त्राज्ञाका विचार करके धर्मात्मा सज्जनोंको इस ओर अवश्य ही ध्यान देना चाहिये। पाच सात रुपये महीनेका पुजारी रख देनेसे और दोसौ चारसौ रुपया मन्दिरोंकी मरम्मतमें लगा देनेसे ही मंदिरोंकी व्यवस्था अच्छी हो सकती है।

श्रवणबेलगुलका सरस्वती मंदिर।

हमारे बहुतसे पाठक श्रवणबेलगुलके (जैनबद्री) प्रसिद्ध सूरसेन शास्त्रीके पुत्र दौर्बलिजिनदास शास्त्रीको जानते होंगे। आपके यहां आपके पूर्वजोंका एकत्र किया हुआ जैनग्रन्थोंका एक बड़ा भारी संग्रह है। हम समझते हैं, ऐसा संग्रह कदाचित् ही किसी दूसरे स्थानमें होगा। यह ग्रन्थसंग्रह अभीतक उनके पुराने घरहीमें है परन्तु अब उन्होंने उसके लिये एक पृथक् सरस्वतीमंदिर बनवाना प्रारंभ कर दिया है, जिसका कार्य आधेसे भी अधिक हो चुका है। उनकी इच्छा है कि, नवीन मंदिरमें जिसमें कि, आगी पानीका डर सर्वथा नहीं होगा, व्यवस्थापूर्वक ग्रन्थ रक्खे जावे और प्रतिदिन उनकी पूजा हो। परन्तु सरस्वतीमन्दिरका कार्य उनकी शक्तिसे अधिक हो जानेके कारण सुनते है कि, अधूरा पड रहा है। जैनियोंमे एक सुव्यवस्थित पुस्तकालयकी बड़ी भारी आवश्यकता है, श्रीदौर्बलिशास्त्रीके सरस्वती मंदिरसे उसकी अनेक अंशोंमें पूर्ति हो सकेगी। इसलिये जिनवाणीके भक्तोंको उनके सरस्वती मंदिरको द्रव्यकी सहायता देकर पूर्ण तयार ही नहीं करा देना चाहिये बल्कि आवश्यकीय नवीन और प्राचीन ग्रन्थोंकी सहायतासे उसको एक उत्तम पुस्तकालय बनाना चाहिये। यह कार्य बड़े भारी पुण्यका है।

स्वदेशी आन्दोलनमें जैनी।

जैनियोंमें अधिक भाग व्यापारियोंका है। इसलिये स्वदेशी आन्दोलनसे जितना सम्बन्ध जैनियोंका है, उतना किसीसे नहीं है। क्योंकि स्वदेशी आन्दोलन देशके व्यापारको उत्तेजित करनेके लिये है। परन्तु खेद है कि, इस स्वदेशी आन्दोलनमें जैनी बहुत कम शामिल होते हैं। यह सच है कि, जैनी अपने महाराज एडवर्डकी सच्ची राजभक्त प्रजा है, इसलिये उन्हें राज्य विरुद्ध कार्य नहीं करना चाहिये। परन्तु स्वदेशी आन्दोलन कुछ राज्यविरुद्ध कर्म नहीं है। हमारी सरकारकी इच्छा है कि, भारतवर्षका व्यापार बढे, तथा यहाकी प्रजा सुखी रहे और स्वदेशी आन्दोलन इस इच्छाको पूर्ण करनेवाला है। तब वह राज्य विरुद्ध नहीं कहा जा सकता। इसलिये जैनियोंको स्वदेशी आन्दोलनमें अवश्य ही सम्मिलित होना चाहिये।

स्वदेशी आन्दोलन और पवित्रता।

विलायती शक्कर, केशर, और कपड़ोमें गोरक्त चर्बी आदि अपवित्र चीजोंका संसर्ग सिद्ध होनेसे अब विलायती वस्तुओंपरसे लोगोंकी श्रद्धा बिल्कुल उठ गई है। अंग्रेज लोगोंका द्रव्य कमाना और सुखसे रहना यही मुख्य धर्म है, इसलिये वे प्रत्येक वस्तुको ऐसे पदार्थोंसे बनाते हैं, जिसमें लाभ अधिक हो, और भड़कीलापन आ जावे। वह चीज चाहे पवित्र हो चाहे अपवित्र इसका विचार उन्हें नहीं है। इससे हम लोगोंको समझना चाहिये कि, विलायतके गोरे हाथोंसे बनी हुई कोई भी चीजें पवित्र और स्पर्श्य नहीं हैं। यदि कोई एकाध पवित्र चीज भी बनती होगी, तो वह घुणाक्षरन्यायसे बनती होगी। किन्तु हमारे देशके बने हुए प्राय. सम्पूर्ण पदार्थ पवित्रतासे बनाये जाते हैं उनमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं रहता। और स्वदेशी आन्दोलनका उद्देश विलायती वस्तुओंका त्याग करके स्वदेशी वस्तुओंका व्यवहार करना है। तब पाठकगण सोच सकते हैं कि, स्वदेशी आन्दोलनमे पवित्रताका कितना सम्बन्ध है, और पवित्रता हमारी कितनी पूज्या है।

डाक्टरी दवाइयां।

समयकी बलिहारी है। जिस देशमें स्पर्श्यास्पर्श्यका बेहद विचार था, जहां चित्तकी ग्लानिसे एक ही वर्णके लोग एक साथ भोजन करनेमें पाप समझते थे और जहां "तीन ब्राह्मण तेरह अंगीठी" की कहावत प्रचलित थी, उसी देशमें आज निन्द्यसे निन्द्य पदार्थोंकी बनी हुई और जिन्हें शौचक्रियाकी भी जरूरत नहीं होती है, ऐसे लोगोंके हाथोंकी बनाई हुई करोड़ों रुपयेकी दवाइयां पचामृत समझकर बर्तावमें आने लगी है। जिन जैनियोंके घरोमें मर्यादासे बाहरका छना हुआ जल भी वर्तावमें नहीं लाया जाता है, जो जैनी सचित्त अचित्त और द्विदलके विचारमें डूबे रहते हैं, और जो जैनी भोजनमें एक बाल भी निकल आता है, तो उस भोजनको त्याग देते हैं, आज उन्हीं जैनियोंकी संतान अस्पतालोंमें जाकर बोतलेंकी बोतले खाली कर देती है और यह भी नहीं पूछती है कि, क्यों डाक्टर साहब! इसमें जो पानी मिलाया गया है, वह कितने दिनका सडा हुआ है? ये कम्पौंडरसाहब क्रिश्चियन हैं या मुसलमान? और इस दवाईमें मेंडककी चर्बी पडी हुई है, अथवा मछलीका तेल? हाय! अंग्रेजी शिक्षा दीक्षा और अनुकरणने हमारा सर्वस्व लूट लिया। अब हमारी संतानका शरीर ऐसे २ अपवित्र पदार्थोंसे संस्कारित हो रहा है, तब फिर क्या आशा है कि, कभी ये अहिंसाधर्मकी दुहाई देगी? प्यारे भाइयो! सचेत हो जाओ, अब भी सोते रहोगे, तो तुम्हारे इस पवित्र अहिंसाधर्मका पवित्र नाम भी उठ जावेगा और चारों ओर सर्वभक्षं भूयात्का आसुरीमंत्र प्रतिध्वनित होने लगेगा।

महाविद्यालयकी अवस्था अच्छी है।

पहले अंकमें महाविद्यालयके विषयमें किसी जैनीकी चिट्ठीका कुछ अंश छपा था, हर्षका विषय है कि, उसका उत्तर महाविद्यालयके मंत्री बाबू चन्दूलालजी वकीलने दिया है और उस चिट्ठीको सर्वथा निर्मूल ठहराया है। आपके लेखका साराश यह है कि, "महाविद्यालय जिस वक्त सहारनपुर आया था, कुल चौदह लडके आये थे, जिनमेंसे सोनपाल तो अपने बापके मरनेके कारण और बुधसेन बीमारीके कारण चला गया, और तीन लडके गजाधर, उदयलाल, सुन्दरलाल पीछे छुट्टीपर जाकर नहीं आये। बाकी ९ लडके सोनपाल, पारसदास, नेकराम, अमोलकचन्द, मक्खनलाल, नेमीदास, साहूलाल, शिवदयाल, और श्रीदयाल अब मौजूद हैं। इनमें पहले पाच पडित कक्षामे और पिछले चार प्रवेशिकामें पढते है। एक गोरेलाल पडितकक्षाका विद्यार्थी पहले नहीं आया था, वह अब आ गया है। प्रयोजन यह कि, १० पुराने होशयार विद्यार्थी महाविद्यालयमें मौजूद हैं और जितने नये लडके भरती किये गये है, वे भी सब प्रवेशिकामें पढते हैं और उसके योग्य है। तीन अध्यापक इस समय महाविद्यालयमें पढाते हैं, एक पडित गिरधरलालशर्मा व्याकरणाचार्य, न्यायशास्त्री, प्रथमाध्यापक हैं। दूसरे पडित रामदयालजी जैनी द्वितीयाध्यापक है और तीसरे लाला द्वारकाप्रसादजी अंग्रेजी माष्टर है। बोर्डिंगका बहुत ही अच्छा प्रबन्ध है, विद्यार्थियोंको हर तरहसे आराम दिया जाता है। हिसाब देखनेसे मालूम हो सकता है कि, गतवर्षमें खर्च भी ज्यादा नहीं हुआ है। सहारनपुरमे महाविद्यालय बहुत अच्छी अवस्थामें है। अफसोस कि, लेखक महाशय अपना नाम प्रगट नहीं करते, नहीं तो उन्हें सब कुछ साम्हने दिखला दिया जाता। टट्टीकी ओटमें शिकार खेलना अच्छा नहीं है। इत्यादि" चिट्ठी लिखनेवाले महाशयसे हमारा भी निवेदन है कि, वे ऐसे झूठे समाचार लिखकर लोगोंको सन्देहमें न डाला करें, जो कुछ लिखें सच २ लिखें, जिससे कार्योंका सुधार होवे।

नादगांवकी जैनपाठशाला।

बुद्धिमानोंमें जो विवाद होता है, वह तत्त्वनिर्णयके लिये होता है। उसमें न तो कोई पारम्परिक वैमनस्य उत्पन्न होता है, और न द्वेषबुद्धि उत्पन्न होती है। परन्तु जहां अज्ञानताका जमाव होता है, वहा यदि कोई विवाद होने लगे, तो समझ लेना चाहिये कि, इसका फल अच्छा नहीं है। विवाद करनेवाले एक दूसरेके कट्टर शत्रु हो जावेंगे। हमारे जैनसमाजमें दुर्भाग्यसे आजकल ऐसे ही विवाद हुआ करते हैं। नासिक जिलेके नादगावनगरका जैनसमाज इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। नांदगावमें व्यापारी जैनियोंका अच्छा समूह है। कुछ दिन पहले वहा एक अच्छी जैनपाठशाला स्थापित हो चुकी है, जिसके समाचार जैनमित्रमें समयपर निकल चुके हैं। इस पाठशालामें खर्चकी इतनी गुजाइश है कि, बाहरके १५-२० विद्यार्थी स्कालर्शिप देकर पढाये जा सकते हैं और शायद कुछ विद्यार्थी पढते भी हैं। उक्त पाठशालासे हमको बहुत कुछ आशा थी। परन्तु खेद है कि, वह सुन्दर पाठशालालता फल लगनेके पहले ही परस्परके कलहतापसे मुरझाने लगी है और यदि शान्तिजलसेचनका शीघ्र ही कोई उपाय न हुआ, तो कुछ दिनोंमें आश्चर्य नहीं कि नष्ट ही हो जावे। सुना है कि, उक्त कलहका कारण और कुछ नहीं तेरहपंथ और बीसपंथका विवाद तथा कुछ आपसी विरोध है, जिससे एक बडी भारी उन्नतिकी जड काटी जा रही है। हम नादगावके सज्जनोंसे प्रार्थना करते है कि, भाइयो! इस पाठशालाको जो आपने अपनी उदारतासे स्थापित की है, एक होकर तनमनधनकी सहायतासे चलाते जाइये। जो विद्यार्थी इस पाठशालामे तयार होंगे, आप देखेंगे कि, वे आपके इस तेरह बीस आदिके सब झगडोको सर्वथा मिटा देंगे। क्योंकि इसकी जड अज्ञानता है। जब आपका समाज शिक्षित हो जावेगा और १०-५ संस्कृतके विद्वान आप तयार कर लेंगे, तब स्वयं ही इस विवादका अन्त हो जावेगा। परन्तु हाय! आप तो पाठशालाकी ही जड काट रहे है, जिससे विवादका अन्त होनेकी कुछ आशा ही नहीं है। हमारी समझमें तो ऐसा करके आप आपसी वैर विरोधका अपने यहा सदाके लिये अड्डा जमा रहे हैं और अज्ञानकी वृद्धि करनेवाले एक ऐसे पापका संचय कर रहे हैं, जिसका फल बहुत बुरा होगा। श्रीजी नादगांवके भाइयोंको सुमति देवे, जिससे कि, वे अपनी संतानकी परमहितकारिणी पाठशालाको चिरस्थायी बनानेका उद्योग करें और आपसी वैर विरोधको छोडकर एकताके दृढसूत्रमें बँध जावें।

स्थानकवासी नहीं दिगम्बरी।

अमृतसरके लाला उम्मेदसिंह मुसद्दीलालजीको गत किसी अंकमें हमने स्थानकवासी जैनी लिखा है। परन्तु यथार्थमें आप दिगम्बराम्नायी हैं, भूलसे स्थानकवासी लिखा गया था। अमृतसरमें दिगम्बरी भाई बहुत थोडे है, श्वेताम्बरी स्थानकवासी बहुत हैं। आपका ससर्ग उन्हीं लोगोंसे अधिक रहता है, इस कारण लोग अटकलसे आपको ऐसा ही समझ लेते है। आपकी इच्छा यह रहती है कि, दिगम्बरी श्वेताम्बरी सब भाइयोंमें प्रीतिभाव और विद्याका प्रचार होवे। जिनवाणीकी सेवापर आपका विशेष लक्ष्य रहता है।

स्त्रियोंका रजोधर्म।

क्षत्रियवैश्यविप्राणां सूतकाचरण विना।
देवपूजादिकं कार्यं न स्यान्मोक्षप्रदायक ॥

(त्रिवर्णाचारे)

अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्योंके यदि सूतकाचारोंका पालन नहीं होता हो, तो उनको देवपूजादिक कार्य मोक्षके देनेवाले (परपरासे) नहीं हो सकते। इसलिये इन द्विजातियोंको सूतकाचारकी ओर विशेषदृष्टि रखना चाहिये। सूतक चार प्रकारके होते है, १ आर्तव, २ सौतिक, ३ आर्त्त और ४ तत्सगज। इनमेंसे आज हम आर्तवसूतकके विषयमें कुछ लिखना चाहते हैं, जिसको कि स्त्रियोंका मासिकधर्म भी कहते हैं। यह एक ऐसा विषय है कि, जो प्रत्येक कुलीन गृहस्थ और कुलस्त्रियोंको अवश्य जानना चाहिये। क्योंकि इसके जाने विना स्वच्छन्दतापूर्वक चलनेसे न केवल पाप ही होते हैं किन्तु पुरुष स्त्रियोंको नाना प्रकारके रोगोंमें फँसकर आजन्म दुःख भोगना पडते हैं। जिस कुलमें आर्तवसूतक यथाविधि पालन नहीं होता है, वह कुल नष्ट, भ्रष्ट, बलहीन, और रोगी सतानके होनेसे थोडे ही दिनमें नष्ट हो जाता है। हमारे देशके आर्य वैद्यकग्रन्थ तो इस विषयमें एक मतसे सम्मति देते ही हैं, किन्तु यूरोपीय बडे २ डाक्टरोंका भी यही मत है कि, मासिकधर्मके समय स्त्रियोंको बडे विचार और सयमसे रखना चाहिये, अन्यथा उनसे अच्छी संतान उत्पन्न नहीं हो सकती।

हम जानते थे कि, हमारे समाजमें मासिकधर्मसम्बन्धी संयमपर सर्वत्र ध्यान दिया जाता होगा और सोलह आने नहीं तो १२-१४ आने क्रियाओंका व्यवहार तो सब ही जगह होता होगा। परन्तु गत-

वर्ष जब बम्बईमें एक स्थानका जिसका कि मै नाम प्रकट करना उचित नहीं समझता हू, बडा भारी सघ आया था, तब यहाकी एक धर्मात्मा बाईकेद्वारा यह जानकर बहुत दु ख हुआ कि, उस देशमें जहा का कि वह सघ था, इस ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया जाता है। और तो क्या उक्त बाईने अनेक स्त्रियोंको रजस्वला अवस्थामे मन्दिरको जाते भी देखा था!! इस घोर पापकृत्यकी बातको सुनकर किस धर्मात्माका हृदय न कांप उठेगा, और किसको उद्वेग नहीं होगा? हमारा उस समय विचार हुआ था कि, इस विषयपर कुछ लिखें परन्तु कई कारणोंसे उस समय कोई लेख नहीं लिखा जा सका। आज वह विचार बदलकर इस रूपमे परिणत हो गया कि, अनेक लोग रजस्वलाके सूतकको यथार्थ रूपमे नहीं जानते है, इस लिये उन्हें यदि शास्त्रोंकी आज्ञापूर्वक यह विषय समझा दिया जावेगा, तो बहुत कुछ लाभ होगा। श्रीसोमसेनकृत त्रिवर्णाचारमें आर्तवसूतकका वर्णन इस प्रकारसे किया है –

१ स्त्रियोंको प्रकृत और विकृत दो प्रकारका पुष्प होता है। पुष्प, रज, आर्तव, आदि एकार्थ वाची शब्द है।

२ प्रकृतरज उसको कहते है, जो स्त्रियोंके स्वभावसे महिने महिने जाता है। और विकृत उसको कहते हैं, जो रोगादि कारणोंसे विना समयके जाता है।

३ पचास वर्षसे ऊपर अवस्थावाली स्त्रियोंके जो रज जाता है, उसको अकालरज कहते है। इस अकालरजको दूषित नहीं माना है।

४ रजोदर्शनके पश्चात् तीन दिन तक स्त्रिया अपवित्र रहती है। किसी किसीका मत हैं कि, अर्ध रात्रिके पहले पहले यदि रजोदर्शन हो जावे, तो उसका एक दिन गिन लेना चाहिये, और कोई कोई कहते हैं कि, सूर्य निकलनेके पहले पहले तक पूर्व दिन गिनना चाहिये। हमारा मत यह है कि, रात्रिके तीन भाग करके पहले दो भागोंको पूर्व दिनमे और तीसरे भागको आगामी दिनमें गिनना चाहिये।

५ कभी २ ऐसा होता है कि, ऋतुकालके तीन दिन पूरे हो जानेपर भी स्त्रियां रजस्वला रहा करती हैं। उस अवस्थामें स्नानमात्रसे शुद्धि मानी गई है। परन्तु इसका विधान अठारह दिनके पहले पहले तक है। यदि अठारहवें दिन होवे, तो उसकी शुद्धि दो दिनमें होगी, और उन्नीसवें दिन अथवा उसके पीछे होवे, तो तीन दिनमें शुद्धि मानी जावेगी।

६ जो अतिशय यौवनवती स्त्रिया हैं, वे यदि अठारहवें दिनमें रजस्वला हो जावे, तो उनकी शुद्धि तीन दिनमें माननेकी आज्ञा है।

७ ऋतुकालमें स्त्रियोंको कुशासनपर सोना चाहिये और एकान्त स्थानमें जहा कि किसीका स्पर्शादि न होवे, मौन धारणपूर्वक बैठना चाहिये। उस समय किसी प्रकारकी धर्मकथा नहीं करना चाहिये, परन्तु मनमें पचनमोकारमंत्रका स्मरण करते रहना चाहिये।

८ ऋतुकालमे मालती माधवी आदि पुष्पोंकी माला धारण नहीं करनी चाहिये। अजन, तैलमर्दन, गधलेपन, और श्रृगारका त्याग करके तीन दिनतक ब्रह्मचर्यसे रहना चाहिये।* दूध दहीं आदि गोरसका अथवा खीरका दिनमें सिर्फ एक बार भोजन करना चाहिये।

९ देव, गुरु, राजा और कुलदेवका न तो मुख देखना चाहिये और न उनके साथ वार्तालाप करना चाहिये। अपना मुख दर्पणमें देखनेकी भी मनाई है।

१० वृक्षके मूलमे, खाट पलगपर, तथा शय्यापर, नहीं सोना चाहिये। दिनमे सोनेका सर्वथा निषेध है।

११ भोजन हाथपर, पत्तलमे अथवा तावे पीतलके वर्तनमें करना चाहिये। कासेके पात्रमे भोजन करनेसे वह पात्र अग्निसे शुद्ध हो सकता है।

१२ रजस्वला स्त्रीको चौथे दिन गोसर्गके पश्चात् स्नान करना चाहिये। प्रातःकालसे ६ घडी पश्चात् तक अर्थात् २॥ घटा दिन चढनेतक गोसर्ग काल कहलाता है।

१३ चौथे दिन स्नानके पश्चात् स्त्री अपने पतिके लिये शुद्ध हो जाती है। उस दिन केवल पतिके लिये वह भोजन भी बना सकती है। परन्तु देवपूजा, गुरुसेवा, होम आदि कार्य करनेकी आज्ञा उसे पाचवें दिन है।

१४ यदि चतुर्थस्नान करनेके पहले स्त्री और पुरुष परस्पर वार्तालाप करें, तो उन्हें बड़ा भारी पाप लगता है, इसलिये सभाषणादिका भी त्याग होना चाहिये।

१५ यदि रजस्वला अवस्थामें स्त्री पुरुष दोनोंने वार्तालाप किया हो, तो उन दोनोंको तज्जन्य पापकी शुद्धि एक उपवाससे करनी चाहिये। सहवास किया हो, तो दो उपवाससे और एक साथ भोजन किया हो, तो तीन उपवाससे करना चाहिये।

१६ यदि रजस्वला स्त्री और द्विजातियोंसे (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यसे) वार्तालापादि हो, तो उनकी शुद्धि क्रमसे दो तीन और चार दिनके उपवासोंसे होती है। और द्विजातियोंके सिवाय अन्य जनोंसे हो, तो पूर्व प्रकारसे अथवा दान करनेसे भी शुद्धि होती है।

१७ यदि स्त्री रजस्वला हो और उस समय कोई सूतक प्रेतक हो जावे तो, उसे स्नान करके भोजन करना चाहिये।

१८ भोजन करते समय यदि आर्तव हो जावे, तो मुहके कवलको छोड़ करके स्नान करना चाहिये पश्चात् भोजन करना चाहिये। और यदि फिर भी शका हो जावे, तो पुन स्नान करना चाहिये।

१९ रजस्वला अवस्थामें यदि स्नान करनेकी आवश्यकता हो, तो नदी तालावादिमे अवगाहन करके स्नान नहीं करना चाहिये। किन्तु कूप तालावादिमेंसे निकाले हुए जलसे करनेकी आज्ञा है।

२० अज्ञानतासे यदि कपडेमें रज लग जावे, तो उससे जिन पदार्थोका स्पर्श होगा, वे सब दूषित हो जावेगे। रजस्वला स्त्रीके हाथभर अन्तरके अन्य सब पदार्थ भी दूषित हो जाते है, इसलिये उसे सब पदार्थोंसे हाथभर पृथक् रहना चाहिये।

२० अज्ञानतासे अथवा जान बूझके रजस्वलाके हाथका दिया भात अथवा और कुछ जो कोई खा लेवे, उसे एक दिन अथवा दो दिनका उपवास करना चाहिये।

२१ रजके बन्द होनेपर ही प्रक्षालन और स्नान करनेसे शुद्धि होती है। परन्तु जबतक वह नारी रहता है, तबतक तो अशौच निश्चयसे रहता है।

२२ रजस्वला स्त्री जहापर कुछ समय बैठी हो, सोई हो, और जहां उसने भोजन किया हो, उस स्थानको मिट्टी, गोबर अथवा जलसे शुद्ध करना चाहिये।

*नाखून काटना, कघीसे केश साफ करना, उबटना करना, दौड़ना, बहुत हसना, रोना, उच्चस्वरसे बोलना पखेसे वायु करना, स्नान करना परिश्रम करना और बादी भोजन करना, ये सब काम भी रजस्वलाको मना है।

२३ रजस्वला स्त्रीका दुग्धपान करनेवाला यदि कोई बालक हो, तो उसकी शुद्धि जलके छींटे देनेसे हो जाती है।

२४ रजस्वला स्त्रीके भोजन किये हुए पात्रमें यदि कोई मनुष्य भूलसे भोजन कर लेवे, तो उसे सचेलक स्नान करके दो उपवास करना चाहिये।

२५ रजोवती स्त्रीके वस्त्रोंका उसके वर्तनोंका और उसके बैठनेके स्थानका यदि स्पर्श हो जावे, तो स्नान करके नमोकार मंत्रके १०८ जाप करना चाहिये।

चंदावाडी } जातिका सेवक,—
ता० १०-११-०६ } नाथूराम प्रेमी।

हमारे देशका व्यापार कैसे डूबा?

हमारी जैनजाति भारतवर्षकी प्रसिद्ध व्यापारी जाति है। देशका अधिकाश व्यापार हमारे हाथसे ही होता आया है। पहले होता था और थोडा बहुत अब भी होता है। परन्तु पहले व्यापारमें और वर्तमान व्यापारमें परस्पर विरुद्धता है। पहले हमारे द्वारा प्रतिवर्ष हमारे देशको करोडों रुपयोंका फायदा होता था और अब प्रतिवर्ष उतना ही नुकसान होता है। क्योंकि पहले हम अपने देशके बने हुए पदार्थ यूरोपादि देशोंको भेज कर वहासे करोडों रुपया लाते थे और अब दूसरी विलायतोंके बने हुए नाना प्रकारके पदार्थ यहां मगाकर उनके बदले करोडों रुपया भेजते है। पहले हमारा सारा देश एक छोरसे दूसरे छोरतक मालामाल था और अब इस तरह प्रतिवर्ष करोडों रुपया विलायतोंको चले जानेके कारण अतिशय कगाल हो गया है। अब यहा प्रतिवर्ष अकाल पडते हैं, लाखों आदमी भूखे मरते है और करोडों आदमी आधा पेट अन्न खाकर सो जाते हैं!! देशकी ऐसी शोचनीय दशा हो रही है, परन्तु हम लोग नहीं जानते कि, इसका कारण क्या है? एक तो अपनी मूर्खताके कारण हम इसका कभी विचार ही नहीं करते है, और कभी जीमें आता भी है कि, लोग दिन पर दिन तंग दस्त क्यों हो रहे हैं, तो दैवलीला समझकर चुप हो जाते हैं। परन्तु व्यापारियोंको ऐसा नहीं करना चाहिये। इसके यथार्थ तत्त्वोंका अनुसंधान करना चाहिये। क्योंकि किसी विषयका सम्पूर्ण तत्त्व जाने विना उस विषयमें पूरी योग्यता व सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है। यद्यपि हम लोग विलायती मालको ला मंगाकर और अपने देशमें बेचकर उससे नफा उठा रहे हैं, परन्तु यह नफा पराश्रित और क्षणिक है। इसका फल परिणाममें बहुत भयानक होगा। हमको यह सोचना चाहिये कि, जब देश दिन पर दिन निर्धन होता जाता है, और भूखे मरनेवालोंकी सख्या बढती ही जाती है, तब क्या एक दिन ऐसा आने वाला नहीं है जब हमारी विलायतसे मंगाई हुई इन चटकीली भडकीली चीजोंको कोई छूनेवाला और पूछनेवाला भी नहीं मिलेगा और हम हाथ पर हाथ रक्खे हुए बैठे रहेंगे! वह दिन अब बहुत निकट आ रहा है, इस लिये हमको पहले ही सचेत हो जाना चाहिये।

सबसे पहले हमको यह जानना चाहिये कि, जिसके कारण हमारा देश "सोनेकी चिडिया" कहा जाता था और संसारके सम्पूर्ण देशोंसे अधिक धनाढ्य कहलाता था, वह हमारा व्यापार कैसे डूबा? और उसके डूबानेवाले हम ही हैं, अथवा अन्य कोई? यह जाननेके पश्चात् यदि हम अपने देशके व्यापारका उद्धार कैसे हो, इस विषयपर विचार करेंगे, तो अच्छा होगा।

†प्राचीनकालमें यहाका व्यापार बहुत बढा चढा था। यहाकी बनी हुई वस्तुएँ पृथ्वीके सब भागोंमें भेजी जाती थीं और वे आदरके साथ बिकती थीं। आप लोगोंको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि, अकेले बंगालप्रान्तसे हरसाल पन्द्रह करोड रुपयेका महीन कपडा विदेशोंको भेजा जाता था। पटनामें ३३०४२६, शाहाबादमें १५९५०० और गोरखपुरमें १७५६०० स्त्रिया चरखोंपर सूत कातकर ३५ लाख रुपये कमाती थीं। इसी प्रकार दीनापुरकी स्त्रिया ९ लाख और पुर्निया जिलेकी स्त्रिया दश लाख रुपयेका सूत कातती थीं। मुर्शिदाबादका व्यापार बडी उन्नतिपर था। उसके विषयमें सन् १७५७ में लार्ड क्लाइवने लिखा था कि, "यह शहर लंदनके समान विस्तृत, आबाद और धनी है। इस शहरके लोग लंदनसे भी बढकर मालदार है।" परन्तु जबसे विदेशी लोग हमारे देशमें आये, तबसे उन्होंने हमारे देशको मिट्टीमें मिलानेका यत्न प्रारंभ कर दिया।

ईस्टइंडियाकम्पनीकी अमलदारीके प्रारंभमें अंगरेजोंने इस देशके जुलाहों और व्यापारियोंपर बडे २ अत्याचार किये हैं, जिन्हें सुनकर रोम खडे हो जाते हैं। ये लोग हमारे जुलाहोंको न तो कपडा बुनने देते थे और न बुना हुआ बेचने देते थे। यही हाल दूसरे रोजगारियोंका भी था। नवाब मीर कासिमने सन् १७६२ में एक पत्रमें गवर्नर सा० को लिखा था कि, ये लोग रैयत और व्यापारियोंका माल जबर्दस्ती ले जाते हैं सिर्फ चौथाई कीमत देते हैं और अपनी एक रुपयेकी चीज जबर्दस्ती पाच रुपयेमें देते है।" विलियम बोल्टससाहबने अपनी एक किताबमें लिखा है कि, "कम्पनी इस देशमे बडे जुल्म और अत्याचार करती है। यहाकी पैदा होनेवाली प्रत्येक वस्तुका वह ठीका ले लेती है और अपनी ही खुशीसे उसका भाव नियत करती है। उसके गुमाश्ते प्रत्येक गांवके जुलाहों और व्यापरियोंको कुछ रुपया देकर उनसे जबर्दस्ती तमस्सुक लिखवा लेते हैं कि, इतना माल, इतने दिनोंमें, इस भावसे दिया जावेगा। इस तमस्सुकमें मनमानी शर्ते रहती हैं। यदि लोग पेशगी लेनेसे इकार करते हैं तो रुपये उनकी कमरमें बांध दिये जाते हैं और कोडे मारकर कचहरीसे निकलवा दिये जाते हैं। अनेक व्यापारियोंके नाम दर्जरजिष्टर रहते हैं, उन्हें किसी दूसरेका काम करनेकी आज्ञा नहीं रहती है। वेचारे जुलाहोंको १००) रु के मालमें बडी कठिनाईसे ५०-६० रुपये दिये जाते है। तमस्सुककी शर्तोंके मुताबिक जब लोग माल तयार नहीं कर सकते है, तब उनकी जायदाद छीनकर उससे रुपये वसूल किये जाते है। रेशम लपेटनेवालोंके साथ ऐसे अन्यायका व्यापार किया गया है कि, उन लोगोंने रेशम लपेटना न पडे इसलिये अपने अगूठेतक काट डाले है!!"

इसके बाद जब कम्पनीकी व्यवस्थित सत्ता शुरू हुई, तब उसने यहाका व्यापार सभ्यताके उपायोंसे बरबाद करनेकी योजना की। कम्पनीके डाइरेक्टरोने हुक्म जारी किया कि "बंगालके लोगोंको रेशमका कपडा बुननेसे रोकना चाहिये। वे लोग सिर्फ कच्चा रेशम तयार करें। उस रेशमके कपडे इंग्लैंडके कारखानोंमें बुने जायगे। रेशम लपेटनेवालोंको कम्पनीके ही कारखानोंमें काम करना चाहिये। यदि वे दूसरी जगह काम करें, तो उन्हें सख्त सजा दी जाय।" इसका फल यह हुआ कि, हमारे देशमें सिर्फ कच्चा माल तयार होने लगा और वह सब इंग्लैंडके कारखानोंमें जाने लगा। यहांके कारीगर रसातलको चले गये और व्यापार मिट्टीमें मिल गया।

इतना होनेपर भी उस समय यहांके बने हुए सूती

† "स्वदेशी आन्दोलन और बायकाट" के आधारसे।

रेशमी कपडोंपर विलायतमें ५०-६० रुपया सैकडा नफा मिलता था, और वे वहाके कारीगरोंके बनाये हुए कपडोंकी अपेक्षा अधिक पसन्द किये जाते थे। परन्तु यह बात कम्पनी सरकारको अच्छी नहीं लगी। लदनकी पार्लिमेंट सभामें सन् १८१३ में यह कानून बनाया गया कि, जो व्यापारी हिन्दुस्थानी कपडा वेचेगा, उसे २००) रु० और जो मनुष्य हिन्दुस्थानी कपडा पहनेगा, उसे ५०) रुपये दंड देना होगा। इतना करने भी अगरेज सज्जनोंकी शाति नहीं हुई, इसलिये उन्होंने सन् १८१५ में एक दूसरा कानून जारी किया कि, "इंग्लेंडमें कालीकटसे आनेवाले १०० पौंडके कपडेपर ६८ पौंड ६ शिलिंग २ पेन्स टैक्स लगाया जाय, ढाकाकी १०० पौंडकी मलमलपर २७ पौंड ६ शिलिंग ८ पेंस टैक्स लगाया जाय और हिन्दुस्थानके रगीन कपडेकी आमद सर्वथा बन्द कर दी जाय। जब अंगरेजोंने देखा कि, इतना कडा कर लगानेपर भी हिन्दुस्थानकी चीजें बिक्रीके लिये इंग्लेंडमें आती हैं, तब उन्होंने २० पौंड सैकड़ा कर और बढा दिया!! इस प्रकार स्वार्थांध होकर सभ्य अगरेजोंने हमारे व्यापारको बरबाद कर दिया, और अपने व्यापारको उन्नतिके शिखर पर पहुचा दिया। विलायती कपडोंपर हिन्दुस्थानमें पहले कुछ थोडासा कर लिया जाता था, वह सन् १८९२ ईस्वीमें सर्वथा उठा दिया गया; जिसमें हिन्दुस्थानका बाजार विलायती मालसे भर गया और यहासे जो कपास विलायतको जाता था, उसका कर बन्द कर दिया, जिससे कि इंग्लेंडके मिलवाले अपनी मिलें सुगमतासे चला सकें।

विलायतकी देखादेखी पीछे पीछे यहा भी थोडी बहुत मिले खोली गई थीं, वे बाल्यावस्थामें ही थी, परन्तु शायद व भी ऊपर सिर न निकाल लेवें, इस अभिप्रायसे सन् १८९६ ईस्वीमें उनके बने हुए कपडोंपर भी ३॥ सैकडा कर लगादिया गया।

हमारे पाठक समझ गये होंगे कि, यहाका व्यापार कैसे डूबा और अंगरेजोंका व्यापार कैसे चमका। अब यह विचारना शेष है कि, हमारे व्यापारका उद्धार कैसे हो? सो हमारी समझमें अंगरेजोंका अनुकरण करनेसे ही हमारा व्यापार बढ सकता है। परन्तु अंगरेजों जैसी राजसत्ता हमारे हाथमें नहीं है, इस कारण हम सिर्फ इस उपायसे अपने व्यापारको सजीवित कर सकते हैं कि, विदेशके बने हुए पदार्थोंको सर्वथा काममें न लावें और अपने देशकी बनी हुई चीजोंका वर्ताव करना सीखें। इसी प्रतिज्ञासे अगरेजोंने अपने व्यापारको बढाया था। हर्षका विषय है कि, आज हिन्दुस्थानके एक छोरसे दूसरे छोरतक स्वदेशीवस्तुव्यवहारका जोश स्थिररूपसे बढ रहा है और विलायती वस्तुओंका खर्च दिनपर दिन घट रहा है। परन्तु वर्तमानमें हमारे देशकी कारीगरी और व्यापार इस अवस्थाको पहुचा हुआ है कि, स्वदेशी प्रतिज्ञा करनेवालोंको स्वदेशी वस्तुएं दूना दाम देनेपर भी नहीं मिल सकती हैं। इस लिये हमारे व्यापारी भाइयोंका अब कर्तव्य है कि, वे जितनी शीघ्रतासे हो सकै, स्वदेशी वस्तुओंके बनानेके कारखाने खोलें, उन्हें अच्छी और सस्ती बनावें और विदेशी वस्तुओंका प्रचार जिस तरहसे कम हो, वही प्रयत्न करें। हमारे भाइयोंका करोडों रुपया व्याजके निकम्मे व्यापारमें पड़ा हुआ है, उस रुपयेसे यदि वे देशी कल कारखाने खोलनेकी कृपा करें तो, लाभके अतिरिक्त देशका बहुत कुछ कल्याण हो सकता है। अब हमारा देश जाग उठा है, हम लोग भूखों क्यों मरते हैं, यह जान गये है। सो ये जहरीली चीजे जिनसे कि हमारे रहे सहे प्राणधन जानेकी भी आशंका है, आज नहीं तो थोडे दिन पीछे हमारे देशमें सर्वथा अस्पर्श्य हो जावेंगी। इस लिये जो लोग विलायती मालके व्यापारी हैं, उन्हे वह व्यापार धीरे २ घटाकर स्वदेशी व्यापारकी ओर चित्त लगाना चाहिये और देशके भूखों मरते हुए लाखों जुलाहों और कारीगरोंके प्राण बचानेका पुण्य सचय करना चाहिये।

जुहारु मीमांसा।

जैनमित्रके किसी अकमें जुहारुके विषयमें एक नोट किया गया था। उसमें बाबू अर्जुनलालजी सेठी, बी ए., के लेखपर विश्वास करके जो कि जैनगजटके अक ११ में छपा था लिखा गया था कि, आदिपुराणमें "श्रावकाः परस्परं कुर्युः जुहारुरिति संश्रयम्" ऐसा कहा है। इसपर जयपुरके पं० जवाहिरलालजी शास्त्रीने जैनगजटके अंक १७ में एक लेख लिखकर उसपर बहुत सी शंकायें की हैं और हमको उपालंभ दिया है कि, मित्रने बिना विचारे सम्मति दे दी। परन्तु जुहारुको हम अबीतक शास्त्रविहित समझते हैं। हमने यह अवश्य ही नहीं देखा था कि, आदिपुराणमें यह श्लोक है या नहीं, परन्तु यह निश्चय था कि, सेठीजीने देखकर लिखा होगा और जुहारुका व्यवहार शास्त्रबाह्य नहीं है। अस्तु शास्त्रीजीके कथनानुसार आदिपुराणमें उपर्युक्त वाक्य शायद नहीं होगा, परन्तु ग्रन्थान्तरोंमे इसका विधान मिलता है। यथा —

> नमोस्तु कुर्याद्गुरवे वन्दना ब्रह्मचारिणे।
> इच्छामीति सधर्मिभ्यो वन्दामीत्यर्जिकादिषु।
> वर्णत्रयं मुनीन्द्रास्तु धर्मवृद्धिं ददत्यहो।
> अन्येषा प्रकृताना च धर्मलाभमतः परम्॥
> आर्यिका पुण्यवृद्धिं च वर्णिनोऽपि तथैव हि।
> दर्शनशुद्धिरस्तीत्यन्योन्य कुर्वान्ति भक्तितः॥
> "श्राद्धा परस्पर कुर्युः जुहारुरिति संश्रयम्"।
> इच्छाकारं विरक्तास्तु नमस्कारंच ब्राह्मणा॥
>
> (श्रीभद्रबाहुसंहिता।)

इस प्रमाणसे यह सिद्ध होता है कि, श्रावक (अविरतसम्यग्दृष्टि) तो परस्पर जुहारु करें और जो विरक्त अथवा वृत्ती श्रावक हैं, वे इच्छाकार करें। शास्त्रीजीने जो नीतिसारका प्रमाण दिया है कि, "श्रावकस्योत्तमस्योचैरिच्छाकारो निधीयते" उससे भी यह ध्वनित होता है कि, उत्तम श्रावक परस्पर इच्छाकार करें, सामान्य श्रद्धावाले श्रावकोंको दूसरा विधान होना चाहिये। और आजकल सबके सब जैनी श्रावक नहीं है, अथवा आजकलके श्रावगी व सरावगी सभी यथार्थ श्रावक नहीं हैं। इसके सिवाय श्रावकोंके लिये सामान्य और विशेषरूप दो प्रकारकी आज्ञा भी हो सकती है अर्थात् श्रावक इच्छाकार भी करे और जुहारु भी करै, परन्तु जुहारुका सर्वथा निषेध नहीं है। यह जुहारु शब्द रूढीहै, इसकी व्युत्पत्ति करनेकी जरूरत नहीं है। सैकडों अव्युत्पन्न शब्दोंका प्रचार देखा जाता है। और यदि व्युत्पत्ति बिना संतोष नहीं होता है, तो उणादिसे व्युत्पत्ति भी हो सकती है। नौ अक्षरोंकी तथा छन्दोभंगकी जो शंका की गई है, वह श्रावकाः की जगह श्राद्धाः पढनेसे मिट सकती है।

प्रश्नोत्तररत्नमाला और राजा अमोघवर्ष।

कालकी कराल धारमें पड़कर हमारे लक्षावधि जैनग्रन्थ सदाके लिये इस संसारसे विदा माग चुके हैं। हजार दो हजार वर्षकी बात जाने दीजिये, अभी दोसौ चारसौ वर्ष पहलेके विद्वानोंके ग्रंथोंका ही अन्वेषण कीजिये, उनमें जिन २ ग्रंथ

रत्नोंका उल्लेख किया गया है, उनमेंसे हजारों ग्रन्थ आजकल दिखलाई ही नहीं देते । हमारे दानवीर शेठ माणिकचन्दजीका नोटिस निकले कई वर्ष हो गये कि, जो कोई भगवान् समन्तभद्रस्वामिकृत गन्धहस्तिमहाभाष्यके दर्शन करावेगा, उसे ५००) पारितोषिक दिये जावेंगे, परन्तु अब तक गन्धहस्तिमहाभाष्यके दर्शन नहीं हुए । जयपुरके सौ सवासौ वर्ष पहलेके ही अनेक विद्वानोंने इस ग्रन्थका उल्लेख किया है, परन्तु वह जैनधर्मका सर्वस्व ग्रन्थ अदृश्य हो गया, अब उसके दर्शन दुर्लभ हो गये। इधर जो थोडे बहुत ग्रन्थ हमारे सरस्वतीभंडारोंमें सग्रहीत है, हमारे पूर्वजोंने अपनी सतानके उपकारके लिये जिन रत्नोंको अगाध परिश्रमसे एकत्र किये थे, उनकी आज यह दशा है कि, कोई धूपतक नहीं दिखलाता । और हम लोगोंकी सरस्वती भक्तिसे थोडे दिनोंमें जान पड़ता है, कि उनका भी नाम निशान उठनेवाला है । दीमक और कीटकोंके पेट आजकल उन्हींसे पल रहे है ।

प्यारे पाठको ! विधर्मी राजा और उनके आचार्योंकी कोपाग्निमें जो ग्रन्थरत्न भस्म हो गये है और हमारे जैसे आलसी और मूर्ख लोगोंकी कृपासे जो जीर्णशीर्ण होकर नष्ट हो गये है, आज हम उनका स्मरण कराके आपके चित्तको दुखित नहीं करना चाहते है, किन्तु एक ऐसी बात सुनाते है, जिससे आपको एक विशेष प्रकारका विषाद और विस्मय होगा । वह बात यह है कि, हम लोगोंके अज्ञान अधकारमे पडे रहनेसे हमारी ग्रन्थसम्पत्तिपर दूसरे लोग अधिकार जमा रहे हैं । हमारे सैकडों ग्रन्थ आज हमारे नहीं रहे है, उन पर भिन्नधर्मी सज्जनोंका स्वत्व हो रहा है । बडे दुःखकी बात है कि, हमारे पास इस प्रकारके न तो कोई प्रमाण हैं और न हम विषयमें हम कुछ प्रयत्न ही करते हैं कि, वे ग्रन्थ हमारे ही है । ऐसे बहुतसे ग्रन्थोंकी बात न कहकर आज हम केवल एक प्रश्नोत्तररत्नमालाके विषयमें ही कुछ कहना चाहते हैं, जिसके विषयमें हमें प्रयागकी सुप्रसिद्ध सरस्वतीपत्रिकाके एक लेखसे एक सुपुष्ट प्रमाण मिला है ।

प्रश्नोत्तररत्नमाला यह एक २९ श्लोककी छोटीसी कविता है । परन्तु ऐसी सुन्दर और मनोहर है कि, इसे रत्नमाला कहनेमें कुछ भी सकोच नहीं होता । प्रत्येक धर्मके अनुयायी इसके उपदेशोंपर प्रसन्नतासे चल सकते है । इसका एक एक श्लोक अमूल्य है । "अच्छी वस्तुका स्वामी हर कोई बनना चाहता है ।" इस न्यायसे आज इसके चार स्वामी बनना चाहते है । १ शंकराचार्यके अनुयायी, २ शुकदेवके अनुयायी, ३ श्वेताम्बरी और ४ दिगम्बरी । इनमेंसे पहले दोके अनुयायियोंने इसमें अपने मनके पुष्ट करनेवाले छह सात श्लोक नये बनाकर मिला दिये है और मगलाचरण और प्रशस्तिके आदि अन्तके दो श्लोक निकाल दिये हैं । परन्तु ऊपरसे मिलाये हुए श्लोक रत्नोंमें काचखंडकी तरह पृथक् जान पडते है । यह सम्पूर्णग्रन्थ आर्याच्छन्दमें है, परन्तु मिलाये हुए श्लोक वसन्ततिलका छन्दमें है, यह बात बहुत विचारणीय है । इसीसे जान पडता है कि, उक्त श्लोक पीछेसे किसीने मिला दिये है, परन्तु मिलानेवालेने बडी गलती की है कि, उनको आर्याच्छन्दमें नहीं बनाया । प्रशस्तिके श्लोकके स्थानमें दोनोंने गद्य रक्खा है, जिससे भी आभास होता है कि, इसमें जालसाजी की गई है । यदि शकराचार्य और शुकदेव ही यथार्थ बनानेवाले होते, तो वे इस छोटीसी कवितामें अपना नाम पद्यही में देते, गद्यमें देनेकी आवश्यकता नहीं थी । क्योंकि ऐसी कविताओंमें जिन्हें कि लोग कठस्थ रखते है, गद्य लिखनेकी परिपाटी कम है ।

तीसरे अधिकारी श्वेताम्बरी भाई है, वे इसे अपने आचार्य विमलदाससूरिकी बनाई हुई बतलाते है, और प्रशस्तिमें नीचे लिखा हुआ श्लोक पढते है,—

> **रचिता सितपट गुरुणा विमलाविमलेन रत्नमालेव ।**
> **प्रश्नोत्तरमालेय कटगता कि न भूषयति ॥**

१ सेव्य सदा कि गुरुवेदवाक्य ॥ ॥ कार्या प्रियाका शिवविष्णु भक्ति ... ॥०॥ किं कर्म कृत्वा नहि शोचनीय, कामारिकसारि समर्चनाख्यम् ॥ २० ॥ उपस्थिते प्राणहरे कृतान्ते किमाशु कार्य सुधिया प्रयत्नात । वाक्काय चित्तै सुखद यमघ्न मुरारिपादाबुजमेव चिन्त्यम् ॥२४॥ . कि कर्मयत्प्रीतिकर मुरारे ..॥ ३० ॥

२ प्रणिपत्य वर्धमान प्रश्नोत्तररत्नमालिकां वक्ष्ये । नागनरामरवन्द्य देव देवाधिप वीरम् ॥ १

३ इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता प्रश्नोत्तरमाला समाप्ता । (राजा राजेन्द्रलालमित्र सग्रहीत हस्तलिखित सस्कृत पुस्तकोंकी सूची जिल्द २ पृष्ठ ३५५ । और बम्बईकी छपी हुई अनेक आवृत्तियां ।

इति श्रीशुकयतीन्द्रविरचिता प्रश्नोत्तरमाला समाप्ता । (बगाल एशियाटिक सुसायटीका जनरल, जिल्द १६ भाग २ पृष्ठ १२१५)

इस प्रशस्तिके सिवाय उनके पास और कोई प्रमाण श्वेताम्बरीय आचार्यकी कृति सिद्ध करनेका नहीं है, शेष २८ श्लोक वे ज्योंके त्यों मानते हैं । आचार्य विमलदास कब हुए, उन्होंने कौन २ ग्रन्थ बनाये और उन ग्रन्थोंमें उन्होंने इस कविताका कहीं जिकर किया है कि, नहीं, इसका संतोषप्रद उत्तर श्वेताम्बरी भाइयोंकी ओरसे नहीं मिलता ।

चौथे अधिकारी दिगम्बरी भाई है । वे प्रशस्तिमें निम्नश्लोक पढते है,—

> **विवेकात्त्यक्तराज्येन राज्ञेय रत्नमालिका ।**
> **रचितामोघवर्षेण सुधियां सदलकृतिः ।**

अर्थात् विवेकसे जिसने राज्य छोडकर दीक्षा ले ली है, ऐसे राजा अमोघवर्षने यह विद्वानोंकी सुन्दर आभूषणरूप रत्नमाला बनाई ।

अब यह विचार करना चाहिये कि, राजा अमोघवर्ष कौन था और कब हुआ । प्राचीन इतिहासोंके देखनेसे जाना जाता है कि, अमोघवर्ष यह नाम नहीं किन्तु पदवी थी, जो दक्षिणमें राज्य करनेवाले राष्ट्रकूटवशके (राठौडवशके) चार राजाओंने और मालवेके परमार वशीय राजा मुंजने धारण की थी । इनमें राठौड राजा अमोघवर्ष प्रथम और परमार राजा मुंज ये दोही विद्वान् और कवि थे, शेष तीनके विद्वान् होनेमें कोई प्रमाण नहीं मिलता है । और उनमेंसे किसीने भी छह वर्षसे अधिक राज्य नहीं किया ।

परमार राजा मुंज जिसका दूसरा नाम वाक्पतिराज भी था, प्रसिद्ध राजा भोजका पितृव्य (बडा काका) था और उसकी सभामें अमितगति (धर्मपरीक्षा-सुभाषितरत्नसदोह-श्रावकाचार आदि जैनग्रन्थोंके कर्त्ता), धनपाल (तिलकमंजरी महाकाव्यके कर्त्ता श्वेताम्बरीय), पद्मगुप्त, धनंजय (दशरूपकके कर्ता), धनिक, हलायुध, आदि अनेक विद्वान् थे । यह स्वय बड़ा विद्वान् था, परन्तु सुभाषितावली आदि ग्रन्थोंमें थोडेसे श्लोकोंके सिवाय और कोई स्वतंत्र ग्रन्थ उसका आजकल नहीं मिलता है । हो सकता था, कि, प्रश्नोत्तररत्नमालाका यही कर्त्ता हो, परन्तु प्रशस्तिके श्लोकमें जो "विवेकसे राज्य छोड़नेवाले" ऐसा पद दिया है, वह इसके विषयमें घटित नहीं

१ इंडियन एण्टिक्वेरी जिल्द १९ पृष्ठ ३७८ । और काव्यमाला सप्तमगुच्छक पृष्ठ १२३

२ इंडियन एण्टिक्वेरी जिल्द १९ पृष्ठ ३७८ बम्बई गेजेटियर जिल्द १ भाग २ पृष्ठ २०१ और दिगम्बरीय भंडारोंकी अनेक प्रतियां ।

हो सकता। क्योंकि यह राज्य छोडके दीक्षित नहीं होने पाया था और कल्याणके **चालुक्य** (सोलकी) राजा तैलपपर चढाई करनेके समय कैद होकर मारा गया था। अतएव प्रश्नोत्तररत्नमालाका कर्त्ता मुंज नहीं हो सकता।

अब राष्ट्रकूटवंशीय प्रथम **अमोघवर्षके** विषयमें विचार कीजिये। यह दक्षिणके **वनवास** देशका राजा था और **वंकापुर** इसकी राजधानी थी। यह बडा भारी विद्वान् था और **कविराज** इसकी उपाधि थी। इसका बनाया हुआ **कविराजमार्ग** नामका एक अलकारग्रन्थ कानडी भाषामें मिलता है। इसने ६० वर्षके लगभग राज्य करके अपने पुत्र **कृष्णराजको** (अकालवर्षको) राज्य देकर जिनदीक्षा ले ली थी। जिनधर्मका यह परमभक्त था। **आदि-पुराणके** कर्त्ता भगवान् **जिनसेनाचार्य** इसके गुरु थे। कहते है कि, महाराज कुमारपालके समयमें श्वेताम्बरियोंका जैसा अभ्युदय **श्रीहेमचन्द्राचार्यके** कारण हुआ था, महाराज **अमोघवर्षके** समयमें उससे भी कहीं बढकर अभ्युदय दिगम्बरियोंका **भगवज्जिनसेनाचार्यके** प्रभावसे हुआ था।

मेघदूतकाव्यकर्ता कालिदासने इसी अमोघवर्षकी सभामें जाकर अपने काव्यका गर्व किया था, जिसे दलित करनेके लिये भगवज्जिनसेनने **पार्श्वाभ्युदयकाव्य** बनाया था। यह काव्य ऐसा अपूर्व और चमत्कारकारि बना है कि, इसे पढकर विधर्मीगण भी वाह २ करते है। इसमें मेघदूत काव्य पूरा पूरा वेष्टित है। कालिदास इसे सुनकर निष्प्रभ हो गया था।

इस प्रकार राठौड महाराज अमोघवर्षके विषयमें दोनों बातें सिद्ध होती है, एक तो यह कि वे स्वय विद्वान् और विद्वानोंका आदर करनेवाले थे, और दूसरे उन्होंने विवेकसे राज्य छोडकर जिनदीक्षा ले ली थी। इससे निश्चय होता है कि, प्रश्नोत्तररत्नमालाके कर्त्ता ये ही अमोघवर्ष थे। परन्तु इतना कहनेसे ही हमारे विद्वान् पाठक कदाचित् इस बातपर विश्वास नहीं कर सकेंगे। इस लिये एक अत्यन्त पुष्ट प्रमाण उनके सम्मुख उपस्थित किया जाता है। वह यह कि, ईस्वी सन्‌की ग्यारहवीं शताब्दिके पूर्वार्धमें प्रश्नोत्तररत्नमालाका **तिब्बती भाषामें** एक अनुवाद हुआ था। उसमें लिखा है कि, **यह ग्रन्थ बड़े राजा अमोघवर्षने संस्कृतमें बनाया था।** और हमारे (दिगम्बरजैन) भडारमें मिली हुई पुस्तकोंमें भी यही लिखा हुआ है। इससे अमोघवर्ष दिगम्बरजैनधर्मका अनुयायी था और उसीने इस पुस्तकका निर्माण किया था, इसमें अब कोई सन्देह बाकी नहीं रहा है। धन्यवाद है उस तिब्बती ग्रन्थकर्त्ताको जिसने एक विदेशी भाषामें अनुवाद करके भी मूल ग्रन्थका नाम देनेकी आदरणीय उदारता दिखलानेमें त्रुटि नहीं की। आज उसीकी उदारतासे हमको यह निश्चय करनेका पुष्ट प्रमाण मिला है कि, यह ग्रन्थ यथार्थमें किसका है। अन्यथा जो जिसके जीमें आता था कहता था। महाराज अमोघवर्षका राज्याभिषेक शक सवत् ७३७ (विक्रम सवत् ८७२) में हुआ था। शक सवत ७९७ (विक्रम संवत् ९३२) के पूर्व उन्होंने राज्य छोड दिया था। और ७९९ (वि० संवत् ९३४) तक वे विद्यमान थे। इसके पीछे किसी समयमें उनका देहान्त हुआ होगा। ऐसा प्राचीन लेखों और ताम्रपत्रोंसे निश्चित हुआ है। अतएव यदि राज्य छोडनेके पश्चात् मुनि अवस्थामें उन्होंने प्रश्नोत्तररत्नमाला बनाई हो, तो उसका समय विक्रम संवत् ९३२ के लगभग स्थिर हो सकता है।

उपसहारमें हम उन महाशयोंसे जो प्रश्नोत्तररत्नमालाके अधिकारी बनते हैं, प्रार्थना करते है कि, महाराज अमोघवर्षने प्रश्नोत्तररत्नमाला जगत्‌के उपकारके लिये बनाई है, उसके उपदेशसे लाभ उठानेका ठेका किसी एक सम्प्रदायको नहीं है। इस लिये आप सब लोग प्रसन्नतासे उसका पाठ कीजिये। परन्तु किसीकी कृतिको नष्ट करके उसमें अपना व अपने आचार्योंका स्वत्व स्थापित करना बुद्धिमानोंका कर्तव्य नहीं है। इसलिये जिस रूपमें वह है, उसी रूपमें पठन पाठनमें लाइये। अन्यथा आपके कारण आपके आचार्योंको इस श्लोकका निशाना बनाना पड़ेगा—

कृत्वा कृतीः पूर्वकृता पुरस्ता-
त्प्रत्यादरं ताः पुनरीक्षमाणः।
तथैव जल्पेदथयोऽन्यथा वा-
स काव्य चोरोऽस्तु स पातकी च॥

इत्यलम् विस्तरेण—

चन्दावाडी ६-११-०९ } वर्मसेवक— **नाथूराम प्रेमी।**

१ वङ्कापुरे जिनेन्द्राङ्घ्रि सरोजेंदिन्दिरोपम' । अमोघवर्षनामाभून्महाराजो महोदय ॥ (पार्श्वाभ्युदयकाव्यकी सुबोधिका टीका।)

२ अकालवर्ष शक संवत् ८२० में जब कि जिनसेनके शिष्य श्रीगुणभद्राचार्यने उत्तर पुराण बनाया था, विद्यमान था। उन्होंने उत्तर पुराणकी प्रशस्तिमें लिखा है;—

अकालवर्षभूपाले, पालयत्यखिलामिलाम्।
तस्मिन् विध्वस्तनि.शेषद्विषि वीध्रयशोजुषि॥
वनवासदेशमखिलं भुञ्जति निष्कण्टकं सुखं सुचिरम्।
तत्पितृनामकृते ख्याते वङ्कापुरेष्वधिके॥

वऱ्हाड़ और मध्यप्रदेश दिगम्बर-जैनप्रान्तिकसभाका

चतुर्थ वार्षिकोत्सव।

तारीख ६ और ७ नवम्बरको श्री मातकोळी तीर्थपर बडे आनन्द और उत्साहके साथ हुआ। मातकोली दिगम्बर जैनियोंका अतिशयक्षेत्र है, जो अमरावतीसे पश्चिमकी ओर अनुमान १० मील है। यहाका रास्ता बहुत टूटा फूटा और खराब है। बैलगाडी ६ घंटेमें जाती है। यहापर एक बहुत प्राचीन और अतिशय मनोज्ञ श्रीआदिनाथ भगवान्‌की प्रतिमा है, जिसके दर्शन करनेसे हृदयमें वीतरागभावोंका अतिशय प्रादुर्भाव होता है। प्रतिवर्ष इसी क्षेत्रपर इस सभाका अधिवेशन होता है। इस वर्ष दानवीर शेठ माणिकचन्दजीने सभापतिका आसन स्वीकार किया था और सवाई सिंगई गुलाबसाहुजी नागपुर, शेठ नत्थू साहुजी एलिचपुर, सिंगई रसू साहु सोनासाहु अंजनगाव, शेठ पीताम्बरदासजी पारोला, शेठ हीराचन्दने मीचन्दजी आ० म० शोलापुरके सुपुत्र शेठ बालचन्दजी आदि महाशयोंको लेकर अनुमान ६००० स्त्री पुरुषोंने सभामडप सुशोभित किया था।

धार्मिक और लौकिक विद्याकी उन्नति, तीर्थसुधार, मातकुलीके रस्तेकी मरम्मत, नागपुरके जैन बोर्डिंग स्कूलकी उचित व्यवस्था, देशीशक्कर, पवित्र मोमबती और साबुन (सोप) आदिका व्यवहार, स्त्रीशिक्षा, आदिक विषयमें प्रस्ताव पास हुए। स्वदेशी वस्तु व्यवहारके विषयमे अमरावतीके प्रसिद्ध वक्ता देश-भक्त मि० खापर्डे और नागपुरके डाक्टर मुंजेने बडे जोशदार व्याख्यान दिये, जिनका असर श्रोताओंपर बहुत अच्छा हुआ जान पडा।

ता ७ की रात्रिको सभापति सा० की पुत्री विदुषीमगन बाईने स्त्रीशिक्षापर बहुत असरकारक व्याख्यान दिया। स्त्रीसभामें २९०० के अनुमान स्त्रिया एकत्र हुई थीं।

सभाका अधिवेशन सब प्रकारसे आनन्द पूर्वक हुआ। विशेष रिपोर्ट सभाके मुखपत्र जैनमार्गोदयसे विदित होगी।

यात्रियोंको क्या करना चाहिये?

जाडेका मौसम आ गया है। हमारे श्रद्धालु यात्रीगण अब तीर्थक्षेत्रोंकी बन्दनाको निकलेंगे और

पुण्य संचय करनेके प्रयत्नमें लगेंगे। उन्हें नीचे लिखी बातोंपर ध्यान देना चाहिये।

१ जितने दिन यात्रामें रहें, शील अर्थात् ब्रह्मचर्य्यव्रत अवश्य पालें।

२ संघवालोंके साथ अथवा दूसरे यात्रियोंके साथ कलह विसंवाद न करें।

३ जिस क्षेत्रपर जावें, वहांके भंडारका प्रबंध कैसा है, इसका निरीक्षण करें।

४ जिस क्षेत्रका प्रबन्ध ठीक न हो, वहांके भंडारमें रुपया न देकर शेठ माणिकचन्द पानाचन्द जौहरीके पास म० आ० से उसी क्षेत्रके खाते जमा करनेको लिखकर भेज दें।

५ बहुतसे यात्री क्षेत्रोंपर जाकर प्राय. द्रव्य एकत्रकर ज्योंनार किया करते हैं। उन्हें चाहिये कि, वह द्रव्य ज्योंनारमे न लगाकर किसी योग्य पुरुषके प्रबन्धसे नवीन धर्मशाला बनवानेमें अथवा जीर्णमंदिरों और धर्मशालाओंकी मरम्मतमे लगाया करें।

६ तीर्थपर जाकर इस बातका अन्वेषण करना चाहिये कि, कहीं दूसरे संघमें कोई विद्वान्, व शास्त्रज्ञ तो नहीं हैं? यदि हों तो उनके साथ धर्मचर्चा करके अपने चित्तस्थ प्रश्नोंका समाधान करना चाहिये।

७ क्षेत्रपर मुनीम व पुजारी सदाचारी न हों, अथवा और किसी प्रकारका दुष्प्रबन्ध हो, तो उसकी सूचना जनमित्र व जैनगजटमें छपनेको भेजना चाहिये। यदि उत्तम प्रबन्ध हो, तो उसपर भी रिमार्क करना चाहिये। रघुनाथदास रइस—

मंत्री, तीर्थक्षेत्रकमेटी—सरनौ।

पुस्तक समालोचन।

——:o:——

तत्त्वमाला—लखनौनिवासी बाबू शीतलप्रसादजी द्वारा सम्पादित और जैनयंगमेन्स एसोसियन आफ इंडिया द्वारा प्रकाशित। इस पुस्तकका दूसरा नाम "जैनेन्द्रमतदर्पण दूसरा भाग" भी है। पहले भागमें बाबू बनारसीदासजीके व्याख्यानका सार लिखा गया है। एसोसियेशनका यह उद्देश्य है कि, ऐसी पुस्तकें जिनसे जैनधर्मका सामान्य परिचय लोगोंको हो जावे छपाकर थोडे मूल्यमें प्रकाशित करना चाहिये बहुत अच्छा है। १३२ पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य सिर्फ =)॥ है। पुस्तकमें जैनधर्मके सात तत्त्वोंका वर्णन किया गया है। कहीं २ नवीन दुनियाके सिद्धान्तोंका भी समावेश हुआ है। ऐसी पुस्तकमें उन विषयोंको विशेष स्पष्ट करके लिखनेकी आवश्यकता थी, जिन्हें कर्त्ताने बहुत संक्षेपमें लिखकर पूर्ण किया है। सामान्य विषयोंको बढाकर लिखा है। भाषापद्धति उर्दू ढंगकी है। वाक्य योजना कहीं २ ऐसी हो गई है कि, इष्टार्थका लाभ बहुत विचारनेसे होता है। संस्कृत वाक्यों और श्लोकोंमें कहीं २ अशुद्धियां रह गई हैं। विषयान्तरमें गति तथा अन्यथा निरूपण क्वचित ही हुआ है। जैसे पृष्ठ ८ में लिखा है कि "यह मार्ग तीन भेद रूपसे है अर्थात् सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र" परन्तु शास्त्रमार्गसे उपर्युक्त तीन भेद नहीं है। तीनोंकी एकता रूप एक ही मार्ग है। सामान्यत: पुस्तक अच्छी है और जैनधर्मका परिचय करनेके लिये उपयोगी है।

श्राविकाशिक्षणरहस्य—श्री जैनधर्म प्रसारक वर्ग पालीताणा द्वारा प्रकाशित। पुस्तक गुजरातीमें है। विषय नामहीसे प्रगट है। स्त्रीशिक्षा प्रसारके लिये ऐसी पुस्तकोंकी घर २ आवश्यकता है। बडी अच्छी पद्धतिसे यह पुस्तक लिखी गई है। जो लोग स्त्रीशिक्षाके विरोधी है, वे इस पुस्तकको अवश्य पढें। एक जगह इसमें त्रैलोक्यसारके एक गाथाका प्रमाण देकर यह सिद्ध किया है कि, स्त्री मोक्षकी अधिकारिणी है। परन्तु गाथाका अर्थ समझनेमें बडी भूल की गई है। आम्नायका परिचय न होनेसे ही कदाचित ऐसा हुआ है। वह गाथा यह है—

वीस नपुंसक वेआ इत्थीवेआ य हुंति चालीसा।
पुवेदा अडलाया सिद्धा इक्कमि समयंमि॥

अर्थात् एक समयमें वीस नपुसक वेद, चालीस स्त्री वेद, और अडतालीस पुरुषवेद मिलकर एक सौ आठ जीव सिद्ध होते हैं। परन्तु यहां द्रव्यका नहीं किन्तु भाववेदका अभिप्राय है। नवम गुणस्थान तक भाववेदका सद्भाव होता है, उसके पश्चात् मोहनीकर्मके अभावसे उसका भी अभाव है। सो नवमें गुणस्थानकी अवस्थामें जीवके जो स्त्री पुरुष अथवा नपुसकरूप भाव होते हैं, उन्हींसे भूतपर्वनयकी अपेक्षासे मोक्ष कहा जाता है। जैसे कहा जावे कि, इतने राजा मोक्षको गये, अथवा इतने बनिये मोक्षको गये। तो यहां भूतपूर्वनयसे यह निश्चय होगा कि, जो जीव मोक्षको गये वे पहले छत्रधारी राजा अथवा व्यापारी बनिये थे, न कि किसीका न्याय करते हुए अथवा तराजूसे तौलते हुए वे मोक्षसे गये। यथार्थमें द्रव्य वेदकी अपेक्षासे सिवाय पुरुष वेदके और किसीको मोक्ष नहीं है। यदि ऐसा नहीं माना जावे, तो इस गाथासे नपुसकको भी मोक्ष मानना पडेगी, जो श्वेताम्बरी भी नहीं मानते है। और स्त्रीके उत्कृष्ट सहनन ही नहीं है, जिसे श्वेताम्बर सम्प्रदाय भी शायद मानता है, फिर वह मोक्षकी अधिकारिणी कैसे हो सकती है? अतएव सिद्ध है कि, द्रव्यस्त्रीवेदसे नहीं किन्तु भावस्त्रीवेदसे चालीस जीव मोक्ष जाते है। पुस्तक रचयिताओंको चाहिये कि, जिस विषयको नहीं जानते हैं, उसमे इस प्रकार हस्तक्षेप नहीं किया करें। अपना पक्ष सिद्ध करनेके लिये ऐसा अनर्थ करना बडा पाप है।

प्रतिक्रमणहेतु—जैनधर्मप्रसारकसभा—भावनगर द्वारा प्रकाशित। पुस्तक श्वेताम्बर सम्प्रदायकी गुजराती भाषामे है। प्रतिक्रमण करनेके हेतु और प्रतिक्रमणके रहस्य इसमे बहुतसे शास्त्रोंके प्रमाणों सहित बतलाये गये हैं। भिन्न साम्प्रदायिक विषय होनेसे इसकी उत्तम अनुत्तमामे हम राय नहीं दे सकते हैं। छपाई सफाई अच्छी है। मूल्य मालूम नहीं।

पत्रोंका सार और समाचार।

——:o:——

बार्शी (शोलापुर)—"अपवित्र केशरकी सहज परीक्षा" शीर्षक लेख जैनमित्रमें पढकर केशरकी परीक्षा करनेकी हमारी इच्छा हुई। थोडीसी केशर कपडेमें बांधकर उस कपडेको रात्रिभर पानीमें रक्खा और सबेरे केशर निकालके उसे आध घंटेतक पानीमें खूब मला। जब सफेद छूछ रह गया, तब देखा कि उसमें चिकनापन मौजूद है। पश्चात् कोयलेकी आगीपर रखनेसे उसमेंसे चर्बी सरीखी दुर्गंधि निकली, जिससे उसमें किसी अपवित्र वस्तुका मेल अवश्य है, यह हमको अच्छी तरहसे निश्चय हो गया। अब हमने भगवान्‌को केशर चढाना बन्द कर दी है और उसके बदलेमें केवल चन्दनका उपयोग करते हैं। जैनबंधुओंसे प्रार्थना है कि, वे इसी प्रकार परीक्षा करके केशरकी अपवित्रताका निश्चय कर लेवें, और देवपूजा तथा अनेक कार्योंमें इस अस्पर्श्य वस्तुका उपयोग न करें, नहीं तो लाभके बदले उलटी हानि होगी।

रामचन्द्र अभयचन्द्र।

कानपुर—जैनमित्रका पहला अंक पढ़कर कि मुलगुंद (धारवाड) के दो जैनमन्दिर बड़ी दुर्दशामें हैं, जिस बड़ा दु खित हुआ। परन्तु क्या किया जाय, इस निकृष्ट कालमें ऐसे ही समाचार सुनाई देते हैं। उक्त मंदिरोंके लिये यहाकी जैनबालसभा ५०) पचास रुपया इकमुश्त और एक रुपया महीना वहापर रहने वाले पुजारीके लिये देना स्वीकार करती है। जैनमित्रमें उक्त मंदिरोंके जीर्णोद्धारके लिये खूब आन्दोलन होना चाहिये। रामस्वरूप।

सरनौ (एटा)—सरनौ, भरथरा, जिरसमी और ख्यालीके नगरोंमें जैनी वैष्णवोंने विदेशी शक्कर वेचना छोड दिया है। बाजार कासगजमें बन्द हो रहा है। बहुतसे छोड चुके हैं। बाकी छोडनेको तयार हैं। एटाम देशी कपडेकी एक दूकान खुली है। मथुरामें विदेशी शक्कर सर्वथा बन्द हो गई है। रघुनाथदास।

विलासपुर (मध्यप्रदेश)—यहापर बाबू हुकमचन्द जैनी, मैनेजर सिगरकम्पनी रहते है। आपने दादकी एक अच्छी दवा तलाश की है कि, जिसके लगानेसे एकही दिनम आराम हो जाता है। आप यह दवाई मुफ्तमे बाटते है, दो आनेके टिकट डाक खर्चक लिये भेजनेस आप प्रत्येक भाईका दवाई भेज देगे। खुनकेलाल।

बडौदा—यहा मिया मुहम्मदकी बाडीमे सम्पूर्ण जैनी भाईयोके उत्साहसे कार्तिक सुदी ११ को श्री कुंथुसागरजी त्यागीके कर कमलसे एक पाठशाला खोली गई है। पाठशालाके एक वर्षके खर्चके लिये हाल १३२) का चन्दा हुआ है। पाठशाला खोलनेके दिन एक सभा हुई थी, जिसके व्याख्यानोंके असरसे अनेक लोगोंने पाठशालाके लिये पुस्तकें व कुर्सी बेंच वगैरह भेंट की थी। बडौदाके भाईयोंको चाहिये कि, इस पाठशालाको चिरस्थायी बनानेका प्रयत्न करें। शा छगनलाल हरीलाल।

स्वदेशी आन्दोलनका फल बहुत अच्छा हुआ है। एकही वर्षमें बम्बईके कपडेकी मिलवालोंको चौदह करोड रुपयेका फायदा हुआ है। यदि आन्दोलन न होता, तो यही फायदा विलायती बनियोंके पेटमें गया होता।

स्वदेशी आन्दोलनसे एक ही वर्षमें बडी २ पचाससे भी अधिक देशी कम्पनिया खडी हो गई हैं, जो बडी २ पूंजीसे स्थापित हुई हैं। इनमें आधेके करीब कम्पनियां कपडेके कारखानों और मिलोंकी हैं।

ता. ३ नवम्बरको बम्बईके शेठ हीराचन्द गुमानजी जैनबोर्डिंगस्कूलम विद्यार्थियोंको पारितोषिक बाटनेके लिये एक सभा हुई थी, जिसके सभापति सर हरकिशनदासजी हुए थे। यह पारितोषिक उन विद्यार्थियोंको बाटा गया था, जिन्होंने बोर्डिंगमें रहकर धर्मशास्त्रका अभ्यास किया था।

बम्बईके कपडेके व्यापारियोंकी ओरसे एक बीमाकपनी खडी होनेवाली है। इसकी पूंजी पचास लाख रुपये होगी।

बडे शोककी बात है कि, जैन स्त्रीसमाजकी शृंगाररूपा विदुषी शृंगारबाईका मन्दसौरमें परलोकवास हो गया। हम लोगोंके अभाग्यसे एक स्त्रीरत्न ससारसे उठ गया ऐसी स्त्री होना अब दुर्लभ है। गोम्मटसारादि जैन सिद्धान्तोंके रहस्य जो अच्छे २ विद्वान् नहीं जानते थे, उन्हें शृंगार बाई जानती थी। भाषाशास्त्रोंका अभ्यास तो उन्होंने प्रारभसे किया ही था, किन्तु पिछली अवस्थामें सस्कृतबोधका भी लाभ कर लिया था। शृंगार बाई सदाचारकी मूर्ति और गुणोंकी भडार थी।

इन्दौरमें धन्नीबाई नाम एक और सुलक्षणा सुशिक्षिता स्त्री थी। शास्त्रोंकी चरचा ये भी अच्छी जानती थी। पालीतानामें अगहन वदी ८ को इनका भी परलोकवास हो गया। कालकी विचित्र गति है।

तार समाचार।

इलाहाबादसे बाबू चेतनदासजीने बी. ए. ने एक तार द्वारा सामाचार भेजे हैं कि, "कलकत्तेमें बडे दिनोंकी छुट्टीमें जैनयगमेन्सएसोसियेशनका सालाना जलसा होगा" मौका अच्छा है। एसोसियनका अधिवेशन भी हो जावेगा और काग्रेसमहासभा तथा प्रदर्शनी देखनेका सौभाग्य भी प्राप्त हो जावेगा

विनामूल्य जैनमित्र।

जैनमित्रके ग्राहकोंको अपूर्व लाभ।

जो भाई जैनमित्रका पेशगीमूल्य दो रुपया अगहन सुदी १५ तक भेज देवेंगे और उसके साथ सवा रुपया अधिक भेजेंगे, उन्हें निम्नलिखित पांच ग्रन्थ उपहारमे दिये जावेंगे.

१ स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा।

वैराग्य और जैनधर्मका रहस्य बतलानेवाला अपूर्वग्रन्थ मूल, सस्कृतच्छाया और हिन्दीभाषाटीका सहित है। इसमें वैराग्यके साथ साथ जैनधर्मका प्रायः सम्पूर्ण रहस्य भरा हुआ है। हम समझते हैं, जिसने इस ग्रन्थका स्वाध्याय नहीं किया, उसे वैराग्यका सच्चा आस्वाद ही नहीं मिला। यह रायल अठपेजी २०४ पेजका ग्रन्थ है। निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई सफाई देखने ही योग्य है। यह ग्रन्थ १।।) से कममे किसीको नहीं मिल सकता।

२ परीक्षामुख।

यह जैनियोंका सर्वमान्य सस्कृत न्यायका ग्रन्थ है। इसका प्रशंसा करना व्यर्थ है। यद्यपि यह केवल सस्कृतमें है, परन्तु प्रत्येक मंदिर और भडारमें सग्रह करने योग्य है। यह डेमी साइजके १२८ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ।।) है।

३ पंचाध्यायी।

यह ग्रन्थ अभीतक सर्वथा लुप्त था। हमने बडे परिश्रमसे द्रव्य लगाकर इसका जीर्णोद्धार कराया है। इसके पढनेवाले विद्वान् कहते हैं, कि जिसने इस ग्रन्थको नहीं पढा उसने जैनधर्मका असली मर्म नहीं पाया। यह सस्कृत ग्रन्थ डेमी साइजके २०० पेजका है। मूल्य ।।) है।

४ इन्ट्रोडक्शन टू जैनिसम

Introduction to Jainism—इस अंग्रेजी ग्रन्थको जिनविजयके सम्पादक मि० लट्टे, एम् ए ने बडी योग्यतासे लिखा है। अन्यधर्मी विद्वानोंके दिखाने योग्य डेमी १३६ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ।।) है।

५ जैनधर्मपर व्याख्यान

मि० आपटे, बी ए का लिखा हुआ हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओंमे मिल सकता है। इसका मूल्य ।) है।

इस प्रकार सिर्फ १।) में ३।) के ग्रन्थोंका ग्राहकोंको लाभ हो सकता है। अथवा सवा तीन रुपयेमें सवातीनके ग्रन्थ मिल जावेंगे और जैनमित्र वर्ष भरतक मुफ्तमें पढनेको मिलेगा। अर्थात् **आमके आम और गुठलीके दाम** मिल जावेंगे। इतने पर भी यदि जैनमित्रके ग्राहक न बढें, तो हम समझेंगे कि जैनियोंमे ग्रन्थोंके पढनेका शौक ही नहीं है। ऐसे सुन्दर और अमूल्य ग्रन्थोंका उपहार जैनियोंमें यह सबसे पहला है।

यह उपहार केवल उन्हीं ग्राहकोंको मिलेगा, जो नवीन वर्ष अर्थात अष्टम वर्षका मूल्य पेशगी भेजेंगे और पिछला बकाया चुका देवेंगे। नवीन ग्राहकोंको पेशगी मूल्य ही भेजना पडेगा।

रुपया आनेपर उपहारकी पुस्तकें मैनेजर जैनमित्र द्वारा भेज दी जावेंगी। परन्तु इतना ख्याल और रखना चाहिये कि ३।) रु० के साथ ग्रन्थोंके डाक खर्चके लिये छह आना अधिक भेजना होंगे।

नियत तिथिके बाद यह उपहार किसीको भी नहीं मिलेगा, एक महीनेकी मुद्दत और भी बढाई जाती है, इसलिये शीघ्रता करनी चाहिये।

यह नोटिस जैनमित्रके ग्राहक बढें, और समाजमें एक अच्छे पत्रके पढनेवालोंकी सख्या बढे, केवल इसी इच्छासे निकाला जाता है। इसमे हमारा स्वार्थ कुछ भी नहीं है। उपहारके सब ग्रन्थ तयार हैं।

जैनजातिका हितैषी—

नाथारंगजी गांधी, शोलापूर।

जरूरी नोटिस।

जैनमित्रमें छपनेके लिये, सिर्फ ताजे समाचार, और सवाद नीचे लिखे पतेसे आना चाहिये। बाकी सब प्रकारके लेख और पत्रादि सम्पादकके पास ही भेजना चाहिये। प्रत्येक पक्षकी त्रयोदशीतक आये हुए समाचार ले लिये जावेंगे।

नाथूराम प्रेमी—

चन्दावाड़ी पो० गिरगांव-बम्बई

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई-

प्रमेहनाशक ओर अपूर्वताकतकी दवा।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनको सस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिश्नका घूमना प्रसगकी इच्छा न होना नपुमकता, नाताकती, कमरमें दरद, थोडा चलनसे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुशकी वा जर्दी, बदनमें फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्बलता, रगोंकी कमजोरी, उठती जवानीमें कुचालसे पैदा हुई नामर्दी, आदि सब रोग जडसे नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है। जिसमें उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आखोंमें रोशनी, बदनमें फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है। मूल्य १ डिब्बाका २।।), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १३) खर्च माफ.

श्वासारिष्ट।

इससे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है। कीमत १।।।)

नपुंसकत्वारि तैल।

इसके लगानेसे गुप्तभागसंबंधी सर्व प्रकारके रोग दूर होते हैं। फी सीसी १) डांकखर्च ≥)

पंचतिक्तवटिका।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है। इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते हैं। किं०।।)डां.≥)

प्रदरांतक चर्ण।

इससे स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस संबंधी सर्व विकार दूर होते हैं। कीमत १) डां० ≥)

मनरञ्जन तेल।

हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको मथ नकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है। इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठंडक पहुंचती है। बदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूरकर लहू और ताकत बढती है। फी सीसी ।।≥) डा. ख. ।)

निमकसुलेमानी।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, बदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, बवासीर प्रमेहनाशक। है स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है। फी शीशी ।।) डा. ख. अलग

दंतकुसुमाकर।

इसके लगानेसे दांतोंका हिलना मसूडोंका फूलना खूनदर्द आदि आराम हो दांत मोतीकी तरह चमकते है। रोज लगानेसे दांत आजन्म दृढ बने रहेंगे। फी डिब्बी ।)

नयनामृत सुरमा।

इसके लगानेसे आखोंका जाला धुन्ध, फुली, पानी, बहना, सुर्खी, पखर आदि नेत्ररोग दूर होते हैं और ज्योति बढाता, ठंडक रखता और पढते २ आखों नहीं थकती है। फी शीशी १) लगानेकी सलाई ।)

दवा दादकी।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर भगाती है। फी डिब्बी ।)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य,
आयुर्वेदीय औषधालय—इटावा (U P)

जैनधर्मप्रचारक पुस्तकालय।

नीचे लिखी पुस्तकोंमेंसे जो भाई ५) रुपयेसे कम मंगावेंगे, उनको एक आना रुपया कमीशन काटकर पुस्तक भेजी जायगी और ५) से अधिक मगानेवालेको ≥) रुपया और १०) रुपयेसे अधिक मगानेवालेको ।) रुपया अर्थात् पौनीमूल्यमें ग्रंथ भेजे जायगे। ऐसा अवसर कदापि चूकना नहिं चाहिये।

तेरहद्वीप पूजनविधान	३)
दर्शन कथा	।≥)
शीलकथा	।)
दानकथा	।–)
रविव्रतकथा	≥)
रक्षाबंधनकथा	≥)
निशाभोजनकथा	≥)
नौव्रतकथासग्रह	।≥)
ब्रह्मविलास	१।।)
बनारसीविलास	१।।)
दौलतविलास	।।)
प्रभुविलास	≥।।)
न्यामतविलास	≥)
जनभजननाटकचाल	≥)
जैनभजन मुक्तावली	≥)
चिदानदसुदर्शनाटक	।≥)
जैन भजन शतक	।)
ज्ञानानद रत्नाकर जैन भजन	।।)
भजन सग्रह	≥)।।
पूजन सग्रह बडी बम्बई	।–)
सप्तर्षि पूजा	)।।।
नाटकसमयसार भाषा	।।≥)
रत्नकरडमूलार्थ	।–)
द्रव्यसग्रह बम्बई	।≥)
सुकमाल उपन्यास	।≥)
विवाहपद्धतिबडी	।।।)
पचमगल बम्बई टाईप	)।।।
सर्वार्थसिद्धि सस्कृत बम्बई	२।।)
जैनग्रथसार प्रथम पुस्तक	।)
तथा दूसरी पुस्तक	।।)
सूक्तमुक्तावली	।)
बालबोध व्याकरण	।≥)
तथा दूसरा भाग	।≥)
सज्जनचित्तवल्लभ काव्य	≥)
भक्तामर भाषाटीका	≥।।)
कल्याणमदिर कोष	–)।।
एकीभाव कोष सहित	–)।।
भूपाल चौबीसी कोष०	–)।।
विषापहार भाषा	)।।
पचस्तोत्र सस्कृत	।–)
दर्शन स्तोत्र	–)।।
छहढाला दौलतराम	–)
छहढाला बुधजन	≥)
छहढाला द्यानतराय	≥)।।
सूत्रजीमूल	–)
सूत्रजी भाषा	।–)
आलोचना पाठ सटीक	–)।।
पापलरासा	)।।
नवकारमंत्र बेल बूटेदार	–)
गौरी सग्रह	–)।।
बारहभावना बडी	।।।)
उपदेशसिद्धांत रत्नमाला	।।।)
चेतनचरित्र	।)
समाध शतक	≥)
स्तोत्र शतक	।)
जम्बूस्वामीचरित्र	≥)
जैनग्रंथसग्रह ४० पुस्तक है जिल्दबंध	१)

लाला जैनीलाल जैन
मालिक—जैनधर्मप्रचारकपुस्तकालय
मु० देवबन्द जि. सहारनपुर

"कर्नाटक" प्रेस, बम्बई.

Registered No. B 288.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है ।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
मोरेना (ग्वालियर) ।

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

वर्ष ८ वां] पौष कृष्णा २ संवत् १९६३ विक्रमाब्द । दिसंबर ता० २ सन् १९०६ ईस्वी । [अंक ४ था।

जैनमित्रके फाइल ।

सप्तम वर्षके थोडेसे फाइल हमारे पास मौजूद हैं । हम उन्हे जल्दी बेचना चाहते हैं, इस लिये इस समय बहुत थोडी कीमतमें ग्राहकोंको मिल जावेंगे । देर करनेमे दूनी कीमतमें भी नहीं मिल सकेंगे । जैनमित्रके सप्तमवर्षमें कैसे २ बढिया लेख छपे है, सो किसीसे भी छुपे नहीं है । हिन्दीके किसी भी जैनपत्रमें आज तक ऐसे बढ़ियां संग्रह करने लायक लेख नहीं छपे है । समाचार और थोडेसे समाज सम्बन्धी लखोंके सिवाय बाकी सब ही लेख हमेशा पटने योग्य और कामके है । इसके सिवाय जैनसिद्धान्तके १० फार्म और सुशीला उपन्यासका पूर्वार्द्ध (१० फार्म) भी उसके साथ मिलता है, जिन दोनोंकी कीमत प्रथक् छपने पर कमसे कम १।) रु० होगी । ऐसे उत्तम फाइलको दिसम्बर महीनेके अखीर तक हम सिर्फ २॥) में ही देना चाहते हैं, जिल्द सहित मंगानेवालेको १॥।) लेंगेगे और भी सुभीता यह है कि, डाकखर्च हम अपना लगा देंगे ।

सुशीला उपन्यास

प्रथमभाग ।

रायलके बड़े २ अस्सी पेजोंका बहुत बढ़िया [illegible] शिक्षायें भी मिलती है, तयार है । एक बार पढना शुरू करनेमें फिर छोडनेको जी नहीं चाहता है, मूल्य सर्व साधारणसे दश आना जैन मित्रके ग्राहकोंसे आठ आना । डाक खर्च माफ ।

ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा !

विज्ञापन छपानेवालोंको और बँटानेवालोंको ।

अबकी वार हमने जैनियोंके अतिरिक्त सर्व साधारण लोगोंके भी विज्ञापन छापने और बाटनेका बन्दोबस्त किया है । और बहुत थोडा चार्ज लेकर किया हैं । सिर्फ इस साइजके दो पेजके विज्ञापनोंके लिये और भी हमारे पास जगह है, इस लिये विज्ञापन छपानेवालोंको शीघ्रता करनी चाहिये । प्राय. पूरे वर्ष भरके लिये हम ऐसे विज्ञापनोंका ठेका करेंगे, इसलिये जगह भर जानेपर फिर गुंजाइश न रहेगी । जैनियोंमें हमारे पत्रका प्रचार बहुलतासे हैं, जिससे विज्ञापनवालोंको फायदा भी खूब होगा । विज्ञापन बंटानेवालोंको "जैनमित्र अंक अमुकका कोड़पत्र" छपानेके सिवाय कमसे कम एक कालिम समाचार भी अपने विज्ञापनोंमें छपाने होंगे । अश्लील विज्ञापन न तो इस पत्रमें छपेंगे और न बँटेंगे । विज्ञापन छपाने बँटानेकी दर पत्रद्वारा तय [illegible]

ताजे विज्ञापन ।

१ जैनमित्रके बहुतसे ग्राहक जैनमित्रके पुराने अंक विनामूल्य मँगाया करते हैं । परन्तु उन्हें जानना चाहिये कि, वे विनामूल्य नहीं मिल सकते । यदि जरूरत हुआ करै, तो ≈॥ के टिकट भेजकर मंगाया करे, अन्यथा उनके पत्रका उत्तर नहीं दिया जावेगा ।

२ उन ग्राहकोंको अंक विनामूल्य मिल सकते है, जो आगेका अंक पहुचनेके पहले पिछला अंक न पहुचनेकी शिकायत करेंगे । अकसर लोग अंक खो देते है, और पीछे हमसे मगाकर फाइलमें रखना चाहते हैं ।

३ ग्राहकोंसे अग्रिम मूल्य भेजनेके लिये प्रार्थना बहुत दिनसे की जा रही है । परन्तु अब विलम्ब नहीं है । ग्राहकोंको चाहिये कि, शीघ्र भेजनेकी कृपा करें अथवा हमको वी. पी. भेजनेकी आज्ञा दें । वी. पी. भेजनेका क्रम बहुत जल्दी प्रारंभ होनेवाला है ।

पत्रव्यवहार इस पतेसे कीजिये

मैनेजर—जैनमित्र

पो. `` (ग्वालियर)

विनामूल्य जैनमित्र।

एक महिने तक फिर भी मिलेगा।

जो भाई जैनमित्रका पेशगीमूल्य दो रुपया पौष सुदी १५ तक भेज देवेंगे और उसके साथ सवा रुपया अधिक भेजेंगे, उन्हें निम्नलिखित पांच ग्रन्थ उपहारमें दिये जावेंगे.

१ स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा।

वैराग्य और जैनधर्मका रहस्य बतलानेवाला अपूर्वग्रन्थ मूल, संस्कृतच्छाया और हिन्दीभाषाटीका सहित है। इसमें वैराग्यके साथ साथ जैनधर्मका प्राय सम्पूर्ण रहस्य भरा हुआ है। हम समझते हैं, जिसने इस ग्रन्थका स्वाध्याय नहीं किया, उसे वैराग्यका सच्चा आस्वाद ही नहीं मिला। यह रायल अठपेजी २०४ पेजका ग्रन्थ है। निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई सफाई देखने ही योग्य है। यह ग्रन्थ १॥) से कममें किसीको नहीं मिल सकता।

२ परीक्षामुख।

यह जैनियोंका सर्वमान्य संस्कृत न्यायका ग्रन्थ है। इसकी प्रशसा करना व्यर्थ है। यद्यपि यह केवल संस्कृतमें है, परन्तु प्रत्येक मंदिर और भंडारमें सग्रह करने योग्य है। यह डेमी साइजके १२८ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ॥) है।

३ पंचाध्यायी।

यह ग्रन्थ अभीतक सर्वथा लुप्त था। हमने बडे परिश्रमसे द्रव्य लगाकर इसका जीर्णोद्धार कराया है। इसके पढनेवाले विद्वान् कहते है, कि जिसने इस ग्रन्थको नहीं पढा, उसने जैनधर्मका असली मर्म नहीं पाया। यह संस्कृत ग्रन्थ डेमी साइजके २०० पेजका है। मूल्य ॥) है।

४ इन्ट्रोडक्शन टू जैनिस्म

Introduction to Jainism—इस अंग्रेजी ग्रन्थको जिनविजयके सम्पादक मि० लट्ठे, एम् ए ने बडी योग्यतासे लिखा है। अन्यधर्मी विद्वानोंके दिखाने योग्य डेमी १३६ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ॥) है।

५ जैनधर्मपर व्याख्यान

मि० आपटे, बी ए का लिखा हुआ हिन्दी और मराठी दोनों भाषाओंमे मिल सकता है। इसका मूल्य ।) है।

इस प्रकार सिर्फ १।) में ३।) के ग्रन्थोंका ग्राहकोंको लाभ हो सकता है। अथवा सवा तीन रुपयेमें सवातीनके ग्रन्थ मिल जावेंगे और जैनमित्र वर्ष भरतक मुफ्तमें पढनेको मिलेगा। अर्थात् **आमके आम और गुठलीके दाम** मिल जावेंगे। इतने पर भी यदि जैनमित्रके ग्राहक न बढे, तो हम समझेंगे कि जैनियोंमे ग्रन्थोंके पढनेका शौक ही नहीं है। ऐसे सुन्दर और अमूल्य ग्रन्थोंका उपहार जैनियोंमें यह सबसे पहला है।

यह उपहार केवल उन्हीं ग्राहकोंको मिलेगा, जो नवीन वर्ष अर्थात अष्टम वर्षका मूल्य पेशगी भेजेंगे और पिछला बकाया चुका देवेंगे। नवीन ग्राहकोंको पेशगी मूल्य ही भेजना पडेगा।

रुपया आनेपर उपहारकी पुस्तकें मैनेजर जैनमित्र द्वारा भेज दी जावेंगी। परन्तु इतना ख्याल और रखना चाहिये कि ३।) रु० के साथ ग्रन्थोंके डांक खर्चके लिये छह आना अधिक भेजना होंगे।

जैनजातिका हितैषी—

नाथारंगजी गांधी, शोलापूर

जैनमित्र.

पौषकृष्णा २ श्रीवीर नि० संवत् २४३३
ता० २ दिसंबर १९०६

सम्पादकीय टिप्पणियां ।

जैनियोंकी लुप्तप्राय विद्याओंको जीवित करनेका उपाय ।

कालचक्रके प्रभावसे जैनियोंकी सब ही विद्यायें नष्ट हो गईं, और वे यहा तक नष्ट हो गईं कि, अब उनकी वृद्धि होना एक प्रकारसे असंभवसा जान पड़ता है । परन्तु यदि हम अपने पूज्य पुरुषोंकी सुपूत संतान बनना चाहते है और हमारे हृदयमे अपने जातिधर्मका कुछ भी गौरव है, तो हमको चाहिये कि, उन विद्याओंको किसी न किसी प्रकारसे पुनरुज्जीवित करें । यद्यपि यह बडे दु खकी बात है कि, हमारे यहा ज्योतिष आदि विद्याओंका जाननेवाला एक भी विद्वान दिखाई नहीं देता है, और इस कारणसे हम उन विद्याओंका पुन प्रचार करनेके लिये सब प्रकारसे नि सहाय है । परन्तु हमारे प्राचीन सरस्वतीभंडारोंमें जो ग्रन्थ समूह दिखलाई देता है, उसे देखकर कुछ धैर्य होता है. और उस समय यह विचार उपस्थित होता है कि, यदि हम चाहैं, तो कुछ कर भी सकते है । समझ लीजिये कि, हमारी वैद्यक विद्या नष्ट हो गई, हम लोगोंमें कोई भी उसका जाननेवाला नहीं रहा । परन्तु हमारे यहां ग्रन्थसमूहरूप बीज मौजूद है, उससे उसकी वृद्धि हो सकती है । इसी अभिप्रायकी पूर्तिके लिये पीलीभीतके वैद्यविद्यालयमें पढ़ाकर जिसमें कि अन्यमतोंके वैद्यकग्रन्थ पढ़ाये जाते है, कन्हैयालालजी वैद्यराजकी उपाधिसे विभूषित हुए हैं । अब वैद्यराजजीका कर्तव्य है कि, वे जैनियोंके वैद्यक ग्रन्थोंका अन्वेषण करके, और उनकी पद्धति समझके जैनवैद्यक विद्याको उत्तेजन देवें । उनके इस कर्तव्यसे हमारी इच्छा पूर्ण हो सकती है । प्रत्येक विद्याओंको जिनकी कि परम्परा नष्ट हो गई है, सजीवित करनेका यही एक उपाय है । यदि प्रत्येक विद्याकी पद्धतिके जाननेवाले इस प्रकारसे दो २ एक २ विद्यार्थी तयार किये जावें, तो हम अपनी खोई हुई विद्याओंको फिरसे पा सकते है ।

ज्योतिष पढनेवाले एक विद्यार्थीको वजीफा ।

जैनियोंमें आज ज्योतिषविद्याका जाननेवाला कोई नहीं है । और इसकी बडी भारी जरूरत है । क्योंकि ज्योतिष दूसरे ज्योतिषोंसे सर्वथा निराला है । वैद्यकमें तो हिंसा अहिंसा मात्रका थोडासा भेद है परन्तु ज्योतिषमें तो आकाशपातालका सा अन्तर है । जब दूसरे लोग एक ही सूर्यचन्द्र मानते है, तब हम दो चन्द्रसूर्य मानते हैं । इसलिये इस विद्याको सजीवित करनेकी बडी भारी आवश्यकता है । और इसका उपाय वही है, जो वैद्यकके लिये किया गया है । हर्षका विषय है कि, बम्बईके प्रसिद्ध शेठ सुखानन्दजी (शेठ गुरुमुखरायजी सुखानंदजी) का ध्यान इस ओर गया है । उन्होंने दश रुपये महीनेकी एक स्कालरशिप फिलहाल दो वर्षके लिये नियत की है । यह उस जैन विद्यार्थीको दी जावेगी, जो प्रवेशिका पास अथवा उतनी योग्यता रखनेवाला ज्योतिष पढ़ना चाहेगा । काशीकी स्याद्वादपाठशालामें रहकर कालेजमें अथवा किसी पंडितके पास प्राइवेट तौरसे उसे पढ़ना होगा । जो विद्यार्थी उत्सुक हों, उन्हें शीघ्र प्रार्थनापत्र भेजना चाहिये । शेठ सुखानन्दजीने यह विचार बडी प्रशंसाका किया है । अन्य धर्मात्माओंको भी ऐसी स्कालरशिपें नियत करके प्रत्येक विषयके एक एक दो दो विद्यार्थी तयार कराना चाहिये ।

क्या केशर चढाना सर्वथा छोड देना चाहिये ?

जबसे विलायती केशरकी अपवित्रताकी बात प्रकट हुई है, तबसे लोगोंको केशरसे असाधारण घृणा उत्पन्न होने लगी है । अनेक लोग तो इस अपवित्रताके डरके मारे केशरका एक प्रकारसे परित्याग ही कर चुके हैं, सैंकडो स्थानोंके मन्दिरोंमें केशर सर्वथा बन्द हो गई है, और अनेक भाई इसके बदलेमें शृंगारहारके फूलोंका उपयोग करने लगे हैं । वास्तवमें अपवित्र चीजोंसे ऐसी ही घृणा उत्पन्न होना चाहिये और इसी प्रकार डरना चाहिये । परन्तु जब स्वदेशी उत्तम और पवित्र केशर मिल सकती है, तब इस प्रकार परित्याग करनेकी आवश्यकता नहीं देखी जाती और न केशरके बदले फूलोंके घोलनेकी एक नवीन पद्धति जिसका शास्त्रोंमें कोई भी विधान नहीं है, चलानेकी आवश्यकता है । काश्मीरकी सुन्दर सुगंधित केशर जिसमे किसी प्रकारकी अपवित्रताका भय नहीं है, मिल सकती है । बम्बईमें यह केशर कई जगह मिलती है । जिन्हें जरूरत हो, "पन्नालाल जैन–पो. गिरगाव–बम्बई" से मँगा लिया करे । लाहौरमें "लाला जसवतरायजी जैनी" और अमृतसरमें "लाला फग्गूमलजी" भी काश्मीरीकेशर मगाने पर भेजते हैं ।

एक धर्मात्माका आक्षेप ।

किसी महाशयने एक लेख लिखकर हमारे पास भेजा है । उसमें उन्होंने लिखा है कि, जिन चकला मूठाओंमे विलायती केशरका मर्दन हुआ, उन वेचारोंको तो कानपुरकी बालसभाने तथा अन्य भाइयोंने मन्दिरमेंसे ही निकाल दिया, परन्तु जिन शरीरोंने उस चर्बी तथा रक्तमिश्रित अस्पर्श्य वस्तुको केशरिया भात तथा नाना प्रकारके पौष्टिक पाकोंके साथ हजम किया है, उन्होंने एक आह भी न भरी और न कोई प्रायश्चित्त ही किया । इसके सिवाय मंदिरोंमें तो केशर चढानेका परित्याग सब जगह सुना, परन्तु यह किसीने प्रतिज्ञा नहीं की कि, हम अपवित्र केशरका भक्षण भी नहीं करेंगे । भला क्या इसके त्यागके लिये अब भी कुछ कहनेकी जरूरत है ? नहीं ।

पंढरपुरकी श्रीकुन्दकुन्दान्वयी दिगम्बर जैन पाठशाला ।

इस पाठशालाकी पहली वार्षिकरिपोर्ट हमारे पास आई है, जिसके देखनेसे हमको संतोष हुआ । पाठशाला उत्तम पद्धतिसे चल रही है । वर्तमानमें विद्यार्थियोंकी संख्या ९१ है । अध्यापक दो है । संस्कृतवर्गसे विद्यार्थियोंको अंग्रेजी शिक्षा देनेका भी प्रबन्ध हुआ है । ध्रुवफंडमें ९७९०) रु० है । इसमें कुछ और भी वृद्धि होनेकी आवश्यकता है । इस वर्षमें फुटकर आमदनी ४७६) व्याजकी आय ४३९।।।) तथा है । और वर्ष भरका कुल खर्च ५६१= हुआ है । इस तरह ९१०।।=) की बचत रही है । ध्रुवफंडमे गांधी अमीचन्द प्रेमचन्दने १०००) रु, गांधी हरीचन्द नाथूरामने १०००) रु., कोठारी अभयचन्द जयचन्द बार्शीकरने १०००) रु., गांधी पदमचंद हेमचन्दने ५००) रु शा गुलाबचन्द नाथूरामने ९००) रु. शा. हरीचन्द नानचन्दने ९००) रु. और शा हरीचन्द उगरचन्दने २९०) रु. दिये हैं । अनेक

महाशय वार्षिक सहायता देते हैं, जिससे बारह रुपये मासिकके अनुमान आय हो जाती है। पाठशालाके प्रबंधका और पढाईका जिन २ महाशयोने निरीक्षण किया है, प्रशंसा की है। इस वर्ष बाबू दीपचन्दजी उपदेशक, प्रोफेसर शिवराम महादेव पराजपे (कालपत्रके एडीटर), मि० व्यंकटेश दामोदर मामलेदार, मि. केशव हरी हैडमास्तर, रा. रा. हीराचद नेमिचन्द, आ. म., शेठ हरीचन्द अमीचन्द और शेठ हीराचन्द रामचन्द गांधीने पाठशालाका निरीक्षण किया है। आशा है कि, इस पाठशालासे जैनसमाजको बहुत कुछ काम होगा।

श्री बडवानी अर्थात् बावनगजा सिद्धक्षेत्र।

यहां मिती पौष सुदी ८ से पौष सुदी १९ तक मेला भरता है। यह तीर्थ नीमाड जिलेमें है। निकटवर्ती स्टेशन मऊ Mhow है। यहासे श्रीइन्द्रजीत तथा कुंभकरणजी मुक्त हुए है। इस पर्वत पर २२ मन्दिर है जिनमें बहुत मनोज्ञ २ प्रतिमायें हैं। सुसारीवाले शेठ रोडमल सूरजमलजीक पत्रसे विदित हुआ है कि, मेलेमें श्रावकमण्डलीबहुत कम आती है और इसी कारण आमदनी इतनी कम है कि, जिससे प्रतिवर्ष भण्डारको हानि उठानी पडती है। श्रावकोंके कम जानेका कारण यह बतलाते है कि, कोई विद्वान् पण्डित तथा उपदेशक महाशय उस समय जाकर धर्मामृतकी वृष्टि नहीं करते। इस साल भी इसी मितीपर मेला होनेवाला है। भारतवर्षीय दि. जै महासभाके उपदेशकभण्डारेके मन्त्रीको उचित है कि, ऐसे मौकेपर किसी उपदेशकको भेजकर तीर्थसुधार धर्मोन्नति आदिके विषयमें उपदेश करावें। बडवानी नगरमें १ जैनपाठशालाकी बडी आवश्यकता है। कारण कि वहा जैनियोंके १९ लडके सरकारी स्कूलोंमें पढते हैं परन्तु उन्हें धर्मशिक्षा बिल्कुल नहीं मिलती। इस नगरमें श्रावकों के ३० घर तथा आसपास २० मीलके भीतर ४०० घरके अनुमान हैं, जिनमें २० घर अच्छे २ धनाढ्योंके है। उपदेशकको उचित है कि बडवानी तथा उसके निकट किसी स्थानमें जैनपाठशाला स्थापित करनेका प्रयत्न करे।

यह नोट शेठ माणिकचन्द हीराचन्दजीने भेजा है।

जहांगीर बादशाहका आज्ञापत्र।

मेरे सम्पूर्ण राज्यमे विशेषकर गुजरात सूबेके बडे २ अफसरों किफायत करनेवाले अमिलों जागीरदारों, करोरी तथा प्रत्येक महकमेके कार्यकर्ताओंको विदित हो कि, परमेश्वरके पहचाननेवाले जो लोग हैं उनका यह सिद्धान्त है कि, प्रत्येक धर्मके तथा जातिके ही नही, किन्तु सर्व ससारके जीव सुखी रहैं, ऐसा प्रयत्न करना चाहिये। वर्तमानमें वेषहर्ष तथा परमानन्द यतियोंने दुनियाकी रक्षा करनेवालोंके दरबारमें (बादशाही) आकर तख्तके पास खडे होकर प्रार्थना की, कि, विजयसेनसूरि तथा विजयदेवसूरि इसी प्रकार जो उत्तम बुद्धिवाले लोग है, वे ईश्वरकी भक्ति करते हैं और प्रार्थना करते हैं, तथा वेषहर्ष और परमानन्द यतिओंका परमेश्वरको प्रसन्न रखनेका वृत्तान्त हमने बहुत उत्तम रीतिसे जान लिया है, इसलिये पृथ्वीका अधिकार करनेवालोंकी ऐसी आज्ञा हुई कि, कोई भी आदमी इन जैनियोंके मंदिरोंमें तथा धर्मशालाओंमें नहीं ठहरें और न विनाकारण कोई असुविधा उपस्थित करें। मदिर धर्मशाला यदि ये लोग फिरसे बनवाना चाहे, तो इन्हे किसी प्रकारसे मनाई न की जावे और न उनके काममें कोई विघ्न उपस्थित किया जावे। उनके उपाश्रयोंमें कोई डेरा न डाले। वे लोग यदि सोरठ देशके शत्रुजय तीर्थकी यात्रा करनेको जावें, तो किसी भी आदमीको इनके यात्रियोंसे न कुछ मागना चाहिये और न लालच करना चाहिये। इसके शिवाय उपर्युक्त वेषहर्ष और परमानन्द यतिकी प्रार्थना तथा इच्छा पर बहुत ही बडी आज्ञा यह होती है कि,—

प्रत्येक सप्ताहके रविवार तथा गुरुवारको तथा प्रत्येक महिनेकी सुदी परिवाको, ईदको, और प्रत्येक वर्षमें नवरोज तथा माह शहरयुरको जो कि हमारा मुबारिक दिन है हमारे सम्पूर्ण राज्यमे किसी भी जीवकी हिंसा न हो, शिकार खेलना, पक्षियोंका पकडना, मारना, मछलियां मारना इत्यादि कोई भी वधकार्य न हो, और इसी प्रकारके अन्य कोई भी काम उपर्युक्त दिनोमे न होना चाहिये। पूर्वोक्त आज्ञाके अनुसार निरन्तर वर्ताव करनेकी कोशिश करना चाहिये और हमारी आज्ञाकी किसीको अवहेलना नहीं करना चाहिये।

लिखी—ता. माह शहरयूर सन् १ जुलसी। यह आज्ञापत्र ख्वाजाहानके समाचारपत्रमें तथा मेवकअलीतकीके वर्तमान पत्रमें दाखिल किया।

नुरुद्दीन महम्मद जहागीर बादशाह गाजाका फरमान।

अनुवादक—मुंशी सय्यद अब्दुल मियां साहब उरैजी।

भोजन।

(वैद्यराज और वैद्यरत्न पं० कन्हैयालाल जैन लिखित)

"शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" इस वाक्यके अनुसार धर्मसाधनका प्रधान कारण शरीर है, इसलिये शरीररक्षापर ध्यान देनेकी अतिशय आवश्यकता है। शरीररक्षाके लिये जिन २ पदार्थोंकी आवश्यकता है, उनमे भोजन मुख्य है। क्योंकि भोजनसे शरीर निरोगी, बलाढ्य, कातिमान और भोजनसे ही रोगोंका घर, निर्बल, और तेजहीन हो सकता है। भोजनका परिणाम न केवल शरीरपर ही अच्छा बुरा होता है, बरन बुद्धि और स्वभावपर भी इसका असर होता है। इसलिये भोजनव्यवहारकी ओर लक्ष्य देना मनुष्यका कर्तव्य है। बडे खेदकी बात है कि, हमारे समाजके अधिकांश भाई भोजनके नियमोंको न जानकर इसे एक विगार समझकर ज्यों त्यों पेट भरा करते हैं, और शारीरिक सुखोंपर सर्वथा पानी फेर देते हैं। वैद्यक ग्रन्थोंमें इस विषयपर खूब विचार किया गया है। मेरी इच्छा बहुत दिनसे इस विषयपर लिखनेके लिये थी। परन्तु जैनियोंके वैद्यकग्रन्थ अभी तक अंधेरेमें ही पडे हुए हैं, और दूसरे मतवालोंमें और जैनियोंमें भोजनके विचारोंमें अतिशय अन्तर है, इसलिये अन्यग्रन्थोंके आधारसे लिखनेका साहस नहीं होता था। परन्तु हर्षका विषय है कि, भगवत्सोमदेवसूरिके यशस्तिलकमहाकाव्यमें मुझे यह विषय मिल गया और साधार लेख लिखनेकी मेरी इच्छा पूर्ण हो गई। आशा है कि, आरोग्याभिलाषी सज्जन इस लेखको ध्यानसे पढेंगे।

परिश्रम करके तथा धूपमेंसे आकर भोजन नहीं करना चाहिये। मन और इन्द्रियोंके व्याकुल होनेपर भी भोजन करना ठीक नहीं है। जो मनुष्य परिश्रमसे थकी हुई अवस्थामें भोजन करता है, उसे

ज्वर और वमन (उलटी) रोग हो जाता है। पसीना आ रहा हो, उस समय भोजन करनेसे भगन्दर रोग, और पाखानेकी हाजत हो, उस समय भोजन करनेसे गुल्म रोग हो जाता है।

स्नान करके, दैनिक क्रियाओंसे निर्वृत होकर, देवपूजादि सत्कृत्य करके पहले अतिथिजनोको भोजन कराना चाहिये। पश्चात् प्रसन्न मनसे और सुन्दर वेष धारण करके गुरुजनोंके साथ भोजन करना चाहिये। भोजन करते समय प्रत्येक मनुष्यको अपने उदरमें ३ भागोकी कल्पना करनी चाहिये। उनमेंसे एक भाग भोजन सामग्रीसे और दूसरा भाग द्रव (जलरूप) पदार्थोंसे पूर्ण करके शेष एक भाग खाली रखना चाहिये।

जो लोग विना विचारे, भूलसे, उत्तम पदार्थ होनेसे अथवा अपने सहज स्वभावसे अधिक भोजन किया करते हैं, उन्हीं मनुष्योंको अतीसार, विशूचिका (हैजा) आदि बीमारियां उत्पन्न होती हैं। किन्तु जो नियमित रूपसे भोजन करते हैं, उनका शरीर स्वस्थ और बलवान् रहता है।

भोजन किस समय करना चाहिये, इस विषयमें पृथक् २ आचार्योंकी पृथक् २ सम्मतियां है। परन्तु यथार्थमें जिस समय पहला किया हुआ भोजन अच्छे प्रकारसे पच जावे और भूख अच्छी तरहसे लग आवे, उसीको भोजनका ठीक समय समझना चाहिये। तिसपर भी आचार्योंने—

याममध्ये न भोक्तव्यं यामयुग्मं न लघयेत्।
याममध्ये रसोत्पत्तिर्यामयुग्माद्बलक्षयः॥

यह नियम बांधा है। अर्थात् दिनका चौथा भाग समाप्त होनेके पहले भोजन करना ठीक नहीं है। क्योंकि पहले प्रहरमें पहले दिनके किये हुए भोजनका रस बनता है। इस समय नया भोजन कर लेनेसे रस बननेमें बाधा आती है, जिससे कि रोग उत्पन्न होनेका भय है। इसी प्रकार दो प्रहरके पहले पहले भोजन कर लेना चाहिये। दो प्रहर बीत जानेपर भोजन करनेसे बलका क्षय होता है।

खुली जगहमें, अंधकारमें, और विना चंदोवाके मकानमें, भोजन करनेकी मनाई है। अपने साथ भोजन करनेवाले पुरुषोंको पहले ही भोजन करा देना चाहिये। अन्यथा उनसे पहले भोजन करनेसे उनकी दृष्टिका विष भोजनमें फैलकर अनेक उपद्रव करता है।

उच्छिष्ट (झूंठ) खानेवालेको, अपने प्रतिकूलको दुष्ट मनवालेको, भूखेको, और निंदितको, भोजनके समय अलग कर देना चाहिये।

एकवार गरमकी हुई चीज यदि ठंडी हो जावे, तो उसे पुनः गरम करके नहीं खाना चाहिये। अकसर लोग दूध व शाक वगैरह ठंडे हो जानेपर फिर गरम करके खाते हैं, परन्तु यह ठीक नहीं है। मूग मोठ, मटर आदि अन्न जो पानीमें पड़े रहनेसे अथवा अन्य किसी प्रकारसे अंकुरित हो जावें, अर्थात् उनमें अंकुर निकल आवें, तो उन्हें फिर खानेके काममें नहीं लाना चाहिये। कांसेके वर्तनमें दश रात रक्खा हुआ घी अखाद्य हो जाता है। दही अथवा मट्ठे (छांछ) के साथ केला, नमकीन पदार्थोंके साथ दूध, कांजीके साथ तिलोंके पदार्थ, मूलीके साथ उड़द की दाल, और गुड़, पीपल, शहद, मिर्चके साथ मकाय कभी नहीं खाना चाहिये। क्योंकि इनके रासायनिक प्रयोग बहुत दुःखदायी होते हैं। तिलके पदार्थ, दही, और सत्तू (सत्तू) आदि रातको नहीं खाना चाहिये। घी, पानी, भक्ष्यान्न (लड्डू आदि) को छोड़कर शाक, दूध आदि सब चीजें पर्युषित (बासी) खानेका निषेध है। जिस पदार्थमें किसीका केश (बाल) अथवा कोई कीट निकल आवे, उसे फिर नहीं खाना चाहिये।

पाठकों को यह विषय पढ़कर अत्यन्त ही हर्ष होगा कि, हमारे जैनशास्त्रोंमें जो पदार्थ खानेके अयोग्य बतलाये है, वे प्रायः सभी वैद्यकशास्त्रके विरुद्ध हैं। यदि मनुष्य जैनशास्त्रानुसार खान पान व्यवहार रक्खे, तो वह अवश्य ही निरोगी रहेगा। जैसे कि, कढी जो कि द्विदलमें गिनी जाती है, वह यथार्थमें शरीरको हानिकारक है। डाक्टरोंने पदार्थविद्यासे सिद्ध कर दिखाया है कि, वेसनके साथ मट्ठा मिलनेसे एक प्रकारके ऐसे जीव उत्पन्न होते हैं, जो फैंफडे (Yanges) को तथा पाचनशक्तिको दुर्बल कर देते है। इसी प्रकार आलू भी एक अभक्ष्य पदार्थ है, इससे शरीरको बहुत हानि पहुंचती है। खेद है कि, जैनियोंके अतिरिक्त अन्यमतावलम्बी भाई इसपर ध्यान नहीं देते है। उनके शास्त्रोंमें भी आलू खानेका निषेध है। देखिये धनपतिमिश्रने इसके विषयमें क्या कहा है:—

कन्दो बहुविधो लोकैरालुशब्देन भण्यते।
कचालु चैव घण्टालु पिण्डालु शर्करादिकम्।
इंग्रेजैर्यत्समानीतं विलासीयदपूर्वकम्।
कोषादिषु न दृष्टं यद्भक्षितं चाविवेकिभिः॥
निघण्टौ नास्य पर्याया न गुणाः परिकीर्तिताः।
स्मार्तैरेतद्यद्धृतमभक्ष्यं तद्धितार्थिभिः॥

अर्थात् "आलू, कचालू, घटालू, पिंडालू, शर्करालू (सकरकंद) आदि बहुत प्रकारके कन्द आलू कहलाते हैं। इनमेंसे जिसे अंग्रेज लोग यहां ले आये है, और जो आलू नामसे प्रसिद्ध है, वह सर्वथा अभक्ष्य है। इसका नाम न कोषादिकोंमें मिलता है, और न निघंटुमें इसके पर्याय व गुणादिकोंका वर्णन है। स्मार्त लोग इसे खाते हैं, हितार्थियोंके लिये यह अभक्ष्य है।" इस कारण प्रत्येक व्यक्तिको जैनशास्त्रानुसार खान पान व्यवहार रखना चाहिये।

भोजनमें पहले मीठे चिकने पदार्थ, बीचमें भारी, नमकीन, खट्टे पदार्थ और पीछे रूखे तथा पतले पदार्थ खाने चाहिये। आचार्य वाग्भटका भी मत है कि,—

भुञ्जीत तन्मना भुक्त्वा पूर्वं तु मधुरं रसम्।
मध्येऽम्ललवणौ पश्चात्कटुतिक्तकषायकान्।

भोजनके प्रत्येक ऋतुके लिये जुदे २ विधान हैं, जो किसी आगामी अंकमें प्रकाशित किये जावेंगे, आज इतना ही।

प्रश्नोत्तररत्नमाला।

(१)

प्रिय वाचकवृन्द! जैनमित्रके गत अङ्कमें जिस प्रश्नोत्तररत्नमालिकाकी प्रशंसा आप सुन चुके हैं, तथा जिसके प्रसादादि गुणों और अपूर्व उपदेशोंपर मोहित होकर पृथक् पृथक् सम्प्रदायके आचार्योंने उसे अपनानेमें किंचित् भी कमी नहीं रक्खी है, उस रत्नमालिकाके पढनेके लिये आपका चित्त अवश्य ही उत्सुक होगा। इसलिये उस उत्सुकता को पूर्ण करनेके लिये जैनमित्रके पाठकोंको रत्नमालिका आज भेटकी जाती है। आशा है कि, पाठक भी इसे अपने अपने कंठमें धारण कर हृदयको सुशोभित करेंगे।

प्रणिपत्य वर्धमानं
प्रश्नोत्तर-रत्नमालिकां वक्ष्ये।
नागनरामरवन्द्यं
देवं देवाधिपं वीरम्॥ १॥

भवनवासी कल्पवासी देवों और मनुष्यों करके वदनीक, देवाधिदेव वर्धमान् श्रीवीरनाथ अर्हद्देवको नमस्कार करके मैं (अमोघवर्ष) इस प्रश्नोत्तररत्नमालिकाको कहता हूं।

कः खलुनालंक्रियते
दृष्टादृष्टार्थसाधनपटीयान्।
कण्ठस्थितया विमल—
प्रश्नोत्तर-रत्नमालिकया ॥ २ ॥

प्रत्यक्ष और परोक्ष पदार्थोंके साधनमे चतुर ऐसा कौन पुरुष है, जो कंठमें धारणकी हुई निर्मल प्रश्नोत्तररत्नमालाके द्वारा अपनेको अलङ्कृत न करै? कोई नही। अर्थात् इस रत्नमालासे सभी अंगारित होंगे।

प्रश्न—भगवन् किमुपादेयं ?

हे भगवन्! अर्थात् उपादेय ग्रहण करनेके योग्य क्या है?

उत्तर—गुरुवचनं

गुरुके वचन।

प्रश्न—हेयमपि च किम् ?

और हेय अर्थात् त्याग करने योग्य क्या है।

उत्तर— अकार्यम्।

अकार्य अर्थात् निन्द्यकार्य।

प्रश्न—को गुरुः ?

गुरू कौन है?

उत्तर—अधिगततत्त्वः सत्वहिताभ्युद्यतः सततम् ॥ ३ ॥

जो निरन्तर ही प्राणियोंके हित करनेमें उद्यत हो और जो सम्पूर्ण तत्त्वोंका यथार्थ ज्ञाता हो।

प्रश्न—त्वरितं किं कर्तव्यं ?

कौनसा कार्य शीघ्र करना चाहिये?

उत्तर—विदुषा संसारसन्तितच्छेदः।

विद्वान् पुरुषोंको ससार परपराका छेद अर्थात् संसारमें होते हुए जन्ममरणरूपी परिभ्रमणका नाश शीघ्र ही करना उचित है।

प्रश्न—किं मोक्षतरोर्वीजं ?

मोक्षरूपी वृक्षका वीज अर्थात् मोक्षका कारण क्या है?

उत्तर—सम्यग्ज्ञानं क्रियासहितम् ॥४॥

सम्यक्चारित्र सहित सम्यग्ज्ञान। अर्थात्—सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान दोनों सहभावी हैं, विना सम्यग्दर्शनके सम्यग्ज्ञान नहिं होता। इसलिये सम्यज्ञानके कहनेमे सम्यग्दर्शनको भी सूचित कर दिया। अतःसम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान सम्यक्चरित्र ये तीनों ही मिलकर मोक्षरूपी वृक्षके बीज हैं।

प्रश्न०—किं पथ्यदनं ?

परलोककी यात्रा करनेवाले जीवको मार्गके लिये पाथेय (कलेवा) क्या है?

उत्तर—धर्मः

एक धर्म।

प्रश्न—कः शुचिरिह ?

इस संसारमें शुद्ध कौन है?

उत्तर—यस्य मानसं शुद्धम्।

जिसका चित्त शुद्ध हो।

प्रश्न—कः पण्डितो ?

पण्डित कौन है?

उत्तर—विवेकी—

जिसको हिताहितका विवेक है।

प्रश्न—किं विषं ?

विष क्या है?

उत्तर—अवधीरिता गुरवः ॥५॥

तिरस्कार किये हुए गुरु, अर्थात् गुरुओका तिरस्कार करना विष है।

प्रश्न—किं संसारे सारं ?

इस संसारमें सार क्या है?

उत्तर—बहुशोऽपि विचिन्त्यमानमिदमेव। मनुजेषु दृष्टतत्त्वं स्वपरहितायोद्यतं जन्म ॥६॥

मनुष्ययोनिमें ऐसा जन्म लेना कि, जिसमें सम्पूर्ण तत्त्वोंको देखा और पढा हो। और जो अपने और दूसरोंके हितमें सदा उद्यत हो। यही बहुत विचार करनेपर सिद्ध होता है।

प्रश्न—मदिरेव मोहजनकः कः

मदिराके समान मोहको उत्पन्न करनेवाला कौन है?

उत्तर—स्नेहः

स्नेह—प्रेम।

प्रश्न—के च दस्यवः ?

चोर कौन हैं?

उत्तर—विषयः।

इन्द्रियोंके विषय इस हैं।

प्रश्न—का भववल्ली ?

ससारके बढानेवाली वेल कौन है?

उत्तर—तृष्णा

तृष्णा।

प्रश्न—को वैरी ?

वैरी कौन है?

उत्तर—नन्वनुद्योगः ॥ ७ ॥

उद्योग न करना ही निश्चयसे इस जीवका वैरी है।

प्रश्न—कस्माद्भयमिह ?

इस संसारमें भय किससे करना चाहिये?

उत्तर—मरणात्

मरणसे।

प्रश्न—अन्धादपिको विशिष्यते ?

अन्धेसे भी अन्धा कौन है?

उत्तर—रागी।

रागयुक्त जीव।

प्रश्न—क शूरो ?

शूरवीर कौन है?

उत्तर—यो ललनालोचनवाणैर्न च व्यथितः।

जो पुरुष स्त्रीके चचल नेत्रोंके कटाक्ष बाणोंसे व्यथित नहीं हुआ है।

प्रश्न—पातुं कर्णाञ्जलिभिः किममृतमिव बुध्यते ?

कर्णरूपी अञ्जलिसे अमृतके समान पीने योग्य क्या पदार्थ जान पड़ता है?

उत्तर—सदुपदेश।

श्रेष्ठ उपदेश।

प्रश्न—किं गुरुताया मूलं ?

गुरुता अर्थात गम्भीरता की जड क्या है?

उत्तर—यदेतदप्रार्थनं नाम ॥ ९ ॥

जो किसीसे प्रार्थना नहीं करना, वही गुरुता है।

प्रश्न—किं गहनं ?

गहन क्या है?

उत्तर—स्त्रीचरितं

स्त्रीचरित्र।

प्रश्न—कश्चतुरो ?

चतुर कौन है?

उत्तर—यो न खण्डितस्तेन।

जो उन स्त्रियोंके चरित्रसे खण्डित नहीं हुआ वही चतुर है।

प्रश्न—किं दारिद्र्यं ?

दारिद्र क्या है?

उत्तर—असन्तोष एव।

संन्तोष न करना ही दरिद्रता है।

प्रश्न—किं लाघवं ?

लघुता क्या है?

उत्तर—याञ्चा ॥ १० ॥

याचना अर्थात् किसीसे मांगना ही परमलघुता है।

प्रश्न—किं जीवितं ?

संसारमें जीवित क्या है।

उत्तर—अनवद्यं

अनवद्य अर्थात् पापरहित जीवन ही जीवन है।

प्रश्न—किं जाडचं?
जड़ता क्या है?
उत्तर—पाटवेप्यनभ्यासः
चतुर होनेपर भी अभ्यास न करना महा मूर्खता है।
प्रश्न—को जागर्ति?
संसारमें जागता कौन है?
उत्तर—विवेकी
जो बुद्धिमान् है, वही जागता है।
प्रश्न—का निद्रा?
निद्रा क्या है?
उत्तर—मूढता जन्तोः ॥११॥
मनुष्योंकी मूढता ही बडी निद्रा है।
प्रश्न—नलिनीदलगतजललवतरलं किं?
कमलिनीके पत्तेपर पड़े हुए जल बिंदुके समान अर्थात् क्षणभंगुर क्या है?
उत्तर—यौवनं धनमथायुः।
यौवन धन और आयु ये तीनों ही क्षणस्थायी है।
प्रश्न—के शशधरकरनिकरानुकारिणः?
चन्द्रमाके किरणसमूहके अनुकरणकरनेवाले अर्थात् चन्द्रमाके समान शीतल और सुखद कौन हैं?
उत्तर—सज्जना एव ॥१२॥
सज्जन पुरुषही ऐसे शान्त और सुखदेनेवाले होते है।
प्रश्न—को नरकः?
नरक क्या है?
उत्तर—परवशता
परतन्त्र रहना ही नरक निवास है।
प्रश्न—किं सौख्यं?
सुख क्या है?
उत्तर—सर्वसङ्गविरतिर्या।
समस्त परिग्रह छोड़कर आत्मामें लीन होना सुख है।
प्रश्न—किं सत्यं?
सत्य क्या है?
उत्तर—भूतहितं।
जीवोंका हित करना ही सत्यता है।
प्रश्न—किं प्रेयः प्राणिनाम्?
प्राणियोंके प्रिय क्या हैं?
उत्तर—असवः ॥१३॥
प्राण ही सबसे प्रिय हैं।
प्रश्न—किं दानं?
दान क्या है?
उत्तर—अनाकांक्षं
जो किसी प्रकारकी आकांक्षासे न किया जावे, वही दान है।
प्रश्न—किं मित्रं?
मित्र कौन हैं?
उत्तर—यन्निवर्त्तयति पापात्।
जो पापसे रक्षा करे, वही मित्र है।
प्रश्न—कोऽलङ्कारः?
अलंकार अर्थात् भूषण कौन है?
उत्तर—शीलं
शील अर्थात् ब्रह्मचर्य ही मनुष्यका भूषण है।
प्रश्न—किं वाचां मण्डनं?
वाणीका भूषण क्या है?
उत्तर—सत्यम् ॥१४॥
सत्य ही वाणीका भूषण है।
प्रश्न—किमनर्थफलं?
अनर्थका फल क्या है?
उत्तर—मानसमसङ्कृतं
मनकी असंगतता होना ही अनर्थका फल है।
प्रश्न—का सुखावहा?
सुख देनेवाली क्या वस्तु है?
उत्तर—मैत्री।
मित्रता ही सुख देनेवाली है।
प्रश्न—सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः?
समस्त व्यसनोंके नाश करनेमें चतुर कौन है?
उत्तर—सर्वथा त्यागः ॥१५॥
परिग्रह आदिका सर्वथा त्याग करना ही सब व्यसनोंका नाश करनेवाला है।

लालाराम जैन।

हमारे देशका पतन कैसे हुआ?

आजकल हमारे देशके शुभचिन्तक अग्रगण्य यही विचार किया करते हैं, कि, हमारे देशका अधःपतन क्यों हुआ? और इसके अपनी २ बुद्धिके अनुसार लोग नानाप्रकारके उत्तर दिया करते हैं। कोई कहते हैं, हम लोगोंकी आपसकी फूट इसका कारण है, कोई कहते हैं, जातिभेद वर्णभेदके झगड़ोंने हमारे देशको खराब कर दिया। कोई कहते हैं, भारतवर्षमें कोड़ियों धर्म प्रचलित हैं, उन्हींकी लठालठीसे यह देश बरबाद हो गया। कोई कहते हैं कि, बालविवाह, वृद्धविवाह आदि नाना कुरीतियोंने यहांकी उन्नतिकी जड़में कीड़ा लगा दिया। इस तरह सब कोई अपनी २ युक्तियां लड़ाते हैं। परन्तु यदि हमसे कोई पूछै, तो हम तो यही कहेंगे कि, हमलोग अपने धर्मको भूल गये, अपने निजत्वको खो बैठे, इसीसे देशका सत्यानाश हो गया।

हिन्दुस्थानकी जो वर्तमान शोचनीय अवस्था हो रही है, प्रतिवर्ष अकाल पड़ रहे हैं और लक्षावधि लोग भूखे मर रहे हैं, इसका मूल कारण यहाके व्यापारका नष्ट हो जाना है। इसको सब ही बुद्धिमान् स्वीकार कहते हैं। परन्तु व्यापार नष्ट क्यों हुआ, विलायतीमालसे हमारे बाजार क्यों भर गये, विलायती व्यापारी मालामाल क्यों हो गये, इसका यदि कारण ढूढा जावे, तो यही मिलेगा कि, हम लोग अपने धर्मको भूल गये, और निजत्वको खो बैठ।

हमारे देशके अनेक बाबूगण धर्मको एक निकम्मी चीज समझते हैं, और उसे अपनी भ्रष्टबुद्धिमे देशके अधःपतनका कारण मानते हैं। परन्तु देशके अभाग्यसे उन्होंने हमारे धर्मके गौरवको बलको विस्तारको नहीं समझा, इसी कारणसे इस चिन्तामणिरत्नको काचखंडके धोखे समुद्रमें फेंक दिया और अब आज रोते हैं कि, हाय! हमारा देश बडा दरिद्री हो गया है, हमारा व्यापार विदेशियोंने नष्ट कर दिया हम लोग बडे दुःखी हैं इत्यादि। परन्तु यदि यही बुद्धि पहले उत्पन्न हो जाती, तो आज यह रोनेका समय नहीं आता। सम्पूर्ण ऐहिक और पारलौकिक कार्योंसे हमारे धर्मका सम्बन्ध है। ऐसा कोई भी कार्य नहीं है, जिसमें गुप्तरूपसे, सामाजिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक, वैद्यकादितत्त्व न छुपे हों, इसलिये हमारा धर्म हमारे बडे कामकी चीज है। उसकी अवहेलना करनेवाले कभी सुखी नहीं हो सकते।

मान लिया जावे कि, अंग्रेज व्यापारियोंने अपनी कुटिल नीतिसे और स्वार्थबुद्धिसे हमारे देशके व्यापारको नष्ट कर दिया, परन्तु यह भी तो सोचिये कि, इसमे हमारा भी कुछ अपराध है या नहीं? हमारी समझमें एक रीतिसे सब अपराध हमारा ही है। क्योंकि वेश्याओंका कर्तव्य है कि, अपने शरीरको खूब सजधजके रक्खें और हावभावकटाक्षोंसे लोगोंके मन अपनी ओर आकर्षित करें। इसी प्रकार ब्रह्मचारीका भी कर्तव्य है कि, वह अपने चित्तको वशमें रक्खे, धर्मके बंधनसे जकड़कर उसे उस ओर न जाने दे। किन्तु यदि कहीं ब्रह्मचारी अपना धर्म खो देवे, व्यभिचारी हो जावे, तो इसमें वेश्याका अपराध है, या उसका स्वयं?

इसी प्रकार हमारे धर्मशास्त्रोंकी आज्ञा है कि, विदेशी वस्तुएँ जिन्हें अनार्य लोग बनाते हैं, स्पर्श करते हैं, काममें नहीं लाई जावें, क्योंकि उनके स्पर्श मात्रसे पाप होता है। परन्तु हम लोगोंने अपने धर्मको ताखमें रख दिया और विलायती व्यापारियोंके चटकीले भडकीले मालपर लुभाकर अपनेको व्यभिचारी बना डाला। अब कहिये, इसमें हमारा दोष है, या विदेशी व्यापारियोंका?

हम मानते हैं कि, अंग्रेज व्यापारियोंने हमारे देशका व्यापार डुबानेके लिये बडे २ अत्याचार किये हैं, बड़े २ षड्यन्त्र रचे हैं, और जो कोई भी सभ्य जाति नहीं कर सकती, ऐसी निर्दयता हमारे व्यापारके साथ की है। परन्तु उन्होंने ऐसी जबर्दस्ती कभी नहीं कि, तुम लोग मोरिसकी शक्कर खाओ, डाक्टरी दवाइयोंके भक्त बन जाओ, अथवा विलायती कोट बूट पटलून हैट धारण करो, और सींग सीप हड्डीके अपवित्र बटन लगाओ। यह सब हमने अपनी प्रसन्नतासे किया है। इसलिये इस देशके व्यापारको नष्ट करनेके पापके भागी हम ही हैं। यदि हम अपने चित्तको संयमपूर्वक रखते और अपने धर्मको नहीं छोडते, तो आज प्रतिवर्ष देशके सात करोड रुपया मोरिस शक्करमें बरबाद न होते और न देशके दो सौसे ऊपर शक्करके कारखाने नष्ट होते। विलायती कपडोंमें प्रतिवर्ष ३१ करोड रुपये नष्ट न होते, और न देशके लाखों जुलाहे भूखसे तडप तडपकर मरते। करोडों रुपये निद्यातिनिंद्य दवाइयोंकी जिनके नाम सुननेमें धर्मात्माओंको भोजन भी नहीं पच सकते हैं, निछावर न होते और न देशी वैद्यक वर्तमान् शोचनीय अवस्थाको पहुचता। कहां तक गिनावें, इसी तरह प्रत्येक वस्तुमें समझ लीजिये, देशका धन पानीकी तरह न बहाया जाता, और न आज यह कहनेका समय आता कि, हाय हमारा देश डूब गया!

हमारे देशमें अभी ऐसे अनेक वृद्ध पुरुष हैं, जिन्हें विलायती चीजोंसे असीम घृणा है। यद्यपि वे आपके इस स्वदेशी आन्दोलनका कुछ तत्त्व नहीं समझते है, और न वे दैवेच्छाके सिवाय देशके पतनका दूसरा कारण जानते हैं, परन्तु उन्हें अपनी धर्मपर बडी भारी श्रद्धा है। उनका चित्त उनके वशमें है, इसलिये विलायती वस्त्राने अपनी चमक-दमकसे अब तक भी उन्हें अपना भक्त नहीं बनाया है। हमारी समझमें उक्त महाभाग्य हमारे देशके भूषण हैं। वे खादीका हाथका सिला हुआ कपडा पहनते हैं। बटनोंकी जगह तनिया लगाते हैं। विलायती दवाइयोंको छूते नहीं हैं। देशी शक्कर नहीं मिलती है, तो गुड खाते हैं। नलका पानी नहीं पाते हैं। दियासलाईका काम चकमक-पत्थरसे निकालते हैं। मिट्टीके (ग्यासलैटिक) तेलको घरमें नहीं आने देते हैं। लेम्पोंकी जगह पीतलका शमादान अथवा मिट्टीके दिये जलाते है। साबुन छूकर नहलाते है। चिनीमीट्टीके अथवा टीन आदिके वर्तन चौकेमे आ जावे, तो भोजन छोड देते हैं। पुस्तकादिकोंके लिखनेमें देशी कागज देशी स्याही काममें लाते हैं। साराश यह है कि, नखसे शिखतक वे देशी ही रहते हैं। अब समझ लीजिये, इनके द्वारा देशको कितना लाभ होता है। यदि प्रारमसे ऐसे ही दृढप्रतिज्ञ सब लोग बने रहते, अपने धर्मको नहीं छोडते, और निजत्वको नहीं भूलते, तो देशकी यह दुरवस्था क्यों होती?

हमारे बाबूगण उपर्युक्त महात्माओंको ओल्ड-फूल आदि सभ्य पदवियोंसे भूषित करते हैं, और उन्हें उनकी पुरानी रीति रशमोंपर चलते हुए देखकर जातिवर्णभेदके भक्त तथा छुआछूतकी मूर्ति समझकर देशोन्नतिके शूल समझते है। किन्तु आप नीचेसे ऊपरतक, बाहरसे घरतक, चाहपानीसे भोजनतक, और रहनसहनसे बोलचालतक विलायती बने रहनेपर भी अपनेको देशका उन्नत करनेवाला समझते हैं। इन बाबूलोगोंने अंग्रेजी शिक्षादीक्षासे यह वेष स्वयं ही धारण नहीं किया है, किन्तु इसका रोग सामान्य मूर्ख लोगोंमें भी बेहद फैला दिया है, जिससे भ्रष्टाचार पापाचार बढनेके सिवाय देशको बेहद हानि उठानी पडती है। सबेरा हुआ कि, बाबूसाहबोंको विलायती गुडसोप चाहिये, विलायती रबरका कघा चाहिये, विलायती आयना चाहिये, विलायती आईल तथा लवेंडर चाहिये। विलायती (चमडे लगी हुई) टोपी, कोट, बूट, पाटलून, जेबघडी, छडी, छाता, चश्मा, चाहिये। विलायती चुरुट सिगरेट, दियासलाई चाहिये। खानेके लिये विलायती बिसकुट, डबलरोटी, वगैरह चाहिये, प्याले रकाबियां सब विलायती चाहिये। कहां तक गिनाइये, इस तरह बाबूगण विलायतके भाडागार ही बने रहते हैं। अब सोचिये ऐसा क्यों हुआ? इसीसे कि, बाबू लोगोंने अपना धर्म छोड दिया, निजत्वको भुला दिया। यदि उन्हें अपने धर्मका कुछ ज्ञान होता, तो वे इस फिजूलखर्चीसे देशका बड़ा भारी अकल्याण नहीं करते।

प्यारे भाइयो! अब भी सचेत हो जाओ। अब भी सम्हल सकते हो। धर्मकी शरण ग्रहण करो। धर्महीसे तुम्हारा निस्तार होगा। धर्मके विना तुम कुछ भी कर सकनेमें समर्थ नहीं हो सकते। धर्मका बल अपार है। उससे कठिनसे कठिन कार्य सिद्ध हो सकते है। यह धर्महीका बल है, जो थोडे ही दिनोंमें विलायती शक्करकी ग्राम ग्राममें दुर्दशा हो रही है। अन्यथा, आप लोग स्वदेशी—स्वदेशी चिल्लाया करते, कोई नहीं सुनता। यदि आज सारा हिंदुस्थान पहलेकी नाईं धर्मक्षेत्रके नीचे आ जावे, तो विलायती व्यवसायी अपने२ बोरिया बधना बाधकर कल ही यहांसे कूचकर जावें, और देशका व्यापार ज्योंका त्यों हो जावे। फिर चारों ओर सुखका समुद्र लहराने लगे और दारिद्र, अकाल, महामारीका कहीं नाम भी न सुन पडे।

प्यारे आर्यमाताके सुपुत्रो! एकबार अपने निजत्वको स्मरण करो। तुम कौन हो, तुम्हारे पूर्वपुरुष कैसे थे, तुम्हारे कर्म क्या हैं, इसका विचार करो। तुम्हारा असली रूप यह नहीं है, जो वर्तमानमें तुमने धारणकर रक्खा है। यथार्थमें यह कलंक है, इससे शोभा नहीं है। इसी कलंकसे आज तुम दुःखी हो रहे हो। इस कलंकको तुम धो डालोगे, तो तुम्हारा निजत्व तुम्हें दिखलाई देने लगेगा। फिर तुम अनुमान कर सकोगे कि, तुम्हारा बल क्या है। निजत्वमें आते ही तुम्हारे सब संकट दूर हो जावेंगे और तुम्हारा देश सुख सम्पन्न हो जावेगा। एवमस्तु।

हड्डीसीप वगैरा अपवित्र चीजोंके बटन।

क्या हमारे भाई इस बातको नहीं जानते होंगे कि, हड्डी महान् अपवित्र वस्तु है? इससे बुरी चीज और क्या होगी। जो अघोरी हड्डियोंकी माला पहनकर किसी जैनी भाईके साम्हने आता है, तो ग्लानिके भयसे उसे पैसा धेला देकर टरका देते हैं अथवा कोई काग स्वानकी हड्डी डाल जावे, तो तत्काल उसको हटवाते हैं। अब देखिये कि, हड्डीसे तो इतनी ग्लानि करते हैं, फिर नहीं मालूम कि, हड्डी सीप सींगके बटन क्यों लगाते हैं? क्या

सीप सींग हड्डी नहीं है? जिसको कपडोंमें लगाकर हमारे बहुतसे शौकीन भाई श्रीमंदिरजीमें भी जाते हैं जाप करते हैं, शास्त्रजी पढते है, पुरी पकवान खाते हैं, घड़ोंची छूते हैं। एक दिनमे कई दफै बटनोंके लगाने तथा खोलनेका काम पडता है। अब सच कहिये कि, हरदफै क्या हाथ धोनेकी याद रहती है? कदापि नहीं। देखिये बटन कई प्रकारके होत है, लकडीके काचके कपडेके पीतलके टीनके इत्यादि। यदि यह अच्छे मालूम न हों, तो सोने तथा चादीक बनवा लो, परन्तु सींग सीपके भूलके भी मत लगाओ। उत्तम कुल पायकर अघोरीकी दशा मत बनाओ। क्योंकि धर्मके पाव नहीं है, चलायेसे ही चलेगा। अब सर्व भाइयोंसे प्रार्थना है कि, इस पापकर्मसे जरूर २ बचो। यहापर अनेक भाइयोंने अपवित्र बटनोंक पहरनेका त्याग करक प्रशंसाका कार्य किया है, क्योंकि इन महाशयोंने अपवित्र बटनोंके प्रचारको बंदकरनेका प्रथम ही बीडा उठाया है। भाइयो! जिस किसी उत्तम कार्यका प्रचार करना है, उसको प्रथम आप करके नमूना बनो और अपने कुटुम्बको तथा अपने मित्रोंको तथा अपनी जातिवालि इत्यादिकोंको उपदेश देकर खोटी क्रियाओंका त्याग कराओ। हर समय अपने परिणाम उत्तम क्रियाओंके प्रचार करनेकी ओर रखो। ऐसा करनेसे आपके शुभकर्मोका बध होगा, जिससे इस लोक परलोकमे महान् सुखकी प्राप्ति होगी। सुख और दु.ख अपने अच्छे बुरे बिचारोंका ही फल है। इस कारण आपको तन मन धनसे खोटी क्रिया अर्थात् हिंसादिक पापाचरणकी प्रवृत्ति दूर करनेकी कोशिश जरूर २ करनी चाहिये। कदाचित् यहा पर कोई ऐसी आशंका करन लग जावे कि, हड्डी-सीप वगैरके लगानेमें सिवाय अपवित्रताके और कोनसा पाप लगता है? सो ऐसा विचारना भ्रम है। देखिये। इसी बिचारका आज यह नतीजा हो रहा है कि, समस्त भारतवर्ष घोर दु खसमुद्रमें डूब रहा है। सिर्फ विदेशी चीनीहीको लीजिये कि, जिसके प्रचारसे आज भारतवर्षमे घी दुग्धादिक ी प्राप्ति गरीब तथा साधारण मनुष्योंको दुर्लभ हो गई है। इनके महंगा होनेका क्या कारण है? मेरी तुच्छ बुद्धिक अनुसार यही है कि, भारतवर्षमें जितने गाय भैंसादि जानवर हड्डी मास नाखून और बालोंके प्राप्त होनेके लिये कसाइयोंके हाथसे मारे जाते हैं, उतने पैदा नहीं होते। प्यारे पाठको! उन विचारे बेजबान आफतके मारे जानवरोंके गलेपर छुरी चलवानेवाले वेही भाई हैं, जो हड्डीके बटन तथा विदेशी चीनी विदेशी औषधियें तथा विदेशी कपडोंको नि शंक होकर सेवन करते हैं। इस प्रकार विदेशी चीनी अपवित्र बटन तथा औषधियोंके सेवनका त्याग न किया जायगा, तो विदेशियोंकी तरह थोडे ही दिनोंमें घी दूधकी प्राप्ति स्वप्नवत् हो जायगी और घोरानुघोर पापाचरणकी प्रवृत्ति जोर शोरपर हो जायगी। इससे ह भाइयो! आप तन मन धनसे विदेशी अपवित्र वस्तुओके प्रचारको बद कीजियेगा जिसमे कि, मेरा इस लेखका लिखना तथा आपका पढना सुनना कार्यकारी होवे। इत्यलम् विज्ञेषु किमधिक।

कानपुर २२-११-०६ — बुकमचन्द विद्यार्थी। जैन बालसभा-कानपुर

व्याकरणकी अवश्यकता।

प्रिय पाठकगण! भारतवर्षीय अनेक मतावलम्बियोंके शास्त्र प्राय संस्कृत वा प्राकृतवाणीमें हैं। अनेक भव्यविद्वानोंने साधारण मनुष्योंके सुखबोधार्थ निज २ मातृभाषाओंमें संस्कृत तथा प्राकृतमे अवतरण किया है। परन्तु भिन्न २ देशीय भाषातिलकोंके कारण सर्वदेशीय शास्त्रप्रेमियोंके स्वाध्यायमे असह्य पडते है, और अज्ञलेखकोंकी ससंभ्रमालिपिसे मूल वा तिलकोंमें अस्तव्यस्तता दिखाई देती है। सप्रति बहुत ग्रामोंमे धर्मपाठशालायें खुली हैं, परन्तु केवल मात्र भाषाग्रथित धर्मग्रंथ ही बालकोंको पढाये जाते हैं, यदि उन्हें प्रथम ही व्याकरणविद्या पढाई जाय, तो वे सहजहीमे धर्मपयोनिधिके पारगम होनेके लिये कटिबद्ध हो सकते है। बिना इसके जाने जो तर्कवीचिममिलितवारिधिके पार होनेकी चेष्टा करता है, वह घासकी नौका बनाकर महोदधिपार होनेके लिये उत्कंठित व्यवसायी नरके समान उपहासास्पद होता है। प्यार भव्यजनो! अगर आपलोग अपनी २ पाठशालाओंमें जैनपरीक्षालयके पाठन नियमानुसार पढाई करावे, तो धर्म सबन्धी सर्व विषयमें छात्रगण निष्णात् हो सकते है। यदि उक्त नियमके प्रतिकूल ही पढाना होय, तो व्याकरण अवश्यमेव पढाइये। व्याकरण समस्त प्रकृति प्रत्यय धातुरूपोंका ज्ञापक और सार्वलौकिक व्यवहारका प्रथम साधन ससारमें प्रसिद्ध है। इससे वर्णमूलक शाब्दज्ञान होता है, शब्दज्ञानके पश्चात् पदज्ञान और उस पदज्ञानसे वाक्यज्ञान वाक्यज्ञानसे प्रतिवाक्यार्थ बोध, और फिर सर्व वाङ्मयबोध होता है। फिर इस सर्व वाङ्मयज्ञानद्वारा मोक्षसिद्धि होती है। यह शब्दब्रह्मानुयायी महाभाष्यकारादिकोंका सिद्धान्त है। और एक भी सम्यक्प्रयुक्त सम्यग्ज्ञानशब्दके जाननेवालोंको स्वर्गप्राप्ति फल कहा है, यथा —**एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सम्यक्प्रयुक्तः स्वर्गलोके कामधुग् भवति**। इसलिये शब्दशास्त्रके बिना पढे सम्यग्प्रयोग नहीं हो सकता। अतएव व्याकरणको अवश्यमेव पढना चाहिये। जिन पुरुषोंका प्रवेश इस शास्त्रमे नहीं है, वे विद्वानोंकी सभामें उपहासास्पद होते हैं। कहा है;

शब्दशास्त्रमनधीत्य यः पुमान् वक्तुमिच्छति वच सभान्तरे।
बद्धुमिच्छति वने मदोत्कट हस्तिन कमलनालतन्तुना।

अर्थात् जो पुरुष व्याकरण शास्त्रको न पढकर सभामें वचन कहनेके लिये इच्छा करता है, वह मानो वनमें कमलनालके सूत्रसे मतवाले हाथीको बाधना चाहता है। अपरं च—

अङ्गीकृतं कोटिमितं च शास्त्रं नाङ्गीकृतं व्याकरणं च येन। न शोभते तस्य मुखारविन्दं सिन्दूरबिन्दुर्विधवाललाटे।

अर्थात् जिसमनुष्यने अन्य कोटिन शास्त्रोंको पढा परन्तु व्याकरण शास्त्रको नहि पढा, उस मनुष्यका मुखारविन्द नहीं सुशोभित होता है, विधवास्त्रीके ललाटमें जैसे सिंदूरका टीका। अतएव अशुद्ध भाषण अशुद्ध लेखनादि प्रमादको नष्ट करनेके लिये और शुद्ध शब्दप्रतिबोधके लिये व्याकरण पढना ही चाहिये। इत्यल परिपल्लवितेन।

काव्यरत्न पंडित वंशगोपालशर्मा
कटनी मुडवारा जैनपाठशालाध्यापक।

सूचना।

दि जैन यंगमेन्स एसोसियेशन आफ इंडियाके सभासदों कार्य्याध्यक्षों, मत्रियो नेताओं और समग्र जैनसमाजोंके सभासदों, जैनधर्मके विद्वान पंडितो, जैनपत्रोंके सम्पादकों, उपदेशकों तथा वक्ताओं, सेठ साहूकार आदि समग्र जैनी भाइयोंको सूचन दी जाती है कि,—

कलकत्तेके जैनी भाइयोंने सभा करके यह निश्चय किया है कि, इस वर्ष दिसबर मासके अंतिम सप्ताहमें बडे दिनकी छुट्टियोंमे कलकत्तेमें एसोसियेशनका वार्षिकोत्सव किया जाय। इस कार्यके लिये एक सबकमीटी कायम की गई है। कमेटीके सेक्रटरी बाबू छेदीलालजी अगरवालजीने एसोसियेशनको निमंत्रणपत्र भेजा है।

एसोसियेशन कलकत्तेके भाइयोंके उत्साहको देख हर्ष प्रगट करती है और उनका निमन्त्रण धन्यवाद सहित स्वीकार करती है। कलकत्तेमे अधिवेशनके होनेसे एसोसियेशनका और साथमे समग्रजैन जातिको लाभ पहुंचेगा। कलकत्तेमे जैनीभाइयोंकी सख्या बहुत है और उन सबके सुशिक्षित प्रयाससे कार्यमे सफलता होनेमें कुछ भी सन्देह नहीं है। जैनजातिकी वर्तमान दुर्दशा सब पर प्रगट है और इस दशाको सुधारनेके लिये एसोसियेशनने जो कुछ किया है, कर रही है और करनेका उद्देश रखती है, वह किसीसे छिपा नहीं है। अतएव आशा है कि, एसोसियेशनके इस महा अधिवेशनके समय गुजरात, दक्षिण, पजाब, मद्रास, मध्यप्रान, युक्तप्रान्त और राजपूताना इत्यादि सब प्रान्तोंके जैनी भाई बगालके भाइयोका साथ देगे।

इन्ही दिनोंमे कलकत्तेमें दि इन्डियन नेशनल कांग्रेसकाअधिवेशन होगा। शिल्प प्रदर्शनी होगी। कई सभा सुसाइटियोके अधिवेशन होगे। पत्र सपादकोंका सम्मिलन होगा, देश देशके विद्वान् तथा भारतके नेतागण एकत्रित होगे। अतएव जो भाई इस अवसर पर पधारेगे, उनको इन सब बातोंको अवलोकन कर लेनेका भी लाभ होगा।

कलकत्ता भारतवर्षकी राजधानी है। उसकी शोभाका अनुमान वे ही कर सकते है, जिन्होने उसे देखा है। परन्तु कांग्रेसके समय उसकी जो शोभा रहेगी, उसका अनुभव वे भी नहीं कर सकते। अत एव ऐसा अवसर कभी नहीं खोना चाहिये।

• परन्तु सबसे बढकर लाभ हमारे धार्मिक भाइयोंको यह होगा कि, वे इस बहाने तीर्थराज सम्मेद-शिखरजीके दर्शन भी कर सकेंगे। मनुष्य-जन्म पाकर जिसने उक्त तीर्थराजके दर्शन न किये, उसने मानो कुछ न किया। राजा श्रेणिक कई बार प्रयत्न करके भी दर्शन न कर सके। अवसर बार बार नहीं आते, अत एव भाइयोंको चाहिये कि, इस अवसरको वे न जाने दे।

पंडित महाशयोंसे हमारी खास प्रार्थना है कि, वे इस अवसरपर पधारकर अपने उपदेशद्वारा श्रोताओंका कल्याण करे। उनके आगमनसे सभाको बहुत कुछ सफलता मिलनेकी आशा है वे इस प्रार्थनाकी ओर अवश्य ध्यान देगे।

जैन उपदेशकों और वक्ताओंको भी इस अवसरपर अवश्य पधारना चाहिये। अङ्गरेजीके विद्वान् भाइयोंमे प्रार्थना करनेकी आवश्यकता नहीं जान पडती है। क्योंकि उनके ऊपर जैनसमाज की जो जबाबदेही है, उससे वे खूब परिचित है, इसमें सन्देह नहीं है। जैनपत्रोंके सम्पादकोंसे प्रार्थना है कि, वे अपने २ पत्रोमे अपनी राय २ प्रगट करें कि, इस वर्ष महाधिवेशनमें कोन २ कार्य होने चाहिये, और कौन २ प्रस्ताव पेश होने चाहिये और क्या २ कार्य होना चाहिये। अधिवेशनमें भी उन्हें अवश्य शरीक होना चाहिये। उनके सम्मत्ति का एसोसियेशन आदर करेगा।

हमारी समाजके धनिक भाइयोसे तो प्रार्थना की ही जा चुकी है, कि वे इस अवसरसे न चूकें।

जनरल सेक्रेटरी आफिस, प्रयाग, त २२-११-०६ — समाजका सेवक— चेतनदास बी ए जनरल सेक्रेटरी

कर्मोदय बलवान् है।

अघटित घटयति सुघटितघटितानि दुर्घटी कुरुते।
विधिरेव तानिघटयाति यानिपुमान्नैव चिन्तयति॥ १॥
यस्माच्च येन च यथा च यदा च यच्च
यावच्च यत्र च शुभाशुभमात्मकर्म।
तस्माच्च तेन च तथा च तदाच तच्च
तावच्च तत्र च विधातृवशादुपैति॥ २॥

हा! आज जैन स्त्रीसमाजका आभूषण श्रीमति शृंगारबाई इस संसारमें दृष्टिगोचर नही होती है। किधर गई? कोई तलाश तो करो। अब उस शृंगारविना जैन स्त्री समाजकी शोभा कहा? क्या कोई धनाढ्य अपनी सपदामेंसे विपुल द्रव्य खर्च कर ऐसा शृंगार पीछा तयार करा सकता है? जगह जगह स्त्री पाठशाला खोलनेमे शायद हो। हे जैन धनाढ्यो! यदि आपको जीवकी दया है, तो थोडा थोडा द्रव्य देकर उस शृंगारकी एवज जिसको कालचोर चुरा ले गया है, दूसरा शृंगार घड़ा दीजिये। नहीं तो जैनस्त्रीसमाजके अगकी शोभा अब नहीं है।

झालरापाटणकी जैन स्त्री समाजकी तरफसे

केसरबाई।

पुस्तक समालोचन।

जैनबालबोधक द्वितीयभाग—पं. पन्नालाल बाकलीवाल रचित, जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय—गिरगाव बम्बई द्वारा निर्णयसागर प्रेसमें मुद्रित। मूल्य आठ आना। इस पुस्तकका पहला भाग जैन पाठशालाओंमें बहुत दिनसे पढाया जाता है। यह दूसरा भाग भी इसी लिये तयार हुआ है। परीक्षालयके पठनक्रममें तो यह बहुत दिनसे भरती है, परन्तु अभी तक छपा नहीं था। इस की जगह हिन्दीकी दूसरी पुस्तक जिसके रचयिता उक्त महाशय ही है, पढाई जाती थी। पन्नालाल जीकी बनाई हुई सब ही पुस्तके अच्छी होती हैं, जिसमें बालकोपयोगी पुस्तके बनानेमें तो आप सिद्धहस्त ही है। तब इस पुस्तकका अच्छा होना कोई नवीन बात नहीं है। इस पुस्तकमें श्रावकाचार नीतिकी कहानिया, पदार्थोंका स्वरूप, प्राचीन इतिहास वा चारित्र, स्वास्थ्यरक्षा, और नीतिकी कविता इन विषयोंके पाठ क्रमसे लिखे गये है। वर्धमान भगवान् और दीपमालिका, श्रीसमन्तभद्राचार्य्य, श्रीभट्टाकलकदेव, होली, राखीपूर्णिमा, राजाश्रेणिक, इन्द्रभूति गणधर, आदि ऐतिहासिक पाठ विद्यार्थियोंके ही नहीं दूसरे इतिहास प्रेमियोंके भी बाचने योग्य लिखे गये है। जैनियोंके प्रत्येक बालकको यह पुस्तक पढना चाहिये। इसके पढनेसे जैनधर्म सम्बन्धी ज्ञानके अतिरिक्त व्यापारादि व्यवहार विषयोंका भी परिचय होगा। शक्कर, व्यापारे वसतेलक्ष्मी आदि पाठ जो बालक पढेंगे, वे अवश्यही स्वदेशसेवक और व्यापारप्रिय होंगे। बालकपनमें ऐसी शिक्षाओकी अतिशय आवश्यकता है।

इस पुस्तकमे एक तो यह दोष है कि, कठिन हो गई है, पहला भाग पढनेके पश्चात, विद्यार्थियोंको यह पुस्तक पढनेमें कठिनाई होगी। सम्यग्दर्शनादिके पाठ समझनेकी योग्यता जैनबालबोधक प्रथमभाग पढे हुए विद्यार्थिमे नहीं हो सकती। दूसरे भाषामें कहीं कहीं मारवाडीपन आगया है। कविताके पाठोंमें नवीन कविता न देकर प्राचीन कवियोंकी कविता उद्धत की जाती, तो अच्छा होता, क्योंकि नवीन कवितामे शब्दलालित्य और प्रसादगुण नहीं आया है। आठ फार्मकी पुस्तकका मूल्य आठ आना भी कुछ अधिक है। पाठशालाओंकी पुस्तकोंका जहां तक हों, कम मूल्य रखना चाहिये।

अहिंसाभास्कर:—नाहन निवासी कूर्माचल पडित नाथूराम शर्मा रचित और प्रकाशित। मूल्य मालूम नहीं। यह पुस्तक पं० भीमसेन शर्मा, इटवा के आक्षेपोंका निराकरण करनेके लिये लिखी गई है भीमसेनशर्माने अपने ब्राह्मणसर्वस्व पत्रके अनेक

लेखोंमें यह सिद्ध करनेका प्रयत्न किया था कि, "संसारियोंसे मांस मदिरादिक छोडे नहीं जा सकते हैं, शास्त्रोंमें उनकी विधि मिलती है" इसमें इसी अविचारितरम्यपक्षका खंडन महाभारतादि हिन्दूग्रन्थोंके प्रमाण देकर किया गया है, और मासमद्यप्रेमियोंकी खूब खबर ली गई है। दु खकी बात है कि, स्वार्थलोलुप पुरुष अब भी मांसादि भक्षण करनेकी शिक्षा देना नहीं छोड़ते हैं। ससार योंही रसातलको जा रहा है। ये महात्मा और जल्दी ढकेलनेके प्रयत्नमें हैं। अस्तु, पुस्तक पढने योग्य है। पहले संस्कृत और नीचे भाषा दी गई है। इससे संस्कृतज्ञ और भाषाविद् दोनों ही लाभ उठा सकते है।

बलिदानमीमांसा उत्तरार्ध—यह ग्रन्थ भी उक्त पडितजीने ही रचा है। इसमें यह सिद्ध किया गया है कि, वाम, कापाल, तत्र आदि ग्रन्थ वेद-विरुद्ध और त्याज्य है, अतएव उनमें कही हुई भैसेके बलिकी तथा मद्यपूजाकी विधि निन्द्य है। वेदसे सिद्ध है, कि, गाय, भैस आदि पशुओंको मत मारो। देवदेवियोंका स्वभाव तमोगुणी नहीं होता है जो वे ऐसे पदार्थोंकी इच्छा करें। इत्यादि पडितजी ऐसी अहिंसाधर्मप्रतिपादक पुस्तकोंको छपाकर बडा पुण्यकर रहे हैं, आजकल ऐसी पुस्तकोंकी बहुत आवश्यकता है। जो जिव्हालोलुपी लकीरके फकीर धर्मकी दुहाई देकर बलिदान सरीखे महत्पापोंको शास्त्रोंसे सिद्ध बतलाते हैं, उनकी असद्युक्तियोंका निराकरण अवश्य ही होना चाहिये।

पत्रोंका सार और समाचार।

सिद्धवरकूट (बडवाह)—दो महीनेसे बडवाहमें प्लेगप्रकोप हो रहा है। सब लोग यहां आकर ठहरे हैं। अब शान्ति हो रही है। यहाके दो सज्जन उक्त सिद्धक्षेत्रपर एक कुआ और एक धर्मशाला बनवा रहे हैं। बडे पुण्यका कार्य कर रहे हैं। २१-११-०६. भीखासा जैनी।

आलन्द (शोलापुर)—कातिक सुदी १४ को एक बालसभाकी स्थापना हुई है। यह सभा प्रत्येक पक्षकी १४ को हुआ करती है। सभामें जैनपाठशालाके विद्यार्थियोंकी ओरसे उत्तम २ विषयोंपर व्याख्यान होते हैं। इन व्याख्यानोंसे विद्यार्थियोंकी व्याख्यानशक्ति, धर्मोत्साह, और विद्या वृद्धिंगत होती है। अबकी सभामें शोलापुरके शेठ सखाराम नेमिचंदजी, शेठ माणिकचंदजी मोतीचन्दजी आदि ५०-६० महाशय हाजिर थे। एक विद्यार्थीका सम्यग्दर्शनपर व्याख्यान हो चुकनेके पश्चात् शेठ सखारामजीने विद्यार्थियोंको उपदेश दिया और व्याख्याता विद्यार्थीको १) रुपया पारितोषिक दिया। इसी प्रकार शेठ माणिकचन्द मोतीचन्दने बालसभाको एक रुपया भेट किया। आगामी सभामें विद्यातत्वपर व्याख्यान होगा। १९-११-०६ हीराचन्द सखाराम कोठारी।

देवरी (सागर)—यहासे दो तीन कोसपर एक जैतपुर नामका ग्राम है। वहा एक सुंदर शिखरबन्द मंदिर है। एक दिन सबेरे मालीने जब उक्त मंदिरका ताला खोला तो देखा कि बडी प्रतिमाजी जिनका कि, मुख पूर्वकी ओर था, उत्तराभिमुख हो गई हैं। प्रतिमा बहुत बडी है, साधारण आदमी उन्हे स्थानच्युत नहीं कर सकता था। शामको ताला लगाते समय प्रतिमाजी यथास्थित थी। इस विचित्रघटनासे लोगोंको बडा आश्चर्य हो रहा है। २०-११-०६. सुखलाल चौधरी।

ईडी (शोलापुर)—सुदिन है कि, यहांके श्रावकोंने जैनधर्मोन्नतिके लिये शुभमुहूर्तमें एक जैन पाठशालाकी स्थापना की है। हालही ता. २६—१०—०६ को यहांके पंचमहाशयोंने विद्यार्थियोंके अभ्यासक्रमका निरीक्षण किया। दो महीनेमें जो कुछ पढाई हुई है, वह उत्तम है। विद्यार्थियोंकी सख्या १५-१६ है। आगे संख्या बढ़नेकी आशा है। यदि हमारे सद्धर्मी पंचसज्जनोंका उत्साह बना रहा और वे इसकी तनमनधनसे सेवा करते रहे, तो यह पाठशालासे अनेक विद्वान्रत्न उत्पन्न करनेमें समर्थ हो जावेगी। पाठशालाके अध्यापक कनडी, मराठी, हिन्दी और संस्कृत भाषामें निष्णात है। सिद्धान्तकौमुदी काव्य नाटकअलकार आदि उक्त भाषाओंमें पढा सकते हैं। यहाकी आब हवा बहुत अच्छी है, इससे बाहरके विद्यार्थियोंके रहनेका भी यहा सुभीता हो सकता है। परन्तु धनकी न्यूनतासे विद्यार्थियोंको सहायता नहीं दी जा सकती है। यदि धर्मात्मा धनिकगणोंकी इस पाठशालाकी ओर सुदृष्टि हो, तो यह पाठशाला सब कुछ कर सकती है। १८-११-०६। गुलाबचन्द लालचन्द।

खेद है कि, कटनी मुड़वारिके मुंशी नाथूरामजी लमेचूका देहान्त होगया।

नवलगुन्दके सर्देशाई श्रीमान् अप्पासाहब सरसंगीन लिंगायतएज्युकेशन सुसायटीको अपनी दश लाख रुपयेकी सारी जायदाद दे डाली है। लिंगायत दक्षिणकी एक जाति है। उक्त सुसाइटी अपनी जातिमे शिक्षाप्रचारके लिये बहुत दिनसे स्थापित है। लिंगायत लोग पहल जैनी थे, अब उनका एक धर्म ही पृथक् हो गया है। एक अल्पसंख्यक जातिके एक पुरुषने विद्याप्रचारके लिये दश लाख रुपये दे डाले, परन्तु हमारी इतनी बड़ी भारी जातिमें वर्षों चिल्लाते हो गये महाविद्यालयके लिये एकलाख रुपये भी एकत्र नहीं हुए। खेद है।

आसामकी सरकारने प्रगट किया है कि, "इस वर्ष विलायती नमककी सैकडे २० टके और विलायती कपडेकी आमदनी सैकडे चौदह टके घट गई है, और इसका कारण स्वदेशी आन्दोलन है।" आन्दोलनका फल बहुत अच्छा हो रहा है, हमको अपनी प्रतिज्ञामें दृढ़ रहना चाहिये।

जापानमे समाचारपत्र सन् १८६२ ई० से निकलना शुरू हुए। सन् १८७२ में उनकी सख्या २६६ हो गई। १८८६ तक २००० हुई और वही गत २० वर्षोंमें बढकर ४००० पर पहुच गई है। एक टोकिओ शहरसे इस समय १२० समाचार पत्र निकलते हैं। वहाके टाइम्स नामके एक प्रसिद्ध पत्रके चार लाख ग्राहक हैं!!

मद्रासमें ९० लाख रुपयेकी पूजीसे एक नवीन देशीबैंक स्थापित होनेवाला है। इसका प्रत्येक शेअर ९०० रुपयाका रक्खा गया है। और मरोंचमे एक कपडेका मिल खुलेगा, इसकी पूजी सात लाख रुपये निश्चित हुई है।

कलकत्तेकी एक बडी भारी यहूदी दूकानका मालिक मरते समय तीनकरोड पचहत्तर लाख रुपया एक कालेज बनवानेके लिये दे गया है। और बगालके गवर्नर, चीफजस्टिस तथा एडवोकेट जनरलको कालेजका विजिटिंग गवर्नर नियत कर गया हैं। उदारता इसको कहते हैं।

परलोक वासी मि० हेरिंग पचहत्तर लाख रुपये एक हास्पिटलके लिये और पन्द्रह लाख रुपये मुकती फौजवालोंको दे गये हैं। जिनके दिल बड़े हुए रहते हैं, और जो द्रव्यको अपने साथ जानेवाला नहीं समझते हैं, वे ऐसा ही दान करते हैं।

सूचना—जैनमित्रमें छपनेके लिये, सिर्फ ताजे समाचार, और संवाद नीचे लिखे पतेसे आना चाहिये । प्रत्येक पक्षकी त्रयोदशीतक आयेहुए समाचार ले लिये जावेंगे ।

नाथूराम प्रेमी—
चन्दाबाडी पो० गिरगांव-बम्बई

"कर्नाटक" प्रेस, बम्बई

Registered No. B 288.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमे व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मैनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जवाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
मोरेना (ग्वालियर)।

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

वर्ष ८ वां] पौष शुक्ला २ संवत् १९६३ विक्रमाब्द। दिसंबर ता० १७ सन् १९०६ ईस्वी। [अंक ५ वां।

जैनमित्रके फाइल।

सप्तम वर्षके थोडेसे फाइल हमारे पास मौजूद है। हम उन्हें जल्दी बेचना चाहते हैं, इस लिये इस समय बहुत थोडी कीमतमें ग्राहकोंको मिल जावेंगे। देर करनेसे दूनी कीमतमें भी नहीं मिल सकेंगे। जैनमित्रके सप्तमवर्षमे कैसे २ बढिया लेख छपे है, सो किसीसे भी छुपे नहीं है। हिन्दीके किसी भी जैनपत्रमे आज तक ऐसे बढिया संग्रह करने लायक लेख नहीं छपे है। समाचार और थोडेसे समाज सम्बन्धी लेखोंके सिवाय बाकी सब ही लेख हमेशा पढने योग्य और कामके हैं। इसके सिवाय जैनसिद्धान्तके १० फार्म और सुशीला उपन्यासका पूर्वार्द्ध (१० फार्म) भी उसके साथ मिलता है, जिन दोनोंकी कीमत प्रथक् छपने पर कमसे कम १।) रु० होगी। ऐसे उत्तम फाइलको दिसम्बर महीनेके अखीर तक हम सिर्फ १॥) में ही देना चाहते हैं, जिल्द सहित मंगानेवालेको १॥।) लेंगेगे और भी सुभीता यह है कि, डाकखर्च हम अपना लगा देंगे।

सुशीला उपन्यास
प्रथमभाग।

रायलके बडे २ अस्सी पेजोंका बहुत बढ़िया उपन्यास जिससे कि मनोविनोदके सिवाय धार्मिक शिक्षायें भी मिलती है, तयार है। एक बार पढना शुरू करनेसे फिर छोडनेको जी नहीं चाहता है, मूल्य सर्व साधारणसे दश आना जैनमित्रके ग्राहकोंसे आठ आना। डाक खर्च माफ।

ऐसा मौका फिर नहीं मिलेगा!

विज्ञापन छपानेवालोंको और बँटानेवालोंको।

अबकी वार हमने जैनियोंके अतिरिक्त सर्व साधारण लोगोंके भी विज्ञापन छापने और बांटनेका बन्दोबस्त किया है। और बहुत थोडा चार्ज लेकर किया है। सिर्फ इस साइजके दो पेजके विज्ञापनोंके लिये और भी हमारे पास जगह है, इस लिये विज्ञापन छपानेवालोंको शीघ्रता करनी चाहिये। प्राय पूरे वर्ष भरके लिये हम ऐसे विज्ञापनोंका ठेका करेंगे, इसलिये जगह भर जानेपर फिर गुँजाइश न रहेगी। जैनियोंमें हमारे पत्रका प्रचार बहुलतासे है, जिससे विज्ञापनवालोंको फायदा भी खूब होगा। विज्ञापन बंटानेवालोंको "जैनमित्र अंक अमुकका क्रोडपत्र" छपानेके सिवाय कमसे कम एक कालिम समाचार भी अपने विज्ञापनोंमें छपाने होंगे। अश्लील विज्ञापन न तो इस पत्रमें छपेंगे और न बँटेंगे। विज्ञापन छपाने बँटानेकी दर पत्रद्वारा तय करनी चाहिये

ताजे विज्ञापन।

१ जैनमित्रके बहुतसे ग्राहक जैनमित्रके पुराने अंक विनामूल्य मँगाया करते हैं। परन्तु उन्हें जानना चाहिये कि, वे विनामूल्य नहीं मिल सकते। यदि जरूरत हुआ करै, तो =॥ के टिकट भेजकर मंगाया करें, अन्यथा उनके पत्रका उत्तर नहीं दिया जावेगा।

२ उन ग्राहकोंको अंक विनामूल्य मिल सकते है, जो आगेका अंक पहुंचनेके पहले पिछला अंक न पहुंचनेकी शिकायत करेंगे। अकसर लोग अंक खो देते है, और पीछे हमसे मंगाकर फाइलमें रखना चाहते है।

३ ग्राहकोंसे अग्रिम मूल्य भेजनेके लिये प्रार्थना बहुत दिनसे की जा रही है। परन्तु अब विलम्ब नहीं है। ग्राहकोंको चाहिये कि, शीघ्र भेजनेकी कृपा करें अथवा हमको वी पी. भेजनेकी आज्ञा दे। वी. पी. भेजनेका क्रम बहुत जल्दी प्रारंभ होनेवाला है।

पत्रव्यवहार इस पतेसे कीजिये
मैनेजर—जैनमित्र
पो मोरेना (ग्वालियर)

विनामूल्य जैनमित्र।

एक महिने तक फिर भी मिलेगा।

जो भाइ जैनमित्रका पेशगीमूल्य दो रुपया पौष सुदी १५ तक भेज देवेंगे और उसके साथ सवा रुपया अधिक भेजेंगे, उन्हे निम्नलिखित पांच ग्रन्थ उपहारमें दिये जावेंगे.

१ स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा।

वैराग्य और जैनधर्मका रहस्य बतलानेवाला अपूर्वग्रन्थ मूल, संस्कृतच्छाया और हिन्दीभाषाटीका सहित है। इसमें वैराग्यके साथ साथ जैनधर्मका प्राय सम्पूर्ण रहस्य भरा हुआ है। हम समझते है, जिसने इस ग्रन्थका स्वाध्याय नहीं किया, उसे वैराग्यका सच्चा आस्वाद ही नहीं मिला। यह रायल अठपेजी २०८ पेजका ग्रन्थ है। निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई सफाई देखने ही योग्य है। यह ग्रन्थ १॥) से कमसे किसीको नहीं मिल सकता।

२ परीक्षामुख।

यह जैनियोंका सर्वमान्य संस्कृत न्यायका ग्रन्थ है इसकी प्रशंसा करना व्यर्थ है। यद्यपि यह केवल संस्कृतमें है, परन्तु प्रत्येक मंदिर और भंडारमे संग्रह करने योग्य है। यह डेमी साइजके १२८ पेजका ग्रन्थ है. मूल्य ॥) है।

३ पंचाध्यायी।

यह ग्रन्थ अभीतक सर्वथा लुप्त था। हमने बडे परिश्रमसे द्रव्य लगाकर इसका जीर्णोद्धार कराया है। इसके पढनेवाले विद्वान कहते है, कि जिसने इस ग्रन्थको नहीं पढा उसने जैनधर्मका असली मर्म नहीं पाया। यह संस्कृत ग्रन्थ डेमी साइजके २०० पेजका है। मूल्य ॥) है।

४ इन्ट्रोडक्शन टु जैनिस्म

Introduction to Jainism—इस अंग्रेजी ग्रन्थको जिनविजयके सम्पादक मि० लठ्ठे, एम ए ने बडी योग्यतासे लिखा है। अन्यधर्मी विद्वानोंके दिखाने योग्य डेमी १०६ पेजका ग्रन्थ है, मूल्य ॥) है।

५ जैनधर्मपर व्याख्यान

मि० आपटे, बी ए का लिखा हुआ हिन्दी और मराठी दोनो भाषाओंमे मिल सकता है। इसका मूल्य ।) है।

इस प्रकार सिर्फ १।) मे ३।) के ग्रन्थोंका ग्राहकोंको लाभ हो सकता है। अर्थात् सवा तीन रुपयेमे सवातीनके ग्रन्थ मिल जावेंगे और जैनमित्र वर्ष भरतक मुफ्तमे पढनेको मिलेगा। अर्थात् **आमके आम और गुठलीके दाम** मिल जावेंगे। इतने पर भी यदि जैनमित्रके ग्राहक न बढे, तो हम समझेंगे कि जैनियोंमे ग्रन्थोंके पढनेका शौक ही नहीं है। ऐसे सुन्दर और अमूल्य ग्रन्थोंका उपहार जैनियोंमें यह सबसे पहला है।

यह उपहार केवल उन्हीं ग्राहकोंको मिलेगा, जो नवीन वर्ष अर्थात् अष्टम वर्षका मूल्य पेशगी भजेंगे और पिछला बकाया चुका देवेंगे। नवीन ग्राहकोंको पेशगी मूल्य ही भेजना पडेगा।

रुपया आनेपर उपहारकी पुस्तके मेनेजर जैनमित्र द्वारा भेज दी जावेगी। परन्तु इतना ख्याल और रखना चाहिये कि ३।) रु० के साथ ग्रन्थोंके डाक खर्चके लिये छह आना अधिक भेजना होंगे।

जैनजातिका हितैषी—

नाथारंगजी गांधी, शोलापूर

जैनमित्र.

पौषशुक्ला २ श्रीवीर नि० संवत् २४३३
ता० १७ दिसंबर १९०६

सम्पादकीय टिप्पणियां।

दि० जैन महासभाका अधिवेशन।

कलकत्तेमें महासभाका भी अधिवेशन होना निश्चित हो गया। जैन यंगमेन्सएस्सोसियेशनके साथ ता० २४-२५-२६ दिसम्बरको महासभाका भी अधिवेशन होगा। अच्छा ही हुआ, "गंगाकी गंगा और शिवरामपुरकी हाट।" एसोसियेशनके साथ २ यह भी अपने एक वार्षिक ऋणसे उऋण हो जावेगी। कुछ दिन पहले महासभाका अधिवेशन बम्बईमें करानेका उत्साह जब बम्बईके भाइयोंमें हुआ था, तब महासभाके एक सभासदने बाधा उपस्थित की थी कि, अब सिर्फ तीन महिने शेष रह गये है। इतनी थोडी अवधिमें अधिवेशनका पूरा २ आन्दोलन न हो सकेगा, इसलिये मुझे आशा नहीं है कि, महासभाके कार्यकर्त्ता आपके अभिमंत्रणको स्वीकार करें। परन्तु अब देखते है, तो महासभा पूरे १९ दिनका अवकाश न रहनेपर भी कलकत्तेमें अपना अधिवेशन करनेको राजी हो गई है। अस्तु, हम चाहते है कि, वह इतने थोडे अवकाशमें भी अच्छी सफलता प्राप्त करके जैनसमाजका कल्याण करनेको समर्थ होवे। भाइयोंको चाहिये, कि इस अवसरपर कलकत्ते पधारकर अधिवेशनकी शोभा बढावें।

दिगम्बर जैनसभा केकडी (अजमेर)

केकडीमें बहुत दिनसे एक औषधालय, एक पाठशाला और एक अनाथालय चल रहा है। रायबहादुर शेठ चम्पालालजी नयानगर, शेठ नेमीचन्दजी सोनी अजमेर, और शेठ ताराचन्दजी नसीराबाद की सहायतासे उक्त तीनों कार्य बहुत उत्तम पद्धतिसे चल रहे हैं। हजारों रोगियोंको औषधालयसे लाभ होता है, अनेक विद्यार्थी पाठशालासे विद्या प्राप्त करते है और सैकडों अनाथ अनाथालयसे सहायता पाकर अपनी जीवनरक्षा करते हैं। उक्त तीनों संस्थाओंकी प्रबन्धकर्त्री जैनसभाने हालमें एक विज्ञापन हमारे पास भेजा है, उससे प्रगट होता है कि, सभा एक ऐसी इमारत बनवाना चाहती है, जिसमें ये तीनों संस्थाएं सर्वदा स्थापित रहें। इस कार्यके लिये वह (१०००) रुपये चन्देसे वसूल करनेका प्रयत्न कर रही है। चन्देके लिये सौ, पचास, चालीस, तीस, बीस और दश २ रुपयेके छह हजार रुपयेके टिकट उसने बनाये हैं। इन टिकटोंकी बिक्रीसे रुपया एकत्र हो जावेगा। धर्मात्मा सज्जनोंको अपनी २ शक्तिके अनुसार उक्त टिकट खरीदना चाहिये।

प्रत्येक मन्दिरमें पुस्तकालय होना चाहिये।

बनारसकी हरिश्चन्द्रएसोसियेशनमें व्याख्यान देते समय मि० टहलरामने कहा था कि, "मन्दिर बनवानेका उद्देश्य केवल यही नहीं है कि, उनमें धार्मिक अनुष्ठान ही किये जावें। नहीं, उनमें शिक्षाप्रसारका मुख्य अभिप्राय है। खेद है कि, लोग इस अभिप्रायको भूल गये हैं, और मन्दिरोंके द्वारा अब शिक्षाका प्रचार यथोचित रीतिसे नहीं होता है। कोई भी मन्दिर ऐसी रीडिंगरूम अथवा लायब्रेरियोंके विना नहीं रहना चाहिये, जिनमें सब प्रकारके ग्रन्थ संग्रहीत हों और सर्वत्रके समाचार पत्र आते हों, इत्यादि" प्राचीनकालसे हमारे जैनमन्दिरोंमें सरस्वतीभंडार रखनेकी प्रथा चली आती है, और अब भी अधिकांश जैनमंदिरोंमे सरस्वती भंडार है। परन्तु अब अविद्याके कारण लोग सरस्वतीभंडारोंका यथार्थ उद्देश्य भूल गये है, इसलिये जितना जरूरी मन्दिर बनवाना समझा जाता है, अब उतना जरूरी सरस्वतीभंडार स्थापित करना नहीं समझा जाता। गत सौ वर्षमें जितने मन्दिर बनाये गये हैं, उनमेंसे बहुत थोडे मन्दिरोंमें पुस्तकालय देखे जाते हैं। परन्तु इससे पहलेके प्रत्येक मंदिरमें सरस्वतीभंडार पाये जाते हैं। हमारे यहां देव, गुरु और शास्त्र तीनोंकी सेवाका समान महत्त्व कहा है, वल्कि शास्त्रका महत्त्व सबसे अधिक है। क्योंकि विना शास्त्रके देव और गुरुकी पहिचान ही नहीं हो सकती है तथा सम्यग्ज्ञानके मुख्य कारणभूत शास्त्र ही हैं। इसलिये हमको चाहिये कि, पूर्वरीत्यानुसार प्रत्येक मन्दिरमें पुस्तकालय स्थापित करनेकी प्रथाको न भूल जावें। और मन्दिरसे भी अधिक आवश्यक कार्य इसको समझें। यदि मन्दिरमें चार हजार रुपये व्यय करें, तो दो हजार सरस्वतीभंडारके लिये भी करें। इन पुस्तकालयोंमें यदि सबप्रकारकी नवीन पुस्तकोंके संग्रहकी और सब प्रकारके अखबार मगानेकी भी प्रथा चलाई जावे, तो विशेष लाभ हो सकता है।

उपदेशकका दौरा

मालवाप्रान्तिकसभाके उपदेशक पं० कस्तूरचन्दजीने शेठ माणिकचन्दजी जौहरीकी सहानुभूति तथा सहायतासे बागड प्रान्तमें दौरा करना शुरू किया है। आपने अपने दौरेकी कार्तिक मासकी रिपोर्ट भेजी है, परन्तु खेद है कि, विलम्बसे आनेके कारण हम उसे छाप नहीं सके। आपने थानला, कुशलगढ, अंदेसर, कालिंजरा, बागीदरा, नोगामा, उदयगढ, डडूका, आजडा और अरथौना इन दश ग्रामोंमें दौरा किया। प्रत्येक स्थानमें उपदेश दिया। उसका असर हुआ। कई स्थानोंमें पाठशालाका प्रबन्ध हुआ तथा अनेक स्थानोंमें पुजारी निर्माल्यद्रव्य लेते थे, वह बन्द हुवा। बागडप्रान्तमें जैनियोंकी वस्ती अधिक है, परन्तु मूर्खता भी कम नहीं है। उपदेशक महाशयकी रिपोर्टसे यह जानकर हमको बडा दुःख हुआ कि, उक्त प्रान्तमें कन्याविक्रयका बडा जोर शोर है। कभी २ एक धर्मात्मा पिता अपनी कन्याके बदलेमें दो दो हजार रुपया पैदा करता है। और यों तो सातसौ रुपयेका नियम पचायतके द्वारा ही नियत है। जो धर्मात्मा ऐसे अज्ञानांधकारमें डूबे हुए प्रान्तोंमें उपदेशकोंका दौरा कराके उन्हें ऐसे २ निंद्य कर्मोंसे छुडावेंगे, वे बडे ही पुण्यका कार्य करेंगे। वर्तमानमें जातिधर्मसेवा करनेके लिये उपदेशक सरीखा सरल मार्ग नहीं है।

प्रश्नोत्तररत्नमाला।

(२)

प्रश्न—कोऽन्धः?

अन्धा कौन है?

उत्तर—योऽकार्यरतः

जो निन्द्यकाम करनेमें तत्पर है।

प्रश्न—को बधिरो?

बहिरा कौन है?

उत्तर—यः शृणोति न हितानि।

जो अपने हितरूप वचन नहीं सुनता है।

प्रश्न—को मूको ?
मूक अर्थात् गूंगा कौन है ?
उत्तर—यः काले प्रियाणि
वक्तुं न जानाति ॥ १६ ॥
समयपर जो मीठेवचन कहना नहीं जानता है।
प्रश्न—किं मरणं ?
मरण क्या है ?
उत्तर—मूर्खत्वं
मूर्खता।
प्रश्न—किं चानर्घ्यं ?
अनर्घ्य अर्थात् अमूल्य क्या है ?
उत्तर—यदवसरे दत्तम्।
जो समयपर दिया जाता है।
प्रश्न—आमरणात्किं शल्यं ?
मरणपर्यंत शल्य अर्थात् सदा बाणके समान् हृदयमें चुभनेवाला क्या है ?
उत्तर—प्रच्छन्नं यत्कृतमकार्यम् ॥ १७ ॥
जो कुकार्य गुप्तरीतमे किया गया है।
प्रश्न—कुत्र विधेयो यत्नो ?
किसी विषयमें यत्न करना चाहिये ?
उत्तर—विद्याभ्यासे सदौषधे दाने।
विद्याभ्यासमें, उत्तम ओषधिमे, और दानमें।
प्रश्न—अवधीरणा क कार्या ?
अवहेलना किन २ पदार्थोंमें करना चाहिये ?
उत्तर—खलपरयोषित्परधनेषु ॥ १८ ॥
दुष्ट पुरुष, परस्त्री और परधनमें।
प्रश्न—काहर्निशमनुचिन्त्या ?
रात दिन क्या चिन्तवन करना चाहिये ?
उत्तर—संसारसारता न च प्रमदा।
ससारकी सारता न कि स्त्री।
प्रश्न—का प्रेयसी विधेया ?
ससारमें किसको प्रिय बनाना चाहिये ?
उत्तर—करुणा दाक्षिण्यमपि मैत्री॥१९॥
दया, चतुरता और मैत्रीको।
प्रश्न—कण्ठगतैरप्यसुभिः कस्यात्मा
नो समर्प्यते जातु ?
कण्ठगत प्राण होनेपर भी किसका आत्मा समर्पण नहीं किया जाता ?
उत्तर—मूर्खस्य विषादस्य च
गर्वस्य तथा कृतघ्नस्य ॥ २० ॥
मूर्ख पुरुषका, विषादयुक्तका, अभिमानीका और कृतघ्नी पुरुषका।

प्रश्न—कः पूज्यः ?
पूज्य कौन है ?
उत्तर—सद्वृत्तः
श्रेष्ठचारित्र अर्थात् सम्यक्चारित्र
प्रश्न—कमधनमाचक्षते ?
धनरहित किस कहते हैं ?
उत्तर—चलितवृत्तम्।
जो चारित्रसे चलायमान है, वही निर्धन है।
प्रश्न—केन जितं जगदेतत् ?
इस जगतको किसने जीता है ?
उत्तर—सत्यतितिक्षावता पुंसा ॥ २१ ॥
जिस पुरुषको सदा सत्यताकी प्यास लगी रहती है, उसीने इस जगतको जीता है।
प्रश्न—कस्मै नमः सुरैरपि सुतरां क्रियते ?
देवता भी स्वय नमस्कार किसको करते हैं ?
उत्तर—दयाप्रधानाय।
जिसके दयाधर्म प्रधान है।
प्रश्न—कस्मादुद्विजितव्यं ?
उद्वेग किससे करना चाहिये ?
उत्तर—संसारारण्यतः सुधिया ॥ २२ ॥
बुद्धिमान पुरुषको ससाररूपी महा अटवीसे सदा उद्वेग करना चाहिये।
प्रश्न—कस्य वशे प्राणिगणः ?
प्राणीगण (जीव) किसके वशमे रहते हैं ?
उत्तर—सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य।
सत्य और प्रिय बोलनेवालेके और विनयवान्के।
प्रश्न—क स्थातव्यं ?
कहा ठहरना उचित है ?
उत्तर—न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टलाभाय॥२३
दृष्ट धनादिक और अदृष्ट पुण्यपापादिकके लाभके लिये न्याय्यमार्गमे ठहरना उचित है।
प्रश्न—विद्युद्विलसितचपलं किं ?
बिजलीकी चमकके समान चंचल क्या है ?
उत्तर—दुर्जनसङ्गतं युवतयश्च।
दुर्जन अर्थात दुष्ट पुरुषोंकी सगति और स्त्रिया।
प्रश्न—कुलशीलनिष्प्रकम्पा.
के कलिकालेऽपि ?
इस कलिकालमें भी हिमवनादि कुलपर्वतोंके समान अचल कौन हैं ?
उत्तर—सत्पुरुषाः ॥ २४ ॥
सज्जन पुरुष।
प्रश्न—किं शोच्यं ?
शोचनीय-खेद करने योग्य क्या है ?

उत्तर—कार्पण्यं।
कृपणता-कजूसी।
प्रश्न—सति विभवे किं प्रशस्यं ?
विभूतिके होते हुए प्रशसा करने योग्य क्या है?
उत्तर—औदार्यम्।
उदारता, अर्थात् जो धनिक पुरुष उदार है, वे ही प्रशंसनीय है।
प्रश्न—तनुतरवित्तस्य ?
और जो अत्यत धनहीन है, उसका क्या प्रशंसनीय है ?
उत्तर—तथा।
वही उदारता।
प्रश्न—प्रभविष्णोः ?
जो प्रभविष्णु अर्थात् समर्थ है, उसका क्या प्रशसनीय है ?
उत्तर—यत्सहिष्णुत्वम्। ॥ २५ ॥
जो सहनशीलता है, सो।
प्रश्न—चिन्तामणिरिवदुर्लभमिह किं ?
ससारमें चिन्तामणिके समान दुर्लभ क्या है ?
उत्तर—ननु कथयामि चतुर्भद्रम्।
मैं निश्चयसे कहता हू कि, चार भद्र ही अतिशय दुर्लभ है।
प्रश्न—किं तद्वदन्ति भूयो विधूततमसो
विशेषेण ॥ २६ ॥
जिनका अज्ञान अधकार नष्ट हो गया है, ऐसे महापुरुष उन चार भद्रोंका स्वरूप विशेषरूपसे किस प्रकार कहते है ?
उत्तर—दानं प्रियवाक्सहितं ज्ञानमगर्वं
क्षमान्वितं शौर्यम्। त्यागसहितं च वित्तं
दुर्लभमेतच्चतुर्भद्रम् ॥ २७ ॥
मीठे वचनों सहित दान, गर्वरहित ज्ञान, क्षमासहित शूरता, और दानसहित धन ये चार भद्र (कल्याण) अतिशय दुर्लभ है।

उपसंहार।

इति कण्ठगताविमला
प्रश्नोत्तररत्नमालिका येषाम्।
ते मुक्ताभरणा अपि
विभान्ति विद्वत्समाजेषु ॥ २८ ॥

अर्थात्—जिन पुरुषोंके कंठमें यह निर्मल प्रश्नोत्तररूपी रत्नोंकी माला रहती है, वे मुक्ताभरण अर्थात् आभरण रहित होने पर भी अथवा मुक्तोंके आभरण धारण किये रहने पर भी विद्वानोंकी सभामें शोभाको प्राप्त होते हैं।

प्रशस्ति।

विवेकात्यक्तराज्येन
राज्ञेयं रत्नमालिका।
रचितामोघवर्षेण
सुधियां सदलङ्कृतिः॥ २९

अर्थात्—सम्यग्ज्ञानके द्वारा राज्य छोड़ देनेवाले मुझ अमोघवर्ष राजाने बुद्धिमान् पुरुषोंकी उत्तम अलंकारस्वरूप यह रत्नमालिका निर्माण की है।

नोट—जो महाशय रत्नमालाके श्लोकोंको याद करना चाहें, उन्हें चाहिये कि, मूल वाक्योंका जो स्थूलाक्षरोंमें दिये गये हैं, मिलाकर पढ़ते जावें। जहां श्लोक पूर्ण हुआ है, नम्बर दे दिये गये हैं। इत्यलम्—

लालाराम जैन।

जीवहिंसाकी कमीका एक उपाय।

(मुंशी दयाप्रसादजी नाजिम-जोधपुर लिखित।)

सम्राट शिरोमणि श्रीमान् अकबर बादशाहने मुसलमान होकर भी अपनी हिंदू और जैन प्रजाकी दया, धर्मनीतिके ध्यान और लोकहितार्थके ज्ञानमें जीवहिंसा बहुत कुछ बंद कर दी थी और उसके लिये कई उपयोगी नियम भी नियत कर दिये थे कि, जिनसे सालभरमें कई दिन जीवहिंसा और शिकार बंद रहती थी। उनके सपूत पूत सुसम्राट् जहांगीरने भी उन्हीं नियमोंको अपना आदर्श बनाकर राज सिंहासनपर विराजमान होते ही जीवहिंसाकी बंदीका हुक्म जारी किया था, जिसकी नकल तुजुकजहांगीरीमें नीचे लिखी जाती है—

"१ रबीउल अव्वलके महीनेमें जो मेरे जन्मका महीना है, १८ तारीखसे उतने दिनों तक जो मेरी उमरके वर्षोंके बराबर हों १ दिनको १ वर्ष मानकर पशुवध बंद किया जावे।

"२ एक हफते (सप्ताह) में २ दिन किसी पशुके प्राण न लिये जावें। एक तो बृहस्पतिवारको जो मेरे राज्याभिषेकका दिन है, दूसरे इतवारको जो मेरे पिताके जन्म और सृष्टिकी उत्पत्ति का दिन है और सूर्य्यभगवान्से संबंध रखता है। मेरे पिता इस दिन कभी मांसका नाम नहीं लेते थे। १९ वर्षसे अधिक हुए होंगे कि, वे बिल्कुल मास खाते ही नहीं थे और इतवार और गुरुवार इन दोनों दिनोंमें तो सब लोगोंको मासका निषेध कर दिया था।"

हमने अकबर और जहांगीर बादशाहोंके इसी शिष्टाचारके आधारपर श्रीमान् वर्तमान् भारत सम्राट् सप्तम एडवर्डके राजमुकुट धारण करनेका उत्सव दिल्लीमें होनेसे कुछ पहिले उर्दू अखबारोंमें १ लेख इस विषयका छपवाया था कि, इस सुअवसर पर बेजबान पशुओंकी जीवरक्षाका कुछ प्रबंध होना चाहिये, क्योंकि यह समय अकबर और जहांगीर बादशाहोंके समयसे अच्छी सभ्यता और न्यायनीतिका समझा जाता है। अधिक न हो तो अभी उन बादशाहोंके समयके बराबर ही जीवहिंसा कम की जावे और उसके वास्ते वर्षभरमें केवल ८ दिन ही इस पुण्य कार्यके लिये मांगे थे, जो श्रीमानोंके पुण्य और प्रतापकी वृद्धिके हैं और जिनमें अवश्य इन बेवशगूंगे और लोकोपयोगी पशुओंको जीवदान मिलनेका सुअवसर है।

(१) श्रीमती भारतेश्वरी विक्टोरिया राजरानीके राज्याभिषेकका दिन।

(२) श्रीमान् सप्तम एडवर्डका जन्म दिन।

(३) राजरानी अलक्जेंड्राका जन्मदिन।

(४) राजकुमार प्रिंस आफ वेल्सका जन्मदिन।

(५) श्रीमान् प्रिंसकॉन्सर्ट (सम्राटके पिता) की मृत्युका दिन।

(६) श्रीमान प्रिंसविक्टर (भूतपूर्व प्रिंस आफ वेल्स) के देहांतका दिन।

(७) श्रीमती भारतेश्वरी विक्टोरिया राजरानीके स्वर्गारोहणका दिन।

(८) श्रीमान् सप्तमएडवर्ड भारतसम्राटके राजमुकुटधारणका दिन।

इनके सिवाय प्रजाके धर्मसबंधी दिनोंमें कमसे कम २२ दिनोंकी और भी प्रार्थना की थी, जिनका ठहराव हिंदू, मुसलमान, ईसाई, जैनी, बौद्ध, सिख, और पारसी, वगैरः हिंदुस्थानी मतावलंबियोंकी सम्मतिपर छोड़ा था तथा इन दिनोंमें शिकारकी भी माफी चाही थी और यह अपने या और किसी अपने सजाति मनुष्यमात्रके स्वार्थका काम नहीं था। जो स्वीकार हो जाता या अब हो जाय, तो सालभरमें यो यह १ महीना भी इन गरीब बेजुबान चाकरी करनेवालों और जगतको लाभ पहुंचानेवाले पशुओंके जीवदानका हेतु होकर इस लोक और परलोकमें श्रीमानोंके पुण्य, कीर्ति, जय, यश, राज्य और ऐश्वर्यकी विशेष वृद्धिका कारण हो।

परन्तु तब उस नक्कारखानेमें किसीने यह तूतीकी आवाज नहीं सुनी। केवल कई उर्दू पत्रोंने कुछ अनुमोदन किया था। परन्तु यह विशेष पुण्य और जीवोंके कल्याणका काम है और जैनधर्म इसी पुनीत कामके वास्ते ठेठसे खड़ा हुआ है, इसलिये मैं यह उचित समझता हूं कि, जैनसभायें इस प्रश्नको उठावें और अपने समाचार पत्रोंमें इसका आन्दोलन करें। यदि शिष्ट अंग्रेजी पत्रोंमें भी इस विषयके अच्छे २ लेख छपाकर इंग्लिश पबलिक तक बात पहुंच जावे और फिर इस धर्मके नेता और मुखिया भी गवर्नमेंटके अफसरोंसे कहा सुनी करें, तो आशा है कि, थोड़ा बहुत कुछ हो रहे। साहस और परिश्रम करना चाहिये। हमको अपने दिलमें यह भी दृढविश्वास है कि, जैनी सज्जनोंको इस पुण्य कार्य्यमें लगा हुआ देखकर बहुतसे हिंदू और कुछ सज्जन मुसलमान और पारसीभाई भी उनके सहमत और सहायक हो जावेंगे।

आखिर मुझे चोटी रखनी पड़ी!

सम्पादक महाशय! मैं अंग्रेजी पढ़ा हुआ हूं, जेन्टलमेनोंकी सुहबतसे कहिये अथवा इस विद्याके प्रभावसे समझिये, मैं हिन्दुस्थानकी ऐसी वैसी रीतियोंको निरा पागलपन समझा करता था। उनमें भी चोटीसे मुझे सख्त परहेज था। इस विषयमें जब मैं अपनी ऐतिहासिक दृष्टिको तर्कके साथ दौड़ाता था, तब साफ जाहिर हो जाता था, कि पहलेके लोग निरे गँवार होते थे, उन्हें सौन्दर्य शास्त्रका ज्ञान नहीं था। यही कारण है कि, उन्होंने चोटीको बीच सिरमें जगह दी। परन्तु यथार्थमें पूछो, तो उससे कुछ भी शोभा नहीं होती। आजकलके लोग विशेषकर यूरोपियन साहब सौन्दर्यको अच्छी तरहसे जानते हैं, यह बात उनके अलबर्टफेशनके बालोंसे जो टोपीके बाहर खिलते रहते हैं, स्पष्ट हो जाती है। अथवा यों कहिये कि, मुसलमानोंकी दाढ़ीको देखकर जो बकरों जेसी नीचे हिला करती है, हिन्दुओंने उसके पर्याय ऊपर चोटी रक्खी है। पहलेके सब लोग इसी तरह नकल किया करते थे। साराश यह कि, चोटी रखनेको मैं एक जंगलीपनाका बचा खुचा नमूना समझता था। और जब मैं अपने जैनी पंडितोंसे इस विषयमें पूछता था, तो वे कह देते थे, कि "नहीं जी! जैनियोंके यहां चोटी फोटी रखनेकी कोई आज्ञा नहीं हैं। रत्नकरंडश्रावकाचार, मोक्षमार्गप्रकाश, गोमटसार, त्रैलोकसार आदि बड़े २ ग्रन्थोंको हम घोंटके पी गये,

---

१. तुजुकजहांगीरी जहांगीर बादशाहकी दिनचर्याकी पुस्तक है, जो स्वयं जहांगीरने लिखी है और उसका हिंदी उल्था भी मैंने करके छपा दिया है।

परन्तु कहीं भी इसका पता नहीं लगा । वैष्णवादिकोंकी देखादेखी भेड़ियाधसान जैनियोंने भी इसे एक क्रिया मान ली है।" इससे मेरा सिद्धान्त बहुत पुष्ट हो जाता था। मेरे एक मुसलमान दोस्त भी कहा करते थे कि, लालाजी! चोटी और दाढी रखना बडी भारी भूल है। यह बात तब समझमें आती है, जब मारपीटके मौकेपर ये किसी उस्तादकी पकडमें आ जाती है! मै भी कह देता था, बेशक! चोटी कभी नहीं रखनी चाहिये।

मेरे नगरके एक बैरिस्टरका भाई विलायती फेशनका शौकीन था। उसकी पोशाकसे यह पहिचानना असभव था कि, वह किस जातिका है। परन्तु यथार्थमें वह अग्रवाल वैष्णव था। एक दिन नगरके तालाबमें एक लाश पानीपर उतराती हुई मिली। पुलिसने ले जाकर उसकी बहुत कुछ जाच और खोज की, पर यह पता न लगा कि, वह किस अभागेकी लाश है, क्योंकि पानीमें कई दिन पडे रहनेसे उसका चेहरा सर्वथा विकृत हो गया था। आखिर उसका प्रेतकर्म कर देनेकी आज्ञा हो गई। तब इस बातके जाचनेकी जरूरत हुई कि, लाश गाढी जावे, या जलाई जावे। परन्तु उसके शरीर पर कोई भी ऐसा चिन्ह न मिला कि, उसकी जातिका पता लगै, आखिर सिर पर चोटी न रहनेसे "लाश या तो किसी मुसलमानकी है, अथवा क्रिश्चियनकी, यह सिद्ध हो गया" इसलिये एक गढ्ढा खोदकर वह दफन कर दी गई। इसके दो तीन दिन पीछे बैरिष्टरके भाई साहबके लापता होनेकी खबर गरमागरम हुई। घरसे वे कहींका बहाना बनाकर गये थे, परन्तु वहा नहीं जाकर उन्होंने तालाबमे डुबकी लगाई थी। पीछे इस बातके सैकड़ो सुबूत मिल गये कि, वह लाश उक्त लाला साहबकी ही थी।

इस घटनाको सुनकर मेरी आखें खुलीं। मेरे चित्त पर असर हुआ कि, चाहे जो हो पर चोटी रखना सर्वथा निरुपयोगी तो नहीं है। वह मरनेके पीछे भी कामदेनेवाली चीज है। इस घटनाके दो तीन महीने पीछे मेरा एक भतीजा आगरेके निकटवर्ती सिकन्दराकी इमारत देखनेको गया और उसकी छत परसे अचानक गिर पड़ा। सख्त चोट लगी। जीनेकी उम्मेद नहीं थी, परन्तु बच गया। कई महीने पीछे अच्छे होने पर न जाने क्यों उसने चोटी रखा ली। इसके पहले वह मेरा अनुयायी था, चोटी रखनेसे उसे भी नफरत थी। शिखाधारी हो चुकने पर उसने मुझसे भी शिखा रखनेका आग्रह किया, और कहा कि, यदि मैं कहीं मर जाता, तो उसी तरह कबरमें रक्खा जाकर दोजकमें भेजा जाता, जिस तरह अमुक लालासाहब भेजे गये थे। उसके समझानेसे मैंने उसी दिनकी हजामतमें चोटीकी नींव डाल दी। अब वह यथेष्ट रूपमे आ गई है।

शिखा रख लेनेके पश्चात् मैने तलाश किया तो, सस्कृतज्ञ पडितोंके द्वारा मालूम हुआ कि, जैनग्रथोंमे शिखा रखनेकी विधि है, जैनाचार्योंने इसे एक सस्कार माना है। बिना चोटी रक्खे कोई पुरुष धर्मकार्योंके करनेका पात्र ही नहीं होता। सामायिककी विधिमें चोटीकी गाठ देना लिखा है, इत्यादि। किसी अखबारमें मैंने यह भी बाचा था कि, शिखाका सम्बन्ध कुछ शारीरिक विद्युतसे भी है।

इस लेखको जैनमित्रमें प्रकाशित कर दीजिये, परन्तु मै अपना नाम प्रगट नहीं कराया चाहता।

एक अग्रवाल जैनी।

नौकरी।

किसी कविका वाक्य है कि,—

तावज्जन्मातिदुःखाय
ततो दुर्गतता सदा।
तत्रापि सेवया वृत्ति—
रहोदुःख परम्परा।

अर्थात् एक तो ससारमें जन्म लेना ही दुःखके लिये है, उसमें दुर्गतता विशेषदुःखके लिये है और उसमें भी सेवावृत्ति अर्थात् नौकरी तो दुःखकी परम्परा ही है। महाराज अमोघवर्षने भी कहा है, "**को नरकः? परवशता।**" अर्थात् नरक क्या है? परवशता—सेवा—नौकरी। यथार्थमे परतंत्रता ऐसी ही चीज है। इसी परतत्रताके कारण आज हमारा देश दुःखी हो रहा है। जो देश परतत्रताका उपासक हो रहा है, उस देशकी उन्नतिकी आशा करना व्यर्थ है। आज हमारे देशके प्राय. सम्पूर्ण शिक्षितजन जो देशकी उन्नतिके उत्तरदाता हैं, परतंत्रताके उपासक हो रहे हैं। जिसे देखिये वही नौकरीकी तलाशमें हैं। जो विद्या जीवनका बहुतसा भाग व्यतीत करके रात्रिदिनके परिश्रमसे उपार्जन की जाती है शिक्षित लोग उस अमूल्य विद्याके फलकी पराकाष्ठा हजार पाच सौ रुपये महीनेकी नौकरी कर लेना ही समझते हैं। बस, नौकरी की कि, देशकी उन्नति हो चुकी। कार्यभारके मारे बेचारोंको यह विचारनेको भी समय नहीं मिलता है कि, हमारा धर्म क्या है, हमारे देशकी क्या अवस्था है, और हमारा कर्तव्य क्या है। यदि वही विद्या जो हजार पाच सौ रुपय महीनेकी नौकरीके बदले बेच दी जाती है, किसी व्यापारकी ओर अथवा देशहितकी ओर लगाई जाती, तो देशको कितना लाभ न होता! परन्तु वर्तमानकी शिक्षाप्रणाली और सरकारकी कूटनीति ही ऐसी है कि, शिक्षित लोग अधिकार और मानमर्यादाके लोभमें अपना सर्वस्व बेचना ही प्रसन्नताका कारण समझते है। उनमें आत्मगौरव, परोपकारवृत्ति, और स्वदेशाभिमान नामको भी शेष नहीं रहता है। कालेजोंमेंसे निकले कि, अखबारोंके नोटिश बाचना शुरू किये। जहां लिखा देखा कि, "जगह खाली" चाहे वह किसी भी बुरे भले कार्यकी हो, बडे २ पुच्छलों और सर्टिफिकेटोंके साथ दरख्वास्त रवाना की गईं। बस हो चुकी देशोपकार और विद्याके फलकी पराकाष्ठा!

हमारे देशमें प्राचीनकालसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र इन चार वर्णोंकी स्थापना है। ब्राह्मणोंका कर्म यजनयाजनादि धर्मकृत्य करना, क्षत्रियोंका धर्म सबकी रक्षा करना, वैश्योंका धर्म कृषि तथा व्यापार करना और शूद्रोंका धर्म शिल्प तथा सेवा करना है। जब तक यह क्रम अबाधितरूपसे चलता रहा, तबतक हमारा देश सर्व प्रकारसे सुखी रहा। सब लोग अपने २ कृत्य करके अपनी जीवनयात्रा सुखसे समाप्त करते रहे। परन्तु अब जब इसका विपर्यय हुआ है, तब सुखका कहीं ठिकाना नहीं है। जिसे देखिये, उसीने अपने २ कर्तव्य छोड दिये है। हमारी सरकार जिसका रक्षा करने रूप क्षात्रधर्म होना चाहिये था, स्वय बनिया बनी हुई है। बनिये कालेज और हाईस्कूलोंकी सनकमें लगे हुए अपने बालकोंको नौकर बना रहे हैं, ब्राह्मण नौकरी करते है, शूद्र धर्मोपदेशक बन रहे हैं, क्षत्रियोंने खेती शुरू की है। इस तरह वर्णव्यवस्थाका ऐसा गोलमाल हुआ है कि, कुछ कहते नहीं बन पडता। हमने बम्बईमें अनेक ब्राह्मणोंको जूतेकी दूकानें खोले हुए और जैनियोंको वाशिंग कम्पनीके मालिक धोबी बने हुए देखा है। बस, इसीसे समझ लीजिये कि, लोगोंकी वर्णव्यवस्थापर कितनी आस्था रह गई है।

इस कर्मव्यतिक्रममें सम्पूर्ण कर्मोंमेंसे आजकल एक सेवावृत्तिको सबसे अधिक महत्व मिला है। ब्राह्मणसे लेकर शूद्रपर्यंत कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं है, जो नौकरी न करना चाहता हो। और सबसे लघुता

है इसवास्ते दो तिथीयों का मान एकही दीन होगा-इसी प्रकार अन्यत्र भी एकही दिन मे आड़ी लकीर देकर जो तिथी लिखी है ये दोनो एक ही दिन माननी चाहियें,

३ जो तिथी दो दिन हैं उनम से जो माननीय है सो लिखी है अधिक है उनकी जगह शुन्य लगा दिया है,

४ जैसे कार्तिक सुदी त्रयोदशी मंगलवार को २ घड़ी है ३ उपरात चतुर्दशी सो माननीय है बुधको चतुर्दशी ४ घड़ी है सो माननीय नहीं है उसको जगह शुन्य है गुरुवार को पूर्णमासी ७ घ सो मा. है

आषाढ मास ।

वार	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख
बु	१	२६	८	३	३०	१०	७	१७	१४	२४
बृ	२	२७	९	४	१	११	८	१८	१५	२५
शु	३	२८	१०	५	२	१२	९	१९	०	०
श	४	२९	११	६	३	१३	१०	२०	०	०
र	५	३०	१२	७	४	१४	११	२१	०	०
सो	६	१	१३	८	५	१५	१२	२२	०	०
मं	७	२	१४	९	६	१६	१३	२३	०	०

श्रावण मास ।

वार	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख	तिथि	तारीख
बृ	१	२५	८	१	१४	८	६	१५	१४	२२
शु.	२	२६	९	२	३०	९	७	१६	१५	२३
श	३	२७	१०	३	१	१०	८	१७	०	०
र	४	२८	११	४	२	११	१०	१८	०	०
सो.	५	२९	१२	५	३	१२	११	१९	०	०
म	६	३०	१३	६	४	१३	१२	२०	०	०
बु	७	३१	०	७	५	१४	१३	२१	०	०

सिद्धेश्वर प्रेस बनारस ।

कारी अंग्रेज ही बनाये जाते है । कांग्रेसको वर्षो सिर पटकते होगये, नौकरीके विषयमें अंग्रेजों और देशियोंको एक दृष्टिसे देखनेका वर्ताव प्रचलित नहीं हो सका। हमारी समझमें भी देशीय लाल जब नौकरीके इतने अधिक प्रेमी हो गये हैं, दासवृत्तिके वे

अपनेको सत्यघोष सिद्ध करनेकी बुद्धिमत्ताने नहीं छोड़ा है । आपने जैनगजटमें अब एक विज्ञापन निकलवाना प्रारंभ किया है कि, "हमने जैनगजटको

१ जैनगजटको सचमुच आप बहुत पाक साफ रखते है।

कर चिट्ठे कराये, जिनका रुपया सं० १९९१ में महाविद्यालयके जारी होनेपर महासभामें जमा किया गया । बहुत सा चंदा अब तक वसूल नहीं

१ और उसका खंडन जैनमित्र सप्तम वर्ष अंक २४ में छपा है, सो उसे भी पढिये।

हुआ है । देखिये। आवश्यकता दिखलाई गई जैनमहापाठशालाकी, रुपया जमा हुआ धार्मिकविद्याकी उन्नतिके लिये, और अब मुंशीजी महाशय उससे अंग्रेजीकी उन्नतिके लिये कालिज खोलना चाहते हैं ।

४ सं० १९५१ की सभामें मैंने यह प्रस्ताव पेश किया कि, जिस महाविद्यालयके लिये वर्षोंसे चंदा हो रहा है, आन्दोलन हो रहा है, उसका स्थापित होना जरूरी है । चन्दा देनेवाले लोग एतराज करते हैं कि, महाविद्यालय है ही नहीं, हम रुपया किसको देवें इत्यादि । (रिपोर्ट महासभा प्रथमवर्ष प्रस्ताव नं० १) परन्तु उस समय यह दलील किसीने न की कि, चन्दा जैनकालिज तथा अंग्रेजी तालीमका है ।

५ जैनगजट अंक २६ सन् १८९७ ई०में "महाविद्यालयका रुपया क्यों जमा नहीं होता ?" इस शीर्षकका लेख मुंशी चम्पतरायजी महामंत्रीकी तरफसे और अंक २८ सन् १८९७ में "महाविद्यालयकी उन्नतिके उपाय" बाबू शीतलप्रसादजीकी ओरसे छपा है । ये दोनों ही महाविद्यालयके पुष्टि करनेवाले हैं ।

६ महासभाकी आठवें वर्षकी रिपोर्टमें महाविद्यालयके ध्रुवफंड खाते ३०११७॥=) जमा है, २००॥।-) अंग्रेजी तालीम फंड खाते पृथक जमा हैं, और रिपोर्टपर मुंशीजीकी बाजाब्ता सही है । इस प्रकार प्रत्येक लेख और प्रत्येक रिपोर्टमें स्पष्ट प्रतीत होता है कि, महाविद्यालय फंड संस्कृत तालीमके लिये है, अंग्रेजी तालीमका चन्दा पृथक् होता रहा है ।

७ महासभाकी रजिष्ट्रीके वक्त महासभाकी नियमावलीकी दफा १७ में लिखा है कि, महासभा फंडमें ५ विभाग हैं । महाविद्यालय फंड, परीक्षालय फंड, सरस्वतीभंडार फंड, उपदेशक फंड और इंतजामी फंड । आगे दफा १८ में लिखा है कि, एक मदका रुपया दूसरे मदमें खर्च न होगा, न बदला जावेगा । यह जरूर है कि, सूद एकका दूसरे मदमें खर्च हो जावे ।

८ जैनगजट अंक ३ सन् १९०४ की सम्पादकीय टिप्पणियोंमें जैनमहाविद्यालयको जैन कालिज कहकर लिखा है । उसके वास्ते एक लाख रुपयेकी आवश्यकता दिखलाई है, जिसमें ३२ हजार मौजूद हैं, ६८ हजार पार्टीके जरियेसे वसूल हो । इससे स्पष्ट सिद्ध है कि, डेप्युटेशनपार्टी महाविद्यालयके चन्देके लिये ही निकली थी, जिसमें पहले ३२ हजार जमा है ।

९ जैनमित्रके लेखके उत्तरमें जैनगजट अंक ३४ सन् १९०५ में "डेप्युटेशन पार्टी और जैनसमाज" शीर्षक लेख एक जैनीकी ओरसे छपा है। उसमें आश्वासन दिया गया है कि, "महासभामें तालीम दो विभागमें होगी । एक वह विभाग जो मथुरामें महाविद्यालय जारी है, दूसरा इंग्रेजी शिक्षाविभाग । जब तक प्रथम विभागमें धनकी पूर्ति न होगी, तब तक द्वितीय विभागमें चंदा न लिया जावेगा । डेप्युटेशन पार्टीने यही अपना मतव्य प्रगट किया है । प०रामदयालजीने हमसे कहा था कि, यह एक जैनी महाशय बाबू शीतलप्रसादजी है । और था भी ऐसा ही । उन दिनों जैनगजटके असली सम्पादक आप ही थे, पार्टीके साथमें रहकर हमने यह बात आखों देखी है । न जाने किस मायासे आपने उस लेखमें अपना नाम नहीं दिया । प्राय आपके बहुत से लेख एक जैनीके नामसे ही छपते है । जो हो, परन्तु यह सिद्ध है कि वह लेख किसी डेप्युटेशनके मेम्बरका ही है और डेप्युटेशनने संस्कृत धार्मिक शिक्षाके लिये रुपया एकत्र किया है ।

१० हम डेप्युटेशनपार्टीके साथ थे । रेलमें लाला बद्रीप्रसादजी बिजनौरवालोंसे बातें हुईं । उन्होने राय प्रगट की कि, महाविद्यालयको ७५)काफी होंगे, जैन कालिज होना चाहिये । हम व पंडित चुन्नीलालजी कहते थे, विद्यालय व कालिज एकार्थवाची है । बाबू लोग कहते थे, चन्दा श्वेताम्बरियोंसे भी लेना चाहिये। परन्तु हम, पंडित चुन्नीलालजी तथा गिरधरलालजी इंकार कर देते थे ।

११ मुंशी चम्पतरायकी एक चिट्ठी मेरे पास कुआरमें आई है। उसमें लिखा है कि, "धर्मविद्याकी बहुत बडी जरूरत है, क्योंकि इसके पढनेको कोई स्थान नहीं है । अंग्रेजी तो सरकारी कालेजोमें पढी जा सकती है । फिर चलकर आप लिखते हैं, मैं अब भी कहता हूं, कि चन्दा कालिजके लिये हुआ है। यह खूब बुद्धिमत्ता है कि, आवश्यकता हो महाविद्यालयकी और चन्दा हो कालिजके लिये ।

१२ मुंशी चम्पतरायजीकी एक चिट्ठी उस समयकी जब संवत् १९५७ के मथुराके मेलेमें बाबू लोगोंने अंग्रेजी तालीमका आन्दोलन किया था, मेरे पास आई थी । क्योंकि उस समय इसके विरुद्ध मैंने, पंडित गोपालदासजीने और पन्नालालजी बाकलीवालने जैनमित्रमें लेख दिये थे । और मैंने पार्टीके विषयमें उन्हें चिट्ठी लिखी थी । मुंशीजीकी वह चिट्ठी पढने योग्य है । उसमें लिखा है कि, "निहालचन्दजी बीमार है, पार्टीका बन्दोबस्त होना मुश्किल है । महाविद्यालयका प्रबन्ध अच्छा है महाविद्यालयका बदलना अच्छा नहीं है । अंग्रेजी अभी जारी नहीं होगी, जब तक उस मदका काफी सरमाया कोई हमारे पास जमा न कर दे । चरचा वहम फिजूल समझता हू । बहुतसे सरकारी मदरसे अंग्रेजी तालीमके लिये खुले है, जिसको पढना हो वहा जावे ।" सही "चम्पतराय महामंत्री" इन अक्षरोंमें है । मेरी समझमें यही एक चिट्ठी इस बातके सुबूतके लिये बस है, कि महाविद्यालय फंड अंग्रेजी कालिजके लिये नहीं, किन्तु धर्मविद्याकी पढाईके लिये शुरूसे हुआ है । इसके सिवाय मुंशीजीकी धर्मविद्यापर पहले कैसी श्रद्धा थी, और उसे वे कितनी जरूरी समझते थे, महासभाकी रिपोर्टमें प्रथम वर्षकी भूमिका पढनेसे स्पष्ट हो जावेगी । उसमें अंग्रेजीका निषेध और धर्मविद्याकी आवश्यकता बडी प्रबल युक्तियोंसे दिखलाई गई है ।

१३ मुंशीजीकी एक और चिट्ठी सं० १९५९के जल्सेके बादकी मेरे पास मौजूद है । उसका खुलासा यह है कि, "महाविद्यालय खुर्जा तबदील कर दिया जावे । १५०)रु० मासिक महाविद्यालयके और १५०) माहवारी खुर्जेवाले देना कहते है । काम पूरा हो जावेगा । प०गोपालदासजीने इस्तीफा नाराज होकर दे दिया है, आपको महाविद्यालयका बडा ख्याल है । इत्यादि ।" इससे भी महाविद्यालयफंड संस्कृत धर्मशिक्षाके लिये ही है, सिद्ध होता है । खुर्जेवाले मुंशीजीके अंग्रेजी कालिजमें १५०) मासिक तीन कालमें भी देनेवाले नहीं थे ।

१४. जैनगजट अंक ९-१०-११सन्१९०६ में "खेद खेद" शीर्षक विज्ञापन बाबू बनारसीदासजीके सहीसे प्रकाशित हुआ है। उसमें लिखा है कि, "जो धन महाविद्यालयका जमा है, उसको अंग्रेजी तालीममें यह सभा स्पर्श भी नहीं करेगी । और सं० १९६२ में मथुराकी प्रबंधकारिणी सभाने भी यह प्रस्ताव पास किया है कि, आज तक जो रुपया महाविद्यालयका जमा है, वह महाविद्यालयका है । आयंदा जो महाविद्यालयको देगा, वह उसमें जमा होगा, और जो अंग्रेजी तालीममें देगा, वह उसमें जमा होगा ।

इन थोडेसे प्रमाणोंसे आशा है कि, पाठकोंको संतोष हो जावेगा, और मुंशीजी भी अपने सिद्धा-

न्तको छोड़ देंगे। यदि और भी प्रमाणोंकी आवश्यकता हुई, तो मैं देनेको तयार हूं। जैनगजट जैनमित्रकी फाइलोंमें महासभाकी रिपोर्टोंमें इसके जितने चाहिये, उतने सुबूत मिल सकते हैं।

आतिका सेवक—
रघुनाथदास रईस—सरनौ (एटा)

नोट—यदि महासभाके इस अधिवेशनपर यह झगडा तय कर दिया जावे, तो अच्छा हो। लोगोंका संतोष हो जाय और सामाजिक कार्य प्रसन्नतासे चलने लगे। विलका सफाई न होनेसे हानि हो रही है।

सम्पादक।

महासभा और यंगमेन्स एसोसियेशनके लिये प्रस्ताव।

१. जो दिगम्बर जैन लावारिस मर जाते है, उनकी मिल्कियत, जायदाद, नक़्द, कुछ भी हो सरकारमें न जाने पावे। इसके मालिक जैनीपच, तीर्थक्षेत्रकमेटी, जैनमदिर, जैनपाठशाला या अनाथालय होना चाहिये। इसकी रजिस्टरी सरकारसे कराई जावे।

२ मृतकके औसर नुकतेमें—जिवनारमें खाड गाली जाती है, उसपर आठ आना या रुपया मनका लगान उस शहरके जीर्णमदिर या जैनपाठशालाके वास्ते लगाया जावे। सब भारतवर्षके जैन दिगम्बरोंसे इस कार्यकी स्वीकारताके दस्तखत लेना चाहिये।

३. जैनगजटकी दशा सुधारी जावे, उसका साइज बढाया जावे और उसमें व्यापारसबधी भाव वगैरह हरेक चीजके हर जगहके रहनेका प्रबध किया जावे। इसके लिये यदि द्रव्यसहायताकी आवश्यकता हो, तो करना चाहिये।

४. जैनियोंमें स्वदेशीवस्तुप्रचारका उत्साह बढाया जावे।

५ मंदिरोंमें पेटरोलियम तेल तथा मोमबत्तिया न जलाई जावें। खोपरेल तेल घृत या तिलीदानोका देशी तेल काममें लाया जावे।

७. जैनविवाहपद्धतिके अनुसार विवाह करानेकी रीति प्रचलित कराई जावे।

८. शादियोंका खर्च घटाकर (२००) में सर्व कार्य हो जावे, ऐसी रीतें हरेक नगर ग्राम और शहरोंमें पंचायतीद्वारा जारी की जावें।

९. लडका लडकी होनेके पेशतर जो अगरणी आठवांमें लोग हजारों रुपया उड़ाते हैं, वह कितनी ही जगह बड़ा दुःखदाई हो जाता है। जैसे यहां कितनी ही वार देखा गया है कि, बच्चा पैदा होते ही मर जाता है। जच्चा मर जाती है और कुटंबियोंको पैसेसे जेरवार कर देते हैं। पंचोंकी शरमसे लोगोंको आगरणी आठवाका दस्तूर करना पडता है। ऐसा नहीं होना चाहिये। (इसका राजपूताना और मालवामें अधिक प्रचार है।)

१०. विवाहादि कार्योंमें गालियें तथा सीठणे गाना बंद किया जावे।

११. मदिरको मृतकके तीसरेके और बारहके उठावनेमे स्त्रियें रोती हुई आया जाया करती हैं, सो हरेक शहर व ग्राममें बद करानी चाहिये।

१२ व्यापारको तरक्की देनेके वास्ते शहर शहरमें जैन ट्रेडिंगकम्पनी शेयर्ससे खोलनी चाहिये और जैनियोंको सब चीजें उस दुकानसे खरीदना चाहिये तथा देशी माल फरोक्त करना चाहिये।

१३. लडकीवाला किसी सूरतमें कुछ नगदी लडकेवालेसे न लेने पावे।

१४. मोरस खाड, कुप्पोंका घृत, चर्मजल वगैरह अशुद्ध पदार्थ बन्द किये जावें।

१५. जैन दिगम्बरियोंमें जितनी जातिया है, ममलन, खडेलवाल, जैसवाल, पोरवाल, अग्रवाल, श्रीमाल, लमेचू, वरैय्या वगैरह। इन सर्व जातिके रीति रस्मोंकी १ पुस्तक तयार की जावे जो छपवाकर हरेक दिगम्बरी जैनीके घरपर मुफ्त भेजी जावे। उसमें कुरीतियोंपर नोट करके छुडानेकी ताकीद लिखी जावे और हरसाल जो रीतिरस्म हानिकारक है, उनको छुडानेकी कोशिस कराकर नवीन किताबे छपवायकर भेजते रहें। इसका खर्च पचायतियों द्वारा ग्रहण किया जावे।

जातिहितेच्छु—**सुदरलाल वैनाडा।**
झालरापाटण।

महासभाके अधिवेशनके लिये दो प्रस्ताव।

"स्फुटवक्ता न वञ्चकः।"

१. प्रायः एक वर्ष हो गया, जबसे कालेज और महाविद्यालय सम्बन्धी विवाद चला है, लोगोंके जीमें महासभाकी ओरसे नाना प्रकारकी आशंकायें उत्पन्न होने लगी हैं। यद्यपि एक प्रकारसे इस विवादका अन्त हो चुका है और यह प्रकाशित हो चुका है कि, महाविद्यालयका द्रव्य जो अब तक एकत्र हुआ है, उसका एक पैसा भी अंग्रेजी हाईस्कूल अथवा भविष्य कालेजमें खर्च नहीं किया जायगा, सब धार्मिक सस्कृतविद्याके लिये है। इससे लोगोंको संतोष और विश्वास हो जाना चाहिये था, परन्तु अनेक अंशोंमे अभीतक लोग सशकित हो रहे हैं। इसलिये कलकत्तेके अधिवेशनमें इसके प्रतीकारका यत्न अवश्य होना चाहिये। क्योंकि जब तक महासभाकी ओर लोगोंका विश्वास दृढ नहीं होगा, और उसके कार्यकर्तागण सर्वतोभावमे निष्कपट होकर अपने अभिप्राय प्रगट न करेंगे, तब तक सभाकी उन्नतिमें अनेक बाधायें उपस्थित होंगी। और महाविद्यालय तथा कालेजसम्बन्धी विवाद जो एक वर्षभर जोर शोरसे चला है, कोई सामान्य घटना नहीं है। वार्षिक अधिवेशनमें उसकी चरचा अवश्य होना चाहिये और एक प्रस्तावके द्वारा सर्व सम्मतिसे उसका फल प्रगट कर देना चाहिये। यदि इस विषयका अब भी गोलमाल किया जावेगा, तो एकबार फिर भी यही विवाद उपस्थित होगा। और इसकी सभावना भी है। क्योंकि सभाके महामंत्री साहब "अपनी करतूत" में जोर देके कहते है कि, महाविद्यालयका रुपया कालेजके लिये ही हुआ है! इस करतूतका विज्ञापन भी जैनगजटमें बराबर निकलने लगा है, जिससे जो लोग ठडे हो चुके है, वे फिर भी भडकेंगे। इसलिये उचित है कि, महामंत्री साहबके उक्त वाक्यका खुलासा सर्व साधारणमें प्रगट किया जावे। यदि ऐसा न किया जावेगा, तो बहुत हानि होवेगी। हम महासभाके सभ्यगणोंसे तथा कलकत्तेके भाइयोंसे प्रार्थना करते हैं कि, वे इस प्रस्तावको अवश्य ही रक्खें और महासभाकी उन्नतिके इस एक बडे भारी कटकको दूर कर दें। महासभा जैनी मात्रकी प्यारी सम्पत्ति है। उसकी उन्नति सबहीको अभीष्ट है, इस लिये यह प्रार्थना की जाती है।

२ वर्तमानमें समाचारपत्र उन्नति करनेके एक मुख्यद्वार हो रहे हैं। बिना समाचारपत्रोंके उन्नति करना एक प्रकारसे कठिन हो गया है। जितने समाज उन्नत हुए है, एक समाचार पत्रोंके द्वारा ही हुए हैं। अतएव हमको उन्नति करनेके लिये इन्हींका आश्रय लेना चाहिये। परन्तु खेद है कि हमारे समाजमें इसकी बहुत कमी है। समाज भरमें केवल एक साप्ताहिक पत्र है। परन्तु उसका साप्ताहिक होना नाम मात्र है। यों तो उसमें वर्षोंसे ताजे समाचार और लेख नहीं रहते, परन्तु अभी कुछ महीनोंसे तो उसकी विचित्र ही हालत है।

तीन २ महिने तकके पुराने समाचार उसके पाठकोंको पढना होते है। निकलनेकी तिथिका कुछ नियम नहीं है। कभी २ पन्द्रह दिनतक उसके दर्शन नहीं होते। अभी तक पहली दिसम्बरका भी अंक नहीं निकला है। अंक ४३ के करीब एक अंकका लोप हुआ है, जिससे अंक ४३ के एक लेखका जिसपर लिखा हुआ है, "गतांकसे आगे" कुछ पता नहीं लगता है। गत तो गया आगतांकमें भी वह न आया ! ! लेखोंकी शुद्धिके विषय तो कुछ कहा ही नहीं जाता है। शायद ही भारतवर्षमें इसकी बराबरी अन्य कोई पत्र कर सके। ऐसी तो उसकी बुरी हालत है, परन्तु उसके उपसम्पादक महाशय इतने तेज मिजाज हैं कि, किसीका उनके पत्रके विरुद्ध एक अक्षर भी उन्हे सहन नहीं होता। किसीने जरा कुछ लिखा कि, वे दुर्जन और दोषान्वेषी बनानेके लिये तयार रहते है। मानो जैनगजट उनके घरकी जायदाद हो और दूसरोंको उस पर कुछ लिखनेका अधिकार ही न हो। महासभाके मुखपत्रकी ऐसी दशा पर हर कोईको तरस आता है, परन्तु आज कल समालोचना करना अपने सिरपर एक आफत बुला लेना है, इससे सब कोई चुपचाप देखते है। श्वेताम्बरसमाजमें वर्तमानमें तीन साप्ताहिक पत्र निकलते है। जिस तारीखको वे निकलते है, उस दिन तकके देश विदेशके धार्मिक सामाजिक राजकीय सम्पूर्ण समाचार उनमे निकल जाते है। छह सात महीने पहलेसे कान्फरेंसकी सफलता किस तरह हो, इस प्रकारके उत्तेजक लेख प्रत्येक अंकमे निकलते है। उनका लोगों पर अच्छा असर होता है। जिससे श्वेताम्बरसमाजमें खूब जागृति हो रही है। परन्तु हमारे जैनगजटमे दूसरे समाचारोंकी तो जाने दीजिये महासभाकी कार्रवाई भी तब छपती है, जब दूसरे पाक्षिक मासिक पत्रोंमें छप चुकती है। फिर समझ लीजिये कि, उसके द्वारा महासभाकी उन्नति कितनी हो सकती है? महासभाका मुखपत्र ऐसा होना लज्जाकी बात है। महासभाको चाहिये कि, अबके अधिवेशन पर इसका विचार करै। समाजकी उन्नति अच्छे समाचार पत्रके विना नहीं हो सकेगी। और कार्योंकी अपेक्षा पहले इसको मुख्य समझना चाहिये। थोडी सी अच्छी पूंजी लगाकर कलकत्ते जैसे बडे शहरमें जैनगजटका आफिस रक्खा जावे और एक दो वैतनिक सम्पादक नियत कर दिये जावें, तो वह एक उच्चश्रेणीका पत्र बन सकता है। कलकत्तेके कोई भी एक साहसी सज्जन इस कार्यको चला सकते है। इत्यलम्।

चंदावाडी—बम्बई }
१४-१२-०६ }

समाजका हितैषी —
धन्नालाल काशलीवाल।
मन्त्री—विद्याविभाग।

पत्रोंका सार।

खुर्जा (बुलन्दशहर)—अगहन वदी ६-९ तक रथोत्सव आनन्दसे हुआ। श्रीमान पंडित मेवारामजीका शास्त्रार्थ आर्यसमाजके साथ होनेवाला था परन्तु शास्त्रार्थ नहीं हुआ। आर्यसमाजकी ओरसे यह कारण बतलाया गया कि, हमारे पंडितजन कोई नहीं आ सके, क्योंकि वे अन्यान्य स्थानोंमें सभायें कर रहे है। यद्यपि उस ओरके बडे २ सन्यासी महात्मा आये थे। इस बनावटी कारणको सुनकर भी मेवारामजीने यहां कहा कि, आप लोग अपने विद्वानोंको बुलाइये, जो खर्चा पडेगा, जैनसभा देगी। देखिये ! सम्पूर्ण सभ्यजनोंको जैनपत्रोंमें तथा आर्यसमाजियोंके पत्रोंमें एक महीने पहलेसे जाहिर हो गया था, कि शास्त्रार्थ होगा। सब समाजियोंको विदित भी था, परन्तु वे लोग नहीं आये। इससे स्पष्ट यही प्रतीत होता है कि, आर्यसमाज जैनियोंसे शास्त्रार्थ नहीं कर सकता। जैनियोंका धर्म सच्चा और सर्वज्ञप्रणीत है[१]।

चम्पाराम अध्यापक—एटा।

करहिया (ग्वालियर)—जैनमित्रमें केसरके समाचार पढकर यहां भी परीक्षा की गई, और अशुद्धताकी बात सच पाई गई। सर्व भाइयोंपर इसका बडा असर हुआ। यहांके ग्रामोंमें केशर बन्द हो गई। हार सिंगारके फूल काममे लाये जाते है। विलायती शक्करका प्रचार भी यहां बन्द हो गया है।

लेखराज बरैया।

सिद्धक्षेत्रकुंथलगिरि—पाष वदी ३ को एक अच्छा सम्मेलन हुआ। ५०० सेतवाल भाई एकत्र हुए थे। भगवानकी पालकीका समारोह आनन्दसे हुआ। श्रीयुत दत्तात्रय भीमाजी रणदिवेका एक व्याख्यान हुआ जिसमें विदेशी शक्कर, विदेशी अपवित्र केशर और विदेशी सर्वप्रकारकी वस्तुओंके त्याग करनेका उत्तेजन दिया गया। ऐसे मेलोंपर उपदेशकोंकी बडी भारी आवश्यकता रहती है। बम्बईसभा अथवा महासभाको इस ओर ध्यान देना चाहिये। बार्सीकी जैनपाठशालाकी व्यवस्था अच्छी नहीं है। प्रबन्धकर्ताओंको ध्यान देना चाहिये। ८-१२-०६. एक समदृष्टि।

होसूर (बेलगाव)—श्रीजैनज्ञानोत्कर्षवाचनालयका वार्षिकोत्सव पौष वदी १० मंगलवारको धूम धामसे हुआ। सबेर मन्दिरमें पूजन समारम्भ तथा पुराणादि पठन होकर रात्रिको सभा हुई। सरस्वती पूजन होकर सभापतिका आसन अण्णाप्पा भरमाप्पा गरगट्टे महाशयने सुशोभित किया। मैंने वार्षिक रिपोर्ट पढके सुनाई। वाचनालयमे धार्मिक पुस्तकें २७० और इतर पुस्तकें २३० हैं। चन्देसे इस वर्ष ११७|||) वसूल हुआ है। समाचार पत्रोंके मूल्यमें ९) खर्च हुए है। पिछले सालकी बचत मिलके ७४|)|| रोकड बाकी रहे है। रिपोर्ट सुनानेके पश्चात् श्रीयुत अण्णाप्पा लेंगडेका और फिर सभापतिका व्याख्यान हुआ। वाचनालयमें शेठ माणिकचन्दजी आदि धर्मात्माओंकी सहानुभूति है। होसूरके भाइयोंको इसकी दिनपर दिन उन्नति करना चाहिये। १२-१२-०६

भरमाप्पा पदमप्पा पाटील।

कानपुर—जैनमित्र अंक १ में राधाकृष्ण ब्राह्मण बनारसके पासकी जिन प्रतिमाके विषयमें जो लेख छपा था, वह यहां बालसभाके जलसेमें पढकर सुनाया गया। पश्चात् लाला चुन्नीलालजी और पं० मुन्नालाल अध्यापक ये दोनों साहब बनारस जाकर श्रीजिनप्रतिमाको ले आये। प्रतिमा बहुत ही मनोज्ञ है। चन्द्रप्रभ भगवानकी एक हजार वर्षकी प्रतिष्ठित है। यहां श्री जिनमंदिरमें विराजमान कर दी गई। अब कोई भाई उपर्युक्त राधाकृष्णजीसे प्रतिमाजी लेनेके बारेमें पत्रव्यवहार न करे। विज्ञेषु किमधिकम्। शंभुदयालमंत्री।

बम्बई—हीराबाग अर्थात् शेठ हीराचन्द गुमानजी धर्मशालामें गत नवम्बर महीनेमें कुल ७१२ स्त्री पुरुषोंने विश्राम किया, जिनमें ९८४ तीर्थयात्री और शेष मुसाफिर थे। धर्मभेदसे २०३ दिगम्बरी, २२७ श्वेताम्बरी, और २८२ वैष्णव थे। इस धर्मशालाकी ओरसे एक देशी दवाखाना भी स्थापित है। जिसमें सब प्रकारकी शुद्ध देशी दवाइयोंका व्यवहार होता है। गत महीनेमें कुल १६४१ रोगियोंने इससे लाभ उठाया। इनमे ४४१ दिगम्बरी, १८३ श्वेतांबरी और शेष ब्राह्मण मराठा आदि जातिके थे। ता० ४-११-०६।

माणिकचन्द रावजी दोसी।

---

१ इतने विलंबसे आये हुए समाचार लेनेका नियम नहीं है, परन्तु शास्त्रार्थका फल अभीतक प्रकाशित नहीं हुआ था, इससे छापना उचित समझा गया। खेद है कि, लोग ऐसे २ समाचारोंको अप्रकट रखना चाहते हैं।

फ्रान्सके आइला शापिल नगरमें एक अजायब घर है, उसमें सत्रह हजारसे अधिक अखबारोंके नमूने रक्खे हैं।

रूसके जारके पास आलस्यका नाम नहीं है। वे बडे जबर्दस्त काम करनेवाले हैं। प्रहरोंके प्रहर वे अपने एकान्त कमरेमें काम किया करते है। उस समय उनकी महाराणी भी पास रहती हैं।

जापान देश बौद्धधर्मका अनुयायी है और बौद्ध-धर्म अहिंसाका उपासक माना जाता है। परन्तु जापानी लोग जितनी मछलिया खाते है, संसारकी कोई भी जाति उतनी मछलिया नहीं खा सकती।

पूनाके फर्ग्युसनकालेजके मि० विश्वनाथ नारायण मडलीकके पुत्रने अपने पिताकी एक बडी भारी लायब्रेरी भेंटमे समर्पण कर दी है।

बडौदाके महाराज अपने राज्यमें बीडी चुरुट पीनेकी वृद्धि रोकने के लिये एक कानून बनानेकी योजना कर रहे है।

पालनपुर राज्यमें भीलडिया पार्श्वनाथ नामक एक श्वेताम्बरी तीर्थ है। इस मन्दिरके पन्द्रह हजार रुपये किसी बडी दुकानमे जमा रहते थे। सुनते हैं, अब उस दुकानने दीवाला निकाल दिया है। एक एक पैसा जोडके एकत्र किया हुआ मन्दिरोंका रुपया इसी प्रकार डूब जाता है, और निर्माल्यके बडे भारी अपराधसे लोगोंको पापी बनाता है। जब यह रुपया किसी एक कमेटीके प्रबन्धमें रहे और वह उसकी ठीक २ देख रेख रक्खे, तब ही रक्षा हो सकती है।

रा. रा. मगरूलकरने शोलापुरमे एक दियासलाईका कारखाना खोला है। दो महीनेके भीतर दियासलाइयोंकी बिक्री होने लगेगी।

दिल्लीमें पाच लाखकी पूंजीसे एक पेपरमिल (कागजकी कल) स्थापित होनेवाली है।

नैपालके भूतपूर्व मंत्री देव शमशेरजंग राजपुरमें एक काचका कारखाना खोलनेके प्रयत्नमें है।

होशयारपुरके मिस्त्री बलीरामने स्वदेशी पेन्सिल तयार करनेका एक यंत्र निर्माण किया है।

बगालमें राष्ट्रीय कालेज स्थापित करनेके लिये जो फड खोला गया है, उसमें मैमनसिंहके जमीदार श्री बृजेन्द्रकिशोररायने पाचलाख रुपया दिये हैं। धन्यवाद है। इसके पहले उक्त फडमें ३० लाख रुपयेके अनुमान द्रव्य भरा जा चुका है। इस कालेजमें राष्ट्रीयशिक्षाके अनुकूल स्वतत्र कोर्स बनाया जाकर पढाई होगी।

मद्रासके बिशप (पादरी सरदार) जो आज कल इग्लेडमे है, कहते हैं, कि, दक्षिण हिंदुस्थानमें जो एक लाख सत्तर हजार मनुष्य, ख्रिस्ती हो गये हैं, उनमें सिर्फ १०००० मनुष्य शहरोंके रहनेवाले है, शेष ग्रामीण लोग है। और गत वीस वर्षमें जो ९७००० मनुष्य धर्म भ्रष्ट हुए हैं, उनमें ४२००० पीछे पडी हुई नीच जातियोंके। है इससे जान पडता है कि, शहरकी अपेक्षा गावोंके मूर्ख लोग बहुत फँसाये जाते हैं, और निरुद्योगी नीच लोग पेटकी आगसे जलकर धर्म छोडते जाते है। ग्रामोंमें उपदेश और धर्मशिक्षाकी बहुत जरूरत है।

सुनते है, कटनीमुडवारेके मुंशी नाथूरामजी लमेचूके सुपुत्र बाबू नन्दकिशोर बी ए. असिस्टेंट सिविलसर्जनने अपने मृत पिताके पुस्तकालयका बहुभाग तत्रस्थ जैनपाठशालाकी लायब्रेरीको समर्पण कर दिया है। धन्यवाद है।

भारतभरमें चौदहसौ पचास समाचारपत्र और मासिकपत्र निकलते है। दूसरे देशोंकी अपेक्षा यह सख्या बहुत थोडी है।

इस वर्षकी इडियन नेशनेल काग्रेसका जल्सा ता० २६-२७-२८ दिसम्बरको कलकत्तेमें खूब धूमधामसे होगा। प्रदर्शनी २१ दिसम्बरको लार्ड-मिंटोके हाथसे खोली जावेगी।

चीन सरकार प्रतिज्ञा कर चुकी है कि, चीन देशसे १० वर्षमें क्रमक्रमसे अफीम सर्वथा उठा दी जावेगी। प्रतिज्ञाके अनुसार कार्य भी जारी हो गया है। यद्यपि इससे भारतवर्षको कई करोडका घाटा उठाना पडेगा, परन्तु एक देश बडे भारी व्यसनसे छुटकारा पा जावेगा, यह संतोषकी बात है। भारतवर्षसे कई करोड़की अफीम चीनको जाती है।

सूचना—जैनमित्रमें छपनेके लिये, सिर्फ ताजे समाचार, और सवाद नीचे लिखे पतेसे आना चाहिये। प्रत्येक पक्षकी त्रयोदशीतक आये हुए समाचार ले लिये जावेंगे।

नाथूराम प्रेमी—
चन्दावाडी पो० गिरगांव-बम्बई

"कर्नाटक" प्रेस, बम्बई

Registered No. B 288.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है ।

६ इस पत्रमे वे ही विज्ञापन छपेगे व बंटेगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जवाबी कार्ड अथवा टिकट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
मोरेना (ग्वालियर) ।

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

वर्ष ८ वां] माघ कृष्णा २ संवत् १९६३ विक्रमाब्द । जनवरी ता० १ सन् १९०७ ईस्वी । [अंक ६ठा ।

जैनमित्रके फाइल ।

सप्तम वर्षके थोडेसे फाइल हमारे पास मौजूद है । हम उन्हे जल्दी बेचना चाहते है, इस लिये इस समय बहुत थोडी कीमतमे ग्राहकोंको मिल जावेंगे । देर करनेसे दूनी कीमतमें भी नहीं मिल सकेंगे । जैनमित्रके सप्तमवर्षमे कैसे २ बढिया लेख छपे है, सो किसीसे भी छुपे नहीं है । हिन्दीके किसी भी जैनपत्रमें आज तक ऐसे बढिया सग्रह करने लायक लेख नहीं छपे हैं । समाचार और थोडेसे समाज सम्बन्धी लेखोके सिवाय बाकी सब ही लेख हमेशा पढने योग्य और कामके है । इसके सिवाय जैनसिद्धान्तके १० फार्म और सुशीला उपन्यासका पूर्वार्द्ध (१० फार्म) भी उसके साथ मिलता है, जिन दोनोंकी कीमत पृथक् छपने पर कमसे कम १।) रु० होगी । ऐसे उत्तम फाइलको दिसम्बर महीनेके आखीर तक हम सिर्फ २॥) में ही देना चाहते है, जिल्द सहित मंगानेवालेको १॥।) लेंगेगे और भी सुभीता यह है कि, डांकखर्च हम अपना लगा देंगे ।

सुशीला उपन्यास

प्रथमभाग ।

रायलके बडे २ अस्सी पेजोंका बहुत बढ़ियां उपन्यास जिससे कि मनोविनोदके सिवाय धार्मिक शिक्षायें भी मिलती हे, तयार है । एक बार पढना शुरू करनेसे फिर छोडनेको जी नहीं चाहता है, मूल्य सर्व साधारणसे दश आना जैनमित्रके ग्राहकोंसे आठ आना । डाक खर्च माफ ।

मेनेजर—जैनमित्र
पो० मोरेना (ग्वालियर)

श्रीमती दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बईका चौथा अधिवेशन ।

("एक पथ दो काज" का मौका नहीं चूकना चाहिये ।)

जैनबन्धुगण ! आपको प्रगट ही है कि प्रान्तिक सभा बम्बईका वार्षिक अधिवेशन श्रीगजपथाजी सिद्धक्षेत्रपर स. १९६३ की माघशुक्ला १३ से १५ तक होनेवाला है। अब वह समय निकट आगया है, आपलोगोंको तय्यार हो जाना चाहिये। आपको ज्ञात है कि इस सुहावने स्थानसे सात बलभद्र और आठ कोठ मुनि मुक्तिको पधारे है इस कारण यह निर्वाणक्षेत्र भव भावान्तरकी कर्मकालिमाको प्रक्षालन करनेके लिये दिव्यसलिल है । इसके दर्शनोंसे भाव अतीव निर्मल होते हैं । प्रिय धर्मात्माओ ! प्रथमतो यह वसन्त ऋतु ही सर्वोत्तम है, दूसरे यहासे श्री मांगीतुंगीजी भी समीप है, ३ रे मुम्बापुरी मनोहर नगरी भी इससे बहुत दूर नहीं है, चौथे इसी निमित्तसे अन्यान्य तीर्थक्षेत्र, अतिशय क्षेत्रोंके भी दर्शन हो जाना सभव है। यथा श्री गिरनारजी, शत्रुजयजी, पावागढ़जी इत्यादि । इतना ही नहीं इस अवसरपर देशदेशान्तरोंके विद्वज्जन पधारेंगे, जिनके उपदेशसे श्रवणेन्द्रिय सफल होगी और आत्मकल्याण होगा। अपने सौभाग्यसे इस अधिवेशनके सभापति श्रीमान् राजा ज्ञानचन्दजी गवर्नमेंट फोटोग्राफर हुए है। इस प्रकार यहा सर्वतोभद्र सामग्रीके सम्मिलन होनेसे "सोना और सुगंध" की कहावत चरितार्थ होती है । जैनीभाइयोंको "नासिक" स्टेशनपर उतरना होगा जहांसे गजपंथाजी जानेको सवारी तय्यार मिलेगी । रेलकिराया कम होनेके लिये भी प्रयत्न हो रहा है और जिस २ प्रकारकी आवश्यकता है उसका भी प्रबन्ध हो रहा है । इस अवसरपर साधर्मी सद्गृहस्थोंको लाख गृहकार्य छोडकर अवश्य २ पधारना चाहिये। बम्बई दिग. जैन प्रान्तिक सभाके सभासदोंको तो किसी प्रकार यह मौका चूकनाही नहीं चाहिये ।

आमत्रण पत्रिका भेजी गई है उसमें जुडे हुए प्रतिनिधिपत्र (Delegate Form) को माघ कृष्ण ३० पर्यन्त निम्नलिखित पतेपर भरके भेजना चाहिये। जिनकेपास फार्म नहीं पहुंचे हों, उन्हें एक कार्ड लिखकर मगा लेना चाहिये । कृतमतिविस्तरेण

दफ्तर, हीराबाग
गिरगांव—मुबई
ता. २९-१२-०६

भवदीय कृपाकांक्षी
पानाचन्द रामचन्द दोशी
मत्री स्वागतकमेटी—गजपथा अधिवेशन

जैनमित्र.

माघ कृष्णा २ शोवार नि० संवत् २४३३।
ता० १ जनवरी सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

दिगम्बर जैन प्रान्तिक-सभा बम्बईका चतुर्थ अधिवेशन।

अबकी वार सभाका अधिवेशन श्री गजपथजी सिद्धक्षेत्रपर खूब धूमधामसे होनेकी आशा है। स्वागतकमेटीके मंत्री महाशय अभी मंडप वगैरहके प्रबन्धके लिये गजपथजी गये थे, वहां उन्हें विदित हुआ है कि, दक्षिण मोगलाईके कई हजार भाई अबके अधिवेशन पर आने वाले हैं। चार पांच हजार भाइयोंके एकत्र होनेकी संभावना है। आमंत्रणपत्रिका और प्रतिनिधियोंके फार्म प्रत्येक गांवकी पचायतियोंको भेजे गये हैं। भाइयोंको चाहिये कि, उन फार्मोंको शीघ्र ही भरकर भेजें। जिन भाइयोंके पास फार्म नहीं पहुंचा हो, वे "**मंत्री स्वागतकमेटी-हीराबाग बम्बई**" से पत्र लिखकर मंगा लें। इस अधिवेशनपर उपस्थित होनेवालोंको एक पंथ दो काज सिद्ध होंगे, परमपूज्य श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्र तथा उसके पासही श्री मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्रके दर्शन और धर्मोन्नतिकारक सभाका सम्मिलन। शीत कालमें प्रायः सर्वत्रसे तीर्थोंकी वन्दनाके लिये यात्रीगण निकलते है। इस वर्ष भी हजारों यात्री निकलेंगे और निकल होंगे। यदि वे सब भाई अपनी यात्राका प्रोग्राम ऐसा बनावें, जिसमें माघ सुदी १३का (२७ जनवरीका) मुकाम गजपंथजीपर हो, तो सहज ही एक बड़ा भारी समूह एकत्र हो सकता है। गिरनारजीकी बन्दना करनेवाले इस मौकेपर सुभीतेसे पहुंच सकते है, उन्हें इस ओर ध्यान देना चाहिये।

अहिंसाधर्मकी अतिव्याप्ति।

पूनाके प्रसिद्ध केशरीपत्रके अंक ४८ में फूलगांवके किसी पौराणिक महाशयका एक व्याख्यान छपा है। उसमें व्याख्याताने यह सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है कि, "जो धर्म अहिंसातत्त्वका प्रतिपादन करनेवाला है, वह मनुष्योंको कर्तव्य पराङ्मुख करता है। और वर्तमान स्थितिके अनुसार वह हानिकारक है। जो धर्मोपदेशक अहिंसाधर्मका उपदेश देते हैं, वे अन्याय करते हैं। यद्यपि अहिंसा एक प्रशस्त कर्म है, परन्तु जैन बौद्ध चार्वाक वगैरह नास्तिक लोगोंने इसकी अतिव्याप्ति कर डाली है। पहले वैदिक समयमें पशुमेध आदि यज्ञ कर्मोंमें हिंसा होती थी, परन्तु उपनिषद् कालमें उससे लोगोंके चित्त विरुद्ध होने लगे और फिर जैनादिकोंने उसे सर्वथा बन्द करके इस अहिंसातत्त्वको बहुत विस्तृत किया इत्यादि" यही व्याख्यानका सार है। इसमें जैनियोंको व्याख्याताने नास्तिकोंमें परिगणित किया है, परन्तु सिवाय अपनी इच्छाके उनके पास इसका कुछ प्रमाण नहीं है। बीसों लेख इस विषयमें निकल चुके कि, जैनी नास्तिक नहीं है, महामहोपाध्यय प० राममिश्रशास्त्री जैसे विद्वान् जैनियोंको आस्तिक लिख चुके है, परन्तु पौराणिक महाशय अभीतक अंधेरेमें ही है, यह आश्चर्यकी बात है। दूसरी बात अहिंसाकी अतिव्याप्तिकी है। सो जब तक अहिंसाका लक्षण जैनियोंने क्या माना है, यह न समझ लिया जावे, तबतक उसमें अतिव्याप्ति बतलाना केवल उपहास करना है। ढूंढियोंके मुहमें पट्टी बांधनेके तथा और भी अशुचिता रखनेके घिनौने कृत्यको देखकर ही जैनधर्मका अहिंसा तत्त्व नहीं जाना सकता है। इसके जाननेके लिये जैनियोंके सिद्धान्तग्रन्थ पढना चाहिये। उनमें "**प्रमत्तयोगात् प्राणव्यपरोपणं हिंसा**" लक्षण कहा है। किसी बालकके पेटमें कृमि हो गये है, तो उनसे मुक्त होनेके लिये जैनधर्म यह कभी नहीं कहता है कि, उसे औषधि न देना चाहिये। क्योंकि औषधि देनेसे जो कृमि मरेंगे, उस हिंसामें प्रमत्तयोग नहीं होगा। क्योंकि औषधि देनेवालाका अभिप्राय बालककी जीवरक्षाका है, न कि कृमि मारनेका। इसी प्रकार जैनी राजाका भी यह धर्म कदापि नहीं है कि, वह पापियोंको तथा दुराचारियोंको प्राणदंड न देवे, अथवा शत्रुपर चढ़ाई न करै, और वहांपर सैन्यपर तलवार न चलावे। यह राजनीति है, इसमें जैनधर्म किसी प्रकार बाधक नहीं होता। क्योंकि राजा जो दंड देता है, अथवा लडाईमें हिंसा करता है, उसका हेतु सदाचारकी प्रवृति और प्रजारक्षा करनेका रहता है, न कि जीवघात करनेका। फिर राष्ट्रकी उन्नतिकेलिये अहिंसाधर्मको अपायकारक बतलाना बड़ी भारी भूल है। पानी छाननेसे भी जन्तुशास्त्रके नियमके अनुसार वह जीवराशि रहित नहीं होता, यह बतलाकर जो जैनियोंका पानी छानकर पीना व्यर्थ बतलाया है, सो भी अज्ञता है। जैनी यही मानते है कि, छने हुए पानीमें भी असंख्य जीव रहते हैं। परन्तु गृहस्थ, और मुनि दो मार्ग जैनियोंके है। इनमेंसे गृहस्थ केवल उन जीवोंकी हिंसाका त्यागी है, जो छननेसे छन सकते है, और जिन्हें त्रसजीव कहते हैं। जो छननेसे भी नहीं छनते हैं, वे प्राय: एकेन्द्रिय संज्ञक जीव है। उनकी हिंसाके त्यागी मुनि होते है, जिन्हें आपके राष्ट्र और समाजसे कुछ प्रयोजन नहीं रहता। सच पूछो, तो जैनधर्मसे राष्ट्रकी जैसी सुखकर उन्नति हो सकती है, वैसी किसी भी धर्मसे नहीं हो सकती। राष्ट्रकी उन्नतिके लिये जिस धार्मिक जोशकी आवश्यकता है, वह जैनधर्मके अंश अशमें भरा हुआ है। आज जैनधर्मके अनुरूप लोगोंके आचार विचार होते, तो विदेशी अपवित्र वस्तुओंसे देशके बाजार नहीं भर जाते, और न यहांका व्यापार रसातलको पहुचता। ऐसी गिरी पडी दशामें भी जैनधर्म अपनी मर्यादाको रक्खे हुए हैं। सोडा ह्विस्की बिसकुट और डबल रोट खानेवाले लोग अब भी सारे जैनसमाजमें दो चारसे अधिक नहीं निकलेंगे। यदि जैनियोंके बारह व्रत अतिचार रहित पाले जावें, तो मनुष्य "इंडियन पिनलकोटकी" सम्पूर्ण दफाओंसे बरी रह सकता है। इसलिये जैनियोंके अहिंसामूलक व्रतोंके प्रचारसे राष्ट्र जैसा सुखशांतिमय हो सकता है, वैसा किसी प्रकारसे नहीं हो सकता। जो लोग अहिंसाधर्मको राष्ट्रकी अवनतिका हेतु बतलाते है, वे गलतीपर है।

महासभाका उपदेशक भंडार।

जैनगजटके भूतपूर्व सम्पादक बाबू सूरजभानजी वकील—देवबन्द महासभाके उपदेशक भंडारके मंत्री हुए हैं। आप काम करना जानते है, इससे आशा की जाती है कि, महासभाका यह खाता अब अच्छी पद्धतिसे चलने लगेगा और कुछ कर भी सकेगा। यथार्थमें काम करनेवालोंकी और उत्साही पुरुषोंकी हमारे समाजमें न्यूनता है, इसीसे प्रत्येक कार्य पडे हुए सिसकते रहते है, अन्यथा रुपया देनेवालोंकी कमी नहीं है। आन्दोलन किया जावेगा, तो उक्त भंडारमें यथेष्ट द्रव्य एकत्र हो सकता है। उपदेशकसरीखा उपयोगी खाता दूसरा नहीं है। यह सभाके सम्पूर्ण खातोंके हरे भरे रखनेका प्रधानद्वार है। इसकी

आवश्यकता और उपयोगिता प्रत्येक मनुष्य सहज ही समझ सकता है।

प्रान्तिकसभा बम्बईका उपदेशक भंडार

जबसे बम्बईसभाके उपदेशकोंका दौरा बन्द हुआ है, तबसे इस सभाके सम्पूर्ण द्वार रुक गये हैं। उपदेशकोंके दौरेसे सभाके प्रत्येक खाते डहडहे रहते थे, और लोगोंमें निरंतर धार्मिकस्फूर्ति बनी रहती थी। नित्य नये नये सभासद और जैनमित्रके ग्राहक बढते थे, पाठशालायें और सभायें स्थापित होती थीं, सिसकती हुई सभायें चैतन्यलाभ करती थीं, और नाना प्रकारसे समाज सुधार होते थे, परन्तु अब सब ओरसे शान्ति है। हम समझते है, कि हमारी सभाके कार्यकर्ताओंको तथा मुखिया महाशयोंको इन बातोंसे इतने दिनोंमें उपदेशकोंकी आवश्यकताका अनुभव हो चुका होगा। अब और भी सोते रहनेकी आवश्यकता नहीं है। अबके अधिवेशनपर इस खातेको पुन सजीवित करनेका प्रयत्न करना चाहिये। और अधिक नहीं, तो दो उपदेशकोंके दौरेका एक वर्ष भरके लिये प्रबन्ध हो जाना चाहिये। अंधकारमें पड़े हुए समाजको उजेलेमें लानेके समान दूसरा कोई पुण्यकार्य नहीं है।

दक्षिण महाराष्ट्र जैनसमाजमें विधवाविवाह

जैनियोंका कुछ भवितव्य ही ऐसा है कि, ज्यों ही उनकी कोई सस्था उन्नतिकी ओर कदम बढाती है, त्यो ही कोई ऐसा उपद्रव उठ खडा होता है कि, वह या तो नष्ट हो जाती है, अथवा उसकी जडमे अनैक्यका कीड़ा लग जाता है। कई वर्षसे दक्षिण महाराष्ट्रजैनसभा दिनपर दिन असाधारण उन्नति कर रही है, और आगे करनेके लिये उससे आशा भी है। परन्तु वर्तमानमे जान पडता है, उसके दिन कुछ बुरे आये है। उसके एक सुयोग्य और प्रतिष्ठित संचालक को विधवाविवाहकी ध्वनि समाई है। उन्हे अब प्राचीन ग्रन्थोंकी शोध करके उनका जीर्णोद्धार करनेसे सरस्वतीभडार स्थापित करनेसे, पाठशालायें खोलकर विद्या प्रचार करनेसे, धर्मविद्याकी उन्नति करनेसे, और बाल विवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय बन्द करनेसे समाजकी उतनी भलाई नहीं हो सकती, जितनी इस व्यभिचारके प्रचारसे होगी, यह तत्त्व सूझा है। इसलिये अबके महाराष्ट्रसभाके स्तवनिधिक्षेत्रके अधिवेशनपर जो ता. २९–३० को हुआ है, उन्होंने यह प्रस्ताव रक्खा है। प्रस्तावका परिणाम क्या हुआ, जब तक यह प्रगट नहीं हुआ है, तबतक हम इस विषयमें विशेष कुछ लिखना नहीं चाहते। परन्तु इतना कहे बिना नहीं रह सकते कि, इसका फल महाराष्ट्रसभाके लिये अच्छा नहीं होगा। लोग इस अन्याय कार्यसे सर्वथा विरुद्ध हो जॉवेगे, और उनकी श्रद्धा सभाके सचालकोंसे सर्वथा उठ जावेगी। अनैक्यके प्रतापसे एक विश्वस्त संस्था डगमगाने लगेगी।

जैनमित्रका आकार।

जैनमित्रके वर्तमान आकारसे अनेक सज्जन असन्तुष्ट हुए हैं। क्योकि फाईल रखनेमें जस पहले पुस्तकाकारमें सुभीता था, वैसा अब नहीं रहा है। असावधानीसे पृथक २ पन्ने खो जाते हैं। परन्तु अब जब वर्तमान आकारमें छह अक निकल चुके है, तब इस वर्षमे फिरसे पुस्तकाकार करनेसे दो प्रकारके फाइल हो जावेगे, जो बुरे दिखेंगे इस लिये पाठकोंको इस वर्षके अन्ततक इसी आकारमें संतोष करना चाहिये। आगामी वर्षमें यदि हमारे विचारके अनुसार यह साप्ताहिक हो गया, तब तो यही आकार रहेगा अन्यथा पुस्तकाकार कर दिया जावेगा। साप्ताहिक अवस्थामे पुस्तकाकार नहीं निकल सकेगा।

यनूरके गोमठस्वामी।

(लाला प्रभुदयालजी तहसीलदार–पानीपत लिखित)

सूबे मद्रासके मगलोर जिलेमे कारकलसे चौबीस मील और मूडबिद्रीसे ग्यारह मीलके फासलेपर यनूर जैनियोंकी एक पुरानी बस्ती है। यह स्थान समुद्र किनारेसे ४० मैल है। यहाके पुराने महलों और मकानोंके खडहरोंके देखनेसे मालूम होता है कि, यह स्थान किसी समयमें बहुत बडा शहर होगा।

गोमठ स्वामीकी प्रतिमा श्रवणबेलगुल और कारकलमें पहाडीपर हैं, परन्तु यहापर जो प्रतिमा गोमठस्वामीकी है, वह मैदानमे स्थित है। इस मनोज्ञ प्रतिमाकी ऊंचाई–उनतालीस फुट है। गुरपुर और नित्यवावदि ये दो नदियां मेंगलोर शहरको चारो ओरसे घेरे हुए हैं और उसको समुद्र किनारेसे अलग करती हैं। गुरपुर नदी नित्यवावदि नदीमें मिली है। गुरपुरके दक्षिणी किनारेपर एक ऊंचा चबूतरा है, जिसके पास पहाड़ी जमीनपर नदी अनुमान २० गजकी चौडाईसे बहती है। चबूतरा नदीकी सतहसे ५० फुट और जमीनसे ९ फुट ऊंचा है। इसी चबूतरेपर पत्थरकी दुमंजली वेदीपर भगवान् गोमठ स्वामीकी ३९ फुट ऊंची प्रतिमा खड्गासन विराजमान है।

चबूतरेपर चारों तरफ आठ फुट ऊंची चौखूंटी सफील है, जिसमें एक बडा सुन्दर छता हुआ दरवाजा है। यह प्रतिमा आदिनाथ भगवान्के पुत्र बाहुबलि महाराजकी है, जो चतुर्थकालके आदिमें सबसे प्रथम मोक्षको पधारे थे। इन्हींको गोमठस्वामी कहते हैं।

पश्चिमसे जब हम प्रतिमाकी ओर आते हैं, तो लहराते हुए दरख्तोंदार जंगलपरसे प्रतिमाजीका दृश्य बडा सुहावना मालूम पडता है। दूरसे मालूम होता है, कि प्रतिमाजी विराजमान हैं और उनके नीचे दरख्तोंसे ढका हुआ दहलान है, जिससे प्रतिमाजीका चबूतरा छुप जाता है। अहातेके एक कोनेमें दो उमदा स्याह पत्थरोंपर लम्बे लम्बे लेख खुदे हुए है।

प्रतिमाके कंधे अतिशय मनोज्ञ तथा मौजू हैं। जो बाजुओंके शुरूमे बहुत भारी है। हाथकी अँगुलिया घुटनोंतक पहुचती है। अगुलियोंके नाखून बडी कारीगरीसे बनाये गये है। जघा खूब सुडौल है। नाक तोतेकी तरह सुन्दर है, जिसके नथुने चौडे हैं। गरदन छोटी किन्तु मोटी है। गरदन और उदरमें तीन तीन बल है। छोटे २ घुघरारे बाल है। कान कधोंसे मिले हुए हैं। चरणोंके पंजे आठ फुट तीन इच लम्बे है। यह प्रतिमा पहाडोकी ओर मुह किये हुए ध्यानमें लवलीन है।

साठ वर्षमे एकवार इस प्रतिमाका अभिषेक समारंभ होता है। उस समय जैनी भाई पाड बाधकर दुग्धादि पंचामृतोंसे स्नपन और प्रक्षालन करते हैं। प्रतिमाका कुल वजन २२४० मन है। इसे प्रसिद्ध शिल्पकार जकनाचारीने जो कि केडालाका रहने वाला था, बनाई थी। जिस स्थानपर वर्तमानमें विराजमान है, उससे ४ मीलके फासलेपर यह प्रतिमा निर्माणकी गई थी। इतनी बडी प्रतिमाको इतने फासलेसे लाकर खडा करनेमें इंजीनियरीकी हद समझना चाहिये। इससे जैनियोंके शिल्पचातुर्यका अंदाजा किया जा सकता है।

यनूरमें और भी जैनमंदिर है। एक मंदिरमें

मनुष्यके कदके बराबर धातुकी श्रीशान्तिनाथ भगवान्‌की खड्गासन प्रतिमा है । इसकी ऊंचाई साढे सात फुट है । जिला की हुई चांदी और धातुकी एक वेदीमें यह प्रतिमा विराजमान है । वेदीपर तरह २ का मीनकारीका सुन्दर काम हो रहा है । इस वेदीके पास ही एक लेख खुदा हुआ है, जिसका मतलब यह है कि, "तीन लोकके नाथ सिद्ध भगवान् जयवंते रहो । उनका शासन सबको सुखदाई हो । वीर ठिमा राजा जो अजलरका महाज है और देवताओंका प्यारा तथा शानशौकतवाला है, उसने रविवारके दिन मीन लग्नमें सवत् १९२६ शालिवाहनमें (ईस्वी सन् १६०४ में) गोमठस्वामीके पास यह मंदिर बनवाया और दो जमीनें जिनकी तफसील दर्ज है और जिनमें ९२ मुद चावलोंका लगान आता है दी। इसके सिवाय ४९ मुहर मकुनरनय (Sanku Naranaya) में ४९ मुहर अप्पाजी (Appaji) में और १८० मुहर गोमटस्वामीके दूधसे अभिषेकके लिये जमा की जावें । जो कोई इस संकल्पको छीनेगा, उसमें गंगाके किनारे दशलाख गौके मारनेका पाप होगा।"

गांवकी ओर आगे बढ़कर दूसरे मंदिरमें स्याह संगमर्मरकी आठ फुट ऊंची खड्गासन प्रतिमा है। इसके पास ही एक छोटा मंदिर है, जिसकी इमारत सीधी सादी है । ऊपर खपरैलकी छत है, परन्तु भीतर जानेका दरवाजा पत्थरकी दीवारमें बना हुआ है, जिसमें आलादरजेकी कारीगरी और कोरनीका काम है । दरवाजेके पहलुओंमें और ऊपरकी तरफ लम्बे पतले स्याह सांप सरीखे लहरदार पत्थर लगे हुए हैं, जो फौलाद सरीखे सख्त और चमकदार है । इनपर बहुत बारीक और बढ़िया फूलपत्तीकी खुदाई हो रही है । भीतर दरवाजेके बीचमें एक शेरका सिर है, और दोनों तरफ गुलदस्ते है, जिनमें बारीक फूलपत्तीका काम निकाला हुआ है । दरवाजेके ऊपर दीवालमें बराबर ऊंचाईकी छह पद्मासन प्रतिमा है । और भीतर मंदिरमें एक ही प्रकारके स्याह पत्थरकी दो दो फुट ऊंची चौबीस तीर्थंकरोंकी २४ प्रतिमा है । प्रत्येक प्रतिमाके ऊपर एक एक सुन्दर महराव है । इसके पास ही एक छोटेसे मंदिरमें और भी एक आदिनाथ भगवान्‌की सुन्दर प्रतिमा पद्मासन विराजमान हैं ।

मंदिरके साम्हने चौमंजिले चबूतरेपर ३० फुट ऊंचा एक मानस्तभ है । यह नीचेकी तरफसे तिहाई ऊंचाईतक चौपहलू है । प्रत्येक पहलूपर एक दूसरेसे भिन्न तरह २ का बारीक काम है । तिहाईसे ऊपर इसके चार हिस्से हो गये है, पहला अष्टपहलू, दूसरा सोलहपहलू, तीसरा और चौथा साधा है । ऊपर सब तरफ एक एक तीर्थंकरकी प्रतिमा बनी हुई है । चोटी और मंडपपर अतीव सुन्दर बारीक काम हो रहा है । कुल मानस्तम्भ एक उत्कृष्ट श्रेणीकी शिल्पविद्या और सौन्दर्यका नमूना है ।

कारकलके गोमठस्वामी तथा अन्य मन्दिरों और तीर्थोंका हाल हम फिर कभी लिखेंगे।

दिगम्बरजैनपरीक्षालय बम्बई।

आजकल हमारे समाजमें धर्मोन्नति करनेका प्रयत्न जारी है । विद्वानोंने धर्मोन्नतिको ही मार्गप्रभावना नाम दिया है । रत्नत्रयात्मक सत्यार्थमार्गका प्रभाव प्रगट करनेको मार्गप्रभावना कहते है । मिथ्यात्व, रागद्वेष, काम, क्रोध, मान, माया, लोभ आदिकोंने अनादिकालसे हमको मलीन और विपरीत कर डाला है और रत्नत्रय आत्माका स्वभाव है । हमे चाहिये कि, अब हम परमागमका आश्रय लेकर मिथ्यात्वादिक दोषोंको दूर करके अपने रत्नत्रय स्वभावको निर्मल करें । इस प्रकारसे मार्गप्रभावनाका स्वरूप वर्णन किया गया है ।

परमागमके ज्ञान होने, मिथ्यात्वादिक दोष नष्ट करने, और रत्नत्रयस्वभावको पहचाननेके लिये अनेक साधन है । उनमेंसे वर्तमान समयमें जिसके प्राप्त करनेकी आवश्यकता है, वह धर्मशिक्षण इस रीतिसे दिया जावे कि, उसके साथ साथ व्यवहारज्ञान भी प्राप्त हो जावे । अपना व्यवहार, उद्योग और निर्वाह चलानेके लिये वर्तमान रूढीके अनुसार अंग्रेजीभाषाज्ञानकी भी आवश्यकता है । परन्तु व्यवहारज्ञानकी जितनी आवश्यकता है, उससे भी अधिक आवश्यकता धर्मशिक्षाकी है । क्योंकि हमें हमारे परमपूज्य धर्मका उपदेश देनेवाले और जगदुद्धारक धर्मतत्त्वोंको समझानेवाले पुरुष क्वचित ही प्राप्त होते हैं । हमारे धर्मग्रन्थोंमे ऐसी बातोंका समावेश किया गया है कि, यदि उन्हे हम लोग सम्यक्प्रकारसे समझें, तो इस लोकमें उनसे हमारा यश ही प्रगट न हो, बल्कि परलोकमें उत्तमगति भी प्राप्त होवे । द्रव्यप्राप्तिके प्रयासमें अपना वर्ताव कैसा रखना चाहिये, और प्राप्त हो जानेपर द्रव्यका उपयोग किस पद्धतिसे करना चाहिये, इसी प्रकार अन्यान्य नीतिशिक्षाओंका ज्ञान, ये सब बातें आरभसे धर्मशिक्षाके द्वारा समझी जा सकती है । इसलिये जगह २ पाठशालायें स्थापित करके धर्मशिक्षा देनी चाहिये, जिनके द्वारा अन्यजीवोंके मिथ्याभाव नष्ट हों, कषाय मन्द हो और ज्ञानवान् पुरुष तयार होवें । साथ ही व्यवहारकुशल होकर वे अपनी जीविकाका निर्वाह भी कर सकें ।

चारो दानोंमे ज्ञानदान श्रेष्ठ है । यह बात अब सारा समाज जानने लगा है । इस लिये जहा तहा पाठशालायें स्थापित हुई है । परन्तु उनका पाठक्रम सुनिश्चित और अल्पपरिश्रम विपुलफलवाला न होनेसे जैसा चाहिये, वैसा लाभ नहीं होता है और लोगोंमे उत्साह नहीं देखा जाता है। अत एव इन सम्पूर्ण पाठशालाओंका पठनक्रम एकसा रहै, विद्यार्थियोंकी परीक्षा ली जावे, उत्तीर्णपत्र और पारितोषिक देकर उनके उत्साह बढाये जावें, इसलिये दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बईने दिगम्बरजैनपरीक्षालय नामक संस्था स्थापित की है । इसकी नियमावली जैनमित्रके द्वारा बाट दी गई है । और आठ सज्जनोंकी एक कमेटी बनाई गई है, जिसके द्वारा पठनक्रम निश्चित हो कर प्रकाशित हो चुका है। उक्त पठनक्रमको प्रत्येक पाठशालाके व्यवस्थापकोंको जारी करना चाहिये, ऐसी प्रार्थना भी की जा चुकी है।

इस परीक्षालयका खर्च उत्तम रीतिसे निर्वाह करनेके लिये एक यथेष्ट फड स्थापित करनेका विचार आगामी गजपथजीके अधिवेशनपर होनेवाला है। हमारे समाजमे धनिकगण बहुत है । उन्हें इस परीक्षालयके विषयमे अवश्य ही विचार करना चाहिये। धर्ममार्गमें द्रव्य व्यय करनेवाले धनवान् यदि विद्वान् मनुष्य तयार करनेके इस महापुण्यकर कार्यकी ओर दृष्टिपात करें, तो शीघ्र ही कार्य सिद्ध हो सकता है।

रावजी सखाराम दोसी–मंत्री परीक्षालय।

तीर्थक्षेत्र व कमेटी

तीर्थक्षेत्र कमेटीको स्थापित हुए अरसा हुआ। इसमें संदेह नहीं कि, इसके जन्म लेनेमे क्षेत्रोंकी दशामे बहुत कुछ परिवर्तन हुआ व होनेकी आशा है लेकिन खेदके साथ लिखना पडता है कि, क्षेत्रो संबंधी एक मुख्य कार्यकी ओर उसका समुचित ध्यान नहीं है । कोई भी कार्य हाथमें लेनेसे यह

हर किसीको वांछा होती है कि, उसकी जानकारी उसे बखूबी व जल्दी हो जावे। यहां तक मुझे अनुभव है, कमेटीके दफ्तरमें व क्षेत्रोंपर न तो ऐसे नकशेही हैं कि, जिनसे क्षेत्रका सही २ हाल एक नजरसे मालूम होवे और न कोई ऐसा इतिहास तवारीख या लेख ही है कि, जिससे क्षेत्रसबंधी कुल हाल मालूम हो सके। यह बात मुझे पूर्ण आशा है, सर्व भाईयोंको मंजूर होगी कि इन दोनों बातोंकी निहायत ही जरूरत है और वगैर इनके किसी समय हम पर हमारी संतान वह दोषारोपण करेगी, जो हम अपने पूर्वजोंपर करते हैं। साथ ही यह भी मुमकिन है कि, जो हाल क्षेत्रसंबंधी आज मालूम हो सकता है, वह बादको लुप्तप्राय हो जावै। मंत्री—तीर्थक्षेत्रकमेटीको इस ओर ध्यान देनेकी आवश्यकता है। यह ठीक होगा कि पहिले हरक्षेत्रका अलहदा अलहदा नकशा व इतिहास तयार कराया जावै और बादको कुल हिंदुस्थानके क्षेत्रोंकी इकजाई तयार की जावै। खर्चा जो इस काममें पडेगा नकशों व किताबोंकी विक्रीसे पूरा हो सकेगा।

एक शुभचिंतक।

पांच प्रस्ताव।

श्रीमती दिगम्बरीयजैनप्रान्तिकसभा बम्बईके चतुर्थ अधिवेशनके लिये, जो श्री गजपंथजीपर माघ शुक्ल १३ को होनेवाला है, ग्यारह प्रस्ताव जैनमित्रके गत चौथे अंकमें प्रकाशित हो चुके हैं। उनके अतिरिक्त निम्नलिखित प्रस्ताव और भी होने चाहिये।

(१) सभाका वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष होना चाहिये और आगामी वर्षके लिये योग्य स्थान और तिथि अभीसे नियत हो जाना चाहिये।

(२) विना उपदेशकके न तो सामाजिक उन्नति हो सकती है और न धर्मोन्नति। इसलिये इस प्रान्तिकसभाको उचित है कि वह कमसे कम दो योग्य उपदेशकोंका प्रबंध करे।

(३) प्रान्तिकसभाने अभी तक पुराने मन्दिरोंके जीर्णोद्धारका कोई भी प्रबंध नहीं किया है और मन्दिरोंकी अवस्था दिनो दिन बिगडती जाती है, इसलिये मंदिरोंके जीर्णोद्धारके लिये एक मन्त्री नियत किया जाय और वह तीर्थक्षेत्रकमेटीका दायाद समझा जाय।

(४) जिन आचार्योंने अपना आत्मकल्याण छोडकर केवल हमारे कल्याणके लिये बडे परिश्रमसे ग्रन्थ बनाये हैं, उनकी कृति विना हमारी सहायताके प्राय लोप होती जाती है। ऐसे अनेक उत्तमोत्तम ग्रन्थ हैं। जो आज उपलब्ध नहीं हैं। यदि हैं, तो कर्नाटकीय द्राविडीय लिपियोंमें है, इस लिये उनके उद्धार करनेके लिये एक कार्यालय खोलना चाहिये, जिसमें जो ग्रन्थ दूसरी लिपियोंमें हैं, वे नागरी लिपिमें लाकर एकत्र किये जाय। इसके लिये एक मन्त्री नियत किया जाय, जो अलभ्य ग्रन्थोंको तलाश किया करै और नकल कराकर शारदालयमें स्थापन कर उसकी शोभा बढाया करै उसके खर्चका भी पूरा पूरा प्रबंध हो जाना चाहिये। निश्चय समझिये कि, यह प्रस्ताव अत्यावश्यक है।

(५) चूंकि जैनियोंके मुनि परमदिगम्बर होते हैं। परन्तु रियासतोंके सिवाय अंग्रेजी राज्यमें नग्न फिरनेकी मनाई है। इसलिये उन्हें नग्न फिरनेके लिये सरकारसे प्रार्थना कर हुक्म लेना चाहिये, जिससे हमारे मुनियोंको सब जगह विहार करनेका सुभीता हो जाय और मुनि होनेकी प्रणाली बन्द न हो जावे।

लालाराम जैन।

पुस्तकसमालोचन।

कन्याविक्रय—दोसी माणिकचन्दजी रावजी-फलटण लिखित और जैनवाङ्मय प्रकाशक मंडली-द्वारा जैनभूषणप्रेस—कुरुंदवाडमे मुद्रित। पुस्तक मराठी भाषामें है। विषय नामहीसे प्रगट है। इसमें कन्याविक्रयकी बुराइया खूब जोशीले शब्दोंमे दिखलाकर इस दुष्प्रथाके उठानेके लिये उपदेश दिया गया है। कन्याविक्रयके घनिष्ट सम्बन्धी वृद्धविवाहकेभी दो तीन बडे चटपटे उदाहरण दिये हैं। समाजमे ऐसे निबन्धोंके प्रचार करनेकी बहुत जरूरत है। इस निबन्धमें एक जगह "स्वयवरकी प्रथा किस प्रकारसे चली" इसकी अटकल लगाते हुए लिखा है कि, "इसके पूर्वमें लोग वधूवरकी जोडीकी ओर कम ध्यान देते थे और एक सुन्दर बालिका किसी अक्षरशून्य अथवा बलहीन पुरुषके गले बाध दी जाती थी, और फिर दूसरे राजा अथवा अधिकारी लोग सुन्दर स्त्री देखकर उस बलहीनसे उसे जबर्दस्ती छीन लेते थे। सो इस अनाचारको बन्द करनेके लिये स्वयवरकी प्रथा चली होगी।" परन्तु यथार्थमें यह अनुमान ही है। आगमके अनुसार इसके पहले अर्थात् चौथे कालकी आदिमें विवाह होता ही नहीं था। स्त्रीपुरुषका जोडा ही उत्पन्न होता था। लेखकने उक्त अटकल लगाकर वर्तमानमें भी स्वयंवरकी प्रथा प्रचलित करनेका उत्तेजन दिया है, जो एक प्रकारसे असंभव है। सामान्यत पुस्तक पढ़ने योग्य है।

जैनस्तोत्रसंग्रह दूसरा भाग—काशीस्थ यशोविजय श्वेताम्बरजैनपाठशालाद्वारा यह ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। उक्त पाठशालासे एक **श्रीयशोविजय जैन ग्रन्थमाला** नामक संस्कृत सीरीज प्रकाशित होती है, उसका यह नवम ग्रन्थ है। इसके पहले ८ उत्तमोत्तम व्याकरण न्यायादिके ग्रन्थ इस सीरीजमें प्रकाशित हो चुके है। पाठशाला प्राचीन ग्रन्थोंका उद्धार करनेके लिये यह बहुत अच्छा प्रयत्न कर रही है। श्वेताम्बर समाजमें इस प्रकारकी और भी दो तीन ग्रन्थमालाओंके द्वार उद्धार हो रहा है, परन्तु खेद है कि, हमारे दिगम्बरी समाजमें इसका सर्वथा अभाव है। इस स्तोत्रसग्रहमें सब मिलाकर १९ स्तोत्र हैं। कोई २ स्तोत्र सटीक हैं। बहुत उत्तम २ स्तोत्र हैं। पहले स्तोत्रके सबके सब श्लोकोंमें भोज्य पदार्थोंके नाम आये हैं, उनमें हम यहा पर एककी नकल करते है:—

कंकोडायनमाडस्य ददत कर्म दाहकम्।
काकडीभिश्चकारेला विषय नो जिन जनः ॥५॥

एक स्तोत्रके प्रत्येक पदमें **सारंग** शब्दका सैकडों अर्थोंमें प्रयोग किया है। श्रीपुष्पदन्तस्तोत्र केवल एक-स्वर चित्रमें बनाया गया है। सम्पूर्ण स्तोत्र श्वेताम्बराचार्योंके हैं। एक पार्श्वजिनाष्टकस्तोत्र श्रीपद्मनन्दिमुनिरचित दिगम्बरियोका है, जो श्वेताम्बराचार्यकी टीकासहित मुद्रित है। प्रकाशकने इसे अपना ही समझके सग्रह किया है। ग्रन्थ खूब मोटे कागजोंमें शुद्धतासे छपा है। मूल्य १) अधिक नहीं है।

दि इंडियन नेशनल कांग्रेसका बावीसवां अधिवेशन।

इक्कीस वर्षसे हमारे भारत वर्षके जुदे २ नगरोंमें कांग्रेसके जल्से होते हैं। यह उसका बावीसवां वर्ष पूरा हुआ है। अभी तक यह शिक्षित लोगोंका वार्षिक मनोविनोद अथवा लाख दो लाख रुपयेको पानी बना देनेका कौतुक समझा जाता था। परन्तु अब अब इसमें सच्चे स्वदेशी आन्दोलनका प्रवेश हुआ है, तब यह भारतवासियोंकी एक बडी भारी शक्ति बन गई है। अब भारतवर्षके कल्याणकी इससे बहुत कुछ आशाकी जाती है। इस वर्ष इसके अधिवेशन

१२ प्रवालभस्म, सूर्यपुटी प १
१३ प्रवालभस्म, चंद्रपुटी प १
१४ मधुमडूर ... ... म ३
१५ मौक्तिकभस्म स ३०
१६ मडूरभस्म (बालमडूर) स १
१७ मृगशृंगभस्म स ॥
१८ रौप्यभस्म कृष्ण क ४
१९ कांतलोहभस्म क १०
२० तीक्ष्णलोहभस्म क २
२१ स्वर्णमाक्षिलोहभस्म क २
२२ वंगभस्म ... म २
२३ शौक्तिकभस्म स १
२४ शंखभस्म ... म -॥-
२५ सुवर्णमाक्षिकभस्म म २
२६ हरितालभस्म ... अ ५
(सुवर्ण, रौप्य, लोहभस्मयुक्त.)

२ रसायनें. एक तोला मू.

२७ अग्निकुमार म १
२८ अग्नितुंड म १
२९ अर्श कुठार क ३
३० अश्वकंचुकी,(घोडा चोळी) क ४
३१ अश्विनीकुमार म ४
३२ आनंदभैरव,(अतिसार) फम १॥
३३ आनंदभैरव, (खोकीपर) म १॥
३४ इच्छाभेदी जक १
३५ उन्मत्तरस ... क १॥
३६ एकांगवीर ... क ६
३७ कामदुधा ... स ४
३८ कालकूट . . अ ५
३९ कृमिकुठार ... म १॥
४० क्रव्यादरस . क २
४१ गर्भपालरस ... म ३
४२ गलत्कुष्ठारिरस . म ५
४३ गुल्मकालानल ... म ३
४४ गंडमालाकंडनरस ... म २
४५ गंधकरसायन न. १ क ३
४६ गधकरसायन न २ ... म -॥-
४७ ग्रहणीवज्रकपाट ... क १२
४८ ग्रहणीकपाट ... म १॥
४९ चतुर्मुख ... क १०
५० चंद्रकला ... ... म ६
५१ चंद्रशेखर(बालज्वरहर) म ५
५२ चंद्रोदयवर्ति क १
५३ चौसष्टी पिंपळी ... अ ३
५४ पूर्णचंद्रोदयमात्राखल्वी क १५
५५ जलोदरारी . ... अ ३
५६ ज्वरमुरारि ... . स १॥
५७ ज्वरांकुश ... ... म १॥
५८ त्रिभुवनकीर्ति . म २
५९ तृष्णाप्रशमन ... स २
६० दरदपुटपाक . फक २
६१ नवज्वरेभसिंह ... म २
६२ नारसिंहरस ... क ६
६३ नित्यानंदरस . म २
६४ पाशुपतास्त्ररस ... क १५
६५ पंचवक्ररस ... क ३
६६ पंचामृतपर्पटी . . म ४
६७ प्रतापलंकेश्वर ... स २
६८ प्रदररिपु ... म १
६९ प्रदरारि ... क १
७० प्रबोधांजन ... क १
७१ प्रमदानंदरस ... फम १॥
७२ प्रवाळपंचामृत ... स ५
७३ बालसूर्योदय ... क ९
७४ बालार्क ... म १
७५ बोलबद्ध ... स २
७६ बृहच्छंखवटी ... क २
७७ भूतभैरव ... क ४
७८ महाज्वरांकुश ... म २
७९ महामृत्युंजय म २
८० माणिकरस (खस्वी म २
८१ मेहातक रसायन म ६
८२ मृतसंजीवनी . अ १५
८३ मृत्युंजय म २
८४ राजराजेश्वर ... क ३
८५ राजमृगांक ... अ १२
८६ रामबाणरस ... म १॥
८७ लघुमालिनीवसंत म १॥
८८ लक्ष्मीविलास . क १५
८९ लोकनाथ .. म ३
९० वडवानल .. म २
९१ वसंतकुसुमाकर क १०
९२ महावातविध्वंस क ४
९३ वातविध्वंस ... म २
९४ वातरक्तांतक .. म ४
९५ वातराक्षस ... क १२
९६ वातारि फक २
९७ वातिहृद्रस ... म २
९८ विश्वतापहरण .. क ३
९९ वेतालरस . क २
१०० वैश्वानरलोह . क ३
१०१ वैष्णवीवर्ती क २
१०२ शीतांकुश ... क २
१०३ शुद्धशिलाजतु ... स २
१०४ शूलकुठार .. म २
१०५ शोथारि ... अक २
१०६ शंखवटी . म ॥
१०७ श्वासकुठार ... म २
१०८ सन्निपातभैरव .. अ ३
१०९ सिद्धलक्ष्मीविलास क १५
११० सिंदूरभूषण . म ६
१११ सुवर्णपर्पटी .. क १५
११२ सुवर्णमालिनीवसंत क ६
११३ बृहत्सुवर्णमालिनीवसंत क १२
११४ सूतशेखर .. म ४
११५ सूतिकाभरण ... क १२
११६ स्मृतिसागर क ६
११७ हेमगर्भ क १५
११८ हेमाभ्रकरससिंदूर क १५
११९ क्षयकुठार . क ५

३ कूपिपक्व रसायनें. तो. मू.

१२० अष्टधातुरसायन अ १०
१२१ त्रिपुरभैरव ... अ ६
१२२ रससिंदूर ... अ ६

१२३ मल्लसिंदूर ... अ ६
१२४ रसमिंदूर .. म १
१२५ व्याधिहरणरसायन अ ६
१२६ समीरपन्नग ... अ ६
१२७ सुवर्णराजवंगेश्वर म ६

४ गुग्गुल, गुटिका-वटिका.

१२८ आदित्यवटिका १ तो स-॥-
१२९ कर्पूरादिवटि स -॥-
१३० काकायनगुटिका म -॥-
१३१ कैशोरगुग्गुल . म ।=
१३२ खदिरादिगुटिका स ॥--
१३३ गोक्षुरादिगुग्गुल म -।=
१३४ चंद्रप्रभागुटिका स १॥
१३५ जातीफलादिगुटिका स १
१३६ डाळिंबपाकगुटिका स ॥-
१३७ त्रिफलागुटिका४तो स १
१३८ दुर्जलजेता स १
१३९ द्राक्षादिगुटिका ४तो स -।-
१४० नागाच्या गोळ्या १तो म २
१४१ नागामृतगुटिका तो१ क ४
१४२ पुनर्नवादिवटिका म ।=
१४३ महायोगराजगुग्गुल म १॥
१४४ योगराजगुग्गुल स -॥-
१४५ रसेंद्रवटि ... म ३
१४६ लवणादिवटिका म ॥
१४७ लसूणवटिका ... म -।-
१४८ लोहगुग्गुल म -॥-
१४९ शिलाजतुगुटिका स २
१५० सप्तविंशतिगुग्गुल म ।=
१५१ संजीवनीगुटिका म १०
१५२ सिंहनादगुग्गुल म १

५ चूर्ण, एक तोळेका मू.

१५३ अजमोदादिचूर्ण म ८८-
१५४ अभयादिमोदक म -
१५५ आमलक्यादिचूर्ण म ८-॥
१५६ एलादि चूर्ण ... स ८-॥
१५७ कक्लबर चूर्ण .. म ८-॥
१५८ चित्रकादिचूर्ण,बृहत् क ८=
१५९ चित्रकादिचूर्ण, लघु क -॥
१६० चोपचिन्यादिचूर्ण न १ म ।
१६१ चोपचिन्यादिचूर्ण न. २ म ८=
१६२ तालिसादि चूर्ण म ८=
१६३ त्रिफळाचूर्ण ... स ८-
१६४ नवायसचूर्ण . क -
१६५ नाराचचूर्ण ... म -
१६६ नारायणचूर्ण ... म =
१६७ पंचसमचूर्ण ... क -
१६८ भास्करलवणचूर्ण म =
१६९ मधूकादिचूर्ण ... स -॥
१७० महाखांडवचूर्ण ... म -॥
१७१ लवणादिचूर्ण न २ स -
१७२ लवणादिचूर्ण नं १ म ।=
१७३ लाईचूर्ण . . क ≡
१७४ वृद्धगंगाधरचूर्ण म =
१७५ शुंठीपुटपाक ... म -
१७६ सारकचूर्ण म -॥
१७७ सारकपाचकचूर्ण म -॥
१७८ सारिवादिचूर्ण ... स -
१७९ सीतोपलादिचूर्ण म -॥
१८० महासुदर्शनचूर्ण स -॥
१८१ सुदर्शनचूर्ण लघु...स -
१८२ हिंगाष्टकचूर्ण क -

६ अवलेह-पाक पक सेरका मू.

१८३ अगस्तिहरीतकी अवलेह स ४
१८४ अमृतपाक ... स ५
१८५ अमृतभल्लातकपाक क ४
१८६ अश्वगंधपाक .. स ४
१८७ आर्द्रकावलेह ... क ३
१८८ एरंडपाक म ४
१८९ कुटजावलेह ... स ६
१९० कुबेराक्षपाक ... म २
१९१ कूष्मांडावलेह ... म ३
१९२ कूष्मांडपाक बड्या म ४
१९३ कदर्पपाक ... म ३
१९४ गोखरूपाक फक १६
१९५ चोपचिन्यादिपाक म ३
१९६ च्यवनप्राशावलेह स ४
१९७ जिरेपाक... ... स ३
१९८ द्राक्षापाक ... स २
१९९ पक्वाम्रपाक .. स ३
२०० पाषाणभेदपाक . . म ४
२०१ बदामपाक ... म ३
२०२ भूकूष्मांडपाक ... म ३
२०३ मधुपक्कहरीतकी ... म ५
२०४ माषादिमोदक•... स ३
२०५ मंजिष्ठावलेह स ३
२०६ रिंगणीअवलेह ... म ६
२०७ लसुनपाक ... म २॥
२०८ वासावलेह ... स ६
२०९ विडंगादिपाक ... म २॥
२१० शाल्मलीपाक ... प ३
२११ सालंमिश्रीअवलेह स ५
२१२ सालमिश्रीपाक बड्या स ४
२१३ सूरणपाक ... म २॥
२१४ सौभाग्यसुंठपाकबड्या म ३

---

७ आसव व अरिष्ट। एक एक सेरका मूल्य।

२१५ आरोग्यमिश्रण . क ५
२१६ उशीरासव ... स २
२१७ कुटजारिष्ट क ३
२१८ कुमारीआसव प्रकार १ ला, (विजयाबुरवारी हरडे) म ४
२१९ कुमारीआसव प्रकार २ रा, (भांगयुक्त) १० तो. क १०
२२० कुमारीआसव प्रकार ३ रा, (बच्चोंके लिये) . म ३
२२१ कुमारीआसव प्रकार ४ था, (शूलपर रोग) ... म ३
२२२ कूष्मांडासव ... म २
२२३ खदिरारिष्ट ... क ३
२२४ चविकासव ... क ३
२२५ त्रपुसारिष्ट ... म ३

२२६ दशमूलारिष्ट .. म ५
२२७ दशमूलारिष्ट मिश्रण७क ५
२२८ देवदार्वारिष्ट, ... क ३
२२९ द्राक्षारिष्ट, मधुयुक्त क ३
२३० द्राक्षारिष्ट, शार्ङ्गधर म ३
२३१ पलाशपुष्पासव . म ३
२३२ पिप्पल्यासव ... म ३
२३३ पुनर्नवासव .. म ३
२३४ बब्बूलारिष्ट म ३
२३५ मधूकारिष्ट क ८
२३६ रोहितकारिष्ट म ३
२३७ लोध्रासव .. म ३
२३८ लोहासव . ... म ३
२३९ विडंगारिष्ट म ३

---

८ सत्त्व, क्षार व द्राव।

एक तोलेका मूल्य.

२४० कचोऱ्याचे सत्व .. स / तो रु
२४१ गुळवेलसत्व .. स -।-
२४२ आघाडा अपामार्गक्षार अ -॥-
२४३ अडुळसा, आटरूषक्षार अ -॥
२४४ केळ (कदली) क्षार क -॥
२४५ चिंचाक्षार .. क -॥-
२४६ चित्रकक्षार ... क १
२४७ तिलक्षार क १
२४८ निवडुंग(स्नुहा) क्षार क ॥-
२४९ पळस(पलाश) क्षार क -॥-
२५० पिंपळ (अश्वत्थ) क्षार क १
२५१ बहावाक्षार ... क १
२५२ यव (जव) क्षार क -॥-
२५३ रिंगणी क्षार ... क -॥
२५४ रुई (अर्क) क्षार क १
२५५ वज्रक्षार न १ ताम्रयुक्त अ २
२५६ वज्रक्षार न २ क -॥-
२५७ शस्त्रद्राव न १ अ ३
२५८ शस्त्रद्राव न २ क १

९ घृत.

२५९ चित्रकादिघृत ८ तो म १
२६० दशमूलघृत ८ तो स १
२६१ पचगव्यघृत ८ तो स १
२६२ फलघृत २ तो स -।=
२६३ महातिक्तघृत १ तो म ८=
२६४ सूर्यपाककासीसादि घृत २ तो म -।=

---

१० तैल

२६५ कडुनिंबबीजतेल ८ तो स १
२६६ कपूरतेल १ तो स -।
२६७ कासीसादितैल २ तो म -।-॥
२६८ चंदनबलालाक्षादि तेल ८ तो प १
२६९ ज्योतिष्मतीतैल १६ तो म १।
२७० तुवरकतेलमिश्रण १६ तो . स-॥-
२७१ नपुसकत्वपर तेल२तो म १
२७२ नारायणतेल ८ तो स १
२७३ निर्गुण्ड्यादितैल१० तो म १
२७४ बिल्वतैल २ तो .. स । ॥
२७५ बृहन्मरीच्यादितेल८तो क १
२७६ भृंगराजतेल २ तो. स ।-॥
२७७ लवंगादितैल ८ तो क १
२७८ वातनाशकतेल १० तो म १
२७९ विडंगादितेल ८ तो म १
२८० विषगर्भतेल ८ तो क १
२८१ व्रणपर तेल ४ तो. म । ॥

११ मलहम.

२८२ उपदंशावर मलम १ तो क।
२८३ खरजेच मलम १ तो. म ।
२८४ गजकर्णमलमकुपी क ।
२८५ जाळवातावर मलम ४ तो ... स ।
२८६ पारदादिमलम १ तो क ।
२८७ मंजिष्ठादिमलम ८ तो, स १
२८८ मगजशुद्धि ४ तो स ।

१२ अर्क दर ६० तो. बा. स

२८९ कृमिविकारपर अर्क स ॥।
२९० गुळवेल अर्क . स ॥।
२९१ बडीशोप अर्क स ॥।
२९२ ब्राम्ह्यादि अर्क ... म १

---

१३ अनुभविक औषधियां।

२९३ अर्दितावर चूर्ण १ तो म ≈
२९४ अपस्मारावर नस्य१ तो. क॥
२९५ आमांशाच्या गोळ्या १ तो फ स ॥
२९६ आमांशावर केशरी गोळ्या १ तो फ क २
२९७ आम्लपित्ताचे चूर्ण१तो. स =
२९८ आम्लपित्तावर गो १४ म ।
२९९ आम्लपित्तमिश्रण शेर म ३
३०० आरोग्यचूर्ण ४ तो स ।=
३०१ उटणें, कडु व कुष्ठ इत्यादिपर ४ तो म । ॥
३०२ उन्हाळ्याचे औषध तो म ।
३०३ उपदंशावर औषध गोळ्या १८ क १
३०४ ओषधि माला ४ तो स ।
३०५ औषधि विड्या २५ नग स≈
३०६ कर्णरोगाचे औषध १ तो म ।
३०७ कामोद्दीपक गोळ्या १४ म १
३०८ कैंम येण्याचें औषध१तो स ।
३०९ कृमिनाशक गोळ्या ७ म =
३१० कृमिविकारावर चूर्ण म =
३११ कृमिविकारावर (विडंगादि) चूर्ण १ तो ज स =
३१२ खोकल्याचे चाटण १तो स≈
३१३ खोकल्यावर गोळ्या १तो स ।
३१४ गाठीवर लेप १ तो क =
३१५ गोराचनमिश्रण१ तो स २
३१६ अधिक सन्निपातावर अर्क २० तोला ... स ।=

आप सेवनविधि वगेरह हिंदीमें छपाकर हिंदोस्तानके भाइयोंपर भी कृपा करें तो बडा उपकार हो। परन्तु उनका कारखाना इजनकेद्वारा चलनेपर भी आजतक उत्तर हिंदोस्थानकेलिये कुछ भी उपकार नहीं कर सके। गतवर्ष फिर भी प्रार्थना कियी गई तो उन्होंने लाचार होकर इसके उपाय करनेका भार हमारे ही ऊपर डाल दिया। लाचार सब साधारणके हितार्थ हमको भी यह कार्य इस समय अपने सिरपर लेना पडा है—

इस कार्यालयमें ४६८ प्रकारकी दवाइयां तैयार हे जिनके गुण व सेवनविधिकी एक बडी भारी पुस्तक मराठी भाषामें छपी हुई है, उसका अनुवाद करके लाख पचास हजार छपानेमें अभी बहुत विलम्ब है इस कारण फिलहाल दवाइयोंके नाम मात्र लिखकर प्रार्थना करते हे कि—

डाक्टरी अपवित्र दवाइयोंसे धर्मभ्रष्ट न हूजिये, और इन दवाइयोंको मंगाकर शीघ्र ही लाभ उठाइये,

आपको जो कोई रोग हो उसकी दवाई जितने मूल्यकी अर्थात् १) रुपयेसे लगाकर १००) रुपयेतककी चाहिये मगा लेवें इस कारखानेसे गरीब अमीर सबके सेवन करने योग्य सर्व प्रकारकी दवाइयें तैयार है-सूचीपत्रमें जो मूल्य छपा दिया है वही मूल्य सबसे लिया जाता है—मूल्य सब जगहके कारखानोंसे कम रक्खा गया है सो मिलान कर देखनेसे ज्ञात होगा।

यदि आपको अपने रोगका निश्चय न हो, तो आधा आनेका टिकट भेजकर हमसे एक रुग्णपत्रिका फार्म मगाइये। उसमें जो जो प्रश्न किये गये हैं, उन सबका उत्तर लिखकर भेजनेसे उक्त कारखानेके वैद्योंसे आपके रोगका निर्णय कराके उसके आराम होने लायक जितने कम मूल्यकी दवाई आप चाहेंगे, उनका नाम वगैरह लिखकर भेज दिया जायगा। यदि आपकी आज्ञा होगी तो दवाई भी तत्काल व्हेल्युपेबलसे भेज दी जायगी।

आशा है कि, आप इस कारखानेकी पवित्र दवाइयोंसे एकवार मगाकर अवश्य ही फायदा उठावेंगे।

दवाईके आगे बडे अक्षरोंके चिन्ह लिखनेका अभिप्राय।

प—चिन्हवाली दवाइयें, अतिशय सौम्य (ठंडी) हैं चाहे जिस समय सेवन करना परन्तु अत्यंत शीतके समय तथा अग्निमांद्य हो तो नहिं लेना चाहिये। इसमें अवगुण कभी नहिं होगा।

स—चिन्हवाली दवाइयें सोम्य है. चाहे जिस समय सेवन करो अवगुण कुछ नहिं होगा।

म—चिन्हवाली दवाइयें मध्यम उष्ण (गर्म) हैं प्रात काल ही सेवन करना चाहिये।

क—चिन्हवाला दवाइयें उष्ण हे जानकार मनुष्यकेद्वारा इनका प्रयोग सायंकाल वा रात्रिको होना चाहिये प्रात कालमे भी कभी कभी सेवन करना चाहिये।

अ—चिन्हवाली दवाइयें—अतिशय उष्ण हे वैद्य ही रोगीके पास बैठकर इनका प्रयोग करें. ये तत्काल गुण करती है. दिनमे दुपहरको तथा गर्मीके दिनमे विशेषावश्यकता होनेपर यत्नके साथ देना चाहिये।

फ—चिन्हवाली दवाइयें अफीम सहित हें केवल जुलाब बंद करनेकेलिये उपयोग कियी जाती हैं।

ड—चिन्हवाली दवाइयें नेत्रोंमें डालनेकी हैं. इनके सिवाय दूसरी दवाइयें नेत्रोंमें कदापि नहिं लगने देना चाहिये।

ज—चिन्हवाली दवाइयें जुलाब करानेकी हैं

वर्णानुक्रमसे दवाइयोके मराठी नाम व मूल्यादि।

१भस्मे १एक तो. की. रु.

१ अभ्रकभस्म (सहस्रपुटी)अ६०
२ अभ्रकभस्म साधारण म १५
३ कपर्दिभस्म .. म ।≈
४ कासीसभस्म . म ॥
५ जसदभस्म . डम २
६ ताम्रभस्म . क ३
७ त्रिवंगभस्म ... क ३
८ नागभस्म . ... क ३
९ पित्तलभस्म ... क १॥
१० प्रवाळभस्म, अग्निपुटी न. १स २
११ प्रवाळभस्म, अग्निपुटी न. २स १

सिवाय आढत और बट्टावके खरीद भावपर मूल्य बढाना चोरी व धोकाबाजी नामका महापाप समझा जाता है। इसीकारण हमको आढतके नीचे लिखे नियम बनाने पडते हैं।

आढतके नियम।

१। एक रुपयेसे दश रुपये तकके कई प्रकारके फुटकर माल दूर दूरके बाजारोंसे खरीदकर भेजनेमें बडा परिश्रम और समयका व्यय होता है। इसकारण १०) रुपयेतकके मालपर आढत कुछ भी नहीं ली जायगी किन्तु जिस पदार्थके खरीद करनेमें जो कुछ परिश्रम व समय खर्च होगा उसीके अनुसार खरीदीपर दाम चढाकर भेजा जायगा अर्थात् किसी पदार्थमें एक आना रुपया और किसी पर दो आने रुपया और किसी २ पदार्थमें अधिक परिश्रम करना पडेगा तो चार आने रुपयातक भी चढाया जायगा परन्तु माल पहुचने पर मिलान करके देखेंगे तो जो पाव आना रुपिया आढत लेकर माल भेजते हैं उनसे अधिक सस्ता पडा, ऐसा मालूम होगा यह बात किसी भी प्रकारका माल मगाकर परीक्षा करनेसे मालूम हो जायगी।

२। और जो महाशय १०)रुपयेसे अधिक २५)रुपये तकका माल मगावेंगे उनसे बाजार भावपर एक आना रुपया आढत लेकर सर्व प्रकारका माल भेजा जायगा। और २६) रुपयेसे १००) रुपयेतकके मालपर आधा आना रुपया आढत ली जायगी।

३। जो महाशय सौ रुपयोंसे अधिकका माल मगाना चाहें उन्हें उस मालका नाम लिखकर आढतका नियम मगाना चाहिये। सौ से अधिक मगानेवालोंको बहुत किफायतसे थोडी आढत लेकर माल भेजा जायगा।

४। पाँचरुपयेसे अधिक माल मगानेवालोंको चोथाई रुपये मनीआर्डरसे फरमायसके साथ पहिले भेजने होंगे—शेष रुपये वी. पी. के द्वारा अदा कर लिये जायगे।

५। जो महाशय शीघ्र ही माल मंगाना चाहें वे फरमायसमें मालका व्योरा अच्छी तरहसे लिख दे और "इतने मूल्यतकका मिलै तो भेजना नहीं तो जवाब देना" इस प्रकार लिखना चाहिये। माल डाक-पार्सल द्वारा भेजा जाय वा रेलपार्सलसे, सो व्योरे वार लिखना चाहिये। जो महाशय खुलासा आर्डर नहिं भेजेंगे उनको हम कोई भी माल शीघ्र पहुचानेके जुम्मेवार न होंगे किन्तु उनको जवाब देकर पूछा जायगा और फिरसे आज्ञापत्र आनेपर माल भेजा जायगा।

६। फरमायस भेजनेवालोंको जबाबी कार्डमें अथवा आध आनेकी टिकटसहित पत्र भेजना चाहिये। वैरंग पत्र किसीका भी नहिं लिया जायगा।

७। पत्र व्यवहार स्पष्ट हिंदी देवनागरी (बालबोधी) अक्षरोंमें होना चाहिये। उर्दू और मुडी अक्षरोंमें जो पत्र आवेंगे वे रद्दीमें फेंक दिये जायगे।

३। तीसरा कार्य-पनवेलके धूतपापेश्वर आरोग्यमंदिर नामके आर्यौषधि कारखानेकी ४६८ प्रकारकी स्वदेशी पवित्र दवाइयां भेजनेका विभाग है।

मुम्बईके निकट समुद्रकी खाडीकेपार रत्नागिरी नामक एक पहाडी जिला है इसमें पनवेल नामका एक कसबा है। इसके आसपासके पहाडोंमें हजारों प्रकारकी जगली दवाइयें व जडी बूटियें मिलती हैं सो पनवेलके एक सुप्रसिद्ध वैद्यराजने-बबई प्रान्तमें बिलायती महा अपवित्र मास मदिराकी बनी हुई डाक्टरी दवाइयोंके-द्वारा धर्मसे भ्रष्ट होते हुये भारतवासियोंका बचानेके-लिये मजबूत पायेके साथ पवित्र दवाइये बनानेका कारखाना सवत १९५२में खोला था-जिसकी शास्त्रोक्त बनी हुई तत्काल गुणदायक पवित्र और सस्ती दवाइयोंका आज यहातक प्रचार हुआ है कि बबई प्रान्तमें ऐसा कोई भी कसबा वा ग्राम न होगा जहाँ कि इस कारखानेके एजेन्ट नहीं हों। इन दवाइयोंके प्रभावसे सैंकडों अनपढ भी वैद्य बन गये हैं। और सर्वसाधारणको इन दवाइयोंसे लाभ पहुचाते रहते हैं। परन्तु खेद है कि इस कारखानेकी दवाइयोंका सूचीपत्र वा **औषधिसेवन विधि** वगैरह सब इस्तहार व कागजात महाराष्ट्रीय भाषामें होनेके कारण उत्तर हिंदुस्तानके भाई इस अपूर्व लाभसे अबतक बचित रहे हमने कई वर्ष पहलेसे इस कारखानेकी अनेक दवाइयें स्वय व अपने मित्र दोस्तोंकेद्वारा आजमानेसे प्रार्थना करते रहे कि

३१७ चित्रकादि लेप १ तो म ‌/
३१८ चदनी तेलाचें औषध न १ सृजाकपर १ तो स १
३१९ चदनी तेलाचें औषध न २, १ तो .. स ।=
३२० जीर्णज्वरनाशकगोळ्या १६ ... स १
३२१ डोळ्याचें अजन तो १ डम ।
३२२ डोळ्यात फिरविण्याची सलाई एक नग डप ।
३२३ डोळ्यावर लेप तो डप =
३२४ त्वग्रोगावर १४ गोळ्या म १
३२५ त्वग्रोगावर मलम १६ तोलेका . स १
३२६ दतमजन कर्पूरमिश्र २॥ तो शीशी ... स ।
३२७ दतमजन सैंधवमिश्र ४ तो. स ।
३२८ पाचकचूर्ण किंवा गो तो क=
३२९ पिचकारीचें औषध१ना म ।
३३० पीनसावर चर्ण ८ तो. म १
३३१ पीनसावर हुगण्याचें औषध० स ।
३३२ पोटावर लेप ४ तो स ।
३३३ बालजीवन १० तो स ॥/
३३४ बाळकडू बाटली२॥ तो स≡
३३५ बाळगोळ्यान १ नग २५स ॥
३३६ बाळतकाढा बाटलीस म ॥=
३३७ बाळतरोगावर (नारळाचे पोयातील) औषध २८ गोळी . . म ५
३३८ मोंवळेवर चूर्ण १नें स /॥
३३९ मधुमेहावर आषध१ना म ५
३४० महामारावर गोळ्या१६ क =
३४१ मुखपाकावर गोळ्या तो स /
३४२ मूळव्याध व नळाश्रित वायूवर मलम १ तो स ।-
३४३ मूत्ररेचकचूर्णशिलतुमह १ तो ... स ।
३४४ मेदोरोगावर औषध१तो म-॥-
३४५ वातनाशकलेप न १तो ८म=
३४६ वांतीवर औषध १तो स ॥-
३४७ विजयावटिका १ तो म १
३४८ व्रणरोगावर चूर्ण ४ तो क१
३४९ शिब्याच औषध न १ तोला २ क=
३५० शिब्याचे औषध न २ तोला २ म=
३५१ शिरोरोगावर १६ गो म -।-
३५२ सुजेवर लेप २ तो स =
३५३ सुर्मा डोळ्यास १ तो स १
३५४ सुलभप्रसूतीवर औषध २॥ तो . स -॥-
३५५ स्वप्नावस्थेवर चूर्ण ८ तो स १
३५६ हिवतापावर १० गो. म -।

—०—

१४ उपयुक्त तयार औषधियां.

३५७ आरोग्य डब्बीका स ।=
३५८ ओदुबरावलेह शेराम म २
३५९ कांतलाचूर्ण १ तो जम /
३६० काजूचे तेल १ तो स /
३६१ कपित्थावलेह १शेरका स १।
३६२ कूष्माण्डावलेह १शेरका स १।
३६३ गुलकद १ शेरका स १।
३६४ गुलकद मिश्रीका १ शेरका . . १॥
३६५ गुलाबी सरबत बाटली स-।≡
३६६ चातुर्जातावलेह १शेरका म २
३६७ जम्बावलेह १ शेरका स १।
३६८ उत्तरामिश्रण १ शेरका स १॥
३६९ ज्येष्ठीमधशिरा २ तो प =
३७० तारुण्यपीठिका (मुरम्या। यावर ओषध२ तो स ।
३७१ दाडिमावलेह १ शे प २
३७२ दाडिमावलेह खडीशक्करका १ शे. प २॥
३७३ पाचकपानक शे क १॥
३७४ पीनसावर हुलास तो क ।=
३७५ पेट्रुबादार (पेट्रुमाश्रा)तो म १
३७६ बदामके तेल २ तो. स ।-
३७७ बेलाचा मुरांबा शे म १।
३७८ महालुग अवलेह शे स १॥
३७९ मध जुना ३ वर्षांचा १शे. १।
३८० मोरावळा मध्यम शे म १।
३८१ मोरावळा मोठा शेरका म २
३८२ रसाजन उत्तम तो स ।
३८३ वाकेरीचें भातें तो स ।
३८४ हरडा सुरवारी .. स
नग १,१।, १॥,१॥।, २ तोलेका कीमत / /॥ ≡ ।= ॥।

१५ काढे.

ज्वरादि रोगानुक्रमसे काढोंके नांव व गुण.

७ पुडियाकी किंमत रु

३८५ लोहित चदनादि काढा ।/
३८६ क्षुद्रादि काढा ।/
३८७ पर्पटादि काढा ।=
३८८ अर्कादि काढा ... ।=
३८९ अभयादि काढा ... ।=
३९० तिक्तादि काढा ।≡
३९१ सरस्वत्यादि काढा ... ।=
३९२ शठ्यादि काढा .. ।/
३९३ द्वात्रिंशाग बत्तिसा काढा ॥
३९४ चतु षष्टि—चौसष्टी काढा ॥।
३९५ नवज्वरावर काढा . . ।≡
३९६ भार्ङ्यादि काढा ।/
३९७ मधूकादि काढा ... ।=
३९८ शानज्वरावर काढा ... ।=
३९९ हिवतापावर काढा ।=
४०० चातुर्थिकावर काढा ... ।=
४०१ किरातादि काढा ... ।=
४०२ मारिवादि काढा ... ॥
४०३ द्राक्षादि काढा ... ।=

४०४ उलटणाऱ्या अरावर काढा	॥=	४२६ महाराजादि काढा	॥	४४७ नीलोत्पलादि काढा ...	।≡
४०५ ग्रंथिकादि काढा ...	।≡	४२७ राजसप्तक ...	।-	४४८ महामांजिष्ठादि काढा	-॥=
४०६ धान्यादि काढा ...	।-	४२८ राजाद्वादश आमवातु	।≡	४४९ मध्यममांजिष्ठादि काढा	-।≡
४०७ अमृतादि काढा	।≡	४२९ गृध्रसी व उरुस्तंभ पर काढा ...	।=	४५० लघुमांजिष्ठादि काढा	-।-
४०८ बिल्वफलादि काढा ...	।=			४५१ रक्तविकारावर काढा	॥
४०९ जीरकादि काढा ...	।≡	४३० शतपुष्पादि काढा	।=	४५२ खदिराष्टक ...	-।=
४१० उशीरादि काढा ...	।=	४३१ दशमुलादि काढा .	-।=	४५३ सप्तपर्णादि काढा ...	-।=
४११ खदिरादि काढा ...	।=	४३२ चित्रकादि काढा	-।=	४५४ जात्यादि काढा .	-।=
४१२ त्रिफलादि काढा ...	।=	४३३ पाषाणभेदादि काढा	-।=	४५५ वासादि काढा ..	-।=
४१३ अटरूषादि काढा ..	।=	४३४ गोक्षुरादि काढा ...	-।≡	४५६ पथ्यादि काढा .	।=
४१४ कश्मर्यादि काढा ...	।≡	४३५ शताव्हादि काढा	-।=	४५७ निंबादि काढा	-।≡
४१५ पचमूलादि काढा	॥	४३६ फलत्रिकादि काढा	।≡	४५८ अनंतादि काढा ...	-।=
४१६ अतिबलादि काढा	॥	४३७ विशालादि काढा	-।≡	४५९ अश्वगधादि काढा ..	-।=
४१७ आमलक्यादि काढा ...	।≡	४३८ अर्जुनादि काढा ...	।≡	४६० गुडूच्यादि काढा ..	।=
४१८ भाङ्गर्यादि काढा ...	।=	४३९ पाटादि काढा ...	-।≡	४६१ शतावर्यादि काढा ..	।=
४१९ अक्षादि काढा ...	।=	४४० पुनर्नवादि काढा .	-।≡	४६२ देवदार्व्यादि काढा ...	।≡
४२० रेणुकादि काढा ...	।=	४४१ रोहितकादि काढा .	।≡	४६३ जतिबलादि काढा	।≡
४२१ यष्ट्यादि काढा	।≡	४४२ एरंडमूलादि काढा ..	।-	४६४ लवंगादि काढा	।≡
४२२ दुस्पर्शादी काढा ...	।-	४४३ काचनारादि काढा ...	।=	४६५ दार्व्यादि काढा ...	।≡
४२३ चदनादि काढा .	।=	४४४ वरुणादि काढा ...	।≡	४६६ दशमूलादि काढा ...	।≡
४२४ आम्रादि काढा ...	।≡	४४५ हरीतक्यादि काढा ...	।=	४६७ दूर्वादि काढा	।=
४२५ अर्धांगवायुपर काढा .	।≡	४४६ त्रिफलादि काढा	।≡	४६८ शिरीषादि काढा ...	।=

नये समाचार ।

विदित हो कि–हमारे यहा एक तौ **जैनग्रंथरत्नाकर कार्यालय** है जिसकेद्वारा प्राचीन जैनग्रथोंका जीर्णोद्धार और प्रचार करनेके सिवाय जैनपाठशालाओंके लिये पाठ्य पुस्तकें तैयार करके विद्योन्नतिके कार्यमें सहायता देना है ।

इसके अतिरिक्त एक कार्य **स्वदेशीकार्यालय बंबई**के नामसे **सर्वसाधारणविभाग** है । जिसके द्वारा शुरमा दवाइयें घडियें वगेरह बंबईके बाजारमें मिलनेवाले सर्वप्रकारके देशी विदेशी पदार्थ भेजनेका कार्य करना नियत है परन्तु यह कार्य बहुपरिश्रम, व बहुद्रव्यसाध्य है तथा विश्वासी मनुष्योंके विना इसके करनेमें बदनामीका भय है इसके चलानेवाले योग्य पुरुषकी अप्राप्तिके कारण हमने आजतक सिवाय अपने बनाये हुये शुरमे भेजनेके और कोई भी कार्य प्रारभ नहीं किया था परन्तु अब हमने सर्व प्रकारका सुभीता होनेके कारण इस **स्वदेशीकार्यालयसे** तीन कार्य चलानेका प्रबंध किया है ।

१ प्रथमकार्य शुर्माविभाग है—हमारे कार्यालयसे आज १० वर्ष हुये उत्तम गुणकारी शुरमा तैयार होकर वह सर्व साधारण व खासकर जैनी भाइयोंमें प्रसिद्ध हो गया है जिनजिन महाशयोंने हमारे यहासे एकवार एक शीशी मँगाई वे आजतक हमारा ही शुरमा मगाते है और अपने दोस्तोंके लिये भी मगा देते हैं इस कारण हमने इसके विशेष इस्तहार न देकर जो भाई इस शुरमेसे अपरिचित हैं उनको इसके प्रत्यक्ष गुण दिखानेकेलिये **सर्वप्रकारके शुरमेकी २००० शीशियें विना मूल्य** बतौर नमूनेके वितरण करनेका प्रबंध किया है. सो जिनको इस शुरमेसे अपने अमूल्य नेत्रोंकी रक्षा करना हो, वे नीचे लिखे शुरमोंमेंसे चाहे जिस प्रकारके शुरमेकी एक शीशी मगा लेवें परतु डाकखर्च और पेकिंग खर्चके लिये ≈), आनेके टिकट चिट्ठिके साथ अवश्य ही भेजने होंगे एक–भाईको एकही शीशी भेजी जायगी ।

***काला शुर्मा नं० १** यह शुर्मा हमेशह नेत्रोंमें लगानेसे सब रोग वा आखोंकी गर्मी नष्ट करके ज्योतिको बढाता है । मूल्य आधे तोलेकी शीशीका ॥) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

***काला शुरमा नं० २** इस शुरमेको प्रात काल और सोते समय लगानेसे नेत्रोंके सब रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं । मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

***सफेद शुरमा नं ४** इस शुरमेको सवेरे और शामको चार बजे लगाकर ५ मिनिटके बाद नं० २ का ठढा शुरमा लगाया जावे तो धुंद नजला हाक्मिन्दता रतौंदा आदि नेत्रके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं असली मधुसे (शहदसे) सलाई भिजोकर अथवा शुरमेको मधुमें मिलाकर सलाईसे लगाया जावे तो एक वर्षतकका फूला भी प्राय कट जाता है. परंतु शहद असली न होगा और उसमें खांडकी चासनी वगैरह मिली होगी तो उल्टा नुकसान करैगा मूल्य डेढ मासेकी शीशीका १) नमूना १ मासा ।

***नयनामृत अर्क नं. ८** मूल्य ।) नमूना मुफ्त ।

तरल शुरमा(अर्क)न. ९ मूल्य॥) दुखती आंखों के लिये । वृद्धों व विधवा स्त्रियोंकेलिये ।

दूसरा कार्य.

सर्व प्रकारका माल भेजनेकेलिये एक विश्वासी आढत विभाग है—इसकेद्वारा शुरमा केशर, पुस्तकें और दवाइयोंको छोडकर–मुम्बइके बाजारमें मिलनेवाले स्वदेशी, विदेशी–रेशमी, सूती, ऊनी सर्व प्रकारके कपडे, बनियान, घडियें चाकू, कैंची, खिलोने, दावात, कलमें हैंडिल कागज, बाजे सर्वप्रकारका किराना मनिहारी वगेरह माल नीचें लिखे नियमानुसार आढत लेकर बाजारमेंसे जाचके साथ खरीदकर भेजा जाता है । आजकल एजेंसियोंकी भरमार है आढत भी १०) वा २०) रुपयेके मालपर पाव आना रुपये तककी लेते हैं परन्तु मालके मूल्यपर खरीदी मालसे प्राय सवाया केवल दाम लगाकर भेजते हैं, जिससे ग्राहकोंको बहुत महगा पड़ जाता है । हमारे यहां

कलकत्तेमें ता० २६-२७-२८ २९को हुए। भारतके सबे हितचिन्तक मि. दादाभाई नौरोजी कांग्रेसके सभापति हुए थे। आपका स्वागत बम्बई और कलकत्तेमें ऐसी धूमधामसे हुआ जैसा आजतक शायद ही किसी दूसरे पुरुषका हुआ होगा। कांग्रेसके मडपमें १२ हजार मनुष्योंके बैठने योग्य और तीन हजार मनुष्योंके खड़े रहने योग्य स्थानका प्रबन्ध किया गया था। परन्तु पहले दिन ही इतनी जनता बढ़ी कि, कई हजार श्रोताओंको खड़े होनेको भी जगह नहीं मिली। पहले दिन स्वागतकमेटीके सभापति मि० रासविहारी घोष और सभापति मि० दादा भाई नौरोजीके प्रभावशाली व्याख्यान हुए। दूसरे तीसरे चौथे दिन मि० डबल्यू. सी. बनर्जी आदि भूतपूर्व सभापतियोंके शोक प्रकाश, ट्रान्सवालमें भारतके सैनिक खर्चका विरोध, शासन और न्याय विभागका अलग करना, वकफके लिये दानमें दी जानेवाली मिलकियतोंकी व्यवस्था, बगभंगका विरोध, आफ्रिकामें भारतवासियोंपर जो अन्याय होता है उसका प्रतिवाद, भारतका सैनिक खर्च घटना चाहिये, साहित्य—व्यापार और कारीगरीकी शिक्षा भारतीय ढग पर प्रजाकी सम्मति अनुसार दिये जानेकी प्रेरणा, जमीनका महसूल कम किया जावे, राज्य कार्योंमें देशी अधिक भरती किये जावे, यहाकी प्रजाको प्रारंभीय शिक्षा मुफ्तमें और जबरदस्ती दी जावे, विदेशीबहिष्कार और स्वदेशीआन्दोलन देशी व्यापार और कारीगरीकी वृद्धिके लिये उपयोगी है, मि० गोखलेको धन्यवाद, सिविल सर्विसकी परीक्षा हिन्दुस्थानमें हो, और कांग्रेसकी नवीन व्यवस्था, ये प्रस्ताव खूब विवेचनाओंके साथ पास किये गये।

कांग्रेसके साथ साथ सन् १९०१ से एक प्रदर्शिनी भी प्रतिवर्ष खोली जाती है, इसमें सब प्रकारकी देशी कारीगरी और उद्योगकी चीजें दिखाई जाती है। अबकी बार इस प्रदर्शनीमें इतनी चीजें सग्रह हुई है कि, उसके लिये २२ एकड जमीन रोकनी पड़ी है। प्रदर्शनीकी गलियोंकी लम्बाई ही सब मिलाकर तीन मील हो गई है। दर्शक लोग इतने अधिक आते हैं कि, डेढ़ दो लाख तक लोग उनके टिकटोंका ठेका ले लेनेको तयार थे। गत २१ दिसम्बरको यह प्रदर्शिनी लार्ड मिंटोके हाथसे खोल दी गई और २६ जनवरी तक खुली रहेगी।

जिस समय प्रदर्शनीका प्रारंभ हुआ था, उस समय यह निश्चय हुआ था कि, प्रदर्शनीमें केवल देशी वस्तुएं ही दिखलाई जाया करेंगी, परन्तु ऐसे विलायती कलपुर्जे, डाक्टरी औजार आदि भी जिनसे भारतके शिल्पको सहायता मिल सके, रख नेमें कोई हानि नहीं है। किन्तु अब भारतवासियोंको विलायती वस्तुएं इतनी असह्य हो गई हैं कि, वे सहायताके रूपमें भी उन्हें देखना नहीं चाहते। इस वर्षकी प्रदर्शनीमें ऐसी बहुतसी चीजें रक्खी गई थीं, और प्रदर्शनीके भीतर जो दूकानें खोली गई थीं, उनकी सजावटमें अनेक विदेशी वस्तुओंका उपयोग किया गया था, इससे चिढ़कर बगाली अनेक दूकानोंको उखाड डालनेको तयार हो गये थे और बड़ी अशान्ति फैला दी थी। बड़ी कठिनतासे प्रदर्शनीके सैक्रेटरी मि० ए चौधरीने उन्हें शान्त किया था। कांग्रेसका मंडप स्वदेशीवस्तुओंसे तयार हुआ था। कुर्सियां वगैरह सब स्वदेशी थीं।

कांग्रेसमें इस वर्ष दो पक्ष खड़े हो गये हैं, एकको हम अपनी भाषामें स्वावलम्बी और दूसरेको परमुखापेक्षी कह सकते हैं। स्वावलम्बी पक्षवाले कहते हैं कि, हमको अपने पैरोंसे खडा होना चाहिये, स्वदेशी शिल्प तथा व्यापारकी वृद्धि करना चाहिये और विदेशीमालको छूना भी नहीं चाहिये। इससे हमारी शक्ति बढ़ेगी, और सरकार हमको झखमारके स्वराज्यका हक देगी। दूसरे पक्षवाले कहते हैं, हमारी सरकार न्यायप्रिय है, पार्लीमेंटमें लिबरल (प्रजा) पक्षका जोर बडा है। इसलिये हम युक्तिपूर्वक प्रार्थना करेंगे, तो सरकार हमारे हकको अवश्य देगी। स्वदेशीशिल्पव्यापारकी उन्नतिपर हमको ध्यान रखना चाहिये। परन्तु विदेशीवस्तुओंका बहिष्कार करना अच्छा नहीं है। इसके विरुद्ध स्वावलम्बी पक्षवालोंका कथन है कि, विना विदेशी बहिष्कारके हमारी उन्नति ही नहीं हो सकती और न सरकारकी दृष्टिमें हमारा महत्व बढ सकता है। मि. तिलक, बाबू विपिनचन्द, मि खापर्डे आदि स्वावलम्बी पक्षके अगुआ है। प्रदर्शनीमें विदेशीसत्कार उन्हें बहुत बुरा लगा है, इसलिये उन्होंने उसके विरुद्ध बडी बडी सभायें करके प्रदर्शनीसे बायकोट करनेका उत्तेजन खूब बढाया है। वे खुल्लमखुल्ला कह रहे हैं कि, कांग्रेस यदि विदेशी बहिष्कारके विरुद्ध होगी, तो हमें कांग्रेससे सम्बन्ध छोड देना पडेगा। इस स्वावलम्बी पक्षका बडा जोर बढ रहा है। जितने प्रभावशाली नेता पुरुष है, वे सब इसीमें मिल रहे है। दूसरे पक्षमें बहुत थोड़े आदमी हैं, इससे अन्तमें स्वावलम्बी पक्षकी ही जय होनेकी संभावना है।

प्रदर्शनीने इस वर्ष बहुत विस्तृत तथा प्रभावशाली रूप धारण किया है। उसके निरीक्षणसे जान पड़ता है कि, एक वर्षमें देशी शिल्पने बहुत उन्नति की है। कांचका सामान, चिनी मिट्टीके बरतन, नानाप्रकारके कपड़े, दियासलाई, सिगरेट, साबुन, आदि चीजोंकी तयारी बढ़ रही है। अशिक्षित कारीगर भी भापसे चलनेवाले यंत्र तथा अनाजसे भूसा निकालने आदिकी कलें तयार करने लगे हैं। देशमें नानाप्रकारके उत्तम २ कपड़े तयार होने लगे हैं। लोगोंका ध्यान इसीप्रकार बना रहा तो बहुत शीघ्र उन्नतिकी आशा है।

इस लेखको प्रेसमें दे चुकनेके पीछे विदित हुआ कि, कांग्रेसके मुखियाओंमें एकता हो गई। विदेशीबहिष्कार बंगालप्रान्तके लिये स्वीकार हुआ। जब तक बंगभंग रद्द न हो जावे, तब तक यह जोरसे चलाया जावेगा।

बम्बई—चंदावाडी } नाथूराम प्रेमी।
२९—१२—०६ }

पत्रोंका सार।

विमानोत्सव। पिंडरई (मंडला) में पौष वदी ९ से ११ तक विमानोत्सव बडे आनन्दके साथ हुआ। हर्ष है कि, यहाके भाइयोंने बडे परिश्रमसे एक नाटकमडली तयार की है, जिसमें नाना प्रकारके जैन धर्मोपदेशक कौतुक हुआ करते हैं। परोपकारी भाइयोंकी इस कृतिसे सब साधारणको भी लाभ पहुंचता है। परन्तु खेद है कि, पूजन प्रभावनादि अंगोंकी ओर भाइयोंका ध्यान बहुत ही कम है। विद्याभ्यास की प्रथा तो बहुत ही कम है, इसकी वृद्धि करना चाहिये। यहाके भाइयोंको चाहिये कि, एकमत होकर एक जैनपाठशाला स्थापित करें। जब तक कोई योग्य शिक्षक न मिलै, तब तक श्रीमान् सेठी रामलालजी अध्यापकीका कार्य करें। मेरी इस योग्य प्रार्थनापर अवश्य ही ध्यान देना चाहिये। जहा धनधान्यादिसे परिपूर्ण ४० घर जैनी भाइयोंके है, वहां पाठशाला नहीं होगी तो और कहां होगी? २०—१२—०६। मोहनचन्दसघी-फैमोरी

त्यागीकी मृत्यु। यों तो संसारमें जिसने जन्म लिया वह मरणको प्राप्त होवेगा ही, परन्तु परोपकारी जीवोंका मरण कष्ट कर होता है। गत महीनेमें हमारी जातिके भूषणरूप पूज्यवर त्यागी बाबा लालमणिजी खतोली (मुजफ्फरनगर) में उसी कालके कवर बन गये। जैनियोंमें कोई विरला ही होगा, जो आपको न जानता हो। आप एक एक महीनेके निर्जल उपवास करते थे। बाबाजीकी तपवृत्ति

और कायक्लेश देखकर लोगोंको आश्चर्य होता था। आपके परलोकवाससे जैन समाजमें सच-मुच एक लालमणि ही उठ गया है। जैनी भाइयोंको विशेषकर देहली, मेरठ, मुजफ्फरनगर सहारणपुर, आदि स्थानवालोंको जहां कि वे अपने धर्मोपदेशकी सविशेष वर्षा किया करते थे, उनके यादगारमें कोई स्मारक स्थापित करना चाहिये। मेरी रायमें एक "लालमणि औषधालय" जिसमें सब प्रकारकी प्रासुकऔषधियां गरीब रोगियोंको दी जाया करे, उनकी स्मृतिका एक बहुत अच्छा चिन्ह होगा। देखते हैं, कहांके कृतज्ञ भाई इस कार्यके करनेमें अग्रगण्य होते हैं। **ज्योतिः प्रसाद ए जे**

उपदेशविज्ञप्ति। **खादू**—यहां १०० घर जैनियोंके और १ जैनमंदिर है। पूजन शास्त्रादिका प्रबंध ठीक कराया। निर्माल्यखानेवालेसे प्रक्षाल छुडाया। २ व्याख्यान हुए। **सुगाड़ा**—१९ घर एक जैनमंदिर है। शास्त्रोपदेशसे धर्मकी दृढता कराई। **घाटोल**—१०० घर और १ जैनमंदिर है। पूजन शास्त्रका प्रबंध ठीक है। स्वाध्यायादि कई भाई करते हैं। पाठशालाके विषय उत्तेजन देनेसे तत्काल ही २००) वार्षिक चन्दा हो गया। अध्यापककी तलाश है। **पारोदा**—६० घर और एक जैनमंदिर है। पूजन शास्त्र समयपर होता है। धर्म विषयका व्याख्यान हुआ। एक स्त्री अच्छी जानकार है। **नरनारी**—४६ घर १ जैनमंदिर है। अष्टमी चतुर्दशीको पूजा होती है। दो व्याख्यान देकर पूजन तथा शास्त्रश्रवणके नियम कराये। **मतवाला**—१९ घर १ मंदिर है। एकता है। प्रक्षाल होता है। निर्माल्यभक्षी करता था, सो बंद कराया **पाटशोला**—६० घर और एक मंदिर है। एकता है पूजन शास्त्रका प्रबंध कराया। **कुकापुर**—१० घर और १ मंदिर है। पूजन प्रक्षालका प्रबंध कराया। प्रक्षाल निर्माल्य खानेवाला करता था,। इस प्रान्तभरमें यही हाल है। **कस्तूरचन्द**—उपदेशक।

जिनबिम्बोत्सव देहली—प्रथम भगवानकी सवारी नये मंदिरसे रथमें विराजमान करके दरीबेमें होकर घंटाघर होती हुई पहाडीपर पहुंची। वहांके मंदिरमें विराजमान होकर दो घंटेमें लौटी। रास्तेमें पद भजन आदि भगवानके, रथके आगे होते आये। गवर्णमेंटकी आज्ञासे हाथी रथके आगे चलता था। हाथी शहरमें ले जानेका सर्व साधारणको हुक्म नहीं है। पौषवदी २ को यह उत्सव हरसाल होता है।

रामस्वरूप बद्रीप्रसाद—मज्जर।

दिगम्बरजैनमहासभा और जैन-यंगमेन्सएसोशियेशनका अधिवेशन।

(एक प्रतिष्ठित सम्वाददाताद्वारा प्राप्त)

तारीख २४-२५-२६ और २७ दिसम्बरको महासभा और एसोसियेशनके जल्से हुए। ता०२४ को सबेरेकी रेलसे सभापति सा० लाला रूपचन्दजी रहीस, सहारणपुरसे पधारे। आपका स्वागत स्टेशनपर बड़ी धूमधामसे हुआ। ललुआ और बरवान स्टेशनतक वालटियर लोग लेनेके लिये गये थे। जिस समय गाडी आई, उस समय दर्शकोंकी बड़ी भीड़ थी। प्लेटफार्मपर बनात बिछाई गई, बैंड-बाजा बजाया गया और रिसेप्शन कमेटीके सभापति बाबू धन्नूलालजीके द्वारा कमैटीके तरफसे अभिनन्दन-पत्र दिया गया। इसके पश्चात् बडे उत्साह और धूमधामसे सभापति सा० शहरमें लाये गये और निश्चित स्थानपर ११ बजे दिनके सुशोभित किये गये। अनुमान १०० गाडिया आपके साथ २ चलती थीं। इसके अतिरिक्त महासभा और एसोसियेशनके अनुमान २०० प्रतिनिधि बाहरसे आये, जिनके लेनेके लिये वालटियर हर ट्रेनपर उपस्थित रहे। ठहरनेके लिये धर्मशालायें खाली कराई गई थीं, और गरमजल, बिछौना तथा रसोई वगैरहका सब प्रबन्ध बहुत उत्तम रीतिसे किया गया था।

इसी दिन एसोसियेशनकी पहली बैठक हुई। दिनको एक बजे जल्सा शुरू हुआ। सभामडप बहुत अच्छा सजाया गया था। प्रथम प० गुलजारीलालजीने मंगलाचरण किया। पश्चात् अभ्यर्थनासमितिके अध्यक्ष बाबू धन्नूलालजीने एड्रैस दिया। आपका व्याख्यान ललित तथा प्रौढभाषामें बहुत ही उत्तम हुआ। इसके पीछे महासभा और एसोसियेशनकी ओरसे सभापति लाला रूपचदजी और उपसभापति बाबू धन्नूलालजी निर्वाचन किये गये। फिर सभापतिसाहबका व्याख्यान होकर जनरलसैक्रेटरीद्वारा एसोसियेशनकी और बाबू कीर्तिप्रसादजी बी. ए. द्वारा स्त्रीशिक्षा-खातेकी रिपोर्ट पढ़ी गई। पश्चात् एसोसियशनकी सब्जैक्ट कमैटी (प्रस्तावनिर्मापक) निर्वाचन की गई, जिसमें एसोसियेशनके कारगुजारोंने अपनी इच्छानुसार नाम चुने। परन्तु इसपर अनेक भाइयोंने एतराज किया और कहा कि, इसमें कुछ पडित और उत्साहियोंके नाम अवश्य होना चाहिये। थोड़ेसे नाम लिखकर भी पेश किये गये। इसका अनुमोदन मुंशी बाबूलालजी बी ए. एल, एल, बी. ने बड़ी योग्यतासे किया, परन्तु खंडवाके बाबू माणिकचन्दजी बी. ए. इसके विरुद्ध हुए। बहुत वाद विवादके पश्चात, आखिर वे सब नाम मंजूर किये गये। इस प्रकार कमैटीका पहला जल्सा पूरा हुआ।

फिर रातको महासभाकी कमैटीके बाद एसोसियेशनकी सब्जैक्टकमैटी बैठी। खास २ सज्जन एकत्र हुए, दिनमें जो नाम पास हुए थे, वे भी गये। कई प्रस्ताव सुननेके पश्चात् बाबू पदमराजजीने दो प्रस्ताव पेश किये। एक तो यह कि, "जो महाशय जैनधर्मको नहीं जानते हैं, वे धर्मविषयपर जो लेख या पुस्तक लिखें, वह निम्नलिखित पडितोंमेंसे किसी एकको विना दिखाये न छपावें। प० पन्नालालजी न्यायदिवाकर, प० गोपालदासजी बरैया, प० मेवारामजी खुर्जा, पंडित गुलजारीलालजी कलकत्ता, प० गनेशीलालजी बनारस, और प० नरसिंहदासजी अजमेर" इस पर बहुत आन्दोलन हुआ। लेकिन अन्तमें सब्जेक्ट कमेटीने शेठ हीराचन्द नेमिचन्दजी शोलापुर, तथा बाबू अजितप्रसादजी एम ए लखनौ ये दो नाम बढाकर एसोसियेशनकी ट्रेक्ट कमेटीके नियमोंमे यह नियम शामिल करके पास किया। दूसरा प्रस्ताव यह कि, "यगमेन्स एसोसियेशन अपने मेम्बरोंमें दर्शन स्वाध्यायके प्रचारकी कोशिश करे और इसकी रिपोर्ट हरसालके अधिवेशनपर सुनावे।" लेकिन इन दोनों प्रस्तावोंपर बाबू माणिकचन्द बी ए. और बाबू चेतनदासजी बी ए. ने बहुत विरोध किया। इसपर कई घंटेतक आन्दोलन हुआ। परन्तु आखिर प्रस्ताव शामिल किया गया। इसके बाद हिसाबनिवारिणीसमिति बनाई गई, जिसके वास्ते चन्दा किया गया। बहुतसा रुपया इकट्ठा हुआ।

दूसरे दिन ता० २५ को महासभाकी बैठक हुई। पहले दिनकी अपेक्षा अधिक मनुष्य इकट्ठे हुए। प० गणेशप्रसादजीने मगलाचरण किया। मुंशी चम्पतरायजीने गतवर्षकी रिपोर्ट सुनाई। पश्चात् शेठ माणिकचन्दजीकी प्रेरणासे और उन्हींके द्रव्यव्ययसे एक दि० जैन डाइरेक्टरी तयार करानेका निश्चय हुआ, बाबू सूरजमानजी वकील इसके मंत्री नियत किये गये। पश्चात् एक विद्याप्रचारिणी समिति स्थापित की गई, जिसके पं० मेवारामजी, शेठ हीराचन्द नेमिचन्दजी आदि ११ मेम्बर नियत हुए। तदनन्तर लाला जुगमन्दिरदासजी रहीस नजीबाबाद महासभाके सहायक महामंत्री नियत किये गये। उनके दफ्तर खर्चके लिये एक हजार रुपया मंजूर हुआ। पश्चात् नियमावलीके संशोधनके लिये ७ महाशयोंकी एक कमेटी बनाई गई, कानपुरकी बिम्बप्रतिष्ठा पर महासभाका नैमित्तिक अधिवेशन स्वीकार हुआ और विदुषी मगनबाईको स्वर्णपदक दिया गया। अन्तमें कानपुरके एक बालकका और पं० मेवारामजी खुर्जावालोंका व्याख्यान होकर सभा विसर्जन की गई।

इसी दिन रातको ७ बजे फिर एसोसियेशनकी दूसरी बैठक हुई, (इसका प्रोग्राम नहीं मिला) थोड़ेसे प्रस्ताव पास होनेके बाद जल्सासमाप्तिके लिये धन्यवाद वगैरह देना प्रारंभ हो गया। परन्तु जो २ प्रस्ताव पहले सब्जेक्टकमेटीमें मजूर हुए थे, वे पेश नहीं किये गये। इसपर बाबू पदमराजजीने कहा कि, हमारे प्रस्ताव जो कल निश्चित हुए थे, क्यों पेश नहीं किये गये? इसपर बाबू शीतलप्रसादजीने (लखनवीने) तथा और कई महाशयोने कहा कि, इसमें एसोसियेशनके कारगुजारोंकी मशा थी, वह चाहे पेश करें, चाहे गुप्त रक्खे। लेकिन आन्दोलन होनेसे उनको रातके प्रस्ताव पेश करना पडे और सर्वसम्मतिसे वे पास किये गये।

खेदके साथ प्रगट किया जाता है कि, जो एसोसियेशन धर्म तथा जातिकी उन्नति करनेकी डींग मारती है, वह इस तरह प्रस्ताव करके भी छुपाती है। ऐसे कपटकृत्यसे उन्नति हो चुकी। पहले प्रस्तावसे यह मतलब था कि, गतवर्ष अंग्रेजी जैन-गजटमें जो Lost Mahabir नामका लेख निकला था, वह बिलकुल धर्मसे विरुद्ध था। उसके विषयमें बाबू माणिकचन्दजीने कलकत्तेसे कई पत्र दिये थे, लेकिन उनपर कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया। इन्हीं सब बातोंको दूर करनेके लिये उक्त प्रस्ताव था, लेकिन अफसोस है कि, एसोसियेशनके कारगुजार यह पसन्द नहीं करते। हम नहीं जानते, वे किस तरह जातिधर्मकी उन्नति करेंगे।

तीसरे दिन ता० २६ की रातको सात बजेसे महासभाकी बैठक हुई। उसमें (१) सब नगर और ग्रामोंमें जैनशाखासभायें स्थापित की जावें। सभाओंकी स्थिरताके लिये व्याख्यानोंकी छोटी २ पचीस पुस्तकें प्रकाशित की जावें। (२) जैनजातिसे व्यर्थ-व्ययकी रीतियां बन्द की जावें, और इसके मंत्री बाबू

सुलतानसिंह वकील मेरठ नियत किये जावें। (३)बाल-विवाह वृद्धविवाह बन्द किया जावे। (४) बाबू देवकुमरजी अपने अस्वास्थ्यसे जैनगजटके कार्यको अस्वीकार करते हैं, इसलिये पं० मेवारामजीसे इस कार्यके लिये प्रार्थना की जावे, आदि प्रस्ताव पास हुए। इसके बाद चंदकाम बाकी रहनेसे ता० २७ के दिनको फिर महासभाकी बैठक हुई और महासभाके खर्चके लिये तथा छात्रवृत्तियोंके लिये अपील सुनाई गई। रातको अनाथालय हिसारकी रिपोर्ट सुनना स्थिर हुआ।

रातको ७ बजे सभागृहमें बहुत पुरुष एकत्र हुए। पं० मेवारामजीका व्याख्यान बड़ी धूमधामसे हुआ। पश्चात् अनाथालयकी रिपोर्ट शुरू हुई। परन्तु सभापति सा० ने कुछ बात कहनेको मना किया, इससे नाराज होकर लाला चिरजीलालजीने तेजीसे व्याख्यान देना शुरू कर दिया। तब सबब नाराजीसे रिपोर्ट उस समय रोक दी गई।

शेष फिर—

जगन्मोहनमल्लिकलेन,
कलकत्ता। २९-१२-०६

जैनगजटकी गलती।

मैंने प्रियवरमित्र लाला राजारामजीके शोकमें संसारकी दशाका एक फोटू खींचकर जैनगजटमें छपनेको भेजा था, परन्तु जैनगजटने मेरे लेखका कुछ अंश काटछांटकर सम्पादकीय टिप्पणियोंमें उलटा सीधा लिख डाला। उसमें भी न नाम सही छपा, न दिन सही छपा। अद्भुत लीला है। मेरी तसल्लीके लिये ता० १९-११ को एक कार्ड आया, कि टिप्पणियोंमें मृत्यु-समाचार छपनेको भेज दिये हैं, लेख भी शीघ्र भेजे जावेंगे। परन्तु आज एक महीना २० दिन हो गये, लेख छपता ही ह। मैंने वापिस लौटानेको भी लिखा, परन्तु उत्तर नदारद। मैं अब भी प्रार्थी हूं कि, वह अब भी छाप दिया जाय, अथवा लौटा दिया जावे। मुम्बई निवासी पंडित धन्नालालजी काशलीवालने जैनगजटकी वे समयपर निकलनेकी बात बहुत ठीक लिखी है। जैनगजटकी दशा सुधारने योग्य है।

ज्योति॰ प्रसाद ए. जे देवबन्दी।

विविध समाचार।

बम्बईके शिक्षाखातेकी सन् १९०५ और १९०६ की रिपोर्टें प्रकाशित हुई हैं। उससे विदित होता है कि, गत वर्ष स्कूल, कालेज तथा पाठशालाओंमें विद्यार्थियोंकी कुल संख्या सात लाख छत्तीस हजार दो सो नौ थी। यह संख्या दूसरे सुशिक्षित देशोंकी अपेक्षा दशांश भी नहीं है। यद्यपि इन सम्पूर्ण शिक्षा शालाओंमें एक करोड़ रुपयेके करीब रुपया खर्च हुआ है, परन्तु सरकारको अपने खजानेसे सिर्फ सैंतीस लाख रुपया ही देना पड़े है, शेष फीस वगैरहसे वसूल हो गये है। स्त्री शिक्षामें पूर्वकी अपेक्षा वृद्धि हुई है। रिपोर्टमें पाठशालाओंमें पढती हुई लडकियोंकी संख्या ९०००० बतलाई गई है।

निकेल धातुका एक आनेका सिक्का पहली जनवरीसे चलने लगा।

चीन सरकारकी ओरसे दूसरा हुक्म निकला है कि लोगोंको अफीमका व्यसन छह महीनेके अन्दर ही बन्द करना चाहिये। अफीमचियोंने पीनकमें खलल डालनेवाली चीन सरकारको कोसना शुरू किया है।

हिन्दुस्थानमें बालकोंको प्राथमिक शिक्षा मुफ्त देनेका विचार भारतसरकारने निश्चित कर लिया है।

मोरवीके ठाकुरसाहबने अपनी रियासतमें गरीबोंके बालकोंको मुफ्त शिक्षा देनेका प्रबन्ध किया है। उनके राज्यके प्रत्येक बालकको अब जबरन् पढना होगा।

पटियाला राज्यने अपनी रियासतके पन्द्रह हजार हिस्सेदारोंसे १९ लाख रुपयेकी पूंजी एकत्र करके अपने राज्यमें एक देशी रेलवे लाइन खोलनेका कार्य प्रारंभ कर दिया है।

श्री सिद्धक्षेत्रपावागढजीका मेला भरनेवाला है। माघ सुदी ३ रविवार तारीख २७ जनवरी को सबेरे ध्वजा चढाई जावेगी। बडादाके शेठ लालचन्द कान्हदासजी जो वहांके प्रबन्धकर्ता हैं, सब धर्मात्मा भाइयोंसे उत्सव पर आनेकी प्रेरणा करते हैं। 'गोधरा कार्ड रेलवेके' चापानेर-रोड स्टेशनसे पावागढजी दस मील हैं।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैनतीर्थक्षेत्रकमेटीकी चार वर्षकी रिपोर्ट छपकर तयार हुई है, जिन्हें देखनेकी अभिलाषा हो, उसके दफ्तर हीराबाग बम्बईको एक चिट्ठी लिखकर मगा लें।

दिगम्बरजैनसभा बम्बईकी लोकल पाठशाला कई महीनेसे सर्वथा बन्द है। कोई २ सज्जन उसके स्थानापन्न एक हिन्दीकी पाठशाला खोलना चाहते हैं।

काबुलके अमीरने आज्ञा दी है कि, अफगानिस्थानमें जितनी मसजीदें हैं, वे सब स्कूल बना दी जावें। उनमें लोअरप्रायमरीकी शिक्षा दी जावे। इन मसजिदोंमें पढ़नेके बाद वे लडके राजधानीके हाईस्कूलमें पढेंगे। इस तरहसे मसजिदोंमें ईश्वरोपासना और शिक्षा दोनों हुआ करेगी। यदि प्रत्येक जिनमंदिरमे भी इस तरह बालकोंको शिक्षा देनेका प्रबन्ध किया जावे, तो बड़ी सरलतासे हमारे समाजसे अज्ञानांधकार दूर हो सकता है।

चीनमें स्त्रीशिक्षा बढानेके लिये खूब आन्दोलन हो रहा है। नानकिंग शहरमें एक बड़ी भारी स्त्रीपाठशाला खुली है।

बंगालेमें देशी नमकका व्यवहार बढते देखकर वहांकी सरकारने विलायती नमकका महसूल घटा दिया है। जिससे वह देशी नमककी अपेक्षा सस्ता पड़े।

सुना है कि, दक्षिणमहाराष्ट्रजैनसमाजका अधिवेशन बडे आनन्दके साथ हो गया। उसमें विधवाविवाहका निंद्य प्रस्ताव भी नहीं रक्खा गया।

बड़ी खुशीकी बात है कि, अजमेरके शेठ नेमीचन्दजीको गवर्णमेंटकी ओरसे रायबहादुरकी पदवी मिली है। शेठजीको बधाई है। आपके स्वर्गीय पिता शेठ मूलचन्दजी भी रायबहादुर थे।

पौष सुदी १४ को बम्बईकी लोकल जैनसभामें उद्योग विषयपर बाबू बुद्धमलजी पाटनीका व्याख्यान जयपुरके साहित्यशास्त्री प० जवाहरलालजीके सभापतिमे हुआ। अच्छा हुआ।

तरडगाव (सतारे) में शेठ उगरचंद सखारामजीकी कन्याका विवाहको वरात फलटणमे गई थी। वरका नाम सखाराम वर्णाचन्द है। कन्याके पिताने बहुत चाहा कि, विवाह पुरानीपद्धतिसे हो जावे, परन्तु वरने ऐसी हठ की कि, यदि विवाह करूंगा, तो जैनपद्धति से करूंगा, अन्यथा-विना विवाह किये ही लौट जाऊंगा। विवाहका मुहूर्त चूक गया, परन्तु उसने पिता आदि के समझाने पर भी हठ नहीं छोडा। आखिर कन्याके पिताने दूसरे मुहूर्तमें झखमारके आर्षविधिके अनुसार विवाह किया। यह घटना गत मार्गशीर्ष महीने की है। धर्मके ऐसे श्रद्धालु वरको हम आशीर्वाद देते हैं कि, वह जुग २ जीवै।

विजयनगरकी महाराणीने मद्रासमें ९० हजार रुपया देकर एक पांजरापोलकी स्थापना की है। पशुओंकी रक्षाके लिये इससे अच्छी दूसरी संस्था नहीं है।

सत्ये नास्ति भयं कचित्।

आपको स्वदेशसे कुछ प्रेम है, तो सबसे प्रथम आयुर्वेदका प्रचार करो। आयुर्वेदीय औषधियोंका सेवनकर विदेशी घृणित औषधोंको एकदम त्याग दो।

प्रियपाठक! आयुर्वेदीय औषधियोंका प्रचार उठ जानेसे भारतसन्तान अनेक प्रकारके रोगोंसे दुःखित है यदि ऋषि महर्षियोंके परीक्षित प्रयोगों (नुस्खों) पर विश्वास है तो हमारी औषधें आजमाइये और पूर्ण निरोगता लाभ कीजिये हमारे औषधालयमें सब प्रकारकी आयुर्वेदीय औषधि घृत तेल चूर्ण आसव अरिष्ट धातुभस्म गुग्गल प्रभृति सर्वदा सस्ते मूल्यमें मिलती है विदेशी रोगीगण)॥ के टिकटके साथ अपना हाल लिख कर चिकित्सा करा सकते है। आध आनेका टिकट भेजकर सूचीपत्र मंगा देखो।

महासुगन्धित "हिममागर तैल"

नं० १ दिल हो ताजा मवत्तर हो दिमाग!

आयुर्वेदीय जडी बूटियोंमे यह तैल तय्यार किया गया है यह केवल औषधमिश्रित तैल है, यही नहीं बरञ्च इसमें एक मनोहर सुगधी भी है। इसके सेवनसे बालोंका झडना, केशदद्रु आखोंकी ज्योतिका कम होना, शिरका घूमना अधिक मानसिक परिश्रमसे शिरका भारी होना, नींदका न आना आदि पित्तजनित रोग, शर्दी, गर्मी आदि सब प्रकारका शिरका दर्द, शिरका भारीपन व खुश्की आधाशीशी, शिरकी खाज, मस्तिष्ककी शून्यता इत्यादि केश और मस्तिष्क सम्बन्धी दूर होते हैं। बाल काले सचिक्कण चमकदार कोमल एवम् लम्बे रहते हैं। नेत्र ठंडे और स्निग्ध रहते हैं। शिरके दर्दसे चिल्लाता हुआ रोगी दस बून्द के लगाते ही आनन्दके तार बजाता है। लिखने पढनेवालों और स्कूलके छात्र एव दिमागी मेहनत करनेवालोंको विशेष उपयोगी है। कैसा ही दिमागीका काम किया हो, थोड़ी देर मस्तकपर घसने से मगजको ठण्डा हलका और तर कर देता है। मूल्य ४ औंसकी शी० १) रु० १ दर्जन (१२ शीशी) १०) रु० ६ शीशी ५॥) रु०।

नं० २ अक्षिणी विना किं जीवितेन?

नेत्रोंके—वास्ते परम हितकारी (नेत्राजन) यह सुर्मा, मोती भीमसेनी कापूर ममीरा सोमेके वर्क इत्यादि रत्न (जवाहरात) के योगसे तैयार किया गया है, नेत्रोंमें होनेवाले समस्त रोगोंको दूर करता है। देखनेकी ताकत (कुव्वते बासरा) की बढानेमें बेनजीर है शुरूका फूला मोतियाबिन्दकी शुरूआत मखलेके पानीका उतरना रफै होता है। जाला, धुन्ध, ढलका, नेत्रोंकी सुर्खी, आंखोंका दुखना, जलन, खाज, चिपचिपाहट, अञ्जनहारी, पलकोंकी छोटी २ फुन्सिया, रतौंधा इत्यादि रोगोको रफै करता है।

जवानीमे—चश्मा लगानेकी जरूरत हो, दूरकी चीज कम दिखती हो, पाससे भी पढ नहीं सक्ते हो, पढते समय आखोंमें पानी भर आता हो या वृद्धावस्थाके कारण नजर कमजोर हो गई हो, हवा या धूपमें ज्यादह फिरना पडता हो या जिन्हें रात दिन नेत्रोंहीसे काम लेना पडता हो उनके हकमें यह बडा अक्सीर है। लगते ही १—२ बूंदोंके जरिये तमाम जहरीला पानी निकलकर आखोंमें ठण्डक पड़ जाती है। मू० फी तोला ४) रु० १ मासेके २) रु०।

नं० ३ दांतका मंजन।

"करता है दांतोको मिस्ले गोहर"

दातोको मजबूत और स्वच्छ करता है एव सब प्रकारके दान्त और मसूडोंमे होनेवाले रोगोंको मुफीद है मूल्य १ डिब्बी ॥) दर्जन ५) पाच रुपया। ६ डिब्बी २॥) दो रुपया बारह आना।

नं ४ दादकी ठंडी दवा।

जलन नहीं होती फी डिबिया ॥) आठ आना दर्जन ५) पाच रुपया।

नं ५ खासीकी गोली फी डिबिया ॥)

सब प्रकारकी खासीको मुफीद है।

नं० ६ सोजाक और उसकी दवा

इस रोगमें जख्म हो जाता है पेशाब मे जलन और दर्द एव रक्त विशिष्ट मवाद जाने लगता है और कुछ दिनोंके बाद मवाद और दर्द बन्द हो जाता है तब उसको कुरा कहने लगते हैं इन हालतोंमें सब लोग चन्दन या बिरोजेका तैल भाति २ से इस्तेमाल करते है जो सिर्फ इस्तेमाल करते वक्त तक ही पेशाबको साफ लाता है असलीमर्जको कुछ फाइदा नहीं देता इस लिये हमने यह दवा आजमाकर प्रकाशित की है। नया हो या पुराना सब भातिका सोजाक सब प्रकारके लक्षणोंके सहित नष्ट हो जाता है मूल्य २० दिनकी दवाका २) दो रुपया।

नं० ७ स्त्रियोंके प्रदर रोगपर

चन्द्रकान्ता

चरकसुश्रुतादिसम्मत गुरुपरम्पराकी परिपाटीसे हमारे औषधालयमें यह चन्द्रकान्ता नामकी दवा तय्यार होती है इसके सेवनसे प्रदर अर्थात् रहम (गर्भाशय) से सफेद, नीला, पीला, सुर्ख बदबूदार पानीका जाना एवं इसके कारणसे शिर, कमर, पेडू, पिण्डली, बच्चेदानी आदि स्थानोंकी कष्टदायक वेदना आलस्य, भूखकी कमी आदिको फायदा होता है ४० खुराकका दाम १॥) रु०।

नं० ८ ताकतकी दवा च्यवनप्राशरसायन

दुर्बलता और कृशताको दूर करने और शरीरमें बलका सञ्चार एव शरीरको हृष्टपुष्ट करनेमें महर्षिसेवित च्यवनप्राशकी भाति दूसरी औषधी ईजाद नहीं हुई यह महात्मा चरकने लिखा है।

यह प्रत्यक्ष फलप्रद

महौषधि भले चङ्गे और बीमार शरीरमें सेवनीय है, इस के सेवन करनेसे खासी, यक्ष्मा, बिगडा हुआ जुकाम, स्वरभङ्ग और अनेक प्रकारके वीर्यगत रोग आराम होते है।

नियमसे कुछ दिन "च्यवनप्राश" सेवन करने से क्षुधावृद्धि, देहपुष्टि और इन्द्रियसामर्थ्य जमती है। जवानीके अत्याचारोंके कारण जिनका स्वास्थ्यभग्न, धातुक्षीण और शरीर जीर्ण शीर्ण हो गया है उनके हकमें च्यवनप्राश अमोघ महौषधि है। यह प्रथम दर्जेकी स्थम्भक, धातुपौष्टिक एव कामोद्दीपक है।

दिमाग—अर्थात् भेजेकी निर्बलता जो अधिक विषयभोग, शराब आदि पीने और जियादह पढने पढानेकी मेहनत तथा विकालत आदि दिमागी काम करनेसे हो जाती है, इसके सेवनसे रफै हो जाती है और बच्चे इसको खाकर मेधावी और हृष्टपुष्ट होते हैं। यह खानेमें स्वादिष्ट है गुण चिरस्थायी है।

आयुर्वेदीय—शास्त्रमें कहा गया है कि पूर्वकालमें इस महौषधिका सेवन कर वृद्ध च्यवनऋषि नवान हो गये थे जिन लोगोंने काडलिवर आयैल वगैर. विलायती घर्म्मनाशक

घृणित दवाओंके सेवनसे कुछ लाभ नहीं पाया हो वे लोग इस प्रत्यक्ष फलदाता विशुद्ध च्यवन-प्राशको एकबार सेवन कर इसकी उपकारिता शक्ति देखैं। एक पाव च्यवनप्राशका मूल्य २) रु० और एक सेर एकट्ठा लेनेसे ६) रु०।

नं १० मेहगजाकुश चूर्ण और प्रमेहहारी वटी।

प्रमेह वीर्यविकार और उससे पैदा हुए रोगोंकी दुनियाभर में एक मात्र दवा।

प्रिय पाठक! अफसोस अफसोस है। चारों तरफ क्या बच्चे क्या बूढे क्या जवान इस दुष्ट प्रमेह (जिरियान) के रोगसे पीडित हो रहे है क्या आजतक किसी वैद्य या डाक्टर तथा हकीमने ऐसी दवा नही निकाली जो इन पाप रोगोंको निर्मूल करे। क्योंकि प्राय चिकित्सक इस रोगमे स्लेसदार तथा कब्जि दवाओंका सेवन कराते है इसलिये उनसे फायदा तो कहा विपरीत अग्नि-मान्द्य व कब्ज आदि नये नये रोग पैदा हो जाते है अतः हमने कुल बातोंको विचारकर इस दवा-को तैयार किया है। इसका सेवन२० बीस प्रकारके प्रमेह, धातुकी गर्मी, धातुका पतलापन, पेशाब या पाखानेसे पहले अथवा पीछे धातुका जाना स्तम्भन शक्तिकी कमी, शिर कमर पिण्डली वगैरहका दर्द, इत्यादि उपद्रवोंसहित प्रमेहको खोता है। खूबी यह है कि और दवाओंकी तरह इससे कब्ज नहीं होता. किन्तु दस्त साफ होता है मूल्य ४० खुराक चूर्ण और ४० गोलियोंका ३) तीन रुपया।

वगभस्म २) रु तोला प्रवाल (मूगा) १) तो० अभ्रक भस्म ५) रु. तोला फौलाद भस्म ९) रु० तो० चादीभस्म ९) रु० तोला।

मिलनेका पता—

भिषग्वर पं०सूर्यप्रसाद शर्मा परीक्षोत्तीर्ण आयुर्वेदीय भारतहितैषी औषधालय —मेरठ सिटी।

---

५) रुपयेका माल ३) रुपयेमें

गौरी नागरी कोष

५५० पृष्ठ लगभग पचास हजार शब्द

जिसकी पाच वर्षसे धूम पड रही थी, वह अब छपकर तैयार हो गया। यह कोष बडे २ विद्वानोंकी मण्डलीद्वारा ५ वर्षके निरन्तर उद्योगसे तैयार हुआ है ऐसा उत्तम कोष आजतक नहीं बना और न आगेको आशा है। यह बी० ए० पास मास्टर से ३) रु० में उमरभरकेलिये नौकर होता है। हिन्दी उर्दू प्राकृत, सस्कृत, अरबी, फारसी इत्यादि शब्दोंके मायने पूछोगे तो पहिले हिन्दीमें बतावेगा फिर अग्रेजीमे समझावेगा। वकील मुख्त्यार, पण्डित, मास्टर, ग्रन्थकार, लेखक, आदि सबका सहायक है हिन्दी हितैषी भूतपूर्व छोटे लाट मेकडानल बहादुर तथा रीवा नरेश और टेक्स्टबुक कमेटी पंजाबने भी इसको पसन्द किया है और बहुतसे स्कूलके इन्स-पेक्टर एव मास्टरोंने इसे खरीदा है। ट्रान्सलेमन (हिन्दीसे अग्रेजी और अंग्रेजी हिन्दी) करनेवा-लोंके बडे कामका है अत एव स्कूलके विद्यार्थी हिन्दी अग्रेजीमे योग्यता प्राप्त करनेके अभिलाषी एवं अध्यापक (मास्टर) इसे खरीदनेसे न चूके।

बालाबोधिनी

यदि गृहस्थको स्वर्गधाम बनाना चाहिते हो और अपनी स्त्रियों तथा पुत्रवधुओ एव पुत्रियो को उच्च-कोटिकी स्त्रीशिक्षा देनी चाहते हो तो इस पुस्तक-को अवश्य खरीदो। इसमे नियमानुसार पुत्री-को नीति शिक्षा का उपदेश किया गया है। मा बाप, भाई, बहन, झगड पडौसन, सास श्वशुर, नन-द इत्यादि किसके साथ कैसे व्यवहार करना चाहिये और पतिकी कितनी सेवा शुश्रूषा करनेसे स्त्री सती, साध्वी और पतिव्रता कहला सकती है। पति व्रतधर्म का अखण्ड पुण्य सञ्चय करके क्योकर दोनों लोकका सुख भोग सकती है। मू०।~)

सौदामिनी! सौदामिनी!! सौदामिनी!!!

नवन्यास! उपन्यास! रहोन्यास!!!

'भारतेन्दु' के भूतपूर्व सम्पादक श्रीराधाचरण गोस्वामी (वि० वा० म्यू० क० आ० मै०) की ललित लेखनीसे लिखित प्रेमकी छटा! रसकी घटा!! ११ अङ्कोंमें बटा!!!

अभी बडे आबताव और हावभावसे छपा है, जिसपर लक्ष्मीकी कृपा है, उसीसे =) दाम)॥ डाक महसूल पाकर झगडा रफा और हिसाब सफा है, घडीभर दिल लगाना नफा है, क्या इससे कोई खफा है? पुस्तकें कम बिक्रीका बाजार सरगर्म। सौदा नर्म। और इसके मर्मको रसिक लोगही जानते हैं। इसमें बीसवीं सदीका चित्र, इनल्लाइटेंडीका चरित्र, सच्चा मित्र, सौदामिनी की पवित्र प्रीति, घनश्यामकी विचित्र रीति, प्रेम, की अकाट्य नीति गुरुजनोंकी भयानक भीति, सबके सीन अपने २ अवसर पर दिखलाय गये है। उपन्यास क्या नाटक है, चेटक है, तमाशा है। पूरा देखे बिना जी नहीं मानता।

सीढ़ी—इसके द्वारा एक भाषा जाननेवाला चारभाषा अर्थात् अगरेजी, उर्दू, गुरुमुखी, नागरी बगैर उस्तादके सीख सकता है मूल्य सजिल्द ।=) दस आना।

राजकुमार उपन्यास—यह एक बगालकी सुशिक्षिता महिलाने लिखा है और बहुत रोचक है मूल्य ≡) तीन आना।

इनाममें घडी—)॥ आध आनेका टिकट भेजकर नियम मगा देखिये।

मैनेजर सारस्वत कम्पनी

६–८ से ५–९ तक मेरठ सिटी

लो और देखो।

स्वदेशी पवित्र केसर मगाओ।

विलम्ब करोगे तो पछताओगे।

यह केशर काश्मीरको खास जैनी भाईको भेजकर म-गाई गई है परन्तु बहुत थोडी मिली भाव भी तेज हो गया है। यदि विलायती भ्रष्ट केसरसे बचना चाहते है, तो शीघ्र ही १२ महीनेक खर्चलायक मगा लीजिये। विलम्ब करोगे तो फिर फिर नहिं मिलैगी। दर ४५) रु रतल (३९ तोले) फुटकर १) रु० तोला।

पन्नालालजैन—गिरगाव बम्बई।

सूचना

जैनमित्रमें छपनेके लिये, सिर्फ ताजे समाचार, और सवाद नीचे लिखे पतेसे आना चाहिये। प्रत्येक पक्षकी त्रयोदशीतक आये हुए समाचार ले लिये जावेगे।

नाथूराम प्रेमी—
चन्दावाडी पो० गिरगांव-बम्बई।

ग्राहकोंको सूचना।

जैनमित्रके ६ अंक निकल चुके, परन्तु आप-लोगोने अग्रिम मूल्य अब तक नहीं भेजा, प्रार्थना भी बहुत दिनसे की जा रही है, अब शीघ्रता की-जिये, अथवा हमको वी. पी भेजनेकी आज्ञा दी-जिये। वी. पी. भेजनेका कम शीघ्र ही जारी होगा।

मैनेजर।

Registered No. B 289.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटा-ने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और प्रत्यो-त्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
मोरेना (ग्वालियर)।

जैनमित्र

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते॥

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र। प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

वर्ष ८ वां] माघ शुक्ला २ संवत् १९६३ विक्रमाब्द। जनवरी ता० १६ सन् १९०७ ईस्वी। [अंक ७ वां।

जैनमित्रके फाइल।

सप्तम वर्षके थोडेसे फाइल हमारे पास मौजूद है। हम उन्हे जल्दी बेचना चाहते है, इस लिये इस समय बहुत थोड़ी कीमतमे ग्राहकोंको मिल जावेंगे। देर करनेसे दूनी कीमतमें भी नहीं मिल सकेंगे। जैनमित्रके सप्तमवर्षमे कैसे २ बढिया लेख छपे है, सो किसीसे भी छुपे नहीं हैं। हिन्दीके किसी भी जैनपत्रमें आज तक ऐसे बढियां सग्रह करने लायक लेख नही छपे है। समाचार और थोडेसे समाज सम्बन्धी लेखोंके सिवाय बाकी सब ही लेख हमेशा पढने योग्य और कामके हैं। इसके सिवाय जैनसिद्धान्तके १० फार्म और सुशीला उपन्यासका पूर्वार्द्ध (१० फार्म) भी उसके साथ मिलता है, जिन दोनोकी कीमत प्रथक् छपने पर कमसे कम १।) रु० होगी। ऐसे उत्तम फाइलको दिसम्बर महीनेके अखीर तक हम सिर्फ १॥) में ही देना चाहते हैं, जिल्द सहित मगानेवालेको १॥।) लेंगे और भी सुभीता यह है कि, डाकखर्च हम अपना लगा देंगे।

सुशीला उपन्यास

प्रथमभाग।

रायलके बडे २ अस्सी पेजोंका बहुत बढिया उपन्यास जिससे कि मनोविनोदके सिवाय धार्मिक शिक्षायें भी मिलती है, तयार है। एक बार पढना शुरू करनेसे फिर छोडनेको जी नहीं चाहता है, मूल्य सर्व साधारणसे दश आना जैनमित्रके ग्राहकोंसे आठ आना। डाक खर्च माफ।

मैनेजर—जैनमित्र
पो० मोरेना (ग्वालियर)

श्रीमती दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बईका चौथा अधिवेशन।

("एक पंथ दो काज" का मौका नहीं चूकना चाहिये।)

जैनबन्धुगण। आपको प्रगट ही है कि प्रान्तिक सभा बम्बईका वार्षिक अधिवेशन श्रीगजपथाजी सिद्धक्षेत्रपर स. १९६३ की माघशुक्ला १३ से १९ तक होनेवाला है। अब वह समय निकट आगया है, आपलोगोंका तय्यार हो जाना चाहिये। आपको ज्ञात है कि इस सुहावने स्थानसे सात बलभद्र और आठ कोठ मुनि मुक्तिको पधारे है इस कारण यह निर्वाणक्षेत्र भव भावान्तरकी कर्मकालिमाको प्रक्षालन करनेके लिये दिव्यसलिल है। इसके दर्शनोंसे भाव अताव निर्मल होते हैं। प्रिय धर्मात्माओ। प्रथमतो यह वसन्त ऋतु ही सर्वोत्तम है, दूसरे यहासे श्री मांगीतुंगीजी भी समीप हैं, ३ रे मुम्बापुरी मनोहर नगरी भी इससे बहुत दूर नहीं है, चौथे इसी निमित्तसे अन्यान्य तीर्थक्षेत्र, अतिशय क्षेत्रोंके भी दर्शन हो जाना सभव है। यथा श्री गिरनारजी, शत्रुंजयजी, पावागढजी इत्यादि। इतना ही नहीं इस अवसरपर देशदेशान्तरोंके विद्वज्जन पधारेंगे, जिनके उपदेशसे श्रवणेन्द्रिय सफल होगी और आत्मकल्याण होगा। अपने सौभाग्यसे इस अधिवेशनके सभापति श्रीमान् राजा ज्ञानचन्द्जी गवर्नमेंट फोटोग्राफर हुए हैं। इस प्रकार यहा सर्वतोभद्र सामग्रीके सम्मिलन होनेसे "सोना और सुगंध" की कहावत चरितार्थ होती है। जैनीभाइयोंको "नासिक" स्टेशनपर उतरना होगा जहासे गजपंथाजी जानेको सवारी तय्यार मिलेगी। रेलकिराया कम होनेके लिये भी प्रयत्न हो रहा है और जिस २ प्रकारकी आवश्यकता है उसका भी प्रबन्ध हो रहा है। इस अवसरपर साधर्मी सद्गृहस्थोंको लाख गृहकार्य छोड़कर अवश्य २ पधारना चाहिये। बम्बई दिग. जैन प्रान्तिक सभाके सभासदोंको तो किसी प्रकार यह मौका चूकनाही नहीं चाहिये।

आमन्त्रण पत्रिका भेजी गई है उसमें जुडे हुए प्रतिनिधिपत्र (Delegate Form) को माघ कृष्ण ३० पर्यन्त निम्नलिखित पतेपर भरके भेजना चाहिये। जिनकेपास फार्म नहीं पहुंच हो, उन्हें एक कार्ड लिखकर मगा लेना चाहिये। कृतमतिविस्तरेण

दफ्तर, हीराबाग
गिरगाव—मुबई
ता २९-१२-०६

भवदीय कृपाकांक्षी
पानाचन्द रामचन्द दोशी
मन्त्री स्वागतकमेटी—गजपथा अधिवेशन।

जैनमित्र.

माघ शुक्ल २ श्रीवीरनि० संवत् २४३३।
ता० १६ जनवरी सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

महाविद्यालयका फंड।

हमारे एक संवाददाता कलकत्तेसे लिखते हैं कि, " यद्यपि महाविद्यालयके फंडके विषयमें महासभामें कोई प्रस्ताव नहीं रक्खा गया था, परन्तु किसी एक महाशयके प्रश्नपर मुंशी चम्पतराय सा० ने कहा था कि, इसका असली भंडार खर्च नहीं किया जावेगा। व्याजका जो रुपया होगा, वह संस्कृत विभागमें ही व्यय होगा। अंग्रेजी पढानेमें न तो असली खर्च होगा, और न व्याज।" यद्यपि महामंत्री सा० के इस कथनसे अब सबको विश्वास कर लेनेमें हानि नहीं है कि, महाविद्यालयका भंडार जिस संस्कृतविद्याकी उन्नतिके अभिप्रायसे स्थापित है, उसमें व्याघात नहीं होगा। तौ भी एक आवश्यक विषयको जिसका वर्षभर आन्दोलन हुआ है, इस तरह जबानी उडा देना अच्छा नहीं हुआ। इसका एक स्वतंत्र प्रस्ताव रखनेकी बहुत आवश्यकता थी। ऐसा करनेसे "मैं अब भी कहता हूं, कि चन्दा कालिजके लिये हुआ है" महामंत्री साहबके इस वाक्यकी खटक सर्वथा निकल जाती।

सहयोगी 'जैन' की भूल और मक्सीका झगडा।

श्वेताम्बर सम्प्रदायके मुख्य पत्र "जैन" ने अपने ३० दिसम्बर १९०६ के दिसम्बर के अंकमें मक्सीजीके झगडेके विषयमें लिखा है कि, "जुडीशियल कोर्टने दिगम्बरियोंकी अर्जी ना मंजूर की है, अर्थात् अपना पक्ष जीता है इत्यादि" परन्तु यह बात सर्वथा असत्य है। यथार्थमें श्वेताम्बरियोंकी अर्जी नामंजूर हुई है और उनके जिन लोगोंने प्रतिमाओंमें नेत्र जडे हैं, उन पर फौजदारी मुकद्दमा कायम हुआ है। पहले नम्बरके मुलजिम तीर्थके सुपिरिंटेंडेंट और जमनादास बनाये गये हैं, शेष लोग जो इस कार्यमें सहायक थे, वे पीछे मुलजिम बनेंगे। पेशीकी तारीख नियत नहीं हुई है। हम नहीं कह सकते कि, सहयोगीको यह ऊट पटांग समाचार कहांसे मिले। अपने समाजमें वाह २ प्राप्त करनेके अभिप्रायसे ही यदि ऐसी झूठी खबरें छापी जाती हैं, तो बडी लज्जाकी बात है।

जैनयंगमेन्स एसोसियेशनका झुकाव।

अभी तक हमारे समाजके सब ही लोग समझ रहे हैं कि, एसोसियेशन हमारा (दिगम्बरी) है और दिगम्बर-जैनधर्मसंरक्षणी महासभासे इसका जन्म हुआ है, इस लिये यह हमसे विरुद्ध नहीं होगा। एसोसियेशनके कार्यकर्त्ता लोग भी अभी तक यही प्रगट करते रहे हैं। यही कारण है कि, उसके कई अधिवेशन धूमधामसे हो गये और हमारे भोले भाइयोंने यथाशक्ति उसकी सेवा की। परन्तु अबके कलकत्तेके अधिवेशनसे उसका झुकाव किसी दूसरी ओरको ही जान पडता है। उसकी पेचीली कार्रवाई कुछ २ समझमें आने लगी है। दर्शन स्वाध्याय सम्बन्धी प्रस्तावके विवादसे यह स्पष्ट हुआ है कि, एसोसियेशन केवल दिगम्बरियोंका नहीं, किन्तु श्वेताम्बरी तथा ढूंढियोंका भी है। और वह जैनियोंके सब फिरकोंमें केवल सामाजिक एकता ही नहीं, किन्तु धार्मिक एकता भी करना चाहता है। हम नहीं चाहते कि, सहसा इस विषयमें कुछ लिखकर एसोसियेशन पर लोगोंकी अश्रद्धा उत्पन्न की जावे, इस लिये उसके कार्यकर्ताओंसे हम पहले इस विषयमें स्पष्टीकरण चाहते हैं, कि उसकी क्या मंशा है। उसे स्मरण रखना चाहिये कि साम्प्रदायिक तथा धार्मिक एकता करनेके विवादापन्न विषयमें पडनेसे उसकी सब शक्ति नष्ट हो जावेगी। और फिर वह कुछ न कर सकेगा। उसे करनेके लिये समाज सुधारके बहुतसे कार्य शेष हैं, उनके लिये कमर कसना चाहिये। धर्मविषयको न एसोसियेशन जानता है और न उसमें उसका अधिकार है। इस लिये उसे इस अनधिकार चर्चामें प्रवेश नहीं करना चाहिये।

अतिशयक्षेत्र भातकुली और सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरिके आयव्ययका हिसाब।

व्यवस्थापक नेमासा रतनसा और तानासा राजजीने एक एक मुद्रित हिसाबका परचा भेजा है। दोनों क्षेत्रोंमें मकान व जमीन वगैरह जायदाद अच्छी है और वार्षिक आय अनुमान पांच पांच छह छह हजार रुपयेकी है। प्रबन्ध वगैरह अच्छा जान पडता है। ये दोनों हिसाब गोशवारा मात्र है। जिन क्षेत्रोंकी ऐसी अच्छी आमदनी है, उनकी रिपोर्ट खूब विस्तृत रूपसे निकलनी चाहिये, जिससे कि क्षेत्रोंमें दिये हुए द्रव्यका दुरुपयोग नहीं होता है, इसका लोगोंमें विश्वास और भी दृढ होवे। प्रत्येक तीर्थक्षेत्रका वार्षिक हिसाब इसीप्रकार प्रकाशित होना चाहिये।

महाविद्यालयके स्थानान्तर होनेकी असली काररवाई।

महासभाको अरसेसे यह चिन्ता थी कि, महाविद्यालय मथुरासे किसी दूसरे स्थान पर तबदील किया जावे, क्योंकि मथुरामें ११ साल रहकर भी उसकी तरक्की नहीं हुई। उसकी तरक्की होनेकी गरजसे किसी अन्यस्थानको ले जाना आवश्यक था इस लिये सहारणपुरके अधिवेशनमें ता. २८ और २९ दिसम्बरके मध्यकी रात्रिको महासभाके सभासदोंकी एक अन्तरंग सभा हुई। उसमें हमारे मौजिज सैक्रेटरी मुंशी चम्पतराय सा० और ज्वा०सै० बाबू बनारसीदास सा० उपस्थित थे। उस वक्त यह प्रस्ताव महासभामें पेश करनेके लिये पेश हुआ कि, जैनमहाविद्यालय मथुरासे किसी दूसरे स्थानपर तबदील किया जावे और किस जगह? इसपर दो तीन बजे राततक विवाद होता रहा। प्रोफेसर जियाराम सा० बाबू अर्जुनलाल सेठी और बाबू अजितप्रसाद आदि महाशयोंकी राय थी कि, जयपुर तबदील किया जावे। अनेक भाई इसके विरुद्ध थे। मगर उस समय कोई स्थान निश्चित नहीं हुआ और इसकी सूचना तारके द्वारा मुंशी मूलचन्द और सेठ द्वारकादासको दी गई।

दूसरे रोज २९ दिसम्बर १९०९ को महासभाके जल्सेमें चन्देके लिये अपील की गई। उस समय अचानक बाबू खूबचन्द सा० ठेकेदारने यह आवाज दिलवाई कि, अगर जैनकालिज सहारणपुरमें खोला जावे, तो मैं दश हजार रुपया दूंगा और जबतक हाईस्कूल रहेगा, तबतक उसका व्याज ३७।=) माहवारी दिया करूंगा। इसपर धन्य २ और हर्ष २ की सीमा न रही। पश्चात् रूपचन्दजी बेटा लाला गिरधरलालकी आवाज आई कि, जैन कालि-

जके लिये जमीन और एक हजार रुपया मैं दूंगा। इसके पीछे चन्दे आवाज आई। किसीने कहा कि, चन्दा हाईस्कूल खुलनेपर दूंगा। किसीने कहा कालिज खुलनेपर दूंगा। इन सब वादोंको हमारे सुयोग्य उपकारक महासभा तसलीम करते रहे।

एक बार मुंशी बाबूलाल सा० वकीलने अपने व्याख्यानमें यह अवश्य कहा कि, भाई! सब लोग चन्दा तो हाईस्कूल और कालिज खुलनेपर देनेका वादा करते हैं, फिर कालिज किस रुपयेसे खोलें? परन्तु इसका कुछ भी असर न हुआ। हमारी महासभाने जरा भी जबान न हिलाई कि, जिसको देना हो, वह नकद देवे। यह वायदे सर्वथा बेकार हैं, इनसे कोई काम नहीं चल सकता और विना रुपया नकद हाथमें आनेके स्कूल या कालिज कुछ भी नहीं खोला जा सकता। महासभा वादोको स्वीकार करती रही और परचा लेकर लाला किरोडीमल मुनीम और बाबू अर्जुनलाल सेठी जोड़ लगाते रहे।

उसी रातको शेठ सलेखचन्द सा० ने यह प्रस्ताव महासभाके आम जलसेमें पेश किया कि, महाविद्यालय मथुरासे सहारणपुरको मुतकिल किया जावे। मुंशी चम्पतराय सा० ने ताईद और लाला घासीराम सा० मथुराने विरोध किया और कहा कि, मुतकिल न किया जावे। क्योंकि यदि कोई इससे अधिक रुपया देगा, तो फिर महाविद्यालय वहा तबदील करना पडेगा। बाबू सूरजमानसा० ने कहा कि, बेशक तबदील हो सकता है। मुंशी बाबूलाल सा० ने कहा कि, यह सवाल यहां पर सर्वथा अनावश्यक और बे मौके है। किसी पुरुषको अधिकार नहीं है कि, किसी धर्मकी चीजका या मकानका बैनामा किसीके नाम लिख दे। जहां हिन्दुस्थानकी बिरादरी उचित समझे, वहा चला जावे। अभी कोई दरख्वास्त नहीं है। मुंशी चम्पतराय सा० ने फिर साफ साफ कहा कि, यदि कोई महाशय इसके विरुद्ध हों, तो कह दें अन्यथा यह प्रस्ताव पास किया जावे। इसपर किसीने आपत्ति नहीं की और सर्व सम्मतिसे प्रस्ताव पास हो गया। इसके बाद दूसरे दिन यह निश्चित हुआ कि, सहारनपुरके भाइयोंकी एक प्रबंधकारिणीकमेटी स्थानीय प्रबन्ध करनेके लिये बनाई जावे। मुंशी बाबूलाल सा० और लाला जुगमन्दरदास रईस नजीबाबादने कुछ नाम निश्चित किये, परन्तु चम्पतराय सा० व अन्य महाशयोंकी यह राय करार पाई कि सहारणपुरकी पंचायत स्वयं ही कमेटी नियत करेगी। क्योंकि इसके प्रबन्धका बोझा सम्पूर्ण पंचायत सहारणपुरके जिम्मे हैं, न कि चन्द भाइयोंके। जब तक कुछ पंचायत अपनी ओरसे मेम्बर न चुने, तब तक शिकायत पंचायतकी रहेगी और कोई दूसरी जिम्मेवारी पंचायतकी न होगी। इस लिये प्रबंधकारिणी कमेटीका चुनाव उस समय नहीं हुआ।

सहारणपुरकी पचायतने अपने अतिथियोंके बिदा होते ही और उस रात्रिके खतम होते ही बिना किसी विलम्बके ता० ३१ दिसम्बरको पंचायती मदिरमें सभा की, जिसमें अनेक प्रस्तावोंके साथ बाबू बनारसीदासने यह प्रस्ताव पेश किया कि, "जो हाईस्कूल महासभाने सहारणपुरमें खोलना स्वीकार किया है, वह महासभाकी मैनेजिंगकमेटीके अधिकारमे होगा, परन्तु स्थानीय आवश्यकताओंकी पूतिके लिये एक लोकलकमेटीकी जरूरत है, जो सहारणपुरकी पंचायतमेंसे नियत होनी चाहिये। इसपर यह निश्चित हुआ कि, प्रबन्धकारिणीकमेटी और उसके ओहदेदार नियत किये गये। लोकल कमेटीमें कमसेकम २१ और ज्यादा से ज्यादा ३० मेम्बर होंगे और ६ मेम्बरोंका कोरम होगा। लाला जुगमंदिरदास वगैरह २८ लोकल कमेटीके सभासद नियत किये गये। बाबू हरदयालजी बाबू अर्जुनलालजी सहायक, बाबू बनारसीदास सैक्रेटरी बाबू चन्दूलाल ज्वा० सै०, लाला जुगमदरदास खजाची और बाबू अर्जुनलालजी सुपिरिंटेंडेंट नियत किये जावें।

चूंकि प्रबन्धकारिणीकमेटी सहारणपुर महाविद्यालयका मथुरासे लाना अपना कर्तव्य समझती थी, इसलिये उस दिन आवश्यक प्रस्ताव ये भी हुए कि, "२ जैनपाठशाला सहारणपुर और दूसरी पाठशालायें जैनकालिजकी शाखा होंगी अर्थात् जैन कालिजके लिये विद्यार्थी तयार करेंगी।" "३ जिस तारीखको महाविद्यालय मथुरासे लाकर जैनबागमें स्थापित किया जावे, या हाईस्कूल खोला जावे, उसको लोकलकमेटी मुहूर्तके साथ नियत करेगी।" दूसरी पचायत ७ जनवरी १९०६ को हुई। उसमें मकान और दूसरे प्रबन्धोंके प्रस्ताव पास हुए और यह भी तजवीज हुआ कि, वसन्तपंचमीको महाविद्यालय मथुरासे सहारणपुर लाया जावे और चन्देकी वसूलीकी तजवीजें हुई।

ता. १० जनवरीको सबसे पहले बाबू बनारसीदासने मुंशी चम्पतरायको इत्तला दी कि, यहांपर दो कमेटी हो चुकी हैं और यह तय हुआ है कि, बसन्तपंचमीको महाविद्यालय सहारणपुर कायम हो जावे और तब चन्दा वसूल होवे। आप यह न कहिये कि, महाविद्यालय हाईस्कूल खुलनेपर भेजा जावेगा। इसके बाद बहुत सी चिट्ठीपत्री उक्त दोनों महाशयोंमें होती रही, जिसको हरएक फरीकने दूसरेको अपराधी सिद्ध करनेके लिये छपवाई है। हम खुलासेके लिये दोनोंके लेखोंका जिकर करते हैं।

मुंशी चम्पतराय सा०की तहरीरातका खुलासा यह है कि, मैं नहीं चाहता था कि, महाविद्यालय सहारणपुरमें फौरन तबदील किया जावे। मुझको सहारणपुरके चन्देका विश्वास नहीं था और बहुत जगह ऐसे वादेके चन्दे हो चुके हैं, परन्तु पूरे नहीं हुए। मैं महाविद्यालयको तब स्थानान्तरित करना चाहता था कि, जब हाईस्कूल सहारणपुरमें खुल जावे। मुझको बाबू बनारसीदासकी चिट्ठियोंने यह विश्वास दिलाया कि, स्कूलकी नीव वैशाखमें डाली जावेगी और चन्दा सहारणपुरका पचास साठ हजार हो जावेगा। विना महाविद्यालयके आये चन्दा सर्वथा वसूल नहीं होगा। सहारनपुरकी पाठशाला महाविद्यालयकी शाखा होगी और उसका सब सरमाया हमारे हाथमें आ गया। साराश यह कि, इस प्रकारके वादोंने मुझको इस पर विवश किया कि, मै अपनी रायको बदल दूं और महाविद्यालय सहारणपुर तबदील कर दू। यद्यपि १७ जनवरी १९०६ के पहले जो पत्रव्यवहार मेरा सहारणपुर और मथुरावालोंसे हुआ, वह सब तबादलेके विरुद्ध था और मैंने थोडेसी शर्तें भी पेशकी थी, परन्तु जब कि मुझ पर सख्त दबाव डाला गया और मुझे हरतरह पर विश्वास करा दिया गया कि, मथुराके मुकाबिले सहारणपुरमें तरक्की होगी, तब और क्या वश था? मुझे यह भी ख्याल हुआ कि, यदि हम महाविद्यालयको न बदलेंगे, तो महासभाके प्रस्तावकी तामील करनेका एक भारी अपराध हमारी गर्दन पर आवेगा। १७ जनवरी के बाद मैंने अपनी राय बदली।

(नोट—मुंशी साहबकी १२ और १७ जनवरीकी चिट्ठियोंसे साफ जाहिर है कि, १७ जनवरीके बाद राय नहीं बदली, बल्कि पहलेसे तबादलेके अनुकूल राय थी। और १२ जनवरीकी चिट्ठीमें मुंशी सा० वह ढग बतलाते हैं कि, सहारणपुरकी कमेटीसे तबादलेका प्रस्ताव पास कराकर सेठ साहब और मेरे पास एक २ नकल भेजी जावे।)

बाबू बनारसीदासकी तहरीरमें सिवाय इसके

और कोई नुक्स नहीं है कि, उन्होंने एक कामको कई बार जोर देकर लिखा। परन्तु विचारनेसे यह निश्चित होता है कि, उन्होंने गलत और विरुद्ध बात कोई भी नहीं लिखी। बाबू बनारसीदासने इस पर सब्र नहीं दिया कि, लोकलकमेटीके प्रस्तावोंकी या कार्रवाईकी अक्षरश: नकल भेज देते। बल्कि बतौर निजके फिर चिट्ठिया भी लिखी, जिसमें प्रस्तावका भी जिक्र किया और जोर भी ज्यादा दिया। परन्तु उन तहरीरोंसे यह सर्वथा अभिप्राय नहीं था कि, कोई ऐसा मौका लाया जावे या ऐसी तहरीक पैश की जावे या ऐसे झूठ वादेका यकीन दिलाया जावे कि, जिसके भरोसे पर महाविद्यालय सहारणपुरको तबदील किया जावे। न उनकी ७-१४ जनवरीकी चिट्ठियोंमें ऐसी तहरीक दर्ज है कि, सर्वथा जिसके भरोसे पर महाविद्यालय तबदील हुआ हो।

यथार्थमें इनका जोर इस बातपर ज्यादा था कि, महासभाके प्रस्तावकी तामील होनी चाहिये और महाविद्यालय शीघ्र तबदील होना चाहिये। और शेठ साहबको मुंशी मूलचन्दको या मुंशी चम्पतरायको उसके रोकनेका कोई अधिकार नहीं है। मुंशी चम्पतरायने जो बाबू बनारसीदासकी सख्त लिखावटका एतराज किया है, उससे हमको कुछ गर्ज नहीं है, और न हमारा काम उनकी इबारत या शब्दोंपर विवाद करनेका है। हमारी दृष्टिमें दोनों सुयोग्य जातिहितैषी हैं और जातिके लिये नेकनीयतीसे काम करते रहे हैं और कर रहे हैं। शब्दोंकी सभ्यताको वे स्वय आपसमें समझ लें। हमको तो केवल यह देखना है कि, बाबू बनारसीदासने कोई नियम विरुद्ध बात लिखी या नहीं। क्योंकि वह मैनेजिंगकमेटी सहारनपुरके सैक्रेटरी थे। हम अपने अनुभवसे और तहरीरोंके मिलानेसे कह सकते है, कि, उन्होंने नियमविरुद्ध कोई बात नहीं लिखी।

बड़ा भारी आक्षेप मुंशीजीका यह है कि, "हमको यह विश्वास दिलाया था कि, सहारनपुरकी पाठशाला महाविद्यालकी शाखा करार दी गई, वह मेरे अधिकारमें रहेगी और उसका सब सरमाया हमारे यहा रहेगा।" यहां इसमें कुछ शक नहीं कि, दो बार याने ३१ दिसम्बर १९०५ और २२ फरवरी १९०६ को सहारणपुरकी कमेटी और पंचायतने यह तजवीज किया कि जैन पाठशाला सहारणपुर और दीगर पाठशालायें महाविद्यालयकी शाखा होंगी, अर्थात् जैनकालिजके लिये लड़के तयार करेंगी। जब कि एक पाठशाला किसी बड़े विद्यालयकी शाखा हो जावे, तो सैक्रेटरीका यह कहना कि, वह मेरे अधिकारमें होगी, कोई अनुचित नहीं है। क्योंकि शाखाके ऊपर उच्चश्रेणीवालोंकी निगरानी जरूर होगी। अलबत्ता यह वाक्य कि, "सरमाया उसका हमारे यहां रहेगा," इस तहरीरके वक्त तक बाबू साहबका स्वत.का मत था, जो शाखा करार देने सम्बन्धी प्रस्तावके परिणामस्वरूप प्रगट होता है।

हम बाबू बनारसीदासकी तहरीरें आखिरकार देख रहे हैं, उनके शब्द शब्दपर विवाद नहीं कर रहे है कि, प्रत्येक शब्दका कुछ न कुछ अभिप्राय अवश्य होगा। बाबू साहब कोई कानून नहीं बना रहे हैं, साधारण पत्रव्यवहार कर रहे हैं। उसमें जोशदार शब्द आना जो कार्य विरुद्ध होनेकी हद तक न पहुंचै, हरगिज २ लिहाज करनेके लायक नहीं है। पूरी तहरीरोंका अभिप्राय देखना चाहिये कि, क्या था? उनका अभिप्राय हमारी समझमें महासभाके प्रस्तावकी तामील कराना और मुतहमिल उसके महाविद्यालयको सहारणपुर तबदील करानेपर जोर देना और उस सम्बन्धी प्रबन्धका प्रयत्न कराना था।

जो वाक्य सरमायेके सम्बन्धमे हमने ऊपर नकल किये है, एक बार मान लीजिये कि, वे झूठ कहे गये। परन्तु उस झूठका असर क्या? कुछ नहीं। क्यो? हम सोचते है, जो शर्तें मुंशी चम्पतरायने—बाबू बनारसीदाससे करना चाहीं, और साथ ही उनके एक शर्त पाठशाला सम्बन्धी भी है, जिसके विषयमें मुंशीसाहब तहरीर फरमाते है कि, मेरा विश्वास सब शर्तोंके साथ दृढ करा दिया गया, तब मुझको सिवाय राय बदलनेके क्या चारा था? हम यह पूछते है कि, ये शर्तें मुंशी सा० ने किस हुक्म तथा किस कायदेसे बनारसीदासके साम्हने पेश कीं? क्या महासभाके प्रस्तावके बाद यह बात फैसला होनेको बाकी थी कि, महाविद्यालय सहारणपुर तबदील किया जावे या नहीं? यदि किया जावे तो किस शर्तपर? सहारणपुरवालोंके किसी वादेपर, या उनकी किसी जमानतपर या जिम्मेदारीपर? नहीं, हरगिज नहीं।

बाबू बनारसीदासके पास निजी खानगी चिट्ठिया मुंशी चम्पतरायके जानिबसे पेश होना दर हालां कि कोई अधिकार महासभा या कमसे कम प्रबंधकारिणीकमेटी महासभाके नहीं है कहां तक नियमानुकूल है, उसको पाठकगण विचारें। हमने कार्रवाई दिखला दी, उससे नतीजा निकालना पाठकोंका काम हैं।

अब कि कोई शर्त महाविद्यालयके तबादलेके लिये नहीं की गई, तो अगर बाबू बनारसीदासने अपनी रायके मुआफिक यह भी अभिप्राय निकाल लिया कि, सरमाया पाठशालाका हमारे यहां रहेगा और कल्पना कीजिये कि, इसपर भरोसा करके मुंशी साहबने अपनी विरुद्ध रायसे हाथ खींच लिया, तो उससे क्या नुकसान हुआ? कुछ नहीं। क्यों? मुंशी सा० का वह शर्त लगाना और बाबू सा० का उसका उत्तर देना, जब कि महासभाके प्रस्तावके अनकूल नहीं है, तो उन दोनों तहरीरोंको बीचमेंसे निकाल डालिये, नियमानुसार उसका कुछ असर बाकी नहीं रहता। इसलिये खुलासा तहरीरपर ध्यान देनेसे पाठकगण नतीजा निकाल लें, कि, कौन तहरीरें महासभाके प्रस्तावके अनुसार हैं, और कौन उससे विरुद्ध हैं। अब हम पाठकोंसे एक प्रश्न और करते हैं कि, महासभामें सिर्फ एक लाला घासीरामकी विरुद्धता प्रगट होकर जब कि एक सम्मतिसे यह निश्चय हो गया कि, महाविद्यालय सहारणपुर तबदील किया जावे, तो अब किस मेम्बर या कार्यकर्ताको यह अधिकार था, कि उस प्रस्तावको रद्दी कागज ख्याल करके उस पर जोर देना कि वह तबदील नहीं हो सकता है? अथवा किस शर्त पर मुंतकिल हो सकता है? हमारी छोटी सी रायमें हरगिज नहीं।

क्या शीघ्र ही महाविद्यालयके तबादलेके पहले अथवा तबादलेमे एक दो माहके अन्दर ही यह राय कायम हो सकती है कि, महाविद्यालयको नुकसान पहुंचा। किसी तरह नहीं, जब तक कि अनुभव न होवे। अगर पहुंचा या पहुचनेका अंदेशा किसी साहबके ख्यालमें होवे, तो सिवाय इसके और कोई युक्ति या नियम नहीं मालूम होता है कि, उसका बन्दोबस्त महासभासे दरख्वास्त और तहरीक और उसके नुकसानोंका दिखलाना और तजबीज कराना कि अब क्या किया जावे। नुकसान दूर किया जावे या दूसरी यत्न किया जावे। हम नहीं कह सकते कि, महासभाने महाविद्यालयका तबादला सर्वथा चन्देके वादोंपर स्वीकार किया कि और कोई कारणो पर? क्योंकि महासभाकी ऐसी कोई कारवाई महाविद्यालयके

स्थानान्तरके विषयमें मौजूद नहीं है कि, जिससे उसके तबादलेके कारण मालूम हों। अफसोस है कि, महासभाने केवल वायदे ही किये और मुंशी बाबूलाल सा० के इस वाक्यपर किसीने भी विचार नहीं किया कि, सर्वथा वादोंपर कैसे काम शुरू किया जा सकता है? महाविद्यालय या स्कूल या कालिज जिस वक्तसे नाम लिया जावे, खर्च तलब करते हैं। विनाखर्चके किस भरोसे पर खोले जा सकते हैं?

नेमीदास वकील,
सहारनपुर।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन समाजका वार्षिकोत्सव।

बेलगांव जिलेके निपाणी कस्बेसे चार मीलकी दूरीपर स्तवनिधिक्षेत्र है। यह स्थान पश्चिम तथा दक्षिणकी पर्वतमालाओंसे सुन्दर जिनमंदिरोंसे, सघन वृक्षोंसे और चारों ओर पानीकी बहुलतासे अतिशय मनोरम है। यहा प्रतिवर्ष पौष शुक्ला पूर्णिमाको जैनियोंका बड़ी भारी मेला भरता है और उसीके साथ साथ उक्त सभाके अधिवेशन होते हैं। इस सभाको स्थापित हुए आठवर्ष हुए हैं। इतने समयमें इस सभासे हमारे जैनसमाजको बहुत कुछ लाभ पहुचे हैं, जो समय समयपर जैनमित्रमें प्रकाशित होते रहे हैं। इस वर्ष नियत तिथिपर इसके अधिवेशन हुए और गत वर्षोंकी अपेक्षा विशेष जोरशोरसे हुए। सभापतिका स्थान आलन्दके धर्ममूर्ति शेठ माणिकचन्द मोतीचन्दजीने सुशोभित किया था। आपका स्वागत बडी धूम धामसे हुआ। हाथीपर आरोहण कराके आप सभास्थानमें उपस्थित किये गये थे। सभामडप बहुत अच्छा तयार किया गया था। स्वागत कमेटीके अध्यक्ष श्रीमन्त पायप्पा देसाई जो कि हनगडी संस्थानके एक बडे भारी जमींदार हैं, बनाये गये थे। सभापति महाशय तथा स्वागतसभाके अध्यक्षके व्याख्यान बहुत अच्छे हुए। हमारी इच्छा थी कि, दोनोंका अनुवाद जैनमित्रके पाठकोंको भी सुनावें, परन्तु स्थानाभावसे ऐसा नहीं किया जा सका। सभाके उत्सवमें दक्षिण प्रान्तके शेठ हीराचन्द नेमिचन्दजी आन० म०, शोलापुर, मि० लठ्ठे, एम.ए. कुरुंदवाड, मि० चौगुले बी. ए एल एल, बी, बेलगाव, बापू अण्णापा पाटील बी. ए मामलतदार कोल्हापुर, पं कल्लापा भरमापा निटवे, आदि प्रसिद्ध २ सभी मुखियोंके सिवाय कोल्हापुर राज्यके डिस्ट्रिक मजिस्ट्रेट रावसाहब जादवराव एम. ए. एलएल, बी, भी शामिल हुए थे। आपकी जैनसमाजके साथ खूब सहानुभूति है। आपने व्यापारिक शिक्षाकी उन्नति विषयक प्रस्तावका अनुमोदन करते हुए कहा, मैं प्रतिवर्ष सभामें शामिल होता हूं, परन्तु मजिस्ट्रेट अथवा डिस्ट्रिक्टके रूपमें नहीं आता हू, किन्तु आप लोगोंका मित्र बनकर यथाशक्ति सहायताके लिये आता हूं। जैसे स्त्रियां अपने छोटे छोटे बालकोंका विवाह करनेके लिये आग्रह करके बैठ जाती हैं, उसी प्रकारसे जब हम उस अपनी संततिको शिक्षित बनानेके लिये हठ धारण करेंगे. तब ही विद्याका प्रचार होगा। पंजाबकी नाईं यहांकी प्रत्येक स्त्री यदि पुरुषोंकी सम्मति लेकर प्रतिदिनके दलियेमेंसे एक एक मुट्ठीभर अन्न देना विचार लेवे, तो कोल्हापुरके जैनबोर्डिंग जैसी शिक्षासंस्थायें खूब उन्नतिकर सकती हैं, इत्यादि। कोल्हापुर सरकारकी महाराष्ट्रसभापर सविशेष कृपा है, यह हर्षकी बात है। शनिवारसे लेकर मंगलवार तक सभाकी चार बैठके हुईं। जिनमें निम्नलिखित ११ प्रस्ताव पास हुए —

१ जैनियोंके बालक प्राथमिकशिक्षण प्रत्येक ग्राममें किस प्रमाणसे पाते हैं, इसकी रिपोर्ट प्रतिवर्ष निकाली जावे। २ जैनियोंमें धर्मशिक्षण एक आवश्यक कर्तव्य है। इस लिये इसके प्रचारके लिये जो कोल्हापुरमें विद्यालय खोला गया है, उसमें प्रत्येक गावके पंचोंको एक एक दो दो चतुर बालक पढनेके लिये भेजना चाहिये। और सभाको ऐसी धर्मप्रतिपादक सरल पुस्तकें मराठी तथा कानडीमें तयार कराके प्रकाशित कराना चाहिये, जिनसे पाठशालाओंके उच्चश्रेणीके विद्यार्थी धर्मज्ञान प्राप्त कर सकें। पुस्तकें शेठ हीराचद नेमिचद और पं. कल्लप्पा भरमापा तयार करेंगे। ३ सभाके शिक्षाफंडको बढाना चाहिये और जिन महाशयोंने वादा किया है, उन्हें चन्दा दे देना चाहिये। ४ प्रत्येक धर्मादाय तथा धर्मस्थानका द्रव्य उसके व्यवस्थापक लोग उचित रीतिसे व्यय करें, इसके लिये सरकारकी ओरसे एक नियम बनानेकी प्रार्थना की जावे। ५ जातिबंधन दृढ रखनेके लिये पंचायतियोंकी आवश्यकता है। सब प्रकारके झगडे अदालततक न ले जाके पंचायतियोंमें तय करना चाहिये। इसके लिये गाव और प्रान्तकी पचायतिया स्थापित करके उनके नियम वगैरह तयार किये जावें। और राव सा. संगाप्पा अकले, रा रा. दादा चिवटे, रा. रा तवनप्पा शेठी इसका व्यवस्थापत्र तयार करें। ६ बालविवाह नहीं करना चाहिये। वरकी आयु २० और कन्याकी १२ वर्ष होनी चाहिये। ७ औद्योगिक शिक्षाकी ओर विद्यालयके विद्यार्थियोंकी रुचि बढानी चाहिये और उन्हें औद्योगिक शिक्षार्थ भेजनेका प्रयत्न करना चाहिये। ८ मद्रासमें विजयनगरकी महाराणीने एक पांजरापोल स्थापित किया है, इस लिये उनके पास सभाकी ओरसे एक अभिनन्दन पत्र भेजा जावे। ९ स्त्रियोंको लिखने, बांचने, हिसाब, कशीदा काढनेकी शिक्षा देनेका प्रत्येक पुरुषको प्रयत्न करना चाहिये। और स्त्रीशिक्षाप्रचारके लिये सभाके स्त्रीशिक्षाफंडमें प्रत्येक स्त्रीपुरुषको सहायता देना चाहिये। १०-११ आगामी वर्षका बजट पास किया जावे और कार्यकर्ता चुने जावें।

सोमवारकी रात्रिको स्त्रियोंकी एक बडी भारी सभा हुई, जिसमें श्रीमती सौभाग्यवती कुसुमावती बाईकी अध्यक्षतामें अनेक स्त्रियोंके हृदयद्रावक व्याख्यान हुए। इस सभामें आठसौ स्त्रियां और डेड हजार पुरुष एकत्र हुए थे। सभासम्बन्धी सर्व कार्य स्त्रियोंने ही किये थे।

मूडबिद्रीके भट्टारक पट्टाचार्य श्री चारुकीर्तिजी तथा और भी ४-५ त्यागि महाशय इस उत्सवमें सम्मिलित हुए थे। भट्टारक महाराजका एक व्याख्यान भी हुआ था, जिसे श्रोताओंने बडे प्रेमसे सुना था।

तीसरे दिन मानस्तंभका १०८ कलशोंसे महा अभिषेक तथा पूजन हुआ था, और चौथे दिन रथयात्राका महोत्सव बडी धूमधामसे हुआ था। अन्तमें सभापति सा० ने गद्गद कंठसे थोड़ासा उपदेश देकर सभाका कार्य पूर्ण किया। सभाने अपने कार्योंसे अपने प्रान्तमें खूब जागृति उत्पन्न की है। सभाके कार्य कर्त्तागण उत्साही और सुदक्ष हैं, इससे इसकी उन्नतिकी बहुत कुछ आशा की जाती है। अच्छा हुआ कि, सभामें विधवाविवाहका प्रस्ताव उपस्थित नहीं किया गया।

श्री गजपंथाजी अधिवेशनपर विचारणीय प्रस्ताव।

१ बम्बईका विद्यालय चिरस्थाई किया जाय और उसके लिये बम्बई प्रान्तवासियोंकी ओरसे एक प्रवेशिका पाठशाला खोली जावे जिसमें वि-

र्थी तयार होकर विद्यालयमें भरती किये जा सकें।

२ विवाह, यज्ञोपवीत आदि जैनमतके संस्कारोंके प्रसार करनेकी चेष्टा की जावे—और इन विषयोंकी छोटी २ पुस्तकें लिखी जावें जो मुद्रित कराकर थोड़े मूल्यमें वितीर्ण की जावें।

३ जैनग्रन्थोंका एक शारदाभवन (Library) उचित स्थान पर बनाया जावे, जिसमें वर्तमान ग्रन्थों वा नूतन उपलब्ध ग्रन्थों की कमसे कम एक एक प्रति संग्रह की जावे।

४ ज्योतिषविद्याके जानकार जैनियोंमें विरले हैं, अत: इसके पढनेका प्रबन्ध किया जावे। प्रथम ही शेठ गुरुमुखराय सुखानन्दजीने जो, एक विद्यार्थियोंके लिये २ वर्ष पर्यन्त १०) रु. मासिक इसके पढ़नेके लिये देना स्वीकार किया है, उसके वास्ते कोई विद्योत्साही अन्वेषण किया जावे।

५ "जैनमित्र" पाक्षिकसे साप्ताहिक (आगामी वर्षसे) किया जावे, कारण जैन सम्प्रदायको इससे बडा लाभ होता है।

६ प्रत्येक जैनीको अपनी सन्तानको धर्मशिक्षण देनेकी प्रेरणा की जावे।

७ बम्बई प्रान्तमें कमसे कम दो तीन उपदेशकोंका दौरा कराया जावे।

८ सूतक, प्रेतक, रजोधर्म, प्रतिक्रमण, संध्यावदन, सामायिक, अभिषेक, सृष्टिकर्तांखण्डन, जैनभूगोल (Geography) नित्य क्रिया, विधवाविवाह खण्डन इत्यादि आवश्यकीय विवादापन्न विषयोंकी शास्त्रानुकूल पुस्तकें लिखी जावें और अल्पमूल्यमें बांटी जावे।

९ वृद्ध विवाह, बाल्यविवाहकी प्रथा बन्द की जावे और कन्याविक्रयके घृणित कृत्य करनेवालोंको पंचायतियोंकी ओरसे दण्ड देनेका प्रबन्ध किया जावे।

१० जैनियोंमे प्रतिष्ठा करानेवाले अच्छे जानकार बहुत कम हैं, इस लिये प्रतिष्ठापाठके पढ़ानेका भी प्रबन्ध किया जावे।

११ मोरस शक्कर, अशुद्ध केशर, चर्बीकी मोमबत्ती, चर्मके पुड़े, कुप्पेका घी, अंग्रेजी डाक्टरोंकी बनाई हुई अशुद्ध दवाइयां इत्यादिकी प्रवृति बन्द की जावे।

१२ जैनियोंके एकमात्र वैद्यराज प. कन्हैयालालजीको सभाकी ओरसे एक मेडल दिया जावे।

बुधमल पाटणी।

विवाद करनेवाले भाईयोंसे प्रार्थना।

बहुधा ऐसा देखनेमें आया है कि, जब कोई जैनी भाई किसी दूसरे जैनीसे शास्त्रानुसार धर्म कर्म तथा लौकिक क्रिया, सामाजिक रीतिरस्म, अथवा प्रचलित कुरीतियोंके विषयमें कुछ पूछता है, तब यदि उत्तरदाता विवेकी होता है, तो किसी प्रकार पृच्छककी इच्छा पूर्ण हो भी जाती है, परन्तु जो किसी अर्द्धदग्धसे पूछ लिया, तो रागद्वेषादि वृद्धिकारक विवादकी सीमा यहांतक बढ़ जाती है कि, वह बासकी रगड़से पैदा हुई अग्निकी तरह बांसहीको भस्म कर देती है। लोग व्यर्थ ही क्रोधाग्निसे एक दूसरेके साथ कठोर कर्कश वचन रूप बाणोंसे मर्मछेदनादि कर वैरभाव बांध कर दुर्गतिके पात्र बन जाते हैं। ऐसे भाइयोंके हितार्थ चर्चासमाधान नामक ग्रंथमें इस प्रकारके विवादको मिटानेके वास्ते लिखा है,—

दोहा।

आदि अन्तमें विरस है, वैरभाव दुखरूप।
आदि मधुर आगें मधुर, मैत्रीभाव अनूप ॥ १ ॥
जिनश्रुतसागरतें कढ्यो, चर्चा अमृत महान।
मति अँजुलीपरिमाण निज, करो निरंतर पान॥ २ ॥
जेठ मासके दिन बडे, माघ बड़ेरी रात।
जिनमतकी चर्चाविना, विफल करो मत प्रात ॥ ३ ॥
जिनमत चर्चा परम रस, चाख्यो नहीं रसाल।
नर तरुवर उपज्यो सुभग, फल नहिं लाग्यो डाल॥४
पठन प्रश्न श्रुत चिन्तवन, परिवर्तन उपदेश।
पचभेद स्वाध्यायके, चर्चा नाम अशेष ॥ ५ ॥
जैनधर्मको मर्म है, अति दुर्लभ जगमांहि।
समकितको कारण सही, यामें धोखो नाहिं ॥ ६ ॥
जैनधर्मको मर्म लहि, वर्तै मान कषाय।
यह अपुब्ब अचरज सुन्यो, जलमें लागी लाय॥ ६ ॥
काल्हदोषसों भ्रम पड्यो, जिनमतचर्चामांहि।
तिनको निर्णय जोग्य है, जिनआगमकी छांह ॥ ८ ॥
वचनपक्षमें गुण नहीं, नहिं जिनमतको न्याय।
ऐंच खेंचसों प्रीतिकी, डोर टूटि झट जाय ॥ ९ ॥
ऐंच खेंचसों बहुत गुण, टूटत लगै न वार।
ऐंच खेंच विन एक गुण, नहिं टूटै निरधार ॥ १० ॥
वचन पक्ष परवश कियो, भयो कौन कल्यान?।
वसु भूपति भी पक्षकर, पहुंचे नरक निदान ॥ ११ ॥
वचनपक्ष करणों बुरो, जहां धर्मकी हान।
निज अकाज परको बुरो, जरो जरो यह बान ॥ १२ ॥
प्राकृतवानी सों मिलै, सो सस्कृत दृढ जान॥
मिलै सस्कृत पाठसों, सो भाषा परमान ॥ १३ ॥
बालबोध भाषावचन, उपकारी अभिराम।
शास्त्रसाखि तउ चाहिये, साखिबिना निःकाम ॥ १४ ॥

चौपाई।

सत्यारथचर्चा जो ठीक।
भरमभावसों भई अलीक ॥
बहुत बात अनधारय चली।
यह निश्चय जानों बुधवली ॥ १५ ॥
वक्ता वचन पक्ष नहिं गहै।
श्रोता हठ छोड़न नहिं कहै।
कैसें चलै यथारथरीत।
कलिविरतन दीसै विपरीत ॥ १६ ॥
जिनमत चर्चा अगम अपार।
कोहै तिनको जाननहार ॥
तिनमेंकी कुछ सुध करलेहि।
आगें और खोज तन देहि ॥ १७ ॥
जानन जोग लियो हम जान।
कहा हमारे दिढ़ सरधान ॥
यही सही समकितको अग।
काहे करें और श्रुतसग ॥ १८ ॥
नृपति भयें वरतै इहि भाय।
किधों रहै पचामृत खाय ॥
जिनमतकी ऐसें नहिं रीत।
तातें खोजी रहो पुनीत ॥ १९ ॥
खोज कियें गुन होय विशेष।
वाद विषै गुनको नहिं लेश ॥
पूँछतडा नर पडित होय।
जागतडां नर मुसै न कोय ॥ २० ॥

सोरठा।

याही तें सब कोय, ग्वालवाल भी कहत हैं।
खोजी जीवो लोय, वादीके जीवन विफल ॥ २१ ॥

चौपाई।

जो तुमनीके लीनों जान।
तामें भी है बहुत विनान ॥
तातें सदा उद्यमी रहो।
ज्ञान गुमान भूलि मन गहो ॥ २२ ॥
जो नवीन चर्चा सुन लेहु।
ताको तुरत धका मत देहु।
दोय चार दिन करो विचार।
एकचित्त करि वारम्वार ॥ २३ ॥
यामें कहा दोष है मीत।
विनय अग जिनमतकी नीत ॥
आज्ञाभग है पाप विशाल।
मूरख नरके भावे ख्याल ॥ २४ ॥

सम्यक्दृष्टी जीव सुजान ।
जिनवरउक्ति करै सरधान ॥
अजथारथ श्रद्धा भी करै ।
मंद ज्ञानवश दोष न धरै ॥ २९ ॥

सुन्दरलाल बैनाड़ा—
झालरापाटण ।

वैद्यक ग्रन्थोंकी शोध ।

ससारके जितने कार्य हैं, उन सबकी उन्नति होनेका उपाय उस कार्यके साधनकी सामग्रीका सद्भाव है । इसही युक्तिको लेकर जब हम विचार करते हैं, तो पता लगता है कि, जैनधर्मकी उन्नतिका साधन जैनधर्मके जाननेवाले विद्वानोंका तथा जैनग्रंथोंका यावन्मात्र संसारमें प्रचार होना है । इसलिये जगह २ संस्कृतविद्यालयों और सरस्वती-भंडारोंके स्थापित होनेकी बहुत जरूरत है । साथ ही यह भी आवश्यकता है कि, इतस्ततः बहुतसे प्राचीन भंडारोंमें जो प्राचीनकालके लिखे हुए अनेक ग्रंथोंका पता लगा है, उनके प्रचारके और जीर्णोद्धारके लिये कुछ प्रबंध करना चाहिये । विशेष कर वैद्यक ग्रन्थोंकी खोजके लिये तो शीघ्र ही कुछ प्रयत्न होना चाहिये । क्योंकि अन्यान्य भिन्नधर्मी लोग हमारे धर्मशास्त्रोंको धर्म-पक्षके कारण उतना पठन पाठनमें नहीं ला सकते, जितना वैद्यकग्रन्थोंको सर्वोपयोगी होनेके कारण लावेंगे । और यदि हमारे वैद्यकग्रन्थोंका सर्वत्र प्रचार किया जायगा, तो सबका उपकार होगा और जैनधर्मकी प्रभावना होगी । सिवाय इसके हमारे आचार्योंके बुद्धिका गौरव भी सब पर पड़ैगा जिससे हमारे अन्यान्य ग्रन्थोंके देखनेकी रुचि भी सर्व साधारणमें बढैगी, जिससे जैनधर्म क्या है, यह जाननेका सबको अवसर मिलेगा । कर्णाटक तथा दक्षिणमे भगवत्पूज्यपादादि आचार्योके बहुतसे ग्रन्थ सुने जाते हैं । परन्तु उनका प्राप्त होना परिश्रम व्यय और प्रयत्न साध्य है, केवल पत्रव्यवहारसे कुछ नहीं हो सकता है। क्योंकि मैं इसकी परीक्षा कर चुका हूं । इस लिये श्रीमती दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बईको यह कार्य अपने हाथमें अवश्य ही लेना चाहिये । यदि सभा ग्रन्थ प्राप्त करनेमें समर्थ हुई, तो मै उन ग्रन्थोंके प्रचार करनेके लिये, उद्धारके लिये और टीका आदि बनानेके लिये सर्वथा तयार हू ।

श्री गजपंथाजीके अधिवेशन पर आशा है कि, मेरा यह प्रस्ताव अवश्य ही विचारके लिये उपस्थित होगा ।

कन्हैयालाल वैद्य ।

पत्रोंका सार

एक उदार धर्मात्माकी मृत्यु ।

शोक अतिशोककी बात है कि, भावनगरके शेठ छगनलाल धनजीका परलोकवास हो गया । आप पालीताणा दिगम्बरी कारखानेके सभासद और सहायक थे । आलोचनापाठ पढ़ते २ समाधि-सहित आपकी मृत्यु हुई । आप बड़े उदारचित्त थे । अन्त समयमें आप इस प्रकार दान देनेकी आज्ञा दे गये हैं —

१ पाच हजार रुपयेके व्याजमेंसे प्रतिवर्ष २०) एक वैद्यको दिये जावें, जो पालीताणामें आनेवाले यात्रियोंके पास दिनमे दो बार जाके दवाई देवे । २ पालीताणाके दि० मंदिरोंके जीर्णोद्धारके लिये प्रतिवर्ष १०) देना । ३ बनारसकी स्याद्वाद पाठशालामें प्रतिवर्ष २९) देना, ४ प्रतिवर्ष ५०) गरीब श्रावकोंके भोजन खर्चमें और विधवास्त्रियोंको पढानेके लिये देना । ५ शिखरजीके यात्रियोंके जल-पानके लिये १०) साल देना, और ६ कार्तिक सुदी १ को प्रतिवर्ष भावनगरकी विरादरीको एक वक्त भोजन कराना ।

पालीताणाके मंदिरके नौकरोंको तथा यात्रियोंको ध्वजारोहणके दिन प्रतिवर्ष एक एक वक्त भोजन कराना और पूजा कराना । पालीताणाके शहरके मंदिरकी सफेदी कराना, और ११००फुट जमीनमें फरसबध कराना । भावनगरमें पूज्यपिताकी याद-गारमें तीन हजार रुपयेमें एक धर्मशाला बनवाना । ५००) सिद्धक्षेत्रोंके जीर्णोद्धारमें और शास्त्रदानमें देना । शेठ छगनलालजीके कोई पुत्र नहीं है । तीन लड़किया है । बडे भाईके दो लड़के हैं, भावनगर और बम्बईमें आपकी दूकान चलती है । श्रीजीकी आपकी आत्माको सद्गति देवें ।

धरमचन्द हरजीवनदास मुनीम—
पालीताणा ।

जिनकलशोत्सव ।

सिंगोली (नीमच) में श्री मंदिरजीपर ६ कलश फागुनसुदी ३ को चढेंगे । सो फागुन वदी ८ को श्रीभगवान् रथमें विराजमान होकर सभामंडपमें उपस्थित होंगे, उस दिन तेरहद्वीपका पूजन विधान होगा । फिर सुदी १ को पञ्चवर-वेदीका लेपन और दूसरे दिन जलयात्रा होकर तीसरे दिन कलशप्रतिष्ठा होगी । इस धर्मोत्सवमें सब भाइयोंको पधारना चाहिये । यहां एकादश प्रतिमाधारी क्षुल्लक जानकीलालजी विराजमान है । उनके दर्शनोंका अपूर्व लाभ होगा ।

छीतरजी हजारीमल मोदीवाल ।

अंजड (सरदारपुर)–ता० ९-१-०७को महासभा मथुराकी ओरसे उपदेशक पं० मुन्नालालजी आये । सभा करके उपदेश दिया । दूसरे दिन वैष्णव तथा आर्य समाजियोंसे प्रश्नोत्तर हुए । तीसरे दिन फिर भी सभा हुई । अन्यमती पंडितोंको भी बुलाये । मुसलमानोंके मुल्लासे बातचीत हुई । उपदेशक महाशय यहा दो चार दिन और रहते तो अच्छा होता । पदार्थोंका अच्छी तरहसे निर्णय हो जाता ।

गेंदालाल गुलाबचंद ।

आगरा–शोककी बात है कि, हमारे जैनियोंमे भी यात्री लोग चोरी करते है । मन्दिरोंके मालको आख बचाकर उडा ले जाते है । आगरेके बड़े मंदिर मोतीकटरेमें कोई महाशय श्रीजिनप्रतिमाके ऊपरसे छत्र और नमककी मंडीके चैत्यालयमेंसे चादीके दो चँवर चुरा ले गये । मन्दिरके व्यास वगैरह लोगोंकी गफलतसे ऐसा होता है, इसलिये उनको ताकीद कर देनी चाहिये । अबकी वार महासभाका जल्सा आगरेमें होनेकी कोशिश की गई थी, परन्तु समयकी न्यूनतासे तथा दरबारकी धूमधामसे नहीं हो सका और कलकत्तेमें हुआ । मुंशी चम्पतराय सा० का एक तार यहांके रईस गोपीनाथजीके नाम आगामी सालकी मजूरीके लिये आया है, परन्तु अभी कोई उत्तर नहीं दिया गया ।

D S JAINI, C M S, शीतलागली ।

आवश्यकीय सूचना—श्री सिद्धक्षेत्र गजपंथा अधिवेशनपर आनेवाले जैनी भाइयोंको प्रगट हो कि, जो पत्र उनके पास श्री गजपंथाजी पर आवें, वे इस पतेसे आने चाहिये, जिससे यथोचित समय पर उन्हें मिल सकें:—दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा, मु० म्हसरूल, पोस्ट—नासिक ।

हीराबाग
ता १०-१-०७ ई० } आर्य—मंत्री स्वागतकमेटी.

दि० जै० प्रांतिकसभा बम्बईका अधिवेशन।

श्री सिद्धक्षेत्र गजपन्थजी पर अधिवेशनके लिये खूब तयारियां हो रही हैं। मंडपका कार्य प्रारंभ हो गया है। यात्रियों दर्शकों तथा प्रतिनिधियोंके ठहरनेके लिये स्थान तयार हो रहे हैं। इस बातका खूब प्रयत्न हो रहा है कि, यात्रियोंको किसी प्रकारका कष्ट न हो। इसी लिये इस उत्सव सम्बन्धी कार्य इस प्रकार पृथक् २ भाइयोंको सौंपे गये हैं।

१ स्वागतकमेटीके अध्यक्ष—शेठ चुन्नीलाल झवेरचन्दजी जौहरी।

२ मडंप व कैंपके प्रबन्धकर्ता—१ शेठ सुखानंदजी (शेठ गुरुमुखरायजी सुखानद फर्मके मालिक) शेठ माणिकचन्द हीराचन्द, जे. पी.।

३ पाहुनोंकी व्यवस्था आमंत्रण आदि—शेठ रावजी सखाराम शोलापुर, मि० माणिकचद रावजी बम्बई, मन्नूभाई।

४ सभाके विषयनियंत्रा और व्याख्याता—प० गोपालदास बरैया, प० जवाहरलाल शास्त्री।

५ जलयात्रा व ध्वजारोहणकी व्यवस्था—शेठ रावजी नानचद, शोलापुर।

६ सभापति तथा पाहुनोकी व्यवस्था—(नासिकमे)—शेठ रामचन्द्र नाथा, लाला नंदलालजी पाटोदी, शेठ गिरधरलाल निहालचन्द।

७ वालंटियर्स कॅपटन—जीवराज बालचन्द शोलापुर, ताराचन्द नवलचन्द बम्बई, अमरचन्द।

८ सभासदोंको फूल वगैरह लाकर देना और पासकी व्यवस्था करना—लाला प्रभुदयालजी कानपुरवाले।

९ पोष्ट, पोलिस, व रेल्वेकन्सेशन—पं० धन्नालालजी, मि० लल्लूभाई, एल. सी ई.।

१० नासिकके मुखियाओंको आमंत्रण—शेठ हीराचन्द नेमीचन्द शोलापुर, शेठ चुन्नीलाल झवेरचन्द, शेठ ताराचंद साहबराम, सदासुख सावतराम।

११ रिपोर्ट व अखबारोंको तार देना—मि० लल्लूभाई (गुजराती) नाथूराम प्रेमी (हिन्दी) माणिकचन्द रावजी (मराठी)।

१२ भोजनव्यवस्था—लाला बाबू राजमलजी, मि० ए. बी. पाठमारे।

दूकानदार सम्बन्धी व्यवस्था—भीकचन्द हजारीमल नासिक, बाबू फूलचन्द पाटणी।

१४ औषधोपचार—वैद्यराज वैद्यरत्न पं० कन्हैयालालजी जैन।

१५ अध्यक्षके सम्मानार्थ स्टेशनपर बेंड वगैरहकी व्यवस्था—प० लालारामजी, शेठ भीकचन्दजी, शेठ खुशाल चदजी।

१६ गाडी घोडोंकी व्यवस्था—भाऊलाल रूपचन्दजी, नांदगांव, पं० धन्नालालजी बम्बई।

१७ दफ्तरव्यवस्था—बाबू बुद्धमल पाटणी, बाबू मौजीलाल।

पंडित कैसे तयार होंगे?

आज बहुत वर्षोंसे प्रयत्न किया जा रहा है कि, जैनियोंमें जगह २ पाठशालायें स्थापित होवें, और उनके द्वारा धर्मविद्याका प्रचार बढ़ाया जावे। परन्तु यथार्थमें अभीतक यह प्रयत्न सफलीभूत नहीं हुआ है। क्योंकि जैनियोंमें अध्यापक नहीं मिलते। लोग पाठशालायें खोलनेके लिये चन्दा किये हुए बैठे हैं, परन्तु पडितोंके न मिलनेसे वे पाठशालायें खोलनेमें असमर्थ हैं। सिवाय इसके जिन पाठशालाओंको भाग्यसे दश पाच पंडित मिल भी गये हैं, वे विद्वान होनेपर भी पाठशालाओंकी उन्नति नहीं कर सकते और न लोगोंका उत्साह सदा एकसा बनाये रखनेमें समर्थ होते हैं। वे स्वय पंडित हैं, परन्तु बालकोंको पडित कैसे बनाना, यह नहीं जानते हैं। इस लिये धर्मविद्याकी उन्नति करनेके लिये सबसे प्रथम पंडित तयार करनकी आवश्यकता है, और वे पंडित ऐसे होना चाहिये, जा अच्छ लेखक हों, उपदेशक हों, पढानेमें चतुर हों, और लोगोंका चित्त आकर्षित करनेवाले हों। बम्बईके संस्कृतविद्यालयकी ओरसे साल साल दो दो साल तक धर्मविद्या पढाकर जैनपाठशालाओंके लिये अध्यापक तयार करनेको ब्राह्मण पंडित भर्ती करनेका प्रयत्न किया गया था, परन्तु वह सफल नहीं हुआ। दो तीन ब्राह्मण भर्ती हुए और खा पीकर छूमंतर हो गये। वर्तमानमें जो विद्यार्थी संस्कृत विद्यालयमें तथा महाविद्यालयमे पढ़ रहे हैं, उनमेंसे यद्यपि बहुतसे विद्वान् हो जावेंगे। परन्तु मुझे आशा नहीं है कि, वे विद्वान् होनेके सिवाय अच्छे अध्यापक भी होंगे। क्योंकि वर्तमान संसारके अनुसार उन्हें दूसरे विषयोंकी शिक्षा सर्वथा नहीं दी जाती और न वे अनुक्रमसे शिक्षा पाये हुए हैं। इस शिक्षाके विना ही आज हमारे बाबू लोगोंका यह आक्षेप रहता है कि, पंडित लोग किसी कामके नहीं होते है। और है भी यथार्थमें यही बात। हमारे पंडितोंको भाषा, गणित, भूगोल, इतिहास, पदार्थविद्या, शिक्षापद्धति आदिका सर्वथा ज्ञान नहीं रहता। इससे न वे कुछ लिख ही सकते हैं, न अच्छे उपदेशक हो सकते हैं और न अपनी प्रतिष्ठा बढ़ा सकते हैं। इसलिये अब पडित बनानेकी प्रणालीको बदल देना चाहिये। विद्यालयोंमें ऐसे विद्यार्थी भरती करना चाहिये, जो हिन्दीके सरकारी स्कूलोंमें अनुक्रमसे शिक्षा पाये हुए हों। इसके सिवाय शीघ्र ही पंडित बनानेके लिये नार्मलस्कूलोंके टीचर पासशुदा (विलिज और टौन स्कूल) विद्यार्थियोंको अच्छी स्कालर्शिप देकर विद्यालयोंमें सिर्फ दो वर्ष शिक्षा देना चाहिये। तीन वर्षमें ही ये पाठशालाओंमें पढाने योग्य अच्छे अध्यापक, उपदेशक और लेखक बन सकते हैं। और ये लोग जितना काम कर सकेंगे, उतना अच्छे २ पंडितोंसे न होगा। नार्मलस्कूलोंमें इन्हें गणित, क्षेत्रव्यवहार, रेखागणित, बीजगणित, चित्रविद्या, भूगोल, इतिहास, शिक्षापद्धति, पदार्थविज्ञान आदि सम्पूर्ण विषयोंकी ऊंची शिक्षा दी जाती है। इनकी योग्यता अंग्रेजीके म्येट्रकलेशन, तथा एफ. ए. तककी रहती है। इन्हें पढ़ानेके लिये कमसेकम दशबारह रुपयेकी स्कालर्शिप दी जावेगी, और पढ चुकनेपर पच्चीस या तीस रुपयाकी नौकरी दी जावेगी, तो ये खुशीसे विद्यालयोंमें भरती हो जावेंगे। क्योंकि इन्हें नार्मलस्कूलमें छह सात रुपया स्कालर्शिप और पढ चुकने पर १२–१५ रु० की स्कूलमास्टरी मिलती है। ऐसे जैन विद्यार्थियोंके भरती करनेके लिये नार्मलस्कूलके अध्यापकोंसे तथा शिक्षा खातेके अफसरोंसे लिखा पढी करनी होगी। हम आशा करते हैं कि, प्रान्तिकसभाके अधिवेशन पर मेरे इस प्रस्तावका अवश्य विचार होगा। और धर्मविद्याकी उन्नति चाहनेवाले धर्मात्मा इसके लिये शीघ्र ही दश पांच स्वतंत्र स्कालर्शिपें नियत कर देंगे।

नाथूराम प्रेमी।

विविधसमाचार ।

हर्ष है कि, दानवीर शेठ माणिकचन्दजीके परिश्रम और उत्साहसे स्याद्वादपाठशाला काशीके ध्रुवफण्डमें पन्द्रह हजार रुपयेका चन्दा पूरा हो गया । अब शेठजी साहब उक्त पाठशालाका फंड पचास हजारका करना चाहते है । शेठजीकी यह शुभकामना शीघ्र पूर्ण हो ।

अबीसीनियाके राजाने अपने राज्यमे यह आज्ञा जारी की है कि, जो कोई हुलास (तम्बाकू) सूघेगा, उसकी नाक काट डाली जावेगी और जो तम्बाकू पीवेगा, उसकी फांसी दी जावेगी । मराको राज्यमें तम्बाकू पीने तथा खानेवालेको ढिंढोरा पीटके निकालते हैं, और फिर उसे कैद कर देते है ।

जर्मनीमें २२ विश्वविद्यालय हैं । उनमे ३०००अध्यापक और ४०,००० विद्यार्थी हैं ।

हिन्दुस्थानकी कुल मनुष्यसख्या २९,४०,००,००० है। इनके शासनके लिये गोरोंकी ७०,००० और कालोंकी १,५०,००० सेना है । तोपखाना केवल गोरोंके स्वाधीन है । देशी रजवाडोंकी सेना १,३०,०००है ।

गत महीनेमें ट्रान्सवालके बोरलोगोंको स्वराज्यका अधिकार इग्लडकी ओरसे दे दिया गया ।

पार्लिमेंटमें अधिकार पानेका आन्दोलन करनेके लिये इंग्लेंडकी स्त्रियोंने पार्लिमेंटके पास सभा करनेका प्रयत्न किया था , परन्तु पुलिसने वह सफल नहीं होने दिया । वहांकी स्त्रियां पुरुषोंकी बराबरीका अधिकार पानेके लिये पागल हो रही हैं ।

पेरिस शहरकी मनुष्यसख्या २५ लाखसे अधिक है । वहांकी म्यूनिसिपालिटीका वार्षिक खर्च एक करोड तीस लाख पौंड है ।

पूनामें चर्बी मिला हुआ घी बहुतसे व्यापारी बेचते थे । इसके लिये वहांके भवानीपेठके व्यापारियोंने एक सभा करके निश्चय किया है, कि जो कोई आयदा ऐसा करेगा, उसपर ५१) दड दिया जावेगा । बहुत अच्छा हुआ ।

कावेरी नदीके धवधवेके कामके लिये महसूर सरकारने एक करोड पचहत्तर लाख रुपयोंकी मजूरी दी है ।

इग्लेंडमें एक साहबने एक रसायन तयार की है, उसमे कपडेको एकवार डुबानेसे फिर वह कपडा आगमें डालनेसे भी नहीं जलता ।

गत दिसम्बरमें बगालकी अफीमका भाव १५०९ रुपये पेटीका था, परन्तु अब जनवरीका भाव १३७१) है । यह चीनके नोटिसका प्रभाव है ।

आगामीवर्ष कांग्रेसका अधिवेशन नागपुरमें होगा ।

कॅटन (चीन)के चीनी लोगोंने सभा करके अमेरिकासे आनेवाले मालका बहिष्कार किया है । वर्तमानमे यह बहिष्कार अमोघशस्त्र बन रहा है ।

सुनते हैं, देवबन्द (सहारणपुर) के लाला आत्माराम बी ए का जो मस्तिष्कके फिसादसे मुसलमान हो गये थे, वहांके जैनी भाइयोंने प्रायश्चित्त देकर फिर अपनी बिरादरीमें मिला लिया है । हम जानना चाहते हैं, उन्हें क्या प्रायश्चित्त दिया गया ।

गतांकमें लालमणिवाबाकी मृत्युके समाचार छपचुके हैं, परन्तु अभी सुना है, वह जीते जागते हैं, लेखकका भ्रम था । हर्षकी बात है ।

सूचना

जैनमित्रमे छपनेके लिये, सिर्फ ताजे समाचार और सवाद नीचे लिखे पतेसे आना चाहिये प्रत्येक पक्षकी त्रयोदशीतक आये हुए समाचार ले लिये जावेंगे।

नाथूराम प्रेमी—
चन्दावाडी पो० गिरगांव-बम्बई

ग्राहकोंको सूचना।

जैनमित्रके ६ अंक निकल चुके, परन्तु आ लोगोंने अग्रिम मूल्य अब तक नहीं भेजा, प्रार्थ भी बहुत दिनसे की जा रही है, अब शीघ्रता क जिये, अथवा हमको वी. पी भेजनेकी आज्ञा दे जिये। वी. पी. भेजनेका क्रम शीघ्र ही जारी होग

मैनेजर।

"कर्नाटक प्रेस" बम्बई।

Registered No. B 288.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा मास्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बैंटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है ।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मैनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जवाबी कार्ड अथवा टिकट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
हीराबाग-पो० गिरगांव--बम्बई ।

जैनमित्र

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—**गोपालदास बरैया ।**

वर्ष ८ वां] माघ शुक्ला २ संवत् १९६३ विक्रमाब्द । ता० १ फरवरी सन् १९०७ ईस्वी । [अंक ८ वां।

जैनमित्रके फाइल ।

सप्तम वर्षके थोडेसे फाइल हमारे पास मौजूद है । हम उन्हें जल्दी बेचना चाहते है, इस लिये इस समय बहुत थोडी कीमतमें ग्राहकोंको मिल जावेंगे । देर करनेमे दूनी कीमतमें भी नहीं मिल सकेंगे । जैनमित्रके सप्तमवर्षमें कैसे २ बढिया लेख छपे है, सो किसीसे भी छुपे नहीं है । हिन्दीके किसी भी जैनपत्रमें आज तक ऐसे बढिया संग्रह करने लायक लेख नहीं छपे हैं । समाचार और थोडेसे समाज सम्बन्धी लेखोंके सिवाय बाकी सब ही लेख हमेशा पढने योग्य और कामके है । इसके सिवाय जैनसिद्धान्तके १० फार्म और सुशीला उपन्यासका पूर्वार्द्ध (१० फार्म) भी उसके साथ मिलता है, जिन दोनोंकी कीमत पृथक् छपने पर कमसे कम १।) रु० होगी । ऐसे उत्तम फाइलको अप्रैल महीनेके अखीर तक हम सिर्फ १॥) में ही देना चाहते है, जिल्द सहित मगानेवालेको १॥।) लेगेंगे और भी सुभीता यह है कि, डाकखर्च हम अपना लगा देंगे ।

सुशीला उपन्यास

प्रथमभाग ।

रायलके बडे २ अस्सी पेजोंका बहुत बढियां उपन्यास जिससे कि मनोविनोदके सिवाय धार्मिक शिक्षायें भी मिलती है, तयार है । एक बार पढ़ना शुरू करनेसे फिर छोडनेको जी नहीं चाहता है, मूल्य सर्व साधारणसे दश आना जैनमित्रके ग्राहकोंसे आठ आना । डाक खर्च माफ ।

मैनेजर—जैनमित्र
पो० मोरेना (ग्वालियर)

दो नवीन पुस्तकें ।

जैनपदसंग्रह प्रथमभाग ।

कविवर दौलतरामजीके पदोंकी प्रशंसा करनेकी जरूरत नहीं है । सबही बालगोपाल उनके भजनोंके प्यासे रहते है । उनके एकही पदके पाठसे चित्त सब दुःख भूलकर आनन्दसागरमे गोते लगाने लगता है । प्रत्येक जैनीके घरमे यह पुस्तक रहना चाहिये । पहली बार **दौलतविलासके** नामसे हमने यह संग्रह छपवाया था, जो हाथोहाथ उठ गया । अबकी बार छहढाला निकालकर जैन पदसंग्रहके नामसे निर्णयसागरके जगप्रसिद्ध टाइपमे छपवाया है । मूल्य भी पहलेकी अपेक्षा कम अर्थात् सिर्फ छह आना रक्खा है । अबकी वार प्रत्येक कठिन शब्दपर टिप्पणी दी गई है और बहुतसे नवीनपदभी संग्रह किये है ।

जैनबालबोधक द्वितीयभाग ।

जिसकी लोगोंको वर्षोंसे चाह थी । जैन पाठशालाओंके अध्यापकोंने जिसके विषयमे लिख लिखकर हमको तंग कर डाला, जिसके विना जैन परीक्षालयके क्रमकी पढाई नहीं हो सकती थी, वह जैनबालबोधका दूसरा भाग तयार हो गया । पुस्तक कैसी बनी है, इसकी प्रशंसाकी जरूरत नहीं है । जैनियोंके प्रसिद्ध जैनमित्रके सम्पादकने इसकी प्रशंसाकी है । प्रत्येक जैनी बालकको तो यह पुस्तक पढना ही चाहिये, किन्तु प्रौढ पुरुषोंको भी इसके पढनेसे लाभ होगा । निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई देखने योग्य है । मूल्य आठ आना पोष्टेज अलग ।

मगानेका पत्ता—**पन्नालाल जैन—**
गिरगांव—बम्बई ।

जरूरी नोटिस ।

१ श्रीमती दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बईका दफ्तर **मोरेनासे** उठकर अब बम्बईमें आ गया है । बाबू फूलचन्दजी पाटणी इस सभाके सहायक मंत्री (ज्वाइंट जनरल सेक्रेटरी) नियत हुए है । उन्हींकी देखरेखमें दफ्तरका कार्य होगा । इस लिये सभा सम्बन्धी सब प्रकारके पत्र व्यवहार इस पतेसे करना चाहिये —

बाबू फूलचन्दजी पाटणी ।
सहायक मंत्री दि० जै० प्रान्तिक सभा
हिराबाग पोष्ट गिरगांव—बम्बई ।

२ इसी प्रकार जैनमित्रका आफिस भी मोरेनासे उठकर बम्बई आ गया है, इस लिये तत्सम्बन्धी समस्त पत्रव्यवहार भी आयन्दा नीचे लिखे पतेसे करना चाहिये ।

मैनेजर जैनमित्र—हीराबाग
पोष्ट गिरगांव—बम्बई ।

जैनमित्र.

फाल्गुन कृष्णा २ श्रीवीरनि० संवत् २४३३।
ता० ३१ जनवरी सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

श्रीमतीदिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बईके चौथे अधिवेशनकी रिपोर्ट।

ता० २७–२८–२९ को श्रीगजपथक्षेत्रपर श्रीमती सभाके जल्से आनन्दके साथ हो गये। और जैसे चाहिये थे वैसे हो गये। हमने अपने ताजे समाचारके प्रेमी पाठकोंकी प्रसन्नताके लिये उनकी सब रिपोर्ट इसी अकमें प्रकाशितकी है। इसके सग्रहमें नियत तिथिसे तीन चार दिनके पीछे यह अक निकल सका है, पाठकोंसे हम इसकी क्षमा चाहते हैं। साथ ही यह प्रार्थना करते है कि, रिपोर्टको साद्यन्त बांचें। इसमें जहातक बना है, उपयोगी विषयोका संग्रह अधिक किया गया है। सभापति साहबकी रिपोर्ट अक्षरश बांचने और मनन करने योग्य है। हमको खेद है कि, इस रिपोर्टके कारण अनेक उपयोगी लेख और समाचार इस अकमें प्रकाशित न हो सके।

खोये हुए लेख और संवाद।

श्रीगजपथजी जाते समय जैनमित्र आफिसका एक कागजोंका बंडल एक पाकेटके साथ खोजानेसे हम बहुत दुःखी हुए हैं। उसमें अनेक लेख और संवाद प्रकाशित करने योग्य थे, जो प्रकाशित नहीं हो सके। इसलिये जिन सज्जनोंके लेख प्रकाशित न हों, उनसे हम क्षमा चाहते हैं, और द्वितीयवार भेजनेकी प्रेरणा करते हैं।

श्रीमती दिगम्बरीयजैनप्रान्तिक सभा बम्बईका चतुर्थ अधिवेशन।

स्थान—श्रीगजपंथसिद्धक्षेत्र।

सते जे बलिभद्दा जदुवणरिंदाण अट्टकोडीओ।
गजपंथे गिरिसिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं॥

श्रीगजपंथक्षेत्र हमारा परमपूज्य सिद्धक्षेत्र है। निर्वाणकाडकी उपर्युक्त गाथाके अनुसार पूर्वकालमें इस स्थानसे बलभद्रादि आठकोटि मुनियोंने मोक्ष प्राप्त किया है। यह स्थान उन मोक्षप्राप्त महात्माओंका स्मारकस्थान है। इसलिये जिनशासनके अनुयायी हम लोग इस स्थानकी आन्तरिकभक्ति तथा श्रद्धासे पूजन करते हैं।

नासिक स्टेशनसे ९ मील और नासिक शहरसे ४ मील उत्तरकी ओर **म्हसरूल** नामका एक ग्राम है। इसीके निकट अनुमान १ मीलपर गजपंथ पर्वत है। इसकी उचाई अनुमान ४०० फुट मानी जाती है। पर्वतके शिखरपर दो जिन मन्दिर हैं, जो वहांके स्वभाविक पाषाणको काटकर बनाये गये हैं। मंदिरोंमें अनेक मूर्तिया हैं, जो भीतमें उकीरकर बनाई गई है। मूर्तियोंके अतिरिक्त दो स्थानोंमें दो चरणपादुका हैं, जिनको भव्य जन बडी भक्तिसे देखते हैं। दूसरे मन्दिरकी बाईं ओर एक जलका कुड है, जिसमें निरन्तर जल रहता है। लोग पूजनके द्रव्यका प्रक्षालन उसी जलसे करते है।

पर्वतकी जडमें भी एक वापिका है। इसका जल बहुत अच्छा रहता है। बन्दनाको जानेवाले प्राय इसी वापिकासे द्रव्य धोया करते है। इस वापिकाके निकट भट्टारक **क्षेमेन्द्रकीर्तिजी**की एक समाधि बनी हुई है, जिसमें भट्टारकजीके चरणोंकी स्थापना है। हम देखते थे कि, अनेक भाई उनकी भी बन्दना करते थे और फलफूलादि चढाते थे। इस समाधिके पाससे ही पर्वतपर चढनेका मार्ग है। और थोडी दूर चलकर ही सीढियोंका प्रारभ है, जिनकी सख्या ३२९ है। इन सीढियोंपर सफेद कलई की गई है, इससे बहुत दूरसे इनके दर्शन होते हैं। मन्दिर और उनके कोटपर भी कलई की गई है। इससे सीढियों सहित वह दृश्य ऐसा मनोहर जान पडता है, मानों एक दुग्धके सरोवरसे जो पर्वतकी शिखरपर भरा हुआ है, एक दुग्धकी धारा बह रही है। भगवद्दर्शनके लिये आकुल हुए धर्मात्माओंके हृदयमें इस धारासे एक अपूर्व ही आनन्द होता है।

इस पर्वतके आसपास अनेक छोटे २ ग्राम है, परन्तु उन सबसे निकट **म्हसरूल** है। यहापर एक सुन्दर मदिर है, जिसे शोलापुरके प्रसिद्ध शेठ **रावजीके पिता शेठ नानचन्द फतेहचन्दजीनें** श्रीयुक्त भट्टारक **क्षेमेन्द्रकीर्तिकी** प्रेरणासे संवत् १९४२ में बनवाया था और संवत् १९४३ में प्रतिष्ठा कराई थी। इस मंदिरके चारों ओर एक कोट है, जिसके भीतर दो धर्मशालायें एक कूप और बहुतसे झाड वाटिकाके रूपमें हैं। धर्मशालाओंमें २०० आदमी ठहर सकते है।

इस मंदिर और तीर्थके धर्माधिकारी नागौरकी गद्दीके स्वामी भट्टारक क्षेमेन्द्रकीर्तिजीके शिष्य भट्टारक **मुनीन्द्रकीर्ति** है। पहले आपहीके हाथमें इस तीर्थका प्रबन्ध था। परन्तु आपने संवत् १९५७ में अपनी वृद्धावस्थाके कारण और योग्यशिष्यके अभावमें यहाके सम्पूर्ण कार्योका भार शोलापुरके **शेठ रावजी नानचंदजी**को सोप दिया है। तबसे अबतक उक्त शेठजी बडी उत्तमत्तासे यहाका प्रबन्ध करते हैं। भट्टारक महाशय जब कभी इस ओरकी शिष्य मंडलीपर कृपा करते हैं, तब यहां भी आते है। आकर निरीक्षण कर जाते हैं, परन्तु दूसरोंकी नाईं आप यहांसे कुछ ले नहीं जाते हैं यथाशक्ति कुछ न कुछ द्रव्यकी सहायता देनेकी कृपा करते है। वर्तमानमें यहांपर भाई अनन्तराम प्राणचन्दजी मुनीम है। आपकी योग्यता और प्रबन्धको देखकर हम कहते है कि, प्रत्येक क्षेत्रपर ऐसे ही मुनीमकी आवश्यकता है।

इस क्षेत्रमें प्रतिवर्ष माघ सुदी १३ से ३ दिन पर्यन्त मेला लगता है, और पासके बहुतसे धर्मात्मा सज्जन बन्दना करनेके लिये आते हैं। इस वर्ष इसी अवसरपर हमारी श्रीमती सभाका चतुर्थ अधिवेशन आनन्दके साथ हुआ।

सभाका प्रबंध।

म्हसरूल एक बहुत छोटासा ग्राम है। यहापर सभा जैसे बडे कार्योंके लिये आवश्यक वस्तुओंका सग्रह होना तो एक ओर रहा, यात्रियोंको ठहरनेको भी जगह नहीं मिल सकती है। इस लिये सभाकी ओरसे केम्प तयार किये गये थे। जिनमें आठ आठ फुट लम्बाई और छह छह फुट चौडाईकी १२९ कोठरिया पृथक् २ बनाई गई थीं। सभापति साहबके ठहरनेके लिये केम्पोंके निकट ही एक सुन्दर डेरा खडा किया गया था। यात्रियोंके सुभीतेके लिये एक बाजार तयार किया गया था, जिनमें दोनों ओर आटा, दाल, चावल, नमक, घी, मिठाई, किराना, साग आदि उपयोग वस्तुओंकी अनेक दूकानें थीं। इन केम्पों और दूकानोंपर लहराते हुए लाल पीले हरे रंगके निशान बडे सुन्दर जान पडते थे। मन्दिरके चारों ओर जो कोट है, उसके द्वारपरही एक विशाल

और सुन्दर सभामंडप तयार किया गया था, जिसमें चारपांच हजार आदमी बैठ सकते थे। सभामंडपमें पहुचते ही "अहिंसा परमोधर्मः" पंचाणुव्रतोंका पालन करो," "पांच पापोंको छोड़ दो" आदि वाक्योंपर दृष्टि पड़ती थी, जिससे प्रत्येक मनुष्यके हृदयपर जैनधर्मकी सुन्दर मुद्रा अंकित हुए बिना नहीं रहती थी। मंडपसे निकलकर बाजार जानेवाले द्वारके एक ओर महामंत्री और तीर्थक्षेत्रकमटीका दफ्तर था। रोशनीका बहुत अच्छा प्रबन्ध था। उचित स्थानोंपर किटसन लॅम्प लगाये गये थे, जो रातभर जलते थे, और लोगोंके नेत्रोंमें चकाचौंध लगाते थे। सारांश यह कि, अधिवेशनका सम्पूर्ण प्रबन्ध उत्तम रीतिसे किया गया था।

स्वागतकमेटीके मंत्री शेठ पानाचन्द रामचन्दजी, पं० लालारामजी, तथा सभाके क्लर्क बाबू मौजीलालजी आदि कई भाई आठदश दिन पहलेसे यहा आकर आ रहे थे। उन्होंने बडे उत्साह और परिश्रमसे यह सब कार्य किया था। नासिक स्टेशनपर यात्रियोंके स्वागतके लिये प्रत्येक ट्रेनपर उत्साही वालंटियर उपस्थित रहते थे, और आगत भाइयोंके लिये सवारी आदिका प्रबन्ध भलीभांति कर देते थे।

सभापति साहबका स्वागत।

ता० २६ के सवेरे ७॥ बजेकी गाड़ीमें श्रीमान् राजा बहादुर ज्ञानचन्दजी नासिक स्टेशनपर पधारे। आपके साथ दानवीर शेठ माणिकचन्दजी, प. पन्नालालजी, बाबू शीतलप्रसादजी आदि और भी अनेक सज्जनोंका आगमन हुआ। खूब धूमधामसे आपका स्वागत हुआ। वालंटियरगण लाल दुपट्टे, काले कोट, सफेद धोती पहने हुए और दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभा बम्बईके लाल पट्टे लगाये हुए बडे अच्छे जान पड़ते थे। बेंडबाजा अपनी मनोहर ध्वनिसे स्वागतका गीत गा रहा था। करतल ध्वनिके साथ आपको सब लोग एक सिकरममें बिठाकर शेठ दीपचद वीरचन्दजीके बंगलेमें लाये। वहां चाहपानीसे स्वागत करके आपकी सवारी शहरमेंसे निकाली गई। शहरमे जगह २ पर धुजा पताकायें लगाई गई थी। बेंड बजता जाता था। करीब ११ बजे म्हसरुलमें सब लोग पहुंच गये। इस समयतक जनसंख्या बहुत थोड़ी थी।

दूसरे दिन बहुत लोग आये। पीछे सब जनसंख्या दो हजारसे अधिक हो गई। श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचन्दजी बम्बई, शेठ नेमीलालजी नागपुर, शेठ रावजी नानचन्दजी शोलापुर, शेठ सखाराम नेमचन्दजी शोलापुर, शेठ सुखानदजी बम्बई, लाला बैजनाथजी बम्बई, पं. गोपालदासजी बरैया आनरेरी मजिस्ट्रेट मोरेना, प. पन्नालालजी काशलीवाल बम्बई, लाला प्रभुदयालजी बम्बई श्वेताम्बर सम्प्रदायके प्रसिद्ध वक्ता पं. फतहचन्द लालन, बाबू शीतलप्रसादजी लखनौ, रा. रा. जयकुमार चवरे बी. ए. बी. एल, शा. लल्लूभाई प्रेमानन्द एल. सी. ई, पं. पन्नालालजी बाकलीवाल, वैद्यराज कन्हैयालालजी, आदि अनेक प्रतिष्ठित २ पुरुष उपस्थित थे। इनके सिवाय नासिकके प्रसिद्ध स्वदेशभक्त मि. एन. पी. पाटणकर, मि. खरे आदि महाशय प्रतिदिन सभाको सुशोभित करते थे।

सभाकी कार्रवाई।

प्रथम बैठक ता० २७-१-१९०७।

बारह बजेसे सभाका प्रारंभ हुआ। पंडित लालारामजीने अनेक श्लोकोंमें मंगलाचरण किया। उसमें यह श्लोक बडा सुन्दर और समयानुकूल था,—

लब्धात्मलाभा बहुधान्यवृद्ध्यै—
निर्मूलयन्ती घननीरसत्वम्।
सा मेघसङ्घातमपेतपङ्का
शरत्सतां संसदपि क्षिणोतु॥

इसमें सज्जनोंकी सभा और शरत्ऋतुकी समानता दिखलाई है। अर्थ यह है कि, बहुधा दूसरोंकी वृद्धिके लिये (पक्षमें) बहुतसे धान्योंकी वृद्धिके लिये जन्म लेनेवाली, घनी नीरसताको (पक्षमें) बादलोंकी कीचड़को मिटानेवाली और पापपक रहित (पक्षमें) कीचडरहित सज्जनोंकी सभा और शरत् ऋतु दोनों ही हमारे पाप समूहोंको (पक्षमें) मेघ अर्थात् बादलोंको नष्ट करो।

इसके पश्चात् स्वागतकमेटीके चेअरमेन जौहरी चुन्नीलाल जवेरचन्दजीका व्याख्यान हुआ, जिसका साराश अन्यत्र दिया गया है। सभापति साहबका चुनाव हुआ। शेठ माणिकचन्दजीके प्रस्ताव और शेठ रावजी नानचदजी शोलापुर तथा शेठ नेमीलालजी नागपुरके अनुमोदनसे मान्यवर राजा ज्ञानचन्द्रजीने जयकारध्वनिके साथ सभापतिका आसन ग्रहण करके अपने प्रभावशाली व्याख्यानका प्रारंभ किया, जो इस अंकके साथ क्रोड़पत्रके रूपमें वितरण किया जाता है। हमारा आग्रह है कि, पाठकगण उसे ध्यानसे पढ़ें।

सभापतिके व्याख्यानके पश्चात् दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बईकी पिछले चार वर्षकी रिपोर्ट महामंत्री पं० गोपालदासजीकी आज्ञासे लाला नाथूरामजी प्रेमीने संक्षिप्तरूपमें पढ़ करके सुनाई। समाप्तिमें महामंत्री साहबने कहा कि, यद्यपि हमारी सभाने सात वर्षके लम्बे समयमें जितना चाहिये, उतना कार्य नहीं किया है, परन्तु इससे हमको हताश नहीं होना चाहिये, और नये नये प्रयत्न करना चाहिये। अब फल पानेका समय आ रहा है। आम्रकी सिंचाई करते २ लोग थक जाते हैं, तब कहीं चार पाच वर्षमें आम्रफल प्राप्त होते हैं, परन्तु होते अत्यन्त स्वादिष्ट हैं। इसी तरह हमारी सभाकी दशा है, हमको सिंचन करते जाना चाहिये, फल बहुत उत्तम प्राप्त होगा। हमारे समाजमें धन और उदारताकी कमी नहीं है। हमारे उदार धर्मात्मा प्रतिवर्ष पाच सात लाख रुपयेसे कम मन्दिर प्रतिष्ठाओंमें खर्च नहीं करते हैं, परन्तु कमी इस बात की है कि, हम लोग विद्याकी आवश्यकता नहीं जानते हैं। जिसदिन यह जानने लगेंगे, उस दिन लाखों रुपयोंका ढेर होते देर न लगेगी। एक वह समय था, जब मन्दिर और मूर्तियोंकी कमी होनेसे धर्माचार्यगण यह उपदेश देते थे कि, जगह २ मन्दिर और प्रतिष्ठायें कराओ और आज वह समय है कि, गांव गावमें सभा और पाठशालाओंके होनेके उपदेशकी आवश्यकता है, मन्दिरोंके उपदेशकी नहीं। जिस प्रकार सैकड़ों वर्षके उपदेशसे आज प्रतिवर्ष सैकड़ों हजारों मन्दिर बनने लगे हैं, उसी प्रकार यदि हम विद्याविषयक उपदेश देते रहेंगे तो निश्चय समझिये, वह दिन भी शीघ्र आवेगा, जब विद्यालय और सभाओंकी गिनती न रहेगी। इस लिये हमें धैर्यसे दृढ निश्चय करके काम करते जाना चाहिये। इत्यादि।

इसके पश्चात् सभापतिसाहबने सब्जैक्ट कमैटीका प्रस्ताव पेश किया और तदनुसार उक्त कमेटीके लिये ५१ भाइयोंके नाम चुने गये। साथ ही पहली बैठककी कार्यवाही समाप्ति हुई।

रात्रिको सब्जैक्टकमेटीकी बैठक हुई। बहुत वादविवादके पश्चात् प्रस्तावकार्योंका प्रोग्राम तयार किया गया, जो नासिकसे मुद्रित होकर दूसरे दिन आ गया।

दूसरी बैठक ता. २८-१-१९०७।

रथयात्राके कारण दो पहरको अवकाश न मिलनेके कारण रात्रिके ८॥ बजेसे ११॥ बजेतक सभाकी दूसरी बैठक हुई। सभापति साहबने आसनपर विराजमान होते ही यह प्रस्ताव पेश किया कि:—**काबुलके अमीर साहब जो आजकल हिन्दुस्थानमें आये हुए हैं; दिल्ली जानेवाले थे। उन्हें मालूम हुआ कि, दिल्लीके मुसलमान हमारे लिये गायकी कुरबानी करेंगे। इससे अतिशय विरक्त होकर उन्होंने कहा कि "यदि इस दुष्कृत्यसे यहांकी दयार्द्र प्रजाका हृदय दुखाया जावेगा, तो मैं दिल्ली न आऊंगा और न मुसलमानोंका स्वागत स्वीकार करूंगा"। अमीर साहबकी इस दयाके उपलक्ष्यमें हमारी प्रान्तिकसभाकी ओरसे एक धन्यवादका तार भेजा जावे।** सर्वानुमतसे यह प्रस्ताव पास हुआ और तार भेजा गया। पश्चात् दूसरा प्रस्ताव भी स्वयं सभापति साहबने पेश किया कि,

प्रस्ताव नं. २—गवर्णमेंटकी ओरसे बम्बईके शेठ माणिकचन्दजी हीराचन्दजीको जष्टिस आफ दी पीसकी पदवी मिलनेके उपलक्ष्यमें सभा हर्ष प्रगट करती है।

इसके पेश करते समय सभापति साहबने शेठजीकी उदारताकी प्रशंसा करते हुए कहा कि, जब गवर्णमेंटने उन्हें इतना बडा पद देकर सन्मानित किया, तब क्या हमलोग जिनपर उन्होंने सैकडों उपकार किये हैं अभिनन्दन भी न करें' इत्यादि।

इसके पश्चात् महामंत्री साहबने शोलापुरके शेठ हीराचन्द नेमिचन्दजी आनरेरी मजिस्ट्रेट और कोल्हापुरके मामलतदार रा रा. अण्णापा बापूजी पाटील बी. ए. के दो तार पढकर सुनाये, जो सभाके अधिवेशनकी मंगलकामनाके विषयमें आये थे।

पश्चात् पडित गोपालदासजीने यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि,—

प्रस्ताव ३—जैनियोंका फर्ज है कि, वे अपने बालक और बालिकाओंको अवश्य ही पढावें, किसीको भी अशिक्षित न रक्खें। बिरादरीके पंचोंको इसके लिये प्रेरणा की जावे।

इसकी आवश्यकता दिखलाते समय पंडित गोपालदासजीने एक छोटा परन्तु सारगर्भित और असरकारक व्याख्यान दिया। इसका अनुमोदन शेठ नेमीसाहजीने बहुत अच्छी रीतिसे किया। फिर दूसरा अनुमोदन शेठ शिवलाल मूलकचन्दजी पंढरपुरवालोंने किया और सर्वानुमतसे यह प्रस्ताव करतलध्वनिके साथ पास हुआ।

इसके पश्चात् पडित गोपालदासजीने ही चौथा प्रस्ताव पेश किया कि;—

प्रस्ताव ४—जैनियोंका यह कर्तव्य है कि, वे स्वदेशीवस्तुप्रचार और वाणिज्यवृद्धिको उत्तेजन देवें।

इसकी आवश्यकता दिखलानेके लिये पंडितजीने कहा कि, प्रत्येक प्राणी सुखकी प्राप्ति और दुःखकी निवृत्ति चाहता है। यह सुख दो प्रकारका है, एक तो परमसुख मोक्ष जिसका कभी नाश नहीं होता, और दूसरा इन्द्रियजन्य सासारिक सुख जो वारंवार प्राप्त होकर नष्ट होता रहता है। इसे ही काम कहते हैं। इनमेंसे प्रथम सुख मोक्ष धर्मसे और दूसरा कामसुख अर्थसे (धनसे) प्राप्त होता है। इन चारोंको ही पुरुषार्थ कहते हैं। पहले धर्म और अर्थ ये दो कारण तथा दूसरे दो काम और मोक्ष ये कार्य हैं। इन दोनो कारणोंमें वर्तमान् समयके अनुसार अर्थकी विशेष मुख्यता है। बल्कि यों कहना चाहिये कि, धर्मका भी कारण कथंचित् धन है। विना धनकी पूर्तिके धर्मका साधन यथार्थ रूपसे नहीं हो सकता है। इस लिये धनके अर्जन करनेकी बहुत आवश्यकता है। अब यह देखना चाहिये कि इस धनके प्राप्त करनेके कौन २ उपाय हैं। विद्वानोंनें असि, मासि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प, और विद्या ये छह उपाय बतलाये हैं। इनमेंसे असि (खड्ग) का कर्म अर्थात् रक्षा करना यह क्षत्रियोंकी आजीविका और शिल्प तथा विद्या शूद्रोंकी आजिवकाका उपाय है। शेष मसि (लेखन) कृषि और वाणिज्य ये तीन उपाय वैश्योंकी आजीविकाके हैं। यद्यपि पहले जैनधर्ममें चारो वर्णोंके लोग पाये जाते थे, परन्तु कालचक्रके प्रभावसे वर्तमानमें केवल वैश्य लोग ही इस धर्मके पालनेवाले हैं, जिनके कि उपर्युक्त तीन कर्म हैं। इनमेंसे पिछले दो स्वतंत्र और पहला एक असिकर्म अर्थात मुनीमी गुमाश्तागिरी वगैरह परतंत्र कर्म है। परन्तु स्वतत्रोंमें भी विपुल अर्थकी प्राप्ति करनेवाला वाणिज्य व्यापार कर्म है। क्योंकि कृषिआदि कर्मोंमें धनप्राप्तिकी सीमा है, और वाणिज्यमें सीमा नहीं है। यही कारण है कि, इस गिरी हालतमें भी जितने धनी हैं, वे सब वैश्य तथा व्यापारी हैं। इसलिये सम्पूर्ण वैश्य जातिका कर्तव्य है कि, वह इस वाणिज्य वृद्धिमें उद्योग करै। सौ डेडसौ वर्ष पहले यहांका सारा व्यापार हमारे हाथमें था, परन्तु अब पश्चिमी लोगोंने अपने असीम उद्योगसे हमारे व्यापारपर अधिकार जमा लिया है। बहुत कम व्यापार हमारे हाथमें रह गया है। अब हमारे देशसे कपास वगैरह सारा कच्चा माल जाता है, और वहांसे पक्का बनकर अठगुने दशगुने मूल्यपर यहां आकर विकता है। यह बडे दुःखकी बात है। हमारे देशके करोडों अरबों रुपया प्रतिवर्ष इसी तरह विलायतोंको जा रहे ह, और हम लोग निर्धन हो रहे हैं। हमारे पडौसी जुलाहे, कोष्टे, तथा कारीगर लोग भूखे मरते हैं। कहते हैं कि, आज हमारे हतभाग्य देशकी दश करोड प्रजा एक वक्त आधा पेट खाकर दिन काटती है। परन्तु इस दुःखके कारण हम ही लोग हैं। क्योंकि हम लोग व्यापार करना भूल गये हैं। विलायती मालोंपर दलाली और कमीशन खाना मात्र ही हमारा व्यापार रह गया है। यदि कुछ दिन और भी हमारी यही हालत रही, तो न जाने क्या होगा। इस लिये अब हम लोगोंको सचेत होना चाहिये, और एक चित्त होकर बडी २ कम्पनियां स्थापित करके कल कारखाने खोलना चाहिये और भूखे मरते हुए लोगोंको पालते हुए देशकी आर्थिक दशा सुधारना चाहिये। हम सब कुछ कर सकते है, परन्तु अपने बलको भूलकर कायर हो रहे हैं। तोता बधिककी नलिनीपर लटककर जैसे केवल अपने भ्रमसे यह समझता है कि, पडूंगा तो विपत्ति आ जावेगी, इससे नलिनीको छोडकर उड नहीं सकता है। ठीक यही दशा हमारी है। हम भी यही समझे हुए है, कि कुछ करेंगे तो होगा नहीं। परन्तु यदि हम चाहें, तो सब कुछ कर सकते हैं, इत्यादि। इसका लोगोंके चित्तपर अच्छा असर हुआ। साथ ही नासिकके प्रसिद्धवक्ता मि० एन. पी. पाटनकर. बी ए. एल एल बी. ने एक उत्तेजक व्याख्यान द्वारा इस प्रस्तावकी पुष्टि की। उन्होंने कहा; ज्यों ही हम घरसे बाहर निकलते हैं, त्यों ही प्रत्येक नगर, प्रत्येक ग्राम और प्रत्येक खेडेमें सैकडों भिखमंगे नजर आते है। कोई भी स्थान इनसे खाली नहीं मिलता। परन्तु भाइयो! क्या आप सोचते हैं, कि इसका क्या कारण है। कोई २ कह देते हैं कि, अब यहां समयपर पानी नहीं बरसता है, इससे अकाल पडते हैं। परन्तु क्या यह

बात सच है, पहले क्या निरन्तर ही समयपर पानी बरसता था। और क्या सिन्ध्वादि प्रदेशोंमें जहां बरसों पानी नहीं बरसता है क्या अनाज पैदा नहीं होता? युरोपादि देशोंमें कब कब समयपर वर्षा हुआ करती है? फिर हम ही लोग भूखे क्यों मरते है? यद्यपि हम लोग अनाज पैदा करते हैं, और वह एक वर्षमें जितना पैदा होता है, हम लोगोंके लिये कई वर्षोंके लिये बस है। परन्तु बात यह है कि, अब हम लोग तो पैदा करते हैं, परन्तु पेटमें जाता है, वह विदेशियोंके। बिलायतवालोंके लिये ही हम अनाज उत्पन्न करते हैं, स्वयं नहीं खा सकते। उसके बदलेमें उनकी कारीगरीकी चीजें लेते है। यह बड़े दु:खकी बात है कि, हमारे यहाकी अधिकांश प्रजा किसान बन गई है। इससे यहाके शिल्प व्यापारपर बड़ा धक्का पहुचा है। नासिकमें पहले कागजके अनेक कारखाने थे, परतु आज उनमेंसे एक भी नहीं है। सौ डेड़सौ वर्ष पहले सारे ससारके अमीर उमराव हमारे देशके बने हुए बढ़ियां कपडे पहनते थे, परन्तु अब यह दशा है कि, यहांके गरीबसे गरीब आदमियोंने भी देशी कपडा पहनना छोड़ दिया है। देशके सब उद्योग नष्ट हो गये हैं। हमारे घरोंमें नीचेसे ऊपर तक एक भी स्वदेशी वस्तु नजर नहीं आती। तो क्या ये सब वस्तुएं विलायतसे धर्मादायखाते आती हैं? नहीं मेरे प्यारे भाइयो! यहांसे एक रुपयेका तीन सेर कपास जाकर वहासे तीन रुपयेका एक सेर कपडा बनके आता है! अर्थात एक एक रुपया हमको देकर बदलेमें ९) लिया जाता है। इसी तरह प्रत्येक माल पर समझ लीजिये। फिर हमारी दशा क्यों खराब न हो? लोग कहते है कि, वे लोग सस्ते भावसे प्रत्येक चीज बेचते है, फिर हम उसे क्यों न लें? परन्तु यह भी तो सोचना चाहिये कि, ऐसा करनेसे हमारे पड़ौसी, कोष्टी, जुलाहे, कारीगर आदि भी तो भूखों मरते हैं, उनपर दया भी तो करना हमारा कर्तव्य है। यदि ये सब लोग भीख मांगने लगेंगे, तो फिर हम कमाई किससे करेंगे और फिर जब हमारा हृदय दयालु है, तब उनके लिये अनाथालय भी तो हम ही खोलेंगे और लाखों रुपये उसमें लगावेंगे। तब वही रुपया हम कुछ महँगी वस्तु खरीदनेमें ही क्यों न खर्च करें, जिससे अनाथालयोंके खोलनेकी बारी ही न आने पावे। लोगोंको अनाथ बनाकर खानेको देना अच्छा है, या अनाथ न बनने देना तथा जीविकायुक्त बनाये रखना अच्छा है, यह प्रत्येक समझदार पुरुष समझ सकता है।

यह सच है कि, हमारी सरकारने हमारी शिक्षापर ध्यान दिया है, अब हमारे यहा सैकडो विद्वान् मिल सकते हैं। परन्तु खेद है कि, सरकार अपनी व्यापारनीतिसे हमको शिल्प व्यापारकी शिक्षा नहीं देना चाहती है। यही कारण है कि, जब दूसरे देशोंमें इस शिक्षाके देनेवाले सैकडों विद्यालय है। तब हमारे यहा एक दो ही ऐसे स्कूल हैं, सो भी नाम मात्र। बम्बईमें सिर्फ एक टेक्निकल स्कूल है, परन्तु वह भी जैसा चाहिये नहीं है। इससे समझ लीजिये, कि, सरकार अपने कर्तव्यका पालन कहांतक करती है। सौ वर्ष पहले सरकारका अवलम्बन यहाका व्यापार था, परन्तु अब यहाके लोग एक सीनेके धागेके लिये भी बिलायत फरमाइश भेजते हैं। यहाकी सरकार और प्रजा दोनोंके लिये यह लज्जाकी बात है। प्रजाको बड़ा भारी भरोसा राजाका रहता है, परन्तु इधर १० वर्षकी अनेक घटनाओंमे यह निश्चय हो चुका है कि, सरकारसे अब हमको आशा करना व्यर्थ है, वह हमारे लिये अपना स्वार्थ नहीं छोड सकती है। इस लिये अब हमको अपने ऋषियोंकी यह आज्ञा मानना चाहिये कि,—"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।" अर्थात् आत्माका आत्मामे ही उद्धार करना चाहिये। आत्माका अवसादन नहीं करना चाहिये। दूसरोंकी आशा बहुत कर चुके, अब अपने पैरोंमे खडे होना चाहिये। इत्यादि। पाटणकर साहबका यह व्याख्यान लम्बा था, और बडा असरकारक था। इसमे लोगोंके चित्तपर एक प्रकार बिजली दौड़ गई। आपने यह भी कहा कि, जैन समाजमें इस विषयकी चर्चा चली है, यह बडे हर्षकी बात है। क्योंकि व्यापारकी असली उन्नति आप ही लोगोंसे होगी। हम लोग केवल बकनेवाले है। हम लोग इतना ही कर सकते हैं कि लोगोंमें स्वदेशी माल लेनेकी प्रतिज्ञा करावें, परन्तु आप लोगोंके स्वदेशी मालके तयार करनेको तयार होनेपर ही हमारा परिश्रम सफल हो सकता है। यदि आप लोग वर्तमानमें एक दो शक्करके कारखाने खोलनेका विचार करें, तो स्वदेश कल्याणके सिवाय धर्मकी रक्षा भी कर सकते हैं। ६–७ करोड रुपयेकी विलायती शक्कर यहां खपती है। व्याख्यानका अन्त होते ही अनेक बालकोंने वन्देमातरम्‌की मनोहर ध्वनि की। एक स्वदेशभक्त भाईने आह्लादित होकर इस व्याख्यानके उपलक्षमें सभापति सा० और व्याख्याताको एक पुष्पमाला पहनाई। शा मन्नूभाईने स्वदेशप्रीतिका एक सुन्दर गुजराती गायन गाकर सुनाया। अन्तमें सर्वानुमतसे चौथा प्रस्ताव पास हुआ।

प्रस्ताव ५—प्रत्येक जैनीको जैनविवाहपद्धतिके अनुसार विवाह कराना चाहिये। और ऐसे विवाह करनेवाले चिरंजीवि सखाराम वेणीचन्दको सुवर्णपदक देना चाहिये।

इस प्रस्तावको शेठ पानाचन्द रामचन्दजी शोलापुरवालोंने पेश करते हुए विवाहविधिकी आवश्यकता दिखलाई और फलटणके सखाराम वेणीचन्दके विवाहकी कथा सुनाई। प्रारंभसे ही इस लडकेका आग्रह था कि, मै विवाह करूंगा, तो आर्षविधिके अनुसार करूंगा। इसे केवल बालहठ समझके दोनों सम्बन्धियोंने उससे कह दिया कि, अच्छा ऐसी ही होगा। ठीक विवाहके दिनतक बालक अपनी प्रतिज्ञा सुनाता रहा, और दोनों सम्बन्धी हा हा करते रहे। परन्तु मुहूर्तके समय वैदिक विधिकर्ता ब्राह्मणदेवता बुलाये गये। तब बालकने कहा कि, मै सच कहता हू, विवाह करूगा, तो आर्षविधिसे करूगा, अन्यथा आजन्म ब्रह्मचर्य पालन करूंगा, और ऐसा ही लौटके चला जाऊगा। परन्तु यह बात कन्याके पिताने स्वीकार न की। विवाहका मुहूर्त निकल गया। एक दो दिन वीत गये। सबने यथाशक्ति प्रयत्न कर छोडे, पर दृढ़प्रतिज्ञ बालकका विचार नहीं बदला। अन्तमें बालहठने विजय पाई। जैन विवाहविधिसे विवाह हुआ। इस कथाका श्रोताओंपर बडा असर पढ़ा। सबने धन्य धन्य किया। प्रस्तावकने कहा कि, ऐसे धर्मके सच्चे पक्षपाती बालकको जो आदर किया जाय, वही थोडा है। इस लिये हमारी सभाकी ओरसे इसे एक सुवर्ण पदक देना चाहिये। हर्षका विषय है कि, शोलापुरके प्रसिद्ध शेठ बालचन्द रामचन्दजीने बालकके धर्म–प्रेमसे प्रसन्न होकर यह सुवर्ण पदक स्वयं बनवाकर देना स्वीकार किया है। कारंजाके रा. रा. जयकुमारजी चवरे बी. ए. बी. एल्‌ने इस प्रस्तावका अनुमोदन करते हुए कहा कि, हमारी देशकी दुर्दशाका कारण यही है, कि हम लोगोंने स्वत्व छोड़ दिया है। सबको अपना अपना स्वत्व रखना चाहिये। जैनविधिके अनुसार विवाह कराना यह हमारा स्वत्व है, इसको नहीं छोड़ना चाहिये। श्रीपासूगोपालजी शास्त्री शोला-

जैनमित्र अंक ८ का क्रोडपत्र.

ओं नमः सिद्धेभ्य ।

श्रीमती दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभाबम्बइके चतुर्थ अधिवेशनके सभापति श्रीमान् राजा बहादुर ज्ञानचन्द्रजीका व्याख्यान ।

स्थान—श्री गजपंथ सिद्धक्षेत्र ।
ता० २१ जनवरी १९०७ ई०

आदिपुरुष आदीश जिन, आदि सुविधि करनार ।
धर्मधुरधर परमगुरु, नमू आदि अवतार ॥

प्रस्तावना ।

प्यारे भाइयो ! और बहिनो ! बडी खुशीकी बात है कि, आज अपने जाति भाइयों और सद्धर्मी सज्जनोंके साम्हने मैं एक ऐसे कामके निवेदनके लिये उपस्थित हू, जिसका सम्बन्ध केवल लोकसे ही नहीं किन्तु परलोकसे भी है । जिसमें हम सबका स्वार्थ ही नहीं, किन्तु परमार्थ भी है । वर्तमान सभ्यताके समयमें जब कि लोग परलोक और परमार्थको सर्वथा भूले हुए है और ऐहिक उन्नति तथा स्वार्थके पीछे आख बन्द करके पडे हुए है, तब यह एक बडे महत्वकी बात है कि, हम लोगोंके द्वारा परलोक और परमार्थका चिन्तवन हो। अस्तु, यह कार्य बहुत कठिन है,"बहुरत्ना वसुंधरा"के विचारसे इसके लिये मेरी अपेक्षा अधिक योग्य विद्वान्, और प्रभावशाली पुरुष मिल सकते थे, परन्तु सभाकी दृष्टि इसके लिये मुझ पर ही पड़ी, मुझपर ही यह महत्कार्य सोंपा गया, इसे मै सभाकी कृपा और अपना अहोभाग्य समझता हू । श्रीमती सभाने योग्यता और पुरुषार्थ न रहने पर भी जिस प्रकार मुझे यह कार्य सोंपा है, उसी प्रकार "बांह गहेकी लाज रखावनहार" बनकर वह इसे पूर्ण भी करा लेगी, ऐसी आशासे मैं कार्यका प्रारभ करता हू ।

पूर्वकाल ।

पूर्वकालमे जब हमारा देश सर्व प्रकारसे स्वतत्र और शान्तिका स्थान था,तब हमारी सम्पूर्ण उन्नतियोंकी करने वाली एकता देवीकी घर घर पूजा होती थी । सब लोग एक दूसरेसे मिलकर अपने ऐहिक और पारलौकिक कार्योंको बडी सरलतासे चलाते थे । तब ससारमे ईर्षा, दभ, असतोष, प्राणपीडा आदि पापवासनाये अधिक नहीं थीं । राजाओं और धर्मगुरुओंके हाथमें सामाजिक और धार्मिक कार्योंकी डोर थी । नीति और मर्यादाके साथ वे समस्त प्रजाका शासन करते थे । प्रजाका धर्म ही राजाका धर्म समझा जाता था । राजा प्रजाको अपनी संतानके समान पालते थे और प्रजाजन राजाको पिता तुल्य आदरकी दृष्टिसे देखकर उनकी आज्ञाका पालन करते थे । धर्मगुरुओका शासन सबसे बडा था । उसके अनुयायी राजा और प्रजा जन सब ही थे । उनका शासन मानना सबका धर्म था । उनके धर्मोपदेशसे न तो राजा अपनी मर्यादाका उल्लघन कर सकता था, जिसमें कि प्रजामें राजाके विरुद्ध कुछ असतोष फैले और न प्रजा ही अनीतिमार्ग पर चलती थी, जिसके विरुद्ध राजाको अपना प्रचंड बल काममे लाना पडै । सामाजिक जीवनमे किसी प्रकारकी अशान्ति न फैले, इसके लिये गाव गाव और जाति जातिकी जुदी २ पचायतिया नियत थीं । सब प्रकारके सामान्य सामाजिक तथा जातीय झगडोंका फैसला वहीं पर हो जाता था, विशेष और बडे झगडोंकी बात राज्य द्वारतक पहुंचती थी, जिनकी सख्या बहुत ही थोडी होती थी और उनके भी फैसले धर्म और नीतिपूर्वक होते थे । इसी प्रकार धार्मिक विचारोंके लिये धर्मसभायें होती थीं । जिनके अध्यक्ष धर्म-गुरु धर्माचार्य होते थे । जगह २ जो मुनियोंके बडे २ संघ आते थे, उनका उपदेश सुननेके लिये हजारों मनुष्य एकत्र होते थे, और अपनी शंकाओंका निराकरण करते थे । अथवा जगह जगहसे लाखों श्रद्धालु लोग तीर्थक्षेत्रोंकी वन्दनाको जाते थे, और यात्रामें परस्पर मिलकर खूब धर्मचरचा करते थे । ये ही धर्म

सभायें कहलाती थीं। धर्मात्मा धनिकगण बडे २ मन्दिर धर्मभवन बनवाते थे, उनकी प्रतिष्ठादिकमें श्रावक और मुनियोंके बड़े २ संघ एकत्र होते थे, और धर्म प्रभावना होती थी। बालकगण धर्मगुरुओंके पास नाना विद्याओंका अध्ययन करके प्रौढ होते थे। लाखों ग्रन्थ लिखाकर मुनियों तथा श्रावकोंको भेंट किये जाते थे, जिनसे विद्याका खूब प्रचार होता था। राजाओं तथा धनवानोंकी ओरसे जगह २ अन्नसत्र और औषधालय खुले हुए थे। साराश यह कि उस समय यहाकी प्रजा सब प्रकारसे सुखी थी और परस्पर प्रेमके साथ रहती थी।

वर्तमानकाल।

परन्तु बडे दुःखकी बात है कि, काल चक्रके प्रवाहमें पडकर अब हम लोग वे सब सुख खो चुके है, हमको स्वप्नमें भी अब उन सुखोंका अनुभव नहीं हो सकता है। ससारमें पापवासनाओकी असीमवृद्धि हो रही है, राजा और प्रजाका पितापुत्रका सम्बन्ध सर्वथा छूट गया है, सबहीने अपनी मर्यादा छोड़ दी है। दुराचारोंका खूब प्रचार हो रहा है अपराधियोंकी सख्या दिनपर दिन बढती जाती है, जगह २ जज्ज और मजिस्ट्रेट जम रहे हैं, झूठको सच और सचको झूठ करनेवाले वकील यूनीवर्सिटियोंकी टकसालोंमें ढल रहे है, पचायतियोंका बल सर्वथा नष्ट हो गया है, जरा जरासी बातक लिये लोग अदालतोंमे दौडते है, अपनी २ जय विजयके लिये लोग हाकिमोंको घूसखोर और जुल्मी बनाते हुए अपनी पूजी खो रहे है, राज्यकर हद्दसे जादा बढ गया है, विदेशियोंने देशके प्रत्येक व्यापारपर अपना अधिकार जमा लिया है, इससे प्रतिवर्ष अकाल पडते है, लोग भूखों मरते है और रोग बढ रहे है। यह तो सामाजिकबलकी बात हुई, धार्मिक बलकी और भी दुर्दशा है। लोग सर्वथा पतित हो रहे है। एक तो धर्मगुरुओंका प्राय अभाव ही हो गया है। और जो इने गिने है, वे पेटार्थी और कुमार्गगामी हो रहे है, जिससे प्रजा उनके शासनकी अवहेलना करने लगी है। धर्मविद्याओका लोप हो रहा है, तीर्थयात्रा अब केवल कौतुक तथा हवाखानेके लिये रह गई है, मदिर और प्रतिष्ठायें केवल मान और नामके लिये रह गई है, पाठशालाओमें धर्महीन और निजत्वको खोनेवाली झूठी विद्यायें पढाई जाती है, मुनि सघोंके कभी दर्शन नहीं होते, शास्त्रदानको लोग भूल गये है, और औषधालयोंके स्थानोंमें शराब आदि नानाप्रकारके घृणित पदार्थोंका प्रचार करानेवाले अस्पताल खुल रहे है। सराश धर्मको लोग भूल गये है, और इसीसे सब प्रकारकी अशातिया फैली है। समाज डिगमगा रहा है, और धर्म अबनतकी हालतमें है।

हमारा कर्तव्य।

प्यारे बधुओ! ऐसे समयमे आप सोच सकते है, कि हमको क्या करना चाहिये। पूर्व और वर्तमान समयके दो चित्र आपके सामने रक्खे गये है। इनमेंसे आपको कौन अच्छा लगता है? जो अच्छा लगे, उसीके प्राप्त करनेका प्रयत्न कीजिये। मेरी समझमें बाह्य चाकचिक्यमे न फसकर यदि आप अतर्दृष्टिसे देखेंगे, तो परमशाति और सुखमय दृश्य वही दिखलाई देगा, जो हमारे पूर्व पुरुषोंके समक्ष था। और उसीको प्राप्त करनेमे हम सुखी हो सकेंगे। परन्तु प्यारे सज्जनो! वह गया हुआ समय एकाएक पा लेना सहज नहीं है। क्योंकि जिनसे हम उसे पासकते है, वे हमारे जीवनमूल और धार्मिक तथा सामाजिकबल अब नष्टप्राय हो रहे है। इस लिये हम सबको सबसे पहले इन दोनों बलोंको बढानेका प्रयत्न करना चाहिये। बडे अच्छे मौकेपर हम जाग उठे है। इस समय यदि हम आलस्य छोडके निरतर अविश्रान्त परिश्रम करते जावेंगे, तो बहुत शीघ्र अपने अभीष्टको पा सकेंगे। क्योंकि अभी हमारे यहा सामाजिक और धार्मिकबलका बीज बना हुआ है। यदि कुछ दिन और निद्राव्यस्त रहते, तो यह रहा सहा भी नष्ट हो जाता और फिर हम सदाके लिये अपने पूर्व पुरुषोंके निर्मल यश तथा गौरवपर कलककी कालिमा चढानेवाले कहलाते।

सामाजिक और धार्मिक बल।

ऊपर जिन दो बलोंका जिकर किया गया है, उनमेंसे सामाजिकबलका समाजसे सम्बन्ध है और धार्मिकका धर्मसे। ऐहिक उन्नतिके लिये सामाजिकबलकी आवश्यकता है और पारलौकिक उन्नतिके लिये धार्मिकबलकी। ये दो बल पृथक् २ हैं। परतु इनका पारस्परिक सबध बहुत घनिष्ट है। सामाजिकबल धार्मिकबलकी पुष्टि करनेवाला है और धार्मिकबल सामाजिकबलको श्रेय देनेवाला है।

जिस सामाजिकबलमें धर्मका सम्बन्ध नहीं है, वह मेरे विचारसे संसारका कल्याणकारी नहीं होकर अत्यन्त अशान्तिकर होता है। युरोपादि देश इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जिनके धर्मशून्य सामाजिक शासनसे भारत जैसी उर्वरा स्वर्गभूमि दुर्भिक्ष तथा प्लेगादि रोगोंकी घोरयातनाका अड्डा बन रही है। यदि उनके समाजमें धार्मिक बलकी उचित मात्रा होती, तो हमारी इस पवित्र आर्यभूमिमें प्रतिदिन लक्षावधि गायोंके गलेपर छुरी न चलाई जाती, जगह २ ठेका देकर शराबखोरीकी वृद्धि न की जाती, जमीनपर कई गुना टैक्स लगाकर देशके किसानोंकी दुर्दशा न की जाती और नानाप्रकारके अत्याचारोंसे हमारे देशके शिल्पव्यापार नष्ट न किये जाते। इत्यादि बहुत सी बातें धर्मशून्य शासनके अहितकर होनेमें कही जा सकती हैं। परन्तु मैं अपने व्याख्यानको राजकीय विषयोंमें नहीं ले जाना चाहता, साराश मात्र समझ लीजिये। सभ्यताकी सीमापर पहुचे हुए अमरिका देशके शिकागो नगरके छह कसाईखानोंके विषयमें हम जानते है कि, गतवर्ष उनमें ८० लाख पशुओंका वध किया गया था। इन कारखानोंमें १८४३३ मजदूर नित्य काम करते है। इसी प्रकार लन्दन शहरके सिर्फ एक नीलामघरमे एक दिनमें छह लाख पक्षियोंका चमडा बेचा गया था, जो गोरी बीबियोंकी फेशनके काममें आता है!! सभ्यदेशोंके ऐसे घोरपापोंके और भी उदाहरण देकर मै अपने दयार्द्र सज्जनोंके हृदय दु खी नहीं करना चाहता, केवल यह समझाता हू कि, जिस समाजमें धर्म नहीं है, वह कैसा अशान्तिकर होता है। और इसके विरुद्ध समाजमे धार्मिक बलकी वृद्धिसे देश कैसा सुख और शान्तिमय बन सकता है, इसके लिये हमारे यहाके प्राचीन इतिहास पढ डालिये। जैनमित्रमे चन्द्रगुप्तका इतिहास आपने पढा होगा, धर्मराज्यका वह एक अच्छा पुष्ट उदाहरण है। राजा चन्द्रगुप्तके विशाल राज्यमें एक छोरसे दूसरे छोर तक अन्वेषण किया गया था कि, एक भी कसाईकी तथा शराबकी दूकान न थी। कोई एक चिउटीका भी घात नहीं कर सकता था। कोई किसीसे लडता झगडता नहीं था, चोरीका नाम नहीं था, मुकद्दमे नहीं होते थे। सब लोग सब प्रकारसे सुखी थे इत्यादि। साराश यह है कि, समाजका धार्मिक होना बहुत आवश्यक है। जिस समाजमें धर्म नहीं है, वह हमारी समझके अनुसार पशुसमाजसे किसी प्रकार बडा नहीं हो सकता।

एकताकी शरण।

सामाजिक और धार्मिकबल बढानेके लिये अब हमको एकताकी शरण लेनी चाहिये। एकताहीसे हम अपनी पूर्व दशाको फिरसे प्राप्त कर सकेंगे। और इस समयमे जब कि, एक परकीय, विदेशी और भिन्नधर्मी राज्यछत्रके नीचे हमको रहना पडता है, विना एकताके तो कुछ हो ही नहीं सकता है। क्योंकि राजाके और हमारे धर्ममे जमीन आसमानका फर्क है। इस एकताकी उपासनाके लिये वर्तमान देशकालके अनुसार सभा और सुसाइटी एक मुख्य साधन है। यदि हम चारो ओरसे सभाओंके द्वारा एकताके सूत्रमे बधने लगे, तो बहुत ही शीघ्र हमारा गया हुआ गौरव फिरसे प्राप्त हो सकता है।

मै पहले कह चुका हूं कि, पूर्व समयमें सामाजिक उन्नतिके लिये हमारे यहा पचायतियोंका खूब जोर था, और धार्मिक उन्नतिके लिये तीर्थयात्रा मुनियोंके सघ, शास्त्रदान, आदि बडे बडे साधन थे। परन्तु अब वे एक प्रकारसे अस्तव्यस्त हो गये है। ऐसी अवस्थामे सभाओंके द्वारा ही हम सम्पूर्ण कार्योंकी सिद्धि कर सकते है। इन सभाओंके द्वारा हम धीरे २ पचायतिया स्थापित कर सकते है, उनका बल बढा सकते है, तीर्थयात्राके अभिप्रायोको दृढ कर सकते है, पाठशालायें खोल सकते है, मुनियोंके स्थानमे उपदेशकोंका दौरा करा सकते हैं, सरस्वतीभंडार स्थापित कर सकते है, और शास्त्रदानादि कर सकते है। साराश अपने सामाजिक और धार्मिक दोनों बलोंको यथेच्छ बढा सकते है।

बडी खुशीकी बात है कि, दश बारह वर्षसे हमारे समाजमें सभाओंके स्थापनकी चरचा होने लगी है और अनेक सभायें स्थापित होकर काम भी कर रही है। श्रीमती दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बई जिसके कि, सभामडपको इस समय आप लोग सुशोभित कर रहे है, उन्हीं सभाओंमेंसे एक है।

सभाओंका प्रारंभ।

सबसे पहले मुरादाबादके पंडित चुन्नीलालजी तथा स्वर्गीय मुशी मुकुन्दरामजीने सभाओंके स्थापनका आन्दोलन किया था। उन्होंने अपने व्ययसे स्वय जगह २ जाकर और उपदेश देकर ५०--६० सभायें

स्थापित कराई थी और एक जैनपत्रिका नामका बिना मूल्यका पत्र निकालकर जैन समाजमें एक प्रकारकी स्फुरणशक्ति उत्पन्न कर दी थी । सभाओंके इतिहासमें उक्त दोनों सज्जनोंका नाम सबसे प्रथम आदरके साथ लेने योग्य है ।

बम्बईकी लोकलसभा और महासभाकी स्थापना ।

इसके पश्चात् सवत् १९४९ की अगहनसुदी १४ को इस सभाके महामंत्री मान्यवर पं० गोपालदासजी बरैया और पं० धन्नालालजी काशलीवालके उद्योगसे एक दिगम्बरजैनसभा नामकी लोकलसभाकी स्थापना हुई । स्थापित होनेके साथ ही इस सभाने अपने उत्साहको बढाना शुरू किया । सभाके सभ्योंके हृदयमे यह महत्वाकाक्षा उत्पन्न हुई कि, सारे भारतवर्षके दिगम्बर जैनियोंकी एक महासभा होनी चाहिये, जिसके अधिकारमें प्रान्तिक तथा लोकलसभायें रहें । इस आकांक्षाकी पूर्तिके लिये सभाकी ओरसे पडित गोपालदासजी बरैया और प० धन्नालालजी खुरईके प्रतिष्ठा महोत्सवपर गये और वहा महासभाके विषयमे खूब आन्दोलन किया । यह प्रतिष्ठा स० १९४९ के माघ महीनेमें एक अभूतपूर्व उत्साहके साथ हुई थी । खुरईमे यह निश्चय हुआ कि, जम्बूस्वामीके मेलेपर इस सभाकी नींव डाली जावे । तदनुसार सवत् १९५० के कार्तिकमें जम्बूस्वामीके मेलेपर बम्बईसभाकी ओरसे इसी कार्यके लिये एक डेप्यूटेशन भेजा गया । वहा पहुचनेपर मालूम हुआ कि, अलीगढके स्वर्गीय पडित छेदालालजीके उद्योग और परिश्रमसे महासभाकी नींव पड चुकी है । डेप्यूटेशनने हर्ष मनाया और महासभाके पराक्रमको बढानेका उत्तेजन दिया । महासभाका कार्य प्रारभ हुआ । कुछ दिनो बाद जैनगजट निकलने लगा, उपदेशक लोग दौरा करने लगे,—प्रान्तिक तथा लोकलसभाये और पाठशालाये स्थापित होने लगी ।

दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बई ।

इसके पश्चात् स० १९५७ मे बम्बईकी दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभाके उद्योगसे महासभाके प्रस्तावके अनुसार बम्बईमें दिगम्बरजैनप्रातिकसभा बम्बईकी स्थापना हुई, जो अपने कार्योंसे अपनी कीर्ति फैलाती हुई अभीतक अच्छी तरहसे चल रही है । और आज आप लोग उसके चतुर्थ अधिवेशनके लिये इस पवित्र स्थानपर पधारे हैं । सक्षेपमें सभाओका यही इतिहास है ।

दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बईने आजतक परीक्षालय, तीर्थक्षेत्रोंके प्रबन्धका सुधार, विद्यालयकी स्थापना, उपदेशकोंके दौरोमे धर्मजागृति, शिखरजीकी बीसपथी कोठीकी सुव्यवस्था, आदि जो २ कार्य किये हैं, उन सबका विवरण सभाकी रिपोर्टोंमे तथा स्वागतकमेटीके चेअरमेन साहबके व्याख्यानसे आप लोग जान चुके है, मै उनका पिष्टपेषण नहीं करना चाहता । उक्त कामोंमे आप लोगोंको यह विदित हुआ होगा कि, यदि सभायें कुछ करना चाहे, तो बहुत कुछ कर सकती है । थोडे ही दिनोंमें प्रान्तिकसभाने जो कार्य किये है, वे सचमुच वर्णनीय और धन्यवादके योग्य है । परन्तु प्यारे भाइयो ! इतनेसे ही आपको सतोष न कर लेना चाहिये और न इतनेमे सभाओंके बलकी सीमा नियत कर लेनी चाहिये । क्योंकि समूहमे अवर्णनीय शक्ति है । जिन कामोंका लोग स्वप्नमे भी ख्याल नहीं कर सकते, सभाये उन्हे लीलामात्रमें कर दिखाती है । आप लोगोमेंसे बहुतसे साहब जानते होंगे, कि हमारे देशमे पहले एक व्यापारियोंकी सभा ही आई थी, जिसका नाम ईस्टइडिया कम्पनी था, जो थोडे ही दिनमे अपने उद्योग और साहससे भारत जैसे बडे देशकी सर्वाधिकारिणी हो गई थी । सिवाय इसके ब्रिटिशपार्लीमेंट भी एक सभा ही है, जो भारत जैसे अनेक देशोंका शासन करती है । इससे आप विचार सकते हैं कि, समूहमे कितनी शक्ति है । परन्तु उस समूहके लोगोंको अपना स्वार्थ छोडके काम करना चाहिये और परस्पर एकताके सूत्रमें शपथपूर्वक बँधे रहना चाहिये ।

सभाओंके कार्यकर्ता और उनके कर्तव्य ।

सभायें जितनी लाभकारी और आवश्यक हैं, उतनी ही वे कठिन भी हैं । उन्हें वे ही लोग चला सकते है, जो धीर, वीर, गंभीर, बहुदर्शी, परोपकारी, विद्वान्, और सहनशील होते हैं । इन गुणोंके बिना

ही हम देखते हैं कि, प्रतिवर्ष सैकडो सभायें स्थापित होती हैं, और थोडी बहुत टीमटाम दिखाकर शीघ्रही नष्ट हो जाती हैं।

दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बईका उद्देश्य यह है कि, बम्बई प्रान्तके प्रत्येक ग्राम और नगरमे जहा जहा जैनियोंकी बस्ती है, सभाये पाठशालायें खोलकर प्रत्येक जैनीको शिक्षा सम्पन्न बनावे, उनकी आर्थिक दशाको सुधारे, जातीय कुरीतियोंको दूर करै, धर्मविद्याका प्रचार करै, प्रत्येक तीर्थक्षेत्रकी सुव्यवस्था करै, सरस्वतीभंडार स्थापित करै, उपदेशकोंका दौरा करावे, इत्यादि। परन्तु मुझे शक है कि,' अभीतक बम्बई प्रान्तके बहुत कम भाई सभाके उद्देश्योंको समझे है। बहुतसे भाई शायद यही समझते है कि, यह सभा केवल बम्बई अथवा शोलापुरके जैनियोंकी उन्नतिके लिये स्थापित हुई है। क्योकि अभी-तक जितने सज्जन इस सभाके कार्याध्यक्ष है, वे प्राय बम्बई अथवा शोलापुरके ही है। परन्तु ऐसा नहीं चाहिये, प्रान्त भरके सम्पूर्ण भाइयोंको इसे अपनी परमोपकारिणी सम्पत्ति समझकर इसमें योग देना चाहिये। और जो भाई जिस योग्य है, उन्हे शक्त्यनुसार सभाके कार्य थोडे २ बँटा लेना चाहिये। जो इतना नहीं कर सकते हैं, उन्हें सभाके जो उद्देश्य है, उनकी पूर्तिके लिये जगह २ प्रयत्न करना चाहिये, उन्नतिके नवीन २ उपाय बताना चाहिये और आवश्यक स्थानोंमे उपदेशकोंके दौरेकी प्रेरणा करनी चाहिये। इस तरह जब तक आप लोग इस सभाको अपनी परमसम्पत्ति और प्यारी वस्तु नहीं समझेंगे, सब प्रकारके स्वार्थ छोडकर तन मन धनसे इसमे योग नहीं देगे, तबतक यह अपने उद्देश्योंकी पूर्तिमें समर्थ नहीं हो सकेगी।

यह बडे दुर्भाग्यकी बात है कि, ज्यों ही हमारी सभा पाठशालादि कोई सस्था कुछ काम करनेके योग्य होती है, कुछ कार्य करने लगती है, त्यो ही उनके कार्यकर्ताओंमे पारस्परिक वैमनस्यकी आग दहकने लगती है। जो अन्तमे उन सस्थाओंको नष्ट करके तृप्त होती है। कार्यकर्तागण अपने थोडेसे स्वार्थ और मान बडप्पनके कारण ऐसी २ परोपकारी सस्थाओंपर जिनमे सारे समाजको लाभ होता है, हडताल फेर देते हैं। मेरी समझमे यह बड़ा भारी पाप है। व्यक्तिगत आक्षेपोंको अथवा घरेलू झगडोंको इन कार्योंमे लाना बडी भारी भूल है। इन धर्मकार्योंमे घरेलू शत्रुता तथा मित्रताको सर्वथा नहीं आने देना चाहिये। कभी २ कार्यकर्ताओंके विचारभेदोंसे भी ऐसा होता है। कार्यकर्तागण परस्परके विचारोंको एक करनेका प्रयत्न नहीं करते, उलटे उन विचारोंकी जड ही काट डालते है, अर्थात् सस्था ही नष्ट कर डालते है। परन्तु ऐसा नहीं होना चाहिये। विचार तथा कार्यके लिये संस्थाओंमें प्रवेश करते ही परस्परके वैमनस्यको भूल जाना चाहिये और एक उत्साह एक उद्योग तथा एक प्रेमसे उसकी उन्नतिका प्रयत्न करना चाहिये। जबतक इतनी योग्यता कार्यकर्ताओंमे नहीं होवेगी, तबतक कोई भी सस्था स्थिर नहीं रह सकती।

अब मैं थोडासा विवेचन इसका करूगा कि, प्रान्तिकसभाको मुख्यतासे कौन २ कार्य करना है। आशा है कि, आप लोग इसमे अपना थोडासा समय और भी खर्च करेंगे। सभाका सबसे मुख्य कार्य—

शिक्षाप्रचार—

है। सम्पूर्ण कार्योंकी यह जड है। इसके विना कोई भी समाज अपनी उन्नति नहीं कर सकता। परन्तु इस विषयके उठाते ही मेरा ध्यान उस विवादकी ओर जाता है। जो आजकल हमारे समाजमे चल रहा है। एक पक्ष कहता है, संस्कृत विद्याकी उन्नति करनी चाहिये और दूसरा पक्ष कहता है, नहीं अंग्रेजी-विद्या पढानी चाहिये। परन्तु यथार्थमे ये दोनो पक्ष अविचारितरम्य हैं। मै कहता हू कि, दोनों ही पढ़ाना चाहिये। सर्वत्र व्यवहार और निश्चयका विचार कर लेना चाहिये। एककी मुख्यतामें दूसरेको गौण और दूसरेकी मुख्यतामें पहलेको गौण रखना चाहिये। हमको दोनो ही प्रकारके विद्वानोंकी आवश्यकता है। एक ऐसे जो अंग्रेजीको मुख्यतासे पढें, और संस्कृत धर्मविद्याको गौणरूपसे, और दूसरे ऐसे जो मुख्यतासे संस्कृत धर्म-विद्याका अभ्यास करें और अंग्रेजीका गौणरूपसे। वर्तमानमें न केवल अंग्रेजी ही हितकर है, और न केवल संस्कृत। इस लिये दोनोंके पढानेका उपाय करना चाहिये। संस्कृत धर्मविद्याकी पढाईके लिये विद्यालय और पाठशालायें खोलना चाहिये और अंग्रेजीके लिये बोर्डिंगस्कूल खोल देना चाहिये। विद्यालयो तथा पाठशालाओंमें एक एक मास्टर अंग्रेजीका रख देना चाहिये और बोर्डिंगोंमें एक एक अध्यापक संस्कृत

धर्मशिक्षाका रख देना चाहिये । अब रही, जैनियोंके स्वतंत्र कालेजकी बात, सो न तो उसका आवश्यकता ही है, और न उसके लिये कोई कमसे कम १० लाख रुपयेकी पूंजी लगानेवाला है । जितनी पूंजीमें एक कालेज बनेगा, उतनी पूंजीमें दश जैनबोर्डिंगस्कूल खुल सकते हैं, जिनसे कालेजसे कई गुनी लाभ हो सकता है । इसके सिवाय हमको एक बात और भी ध्यानमें रखना चाहिये कि, सम्पूर्ण जैनियोंके बालकोंको ग्रेज्युएट बनाकर हमको नौकरी पेशा ही नहीं बना देना है । जैनियोंका जीवन व्यापार है । उन्हें व्यापारी बनाना है । इस लिये कालेजकी अपेक्षा हमको ऐसे व्यापारी स्कूलोंके खोलनेकी बहुत आवश्यकता है, जिनमें अंग्रेजीके व्यावहारिक ज्ञानके साथ साथ सब प्रकारके व्यापारोंकी शिक्षा मिल सके । और स्वतंत्र कालेजके अभिप्रायोंकी पूर्ति सरकारी कालेजोंमें नहीं हो सकती है, ऐसा भी कोई प्रबल हेतु नहीं है । धर्म-विद्याकी बात है, सो वह जैनबोर्डिंगस्कूलोंसे पूर्ण हो सकती है । क्योंकि सरकारी कोर्सके कारण उससे अधिक धर्मशिक्षाका लाभ स्वतन्त्र कालेजोमे भी होनेकी संभावना नहीं है । इससे तो अच्छा यह है कि, सरकारी कालेजोंमें हम अपने धर्मग्रन्थोंके भरती करानेका प्रयत्न करे । इसमें सफलता प्राप्त हो सकती है और हमारी कालेजकी इच्छा अनेक अशमें उससे पूर्ण हो सकती है । मैं समझता हूं, दोनों पक्षके सज्जन मेरे इन विचारोंसे सहमत हो जावेंगे ।

हम देखते हैं कि, इस वर्ष बडौदा और मोरवी आदि रियासतोंमें "प्रत्येक व्यक्तिको शिक्षित होना ही चाहिये" यह नियम जारी हुआ है । देशकी दशाका उच्चज्ञान रखनेवाले बडे २ विद्वानोंने इस नियमकी प्रशंसा की है, और कहा है कि, जिस राज्य अथवा देशमें इस प्रकारका शिक्षासम्बन्धी नियम नहीं होगा, वर्तमानकालमे उसकी उन्नति होना असभव है । इस लिये मेरी समझमें हमारी सभामें भी इस प्रकारका एक प्रस्ताव पास होना चाहिये कि, प्रत्येक जैनीके बालकका कर्तव्य है, कि विद्याभ्यास करै । इसके लिये गाव गावकी पचायतियोंको प्रेरणा करना चाहिये । जबतक प्रत्येक जैनी शिक्षित न होगा, तबतक हमारी कोई भी आकाक्षायें पूर्ण नहीं हो सकतीं । कितने दु:खकी बात है कि, जिन जैनियोंके हाथमें भारतवर्षका अधिकाश व्यापार हैं, वे सामान्य शिक्षामें भी कोरे रहें । उत्तरप्रान्तकी अपेक्षा इसप्रान्तके जैनी शिक्षामे बहुत पीछे है । मर्दुमशुमारीकी रिपोर्टसे मालूम हुआ है कि, बम्बई प्रान्तमें फी सदी १९ जैनी ही शिक्षित हैं । हमारे देशकी दुर्गतिका एक कारण यह भी है कि, हम लोग व्यापारी रहकर भी अशिक्षित रहते हैं, और शिक्षाका सस्कार न रहनेसे झूठ, चोरी और अन्यायका व्यवहार करते हैं, जिससे विदेशी शिक्षित व्यापारियोंने अपना विश्वास और गौरव बढाकर हमारे यहाके सब व्यापार अपने हाथमें कर लिये । इस लिये यदि हमको अपने देशकी दु:खावस्थापर कुछ भी दया है, और अपने व्यापारको बढानेकी कुछ भी आकाक्षा है, तो अपने बालकोंको शिक्षित बनानेका सबसे पहले प्रयत्न करना चाहिये । क्योंकि शिक्षित हुए बिना किसी भी व्यापारमे उन्नति नहीं हो सकती है । अन्यथा वह दिन शीघ्र आनेवाला है, जब हम लोगोंके हाथोमे सारा व्यापार छिन जावेगा और हम कौडीके दो २ बिकते फिरेंगे ।

धर्मशिक्षाकी बहुत बडी जरूरत है । इसके लिये प्रत्येक ग्राममें जहा कमसे कम २५-३० घर जैनियोंके है, धर्मपाठशाला अवश्य खोलनी चाहिये । उसीमें बालक प्रारंभिकशिक्षा भी पा सकेंगे और धर्मविद्याका भी अभ्यास करेंगे । पच्चीस रुपये महिनेके खर्चमें ऐसी पाठशालायें चल सकती हैं, जो मेरी समझमें पच्चीस तीस घर जैनियोंके लिये कुछ बडी बात नहीं है ।

उपदेशकोंके द्वारा ऐसी पाठशालाओंके लिये सर्वत्र आन्दोलन होना चाहिये । इन पाठशालाओंमें जो विद्यार्थी तीक्ष्णबुद्धिके निकलें, और आगे पढनेकी उनकी योग्यता हो, उन्हें काशी, जयपुर सहारणपुर, बम्बई, कोल्हापुर आदिके विद्यालयोंमें भेजनेका प्रयत्न होना चाहिये ।

परीक्षालय ।

बम्बई प्रान्तमें बहुतसी पाठशालायें स्थापित हैं. और प्रयत्न करनेसे और भी होनेकी संभावना है । परन्तु खेद है कि, उचित शिक्षाक्रमके बिना उनसे आशातीत उन्नति नहीं होती । हमारी सभाकी ओर से न कोई उनकी देखरेखका प्रबन्ध है और न पढाईके क्रमका । वार्षिक अथवा षाण्मासिक परीक्षा लेकर पारितोषिकादिसे

विद्यार्थियोंके उत्साह बढ़ानेका भी कोई प्रयत्न नहीं है। बम्बईका परीक्षालय जबसे महासभाके जिम्मे किया गया है, तबसे प्रारंभके कुछ वर्ष छोडकर (जबतक बाबू बच्चूलालजीके हाथमें यह कार्य रहा है) अभीतक आशा ही की जा रही है कि, महासभाके परीक्षालयद्वारा हमारी पाठशालाओंका निरीक्षण होता रहेगा, परन्तु अब वह आशा छोड देना चाहिये। महासभाको अभीतक कोई ऐसा मंत्री नहीं मिला, जिससे वह परीक्षालयको अच्छी रीतिसे चला सकै, इस लिये प्रान्तिकसभाको अपने एक स्वतंत्र परीक्षालयकी आवश्यकता है। अथवा यदि महासभा दिया हुआ परीक्षालय फिर लौटा देवे तो उसे उत्साहपूर्वक फिरसे चलाना चाहिये। मेरी समझमें महासभा खुशीसे प्रान्तिकसभाको अपना परीक्षालय सोंप देगी। गतवर्ष प्रान्तिक सभाने परीक्षालयकी नींव डाली हैं, अब उसे दृढतासे चलानेकी आवश्यकता है।

पंडितोंकी तयारी।

हमारे समाजमें पाठशालाओंमें पढाने योग्य अध्यापकोंकी बहुत न्यूनता है। बीसों स्थान ऐसे हैं, जहाके भाई पाठशालाके लिये चन्दा किये हुए बैठे हैं परन्तु उन्हें अध्यापक नहीं मिलते है इससे वे कुछ भी नहीं कर सकते है। यह बडे दुःखकी बात है। शिक्षाप्रचार करनेमें यह एक बडी भारी अड-चन है, इस लिये सबसे पहले इसका प्रयत्न करना चाहिये, अर्थात् पंडित तयार करना चाहिये। मेरी समझमें इसके लिये वह प्रस्ताव योग्य होगा, जो जैनमित्र अंक ७ में लाला नाथूरामजी प्रेमीने लिखा है। नॉर्मल स्कूलोंमें शिक्षा पाये हुए हिन्दीके मास्तर यदि योग्य स्कालरशिप देकर दो दो तीन तीन वर्ष विद्यालयोंमें पढाये जावेगे, तो यह अध्यापकोंकी त्रुटि बहुत जल्दी पूरी हो जावेगी।

स्त्रीशिक्षा।

स्त्रिया समाजकी जननी है। उनका शिक्षित होना बहुत आवश्यक है। प्रत्येक घर तबतक भली भांति शिक्षित नहीं कहला सकता, जबतक उस घरकी स्त्रिया शिक्षित न हों। जबतक नींव मजबूत नहीं है, तबतक इमारत दृढ नहीं कहला सकती। बालकोंके आगामी चरित्रका ढाचा स्त्रिया ही तयार करती है। अशिक्षित स्त्रिया अपने बालकोंको अशिक्षित ही रखना चाहती हैं और शिक्षित स्त्रिया शिक्षित। बालकपनमें माताके द्वारा पुत्रको जो शिक्षा मिलती है, उसका असर आजन्म रहता है। शिक्षित मातायें अपने बालकोंको एक दिनकी लीलामात्रमें जो कुछ पढा सकती हैं, स्कूलमास्तर वह एक महीनेमें भी नहीं पढा सकेगा। इसलिये समाजको शिक्षित बनानेका सबसे बडा साधन स्त्रिया है। प्राचीनकालमें हमारे भारतवर्षकी उच्चकुलकी सब ही स्त्रिया पढी लिखी होती थीं। श्रीमती सीता, अंजनासुदरी, अनन्तमती, मनोरमा, आदि स्त्रियोंके चरित्र हम लोग प्रतिदिन ही पढते है। यह शिक्षाहीका फल था कि, वे हजार कष्ट सहनेपर भी अपने पातिव्रतसे च्युत नही हुईं। स्त्रिया गृहस्थके घरकी रानिया हैं। वे शिक्षाके बिना अपने घरका शासन भलीभाति नहीं कर सकतीं। अपने पतिको समय पडनेपर किसी प्रकारकी अच्छी सला-ह नहीं दे सकतीं, सहायक नहीं हो सकतीं और न सुखदायिनी हो सकती हैं। इसलिये मैं अपने प्यारे भाइयोंसे प्रार्थना करता हू कि, वे अपने २ घरोंमे स्त्रीशिक्षाका प्रचार करें। यदि हम सब पढे लिखे लोग प्रतिदिन अपनी २ सहधर्मिणियोंको थोडा २ पढानेकी प्रतिज्ञा कर लें, तो बहुत जल्दी स्त्रिया शिक्षित हो सकती हैं। संसारकी सब भाषाओंमे नागरी पढना लिखना सबसे सहज है। लीलामात्रमें इसे स्त्रियां सीख सकती हैं। छोटी २ बालिकाओंके पढानेके लिये पाठशालायें खोलना चाहिये और अच्छी सदाचारिणी स्त्रियोंसे उसमें शिक्षा दिलानी चाहिये। पढने लिखनेके सिवाय उन्हें गणित, सीने पिरोने और कशीदा काढनेकी शिक्षा दिलाना आवश्यक है। यहां मै एक बात यह भी कह देना आवश्यक समझता हूं कि, स्त्रियोंको संस्कृत नागरी तथा मराठी गुजराती आदि देशभाषाओंके सिवाय अंग्रेजी उर्दू आदि पढानेकी आवश्यकता नहीं है। देशभाषामें उन्हें इतनी योग्यता अवश्य हो जाना चाहिये कि, वे अपने धर्मशास्त्रोंको भलीभांति पढ सकें, और शिक्षादायक नाटक उपन्यासादि अखबार बाच सकें। मैं आशा करता हूं कि, मेरे सहधर्मीभाई स्त्रीशिक्षा प्रचारके लिये अवश्य ही प्रयत्न करेंगे।

उपदेशक भंडार ।

मै पहले कह चुका हूं कि, वर्तमानकालमें हमारे धर्माचार्योका तथा मुनियोंका एक प्रकारसे अभाव हो गया है, जो हमारे परम उपदेशक थे। उन पूज्य महात्माओके न होनेसे हमारे समाजको जो हानि पहुंची है, उसका वर्णन करनेकी मुझमें शक्ति नहीं है। भारतवर्षमे एक दिन जिस जैनधर्मका डंका बजता था, सैकडो राजा जिसके भक्त थे, दूसरे धर्म जिसके आगे खद्योत जैसे यत्र तत्र चमकते थे, आज उसी परम धर्मके अनुयायी केवल ७—८ लाख जैनी दिखलाई देते है, और वे भी नाम मात्रको! उसी जैनधर्मके विषयमे आज लोगोंको यह शकाये होने लगी है कि, यह आस्तिक है अथवा नास्तिक, ब्राह्मण-धर्मकी शाखा है, अथवा बौद्धधर्मका रूपान्तर। यदि आज हमारे परमगुरु परवादिगजकेशरी आदर्श उपदेशक निर्ग्रन्थमुनि होते, तो यह दशा कभी प्राप्त नहीं होती। मुनियोके पीछे भट्टारक महाशयोंने कुछ दिनोतक हमारे धर्मको बडी उत्तमताके साथ चलाया था, परन्तु पीछे पीछे परिग्रहकी लपटता और अविद्याने उनपर ऐसा चक्र चलाया कि, वेचारे स्वय ही नष्ट हो गये, लोगोकी श्रद्धा एकदम काफूर हो गई। अब आजकल हम लोग निगुरिये हो रहे हैं। जब हमसे कोई पूछता है, तुम्हारे गुरू कहा है, तो लज्जा और दुःखके मारे उत्तर देते नहीं बनता। गुरुओंका शासन न होनेसे लोग उच्छृंखल हो रहे हैं, जो जिसके जीमे आता है, करता है। हजारो लोग धर्म छोडते जाते है, और लाखो भाई ऐसे है, जिन्हे यह भी नहीं मालूम है कि हमारा धर्म क्या है? ऐसे लोगोपर मिशनरी तथा आर्य समाजियोंके जादू खूब असर कर रहे है। दक्षिणके कासार लोग जो पहले शाक्त थे, और जिन्हे भट्टारक महाशयोने जैनी बनाया था, फिर शाक्त वैष्णव बन रहे है। लिंगायत लोग जो पहले जैनी थे, सबके सब शैव बना दिये गये है। मद्रास प्रान्तमे सुनते है, एक लाखके करीब पंचम (एक जाति) जैनी ऐसे है, जिन्हे अपने धर्मका ज्ञान सर्वथा नहीं है। जैनी उपदेशकोंके अभावसे वे शीघ्र ही कोई दूसरा धर्म ग्रहण करनेके लिये तयार है। प्यारे भाइयो! हमारी इससे बडी हानि और क्या होगी? यदि आज हमारे उपदेशक धर्मगुरु होते, तो आज ऐसे अनर्थ हमको क्यो देखना पडते! अस्तु, " **गई सो गई अब राख रहीको** " इस कहावतके अनुसार अब हमको शीघ्र ही इसका कुछ उपाय करना चाहिये। और वह उपाय यही है कि, जातिके विद्वान् और सदाचारी पुरुषोको उपदेशक बनाकर जगह २ उनका दौरा कराना चाहिये। ये उपदेशक प्रत्येक ग्राम और प्रत्येक नगरमे जाकर धर्मसे च्युत होते हुए अपने भाइयोको बचावेंगे, और सभाकी शक्तिको बढानेका प्रयत्न करेंगे। धर्मको जीवित रखनेका और उसके प्रचारका यदि कोई उपाय है, तो यही है कि, जितने हो सके, उतने उपदेशक जगह २ उपदेश देवे। आज पादरी लोगोंको देखिये, जिनका धर्म हमारे हिन्दुस्थानके एक छोटेसे छोटे धर्मका मुकाबिला नहीं कर सकता है, जिसमे न कोई तत्त्व है और न कोई फिलासोफी, उसी ईसाई धर्ममे अभागे भारतवर्षके लाखों मनुष्य प्रतिवर्ष मिलते जाते है। इसका सबब क्या है? यही कि वे उपदेशकोंकी महिमा जानते है! उनके उपदेशक आज गावगावमे विराजमान हैं। सो यदि आपको अपने जीर्ण शीर्ण जैनधर्मकी रक्षा करना है, और मिथ्यात्वकीचडमे पडते हुए लाखो भाइयोको बचाना है, तो सबसे पहले उपदेशकभडारको दृढ कीजिये।

सरस्वतीभंडार ।

प्यारे श्रद्धालु सज्जनो! क्या आप यह जानते है कि, हमारे लिये हमारे महर्षि महात्माओंने कितना परिश्रम किया है? वे पर्वतोंकी गुफाओंमे रहकर तथा अपने अमूल्य चारित्रका समय नष्ट करके और शुक्ल ध्यानको गौण करके हमारे लिये किस तरह लक्षावधि ग्रन्थ बनाकर रख गये है, जिनके अध्ययनसे बड़े २ विद्वानोंके मद चूर चूर हो जाते है। वे क्या यह नहीं जानते थे कि, हमारी उदार सन्तान उन्हें धूप भी न दिखावेगी, और दीमकका खाद्य बनाकर हमारे परिश्रमको सफल करेगी! हाय कितने दुःखकी तथा लज्जाकी बात है कि, चौदह लाख जैनियोंमे एक भी ऐसा सरस्वतीभडार नहीं है, जिसमें लाखों छोड़कर दो चार हजार ग्रन्थोका भी संग्रह हो। जब हमको किसी ग्रन्थकी आवश्यकता होती है, तो पूना तथा बम्बईकी सरकारी लायब्रेरीमे तलाश करते हैं, अथवा जर्मनीके पुस्तकालयसे मंगाते है। जिन जैनियोंके ग्रन्थ हैं, उनके

भंडारोंमें हमको उनकी प्राप्ति न होकर जो परकीय परधर्मी है, उनके यहा वे प्राप्ति होवें, यह क्या सारे जैनसमाजके लिये लज्जाका विषय नहीं है ? अवश्य है । मुझे आशा है कि, हमारी प्रान्तिक सभाके कार्यकर्ता एक सरस्वतीभंडार खोलनेका अवश्य ही प्रयत्न करेंगे । यद्यपि इस कार्यके लिये एक अच्छी पूंजीकी अवश्यकता है, परन्तु यह आवश्यकता हमारे समाजके उदार धर्मात्माओंके सम्मुख कोई चीज नहीं है ।

प्रान्तके एक मुख्य सरस्वतीभंडारके अतिरिक्त मुख्य मुख्य ग्राम और नगरोंके भाइयोंको अपने २ मंदिरोंमें एक २ लायब्रेरी खोलनी चाहिये । जिसमें प्रसिद्ध २ ग्रन्थोंकी एक एक प्रति रक्खी जावे, जो थोड़े व्ययसे संग्रह हो सकें । इन लायब्रेरियोंमे जैनधर्मके सब अखबार और पुस्तकोंका भी संग्रह रहना चाहिये । ऐसी लायब्रेरियोंके खोलनेमे कुछ कठिनाई न पडेगी, सौ सौ दो दो सौ रुपयेमें ही यह कार्य हो सकेगा । क्योंकि जहा तक मुझे मालूम है, प्रत्येक मदिरमे सरस्वतीभंडारकी पुरानी पृथा चली आती है, जिसमे दश दश पाच पाच ग्रन्थ स्वाध्यायके लिये रहते है ।

तीर्थक्षेत्र ।

तीर्थक्षेत्र धर्मकी जागृतिके एक मुख्य स्थान है । वे हमारे परमपूज्य ऋषि महर्षियोंके मोक्षके स्मारक हैं । तीर्थक्षेत्रके दर्शनोंसे हमको अपने धर्म प्रवर्तकोंके चरित्रोंका स्मरण होता है, जिससे महान् पुण्यका बंध होता है । अतएव तीर्थक्षेत्रोंकी रक्षा और उनकी सुव्यवस्था रखना हमारा धर्म है । कालदोषसे क्षेत्रोंके प्रबन्धकर्त्ता मुनीम पुजारीगण धनलोलुपी होकर निर्माल्यके पापसे निडर हो गये है, जिससे एक पापप्रचारके सिवाय हमारी परिश्रमसे कमाये हुए द्रव्यका दुरुपयोग होता है । लाखो रुपया हजम होते जाते है । यदि तीर्थक्षेत्रोंकी व्यवस्थामे कुछ सुधार हो, तो उनके भंडारोंमें इतना द्रव्यसंग्रह हो सकता है, जिससे तीर्थके खर्च निर्वाहके सिवाय एक दो अच्छे विद्यालय और सरस्वतीभंडार खुल सकते है । इस लिये हमको इस ओर खूब लक्ष्य देना चाहिये । जिस क्षेत्रका प्रबन्ध ठीक न हो, वहा एक पैसा भी नही देना चाहिये और उसके सुधारके लिये समाचारपत्रोंमे आन्दोलन करना चाहिये । यह कार्य सर्वसाधारणका है और तीर्थक्षेत्रकमेटीका जो कि प्रान्तिक सभाके उद्योगसे पृथक् स्थापित हो चुकी है, यह कार्य है कि, प्रत्येक क्षेत्रके प्रबन्धकी देखरेख रक्खै, वहाके हिसाबकी जाच करै, और ईमानदार, सदाचारी मुनीम नियत करै, इत्यादि । ऐसा करनेसे बहुत जल्दी क्षेत्रोंका सुधार हो सकता है ।

समय बहुत हो गया है, इसलिये अब मै पारितोषिकभंडार, अनाथालय, आदिके विषयमें बहुत कुछ न कहकर एक व्यापारके विषयमे जो कि जैनियोंका जीवनमूल है, कुछ विचार करके अपने व्याख्यानको समाप्त करूंगा ।

व्यापार ।

बहुत कालसे भारतवर्षके व्यापारके राजा जैनी है । एक अंग्रेजके मतके अनुसार कुछ दिन पहले भारतका दो तृतीयांश व्यापार जैनियोंके हाथसे होता था, और अब भी बहुत होता है । परन्तु अब व्यापारी नीतिने करवट बदली है । पूर्वके व्यापारसे अबके व्यापारने कुछ दूसरा ही रूप धारण किया है । बुद्धिमान् लोग देश और कालको देखकर अपनी पद्धति बदलते है । परन्तु हम देखते है कि, हमारी जातिके धनिक अभी तक पुरानी ही लकीर पीटते जाते है । ऐसा करनेसे धीरे धीरे हमारे हाथसे सब व्यापार निकल जावेंगे । अब हमको समयके अनुसार अंग्रेजी पद्धतिसे बडी २ कम्पनिया बनाकर उनके द्वारा कल, कारखाने और मिलें खोलना चाहिये । देशमे स्वदेशी आन्दोलनका खूब जोर हो रहा है, इसलिये विदेशसे जो २ चीजें आती हैं, यहांपर उन सबके तयार करानेका उद्योग करना चाहिये । कालेजोंमें जितने जैनी ग्रेज्युएट तयार होते हैं, उन सबको अपने नवीन कारखानोंके मैनेजर तथा सचालक बनाना चाहिये, जिससे उन्हें सरकारी नौकरियोंके लिये धक्के न खाना पडें । अपनी सतानको इस श्रेणीकी शिक्षा देनी चाहिये, जिससे वह सब प्रकारके व्यापारोंका मर्म समझ सकें ।

हमारी जातिके धनाढ्योंके करोडो रुपये आठ आना बारह आना सैकडेके व्याजमें लगे हुए हैं, यह खेदकी बात है। देशकी वर्तमानदशामें इस तरह रुपयोंको पडे पडे सडाना बडी निर्दयता है। इन रुपयोंमें यदि नवीन कलकारखाने खोले जावें, तो देशकी पैदावार बहुत कुछ बढ सकती है।

बड़े बडे व्यापारके शहरोंमें धानिक गणोंको इस प्रकारके आश्रम खोलना चाहिये, जिनमें ऐसे जैनी भाई जिन्हें स्वदेशमे व्यापार नहीं मिलता है, आकर कुछ दिनों परवरिश पा सके, और तब तक किसी, व्यापारसे लग जावे। आश्रमोंकी ओरसे उन्हें व्यापार सिखलानेका भी कुछ प्रबन्ध करना चाहिये। ऐसा करनेसे सैकड़ों गरीब अपने उद्योगमे लग जावेंगे।

धनिकगणोंको चाहिये कि, जहातक हो, अपनी दूकानोंपर जैनी मुनीम गुमाश्ते आदि कर्मचारी रक्खें, ऐसा करनेमें धर्मप्रेम बढेगा, और स्वधर्मी भाई बेरोजगार नहीं रहेंगे।

स्वदेशीआन्दोलन।

यदि विचार करके देखा जावे, तो स्वदेशी आन्दोलनमे जैनियोंका सबसे अधिक सम्बन्ध है। क्योंकि स्वदेशी आन्दोलनका मुख्य हेतु स्वदेशी व्यापार और शिल्पको उत्तेजन देनेका है। और ये दोनों जैनियोंके जीवननिर्वाहके प्रधान कारण है। विदेशी व्यापारी हमारे देशके व्यापारको सर्वथा नष्ट कर रहे थे तथा हमारे देशके धनको जोककी तरह चूस रहे थे, उसको रोकनेके लिये देशके हितचिन्तकोंने स्वदेशीआन्दोलन स्थापित किया है। इस लिये जैनियोंको इसमें अवश्य ही योग देना चाहिये। दूसरे लोगोंका केवल इतना कर्तव्य है कि, विदेशी वस्तुओंका व्यवहार छोड देवें और स्वदेशी वस्तुओंको काममें लावे। परन्तु हम लोगोंका कर्तव्य इससे भी कहीं अधिक है। वह यह कि, स्वदेशी वस्तुओंका व्यापार करें, विदेशियोंका परित्याग करे, और साथ ही देशमे सब प्रकारकी स्वदेशी वस्तुओंके तयार करानेका प्रयत्न करे। क्योंकि हम इस देशके व्यापारी है। जैनियोंको इसमें शामिल होनेके दो प्रधान कारण और भी है, पहला यह कि, जैनी अहिंसाधर्मके पालनेवाले है, और देशमे जो करोडों आदमी अन्नके लिये त्राहि! त्राहि! करते है, स्वदेशी आन्दोलनसे वे रोजगारमे लगकर भरपेट अन्न पा सकते है जो अन्नदान रूप अहिंसाका कारण है। आप लोगोंको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि, हमारे देशके दश करोड अभागे भाई सिर्फ एक वक्त अन्न खाकर रहते है, उन्हे कभी भरपेट खाना नहीं मिलता। इसका कारण यही है कि, देश धनहीन हो रहा है। दूसरा कारण यह है कि, विदेशी वस्तुए, शक्कर, कपडा, केशर, बटन, आदि चीजे अतिशय अस्पर्श्य और घृणित पदार्थोंके संयोगसे बनती है जैनधर्मके अनुसार उनका परित्याग करना हमारा कर्तव्य है। यदि ये चीजे हमारे देशमें बनने लगेगी, तो शुद्धतापूर्वक बनेंगी, जिससे लोग धर्मभ्रष्ट होनेसे बचेंगे। मेरेपास इतना समय नहीं है कि, आपको यह विषय खूब विस्तारसे सुनाऊ, उद्देश्य मात्र सुना सका हूं, परन्तु आशा है कि, आप इतनेमे ही स्वदेशी आन्दोलनके अभिप्रायको समझ गये होगे, और इसमें शामिल होकर देशका कल्याण करनेवाले बनेंगे।

समाप्ति।

बस इतना कहकर मै अपने व्याख्यानको समाप्त करता हू, और आप लोगोंको धन्यवाद देता हूं, जो अपना अमूल्य समय खोकर मेरे चार शब्दोंको ध्यानसे सुनते रहे। साथही यदि मुझसे कुछ अनुचित कहा गया हो, तो उसकी क्षमा चाहता हू।

विश्राम लेनेके पहले आप लोगोंका ध्यान फिर एक वार उसी ओर खींचता हू कि, यदि आप अपने पूर्वजोंकी कीर्ति और सुखको पुन प्राप्त करना चाहते है, तो अपने धार्मिक और सामाजिक बलको बढाइये और इस पुण्यकर्मके लिये तन मन धनसे कमर कसके खडे हो जाइये। श्रीजिनेन्द्रदेवकी कृपासे हमारी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी, हम अपने धर्मको एक वार फिर जगद्व्यापी बना सकेंगे और अपने समाजको विपुल धन जनसे परिपूर्ण देखनेका सौभाग्य प्राप्त कर सकेंगे। एक वार बोलिये, जैनधर्मकी जय! निर्ग्रन्थ-शासनकी जय!! वीतरागदेवकी जय!!!

शुभम्भूयात्

पुरवालोंने भी इसका अनुमोदन किया। पश्चात् मि० लालनने कहा कि, भाइयो! आप जानते हैं श्रीनेमिनाथजीने विवाह करना क्यों छोड दिया था? इसी लिये कि, वहा उनका धर्म जाता था! पशुओंके बधरूप अधर्मसे बचनेके लिये उन्होंने विवाह छोड दिया था। फिर विधर्मिविधिमे विवाह करनेमें जब हमारा धर्म जाता है, तब हमको उसे क्यों करना चाहिये? चिरजीवि सखाराम श्रीनेमिनाथ भगवान्का अनुयायी है। वह धर्म जाते हुए अपना विवाह कैसे करता? प्रत्येक मनुष्यको श्रीनेमिनाथजीका अनुकरण करना चाहिये। हम जिन प्रतिमाओंकी प्रतिदिन भक्तिपूर्वक पूजन करते है, आप जानते है, वे किस चीजकी बनी हुई हैं? पाषणकी। फिर उन्हें पूज्य क्यों मानते है? क्या पाषाण पूज्य होता है? अथवा कारीगरकी गढन्तसे वे पूज्य हो जाती है? नहीं वे नाना प्रकारके मत्रोंके सस्कारसे पूज्य होती है। इसी प्रकार बालक जन्मसे ही जैनी नहीं होता है, किन्तु जैनधर्मका अनुयायी बनानेसे जैनी होता है। हडीमे जिस चीजका संस्कार हुआ हो, साफ कर देनेपर भी उसमें उसकी गध रहती है। यही सस्कारतत्व है। जैनियोंकी आर्षविधिके सस्कारोंसे जब सस्कारित होगे, तब ही हम जैनी हो सकेंगे और तब ही हमारी जैनधर्ममें श्रद्धा होगी। बडी लज्जाकी बात है कि, वैष्णवादिकोंके सस्कारोका हमपर असर हो, हम उसके अनुयायी बनें और हमारा धर्म जो ससारके सम्पूर्ण धर्मोका शिरोभूषण है, उसके सस्कारोका हम स्वय आचरण न करें। इस तरह जोरदार व्याख्यान देकर पडित लालनने चिरजीवि सखारामकी धर्मश्रद्धापर मोहित होकर अपने हाथकी एक माणिककी अंगूठी उतारकर उसे दे दी। चारो ओर हर्ष हर्षकी ध्वनि गूंज उठी।

इसके पश्चात् प्रस्ताव स्वीकृत होने समय एक भाईने कहा कि, सब लोग जैनपद्धतिसे विवाह करानेके लिये तयार है, परन्तु पडितोकी प्राप्तिके लिये क्या करना चाहिये? इस पर पडित धन्नालालजी काशलीवालने कहा कि, इसी लिये कहते है कि हमे विद्यालयोंमे पडित तयार करना चाहिये। परन्तु जबतक हमारे पंडित तयार हो, तबतक ब्राह्मण पडितोंसे ही अपनी विधि करानी चाहिये। वे लोग अधिक दक्षिणाके लोभसे हमारी विधिको सीखेंगे और खुशीसे विवाह करावेंगे। ब्राह्मणोंको क्रियाकांडके करानेका अधिकार है। इस तरह बहुत वादविवादके पश्चात् यह प्रस्ताव पास हुआ। सखारामको जयध्वनिके साथ सुवर्ण मेडल पहिनाया गया। बालकने कहा, कि, मैने कोई बडा कार्य नहीं किया है, अपने कर्तव्यका पालन किया है। तथापि सभाकी आज्ञासे मै इसे ग्रहण करता हू।

प्रस्ताव ६—वैद्यराज और वैद्यरत्न पंडित कन्हैयालालजी जैनीको सभाकी ओरसे एक सुवर्णपदक दिया जावे। इसलिये कि, वे जैनियोमे एक ही परीक्षोत्तीर्ण वैद्य हैं।

इस प्रस्तावको भी शेठ पानाचन्द रामचन्दर्जीने पेश किया। प० जवाहिरलालजी साहित्यशास्त्री जयपुरवालोंने बडी सुन्दर रीतिसे इसका अनुमोदन करके कहा कि, वैद्यराजजीका आदर करना चाहिये। विद्वानोंका आदर न करनेसे ही आज हमारे देशकी दशा बिगडी है। पश्चात् लाला नाथूरामजी प्रेमीने इसके अनुमोदनमे कहा कि, आज चतुर्दशी है, यहा सौ मेंसे ७९ भाईयोंके हरीका त्याग होगा। क्यों? इस लिये कि जैनियोंकी दया अपूर्व है। हमारे भक्ष्याभक्ष्यका ज्ञान लोकोत्तर है। हम लोग पानी छानके पीते है। परन्तु हम देखते हैं कि, देशी वैद्योंकी अवहेलनासे आज हमारे भाई अस्पतालोंमें जाकर बोतलेकी बोतले हलकके नीचे उतार जाते है। नहीं पूछते है कि, भाई! इसमे किस जीवका मास है? कौनसी शराब है? और मधुका सम्पर्क कितना है!! क्या यह लज्जाकी बात नहीं है? करोडो रुपये प्रतिवर्ष विलायती दवाईयोमे जा रहे हैं, और देशी वैद्य भूखो मर रहे है। देशी वैद्यकको जहन्नुमरसीद करके हम लोग अपने लडकोंको डाक्टरी पढानेमे भी सकोच नहीं करते। लोग कहते है, वैद्य मूर्ख हो गये है। परन्तु सोचिये, तो सही कि उन्हे मूर्ख किसने बनाया है? जब आपने उनकी कदर करना छोड दी, तब उन्होने अध्ययन छोड दिया। यदि आप उनका फिरसे सन्मान करने लगें, तो वे फिर भी विद्वान् बनने लगें, और आपकी डाक्टरोंसे बढके सेवा करने लगे। मुझे हर्ष है कि, सभा वैद्यराजजीको सुवर्णपदकसे सन्मानित करती है। मेरी इससे सच्ची सहानुभूति है। इसके पश्चात् वैद्यराजजीको सुवर्णपदक पहनाया गया। आपने अपनी लघुता दिखाते हुए उसे स्वीकार किया और देशी वैद्यक डाक्टरीसे क्यो अच्छा है, इसके विषयमें थोडासा विवेचन किया। इस तरह दूसरी बैठकका कार्य समाप्त हुआ।

तीसरी बैठक। ता० २९-१-०७।

अनुमान १॥ बजे दिनको सभाका प्रारंभ हुआ। पहले "**अजमेरके शेठ नेमीचन्दजीको सरकारकी ओरसे रायबहादुरकी पदवी मिलनेके विषय सभा हर्ष प्रगट करती है**" यह सातवा प्रस्ताव सभापति साहबने स्वयं पेश किया जो सर्वानुमतसे पास हुआ। पश्चात् पडित गोपालदासजीने यह बतलाते हुए कि, मनुष्योंका शोक उनके कर्तव्योंसे किया जाता है, आठवा प्रस्ताव पेश किया,—**यह सभा राजा बहादुर दीनदयालजी, राजा धर्मचन्दजी, पंडितवर्य बलदेवदासजी, पं० शान्तिलालजी आदिकी मृत्युपर शोक प्रकाशित करती है।** इसमें प्रत्येक मृतमहाशयके गुणानुवाद किये गये। शोलापुरके शेठ रावजी सखारामके अनुमोदनसे प्रस्ताव पास हुआ।

इसके पश्चात् मि० एन, पी. पाटणकर वकीलने **नवमा प्रस्ताव** पेश किया कि, **बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय आदि हानिकर रीतियां जैनसमाजमे बन्द होना चाहिये।** इसकी भूमिकामें वकील साहबने कहा कि "बालविवाह आदि हमारे समाजमें सैकडों वर्षोंसे प्रचलित है, तो भी हमें कभी इनका बुरा परिणाम दिखलाई नहीं दिया, फिर आज क्यों इनके दूर करनेकी आवश्यकता बतलाई जाती है? यदि कोई ऐसी प्रश्न करे, तो उसे समझाना चाहिये कि, पाश्चात्य देशके लोगोंसे मिलान करते हुए अब हमको इन दुष्प्रथाओंके फल प्रत्यक्ष होने लगे है। किसी जाति अथवा समाजकी प्रतिस्पर्धा करनेके लिये अथवा बराबरीके योग्य बननेके लिये हमारी शक्ति उसके समान ही नहीं, किन्तु अधिक होना चाहिये। इसलिये हमको हमारी शक्तिके नष्ट करनेवाले सम्पूर्ण कारणोंको नष्ट कर देना चाहिये। अब पाश्चिमी सुधारणाके उजेलेमें हमको ऐसा मालूम होने लगा है कि, पाश्चात्य (युरोपीय) जितने अच्छे और शक्तिशाली है, प्राच्य (हम लोग) उतने ही बुरे और बलहीन है। परन्तु यथार्थमें ऐसा सर्वथा नहीं है। हम लोग यदि अपने दोषोंको छोडकर पाश्चात्योंसे भिड जावेगे, तो निश्चय समझिये, पाश्चात्योंको अपनेसे बहुत पीछे छोड देवेंगे। यह बात जापानके उदाहरणसे स्पष्ट हो जाती है। इसलिये अपने समाजमेंसे हमें अशक्तता (कमताकती) बढानेवाली रीतियोंको सर्वथा निकाल देना चाहिये। बालविवाहकी प्रथा बहुत ही बुरी है।

इस प्रस्तावका अनुमोदन मि० माणिकचन्द रावजी और शेठ गोतम जयचद निम्बगाव द्वारा हो

चुकनेपर किसी भाईके प्रश्नपर पं० धन्नालालजीने कहा "हमारे आचार्योंकी आज्ञा है कि, **द्वादशवर्षा कन्या षोडशवर्षा पुमान् तौ प्राप्तव्यवहारौ अर्थात् बारह वर्षमें** कन्या और सोलह वर्षमें पुरुष साधारणत व्यवहार प्राप्त होता है। कमसे कम इस उमरमे विवाह होना चाहिये, इसके पहले नहीं। कभी २ लडकियां पन्द्रह २ वर्षतक व्यवहार प्राप्त नहीं होती है, ऐसी अवस्थामे तब तक विवाह भी नहीं करना चाहिये। छोटी उमरमे विवाह करनेसे विद्याभ्यास करनेका समय नष्ट हो जाता है, और पुरुषार्थहीन संतान उत्पन्न होती है। इसी प्रकार वर्तमानमे साधारणत ५० वर्षतक पुरुषोंमें बल रहता है, और नवीन विवाहित स्त्रीको कमसे कम १०–१२ वर्ष सुख देना चाहिये। इस हिसाबसे पुरुषोंका अधिकसे अधिक ४०–४२ वर्षकी उमरतक विवाह करना न्यायसगत होता है। इससे अधिक उमरका विवाह धर्म कर्म सबपर पानी फेरनेवाला पापकर्म है।" अन्तमे श्री हीरालाल नारायणदासजी और पंडित हुकमचंदजी औरंगाबादके अनुमोदनसे सबकी अनुमति लेकर यह प्रस्ताव पास किया गया।

प्रस्ताव १०—प्रांतिकसभा बम्बईकी ओरसे एक सरस्वतीभंडार खोलना चाहिये, जिसमे सब प्रकारके जैनग्रन्थोंका संग्रह किया जावे।

पंडित धन्नालालजी काशलीवालने यह प्रस्ताव उपस्थित करते हुए कहा कि, यद्यपि हृदयके भावोंको सर्वथा झलका देनेकी अक्षरोंमें शक्ति नहीं है, तथापि हमारे परमपूज्य ऋषि हम सबके उपकारके लिये अपने आन्तरिक सिद्धान्तोंको लिपिबद्ध करके रख गये है। उन लिपिबद्ध ग्रन्थोंके द्वारा ही आज हम उनके अभिप्रायोंके अनेक अंशोंको समझनेकी शक्ति रखते है। आज यदि ये ग्रन्थ न होते, तो सच्चे मोक्षमार्गका प्रवर्तक हमारा धर्म न जाने कबका लोप हो गया होता। इससे समझना चाहिये कि, ग्रन्थ हमारे कितने उपकारी है। खेदकी बात है कि, उनही ग्रन्थोंकी आज यह दशा है कि, हम लोग उन्हे धूप भी नहीं दिखाते। सैकडों ग्रन्थोंको दीमकने खाकर भूसा कर दिया है; पर हमे दया नहीं आती। हम लोग यह नहीं सोचते है कि, किसी ग्रन्थका एक भी नष्ट हुआ वाक्य क्या कोट्यावधि द्रव्य व्यय कर देनेसे फिर मिल सकता है? कदापि नहीं। इससे हमको एक सरस्वतीभंडार अवश्य खोलना चाहिये और उसमें जहांसे जैसे प्राप्त हो सके, कमसे कम एक २ ग्रन्थकी एक २ प्रति लिखाके मँगाके रखना चाहिये। जो ग्रन्थ कानडी तामिल आदि लिपियोंमें मिलें, उन्हें नागरीलिपिमे लिखाके मगाना चाहिये। इसके बराबर दूसरा पुण्यका कार्य नहीं है।

इसके पश्चात् पंडित गोपालदासजीका एक जोरदार व्याख्यान हुआ, जिसके प्रारभमे तालियोंकी आवाजसे मंडप गूंज उठा। आपके कहनेका सारांश यह था कि, प्रत्येक मनुष्यको रुपया खर्च करना खटकता है। इस लिये सभा जैसी सस्थाओंने कुछ द्रव्यकी बात निकाली कि, लोग कहते है, सभा क्या है, रुपये इकट्ठा करनेका यत्र है। परन्तु यह ठीक नहीं है। प्रत्येक मनुष्यको यह समझना चाहिये कि, सभा यह प्रत्येक व्यक्तिकी ही है, अर्थात्, प्रत्येक व्यक्ति सभासे भिन्न नहीं है। तब सभाका जो हित है, वह सबका ही हित है, इसलिये सबको अपने अपने हितके लिये सहायता देनी ही चाहिये। सहायताके विना कोई भी कार्य नहीं चल सकता। सोचिये कि, विद्यालय, सरस्वतीभंडार, उपदेशक भंडार, तीर्थक्षेत्रकमेटी आदि आपकी सहायताके विना कैसे चल सकते है? यह सहायता चाहे, थोडी हो चाहे बहुत, परन्तु बडेसे लेकर छोटे तक सबको ही करनी चाहिये। इसमे आनाकानी करना ठीक नहीं है। क्योंकि "**सर्वारम्भास्तण्डुलप्रस्थमूलाः**" यह नीति है। विद्यालय आदि सस्थाओंके पैर नहीं है, जो वे स्वय चलने लगेगी, आपके चलानेसे ही चलेगी। समाजोन्नतिके लिये इन सस्थाओंकी बडी भारी आवश्यकता है। इसलिये इनमे सहायता करना प्रत्येक व्यक्तिका धर्म है।" इस व्याख्यानका लोगोंपर बडा असर पडा। चारों ओरसे रुपयेकी आवाजे आने लगीं। यह लीजिये, विद्यालयके लिये, ये सरस्वतीभडारके लिये, मै सभासद बनता हू, मेरा नाम लाइफमेम्बरोंमें लिख लीजिये, इत्यादि। उस समयका दृश्य प्रेक्षणीय था। बडे उत्साहसे लोगोंने द्रव्यसे यथाशक्ति सहायता की। अनुमान २००० रु० के नकदी चन्दा हो गया। फेहिरिस्त आगामी अंकमे प्रकाशित होगी।

प्रस्ताव ११—प्रान्तिक सभाकी मैनेजिग कमेटीके अन्तर्गत बम्बईकी एक स्थानिक सब्जेक्टकमेटी नियत की जावे, जो कमेटीमें पेश करनेके लिये प्रस्ताव तय्यार करके सैक्रेटरीके पास भेजे। इस सब्जेक्टकमेटीके वे ही मेम्बर होगे, जो मैनेजिगकमेटीके मेम्बर हों।

बम्बईके मि० लल्लूभाई प्रेमानन्द एल, सी. ई. ने आवश्यकता दिखलाकर यह प्रस्ताव पेश किया, और पंडित रामभाऊजी नागपुरके अनुमोदन पूर्वक सर्व सम्मतिसे पास हुआ।

प्रस्ताव १२—बडौदाके शेठ लालचन्द कान्हदासजीके आग्रहसे दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बईका आगामी पांचवां अधिवेशन श्रीपावागढ सिद्धक्षेत्रपर किया जावे।

मि० लल्लूभाई प्रेमानन्दजीने इस प्रस्तावको पेश किया और शा लालचन्द किशुनदासने प्रार्थना रूप अनुमोदन दिया। इसके विरुद्ध फलटणके मि० माणिकचन्दरावजीने कहा कि, **दहीगाव** क्षेत्रपर जो कि शोलापुर जिलेमें है, सभाका आगामी अधिवेशन होना चाहिये। वहाके लोग सभाके लिये अतिशय तृषित है। एक भाईने इसका और भी अनुमोदन किया। तब शा जीवनलाल हलोचन्दजीने कहा, कि गुजरातमे सर्वथा अंधकार छाया हुआ है, धर्म नष्ट हो रहा है, नमोकार मंत्रका उच्चारण करना भी किसी को शुद्ध नहीं आता है, ऐसे प्रान्तपर सभाको अवश्य ही कृपा करनी चाहिये और वहा जाकर धर्मजागृति करनी चाहिये। दक्षिणमें सभाके कई जल्से हो चुके है, अभी वहापर गुजरातसे अधिक आवश्यकता नहीं है।

इसकी और भी एक भाईने पुष्टि की। अन्तमे बहुत विवादके पश्चात् महामत्री साहबने यह फैसला सुनाया कि, आगामी वर्ष पावागढमे ही अधिवेशन होगा, परन्तु उसके बाद पहला हक दहीगाववालोंका होगा। अर्थात् पावागढ अधिवेशनके पश्चात् यदि वे आमंत्रण देंगे, तो छट्ठा अधिवेशन दहीगावमे होगा। इसके पश्चात् सभाका थोडासा कार्य शेष रह गया था, उसके लिये गत्रिका समय निश्चित हो चुकनेपर बाबू फूलचन्द पाटणीने तीर्थक्षेत्रकमेटीकी व्यवस्था सुनाई। पश्चात् शा हाथीचन्दजीका बनाया हुआ स्वागतसूचक एक तात्कालिक गुजराती गायन अनेक बालकोंने बडी मिष्टध्वनिसे सुनाया। उसका प्रारभ इस तरह था,

"सउ सभाजनो! उपकार आपणो!
पधारिने कृपाकरी, स्वधर्मि सज्जनो!"

इस गायनसे सभा एक आनन्द प्रवाहमें मग्न हो गई। इसप्रकार तीसरी बैठक समाप्त हुई।

चौथी बैठक—ता० २९ की रात्रि।

शास्त्रसभाके पश्चात् अनुमान ९ बजे सभाका प्रारंभ हुआ। इस बैठकमें सभापति साहब और

स्वागत कमेटीके चेअरमेन साहबकी ओरसे सभाके सहायकों, वालंटरियों, सहानुभूतिकर्ताओं, राज्य कर्मचारियों और सम्पूर्ण सभ्योंको धन्यवाद दिये गये। जिनके नाम पृथक् २ देनेकी आवश्यकता नहीं देखी जाती। अन्तमें पं० जवाहिरलालजी साहित्यशास्त्री और पंडित लालारामजीने शान्तिपाठ पढ़के निम्नलिखित आशीर्वादात्मक श्लोक कहके सभाकी समाप्ति की—

क्षेमं सर्वप्रजानां प्रभवतु बलवान्
धार्मिको भूमिपाल'।
काले काले च सम्यक् वर्षतु मघवा
व्याधियो यान्तु नाशम्॥
दुर्भिक्षं चौरीमारी क्षणमपि जगता
माम्मभूज्जीवलोके।
जैनेन्द्रं धर्मचक्रं प्रभवतु सततं
सर्वसौख्यप्रदायि॥

अवशिष्ट।

धर्मचरचा—प्रतिदिन सन्ध्याकालको घंटे डेढ घंटे शास्त्रसभा होती थी, जिसमें बडे २ गंभीर विषयोंपर वादविवाद होता था। बम्बई संस्कृत विद्यालयके सम्पूर्ण विद्यार्थी उपस्थित थे। पं० गोपालदासजी समय समय उनसे प्रश्न करके विवेचन करते थे। शास्त्रसभाके अतिरिक्त दूसरे समय भी शंका समाधान होते थे। पंडितजीकी आज्ञा थी, जिसे जिस विषय सम्बन्धी शंका हो, पूछके निर्णय कर ले। पंडितजीने एक दिन सम्यग्दर्शनके विषयमें एक अपूर्व ही सिद्धान्त सुनाया था, जिसे उपस्थित विद्वानोंने कभी किसीसे नहीं सुना था। उसके सुननेसे जो आनन्द हुआ, वह वचन अगोचर था।

रथयात्रा—ता० २८ के दोपहरको अनुमान दो बजे भगवान्की पालकी बडी धूमधामसे निकाली गई, जो समीपकी एक अमराईमें ठहराई गई। वहां बडे उत्साहसे पंचामृताभिषेक हुआ। कलशोंकी बोलीमें अनुमान दो हजार रुपये एकत्र हुए। यहां एक पद्धति बहुत बुरी देखी कि, अनेक लोग जो पालकीके साथ थे, विना स्नान किये ही भगवान्का स्पर्श करते थे। इस शिथिलाचारसे हमको दुःख हुआ।

स्त्रीसभा—ता० २९ की रात्रिको ८ बजे एक स्त्रियोंकी सभा हुई, जिसमें अनुमान २०० स्त्रियां उपस्थित थीं। शोलापुरके शेठ हीराचन्द नेमिचन्दजीकी पुत्री विदुषी कंकूबाईका एक उत्तम व्याख्यान हुआ। सभापतिका स्थान शोलापुरके शेठ रावजी नानचन्दजीकी सौभाग्यवती भार्या फूलबाईने ग्रहण किया था। लज्जाके मारे वेचारी व्याख्यात्रीके साथ साथ खडी रहीं, कुरसीपर नहीं बैठीं। व्याख्यात्रीके आग्रहसे एक दूसरी बाई कुछ कहनेको खडी हुई थी, परन्तु लज्जाने ऐसा दबाया कि, एक अक्षर भी मुंहसे न निकाला। आर्य स्त्रियोंका यह लज्जारूपी भूषण बडा ही प्यारा है।

पं० लालनका व्याख्यान—ता० २७ की रात्रिको शास्त्रसभाके पश्चात् श्वेताम्बरसमाजके प्रसिद्ध वक्ता पं० लालनका जो अमेरिका आदि देशोंमें घूमे हुए हैं, एकताके विषयमें एक सुन्दर व्याख्यान हुआ। आपकी व्याख्यानशक्ति बडी ही हृदयद्रावक है। व्याख्यानका सार यही था कि, हम सब (दिगम्बर श्वेताम्बर) एक वीर भगवान्के पुत्र हैं, इसलिये हमें एक होकर रहना चाहिये। इस सभामें सभापतिका आसन नागपुरके शेठ नेमीलालजीने ग्रहण किया था। अन्तमें सभापतिके नातेसे आपने जो थोडेसे शब्द कहे, वे बडे ही गंभीर और युक्तिपूर्ण थे। आपने कहा, पहले हमें अपनी एकता करनी चाहिये, फिर क्रमसे कुटुम्बकी, जातिकी, धर्मकी, धर्मभेदोंकी और अन्तमें समार भरकी एकताका (मुनि होकर) प्रयत्न करना चाहिये। परन्तु यह सब कार्य योग्यतासे सम्बन्ध रखते हैं अभी हमारा समाज इतना उन्नत नहीं हुआ है, जिसमें ऐसी बातें छेडी जावें।

औषधालय—वैद्यराज पं० कन्हैयालालजी अपने औषधालयसहित गजपथजी गये थे। वहां आपने ५–६ दिन जो आया सबको मुफ्त दवाइयां बांटीं, अनेक रोगियोंके डेरोंपर जा जाकर भी अपने इलाज किया। जो जिसने पूछा, उदारताके साथ बतलाया। आपके कारण किसी भी भाईको रोगसम्बन्धी कष्ट न सहना पडा।

नासिककी पांजरापोल—इस पांजरापोलके कार्यकर्ताओंने आकर सहायताके लिये प्रार्थना की थी, जिसमें अनुमान छह सौ रुपयाका चिट्ठा पांजरापोलके लिये हो गया। शेठ रावजी नानचन्दजी शोलापुरने २०१, राजा ज्ञानचन्दजीने १०१, और शेठ माणिकचन्दजीने १०१, दिया शेष चन्दा फुटकर वसूल हुआ।

नांदगांवकी पंचायतका मुकदमा—नांदगांवके एक भाई इस अपराधसे जातिच्युत थे, कि उनके पिताने कोई अन्याय किया था। ऐसी अवस्थामें पंचायतकी आज्ञासे पितासे सम्बन्ध नहीं रखना चाहिये था, परन्तु उन्होंने रक्खा था। ये ही उनका अपराध था। सभाके मुखियाओंकी कोशिससे इस मुकद्दमेका फैसला हो गया। अपराधी २०१ रु श्रीगजपथजीके मंदिरमें और ५०) प्रान्तिकसभाके भंडारमें देकर अपराध मुक्त हो गया।

भोज—पहले दिन शेठ रावजी नानचन्दकी और दूसरे तीसरे दिन शेठ कन्हैयालाल माणिकचंद कसारखेडा और शेठ चुन्नीलालजीकी ओरसे इस तरह तीन भोज हुए थे। पिछले दो सज्जनोंमेंसे पहलेने ७५, और दूसरेने ५१ रु० प्रान्तिक सभाके भंडारमें प्रदान किये।

अधिवेशनका खर्च—अबका अधिवेशन प्रान्तिक सभाने स्वयं अपने खर्चसे किया था। अभीतक सब हिसाब नहीं हुआ है, परन्तु अनुमान है कि, ७००—८०० रुपयेके करीब खर्च हुए होंगे। इस रिपोर्टके लिखनेमें विस्मृतिसे कुछ अशुद्धि रह गई हो, तो पाठकगण क्षमा करें।

बम्बई १–२–०७ } **नाथूराम प्रेमी।**

श्रीमती दि० जै० प्रान्तिक सभा बम्बईकी प्रबन्धकारिणीकमेटी।

कार्याध्यक्ष।

१ **सभापति**-शेठ माणिकचन्द हीराचन्दजी जे पी.
२ **उपसभापति**—राजा ज्ञानचन्दजी- सिकन्दराबाद और शेठ रामचन्द्र नाथाजी, शोलापुर।
३ **महामंत्री** पंडित गोपालदासजी बरैया आ०म०
४ **सहायकमंत्री**-बाबू फूलचन्दजी पाटणी-बम्बई।
५ **मंत्री विद्याविभाग**—पं० धन्नालालजी काशलीवाल-बम्बई।
६ **मंत्रीविद्यालय**—शा लल्लूभाई प्रेमानंदजी एल्. सी. ई बम्बई।
७ **मंत्री सरस्वतीभंडार**—पं० पन्नालालजी बाकलीवाल बम्बई।
८ **मंत्री उपदेशकभंडार**—जौहरी ठाकुरदास भगवानदास बम्बई।
९ **कोषाध्यक्ष**-शेठ गुरुमुखरायजी सुखानन्दजी बम्बई।
१० **मंत्री परिक्षालय**-शेठ रावजी सखारामजी शोलापुर बम्बई।
११ **उपमंत्री**—पं० पांडु गोपाल शास्त्री शोलापुर

सभ्यगण ।

१३ शेठ हीराचन्द नेमीचन्दजी शोलापुर ।
१४ वैद्यराज प० कन्हैयालालजी—बम्बई ।
१५ शेठ लालचंद कान्हदासजी—बडौदा ।
१६ पं० कल्लापा भरमापा निटवे—कोल्हापुर ।
१७ बाबू शीतलप्रसादजी लखनौवाले—बम्बई ।
१८ रा. रा. अण्णापा फडप्पापा चौगुले—बेलगाव।
१९ रा. रा. तवनप्पा पत्रावली—शाहपुर ।
२० शेठ जीवराजगौतम चन्दजी—शोलापुर ।
२१ शेठ पानाचन्द रामचन्दजी—शोलापुर ।
२२ शेठ पूरणलाल श्यामलालजी खामगाव ।
२३ शा हरजीवन रायचन्दजी—आमोद ।
२४ जौहरी चुन्नीलाल जवेरचन्दजी—बम्बई ।

स्वागत कमेटीके सभापति शेठ चुन्नीलाल झवेरचन्दजी जौहरीका व्याख्यान[1]।

प्यारे धर्म बन्धुओ ! हमारी श्रीमती दि० जै० प्रान्तिक सभाने इस अधिवेशनकी स्वागत कमेटीके सभापतिका काम जो मुझे सोपा है, उसके उपलक्ष्यमें मै इस सभाका उपकार मानता हू और अपने गृहसम्बन्धी अनेक कार्य छोडकर इस सभामडपमें पधारे हुए प्रतिनिधि और दर्शक महाशयोंको कोटिश धन्यवाद देता हू ।

अनादि कालसे जैसे तीर्थंकर और आचार्य महाराजकी सभाये सासारिक राजकीय और औद्योगिक उन्नति करनेके लिये होती है । उन्हींमे यह दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा एक है, जो दि० जैनियोंकी धार्मिक और सासारिक उन्नति करनेके लिये स्थापित हुई है । इसने आजतक जो जो अनेक श्रेष्ठ कार्य किये है, वे इस सभाके सभापति शेठ माणिकचन्द हीराचन्दजी जे पी और महामन्त्री पण्डित गोपालदासजी बरैयाके असीम उत्साह तथा परिश्रमसे हुए है । इस लिये यह सभा उनका आभार मानती है । इस सभाका प्रथम अधिवेशन आकलूज, दूसरा बम्बई, तीसरा शोलापुर, और चौथा इस पवित्र तीर्थक्षेत्रपर हुआ है, यह एक सौभाग्यकी बात है । उक्त कथनानुसार इस सभाका मुख्य हेतु धर्मकी प्रभावना तथा सामाजिक एकता बढानेका है, परन्तु इस समाजकी एकतासे हमे रणसग्राममे जाकर कुछ युद्ध नहीं करना है, किन्तु इस एकतासे अपने जैनी भाइयोका भला करना है, पवित्र जैनधर्मकी उन्नति करना है, शास्त्रज्ञानभण्डार, तीर्थक्षेत्रका रक्षण करना है । और इस धर्मके पवित्र नामके लिये अपना सद्वर्त्ताव और कार्य कर दिखाना है कि, जिससे इस भव और परभवमें अपना हित होकर मनुष्य जन्म मिलना सार्थक हो । मुझे आशा है कि, भारतवर्षके समस्त दि० जैनीभाई एकताके सूतमें बधकर अपना वर्त्ताव करेंगे, तो अनेक श्रेष्ठ कार्योंमें सफलता प्राप्त करेंगे, जिनसे हमको और हमारी सन्तानको एक उत्तम लाभ होगा ।

भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्रकमेटी ।

भारतवर्षके समस्त सिद्धक्षेत्र और अतिशय क्षेत्रोंकी सुव्यवस्था करनेके लिये एक भारतवर्षीय दिगम्बरजैन तीर्थक्षेत्रकमेटी नियत की गई है, जिसके प्रथम चारवर्षकी रिपोर्ट अभी प्रकाशित हो चुकी है । मुझे खेदके साथ कहना पडता है कि, कितने ही तीर्थक्षेत्रोंका प्रबन्ध बहुत बुरी दशामे है । उनके प्रबन्ध कर्त्ताओंके पास अनेक सूचना और फार्म भेजे गये, परन्तु उन महाशयोका कुछ भी उत्तर नहीं आया । ऐसे तीर्थक्षेत्रोंका प्रबन्ध शिखरजीकी तरह सुधारना चाहिये । कितनेक तीर्थक्षेत्र जैसे गजपथ, पावागढ, पालीताणा आदिका प्रबध अच्छा है, इस लिये उनके प्रबधकर्त्ता धन्यवादके पात्र है ।

जैनमन्दिरोंका महत्व और जीर्णोद्धारकी आवश्यकता ।

गृहस्थो ! अवणबेलगुळ, शत्रुजय, गजपथा, मूडबिद्री आदि पर्वतो और मन्दिरोंमे उकेरी हुई और स्थापन की हुई अनेक प्रतिमाये देखी जाती है, जिनसे जैनधर्मकी खूबी और जैनी भाइयोंकी धर्मप्रीति मालूम होती है । इन मन्दिरोंको देखकर पाश्चिमात्य शिल्पकार आश्चर्यके साथ जैनधर्मको अन्त करणसे मान देते है । ऐसे मन्दिरोंका मिलना एक बडे पुण्यका हेतु है । इसलिये हमको उनकी रक्षा करनेका, वहा धर्मशाला आदि बनानेका, योग्य प्रबन्धकर्त्ता रखने आदिका पूरा २ प्रबध करना चाहिये । श्रीमत् शुभचन्द्राचार्यने अपने ज्ञानार्णव ग्रन्थमें मन्दिरोंके जीर्णोद्धारकी महिमा बडी ही पुण्यवर्द्धिनी लिखी है ।

प्राचीन धर्मशास्त्रोंका महत्व ।

प्रिय गृहस्थो ! ईडर, जयपुर, पाटण आदि स्थानोंमें प्राचीन धर्मशास्त्रोंके अनेक भडार हैं । इन ग्रन्थोंके निर्मापक बडे बडे विद्वान् आचार्योंने अपनी अपूर्व दीर्घदृष्टि द्वारा जो परिश्रम किया है, उसको सफल करना और उन ग्रन्थोंका रहस्य जानना यह प्रत्येक जैनीका प्रथम कर्त्तव्य है । इस कार्यके सम्पादन करनेके लिये ऐसी पाठशालायें खोली गई हैं, जो उन ग्रन्थोंके पढने योग्य अनेक पंडित तयार करें । गृहस्थो ! आपको स्मरण है कि, इस सभाद्वारा बम्बईमें एक विद्यालय खोला गया है, जिसमेंसे लालाराम और वंशीधर तयार हुए है । ऐसी पाठशाला काशी, जयपुर, और सहारणपुरमे भी है । इन सबका पठनक्रम एक होना चाहिये । परीक्षाद्वारा इनका फल दिखानेके लिये एक परीक्षालय होना चाहिये । और इन सबकी देखरेखके लिये कई इन्स्पेक्टर होने चाहिये ।

धार्मिक और सामान्य विद्या ।

धार्मिक और सामान्य विद्या पढना मनुष्य मात्रका कर्तव्य है । प्राचीन समयमे विद्याभ्यासकी सामग्री कठिन थी । हजार वर्ष पहले इग्लंड बिलकुल अधकारमें था । सौ वर्ष पहले जापानकी भी यही हालत थी । उस समय भारत कच्चा सोना गिना जाता था । इसका व्यापार कला कौशल्यादिक सर्वोपरि गिने जाते थे । परन्तु आज भारत हीनदशामे है, यह अनेकता और अविद्याहीका फल है । विद्यासे जैसे पाश्चात्य लोगोंकी उन्नति हुई है, वैसे ही हमारी जातिकी भी हो सकती है । इस लिये प्रत्येक जैनीको धार्मिक शालाओंमे विद्याभ्यास करना अत्यावश्यक है । धार्मिक पाठशालाओंके लिये कुछ द्रव्यकी आवश्यकता है। जैनियोंमे बहुत द्रव्य है, उत्साह भी कम नहीं है । प्रतिवर्ष लाखो रुपये धर्म कार्योंमें खर्च होते है । परन्तु विद्याभ्यासकी आवश्यकतापर हमारा लक्ष्य नहीं है, इस लिये औद्योगिक और धार्मिकविद्याकी पढानेके लिये जैनियोंको अवश्य प्रयत्न करना चाहिये ।

ऊपर जो विद्याका इशारा किया गया है, वह पुरुष और स्त्री दोनोंके लिये लागू है । घररूपी राज्य करनेके लिये पढी लिखी स्त्रीकी अत्यावश्यकता है । तथा बालकोंको अच्छे साचेमें ढालनेके लिये पढी लिखी माता ही कारण है । विद्या जितनी पुरुषोंको उपयोगी है, उतनी ही स्त्रियोंको है । इस विषयमे महाराज बडौदाने प्रजाका बहुत उपकार किया है । अत उनको अन्त करणसे धन्यवाद है ।

---

[1] यह व्याख्यान मराठी और गुजराती भाषामे छाप कर वितरण किया गया था, हम उसका साराश मात्र यहा देते है ।

व्यापारी विद्याकी आवश्यकता।

भाइयो! वर्त्तमानमें व्यापारकी स्थिति बडी हीन अवस्थामें है। करोडों लाखों रुपया प्रतिवर्ष परदेशमें जा रहा है। रहे सहेपर दुष्काल और प्लेग सवार है। इसलिये धनिक महाशयोंको उचित है कि, वे बड़े बडे कारखाने खोलकर गरीब जैनी भाइयोंको आश्रय दें। तथा औद्योगिक शालायें खोलकर उद्योग सिखावें। और बडी २ स्कालर्शिपें देकर अपनी जातिके नवयुवकोंको जापानादि देशोंमें व्यापारी शिक्षाके लिये भेजें, उनसे देशका बहुत कल्याण होगा। जैनियोंमें अधिकाश व्यापारी वर्ग है। इसलिये व्यापारकी उन्नति करना और प्रत्येक जैनीको व्यापारमें लगाना जैनियोंका प्रथम कर्त्तव्य है। गरीब भाइयोंको सहारा देनेसे अन्नदानका फल होता है।

कुरीतिनिवारण।

सामाजिक रीतिया सुधारना भी जैनियोंका कर्त्तव्य है। बालविवाह कन्याविक्रय आदि ऐसी रीतिया कहीं कहींपर देखी जाती हैं, जिनसे शारीरिक मानसिकशक्ति घटती जाती है, तथा अनीति फैलती जाती है। हमारी उत्तम समाजमें ऐसी बुरी रीतिया अवश्य बद होनी चाहिये।

संस्कारविधि।

प्रत्येक जैन गृहस्थको उचित है कि, वह अपना तथा सतानका विवाह जैनविधिके अनुसार करके आचार्योंका परिश्रम सफल करे। तथा प्रत्येकको गर्भाधानादि सस्कार भी करने आवश्यक है।

उपदेशकोंकी आवश्यकता।

एक बात यह भी कहना है कि, हमको प्रतिवर्ष तीन चार नाना विषयोंपर विचार करके चुप नहीं बैठ रहना चाहिये। किन्तु उन कार्योंको अमलमे लाना चाहिये। अपने समाजके कल्याणके लिये धर्मप्रभावना करनेके लिये प्रत्येक जिलेमें उसी जिलेकी भाषा जाननेवाला एक अच्छा उपदेशक अवश्य होना चाहिये कि, जिससे हमको धार्मिक और व्यावहारिक नीतिका बोध हो और अज्ञानाधकार दूर हो।

अन्तमें मेरा यही निवेदन है, यह स्थान बम्बईसे दूर होनेके कारण इस जलसेके प्रबधमे जो कुछ कमी रह गई हो, वह क्षमा करें। और "**फूल नहीं फूलकी पांखडी ही सही**" की कहावतको चरितार्थ करें। इसके प्रबंधमें जिन महाशयोंने सहायता दी है, उनका मैं बहुत २ उपकार मानता हू। अन्तमें सभापतिके चुननेके लिये निवेदन करता हुआ मैं अपने स्थानपर बैठनेकी आज्ञा लेता हूं।

पुस्तकसमालोचन।

जीवदया—खडवानिवासी बाबू माणिक्यचन्द्र जैन बी ए. लिखित। स्वदेशोपकारक कार्यालय-खडवासे प्राप्य मूल्य ६ आना। यह पुस्तक अमेरिकाके अहिंसाप्रचारक मि० राल्फवाल्डो ट्राइनकी Every Living creature नामक पुस्तकके आधारसे भारतवर्षकी चालढालके अनुसार स्वतत्ररीतिसे लिखी गई है। पुस्तकका विषय नामहीसे प्रगट है। सर्व साधारण लोगोंमें ऐसी पुस्तकोंके प्रचारसे जीवदयाकी रुचि बढ़ सकती है। तौ भी भारतवर्षके लोगोंके लिये यह पुस्तक उतनी उपयोगी नहीं है, जितनी यूरोप तथा अमेरिकावालोंके लिये है। क्योंकि भारतवर्षके प्रौढ धर्मोंमें जीवदयाका जैसा सूक्ष्म विचार किया गया है, उसका एक अश भी इसमें नहीं है। यदि यहाके पढे लिखे सभ्य अपनी धर्म पुस्तकोंको श्रद्धाके साथ पढे, तो उन्हें अमेरिकावासियोंसे जीवदयाकी शिक्षा लेनेकी आवश्यकता नहीं है। ग्रन्थकर्ताने जिस स्वतत्रतासे अनुवाद किया है, उस स्वतत्रतासे यदि वह चाहता, तो अपने धर्मसे विरुद्ध बातोंको निकल सकता था और स्थान २ पर अहिंसाके सूक्ष्मतत्व भी प्रगट कर सकता था। परन्तु खेद है कि, इस बात पर ध्यान नहीं दिया गया।

"जो हम सबका पिता है, वही उनका भी पिता है। उसने ससारमें विना प्रयोजन किसी भी पशुका निर्माण नहीं किया है।" "इसी प्रकार उन्नति करती हुई आत्मा अन्तमे अपने कारणरूप परमात्मामें मिल जावेगी" आदि वाक्य हमारे हृदयमे बहुत खटकते है। ग्रन्थकर्त्तामें यदि कुछ धर्मविद्या होती, तो वह इन्हें अपने सिद्धान्तके अनुकूल और दूसरोंके अविरुद्ध लिखकर प्रशसा प्राप्त कर सकता था। पुस्तककी भाषा सरल, प्राय शुद्ध और असरकारक है। इस पुस्तकको यूरोप अमेरिकाके राक्षसी कृत्य जाननेके लिये अवश्य पढना चाहिये। "अमेरिकाके चिकागोके कसाइखानोंमें अठारह हजार मनुष्य काम करते हैं, और उनमें प्रतिवर्ष ८० लाख जीवोंके प्यारे प्राण लिये जाते हैं, जिनमें १४ लाख ३७ हजार ८४४ गायें भी शामिल हैं।" "लन्दनके एक नीलाम घरमें केवल एक दिनमे छह लाख पक्षियोंका चमडा बेचा गया था" सभ्य कहलानेवाले इन नरपिशाचोंकी ऐसी बधलीला पढ़कर हृदय कांप उठता है। बालकोंको दयावान् बनानेके लिये इस पुस्तकके प्रारंभिक दो पाठ अच्छे हैं। सामान्यत पुस्तक अच्छी और सग्रह करने योग्य है। इस पुस्तकके देखनेसे विशेष हर्ष हमको इस बातका हुआ कि, अब हमारे ग्रेज्युएट महाशयोंको भी हिन्दीमे पुस्तक लिखनेका शौक बढने लगा है।

वर्तमानभारत अर्थात ब्रिटिश शासनाधीन भारतकी दशा—श्री नित्यानन्द मिश्र (कलकत्ता नं० ६ लुक्स लेन) विरचित और प्रकाशित। मूल्य ८ आना मात्र। पुस्तक राजकीयविषयकी है। इसे पढते पढते हमको कई वार रो आया। कुबेर कहलानेवाले भारतवर्षकी वर्तमान दशा बडी हृदयविदारक है। अग्रेजोंने हमारे देशको किस प्रकार दाने दानेको कर दिया, स्वार्थान्ध होकर अग्रेज व्यापारियोंने हमारे शिल्पवाणिज्यपर कैसा पानी फेरा, जमीनका कर किस निर्दयतासे बढाया गया, प्रतिवर्ष दुर्भिक्ष क्यों पडते हैं, प्लेग, महामारी, ज्वर आदि रोगोंकी अधिकता यहांपर क्यों हो रही है, आदि बातें जानना हो, तो इस पुस्तकको अवश्य पढना चाहिये। सर्व साधारणमें ऐसी पुस्तकोंके प्रचारकी बडी भारी आवश्यकता है। यह बात सबको ही जाननी चाहिये कि, हमारे देशकी दश करोड प्रजा केवल एक वक्त अन्न खाकर दिन काटती है। हमारे देशभाइयोंकी वार्षिक आमदनीकी औसत १३) मात्र है, अर्थात यहाका एक आदमी २ पैसे रोजमें अपना उदरनिर्वाह करता है। जब कि इग्लेंडवासियोंकी वार्षिक आमदनी ४९ पौंड (१५ रुपयेका एक पौंड) है!! सरकारी टैक्स और व्यापारादिमें सब मिलाकर प्रतिवर्ष ५ अरब (पाच सौ करोड) रुपया विलायतको जाता है!!! पुस्तककी भाषा सामान्यत अच्छी है। कहीं २ बंगालीपन झलकता है। देशके लिये इस परिश्रमके करनेके उपलक्ष्यमें ग्रन्थकर्त्ताको हम धन्यवाद देते है।

ज्ञानवर्द्धकडायरी—खंडवाके स्वदेशोपकारक कार्यालय द्वारा प्रकाशित। मूल्य ।) आना। गत वर्षसे अबकी वारकी डायरी अच्छी बनी है। अनेक उपयोगी विषयोंके साथ २ खडवाके शेठ केशवसाका चरित्र और चित्र भी दिया गया है। जैनियोंको

यह डायरी अवश्य रखनी चाहिये। उक्त कार्यालय-की।=) की नीली काली स्याही लेनेवालोंको डायरी मुफ्तमें मिलती है।

दिगम्बरजैन पाठशाला आलन्दकी रिपोर्ट—पाठशालाके प्रारंभमे गत दिवालीतक ९ वर्षका विवरण इसमें सक्षेपरूपमे दिया गया है। पाठशालामे ४०-५० बालक पढते हैं। चौदह पन्द्रह हजार रुपयेका फंड है। कार्य सतोषजनक है। प्रबन्धकर्त्ता चाहे, तो इतनी बडी रकमसे एक उच्च श्रेणीकी पाठशाला चला सकते हैं। प्रवेशिकाके कुछ खडोंकी पढाईकी व्यवस्था करनी चाहिये।

खंडेलवालवंशावली—पं० रामजीलाल-शर्मा महोपदेशक भारतधर्ममहामंडल सगृहीत, पं० रामजीदास जोशी द्वारा प्रकाशित। मूल्य मालूम नहीं। इस पुस्तकमें स्कदपुराण, भागवत महाभारतादि ग्रन्थोंके आधारसे खडेलवाल ब्राह्मण और वैश्योंकी उत्पत्ति बतलाई है। परशुरामजीने जब इक्कीस बार पृथ्वी निःक्षत्रिय करनेका प्रायश्चित करनेके लिये यज्ञ किया था, तब ऋत्विजोंके लिये भूमि और ४० हाथ लम्बी ४० हाथ चौडी ३६ हाथ ऊची सोनेकी वेदी महात्मा कश्यपजीको दी थी। उस वेदीको कश्यपजीकी आज्ञासे ब्राह्मणोने ९० हिस्से करके बाट ली। जिन लोगोंने बाटी, वे लोग (खाण्डवायन) खडेलवाल नामसे विख्यात हुए। पश्चात् उक्त ब्राह्मणोसे एक वैश्यने उक्त वेदीकी टुकडे खरीद लिये, इससे वह खंडेलवाल वैश्य कहलाया। पश्चात वेदीके बाटनेवाले ९० ब्राह्मणोंके उनके कर्मके अनुसार गोत्र पड गये। जो गोका छाछ अधिक पीता था, वह 'गोरसिया' कहलाया, जो यज्ञके समय झुन झुन नाद करता था, वह "झुनझोटा" कहलाया। इत्यादि। बस, यही उत्पत्तिका सार है। इसमे सत्यका तत्त्व कितना है, सो पाठक स्वय निर्णय कर सकते है। पुराणोंमे ऐसी ऐसी विलक्षण कथाये लिखकर सब ही जातियोंकी उत्पत्ति लिख डाली गई है।

स्वदेशहितोपदेश—पं० मन्नीलाल मिश्र रचित। स्वदेश वस्तुप्रचारिणी सभा कानपुर द्वारा प्राप्य। मूल्य आध आना। इस पुस्तकमे दो तीन लावनी लिखकर लोगोंका चित्त स्वदेशसेवाकी ओर आकर्षित करनेका प्रयत्न किया गया है। सबको मगाकर पढना चाहिये।

चिट्ठीपत्री।

भूल।

श्रीजिनविजयके पाचवे वर्षके १० वें अकमें **विधवा पुनर्विवाह** सम्बन्धी एक छोटासा लेख है। वह लेख मेरा लिखा हुआ होगा, ऐसा अनेक लोग समझते होंगे, परन्तु मै स्पष्टतासे कहता हूं, कि वह लेख मेरा नहीं है। सम्पादकीय टिप्पणियोंमें मेरा लेख आनेका सम्बन्ध भी नहीं है। विजयमे जितने लेख मेरे छपते है उन सबमें मेरी सही रहती है इसलिये उक्त लेख या तो श्रीयुत अण्णा साहेब लट्ठे एम ए का होगा, अथवा बाबगोडा अण्णा पाटीलका होगा। मैं आशा करता हू, उक्त लेखके लेखक अपना नाम प्रकाशित करनेमें भयभीत न होगे और आयदा जिनविजयके मुखपत्रपर सम्पादकका नाम प्रकाशित होता रहेगा, जिससे फिर कभी ऐसा गोलमाल न हो।

हीराबाग
१४-१-०७ } माणिकचन्द रावजी दोर्से।

हिंसानिषेधक हाकिमकी मृत्यु।

यहा सुमारी ग्राममे दशहरेको भैसे बकरे मारे जाते थे। इस बातको हम देख नहीं सकते थे, परन्तु एक ही घर रोडमल सूरजमलजीका होनेसे निर्बलताके कारण असमर्थ थे। तथापि श्री जिनेन्द्र कथित पुण्यके प्रसादसे उद्यम किया, तो सरकार द्वारा उक्त वधकर्म उठा दिया गया। अब उक्त दशदिनोंमे न तो कोई पशु बेचने पावेगा, और न कोई बध करने पावेगा। इस दयाधर्मके रक्षक जो विष्णुपन्तजी थानेदार साहब थे, खेद है कि, वे माघ वदी १को स्वर्ग पधार गये। उनकी मृत्युका हमको शोक है।

नसलपुर—माघ वदी १२ } मुन्नालाल जैन।

विविध समाचार।

ता० २६ जनवरीको बबईके प्रसिद्ध जौहरी जीवनचन्दजी धरमचन्दजी इजिप्त नामके स्टीमरसे सवार होकर यूरोपकी यात्राके लिये निकले हैं। आप श्वेताम्बर जैनी है। श्वेताम्बरीय समाजमे अनेक लोग इसके पहले विलायत यात्रा कर चुके है। चीन, जापान ईराण, पेरिस आदि अनेक स्थानोंमे श्वेताम्बरी भाईयोंकी दूकाने है।

बरीसालके नाई विदेशी वस्तुए बेचनेवालोंकी हजामत नहीं बनाते है। ब्राह्मणोंने धार्मिक क्रिया कराना भी छोड दी है।

दक्षिण मालवामें स्वदेशीआन्दोलन सम्बन्धी व्याख्यान देते हुए बाबू श्रीचद्रचक्रवर्तीका प्राणात हो गया। कहते हैं, इस व्याख्यानमे उन्हे इतना जोश आया कि, प्राण चले गये।

बम्बईके शेठ हीराचन्दगुमानजी जैनबोर्डिंग स्कूलके विद्यार्थियोंकी परीक्षाका परिणाम इस वर्ष बहुत उत्तम रहा। मेडिकल कालेजके दूसरे खडमें ३में ३, पहले खडमें १ में ०, दूसरी एल. एल. बी. मे २ मे २ पहली एल. एल. बी में ३ में २, इंटर मीडियटमें २ में २, प्रीवियसमें ३ मे २ मैट्रिकमें २ में २ कोमर्शियलमें १ मे १ कसरत शालामें २ में २ इस तरह २० विद्यार्थियोंमें १६ पास हुए है। इनमें केवल इटरमीडियटका **एक विद्यार्थी दिगम्बरी है, शेष** सब श्वेताम्बरी!

ता० २६ जनवरी बरीसालमें स्वदेशी आन्दोलनकी एक बडी भारी सभा हुई थी। श्रीअश्विनीकुमारदत्तके व्याख्यानका इतना असर हुआ कि, सभामें जितने धोबी उपस्थित थे, उन्होंने उसी समय प्रतिज्ञा की कि, हम सब लोग विदेशीमाल बेचनेवाले व्यापारियोंके और विदेशी मालको उपभोगमें लानेवाले ग्राहकोंके कपडे नहीं धोवेंगे।

ता० २१ जनवरीको इलाहाबादकी जमींदार सभामें वहाके लफटंट गवर्नर सर जान हेवेट साहबने कहा कि, "जिस दिन एक टन भी विदेशी शक्कर यहा नहीं बिकेगी, उस दिन मुझसे अधिक आनन्द और किसीको नहीं होगा।" इससे समझ लीजिये, प्रतिष्ठित अग्रेजोंका स्वदेशी आन्दोलनके विषय क्या मत है।

अलाहाबादसे आनरेबल पडित मदनमोहन मालवीय इस मगलवारसे एक **अभ्युदय** नामका साप्ताहिक पत्र हिन्दी भाषामें निकालनेवाले थे। एक दूसरा **हिन्दीकेसरी** पत्र पं० माधवराव सप्रे बी ए के उद्योगसे नागपुरसे शीघ्र निकलनेवाला है। हिन्दीके लिये आनन्दका विषय है।

दक्षिण हैद्राबादमें ता. २१ जनवरीको श्रीराममूर्ति पहलवानने अपनी कृतिसे लोगोंको आश्चर्यचकित कर दिया। आपने ३८०० पौंड वजनका पत्थर छातीपर रखके दिखलाया तथा दो गाडियोंमे आदमी बैठाकर उन्हे अपनी छाती और स्कधोंपरसे निकाल दिया।

ललितपुर स्टेशनसे ११ मील आगे बिरदा ग्राममे एक बिम्बप्रतिष्ठा (गजरथ) होनेवाली है। पं० नरसिंहदासजी अजमेरवाले प्रतिष्ठाचार्य है। दशहजारसे अधिक समूह एकत्र होनेकी सभावना है। सबको जाना चाहिये।

जगत्प्रसिद्ध शतावधानी प्रोफेसर वेमूरी श्रीगशास्त्री अपने शतावधानका प्रयोग हैदराबाद दरबारको दिखला रहे है।

जैनियोंका प्रसिद्ध अलकारका ग्रन्थ **अलंकारचिंतामणि** शेठ रावजी सखाराम शोलापुरवालोंकी ओरसे कोल्हापुरमे छप रहा है। इसी प्रकार बम्बई निर्णयसागरके मालिक हमारे प्रसिद्ध काव्य **पार्श्वाभ्युदय**को छपानेका प्रयत्न कर रहे है।

मूडबिद्रीके पूज्य भट्टारक श्रीचारुकीर्तिजी पट्टाचार्य आजकल बम्बईमें आये हुए है। आप अच्छे विद्वान् और सज्जन साधु है।

Registered No. B. 288.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रां०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा मास्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मैनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जवाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
हीराबाग-पो० गिरगांव-बम्बई।

जैनमित्र

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतज्जिनानुवन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते॥

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र। | प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

वर्ष ८ वां] फाल्गुन शुक्ला २ संवत् १९६३ विक्रमाब्द। ता० १४ फरवरी सन् १९०७ ईस्वी। [अंक ९ वां।

जैनमित्रके फाइल।

सप्तम वर्षके थोडेसे फाइल हमारे पास मौजूद हैं। हम उन्हें जल्दी बेचना चाहते हैं, इस लिये इस समय बहुत थोडी कीमतमें ग्राहकोंको मिल जावेंगे। देर करनेसे दूनी कीमतमें भी नहीं मिल सकेंगे। जैनमित्रके सप्तमवर्षमें कैसे २ बढिया लेख छपे हैं, सो किसीसे भी छुपे नहीं हैं। हिन्दीके किसी भी जैनपत्रमें आज तक ऐसे बढिया संग्रह करने लायक लेख नहीं छपे हैं। समाचार और थोडेसे समाज सम्बन्धी लेखोंके सिवाय बाकी सब ही लेख हमेशा पढने योग्य और कामके हैं। इसके सिवाय जैनसिद्धान्तके १० फार्म और सुशीला उपन्यासका पूर्वार्द्ध (१० फार्म) भी उसके साथ मिलता है, जिन दोनोंकी कीमत पृथक् छपने पर कमसे कम १।) रु० होगी। ऐसे उत्तम फाइलको अप्रैल महीनेके अखीर तक हम सिर्फ २।।) में ही देना चाहते हैं, जिल्द सहित मंगानेवालेको ३।।।) लेंगे और भी सुभीता यह है कि, डांकखर्च हम अपना लगा देंगे।

सुशीला उपन्यास
प्रथमभाग।

रायलके बडे ४ अस्सी पेजोंका बहुत बढियां उपन्यास जिससे कि मनोविनोदके सिवाय धार्मिक शिक्षायें भी मिलती है, तयार है। एक बार पढना शुरू करनेसे फिर छोडनेको जी नहीं चाहता है, मूल्य सर्व साधारणसे दश आना जैनमित्रके ग्राहकोंसे आठ आना। डाक खर्च माफ।

मैनेजर—जैनमित्र
पो० गिरगांव-बम्बई

दो नवीन पुस्तकें।
जैनपदसंग्रह प्रथमभाग।

कविवर दौलतरामजीके पदोंकी प्रशंसा करनेकी जरूरत नहीं है। सबही बालगोपाल उनके भजनोंके प्यासे रहते हैं। उनके एकही पदके पाठसे चित्त सब दुःख भूलकर आनन्दसागरमें गोते लगाने लगता है। प्रत्येक जैनीके घरमें यह पुस्तक रहना चाहिये। पहली बार दौलतविलासके नामसे हमने यह संग्रह छपवाया था, जो हाथोंहाथ उठ गया। अबकी बार छहढाला निकालकर जैन पदसंग्रहके नामसे निर्णयसागरके जगत्प्रसिद्ध टाइपमें छपवाया है। मूल्य भी पहलेकी अपेक्षा कम अर्थात् सिर्फ छह आना रक्खा है। अबकी बार प्रत्येक कठिन शब्दपर टिप्पणी दी गई है और बहुतसे नवीनपद भी संग्रह किये हैं।

जैनबालबोधक द्वितीयभाग।

जिसकी लोगोंको वर्षोंसे चाह थी। जैन पाठशालाओंके अध्यापकोंने जिसके विषयमें लिख लिखकर हमको तंग कर डाला, जिसके बिना जैन पाठशालाओंके क्रमकी पढाई नहीं हो सकती थी, वह जैनबालबोधकका दूसरा भाग तयार हो गया। पुस्तक कैसी बनी है, इसकी प्रशंसाकी जरूरत नहीं है। जैनियोंके प्रसिद्ध जैनमित्रके सम्पादकने इसकी प्रशंसाकी है। प्रत्येक जैनी बालकको तो यह पुस्तक पढना ही चाहिये, किन्तु प्रौढ पुरुषोंको भी इसके पढनेसे लाभ होगा। निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई देखने योग्य है। मूल्य आठ आना पोष्टेज अलग।

मगानेका पता—पन्नालाल जैन—
गिरगांव—बम्बई।

जरूरी नोटिस।

१ श्रीमती दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बईका दफ्तर मोरेनासे उठकर अब बम्बईमें आ गया है। बाबू फूलचन्दजी पाटणी इस सभाके सहायक महामंत्री (ज्वाईंट जनरल सेक्रेटरी) नियत हुए हैं। उन्हींकी देखरेखमें दफ्तरका कार्य होगा। इस लिये सभा सम्बन्धी सब प्रकारके पत्र व्यवहार इस पतेसे करना चाहिये:—

बाबू फूलचन्दजी पाटणी।
सहायक महामंत्री दि० जै० प्रान्तिक सभा
हीराबाग पोष्ट गिरगांव—बम्बई।

२इसी प्रकार जैनमित्रका आफिस भी मोरेनासे उठकर बम्बई आ गया है, इस लिये तत्सम्बन्धी समस्त पत्रव्यवहार भी आयन्दा नीचे लिखे पतेसे करना चाहिये।

मैनेजर जैनमित्र—हीराबाग
पोष्ट गिरगांव—बम्बई।

देशी— स्वदेशी मालको उत्तेजन दीजिये !

मद्यमांसमधुत्यागैः सहोदुम्बरपञ्चकैः ॥
अष्टौ मूलगुणानाहुर्गृहिणां श्रमणोत्तमाः ॥ १ ॥

ग्राहक गण ! उपर्युक्त श्लोकपर विचार करके सशास्त्र औषधिसेवन कीजिये !

और

इसीलिये सन् १८९९ से इस कंपनीके द्वारा सशास्त्र तयार होता हुआ

तथा

हजारों सर्टिफिकिट, पाया हुआ

वज्रांग भैरव।

अर्थात्

बल, आरोग्य, पुष्टि और कान्ति बढ़ानेवाला पाक

मगाइये।

कोकण प्रान्तकी अनेक वनस्पतियोंके अर्ककी पुटें देकर और स्वदेशी शक्करका मिश्रण करके यह वज्रांगभैरव तयार किया गया है। यह भैरव महौषधि होकर भी अत्यन्त स्वादिष्ट है। इसके खानेसे वात, पित्त और कफ इन त्रिदोषोंके मिश्रणसे होनेवाले सम्पूर्ण रोग जो कि, आगे लिखे गये है, नष्ट होकर मनुष्योंका कल्याण होता है।

इसके सेवनसे नपुंसकत्व, स्वप्नजन्य व इतर धातुपात, उष्णता, इन्द्रियशैथिल्य, कडकी, गर्भसम्बन्धी उत्पन्न हुए विकार, मूत्रकृच्छ, धातुदौर्बल्य, स्त्रियोंका प्रदर, हृदयसम्बन्धी रोग, हाथपांव व नेत्रादिकोंमें दाहका होना, क्षय, पाडुरोग, (मुलाची खर), जीर्णज्वर, अग्निमांद्य, बवासीर, बातरोग, निद्रानाश, पित्तविकार, प्रसूतिरोगादि अनेक विकार दूर होकर शरीर निरोगी, मजबूत और सतेज होता है। पाचनशक्ति व स्मरणशक्ति खूब बढ़कर तथा धातु व रक्तकी वृद्धि होकर स्तमन होने लगता है। शक्तिको उत्पन्न करके उत्साहकी वृद्धि करता है। दूध व भारी अन्न अच्छी तरहसे पचने लगता है। इस औषधिका गुण एक सप्ताहके सेवनसे जान पड़ता है।

यदि नवीन रोग होगा, तो १४ दिवसकी खुराकवाले एक डिब्बेके सेवनसे गुण मालूम होने लगेगा, परन्तु यदि पुराना रोग होगा तो ३९ रोजके सेवनसे फायदा होगा। चौदा दिनके खाने योग्य एक डिब्बेका मूल्य दो रुपया। एकद्दा साढेचार रुपयाका भैरव लेनेवालेको ३९ दिनके खानेयोग्य डिब्बा दिया जावेगा। अर्थात् ९) का भैरव ४॥) में दिया जावेगा। जिन्हें नमूनेके लिये मंगाना हो, वे १।) का म० आ० करके भेज दें, चौदह दिनका आधा डब्बा पेड पोष्ट करके भेज दिया जावेगा। पत्र पहुचते ही व्ही० पी० के द्वारा भैरव भेजा जावेगा। डाक व पेकिंगका खर्च ग्राहकके जिम्मे होगा। चिट्ठी स्पष्ट बालबोध अक्षरोंमें आना चाहिये। अनुपानपत्र डिब्बेके साथ भेजा जावेगा।

मिलनेका पता

एल. के. आर. श्रीमदर्हत्प्रासादिक कम्पनी,

पो० निपाणी, जिला बेलगांव.

बंबईके छपे शुद्ध जैनग्रंथ।

पच्चीस रुपयेसे कम लेनेवालेको कमीशन नहीं मिलता किन्तु * ऐसे फूलवाली पुस्तकें पांचके मूल्यमें ६ भेजी जाती हैं।

*शाकटायनव्याकरण प्रक्रियासंग्रह मूल सूत्रपाठ सहित प्राचीन जैन व्याकरण	३।)
*तत्त्वार्थसूत्र मूल बम्बईका छपा हुआ शुद्ध पाठ	≠)
*पञ्चाध्यायी संस्कृत जैन सिद्धान्तका अलभ्य ग्रंथ	॥)
न्यायदीपिका मूल संस्कृत	॥।)
*परीक्षामुख प्रमेयरत्नमाला टीका संस्कृत ...	॥)
*कातन्त्ररूपमाला व्याकरण संस्कृत .	१)
सर्वार्थसिद्धि पूज्यपादस्वामिकृत संस्कृत ...	२॥)
सुभाषितरत्नसंदोह—अमितगत्याचार्यविरचित संस्कृत	॥।)
जैननित्यपाठसंग्रह १६ पाठोंका रेशमी गुटका संस्कृत	।≈)
सनातनजैनग्रन्थमाला प्रथमगुच्छक—(१४ ग्रंथ संस्कृत)	१)
दौलतविलास (जैनपदसंग्रह) छप गया बहुत सुन्दर	।≠)
बनारसीविलास व बनारसीदासजीका जीवनचरित्र	१॥)
ब्रह्मविलास (भगवतीविलास) ...	१॥)
जैनविवाहपद्धति भाषाटीकासहित	॥।)
तत्त्वार्थसूत्र—अन्वयार्थसह नई तर्ज (छपता है)	॥।)
*उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला हिंदी और मराठी अर्थसहित	।≈)
*द्रव्यसंग्रह मूल, छाया, अन्वय, हिंदी मराठी अर्थसह	।-)
*रत्नकरण्डश्रावकाचार अन्वयार्थसहित—फिरसे छपा	।)
धनंजयनाममाला संस्कृतका जैनकोष भाषाटीकासहित	।)
जैनधर्मामृतसार दूसरा भाग हिंदी और मराठी अर्थसहित	१)
सप्तभंगितरंगिणी भाषाटीकासहित	१)
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय नाथूराम प्रेमी देवरी निवासी कृत अन्वयार्थ और भाषाटीकासहित ...	१।)
पंचास्तिकाय संस्कृतछाया, अन्वय तथा संस्कृतटीका और भाषाटीकासहित...	१॥)
अंजनासुंदरी नाटक—बहुत बढिया	॥)
*सुकुमाल उपन्यास—बाबू जैनेन्द्रकिशोरजीकृत	।≈)
सुशीला उपन्यास ...	॥≠)
*जैनबालबोधक प्रथमभाग पन्नालालकृत ...	।)
*जैनबालबोधक पूर्वार्ध ,,	-॥)
*जैनबालबोधक दूसरा भाग ,, छपगया	॥)
*हिंदीकी पहिली पुस्तक ,,	≠॥)
*हिंदीकी दूसरी पुस्तक ,,	।)
*हिंदीकी तीसरी पुस्तक ,,	।-)
*जैनस्त्रीशिक्षाप्रथमभाग ,,	≠)
*स्त्रीशिक्षा दूसरा भाग ,,	≡)
*नारीधर्मप्रकाश ,,	≡)
*कातन्त्रपंचसन्धि भाषाटीकासहित ,,	≈)
*बालबोधव्याकरण प्रथमभाग संस्कृतका हिंदीमें	।-
*बालबोधव्याकरण दूसराभाग छपगया	।-)
*दंपतिसुखसाधन प्रथमभाग	≠)
चौवीसठाणाकी चर्चा नयी छपी	।-)
*निर्वाणकांड मूल भाषा और महावीरस्वामीकी पूजा	)॥
*सहस्रनाम भाषा बनारसीदासकृत... ..	-)
*इष्टछत्तीसी बम्बईकी छपी सार्थ	)॥
*दर्शनपाठ संस्कृत, दौलतदर्शन व बुधजनकृतस्तुति	-)
*छहढाला दौलतरामजीकृत बम्बईका छपा	-)
*भक्तामरस्तोत्र संस्कृत और भाषा बम्बईका छपा	-)॥
*पंचमंगल रूपचंदजीकृत बम्बईका छपा असलीशुद्धपाठ	-)

मिलनेका पता—

पन्नालाल जैन पो. गिरगांव-बम्बई।

जैनमित्र.

फाल्गुनशुक्ला २ श्रीवीरनि० संवत् २४३३
ता० १४ फरवरी सन् १९०७ ईस्वी ।

सम्पादकीय टिप्पणियां ।

श्रीमती स्याद्वाद-पाठशाला काशी और जैनग्रन्थ ।

कुछ दिन पहले सुना गया था कि, जैनमित्रके लेखोंकी प्रेरणासे श्रीस्याद्वाद-पाठशाला काशीमें जैनग्रन्थोंकी पढ़ाई होने लगी है। और अनेक विद्यार्थियोंने प्रतिज्ञा की है कि, हम जैनग्रन्थोंके अतिरिक्त दूसरे ग्रन्थ नहीं पढ़ेंगे। इससे हमको बहुत कुछ संतोष हुआ था और विश्वास हुआ था कि, स्याद्वादग्रन्थोंके पठनपाठनसे यह पाठशाला अपने नामको सार्थक बनाये रक्खेगी। बाबू देवकुमारजी जैसे धर्मात्मा सज्जनोंके प्रबन्धमें हमको आगामी भी यही आशा है। परन्तु हाल ही एक विश्वस्त मार्गसे यह सुनकर हमको दु:ख हुआ है, कि, वहांपर क्वीन्सकालेजकी परीक्षामें जो ग्रन्थ भरती हैं, वे ही पढाये जाते हैं। एक दो विद्यार्थी नाम मात्रको प्रमेयकमलमार्तंड व जैनेन्द्र पढ़ रहे हैं। स्याद्वादपाठशालासे जैनियोंको अपनी धर्मविद्याके उद्धारकी बहुत बड़ी आशा है। लोगोंका उसकी ओर बहुत कुछ ध्यान आकर्षित हुआ है। यदि लोगोंकी श्रद्धा बढानेका प्रयत्न होता रहा, तो हमको विश्वास है कि, उसकी आर्थिक अवस्था भी शीघ्र अच्छी हो जावेगी। ऐसे समयमें धर्मग्रन्थोंके पठनपाठनकी अवहेलना करना पाठशालाकी जड़में कुल्हाड़ी मारना है। वैदिक धर्मानुयायियोंकी विद्यापीठ काशीमें जैनधर्मकी प्रभावना तब ही हो सकेगी, जब वहां जैनियोंकी विद्याका उद्योत किया जावेगा। वहा मुक्तावली, आदि ग्रन्थोंके पढनेवाले गली गलीमें फिरते हैं, इसलिये उनके पढनेवाले विद्वानोंकी संख्या बढ़ानेकी आवश्यकता नहीं है। यदि काशीमें पाठशाला स्थापित करनेका सबसे बड़ा कोई हेतु है, तो वह यही है कि, वहांपर जैसे वेदान्त, मीमांसकादि दर्शनोंकी पृथक् २ पाठशालायें हैं, और उनमें उन्हीं दर्शनोंके ग्रन्थ पढाये जाते हैं, उसी प्रकार जैनदर्शनकी भी पाठशाला हो, जिसमें जैनदर्शनके ग्रन्थोंका पठन पाठन हो और अन्यमतके विद्वानोंके चित्तोंपर जैनदर्शनका कुछ महत्व प्रगट हो। कोई अन्यधर्मी विद्वान् यदि जैनदर्शनग्रन्थोंका अध्ययन करना चाहें, तो हमारी पाठशालामें कर सकें। परन्तु यह हेतु तब तक सिद्ध नहीं हो सकता, जब तक सर्वथा यह नियम न कर दिया जावे कि, स्याद्वादपाठशालामें केवल जैनग्रन्थ ही पढाये जावेंगे। पाठशालाके दूरदर्शी प्रबन्धकर्ताओंका आज हम फिर भी इस विषयकी ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। आशा है कि, वे हमारी इच्छाको पूर्ण करके स्याद्वादपाठशालाको सच्ची स्याद्वादपाठशाला बनानेमें अब विलम्ब न करेंगे। जिस काशीपुरीमें एकवार भगवान् समन्तभद्रस्वामिने जैनधर्मकी विजयपताका फहराकर संसारके विद्वानोंको नतमस्तक कर दिया था, उस काशीकी स्याद्वादपाठशालामें यदि जैनग्रन्थोंकी अवहेलना होकर भिन्नधर्मी ग्रन्थ पढ़ाये जावेंगे, तो इससे अधिक दु:खका विषय और क्या होगा ?

सनातनजैन और देवनागरी ।

यदि संसारमें सबसे सुन्दर, सरल, शुद्ध, और भ्रमहीन कोई लिपि है, तो वह एक नागरी लिपि है। प्रत्येक राष्ट्रकी एक ही लिपि होनी चाहिये। इसके बिना किसी भी राष्ट्रको राष्ट्रत्व प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिये हमारे देशके शुभचिन्तक विद्वानोंकी इच्छा हुई है कि, भारतवर्षमें केवल एक ही देवनागरी लिपिका प्रचार किया जावे। उन्होंने इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये कलकत्तेमें एक "एकलिपिविस्तारपरिषत्" स्थापित किया है। उसकी ओरसे नागरीके प्रचार करनेके लिये अनेक प्रयत्न हो रहे हैं। लोगोंका भी ध्यान उसकी ओर आकर्षित हुआ है। गुजराती बंगला आदि अनेक भाषाओंकी पुस्तकें नागरी लिपिमें छपना शुरू हो गई हैं। इस राष्ट्रीय कार्यमें हमको सबसे प्रथम योग देना चाहिये। क्योंकि हमारा यह राष्ट्रीय ही नहीं, किन्तु धार्मिक कार्य भी है। हम लोगोंकी धार्मिक लिपि केवल नागरी है। हिन्दुस्थानके प्रत्येक जैनीको, चाहे वह किसी भी प्रान्तका हो, अपना धर्म जाननेके लिये नागरी पढ़नी ही चाहिये। संस्कृत प्राकृत हिन्दी आदि जिन २ भाषाओंमें हमारे ग्रन्थ हैं, उन सबकी लिपि नागरी है। और वर्तमानमें जब संस्कृत प्राकृतके विद्वानोंका अभाव हो रहा है, तब एक हिन्दी ही ऐसी भाषा है, जिससे जैनधर्मका ज्ञान प्राप्त हो सकता है, और जो नागरीके अतिरिक्त दूसरी लिपिमें नहीं लिखी जाती। कर्णाटकी लिपिमें भी हमारे ग्रन्थ हैं, परन्तु वर्तमानमें कर्णाटकसे हम इतने अपरिचित हो रहे हैं, कि कर्णाटकी लिपिके उल्लेख करनेकी आवश्यकता नहीं दिखती, और उक्त लिपिमें राष्ट्रीय होनेकी योग्यता भी नहीं है। सो यदि हमको धर्मविद्याकी उन्नति करना है, तो अपनी प्रान्तिक भाषाओंको नागरी लिपिमें लिखनेका उद्योग करना चाहिये। हर्षका विषय है कि, जैनियोंमें सबसे पहले हमारे गुजराती सहयोगी सनातनजैनने इस कार्यके करनेका बीडा उठाया है। अब उसके आगामी अंक नागरी लिपिमें ही निकलेंगे। इससे नागरी लिपिका प्रचार होनेके सिवाय दूसरे प्रांतिके लोगोंको गुजराती सीखनेका भी मौका मिलेगा। इस प्रशंसनीय साहसके उपलक्ष्यमें हम सहयोगीको धन्यवाद देते हैं।

जैनयगमेन्सएसोसियेशनके प्रतिनिधिका पत्र ।

कलकत्तेमें एसोसियेशनका जो अधिवेशन हुआ था, उसकी रिपोर्ट एक सम्वाददाताकी ओरसे जैनमित्रके गत ६ ठे अंकमें छप चुकी है। एसोसियेशनके एक प्रतिनिधि उसकी तीन बातोंका प्रतिवाद करते हैं, एक तो यह कि, १ एसोसियशनके कारगुजारोंने सबजैक्ट कमेटी अपनी इच्छानुसार नहीं चुनी थी, उसमें सब प्रान्तोंके प्रतिनिधि चुने गये थे, तथा बाबू माणिक्यचन्द्रने इस लिये विरोध किया था कि, कलकत्तेके भाइयोंके नाम चुने जा चुके थे, फिर अधिक नामोंके चुननेकी आवश्यकता नहीं थी। और जिनके नाम चुननेका प्रस्ताव किया गया था, वे एसोसियशनके कामोंसे बहुत ही कम सहानुभूति रखते थे। दूसरी बात यह है कि, दर्शन स्वाध्यायके विषयका जो प्रस्ताव था, उसका विरोध बाबू माणिक्यचन्द्रने इस लिये नहीं किया था, कि वे दर्शन स्वाध्यायको बुरा समझते थे। वरन् इस लिये कि, एसोसियेशनमें दिगम्बर श्वेताम्बर ढुंढिया तीनों सम्प्रदायोंके मनुष्य हैं और दर्शन करना ढुंढिया सम्प्रदायको इष्ट नहीं है। इसलिये विरोध करनेवाले महाशय प्रस्तावको इन शब्दोंमें रखना चाहते थे कि "प्रत्येक जैनी अपनी आम्नायके अनुकूल नित्यकर्म अवश्य करें"। तीसरी बात यह है कि, एसोसियेशनके कारगुजारोंने प्रस्ताव छपा-

नेका प्रयत्न नहीं किया था, किन्तु "सभापति साहबने समय अधिक हो जानेसे प्रस्ताव बन्द किये जाते हैं," यह स्वयं कहा था। प्रतिनिधि महाशय यह भी लिखते हैं कि, एक जगह सम्वाददाताने अंग्रेजी जैनगजटमें जो महावीरका चरित्र छपा था, उसके विषय एसोसियेशन पर आक्षेप किया है, सो भी ठीक नहीं है। क्योंकि उसका लेखक श्वेताम्बरी था, वह श्वेताम्बर सम्प्रदायके अनुकूल था।

एसोसियेशनका धर्म और उद्देश्य।

यदि हम भूलते नहीं है, तो हमारे अधिकाश पाठक यही जानते है कि, एसोसियेशनका धर्म दिगम्बरी है और जिस समय एसोसियेशनका जन्म हुआ था, उस समय इसकी स्थापनाका साधारणत यही उद्देश्य बतलाया गया था कि, जो हमारे अंग्रेजी पढ़े लिखे जैनी भाइयोंपर अपने धर्म कर्मोंमें शिथिल हो जानेका आक्षेप है, उसे यह एसोसियेशन दूर करनेका प्रयत्न करेगा। परन्तु उक्त प्रतिनिधि महाशयके पत्रसे तथा वर्तमानकी अनेक कार्रवाइयोंसे यह स्पष्ट हो गया है कि, एसोमियेशनका खास धर्म कोई नहीं है। दिगम्बरी श्वेताम्बरी और ढूंढियोंमें धार्मिक और सामाजिक दोनो प्रकारकी एकता करनेके लिये उसका जन्म हुआ है। दिगम्बरियोंसे उसका उतना ही सम्बन्ध है, जितना श्वेताम्बरी और ढूंढियोंसे है। प्रारंभमें दिगम्बरियोंकी महासभाके द्वारा उसका जन्म हुआ, दिगम्बरियोंके समूहमे ही उसके सब अधिवेशन हुए, दिगम्बरी उसके अधिकांश कार्यकर्ता रहे और दिगम्बरी मेम्बरोकी संख्या ही उसमें अधिक रही। इन्हीं सब बातोंसे लोगोकी आखोमे वह खास दिगम्बरियोंकी सभा समझी जाती थी। परन्तु अब यह सन्देह रखनेकी आवश्यकता नहीं है। लोगोंको अपनी भूल सुधारना चाहिये।

दिगम्बरी और श्वेताम्बरियोंकी एकता।

दिगम्बरी और श्वेताम्बरियोंमें एकता होनी चाहिये। यह बात सबको ही इष्ट है। कोई इसके विरुद्ध नहीं हो सकता। परन्तु एकता जिन बातोंमें सभव है, उन्हींमें हो सकती है। अशक्यानुष्ठान शक्य नहीं हो सकते। परस्पर भ्रातृभाव तथा वात्सल्य बढ़ाना, कलह विरोध न करना, एक दूसरेकी सहायता करना, परस्पर मिलकर व्यापारिक उन्नति करना सामाजिकशिक्षामें वृद्धि करना, आदि सैकड़ों कार्योंमें श्वेताम्बरी और दिगम्बरियोंकी एकता हो सकती है। इसके लिये प्रयत्न करना चाहिये। परन्तु धार्मिक विषयोंमे एकता करनी हमारी समझमे अशक्य है। जो लोग यह कहते है कि दोनों सम्प्रदायोंमे सिद्धान्तभेद विशेष नहीं है, धार्मिक एकता हो सकती है, समझना चाहिये कि, उन्होने सिद्धान्तोका स्पर्श भी नहीं किया है। वे लोग केवल बाहरी दिखावटको धर्म समझते है। धर्मका अन्तरंग स्वरूप उनकी दृष्टिसे बहुत परे रहता है। हम एक स्वतंत्र लेखके द्वारा यह बतलानेका प्रयत्न करेंगे कि, दिगम्बर और श्वेताम्बर सम्प्रदायके सिद्धान्तोंमे कितना अन्तर है। हमारे उत्साही युवकगण जो शक्ति इस अनुष्ठानमे खर्च कर रहे हैं, उसे यदि लौकिक एकताकी ओर जिसकी कि, बहुत आवश्यकता है, लगावें तो अच्छा हो। धार्मिक एकता करनेके लिये उन्हें पहले धार्मिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिये।

चारसौ रुपयाका पारितोषिक।

बम्बईके शेठ अमरचन्द तलकचन्दजीकी ओरसे एक नोटिस निकला है, कि, "सद्देवतत्त्व और ईश्वर जगतका कर्ता नहीं है" इस विषय पर जो कोई सबसे अच्छा निबन्ध लिखेगा, उसे चारसौ रुपया पारितोषिक दिया जावेगा। निबन्ध जैनमित्रके (पुराने आकारके) १९० पृष्ठका होना चाहिये और ३१ दिसम्बर सन् १९०७ तक "मेहता मनसुखलाल कीरतचन्द—मांडवी—बम्बई" के पतेमे भेजना चाहिये। षटदर्शन समुच्चय आप्तमीमासा मोक्षमार्गप्रकाश आदि ग्रन्थोंकी यथेच्छ सहायता लेनी चाहिये, परन्तु नकल नहीं करनी चाहिये। यह पारितोषिक पहले केवल गुजराती भाषामें लेख लिखनेवालोंके लिये था, परन्तु पीछे पन्नालालजी वाकलीवालकी प्रेरणासे हर्षकी बात है कि, हिन्दी लिखनेवालोंके लिये भी मजूर हो गया है। हम अपने विद्वान् पाठकोंसे इस विषयमें प्रयत्न करनेके लिये आग्रह करते हैं। लेख लिखनेवालोंको पत्र व्यवहार करके विशेष नियम भी जान लेना चाहिये। पारितोषिकदाता एक श्वेताम्बरी महाशय है।

लेखकोंकी कमी।

हमारे समाजमें अच्छे लेखकोंकी बहुत न्यूनता है। इसका कारण जहांतक विचार किया जाता है, केवल यह नहीं है कि, हमारे यहा विद्वानोंकी कमी है। किन्तु यह है कि, लेखकोंका किसी प्रकारसे उत्साह नहीं बढाया जाता। जातिके धनाढ्य महाशयों तथा सभा पाठशालाओंके अधिकारियोंको चाहिये कि, वे अपने समाजमें लेखकोंके तयार करनेके लिये शेठ अमरचन्दजीका अनुकरण करें। प्रतिवर्ष ऐसे अथवा इससे छोटे सौ सौ पचास पचास रुपयेके ४-६ पारितोषिक निकलने लगें, तो बहुत अच्छा हो। ऐसे निबन्धोंसे लेखकोंकी उत्साह वृद्धिके सिवाय हिन्दी साहित्यकी वृद्धि भी होवेगी।

होली और अष्टान्हिका।

हम अपने पाठकोंको सचेत किये देते है कि, होली आ रही है। साथ ही अष्टान्हिकाके पवित्र पुण्यदिवस भी आ रहे है। ऐसा न हो कि, मूर्ख निर्लज्ज लोगोंके फदेमे फँसकर आप अपने पवित्र पुण्यकर्मकी भी होली कर डालें। अष्टान्हिकाका पर्व भक्तिभाव सहित भगवत्की पूजन करने और गायन वादनसे धर्म प्रभावना करनेके लिये है, न कि निर्लज्ज बनकर गली कूचोंमें भड वचन बोलते हुए अत्याचारकी वृद्धि करनेके लिये। आप जैनी है। आपका इस राक्षसी त्योहारसे कुछ सम्बन्ध नही है। यदि आपको अपने जैनीपनका कुछ भी अभिमान है, तो होलीको दूरहीसे नमस्कार करते रहिये।

प्राणिविदारण।

प्राणियोंकी नसनसमें स्वार्थ भरा हुआ है। इस कारण प्रत्येक प्राणी निरतर अपने अपने सुखके लिये प्रयत्न किया करते है। और वह प्रयत्न इस तरह लवलीन होके करते है कि, उसमें दूसरे प्राणियोंको दु:ख होता है कि, नहीं, इसका विचार ही उन्हें नहीं होता। यह एक अन्याय है। इस लिये यूरोपखंडके शिक्षासम्पन्न देशोंमें इसका निवारण करनेके लिये दयावान् पुरुषोंने कुछ सभाये स्थापित की है। उन सभाओंको राजाश्रय भी मिला है। सभाओंका काम यही है कि, गूंगे प्राणियोंके साथ कोई पुरुष क्रूरताका वर्ताव करै, तो उसे सरकारके सन्मुख उपस्थित करके दंड दिलवाना। यह सभा जिन्हें अपराध मानती है, उनमें "कमजोर बैल घोड़े गाड़ियोंमें जोतना, उन्हें जोरसे दौड़ानेके लिये

खूब मार मारना" यह भी एक अपराध है। इसीसे दूसरे अपराधोंके विषयमें कल्पना की जा सकती है। इन सभाओंके उद्योगसे अनेक दीन प्राणी कष्टमुक्त होते हैं। यह बड़ा भारी पुण्य है। वहां ये सब संस्थायें नवीन हैं। परन्तु हमारे देशमें जीवदया यह एक धार्मिकतत्त्व बन गया है, इस लिये जैनादि लोगोंने गूगे प्राणियोंकी रक्षाके लिये यहां पांजरापोल सरीखी सस्थायें नियत कर रक्खी हैं, जिनका कि बहुत उपयोग होता है।

जीवदयाके प्रभावसे शिक्षासम्पन्न देशोंमें अनेक वर्षोंसे ऐसी चरचा चलने लगी है कि, मनुष्योंको जो नानाप्रकारके रोग होते हैं, उनकी चिकित्सा और निदान अभीतक ठीक नहीं होते। इसलिये उन रोगोंके प्रयोग दूसरे प्राणीपर करके देखना चाहिये और उससे जो अनुभव प्राप्त हो, उसका उपयोग मनुष्योंके रोग नष्ट करनेके लिये करना चाहिये। उदाहरणार्थ—प्लेगकी बाधा जैसी मनुष्योंको होती है, वैसी ही चूहोंको भी होती है। परन्तु उस बाधाके दूर करनेके कुछ उपाय ऐसे सूझते हैं कि यदि वे मनुष्योंपर आजमाये जावें, तो उनका न जाने क्या परिपाक होवे, यह शंका रहती है। इसलिये पहले वे उपाय चूहोंपर करके देख लेने चाहिये और पीछे उनमें जो २ उपचार गुणकारी जंच पड़ें, केवल उन्हें ही मनुष्योंके उपयोगमें लाना चाहिये। इसी प्रकार अन्य रोगोंके सम्बन्धमें भी बहुत दिनोंसे प्रक्रिया चल रही है। इस परीपाटीसे वैद्यकीय ज्ञानमें बहुत कुछ वृद्धि हुई है और मनुष्योंको निरोगी बनानेके लिये उसका बहुत उपयोग हुआ है। परन्तु इससे दूसरे प्राणियोंको अतिशय कष्ट सहना पड़ता है और कभी २ उनके प्राणोंपर भी आ बनती है, यह बड़ी बुरी बात है। अन्याय है। वे प्राणी मनुष्यों सरीखे ही हैं। उनके वचनशक्ति नहीं है, परन्तु इससे उनका कुछ अधिकार कम नहीं हो गया है। उन्हें नानाप्रकारके क्लेश देकर उनका अनुभव मनुष्य अपने रोगनिवारण करनेके लिये अथवा सुखवृद्धिके लिये करें, यह अत्यन्त स्वार्थता है, अतिशय क्रूरता है। न्याय्यदृष्टिसे यह महापाप और भयंकर पक्षपात है। इस लिये इस पद्धतिको सर्वथा बन्द करना चाहिये। उपर्युक्त जीवदयावादी सभाका यही प्रस्ताव है। प्रतिपक्षी लोग इसके विरुद्ध कहते हैं कि, दूसरी सर्व सृष्टि मनुष्योंके सुखके लिये उत्पन्न की गई है, इसलिये दूसरे प्राणियोंके दुःखकी चिन्ता न करके उनके शरीरपर प्रयोग करके देखनेमें और उस ज्ञानका उपयोग मनुष्योंके सुखके लिये करनेमें, कुछ शास्त्रविरोध नहीं है। और पाप भी नहीं है। क्योंकि ईश्वरीय संकेत ही ऐसा दिखलाई देता है।

पाश्चात्य देशोंमें ऐसे दो पक्ष खड़े हुए हैं। सन् १८७९ ईस्वीमें इंग्लैंडकी कई एक सभाओंने सरकारसे प्रार्थना करके इस वादविवादके निर्णयके लिये, प्रसिद्ध २ विद्वानोंकी और वैद्योंकी एक कमेटी नियत कराई थी। उसमें खूब ऊहापोह हुई थी। दोनों पक्षके रथी महारथी उपस्थित हुए थे। उनकी साक्षियां ली गईं थीं। मुख्य प्रश्न यह था कि, मनुष्योंके हितके लिये दूसरे प्राणियोंको कष्ट देना न्याय्य और योग्य है, अथवा नहीं? अन्तमें कमेटीके विद्वानोंके मत दोनों पक्षकी ओरसे प्रायः बराबर आये। परिणाम यह हुआ कि, इंग्लैंडमें प्राणियोंपर प्रयोग करके परीक्षा करनेका नियम हो गया, जो अभीतक जारी है।

इस विषयमें प्रयोगवादी और अप्रयोगवादी ये दोनों परस्पर अतिशय विरुद्ध हैं। प्रयोगवादी लोग अपने प्रतिपक्षियोंको अविचारी, मूर्ख, मनुष्यके जीवका महत्व न समझनेवाले, मनुष्य और पशुओंको एक समझने वाले, आदि विशेषण देते हैं। और इसी प्रकार जो अप्रयोगवादी हैं, वे अपने प्रतिवादियोंको क्रूर वज्रहृदय, निर्दय, स्वार्थी, पाप पुण्यकी परवा न करनेवाले और धर्मबुद्धिहीन आदि शब्दोंसे सम्बोधित करते हैं। परन्तु पश्चिमी बुद्धिसे ऐसा कहा जाता है कि, दोनोंका हेतु एक ही जीवदया है। अन्तर केवल इतना है कि, प्रयोगवादियोंका आग्रह मनुष्योंके सुखकी वृद्धिके लिये है और अप्रयोगवादियोंका गूंगे प्राणियोंको कष्ट नहीं देकर दया करनेके लिये है। हेतु एक परन्तु मार्ग अतिशय जुदे जुदे हैं।

इस विषयका आन्दोलन होते होते अन्तमें यह विवाद पार्लीमेंटमें उपस्थित हुआ। और वहां बहुत कुछ आन्दोलन होकर अन्तमें ऊपर कहे अनुसार प्राणियोंके शरीरपर प्रयोग करनेका कानून पास हो गया। उसमें यह प्रयोग अमुक अमुक लोगोंको अमुक २ रीतिसे करना चाहिये, यह सब निश्चित कर दिया गया है। और अप्रयोगवादियोंके उद्योगसे उसमें एक कलम यह भी दाखिल की गई है कि, प्राणियोंके जिन शरीरके भागोंपर प्रयोग करना हो, वहां प्रयोग करनेके पहले ऐसी औषधियां लगाना चाहिये, जिससे वहां ऐसी बधिरता तथा शून्यता आ जावे, जिससे "कष्ट दिया जाता है, या नहीं" इसका प्राणियोंको भान न होवे। और ऐसी बधिरावस्थामें प्रयोग पूरा होनेके पहले यदि वह सचेत होने लगे, तो उसे मार डालना चाहिये। यह कलम प्रयोगवादियोंको पसन्द नहीं है। क्योंकि इस प्रकारसे प्राणियोंके अंग बधिर अथवा शून्य होनेसे वहां जो प्रयोग किये जाते हैं, उनका असर प्राणियोंपर क्या होता है, यह सर्वथा नहीं जान पड़ता। इस लिये ऐसे प्रयोगोंसे विशेष उपयोगी ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता। ऐसा उन लोगोंका मत है।

प्रयोग पक्षमें बड़े २ धन्वन्तरि हैं, इसी प्रकार अप्रयोगपक्षकी ओर भी बड़े २ प्रतिष्ठित पुरुष हैं। इंग्लैंडके भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश लार्ड कोलरिजके पुत्र आनरेबिल स्टीफन कोलरिज अप्रयोगपक्षके सभापति हैं। आपने इस उद्योगमें तन मन धन तीनोंसे खूब प्रयत्न किया है। आप एक नामी बैरिस्टर और प्रसिद्ध लेखक हैं। इस विषयमें आपने बहुत कुछ लिखा है।

(बालबोधके लेखका आशय)

यद्यपि हम लोगोंकी दृष्टिमें जीवदयाके उक्त दोनों ही पक्षपाती जीवदया अथवा अहिंसाके तत्वसे कोसों दूर हैं। परन्तु समयकी बलिहारी है, यूरोपवासी कुछ भी करें, हम आश्चर्यसे देखते हैं। वहांके प्रयोगवादी केवल मनुष्यदयाको ही जीवदया समझते हैं, और अप्रयोगवादी मूर्च्छित—बेहोश करके मार डालनेमें जीवघात नहीं मानते। विलायती जीवदयाकी बस यहां ही इतिश्री है। तो भी हमको सतोष है कि, वहां दयाका किसी रूपमें सूत्रपात हुआ है।

बुद्धूलाल हैडमास्तर—

सेमरा (सागर)

उपदेशक बनानेका सरल उपाय।

यह तो सब ही जानते है कि, ससारमें जितने धर्म है, उन सबकी यदि कभी उन्नति हुई है, तो वह उपदेशकोंके द्वारा ही हुई है। इस लिये जैनसमाजमें उपदेशकोंकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। क्योंकि हमारा समाज उपदेशकोंकी ओरसे एक प्रकार शून्य हो गया है। परन्तु उपदेशक कैसे बनाये जावें, यह एक कठिन प्रश्न है।

उपदेशकोंमें ज्ञानका अंश तो होना ही चाहिये, परन्तु मुख्यता वक्तृत्वशक्तिकी है । क्योंकि अपने अभिप्रायोंको दूसरेके चित्तमें प्रविष्ट कर देना यह विशेषत. विद्यासे सम्बन्ध नहीं रखता, किन्तु अभ्याससे रखता है। इस लिये जो लोग धर्मके अशोंके ज्ञाता हैं, विद्यार्थी हैं, उनमें वक्तृत्व शक्ति बढानेके लिये उचित प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है ।

ता. ११ फरवरीको बम्बईके मूलजी जेठा मारकीट हालमें जैनवक्तृत्वकलाप्रसारक सभाका अधिवेशन था। उसमें मै भी गया था। सभामे ८ व्याख्याताओंको नियत करके प्रत्येकको वीस वीस मिनट तक जैन जातिकी उन्नतिके विषय भाषण करनेकी आज्ञा दी गई थी । सबके व्याख्यान हो चुकनेपर व्याख्याताओंमे जिसका प्रथम नम्बर रहा, उसे एक सोनेका मेडल, दूसरा रहा, उसे चादीका मेडल, और तीसरा रहा, उसे सभापतिकी ओरसे एक १०) का चांदीका मेडल दिया गया था। यह युक्ति मुझे बहुत पसन्द आई है। अत मैं सव भाईयोंसे सभाओंसे, पाठशालाओं और विद्यालयोंके अधिकारियोंसे प्रार्थना करता हूं कि, वे अपने २ यहां इस पद्धतिसे व्याख्यान दिलवाकर पारितोषिकादि बांटनेका प्रबन्ध करें । ऐसा करनेसे परस्परकी स्पर्धासे और पारितोषिकके लोभसे विद्यार्थियोंका तथा दूसरे बुद्धिमानोंका उत्साह बढेगा और हमारे समाजसे उपदेशकोंका अभाव बहुत जल्दी दूर हो जावेगा ।

उपदेशकभडारके मत्री महाशय भी यदि प्रतिवर्ष इस प्रकारके १०-५ मेडल देनेका प्रयत्न करें, तो अच्छा हो । उपदेशकपरीक्षालयमें एक परीक्षा इस प्रकारकी भी रखनी चाहिये, क्योंकि केवल शास्त्रज्ञ होनेसे कोई वक्ता नहीं हो सकता। इत्यलम्

बम्बई } समाजका हितैषी,
१२-२-०७ } श्रीजवाहिरलाल साहित्यशास्त्री

महाविद्यालय किस चीजका नाम है ।

अब तक हमारे नजदीक इस ख्यालमें बहुत गलती हो रही है, कि महाविद्यालय क्या चीज है? बहुतसे भाई यह समझ रहे हैं, कि, महाविद्यालय केवल संस्कृत या आलादरजेकी तालीम देनेकी जगहका नाम है । परन्तु महाविद्यालयका शब्दार्थ विद्याका बड़ा भारी घर है । पस दोस्तोंने विद्याको सिर्फ संस्कृत और मजहबी तालीम समझ लिया । इसी वजहसे जब कि जैन कालिजका नाम आता है, तो वह चौंक जाते हैं और उसकी कोई दूसरी चीज ख्याल करते हैं ।

अगर हमारी याद गलती नहीं करती, तो खूब याद है कि, नयेनगरमें जिस वक्त चन्दा हुआ और महाविद्यालय खोला भी नहीं गया था, उस वक्त जैनकालिजके नामसे चन्दा जमा किया गया था। उस वक्त आम तौरपर यह ख्याल था कि. एक बड़ी जगह पढाईकी बनाई जावे, जिसमें आला दरजेकी तालीम मजहबी और दुनयावी विद्याकी दी जावे । इसको जैनकालिज कह दीजिये, चाहे इसका नाम महाविद्यालय रख दीजिये । कालिजके मानी भी अंगरेजी जबानमें महाविद्यालयके है । यह हमारी समझमें नहीं आता कि, जब मन्शा शुरूहीसे यह थी कि, उच्च कोटिकी तालीम (शिक्षा) दोनों व्यवहारोंकी दी जावे, तो अब दोस्तोंका इसपर खटकना कि अंगरेजीकी उच्च श्रेणीकी शिक्षा क्यो दी जावे, इसके क्या मानी हैं ? सिर्फ महाविद्यालय सस्कृत नाम होनेसे यह ख्याल करना कि, अंगरेजीकी आलादरजेकी शिक्षाका उसमे मतलब नहीं था, सही नहीं है । दोस्तोंको याद होगा कि, सहारनपुरमें महासभाके अधिवेशनके वक्त यह गुफ्तगू आई थी, मगर अफसोस है कि, महासभाके प्रस्तावमे और कार्रवाईमें साफ २ नहीं लिखा कि कालिजके लिये तो ज्यादा सरमायेकी जरूरत है, अव्वल हाईस्कूल खोलकर काम शुरू करना चाहिये । ताकि यह मालूम हो जावै कि, काम हो रहा है और जब काम शुरू हो जावेगा, तो चन्दा आसानीसे वसूल हो सकेगा। उस वक्त यह भी मिसालें पेश की गईं कि, कायस्थपाठशाला, मेरठकालिज, मोहमडनकालिज, वगैरह इसी तरह पर थोडी २ जमायतोंसे शुरू किये गये है और आखिरको रफ्ते २ उच्च श्रेणीकी शिक्षापर पहुंच गये है, इसलिये हकीकतमें यह समझना चाहिये कि, जैन कालिज वो ही है, जो महा विद्यालय है और उसमे धार्मिक और लोकिक दोनों विद्या आलादरजेकी देना कौमका मतलब है । और उसको हाईस्कूलकी जमायतोंसे शुरू करना मजूर था । यह ही वजह थी कि, महासभाने यह तजवीज किया, कि फिलहाल हाईस्कूल खोला जावै और फिर सहारनपुरकी कमेटी प्रबन्धकारिणीने यह तजबीज किया कि जिसतारीखको जैनमहाविद्यालय जैनबागमें स्थापित किया जावै, उसको लोकलकमैटी महूरतके साथ स्थापित करेगी ।

यथार्थमें सहारनपुरके लोकलकमेटीके प्रस्ताव मजकूरका मन्शा कोई तजवीज महाविद्यालय या जैनकालिज या हाईस्कूलके जारी करनेके लिये न थी, न उनका यह हक था न ताकत कि, वह कोई महाविद्यालय या हाईस्कूल खुद जारी करे, बल्कि यह कमेटी सिर्फ प्रबन्ध करने ऐसी जरूरतोंको जो सहारनपुरमें पेश आयें, और उसीकी जिम्मेदार थी और इसी कारण प्रस्तावके शब्द यह है कि, "तारीख लोकलकमेटी साथ मुहूरतके मुकर्रिर करेगी ।" ऐसा ही मन्शा तमाम कार्रवाईयोंसे जाहिर होता है ।

हम फिर अर्ज करते है कि, हमको निजकी तहरीरातसे किसी मेम्बरकी कुछ बहस नहीं है। जो प्रस्ताव प्रबन्धकारिणीसभा सहारनपुरने पेश किये, उनको शुरूसे आखिर तक दखे लीजिये । सिर्फ मुतैलिक इतजामके थे, न कि मुतैलिक इस्तहकाकके । इसलिये जो प्रस्ताव पास हुए या जो बादे बाबू बनारसीदास सा० के हिसाबसे हाईस्कूल खोलनेके हुए, वह केवल महासभाके प्रस्तावकी तामीलमें महाविद्यालयको खोलनेके लिये हुए। शब्द हाईस्कूल केवल तशरीहके लिये इस्तैमाल किया गया, न कि कोई दूसरी बात या जुदाई दिखलानेके लिये ।

सहारनपुरवालोंकी जिम्मेदारी ।

क्यों साहब हम यह दरयाफ्त करते हैं कि, जिस वक्त महाविद्यालयके बदलनेका प्रस्ताव महासभाने पास किया, उस वक्त सहारनपुरवालोंको खास तौर पर जमा करके उनसे कोई कौल, इकरार, वायदा, शर्त, जिम्मेदारी, जमानत, मिकदारचंदाकी तय की थी ? हरगिज नहीं ।

क्या महासभाने अपने प्रस्तावमें कोई शर्त लगाई कि, अगर सहारनपुरवाले अमुक कामोंको पूरा कर दें, या जिम्मेदारी या इकरार जिम्मेदारी करें, तब बदला जावै ? हरगिज नहीं ।

क्या सहारनरपुरवालोंकी यह जिम्मेदारी थी कि, वह हाईस्कूल तकके खर्चेका चन्दा अपने यहांसे जमा करें ? हरगिज नहीं ।

यह तो सहारनपुरवालोंने उस नामवरीके जोशमें जो उनको महाविद्यालयके सहारनपुर बदलनेकी वजहसे हुई, उसकी खिदमतकी तामील समझी

और अपने तौरपर पंचायत करके दर एक टोलीके चौधरियों और अफसरों और प्रतिष्ठित आदमियोंने विरादरीके तजवीज किया कि, एक बडी रकम चन्देकी सहारनपुरवालोंको देना चाहिये। अगर उस वक्त तक (उन रकमोंके सिवाय जो महासभाके जल्सेके वक्त लिखी गई थीं और वादे नहीं आये थे) चन्दा नहीं लिखा गया, वसूल नहीं हुआ, उसकी बाबत कोई इलजाम किसी किस्मका महासभा या उसके कार्यकर्ता सहारनपुरवालोंको नहीं दे सकते। वादे चन्दा महासभाके वक्तकी बाबत तो महासभा एक शब्द भी सहारनपुरवालोंसे नहीं कह सकती।

सहारनपुरवालोंकी जिम्मेदारी इससे ज्यादा और कुछ नहीं है कि, जो सहारनपुरमें जरूरतें महाविद्यालयकी पेश आवे, उनका इन्तजाम कर दे। हम यह दरयाफ्त करते हैं कि, जिस रोजसे यह तजवीज हुआ कि, महाविद्यालय बदला जावे, उस रोजसे महासभाके कार्यकर्ताओंने सहारनपुरवालोंको क्या मदद दी? कोई हुक्म अथवा कोई कायदा बास्ते तामीलके सुपर्द किया?

डेप्यूटेशनपार्टी जो चन्दा जमा करनेको सहारनपुरमें मिस्ल अम्बालेके चुनी गई, वह चन्दा जमा करनेके लिये गई। उस पार्टीका यह कहना कि, जब तक सहारनपुरसे चन्दा न होगा, दूसरी जगहसे नहीं होगा, अव्वल तो सही नहीं है, और फर्ज करो कि, सही है तो यह पार्टी ही सहानपुर तशरीफ लाकर अपना मामूली काम करती और जैसा कि और जिलोंसे चन्दा जमा किया गया था, सहारनपुरसे भी नकद वसूल करती और उसको जैनकालिजफडमें जमा करती। नहीं मालूम, ऐसा क्यों नहीं किया। सहारनपुरकी लोकलकमेटी डेप्यूटेशनपार्टीसे नहीं बढ़ सकती।

कभी महासभाकी मेनेजिंगकमेटीने इसपर गौर किया कि, हाईस्कूल खोलनेपर सबसे चन्दोका मदार हैं। हम क्या तजवीजें करें, जिससे हाईस्कूल खोला जावै और किस रुपयेसे खोला जावै, और जबतक चन्दा जमा न होवै, खर्च कहासे किया जावे? क्या मेनेजिंगकमेटी महासभा अपनी तमाम जिम्मेदारियोंसे सहारनपुरकी लोकलकमेटी मुकर्रिर करके निश्चिन्त हो गई? यह किसका फर्ज है कि, महाविद्यालयके सरमाये उसकी शाखा हाईस्कूलके सरमाये और उसके खर्चपर गौर करें, और उसके सरमायेके जमा होनेकी तजवीज करें? मेनेजिंगकमेटी महासभाका।

जो कुछ रुपया सूदका महाविद्यालयके सरमाये मौजूदासे आता है, वह संस्कृतकी मौजूदा शिक्षाके खर्चके वास्ते भी मुशकिलसे काफी है। सहारनपुरकी कमेटी हाईस्कूलके दरजेको खर्च कहांसे लावै और किस जिम्मेदारीपर हाईस्कूल खोले? सहारनपुरमें ३१ दिसम्बर १९०९ से आज तक तेरा जल्से पंचायत आम और मेनेजिंगकमेटीके हुए और आज चोदहवां जल्सा है। जब कोई जरा भी दिक्कत पेश हुई, उसी वक्त कमेटी की गई और तजवीज की गई उन जरूरतोंकी जो कि सहारनपुरमें हुई। इस वक्ततक कोई शिकायत नहीं है, न हो सकती है। उसके जिम्मेदार हरतरह सहारनपुरवाले हैं। लेकिन खर्चके वास्ते रुपया जमा कराना महासभाका काम है। सहारनपुरवालोंका नहीं है। सहारनपुरवालोंको कौन रुपये देता है? रुपया तो महासभाको खुद उसकी जिम्मेदारीपर मिलता है।

जो तजवीज सहारनपुरवालोंने (कमेटीने) ७ जनवरीको इस बारेमे की थी कि, जो रुपया इस वक्त मौजूद है उससे कुछ काम अगरेजी और संस्कृत दोनोंका चल जावै, उसपर वह तहरीरात सख्त सहनी पड़ी कि, जिसको हम नहीं कह सकते। फिर फरमाइये कि, सहारनपुरवालोंका क्या कसूर हाईस्कूल जारी न होनेमें है? हाईस्कूलका खर्च कमसेकम ९०० रु० माहवारका शुरूमें है, जिसके लिये कमसे कम १ $\frac{1}{2}$ लाख रुपये चन्देकी जरूरत है, जिसके सूदसे खर्च चलाया जावै। क्या महासभा या उसकी कमेटी यह उम्मेद करती है कि, खास सहारनपुरसे १ $\frac{1}{2}$ लाख रुपया जमा हो जावै और उससे हाईस्कूल चलाया जावै? हम समझते हैं कि, ऐसी उम्मेद रखती है, तब ही तो आज तक चन्देके जमा करनेमें कोई मदद नहीं की। अगर उम्मेद नहीं है, तो चन्देके जमा करनेमें मदद देनेके कोई मानी नहीं है। क्योंकि जिस कदर चन्देका वादा था, वह भी हाईस्कूलके खर्चके लिये बावजूदा वसूल हो जानेके काफी नहीं हो सकता था। बावजूदे कि, सरमाय मौजूदाके खर्च करनेके लिये बहुत कुछ तहरीरात मौजूद हैं। लेकिन हाईस्कूलके दरजेके लिये और उसके इन्तजामकी बाबत एक शब्द भी नहीं है। ऐसी हालतमें हम नहीं समझ सकते कि, सहारण पुरवाले किस सरमायेसे और किस जिम्मेदारीपर स्कूल जारी कर दें।

नेमिदास वकील।

सहारनपुर।

नोट—वकील साहबका यह ख्याल गलत है, कि नयेनगरकी प्रतिष्ठामें जो चन्दा हुआ था, वह इसी गरजसे हुआ था कि, महाविद्यालयमें अंग्रेजी और संस्कृत दोनोंकी उच्चश्रेणीकी शिक्षा दी जावे। जिस विद्यालयके लिये चन्दा हुआ था, उसके हम मेम्बर हैं। वह चन्दा केवल संस्कृत धर्मविद्याकी शिक्षाके लिये हुआ था। उस समय कालेजका रोरा मचानेवालोंका सद्भाव ही नहीं था। आपको शक हो, तो अजमेरसे उस चिट्ठेका कच्चा खरडा मँगाकर देख लीजिये। महाविद्यालय और कालिज शब्दका एक ही अर्थ है, परन्तु अभिप्राय भिन्न भिन्न है। जैनियोंका महाविद्यालय और उसका द्रव्य केवल संस्कृत धर्मविद्याकी उन्नतिके लिये है, उसमें अंग्रेजी विद्या व्यवहार चतुर होनेके लिये गौणरूपसे है, मुख्यरूपसे नहीं प्रारंभसे ही उसका यही उद्देश है। उद्देश्यको आप न बदलिये। जैनियोंमें हम कालिजकी सर्वथा आवश्यकता नहीं समझते है, परन्तु यदि आप उसको विशेष आवश्यक समझें, तो स्थापित कीजिये। हम विरोध नहीं करेंगे। परन्तु महाविद्यालयके अभिप्रायको न बदलिये। उसको हाईस्कूल, तथा कालेजसे सर्वथा भिन्न ही रखना होगा। अभी ज्यों त्यों करके इस विवादका अन्त हुआ है और मुंशी चम्पतराय साहबने स्पष्ट कह दिया है कि, इस द्रव्यसे केवल धार्मिकविद्याकी उन्नति होगी। अब आप फिरसे एक नया झगड़ा खडा न कीजिये। ऐसे २ परस्पर विरोधी लेखोंसे लोगोंके जीमें जुदी २ भावनायें उत्पन्न होती हैं।

सम्पादक।

महाविद्यालयका स्थानान्तर।

जैनमित्र अंक ७ पृष्ठ ३ में बाबू नेमिदासजी वकील सहारनपुरकी ओरसे लिखा है कि, मैं भी कहता था कि, महाविद्यालय जयपुर भेज दिया जाय।

बाबू अर्जुनलालजी सेठी बी. ए और कई और भाइयोंके मुंहसे मैंने यह सुना था कि मथुराजीमें महाविद्यालयकी दशा अच्छी नहीं है और जब तक महाविद्यालय वहां रहेगा उसमें कोई उन्नति न होगी। इस अभिप्रायसे कि जैनजातिमें धर्मविद्याका प्रचार यथोचित होने लगे, मेरी राय थी कि मथुराजीसे उठाकर महाविद्यालय किसी ऐसे स्थानमें भेज दिया जाय, जहां जैन विद्यार्थियों और साहसी प्रबंधकर्ताओंकी संख्या अधिक हो। दिल्ली, खुर्जा, अम्बाला, बनारस, जयपुर आदि कई स्था-

नोंके नाम लिये गए । केवल जयपुरकी ओरसे बाबू अर्जुनलालजी सेठी ही एक ऐसे धीर पुरुष अधिवेशनमें उपस्थित थे, जिन्होंने महाविद्यालयको जयपुरमें ले जाकर यथोचित प्रबंध करनेका साहस प्रकट किया । इस हेतुसे मैंने भी उनकी पुष्टि की होगी । परन्तु जयपुरके जानेमें भी मुझे कई प्रकारकी शंका होती थी । जयपुर अंग्रेजी अमलदारीसे बाहिर है । जयपुरके जैनियोंने कोई अपनी ही बडी पाठशाला नहीं बना रक्खी है, तो इस अभ्यागतकी क्या सेवा करेंगे ? सेठीजी बडे साहसी हैं, परन्तु महासभाके अधिकारियोंसे कुछ अनबन हो जाय तो जयपुरमें महाविद्यालयको कौन सभालेगा ? इत्यादि शंका मैने और डिपुटी चम्पतरायजीने वहीं उसी समय प्रकट कर दी थीं ।

रात्रिके अधिवेशनमें मेरे सामने यह वार्त्ता समाप्त नहीं हुई । मै अत करणसे यह चाहताथा कि, महाविद्यालय सेठ मेवारामजीके प्रबधमें खुर्जा चला जाय । परन्तु उस समय सेठजी अथवा उनका कोई प्रतिनिधि नथा, बात योंही लटकती रही ! " मथुराजीसे महाविद्यालय उठा लेनेमें तो बहुसम्मति थी, परन्तु यह निश्चय नहीं हुआ कि, और कहा भेजा जाय ।" मै तो दूसरे दिन सहारनपुरसे चला आया । बादमें मैने सुना कि, महाविद्यालय सहारनपुरमें लाना निश्चित हुआ । फिर यह भी सुना कि, भले बुरे महाविद्यालय सहारनपुरम आ गया ।

सहारनपुरमें जैनियोंकी सख्या बहुत है । यहाके जैनी धर्मात्मा है—धनाढ्य हैं—यदि अंग्रेजी मदरसा अथवा कालिज न भी खुला, तो क्या हानि है? धर्मोन्नतिके प्यारे संस्कृतके महाविद्यालयहीको भली रीतिसे चलावें । यह भी तो धर्महीका काम है । स्थानान्तर तो जो होना था, सो हो गया—उसके लिये किसीको क्या दोष देना है । अब तो प्रबंध करना है और ऐसा प्रबंध जिसमें धर्मकी महिमा हो । सहारनपुरवालोंका कर्तव्य तो यह है कि, इस कार्यको अपना समझकर तन मन धनसे सहायता करें और महासभाको यह उचित है कि, शीघ्र ही सहारनपुरपर दोषारोपण करके वहाके कार्यकर्त्ताओंको हतोत्साह न करें । मथुराजीमें महाविद्यालयको सेठ द्वारिकादासजीका बडा सहारा था । परन्तु सहारनपुरकी बिरादरी भी तो सर्वथा असमर्थ नहीं है । पक्षपातको छोडकर कुछ काल सहारनपुरकी कार्यवाही देखी जाय—कोई आश्चर्य नहीं कि सहारनपुरवालोंका उद्योग सफल हो ।

हमारी जैनजातिमें कार्यकर्त्ताओंका बहुत घाटा है । यह सम्भव है कि, डिपुटी चम्पतरायजी और बाबू बनारसीदासजीसे अनेक बार भूल चूक हुई हो । ऐसे लोगोंको उनकी भूलकी सूचना देना ठीक है । परन्तु समाचारपत्रोंमें विरोधाग्निके प्रचण्ड करनेवाले समाचार तथा आक्षेप न निकलने चाहिये । जैनियोंकी गणना प्रतिवर्ष घटती जाती है । अब भी जैनियोंने विचारपूर्वक व्यवहार न किया, तो लोगोंकी श्रद्धा बिगड जायगी । जैनी जैनीके साथ सहानुभति न करेगा तो जैनियोंमें परस्पर प्रीति तो क्या वैर और घृणा उत्पन्न हो जायगी और जैनधर्मका सूर्यास्त हो जायगा ।

लाहौर । २५-१-१९०७. } जियाराम एम· ए·

जैनकौमकी हालतका फोटू ।

पहिले नमू अरिहतको श्री, सिद्धजी आचार्यको ।
उवझाय साधू सर्व जिन भ्रम,-तम हरा ससार्यको ॥
फिर नमत हू जिनबानको, गुनज्ञानकी जो खान है ।
भवरोग नामन पैनि छिनी, मुक्तकी सोपान है ॥
कहनेको हू कुछ हालमे पर, कुछ कहा जाता नही ।
धीरज न टुक दिलको कहे बिन, भी रहा जाता नही ॥
हैं हम वही जैनी कभी, लौ लीन थे निजधर्मपर ।
नामी थे बाहम प्रीतमें, तत्पर थे किरया कर्मपर ॥
देते थे तनमनधन खरच, धर्मोन्नतीपर हम सदा ।
जात्युन्नती विद्योन्नतीपर, दिलसे होते थे फिदा ॥
हमने कभी निजभ्रातको, निर्धन नहीं होने दिया ।
दृढधर्मपर रक्खा सदा, श्रद्धान नहिं खोने दिया ॥
नामी थे करुणादानम, धन खर्च करते थे अती ।
थे हम धनी गुणवान अरु, धर्मज्ञ साचे समकिती ॥
यह बात अब मशहूर है, यहापर न बल्के दूर है ।
जिन जातिका जो प्रेम था, अब तक वह बादस्तूर है ॥
पर प्रीत हमरी चल बसी, नहिं जानते किस पापसे ।
जो भ्रात लडते हैं परस्पर, और बेटा बापसे ॥
वह भी समय था जिस समय, ससारमें जिनधर्म था ।
श्रद्धालु थे जिनधर्मके सब, और मिथ्या भर्म था ॥
डका बजै था जैनका, झडा गडा था जैनका ।
उद्योत था जिनभानुका, आदर था श्री जिनबैनका ॥
अब हा! समय वह चल बसा, अब हा! समय वह चल बसा।
यह क्या हुई अपनी दशा, धन धर्म बल सारा नसा ॥
कुछ भी न हमको सोच था, जब धर्ममें गर धन बहा ।
अब धर्म कारण धन रहा ना, तन रहा ना मन रहा ॥
जात्युन्नती विद्योन्नतीका तब, सो था हरदम जिकर ।
अब जातका है सोच क्या, विद्याका हमको क्या फिकर ॥
हम को न चाह कुछ धर्मकी, औरोंकी चाहसे चाह क्या ।
गर होय जैनी अनमती, इस बातकी परवाह क्या ॥
बस बस इसी इक बातपर, लगती है चोंटें गालपर ।
दिल है बिकल मानस रुदन करता है इसही बातपर ॥
प्यारी दया वह कित गई, जिससे हमारा मान था ।
अब बज्र हिरदे हो गये, क्या था दया क्या दान था ॥
देते थे जब तो दान हम, अब मागने है भिक्ष हम ।
पर शोक कोई भीख भी, देता नही जाते हैं हम ॥
अब वह फिरें करते रुदन, बचे न जिन घर बाप मा ।
भूखसे हैं तंग नगे, तन न कपडा है जरा ॥
तुम कुछ न सुध लेते हो उनकी, भ्रात जो अँगहीन है ।
अपहाज हैं मोहताज हैं, लाचार दुखिया दीन है ॥
इनकी दशाको देखकर नहिं, दिल पिंघलता है जरा
क्या फिर दयालू हम रहे, जब हमने दिल पत्थर करा ॥
अफसोस! खोटे मार्गमे, जाता हमारा धन बहा ।
अब धर्म औ विद्यादयाको, पास ना पैसा रहा ॥
हाय! यह हालत हो गई, इस कौमकी अज्ञानसे ।
बिन ज्ञानके सच बात यह, तिर्यच हैं इसानसे ॥
जब ख्याल आता यह मुझे, लगती हैं दिलपर चोट तब ।
मैं नैन भर रोता हू तब, जाता हू दुखसे लोट तब ॥
जब जोश दिलमें ना थमा, औ मुझको बेकल कर दिया ।
तब कौमकी हालतका फोटू, खींच आगे धर दिया ॥
जो दिलमें आवे आपके सो, कीजिये अख्तियार है ।
ज्योती तो रोना रो चुका, आगे जवा लाचार है ॥

ज्योतीप्रसाद प· जे—
चाह पारश ष्ट्रीट, देवबद ।

श्रीजिनबिम्बनिर्माणविधि ।

समस्त धीमान् जैनी भाइयोंको विदित हो कि, इस पचमकालमें स्वर्गादि सुखोंको देनेवाली मुख्यतः श्री जिनभक्ति ही है और उस जिनभक्तिका आधार श्रीजिनेन्द्रकी प्रतिमा हैं । अब यदि वह प्रतिमा शास्त्रोक्त सौम्य प्रसन्नवदन समचतुरसस्थान आदि लक्षणोंकी धारणकरनेवाली हो, तो उसके दर्शनादि करनेमें भाव अच्छे लगते हैं और पुन्यबन्ध भी अधिक होता है । क्योंकि, जैसा बाह्य कारण मिलता है, वैसा ही कार्य होता है । परन्तु वर्तमानमें देखिए तो जैनीभाई प्राय पुन्यसचयार्थ बिम्बप्रतिष्ठा कराते रहते हैं । परन्तु दूरदर्शिता न करके प्राय उन प्रतिष्ठाओंमें अज्ञानी शिलावटोंद्वारा बनी हुई और अल्प निछरावलमें प्राप्त हुई, ऐसी शास्त्रविरुद्ध प्रतिमा लेकर उनकी प्रतिष्ठा कराते हैं, जिससे यथार्थ फलकी प्राप्ति न होकर प्रत्युत्त विपरीत फलकी प्राप्ति हो जावे, तो भी कोई अत्युक्ति नहीं है । इन सब वातोंको विचार करके महाशयवर पूज्य श्रावक भाई श्रीशीलचंदजी साहबने अपनी सूक्ष्मदृष्टिसे देखा तो प्रतीत हुआ कि, अधिकाश ज्ञानकी न्यूनता होनेसे शुभमें अशुभफल होता है । यदि हमारे जैनीभाइयोंके पास शास्त्रोक्त प्रतिबिंब निर्माणकी पृथक् पुस्तक संस्कृत मय वचनिकाके होवे, तो शुभ अशुभफलको जानकर शास्त्रसे विरुद्ध प्रतिमा नहीं लेवै, कारण शास्त्रविरुद्ध

प्रतिमा ऐसे फलको प्राप्त होती हैं । अर्थात् (तिरछीदृष्टि द्रव्यनाश) (नीचीदृष्टि पुत्रनाश) (ऊंचीदृष्टि स्त्रीनाश) (गुम्मदृष्टि शोक) (रौद्ररूप स्वामीनाश) (दुर्बलअंग द्रव्यनाश) (सूक्ष्मअंग क्षीणता) (चिपटामुख दु ख) (नेत्रहीन नेत्रविध्वस) (बडा उदर उदररोग) (दुर्बलहृदय हृदयरोगी) (स्कंधहीन पुत्रनाश) (शुष्कजघा नरेंद्रनाश) (पादहीन प्रजाका नाश) (कटिहीन वाहन नाश) इस प्रकार कारीगरको प्रतिमा बनवानेवाले मालिकको और प्रतिष्ठाकारकको अशुभ फलकी प्राप्ति होनेसे यह ख्याल करके शीलचन्दजी साहबने जयपुरमे पंडित मंडली भोलीलालजी वगैरहसे कहकर प्राचीन पुस्तक बिम्बप्रतिष्ठापाठोंमे सपूर्ण प्रतिमाजी बनानेंकी विधिके जो लक्षण लिखे हैं, उन सब श्लोकोंकी वचनिका मय नकशेके खुलासा तौर पर तैयार कराई हैं, और नकाशा जयपुरमें खुलासा तैयार कराकर यहां विद्वानोंसे प्रचार करा दिया है । अब यह बात तमाम जैनीभाइयोंको मालूम होना वाजिब है, कि जयपुरमें पुस्तक और नकशा जैनपाठशालामे मंगाकर अपने पास रखना चाहिये । जिनको प्रतिमाजी बनवानी होवे, वे इसके मुताबिक प्रतिमाजी लेवै और जो बनानेंवाले प्रतिमाके कारीगर है, उनको नकशा देकर समझा देवै,जिससे विपरीत प्रतिमाजी नही बने और न अशुभ ली जावै और ली जावै तौ नकशे जो जयपुरमें कारीगर प्रतिमा बनानेंवालोंको दिये गये हैं, उनसे मुकाबला करके लेवैं । यहापर प्रतिमाजी बनानेंवाले कारगिर बहुत है और ज्यादा प्रतिमाजी यहा ही तैयार होती हैं, इस वास्ते सब देशातरमें जैनीभाइयोंको सूचना देनेकी आवश्यकता समझी गई है ।

हस्ताक्षर—

भोलीलाल सेठी । सर्वसुख खजांची ।

जमनालाल शाह ।

दरिद्रता ।

हे दारिद्र्य नमस्तुभ्यं सिद्धोऽहं त्वत्प्रसादतः ।
पश्याम्यहं जगत्सर्वं न मां पश्यति कश्चन ॥१

अर्थात्—हे दारिद्र्य ! तुझे नमस्कार है । मैं तेरे प्रसादसे सिद्ध हो गया हूं । क्योंकि मैं सम्पूर्ण जगत्को देखता हूं, परन्तु मुझे कोई भी नहीं देखता । साराश यह है कि, धनहीन पुरुषकी ओर कोई देखता भी नहीं है ।

दारिद्र्यमोऽस्त्वं परमं विवेकि
गुणाधिके पुंसि सदानुरक्तम् ॥
विद्याविहीने गुणवर्जिते च
मुहूर्तमात्रं न रतिं करोषि ॥ २ ॥

अर्थात्—हे दारिद्र्य ! तुम बड़े विवेकी हो, जो गुणवान् पुरुषोंमें हमेशा अनुरक्त रहते हो और विद्याहीन तथा गुणहीन पुरुषोंसे क्षणभर भी प्रेम नहीं करते । अभिप्राय यह है कि, गुणवान् दरिद्री होते हैं, और मूर्ख धनवान् होते हैं ।

दारिद्र्य शोचामि भवन्तमेव—
मस्मच्छरीरे सुहृदित्युषित्वा ।
विपन्नदेहे मयि मन्दभाग्ये
ममेतिचिन्ता क्व गमिष्यसि त्वम् ॥ ३

अर्थात्—हे दारिद्र्य ! मुझे तुम्हारा ही बडा सोच है कि, तुम मेरे शरीरमें ही मित्र बनकर ठहरे थे, सो अब मुझ मन्दभाग्यके मरनेपर मुझे यह चिन्ता हो रही है कि, तुम कहां जाओगे ?

परीक्ष्य सत्कुलं विद्यां शीलं शौर्यं सुरूपताम् ।
विधिर्ददातिनिपुणः कन्यामिव दरिद्रताम् ॥

अर्थात्—चतुर विधाता अपनी कन्याके समान दरिद्रताको अच्छा कुल, विद्या, शील, शूरता, और रूपको देखकर देता है । भाव यह है कि, दरिद्रता अच्छे कुल शीलादिवाले पुरुषोंके पास ही प्राय देखी जाती है ।

अम्बा तुष्यति न मया न स्नुषया सापि नाम्बया न मया
अहमपि न तया न तया वद राजन्कस्य दोषोऽयम् ॥ ५ ॥

हे राजन् ! माता न मुझसे संतुष्ट होती है, और न अपनी बहूसे, बहू न मुझसे तुष्ट होती है, और न मातासे । और इसी प्रकार मैं न उससे (मातासे) सतुष्ट होता हू, न उससे (बहूसे), सो यह किसका दोष है ? दरिद्रताका ।

(बाकी फिर)

मनोविनोद ।

एक—कवि जितने होते हैं, सब मूर्ख होते हैं ।

दूसरा—हां! यह मैं मानता हूं, परन्तु सब मूर्ख कवि नहीं होते । यह तुम्हें स्वयं अपने परसे ही स्वीकार करना पड़ेगा ।

एक विरहनी—सखी, मैं जानती हूं कि, विवाह करनेकी अपेक्षा कुएमें कूंद पड़ना अच्छा ।

दूसरी—हा ! यदि यह सन्देह हो कि, प्राणपति कुएमें छुपा हुआ है ।

बुढ़िया—(विधवासे) बेटी ! रो मत । इस तरह रोनेसे क्या गया हुआ पति मिल जावेगा ?

सुधारक विधवा—नहीं अम्मा ! परन्तु विधवा होनेका मुझपर यह पहला ही प्रसग है, इससे रुलाई आती है ।

रेलवेके तीसरे दर्जेके डिब्बेमें बहुतसे मुसाफिर आ गये । बैठने को जगह नहीं रही, इसलिये एकने गार्डसे प्रश्न किया कि, यहा 'दश मुसाफिर ही बैठें' ऐसा स्पष्ट लिखा हुआ है और मुसाफिर बहुत चढ आये है, यह क्या बात है ?

तब गार्ड बीचमें ही बोला, बाकी सब खड़े रहें ।

बाप—(बेटेसे) क्योंरे ! क्या करता है ?

बेटा—क्यों ? मै विचार कर रहा हूं ।

बाप—उमर भरमें शायद यह पहलीवार ही है ।

वृद्धपिता—अरे बेटा ! तेरी आखें न जाने कब खुलेंगी ! मेरा तो अब बुढापा.

कलियुगी पुत्र—(बीचमें ही) पिताजी जब तुम्हारी बन्द होगीं, तब !

ग्राहक—आपके अखबारमे बेहद झूठे इश्तहार छपते हैं, यह बडी गलती है ।

सम्पादक—और आप लोग उनपर विश्वास कर बैठते है, यह भी क्या हमारी ही गलती है ?

पत्रोंका सार ।

कबीरपंथी जातिसे अलग ।

लाला कुन्दनलाल जैनी साकिन हुसैनपुर कुछ दिनोंसे कबीरपंथको मानने लग गये थे । इसपर उनके सम्बन्ध छूटने लगे । लेकिन फिर भी उनकी एक लड़कीका सम्बन्ध बडौतके लाला नत्थूमल वा उग्रसेनके यहा हो गया । इसपर उक्त दोनों सम्बन्धियोंको पचान हस्तनागपुर और बडौतने जातिसे खारिज कर दिया है । परन्तु सुनते है, लाला सुलतानसिंह वगैरह उनकी मददमें खिलाफ पंचायत कर रहे हैं, ये उचित नहीं है ।

आगरेमें जैनबोर्डिंग ।

बडी खुशीकी बात है कि, आगरे निवासी

जैनीभाइयोंमें उत्साह बढ़ रहा है। कुछ दिन पहले बम्बईके शेठ माणिकचन्दजीका एक पत्र लाला गोपीनाथजी रहीस और बाबू देवीप्रसादजी रहीसके नाम इस विषयमें आया था कि, आगरेमें कोई पाठशाला या बोर्डिंगहौस होना चाहिये। इसपर यहां एक अपील की गई थी और उससे लोगोंने जैनबोर्डिंगस्कूलके कायम करनेका प्रबन्ध किया था। उस समय तो प्रबन्ध बड़े जोर शोरसे शुरू हुआ था, परन्तु फिर दूधके उफानकी तरह ठंडा हो गया। अब उसमें कोई भी कोशिश नहीं करता है। बल्कि यह कहकर कि, शेठ माणिकचन्दजी यहा आकर इस कामको नये सिरेसे प्रारंभ करेंगे, छोड दिया गया है। इसलिये शेठजीसे प्रार्थना है कि, या तो स्वयं आकर इस कार्यको करावें, या पत्रद्वारा प्रेरणा करें। क्योंकि यहांपर इसकी बडी आवश्यकता है। इस धर्मकार्यमें लाला गोपीनाथ, देवीप्रसाद व पदमचन्दजी रहीसने बड़ी सहायता की है। श्रीजी उनके हृदयमें इसी तरह धर्मोत्साह बनाये रक्खें। उन्होंने इसके लिये एक अच्छा सुन्दर मकान बनाकर दे दिया है। सिर्फ काम शुरू करनेकी देरी है।

आगरेमें जैनसभा।

बडे शोककी बात है कि, आगरेमें जैनियोंकी बड़ी भारी बस्ती और अनेक धर्मात्मा भाइयोंके होते हुए भी एक भी जैनसभा नहीं है। न मालूम ऐसी कौनसी भूलकी नींद आगरावासियोंपर छाई है कि, बारबार कोशिस होनेपर भी सभा कायम नहीं होती। यहांपर दीगर मतमतान्तरोंकी अनेक सभायें है, तो भी जैनियोंको अपनी सभाका ख्याल नहीं होता। इसीसे हमारे जैनी भाई दूसरी सभा सुसाइटियोंमें जाकर अपना नाम लिखाते हैं। और फिर उन्हींके मतको मानने लग जाते हैं। इससे जैनधर्मकी बड़ी क्षति होती है। सम्पूर्ण भाइयोंसे और विशेषकर जैनमहासभासे निवेदन है कि, अब सोनेका वक्त नहीं रहा है। ऐसे २ नगरोंमें जहां जैनी लोग रहते हैं, उपदेशकोंको भेजकर जैनसभा कायम करनेका प्रयत्न होना चाहिये, जिससे कि धर्मकी उन्नति हो।

आर्यसमाजियोंका सम्बन्ध।

उपदेशकोंके अभावसे, धर्मतत्वोंके न जाननेसे बड़े दुःखकी बात है कि, हमारे बहुतसे जैनी भाई धर्मभ्रष्ट होकर आर्यसमाजी बन गये हैं। परन्तु अभीतक उनका बिरादरीसे कोई भी प्रबन्ध नहीं हुआ है। यह बडी भूल है। मेरी समझमें उनके साथ वही सलूक करना चाहिये, जो विधवाविवाह करने वालोंके साथ किया जाता है, अर्थात् इनको जातिसे खारिज करनेका बन्दोबस्त होना चाहिये, जैसा कि वैष्णवादि धर्मानुयायियोंने किया है।

शीतलागली आगरा— } D S JAINI, C. M S

पुस्तक समालोचना।

स्त्रीशिक्षा—खंडवानिवासी बाबू माणिक्यचन्द्र, बी. ए., रचित और प्रकाशित। मूल्य दो आना। पुस्तक जैनकन्यापाठशालाओंकी शिक्षाप्रणालीके लिये लिखी गई है। इसमें पहले, पूर्वकालकी स्त्रिया पढी लिखी होतीं थीं, उनके कारण हमारा देश उन्नत था, स्त्रियोंको पढनेका स्वत्व है, स्त्रियोंके सुशिक्षित हुए विना समाज तथा देशकी उन्नति नहीं हो सकती है, आदि बातें लिखकर स्त्रीशिक्षाकी आवश्यकता दिखलाई गई है। फिर स्त्रियोंको स्वतंत्रता देनेकी बात लिखी गई है। लेखक अभी एक नवयुवक हैं। आपके मगजमें पश्चिमी बू खूब भर रही है। आप कहते हैं "इस देशके लोग स्त्रियोंसे ऐसे २ काम लेते है कि, जो सेवकोंद्वारा किये जाने चाहिये। रोटी पकाना, वर्तन मलना, बुहारी करना, और लीपना, पोतना ये स्त्रियोंके कर्तव्य नहीं है। खास दशामें स्त्री क्या पुरुष भी इन्हें करे, तो अनुचित नहीं, परन्तु हर दशामें ये स्त्रियोंके कर्तव्य नहीं।" आगे आप स्त्रियोंको इग्रेजी पढ़ानेकी पुष्टि करते हुए कहते है "जितनी बातें स्त्रियोंको जाननी चाहिये, उतनी न तो हिन्दी साहित्यमें हैं, न किसी देशी साहित्यमें हैं। हम सच कहते हैं कि, हमारे ग्रन्थ भी समयकी इस मागको पूरी नहीं भर सकते, (वेशक! उनमें न स्त्रीस्वातन्त्र्यमर्हतिका सिद्धान्त भरा है न?) इस लिये लड़कियोंका अंग्रेजी पढ़ाया जाना भी उत्तम है। (इसके बिना पार्लीमेंटमें भरती होनेका प्रयत्न कैसे होगा?) ये पढी लिखी स्त्रिया आगेकी सन्तानके लिये अंग्रेजी साहित्यकी सहायतासे स्वयं समयानुकूल हिन्दी साहित्य तैय्यार कर लेंगी" (परन्तु हिन्दी साहित्यकी जरूरत ही क्या होगी। स्त्रियां अंग्रेजी पढेंगी, उनके बालक अंग्रेजी पढेंगे, फिर यह व्यर्थ का झगडा क्यों?) आगे धार्मिक विद्याकी रुचि प्रगट करते हुए आपने फरमाया है "आजकल भारतमें इस विषयका बड़ा जोर है। चारों ओरसे इसीकी आवाज सुनाई पड़ती है। लोग धार्मिक विद्याके ही ऊपर अधिक जोर दे रहे हैं। इसके लिये विश्वविद्यालय कायम हो रहे हैं और वजीफे नियत हो रहे हैं। इसके विरुद्ध कुछ कहना अपनी जान आफतमें डालना है" (नहीं साहब! खूब कहिये, और प्रयत्न कीजिये, जिसमें लोग इन्हें तोड़कर फेंक देवें) फिर आप स्त्रियोंको छोड़कर पुरुषोंके लिये भी तत्वविद्याकी अनावश्यकता दिखलाते हुए राय देते हैं कि, "हमारे देशको इस समय तत्ववेत्ताओंकी जरूरत नहीं है। हमें वीरोंकी आत्मत्यागियोंकी साहसियोंकी और पैसा कमानेवालोंकी आवश्यकता है। क्या तत्वशास्त्रमें विशारद मातायें तथा पिता ऐसे पुत्र उत्पन्न कर सकते है? कदाचित्(?)नहीं।" बस, लेखक महाशयकी धर्म तथा तत्वनिष्ठताका परिचय उपर्युक्त थोडेसे उल्लेखोंसे अच्छी तरहसे हो जावेगा। आपका साराश केवल इतना ही है कि, **येन केन प्रकारेण** आर्थिक उन्नति करो, धर्मतत्वोंको कुएमें पडने दो। सच है, **भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः**। बस, देशकी उन्नति होगी, तो ऐसे ही लोगोंसे होगी। तत्ववेत्ताओंके हिन्दुस्थानमें ढेर लगे हुए हैं, कोई पूछता भी नहीं है। तत्ववेत्ता वीर नहीं हो सकते, आत्मत्यागी नहीं हो सकते, और साहसी नहीं हो सकते। वाह! कैसा बढिया तत्त्व शोधकर निकाला है। देशका उद्धार इसी तत्त्वसे होगा। जैनयंगमेन्सएसोसियेशनको आपका यह प्रस्ताव अवश्य ही मान्य करना चाहिये।

भगवाननामसागर—अर्थात् संस्कृतभाषादि शब्दोंका नामावलीकोष—लाला भगवानदास जैन लखनौ विरचित और प्रकाशित। हिन्दीमें ऐसे कोषकी बड़ी भारी आवश्यकता थी। इसमें अकारादि क्रमसे प्रत्येक नाम वा शब्द लिखकर उसके जितने पर्यायवाची शब्द मिले हैं, लिख दिये हैं। सरलसे सरल शब्द नामावलीके आदिमें दिया है। और सुभीतेके लिये पीछेसे उसकी एक पृथक् वर्णानुक्रमणिका लगा दी गई है। प्रत्येक नामके पर्यायवाची नाम लिखकर उससे नामान्तर बनानेकी विधि भी लिख दी गई है। विद्यार्थी और विशेषकर कविगण इससे बहुत कुछ काम उठा सकते हैं। रायल साइजके १९० पृष्ठका मूल्य ।।।) कुछ अधिक नहीं है। प्रत्येक विद्याभिलाषीको यह कोष मँगा-

कर ग्रन्थकर्ताके परिश्रमको सफल करना चाहिये। इस ग्रन्थमें एक बात बडी विचित्र देखी कि, प्रत्येक ग्रन्थकर्ता प्रारंभमें अपने इष्ट देवका मंगलाचरण करता है। परन्तु इसमें ऐसा नहीं है। ग्रन्थकर्ता अपनेको जगह २ जैनवैशावंतस और जैन लिखते हैं, और जहांतक हमको ख्याल है, जैनधर्ममें आपकी श्रद्धा भी है। परन्तु मंगलाचरणमें आपने मूषकवाहन, गजवदन, शंकर पार्वती आदि सबको नमस्कार कर डाला है। "दास प्रणाम करै कर जोरि गणाधिपको गिरिजाको गिरीशको" कहकर आप सबके अनन्यभक्त बन गये हैं। हम नहीं कह सकते, आपने ऐसा क्यों किया? जैनियोंके लिये यह बडी ही लज्जाकी बात है। हमको इससे बहुत शोक हुआ। ग्रन्थकर्तासे प्रार्थना है, कि वे अपनी इस गलतीका शोधन करें।

विविध समाचार।

नवीन विद्वानोंके मतके अनुसार अभीतक जिसका शोध नहीं लगा है, ऐसा दो करोड़ वर्गमील पृथ्वीका पृष्ठभाग बाकी है।

तम्बाकू बिलकुल नहीं पीनेवाले एक मात्र स्वीडनके राजा ओस्कार हैं। हमारे बादशाह सातवें एडवर्ड बड़े जबर्दस्त बीड़ी पीनेवाले हैं। रूसके जार प्रतिदिन ३० बीडी पीते हैं।

संसारमें सबसे कीमती रेलगाड़ी जर्मनीके बादशाहकी है। उसके बनानेमें दो लाख पौंड खर्च हुए हैं। उसमें बड़े बड़े बारह डिब्बे हैं, जो तीन वर्षमें तयार हुए थे।

दिल्लीका तख्ताताऊस जिसे नादिरशाह लूटमें ले गया था, वर्तमानमें इराणके बादशाहका सिंहासन है। उसका मूल्य साढ़े तीन करोड़ रुपये है। संसारमें इतना मूल्यवान् राजासन दूसरा नहीं है।

कोहनूरकी जोडका एक हीरा ईराणके शाहके मुकुटमें लगा हुआ है। वह १॥ इंच लम्बा और एक इंच चौडा है। कहते हैं, वह ईस्वी सन्के ३००० वर्ष पहलेका है। लोग उसे प्रकाशसागर कहते हैं।

हमारे बादशाह सातवें एडवर्ड गणितविद्यामें बड़े ही प्रवीण हैं। वे ट्रिनटी कालेजके सेकैंड रेंग्लर हैं। उन्हें इतिहास और विशेष करके चरित्रग्रन्थ बहुत पसन्द हैं। उनका पुस्तकालय बहुत बडा है।

वर्तमानमें सारे यूरोपमें ६९०००००० हथियारबन्द सिपाई हैं। यदि वे एक लाइनमें खडे किये जावें, तो १९०० मील जगह रुक जावेगी।

अलीगढ कालेजका निरीक्षण करते हुए अमीर साहबने कहा था कि, "यूरोपकी विद्या मत सीखो, यह मैं कभी किसीसे नहीं कहूंगा। उसे जरूर सीखो, परन्तु स्वधर्मनिष्ठा अचल रखके सीखो। मैं अपने हबीबुल्ला कालेजमें ऐसी ही विद्या सिखलाता हूं।"

सुनते हैं, जर्मन भाषामें जैनियोंके दो तीन पेपर निकलते हैं। जर्मनीमें अनेक लोग जैनधर्मका पालन करते हैं। जैनियोंकी फिलोसोफीपर वे मोहित हो रहे हैं।

बिकानेरके महाराजने अपनी वर्ष गाठकी खुशीमें अपनी प्रजाको प्राथमिक शिक्षण मुफ्त देनेकी उदारता दिखलाई है।

बम्बईकी म्यूनिसिपालिटीने फोर्टमें चूहोंका हत्याकाड करनेका प्रारंभ किया है। इसके विरुद्ध बम्बईमें एक बडी भारी सभा हुई थी, जिसके समापति मि. वसनजी नथू हुए थे। फल प्रगट नहीं हुआ।

बंगालमें स्वदेशीआन्दोलन खूब जोरसे और अविश्रान्त रीतिसे हो रहा है। बाबू सुरेन्द्रनाथ बानर्जी प्रतिदिन बड़ी २ सभायें करके व्याख्यान दे रहे हैं। बाबू लालमोहन घोष, और विपिनचन्द्र पाल भी पूर्व और उत्तर बंगालमें यही उद्योग कर रहे हैं।

श्री श्वेताम्बरजैन कान्फरेंसके इस अधिवेशनमें जैनबेंकके विषयमें एक प्रस्ताव पास होनेवाला है। जैनियोंके धर्मादा खाते तीर्थक्षेत्र वगैरहके इतने हैं कि, यदि उनकी पूंजी एकत्र की जावे तो सहज ही एक करोडसे अधिक रुपये इकट्ठे हो सकते है। यह पूंजी सरकारी नोटों और दूसरी कोठियोंमें पड़ी न रखकर एक स्वतंत्र बेंक खोलकर रक्खी जावे तो अच्छा हो। प्रस्तावकी यही मंशा है।

गत ता० १० फरवरीको बम्बईके मूलजीजेठा मारकीटके हालमें जौहरी शेठ माणिकचन्द हीराचन्दजी जे पी. के समापतित्वमें एक सभा हुई थी। जिसमें पं० लालनने "समस्त दिगम्बर श्वेताम्बर तथा ढुंढियोंकी एक कांग्रेस हो सकती है, या नहीं" इस विषयपर एक व्याख्यान दिया था।

गत १९०६ में बम्बई प्रान्तमें कुल ८३१ पुस्तकें और ४४९ समाचारपत्र प्रकाशित हुए थे। पुस्तकोंमें ३७ इंग्रेजी, २९४ गुजराती, २५ हिन्दी, १८३ मराठी, ९ कनडी, ९३ सिंधी, और २७ उर्दू आदि भाषाओंकी थीं।

अभी हालही बाबू विपिनचन्द्रने इलाहाबादमे जो व्याख्यान दिया था, उसमें आपने कहा था कि "राष्ट्रीय नियमोंसे देशियोंकी देखरेखमें शिक्षा देना ही राष्ट्रीयशिक्षा है। शिक्षाकी मुख्य नीव मातृभाषापर होनी चाहिये, विदेशी भाषापर नहीं। अंगरेजोंने अपने लाभके लिये हमको अँगरेजी पढाई थी, कुछ हमारे फायदेके लिये नहीं। सरकारी स्कूलोंमें उसी ढँगकी शिक्षा दी जाती है, जिससे हम लोगोंके विचार ऊंचे न होने पावें, परतंत्रतामेंही अपना जीवन व्यतीत करें।" कालेज कालेज चिल्लानेवालोंको पाल महाशयके वाक्योंको ध्यानसे पढ़ना चाहिये।

अपवित्रताका आन्दोलन होनेसे विलायती चीनीकी आमदनीमें एक करोड रुपयेकी कमी हुई है।

३१ मार्च सन् १९०७ को पूरा होनेवाले वर्षमें अंगरेजी राज्योंसे १ अरब ७८ लाख २४ हजार ५३३ रुपयेका माल हमारे देशमें आया था। दूसरे राज्योंसे २८ करोड २६ लाख ३३ हजार ६४९ रुपयेका माल जुदा आया था। जिस देशसे रुपया इस तरह खींचा जा रहा है, उसकी न जाने क्या दशा होनेवाली है।



हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको मथनकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है। इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठंडक पहुचती है। बदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूर होकर लहू और ताकत बढ़ती है। फी सीसी ॥=) डा. ख. ।)

निमकसुलेमानी।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, बदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, बवासीर प्रमेहनाशक है। स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है। फी शीशी ॥) डा. ख. अलग

दंतकुसुमाकर।

इसके लगानेसे दांतोंका हिलना मसूड़ोंका फूलन, खूनदर्द आदि आराम हो दांत मोतीकी तरह चमकते हैं। रोज लगानेसे दांत आजन्म दृढ बने रहेंगे। फी डिब्बी ।)

दवा दादकी।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादौंकर भगाती है। फी डिब्बी ।)

गंधकवटी।

यदि बालकोंको हमेशा स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसे मंगाइये इससे बच्चोंका ज्वर खासी दस्त वायुरोग दूर होकर खूब मोटा ताजा हो जाता है इसकी गोली रोज खिलाना चाहिये. कीमत ।॥) सी. डा. ‍=

पंचतिक्तवटिका।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है। इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते हैं। कि० ।॥) डा० =)

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई।

प्रमेहनाशक अपूर्वताकतकी दवा।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनको सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना प्रसगकी इच्छा न होना, नपुसकता, नाताकती, कमरमें दरद, थोडा चलनेसे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुशकी वा जर्दी, बदनमें फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्बलता, रगोकी कमजोरी. उठती जवानीमें कुचालसे पैदा हुई नामर्दी, आदि सब रोग जड़से नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है। जिसमें उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आंखोंमें रोशनी, बदनमें फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है। मूल्य १ डिब्बाका २।॥), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १३) खर्च माफ.

श्वासारिष्ट।

इससे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है। कीमत १) डा० ।॥)

नपुंसकत्वारि तैल।

इसके लगानेसे गुप्तभागसबंधी सर्व प्रकारके रोग दूर होते हैं। फी सीसी १) डाकखर्च ≡)

प्रदरातक चूर्ण।

इससे स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस संबंधी सर्व विकार दूर होते है। कीमत १) डा० ≡)

नयनामृत सुरमा।

इसके लगानेसे आखोंका जाला धुन्ध, फुली, पानी, बहना, सुर्खी, पलर आदि नेत्ररोग दूर होते हैं और ज्योति बढाता, ठेडक रखता और पढते २ आंखों नहीं थकती हैं। फी शीशी १) लगानेकी सलाई।

जैनग्रंथसंग्रह।

इसमें छोटी २ पचास पुस्तकोंका संग्रह है। यही एक पुस्तक पास रखना काफी है। सुन्दर टाइपसे पुष्ट कागजपर छपी है। जल्दी मंगाइये। ऊपरसे सुन्दर जिल्द बंधी है। मूल्य पोष्टेजसह ॥)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य, आयुर्वेदीय औषधालय—इटावा (U. P.)

उत्तम और सस्ते जैनपुस्तक॥

जैनग्रन्थसंग्रह

छप गया! छप गया!! छप गया!!! जिस पुस्तकके लिये ग्राहकगण चिट्ठियोंकी भरमार कर रहे थे वही फिर दूसरी बार छप गई साथही मूल्य भी कम कर दिया है इसमें छोटी बडी सस्कृत और भाषाकी ५० पुस्तकोंका संग्रह है परदेशमे केवल यही एक पुस्तक पास रखना काफी है सुन्दर टाईपसे पुष्ट कागजपर छपी और जिल्द बंधी है जल्दी न मगानेसे पछताना होगा कि ०॥) डा० माफ।

व्याख्यानरत्नमाला।

विद्या, धर्म, सत्संगति, कुरीतिके विषयमें ४ भाग	=)
नवीन होली सग्रह, एकवार अवश्य पढिये ...	)॥
सागीत मनोरमा (नौटकीकी राहमें) ...	=)
सांगीत नेमचन्द्रिका (नौटकीकी राहमे) ...	=)
जैनभजनसग्रह (चालें भी लिखी हैं) ..	=)
स्तोत्रशतक (अनेक रागोंमें १०० स्तुतियां हैं)...	=)
प्रश्नोत्तरमाला (चर्चाकी पुस्तक है) ...	-)
तत्वार्थ सूत्रजी मूल	-)
पञ्चमङ्गल पाठ	)॥
बारहमासा राजुलजी	)॥
बारहमासा सीताजी	)।
बारहमासा मुनिजी	)।
बारहमासा वज्रदन्त	)॥
वैराग्य भावना	)।
अध्यात्म पचासा ...	)।
दश आरती	)।
निर्वाणकाण्ड भाषा	)।
धर्मपचीसी	)।
हुक्का निषेध	)।
दु खहरण विनती	)।
सकटहरण विनती	)।
बारह भावना सग्रह	)।
समाधिमरण (एक विनती सहित) ...	)।
परमार्थ जकडी, बा० राजुल सोरठमे	)।
पुकार पचीसी	)।
जैनबालगुटका (बालकोंको पढाइये) ...	)।
इष्ट छत्तीसी निर्वाणकाण्ड गाथा	)॥
बाईसपरीषह, बारह भावना सहित	)॥
प्रश्नोत्तर नेमराजुल	)॥
आलोचनापाठ अर्थसहित	)॥
ब्याहला नेमिनाथ	)।
सामायक भाषा...	)।
सप्तऋषि पूजा	)।
निशभोजन भुंजन कथा	)।
भक्तामर सस्कृत व भाषा	-)

विदेशी खाड निषेध)॥ } दोनों १०० इकट्ठी लेने
बुढापेका विवाह)॥ } से २ रु० सैकडा

नियमावलि।

१ चार आनेसे कमकी पुस्तकें नहीं भेजते हैं।
२ एक किस्मकी ५ पु इकट्ठे लेनेसे १ मुफ्त।
३ डाक खर्च पाससे देते हैं ग्राहकोंको सिर्फ मनीआर्डर फीस देना होगी।

मिलनेका पता:—
बाबू चीरसिंह जैनी, इटावा (U. P.)

'कर्नाटक' प्रेस, मुंबई.

Registered No. B 288.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा मास्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मैनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेमें भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
हीराबाग-पो० गिरगांव-बम्बई

ॐ जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

वर्ष ८ वां] चैत्र कृष्णा २ संवत् १९६३ विक्रमाब्द। ता० २ मार्च सन् १९०७ ईस्वी। [अंक १० वां।

जैनमित्रके फाइल।

सप्तम वर्षके थोडेसे फाइल हमारे पास मौजूद हैं। हम उन्हे जल्दी बेचना चाहते हैं, इस लिये इस समय बहुत थोडी कीमतमें ग्राहकोंको मिल जावेगे। देर करनेसे दूनी कीमतमें भी नहीं मिल सकेंगे। जैनमित्रके सप्तमवर्षमें कैसे २ बढ़िया लेख छपे है, सो किसीसे भी छुपे नहीं है। हिन्दीके किसी भी जैनपत्रमें आज तक ऐसे बढ़ियां संग्रह करने लायक लेख नहीं छपे हैं। समाचार और थोडेसे समाज सम्बन्धी लेखोंके सिवाय बाकी सब ही लेख हमेशा पढ़ने योग्य और कामके हैं। इसके सिवाय जैनसिद्धान्तके १० फार्म और सुशीला उपन्यासका पूर्वार्द्ध (१० फार्म) भी उसके साथ मिलता है, जिन दोनोंकी कीमत पृथक् छपने पर कमसे कम १।) रु० होगी। ऐसे उत्तम फाइलको अप्रैल महीनेके अखीर तक हम सिर्फ १॥) में ही देना चाहते हैं, जिल्द सहित मंगानेवालेको १॥।) लेंगेगे और भी सुभीता यह है कि, डाकखर्च हम अपना लगा देंगे।

सुशीला उपन्यास

प्रथमभाग।

रायलके बडे २ अस्सी पेजोंका बहुत बढ़ियां उपन्यास जिससे कि मनोविनोदके सिवाय धार्मिक शिक्षायें भी मिलती हैं, तयार है। एक बार पढ़ना शुरू करनेसे फिर छोड़नेको जी नहीं चाहता है, मूल्य सर्व साधारणसे दश आना जैनमित्रके ग्राहकोंसे आठ आना। डाक खर्च माफ।

मैनेजर—जैनमित्र
पो० गिरगांव-बम्बई

दो नवीन पुस्तकें।

जैनपदसंग्रह प्रथमभाग।

कविवर दौलतरामजीके पदोंकी प्रशंसा करनेकी जरूरत नही है। सबही बालगोपाल उनके भजनोंके प्यासे रहते है। उनके एकही पदके पाठसे चित्त सब दुःख भूलकर आनन्दसागरमें गोते लगाने लगता है। प्रत्येक जैनीके घरमें यह पुस्तक रहना चाहिये। पहली वार दौलतविलासके नामसे हमने यह संग्रह छपवाया था, जो हाथोंहाथ उठ गया। अबकी बार छहढाला निकालकर जैन पदसंग्रहके नामसे निर्णयसागरके जगप्रसिद्ध टाइपमें छपवाया है। मूल्य भी पहलेकी अपेक्षा कम अर्थात् सिर्फ छह आना रक्खा है। अबकी वार प्रत्येक कठिन शब्दपर टिप्पणी दी गई है और बहुतसे नवीनपद भी संग्रह किये हैं।

जैनबालबोधक द्वितीयभाग।

जिसकी लोगोंको वर्षोंसे चाह थी। जैन पाठशालाओंके अध्यापकोंने जिसके विषयमें लिख लिखकर हमको तंग कर डाला, जिसके विना जैन परीक्षालयके क्रमकी पढ़ाई नहीं हो सकती थी, वह जैनबालबोधका दूसरा भाग तयार हो गया। पुस्तक कैसी बनी है, इसकी प्रशंसाकी जरूरत नहीं है। जैनियोंके प्रसिद्ध जैनमित्रके सम्पादकने इसकी प्रशंसाकी है। प्रत्येक जैनी बालकको तो यह पुस्तक पढना ही चाहिये, किन्तु प्रौढ पुरुषोंको भी इसके पढनेसे लाभ होगा। निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई देखने योग्य है। मूल्य आठ आना पोष्टेज अलग।

मगानेका पता—पन्नालाल जैन—
गिरगांव—बम्बई।

जरूरी नोटिस।

१ श्रीमती दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बईका दफतर मोरेनासे उठकर अब बम्बईमें आ गया है। बाबू फूलचन्दजी पाटणी इस सभाके सहायक महामंत्री (ज्वाइंट जनरल सेक्रेटरी) नियत हुए हैं। उन्हींकी देखरेखमें दफ्तरका कार्य होगा। इस लिये सभा सम्बन्धी सब प्रकारके पत्र व्यवहार इस पतेसे करना चाहिये.—

बाबू फूलचन्दजी पाटणी।
सहायक महामंत्री दि० जै० प्रान्तिक सभा
हीराबाग पोष्ट गिरगांव—बम्बई।

२इसी प्रकार जैनमित्रका आफिस भी मोरेनासे उठकर बम्बई आ गया है, इस लिये तत्सम्बन्धी समस्त पत्रव्यवहार भी आयन्दा नीचे लिखे पतेसे करना चाहिये।

मैनेजर जैनमित्र—हीराबाग
पोष्ट गिरगांव—बम्बई।

जैनमित्र.

चैत्र कृष्णा २ श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४३३
ता० २ मार्च सन् १९०७ ईस्वी ।

सम्पादकीय टिप्पणियां ।

विधवा विवाहका परिणाम ।

यरोपादि देशोंमें स्त्रिया एक पतिके मर जानेपर दूसरा, दूसरेके मर जाने पर तीसरा इस तरह इच्छानुसार पति किया करती हैं, इसीको विधवाविवाह कहते हैं । (विवाह शब्द कन्याके पतिसम्बन्धमें ही सयोजित होता है, विधवाके सम्बन्धमें नहीं । इसलिये विधवाविवाह यह प्रयोग ठीक नहीं है, तो भी हमारे देशके सुधारक महात्माओंने यह शब्द चलानेका प्रयत्न किया है, अस्तु) इस विधवाविवाहसे एक बड़ा भारी अनर्थ यह होता है कि, कन्याओंकी जगहको विधवायें भर देती हैं, कन्यायें कुँआरी बैठी रहती है । और यह नियम नहीं है कि, विधवा किसी रंडुएसे ही विवाह करें, इसलिये विधवायें उन नवीन युवाओंको ही अपना पति बना लेती हैं, जो कन्याओंके हिस्सेमें आना चाहिये थे । इस कारण उक्त सभ्य देशोंमें कुमारियोंकी संख्या बेहद बढ़ रही है । बीस बीस पच्चीस पच्चीस वर्षकी अगणित कुमारिया टकराती फिरती हैं और पति प्राप्त नहीं कर सकती है । युवावस्थामें काम किसको नहीं सताता ? और जहां स्वतत्रता देवीकी असाधारण कृपा है, वहाका तो कहना ही क्या है । सो ये कुमारी स्त्रियां बाजारी ढँगसे कामक्रीड़ा किया करती हैं । ऐसा करनेसे किसी २ को गर्भधारण हो जाता है । यद्यपि उन सभ्य देशोंमें गांव गांवमें ऐसे विदुरगृह (दोगले घर) बने हुए हैं, जहां ऐसी पापकी संतान हर एक स्त्री छुपकरके रख आ सकती है और वहां उसका पालन होता है । परन्तु प्रत्येक मनुष्यकी ऐसी सहजवृत्ति होती है कि, वह अपने पापका स्मारक संसारमें नहीं रहने देना चाहता । इसलिये वे सभ्य स्त्रियां बालहत्याका महत्पाप करनेको तत्पर हो जाती हैं । अभी कुछ दिनकी बात है कि, फ्रान्सकी राजधानी पेरिस शहरमें एक मनुष्यने किसी कुमारीसे विवाह करनेका निश्चय किया, परन्तु किसी कारणसे वह विचार रहित हो गया । तो भी कोर्टशिपकी पद्धतिसे वह कुमारी गर्भवती हो गई और एक दाईके यहा प्रसव करनेके लिये गई । उक्त दाईने पापमार्गसे गर्भवती होनेवाली स्त्रियोंके सुभीतेके लिये एक दवाखाना खोल रक्खा था । कुछ दिन पीछे जिसके साथ विवाह होना निश्चित हुआ था, उस पुरुषने पुलिसमें रिपोर्टकी कि, मेरी एक हीरेकी अगूठी अमुक कुमारीने चुरा ली है, इस कारण पुलिस उक्त दवाखानेमें कुमारीको पकडनेके लिये गई । परन्तु शोध करते समय कुमारीको बच्चेका कहीं पता नहीं लगनेसे और अन्य दश बीस प्रसव करनेवाली स्त्रिया जो वहा थी, उनकी संतानका भी पता नहीं लगनेसे पुलिसको सन्देह बढ गया । इस लिये उसने बहुत बारीकीसे जाच करना शुरू की । अन्तमें यह सप्रमाण सिद्ध हुआ कि, दवाखानेमें प्रतिवर्ष दोसौसे अधिक कुमारिकाओंका प्रसव होता है । परन्तु जो सतान होती है, उसे वह राक्षसी दाई टुकडे टुकडे करके एक बडी भारी भट्टीमें डालकर भस्मकर देती है ! ! । सभ्य देशकी इन रोमाञ्चित करनेवाली घोर लीलाओंको सुनकर विधवाविवाहके पक्षपाती महाशयोंको जरा मगजको ठिकाने लाकर विचारना चाहिये कि, कुमारिकाओंको जन्मसे विधवा बनाये रखनेकी अपेक्षा जो समाज एक वार उन्हे सधवा बननेका अवसर देकर फिर पापके उदयसे विधवा हो जानेपर उन्हें विधवा ही बनाये रखनेकी पद्धतिको अच्छा समझता है, वह क्या उन लोगोंकी अपेक्षा अधिक दयावान् और विचारवान् नहीं है, जो कुमारिकाओंको सधवा होने ही नहीं देता है और उनसे ऐसे घोर पाप कराता है ।

हाथीदांतकी चूडियां ।

जहातक हमको मालूम है, हमारे समाजमें हांथीदातकी चूडिया कोई स्त्रिया नहीं पहनतीं । परन्तु सुना है कि, गुजरात तथा मारवाड़में इसकी प्रवृत्ति है । श्वेताम्बर समाजमें यह प्रचार अधिकतासे देखा जाता है । जिन्हें स्त्रियां अपना एक साधारण शौक पूरा करनेके लिये पहनती हैं । उनसे कितने निरपराधी प्राणियोंका घात होता है, खेद है कि, लोग इसपर ध्यान नहीं देते । २१ जनवरी सन् १९०० के जामेजमसेदमें एक लेख निकला था कि, स्त्रियोंके इस श्रंगारके लिये प्रतिवर्ष ७० हजार हाथी मारे जाते है । अवश्य ही चूडिया पहननेवाली इस घोर हिंसाकी भागिनी होती है । क्योंकि हमारे शास्त्रके अनुसार कृत कारित और अनुमोदनासे पाप होते हैं और चूडिया पहिनना यह स्पष्टत यह कहना है कि, हमारे लिये हाथी मार कर लाओ । प्रसिद्ध दयाप्रचारक शा. लाभशंकर लक्ष्मीदासजीने इस विषयका एक लेख छपाकर सर्वत्र वितरण किया है और उसमें स्त्रियोंसे हाथीदांतकी चूडियोंके परित्यागके लिये उन्होंने आग्रह किया है जो सर्वथा उचित है । इसके परित्यागसे जीवदयाके सिवाय आर्थिक लाभ भी होगा । क्योंकि हाथीदांतकी चूडिया लकडी नारियल आदिकी चूडियोंसे बहुत महँगी मिलती हैं ।

सम्पादक समिति और सहयोगी जैनगजटका उलहना ।

आगनागरीप्रचारणी सभा हिन्दीके पत्र सम्पादकोंकी एक सभा स्थापित कराना चाहती है । हमारे सहयोगी जैनगजटने इस विषयमें बहुत कुछ आन्दोलन किया है । और अबकी वार सहयोगीने इस विषयमें मौनावलम्बनके कारण भारतमित्र बगवासीके साथ साथ हमको उलहना दिया है कि । परन्तु यथार्थमें इस विषयमें जैनमित्रकी सहानुभूतिकी आवश्यकता नहीं है । क्योकि यह एक जाति तथा धर्मविशेषका पत्र है, तथा इसमें पाक्षिक होनेके कारण यथेष्ट स्थानकी भी कमी रहती है, इस लिये इसका सम्पादक ऐसे विषयोंको गौण समझता है । और यह भी कोई बात नहीं है कि, जिन विषयोंकी चर्चा जैनमित्रमें नहीं की जा सकी हो, उन सबसे उसका सम्पादक उदासीन समझ लिया जावे । कई विषय ऐसे होते हैं, जिनमें सहानुभूति होते हुए भी लिखनेका अवसर नहीं मिलता, और यह समझकर छोड़ दिये जाते हैं कि, हमारे दूसरे सहयोगी इसकी चरचा कर ही रहे हैं, हमारे नहीं करनेसे कुछ हानि नहीं होगी । इसके सिवाय जब हमारा मुख्य सहयोगी इस विषयको अगुआ बनकर प्रतिपादन कर रहा है, तब हम समझते हैं, वह हमारी सबकी ओरसे कर रहा है । हम भी चाहते हैं, सम्पादक समिति शीघ्र स्थापित होवे ।

जैनविधिसे विवाह न करनेका प्रतिज्ञापत्र।

जिस फलटण नगरके एक बालकने यह प्रतिज्ञा की थी कि, मैं विवाह करूंगा, तो आर्षविधिसे करूंगा अन्यथा आजन्म कुंआरा ही रहूंगा, सुना है कि, उसी फलटण नगरके एक महानुभावने अपनी लड़कीकी सगाईके समय वर पक्षवालोंसे जो निम्बगावके रहनेवाले हैं, एक इकरारनामा लिखा लिया है कि, "जैनविवाह-पद्धतिसे विवाह नहीं करेंगे।" एक स्थानके दो पुरुषोंमें इतना वैषम्य वैसा ही है, जैसा समुद्रमें एकत्र रहनेवाले अमृत और हालाहल विषमें सुना था। हाय? ऐसे मूर्ख पुरुषोंसे जैनधर्मकी ऐसी अवज्ञा न जाने कबतक होगी? धिक्कार है, ऐसे लोगोंके जैनी कहलाने पर। पाठक! हम लोगोंके जो जातीयबल, तथा पंचायतीबल सर्वथा नष्ट हो चुके हैं, उनका आज स्मरण आ रहा है। यदि वह शक्ति हमारे पास होती, तो आज किसीको भी ऐसा कृत्य करनेका साहस नहीं होता। इस महत्पापके प्रायश्चित्तके लिये अपनी जातिसे आजन्म हाथ धोना पड़ता। यदि यह प्रतिज्ञापत्रकी बात सच्ची है, और फलटण निम्बगांवके जैनी भाइयोंमें कुछ जातीय बल है, तो उन्हें ऐसे धर्मनिन्दकोंके मदका दमन करनेके लिये कुछ प्रयत्न अवश्य ही करना चाहिये।

विलायत वस्तुओंमें मिलावट और अपवित्रता।

प्राय सब प्रकारका कच्चा माल हमारे भारतवर्षसे विलायतको जाता है। उसमें जाते समय किराया लगता है, पश्चात् वहा मजदूरी बहुत महँगी है, इसलिये पक्का माल बनानेमें खर्च बहुत पडता है। इसके पीछे एजंटों और दलालोंका कमीशन लगकर वह माल हमारे देशमें आकर बिकता है। परन्तु इतने खर्चे खाकर भी हमारे देशके बने हुए मालसे जहां प्रत्येक प्रकारका खर्च थोडा है, वह सस्ता बिकता है। इसका कारण यह है कि, विलायतमें विज्ञान तथा रसायनशास्त्रकी बहुत उन्नति है। इसलिये वहांके लोग प्रत्येक मालमें उसी प्रकारकी किसी दूसरी वस्तुका मिश्रण करते हैं, जो असली मालसे बहुत कम कीमती होता है। ऐसे किसी २ मिश्रणमें विलायतवासी जो अतिशय धर्मभ्रष्ट हैं, ऐसी कई चीजोंका प्रयोग करते हैं, जिनका नाम लेनेसे भी हमारे रोम खडे होते हैं। केशर तथा शक्कर आदिके समान सुनते है, कि, विलायती रेशम तथा ऊनमें भी अपवित्र चीजे मिलाई जाती है। हाल ही हमने किसी पत्रमे पढा है कि, विलायती कर्पूरमें भी चर्बी जैसी कोई सफेद २ अपवित्र चीज मिलाई जाती है। विलायती कपडोंमें अस्पर्श्य वस्तुके प्रयोगकी बात कुछ दिन पहले सुनी ही थी। विलायतकी मिलोंमें जो कपडे बनते है, वही यदि कपडे हमारे यहाकी मिलोंके बने हुए हो, तो उनकी अपेक्षा अधिक टिकाऊ होते है, इसका कारण भी यही है कि, अभीतक हमारे देशमे मिलावटी व्यापारका प्रचार नहीं हुआ है। इन सब बातोंके जाननेसे विलायती वस्तुओं पर असीम घृणा उत्पन्न होती है। श्रीजी भारतवासियोंको सुमति देवें कि, वे इन वस्तुओंके स्पर्शसे बचकर अपने जाते हुए धन और धर्मकी रक्षा करनेमें शीघ्र समर्थ होवे।

पचायतीयोंमें विलायती शक्कर।

अभीतक हम जानते थे कि, जैनियोंकी सम्पूर्ण पचायतियोमे विलायती शक्करका व्यवहार बन्द होगा। क्योंकि आगरा, मालवा, बुंदलखंड आदि-प्रान्तोंके जैनियोमे यद्यपि सब ही विदेशी शक्करके त्यागी नहीं है, तौ भी पचायतियोंके विवाह जीमनवार आदि कार्योंमें केवल देशी शक्करका ही उपयोग होता है। और यह इस स्वदेशी आन्दोलनके बहुत पहलेसे होता है। परन्तु यह जानकर हमको दु ख हुआ कि, अभी तक दक्षिणकी जैनपंचायतियोंमें इसका कोई प्रबन्ध नहीं है। अन्यत्र फलटणकी पचायतीके विषय जो लेख छपा है, उससे यह बात स्पष्ट विदित होती है। हम आशा करते हैं कि, दक्षिणकी तथा अन्यान्य स्थानोकी पचायतिया जहा शक्करके विषयमें कोई प्रतिबन्ध नहीं है, अब इसकी ओर अवश्य ध्यान देंगी। पंचायतीकार्योंमे ऐसी घृणित, अपवित्र वस्तुका व्यवहार होना बडी लज्जाकी बात है। यदि हमारे दक्षिणी सहयोगी, जिनविजय, जैनबोधक और जैनभाग्योदय इस विषयका आन्दोलन करैं, तो इसमें सफलता हो सकती है।

विहारमें धर्मशालाकी आवश्यकता।

अन्यत्र एक चिट्ठी मुद्रित है, उससे पाठक समझेंगे कि, विहारमे धर्मशालाकी कितनी आवश्यकता है, और वहां श्वेताम्बरी सज्जनोंकी ओरसे हमारा कितना अपमान होता है। पहले हम अपने समाजके धर्मात्मा धनिकोंसे विशेषकर विहार प्रान्तवालोंसे प्रार्थना करते हैं कि, वे उक्त स्थानमें धर्मशाला बनवानेका शीघ्रही प्रयत्न करैं, जिससे सातिशय पुण्य बंधके सिवाय यशकी भी प्राप्ति होवे। पश्चात् श्वेताम्बरी भाइयोंको और दिगम्बरी श्वेताम्बरी दोनोंको एक करनेवाले महाशयोंको सूचित करते है कि, परस्पर इतनी द्वेषबुद्धि रखना कल्याणकारी नहीं है। इतना भ्रातृभाव भी जब हम पालन नहीं कर सकेंगे कि, एक स्थानमें विश्राम कर सकें तो, फिर क्या तो देशकी उन्नति करेंगे और क्या धर्मकी एकता सम्पादन कर सकेंगे। सबसे पहले हमको वात्सल्यभाव बढानेका प्रयत्न करना चाहिये। जैनधर्मका सिद्धान्त है कि, किसी वनस्पतिको भी कष्ट न होने दो, फिर यह साक्षात् धर्मभाइयोंका अपमान करके उनके भावप्राणोंका घात करना कौन कहेगा कि, जैनियोंका धर्म है?

प्रवास और व्यापार।

दो सौ वर्ष पहले एक यूरोपीय विद्वान् लिख गया है कि, "समस्त नदिया जैसे समुद्रमें जाकर मिलती हैं, उसी प्रकार समस्त देशोंका द्रव्य भारतवर्षमे आकर समा जाता है।" इससे स्पष्ट है कि, कुछ काल पहले हमारे यहाके व्यापारी समस्त देशोंमें परिभ्रमण करते थे और वहासे अगणित द्रव्य लाकर देशको धनकुबेर बनाते थे। ससार भरका व्यापार उस समय हमारे हाथमे था। दूसरे देशके लोग हमारे यहाकी चीजोंको बडे चावसे खरीदते थे, और उनसे अपनी आवश्यकताओंकी पूर्ति करते थे। यही कारण था कि, उस समयके विदेशी लेखकोंने भारतवर्षको सोनेकी चिडिया बतलाया है। यहांके व्यापारी समस्त देशोंमें भ्रमण करते थे, इसमे केवल विदेशी लेखक ही प्रमाण नहीं है, किन्तु हमारे यहाकी प्रत्येक प्राचीन कथा और किम्बदन्तीसे इस बातका पता लगता है। पुण्यास्त्रव, आराधनासार, आदि कथाकोशोंको बांचिये, सैकडों कथायें आपको ऐसी मिलेगी, जिनमें यह लिखा हुआ है, अमुक सेठका पुत्र जहाजोंमें माल भरकर अमुक द्वीपको गया, वहांसे फिर अमुक द्वीपको गया, वहा इतना द्रव्य कमाया, वहांके राजासे सम्मानित हुआ, और फिर वहासे बारह वर्षमें देशको लौटा, इत्यादि। इनसे स्पष्ट प्रतीत होता है कि, हमारे देशके लोग पहले बडे साहसी व्यापारी थे। अपनी उद्योगशीलतासे ही उन्होंने भारतवर्षको संसारका शिरोभूषण बना दिया था।

अब भी इंग्लैंड, जर्मनी, अमेरिका, जापानादि जिन २ देशोंने उन्नति की है, इसी साहस और उद्योगसे की है। हम देखते है कि, आज एक अंग्रेज बच्चा दुनियांके जिस चाहे तिस छोरको अकेला जानेके लिये तयार हो जाता है, उसे माता, पिता, तथा कुटम्बियोंका उद्योगके सम्बन्धमें कुछ भी मोह नहीं है। हजारों अंग्रेज भारतवर्षमें अपनी उमर पूरी कर देते है, पर विनाकारण स्वदेशका नाम नहीं लेते। फिर भला कहिये, उनकी जाति और उनका देश उन्नतिपूर्ण क्यों न हो? लक्ष्मी उनपर क्यों प्रसन्न न हो! और सरस्वती उनका क्यों साथ छोड़े! उद्योगियोंके लिये सब कुछ सहज है। किसीने कहा है,—

नात्युच्चशिखरो मेरुर्नातिनीचो रसातलम्
व्यवसायाद्वितीयानां नाप्यपारो महोदधिः॥

अर्थात् जो व्यवसाय करनेमें अद्वितीय हैं, उनके लिये न तो मेरु उच्च शिखरवाला है, न रसातल नीचा है, और न महासमुद्र अपार है।

इसके विपरीत हमारे देशके लोग अब ऐसे कायर, कापुरुष और आलसी हो गये है कि, द्वीपान्तर और विदेश तो बडी बात है। वे घरसे बाहिर भी नहीं निकलना चाहते। कहते हैं "घरकी तो आधी भली, बाहिर भली न एक"। हमारे बंगाली भाई यदि किसी दूसरे गावकी हाटको ही जावें, और वहांसे रातको लौटनेवाले हों, तो भी अपनेसे घंटे दो घंटे पीछे आये हुए ग्रामवासियोंसे उन्हें पूछे बिना चैन नहीं पडती है कि, क्यों महाशय। हमारे घर तो सब बाल बच्चे राजी खुशी थे। भला कहिये, ऐसे कुटुम्बमोहसे व्यापारकी वृद्धि कैसे हो? एक कविने कहा है,—

व्यापारान्तरमुत्सृज्य, वीक्ष्यमाणो वधूमुखम्।
यो गृहेष्वेव निद्राति दरिद्राति स दुर्मतिः॥

अर्थात् जो दूसरे व्यापारोंको छोडकर स्त्रीका मुख देखा करता है और घरमें ही सोया करता है, वह मूर्ख दरिद्री होता है। विना देशान्तरोंमें गये विना बुद्धि भी तीक्ष्ण नहीं होती है, जो सम्पूर्ण उन्नतियोंकी जड है। एक प्राचीन कविने कैसा अच्छा कहा है कि,—

यो न संचरते देशान्यो न सेवेत पण्डितान्।
तस्य संकुचिताबुद्धिर्घृतबिन्दुरिवाम्भसि॥

अर्थात् जो देशोंमें नहीं घूमता है, और जो पंडितोंकी सेवा नहीं करता है, उसकी बुद्धि पानीमें घीके बिन्दुके समान संकुचित रहती है।

हमने ऐसे हजारों पढ़े लिखे और होशयार मनुष्योंको देखा है कि, जो रोजगारके विना अपने ग्राममें बड़े दुःखसे जीवन व्यतीत करते हैं, और भाग्यको रोया करते हैं। परन्तु यह साहस नहीं करते कि, कभी किसी बड़े शहरमें जाकर कुछ पुरुषार्थ करें। हमको निश्चय है कि, यदि वे ऐसा करें, तो अपने भाग्यकी गतिको बहुत जल्दी रोक सकेंगे। इस विषयमें अपने मारवाडियोंकी प्रशंसा किये विना हमसे नहीं रहा जाता कि, वे विदेश संचरण करनेके कार्यमें बड़े प्रवीण हैं। हम देखते हैं कि, भारतवर्षका कोई भी प्रान्त ऐसा नहीं है, जहां मारवाडियोंकी सैकडों दूकानें न हों। बंगाल प्रान्तके तो गाव गावमें वे विराजमान हैं। परन्तु यह बडे दुःखकी बात है कि, मारवाडी अधिकांश अशिक्षित होते हैं। वे जिस प्रकार देशभ्रमणमें दक्ष हैं, उसी प्रकार यदि शिक्षित भी होते, तो भारतवर्षके व्यापारको वहुत कुछ लाभ पहुचा सकते। कुछ भी हो, परन्तु अपनी उद्योगशीलतासे इतना तो अवश्य है कि, वे स्वयं भूखे नहीं मरते, जैसे कि, दूसरे लोग घर बैठे बैठे मरते हैं। हमें मारवाडी भाइयोंका अनुकरण करना चाहिये और गृहमोह छोड़ देना चाहिये। मनुष्यके गुणकी कदर घरमें नहीं होती, बाहर होती है। जैनधर्ममें भाग्यकी प्रधानता नहीं है, प्रयत्नकी प्रधानता है। प्रयत्नसे सब कुछ हो सकता है। अब वे दिन चले गये, जिन दिनों घर बैठे बैठे ही सब कुछ सुख प्राप्त थे। एक आदमी कमाई करता था और दश आदमी पड़े पडे खाते थे। विदेशियोंके हाथमें व्यापार चले जानेसे टैक्स बढ जानेसे और मँहगीसे अब अपना अपना पेट मुश्किलसे भरा जाता है। इसलिये प्यारे भाइयो। अब उद्योगी बनो, और देश परिभ्रमण करके बुद्धि सम्पादन करो, नये नये कारखाने खोलो और आवश्यक वस्तुओंको देशमें तयार करनेके उपायमें दत्तचित्त होओ। व्यापारका बड़ा विस्तृत मैदान आपने साम्हने पड़ा है, उसमे कदम बढाओ।

यह भी सोच लो, कि अब हमें अपने प्रतिपक्षियोंकी बढ़ाबढ़ी करना है, इसलिये केवल हिन्दुस्थानके व्यापारसे ही हमारा काम नहीं चलेगा, किन्तु अपने पूर्व पुरुषाओंके मार्गका फिरसे अनुकरण करना पड़ेगा। अर्थात् इंग्लेंड, जर्मनी, जापानादि देशोंमें भी हमें अपने उद्योगके द्वार खोलना पड़ेंगे। हमारे श्वेताम्बरी भाइयोंकी जर्मनी, चीन, सीलोन, आदिमें बहुतसी दूकानें खुली हैं, और उनसे काम भी खूब हो रहा है। उनका हमें अवश्य ही अनुकरण करना चाहिये। यह भी स्मरण रखना चाहिये कि यदि विदेशमें आचारशिथिलता न हो, तो हमारे शास्त्र विदेशगमनके विरोधी नहीं हैं, भगवत्सोमदेवने कहा है कि,—

सर्वमेव हि जैनानां प्रमाणं लौकिकोविधिः।
यत्र सम्यक्त्वहानि र्न यत्र न व्रतदूषणम्॥

अर्थात् जिनमें सम्यक्त्वमें हानि और व्रतोंमें दूषण न लगे, वे सब लौकिकव्यवहार जैनियोंके लिये प्रमाण हैं। परन्तु जिनमें इनका पालन न हो, उनमें चाहे सुवर्णकी वर्षा क्यों न हो, प्रवृत्त नहीं होनी चाहिये। सो आचार्योंकी इस आज्ञाके अनुसार ही हमको प्रवृत्ति करनी चाहिये। यद्यपि यह बात सच है कि, अब विदेशोंमें मनुष्य यदि चाहे, तो अपने धर्मकी सब प्रकारसे रक्षाकर सकता है। परन्तु यह कार्य साधारण पुरुषोंका नहीं है। विना धनाढ्योंके सचेत हुए हमारे प्रवासीभाई विलायती भ्रष्टाचारसे नहीं बच सकेंगे। पूर्व कालमें हमारे देशके व्यापारी जो द्वीपान्तरोंको जाया करते थे, सो विदेशके जहाजोंमें नहीं अपने जहाजोंमें जाते थे, जिनमें उनके निर्वाहके सम्पूर्ण आवश्यक सामान हर समय मौजूद रहते थे। परन्तु आजकल सारे समुद्रोंमें विदेशियोंका दौर दौरा है, जो कि धर्म और आचारसे सर्वथा पराङ्मुख हैं। इसलिये पहले एक दो स्वदेशी जहाज कम्पनियां खुलना चाहिय जो पहले लन्दन, पेरिस, आदिनगरोंमें हमारी ओरसे भोजनशाला खोलना चाहिये, जिनमे हम सब लोग और उच्च वर्णके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इत्यादि अपने २ आचारोंकी पालना करते हुए भोजनादिका प्रबन्ध कर सकें। यह कार्य जितना कठिन और बहु द्रव्यसाध्य दिखता है यथार्थमें उतना नहीं है। यदि धनिकगण विचारें, तो आज कर सकते हैं, साथ ही इससे लाभ भी उठा सकते हैं। इस कार्यमें श्वेताम्बरी भाइयोंके साथ सम्मिलित होनेमें हमें कोई हानि नहीं दिखती, अर्थात् हम लोगोंकी धर्मरक्षामें कोई विघ्न नहीं आ सकता, साथ ही दूसरोंको लाभ पहुंच सकता है। जो लोग विलायत यात्राके पक्षपाती है, और इमसे देशका कुछ कल्याण समझते हैं, उन्हें इस प्रयत्नमे तत्पर होना चाहिये। धर्मकी रक्षा करते हुए हम सब कुछ कर सकते हैं, अन्यथा चिल्लाते रहो, कोई सुनने वाला नहीं है। जबतक इस प्रकारकी धर्मसुविधा

न हो जावे, तबतक विलायतयात्रा कभी शास्त्रविहित नहीं कही जा सकती। जैनयंगमेन्सएसोसियेशन साम्प्रदायिक खिचड़ी पकाना छोड़कर यदि ऐसे आवश्यक कार्योंकी और अपनी शक्तिका व्यय करे, तो उसे यशः प्राप्ति हो सकती है। अफवाह उड़ी है कि, बम्बईके कुछ व्यवसायी विलायतमे भोजनशाला खोलने और स्वदेशीजहाजकम्पनी स्थापित करनेके लिये प्रयत्न कर रहे हैं।

नाथूराम प्रेमी।

श्रीश्वेताम्बर जैनकान्फरेंसका पांचवां अधिवेशन।

ता० १६–१७–१८ फरवरीको उक्त सभाका अधिवेशन अहमदाबादमें हो गया, और बडे उत्साहसे हो गया। अहमदाबाद श्वेताम्बरी भाइयोंकी राजधानी है। वहा पचास साठ कपडेकी मिलें है, जिनमें १०–२० को छोडकर शेष सब श्वेताम्बर धनवालोंकी हैं। इनसे प्रतिवर्ष करोडो रुपये लाभ होते हैं। इन धनवानोंकी नगरीमें उनकी योग्यताके अनुसार बडी धूमधामसे कान्फरेंसका अधिवेशन हुआ। वहाके नगरशेठ चिम्मनलाल लालभाई स्वागतकमेटीके चेअरमन थे। अजीमगजके रायबहादुर बाबू सिताबचन्दजी सभापति हुए थे। उनका स्वागत बडे जुलूसके साथ किया गया। सम्पूर्ण रास्ताओंपर नकशीदार कीनखाबके परदे निशान ध्वजा पताकायें उड रही थीं। मडप प्रेक्षणीय था। सभामें १० हजार मनुष्य उपस्थित होते थे। बाहरसे आये हुए तीन हजारके लगभग प्रतिनिधि थे ४००–५०० वालंटियर अपना कार्य बडी योग्यतासे सम्पादन करते थे। सभामे योग्य स्थानोंके टिकट रक्खे गये थे। श्वेताम्बरसमाजके प्राय सभी धनाढ्य और प्रसिद्ध पुरुष कान्फरेंसमे उपस्थित हुए थे, जो गुजरात दक्षिणके सिवाय बगाल, पजाब राजपूताना, युक्तप्रान्त जैसे सुदूरस्थ स्थानोंसे भी आये थे। गृहस्थोंके सिवाय धर्माचार्य यतिगणोंकी भी कान्फरेंसमें सहानुभूति देखी जाती थी।

पहले दिन स्वागतकमेटीके चेअरमेन और सभापति साहबके व्याख्यान हुए। दोनो व्याख्यानोंमें धर्मशिक्षापर विशेष जोर दिया गया है। साथ ही यह भी कहा गया है कि, लौकिक विद्याके विना भी हमारी उन्नति नहीं हो सकती। दूसरे दिन आठ प्रस्ताव पास हुए, उनमें जैनसाहित्य यूनीवार्सिटीमें भरती कराना, प्राचीन शिलालेखोंको एकत्र करके उनसे जैन इतिहासकी शोध करना, प्राचीन ग्रन्थोंका जीर्णोद्धार, ये तीन प्रस्ताव विशेष महत्वके हुए। प्राचीन शिलालेख विषय कहा गया कि, डाक्टर बुल्हर वगैरह अनेक विद्वानोंने हमारे शिलालेखोंको प्रसिद्ध किये हैं, परन्तु अनेक शिलालेख ऐसे हैं, कि वे लोग उन्हें किसी तरह बाचनेमे समर्थ नहीं हुए है। इसलिये हम लोगोंका कर्तव्य है कि, प्राचीन भाषाओंका अभ्यास करें और उनका अर्थ प्रगट करें। क्या यह लज्जाकी बात नहीं है कि, हम लोग जिनका कि धर्म है, इसका विचार भी न करें और विदेशी लोग उसमें परिश्रम करे। फिर कहा कि, प्रत्येक मंदिर और प्रत्येक प्रतिमामें जो लेख मिलै, उन्हें हर एक पढे लिखे जैनीको ध्यानसे बाचना चाहिये और उन्हें सर्वसाधारण पर प्रगट करना चाहिये। जीर्णपुस्तकोंके उद्धारके विषय कहा कि, सबसे पहले प्रत्येक ग्रामके छोटे बड़े सब भंडारोंके ग्रन्थोंकी एक सूची तयार करना चाहिये। कान्फरेंसने यह कार्य प्रारंभ कर दिया है। इसमें सबको सहायता देनी चाहिये। फेहरिस्तमें जो ग्रन्थ महत्वके और आवश्यक होंगे, उनके छपानेका प्रबंध किया जावे। यह भी कहा गया कि, प्राय मूर्ख लोग पुस्तकोंमें अपनी इच्छानुसार आम्नायके विरुद्ध बातें लिख देते है, इसलिये पाठशालाओंमें तथा भडारोमे स्वाध्यायके लिये वे ही पुस्तकें माननीय होंगी, जिन्हे मुनिराज और विद्वान पास कर देंगे। शिक्षाविषयक प्रस्तावके विषय कई व्याख्यान और अनुमोदन हुए। इसी दिन बम्बईके शेठ गोकुलभाई मूलचन्दने कन्या पाठशालामे पारितोषिक बाटनेके लिये दो हजार रुपयेका एक नोट दिया। अहमदाबाद बोर्डिंगके लिये भी बहुतसा चन्दा हुआ।

तीसरे दिन सात प्रस्ताव पास हुए। जिनमें जैनविवाहविधि प्रचार, जीर्णमन्दिरोद्धार जीवदयादि के अतिरिक्त एक प्रस्ताव यह भी हुआ कि, जैन प्रतिमाओंके तथा जैन मुनियोंके चित्र बहुत विकने लगे हैं, उनसे अविनय बहुत होता है। इसलिये कोई भी इनको क्रय न करै। और दूसरा प्रस्ताव यह भी था कि, अनेक प्राचीन स्थलोंमें जैन प्रतिमायें मिलती हैं, परन्तु उनके प्राप्त करनेमें जैनियोंको बहुत कष्ट उठाना पड़ता है, और द्रव्य खर्च करना पड़ता है। इसलिये ट्रेझरट्रोवके कायदेमें सुधार करनेके लिये एक मेमोरियल गवर्नमेंटकी सेवामें भेजा जावे। इस दिन द्रव्यकी बड़ी वर्षा हुई। शेठ मनसुखलाल भगूभाईने ज्ञानवर्धकशाला जैन कन्याशाला जीर्ण पुस्तकोद्धार फड और कान्फरेंस सहायता फंडमें सब मिलकर एक लाख एकहत्तर हजार रुपये दिये। शेठ लालभाई दलपत भाईने छत्तीस हजार, सभापति रा. ब. सीताबचन्दजीने बावीस हजार, नगरशेठ प्रेमाभाई हेमाभाईने सात हजार, सेठ वीरचन्द दीपचन्द सी आई. ई. ने सवाछह हजार और शेठ साराभाई मगनभाईने छह हजार रुपया कान्फरेंस सहायता फडमें दिये। इनके सिवाय और भी छोटी २ रकमें बहुतसे लोगोंने दी। सब मिलाकर तीनलाखके अनुमान द्रव्य एकत्र हुआ। अन्तमें यह निश्चय होकर कि, आगामी कान्फरेंस भावनगरमें होगी कार्य समाप्त किया गया।

चौथे दिन सभापति सा०की ओरसे गार्डनपार्टी दी गई। जैनग्रेज्युएट एसोसियेशनका जल्सा हुआ। इसमे यूनिवर्सिटीमें जैनसाहित्य भरती करनेके प्रयत्न करनेके लिये एक कमेटी बनाई गई। इसी दिन दूसरे जैनमहिलापरिषत्‌का अधिवेशन हुआ। छह हजार स्त्रियोंकी बडी प्रभावशाली भीड एकत्र थी। श्रीमती श्रगारबाई शेठानीने सभापतिका आसन ग्रहण किया था। स्त्रीशिक्षाके विषयमें दो व्याख्यान हुए।

श्वेताम्बर कान्फ्रेंसकी सफलताकी ओर हमारे भाईयोंको ध्यान देना चाहिये और अपनी महासभाको तत्सदृश बनानेका प्रयत्न करना चाहिये।

श्रीश्वेताम्बरीजैनकान्फरेंस और दिगम्बरजैनमहासभा।

ता० १६—१७ और १८ फरवरीको अहमदाबादमें बड़े जोरशोरसे श्वेताम्बर कान्फरेंसका अधिवेशन हो गया। हमारी महासभासे आठ वर्ष पीछे इस कान्फरेंसकी स्थापना हुई थी, परन्तु हम देखते हैं, इस पाच वर्षमें ही इसने जो उन्नति की है, और अपने समाजपर जो प्रभुत्व स्थापन किया है, वह हमारी महासभा यदि जिस ढंगसे चल रही है, उसी ढंगसे चलती रही, तो दश वीस वर्षमें भी शायद कर सके। आज जिस श्वेताम्बरीके मुखसे सुनिये, कान्फरेंसकी सहानुभूति प्रगट होती है। जिस श्वेताम्बरी पत्रको पढ़िये, उसीमें कान्फरेंसकी

कीर्ति गाई जा रही है। उसमें पुराने और नये, धार्मिक और लौकिक, सुधारक और दुर्धारक सब प्रकारके विचारवालोंको हम एकतासे काम करके देखने हैं। इसके विपरीत हमारी महासभाके विषय लोगोंमें बेहद असंतोष बढ रहा है। समाचारपत्रोंमें तू तू और मैं मैं हो रही है। बाबू लोग पंडितोंको जाहिल समझ रहे हैं और पंडितगण बाबुओंको धर्मभ्रष्ट नास्तिक समझते है। दोनों ही एक जगह बैठकर विचार करनेमें बेइज्जती समझते हैं। जब हमारी महासभामें एक दो धनवानोंको छोडकर शेष लक्षाधीश शामिल होनेमें अपनी बेइज्जती समझते है, तब श्वेताम्बर कान्फरेंसके सब ही लक्षाधीश और कोट्याधीश स्टेज-पर खडे होकर कान्फरेंसके कार्योंमें उत्तेजन देनेको अपनी बडी भारी इज्जत समझते हैं। जब हमारे समाजके ग्रेज्युएट और बाबू लोग महासभासे नाक भौंह सिकोडकर एक अलग ही एसोसियेशन बनाकर तालिया बजाते है और महासभाको कार्य करनेवाले नहीं मिलते है, तब कान्फ्रेंसमें प्राय सब ही ग्रेज्युएट तन मन धन लगाना अपना धर्म समझते है। कान्फरेसके जलसोंके बाद चौथे दिन उनका ग्रेज्युएट एसोसियेशन एकत्र हुआ था, परन्तु उसने कान्फरेंसके प्रस्तावोंका अनुमोदन ही अपना कर्तव्य समझा। और युनीवर्सिटीमें जैनसाहित्य भरती करनेका एक प्रस्ताव जो कान्फरेंसने पास किया था, अपने जिम्मे ले लिया क्योंकि यह कार्य ग्रेज्युएटोंमे विशेष साधनीय था। हमारी महासभाके कार्याध्यक्ष जब कालेज और महाविद्यालयकी खेंचातानीमें अपनी बहादुरी और सत्यता खर्च कर रहे हैं, तब कान्फरेंस धर्म-शिक्षाके लिये प्रत्येक शहरमें पाठशालाओंकी और बोर्डिंगोंकी योजनाका प्रयत्न कर रही है। उसमें कोई विवाद नहीं करता। इधर हमारे भाई इसी विवादमें सब चौपट कर रहे हैं। कहां तक गिनावें, सब ही बातें एक दूसरे विपरीत हो रही हैं। फिर कान्फरेंस उन्नति क्यो न करे और महासभा सिसकती हुई क्यों न पडी रहे।

हम आशा करते हैं कि, हमारे पाठकगण इस लेखसे यह नहीं समझेंगे कि, महासभाकी निन्दाके अभिप्रायसे यह लेख लिखा गया है। सचमुच हमको महासभाकी वर्तमान दशापर दुःख होता है, और कान्फरेंसकी उन्नति देखकर ईर्षा उत्पन्न होती है कि, हाय! हमारे भाई इस उन्नतिके समयको क्यों हाथसे खो रहे हैं, और कान्फरेंसके समान एक होकर काम क्यों नहीं करते। श्वेताम्बरी भाइयोंसे हम किसी भी बातमें कम नहीं है। हम सब कुछ कर, सकते है, परन्तु काम करना नहीं जानते। प्रारंभमें ही हम ऐसे झगडे छेडे बैठते हैं कि, जिनसे असंतोषकी आग भडककर हमारे सब कार्य चौपट कर देती है। हमको यदि कुछ करना है, तो एक होकर करना चाहिये। नवीन विचारवालोंको, पुराने विचारवालोंको, धनाढ्योंको, गरीबोंको त्यागियोंको; गृहस्थोंको, तेरह पंथियोंको, बीस पंथियोंको, धर्मविद्याके पंडितोंको, और अंग्रेजीके विद्वानोंको, सबको एकत्र बैठकर एक विचार होकर निष्कपट भावसे काम करना चाहिये। सभाके कार्य उन्हीं लोगोंको सोंपना चाहिये, जो शौकसे करना चाहते है और करनेके योग्य हैं। जो कार्यकर्त्ता असंतोषके फैलानेवाले है, जिनपर लोगोंकी श्रद्धा नहीं है, उन्हें पृथक् करके उनके स्थानमें दूसरे उत्साही महाशयोंको नियत करना चाहिये। महासभाका एक बडा भारी आफिस किसी स्थानमें होना चाहिये, जिसमें चार छह वेतनभुक् कर्मचारी हो। कमसे कम ५०—६० रुपये बेनन पानेवाला एक ज्वाइट सैक्रेटरी रखना चाहिये। इसके विना सभासम्बन्धी कार्योका यथार्थ आन्दोलन नहीं हो सकता। अधिवेशनोंमें जो प्रस्ताव पास होत है, उन्हें क्लर्ककी टेबिलमें रखके निश्चिन्त न हो जाना चाहिये। उनको प्रचलित करनेका बारहों महीनें प्रयत्न करना चाहिये। इसके लिये कमसे कम पाच छह उपदेशक नियत होना चाहिये, जो बारहों महिने सर्वत्र दौरा करते रहे, और प्रस्तावोंको कार्यमें परिणत करनेका उपदेश देते रहे। सारांश यह कि, इस तरह बिलकुल नवीनपद्धतिसे महासभाका पुन संस्कार होना चाहिये। इस पद्धतिसे यदि वह एक ही दो वर्ष कार्य कर सकी, तो सारे भारतवर्षके जैनी उसके भक्त हो जावेंगे और श्वेताम्बर कान्फरेंसके समान उसके फंडमें रुपयोंका ढेर लग जावेगा। प्रारंभमें एक वर्षके खर्चके लिये चन्दा खोलना चाहिये। अथवा पहले महाविद्यालयके फंडसे पहले रुपया कर्ज ले लेना चाहिये। और फिर आगामी वर्षमें चन्दा खोलकर अदा कर देना चाहिये। आगामी अधिवेशन दिल्ली, जयपुर, जैसे शहरमें करनेके लिये अभीसे प्रयत्न होना चाहिये।

P.

पत्रोंका सार।

उपदेशकका उपदेश।

जैनमहासभाकी ओरसे पं० मुन्नालालजी उपदेशक यहां पधारे। बहुत श्रेष्ठ व्याख्यान दिया। प्रत्येक विषयको दिलमें ठँसा देनेकी पंडितजीमें अच्छी शक्ति है। मोरस शक्कर और डाक्टरी दवाईका लोगोंने त्याग किया। यहांके लोगोंने यथाशक्ति उपदेशक फंडमें सहायता दी। पंडितजीको इस ओर भेजनेमें हम लोग महासभाके अतिशय आभारी हैं। इस गावमें ३२ घर श्रावकोंके हैं। मंदिर बहुत अच्छा बना हुआ है। पूजनादिका उत्तम प्रबन्ध है।

हुकमचन्द चुन्नीलाल
डेरी (सिंगाणे)

श्वेताम्बरी भाइयोंकी कृपा।

श्री पावापुरीजीके मंदिरका बन्दोबस्त आपके ताल्लुक है और श्री पावापुरजीके ताल्लुक सूबे विहारका मंदिर है और यहा यात्रियोंको ठहरनेकी बडी तकलीफ है। हम गत साल गये थे और इस साल भी गये। श्वेताम्बरी भाई अपनी धर्मशालामें नहीं ठहरने देते, और दिगम्बारियोंका असबाब फेक देते हैं। इसलिये वहांपर धर्मशाला बनवा दीजिये। इसमें आपका बडा नाम होगा।

गुलजारीमल दुर्गाप्रसाद—लखनौ।

खंडेलवाल जातिका इतिहास।

मैं इस विषयकी एक पुस्तक लिखना चाहता हूं, बहुतसी बातें संग्रह कर चुका हूं। इसलिये जिस भाईको इस जातिकी उत्पत्तिके विषयमें अथवा इसके फैलाव आदिके विषयमें कुछ किम्वदंतिया मालूम हों। अथवा किसी पुस्तकका पता मालूम हो, जिसमें इसका जिकर हो, वह कृपा करके मुझे सूचित करें। मैं उनका बडा आभारी होऊंगा। पुस्तक तयार होनेपर उनके पास भेंट स्वरूप भेजी जावेगी।

राजमल बड़जात्या
ठि० पदमचदभूरामल—बम्बई।

त्यागी लालमणिजीकी मृत्यु।

झूठी बात सच्ची हो गई। शोक है कि, फाल्गुण वदी १० को पूज्य बाबा लालमणिजीका स्वर्गवास हो गया। अन्तसमयतक आप सावधान रहे और धर्मचर्चा सुनते रहे। आपकी प्रतिज्ञाके अनुसार सब जैनी भाई आपके शरीरको नंगे पाव स्म-

शान भूमिमें ले गये । वहां चन्दनादिकसे उसका अग्नि संस्कार किया गया । दग्ध क्रियाके पीछे सब भाइयोंने आखड़ी व्रत धारण किये । आपकी मृत्युसे लोगोंको बहुत दुःख हुआ ।

फतहचन्द–देहली ।

नावदामें जैनविवाह ।

बड़े हर्षकी बात है कि, लोगोंका ध्यान मिथ्यात्वकी क्रियाओंकी ओरसे अब हटने लगा है । सुसारीके शेठ रोडमल सूरजमल जीके भाई चिरंजीवि नेमीचन्दका विवाह जैनविधिके अनुसार बड़े आनन्दसे हो गया । बरात नावदा को गई थी । पंडित शिवशंकरशर्माने यथोक्त विधिसे विवाह कराया । इस आर्षपद्धतिके बहुतसे लोग विरोधी थे, इस कारण विवाहके पहले दिन पंडितजीने शास्त्रसभामें आदिपुराणजी स्थापित करके "जैनविधिसे क्या लाभ है और मिथ्याविधिसे क्या हानि है" इस विषयको खूब विस्तृत रूपसे समझाया, जिससे विघ्नकर्ता लोग स्वय इसके पक्षपाती बन गये । विधिप्रयोगके समय भी पंडितजी प्रत्येक बातको अच्छी तरहसे समझाते रहे, जिससे लोगोंकी इस ओर बहुत श्रद्धा हो गई और विवाह आनन्दसे समाप्त हुआ । अन्यान्य धर्मात्मा भाईयोंको इसका अनुकरण करना चाहिये । वर कन्या दोनों पक्षके सज्जनोंको हम इस विषयमें मुक्त कंठसे धन्यवाद देते हैं ।

ऋषभचंद्र काशलीवाल–इंदौर ।

एक धर्मात्मा विद्यार्थीकी मृत्यु ।

खेद है कि, सुप्रसिद्ध पंडित रामदयालुजीका पुत्र श्रीदयालु विद्यार्थी जो महाविद्यालयमें प्रवेशिका प्रथमखंडमे पढता था और अतिशय धर्मात्मा स्वाध्यायनिरत था; प्लेगकी चुगुलमें फँसकर ता० १९ फरवरीको इस असार संसारसे कूचकर गया । ऐसे रोगके समय अच्छे २ धैर्यवानोंके धैर्य स्खलित हो जाते हैं । परन्तु आश्चर्य है कि, इस विद्यार्थीने बड़ी सावधानीसे समाधिसहित मरण किया । जब इसे मालूम हुआ कि, अब मेरा बचना कठिन है, तब अपने पिता भाई वगैरहको पास बुलाकर धर्मोपदेश दिया, और दामोदर विद्यार्थीको बुलाकर सूत्रपाठ भक्तामर वैराग्य भावनादि सुनने लगा । पश्चात् स्वयं नमोकार मंत्रका स्मरण करने लगा । फिर क्रमसे हरितकाय, अन्न और जलका त्याग करके अन्तमें वस्त्रमात्र परिग्रह रखके मंदिरजीमें कुछ दान करके सावधान हो गया । और फिर अरहंतसिद्ध २ उच्चारण करते हुए उसने स्वास छोड़ दी । यह एक होनहार बालक था । पंडित रामदयालुजीको इसका बहुत शोक हुआ है । परन्तु अब शोक करनेसे क्या ! पंडितजी स्वय बुद्धिमान, हैं । संसारकी अवस्थापर विचार करके उन्हें धैर्यधारण करना चाहिये ।

कुसुमचन्द ।
सहारणपुर ।

आवश्यक विज्ञापन ।

भारतवर्षीय दिगम्बरजैनमहासभाके लिये एक ऐसे योग्य क्लार्ककी आवश्यकता है, जो दफ्तर का काम कर सकता हो । हिन्दी, उर्दू और अंगरेजीमें विना सहायताके पत्रव्यवहार कर सकता हो । वेतन २९) से ४०) रु० मासिकतक दिया जा सकता है । सदाचार व्यवहार और योग्यताके सनद पत्रोंके साथ दरख्वास्त आना चाहिये । क्लार्कको नजीबाबाद रहना होगा ।

(साहु) जुगमंदिरदास–नजीबाबाद
(बिजनोर)

आवश्यकता ।

भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्रकमेटीके लिये एक इन्स्पेक्टरकी आवश्यकता है, जो सब तीर्थोंपर भ्रमणकरके वहांका सब प्रबन्ध करा सके, और अदालती कार्रवाईमें प्रवीण हो । अंग्रजीमें अंडर ग्रेज्युएट तथा हिन्दीभाषाका पूर्ण ज्ञाता होना चाहिये । वेतन ५०) मासिकतक दिया जा सकता है । प्रार्थनापत्र सनद पत्रोंके साथ आना चाहिये ।

माणिकचन्द हीराचन्द जे. पी.
हीराबाग–गिरगांव (बम्बई)

चन्देकी फेहरिस्त ।

(जो श्री गजपंथक्षेत्रपर अधिवेशनके समय हुआ)

*२०१)	जौहरी माणिकचन्द पानाचन्दजी	बम्बई ।
*२०१)	राजा बहादुर ज्ञानचन्दजी	सिकन्दराबाद ।
*२०१)	शेठ रावजी नानचन्दजी	शोलापुर ।
*२०१)	शेठ गुलाबसाहु रिखबसाहुजी	नागपुर ।
* ५१)	लाला रामजीदास प्रभुदयालजी	बम्बई ।
* २५)	शेठ चुन्नीलाल जवेरचन्दजी	बम्बई ।
३१)	शेठ अमीचन्द प्रेमचन्दजी	पढरपुर ।

* ऐसे चिन्हवाले सज्जनोंका चन्दा वसूल नहीं हुआ है ।

११)	श्रीमती रखाबाई नानचन्दजी	शोलापुर ।
५१)	शेठ चुन्नीलाल बापूजी	
२१)	शेठ राजाराम बशीलालजी	
११)	पंडित हुकमचन्दजी	नागौर ।
२॥)	शेठ छगनीराम सवाईरामजी	कोपरगाव ।
८॥)...	... ...	...
५१)	गुलाबचन्द मोहनलाल	नादगांव ।
१)	मुमनाबाई दौलतराम	,,
२)	प्रेमराज हसराज	रईकर ।
२)	बच्छराज काशलीवाल	रईकर ।
१।)	किशुनदास पाटणी	नांदगांव ।
१।)	गुलाबचद धनजी	
११)	भीकचन्द बक्सीराम	न्यायडोंगरी ।
५)	रावजी हरीचन्द	निम्बगाव ।
२५)	गौतमचद जयचद	,,
१)	चन्दनमल पाटणी	कण्ड ।
२)	हीरालाल डोंडीलाल काला	
६)	महादेव दगडूरामजी	
।)	मन्सारामजी पाटणी	
५)	टीकाराम उदयराम	गोदेगांव ।
१)	बशीलाल दयाराम	लोणीकर ।
१)	कातरदास दुलीचन्द	वाकलगाव ।
१)	आनदराम चुन्नीलाल	,,
१)	पन्नालाल पूरनलाल	घाट नादरा ।
२)	ताराचद भागचन्द	श्रीगोंदा ।
१)	हीरालाल शालिग्राम	कोपरगांव ।
१)	व्यकटराम विष्णुदास	श्रीगोंदा ।
१)	रिखबदास कपूरचन्द	,,
१)	बखतराम रगराम	,,
२)	बंशीलाल लीलाजी	खामगांव ।
३)	भीखचन्द टीकाराम	माढवा ।
१)	सूरजमलजी	बाबुलगांव ।
१)	सवाईरामजी	,,
१)	राजरूप नथमल	दहीगांव ।
५)	साहिबराम कावरदास	बाबुलगांव ।
५)	लक्ष्मीचन्द मगनीराम	सरजगोल ।
१।)	चुन्नीलाल केवलदास	भेटकोपर ।
१)	मगनलाल कुंजीलाल	वास्टा ।
१५)	केवलचद खुशाल	नांदगांव ।
५)	सखाराम मोतीचन्द	मोहोल ।
२)	गुलाबचन्द हीरालालजी	
१)	रतनचन्दजी पाड्या	कण्ड ।
५)	गोपालदास माणिकचद बरैया	मोरेना ।
२)	चन्दूलाल चुन्नीलालजी	बडगाव ।
११)	श्यामलाल मोहनलाल	चांदवड ।
५)	फूलचद पाटणी	बम्बई ।
१)	कचरदासजी पांडे	
१)	गोविन्दराम शेटी	
४)	लखमीचद सौगणी	
१)	जोगेश्वर नारायण बवडे	मांगीतुंगी ।
५)	चुन्नीलाल राजाराम	कोरेगाव ।
१)	धनरूप ताराचद धामूरीवाले	
२)	छगनीराम ईरगांवकर	
७)	गोपालदास हसराज	गोदेगांव ।
१।)	छगनीराम कस्तूर	कोपरगांव ।

११)	हीरालाल नारायणदास	कोपरगांव ।
१५)	गोविन्दराम भाऊलाल	नांद॰ाव ।
५)	चन्दूलाल खेमचद	आर्वी ।
५)	गुलाबचद मोहनलाल	नादगाव ।
१)	दगडूराम	बाबुलगांवकर ।
३)	सुखलाल रामकरण	चांदवड ।
५)	बालमुकुद पहाडे	सौंसर ।
१)	मोहनलाल सगुणचद	
५)	सालिग्राम गिरधरलाल	कन्नड ।
३)	हिम्मतराम हजारीमल	
१)	दगडूराम ताराचंद	
१)	ताराचद गुलाबचद	
१)	चम्पालाल छगनलाल	
५)	ताराचद साहिबराम	नादगाव ।
१)	कचराबाई अनदराम	नांदगांव ।
१)	गोविन्द बापूजी	बावडेकर ।
२)	देवचद वीरचद	शेटफल ।
१)	दादा नरसीगुडा पाटील	दुधेगाव ।
२)	दादा विष्णु केतकर वकील	नासिक ।
२)	महादेव राजाराम बोडस, हाईकोर्ट वकील.	बम्बई ।
१)	धनर्जाशा अधेरोवाले	
१)	गुलाबचद रावका	अवरीवाले ।
१)	रिद्धिकरण चुन्नीलाल	अधेरी ।
१)	बालचद पाटणी	अधेरी ।
१)	कालूराम बन्सीलाल	
२)	ज्योतिबा लक्ष्मण पिराले	सागली ।
१५)	सदासुख सामतराम	नांदगाव ।
११)	छगनीराम काचरदास	देवलाली ।
५)	चन्दूलाल दगडू	नांदगांव ।
१)	माणिकचद किसनदास	नांदगांव ।
७)	गोविन्दराम माधूराम	गोदेगाव ।
१)	कस्तूरचद पाटोदी	नादेड ।
५)	नानूराम पडूराम	
२)	अनतराम गोविंदराम	वोगटा ।
१)	चुन्नीलाल पांड्या	नादगांव ।
१)	भाऊलाल हीरालाल	बोरसद ।
१)	मन्नालालजी पहाड्या	
१)	श्यामलाल बालचद	चांदवड ।
५)	बालचद चन्दूलाल	बाबुलगांव ।
५)	हरलाल चुन्नीलाल	कोकमठाण ।
२)	चतुरभुज खोंटीराम	वाकडा ।
१)	नेमिचद जोधराज	बुलढाना ।
२)	सूरजमल गुलाबचद	न्यायडोंगरी ।
५)	चौथमल वीरचद परमेचा	आढमकर ।
२)	गंगाराम दौलतराम	सडेकर ।
२)	गोविन्द काशीनाथ	दूधगांव ।
५)	खेमचद रामचद	निम्बगाव ।
२)	हेमचद वीरचद	बारामती ।
३)	दगडू राजाराम	नांदगांव ।
२)	पन्नालाल काशलीवाल	बम्बई ।
१)	चरणदास गुलाबचद	
५)	राजमल बडजात्या	
१)	कन्हैयालाल कस्तूरचंद	
१)	भाऊलाल रूपचंद	नांदगांव ।
१)	दवूलाल उत्तमचद	उमरावती ।
१)	कचरदास सवाईराम	राजापुर ।
१)	पांडुरग बालचद	अधरासी ।
१)	भागचद विनायके	माजरेकर ।
१)	छगनीराम मौनाराम	नांदगांव ।
१)	छोटीलाल हीरालाल	जेउर ।
१)	चुन्नीलाल मोहनलाल	रायकर ।
५)	झमकूबाई पन्नालाल	साकोरा ।
।।)	चुन्नीलाल मौजीराम	सिउरकर ।
१)	भाऊलाल लक्ष्मीचद	
२)	रतनचंद रूपचंद	सोनज ।
२)	चुनीलाल प्रेमराज	
२)	नदराम रूपचद	नादगाव ।
२)	हीरालाल मोतीलाल	
१)	राजाराम मोहनलाल	कवले ।
११)	शांति गोविन्द कटके	शोलापुर ।
२१)	बालाराम गुलाबचद पहाड्या	टाकली ।
११)	गुलाबचद कन्हैयालाल	पावीकर ।
१)	सुखराम सवाईराम	
१)	दगडू जगन्नाथ	भीवगांव ।
५)	श्यामलाल छोटूलाल	
१)	कचरदास धूलचद	कासारी ।
१)	हीरालाल नानूराम	लोणीकर ।

विद्यालयभंडारखाते ।

१०१)	सखाराम नेमिचन्द	शोलापुर ।
२५)	लक्ष्मीचन्द वेणीचन्द	कुरुडुवाडी ।
२५)	नवलबाई माणिकचन्द	
२)	नवलबाई	नीमगांवकर ।
४१)	चतुर्भुज चन्दूलाल	अधानेर (औरंगाबाद)
७५)	कन्हैयालाल माणिकचन्द	कसावखेडा ।
११)	हीराचन्द पुरुषोत्तम	परंढा ।

सरस्वतीभंडार खाते ।

४१)	वीरचन्द केवलचन्द	धाराशिव ।
*१५)	मोतीचन्द वीरचन्द	मेंदरगी ।
५)	पन्नालालजी वाकलीवाल	बम्बई ।

लाइफमेंबर (ध्रुवप्रबध खाते)

१००)	मोतीचद मलकचद कालूजकर,	फलटण ।
*१००)	राजा ज्ञानचन्द्रजी	बम्बई ।

सभासद (प्रबंधखाते)

३)	मगनीराम चन्दूलालजी
३)	प्रेमराज रतनचन्दजी
३)	बंशीलाल रामलालजी
३)	शंकरलालजी पहाड्या
३)	कन्हैयालाल कस्तूरचन्द
३)	भीकचन्द टीकाराम
३)	छगनीराम रोडीराम
३)	मोहनलाल विठ्ठलदास
३)	श्यामलाल छोटूलाल
३)	रावजी सखाराम
३)	माणिकचन्द मोतीचन्द

फलटणकी प्रतिष्ठामें मोरस शक्कर ।

फलटण (सतारा) मे आगामी द्वितीय चैत्र-मासमे श्रीजिनबिम्बप्रतिष्ठा होनेवाली है । इस लिये यहा फाल्गुन वदी २ को समस्त पचोंसे आज्ञा लेनेके लिये दशा बीसा हूमड जैनियोंका एक सम्मेलन हुआ था । उसमे सबकी अनुमतिसे प्रस्ताव पास हो चुकने पर ज्यों ही दोनो जातिके मुखिया सही करनेको तयार हुए कि, मोरस शक्करके परमभक्त सज्जन आगे होकर बोले, "प्रतिष्ठा कारकको केवल स्वदेशी शक्करका उपयोग न करके ज्योंनारोंमें मोरस शक्करके पक्वान तयार करानेका भी प्रण करना चाहिये, क्योंकि जिनकी देशी शक्कर खानेकी इच्छा न होगी, वे मोरस शक्कर खावेंगे । ऐसा हुए विना यह प्रस्ताव हमें स्वीकार नहीं है ।" इस विचित्र बातको सुनकर कुछ पंचोंने कहा कि, प्रस्तावमे प्रतिष्ठाकारकसे यह स्वीकार करा लिया है कि, ज्योंनार शुद्ध मिठाईकी होगी, अब मोरस शक्करका उपयोग करना अथवा बनारसीका उपयोग करना, यह उनकी इच्छा पर है, हमें इस झगडेसे सरोकार नहीं है । जैसे पंचोंको यह कहनेका अधिकार नहीं है कि, इतने प्रकारके पक्वान्न बनाओ, इतने शाक बनवाओ, इतना मशाला डालो, उसी प्रकार यह भी पंच नहीं कह सकते कि, बनारसीका उपयोग करो अथवा मोरसका । इस उचित समाधानके होने पर भी वह रात्रि वितंडामें ही समाप्त हो गई ।

दूसरे दिन प्रतिष्ठाकारकने फिर प्रार्थना करके सब पंचोंको एकत्र किये । परन्तु पहले दिनके समान फिर भी शक्करके विषयमे परस्पर टक्करें होनी लगीं । सब लोग निराश हो गये । इतनेमें रा. रा. तलकचन्दजी कस्तूरचदजी बारामतीवालोंने कहा कि, अन्य कार्योंकी नाईं प्रतिष्ठाकी आज्ञा लेनेकी पद्धति नहीं है, फिर इस पंचायतके होनेकी आवश्यकता ही क्या है ? यह सुन कर सब लोग स्तब्ध हो गये । संवत् १९९९ में जो पंचायती लेख हुआ था, उसे निकालके देखा तो यही प्रगट हुआ कि, पंचोंको प्रतिष्ठाकी आज्ञा देनेका कोई हक नहीं है । बस विघ्नसंतोषी मोरसभक्त ठंडे हो गये । बेचारोंकी बडी फजीहत हुई ।

उपर्युक्त विघ्नविनायक महाशयका फलटणमें ४–५ दशा हूमडोंके और ७–८ घर बीसा हूमडोंके छोड़कर सबपर बडा भारी प्रभाव जमा हुआ

है। उनके मुंहसे "ल" निकलते ही उनके अनुयायी लठ्ठ लेकर तयार हो जाते हैं। यदि आप उपदेश देवें कि, भाइयो! (बाळ्यानों) विवाहमें अरहत भगवानका नाम लेना, पवित्र स्वदेशीशक्कर व्यवहारमें लाना, विद्यादान देना, तीर्थक्षेत्रोंकी व्यवस्था करना, ग्रन्थ छापना, शास्त्रमें ये सब पाप बतलाये गये है। लोगोंको ठगनेके लिये यह सब ढोंग हैं. तो शिष्यमडली सिर हिलाती हुई कहती है, बेशक ऐसा ही है! परन्तु ऐसा करनेसे हमारी स्वयं फजीहत होती है और हमारा गौरव घटता है, यह उनकी अनुयायी मंडळीकी बुद्धिमें नहीं आता। उपर्युक्त उदाहरणसे यह बात उन्होंने अवश्य ही समझ ली होगी।

समस्त देश भरके धर्मात्मा जिस शक्करको छूनेमें पाप समझते हैं, **सुअरका खून पडता है** ऐसा कह कर मुसलमान लोग जिसमे तोबा करते है, **गायके रक्तसे मोरस शक्कर साफ की जाती है,** कहकर हिन्दू मात्र जिससे अत्यन्त घृणा करते है, धर्म, धन, और शरीरको नष्ट करने वाली ऐसी शक्करकी चाट हमारे फलटणके भाइयोंमें अभी तक है; और वह भी अपने घरमें बैठकर स्वय पापी पेटको भरकर पूर्ण नहीं होती है, पवित्र पुण्य कर्मोंके समय भी उसकी पूर्तिका उपाय किया जाता है और सो भी लड झगडकर, तो इससे बडी आश्चर्यकी बात और क्या होगी? हाय! ये दुराग्रही लोग ऐसे अमगलीक कृत्य करनेको कैसे तत्पर हो जाते है, कह नहीं सकते। अस्तु अन्तमें फलटणके भाइयोंसे यह प्रार्थना करके कि, वे ऐसे विघ्नसतोषी व्यक्तिके अनुयायी बनकर समाजमें अपने अपमान करानेका प्रयत्न न करें, मै इस लेखको समाप्त करता हूं।

एक ढूंमड़

विविधसमाचार।

सुरेन्द्रबाबूकी राय है कि, जो लोग विदशी वस्तु खरीदें, उन्हें जातिसे बाहर कर देना चाहिये।

पार्लीमेंट सभाभवनपर वहाकी गोरी बीबीयोंने फिरसे चढ़ाई की थी। पुलिसने धक्के देकर उन्हें फिर निकाल दिया, परन्तु सुनते है पार्लीमेंट उनके लिये बिल पेश करनेको राजी हुई है।

स्वदेशी आन्दोलन और विदेशी बहिष्कारका जोश केवल हिन्दुस्थानमें ही नहीं है, आयर्लेंड, ईराण, चीन, फ्रांस आदि देशोंमें इसने बड़ा जोर पकड़ा है। विदेशियोंको दबानेके लिये यह एक अमोघ शस्त्र है।

अनेक बुद्धिमान देशहितैषियोंकी पुरानी पंचायतियोंके जीवित करनेकी इच्छा हुई है। उनकी इस रायका पालन भी होने लगा है। बगाल और मद्रासके अनेक ग्रामोंमें ऐसी पचायतिया स्थापित हुई है। जिनमें सब किस्मके मुकद्दमोंका आपसमें फैसला होता है। इस तरह सरकारी अदालतोमें लाखों रुपया बरबाद होनेसे बचते है और धक्के नहीं खाने पड़ते।

ता. ४ मार्चको लाहोरमें जम्बू व काश्मीर महाराजके सभापतित्वमें पजाब राजपूतप्रान्तिक सभाका अधिवेशन होनेवाला है।

बम्बईमें प्लेग बढने लगा है। प्रतिदिन ३०-४० केश होने लगे है। अन्यत्र भी प्लेगका जोर शोर है। "भाई फतेहलालजी गोधा-मऊ" वाली की दवाई प्लेगके लिये अकसीर है। हमने कई जगह आजमाके देखी है। वह निस्सन्देह गुण करती है। जहा प्लेगकी आशका हो, वहाके भाइयोंको अवश्य ही मँगाके रखना चाहिये।

अमीर काबुल अपने देशमें शिक्षाप्रचारके लिये खूब उद्योग कर रहे है, वे प्रारम्भसे लेकर बी ए एम्. ए. तक शिक्षा देनेके लिये स्कूल और कालिज खोलेंगे, साथ ही शिल्प वगैरहकी शिक्षाका भी उनमें बन्दोबस्त होगा। परन्तु यह सब शिक्षा फारसीमें होगी, अग्रेजीमें नहीं। अग्रेजीसे अनुवाद कराके शिक्षाक्रमकी पुस्तकें तयार होंगी। वे अपने देशवासियोंको भारतवासियोंकी नाईं पहले देशभाषा और फिर इग्रेजी पढ़ाकर कम जोर नहीं बनाना चाहते। साथ ही एम ए की परीक्षा तक सब कक्षाओंमें धर्मशिक्षा लेना प्रत्येक विद्यार्थीका फर्ज होगा। जिसमें वे धर्मच्युत न हो जावें। हमारे कालेजके पक्षपातियोंको इस ओर ध्यान देना चाहिये।

होचन्द मणिकचन्दजी जैनी वकील फलटणकरको कोल्हापुरसरकारने अपने राज्यमें वकालत करनेकी सनद दी है।

बम्बई टाइम्सके व्यापारी लेखकने हाल ही प्रकाशित किया है कि. "विलायती कपडेका बाजार पहिले सरीखा ही ठडा मंद और निर्जीव है। गत पाच वर्षोंमें जितना माल पडा नहीं रहा, उतना पडा रहनेसे दूकानदार लोग मालका भाव बहुत कम करेंगे, ऐसा रंग दिखता है। दिशावरोंके आर्डर इस मालके लिये बहुत करके बिलकुल ही नहीं हैं। कितनेक व्यापारी महाज मार्गसे इस मालको वापिस विदेश भेजनेके विचारमें हैं। मुहर्रम व विवाह शादियोंकी अधिकता होनेसे उम्मेद थी कि, आर्डर आवेंगे, परन्तु वह भी सफल नहीं हुई।" इस हिसाबसे समझ लेना चाहिये, कि, विलायती कपडेका प्रेम लोगोंमें कैसी तेजीसे घट रहा है।

दि वेस्टर्न मे० कम्पनी लिमिटेड बम्बई अपनी पूंजी बढाकर ३ लाख रुपये करनेवाली है। इसमें सब प्रकारके स्वदेशी बटन तयार होते हैं। गत वर्ष इस कम्पनीने साडे पाच हजार रुपयेके बटन बेचे थे।

अमेरिकाके वरिड साहबने एक विधवाके साथ विवाह किया था, जिसकी एक जवान लडकी थी। इस लडकीपर आपके पिता साहब मोहित हो गये। आखिर दोनोंका विवाह हो गया। पीछे बाप बेटा दोनोंके एक एक पुत्र हो गया है। अब वरिड साहब परस्परकी रिस्तेदारीका हिसाब फैलाकर कहते है कि, मै स्वयं अपना नाना बन गया हूं। पाठक भी हिसाब लगाके समझ लेवें, तो अच्छा हो।

जैनमित्रके ग्राहक और पाठकोंसे प्रार्थना।

दफ्तरके स्थानान्तर होनेसे तथा गजपथजीके अधिवेशनके काममें कर्मचारियोंके रुक जानेसे पत्रोंका उत्तर देने और उनकी कार्यवाही करनेमें बहुत कुछ विलम्ब हुआ है, इसके लिये मै पाठकोंसे क्षमा चाहता हूं। आयन्दा नियमित समयपर सब कार्य होंगे। साथ ही यह भी प्रार्थना है कि, अब शीघ्र ही मूल्य भेजनेकी कृपा करें। जिन भाइयोंका मूल्य नहीं आवेगा, उन्हें ११ वा अक वी. पी. से भेजा जावेगा।

मैनेजर-जैनमित्र।

सम्वत् १९२५ से स्थापित

वैद्य शीतलप्रसाद जैनी (कुलपरम्परा वैद्य) के आयुर्वेदीय औषधालयकी तैयार की हुई

राजे महाराजे तथा सहस्रों मनुष्योंद्वारा परीक्षित शीघ्र फल देनेवालीं स्वदेशी पवित्र औषधियां।

यज्जराव्याधि विध्वंसिभेषजं तद्रसायनम्।

श्रीकामदेव रसायनकी।

सुनहरी गोलियां।

यह रसायन शरीरकी सम्पूर्ण शक्तियोंको उत्तेजित करनेवाली–सोना–फौलाद–बगेश्वर–कस्तूरी शिलाजीतादि प्रसिद्ध प्रसिद्ध औषधोंसे बनी है, शुक्रसम्बन्धी सम्पूर्ण दोषोंको दूर करके बेशुमार पुरुषत्व शक्तिको बढाती है–इस्को सेवन करनेसे पुरुष अमोघवीर्य हो जाता है तथा स्त्री पुरुष दोनोंमें पुत्रोत्पन्न करनेकी शक्ति बढ जाती है इस्को सेवन करनेवालेका शरीर हृष्ट–पुष्ट–सुगठित–कान्तिवान फुर्तीला–तथा सुन्दर और लालवर्ण हो जाता है–इसको सेवन करनेसे संक्रामक रोगोंमें अकाल मृत्यु नहीं होती–यह रसायन भिन्न २ अनुपानसे अनेक बड़े बडे रोगोंको नष्ट करती है इस्के गुण अपार है। यथा —

दीर्घमायुस्स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः।
प्रभावर्णस्वरौदार्य्यं देहेन्द्रियवलोदयम् ॥ १ ॥
वाक्सिद्धिं वृषतां कान्तिमवाप्नोति रसायनात्।
लाभोपायोहि शस्तानां रसादीनां रसायनम् ॥२॥
(वाग्भट)

सुस्ती दूर करनेका अद्भुत तिला।

नपुंसकत्व दूर करनेके लिये लगानेकी बहुत ही उत्तम औषध है–इस्के सम्पूर्ण गुण यहांपर लिखना लज्जाका कारण है। मूल्य प्रतिशीशी २) रु०

प्रियामनमोहिनी गुटिका।

इसके गुण इसके नामहीसे जान लीजिये–१६ गोलीका १) रु०

बाजीकरण तथा पौष्टिक स्वादिष्ट पाक।

कस्तूरीपाक २९) केसरपाक १०) कामेश्वर गुटिका १०) रतिवल्लभपुगीपाक १०) कामाग्नि संदीपन मोदक १०) सालबपाक ४) कौंचपाक ४) सुपारी पाग श्रीयोग ४) मदनमोदक ४) बिनौलापाक ४) भिलावापाक ४) सेंमलपाक ४) बादामपाक ४) जावित्रीपाक ४) पिस्तापाक ४) पेठापाक ४) सौभाग्य शुंठिपाक ४) मूस्लीपाक ३) कुमारीपाक २) उपरका मूल्य १ सेरका है। यदि आपको इन पाकोंका गुण मालूम करना हो, तो हमारी बनाई पाक मञ्जरी-नामवाली पुस्तक मुफ्त मगाकर मुलाहिजा कीजिये।

नामुफीद साबित करनेवालोंको ५००, रु०नजर

श्वेतकुष्टकी अपूर्व औषध

इस्में कुछ भी सन्देह नहीं है कि हमारी इस, अमूल्य दवाने सम्पूर्ण भारतवर्षमें बहुतही कीर्ति पाई है सप्ताहभर लगानेसे त्वचा अपनी अस्ली रंगतपर आने लगती है–मूल्य, १ डिब्बीका (जिस्मे १ तोला जो २ इच मुरब्बा दागको काफी है २) रु० यदि आपका रोग बहुत पुराना है या आपके दाग बढते चले जाते हैं तो ऐसी अवस्थामें खानेकी दवाभी सेवन करनी योग्य है, मूल्य खानेकी औषधी का ४) रु० है। यदि इस्की बाबत आप सरटीफिकेट्स देखना चाहें तो १ पोष्ट कार्ड भेजकर पुस्तक मुफ्त मंगाकर मुलाहिजा करिये।

रक्त शोधक

शर्बत जौहरे उश्बा मुरक्कब

यह शर्बत–उश्बा–अनन्त मूलादि ४० दवाइयोंसे जो इसी देशके बन और पर्वतोंकी जडी बूटियां हैं और रुधिर सम्बन्धी सम्पूर्ण रोगोंको दूर करनेका विशेष दावा रखती है बनाया जाता है. शरीरके हरएक रोग और पट्ठेमें पैवस्त होकर उपदंश (आतशक) के विषको निकालकर शरीर निर्दोष कुन्दनवत बना देता है–यदि आपको यह रोग अरसेसे सता रहा हो और वैद्य हकीमोंसे अपनी व्यवस्था कहते शर्माते हो तो हमारा "रक्तशोधक" मंगाकर अवश्य सेवन करिये इससे आप बहुत जल्दी स्वस्थ हो जायंगे–इस्के सेवनसे–फोडे फुन्सी–काले, और सफेद दाग–गीली तथा सूखी खुजली–पिती–गठिया आदि रुधिरजन्य रोग बहुतही शीघ्र दूर हो जाते हैं–मूल्य प्रति बोतल १) रु.

कृच्छ्र नाशक।

सुजाक दूर करनेको अक्सीर

यह दवा नये तथा पुराने सुजाकके लिये बहुतही उत्तम है—२४ घंटेमें चीसचबक जलन सब बन्द हो जाती है—१ सप्ताहमें अच्छी तरह आराम हो जाता है। मूल्य प्रति शीशी १) रु.।

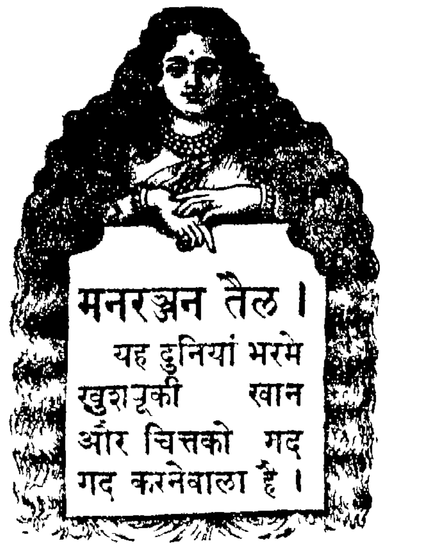
रक्तार्शविमोचिनी वटी।

इन गोलियोंके सेवनसे नई तथा पुरानी खूनी बवासीर कैसी ही सख्त हो बहुत जल्दी दूर हो जाती है मूल्य ४८ गोली तथा १ डिब्बी मल्हमका २॥) रु०

निम्नलिखित औषधें सेवन करतेही गुण दिखलाती हैं।

मस्तकशूल नाशक वटी	७ मात्रा	॥)
षड्बिन्दु तैल	१ शीशी	॥)
नेत्रशूल नाशक	१ शीशी	॥)
नयनामृताञ्जन	१ शीशी	॥)
कर्णशूलांतक	१ शीशी	।)
बधिरता नाशक	१ शीशी	॥)
दन्तशूल नाशक	१ शीशी	।)
दन्तमुक्ताकर मजन	१ डिब्बी	।)
प्रतिश्याय नाशक–नये तथा पुराने जुकामकी महौषध	२१ मात्रा	१)
उदरशूल नाशक–सब तरहके पेटके दर्दकी उत्तम दवा	२१ मात्रा	१
श्वासकुठार–दमे और खासीको अक्सीर		१)
प्रदरान्तक वटी–स्त्रियोंके सफेदेकी उत्तम औषध	४८ गोली	१)
पुष्पदोषारि वटी–स्त्रियोंके रजसम्बन्धी रोग दूर करनेवाली	४८ वटी	२)
रक्तप्रदर नाशक–स्त्रियोंकी पैरजारी रोगकी दवा	२१ मात्रा	२)
बालकोंके सूखिया मसानका इलाज–४० दिन तक खिलाने तथा शरीरपर मलनेकी दवाका मूल्य		१०)

पता—वैद्य एस. पी. जैन,
देहली।



हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको मथ-कर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है। इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठंडक पहुंचती है। बदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूर होकर लहू और ताकत बढ़ती है। फी सीसी ॥=) डां. ख. ।)

निमकसुलेमानी ।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, बदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, बवासीर प्रमेहनाशक है। स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है। फी शीशी ॥) डा. ख अलग

दंतकुसुमाकर ।

इसके लगानेसे दांतोंका हिलना मसूड़ोंका फूलन, खूनदर्द आदि आराम हो दांत मोतीकी तरह चमकते हैं। रोज लगानेसे दांत आजन्म दृढ बने रहेंगे। फी डिब्बी ।)

दवा दादकी ।

इस दवामे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको नगाड़ेकर भगाती है। फी डिब्बी ।)

गंधकवटी ।

यदि बालकोंको हमेशा स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसे मगाइये इससे बच्चोंका ज्वर खासी दस्त वायुरोग दूर होकर खूब मोटा ताजा हो जाता है इसकी गोली रोज खिलाना चाहिये. कीमत ॥) सी. डां. ॰

पंचतिक्तवटिका ।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है। इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते हैं। किं० ॥) डां० -)

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई ।

प्रमेहनाशक अपूर्वताकतकी दवा ।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनकी सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना प्रसगकी इच्छा न होना, नपुसकता, नाताकती, कमरमें दरद, थोडा चलनेसे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुशकी वा जर्दी, बदनमें फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्बलता, रगोंकी कमजोरी उठती जवानीमे कुचालसे पैदा हुई नामर्दी, आदि सब रोग जडसे नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है। जिसमें उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमे ताकत, आंखोंमें रोशनी, बदनमें फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है। मूल्य १ डिब्बाका २॥।), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १३) खर्च माफ.

श्वासारिष्ट ।

इससे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है। कीमत १) डा० ॥)

नपुंसकत्वारि तैल ।

इसके लगानेसे गुप्तभागसबन्धी सर्व प्रकारके रोग दूर होते हैं। फी सीसी १) डाकखर्च =)

प्रदरांतक चूर्ण ।

इससे स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस संबधी सर्व विकार दूर होते है। कीमत १) डां० =)

नयनामृत सुरमा ।

इसके लगानेसे आखोंका जाला धुन्ध, फुली, पानी, बहना, सुर्खी, पखर आदि नेत्ररोग दूर होते हैं और ज्योति बढाता, ठडक रखता और पढ़ते २ आखों नहीं थकती हैं। फी शीशी १) लगानेकी सलाई ।

जैनग्रंथसंग्रह ।

इसमें छोटी २ पचास पुस्तकोंका संग्रह है। यही एक पुस्तक पास रखना काफी है। सुन्दर टाइपसे पुष्ट कागजपर छपी है। जल्दी मंगाइये। उपरसे सुन्दर जिल्द बंधी है। मूल्य पोष्टेजसह ॥)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य,
आयुर्वेदीय औषधालय—इटावा (U. P.)

उत्तम और सस्ते जैनपुस्तक ॥

जैनग्रन्थसंग्रह

छप गया ! छप गया !! छप गया !!! जिस पुस्तकके लिये ग्राहकगण चिट्ठियोंकी भरमार कर रहे थे वही फिर दूसरी बार छप गई साथही मूल्य भी कम कर दिया है इसमे छोटी बड़ी संस्कृत और भाषाकी ५० पुस्तकोंका सग्रह है परदेशमे केवल यही एक पुस्तक पास रखना काफी है सुन्दर टाईपसे पुष्ट कागजपर छपी और जिल्द बधी है जल्दी न मगानेसे पछताना होगा कि ०॥) डा० माफ ।

व्याख्यानरत्नमाला ।

विद्या, धर्म, सत्सगति, कुरीतिके विषयमें ४ भाग	=)
नवीन होली सग्रह, एकवार अवश्य पढिये ...	)॥
सागीत मनोरमा (नोटकीकी राहमें) ..	=)
सागीत नेमचन्द्रिका (नौटकीकी राहमे) ...	=)
जैनभजनसग्रह (चालें भी लिखी हैं)	=)
स्तोत्रशतक (अनेक रागोंमें १०० स्तुतियां हैं)...	=)
प्रश्नोत्तरमाला (चर्चाकी पुस्तक है) ..	-)
तत्वार्थसूत्रजी मूल	-)
पञ्चमङ्गल पाठ	)॥
बारहमासा राजुलजी	)॥
बारहमासा सीताजी	)।
बारहमासा मुनिजी	)।
बारहमासा वज्रदत ...	)॥
वैराग्य भावना	)।
अध्यात्म पचासा	)।
दश आरती	)।
निर्वाणकाण्ड भाषा	)।
धर्मपचीसी	)।
हुक्का निषेध	)।
दु खहरण विनती .	)।
सकटहरण विनती	)।
बारह भावना सग्रह	)।
समाधिमरण (एक विनती सहित) ..	)।
परमार्थ जकडी, बा० राजुल सोरठमें	)।
पुकार पचीसी	)।
जैनबालगुटका (बालकोंका पढ़ाइये) ...	)।
इष्ट छत्तीसी निर्वाणकाण्ड गाथा ...	)॥
बाईसपरीषह, बारह भावना सहित	)॥
प्रश्नोत्तर नेमराजुल	)॥
आलोचनापाठ अर्थसहित	)॥
ब्याहला नेमिनाथ	)।
सामायक भाषा...	)।
सप्तऋषि पूजा	)।
निशभोजन भुजन कथा	)।
भक्तामर सस्कृत व भाषा	-)

विदेशी खाड निषेध)॥ } दोनों १०० इकट्ठी लेने
बुढापेका विवाह)॥ } मे २ रु० सैकड़ा

नियमावलि ।

१ चार आनेसे कमकी पुस्तकें नहीं भेजते हैं।
२ एक किस्मकी ५ पु इकट्ठे लेनेसे १ मुफ्त।
३ डाक खर्च पाससे देते हैं ग्राहकोंको सिर्फ मनीआर्डर फीस देना होगी।

मिलनेका पता —
बाबू धीरसिंह जैनी, इटावा (U. P.)

'कर्नाटक' प्रेस, मुंबई.

Registered No. B. 288.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है ।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बँटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
दुसरा भोईवाडा पो० कालबादेवी
बम्बई ।

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

वर्ष ८ वां] चैत्र शुक्ला २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द । ता० १६ मार्च सन् १९०७ ईस्वी । [अंक ११ वां ।

दिगम्बरजैनपरीक्षालय बम्बई ।

सम्पूर्ण जैन पाठशालाओंके व्यवस्थापकों तथा अध्यापकोंको विदित हो कि, आगामी आषाढ मासके कृष्णपक्षमें सम्पूर्ण पाठशालाओंकी परीक्षा लेनेका प्रबन्ध किया गया है । इस लिये प्रवेशिकापरीक्षा और पंडितपरीक्षाके कौन कौनसे खंडमें कितने २ विद्यार्थी परीक्षामें बैठेंगे, इसकी सूचना हमको शीघ्र मिलनी चाहिये, जिससे प्रश्नपत्रादि तयार करानेमें सुभीता पड़े । हमारे परीक्षालयके पठनक्रमके अनुसार आपने अपनी पाठशालामें शिक्षा प्रारंभ की या नहीं, इसकी भी सूचना दीजिये ।

प्रत्येक पाठशालामें शिक्षक कितने हैं, बालक कितने हैं, शिक्षण किस पद्धतिसे होता है, आदि सब बातोंका खुलासा भी लिखिये । जिनके पास पठनक्रम व नियमावली न हो, हमसे मंगा लेवें ।

राघजी सखाराम दोसी
मंत्री परीक्षालय—शोलापुर

जरूरी नोटिस ।

१ श्रीमती दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बईका दफ्तर मोरेनासे उठकर अब बम्बईमें आ गया है । बाबू फूलचन्दजी पाटणी इस सभाके सहायक महामंत्री (ज्वाँइंट जनरल सेक्रेटरी) नियत हुए हैं । उन्हींकी देखरेखमें दफ्तरका कार्य होगा । इस लिये सभा सम्बन्धी सब प्रकारके पत्र व्यवहार इस पतेसे करना चाहिये—

बाबू फूलचन्दजी पाटणी ।
सहायक महामंत्री दि० जै० प्रान्तिक सभा
दुसरा भोईवाडा पो० कालबादेवी—बम्बई ।

२ इसी प्रकार जैनमित्रका आफिस भी मोरेनासे उठकर बम्बई आ गया है, इस लिये तत्सम्बन्धी समस्त पत्रव्यवहार भी आयन्दा नीचे लिखे पतेसे करना चाहिये ।

मैनेजर जैनमित्र—दुसरा भोईवाडा
पोष्ट कालबादेवी—बम्बई ।

केशरकी पवित्रता ।

कानपुरके भाइयोंने हमारे यहांकी पवित्र केशरको भी रातमें भिगोकर १०—१२—घंटे सडाकर उसका रंग अर्थात् सुगंधित सार निकालकर शेष फोकसको जलाकर दुर्गंधित पानेसे अशुद्ध ठहराई है जिससे हमको बडा आश्चर्य हुआ कशमीरके किसानोंके यहांसे जैनी भाईके द्वारा खरीदकर मगाई हुई असलीकेसर भी जब अशुद्ध ठहराई जाती है तो फिर केशरका अभावही समझना चाहिये—लाचार हमने ओसवाल भाइयोंकी खुलाई हुई स्वदेशी कंपनीसे यह जिकर किया तो उन्होंने अद्वितीय पदार्थवेत्ता प्रोफेसर गज्जरको केसर भेजकर पृथक्करण क्रियासे परीक्षा कराई तो उन्होंने सार्टीफिकट दिया कि "आपने स्वदेशी केसरका नमूना भेजा वह जाचनेसे शुद्ध व अनमेल पाया गया अर्थात् इसमें किसी भी अशुद्ध पदार्थका मेल नहीं है । जिसकी असलनकल यह है—

TECHNO CHEMICAL LABORATORY,
Director—Prof T K gajjar.
M A. B S E. & C S
Girgaum Tram Terminus.
Bombay, 9th February 1907.

THE SWADESHI Co,
Mandvi Bombay.

Dear Sirs,

The Sample of Swadeshi Saffron sent by you has been found to be a pure genuine Sample of Saffron unmixed with any adulterants.

Yours faithfully,
(Sd) D D KANGA,
Anatytial Chemist.

इस परसे हमको पूर्णतया विश्वास हो गया कि इसमें जो अपवित्रताका दोष लगाते हैं सो झूठा है—फोकसमें जो दुर्गंध आती है वह मास वा मदिराकी नहीं किन्तु सडे हुये फोकसकी स्वाभाविक है । जिन भाइयोंको हमारा विश्वास हो वे अवश्य यही केसर मगावें जिनको विश्वास न हो वे और कहींसे भी नहीं मगावें क्योंकि जैसी खात्रीसे यह केशर मगाई जाती है वैसी खात्रीसे और कोई भी नहीं मंगा सकता है । बढिया केशरका भाव ४१) रु. रतल (३९ तोले) फुटकर १।) तोला ।

भाइयोंका दास—
पन्नालाल जैन, पो. गिरगांव, मुम्बई.

जैनमित्र.

चैत्र शुक्ला २ श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४३३
ता० १६ मार्च सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

भारतवर्षमें शक्करका अधिक खर्च क्यों है?

भारतवासी बहुत पुराने मिष्टान्नभोजी हैं। कई हजार वर्ष पहले जब यूरोप देशवासी लोग यहांकी बनी हुई शक्करको खाकर अनुमान लडाया करते थे कि, यह किसी मधुमक्खी जैसे जानवरकी बीट है, अथवा साबूदाने जैसे वृक्षका गूदा है, अथवा भारतवर्षमें इसकी कोई खानि होगी। उस समय यहां अपरिमित शक्कर तयार होती थी। उसको यहाके लोग स्वयं भोग लगाते थे, और जो शेष रहती थी, उसे विदेशियोंको खिलाकर रुपया और वाहवाही लूटते थे। यद्यपि भारतवासियोंको अब वह समय प्राप्त नही है, उनकी उस समयकी लोकविस्मयकरी लक्ष्मी अब एक दु खिनी दरिद्राके रूपमें परिवर्तित हो गई है, तौ भी वे शक्कर बहुत खाते है। हिसाब लगाया गया है कि, प्रत्येक भारतवासी प्रतिवर्ष १४ सेर शक्कर और गुड खाता है। यह प्रमाण इग्लैंड और यूनाइटेड स्टेट्सको छोडकर अन्यान्य सम्पूर्ण देशोंसे अधिक है। सब मिलाकर ९० करोड रुपयेकी शक्कर तथा गुड़ भारतवासी खा जाते हैं, जिसके लिये भारतकी चौबीस लाख एकड़ जमीनमे ईख तथा ऊखकी खेती होती है। इस बड़े भारी खर्चको देखकर युरोपियन लोग अटकल लगाते हैं कि, जिस देशमें इतने अधिक शक्कर खानेवाले हैं, वहांके लोगोंको निर्धन कहना भारी भूल है! हमारे पाठक भी इस शक्करके खर्चसे विस्मयमें पड गये होंगे, परन्तु यथार्थमें विस्मय करनेकी आवश्यकता नहीं है। इसमें अनेक कारण हैं। एक तो यह कि, यहां दूसरे देशोंकी अपेक्षा शक्कर तथा गुड़ बहुत ही सस्ता मिलता है। क्योंकि दोनों ही चीजें यहीं गन्नेसे तयार होती हैं। और जो ७ करोड़की विलायती शक्कर यहां आती है, वह और भी सस्ती बिकती है। विदेशी शक्कर हमारे देशमें जितनी सस्ती मिलती है, उतनी किसी भी देशमें नहीं मिलती। और तो क्या जहा वह तयार होती है, वहा भी यहांके भावसे नहीं मिल सकती! पाठकोंको सुनकर आश्चर्य होगा कि, जो बीटकी शक्कर यहा चार आने सेर मिलती है, उसका भाव वहां बारह आने सेरसे भी अधिक है। इसका कारण यह है कि, बहुत वर्षोंसे चुकन्दर तथा गाजरकी शक्करके कारखानेवाले गन्नेकी शक्करके कारखाने नष्ट करनेके लिये भावी धनप्राप्तिकी आशामें दिनपर दिन अपनी शक्करका भाव घटा रहे हैं। यद्यपि इस बदाबदीमें उन्हे बेहद घाटेमें भी उतरना पडा है, परन्तु वहाकी सरकार **बौन्टी** नामकी सहायता देकर उसे पूरा कर देती है। उक्त कारखानेवाले विदेशियोंकी बदाबदीके घाटेके कुछ अशको पूरा करनेके लिये अपने यहा शक्करको बहुत ही महँगी बेचते हैं। इस अवस्थामे दूसरे देशोंसे वहा शक्कर पहुंच सकती थी, परन्तु वहांकी सरकारने विदेशी मालपर जो जबर्दस्त टैक्स लगा रक्खा है, उससे कहींकी भी शक्कर वहा नहीं जा सकती। इग्लेंडमें यह टैक्स नहीं है, और सयुक्त राज्य स्वय गन्नेकी खेती करता है, इससे दोनों ही देशोंमें शक्कर सस्ती रहती है। अतएव वहांके निवासी भी अधिक शक्कर खाते हैं। दूसरा कारण यह है कि, भारतवासी प्राय वनस्पत्याहारी है, इस लिये शक्कर तथा गुड यहाका एक आवश्यकीय भक्ष्य पदार्थ समझा जाता है, यूरोपकी नाई मौज शौकका नहीं। इसीसे सस्ता मिलनेके कारण यहा इसका अधिक खर्च है। इससे भारतवर्ष धनी और सुखी हैं, यह अनुमान करना बड़ी भारी भूल है। जिन अंग्रेज महात्माओंकी आखोंमें यह खर्च खटकता है, उन्हें जरा इंग्लैंडकी ओर देखना चाहिये कि, वहांकी चार करोड प्रजा उतने रुपयेकी केवल शराब ही पी डालती है, जितनी भारतकी ३० करोड प्रजा शक्कर और गुड़ खानेमें खर्च करती है। इस अपरिमित शराबखोरीसे इंग्लैंडकी धनोन्मत्तताका अनुमान करना अलबत्तह ठीक हो सकता है।

समाचारपत्र सबको पढने चाहिये।

लाला टहलराम गंगाराम जमीनदारका प्रयागके अभ्युदयमें एक लेख प्रकाशित हुआ है। उसमें उन्होंने लिखा है कि, "भारतवासियोंके लिये सबसे अधिक लाभदायक तथा कल्याणकारक बात समाचारपत्रोंका पढना है। इन्हींसे उन्हे अपने हिताहितके सोचनेकी बुद्धि उत्पन्न होगी। दूसरोंसे मिलान करनेपर अपनी अवस्थाके सुधारकी ओर चित्त झुकता है। यहांके प्रत्येक मनुष्यका यह धर्म है कि, वह अपने मित्रोंको ताश, शतरज, खेलने और निर्मूल गप्पें उड़ानेसे रोककर समाचारपत्रों और पुस्तकोंके पढ़नेकी सलाह दे। जापानादि देशोंके निवासी समाचारपत्र पढ़ना अपना एक नित्य कर्म ही नहीं, किन्तु धर्म भी समझते हैं। हमारे यहा समाचारपत्रोंके पढ़नेका प्रचार बहुत जल्दी हो सकता है। मन्दिर, धर्मशालादि स्थान इसके लिये अच्छे साधन हैं। ऐसे प्रत्येक स्थानमे समाचारपत्र मगाये जाने चाहिये, जहां लोग सुभीतेसे उन्हें पढ सकें। हमारे यहा निर्धनता अधिक है। प्रत्येक पुरुष धन खर्च नहीं कर सकता, इसलिये धनवानोंको चाहिये कि, प्रत्येक जिलेमें, प्रत्येक गांवमे फ्री लाइब्रेरिया और पुस्तकालय खोलें। यह बड़े भारी पुण्यका कार्य है, इत्यादि" लाला टहलरामकी सम्मति सर्वथा उपादेय है। वर्तमान समयमें जब कि समाचारपत्र उन्नतिके एक सबसे बडे भारी साधन बन गये है, तब हमें उनका सत्कार करना ही चाहिये।

बाबू आत्माराम बी. ए. को प्रायश्चित्त देना चाहिये या नहीं?

देवबन्दके पचोंकी ओरसे जैनगजटमें एक लेख छपा है। उसमे विदित हुआ कि, बाबू आत्माराम पहले एक धर्मात्मा सज्जन थे। माता पिता और पत्नीके मर जानेसे उन्हें ससारसे वैराग्य हो गया था और वे अपना आगामी जीवन आत्मकल्याणमें बिताना चाहते थे। इसके लिये उन्होंने सस्कृत धर्मग्रन्थोंका पढ़ना प्रारभ कर दिया था। साथ ही योगसाधनके लिये साधु सन्यासियोंकी संगतिमें भी वे रहने लगे थे। एक साधुमहात्माने उन्हें ७—८ दिन तक भग और धतूरा पिलाया, जिससे बेचारोका मस्तिष्क बिगड़ गया। पागल हो गये। अपनेको मुसलमान कहने लगे। घरका बहुतसा माल बरबाद कर दिया। अन्तमें देहलीके एक हकीमके इलाजसे उनका मस्तिष्क ठीक हो गया। अपनी पूर्व अवस्थापर उन्होंने बड़ा अफसोस किया, और अपनेको जैनी ही बतलाया। इसपर समस्त हिन्दुओंने मिलकर उन्हें जैनी स्वीकार किया और प्रायश्चित्तकी कोई आवश्यकता नहीं समझी। हमें यह जानकर खेद हुआ कि, लोग आचार ग्रन्थोंके न जाननेसे अपनी इच्छानुसार व्यवस्था देकर अन्याय कर रहे है।

हमने माना कि, बाबू आत्मारामने जान बूझकर कोई बुरा काम नहीं किया है, परन्तु यह किस ग्रन्थमें लिखा है कि, अजान अवस्थामें पापबंध नहीं होता है? और विना जाने किये हुए पापका प्रायश्चित्त नहीं है? हा, यह बात अवश्य है कि, जान बूझकर किये हुए पापोंका प्रायश्चित्त जितना कठिन होता है, उतना अजान अवस्थामें किये हुए अपराधोंका नहीं होता। परन्तु होता अवश्य है। इस लिये बाबू आत्मारामको यदि सचमुच अपनी पूर्व दशापर खेद हुआ है, तो उन्हें चाहिये कि, जिनेन्द्रदेवके सम्मुख अपने पापोंकी अलोचना करके पंचोंसे प्रायश्चित्तकी प्रार्थना करें, और पच महाशयको चाहिये कि विद्वानोंसे प्रायश्चित्तका निर्णय करके बाबू आत्मारामको प्रायश्चित्त पूर्वक जातिमें ग्रहण करें। ऐसा न करनेसे वे जातिकी मर्यादाके उल्लंघन करनेवाले होंगे।

जैनगजटके प्रश्नोंका उत्तर।

१६ फरवरीके जैन गजटमें कुछ प्रश्न किये गये है, हम सक्षेपमें उनका उत्तर दे देते हैं। पहला प्रश्न,—दिगम्बर आम्नायके कौन २ सस्कृत भाषा ग्रन्थोंमें महावीर स्वामीका जिकर आया है? उत्तर,—दिगम्बराम्नायका कोई भी ऐसा ग्रन्थ नहीं है, जिसमे महावीर भगवान्का जिकर न हो। स्तुतिरूपमें, कथारूपमे, उत्थानिकारूपमें, किसी न किसी रूपमे प्रत्येक ग्रन्थमें महावीर स्वामीका वर्णन है। दूसरा प्रश्न,—प्रोफेसर जैकोबीका अनुमान है कि, राजा सिद्धार्थकी ब्राह्मणी और क्षत्रियाणी दो स्त्रिया थीं, क्या यह ठीक है? उत्तर,—प्रोफेसर जैकोबीका यह अनुमान नहीं है, अनुमान दूसरी चीज है। यह उन्होंने श्वेताम्बराम्नायके अनुसार लिखा है। क्योंकि उन्हें प्राय श्वेताम्बर ग्रन्थोंके देखनेका ही मौका मिला है। हमारे यहा राजा सिद्धार्थकी केवल एकही त्रिशला रानी थी, ऐसा माना है। तीसरा प्रश्न,—जैन शास्त्रोंमें एक मनुष्यकी अनेक स्त्रिया होनेकी आज्ञा है या नहीं? उत्तर,—इस प्रश्नका उत्तर प्रत्येक जैनी बालक जानता है। अमुक राजाके इतनी स्त्रिया थीं, अमुकके इतनी, अमुक राजपुत्रको अमुक राजाने अपनी सौ कन्यायें दे दीं, इत्यादि। सिवाय इसके कन्यादानको विवाह कहते हैं। कन्या देय पदार्थ है, और वर पात्र है। अत एक पात्रको अनेक देय पदार्थ लेनेका अधिकार स्वय ही सिद्ध होता है। चौथा प्रश्न,—ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य आदि वर्णोंमें परस्पर विवाह करनेकी आज्ञा है अथवा नहीं? उत्तर,—त्रिवर्णाचारके प्रत्येक ग्रन्थमें इसका विधान है। भगवत्सोमदेवने भी कहा है कि,

" आनुलोम्येन चतुस्त्रिद्विवर्णकन्याभाजना ब्राह्मण-क्षत्रिय-विशः " अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य क्रमसे चार तीन और दो वर्णकी कन्यायोंको ले सकते हैं। भाव यह है कि, ब्राह्मण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारोंकी कन्यायें ले सकता है, क्षत्रिय क्षत्रिय वैश्य और शूद्रकी, और वैश्य वैश्य तथा शूद्रकी ले सकता है। यही आज्ञा है।

प्राचीन जैनग्रन्थोंका जीर्णोद्धार।

जिस विषयमे देखते है, हमारा समाज दूसरे समाजोंमे बहुत पीछे पडा हुआ है। जैनधर्मकी उन्नति यदि किसी प्रकारसे हो सकती है, तो वह प्रकार यही है कि, भडारोंमें पडे पडे जीर्णशीर्ण होते हुए प्राचीन जैनग्रन्थरत्नोंका उद्धार किया जावे और वे प्रत्येक विद्वानके हाथों तक पहुचाये जावें। परन्तु हमारा समाज इस विषयमें भी प्रमादी हो रहा है। इच्छा होते हुए भी लोगोंको ग्रन्थोंकी प्राप्ति नहीं होती है। पढे लिखे लोग दूसरोंके ग्रन्थोंको पढ पढकर श्रद्धान भ्रष्ट हो रहे है। उन्हे जिस विषयके चाहिये, उस विषयके ग्रन्थ नहीं मिलते है। साधारण तथा निर्धन श्रेणीके लोगोंका इतना सामर्थ्य नहीं है कि, वे अपने अपूर्व ग्रन्थोंके दर्शन कर सकें। जिससे बेचारे धर्मज्ञानसे शून्य रहते है। अतएव ऐसे समयमे धर्मग्रन्थोंके प्रकाशित करनेकी बडी भारी आवश्यकता है। श्वेताम्बरी भाई इस विषयमें बडा प्रयत्न कर रहे हैं। उनके यहा ऐसे अनेक मंडल स्थापित हो चुके है, जिनके द्वारा ग्रन्थप्रकाशन कार्य बडी तेजीसे चल रहा है। उक्त मंडल बहुत थोडे अर्थात् प्राय लागतके मूल्यपर अपने ग्रन्थोंका फैलाव कर रहे हैं। बहुत वर्ष पहले मुर्शिदाबादके एक ही धनिक सज्जन प्रायः बत्तीसों सूत्र जो कई लाख श्लोकसंख्यक हैं और श्वेताम्बरधर्मके मूलभूत हैं, प्रकाशित कर चुके हैं। सुनते हैं, वे सब ग्रन्थ उन्होंने मुफ्तमें बाटे थे। हालमे अहमदाबादके प्रसिद्ध शेठ मनसुखभाई भगूभाईने भी एक बडी भारी रकम लगाकर ग्रन्थोके जीर्णोद्धारके लिये एक संस्था स्थापित की है। इस संस्थाके द्वारा जितने ग्रन्थ प्रकाशित होंगे, वे सब मुफ्तमें वितीर्ण किये जावेंगे। वर्तमानमें शब्दानुशासनबृहद्वृत्ति, खंडनखाद्य, न्यायालोक ये तीन ग्रन्थ उक्त संस्थाने प्रकाशित किये है। और आठ दश ग्रन्थ सशोधित होकर तयार हो रहे हैं, जो शीघ्र ही प्रकाशित होगे। ऐसे अपूर्व शास्त्रदानकार्यालयके उपलक्ष्यमें उक्त शेठजी सचमुच ही धन्यवादके पात्र हैं, और हमारे समाजके धनिकगणोंके अनुकरणीय हैं, जिन्हें दिनपर दिन नष्ट होती हुई जिनवाणीकी दशापर कभी एक आसू भी नहीं आता। न जाने हमारे समाजके मुखियाओंका ध्यान इस ओर कब आकर्षित होगा, जो सब कुछ करनेमें समर्थ होते हुए भी कुछ नहीं करते।

विदेशोंमें जैनधर्म।

आज जिस जैनधर्मके अनुयायी वर्तमानमें कुल तेरह चौदह लाख दिखलाई देते हैं। एक ऐसा समय था कि देश और विदेशोंमें सर्वत्र उसीका डका बजता था। भारतके अतिरिक्त अन्यान्य देशोंमें भी अब जैनधर्मकी उन्नतिका पता लगा है। इडियन इन्टीक्वीटिकी सातवीं जिल्दके २९ वें पृष्ठके देखनेसे मालूम होता है कि, पूर्वकालमे अरबस्थानमे भी जैनधर्मका प्रचार था। प्रसिद्ध चीनी यात्री हुएनसगने अपनी डायरीमे लिखा है कि, जैनी उत्तर पश्चिमकी ओर कियापशी प्रदेशमे अपने धर्मका प्रचार करनेके लिये जाते थे (देखिये, बिल, सियूकी, जिल्द १ पृष्ठ ५५) अनेक जैन ग्रन्थोंका अनुवाद चीनी भाषामें मिलता है, जिससे चीन देशमें भी जैन धर्मके प्रचारका अनुमान होता है। प्रश्नोत्तररत्नमालाका अनुवाद तिब्बती भाषामें हुआ था, जिसके विषयमें एकवार जैनमित्रमें लिखा जा चुका है। एक कामसिल नामके जैनाचार्यके द्वारा आठवीं सदीमें जैनधर्मने तिब्बतमें प्रवेश किया था। और यह भी पता लगा है कि, नैपाल राज्यमें भद्रबाहुस्वामीने अनेक चातुर्मास व्यतीत किये थे। सीलोनमें जैनधर्म था, ऐसा अनेक पाश्चात्य विद्वानोंका मत है। जावामें जैनमन्दिरोंके अनेक खंडहर दिखलाई देते हैं।

जैनयंगमेन्स एसोसियेशनका धर्म और उद्देश्य।

सहयोगी जैनगजटने लिखा है कि, " जैनयंगमेन्सएसोसियेशन " नाम हीसे ज्ञात होता है कि, यह जैनी मात्रकी सभा है। परन्तु यह कोई बात नहीं है कि, जैन शब्दसे सबका मिश्रण समझा जावे। यदि ऐसा है, तो फिर क्या हमको यह समझ लेना चाहिये कि,

सहयोगी जैनगजट भी तीनों सम्प्रदायोंका पत्र है? सामान्यतः जैनमहाविद्यालय, जैनमहासभा, जैनपाठशाला आदि नाम प्रसिद्ध किये जाते हैं, सो क्या मात्र जैनशब्दके जोरसे इन सबमें श्वेताम्बरियोंको सम्मिलित समझना चाहिये? नहीं, कदापि नहीं। एसोसियेशनके दिगम्बर श्वेताम्बर होनेमें यह कोई प्रमाण नहीं हो सकता। इसका जन्म दिगम्बर जैनमहासभाके प्रस्तावके अनुसार हुआ है, इसमें शुरूसे सब कार्यकर्ता दिगम्बरी हैं, (हालमें एक दो महाशय श्वेताम्बरी सुने जाते हैं, सो भी लोग उन्हें दिगम्बरी ही जानते हैं) दिगम्बरमहासभाके साथ उसके सम्पूर्ण जल्से हुए हैं, दिगम्बर जैनीपत्रोंमें उसके विषय आन्दोलन हुआ है और रिपोर्टें छपी हैं, प्रायः दिगम्बरी विद्यार्थियोंको ही उसने पारितोषिक और तमगे दिये हैं, दिगम्बरियोंकी ही पुस्तकें प्रकाशित की हैं, और दिगम्बरियोंसे ही चन्दा लिया गया है। फिर कैसे कहा जा सकता है कि, एसोसियेशन सर्व साधारणकी है। उसका जन्म केवल इसी उद्देश्यसे हुआ था कि, अकसर अंग्रेजी पढे भाई दर्शन स्वाध्यायादि धर्म कर्मोंसे विमुख हो रहे हैं, सो एसोसियेशन उन्हें धर्मके सम्मुख करेगी। न कि इसलिये कि दो धर्मोंको एक करेगी। यदि उसका यह उद्देश्य भी हो कि, वह दिगम्बरी श्वेताम्बरियोंमें एकता करै, तो इससे क्या यह सिद्ध हो गया कि, वह श्वेताम्बरादि सबकी सभा है? क्या दिगम्बरी रहकर श्वेताम्बरियोंके साथ एकता नहीं की जा सकती है? सहयोगीको स्वयं चाहिये कि, एसोसियेशनकी नियमावली देखे, और सबपर प्रगट करै कि, उसके किन शब्दोंसे तीनोंकी मिश्र सभा समझी जा सकती है। हमारी समझमें एसोसियेशन दिगम्बरियोंकी सभा है। उसके अधिकारी दिगम्बरी हैं। दिगम्बरजैनमहासभाकी वह एक शाखा है। मुख्यतासे लौकिक उन्नतिके लिये उसका जन्म है। इस उन्नतिकी साधनाके लिये उसका यह भी एक उद्देश्य हो सकता है कि, श्वेताम्बरी दिगम्बरियोंमें एकता करना। इसके विरुद्ध जो कुछ बतलाया जाता है, वह सब मिथ्या है। अनेकता बढाने और अविश्वास उत्पन्न करनेका कारण है। आगामी हमें इस विषयमें बहुत कुछ वक्तव्य है।

महर्षि शाकटायन।

(१)

(श्री नाथूरामप्रेमी देवरीनिवासी लिखित।)

भारतवर्षकी प्राचीन वसुंधरा सचमुच वसुंधरा थी। वह ऐसे नररत्नोंकी जननी थी, कि जिनके ज्ञानका आज सारा संसार ऋणी है। जिस समय यूरोपखंडका सभ्यताशिक्षक रोमराज्य माताके गर्भमें था, उस समय भी भारतकी सभ्यता और विद्याकी ज्योति चारों ओर प्रस्फुटित हो रही थी। यहांका कोई शास्त्र कोई विज्ञान कोई कौशल्य किसी भी देशका अनुकरण अथवा अनुवाद नहीं है। जो व्याकरणशास्त्र भाषा शिक्षाका अद्वितीय साधन है, उसके बनानेमें भी हमारे पूर्व पुरुषोंकी अपेक्षा अधिक निपुणता किसी भी देशके निवासी नहीं दिखला सके हैं। यद्यपि ग्रीकदेशवासी बहुत प्राचीन कालमें व्याकरणशास्त्र निर्माणकर चुके हैं, परन्तु वे भी अनेक अंशोंमें भारतके ऋणी हैं। यहांके शब्द शास्त्रके आगे वे भी मस्तक नीचा करते हैं। ग्रीक व्याकरणशास्त्रका जिस समय बाल्यकाल्य था, उस समय हमारा व्याकरण युवावस्थाका उपभोग कर रहा था। ग्रीस देशके प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटोके भी पहले जो कि ईस्वी सन्के ४३७ वर्ष पहले उत्पन्न हुआ था, भारतवर्षमें आपिशली आदि बडे २ व्याकरणाचार्य हो चुके थे। प्लेटोको उस समय केवल संज्ञा और क्रियाके नियम अवगत हुए थे, अधिक नहीं।

इन आपिशली, आदि सम्पूर्ण व्याकरणाचार्योंमें पाणिनिने सबसे अधिक कीर्ति प्राप्त की है। यद्यपि इस कीर्तिके बढनेमें, अन्यान्य व्याकरणोंका नष्ट हो जाना, विस्तृत टीका सरल प्रक्रिया तथा भाष्योंका न होना आदि अनेक कारण हैं। परन्तु उन सबमें यह विशेष बलवान जान पडता है कि, पाणिनिने अपने ग्रन्थमें वैदिक प्रक्रियाको बनानेमें सबसे अधिक प्रयत्न किया है। इसीसे वैदिक मतानुयायियोंके प्राबल्यमें इस ग्रन्थका सविशेष प्रचार हो गया है। यद्यपि पाणिनीय ग्रन्थ बहुत उत्तम है, यह सब कोई मानते हैं। परन्तु जबतक अन्यान्य व्याकरणोंका शोध नहीं हुआ है, यह भावना सर्वथा ठीक नहीं कहा जा सकता। वोपदेवने अपने कविकल्पद्रुममें जिन आठ व्याकरणाचार्योंके नाम दिये हैं, वे ये हैं:—

इन्द्रश्चन्द्रः काशकृत्स्नापिशली शाकटायनः।
पाणिन्यमरजैनेन्द्रा जयन्त्यष्टौ च शाब्दिकाः।

इन आठ वैयाकरणोंमेंसे इन्द्र, चन्द्र, शाकटायनादि पाणिनिसे भी पूर्वके समझे जाते हैं। डाक्टर बोतलिंकके मतके अनुसार अपिशली, काश्यप, गार्ग्य, गालव, चाक्रवर्मण, भारद्वाज, शाकटायन, शाकल्य, सेनक, और स्फोटायन आदि अनेक वैयाकरण भी पाणिनिके पूर्व सामयिक थे। परन्तु खेद है कि, इनमेंसे बहुत थोडे आचार्योंके ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। इसीसे पाणिनि व्याकरणकी तुलनामें कुछ निर्णय नहीं किया जा सकता।

ऊपर जिन वैयाकरणोंके नाम कहे गये हैं, उनमेसे आज हमको शाकटायनके विषयमें कुछ कहना है। अभी थोडे दिन हुए मद्रासके एक अंग्रेज विद्वान् गुस्तव आपर्ट साहबने इस व्याकरणकी एक प्रक्रियाटीका प्रकाशित की है, जिसे देखकर शाकटायनव्याकरण पाणिनिकी अपेक्षा श्रेष्ठ और प्राचीन है, यह कहनेमें सर्वथा संकोच नहीं होता। व्याकरण शास्त्रमें जैसी असाधारण क्षमता महर्षि शाकटायनने प्रदर्शित की है, शायद ही किसी दूसरे विद्वान्ने की होगी। श्रीयक्षवर्माचार्यने अपनी चिन्तामणिटीकामें इसकी प्रशंसामें कहा है कि,—

स्वस्ति श्रीसकलज्ञानसाम्राज्यपदमाप्तवान्।
महाश्रमणसङ्घाधिपतिर्यः शाकटायनः॥ १॥
एकः शब्दाम्बुधिं बुद्धिमन्दरेण प्रमथ्य यः।
सयशः श्रीसमुद्दध्रे विश्वं व्याकरणामृतम्॥ २॥
स्वल्पग्रन्थं सुखोपायं सम्पूर्णं यदुपक्रमम्।
शब्दानुशासनं सार्वमर्हच्छासनवत्परम्॥ ३॥
इष्टिर्नेष्टा न वक्तव्यं वक्तव्यं सूत्रतः पृथक्।
संख्यातं नोपसंख्यातं यस्य शब्दानुशासने॥ ४॥
तस्यातिमहतीं वृत्तिं संहृत्येयं लघीयसी।
सम्पूर्णलक्षणा वृत्तिर्वक्ष्यते यक्षवर्मणा॥ ५॥
इन्द्रचन्द्रादिभिः शाब्दैर्यदुक्तं शब्दलक्षणम्।
तदिहास्ति समस्तं च यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्॥

अर्थात्—सम्पूर्ण ज्ञानरूपी साम्राज्य पदको प्राप्त होनेवाले, और महामुनियोंके संघके स्वामी शाकटायनाचार्य्य कल्याणके कर्ता हों। १। जिन्होंने शब्दशास्त्ररूपी समुद्रको बुद्धिरूपी मन्दराचलसे मन्थन करके यशश्रीसहित व्याकरणरूपी अमृतका उद्धार किया। २। यह शब्दानुशासन (व्याकरण) जिनदेवके उत्कृष्ट शासनके समान स्वल्पग्रन्थ

१ श्रीमती जैनप्रान्तिकसभा बम्बई इस ग्रन्थको छपानेका उद्योग कर रही है। इसके कर्ता श्रीपूज्यपाद आचार्य हैं। देवनन्दि, चन्द्रगोमि, जिनेन्द्रस्वामी आदि इनके अपर नाम हैं।

(पक्षमें थोड़े परिग्रहवाला) सुखोपाय, सम्पूर्ण, और सबसे पहलेका है । ३ । इस व्याकरणमें अन्यान्य व्याकरणोंकी नाईं, सूत्रसे पृथक् इष्टिकी इष्टता और वक्तव्य नहीं कहने पड़ते और न उपसंख्याओंकी गिनती लगानी पड़ती है । ४। उसकी व्याकरणकी महावृत्तिको संक्षिप्त करके यह छोटीसी परंतु संपूर्ण लक्षणोंवाली वृत्तिको मै (यक्षवर्मा) कहता हूं । ९ इन्द्र चन्द्र आदि शाब्दिकोंने (वैयाकरणोंने) जो कुछ शब्दलक्षण कहे हैं, वे सब इसमें हैं । और जो इसमें नहीं हैं, वह किसी अन्य व्याकरणमें भी नहीं है ।

ग्रन्थके अवलोकनसे श्रीयक्षवर्माचार्यकी सब हीं उक्तिया सत्यप्रतीत होती हैं । सचमुच ही इस व्याकरणको ससारका शिरोभूषण कहनेमे कुछ अत्युक्ति नहीं होगी । मि० गुस्तव आपर्ट साहबके हम अतिशय कृतज्ञ हैं, जो उन्होने इस खोये हुए रत्नको प्राप्त करके सर्व साधारणमें प्रगट कर दिया ।

महामनस्वी श्रीशाकटायनाचार्य किस समयमें, किस देशमें, और किस कुलमे उत्पन्न हुए दुर्भाग्यकी बात है कि, सच्चे इतिहासोंके अभावसे हम यह कुछ भी जाननेको समर्थ नहीं है । तौ भी अनुमानसे यह कह सकते हैं कि, परमात्मा महावीर भगवान्के निवार्णके पश्चात् १६२ वर्षके मध्यवर्ती कालमे वे इस धरामडलको सुशोभित करते होगे । श्रीमहावीर भगवान्के पीछे कहनेका कारण यह है कि, व्याकरणके आदिमे स्वय शाकटायन महामुनिने वीरभगवानको इस प्रकारसे नमस्कार किया है,—

नमः श्रीवर्द्धमानाय प्रबुद्धाशेषवस्तवे ।
येन शब्दार्थसम्बन्धास्सार्वेण सुनिरूपिता ॥

इससे सिद्ध है कि, शाकटायन महावीर भगवान्के निर्वाणके कुछ काल पीछे हुए हैं । और १६२ वर्षके मध्यवर्ती कालमें कहनेका कारण यह है कि, भगवान्के निर्वाणके अनन्तर ६२ वर्षमें इन्द्रभूति सुधर्मास्वामी जम्बूस्वामी ये तीन केवली और उनके पीछे सौ वर्षमें विष्णु, अपराजित, नन्दिमित्र, गोवर्धन और भद्रबाहु ये पाच श्रुतकेवली हुए, तदनन्तर विशाखदत्तादि ग्यारह दश पूर्वके धारी महात्माओंका प्रादुर्भाव हुआ था, जिनकी संख्या निश्चित और नियमित है । श्रीशाकटायन महामुनि श्रुतकेवलिदेशीय आचार्य थे । श्रुतकेवलिदेशीय उन्हें कहते है, जिनका ज्ञान श्रुतकेवलियोंसे कुछ न्यून होता है । यदि निर्वाणके १६२ वर्ष पीछे शाकटायन मुनि होते, तो श्रुतकेवलिदेशीयोंकी गणनामें उनका नाम अवश्य ही होता । क्योकि वह गणना निश्चित है । जब द्वादशागमेंसे पूर्वके ज्ञानकी विच्छित्ति होने लगी, तब श्रुतकेवलिदेशीयोंके मुख्यता प्राप्त हो चुकी थी । इस लिये वे जितने हुए हैं, उन सबके नाम लिपिबद्ध होनेमें कोई सन्देह नहीं है । परन्तु जब केवली और श्रुतकेवली विद्यमान थे, तब ऐसा तो हो नहीं सकता कि, कुछ न्यून ज्ञानके धारी सर्वथा ही न हो । नहीं, थे, परन्तु केवली श्रुतकेवलियोंके आगे उनकी मुख्यता नहीं थी । उस समय केवली श्रुतकेवली ही मुख्य थे । इसलिये ग्रन्थोंमे केवलियोंके सिवाय एकदेशीय अथवा श्रुतकेवलदेशीय आचार्योंके होते हुए भी उनकी गणना तथा नामावली नहीं लिखी गई है । क्या आश्चर्य है कि, उसी मध्य समयमें ये एक श्रुतकेवलिदेशीय रहे हों ।

यह प्राय निर्णीत हो चुका है कि, भगवान्का निर्वाण विक्रमके ४७० वर्ष पहले अर्थात् ईस्वी सन्के ५२७ वर्ष पहले हुआ था, अत एव उपर्युक्त कारणोंसे यह निश्चित होता है कि, ईस्वी सन्के ५२७ वर्ष पूर्वसे ३६५ वर्ष पूर्वतकका कोई समय श्रमणाधिपति शाकटायनकी उपस्थितिका है ।

शाकटायनके सूत्रोंमें **इन्द्र, सिद्धनन्दि,** और **आर्यवज्र** इन तीन आचार्योंका नामोल्लेख हुआ है । यदि इनमेंसे किसी एकका भी कोई ग्रन्थ अथवा समय ज्ञात होता, तो शाकटायनके समय निर्णयमें बहुत कुछ सहायता मिलती । परन्तु खेद है कि, उक्त तीनों ही आचार्योंसे हम अपरिचित हैं । इनमें एक इन्द्र कदाचित वही हैं, जिनका नाम बोपदेवने वैयाकरणोंकी श्रेणीमें सबसे पहले लिया है ।

अब यह देखना है कि, शाकटायनके पीछे किसी आचार्यने उनका उल्लेख किया है या नहीं । क्योंकि समय निर्णयका एक यह भी बड़ा भारी साधन है । पाणिनिने अपने सूत्र पाठमें अनेक वैयाकरणोंका मत लिया है, उनमें एक शाकटायन भी है । पाणिनि व्याकरणके तीसरे अध्याय चौथे पादका लङः शाकटायनस्यैव यह १११वां सूत्र है । इसमें शाकटायनके प्रथम अध्याय चतुर्थपादके १५९ वें सूत्र वानुव्यातका मत लिया है । और भी कई जगह पाणिनिने शाकटायनका स्मरण किया है । इसलिये अब यह आवश्यक है कि, पाणिनिका समय निश्चित कर लिया जावे । (शेष आगे)

१ ।२ पाणिनीय व्याकरणके सूत्रोंमें बहुत कुछ त्रुटिया है । उनकी पूर्तिके लिये भाष्यकारों तथा टीकाकारोंको अपनी ओरसे "इष्टि" "वा वाच्य" "वक्तव्य" "उपसंख्यान" आदि कहना पड़े हैं । उन्हींपर यह आक्षेप है ।

स्त्री-रक्षा ।

(भगवत्सोमदेवके राजरक्षितसमुद्देशका आशय ।)

बन्दरसे लेकर चक्रवर्ती तक स्त्रीसुखके लिये क्लेशित होते है । जिन्हे स्त्री सुख नहीं है, उनका सम्पूर्ण धन परिग्रह मुर्देके शृंगारकी तरह है, अर्थात् धन परिग्रह आदि सब स्त्रीसुखके लिये ही है । प्राय सम्पूर्ण ही स्त्रिया समुद्र तटकी भूमिके समान विष और अमृत दोनोकी स्थान है । अर्थात् उनमें क्रूरता और कोमलता दोनों ही गुण होते हैं । स्त्रिया मगरकी दाढके समान स्वभावसे ही वक्रशील होती है, अतएव उनके वश करनेके उपाय देवोंको भी दुर्लभ है, अर्थात् उनको वशमें रखना अत्यन्त कठिन है । रूपवती, सुभगा, प्रशंसनीय आचरणवाली और सन्तानवाली स्त्रीको बड़े भारी पुण्यका फल समझना चाहिये । अर्थात् ऐसे गुणोंवाली स्त्रिया पुण्यवान् पुरुषोंको ही प्राप्त होती है । यद्यपि कामदेवका सरासन धारण करनेवाली स्त्रियोंका रक्षण नहीं हो सकता है, तथापि पतिको चाहिये कि, स्त्रीको परपुरुषका दर्शन नहीं होने दे, संभोगसे सन्तुष्ट रक्खे और सर्वसाधारणता देवे । यदि समानशील अर्थात् समान रूपवान, बलवान, गुणवान् पतिकी प्राप्ति हो, तो स्त्रिया परपुरुषके साथ दर्शन आलाप करनेसे अपराधी नहीं होती और कामधेनुओंके समान सब प्रकारके मनोरथ पूर्ण करनेवाली होती हैं । परस्त्रियोंमें प्रियत्व और अप्रियत्व बुद्धि नहीं करनी चाहिये, अर्थात न तो उनसे प्यार करना चाहिये और न द्वेष । परन्तु कारणवश यदि उनका स्वीकार हो जावे, तो नमिके सदृश अनुभवन करना चाहिये, अर्थात् अनिष्ट समझना चाहिये । रजोदर्शनके पश्चात् चौथे दिन स्नानकी हुई स्त्री तीर्थ है । इस तीर्थमें द्वेषादिसे गमन नहीं करना बड़ा भारी अधर्म है । ऋतुकालमें जो पुरुष अपनी स्त्रीके साथ सहवास नहीं करता है, उसे पितरोंका ऋणी और स्त्रीदूषक समझना चाहिये । (रजोदर्शनके पश्चात् १६ दिनतक ऋतुकाल माना गया है । उसमें आदिके तीन

विन त्याज्य हैं) अपराधिनी स्त्री स्वयं नष्ट होती है, और पतिका भी विनाश करती है, इस लिये उसे किसी प्रकारसे अपराध करनेका अवसर नहीं देना चाहिये। स्त्रियोंके अकर्तव्यकी मर्यादा नहीं है। अर्थात् ऐसा कोई बुरा कर्म नहीं है, जो वे न कर सकें। अविवाहित रहना अच्छा, परन्तु विवाही स्त्रीकी समागमादिसे उपेक्षा करना अच्छा नहीं है। जो खेती नहीं करता है, उसे खेतसे क्या? सारांश सहवासमें जिसकी इच्छा नहीं है, उसे विवाह नहीं करना चाहिये। दूसरी स्त्रीसे प्रेम करना, अनबन रखना, अवमानना अर्थात् तिरस्कार करना, संतान नहीं होना और चिरकाल तक वियोग रखना ये स्त्रियोंकी विरक्तिके कारण हैं। अर्थात् इन कारणोंसे स्त्रिया अपने पतिसे प्रेम करना छोड देती है। स्त्रियोंके कोई स्वभावसिद्ध गुण और दोष नहीं है। किन्तु नदियां समुद्रमें जाकर जैसे समुद्ररूप हो जाती हैं, उसी प्रकार जैसा पति पाती है, तदनुरूप गुण दोष उनमें हो जाते है। स्त्रियों का दूत कर्म, स्त्रियोंको ही करना चाहिये। क्योंकि पुल्लिङ्ग तिर्यंचोंकी समीपता भी स्त्रियोंको दूषित करती है। फिर मनुष्यकी तो कहना ही क्या है? वंशकी शुद्धिके लिये, अनर्थोंके परिहार के लिये, और आप्त लोगोंकी रक्षाके लिये स्त्रियोंकी यत्नपूर्वक रक्षाकी जाती है, उपभोग के लिये नहीं। पुरुषके अतिशय कामी होनेपर कामवती वेश्याओंका संग्रह किया जाता है। परन्तु स्मरण रहे कि, यह प्रक्रम अनर्थकारी और अकल्याणकारी है।

(शेष फिर)

जैनयंगमेन्सएसोसियेशनके प्रतिनिधिके लेखका और प्रान्तिक मंत्री महाशयकी दो दो बातोंका उत्तर।

१८ फरवरीके जैनगजटमें प्रान्तिक मंत्री महाशयने जो लेख लिखा है, उसके उत्तरमें हम यह बात प्रगट करते हैं कि, एसोसियेशनसे अथवा किसी खास व्यक्तिसे हमारा कुछ द्वेष नहीं है, और न एसोसियेशनकी बुराई करनेकी हमको जरूरत है। परन्तु जब कोई कार्य धर्मके विरुद्ध और अनुचित होगा, और एसोसियेशन उसपर ख्याल न करेगी, तो उसकी स्वयं ही बुराई होगी। मंत्रीजी लिखते हैं, एसोसियेशन श्वेताम्बर पंडितोंका उतना ही आदर करती है, जितना कि दिगम्बरी पंडितोंका। परन्तु अबतक एसोसियेशन दिगम्बरियोंकी ही समझी जाती थी। इसका मूल कारण यह है कि, इसका जन्म दिगम्बर महासभासे हुआ है और इसके कार्यकर्ता कुछ वर्ष पहले तक सब दिगम्बरी थे, अब शायद एक दो हुए हैं, सो भी उन्हें बहुत कम लोग जानते है। परन्तु मंत्री महाशयका लेख देखकर हमारा भ्रम दूर हो गया। तो भी इतना कहे विना नहीं रहा जाता कि, एसोसियेशन श्वेताम्बरी और दिगम्बरियोंके एक करनेका जो स्वप्न देख रही है, वह केवल भ्रम है। इसका परिचय एसोसियेशनके कार्याध्यक्ष कलकत्तेके अधिवेशनके समय एक प्रतिष्ठित श्वेताम्बर महाशयद्वारा अपमानित होकर पा चुके हैं, वह उन्हें स्मरण होगा।

सब्जैक्ट कमेटीके विषयमें जो आपने लिखा, वह ठीक है, परन्तु ऐसा किसी भी कमेटीमें नहीं देखा गया कि, जो प्रस्ताव सब्जैक्ट कमेटी पास कर दे, वे जनरल कमेटीमें पेश नहीं किये जावें। तब आप पक्षपात छोडके विचारिये कि, गलती किसकी है? उलटा हम पर आक्षेप करना आपकी बुद्धिमानीसे बाहर है। और प्रतिनिधि महाशयके लेखके नीचे जो नोट था, उसका हाल इस वास्ते दरयाफ्त किया था कि, वह सम्पादकीय नोट है, अथवा नहीं। क्योंकि सम्पादक महाशय एक धार्मिक और प्रतिष्ठित पुरुष हैं, वे स्वयं यहांपर उपस्थित थे, इसलिये उनके द्वारा ऐसे बनावटी लेखपर नोट होनेका हमको विश्वास नहीं था। परन्तु अब निश्चय हो गया कि, वह किसी खुशामदी महाशयका था, सम्पादकीय नहीं।

ता० २४ जनवरीके जैनगजटमें "एसोसियेशनपर झूठा अपवाद" नामका लेख किसी प्रतिनिधि महाशयने लिखा है। उसमें जो यह लिखा है कि "सब्जैक्टकमेटीके निर्वाचनके समय सब प्रान्तोंके प्रतिनिधियोंके नाम शामिल हो चुकनेपर कलकत्तेके एक युवकने कुछ नाम और शामिल करनेकी प्रार्थना की थी, उसका विरोध बाबू माणिकचन्द्रने इस लिये किया था कि, जब कलकत्तेके कुछ भाइयोंके नाम हैं, तब फिर ८–१० नाम शामिल करनेकी आवश्यकता नहीं है," सो यह सर्वथा असत्य है। बाबू माणिकचन्द्रको यह पहलेसे मालूम था कि, कलकत्तेके कुछ भाई गूढ प्रस्ताव करनेवाले हैं। इसीसे उन्होंने विरोध किया था। क्योंकि उक्त प्रस्तावोंसे आपकी लेखनी जो हवाके मैदानमें मनमानी दौड लगा रही है, वह बन्द हो जावेगी।

आगे चलकर आप दो प्रस्तावोंके विरोधका कारण पूछते है, सो आपकी कार्रवाई देखकर पाठकगण स्वयं विचार लेंगे। यदि स्वाध्याय दर्शन और पंडितोंसे आपका विरोध नहीं था, तो सब्जैक्टकमेटीमें पास किये हुए प्रस्तावोंको छुपानेकी क्या जरूरत थी? जैनगजटमें जो अधिवेशनकी रिपोर्ट छपी है, उसमे स्पष्ट विदित होता है, और सत्य ही है कि, जब सब कार्रवाई कमेटीकी खतम होनेको हुई, और तालियां बजने लगीं, उस समय बाबू शीतलप्रसादजी बम्बई निवासीने कहा कि, रातको दो प्रस्ताव जो सब्जैक्टकमैटीमें पास हो चुके है, वह पेश क्यों नहीं किये जाते हैं? एसोसियेशनके कारगुजार अपनी इच्छानुसार क्यों ऐसी कार्रवाई करते हैं? अगर ऐसा ही है, तो मैं इसके लायक नहीं हू। मेरा इस्तीफा मंजूर किया जावे, मैं मेम्बर नहीं रहना चाहता हू। इसपर बहुतसी कानाफुसफुस हुई और आखिरमें प्रस्ताव पेश होकर पास किये गये। सभापति साहबने प्रस्ताव बन्द करनेके लिये कभी नहीं कहा। आपका लिखना सर्वथा मिथ्या है। यदि सभापति सा० के कहनेसे प्रस्ताव बन्द होते, तो बाबू शीतलप्रसादको ऐसा कहनेका मौका कभी नहीं मिलता।

अंग्रेजी जैनगजटमे जो Last mahabeer नामका लेख निकला था, उसके विषयमें हमको फिर लिखना पडता है कि जिस समय यह लेख जैनगजटमें निकला था, उसी समय एक पत्र यहासे बाबू माणिकचन्द्रजी जैनीने बाबू चेतनदासजी इलाहाबादके पास भेजा था, उसमें लिखा गया था कि V. S Tank महाशय जो उस लेखके लेखक है, कौन है? और उनका इस लेखके लिखनेसे क्या प्रयोजन है? यह लेख कहासे लिया गया है, हमको धर्मके विरुद्ध मालूम होता है। उसपर चेतनदासजीका जवाब आया कि, "हमको मालूम नहीं हैं, V. S. Tank कौन हैं, और उनका क्या मन्तव्य है। हमको भी यह लेख धर्मविरुद्ध मालूम होता है। परन्तु इस विषयमे अब हम कुछ नहीं कर सकते" सो यदि यह लेख श्वेताम्बर महाशयका है, ऐसा पहले ही हमको उत्तर मिल जाता, तो इतना लिखनेका मौका न मिलता।

हमारे लिखनेका प्रयोजन यह है कि, जो कार्रवाई एसोसियेशन करै, वह धर्मके विरुद्ध नहीं होनी चाहिये। धर्मके विषयमें जो पुस्तकें या लेख छपैं, वे विना पंडितोंकी सलाहके नहीं छपने चाहिये। जैसा कि आजकल कई महाशय कर रहे हैं। इससे धर्मकी बडी हानि होती है।

कलकत्ता, ता० २५-२-०७ } एक सम्वाददाता।

मनो विनोद।

(१)

हालही एक यूरोपियन इतिहासवेत्ताने शोध लगाया है कि, वसन्तऋतुमें अकसर धूल बहुत उडा करती है, और वृक्षोंका पतझार होता है, शायद इसीसे तंग आकर पुराने जमानेके हिन्दुओंने होलीके दिनोंमें पानी और रंगसे कीचड करनेकी चाल पकडी होगी। इसका अनुमोदन करते हुए राय बुझक्कडने एक अटकल और भी लगाई है कि, "मारवाडमें इन दिनों पानीका बहुत घाटा रहता है, शायद इसीसे वहाके लोगोंने नाबदानोंके मलमूतसे पानीका काम लेनेकी चाल चलाई होगी" ऐतिहासिक समारमें इस शोधमें बडी हलचल मची है।

(२)

किसी शहरमे एक मंदिरसे जुडी हुई धर्मशाला थी। वहां कहींके शेठजीके ठहरनेकी तजवीज की गई। परन्तु जब शेठजीको यह मालूम हुआ तब वे बोले, "छि धर्मशालामा तो हूं कौ नहीं ठहरां. आ तो धर्मादारो खातो छ" किसीने यह सुनकर कहा, तो शेठजी! मै एक मसजिद अथवा गिरजाघरमें ठहरनेकी तजवीज करूं?

(३)

एक दिन राजा भोजके सम्मुख एक भुक्कुण्ड चोर उपस्थित किया गया। उसका अपराध सुनकर राजाने आज्ञा दी कि, इसे शूलीपर रख दो। तब चोरने एक श्लोक पढा,—

भट्टिर्नष्टो भारवीयोपि नष्टो।
भिक्षुर्नष्टो भीमसेनोऽपि नष्टः।
भुक्कुण्डोऽहं भूपतिस्त्वं हि राजन्—
भम्भापङ्क्तावन्तक सन्निविष्टः॥

अर्थात् भट्टि कवि नष्ट हो गया, भारवि मर गया, भिक्षुक और भीमसेन भी नष्ट हो गया। अब मैं तो भुक्कुण्ड हूं, और आप भूपति हैं। सो समझ लीजिये महाराज! भम्भाकी पंक्ति (बारहखडी) में जमराजने प्रवेश किया है। सारांश यह कि, यदि मुझे आप शूली दे देंगे, तो फिर आपका ही नम्बर आवेगा। इसे सुनकर भोज बहुत प्रसन्न हुए। चोर छोड दिया गया।

पत्रोंका सार।

तीन जैनविवाह।

चैत वदी ७ बुधवारकी गोधूली लग्नमें नासिक जिलेके गोदिया गावमें जैनविवाहपद्धतिके अनुसार तीन विवाह हुए। एक शेठ छगनीरामजी पहाड्याकी कन्याका बाबुलगावके रामलालजी काशलीवालके साथ, दूसरा बाबुलगावके सवाईरामजी काशलीवालकी कन्याका भाबलीवाले वंशीलालजी ठोलेके साथ, और तीसरा कन्हैयालालजी ठोले भादलीवालेकी कन्याका नादगावके बंशीलालजी पहाड्याके साथ हुआ। तीनों विवाह तीन स्थानोंमें पृथक् २ वेदिया बनाकर आर्षविधिके अनुसार हुए। पं० नरसिंहलालजी अध्यापक, शेठ खुशालचन्दजी पहाड्या, और मोतीलालजी बाकलीवालने विवाह विधिका कार्य सम्पादन किया। एक हर्षकी बात और भी है कि, केवल एक हजार रुपयेमें उक्त तीनों विवाह अच्छी तरहसे हो गये। व्यर्थ व्ययको रोकनेके लिये रा रा. केवलचन्दजीने बडी कोशिश की। "कम खर्च बालानशीन"के अनुसार तीनों विवाह बहुत अच्छे हुए। इन कार्योंमें गोदियागावके पचोंसे बहुत सहायता मिली, इससे वे धन्यवादके पात्र है।

आलन्दकी जैनसभा।

कार्तिक सुदी १४ से इस सभाकी स्थापना हुई है। तबसे इसके कई अधिवेशन हो चुके हैं। एक अधिवेशनमें सरस्वती भंडारके द्वारा जैनग्रन्थोंका जीर्णोद्धार करनेके लिये और एक उपदेशक दौरा करनेके लिये रखनेके प्रस्ताव हुए है। उनको अमलमे लानेकी कोशिश हो रही है। अधिवेशनोंमें कई लोगोंके अच्छे २ व्याख्यान हुए हैं। सरस्वती भंडारके लिये जैनमंदिरमें एक गोलक रक्खी गई है।

हीराचन्द सखाराम कोठारी-आलन्द

हर्षके समाचार।

कानपुरके धर्मोत्साही भाइयोंकी इच्छा थी कि, यहां पर कोई जिनबिम्बप्रतिष्ठा होवे। हर्षका विषय है कि, वह अभिलाषा अब पूरी हुई है। सरकारने मेला करनेकी आज्ञा दे दी। द्वितीय चैतकी सुदी पंचमीसे द्वादशीतक अर्थात् १७ अप्रैलसे २४ अप्रैल तकका मुहूर्त निश्चित हुआ है। सब भाइयोंको इस उत्सवमें सम्मिलित होनेके लिये तयार हो जाना चाहिये। स्थान स्थानसे श्रीजीके आनेका भी प्रबन्ध कीजिये। रेलका किराया आधा करनेके लिये बहुत कोशिश हो रही है। आज्ञा मिलनेपर सूचना दी जावेगी। किसी भाईको मेलेके विषयमें कुछ पूछना हो तो मुझसे पूछें—

चैत वदी ९ कानपुर } शम्भुदयालमंत्री—जैनबालसभा

श्रीबनेडाजीका मेला।

श्रीबनैडा अतिशय क्षेत्रमें प्रतिवर्ष मेला होता है। यहाके एक मन्दिरकी मरम्मत मुन्नालालजी जौहरी इन्दौरवालोंकी ओरसे हुई है, इस लिये इस वर्ष उनके भाव विशेष उत्सवसहित मेला भरानेके हुए हैं। अन्यान्य उत्सवोंके सिवाय तेरह द्वीपका मंडल विधान प्रतिवर्षकी नाईं प्रथम चैत सुदी ९ से प्रारंभ होकर चैत सुदी १५ को कलशाभिषेक होगा- विशेष हर्षकी बात यह यह है कि, इस अवसरपर श्रीमालवाप्रान्तिकसभाका अधिवेशन भी होगा। इस लिये समस्त धर्मात्माओंको पधारनेकी कृपा करनी चाहिये।

चैत वदी ७ श्रीबनेडाजी-मालवा } समस्त पचान जैन।

विविध प्रसङ्ग।

अमीरका भोजन—काबुलके अमीर हबीबुल्लाखा कट्टर मुसलमान हैं। कहते हैं कि, हिन्दुस्थानके दौरेमें आपने जहा जहां भोजन किये हैं, अपने बावर्चीके सिवाय किसी दूसरेके हाथसे नहीं किये है। जहा आपका भोजन होता था, बावर्ची पहले ही पहुच जाता था। अमीर साहबके इस विचारपर उन बाबू लोगोंको लज्जित होना चाहिये, जो उच्च कुलके होकर भी क्रिश्चियन लोगोंके हाथके पुण्य पदार्थोंसे अपने पेट भरते हैं।

काबुलके पापी—अमीरके राज्यमें एक काजी नियुक्त है, जो लोगोंकी धार्मिक परीक्षा लिया करता है। जो लोग धर्मकर्ममें तत्पर नहीं है, पापात्मा हैं, उन्हें वह शोध शोधके लाता है। राज्यकी ओरसे वे पापी काले मुह करके गधेपर चढाये जाकर शहरमें घुमाये जाते है।

अनाथालयका जलसा—देहलीमें भारतवर्षीय अनाथरक्षक जैनसुसाइटी हिसारका दूसरा अधिवेशन ता० ३०-३१ मार्चको होगा। धर्मात्मा सज्जनों और सभासदोंको जलसेमें शामिल होना चाहिये।

महासभाका अधिवेशन—कानपुरमें ता० १७ से २४ अप्रैलतक जिन बिम्बप्रतिष्ठा महोत्सव बडे समारोहके साथ होनेवाला है। बडे २ विद्वान् और वक्तागण पधारकर धर्मोपदेश देवेंगे। साथही भारतवर्षीयदिगम्बरजैनमहासभाका नैमित्तिक अधिवेशन किया जावेगा। सर्व भाइयोंका ऐसे मौके-पर अवश्य ही पधारना चाहिये और जल्सेकी रौनक बढ़ाना चाहिये।

सज्जनकी मृत्यु—खेदकी बात है कि, गुरई निवासी प० खेमचन्दजी परवारका परलोक हो गया। आप बड़े सज्जन और धर्मात्मा थे। आपके द्वारा ईडरकी जैन पाठशाला बहुत अच्छी पद्धतिमे चलती थी। आपकी अचानक मृत्युसे हमको बहुत शोक हुआ है।

महाराजका सन्मान—ता० २ मार्चको बम्बई निवासी सम्पूर्ण फतहपुरी श्रावकोंकी ओरसे शेठ गुरुमुखराय सुखानंदजीने श्रीमान् महाराज माधवसिंहजी सीकरनरेशको एक अभिनन्दन पत्र दिया था। जिसके लिये शेठजीने अपने माटुगाके बँगलेपर एक जलसा किया था। अनुमान ५०० सज्जन उपस्थित थे। महाराज सा० और उनके कर्मचारी अनेक मोटर गाडियोंपर बिठाकर सत्कारपूर्वक लाये गये थे। उनके लिये एक भोज भी दिया गया था। अभिनन्दनपत्रके पढे जानेके पश्चात् महाराज सा० तथा उनके कर्मचारियोंको सबकी ओरसे भेंट दी गई थी। उसमें शेठ गुरुमुखरायजीने ५००) और अन्यान्य सज्जनोंने ४९९) दिये थे। अन्तमें महाराज सा० ने उक्त जल्सेसे बहुत प्रसन्नता प्रकाशितकी थी। राजा और प्रजामें परस्पर ऐसा ही प्रेम-सम्बन्ध होना चाहिये।

अपनी कमाई—मध्यदेशोंमें दशवर्षसे अधिक उमरवाले मनुष्योंमें फीसदी ६० मनुष्य ऐसे हैं, जो अपनी कमाईसे अपना पेट भरते हैं।

मित्रका स्मारक—स्वर्गीय प्रोफेसर आबाजी काण्वटेके एक मित्रने उनकी स्मृतिके लिये पूनाके फर्ग्युसन कालेजमें पढनेवाले बी. ए. के विद्यार्थीको १९) मासिक स्कालर्शिप नियत की है। मित्रता इसका नाम है।

चन्दनका रोग—चन्दनके वृक्षको भी एक रोग लगता है। महसूर सरकार उस पुरुषको दश हजार रुपये पारितोषिक देगी, जो उक्त रोगकी कोई रामबाण औषधि शोधके निकालेगा।

विलायती कपड़ा—बम्बई टाइम्सका व्यापारी लेखक फिर लिखता है कि, होली वा मुहर्रममें विलायती कपडेकी मांग नहीं आई। शिलक पडा हुआ माल उठता नहीं है, इससे नवीन वायदे होनेकी भी आशा नहीं है।

मेलेमें स्वदेशी—श्री बाहुबलिक्षेत्रके जिनपंचकल्याणक रथोत्सवमें अनुमान १० हजार मनुष्य एकत्र हुए थे। बडे समारोहके साथ उत्सव हुआ। पूजनमें स्वदेशी शक्कर और स्वदेशी केशरका उपयोग किया गया था। मेलेमें स्वदेशी मालकी अनेक दूकानें थी, जिनमें स्वदेशी मिठाई वगैरह की बहुत बिक्री हुई। दीपोत्सवमें केवल स्वदेशी तैलका उपयोग किया गया था।

आधुनिक अर्जुन—प्रोफेसर लल्लूभाई कल्याणजीशाह भावनगरके एक जैनी सज्जन हैं। आप धनुर्विद्या और निशानेबाजीमे अद्वितीय हैं। आपको लोग आधुनिक अर्जुन कहा करते हैं। आपने अपनी विद्याके अनेक प्रयोग दिखाकर लोगोंको चकित कर दिया है। उनके अदृश्यवेध, मत्स्यवेध, आदिके प्रयोग अर्जुन पृथ्वीराज आदिके प्राचीन पराक्रमोंको प्रत्यक्ष कर देते हैं। आखे बन्द करके विना हाथोंकी मददसे पैरके अगूंठेसे बन्दूक चलाकर निशानेपर गोली मारना, एक बडे मटकेमे भिन्न २ चार रंगोंके छोटे २ घडे रखकर, घूमते हुए बडे मटकेपर निशाना लगाकर जिस घडेको दर्शक कहें, उसीको तोड देना, एक लटकते हुए तराजूके दोनों पलडोंपर पैर रखके खडे होना और ऊपर बहुत ऊंची लटकती हुई मछलीको नीचे आध इंचके शीसेमे देखकर वेध देना, ये तीन प्रयोग आपने अनेक जगह किये हैं।

मुंडिये बाबा—कठियावाडमें एक मुंडिये बाबा नामके साधु हैं। वे इस महीनेमें मोरवीके लोगोंको मिजबानी करनेवाले हैं। उनके पास एक लकडीका कटोरा है। इस कटोरेको एक बार भर देनेसे फिर उसमेंसे चाहे जितना मिष्टान्न निकालते जाइये, वह खाली नहीं होता है! कच्छ तथा काठियावाडमें उनकी बडी प्रसिद्धि है। कहते हैं, अनेक रजवाडोंसे उन्हें सहायता मिलती है।

छपी पुस्तकोका हिसाब—गत तिमाहीमें बम्बई प्रान्तमें अंग्रेजी १२, गुजराती ७३, हिन्दी १२, कानडी ११ और मराठी २६ इस प्रकार १३४ पुस्तकें प्रसिद्ध हुई है। मराठीकी पुस्तकें विशेषकर शास्त्रीय विषयोंकी हैं।

दक्षिणमहाराष्ट्रसभाका अधिवेशन—आगामी द्वितीय चैत्रशुक्ला फलटणमें श्रीजिनबिम्बप्रतिष्ठा महोत्सवमें श्रीमती दक्षिणमहाराष्ट्रजैनसभाका नैमित्तिक अधिवेशन होगा। शोलापुरके शेठ हीराचन्द नेमिचन्दजीकी सेवामें सभापति होनेके लिये प्रार्थनापत्र भेजा गया है। फल्टणके सज्जन धन्यवादके पात्र हैं, जो ऐसे मंगल प्रसंगोंपर सभाओंकी ओर इतना लक्ष्य रखते है।

विरदाकी बिम्बप्रतिष्ठा—गत फाल्गुण सुदीमे विरदाकी बिम्बप्रतिष्ठा आनन्दके साथ हो गई। वहांकी रिपोर्ट हमको पीछे मिली, इसलिये गत अंकमें न छापी जा सकी, और अब विलम्ब हो जानेसे इस अंकमें सविस्तर छापना उचित नहीं दिखता। अनुमान ४०००० जैनियोंकी भीड थी। अनेक विद्वान् और धनिक उत्सवमें सम्मिलित हुए थे। प० कस्तूरचन्दके कई व्याख्यान हुए। प० लक्ष्मीचन्दकी कई शास्त्रसभायें हुई। यत्र तत्रसे आये हुए पाठशालाओंके विद्यार्थियोंकी परीक्षा हुई। उन्हें पारितोषिक दिया गया। प्रतिष्ठाकारकी ओरसे समस्त जैनियोंकी तीन ज्योंनारें हुईं। प्रतिष्ठा विधि शास्त्रोक्त होनेसे आंधी मेह ओलोंका उपद्रव नहीं होने पाया। वहा मामूली वर्षा होकर रह गई। परन्तु चारों ओर कोस कोस दो दो कोसके अन्तर पर आंधी, मेह और ओलोंका बडा उपद्रव हुआ था।

करहलकी वेदिकाप्रतिष्ठा—माघ सुदीमें यह प्रतिष्ठा हुई थी। उसके समाचार एक महाशयने अब भेजे हैं। वहां कई महाशयोंके व्याख्यान हुए थे। पंडित भाटौंलालजी धर्मामृतकी वर्षा करते थे। विद्यार्थियोंके परीक्षा ली गई थी। लाला फुलजारी लालजीने २५) महासभाको, २५) उपदेशक भंडारको, २५) जैन पाठशालाको, २५) जैन औषधालयको, १००) जैनमंदिर करहलको, और ५०००) जैन जातिकी उन्नतिके लिये प्रदान किये। बाबू बनारसीदासजी बी. ए. ने उत्सवकार्यमें बहुत सहायता पहुंचाई।

आगामी जैनमित्र बन्द—जैनमित्रका आगामी अंक बन्द रहेगा। इस वर्षके अधिक मासके दो अंक अधिक नहीं निकाले जावेंगे। एक अंक कार्तिक वदीका भी बन्द होगा।

जैनयंगमेन्स एसोसियेशनकी पालिसी।

जैनगजटके चौथे अंकमें "एसोसियेशनपर झूठा अपवाद" शीर्षक लेख किसी प्रतिनिधिद्वारा मुद्रित हुआ है। उसमें लेखकने जैन जातिके अधिकांश लोगोंको द्वेषी, पक्षपाती, अन्यायी आदि शब्दोंसे सेवा करके एसोसियेशनके गुणानुवाद किये हैं। पीछेसे सम्पादक महाशयने एक नोट देकर उसपर फूलोंकी वर्षा की है। कर्तव्यके अनुरोवसे मैं उसीके विषयमें कुछ लिखना चाहता हू।

कलकत्तेमें एसोसियेशनका अधिवेशन होना चाहिये। इस विषयमें दिगम्बर जैनसभा, बाबू धन्नूलालजी और बाबू अमोलकचन्दजीके नामसे बाबू चेतनदासजीके तीन पत्र आये। पश्चात् बाबू माणिकचन्दजी (जो एसोसियेशनके सहकारी मंत्री नियत हुए हैं,) स्वय कलकत्ते आये और उन्होंने सभामें अधिवेशनके लिये कहा। बहुत वादानुवादके पश्चात् माणिकचन्दजीने यह स्वीकार किया कि, सब्जैक्टकमेटी आपकी (बंगालके भाइयोंकी) बनेगी, उसीमें बाहिरसे आनेवाले सज्जन भी शामिल हो जावेंगे। और उसके द्वारा निर्णय होकर प्रस्ताव पेश किये जवेंगे। इसके पश्चात् यहां सभा होकर दिगम्बरजैनमहासभा और एसोसियेशनके लिये अभ्यर्थना कमेटी गठन की गई। उसीमेंसे एक सब्जैक्टकमेटी और एक वालन्टियर कमेटी भी गठित हुई। उक्त तीनो कमेटियोकी नामावली जैनगजट और जैनमित्रके द्वारा बाटी गई। सब्जैक्ट कमेटीके सभापति पंडित गुलजारीलालजी और सैक्रेटरी पदमराजजी नियत किये गये। एक विज्ञापन छपाकर जैनगजट, जैनमित्रके द्वारा बाटा गया, जिसमें सैक्रेटरीकी ओरसे जैनसमाजको सूचना थी कि, जो प्रस्ताव आपको स्वीकार करान हों भेजिये, वे सब्जैक्टकमेटीमें पेश किये जावेंगे। ऐसी अवस्थामें जब कि सब्जैक्टकमेटीमे बंगालके प्राय १९ सभासदोंकी नामावली प्रकाशित हो चुकी थी, क्या कारण है कि, बाबू धन्नूलाल और बाबू छेदीलालजीका ही नाम लिखकर शेष सभासदोंका अपमान किया गया? कैसे कहा जा सकता है कि, एसोसियेशनके कारगुजारोंने अपनी इच्छानुसार नाम नहीं चुने? प्रतिनिधि महाशय किस बुनियादपर यह झूठी साक्षी देनेको तयार होते है कि, एसोसियेशनने अपनी इच्छानुसार नाम कदापि नहीं चुने?

आगे प्रतिनिधि महाशय माणिकचन्दजीके विरोधमे कारण बतलाते है कि, "जब कलकत्तेके भाइयोंके कुछ नाम कमेटीमें शामिल हो चुके थे, तब और आठ दश नाम सभासदोंकेबढाने की कोई आवश्यकता नहीं थी, और जिनके नाम शामिल किये जानेके लिये प्रस्ताव किया गया था, वे एसोसियेशनके मर्मोका बहुत कम ज्ञान रखते थे।" पाठक, बाबू माणिकचन्दजीकी पालिसीपर जरा ख्याल करें कि, स्वय सब्जैक्टकमेटी स्थापित करने को कह गये, प्राय १९ सभासदोंके नाम भी उनके पास पहुच गये, परन्तु पीछे सिर्फ २ नामही शामिल करना आपने उचित समझ लिया। और शेष लोगोंको एसोसियेशनके मर्मोंसे अनभिज्ञ कह दिया। याद रहे कि, इन अनभिज्ञमहाशयोंमें बाबू अमोलकचन्दजीका भी नाम है, जो एसोसियेशनके पुराने मेम्बर है और जिनके नाम एसोसियेशनके अधिवेशनके लिये उसके सैक्रेटरीने पत्र भेजनेका कष्ट उठाया था। यथार्थमें इस विरोधसे बाबू माणिकचन्दजीकी आन्तरिक इच्छा यही थी कि, कमेटीमें ऐसे लोगोंका ही बहुभाग रहे, जो हमारे विचारोंसे मिलते जुलते हों, और जिनसे हमारे उद्देश्यों की सिद्धिमें कोई बाधा उपस्थित न हो।

प्रतिनिधिने आगे चलके एसोसियशनके कारगुजारोंको प्रस्ताव छुपानेके दोषसे बचानेके लिये लिखा है कि, "सभापति महाशयने प्रस्ताव बन्द करने का कारण समयका अधिक हो जाना, स्वयं बतला दिया था। सो भी सर्वथा असत्य है। एसोसियेशनके प्रथम अधिवेशनमें रिपोर्ट सुनाना, सब्जैक्टकमेटी बनना आदि कार्य हुए थे। प्रस्ताव पास करनेके लिये दूसरा दिन था। सो उस दिन थोडेसे प्रस्ताव पास करके उन प्रस्तावोंको जो कि बहुत विवादके पश्चात् सब्जैक्टकमेटीके द्वारा पहली रात्रिको निश्चित हो चुके थे, छोड़कर बाबू सुलतानसिंहजी एसोसियेशनकी ओरसे धन्यवाद देनेको खड़े हो गये। इससे सभासदोंको बहुत बुरा लगा। बाबू पदमराजने कहा, प्रस्ताव छूट गये है। सभापति सा० ने कहा, इसका विचार किया जा रहा है। परन्तु जब देरी होने लगी, तब सभासदोंको क्षोभ हुआ। बाबू शीतलप्रसादजी स्तीफा देनेको तयार हो गये, सभापति सा० ने फिर कहा कि, ठहरिये, विचार हो रहा है। आखिर बाबू छेदीलाल तथा बाबू देवकुमारजीके उद्योगसे प्रस्ताव पेश हुए। इस समय कर्त्ता महाशयने कहा कि, जल्दीके कारण प्रस्ताव छोडे जाते थे। इसपर बाबू पदमराजने पूछा, क्या यह बात सत्य है? उत्तरमें सभापति सा० ने कहा कि, "कुछ तो कहना ही चाहिये।" प्रतिनिधि महाशयको बतलाना चाहिये कि, जब इतने प्रस्ताव पेश किये गये, तब क्या तीन प्रस्तावोंके लिये असह्य विलम्ब हो जाता? क्या इन तीन प्रस्तावोंके लिये चुनते समय तीसरी बैठक करना प्रगट किया गया था? और यदि भूलसे छूट गये, तो बडी देरतक जो कानाफूसी हुई थी, सो क्यों? हमको तो सन्देह है कि, आप स्वयं अधिवेशनमे थे, या नहीं?

आगे महावीर स्वामीके लेखके विषयमें प्रतिनिधि महाशयने नादान आदि निन्न शब्द लिखकर धर्मात्माओंकी भर्त्सना की है। परन्तु मैं पूछता हू कि, वह लेख जिसमें हमारे पूज्य तीर्थंकर भगवान्‌को रोगी आदि बतलाकर लाञ्छित किया है, एसोसियेशनके पत्रमें छपना उचित था? क्या हमारे बाबू लोग यह समझते हैं कि, उससे श्रद्धालु जनोंका हृदय विद्ध नहीं हुआ है? जिस एसोसियेशनका जन्म दि० जैनमहासभाके द्वारा हुआ है, उसके द्वारा धर्मसम्बन्धमें ऐसा बुरा बदला पाकर किसे दुःख न होगा?

मुझे जहांतक मालूम है, बाबू देवकुमारजी किसी भी अधिवेशनमे कर्ता महाशयोंकी करतूतोसे सन्तुष्ट नहीं रहे, परन्तु उन्हींके द्वारा जैनगजटमें एक विचित्रही प्रकृतिका नोट पढकर मुझे आश्चर्य हुआ है। मुझे आशा है कि, वह नोट उनके हृदयका सच्चा भाव नहीं होगा और शीघ्र ही उसका प्रतिवाद किया जावगा।

कलकत्ता. २७-२-०७ एक जैनी।



हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको मंथ-नकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है। इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठंडक पहुंचती है। बदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूर होकर लहू और ताकत बढ़ती है। फी सीसी ॥≈) डा. ख. ।)

निमकसुलेमानी ।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, वदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, बवासीर प्रमेहनाशक है। स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है। फी शीशी ।।) डा. ख अलग

दंतकुसुमाकर ।

इसके लगानेसे दांतोंका हिलना मसूडोंका फूलन, खूनदर्द आदि आराम हो दांत मोतीकी तरह चमकते हैं। रोज लगानेसे दांत आजन्म दृढ बने रहेंगे। फी डिब्बी ।)

दवा दादकी ।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर भगाती है। फी डिब्बी ।)

गंधकवटी ।

यदि बालकोंको हमेशा स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसे मंगाइये इससे बच्चोंका ज्वर खांसी दस्त वायुरोग दूर होकर खूब मोटा ताजा हो जाता है इसकी गोली रोज खिलाना चाहिये. कीमत. ।।) सौ. डॉ. ≈

पंचतिक्तवटिका ।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है। इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते हैं। किं०।।)डा.≈)

बगछिल्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई

प्रमेहनाशक अपूर्वताकतकी दवा ।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनको सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना प्रसंगकी इच्छा न होना, नपुंसकता, नाताकती, कमरमें दरद, थोड़ा चलनेसे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुशकी वा जर्दी, बदनमें फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्ब्बलता, रगोंकी कमजोरी. उठती जवानीमें कुचालसे पैदा हुई नामर्दी, आदि सब रोग जड़से नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है। जिसमें उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आखोंमे रोशनी, बदनमें फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है। मूल्य १ डिब्बाका २।।।), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १३) खर्च माफ.

श्वासारिष्ट ।

इससे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है। कीमत १) डा० ।।)

नपुंसकत्वारि तैल ।

इसके लगानेसे गुप्तभागसबंधी सर्व प्रकारके रोग दूर होते है। फी सीसी १) डाकखर्च ≈)

प्रदरांतक चूर्ण।

इससे स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस संबंधी सर्व विकार दूर होते हैं। कीमत १) डा० ≈)

नयनामृत सुरमा ।

इसके लगानेसे आखोका जाला धुन्ध, फुली, पानी, बहना, सुर्खी, पक्खर आदि नेत्ररोग दूर होते है और ज्योति बढाता, ठंडक रखता और पढते २ आखों नहीं थकती हैं। फी शीशी १) लगानेकी सलाई ।

जैनग्रंथसंग्रह ।

इसमें छोटी २ पचास पुस्तकोंका संग्रह है। यही एक पुस्तक पास रखना काफी है। सुन्दर टाइपसे पुष्ट कागजपर छपी है। जल्दी मंगाइये। ऊपरसे सुन्दर जिल्द बंधी है। मूल्य पोष्टेजसह ।।)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य, आयुर्वेदीय औषधालय—इटावा (U. P.)

उत्तम और सस्ते जैनपुस्तक ॥

जैनग्रन्थसंग्रह

छप गया ! छप गया !! छप गया !!! जिस पुस्तकके लिये ग्राहकगण चिठ्ठियोंकी भरमार कर रहे थे वही फिर दूसरी बार छप गई साथही मूल्य भी कम कर दिया है इसमें छोटी बडी संस्कृत और भाषाकी ५० पुस्तकोंका संग्रह है परदेशमें केवल यही एक पुस्तक पास रखना काफी है सुन्दर टाईपसे पुष्ट कागजपर छपी और जिल्द बंधी है जल्दी न मगानेसे पछताना होगा किं ०।।) डा० माफ ।

व्याख्यानरत्नमाला ।

विद्या, धर्म, सत्संगति, कुरीतिके विषयमें ४ भाग	≈)
नवीन होली संग्रह, एकवार अवश्य पढिये ...	)॥
संगीत मनोरमा (नौटकीकी राहमें) ...	≈)
संगीत नेमचन्द्रिका (नौटकीकी राहमें) ...	≈)
जैनभजनसंग्रह (चालें भी लिखी हैं)	≈)
स्तोत्रशतक (अनेक रागोंमें १०० स्तुतियां हैं) ..	≈)
प्रश्नोत्तरमाला (चर्चाकी पुस्तक है) ...	-)
तत्वार्थसूत्रजी मूल	-)
पञ्चमङ्गल पाठ	)॥
बारहमासा राजुलजी	)॥
बारहमासा सीताजी	)।
बारहमासा मुनिजी	)।
बारहमासा वज्रदंत	)॥
वैराग्य भावना	)।
अध्यात्म पचासा	)।
दश आरती	)।
निर्वाणकाण्ड भाषा	)।
धर्मपचीसी	)।
हुक्का निषेध	)।
दुःखहरण बिनती . . .	)।
संकटहरण विनती	)।
बारह भावना संग्रह	)।
समाधिमरण (एक बिनती सहित) ..	)।
परमार्थ जकडी, बा० राजुल सोरठमें .	)।
पुकार पचीसी ...	)।
जैनबालगुटका (बालकोंको पढाइये) ...	)।
इष्ट छत्तीसी निर्वाणकाण्ड भाषा ...	)॥
बाईसपरीषह, बारह भावना सहित	)॥
प्रश्नोत्तर नेमराजुल	)॥
आलोचनापाठ अर्थसहित	)॥
ब्याहला नेमिनाथ	)।
सामायक भाषा	)।
सप्तऋषि पूजा	)।
निशभोजन भुजन कथा	)।
भक्तामर संस्कृत व भाषा	-)

विदेशी खांड निषेध)॥ } दोनों १०० इकट्ठी लेने
बुढापेका विवाह)॥ } से २ रु० सैकडा

नियमावलि ।

१ चार आनेसे कमकी पुस्तकें नहीं भेजते हैं ।
२ एक किस्मकी ५ पु. इकट्ठे लेनेसे १ मुफ्त ।
३ डाक खर्च पाससे देते हैं ग्राहकोंको सिर्फ मनीआर्डर फीस देना होगी ।

मिलनेका पता—
बाबू बीरसिंह जैनी, इटावा (U. P.)

'कर्नाटक' प्रेस, मुंबई.

Registered No. B. 288.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०म० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमे व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

जैनमित्र

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है ।

६ इस पत्रमे वे ही विज्ञापन छपेंगे व बँटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेमे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
दुसरा भोईवाडा पो० कालबादेवी
बम्बई ।

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

वर्ष ८ वां] द्वितीय चैत्र शुक्ला २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द। ता० १४ अप्रेल सन् १९०७ ईस्वी। [अंक १२ वां।

दिगम्बरजैनपरीक्षालय बम्बई ।

सम्पूर्ण जैन पाठशालाओंके व्यवस्थापकों तथा अध्यापकोंको विदित हो कि, आगामी आषाढ मासके कृष्णपक्षमें सम्पूर्ण पाठशालाओंकी परीक्षा लेनेका प्रबन्ध किया गया है । इस लिये प्रवेशिकापरीक्षा और पडितपरीक्षाके कौन कौनसे खंडमें कितने २ विद्यार्थी परीक्षामें बैठेंगे, इसकी सूचना हमको शीघ्र मिलनी चाहिये, जिससे प्रश्नपत्रादि तयार करानेमे सुभीता पडे । इस वर्ष कारण विशेषसे प्रत्येक विषयमें अलग २ परीक्षा लेना निश्चय किया है ।

प्रत्येक पाठशालामें शिक्षक कितने हैं, बालक कितने है, शिक्षण किस पद्धतिसे होता है, आदि सब बातोंका खुलासा भी लिखिये। जिनके पास पठनक्रम व नियमावली न हो, हमसे मगा लेवें ।

रावजी सखाराम दोसी
मंत्री परीक्षालय—शोलापुर

जरूरी नोटिस ।

१ श्रीमती दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बईका दफ्तर मोरेनासे उठकर अब बम्बईमे आ गया है । बाबू फूलचन्दजी पाटणी इस सभाके सहायक महामंत्री (ज्वाइट जनरल सेक्रेटरी) नियत हुए हैं । उन्हींकी देखरेखमें दफ्तरका कार्य होगा। इस लिये सभा सम्बन्धी सब प्रकारके पत्र व्यवहार इस पतेसे करना चाहिये — **बाबू फूलचन्दजी पाटणी ।**

सहायक महामत्री दि० जं० प्रान्तिक सभा
दुसरा भोईवाडा पो० कालबादेवी—बम्बई ।

२ इसी प्रकार जैनमित्रका आफिस भी मोरेनासे उठकर बम्बई आ गया है, इस लिये तत्सम्बन्धी समस्त पत्रव्यवहार भी आयन्दा नीचे लिखे पतेसे करना चाहिये ।

मैनेजर जैनमित्र—दुसरा भोईवाडा
पोष्ट कालबादेवी—बम्बई ।

केशरकी पवित्रता ।

कानपुरके भाइयोंने हमारे यहाकी पवित्र केशरको भी रातमें भिजोकर १०–१२–घटे सडाकर उसका रग अर्थात् सुगधित सार निकालकर शेष फोकशको जलाकर दुर्गंधित पानेसे अशुद्ध ठहराई है जिससे हमको बडा आश्चर्य हुआ कशमीरके किसानोंके यहासे जैनी भाईके द्वारा खरीदकर मगाई हुई असलीकेसर भी जब अशुद्ध ठहराई जाती है तो फिर केशरका अभावही समझना चाहिये—लाचार हमने ओसवाल भाइयोंकी खुलाई हुई स्वदेशी कंपनीसे यह जिकर किया तो उन्होंने अद्वितीय पदार्थवेत्ता प्रोफेसर गज्जरको केसर भेजकर पृथक्करण क्रियासे परीक्षा कराई तो उन्होंने सार्टीफिकट दिया कि “आपने स्वदेशी केसरका नमूना भेजा वह जाचनेसे शुद्ध व अनमेल पाया गया अर्थात् इसमे किसी भी अशुद्ध पदार्थका मेल नहीं है । जिसकी असलनकल यह है—

TECHNO CHEMICAL LABORATORY,
Director—Prof T K gajjar
M A B S E A C S
Girgaum Tram Terminus
Bombay 9th February 1907

THE SWADESHI Co,
Mandvi Bombay.

Dear Sirs,

The Sample of Swadeshi Saffron sent by you has been found to be a pure genuine Sample of Saffron unmixed with any adulterants

Yours faithfully,
(Sd) D D KANGA,
Analytial Chemist.

इस परसे हमको पूर्णतया विश्वास हो गया कि इसमें जो अपवित्रताका दोष लगाते है सो झूठा है—फोकसमे जो दुर्गंध आती है वह मास वा मदिराकी नहीं किन्तु सडे हुये फोकसकी स्वाभाविक है । जिन भाइयोंको हमारा विश्वास हो वे अवश्य यहीं केसर मगावे जिनको विश्वास न हो वे और कहींसे भी नहीं मगावें क्योंकि जैसी खात्रीसे यह केशर मगाई जाती है वैसी खात्रीसे और कोई भी नहीं मगा सकता है । बढिया केशरका भाव ४५) रु रतल (३९ तोले) फुटकर १।) तोला ।

भाइयोंका दास—
पन्नालाल जैन, पो. गिरगाव, मुम्बई.

दि० जैन बोर्डिंग स्कूल आगराके चंदेकी सूची ।

१	श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद हीराचंद जे. पी	१०००)
२	लाला गोपीनाथ बजाज	४०००)
३	लाला पदमचंद फूलचंद	११२९)
४	रायबहादुर लाला घमडीलाल	१००१)
५	लाला बेनीराम उत्तमचंद	१००१)
६	लाला पदमचंद भूरामल	५०१)
७	बाबू देवीप्रशाद रहीस	५०१)
८	लाला लह्लामलजी	५०१)
९	लाला बाबूलाल देवकीनंदन	२०१)
१०	बाबू हरबिलास बेनीराम	१५१)
११	लाला गणेशीलाल कन्हैयालाल	१८०)
१२	लाला हजारीलाल गोधा	१०१)
१३	लाला सुन्दरलाल राजमल	१०१)
१४	लाला पानीराम परमादीलाल	१०१)
१५	लाला मिट्ठालाल गिरवरलाल	१०१)
१६	लाला भीकामल छोटेलाल	१०१)
१७	डाक्टर दलीपसींग अग्रवाल	१०१)
१८	लाला मोहनलाल गुलाबचंद	१०१)
१९	लाला मोतीलाल कुन्दनलाल	५०)
२०	लाला घनश्यामदास	५१)
२१	लाला ताराचंद	५१)
२२	लाला चन्द्रसेन कुन्दनलाल	५१)
२३	लाला चुन्नीलाल चौधरी	५१)
२४	लाला मोतीलाल जवाहिरलाल	५०)
२५	लाला मुन्नीलाल पल्लीवाल	११)
२६	जमवाल स्त्रियोंकी तरफसे	५३॥=)
२७	फुटकर आमदनी	३७०)
		१९६०७॥=)॥

हमेशांके लिये वार्षिक सहायता

१	श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद हीराचंद जे. पी.	३००)
२	बाबू देवीप्रशाद रहीस	१००)
३	लाला मोतीलाल कुन्दनलाल	२५)
४	लाला मुन्नीलाल पल्लीवाल	१२)
५	बाबूलाल क्लार्क ,, ,,	२)
		४३९

ग्राहकोंको सूचना ।

१. गत ११ अंककी वी पी. ५ महाशयोंको छोड ६० महाशयोंने स्वीकार की इस लिये उन ५ महाशयोंसे निवेदन है कि आप आगेको ग्राहक होना नहीं चाहते तो इतने अंकोंका मूल्य अवश्य भेज देवें ।

२. बहुतसे महाशय सुशीला और जैनसिद्धान्त न निकलनेकी शिकायत करते है, उनसे निवेदन है कि अब शीघ्रही इसके निकालनेका प्रबन्ध किया जायगा ।

आपका,
मैनेजर.

NOTICE

The Deputy Commissioner of Hazaribagh, would like to meet the leading members of both the Digambari and Swetambari Sect of Jains on Parasnath Hill about the 5th May to lay before them his proposals for granting building leases on the hill and to arrange for any provisions that may seem necessary to safeguard the interests of worshippers of the Shrines. An exact date will be fixed after considering the convenience of those concerned.

HAZARIBAGH, (Sd.) H. D. LARI
26-5-1907 D. Commissioner

नोटीस

हजारीबाग का डिप्युटीकमिश्नर दिगम्बरी और श्वेताम्बरी लोगों के अगुआलोगों से लगभग ५ मई सन हाल को पारसनाथ के पहाडपर मिलना चाहता है । वह अपने विचार दोनों दिगम्बरी और श्वेताम्बरी लोगों के साम्हने पहाडके ऊपर सालाना ठहरावके साथ मकान आदि बनाने के लिये कि जिनसे उस स्थानके पूजक यात्रियों को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसी सर्तों का इतजाम करेंगे । पक्की तारीख इसके सम्बन्ध की आप लोगो को पीछे विदित की जायगी ।

हजारीबाग २६ मार्च १९०७ ई. एच. डी. लेअर डिप्युटी कमिश्नर

नोट—हजारीबागके डिप्यूटी कमिश्नर साहिबका विचार ऐसे पवित्र तीर्थपर अंग्रेज लोगोंके रहनेके लिये बंगला आदि बनानेका मालूम पडता है । जहा कि नित्य अंग्रेज मास भक्षी हिंसा करेंगे । और पहाडपर शिकार भी करेंगें । इस कार्यके विरुद्ध दोनो पक्षोंको मिलकर कार्य करना चाहिये

जैनमित्र.

द्वितीय चैत्र शुक्ला २ श्रीवीरनिर्वाण सवत् २४३३ ता० १४ अप्रैल सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

प्रियवाचकवृन्द ! आपको विदित होगा कि शहर कानपुरमें मिति द्वि० चैत्र शुक्ला ९ से १२ तक तदनुसार ता. १७–४–०७ से २४–४–०७ तक एक भारी बिम्ब प्रतिष्ठा होनेवाली है। वर्त्तमान समयमें कानपुरके जैनी भाई धर्मनिष्ठ और प्रभावनामें अग्रेसर गिने जाते है। और इसीलिये भव्य जीवोंको पुण्यभण्डार भरनेके लिये प्रजामें शान्ति, रोगादिककी निवृत्ति आदिके लिये उन्होंने यह महायज्ञ करना प्रारम्भ किया है। क्यो न हो धर्मात्माओंसे सदा धर्मकार्यही होते रहते है और उससे अनेक भव्यजीव पुण्यभण्डार भरते रहते है। इस प्रतिष्ठाके प्रतिष्ठाचार्य करहलनिवासी सुप्रसिद्ध पण्डित भादोंलालजी सुने जाते है। वा नवसे उक्त पण्डितजी प्रसिद्ध है परन्तु वे सुप्रसिद्ध होकर भी किस सुप्रसिद्ध प्रतिष्ठापाठसे प्रतिष्ठा करायगे सो अभी तक विदित नहीं हुआ है।

वर्तमानमें श्रीमद्भट्टाकलङ्कदेव, नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, वसुनन्दिसिद्धान्त चक्रवर्ती, और महापण्डित आशाधरजीके बनाये हुए प्रतिष्ठापाठ उपलब्ध है। और उनके देखनेसे यह भी ज्ञात होता है कि सब पाठोंकी क्रिया और विधान प्राय सदृश ही है।

थोडे दिनसे एक प्रतिष्ठापाठ और भी प्रचलित हुआ है जो कि वसुविन्द्वाचार्य कृत पुकारा जाता है। इसका खोज बाबा दुलीचन्दजीने किया है। उनका कथन है कि ये आचार्य तेरहपथ आम्नायके हो गये है। इसी प्रतिष्ठापाठसे खुर्जा, करहल आदि स्थानोंमें प्रतिष्ठा हो चुकी है। कदाचित् कानपुरमें भी इसका प्रवेश हो इसलिये हमे आज कानपुरके भाइयोसे कुछ प्रार्थना करनेकी आवश्यकता हुई है।

यह सब भाइयोंको विदित है कि, जबसे इस प्रतिष्ठापाठका प्रादुर्भाव हुआ है, तबसे ही इसपर आन्दोलन होना प्रारम्भ हुआ है और प्राय सिद्ध हो चुका है कि, यह पाठ बाबाजीने अपने मनोनुकूल नवीन ही सग्रह किया है कि, जिसके यागमण्डल, शान्ति, होमादिकमें यक्षादिक देव देवियोका आव्हानादि सर्वथा नहीं है जो कि दूसरे समस्त प्रतिष्ठापाठोमें पाया जाता है। इसको नवीन बतलानेका हेतु यही है कि इसके प्रगटकर्त्ता बाबाजीने इसकी मातृकाका पता कहीं किसीको भी नहीं बतलाया। इस बातको सब लोग सहज रीतिसे जान सकते है कि जो प्रति नकल की गई होगी वह विना दूसरी प्राचीन प्रतिके नहीं की गई होगी और वह भी अन्य किसी तीसरी प्राचीन प्रतिसे की गई होगी। और आचार्योको हुए हजार पन्द्रहसौ वर्ष हो गये (क्योंकि वसुविन्दु आचार्यको भगवज्जिनसेनाचार्यने भी नमस्कार किया है) इसीलिये दूसरे ग्रन्थोंके समान इस पाठकी भी २०० या ३०० वर्षकी लिखीहुई प्राचीन प्रति कहीं अवश्य होनी चाहिये। अन्यथा बाबाजीने किस प्रतिसे नकल कराई ? बाबाजीसे इसकी मातृका प्रगट करनेके लिये कईवार कहा गया, जैनमित्रमे लेख भी दिये गये परन्तु जब बाबाजी इसके स्वय ही कर्ता हैं तो उनको सिवाय मौनके और उपायही क्या है। हमने आजतक नहीं सुना कि आचार्य रचित ग्रन्थोंमे तेरह बीसका भेद हो अथवा बीस और तेरहके अलग अलग आचार्य हुए हों। बाबाजीने आचार्योंकी कृतिपर छुरी फेरकर जो घोर अन्याय किया है उससे उनको क्या फल मिलेगा सो तो हम नहीं कह सकते, परन्तु कानपुरके धर्मात्मा भाइयोंको अवश्य चेताते है कि वे इस आधुनिक प्रतिष्ठापाठसे कभी प्रतिष्ठा न करावे। जब हम सिद्धान्त चक्रवर्त्ती, स्वामी भट्टाकलङ्कदेव आदि आचार्योंके अन्य गोमटसार, राजवार्तिकालङ्कार आदि ग्रन्थ मानते है तो क्यो निष्कारण उनके बनाये हुए प्रतिष्ठापाठकी अवहेलना कीजाय, और एक मायावीके (बाबाजी जबतक इस पाठकी प्राचीन प्रति प्रगट कर सर्व साधारणमें भरोसा न करावेगे तबतकके लिये यह विशेषण है। प्राचीन प्रतिके मिलनेपर अवश्य ही हम बाबाजीसे क्षमा मागनेको तयार है) बनाये हुए प्रतिष्ठापाठसे प्रतिष्ठा की जाय कि जिस पाठमे कोईभी पूर्णविधि नहीं है और जो सर्वथा अप्रमाण और कल्पित है। यह बात चतुर्थ वर्षके जैनमित्र अङ्क ३–४–५–६ के कई लेखोंसे सिद्ध हो चुकी है। बाबाजीने हम जैनियोंके साथ यह बडी भारी दगाबाजी की है कि वे उस पाठको स्वय बनाकर एक बडे आचार्यका बनाया हुआ बतलाते है। भगवन् त्राहि। प्रिय पाठको इसपर बहुत आन्दोलन होनेपर भी मौनावलम्बनको जी नहीं चाहता और निरन्तर अपायविचय अर्थात् कथ मार्गं प्रपद्येरन्नमी उन्मार्गतो जनाः ' स्मरण आता है।

जब बिम्बप्रतिष्ठादिक प्रभावनाङ्गमे गिने गये है, और यदि इनके करनेमेही पूर्वाचार्योंके अभिप्राय और कृतिका उच्छेद किया जाता है, कि जिसका उच्छेद जैनमतके जडरूप सर्वज्ञ आप्त वचनोका उच्छेद गिना जाता है, तो फिर हमारी समझमे नहीं आता कि उसको किस वर्णमालासे उच्चारण करें। इसलिये धर्मकी ध्वजा उडानेवाले कानपुरके भाइयोंसे प्रार्थना है, और पूर्ण आशा है कि वे किसी आचार्यरचित प्रसिद्ध प्रतिष्ठापाठसे प्रतिष्ठा करायगे। और जो इसीसे कराना अभीष्ट हो तो उसके पहले बाबाजीके द्वारा अथवा स्वयं इसकी प्राचीन प्रतिका खोज कर सर्व साधारणको विश्वास दिलायगे कि पाठ प्राचीन और पूर्वाचार्य विरचितही है। बाबाजीका कल्पित नहीं है। अन्यथा स्मरण रहे कि प्रतिष्ठा करानेमे जितना पुण्य होता है उसके बदले और अनेक बिम्बनिर्मापणसे उनके दर्शन द्वारा अनेक भव्य जीवोंको जो पुण्य होता है, उस पुण्याशके बदले शास्त्रोक्त विधिरहित प्रतिष्ठा करनेसे बिम्बको अपूज्यही रखकर सावद्यके भागी भी आप ही होंगे। यद्यपि तीन वर्ष पहलेके आन्दोलनसे यह वृत्त आपको विदित होगा परन्तु कदाचित् स्मरण न रहा हो अथवा आपका श्रद्धान तद्रूपही हो, तो दुबारा चेतावनीके यह प्रार्थना की गई है आशा है कि कुछ ध्यान दिया जायगा और निम्नलिखित आचार्यवर्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्तीके कथन परभी कुछ खयाल किया जायगा।

सम्माइट्ठी जीवो उवइट्ठं पवयणं तु सद्दहदी।
सद्दहदि असब्भावं अजाणमाणो गुरुणियोगा ॥१
सुत्तादो तं सम्मं दरिसिज्जंतं जदा ण सद्दहदी।
सो चेव हवदि मिच्छाइट्ठी जीवो तदप्पहुदी ॥२

भावार्थ—सम्यग्दृष्टी जीव जिनेन्द्रके कहे हुए वचनोपर श्रद्धान करता है परन्तु कभी २ अल्पज्ञ गुरुके निमित्तसे विपरीत पदार्थकाभी श्रद्धान करता है कि जिसको वह जानता नहीं है। तथापि उसके सम्यक्त्वमें दोष नहीं आता परन्तु जब कोई अन्य गुरु आदिक शास्त्रके अनुसार उसको सम्यक् समझा

और वह उसका श्रद्धान न करै तो उसी समयसे वह मिथ्या दृष्टी गिना जाता है।

कानपुरमे श्रीमती दि. जै धर्म संरक्षिणी महासभाका नैमित्तिक अधिवेशन भी होने वाला है यदि सचमुच यहां बाबा दुलीचन्दजी निर्मित प्रतिष्ठापाठसे प्रतिष्ठा कराई जाय तो उक्तमहासभाको भी इधर पूरा ध्यान देना चाहिये। अन्यथा लोकानुरोधसे कहा जायगा कि धर्म संरक्षिणी महासभाभी धार्मिक-कार्य हाथमें नहीं लेती है। और जहा पूर्वाचार्यो की कृतिको तिलाजलि देकर अनर्थ किया जायगा, जहा सैकडों अपूज्य प्रतिमायें विना पूर्ण मन्त्रादिकके ही पूज्य समझी जायगी और जहा आर्यसमाजियोंकी तरह एक नवीन कल्पित मत प्रवर्त्त होगा वहा उक्त महासभा जाकर शामिल होती है। आशा है कि महासभाके कार्यकर्त्ता और कानपुरके प्रतिष्ठापक कार्यकर्ता इस मिथ्या काण्डपर लक्ष्य देगे और "नहि मन्त्रोक्षरन्यूनो निहन्ति विषवेदनाम्" इस स्वामी समन्तभद्राचार्यके वाक्योंपर, और हमारी प्रार्थनापर अवश्य ध्यान देगे। और इतना पुकारने पर भी किसीके कानमें भनक भी न पडे तो किमाश्चर्यमत परम्। इति भद्रम्॥

अमेरिकाके न्यूयार्क नगरसे एक वर्ल्ड नामका प्रसिद्ध पेपर निकलता है। कुछ दिन पहले उसमें शक्कर साफ करनेकी पद्धति प्रकाशित

विदेशी शक्करमें अपवित्रताकी सीमा नहीं है।

हुई थी। ९ सितम्बर १९०६ के पैसा अखबारमें आज हम अपने पाठकोंको सचेत करनेके लिये उसे उद्धृत करते है। "शक्करके कारखानोंके मालिक गरीब और मजदूरोंके मुर्दे उनके वारिसोंको कुछ रुपयेका लालच देकर खरीद लेते है, चाहे वह किसी छूआछूतकी बीमारीसे ही क्यों न मरे हों और इस पर भी आश्चर्य यह है कि, महा कुष्ट रोगसे जो लोग मरते हैं, उनके मुर्दे भी नहीं छोड़ते। और उन मुर्दोंका मास शक्कर साफ करनेके काममें लाते है। इसके सिवाय आम लोगोंका थूक वगैरह नित्य मल मजदूर लोग वर्तनोंमें भरकर कारखानेवालोंके हाथ बेच देते हैं और वह उसको शक्कर साफ करनेमें व्यवहृत करते हैं।" यद्यपि हम अनेक समाचारपत्रों और इश्तहारोंसे जान चुके है कि, विदेशी सुफेद शक्करके तयार करनेमें ऐसे अपवित्र और घृणित पदार्थ व्यवहृत होते है जो हिन्दु मुसलमान दोनोंके लिये अत्यन्त धर्मविरुद्ध और त्याज्य है। जैसे गाय बैलोंका रक्त और सूअर वगैरह जानवरोंकी हड्डियां। अब इस नई युक्तिको देखिये कि, जानवर तो अलग रहे, मनुष्योंके मुर्दोंका भी गोश्त नहीं छोडा! क्या अब भी कोई मनुष्य इस बातके जाननेपर कि इसमें हमारे भाइयोंका गोश्त और घृणित तथा बीमारी फैलानेवाली चीजें कि जिनसे शरीर, मन और मस्तिष्कपर बहुत बुरा असर होता है, व्यवहार किया जाता है, अपने खानेमें इस विदेशी शक्करका व्यवहार कर सकता है? नहीं, सर्वथा नहीं। हा! जो बुद्धि व धर्मके सिवाय अपना मनुष्यत्व भी खो चुके है, उनके विषयमें हम कुछ नहीं कह सकते। विदेशी शक्करके पक्षपाती फलटण निवासी जैनी भाइयोंको इस ओर ध्यान देना चाहिये इन्होंने इस महा अपवित्र शक्करका पक्ष लेकर केवल अपनाही धर्म कर्म नहीं खोया है। किन्तु ससारभरमे सबसे पवित्र और पवित्र वस्तुओंको सदा काममें लानेका आदेश देनेवाले जैन धर्मको लज्जित किया है। फिर भी तुर्रा यह है कि जैनधर्मकी आज्ञानुसार पवित्र वस्तुको काममे लानेवाले उह घरोंको बहिष्कारकी फटकार बतलाई है। आशा है कि हमारे भाई उपर्युक्त विदेशी शक्करकी उत्पत्तिकी ओर ध्यान देकर इस दुराग्रहको छोड शीघ्रही धर्माभिमुख होंगे।

आर्यमित्र और जैन।

प्यारे पाठक इस बातको भूले नहीं होगे कि गतवर्षसे आर्यमित्र और जैनमित्रमे उपर्युक्त शीर्षक द्वारा कुछ प्रश्नोत्तर चल रहे थे इस विषयका अन्तिम लेख आर्यमित्रमे प्रथम और आठमी जनवरी सन् १९०७ के अकोंमे निकला था हमको खेदके साथ लिखना पड़ता है कि, लौकिकव्यवसायवश सावकाश न मिलनेसे उक्त विषयपर कुछ न लिख सके। अस्तु प्रकृतमनुसराम॥

बडे आश्चर्यकी बात है कि हमारा सहयोगी प्रकृत विषयसे च्युत होकर विषयान्तरका जाल बिछाकर भोले पथियोंकी तरह हमे फसानेकी चेष्टा कर रहा है। परन्तु याद रहै कि हम उसको विषयान्तरमें जानेका अवसर देना नहीं चाहते और इसी लिये हमको ध्यानके आसनादि विषयान्तरोंकी उपेक्षा करके प्रकृत विषयका ही उल्लेख करना पडा है। हम कई वार लिख चुके है और फिर भी लिखते है कि "तीर्थंकरोंकी प्रतिमा ध्यानारूढताकी अपेक्षासे तीर्थंकरोंके सदृश है"। हमारे इस वाक्यके प्रत्युत्तरमें सहयोगीने ऐसा कोई भी वाक्य न लिखा जो विद्वज्जन मान्य और न्याय सगत होता। ध्यानकी मूर्तिको असंगत बताना केवल प्रलाप मात्र है। घीके घडेकी तरह ध्यानकी मूर्त्ति सुतरां उपचार सिद्ध है, ध्यानकी मूर्त्ति इस वाक्यमें ध्यानपदसे ध्यानवान्का ग्रहण किया है। ध्यानके आर्त रौद्र धर्म्य और शुक्ल ऐसे चार भेद है। प्रत्येक समयमे प्रत्येक जीवके उपर्युक्त चारो ध्यानोंमेंसे कोई न कोई ध्यान होता ही है। इस लिये जब ध्यानरहित अवस्थामे कोई भी जीव किसी समय नही है तो फिर ध्यान शब्दके आगे मतुप प्रत्यय व्यर्थ पडा. और व्यर्थ होकर ध्यान शब्दकी वृत्ति प्रशस्त ध्यानमें ज्ञापित करता है। इस लिये ध्यानकी मूर्त्ति इस वाक्यमें ध्यान शब्दका वाच्य प्रशस्त ध्यानवान् समझना, न कि सामान्य ध्यान, जैसा कि सहयोगीने उक्त अकमे उल्लेख किया है। इस लिये तीर्थंकरोंकी प्रतिमामें तीर्थंकरोंकी सदृशता युक्तियुक्त है।

आगे हमारे सहयोगीने हमारे सम्प्रदायके ग्रन्थोंकी नामावली पूछनेमें आकाश पाताल एक कर अपनी योग्यता का परिचय दिया है। न मालूम कि यह बात सहयोगीके मगजमे क्यों नहीं प्रवेश करती कि एक सम्प्रदाय किसी खास एक आदमी की नहीं है किंतु एक सप्रदायमे असख्य ऋषि और असख्य ही उनके अनुयायी होसकते है। और ऐसा होनेपर असख्यर्षि विरचित असख्य ग्रन्थ होनेमें कौनसी ऐसी बाधा आती है जो सहयोगीके शल्यकी तरह खटक रही है। हमारी सप्रदायके ग्रन्थ दयानदजीकी सप्रदायकी तरहसे सकुचित सख्या विशिष्ट एक दो चार ही नहीं है। असख्य ग्रन्थोंको कूजडीका गल्ला मानना सहयोगीकी विस्फारित बुद्धिका नमूना दिखा रहा है। सहयोगीको समझना चाहिये कि सत्यधर्मके प्ररूपक असख्यर्षि होनेसे सत्यधर्ममे किसी प्रकारका वट्टा नहीं लग सकता। किंतु सत्यधर्म प्ररूपक असख्य ग्रन्थोंको न मानना है। आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि "दिगंबर आम्नायवाले गुणरहित केवल अवस्था विशेष की अपेक्षासे सदृशता नहीं मानते है" क्याही अच्छा होता यदि हमारा सहयोगी यहापर यह भी लिखदेता कि उपर्युक्त पक्ति दिगम्बराम्नायके अमुक ग्रन्थकी है। अस्तु अब भी हम सहयोगीसे प्रार्थना करते हैं कि उक्त पक्ति प्ररूपक ग्रन्थका नाम लिखै अन्यथा खपुष्पवत् उसका उपालभ निष्फल है।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि "नग्नताकी अपेक्षासे पशु आदिक भी तीर्थंकरोंके सदृश

है" सो अस्तु इष्टापत्ति ही है। नग्नताकी अपेक्षा पशु आदिकभी तीर्थंकरोंके सदृश होवें इसमें हमारी कुछ भी हानि नहीं है। परन्तु सहयोगीको याद रहे कि तीर्थंकर नग्नताकी अपेक्षासे पूज्य नही किंतु वीतरागत्व द्योतकताकी अपेक्षासे पूज्य है। और इसी लिये वीतरागताद्योतक तीर्थंकरोंकी प्रतिमा भी पूज्य हैं न कि पशु पक्षी आदिक? जिनोंमे कि, वीतरागताका नाम निशान भी नहीं हैं।

आगे चलकर सहयोगी लिखता है कि "तीर्थंकरोंकी वाणी सर्वांगसे निकलना हास्यास्पद है" सो सहयोगीका यह लिखना भी भ्रममात्र है क्यों कि सर्वांगमे शब्दकी उत्पत्ति प्रमाण वाधित नहीं है। शब्दका उपादानकारक पुद्गल है और शरीर पुद्गलमय है अत शरीरमे शब्दकी उत्पत्ति अबाधित है। हास्यास्पद तो आपके पाणिनि पतञ्जलि आदिकोंके वाक्य हैं जो कि श्रोत्रेन्द्रिय ग्राह्य मूर्त-शब्दको अमूर्त आकाश प्रभव मानते है।

(शेषमग्रे)

दि० जैन प्रान्तिक सभा मालवाका वार्षिकोत्सव।

यह बात सर्व सज्जन मडलीप्रति प्रगट होना अवश्य है कि, मालवे प्रान्तमें श्रीसिद्धवर कूट और बडवानी सिद्धक्षेत्रोंके सिवाय मक्सीजी, बनेडाजी आदि अतिशय क्षेत्र भी है।

बनेडाजी क्षेत्रमें चैत्र शुक्लपक्षकी एकादशीसे पूर्णिमातक मेला भरता चला आता है, इसीकारण श्रीमती दि. जैन प्रा. सभा मालवाकी साधारण सभाके नियम ३ मे यही ठहराव रक्खा गया था कि बहुधा श्री बनेडाजीपर सभाका अधिवेशन हुआ करे। यहापर एक प्राचीन, विस्तीर्ण और विशाल जिन मन्दिर बड़े तालावके किनारे बगीचाके मध्य चहुंओर परकोटे सहित शोभायमान है। इस प्राचीन मन्दिर का जीर्णोद्धार इन्दौरके प्रसिद्ध जौहरी श्रीयुत जयचदजी चुन्नीलालजी की दुकान के अधिकारी श्रीयुत जौहरी झुन्नालालजी सा० ने कराकर अति उत्साहके साथ इस वर्ष मेले भरनेका प्रयत्न किया। यहातक कि इन्दौर के श्री जैनबद्रीजी को गये हुए यात्रियोंके संघको तार व चिट्टियो द्वारा आग्रह करके इस अवसर पर बुलालिया। इसके लिये हम सभाके स्थाई सभापति श्रीमान सेठ हुकमचदजी सा० को धन्यवाद दिये बिना नही रहसक्ते कि जिन्होंने उक्त महाशय की इच्छा पूर्ण करने और खास कर मेले का महत्व बढानेके लिये सघ सहित शीघ्र प्रयाणकर ज्ञाति, धर्म की प्रभावना की।

इसी अवसर पर श्रीमती दि० जै प्रा० सभा मालवे का द्वितीयाधिवेशन होनेमे और श्रीयुत सेठ हजारीलालजी नीमच निवासी की विशेष प्रेरणा और खटपटसे कई दूरवर्ती नीमच, मन्दसौर, धार आदि नगरो तकके भाई भी इस अवसरपर पधारे, अनुमान ९५ ग्रामोंके ३,४ हजार जैनी भाइयोंने इस अवसरपर धर्म प्रभावनाकर अतिशय पुण्यबंध किया। सभाके अधिवेशन १३, १४, १५ तिथियोंको नियमानुसार १२ से ३ बजे तक हुए। तथा रात्रिको भी १२, १३ को उपदेशी सभायें हुई। जिनमें नियमानुसार नीचे लिखे अनुसार सभापति नियत किये गये।

तेरस दोपहर—श्रीमान शेठ कल्याणमलजी इन्दौर.
तेरस रात्रि—श्रीमान सेठ कस्तूरचदजी ,,
चतुर्दशी दोपहर—श्रीमान सेठ बालचंदजी ,,
चतुर्दशी रात्रि—श्रीमान सेठ फूलचदजी ,,
पूर्णिमा दोपहर—श्रीमान जौहरी झुन्नालालजी ,,

इनमें प्रथम दिवस श्रीमान सेठ कल्याणमलजी सा०ने जैनजाति और जैनधर्मकी वर्तमान दशापर बडे असरदार शब्दोंमे व्याख्यान देकर सभाको क्या २ कर्तव्य करना, ये बात स्पष्ट रीतिसे प्रगट की। जिसका प्रभाव उपस्थित सभाजनोंपर पूर्ण रीतिसे पडा और यही कारण है कि मालवेकी जैन समाजसे बेटीके पैसे लेने, और अपवित्र ओरस शक्करकी प्रवृत्ति सरीखे दुष्ट प्रचार मेटेजानेका दृढ प्रबन्ध हुआ। इसके सिवाय और भी जैनविवाह-पद्धतिके, प्रचार तीर्थक्षेत्रोके सुधार आदि कई विषयोंपर विचार हुआ सभाके सहकारी महामन्त्री श्रीयुत प. गौरीलालजी अध्यापक "हुकमचद दि० जैन बोर्डिंग" नियत किये गये।

इसी अवसरपर २०००) एक मुश्त उक्त जौहरीजी सा०ने श्री बनेडाजीके मन्दिरकी पूजनादि प्रबन्धके निमित्त अर्पण किये। इसके लिये जौहरीजी तथा उक्त सभापतियोंको जिनके अधिपतित्वमे सभाके कार्य निर्विघ्न समाप्त हुए सच्चे दिलसे धन्यवाद देकर चाहते है कि ऐसेही धीमानों और श्रीमानोंकी इस सभाकी ओर सुदृष्टि बनी रहे जिससे यह विशेष बलवती होकर ज्ञातिधर्मकी सेवा करे। विशेष हाल सभाकी रिपोर्टसे ज्ञात होगा जो कि तय्यार हो रही है।

धर्म सेवक
दरयावसिंह सोधिया,
इन्दौर.

फलटणमें श्रीमती दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बईका नैमित्तिक अधिवेशन।

प्रिय महाशयो—द्वितीय चैत्र शुक्ल ८ से १३ तक फलटण (सतारा) में ६ बिम्ब प्रतिष्ठायें होने वाली है। उक्त समयपर दि० जैन प्रान्तिक सभा बम्बईका नैमित्तिक अधिवेशन करनेके लिये सेठ रामचंद सूरचंद फलटण वाले और हीराचंद जयचंद लिम्बगाव वालोंने एक पत्र भेजा। सभाके कार्याध्यक्षोंने सभाका नैमित्तिक अधिवेशन मिती द्वितीय चैत्र शुक्ल १२, १३ ता २४, २५ अप्रेलको करना निश्चित किया है। इस सुअवसर पर अनेक पडित, सेठ, प्रतिष्ठित पुरुष आनेवाले हैं। सभाओंमे अच्छे २ व्याख्यान दाताओंके व्याख्यान होवेंगे। और साथमें दक्षिण महाराष्ट्र जैन परिषदका अधिवेशन होना निश्चित हुआ है।

जैन महिला परिषद भी वहां होने वाला है। और यह भी समाचार मिला है कि, श्रीमती विदुषी कुमकुमबाई और मगन बाई आवेंगी। ऐसे सुअवसर पर प्रत्येक जैन को उपस्थित होकर धर्म कार्य में शामिल होना चाहिये।

फलटन सस्थानके अधिपति श्रीयुत मुधोजी राव उर्फ बापू साहिब नाइक निम्बालकर हैं। आपने अपने राज्यमें जैनियोंको प्रत्येक धर्म कार्य करने मे स्वतत्रा दी है। आप की यह शिक्षा अन्य राजाओंको लेना चाहिये। फलटणमे कई एक सार्वजनिक कार्य आपने स्थापित किये है, आपको विद्यासे अधिक प्रेम है जो कि हाई स्कूल, व्यकटेश विद्यालय, और विक्टोरियाडायमन्डजुबिलीलाईब्रेरी आदि कार्यों के स्थापित करनेसे विदित होता है।

फलटण की स्वागत कारिणी कमेटी की नामावली।

१ सभापति—सेठ शा रामचन्द्र हेमचद झसवडकर

२ मन्त्री—दोशी होचद्र माणिकचद वकील

३ सहायकमत्री—वीरचद कोदरजी गाधी, व माणिकचद रावजी दोशी,

४ मडफव्यवस्थापक—दोशी रूपचद लखमीचद (मलुकचद गगाराम) हीराचद दूलचंद, जिनप्पा पायप्पा उपाध्ये, मोतीचद पदमसी गाधी,

९ यात्रियोंकी व्यवस्था करनेवाले—माणिकचद मोतीचंद कालूजकर, केवल अजरामर, तलकचद देवचंद गांधी, केवल उगरचंद।

चिट्ठी तार भेजनेका पता।

मंत्री जैनसभा फलटण, लोनद स्टेशन, एस एम आर.

दि. जैन. प्रा. सभा बम्बईके नैमित्तिक अधिवेशन फलटणमे पास करने योग्य प्रस्ताव।

१ परीक्षालय भडार चिरस्थाई किया जावे और उसके द्वारा स्त्रीशिक्षाका भी प्रचार किया जाय।

२ प्रत्येक जातिकी अलग २ सभाये स्थापित की जावे।

(अ) हूमड जातिकी सभा स्थापित की जाय।

३ जैन पद्धत्यनुसार विवाह करने और अनमेल विवाह रोकनेके लिये एक कमेटी स्थापित की जाय।

निवेदक

माणिकचंद रावजी दोसी।

हीराबाग।

बम्बई।

आगरामें रथयात्रा महोत्सव और दि० जैन बोर्डिंग स्कूल।

ता. २४ मार्चको दो बजेपर श्रीजीको रथमें विराजमानकर बडी धूमधामसे बगीचेके मडपमे ले गये। मडप योग्य स्थानमे और योग्य रीतिसे सजाया गया था, दर्शकों की भीड़ भी बहुत थी। ता २५ को जिन पूजन और शास्त्र सभा बडे आनंदके साथ हुई। ता २६ को पूजन, पदभजन, और गायन किया गया। इसी सायकालको श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचद हीराचदजी जे पी पजाब मेलसे पधारे, जिनके स्वागतकी खूब धूम धाम हुई। लाला गोपीनाथजी बजाजके मकानमे आप ठहराये गये। शास्त्र सभा होनेके पश्चात् एक उपदेशक सभाकी बैठक हुई। सभामें श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचद हीराचंदजी जे. पी. को सभापतिका आसन और आगराके जैनी महाशयोंकी ओरसे मानपत्र दिया गया बाबू शीतलप्रशादने व्याख्यान दिया और आगरेमे एक बोर्डिंग स्कूल स्थापित होनेकी अपीलकी। इसका समर्थन लाला दलीपसिंह अग्रवालने किया वहाके उपस्थित महाशयोंपर इसका असर अच्छा हुआ। अनुमान २००००, बीस हजार मुफत और कुछ मासिक चंदा भी हुआ। जिसकी फहरिस्त अन्यत्र प्रकाशित है। आगरामें एक जैन सभाभी स्थापित की गई। इत्यादि कार्य होनेके पश्चात् सभा आनद ध्वनिसे विसर्जनकी गई।

ता २८-३-०७ को श्री जिन पूजन आदि कार्य हुए तथा एक अंतरग कमेटी दि जैन बोर्डिंग स्कूल आगराके लिये स्थापित की गई और नियमावली भी बनाई गई। ता २९ को लडकियों की परीक्षा ली गई। बाबू शीतलप्रसाद तथा लाला दलीपसिंहका स्त्री शिक्षापर भाषण हुआ। तथा एक कन्यापाठशाला खोलनेका वचन दिया गया। रात्रिको न्यायदिवाकर पडित पन्नालालजी तथा पंडित लक्ष्मीचदके व्याख्यान हुए। तथा बगीचेकी मरम्मतके लिये लाला दलीपसिंहने प्रार्थना की जिसमे वहा ५०० पाचसौ रुपयेका चदा हो गया।

ता ३० को नित्य कार्य समाप्त हुए। ता ३१ को पूजन समाप्त होने बाद श्रीजीकी सवारी बैंडी धूम धामसे वापिस आई और मन्दिरमें विराजमान की गई। ता १ अप्रैलको मोतीकटरेकी धर्मशालामें श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचद हीराचंदजी जे पी के सभापतित्वमे दि० जैन बोर्डिंगहाउसके खोलनेका जल्सा किया गया। जिसमे आचार और शिक्षा विषयपर बाबू शीतलप्रसाद और लाला लाडलीदास हेडमाष्टर नार्मेल स्कूलके व्याख्यान हुए। तथा उसी समय सभाका फोटो निकाला गया और लाला दलीपसिंहने सर्व महाशयोंको धन्यवाद देकर सभा विसर्जन की। इस मेलेमे अपवित्र विदेशी खाड लेने और बेचनेका निषेध किया गया।

पाठकगण—दानवीर श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचदजी हीराचद जे. पी. के उद्योग से बम्बई, अहमदाबाद कोल्हापुर जबलपुर आगरा आदि स्थानो में बोर्डिंग स्कूल स्थापित हो चुके हैं। बोर्डिंग में रहकर विद्यार्थी १ घटा धर्म शिक्षा पाते और कालेजों में अंग्रेजी विद्या का अध्ययन करते हैं। ऐसा करनेसे उनके कानों में जैनमत की भनक पडती रहती है। यह उपाय जैनहाईस्कूल और जैनकालेज की अपेक्षा उत्तम समझा जाता है, जितने रूपयों में कई बोर्डिंग स्कूलों की स्थापना हो सकती है उतने रूपयों मे एक कालेज नही बन सकता है। कालेज के खुलने से एक प्रान्तके भाई लाभ प्राप्त करते है परन्तु बोर्डिंगों से कई प्रान्त के भाई लाभ प्राप्त कर सकते है।

हम आगरा (जो कि धार्मिक पंडितोंकी जन्मनगरी है) और अन्य बोर्डिंग के स्थापन कर्ता महाशयों से निवेदन करते हैं कि आप लोग नीचे लिखी सम्मति अवश्य ग्रहण करैंगे।

विद्या दो प्रकारकी है एक धार्मिक दूसरी व्यावहारिक, धर्मविद्या वह है जिसमे धर्मविषयके ग्रन्थ पढकर उनसे स्वयम् धर्मकार्योंका सम्पादन करें और दूसरोंसे करावें। व्यावहारिक विद्या वह है जिससे पढकर सासारिक कार्योंको सम्पादन कर सुखसे रहे। दोनो विद्याओंका परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है और एकके विना दूसरेके सम्पादन करनेसे मनुष्य अपना हित साधन करनेमें असमर्थ होता है। प्रत्येक मनुष्यको दोनों विद्याओंका सम्पादन करना आवश्यकीय है। अन्य जातिकी अपेक्षा जैनजातिमें व्यावहारिक विद्याकी बहुत कमी है इसलिये इस विद्याकी उन्नति करना आवश्यकीय है, परन्तु इसकी अपेक्षा हमको धार्मिक विद्याकी ओरभी अधिक आवश्यकता है। धर्मविद्या सम्बन्धी जितने कार्य वर्तमानसमयमे प्रचलित है, उन कार्योंपर जैन जातिके अगुआ लोगोंका बहुत कम ध्यान है। और उन कार्योंकी लगाम जिन महाशयोंके हाथमें हैं व इस उत्तम कार्यकी महत्वतासे अनभिज्ञ है। इस लिये जिस प्रकार व्यावहारिक विद्याके साधनोंका उपाय किया जा रहा है उसी प्रकार धार्मिक विद्यापर दृष्टि देना अति आवश्यकीय है। इसलिये निवेदन है कि जहा २ बोर्डिंगस्कूल होवें वहांपर उसीके **साथमें एक संस्कृत पाठशालाकी स्थापना अवश्य की जावे और उसके चलानेका प्रबन्ध योग्य रीति और ध्रुवप्रबंधसे किया जाय**। साथमें बोर्डिंगके विद्यार्थियोंको जोकि अंग्रेजी पढते हैं उनके लिये धार्मिक विद्या पढनेमें अधिक ध्यान दिया जाय। उसी प्रकार सस्कृत पढने वालोंको अंग्रेजी विद्या पढाई जावे। ऐसा उपाय करनेसे सस्कृत वालोंसे अंग्रेजी वालोंको और अंग्रेजी वालोंसे सस्कृत वालोंको परस्पर बडा लाभ होगा।

अशौच विचार।

प्रिय वाचकवृन्द! आप जैनमित्रके गत किसी अकमे पढचुके है कि क्षत्रियवैश्यविप्राणा सूतकाचरण विना। देवपूजादिकं कार्यं न स्यान्मोक्षप्रदायकम्॥

अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्योंको विना सूतकाचरणके देव पूजादिक कोई भी कार्य मोक्ष दायक

नहीं होते ॥ उस सूतकाचरणके चार भेद कहे हैं आर्त्तव मौतिक प्रैतिक और मिश्र। उनमेंसे आर्त्तवसूतकको तो आप पढ चुके हैं अब शेष तीनों सूतकोंकी विधि भेटकी जाती है।

स्वकुलकी हानि वृद्धि होने अर्थात् किसीके जन्म लेने और मरनेसे जो अशुद्धि होती है उसका सूतक कहते है। बहुतसे लोगोंका खयाल है कि किसीके जन्म लेने, मरनेसे कोई अशुद्धि नहीं देख पडती यदि थोडी बहुत होती है तो जन्म लेनेवाले और मरनेवालेको होती है और उससे उसके मा, बाप, भाई, पुत्र, स्त्री आदि कुटम्बीजनसे कुछ सम्बन्ध नहीं है। परन्तु यह उनका कहना बिल्कुल भूलसे भरा हुआ है। क्योंकि अशुद्धि दो प्रकार होती है एक आभ्यन्तर (अदृश्य) और दूसरी बाह्य (दृश्य)। सूतकमें जो बाह्य अशुद्धि होती है अर्थात् जन्ममें जो रुधिर मांसादिक पडता है मृत्युमें रुधिर मांसादिकसे भी महा अशुद्ध शवसे जो सम्बन्ध होता है तद्वत् अशुद्धता सपिण्डोंको होती है। तथा सपिण्डोंके चित्तपर सूतक जन्य अशुद्धिकी एक प्रकारकी ग्लानिका ऐसा असर पडता है कि वह विना नियत दिनोंके और नियत क्रियाके कभी नहीं दूर हो सकता।

मै पूर्वमें कह चुका हूं कि सूतक दो प्रकारका होता है एक जन्म लेनेसे और एक मरनेसे। जन्ममें जो सूतक होता है उसको जातक और मृत्युमें जो होता है उसको मृतक कहते हैं। जातकके भी तीन भेद हैं स्राव, पात और प्रसूति। स्त्रीके चार महीने तकके गर्भ गिरनेको स्राव और पाचवें छठवें महीनेके गर्भ गिरनेको पात कहते है। इसका कारण यह है कि गर्भमें चार महीने तक बालकके हस्त पादादिक प्रस्फुरण नहीं होते है, और पाचवें छठे महीनेमें उसके अवयव बनने प्रारम्भ होते है। और सातवें महीनेमें वे पूर्ण होते है। इसी लिये सातवेंसे दशवें महीने तकके उत्पन्न होनेको प्रसूति कहते है। यदि गर्भका स्राव हुआ हो तो उसका सूतक माताको उतने ही दिनका मानना चाहिये कि जितने महीनेका गर्भ हो अर्थात् यदि एक महीनेका गर्भ हो तो एक दिनका सूतक, दो महीनेका हो तो दो दिन और तीन महीनेके गर्भस्रावका तीन और चार महीनेके गर्भस्रावका चार दिनका सूतक माननेकी आज्ञा है। और उस बालकके पिता तथा सपिण्ड पुरुषोंको स्नान मात्रसे ही शुद्धि होती है। और यदि गर्भपात हुआ हो तो माताको उतने दिनका सूतक मानना चाहिये जितने महीनेका वह गर्भ हो। अर्थात् यदि पाचवें महीनेका पात है तो पाच दिन और छठवें महीनेके गर्भपातमें छ दिनका सूतक मानना चाहिये। और उस बालकके पिता तथा सपिण्ड पुरुषोंको एक दिनका सूतक मानना उचित है।

यदि उस बालककी प्रसूति निर्दोष हुई हो तो दश दिनका क्षत्रियोंका बारह, और शूद्रोंको पन्द्रह दिनका सूतक मानना कहा है।

यह एक साधारण नियम है कि जहां ब्राह्मणोंको तीन दिनका सूतक होवे तो क्षत्रियोंको चार दिनका वैश्योंको पाच और शूद्रोंको आठ दिनका प्रायश्चित्त मानना चाहिये।

मृतककी अशुद्धि मृतकसे शुद्ध होती है और जन्मकी जन्मसे। जन्मसे होनेवाली अशुद्धि मृतकसे शुद्धि होती है परन्तु मृत्युका सूतक जन्मके सूतकसे शुद्ध नहीं होता।

यदि तत्काल उत्पन्न हुए बालकका मरण नाल काटनेसे पहले हो जाय तो माताको पूर्ण दश दिनका और अन्य सपिण्ड तथा पिताको तीन दिनका सूतक होता है।

यदि नाल काटनेसे पीछे बालककी मृत्यु हुई तो सबको पूरा सूतक लगता है।

यदि दश दिन भीतर बालकका मरण हो जाय तो जन्मका पूरा सूतक मानना चाहिये। मरनेका नहीं।

यदि दशवें दिनके अन्तमें बालकका मरण हो तो उसका सूतक दो दिनका और ग्यारहवें दिन प्रभातसे लेकर दन्त निकलनेके पहले तक मरण हो तो तीन दिनका सूतक मानागया है।

जो बालका मरण दांत निकलनेके पीछे हुआ हो तो माता पिता भाईको दश दिनका प्रत्यासन्न सपिण्डोंको एक दिनका और अप्रत्यासन्न सपिण्डोंको स्नान मात्र कहा है। चार पीढी तक प्रत्यासन्न और इससे आगे सात पीढी तक अप्रत्यासन्न सपिण्ड संज्ञा है। सात पीढीसे आगे अपिण्ड संज्ञा है।

जो मुंडन किये हुए बालकका मरण हो जाय तो माता पिता और भाईको दश दिनका और प्रत्यासन्न भाइयोंको पाच दिनका अप्रत्यासन्न भाइयोंको एक दिनका सूतक कहा है।

जो यज्ञोपवीत होनेके बाद बालकका मरण हो तो पिता भाईको दश दिन आसन्नको पाच दिन और अनासन्नोंको एक दिनकाही सूतक कहा है।

बालक के जन्म लेनेसे माता को दशदिन का तो सूतक कहा ही है परन्तु दशदिनके बाद वीसदिन पर्यन्त अनधिकारसूतक है अर्थात दशदिनके बाद फिर भी वीसदिनतक उसको किसी वस्तु आदिके स्पर्श करनेका अधिकार नहीं है। उसमें भी इतना विशेष है कि यदि कन्या उत्पन्न होतो वीस की जगह तीस दिन अनधिकार सूतक मानना चाहिये।

यह अनधिकार सूतक केवल माताको लगता है पिताको नहीं। परन्तु उस अनधिकार सूतकमें यदि पिता उसके साथ निवास करे संसर्ग आदिक करे तो वह सूतक उसको भी माना है।

अब परदेशमें रहते हुए किसको कितना सूतक मानना चाहिये सो कहते है।

जिसके वीचमें कोई बडी नदी हो अथवा कोई पर्वत हो अथवा जिसदेशकी भाषा अपने देशकी भाषासे भिन्न हो उसको देशान्तर कहते है।

अथवा देशोंके भेदसे तीस योजन दूरीका देश देशान्तर माना गया है। सपिण्डोंको देशान्तर में भी सूतक मानना चाहिये।

परदेशमें पुत्र यदि पिताके मरनेकी खबर सुने तो उसको खबर मिलनेके दिनसे दशदिन तक आशौच मानना चाहिये।

किसी का यह भी मत है कि देशान्तरमें कुछ थोडाभी आशौच होता है। परन्तु स्त्रीको अपने पतिका आशौच पूरा ही मानना चाहिये।

स्त्री यदि पतिके मरनेके समाचार उनके मरनेके दश दिन पीछे सुने तो भी उसको पूर्ण आशौच मानना चाहिये। और इसीतरह पतिको भी स्त्रीका पूर्ण आशौच कहा है।

अनेक वर्षके बाद खबर सुननेपर भी पुत्र जैसे मातापिताका पूर्ण दशदिनका आशौच मानते हैं उसीतरह पतिपत्नि (स्त्रीपुरुष)को भी कई वर्ष बाद समाचार मिलनेपर भी परस्पर पूर्ण आशौच मानना चाहिये। अर्थात् पत्नीको पतिका और पतिको पत्नीका पूर्ण आशौच कहा है।

यदि पिताके मरने बाद दश दिनके भीतर ही माता मरजावे तो पिताके आशौच पूर्ण होनेपर दो दिन और एक रात्रि और अधिक आशौच मानना चाहिये और यदि माताके मरनेके बाद दश दिनके भीतर पिता मरजावे तो पिताके मरनेके दिनसे दश दिन आशौच कहा है।

यदि पुत्र मातापिता दोनोंका मरण एक ही कालमें सुने तो वह चाहे समीप हो वा दूर हो उसको दोनोंका शुभ आशौच मानना चाहिये।

यदि कोई पुरुष दूरदेश गया हो और फिर उसकी कोई खबर न मिले तो यदि वह पूर्व वयस्क अर्थात् कुमार है तो अठ्ठाईस वर्ष पीछे और तरुणका पन्द्रह वर्ष पीछे और वृद्धका बारह वर्ष पीछे यथाविधि उसकी प्रेतकादि क्रिया करके पूर्ण आशौच मानना चाहिये।

किसी पुरुषके मरनेपर यदि उस मृत पुरुषका पुत्र अथवा कोई सपिण्ड रोगी हो जोकि स्नानादिक न कर सकता हो तो उसकी शुद्धिका उपाय यह है कि कोई दूसरा नीरोग पुरुष स्नान करके उस रोगीका स्पर्श करै और फिर स्नान करै और फिर उस रोगीका स्पर्श करै इस तरह दश बार स्नान करके उसका स्पर्श करे तो वह रोगी शुद्ध हो जाता है।

यदि कोई स्त्री ज्वरमे ही रजस्वला हो जाय तो उसकी शुद्धि इस प्रकार है कि चतुर्थदिन कोई अन्यस्त्री उसका स्पर्श करै और फिर स्नान करै फिर उसका स्पर्श करै, इस प्रकार दश अथवा बारह वार स्नानके बाद स्पर्श करके अन्तमें उसके कपडे बदलवा देवे तो रजस्वला शुद्ध हो जाती है। और स्पर्श करनेवाली स्त्री भी स्नानके बाद शुद्ध है।

यदि पतिके मरनेके वाद दश दिनके भीतर ही स्त्रीके प्रसूति हो अथवा वह रजस्वला हो जाय तो यथा समयमे शुद्ध होकर स्नान करके फिर आभरणादिकका त्याग करै।

अब दुर्मरणका विधान कहते हैं।

जो मरण बिजली, जल, तलवार, चाण्डाल, फासी दन्त, वृक्ष, व्याघ्र, तथा अन्य पशुओंके द्वारा होता है उसको दुर्मरण कहते है। और यह पापकर्मका फल है। और जो जीव विष शस्त्रादिकसे अपना घात करता है अथवा अपनी इच्छानुसार मृत्युको प्राप्त होता है। वह निश्चय ही मरकर नरक जाता है।

उपर्युक्त लक्षण लक्षित दुर्मरणावस्थामे देश कालादिकके भयसे यदि मृतपुरुषका सस्कारादिक न हो सके तो राजादिककी आज्ञा लेकर उसकी प्रेत जाती है। क्रिया तो कर देनी ही चाहिये। और उसके एक वर्षके पश्चात् विधिपूर्वक प्रायश्चित्त करना चाहिये। तथा शान्तिविधान और प्रोपधोपवासादिक तप करना चाहिये।

जिस पुरुषका मरण अनिच्छासे अर्थात् आकस्मिक हो गया हो तो उसकी प्रेतक्रिया और प्रायश्चित विधि शीघ्र ही करनी उचित है औ जो अपनी इच्छानुसार मृत्युको प्राप्त हुआ है उसका शीघ्र करना अनुचित है।

शस्त्रादिकके घात लगनेसे सातदिनके भीतर ही यदि उसका मरण हो जाय तो पूर्वाचार्य उसको भी दुर्मरण ही कहते है।

अब पुत्री मरण का आशौच लिखते हैं।

यदि मुडनकर्ममे पहले कन्याका मरण हो जाय तो स्नानमात्राका आशौच माना है। और यदि मुडन के पश्चात् और व्रत ग्रहणसे पहले कन्याका मरण होजाय तो उसी एक दिनका और यदि व्रत ग्रहणके वाद और विवाहसे पहले मरण हो तो तीन दिनका आशौच मानना चाहिये।

यदि विवहिताका मरण हो तो माता पिताको पक्षिणी पर्यन्त अर्थात् दो दिन और एक रात्रि पर्यन्त आशौच मानना चाहिये। तथा अन्य जातीय पक्षको स्नानपर्यन्त आशौच है। और उसके पति पक्षको पूर्ण आशौच मानना चाहिये।

"दो दिन और एक रात्रिकी पक्षिणी सज्ञा है। एक दिन और एकरात्रि की नैशिकी सज्ञा है। सवेरेसे शाम तक अह अर्थात् दिन ऐसी सज्ञा है। और उसी समयको सद्य कहते है।"

शेषमग्रे।

विविध विषय

सिंघई हरप्रसाद देवकीनदन झासी मे लिखते हैं कि प. गणेशीलाल ने यहा सभाकर शास्त्र स्वाध्यायका उपदेश किया।

जयपुरमे भाई शीलचन्दजी लिखते है कि प्रतिमाओको शास्त्रोक्त प्रतिष्ठित कराना चाहिये, और प्रतिष्ठाकारकोंको इस बाबत अधिक ध्यान देना योग्य है। कानपुर, फल्टण आदि स्थानोंमे इस बातके उपर विचार करना आवश्यकीय है।

ता॰ १ अप्रेलसे एक तोला तक की चिठ्ठी न आध आने मे और तीन तोला तक एक आनामे जाती है।

ता. २ मार्च से नमक पर ॥) मन महसूल घटा दिया गया है।

रिखभचंद जैनी आगरा से सूचित करते हैं कि मौजा विरघरा में चैत्र सुदी ६ को तेरहद्वीपका विधान हुआथा वहा पर ८०) रु. का चंदा हुआ माज कटरामे पाठशाला खोलेनेका विचार है।

गोरीबीबीयोंका फेशन—फ्रासदेश सभ्यतामें अन्य युरोपीय देशोंसे बढा हुआ है, अब वहा की गोरी बीबीओंने किराये की गाडिया हाकनेका धधा हाथमे लिया है। अच्छे २ अशराफोकी कन्या इस कामको करती है। बैठनेवाले इन बीबीओके प्रेम से मोहित होकर प्राय इन्हीं की गाडियों पर अधिक बैठते है। बेचारे यात्रियोंको अब कोचमेन (Coach-man) की जगह कोचवूमन (Coach-woman) पुकारनेकी आदत सीखना पडेगी।

कालेसे गोरा—एक पारिस फ्रान्सकी अमीर युवती रमणीके पास काफरी मोटरगाडी चलानेपर नौकर था। काफरी उस रमणीपर आशिक होकर एक दिन रमणीसे अपना सब वृतान्त कहा। रमणीने दिल्लगीसे उसे गोरा बननेके लिये कहा। वह बिचारा आफतका मारा हकीमसे गोरे होनेकी दवा मागने गया। हकीमने सफेद रग इस्तमाल करनेको कहा, उसने उस रगको लगानेके बदले खाया और बेहोश हो गया। अस्पतालमे जाकर मर गया या जीता है सो विदित नहीं।

दिगम्बर जैन विद्यालय कोल्हापुरका षाण्मासिक परीक्षा फल आया है। उत्तरपत्र निरीक्षक पडित लालारामजी थे। परीक्षाफल सतोषजनक है यहापर जैन ग्रंथोंकी पढाई होती है। पाचवी क्लासमे २ चौथी क्लासमे २ दूसरी क्लासमे २ और पहिली क्लासमें १ एवं कुल ७ विद्यार्थी पढते है। सब विद्यार्थियोंने ऊंचे नम्बर पाये है।

सेट हीराचद जयचद लिम्बगावकरकी अध्यक्षतामें फलटणमें ता. १७ मार्चको एक सभा हुई जिसमें होराचद माणिकचद वकीलने सभाके लाभ योग्य रीतिसे वर्णन किये। वहाकी सर्व जैन मडलीने दि॰ जैनप्रान्तिक सभा बम्बई और दक्खिन महाराष्ट्र जैनसभाके बुलानेकी इच्छा प्रदर्शित की।

गये मास हीराबागमे ६६९ आदमियोंने आराम पाया जिनमेंसे २०९ जैन मुसाफिर थे।

हीराबाग देशी दवाखानेसे मार्च महिनेमें ८६४ पुरुष १६ स्त्रिया, ६७ बच्चोंने औषधि सेवनकी उनमेसे ४०८ जैन थे।

सागरमें जलयात्राका उत्सव मिती चैत्र शुक्ल ११ को निर्विघ्न समाप्त हुआ और वहांपर अध्यापकके चले जानेके कारण पाठशाला बंद थी वह पुन स्थापित हो गई।

झगडा खतम—सागरमें हिंदू मुसलमानोंमें झगडा चला आता था। हिन्दू मुसलमानोंके बाजे मंदिरोंके पास नहीं बजने देते थे और मुसलमान मसजिदके पास हिन्दुओंके नहीं बजने देते थे। अब सरकारसे हुक्म हो गया है कि दोनों मतवाले बाजे बजानेमें झगडा न करें। हिन्दू मुसलमान दोनों राजी हो गये है। खैर इसीमे ही है।

बम्बई प्रान्तिकसभाकी ओरसे मास्टर दीपचंद उपदेशक दक्षिणमें भ्रमण कर रहे हैं। आपने अहमदनगरमें दो सभायें ता ७ और ८ को की। क्रमानुसार सभा स्थापित करने और मनुष्य जन्मपर व्याख्यान दिये। वहांपर सभा पुन स्थापित हुई और ४ महाशयोंने स्वाध्यायकी प्रतिज्ञा ली। आप उपदेश करते हुए लउळकी बिम्बप्रतिष्ठापर जायगे।

आवश्यकता।

हाथरसकी पाठशालामे एक पंडितकी आवश्यकता है तनख्वाह १५) रु मिलेंगे दरख्वास्त नीचे लिखे पतेसे करें।

मटरूमल मोतीलाल जैनी ठि० अनूपलाल मटरूमल हकीम मु० हाथरस (अलीगढ)।

बम्बई प्रान्तिक सभाके लिये एक योग्य उपदेशककी आवश्यकता है, जो धार्मिक सामाजिक आदि विषयोंपर व्याख्यान दे सके। योग्यतानुसार २०) से ३०) तक वेतन दिया जा सकता है।

ठाकोरदास भगवानदास जौहरी
मंत्री. उ. भ. चौपाटी रत्नाकर पेलेस
बम्बई

हुकमचंद दि० जैन बोर्डिंग स्कूल इन्दौरमें मुख्यतासे धर्म विद्या और गौणतासे कर्म विद्याकी शिक्षा दी जाती है। जिनको अपना हित चाहना होवे नीचे लिखे पतेसे विनयपत्र भेजे, ५ तथा ६ रु० योग्यतानुसार मासिक स्कालरशिप दी जायगी। ६ विद्यार्थी भरती हो सकते है।

अध्यापक पंडित गौरीलालजी यहांपर पढाते हैं।

सुप्रिन्टेन्डेन्ट हुकमचंद
दि० जैन बोर्डिंग स्कूल
इन्दौर

जैन बिम्बप्रतिष्ठायें—द्वितीय चैत्र सुदी ९ से १३ तक निम्न लिखित स्थानोंमें बिम्ब प्रतिष्ठायें बडी धूमसे होनेवाली हैं प्रत्येक महाशयको इस धर्म कार्यमे योग देना चाहिये,

१ फलटण, (सतारा) २ मेंदरगी ३ कानपुर ४ राणापुर, ५ लउळ (पंढरपुर)

जैन पद्धत्यनुसार विवाह—धन्नालालजी पाटणीके पुत्र बुधमलजी पाटणी का विवाह श्रीयुत मोतीलालजी गंगवाल चौधरीकी कन्याके साथ जयपुरमे चैत्र कृष्ण सप्तमीको हो गया। वर सस्कृत और अंग्रेजीका ज्ञाता है जयपुरमे आपने जैन पद्धत्यनुसार विवाह करने आदि पर एक असर कारक व्याख्यान दिया।

अवश्यकीय सूचना।

कई एक महाशयों को इस बातका सन्देह हुआ है कि, बम्बई प्रान्त में दो परीक्षालय क्यों स्थापित किये गये है और परीक्षा किस समय और कौनसे परीक्षालय द्वारा ली जायगी। आदि.

दि० जैन परीक्षालय बम्बई प्रान्तका एक है और उसकी परीक्षा नियमानुसार श्रावण वदी ५ (गुजराती अषाढ वदी ५) से श्रावण सुदी १ तक होगी, इस परीक्षालय का दफ्तर सोलापुर में है और मंत्री "सेठ रावजी सखाराम दोशी सोलापूर वाले हैं" बम्बई प्रान्त वालो को परीक्षालय सम्बन्धी समस्त पत्र व्यवहार आपही के पते से करना चाहिये।

दूसरा परीक्षालय महासभा का है जिस का दफ्तर "चौपाटी रत्नाकर पेलेस "में है उसके मंत्री का नाम अविदित है। परन्तु "विद्या प्रचारिणी समिति चौपाटी "इस पतेसे पत्र व्यवहार हो सकता है। प्रथम महासभाकी विद्या प्रचारिणी समिति ने श्रावण में परीक्षालेना स्वीकार कियाथा परन्तु महाविद्यालयकी पढाई हो जानेके कारण ज्येष्ठ मासमें परीक्षा लेना निश्चित किया है।

समस्त पाठशालाओंके प्रबन्धकर्त्ताओसे निवेदन है कि आप लोग कृपाकर पठनक्रमका फार्म भर कर शीघ्र भेज दीजियेगा। और जिनके पास फार्म न पहूंचे होवें, वे कृपाकर निम्न लिखित पतेसे फार्म मगा लेवे।

रावजी सखाराम दोशी
मंत्री दि. जैन परीक्षालय—
दफ्तर-सोलापुर

अन्यत्र हजारीबाघके डिप्युटी कमिश्नरका एक नोटिस सिखरजीके पहाडपर मकान आदि बनानेके लिये छपा है अदाजन ता ५ मईको विशेष सलाह और शर्ते करनेके बाबत दिगाम्बरी और श्वेताम्बरी मुखिया लोगोंको पहाडपर आनेकी सूचना दी गई है। इस अवसरपर उक्त दोनो पक्षके शिखरजी पहाडके प्रबन्धकर्ता, मुखिया लोगोंको अपने धर्म सम्बन्धी हानि लाभपर विचार कर कार्य करनेके लिये उक्त स्थानपर उचित समयपर अवश्य जाना चाहिये। इस कार्यमें विलम्ब नहीं होवे। आशा है कि दोंनों पक्षके मुखिया लोग परस्पर सलाह करके इस कार्यके लिये सरकारके साथ उचित रीतिसे विचार करेंगे।

सरस्वती भवन स्थापित होने में अब विलम्ब नहीं है।

जिस उत्तम कार्य के सम्पादन निमित्त आठ वर्ष पूर्वसे पूर्ण आन्दोलन दि जैन प्रान्तिक सभाकी ओरसे हो रहा है और प्रान्तिक सभाने इस उत्तम कार्यके मंत्री हमारे दानवीर श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद हीराचंदजीके ज्येष्ठ भ्राताके सुपुत्र सेठ प्रेमचदजी नियत किये थे, हम को उसी दिन आशा हो गई थी कि, हमारा अभीष्ट कार्य सम्पादन हो चुका है। परन्तु जैनियोंका कुछ उदय ही अच्छा नहीं था। हमारे सरस्वती भंडार के मंत्री सेठ प्रेमचद मोतीचद इस सरस्वती भडार को निराश्रित छोडकर परलोकवासी हुए। उस समय आपके मंत्रित्वपद में सरस्वती भडार किस उद्देशसे स्थापित हुआ था वह दि. जैन प्रा सभाकी प्रथम वार्षिक विज्ञप्ति के सफा ७ देखने से विदित हो जायगा, जिसकी नकल हम यहा देते है।

सरस्वतीभंडार

इस भडारकी ओर हमारे भाइयोंकी बहुत कम दृष्टि है इसकी पूरी २ सभाल न होनेके कारण यह भी मालूम नहीं है कि हमारे भारत वर्षमें कितने जैन शास्त्र हैं? बहुतसे ग्रंथ भंडारोंमें गल सडकर अपनी आयु पूर्ण करके अंतरध्यान होगये. और बहुतसे मरनेकी दम भर रहे है. इस कारण एक ऐसे सरस्वती भडारकी बड़ी भारी आवश्यकता है कि जिसमें समस्त ग्रंथोंकी कमसेकम एक प्रति तो अवश्य होय. तथा बहुतसे भडारोंकी सभाल करनेवाला भी कोई नहीं है इस कारण इस भडारकी ओरसे एक इनस्पेक्टर नियत किया जाय. कि जो

देशदेशान्तरोंमें फिरकर सब भंडारोंकी विगतवार फिहरिस्त तयार करें और सबसे पहिले उन ग्रंथोंका जीर्णोद्धार कराया जावे कि जिनकी हिन्दुस्थान भरमें सिर्फ एक या दो प्रति होवें और इन सब भंडारोंकी फिहरिस्त बनाकर छपा दी जाय।

पाठको—इस उपर्युक्त लेखमे ही प्रा० सभाने अपना कार्य पूर्ण नहीं समझ लिया था परन्तु पंडित पन्नालालजी बाकलीवालको इस सभाकी ओरसे इन्स्पेक्टर नियत करके ईडर, बासोदा आदि कई एक स्थानोंमें भेजा, सभाने कई एक भंडारों की सूची तय्यार की। उस वर्ष प्रा. सभाने १८१ रू. इस कार्य मे खर्च किये। पश्चात् श्रीयुत लल्लूभाई प्रेमानंद L. C. E. इस भंडार के मंत्री नियत हुए। इस वर्ष के गजपंथाजी के अधिवेशन मे पंडित धन्नालालजी काशलीवाल ने एक उत्तम वक्तृता के साथ इसी उपर्युक्त उद्देश पर प्रस्ताव पेश किया और पंडित गोपालदासजीने इसका अनुमोदन किया। तत्पश्चात् प्रस्ताव नं० १० पास हुवा और इस भंडारमें चंदा हुआ। इस वर्ष पंडित पन्नालाल बाकलीवाल मंत्री नियत किये गये। पाठकोंको विदित हो गया होगा कि यह प्रस्ताव कितना आवश्यकीय है और प्रान्तिकसभा इस कार्यके सम्पादन निमित्त कितना उद्योग करती रही। इतने ही मे बाबू देवकुमारजी रहीस आरानिवासी जैनबद्रीकी यात्रा निमित्त बम्बई पधारे और सेठ हुकमचंदजी अपने सब सहित जिनमें कि, पंडित गौरीलालजी माष्टर दरयावसिंह सोधिया, सेठ अमरचंदजी, सेठ लालमणि जी, सेठ खूबचंदजी आदि सज्जन थे जैनबद्री आदि तीर्थोंकी यात्रा करते हुए बम्बईमें पधारे, आप दोनों श्रीमानोंका पधारना गंगा और यमुनाके संगम रूपी तीर्थभावको प्रगट करता था। हर एक उत्तम कार्यकी आवश्यकता प्रायः चहुं ओर हुआ करती है, इसी उत्तम कार्यके सम्पादन की हमारे सहयोगी जैनगजटके सम्पादक बाबू देवकुमारजी रहीस आरानिवासीकी प्रबल इच्छा थी, आपने बम्बईमें एक सभा होनेके लिये इच्छा प्रदर्शित की और उसमें "जैनग्रन्थ जीर्णोद्धार" इस विषयपर व्याख्यान होनेके लिये कहा इस कार्यके सम्पादन निमित्त ता० १९ दिन सोमवारको हीराबागमें सभा हुई, जिसके सभापति सर्व सम्मतिसे बाबू देवकुमारजी रहीस नियत किये गये, तत्पश्चात् माष्टर दरयावसिंहजी सोधियाको व्याख्यान देनेके लिये कहा, आपने एक उत्तम वक्तृताके साथ इस कार्यका होना कितना आवश्यकीय है सिद्ध किया। तत्पश्चात् पंडित गौरीलालजीने उपस्थित महाशयोंके दिलमें इस कार्यकी आवश्यकता बतानेमें किसी प्रकारकी कमी नहीं की। इसके बाद क्रमानुसार विद्यार्थी खूबचंद दि० जैन महाविद्यालय बम्बई, ब्रह्मचारी नेमिसागरजी वर्णी बाबू शीतलप्रशाद, पंडित धन्नालाल काशलीवाल आदि ने पूर्ण रूपसे इसकी आवश्यकतापर ध्यान दिलाया। बाबू शीतलप्रशादने इस कार्यके लिये एक कमेटी स्थापित करनेकी आवश्यकता बतलाई तत्पश्चात् बाबू देवकुमारजी रहीसने सर्व महाशयोंका आभार माना और कल दिन एक कमेटी करनेकी इच्छा प्रदर्शित की। तत्पश्चात् २४ महाशयोंकी एक कमेटी स्थापित हुई। वैद्यराज कन्हैयालालजीने सभाके सभापति साहिबके नामकी अर्थ सहित प्रशंसा कर सभा विसर्जन की। ता १९,३-०७ मंगलवारकी रात्रिके ८ बजे स्थापित कमेटीकी बैठक हुई, उसमें इस सभाके निम्न प्रकारके उद्देश प्रगट किये गये और सर्व सम्मतिसे वादानुवाद होकर पास किये गये जिनकी नकल यह है।

१ इस सभाका नाम भारतवर्षीय दि० जैनग्रन्थ जीर्णोद्धार समिति है।

२ इस सभाके निम्न लिखित उद्देश हैं।

(क) प्राचीन दि० जैन ग्रन्थों (संस्कृत, मागधी (प्राकृत देशभाषा) की खोज करना और संग्रह करना।

(ख) एक सभा सरस्वतीभवन स्थापित किया जाय जिसमें सर्वप्रकारके हस्त लिखित ग्रन्थोंकी एक २ प्रति संग्रहकी जाय।

(ग) अन्य आवश्यकीय पुस्तकोंका भी संग्रह किया जाय।

(घ) प्रत्येक स्थानाके सरस्वती भंडारोंकी सूची तय्यार करना और उस सूचीको प्रकाशित करना।

(ङ) जिस स्थानमें शास्त्र जीर्ण हो गये हो व होंपर उनकी लिपिके लिये प्रेरणा करना।

(च) एक सुप्रिन्टेन्डेन्ट नियत किया जाय जो प्रत्येक सरस्वती भंडारोंकी सूची बनावे।

(छ) जिस सरस्वती भंडारमें वेष्टन, पुंठे आदि जीर्ण हो गये हो, वहांपर नवीन वेष्टन और पुंठे वहांके भाइयोंसे लगाकर रक्खे, और आवश्यकता होवे तो यहां समितिकी ओरसे दिये जाय।

(ज) जो देशान्तरीय महाशय इस सरस्वती भवनसे ग्रन्थ मगावें उनको लेखक की प्राप्ति होनेसे निउछावर लेकर नकल कराके भेजना।

(झ) इस भंडारमे ग्रन्थ उन्हीं महाशयोंको दिये जा सकते हैं, जो इस सरस्वती भंडारके सभासद होवेंगे। इसमे भी कौनसा ग्रन्थ किस सभासदको दिया जा सकता है यह नियम समिति स्थापित होनेपर किया जायगा।

(ञ) सभासद इसके तीन प्रकारके किये जाय।

१ लाईफ मेम्बर (यावज्जीव सभासद)
२ आनेररी सभासद।
३ साधारण सभासद।

उद्देश स्वीकार हो जाने बाद इस कार्यके खर्चेका एक वर्षके लिये अंदाजा किया गया जो कि, इस प्रकार है।

ग्रन्थ लिखने और आवश्यकतापर मूल्यपर लेनेके लिये	२०००)
तनख्वाह सुप्रिन्टेन्डेन्ट दर ५०) मासिक	६००)
तनख्वाह चपरासी १०) मासिक	१२०)
सफर खर्च २०)	२४०)
एक क्लार्क सरस्वती भवनके लिये १५) मासिक	१८०)
वेष्टन और पुंठे	१५०)
छपाई खर्च	१२०)
दफ्तरी पोष्टेज आदि खर्च	५०)
मुतफर्कात	४०)
	३५०० रु.

इस कार्यको पांच वर्ष चलानेके लिये ३५००) वार्षिकके हिसाबसे ५ वर्षका १७५०० रु होता है, इस लिये चंदा करना निश्चित हुआ। उस समय बाबू देवकुमारजीकी इच्छा स्पष्ट विदित होती थी कि, आप इसीसमय सहायता देना स्वीकार करना चाहते हैं परन्तु कल दिन दूसरी आम सभा करनेके लिये निश्चय हुआ।

ता २०-३-०७ को प्रातःकाल ७॥ बजे जैनमंदिरमें सभा हुई, जिस सभाके सभापति सेठ हुकमचंदजी इन्दौर नियत किये गये। बाबू शीतलप्रशादने एक सरस्वती भंडारकी आवश्यकतापर व्याख्यान दिया और विलायत आदि देशोंके बड़े २ पुस्तकालयोंका जिकर किया आपने व्याख्यानमें जाहिर किया कि बाबू देवकुमारजी रहीसकी इच्छा २०००)

रु. इस कार्यके निमित्त देते है । आप (१०००) रोकडी और २५०) रु० वर्षके हिसाबसे १०००) और देवेंगे इस प्रकार पूरे २०००) हो जायगे। तत्पश्चात् हमारे दानवीर श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचद हीराचदजी जे पी. ने एक छोटासा भाषण इस प्रकार दिया। "हम सर्व महाशयोंको इन दो तीन लगातार सभाओंके द्वारा अच्छी तरहसे विदित हो गया कि, सरस्वती भडारकी बहुत बडी आवश्यकता है हमको बाबू देवकुमारजी रईसने कई वार इस कार्यके लिये लिखा, परन्तु कारण विशेषसे इस कार्यका सम्पादन नहीं हुवा, आज वह समय आ गया है कि जिसमे आशा की जाती है कि यह कार्य सिद्ध होगा। ग्रन्थोंमें देव, शास्त्र, गुरु इन तीनोकी आराधना करना कहा है। जिस प्रकार मदिर बनाना आदि कार्य मुख्य है, उसी प्रकार एक सरस्वती भवन बनानेकी भी बडी आवश्यकता है। आज हमको "कि हम जैनी है" यह ज्ञान इन्ही शास्त्रोद्वारा हुआ है। अर्हन कौन है? ए ज्ञान इन्ही शास्त्रों द्वारा हुआ है। पाप क्या? पुण्य क्या? झूठ क्या? सच क्या? इत्यादि समस्त कार्य इन्हीं शास्त्रों द्वारा ही प्राप्त होते है। इस कारण इस कार्यमे प्रत्येक मनुष्यको शक्ति अनुसार सहायता देना आवश्यकीय है। मैं इस समय सहायता देनेको तैय्यार हू परन्तु हमारे जैनजाति शिरोमणि सेठ लोग इस समय उपस्थित नहीं है, और इसी कारण मै यहा कुछ रकम नहीं भर सकता हू। सेठ हुकमचंद राय अमोलकचद, सेठ जुहारमल मूलचदजी आदि सज्जनोंके मुनीम यहा बैठे हुए है जो कि मुझसे प्राइवेट रीतिसे कहते है कि यह कार्य अति उत्तम है और हम अपने मालिकोंको लिखते है। और इसी कारण वर्तमान सभाके सभापति सेठ हुकमचंदजी भी कहते हैं कि इससभा से मुझे विमुख नहीं समझना चाहिये मै इस कार्य में पीछे सहायता देना चाहता हूं। बाबू देवकुमार जी रईसको धन्य वाद दिया गया इसके बाद सभाके सभापति सेठ हुकमचद महोदय ने कहा कि मै इस कार्य को अति उत्तम समझता हू और मै चाहताहू कि यह कार्य शीघ्र सम्पादन होवे, मुझे इस कार्य से आपलोग विमुख नहीं समझना। और जो आपलोग इस कार्यमें सहायता मागोगे मै अपनी शक्ति अनुसार देनेके लिये प्रस्तुत हू। यह एक मन्दिर की अपेक्षा अधिक कार्य भी नहीं है एक मन्दिर बनवाने की शक्ति हर एक साधारण आदमी रखता है। तो हम सर्व भारतवर्ष के धनिक मिलकर क्या नहीं कर सकते है। इसके बाद माष्टर दरयावसिंह सोंधिया ने कहा कि यह कार्य ढीलमे पड जायगा ऐसा मुझे मालुम पडता है। इस कार्यका इस समय जबकि प्रत्येक मनुष्यके अतरगमें प्रबल इच्छा घुसी है तब नहीं होता तो फिर पीछे क्या हो सकता है। पश्चात् पडित पन्नालालजीने कहा कि अब हमको यह समझना नहीं चाहिये कि इस कार्यमें ढील होगी कारण कि इसी जबानसे मनुष्य लाखोंके व्यापार करता है और इसी जबानका मनुष्य भरोसा करते है? और सज्जन जन इस प्रकार वचन देकर विमुख नहीं होते है। आज जब हम इस प्रकारके उत्तम २ वचन सेठ लोगोंसे इस कार्यके सहायतार्थ सुन रहे है तो क्यो आशा न की जाय कि यह कार्य शीघ्र सम्पादन न होगा। बाबू देवकुमारजीने कहा कि मैने जो सहायता दी है वह बहुत तुच्छ है ऐसे उत्तम कार्यके लिये बहुत कुछ सहायताकी आवश्यकता है। जिस प्रकार सेठ माणिकचदजी हीराचदजी, सेठ हुकमचदजी आदिने सहायताके वचन दिये है उनसे आशा होती है कि यह कार्य आवश्य सम्पादन हो जायगा। मनुष्यका यही कर्तव्य है कि वह अपने वचनानुसार कार्य पूर्ण करे। इसके पश्चात् पडित पन्नालालजी के आदेशानुसार सेठ माणिकचदजी हीराचद और सेठ हुकमचदजी इन्दौर निवासी इस कार्य के सम्पादनार्थ नियत किये गये। पत्रोत्तर आदि कार्य बाबू शीतल प्रसाद जी करेंगे।

आप लोगोका सरस्वतीभवनका

एक इच्छुक।

मेला जिनबिम्बप्रतिष्ठा कानपुर।

विदित हो कि कानपुर बिम्बप्रतिष्ठा और मेलेमें आनेवाले भाइयोंके लिये अवधरुहेलखंडरेलवे अर्थात् लखनऊ रेलवेने पौना किराया कर दिया है अर्थात् एक रुपया किरायेकी जगह ॥।) देने होंगे. टिकट सब दर्जोंका पौने किरायेका तारीख १३ अप्रेलसे २८ अप्रेल तक मिलेगा. लखनऊ लेनसे देहली मेरठ सहारनपुर अलीगढ इलाहाबाद बाराबंकी अजुध्या बनारस लखनऊ इत्यादिक जगहके भाई आ सके हैं जिसका सविस्तर हाल रेलपर पूछ लेना चाहिये। जिन भाइयोंको लखनऊ लैनसे आना हो उनको बहुत जल्दी कानपुर सभासे सर्टीफिकट मगा लेने चाहिये व गैर सर्टीफिकटके टिकट नहीं मिलेगा। इस उत्सवमें देशी वस्तुओंकी एक सुंदर प्रदर्शनी भी खोली जावेगी जिसमे हिन्दुस्तानके कारीगरोंकी बनी हुई हरएक किस्मकी चीजें कपड़ा वुनेके करघे वगैर दिखलाये जावेंगे यह प्रदर्शनी २९ अप्रेलसे खुलेगी रात्रिको फर्रुखाबादका नाटक होगा। महासभाका नैमित्तिक अधिवेशन और मिथ्यातम नाशनी दिगबर जैनबालसभा कानपुरके सभासदोंके परम कल्याणकारी व्याख्यान होंगे। श्री सभा विद्यार्थियोंकी परीक्षा और जात शिरोमणी पडित मडली भी यथायोग्य धर्मोपदेश करेगी। इसलिये सब सज्जन महाशयोको इस अवसरपर पधारना योग्य है॥

सर्व भाइयोका दास,

शम्भुदयाल मंत्री,

जैनबालसभा, **कानपुर**

नवीन समाचार

पासिफिक महासागर की गहराई साढे छह मील से भी अधिक है। यह महासागर सब महासागरो से बडा माना जाता है।

अजब बछिया—ता. १७ मार्च को पाली (मारवाड) मे एक गायके बछिया उत्पन्न हुई है उस के तीन नेत्र दो मुख, दो जिव्हा और दो नाक है।

अखबारो पर नालीश—आजकल सरकार अखबारोको कडी निगाह मे देखती है। एक मुकदमा तय नहीं होता कि दूसरे पर आफत आती है। अब मुसाफिरका ता ६ अप्रेल को मुकदमा पेश हुआ है।

फलटण सरकारने अपने राज्यमे प्राईमरी शिक्षा मुफ्त देनेका विचार किया है।

मु. बन्हानपुर—बगाल प्रान्तिक परिषधमें एक गरीब मजूर ने अपनी १ दिन की मजूरी मरक्षक फडमे अर्पण की। बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने उसको सप्रेम आलिंगन किया।

---

११ अप्रेलको पंढरपुरमें रा. पढरनाथ काशीनाथके सभापतित्वमें दीपचद उपदेशक दि० जैन प्रा. सभा बम्बईका विद्या विषयपर व्याख्यान हुआ। मनुष्य सख्या अनुमान ६० थी।



हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको मथ-नकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है। इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठडक पहुचती है। बदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूर होकर लहू और ताकत बढती है। फी सीसी ॥=) डा. ख. ।)

निमकसुलेमानी।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, बदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, बवासीर प्रमेहनाशक है। स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है। फी शीशी ॥) डा. ख अलग

दंतकुसुमाकर।

इसके लगानेसे दांतोंका हिलना मसूडोंका फूलन, खूनदर्द आदि आराम हो दांत मोतीकी तरह चमकते है। रोज लगानेसे दांत आजन्म दृढ बने रहेंगे। फी डिब्बी ।)

दवा दादकी।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर भगाती है। फी डिब्बी ।)

गंधकवटी।

यदि बालकोंको हमेशा स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसे मगाइये इससे बच्चोंका ज्वर खासी दस्त वायुरोग दूर होकर खूब मोटा ताजा हो जाता है इसकी गोली रोज खिलाना चाहिये. कीमत ॥) सी. डा. ✂

पंचतिक्तवटिका।

यह ससारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है। इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते हैं। किं०॥)डा.=)

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई

प्रमेहनाशक अपूर्वताकतकी दवा।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनको सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना प्रसगकी इच्छा न होना, नपुसकता, नाताकती, कमरमे दरद, थोडा चलनेसे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुशकी वा जर्दी, बदनमे फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्बलता, रगोंकी कमजोरी उठती जवानीमे कुचालसे पैदा हुई नामर्दी, आदि सब रोग जडसे नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है। जिसमे उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आखोंमे रोशनी, बदनमे फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है। मूल्य १ डिब्बाका २॥), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १२) खर्च माफ.

श्वासारिष्ट।

इसमे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है। कीमत १) डा० ॥)

नपुसकत्वारि तैल।

इसके लगानेसे गुप्तभागसबधी सर्व प्रकारके रोग दूर होते है। फी सीसी १) डाकखर्च =)

प्रदरातक चूर्ण।

इससे स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस सबधी सर्व विकार दूर होते है। कीमत १) डा० =)

नयनामृत सुरमा।

इसके लगानेसे आखोंका जाला धुन्ध, फुली, पानी, बहना, सुर्खी, पलक आदि नेत्ररोग दूर होते है और ज्योति बढाना, ठडक रखना और पढते २ आखो नहीं थकती है। फी शीशी १) लगानेकी सलाई।

जैनग्रंथसंग्रह।

इसमे छोटी २ पचास पुस्तकोंका सग्रह है। यही एक पुस्तक पास रखना काफी है। सुन्दर टाइपसे पुष्ट कागजपर छपी है जल्दी मंगाइये। ऊपरसे सुन्दर जिल्द बधी है। मूल्य पोष्टेजसह ॥)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य, आयुर्वेदीय औषधालय-इटावा (U. P)

उत्तम और सस्ते जैनपुस्तक॥

जैनग्रन्थसंग्रह

छप गया! छप गया!! छप गया!!! जिस पुस्तकके लिये ग्राहकगण चिट्ठियोंकी भरमार कर रहे थे वही फिर दूसरी बार छप गई साथही मूल्य भी कम कर दिया है इसमे छोटी बडी सस्कृत और भाषाकी ५० पुस्तकोंका सग्रह है परदेशमे केवल यही एक पुस्तक पास रखना काफी है सुन्दर टाईपसे पुष्ट कागजपर छपी और जिल्द बधी है जल्दी न मगानेसे पछताना होगा किं ०॥) डा० माफ।

व्याख्यानरत्नमाला।

विद्या, धर्म, सत्सगति, कुरीतिके विषयमें ८ भाग	=)
नवीन होली सग्रह एकवार अवश्य पढिये	)॥
सगीत मनोरमा (नीटकोंकी तरहमें)	=)
सगीत नेमचन्द्रिका (नाटकोंकी तरहमे)	=)
जैनभजनसग्रह (चालें भी लिखी है)	=)
स्तोत्रशतक (अनेक रागोंमे १०० स्तुतियां है)	=)
प्रश्नोत्तरमाला (चर्चाकी पुस्तक है)	-)
तत्त्वार्थसूत्रजी मूल	-)
पञ्चमङ्गल पाठ	)॥
बारहमासा राजुलजी	)॥
बारहमासा सीताजी	)।
बारहमासा मुनिजी	)।
बारहमासा वज्रदन्त	)॥
वैराग्य भावना	)।
अध्यात्म पचासी	)।
दश आरती	)।
निर्वाणकाण्ड भाषा	।
धर्मपचीसी	)।
हुक्का निषेध	।
दुःखहरण विनती	)।
सकटहरण विनती	)।
बारह भावना सग्रह	)।
समाधिमरण (एक विनती सहित)	)।
परमार्थ जकडी, वा० राजुल सारठम	)।
पुकार पचासी	।
जैनबालगुटका (बालकोंको पढाइये)	)।
इष्ट छत्तीसी निर्वाणकाण्ड गाथा	)॥
बाइसपरीषह, बारह भावना सहित	)॥
प्रश्नोत्तर नमराजुल	)॥
आलोचनापाठ अर्थसहित	)॥
ब्याहुला नेमिनाथ	)।
सामायक भाषा	)।
समऋषि पूजा	)।
निशभोजन भुंजन कथा	)।
भक्तामर सस्कृत व भाषा	-)
मिदरा खाड निषेध)॥ } बुढापेका विवाह)॥ }	दोनों १०० इकठ्ठी लेनेसे २ ६० सैकडा

नियमावलि।

१ चार आनसे कमकी पुस्तकें नहीं भेजते है।

२ एक किस्मकी ५ पु इकट्ठे लेनेसे १ मुफ्त।

३ डाक खर्च पाससे देते है ग्राहकोंको सिर्फ मनीआर्डर फीस देना होगी।

मिलनेका पता—

बाबू वीरसिंह जैनी, इटावा (U. P.)

'कर्नाटक' प्रेस, मुबई.

Registered No. B. 288.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेप नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
दुसरा भोईवाडा पो० कालबादेवी
बम्बई।

ॐ जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतजिनानुवन्धित्वाजैनमित्र इतीष्यते॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

वर्ष ८ वां] वैशाख कृष्ण २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द। ता० ३० अप्रेल सन् १९०७ ईस्वी। [अंक १३ वां।

दिगम्बरजैनपरीक्षालय बम्बई।

सम्पूर्ण जैन पाठशालाओंके व्यवस्थापकों तथा अध्यापकोंको विदित हो कि, आगामी आषाढ़ मासके कृष्णपक्षमें सम्पूर्ण पाठशालाओंकी परीक्षा लेनेका प्रबन्ध किया गया है। इस लिये प्रवेशिकापरीक्षा और पंडितपरीक्षाके कौन कौनसे खंडमें कितने २ विद्यार्थी परीक्षामें बैठेंगे, इसकी सूचना हमको शीघ्र मिलनी चाहिये, जिससे प्रश्नपत्रादि तयार करानेमें सुभीता पड़े। इस वर्ष; कारण विशेषसे प्रत्येक विषयमें अलग २ परीक्षा लेना निश्चय किया है।

प्रत्येक पाठशालामें शिक्षक कितने हैं, बालक कितने हैं, शिक्षण किस पद्धतिसे होता है, आदि सब बातोंका खुलासा भी लिखिये। जिनके पास पठनक्रम व नियमावली न हो, हमसे मंगा लेवें।

रावजी सखाराम दोसी
मंत्री परीक्षालय—शोलापुर

जरूरी नोटिस।

१ श्रीमती दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बईका दफ्तर मोरेनासे उठकर अब बम्बईमें आ गया है। बाबू फूलचन्दजी पाटणी इस सभाके सहायक महामंत्री (ज्वाइंट जनरल सेक्रेटरी) नियत हुए हैं। उन्हींकी देखरेखमें दफ्तरका कार्य होगा। इस लिये सभा सम्बन्धी सब प्रकारके पत्र व्यवहार इस पतेसे करना चाहिये — बाबू फूलचन्दजी पाटणी।

सहायक महामंत्री दि० जै० प्रान्तिक सभा
दुसरा भोईवाडा पो० कालबादेवी—बम्बई।

२ इसी प्रकार जैनमित्रका आफिस भी मोरेनासे उठकर बम्बई आ गया है, इस लिये तत्सम्बन्धी समस्त पत्रव्यवहार भी आयन्दा नीचे लिखे पतेसे करना चाहिये।

मैनेजर जैनमित्र—दुसरा भोईवाडा
पोष्ट कालबादेवी—बम्बई।

केशरकी पवित्रता।

कानपुरके भाइयोंने हमारे यहांकी पवित्र केशरको भी रातमें भिजोकर १०–१२–घंटे सड़ाकर उसका रंग अर्थात् सुगंधित सार निकालकर शेष फोकशको जलाकर दुर्गंधित पानेसे अशुद्ध ठहराई है जिससे हमको बडा आश्चर्य हुआ कशमीरके किसानोंके यहांसे जैनी भाईके द्वारा खरीदकर मगाई हुई असलीकेसर भी जब अशुद्ध ठहराई जाती है तो फिर केशरका अभावही समझना चाहिये—लाचार हमने ओसवाल भाइयोंकी खुलाई हुई स्वदेशी कंपनीसे यह जिकर किया तो उन्होंने अद्वितीय पदार्थवेत्ता प्रोफेसर गज्जरको केसर भेजकर पृथक्करण कियासे परीक्षा कराई तो उन्होंने सार्टीफिकट दिया कि "आपने स्वदेशी केसरका नमूना भेजा वह जांचनेसे शुद्ध व अनमेल पाया गया अर्थात् इसमें किसी भी अशुद्ध पदार्थका मेल नहीं है। जिसकी असलनकल यह है—

TECHNO CHEMICAL LABORATORY,
Director—Prof T K gajjar
M A B S E & C S
Girgaum Tram Terminus
Bombay, 9th February 1907.

THE SWADESHI Co,
Mandvi Bombay.

Dear Sirs,

The Sample of Swadeshi Saffron sent by you has been found to be a pure genuine Sample of Saffron unmixed with any adulterants.

Yours faithfully,
(Sd) D D. KANGA,
Anatytial Chemist.

इस परसे हमको पूर्णतया विश्वास हो गया कि इसमें जो अपवित्रताका दोष लगाते हैं सो झूठा है—फोकसमें जो दुर्गंध आती है वह मांस वा मदिराकी नहीं किन्तु सडे हुये फोकसकी स्वाभाविक है। जिन भाइयोंको हमारा विश्वास हो वे अवश्य यही केसर मगावें जिनको विश्वास न हो वे और कहींसे भी नहीं मगावें क्योंकि जैसी खात्रीसे यह केशर मगाई जाती है वैसी खात्रीसे और कोई भी नहीं मंगा सकता है। बढिया केशरका भाव ४५) रु. रतल (३९ तोले) फुटकर १।) तोला।

भाइयोंका दास—
पन्नालाल जैन, पो. गिरगांव, मुम्बई.

पारितोषक सूची ।

दि० जैन परीक्षालय भंडार बम्बई ।

सम्वत् १९६४ वीर० २४३३ ।

न.	नाम विषय.	पारितोषक. कुल संख्या.	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	नाम द्रव्यदाता.	विशेष व्यवस्था.
१	प्रवेशिका परीक्षा प्रथम खड ..	१८	७	६	५		
२	द्रव्यसग्रह सार्थ	६	३	२	१	पन्नालाल जैन .. गौतमचद लीलाचद	
३	लघुव्याकरण षड् लिंग	६	३	२	१	फूलचद अजमेरा	
४	क्षत्रचूडामणि ४ लम्ब	६	३	२	१	विरधीचद चादचद	
५	प्रवेशिका परीक्षा द्वितीय खड ..	२४	९	८	७		
६	रत्नकरड श्रावकाचार साथ	६	३	२	१	रामजीदास प्रभुदयाल	
७	लघुव्याकरण तिङन्त .	९	४	३	२		
८	क्षत्रचूडामणि पूर्ण ...	९	४	३	२	रामजीदास प्रभुदयाल	
९	प्रवेशिका परीक्षा तृतीय खड .	३६	१३	१२	११		
१०	तत्त्वार्थ सूत्र सार्थ	९	४	३	२	रामजीदास प्रभुदयाल	
११	लघुकौमुदी पूर्ण ...	१२	५	४	३	सखाराम नमिचद	
१२	चन्द्रप्रभु काव्य १-२ ३-४ ५ सर्ग	९	४	३	२	पदमचद भूरामल	
१३	परीक्षामुख मूल	६	३	२	१	पूनमचद नथमल जीवराज गौतमचद	
१४	विशारद परीक्षा प्र० खड .	४२	१५	१४	१३		
१५	सागारधर्मामृत अर्थ	९	४	३	२	छोगालाल श्रावगी	
१६	व्याकरण स्त्रीप्रत्यान्ततक	१२	५	४	३		
१७	धर्मशर्माभ्युदय ५ सर्ग वाग्भट्टालकार २ . ..	१२	५	४	३		
१८	न्यायदीपिका तर्कप्रमाणान्त .	९	४	३	२	पदमचद भूरामल	
१९	विशारद परीक्षा द्वितीय खड ...	५४	१९	१८	१७		
२०	सागार धर्मामृत पूर्ण	१२	५	४	३	गांधी हरीभाई देवकरण	
२१	व्याकरण चातुरर्थिकान्ता .	१५	६	५	४	गांधी हरीभाई देवकरण	
२२	धर्मशर्माभ्युदय १२ सर्ग, वाग्भट्टालकार पूर्ण .	१५	६	५	४		
२३	न्यायदीपिका पूर्ण ...	१२	५	४	३		
२४	विशारद परीक्षा तृतीय खड ..	५१	१८	१७	१६		
२५	सर्वार्थसिद्धि १ २ अध्याय	१२	५	४	३	बनवारीलाल चादमल	
२६	व्याकरण जुहोत्यादि गणान्ता	१५	६	५	४		
२७	धर्मशर्माभ्युदय पूर्ण, वृत्तरत्नाकर पूर्ण	१५	६	५	४		
२८	आलापपद्धति	९	४	३	२	पदमचद भूरामल . .	
२९	विशारद परीक्षा चतुर्थ खड	५४	१९	१८	१७		
३०	सर्वार्थसिद्धि ३ से ६ अध्याय तक	१५	६	५	४	सेठ चुन्नीलाल झवेरचद ...	
३१	व्याकरण पूर्ण	२१	८	७	६		
३२	जीवन्धर चम्पू ७ लम्ब ..	९	४	३	२		
३३	प्रमेयरत्नमाला तर्क प्रमाणान्त ...	९	४	३	२		
३४	विशारद परीक्षा पचम खड ..	६०	२१	२०	१९		
३५	सर्वार्थसिद्धि ७, ८, ९, १० अध्याय	२१	८	७	६		
३६	व्याकरण प्राकृत (मागधी) .	१२	५	४	३		
३७	अलकार चिन्तामणि पूर्ण ..	१५	६	५	४		
३८	प्रमेयरत्नमाला पूर्ण	१२	५	४	३		

नोट—एकही विषयपर अगर दो महाशयोंकी पारितोषक देनेबाबत स्वीकारता आजायगी तो मंत्री परीक्षालय उस पारितोषकको अन्य विषयमें दे सकेगा और उसकी सूचना मंत्री, परीक्षा लेनेके प्रथम कर देवेगा । स्वीकारता किये हुए रुपयोंकी सख्या तबदील न की जावेगी ।

प्रत्येक महाशयोंको इस पारितोषकमें रकम भरकर हमारे पास भेजना चाहिये ।

रावजी सखाराम मंत्री.
परीक्षालय सोलापुर ।

जैनमित्र.

वैशाख बद २ श्रीवीरनिर्वाण संवत्
२४३३ ता० ३० अप्रैल सन् १९०७ ईस्वी ।

सम्पादकीय टिप्पणियां ।

वर्तमान समयमें सभा, क्लब आदिके स्थापित होनेसे भविष्यत उन्नतिका स्वप्न अधिक लोगोंको मालूम पड़ता है । और वे पूर्व समयके प्रयत्नोंको वर्तमान उन्नतिमें बाधक समझते हैं । सभाओंमें २ दिन प्लेटफार्मपर लेकचरबाजी और ताली बजाकर प्रस्ताव पास करनेके सिवाय और कुछ कार्य बहुत कम होता है परन्तु सदैव कोई न कोई उसमें विघ्न उपस्थित हो जाता है ।

पूर्व समयमें जातीयसभा स्थापित थीं और उनका जातीयबल वर्तमान अंग्रेजी फेशन और अदालती कार्यवाहीसे न्हास हो गया है । अगर ऐसा न होता तो पूर्व जातीयबलसे न तो अपवित्र वस्तुओंका हिन्दुस्थानमें प्रवेश होता और न करोड़ों रुपया देशके बाहर और अदालतोंमें जाकर देश निर्धन होता और न अकालपर अकाल भी हिन्दुस्थानमें पड़ते ।

इस जातीयबलसे राष्ट्रको, जातिको बड़ी सहायता मिलती है । राष्ट्र अपना राज्य उन जातिके मुखियाओंसे मिलकर दृढ कर सकता है और जातिके मुखिया भी अपनी हानिलाभ विचार कर उन्नतिके साधक हो सकते हैं ।

जातीयबलका प्रभाव आजकल प्रायः लुप्त है परन्तु जिस २ जातिमें आजकल यह प्रभाव विद्यमान है उनके देखनेसे सहजमें विदित हो सकता है कि उनमें कितनी सामर्थ है । वे प्रत्येक कार्य निर्विघ्नता पूर्वक चलाते हैं और उनका न्यायभी चीफकोर्टकी अपेक्षा उत्तम होता है ।

जिस समय कोई जातीयबलका उलंघन करता है, वह जातिसे बहिष्कार किया जाता है और फिर उसको प्रत्येक प्रकार की जातीय कठिनाईयोंसे तंग और लाचार होकर उस जातीय दंडमें शामिल हो कर जातिमें मिलना पडता है ।

इस समय जातीयबलकी बड़ी भारी आवश्यकता है इस कारण जातीयबल बढानेका प्रयत्न करके प्रत्येक जाति शक्ति शाली बनाई जावे जिससे वह इष्ट कार्यों का निर्विघ्नता पूर्वक सम्पादन करै । धर्म की उन्नतिकर्ताओं को सबसे प्रथम इस ओर ध्यान देना अति आवश्यकीय है वे विना इस के कोई भी इष्ट कार्य की सिद्धि नहीं कर सकते ।

प्रत्येक छोटेसे छोटे ग्राममें किसी न किसी रूपमें इन सभाओंका होना पाया जाता है परन्तु उनको थोडाही सहारा मिलने से वे जबरदस्त सभायें बन सकती हैं ! प्रत्येक ग्रामकी सभाओंके मुख्य २ महाशयों को लेकर एक प्रान्तीय सभा और प्रान्तीय सभाओंसे महासभा गठित की जाय, जो अपने विचार और प्रभावसे प्रत्येक उन्नतिके कार्य सम्पादन करै । अभी हूमड़की प्रान्तिज, ईडर में, मालवा प्रान्तके खंडेलवालो की बैनेडामें, परवारों की बीना (सागर) में, पद्मावती परवारोंकी फरहा आदि स्थानोंमें जातीय सभा चली जा रहीं हैं। इनको थोडाही सहारा मिलनेसे ये जबरदस्त प्रान्तिक सभाये बन सकती है ।

हम जैनधर्मसंरक्षणी महासभाके नेताओंसे आग्रहपूर्वक कहते हैं कि वे अवश्यही इस जातीय बलके वढानेका उद्योग करैं । इन प्रान्तिक सभाओंके बलसे महासभाका भी बल खूब बढ सकता है ।

पंचम कालकी विचित्र लीला ।

(लेखक श्रीयुत रघुनाथदासजी रईस सरनौ) ।

पंचम काल तेरी गति विचित्र है । जो कार्य शुभ हेतुसे किया जाता है वही अशुभका कारण होता है । एक हाथ जोडते हैं तो सवाहाथ टूटता है । पाठक महाशयो आप थोडे इशारेसे अधिक अनुभव प्राप्त करैंगे, और मामला क्या है इससे भी आप अविदित नहीं रहैंगे। पंचमकालकी बादशाही अमलदारीमें जब धर्म रसातलको जाने लगा, बादशाहोंके अत्याचारोंसे विद्याकी न्यूनता तथा ग्रन्थोंका न्हास होने लगा उस समय परम दयावान जयपुरस्थ पंडित मंडली, टोडरमल्ल प्रभृतिने संस्कृत ग्रन्थोंकी भाषा, कि जिनसे जैनी भाषामें धर्मका रहस्य जानकर धर्म भृष्ट न हो जावे, कर डाली । ऐसा होनेसे धर्मकी परम्पराय चली आई । और हजारों ग्रन्थोंकी प्राप्तिके कारण जैनी जैनधर्मके तत्वोंसे विज्ञ बने रहे पश्चात् अंग्रेजी अमलदारी रूपी सूर्यने अपना प्रकाश किया तब सर्व मतवाले अपने २ मतका स्वच्छद चमत्कार दिखाने लगे । उस समय जैनियोंकी उन्नति हो इस हेतुसे जैन जातिके अगुआ लोगोंने सभा पाठशालाओंका आन्दोलन किया । जिसका सविस्तर वृत्तान्त जैनमित्र वर्ष ८ अंक ८ के क्रोडपत्रमे सभापतिके व्याख्यानमें छपा है, तथा वर्ष ८ के अंक ९ में "महाविद्यालयका चदा" शीर्षकमें सविस्तर वर्णन है । तदुपरान्त महासभामें बाबूलोगोंका अधिकार बढा और उन्होने हिकमत अमलीसे पंडितोंकी निन्दा करना और अधिकारोसे हटाना आरम किया । तथा कई एक पडितोंने लोगोंकी अनुचित कार्यवाहीसे स्वयम् दूर होना उचित समझा और वे अलग होगये । अब महासभामें जिस अधिकार पर देखियेगा वहीं बाबू नजर आते हैं ।

पहिली सभाकी नियमावलीमें कौरम था कि इतने पडित इतने धनवान इतने बाबू होना चाहिये अब केवल बाबू लोगोंका ही अधिकार है । कौरम नदारत है । पाठकोंको विचार करना चाहिये कि वह कौरम योग्य है या यह कार्यवाही योग्य है । यह अंधेर सम्बत् १९५६ से चल रहा है और यही कारण है कि हमारे महासभाके महामत्री जी अपने भूतपूर्व सहायकमहामत्री को इस प्रकार की चिट्ठी देने लगे"

चाहे जब रिजोल्युशन पास करके मिला देना अपने अखत्यार होगा ।

मानो सभा महामत्री जी और उनके सहायक महामत्री जी के घर की ही है । सम्वत १९५७ में एक ऐसा प्रस्ताव पास कर डाला कि महाविद्यालय फंड मे अंग्रेजी विद्या पढाई जाय तिसपर जैन समाज में १० महिने कोलाहल मचा रहा । सन १९६० में अपनी स्थापित की हुई तीर्थक्षेत्रकमेटी पर ऐसा आघात किया कि, जिससे कमैटी सिसकती रही और कमेटी के कार्याधिकारियों ने बडे परिश्रम और यत्नसे सरक्षणकिया । सं १९६२ में महाविद्यालय के फंडमें अंग्रेजी तालीम शामिल की जिसका झगड़ा कलकत्ते की सभामें तय हुआ है । इन सब झगड़ों का सबब "नीम हकीम खतरा जान । नीम मुल्ला खतरा ईमान" है । अथवा वह मसल है कि "जाने न माने किसी की" ।

महासभा की शाखा जैनयंगमेन्स असोसियेशन आफ इन्डिया है और वह जैनियों के पुराने विचारों को तिलांजुली देकर दिगम्बर श्वेताम्बर को एक कर विलायत की हवा खिलाना चाहती है। तथा विलायतवालों के भेष और भाषासे, उन्नति करना चाहती है। प्रथम वह अंग्रेजी पढे धर्मशून्य महाशयों को धर्ममें लाने के लिये स्थापित की गई थी परन्तु अब उसने इतनी तरकी की, कि वह सभा अब उन परम दिगम्बर आचार्यों के वाक्यों पर स्याही फेरना चाहती है।

(जैनगजट अंक ७ ता. १६ फरवरी सन १९०७ के उपसम्पादकीय टिप्पणी सफा ६) हमारे जैनियों में मुख्यत दो सम्प्रदाय हैं "दिगम्बर और श्वेताम्बर "यदि एक बाप के दो बेटे कहे जांव तौ भी अत्युक्ति नहीं होगी। यद्यपि दिगम्बर श्वेताम्बरकी एकता धर्म विषयमें नहीं होसकती है तथापि हम लोगोंके मुख्य अहिंसा धर्ममें एक्यता अवश्य हो सकती है। ऐसाही सं. १९६० में महासभामें बाबू बनारसीदासने एक प्रस्ताव भी पास कर डाला था। पाठक महाशय पक्षपात छोडकर विचार करियें कि यदि एक बापके दो बेटे कहे जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी, यह वाक्य दोनोंको सजातीय बनानेकी चेष्टा कर रहा है। जैसे सरागसम्यक्त वीतरागसम्यक्त सजातीय धर्म है एक जाति है, सरागचरित्र वतिरागचरित्र एक जाति है तैसे दिगम्बर जैनशास्त्रोंके आचार्योंके मनसे दोनों सम्प्रदाय एक बापके बेटे सिद्ध कभी नहीं हो सकते है।

श्री गोमट्टसार जीवकांड गुणस्थान अधिकार नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रवर्ति गाथा।

एयंत बुद्धदरसी विवरीओवह्म तावसो विनओ।
इदो विय संसदो मक्कड़यो चेव अण्णाणी।

इस वाक्यसे हम कह सकते हैं कि हम दिगम्बर श्वेताम्बर एक सम्प्रदाय नहीं। बहुत मतोंके सिद्धांत प्राय. एकसे हैं, धर्मसमाजी, आर्यसमाजियोंकी मनुस्मृति भी मद्य, मांस, मधुका त्याग, छानकर पानी पीना, रात्रि भोजन त्याग कहती है। अथवा इस गाथासे एक बापके बेटे ५ कहे जा सकते हैं तिनमें एक श्वेताम्बर है। यदि आपने कुदकुदाचार्यकृत षट्पाहुड नेमिचंद्र स्वामीकृत उपदेशरत्नमाला वा पं. टोडरमलकृत मोक्षमार्गप्रकाश, पं. सदासुखदासजीकृत रत्नकरण्डश्रावकाचार, प्रभाचद्रस्वामीकृत प्रमेय कमलमार्तंड आदि ग्रंथोंका अवलोकन किया होता तो कदापी ऐसा न लिखते।

जैन यगमेन्स एसोसियेशनकी नियमावलीपर विचार।

१ जैन यगमेन्स एसोसियेशन आफ इन्डिया उद्देश सभा (नम्बर १) तीर्थंकरोंके कहे सच्चेमार्गको प्रकाशकर मूढत्वको हटाना।

कहिये महाशयो, इस विषयमें हम पूछते हैं कि यह मिश्रित सभा तीर्थंकरोंका सच्चा मार्ग दिगम्बर समझती या कि श्वेताम्बर। या दोनोंको समझती है? प्रमाण क्या। और जो दोमेंसे एकको समझती होगी तो एक अवश्य झूठा होगा क्या इसका उत्तर इस सभाके नेताओंके पास है?

२ उद्देश्य नम्बर ४ जैनमतके विरुद्ध अशुद्ध विचारोंको दूर करना। इस विषयमें एसोसियेशनके कर्ता जो दिगम्बर थे अपने शास्त्रोंसे पडितों द्वारा निर्णय करते कि शुद्ध ठीक जैनमतकी कौनसी सम्प्रदाय है, कौनसी सम्प्रदाय जैन है और कौनसी सम्प्रदाय जैनाभास, व दोनों सम्प्रदायें जैन है जैनाभास नहीं है। क्यों ऐसा उन्होने नहीं किया? और स्वच्छद इस बातको अपने जैन समाचार पत्रोंमें क्यो छापने लगे? कि दिगम्बर श्वेताम्बर एक बापके बेटे हैं। प्यारे पाठको जैनमतकी कैसी उन्नति इस नवयुवक ज्ञानलवदुर्विदग्धोंन की है। हमारी समाजमें ऐसे धर्मविरुद्ध लेख देनेवाले जैनसम्प्रदायके द्वेषी है। हा यह जरूर है कि जैनमतमें राजा नहीं, राजाविना दड कौन देवे। अपनी २ ढपुली और अपना २ गाना है फिर भी हम जैनसमाजका ध्यान अपनी तरफ दिलाते है, कि वह इस बातपर खूब विचार करे। यदि जैनगजटका सम्पादक दिगम्बर आम्नाय है तो वह महावीर स्वामीके लेखके विषयमें जो विपरीत लेख छापा है, उसका प्रायश्चित लेवे और आगामी इस बातकी सूचना दे कि ऐसे विपरीत लेख अब नहीं छापे जायगे। अन्यथा महासभाके महामंत्री जो दिगम्बर जैन सम्प्रदायी हैं ऐसी हालतमें गजटका काम उनसे छीन लेता कि जिससे आगामी कोई फिर कभी ऐसे विपरीत लेख न छापे। यदि ऐसा न होगा तो केवल गिन्तीके बाबूही बाबू महासभा व यंगमेन्स एसोसियेशनमें रह जायगे। उनकी प्रजा साधारण जैनी भाई हैं ऐसे कार्यसे उनसे घृणा करने लगेगी और जैनधर्मकी उन्नतिके बदले फक अवनति लगेगा। सभा किसी एक व्यक्तिकी नहीं है किन्तु सर्व साधारणकी है।

३ अम्बालेके अधिवेशनमें जैनमतके प्राचीन ग्रन्थोंके समझनेमें जो प्रस्ताव नम्बर दो है उससे एक्यता दोनों सम्प्रदायोंकी सिद्ध नहीं होती है।

४ तीर्थक्षेत्रोंपर दोनों सम्प्रदायोंके मुकद्दमे चल रहे थे उनके बंद करनेके प्रयोजनसे एक्यता करनेका जैनयंगमेन्सएसोसियेशनने बीडा उठाया था सो स. १९५६ से आठ वर्ष हो गये आज तक किसी क्षेत्रपर सफाई न हुई। कुछ झगडे अदालतसे तय होगये और कुछ तय होनेवाले भी है। एक्यताका स्वप्न देखनेवाली हमारी सभाने सिवाय लेक्चरबाजीके उन एक्य विषयोंमें भी एक्यता प्राप्त नहीं की तो हम यह क्यों न कहैं कि यह सभा सिवाय धर्म विरुद्ध कार्योंके अन्य कार्य सम्पादन करनेमें असमर्थ है।

एसी सभामें दिगम्बरी भाई अब सामिल होनेमे डरते हैं।

जीवहिंसा निवृती और पशुकष्ट निवारणके वास्ते अपील।

(लेखक श्रीयुत लाला मुसद्दीलाल अमृतसर)

मैं जैनमित्र और जैनगजट के सम्पादकों से निम्न लिखित दरख्वास्त करताहूं। मैंने जैनमित्र अंक ९ और जैनगजट अक ७-८ में जीवहिंसा निवृती पशु कष्ट निवारणी सभाका हाल तथा जीवहिंसाकी कमीका उपाय पढा और कुछ अंग्रेजीके अखबार मेरे मित्रोंने "व्हेजेटेरियन लीग आदि लन्डनके मेरे पास भेजे वे भी अवलोकन किये। व्हेजेटेरियन को अन्त करणसे धन्यवाद है कि जिसने उस देशमें जहां मांस खानेवाले ही रहते हैं, मास खाना छुडाया और इससे लाखों जीवों की रक्षाकी। उन्होंने मांसखाना अनेक डाक्टरी आदि उपायों से हानिकारक सिद्ध किया और यह सिद्ध किया कि मनुष्य फलाहारी है, उसके अवयव ही मांस खाने के लायक नहीं हैं इत्यादि अनेक ऐसे उपाय उन्होंने प्रसिद्ध किये हैं कि जिनसे वहां पर फलाहारवालों की संख्या बढती जाती है और मांसाहारियों की संख्या घटती जाती है। आज मुझे उस देशके और इस देशके उद्योगियों की ओर विचारनेसे जमीन आसमान का सा अन्तर दिखाई पडता है यहांके उद्योगी जैनजाति, कि जिसके सिद्धान्त सर्व धर्म की अपेक्षा इस विषयमें सर्वोत्कृष्ट माने गये

है उद्योग नहीं करती। जहां मांस खाने वालों की संख्या है वहां पर उद्योगी उद्योग कर सफलता प्राप्त करें और जहां पर मांस खाने वालोंकी संख्या मास त्याग करनेवालोंकी अपेक्षा कम है वहां पर उद्योगी उद्योग नहीं कर सकते हैं। जैनजातिमें अच्छे २ पढे लिखे विद्वान भी मौजूद हैं उनसे दिनरात संसारिक कार्य करते हुए भी उन मूक और निर्बल पशुओंके कष्ट दूर होनेके विषयमें एक लेख भी नहीं लिखा जा सकता है कि जिनसे उनका कष्ट निवारण हो जाय। क्या जैनी अब 'अहिंसा' इस वाक्यको अपने हृदयसे निकालने लगे हैं। उन जैनकी संतानोंको अवश्यमेव ध्यानमें लेना चाहिये कि उस कठिन समयमें हमारे पूर्वजोंने यहांपर "हिंसा करनेवाले धर्म" को भी अहिंसकके रूपमें परिवर्तन कर डाला था। आज हम उस विषयकी चर्चा भी न करैं, इस सिवाय अधिक हमारे लिये हानिकारक और लज्जाका कारण क्या होगा। इस लिये प्रत्येक मनुष्यको तन मन धनसे अहिंसा धर्मके फैलानेका उद्योग करना चाहिये।

जैन धर्मोन्नतिके विषयमें निम्न लिखित उपाय अवश्य करना चाहिये।

१ प्रत्येक स्थानोंमें लाईब्रेरी स्थापितकी जावें और जिनमें प्रत्येक धर्मके महाशय पुस्तकें अवलोकन करैं।

२ धार्मिक और लौकिक विद्याका अभ्यास लडके और लडकियोंको कराया जावे।

३ जिनवाणीका जीर्णोद्धार कराया जाय और एक सरस्वतीभवन स्थापित किया जाय।

४ भारतकी ९ यूनीवर्सिटियोंमें जैनग्रन्थ प्रवेश किये जांय।

५ फजूल खर्ची, बाल्य विवाह, वृद्धविवाह बंद किये जांय।

बडे २ शहरोंमें बोर्डिंग स्थापित किये जांय और जैन पंडित शिक्षाके लिये रक्खे जांय।

७ प्रत्येक स्थानमें संस्कृत पाठशालायें स्थापितकी जावें।

८ उपदेशकोंकी संख्या बढाई जावे और उनका समयानुसार दौडा प्रत्येक स्थानमें कराया जावे।

९ प्रत्येक जैनी स्वाध्याय करनेका नियम करै।

॥ हमारा शत्रु ॥

कई महीने हुए कि जब हमने सुगम और उत्तम रीतिसे उपदेशकों के दौरे का प्रोग्राम बनाने आदिके अभिप्रायसे जैनगजट अंक ४४ में यह दो विज्ञापन मुद्रित कराये थे, कि (१) जिस २ जगहके भाईयोंको अपने यहां उपदेशकों के बुलाने की, आवश्यक्ता होय जहां २ कहीं उपदेशकोंके दौरा करानेकी वे जरूरत समझें हमसे पत्र व्यवहार करें कि वहां उपदेशकोंके भेजनेका प्रबन्ध किया जावे और (२) अपने जैनी भाईयों तथा खासकर जैनगजट और जैनमित्रके ग्राहक महाशयोंसे यह प्रार्थना की गईथी कि वे अपने २० आसपासके उनग्रामों तथा शहरोंके जिले और प्रान्तके नाम लिखकर हमारे पास भेजें और जिनग्रामोंमें रेल नहीं जाती है उनके सबसे नजदीक के रेलवे स्टेशनका नामभी लिखें। उक्त दोनों विज्ञापनोंमें कोईभी ऐसी बात नहीं थी कि जिसके लिये किसी भाईको कुछ परिश्रम उठाना पडता। हर एक भाई अपने आसपासके ग्रामोंके नाम और उनका हाल जानता है उनके लिये हमारे पास एक चिट्ठीका भेज देना बस था, परन्तु अत्यत अफसोस और खेदके साथ प्रगट किया जाता है कि सिवाय दो एक महाशयोंके अन्य किसी भाईने अबतक उक्त विज्ञापनोंके सम्बन्धमें हमसे कुछ भी पत्रव्यवहार नहीं किया है, क्या इससे हम यह ख्याल कर सकते है कि हमारे जैनी भाई जैन गजटको नहीं पढते हैं, नहीं २ कदापि नहीं जहातक हम जानते हैं यह गजट प्रायःउन्हीं भाईयोंके पास जाता है जो जाति और धर्मके हितैषी है, फिर ऐसे भाईयोंकी निस्बत कैसे ख्याल किया जा सकता है कि वे गजटको न पढते हों, और न इससे यह नतीजा निकाला जा सकता है कि इस कार्यमें कुछ स्वार्थसिद्धि न होनेके कारण भाईयोंने मौनावलम्बन किया है, क्योंकि हमारी जातिमें बडे २ परोपकारी और धर्मात्मा विद्यमान हैं जो परोपकार और धार्मिक कार्योंके साधनमें अपने स्वार्थका कुछ भी ख्याल नहीं करते हैं। यदि और नहीं तो वे ही अवश्य कुछ सूचना देते, परन्तु नहीं दी, इससे अन्तमें भाईयोंके प्रमाद और आलस्य" के सिवाय और क्या कारण इसका कहा जा सकता है? वास्तवमें यह आलस्य और प्रमाद हमारा बडा भारी शत्रु है। संसाररूपी गहन बनमें रुलाना इसीका काम है, कैसाही उपयोगी, उत्तम और अल्पपरिश्रम साध्य कार्य क्यों न हो वह मनुष्योंको उसके पास तक फटकने नहीं देता। जिस प्रकार जर ओलेको बेकार कर देता है उसी प्रकार यह प्रमाद इस आत्माके सर्व गुणोंको नष्ट कर देता है किसीने बहुत ठीक कहा है कि,

"आलस्यहि मनुष्याणा शरीरस्थो महानरिपु।
नास्त्युद्यमसमो बन्धु कृत्वाय नावसीदति"।

अर्थात्–शरीरमें स्थित आलस्यही निःसन्देह मनुष्योंका बडाभारी शत्रु है, और उद्यम की समान कोई बन्धु नहीं है कि जिसको करकै दुख उठाना नहीं पडता; नहीं मालूम फिर अबतक क्यों हमारे भाईयोंने इस प्रमाद और आलस्यकी चादरको ओढ रखा है, क्या कुछ उनको इससे प्रेम होरहा है? प्यारे भाईयो! इस बातको याद रखो कि जबतक हम इस प्रमाद और आलस्यकी चादरको उतार कर नहीं फैकेंगे, तब तक न हम कुछ अपनाही कल्याण कर सकते हैं और न जाति तथा धर्म की दशाका कुछ सुधारा कर सकते हैं। इस प्रमाद और आलस्यने जो कुछ गति इस जैन जाति और धर्म की बनादी है उसके स्मरणमात्रसे हृदय कंपित होता है, इस लिये अब हमारा यही कर्तव्य है कि हम इस प्रमाद को छोडकर उद्यम का शरण ग्रहणकरें क्योंकि —

"उद्यमेनहि सिध्यंति कार्याणि न मनोरथैः।
नहि सुप्तस्यसिंहस्य मुखेप्रविशंतिमृगाः"॥

अर्थात्–उद्यमसेही सबकामसिद्ध होते हैं मनोरथसे कुछ नहीं। जैसे सोतेहुवे सिंहके मुखमें स्वयम् मृग प्रवेश नहीं करते हैं।

केवल मनोरथी पुरुषोंके जीवनको आचार्योंने धिक्कार कहाहै (धिग्जीवितं व्यर्थमनोरथस्य)। जबहम यह चाहते हैं और इस बातका मनोरथ रखते है कि किसीन किसी प्रकारसे इस जैन जाति और धर्मकी शीघ्र उन्नति हो जावै और इसी लिये हमने स्वयं उसका मुख्य साधन स्वरूप एक उपदेशक भंडार नियत कियाथा तो क्या फिर अब उसके कार्योंमें उपर्युक्त प्रकार जरासी भी सहायता न देना हमारे लिये लज्जा की बात नहीं है और ऐसी दशामें क्या हम केवल मनोरथी नहीं हैं; धिक्कार है इस प्रमाद और आलस्यको, यह इसीका महात्म्य है कि जिससे हमारी पूर्वकी सर्वोत्कृष्टता नष्ट हो यह दुर्दशा हो गई। आशा है कि अब हमारे भाई जरूर इस आलस्य और प्रमादको अपना शत्रु समझकर दूरसे प्रणाम करेंगे और इस सर्वोपयोगी उपदेशक भंडारमें जो कि समस्त धर्मकार्योंका उत्तेजक है, तनमनधनसे सहायता करेंगे। और उक्त दोनों विज्ञापनोंके सम्बन्धमें पत्र भेजने

तथा अपने आसपासके उन ग्रामोंकी सूचना देनेसे कि जिनमें जैनी भाई रहते हैं, नहीं चूकेंगे।

इत्यलम्।

जुगलकिशोरजैन.

मुख्त्यार अदालत देवबन्द जि. सहारनपुर
उपमंत्री उपदेशक भंडार दि. जै. म. स

हमारी दक्षिण यात्रा।

माघ वदी २ की रात्रिको इन्दौरके श्रीमान् सेठ हुकमचन्दजीके संघके साथ रेलद्वारा रवाना होकर भुसावल पहुंचे, यह स्थान जक्शन और मिलोके होनेके कारण विशेष प्रसिद्ध है; स्टेशनसे थोडीही दूरपर शहरमें १ जिनमंदिर है। यहासे शामकी रेलद्वारा प्रातःकाल अमरावती आये, यहा ९ जैन मंदिर हैं जिनमें २ परवारोंके मन्दिरोंका प्रबन्ध अति उत्तम है। नगरमें प्लेग होनेके कारण लोग दुखी होकर भाग रहे थे यहासे बैलगाडी द्वारा परतवाडा होते हुए श्रीमुक्तागिरजी पहुंचे। परतवाडामें दो जिनमंदिर हैं जिनकी पूजन प्रक्षालका अच्छा प्रबन्ध है, यहापर १ जीनप्रेस जैनियोंका भी है इसके सिवाय दियासलाई बनती है। देशहितैषियोंको उत्तेजन देकर स्वतः इसके द्वारा लाभ उठाना चाहिये उसका पता "माचिश कपनी परतवाडा (बराड) है." श्री मुक्तागिरजीमें पहाड़पर प्राचीन जैनमंदिर ४७ है. यहा प्रबन्ध उत्तम, जमा खर्च ठीक २ है. धर्मशाला १०० आदमियोंके ठहरने लायक है जिसके बढाये जानेकी आवश्यक्ता है. बावडी खुदाना और पहाड तक साफ रस्ता होना अवश्य है। इसके व्यय योग्य रुपया भी रोकड बाकी है जिससे जमीन वगैरह जायदाद खरीदी जाती है; हमारी रायतो यह है कि हर एक क्षेत्रकी आमदनी हर वर्ष शास्त्रभडार व मरम्मतमें लगती ही रहना चाहिये। बहुत पैसा जमा होते रहकर पीछे जो परिणाम होता है वह सब लोग जानतेही हैं। क्या भगवानको घर गृहस्थियोंकी तरह बाल बच्चोंकी शादी करना है कि जिसके वास्ते रोकड जमा की जाय? हा इतना अवश्य है कि मौका मिलनेपर किसी श्रीमान्‌को सहायता अवश्य मिल जाती है, जिससे लोगोंका क्षेत्रोंपर पैसा देनेसे दिल हटता जाता है, और जो कुछ दिया जाता है केवल लोक लाजसे, यहा पाच दिवस पर्यंत पूजन वंदनादि धर्मध्यान अच्छी तरह साधकर पश्चात् पूर्व मार्गसेही लौटकर भुसावल होते हुए धूलिया आये। यहा १ जैनमंदिर है सेठ रामलालजी गुलाबचंदजी प्रसिद्ध और सज्जन पुरुष हैं। जिन्होने संघकी हर तरह खातिरदारी की, यहासे बैलगाडी द्वारा श्री मांगीतुंगीजी पहुंचे। ९ दिन पर्यंत यहां भलीभांति धर्म ध्यान सधा. यहांके मुनीममें योग्यता कम है, हिसाब रोकड़बाकी बराबर नहीं है, पहाडपर कई जगह रास्ता टूट गया है जिसकी दुरुस्ती और धर्मशालाका होना और धर्मशालाके कुएको सुधरवाना अवश्य है, जिससे यात्रियोंको पानीका आराम हो. यहांपर धर्मशालाके अहातेमें २ जैनमदिर और पहाडकी दोनों टोकोंपर प्राचीन उकेरे हुए प्रतिबिम्बहैं। यहा मुनीम योग्य और सुप्रबंधक होना चाहिये. यहांसे उन्हीं गाडियों द्वारा श्री गजपंथाजी आये यहाका प्रबध अच्छा है यद्यपि यहां माघ सुदी १३ से पूनम तक बम्बई प्रान्तिक सभाका अधिवेशन और मामूली मेला था तथापि यहा ९ दिन ठहरकर फिर अधिक दिन इतने संघका रुकना असंभव समझ दर्शालाचारी यहनल्सा छोडना पड़ा। यहापर पूजनके नामपर सिर्फ भगवानके चरणोंपर केसरकी टिपकी लगाकर फूल रख देना मात्र रह गया है। जैसे अन्यमती महादेवको बेलपत्रसेही खुश करते है तैसी यहाकी दशा है। जैनमतकी पूजनके तत्वोंपर यहाके प्रबंधकर्त्ताओंका लक्ष्य होना अवश्य है। यह स्थान उत्तर दक्षिणके मध्य होनेसे यहा एक बृहत् सरस्वतीभंडारका होना भी अवश्य है. यहासे दशमीको रवाना होकर बारसी आये। यहांपर १ जैन मंदिर और पाठशाला भी है पूजनकी दशा यहापर भी पूर्ववत् है। धर्म मर्मसे अनभिज्ञ भेषियोंकी मानता भी यहां देखी गई। यहांसे गाड़ियों द्वारा श्रीकुंथलगिरजी गये जहांपर जैन मंदिरोंका समुदाय व धर्मशाला उत्तम है. होशयार और सुप्रबंधक मुनीमकी आवश्यकता है पूजादि प्रबध उपर्युक्त है। यहा मागीतुगी, तथा शोलापुरमें मंदिरोंके शिखरपर वैष्णवोंके अवतारोंकी मूर्तियां बनाई गई हैं मालूम नहीं होता ये किस शास्त्रके आधारसे किस पंडित की प्रेरणा पूर्वक बनी हैं। आशा है कि वर्तमान् पंडित मंडली इसके आधारको अवश्य ढूंढ निकालेगी। यहांसे बारसी लौटकर रेल द्वारा शोलापूर आये. भाग्योदयसे श्रीयुत विद्वद्वर पं. गोपालदासजीसे साक्षात हुवा. प्रथम दिन पंडितजीका सम्यक् दर्शन सम्यक्ज्ञान पर बहुत प्रभावशाली और हर्षप्रद, विवेक जनित और द्वितीय दिवस पंडित गौरीलालजीका सम्यक्चारित्रपर व्याख्यान हुआ। अन्तमें श्रीमान् सेठ हुकमचन्दजी सा० ने जिनमतका उत्सव और पूजन का अभिप्राय बताकर वर्तमान दुर्दशा का अच्छा फोटो खींचा जिससे सोलापुरकी मंडली अति प्रसन्न हुई और दूसरे दिवस हम लोगों को पूजन करते हुए देखनेका आग्रह किया। अतएव दूसरे दिवस हम लोगोंने बडे मंदिरजीमें अत्यानद्के साथ पूजन की। यहापर चतुर्विधदानशाला और जैनपाठशाला का निरीक्षण किया प्रबंध उत्तम है। यहा जैन जातिका गौरव प्रगट होता है। श्रीमान् सेठ हीराचंद नेमिचदजी आदि मडली बहुत योग्य और प्रशंसनीय है. ऐसे बड़े शहरमें जहा जैन मडलीकी आधिक्यता है नित्य शास्त्र सभा अवश्य होना चाहिये, शास्त्राम्याम बिना हृदयस्थित अंधकार दूर नही होता वहां से चलकर मद्रास पहुंचे इस महानगरीमें पत्ता लगाया तो मालूम हुआ कि न दिगम्बरी जैनियोंके घर हैं और न जैनमदिर है. ६ मीलकी दूरीपर फुली माधौरमें एक प्राचीन जिनमदिर इस प्रान्तके जैनियोंका आस्तित्व प्रगट कर रहा है. जिसके दर्शन कर अत्यानंद हुआ साथ ही जैन जातिकी प्रति दिन अवनति होनेके चिन्हों को स्मरण कर हृदयमें वेदना भी हुई। यदि धर्म पद्धति पूर्वक यथार्थ कहाजाय तो इसे म्लेच्छदेश कहनेमें अत्युक्ति न होगी. यहासे चलकर बंगलौर आये यहापर ३० घर जैनियोंके व १ जैन मंदिर है. शेष बातें मामूली हैं। पंडित धरनेंद्रजीके पास ताडपत्रपर खुदे हुवे शास्त्र बहुत हैं यहांसे चलकर फाल्गुन शु० २ को श्रीरंगपट्टन आये, मैसूरकी प्राचीन राजधानी होनेपर भी वर्तमान खंडहर मात्र है। ग्राम बाहर खंडहरोंके मध्य एक बहुत प्राचीन मंदिर वहांके जैनियोंका कीर्ति स्तभ है। पूजन प्रक्षाल नाम मात्र, केवल? ब्राह्मण जैनी पुजारी मदिरके अहातेमें रहता है. मैसूरमें प्लेगकी शिकायत थी इससे सिर्फ दर्शन करने व शहर देखनेके लिये गये। यहांपर २ जैनमंदिर और राजमहल दर्शनीय हैं हिन्दकी वर्तमान व प्राचीन कारीगरीका अद्वितीय नमूना है। यहांसे गाडीद्वारा फाल्गुन शु. ५ को श्रीजैनबद्रीजी (श्रवणबेलगुल) पहुंचे और श्री गोमट्टस्वामीजीके दर्शन कर जन्म सफल किया। यह प्राचीन प्रतिबिम्ब पहाड़ीपर उकेरी गई है. जो दिगम्बर जैनियोंकी प्राची-

नता और गौरवका चिन्ह है। यह बिम्ब ४० हाथ ऊंचा है इसपर छत्री बनाके किसी श्रीमानूको अपना जन्म सफल कर लेना बहुत अवश्य है। कहां वे गोमट्ट राजा जो इस मूर्तिकी श्रीमान नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती द्वारा प्रतिष्टा करानेवाले थे और कहीं वर्तमानकालिक किसी आसन्न भव्य श्रेष्ठीके भाव छतरी बनानेमें होवें तो उसका बड़ा भाग्य समझना चाहिये। यहांपर पर्वतके नीचे १ विशाल जिन मंदिर जैनियोंकी भक्ति और सम्पति प्रचुरताको द्योतन करता है। यहापर जैनपाठशालाका प्रबंध उत्तम है परतु इसमें जैनसिद्धान्तोंकी पढ़ाई होना आवश्यक है। पं. दौर्वलीजी शास्त्री योग्य और सज्जन विद्वान हैं, आपकेपास शास्त्र भंडार अच्छा है। यहासे चन्द्रापट्टन, हसन हरेविल होते हुए बेनूर ग्राम आये. हरएक स्थानमें दर्शनोंका सुभीता है। बेनूरमें २० हाथ ऊची बाहूबलीजीकी मूर्ति अन्यत्रसे लाकर स्थापन की गई है, यह प्राचीन शिल्प कला (इन्जीनियरी) देखकर अति आश्चर्य होना है कि इतनी बडी मूर्तिका निर्विघ्न साङ्गोपाङ्ग तय्यार होना व विना सहारे खड़े रहना कितनी चतुराई व कलाकौशल्यका कार्य है। इस प्रकार गाडी द्वारा ९ दिनमें मूडविद्री आये, यहां रत्नमयी २९ जिनबिम्ब और धवल जयधवलादि ग्रंथोंके दर्शन कर व कुछ भाग श्रवण कर कृतकृत्य हुए। ये दोनों ग्रंथ कनडी लिपिमें हैं जिनका जीर्णोद्धार हो रहा है १ प्रति नवीन कनडीमें व १ देवनागरीमें लिखाई जा रही है। धवल ७० हजारमें ६० हजार और विजय धवल ६० हजारमें ३० हजार लिखे जा चुके हैं। प. गजपतिजीके आधीन ये कार्य है शीघ्र पूर्ण करने व संशोधन होनेकी अत्यावश्यक्ता है। यहांकी पाठशाला नवीन स्थापन होनेपर भी प्रबंध अच्छा है, परीक्षा लेकर पारितोषक दिया गया व ध्रौव्य भंडारमें भी सहायता दीगई। इस इलाकेमें डाक्टर लोग बहुत तकलीफ देते हैं। सारे हिन्दुस्थानसे क्वारनटाइन उठ जानेपर भी यहा वही लूट जारी है। गरीब गरीब यात्री बहुत सताये जाते हैं। उस प्रान्तके मुखियोंको इसपर ध्यान देनेकी बहुत जरूरत है, नहीं तो कुछ दिनोंमें लोग वहां जानेसे डरने लगेंगे। इस क्षेत्रपर आठ दिन रहकर कारकल आये और यहांभी २० हाथ ऊंची श्री बाहूबलिजीकी प्रतिमा तथा १७ प्राचीन मंदिरोंके दर्शन किये। पीछे वारंग आये यहां तालाबके बीचमें १ मनोज्ञ जैनमंदिर है। यहांसे शिवमगा आकर पूनाकी टिकट ली. रास्तेमें दो दिन दर्शन नहीं मिले तीसरे दिन बेलगाव आये, अचानक ही वकील सा० चौगुलेजी बी० ए० से मुलाकात हुई उन्होंने ठहरनेका बहुत आग्रह किया। पर रिजर्वगाडीका आर्डर पेश्तर दे देनेके सबब ठहर नहीं सके, और पूना आना पड़ा। वकील सा० की जबानी ज्ञात हुआ कि यहां १०८ मंदिर थे जिनको बीजापूरके अदलशाहने तुडाकर किला बनवाया। सिर्फ ३ मंदिर खंडहर स्वरूप अब भी वहा मौजूद हैं। स्वत हम इनकी कारीगरी देखकर अचंभित हुए। पूनामें ३ जैनमंदिर, शहर बडा हैं जहां मि० तिलक सरीखे देश हितैषी रहते हैं वहांके कुल हलवाई मोरस शक्कर गलाते हैं, यह आश्चर्यकी बात है। यहापर विधवाविवाह निषेधक नाटक बहुत शिक्षाप्रद देखा। यहासे चलकर हिन्दकी गौरव स्वरूप बम्बई नगरीमें पहुंचकर हीराबागमें ठहरे. प्रबध उत्तम है यहांपर श्रीमान् बाबू देवकुमारजी आरेवाले भी आये हुए थे, २ सभायें शास्त्रोंके जीर्णोद्धार, और एक वृहत सरस्वतीभडार खोलने बाबत हुईं। बाबू देवकुमारजीने दो हजार रुपया देना स्वीकार किया। इस कार्यको उन्नतिपर लानेका भार हालमें प०[१] पन्नालालजी और बाबू शीतलप्रसादजीको दिया गया है. आशा है कि वे देश भरके जैनी मात्रके द्रव्यको इस कार्यमें लगाकर सफल करेंगे। यहाका बोर्डिंग और विद्यालय देखा, हम फिर भी कई वार दृढतापूर्वक कहेंगे कि परमार्थी जैन पडितोंकी शिक्षा बिना जैनमतके रहस्यके ज्ञाता सच्चे पडितोंका तय्यार होना दुष्वार है परंतु कालक्रमके रोकनेको कौन समर्थ हैं. नई टकसालका हाल विचित्र[२] हो रहा है, जिनधर्मके मर्मपर कुछ भी ध्यान नहीं, ऐसाही होना है। यहासे सतमीको चलकर श्रीसिद्धवरकूटआये ३ मंदिर वहुत मनोज्ञ है दर्शन पूजन कर अति हर्ष हुआ. यहांके भंडार का रुपया बडवाहाके सेठ देवासा घनस्याम सा जीके पास जमा रहता है, व कई जगह बाकी है। बराबर रोकड़ बाकी नहीं इसके लिये योग्य काररवाई करने का सबके मुखियोंने निश्चय किया। पश्चात् इन्दौर आकर नशियाजीमें श्रीजिनेंद्रदेवका पूजन कर गाजे बाजेके साथ चैत्र शु० १० को हर्ष पूर्वक निज २ ग्रहमें प्रवेश किया। साह्मनेही श्रीबैनेड़ाजीका मेला व मालवे प्रा० सभा का अधिवेशन आया. इसलिये द्वितीय चैत्र वदी १ तक वहा धर्म लाभ किया इस मेलेका विशेष विवरण अलग प्रगट करनेमें आवेगा.

धर्मात्माओं का दास

दरयावसिंह सोधिया

इन्दौर

सम्मतिरत्र गौरीलालस्यापि

---

[१] पंडित पन्नालालजीको नहीं किन्तु सेठ माणिकचंद हीराचंद और सेठ हुकमचंदजीकी सहीसे पत्रव्यवहार कार्य बाबू शीतलप्रसादजीको दिया गया है। सम्पादक।

[२] आपके नोटका कोई विचित्र ही कारण होगा जो कि अभी खुलासा नहीं है। सम्पादक।

फलटणमें बिम्बप्रतिष्ठा और नैमित्तिक संयुक्त अधिवेशन श्रीमती दि० जैन प्रान्तिक सभा बम्बई और दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा।

एस, एम, आर की लोनद स्टेशनसे १६ मीलपर फलटण संस्थान है जहाके जागीरदार श्रीयुत मुधोजीराव उर्फ बापूसाहिब नाइक निम्बालकर है। आपने अपने राज्यमें कई एक प्रजाहित कार्य किये है। आपकी उमर ७० वर्षसे उपरकी है। रियासतकी आय डेढ लाखके अनुमान है। सड़क आदि बहुत अच्छी और साफ हैं। पानीके नल भी यहा हैं।

मुख्य मंदिर जैनियोंके ६ है जिनमें दर्शन कई एक स्थानोंमें है। यहापर एक मंदिर अतिशय पुराना देखनेमें आया। मंदिरके बाहर चारो ओर नक्कासीका वहुत अच्छा काम किया गया है जो कि पुरानी कारीगिरीका एक नमूना है। बहुत सी स्त्रियोंके आकार बने हुए हैं इस मंदिरमें बहुतसे स्थानोंमें मुनिमहाराजोंकी मूर्तियां खडगासन हाथमें पिछी कमंडल लिये बनी हुई हैं। तथा मंदिरके साह्मने भागमें कई एक स्थानोंमें पद्मासन प्रतिमाओंके आकार हैं। बाहर क्षेत्रपालके स्थानमें नागश्रीकीमूर्ति बैठी है और नीचे एक ओर क्षेत्रपाल रख दिये गये हैं। मंदिरमें महादेवकी मूर्ति और नादिया महाराज विराजमान हैं। यह देखकर बडा अचंभा हुआ कि यहां सर्व चिन्होंसे जैन मंदिर मालुम होता है और अन्दर महादेवकी मूर्ति कहांसे आई? कई एक महाशयोंके कहनेसे विदित हुआ कि यह जैन मंदिर बहुत जीर्ण था। राजाने जैनियोंसे उस मंदिर की मरम्मत कराने के लिये कहा परन्तु

नवीन मदिर के इच्छुक फलटण निवासियोंने यह कार्य उचित नहीं समझा। तब वहांके राजाने उसकी मरम्मत करके महादेवकी मूर्ति पधरादी। नवीन मंदिर बनानेवालोंको चाहिये कि वे जीर्णमंदिरोद्धार करके पीछे नवीन जैनमदिर बनावें।

यहापर १ सेठ वस्ताराम पूजाराम (रतनबाई)ने

बिम्बप्रतिष्ठा. १० हजार रू० अपने अंतिम समयमे पचोंके सुपुर्द किये थे और उसमें बिम्बप्रतिष्ठा करनेके लिये कहा था, २ सेठ रामचद सूरचदजी, ३ हीराचंद जयचद निम्बगावकर इन तीन महाशयोंकी प्रतिष्ठाये थीं और बाकी कई एक महाशयोंने बिम्बोंकी प्रतिष्ठायें कराईं थीं।

यहांपर प्रतिष्ठाकारकोंकी ओरसे आये हुए महा-

स्वागत. शयोंका स्वागत अति उत्तम रीतिसे किया गया और किसी भी प्रकार किसी महाशयको तकलीफ नहीं हुई।

सभाका मडफ अति उत्तम रीतिसे सजाया

मडफ प्रबन्ध. गया था और उसमे ५००० मनुष्य बैठ सकते थे। किट्सन लेम्प रातको अच्छा प्रकाश करते थे। स्त्रियोंके बैठनेका प्रबन्ध अलग किया गया था। प्रा. सभा और द० म० सभाके वालंटियर्स सर्व आगत पुरुषोंके बैठनेका यथोचित प्रबन्ध करते थे।

मीती चैत्र सुदी ९को श्री जीका गर्भ कल्याणोत्सव हुआ। रत्नों के अभावमें वर्षा धीमी २ होती थी जिससे बडा आनंद मालूम होता था।

शामको सभा मंडफ में श्रीयुत सेठ हीराचंद नेमिचदने १॥ घंटा तक शास्त्र सभामें उपदेश किया। श्रोताओं की संख्या ५०० थी।

चैत्र सुदी १० को श्री जीका जन्मोत्सव हुआ, भगवान को हाथी पर विराजमान करके बस्ती में से गाजे बाजे सहित मेरुगिरिपर ले गये, वहां पर न्हवन विधि होकर पीछे श्री जी मंदिर में लाये गये। उस समय भगवान राज्य पोशाक और भूषणों से बड़े अच्छे मालुम होते थे। रात्रि को कोल्हापुर बोर्डिंग के विद्यार्थियों ने मुद्राराक्षस नाटक संस्कृतमें किया, उस समय उन के मुखसे सस्कृत शब्द धड़ाधड़ निकलते थे। दर्शकों को बड़ा आनंद मालूम होता था। आज इस प्रकार संस्कृत के बोलने वाले दोचार विद्यार्थीगण कई वर्षोंके परिश्रमसे तय्यार हुए हैं। कुछ दिन पूर्व जैनीयोंमें संस्कृत जैनग्रन्थों के अर्थ लगाने की बात तो अलग स्पष्ट बोलनेवालों का भी अभाव था तदनन्तर पंडित लालन का व्याख्यान बंधुभाव पर हुआ आप का मुख्य आशय यह था "कि दिगम्बरी श्वेताम्बरी, भाईयोंको प्रत्येक "धार्मिक कार्यों में प्रीति भाव रखना चाहिये आदि.

"पंडित लालन का विचार अच्छा है, परन्तु उन को चाहिये कि वे श्वेताम्बरी, स्थानकवासी (ढूंढिया) महाशयों को परस्पर प्रीतिमें बांधे। हमारे दिगम्बरी और श्वेताम्बरी महाशयोंके बीचमें कोई झगडा ही नहीं है और झगडा कोई है भी तो सिर्फ तीर्थक्षेत्र सम्बन्धी सो इसके मिटानेके लिये आजतक किसी भी महाशय ने उद्योग नहीं किया है इस कारण पडित लालनही यह उद्योग करें तो अवश्य लाभ होवे"।

चैत्र सुदी ११ को १२ बजेसे ३ बजे तक सभा हुई जिसमें मनुष्य संख्या २००० थी। सेठ रामचंद्र हेमचद्र झासवडकर सभापति स्वागत कमेटीने एक भाषण दिया जिसमें सर्व आगत महाशयोंका आभार माना। और शेठ हीराचद नेमिचंदजीको सभापति बनानेके लिये कहा। पश्चात् होर्चद्र माणिकचंद दोशी वकील ने अनुमोदन किया। सर्व सम्मति से सेठ हीराचंद नेमिचंदजी सभापति नियत किये गये। सेठ हीराचद नेमिचंदजीने सभापति का आसन ग्रहणकर एक सुन्दर भाषण दिया जिसका साराश यह है। "मैं सभापति के योग्य नहीं हू परन्तु योग्यता न होनेपर भी जो मुझे इस विराठ सभा का सभापति नियत किया है इसका मैं सर्व महाशयोंको धन्यवाद देता हूं। मेरे पूर्वज इस फलटण ग्रामके ही निवासी हैं। अबतक सोलापुर में जहां हम रहते हैं वहा उस गद्दीका नाम फलटण गद्दी है। सभा कोई नवीन कार्य नहीं है परन्तु यह पूर्व प्रथाका अनुकरण है। पूर्व समयमें पचायती रूपसे सभा होती थीं आज इस प्रकार कार्य मिलकर किया जाता है। जैनियों में जहां १ मंदिरकी आवश्यकता थी वहां कई एक मंदिर बन गये हैं परन्तु आजतक जैनियोंका ध्यान उस परमोत्कृष्ट कार्यकी ओर नहीं गया है जिसकी जैनियोंमें बड़ी आवश्यकता है। जैनियों को इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये, ३० कोटि अन्य मतवालोंके बीच १४ लाख जैनी हैं और इस प्रकार २०० अन्य मतवालोंके पीछे १ जैनी आता है। इस कारण प्रत्येक जैनीपर अन्यमतका प्रभाव बढ गया है और इस सबबसे बहुतसे कुसंस्कारोंका जैनियोंमें प्रवेश होगया है। उनमेंसे एक जैनविधि लग्नका न्हास भी होना है। प्रत्येक जैनीको इस प्रकार उद्योग प्रत्येक विषयमें करना चाहिये जिससे जैनी अन्य महाशयोंपर अपना पूर्ण प्रभाव जमा सकें। हमारा राज्य विषयमें नहीं परन्तु धार्मिक विषयमें कहना है। शिक्षणका प्रचार करना अति आवश्यकीय है। इस सतारा जिलेमें पढे लिखे मनुष्योंकी संख्या बहुत कम है, जो कि सरकारी रिपोर्टसे स्पष्ट विदित होता है इस जिलेमें १०० में २८ जैन पढे लिखे हैं और गुजरातमें १०० में ७५ जैनी पढे लिखे है। सतारा जिलेके धनवान् व गरीब महाशय इस बाबत प्रयत्न कर शिक्षाका प्रचार करें। इस प्रकार सभाका कार्य निर्विघ्नता पूर्वक समाप्त हुआ।

श्रीजीका उस समय तप कल्याण महोत्सव किया गया। और रात्रिको कीर्तन हुआ।

चैत्र सुदी १२ को श्रीयुत दानवीर श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचद हीराचंद जी जे. पी. अचानक आ गये, आपके आनेकी खबर सब लोगोंको विदित हुई। सर्व महाशय आपके लेनेके निमित्त बस्तीके बाहर पहुच गये आपने वहांपर मुख्य २ महाशयोंसे थोडे समय बातचीतकी। फूलोंकी मालासे फलटण वासियोंने आपका अच्छा आदर किया। तत्पश्चात् सेठ साहिब सेठ हीराचद नेमिचंदजीको साथ लेकर गाडीमें बैठे। दि०जैन प्रा. सभा और द० म० जैनसभाके वालंटियरोंने गाड़ीको घोडेसे खींचा जाना अनुचित समझ घोडेको गाडीसे निकाल दिया और स्वयम् खींचने लगे, यह क्रिया सेठ साहिबको पसंद न हुई और गाडीसे उतरने लगे, परन्तु दोनों तरफ दो वालंटियरस खडे थे उन्होंने नीचे न उतरने दिया और धड़ाकेसे गाडी खींचते गये। बेन्ड बाजा बजता जाता था और कोई ५०० से उपर मनुष्य आपके साथ जाते थे। इन्द्र महाराजने भी धीमी २ बूंदोंकी वर्षाकर स्वागत किया। पश्चात् सभामंडफमें आकर स्वागतकारिणीकमेटीके सभापतिने सेठजीके स्वागतार्थ सूचक भाषण किया। और उसका अनुमोदन बलवंत बाबाजी बुगटे सम्पादक जिन विजयने अच्छे मधुर शब्दोंमें दिया जिसका सारांश यह है "आज प्रिय पाठको आपने जिस व्यक्ति का आदर इतना किया है उसका क्या कारण है। आप

लोगोंने इस बाबत कभी विचार करनेका प्रयत्न किया था, इस सम्यमूर्तिका आदर आपकी विद्या नुरागता काही कारण है आपने सबसे अधिक द्रव्य विद्याहीके लिये अर्पण किया है। जैनियोंमें अनेक आपसे भी धनाढ्य पडे हुए हैं परन्तु जैनियोंमें शिरोमणि और परोपकारी आप ही हैं। इस प्रकार आनंद ध्वनिसे सभा विसर्जन की गई।

दोपहरको सभा १२ बजेपर प्रारंभ हुई। सेठ हीराचंद जयचंद निम्बगावकरने प्रस्ताव पेश किया।

प्रस्ताव १ "वर्तमान समयमें विद्वानोंकी कमी है और उनकी आवश्यता अधिक है इस कारण उनके तय्यार करनेके लिये धनवान लोगोंको द्रव्य खर्च कर विद्वान तय्यार करना चाहिये।" जिसका अनुमोदन सेठ चंदूलाल जयचंद पूनाकर, पं० लालाराम जी, मूले विद्यार्थी दि० जैन बो० स्कूल कोल्हापूर, बुड्करीकर पार्श्वसेन स्वामी और बलवत बाबाजी बुगटेने किया। बलवत बाबाजी बुगटेका व्याख्यान बहुत जोशके साथ हुवा आपने कहा कि वर्तमान समयमें जैनियोंका बहु भाग रोजगारी और कृषिका करता है। ये दोनों कार्य बिना विद्याके सम्पादन किये उत्तम रीतिसे नहीं चल सकते है और यही कारण है कि जहां ¾ भाग रोजगारका जैनियोंके हिस्सेमें था वहा अब जैनियोंके हाथमें बहुत कम रोजगार रह गया है। उसी प्रकार जैसा जैनधर्ममें दिग्गज विद्वानोंका समूह था वहा अब विद्वानोंका प्राय अभाव ही है। इस समय जैनियों को सर्वोत्कृष्ट कार्य विद्योन्नति का समझना चाहिये। विद्योन्नतिसे ही जात्युन्नति हो सकती है। प्रत्येक धनिक महाशयोंको धन इस कार्यमें लगाना चाहिये। इस प्रकार पूर्ण जोशसे व्याख्यान हो रहाथा लोगोंके दिल अत्यंत आकर्षित थे, इतने ही में पूर्ण जोरसे हवावली और पानी आया जिससे सभा विसर्जन की गई।

ता. २६-४-०७ को दो पहर को सभा प्रारंभ हुई श्रीयुत भर्मप्पा बर्मप्पा उपाध्येन "जीव" इस विषयपर एक अच्छा व्याख्यान दिया।

प्रस्ताव २ बाबू शीतलप्रशादने सिखरजीके सम्बन्धमें इस प्रकार प्रस्ताव पेश किया। "श्री सम्मेद शिखरजी पहाड़पर अंग्रेज वगैरा बंगला आदि बनाने के लिये स्थान सरकार से मांगते हैं उसपर से हजारीबागके डिप्युटी कमिश्नर ने सर्व जैन लोगोंसे सम्मति मांगी है। पहाड पर की जगह सर्व पूजनीक होनेके कारण वहां पर रहने के लिये परवानगी नहीं दी जा सकती है एसा इस सभा का अभिप्राय है"। इस लिये एक तार सभाकी ओरसे दिया जावे तार की नकल अन्यत्र मुद्रित है। पश्चात् श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद हीराचंदजी जे. पी तथा होचंद माणिकचद दोशीके अनुमोदन से सर्व सम्मति द्वारा पास किया गया।

प्रस्ताव ३ कन्या विक्रय का रिवाज खराब है इस के कमी करने का प्रयत्न अवश्य किया जाय। गाधी वीरचद कोदरजी ने पेश किया और शेठ माणिकचंद हीराचदजी जे. पी. और वेणूबाई पूणावाली, मि० फतहचंद कपूरचद लालन, तथा नारायण गोविंद कोचक मुन्सिफ आदि महाशयोंने अनुमोदन किया पश्चात् सर्व सम्मतिसे पास हुवा।

ता. २७-४-०७, पंडित लालारामजीने सप्त भंङ्गी नय पर एक असरकारक व्याख्यान दिया। जो किसी आगामी अंकमें प्रकाशित किया जायगा पश्चात् शा वेणीचंद मोतीचंद कालूसकर ने प्रस्ताव पेश किया।

प्रस्ताव ४. "जैनलग्नविधि अनुसार विवाह किये जाना चाहिये। और दोशी रूपचद लखमीचंद और फतहचद कपूरचंद लालन आदिकी अनुमोदनासे पास किया गया।

प्रस्ताव ५. परीक्षालयकी अत्यंत आवश्यकता है। श्रीयुत अण्णा साहिब बावाजी लट्ठेने पेश किया और दत्तात्रय भिमाजी रणदिवेने अनुमोदन किया पश्चात् सर्व सम्मतिसे पास किया गया।"

तत्पश्चात् श्रीयुत बलवतराव बुगटे सम्पादक जिनविजयका एक असरकारक व्याख्यान विद्या विषय पर हुआ और चंदा हुआ जिसकी कुछ सख्या यहा प्रकाशित है।

सेठ माणिकचद हीराचद जे. पी. ती० क्षे०		२०१)
,,	संयुक्त सभा	५१)
,,	पाजरापोल	५१)
से० हीराचंद नेमिचंद	संयुक्त सभा	१०२)
,,	पाजरापोल	११)
सेठ पदमसी जेठा		४०)
रा. सखाराम लीलाचंद बारामती		२५)
रा. फूलचंद जैन		५)
रा. कोठारी केवलचंद हीराचंद		२५)
सेठ नाथारंगजी		२५)
सेठ गौतम जयचंद		२५)
रा. रामगौडा तात्यापाटील		२५)
रा. जनार्दन दत्तात्रय सराफ पूना		१५)
सेठ अकचंद नामचंद		१५)

सेठ हीराचद माणिकचंद	१५)
सेठ गुलाबचंद ताराचद	१०)
सेठ पदमसी लालचद तरडगाव	५)
सेठ सुरचद हीराचद शडगाव	५)
दहीगावकर पत्र	७)
सेठ हीराचंद माणिकचंद रावजी	१५)
,, हीराचंद रामचद शोलापूर	५)
,, वेणीचंद जेठीराम सोनका	१)
,, सीताबाई रेवचद	५)
,, सेठ लखमीचद की लड़की	१)
कुल जोड	६८५

पश्चात् सभापति महोदयने श्रीमान् मूधोजीराव उर्फ बापूसाहिब नाइक निम्बालकर को धन्यवाद देनेका प्रस्ताव पेश और पास किया। पश्चात् कोल्हापूर सरकारको वंदर न मारने के उपलक्ष में धन्यवाद दिया गया। और सभापति महाशय ने राज्यकर्मचारियों, वालंटियरस, फलटण मडली आदिकोंको धन्यवाद दिया। पश्चात् श्रीयुत नारायण गोविन्द कोचक मुंसिफ साहिब की सभापतित्व में शेठ हीराचद नेमिचंदजी सोलापुर, श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद हीराचंद जे. पी को मानपत्र दिये गये और दोशी होचद माणिकचंद ने दोनों मानपत्रों को पढकर सभामें सुनाया। मुंसिफ साहिबने एक जैनधर्म की उत्कृष्टताके विषयमें लघुभाषण किया। अन्तमें मि० अण्णापा फडयापा चौगुले वकीलने दोनों सभाओंक आभार मान सभा समाप्त की।

एक दर्शक-

श्री सम्मेद शिखरजीके विषयमें खटपट

श्री सम्मेदशिखरजी हमारा पूजनीक स्थान है वहापर हजारीबागके डिप्युटीकमिश्नरने नोटिस दिया है कि, पार्श्वनाथ पहाडपर पट्टेसे जमीन बंगले आदि बनवानेके लिये दी जावेगी। ऐसे पवित्र तीर्थपर जब बंगला बनाये जायगे तब अंग्रेज आदि मासभक्षी उस स्थानमें रहकर प्रति दिन जीव हिंसा, मल मोचन, शिकार आदि सब ही निन्दित काम किये जावेगें। जिस पहाड़का एक २ पत्थर हमारा पूजनीक माना गया है, वहांपर हम दर्शन कर अनंत पुण्यका भंडार भरते हैं जिसकी महिमा हमारे शास्त्रोंमें "एक वार वन्दे जो कोई। ताहि नरक पशु गत नहीं होई।" इस प्रकार की गई

है वहापर एसा अधर्म कार्य सरकार की ओरसे किया जायगा तब उन जैनियोंके धार्मिक श्रद्धानमें कितना धक्का लगेगा। जो जैनी उस पहाडकी वंदना करनेसे मोक्ष माने और वहा सरकार हमारे धर्मविरुद्ध मांसभक्षी आदि लोगोंको रहनेको देवे। जहा जैनी जिस पहाड़को पूजे वहापर अंग्रेज आदि--मल मोचन और हिंसाका कार्य करै अथवा जो स्थान जैनियोंके अहिंसाधर्मका उपदेश देने-वाला और पूजनीक है वहा सरकार हिंसाका कार्य करावे और अन्य लोगोंको रहनेको देवे। धन्य कलि काल। "तेरी महिमा अपरम्पार। मरेको मारे साह मदार।" सरकार जो किसी धर्मके उपर आघात न पहुचानेका दावा करती है उसको यह अधम कार्य कदापि न करना चाहिये। हम डिप्युटीकमिश्नर सहिबसे इस विषयमें प्रार्थना करते हैं और आशा करते हैं कि आप जैनियोंके धार्मिक कार्योंमें कि जिनसे जैनियोंके धर्ममें धक्का पहुंचे हस्तक्षेप न करेंगे और चौदा लाख जैनियोंके बीचमे ही नहीं किन्तु भारतकी ३० कोटि प्रजामें अशान्ति न फैलावेगे। भारतवासियोंके धार्मिक कार्योंमें चोट लगेगी तब वे आपके राज्यका क्या उपकार मानेगें। सर्व जैनी अजैनी इस कार्यसे असंतुष्ट है जो कि आपको बडी २ सभाओंके तारो द्वारा जो कि भारतवर्षमें जैनियोंकी बडी २ सभायें है विदित हुआ होगा। इस कार्यके बद करनेके लिये अर्जकी जा रही है। इसपर भी अगर डिप्युटी कमिश्नर साहिब अपना विचार न बदलेंगे तो कहना पडेगा कि महाराणी विक्टोरियाके, स. १९५८ के सनदपत्रका डिप्युटीकमिश्नर साहिब दुरुपयोग करनेका प्रयत्न करते हैं।

नकलतारोंकी।

जिस अंग्रेजी नोटिसकी नकल अगले जैनमित्रमें छपी है उसीके विषयमें भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाने अपने कानपुरके नैमित्तिक अधिवेशनमें पवित्र तीर्थपर बंगले मकानात आदि न बनने पावें इस विषयका प्रस्ताव पास करके एक तार ता. २२ अप्रैलको डिप्युटी कमिश्नर हजारीबागको भेजा है उसकी नकल इस भांति है —

"Fifteen thousand Digamber Jains in extraordinary Mahasabha Meeting assembled protest strongly colonizing sacred Parasnath Hill Deputation being arranged, please extend time at least two months"

१५००० दिगम्बर जैनी आश्चर्यजनक महासभाके जलसेमे एकत्र होकर इस बातकी बहुत जोरके साथ विरुद्धता करते है कि श्री सम्मेद शिखरजी ऐसे पवित्र (पारसनाथ) पर्वतपर बंगले व मकानादि न बनने दिये जाय--हजारीबाग भेजनेके लिये एक, डिपुटेशन पार्टी काभी प्रबन्ध हुआ है। तथा आप कृपाकर मिलनेका समय कमसे कम दो मास और बढा दीजिये।

इस प्रकारका तार महासभाकी ओरसे भेजा गया है परन्तु सर्व स्थानके महाशयोंको केवल इतनीही कार्यवाहीसे संतुष्ट न होना चाहिये बल्कि अपने २ यहासे इस बातकी विरुद्धता करनेके लिये अवश्य एक २ योग्य महाशयको भेजना चाहिये तथा अन्य प्रान्तिक व स्थानिक सभायें इस तारके सहमत हैं ऐसी सूचना डिप्युटीकमिश्नर साहबको तार व प्रार्थनापत्रद्वारा करना चाहिये--प्रान्तिक और स्थानिक सभाओंका लक्ष्य इस ओर विशेष होना चाहिये---उपर्युक्त समाचार तार सम्बन्धी सेठ **माणकचंद हीराचंद जे पी.** कोषाध्यक्ष बीसपथीकोठी ट्रष्ट कमिटी व महामंत्री भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थक्षे. कमेटीकी ओरसे प्राप्त हुए।

नकलतार. दि० जैन प्रान्तिकसभा बम्बई और द० महाराष्ट्र जैन सभाके सयुक्त नैमित्तिक अधिवेशन मु० फलटण।

With reference to notice of 26th ultimo united Conference of Bombay Prantik DigamberJain Sabha and Southern Maharatta Jain association begs to submit that buildings for residence of Europeans etc., if erected on my part of Shikharji hile will cause extreme dissatisfaction to entire Jain Society. The whole hill being Sacred, nothing against religion can be allowed there, European residence necessitating carrying of flesh, wines and other forbidden things which will wound religious susceptibibities. Conference pray that the proposal be entirely dropped.

ता. २६ मई के नोटिस सम्बन्धमें दि० जैन प्रान्तिक सभा बम्बई और द० म० जैन सभा की संयुक्त सभा प्रार्थना करती है कि अगर पहाड़ के किसी स्थानपर यूरोपियन वगैरेह के रहने के लिये बंगले बनवाये जायगे तो जैन समुदायके बीचमें बड़ा असंतोष का कारण होगा। सर्व पहाड़ पूजनीक है इस लिये धर्म विरुद्ध कोई भी कार्य नहीं किया जा सकता है। यूरोपियन रहने वाले अवश्य ही मास, दारू, और भी निंदित पदार्थों का सेवन करैंगे जो कि, धार्मिक सिद्धान्तोंके घात के कारण होंगें। इसकारण यह सभा इस उद्देश्यको बंद करने के लिये प्रार्थना करती है।

ता. २५ अप्रेल को लालबाग में श्वेताम्बर जैनियों की एक बडी सभा एकत्र हुई जिसमें उन्होंने मकान न बनाने के बाबत हजारीबागको तार किया।

मु. मेंदरगीसे दि० जैन महाशयोंकी ओरसे भी उपर्युक्त विषयमें एक तार सेठ सखाराम नेमिचन्दकी सभापतित्वमें भेजागया है।

जैनी जो कि सम्मेद सिखरजीको अपना समझते है, धर्मसे प्रेम रखते है, अपने तीर्थंकरोंका कुछ भी अस्तित्व रखना चाहते है, और जो महाघोर हिंसक कार्य को सिखरजी पर नहीं होना देना चाहते हैं, जिन को जैन धर्म का नाम इस भारत वर्ष में रखने का प्रेम है, जो अपने पुण्य स्थानपर अन्य हिंसक लोगोंके न रहने देने का ख्याल रखते हैं उन्हे उपर्युक्त २० मइको अवश्य सिखरजी पहाड पर पहुचकर अवश्य इस कार्य के न होने देने के लिये प्रयत्न करना चाहिये। पंडित, द्रव्यवान, गरीब आदि सर्व को उस स्थानमे पहुंचकर इस महाघोर सकटका डिप्युटी कमिश्नरसे प्रतिवाद करना चाहिये और इस कार्य में तन मन धनसे सहायता करना चाहिये। प्रत्येक स्थान से प्रतिनिधि वहा पहुचना चाहिये। गरीब भाई जिनको कुछ भी सिखरजी से प्रेम हैं वे पेटमें गांठ देकर भी जावें उनकी गांठ सदैव सिखरजी पर याद दिलावेगी और वे इस महापाप को रोककर अक्षय पुण्य का कार्य करैंगे। आचार्योंने जो सम्मेद सिखरजी के दर्शन का फल मोक्ष का कारण बतलाया है वह चाहे दूसरे समयमें काम आवे अथवा न आवे इस समय अवश्य उन का मोक्ष का कारण समझा जावेगा। द्रव्यवानों को स्वयम् जाना चाहियें और जो महाशय जाने के इच्छुक होकर द्रव्यके कारण न जा सकते हों उनको वहां अवश्य द्रव्य सहायता देकर ले जाना चाहिये। उनको संघ निकालनेका पुण्य मिलता था उस से कई गुणा अधिक पुण्य इस समय मिलेगा। सारांश यह है कि जो महाशय एसे संकट समय सिखरजी पहाड़ पर आकर अथवा प्रतिनिधी भेजकर उसीम न

करेंगे और उनके न आनेसे यहा जो घोर पाप सदैवके लिये होगा वे उसके भागी समझे जावेंगे। और उनकी सन्तान सदैव इस दुःखके कारण विलाप करैगी, उसके कारण भूत आप ही होंगे।

जिस स्थानके भाई शिखरजीके लिये जाना चाहें वहांके भाई हमको सूचना देवें ताकि उनका वहांपर यथोचित प्रबन्ध किया जाय। ता. २१ मईको हजारीबागके डिप्युटीकमिश्नर शिखरजीपर जैनियोंसे मिलेंगे। इसी कारण २० तारीख सर्व महाशयोंके पहुंचनेके लिये लिखी है। और सर्व स्थानोंमें सभा होकर प्रतिवादके तार डिप्युटी कमिश्नर हजारीबागको भेजना चाहिये। तार देनेवाले महाशय हमको भी समाचार देवे तो अच्छा होवे। आशा है कि प्रत्येक स्थानके भाई हमारी प्रार्थना सुनेंगें। दिल्ली, आगरा, मथुरा, सहारणपुर, अम्बाला, रावलपिन्डी, जयपुर, अजमेर, बीकानेर, जबलपुर, नागपुर, बेलगाम, कोल्हापुर, कलकत्ता, बनारस, सोलापुर, आरा, इन्दौर आदि बडे २ स्थानोंसे तार गये होंग और न गये होवें तो अब विलम्ब न करना चाहिये और सिखरजीको मुख्य २ भाईयोंको अवश्य जाना चाहिये।

जिस प्रकार लाला प्यारेलाल वकील दिल्ली निवासीने जैनमत समीक्षाके मुकदमेमें परिश्रम कर नाम किया था। उसी प्रकार अब भी अन्य वकील महाशयोंको अवश्य पधार कर इस संकटमें सहायता करना चाहिये।

उपदेशक दीपचंदकी रिपोर्ट।

ता. १२ अप्रेलको पंढरपुरमें सेठ पदमचंद हेमचदके सभापतित्वमें सभा हुई। मिथ्यात् खडनपर भाषण हुआ। ४० महाशय उपस्थित थे, १२ ने प्रतिज्ञा ली।

ता. १३, १४ अप्रेलको आष्टीमें सेठ मोतीचद खेमचंदके सभापतित्वमें सभा हुई विद्या, स्वाध्याय, चारदान, आदि विषयोंपर क्रमानुसार व्याख्यान हुए। उपस्थित संख्या १८, २० थी, ४ महाशयोंने स्वाध्यायका नियम लिया।

ता. १५ अप्रेल—करकममें सेठ हीराचंद खुशालचदके सभापतित्वमें मिथ्यात् खंडन विषयपर सभा हुई। ३० महाशय उपस्थित थे १९ महाशयोंने प्रतिज्ञा की।

ता. १६–१७ मु० परितामें सेठ अमीचंद कपूरचंदकी सभापतित्वमें अहिंसा, विद्या विषयमें व्याख्यान हुए। उपस्थित २९ महाशयोंने विदेशी शक्कर और अंग्रेजी दवाईयोंके सेवन करनेका त्याग किया। दो महाशयोंने स्वाध्यायकी प्रतिज्ञा की।

ता. १९, २० मु. मोडलिम्बमें सेठ गुलाबचंद अमीचंदके सभापतित्वमें एक्यता और विदेशी खांड निषेध इस विषयपर व्याख्यान दिये। कई एक महाशयोंने विदेशी खाड त्याग की। पाक्षिक सभा होना निश्चित हुआ। दूसरे दिन पानी गिरनेके कारण सभा न हो सकी सिर्फ शास्त्र सभा हुई।

ता. २२ से २७ तक लउळमें बिम्बप्रतिष्ठा महोत्सव पर सभायें हुईं जिसमें निम्न लिखित समयानुसार सभापति हुए। और बिबिध विषयोंपर व्याख्यान हुए। पार्श्वसागर ब्रह्मचारी, सेठ शिवलाल मलूकचंद, सेठ रामचद नाथाजी, सेठ रामचंद अभयचद आदि महाशयोंने भी व्याख्यान दिये तथा पार्श्वसागर ब्रह्मचारी, सेठ शिवलाल मलूकचंद, सेठ रामचद अभयचद सेठ रामचंद नाथा आदि सभापति थे एकसौ गयारह रूपयाका चदा हुआ।

१०) सेठ मोतीचद भवानचंद माढा
११) गाधी शिवलाल मलूकचंद
११) गाधी नाथारगजी आकलूज
१०) कोठारी अभयचद जयचद बाबी
* ७) सेठ सखमल धनजी कुरदवाडी
५) शा अमीचंद फूलचद उजनीकर
* ५) कोठारी वेनीचंद खुशालचद कुरडवाडी
* ५) सेठ नेमचंद लीलाचंद बार्सी
५) महता केवलचद बार्सी
१) महता गोविन्दजी माणिकचंद होडेकर
१) महता कस्तूरचंद दूलचंद मालवडकर

१११)

* एसे निशानके रूपया वसुल पाये हैं।

ता. २८, २९ को मोहोल में शास्त्र सभा और उपदेशक सभा हुई उपदेशक सभा में सभापति सेठ गुलाबचंदजी थे दान विषयपर व्याख्यान दिया गया। मनुष्य सख्या ४५ थी।

विविध विषय

शोकदायक मृत्यु—दिल्ली पाठशाला की श्रीमती गुलाबदेई अध्यापिका की चैत्र कृष्ण १९ शुक्रवार को ९ बजे प्लेग से मृत्यु हुई। आपने स्त्री समाजका बहुत हित किया था। अन्त समय तक आप सावधान पूर्वक बातचीत करती थीं। एसे स्त्री रत्नके वियोगसे जैन समाज शोकित है।

जैन विम्बोत्सव—मकुन्दामल कपूरचंद रईस कालका (अम्बाला) वालों ने एक नवीन मंदिर बनवाया है जिसका उत्सव वैशाख शुक्ल ९ ता १७ मई से वैशाख शुक्ल ९ ता. २१ मई तक होगा। प्रत्येक महाशय को इस उत्सव पर आना चाहिये।

पृथ्वी प्रदक्षिणा—पेस्ली और लिव्हरपुल क निवासी मेसर्स पारीस व थामसन जो कि पैदल पृथ्वी प्रदक्षिणा करने के लिये ता. २१ जनवरी को बम्बईमे निकले थे वे वर्तमान में रंगून पहुंचे हैं। उनकी देहपर कागज के कपडे हैं।

अमीर काबुलके सन्मानार्थ खर्च—२१ लाख रुपया अमीर साहिबके हिन्दुस्थान पधारनेमें हिन्द सरकारके खर्च हुए।

नीकलका एक आना वाला शिक्का—कलकत्तामें जारी न होगा परन्तु बम्बईमें बननेवाला है। और जून मास तक चलने की भी खबर है।

कानपुरकी बिम्बप्रतिष्ठा—बाबा दुलीचंदके कल्पित प्रतिष्ठापाठसे पूरी हो गई और दि० जैन धर्मसंरक्षणी महासभाका नैमित्तिक अधिवेशन भी बडी धूम धामसे हो गया। १९००० आदमी एकत्र हुए थे।

मेंदरगीमें जिन बिम्बप्रतिष्ठा—प्रतिष्ठाकारक पंडित पासू गोपाल शास्त्री थे। ९ कल्याण बडी योग्य विधि और उत्सवके साथ हुवे। नवमी की रात्रिको ९ बजेपर तात्या नेमिनाथ पागलका एकादश प्रतिमापर व्याख्यान हुवा तथा १० को द्वादशभावनापर प. पासू गोपाल शास्त्री, दादा गौडा पाटील माष्टर आलंद पाठशाला व रावजी सखराम सोलापुरका हुवा। सभापतिका आसन सेठ सखाराम नेमिचंदने लिया था। लीलाचंद हेमचद सेठ हिरोलीकरने प्रतिष्ठा कराई थी। संख्या १००० और सर्व प्रकारकी व्यवस्था योग्य थी।

अहिंसा प्रचारिणी पत्रिका—लाला सूरजमलजी जैन (होशगाबाद) हरदामा निवासीने सिक पत्रिका निकालने का विचार किया है की० १।।) वार्षिक, ५०० ग्राहक होने पर प्रकाशित होगी। इसके जैनी अजैनी सब ग्राहक हो सकते हैं। ग्राहक गणों को उपर्युक्त पते से पत्र भेजना चाहिये।



हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको मथनकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है। इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठडक पहुचती है। वदनमे मालिश करनेसे श्यामता दूर होकर लहू और ताकत बढ़ती है। फी सीसी ॥≡) डा ख. ।)

निमकमुलेमानी।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, वदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, ववासीर प्रमेहनाशक है। स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है। फी शीशी ॥) डा. ख अलग

दंतकुसुमाकर।

इसके लगानेसे दातोका हिलना मसूडोंका फूलन, खूनदर्द आदि आराम हो दात मोतीकी तरह चमकते हैं। रोज लगानेसे दात आजन्म दृढ बने रहेंगे। फी डिब्बी ।)

दवा दादकी।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर भगाती है। फी डिब्बी ।)

गंधकवटी।

यदि बालकोंको हमेशा स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसे मंगाइये इससे बच्चोंका ज्वर खासी दस्त वायुरोग दूर होकर खूब मोटा ताजा हो जाता है इसकी गोली रोज खिलाना चाहिये. कीमत. ॥) सी. डां. ≡

पंचतिक्तवटिका।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है। इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते हैं। किं०॥)डा.≡)

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई

प्रमेहनाशक अपूर्वताकतकी दवा।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनको सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना प्रमगकी इच्छा न होना, नपुसकता, नाताकती, कमरमें दर्द, थोडा चलनेमे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुशकी वा जर्दी, बदनमें फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्बलता, रगोकी कमजोरी उठती जवानीमे कुचालसे पैदा हुई नामर्दी, आदि सब रोग जडसे नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है। जिसमे उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमे ताकत, आखोंमें रोशनी, बदनमें फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है। मूल्य १ डिब्बाका २॥।), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १२) खर्च माफ.

श्वासारिष्ट।

इससे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है। कीमत १) डा० ॥)

नपुंसकत्वारि तैल।

इसके लगानेसे गुप्तभागसंबंधी सर्व प्रकारके रोग दूर होते हैं। फी सीसी १) डाकखर्च ≡)

प्रदरांतक चूर्ण।

इससे स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस संबंधी सर्व विकार दूर होते है। कीमत १) डा० ≡)

नयनामृत सुरमा।

इसके लगानेसे आखोंका जाला धुन्ध, फुली, पानी, बहना, सुर्खी, परवर आदि नेत्ररोग दूर होते हैं और ज्योति बढाता, ठडक रखता और पढ़ते २ आंखों नहीं थकती हैं। फी शीशी १) लगानेकी सलाई।

अर्क कपूर।

यह हैजा व अतीसारकी अक्सीर दवा है और वदहजमी पेचिस मरोड़को भी लाभ करती है। फी सी० ।) दोस कम न भेजेंगे।

शिरदर्द नाशन तैल।

यथा नाम तथा गुण: की०।) सी. डां० ≡)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य,
आयुर्वेदीय औषधालय—इटावा (U. P.)

उत्तम और सस्ते जैनपुस्तक॥

जैनग्रन्थसंग्रह

छप गया! छप गया!! छप गया!!! जिस पुस्तकके लिये ग्राहकगण चिट्ठियोंकी भरमार कर रहे थे वही फिर दूसरी बार छप गई साथही मूल्य भी कम कर दिया है इसमे छोटी बडी सस्कृत और भाषाकी ५० पुस्तकोंका सग्रह है परदेशम केवल यही एक पुस्तक पास रखना काफी है सुन्दर टाइपमे पुष्ट कागजपर छपी और जिल्द बधी है जल्दी न मगानेसे पछताना होगा कि ०॥) डा० माफ।

व्याख्यानरत्नमाला।

विद्या धर्म सत्सगत, कुरीतिके विषयमें ४ भाग	≡)
नवीन होली सग्रह, एकवार अवश्य पढिये	)॥
सगीत मनोरमा (नौटकीकी राहमे)	≡)
सगीत नेमचन्द्रिका (नौटकीकी राहमें)	≡)
जैनभजनसग्रह (चाले भी लिखी है)	≡)
स्तोत्रशतक (अनेक रागोमें १०० स्तुतियां हैं)	≡)
प्रश्नोत्तरमाला (चर्चाकी पुस्तक है)	–)
तत्वार्थसूत्रजी मूल	–)
पञ्चमङ्गल पाठ	)॥
बारहमासा राजुलजी	)॥
बारहमासा सीताजी	)।
बारहमासा मुनिजी	)।
बारहमासा वज्रदत	)॥
वैराग्य भावना	)।
अध्यात्म पचासा	)।
दश आरती	)।
निर्वाणकाण्ड भाषा	)।
धर्मपच्चीसी	)।
हुक्का निषेध	)।
दु खहरण विनती	)।
सकटहरण विनती	)।
बारह भावना सग्रह	)।
समाधिमरण (एक विनती सहित)	)।
परमार्थ जकडी, वा० राजुल सोरठमें	)।
पुकार पचीसी	)।
जैनबालगुटका (बालकोंको पढाइये)	)।
इष्ट छत्तीसी निर्वाणकाण्ड गाथा	)॥
बाईसपरीषह, बारह भावना सहित	)॥
प्रश्नोत्तर नेमराजुल	)॥
आलोचनापाठ अर्थसहित	)॥
ब्याहला नेमिनाथ	)।
सामायक भाषा	)।
सप्तऋषि पूजा	)।
निशभोजन भुंजन कथा	)।
भक्तामर सस्कृत व भाषा	–)
विदेशी खांड निषेध)॥ } दोनों १०० इकट्ठी लेने	
वृद्धापेका विवाह)॥ } से २ रु० सैकडा	

नियमावलि।

१ चार आनेसे कमकी पुस्तकें नहीं भेजते हैं।
२ एक किस्मकी ५ पु इकट्ठे लेनेसे १ मुफ्त।
३ डांक खर्च पाससे देते हैं ग्राहकोंको सिर्फ मनीआर्डर फीस देना होगी।

मिलनेका पता—
बाबू वीरसिंह जैनी, इटावा (U. P.)

'कर्नाटक' प्रेस, मुंबई.

Registered No. B 288.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

जैनमित्र

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है ।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मैनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जवाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
दुसरा भोईवाडा पो० कालबादेवी बम्बई ।

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

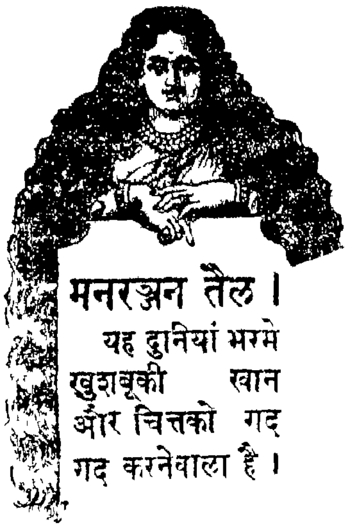
वर्ष ८ वां] वैशाख शुक्ला २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द । ता० १४ मई सन् १९०७ ईस्वी । [अंक १४ वां ।

दिगम्बरजैनपरीक्षालय बम्बई ।

सम्पूर्ण जैन पाठशालाओंके व्यवस्थापकों तथा अध्यापकोंको विदित हो कि, आगामी आषाढ मासके कृष्णपक्षमें सम्पूर्ण पाठशालाओंकी परीक्षा लेनेका प्रबन्ध किया गया है । इस लिये प्रवेशिकापरीक्षा और पंडितपरीक्षाके कौन कौनसे खंडमें कितने २ विद्यार्थी परीक्षामें बैठेंगे, इसकी सूचना हमको शीघ्र मिलनी चाहिये, जिससे प्रश्नपत्रादि तयार करनेमें सुभीता पडे । इस वर्ष कारण विशेषसे प्रत्येक विषयमें अलग २ परीक्षा लेना निश्चय किया है ।

प्रत्येक पाठशालामें शिक्षक कितने हैं, बालक कितने है, शिक्षण किस पद्धतिसे होता है, आदि सब बातोंका खुलासा भी लिखिये । जिनके पास पठनक्रम व नियमावली न हो, हमसे मगा लेवें ।

रावजी सखाराम दोसी
मंत्री परीक्षालय—शोलापुर



हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको मथनकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है । इसमे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठडक पहुचती है । बदनमे मालिश करनेसे श्यामता दूर होकर लोहू और ताकत बढती है । फी शीशी ॥≈) डा. ख. ।)

निमकसुलेमानी ।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, बदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, बवासीर प्रमेहनाशक है । स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है । फी शीशी ।) डा. ख अलग

दंतकुसुमाकर ।

इसके लगानेसे दातोंका हिलना मसूडोंका फूलना, खूनदर्द आदि आराम हो दात मोतीकी तरह चमकते है । रोज लगानेसे दात आजन्म दृढ बने रहेंगे । फी डिब्बी ।)

दवा दादकी ।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर भगाती है । फी डिब्बी ।)

गंधकवटी ।

यदि बालकोंको हमेशा स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसे मंगाइये इससे बच्चोंका ज्वर खांसी दस्त वायुरोग दूर होकर खूब मोटा ताजा हो जाता है इसकी गोली रोज खिलाना चाहिये. कीमत. ॥) सी. डां. ≥

पंचतिक्तवटिका ।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है । इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते हैं । किं०॥)डा.≥)

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई

प्रमेहनाशक अपूर्वताकतकी दवा ।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनकी सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना, प्रसगकी इच्छा न होना, नपुसकता, नाताकती, कमरमे दर्द, थोडा चलनेसे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुशकी वा जर्दी, बदनमे, फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्बलता, रगोंकी कमजोरी उठती जवानीमे कुचालसे पैदा हुई नामर्दी,, आदि सब रोग जडमे नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है । जिसमे उत्तम सन्तान शरीरमे बल, दिमागमे ताकत, आखोमे रोशनी, बदनमे फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है । मूल्य १ डिब्बाका २॥।), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १३) खर्च माफ

श्वासारिष्ट ।

इससे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है । कीमत १) डा० ।।)

नपुंसकत्वारि तैल ।

इसके लगानेसे गुप्तभागसबन्धी सर्व प्रकारके रोग दूर होते है । फी सीसी १) डाकखर्च ≥)

प्रदरान्तक चूर्ण ।

इससे स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस सबधी सर्व विकार दूर होते है । कीमत १) डा० ≥)

नयनामृत सुरमा ।

इसके लगानेसे आखोका जाला धुन्ध फुली, पानी, बहना, सुर्खी, पत्थर आदि नेत्ररोग दूर होते है और ज्योति बढाता, ठडक रखता और पढने २ आखों नहीं थकती है । फी शीशी १) लगानेकी सलाई ।

अर्क कपूर ।

यह हैजा व अतीसारकी अक्सीर दवा है और बदहजमी पेचिस मरोडको भी लाभ कारी है । फी सी० ।) दोस कम न भेजेंगे.

शिरदर्द नाशन तैल ।

यथा नाम तथा गुण· की०॥) सी. डां० ≥)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य,
आयुर्वेदीय औषधालय–इटावा (U. P.)

उत्तम और सस्ते जैनपुस्तक ॥

जैनग्रन्थसंग्रह

छप गया ! छप गया ! ! छप गया ! ! ! जिस पुस्तकके लिये ग्राहकगण चिट्ठियोंकी भरमार कर रहे थे वही फिर दूसरी बार छप गई साथही मूल्य भी कम कर दिया है इसमे छोटी बडा सस्कृत और भाषाकी ५० पुस्तकोंका सग्रह है परदेशमे केवल यही एक पुस्तक पास रखना काफी है सुन्दर टाईपम पुष्ट कागजपर छपी और जिल्द बधी है जल्दी न मगानेसे पछताना होगा कि ०॥) डा० माफ ।

व्याख्यानरत्नमाला ।

विद्या, धर्म, सत्सगति, कुरीतिके विषयमें ८ भाग	≈)
नवीन होली सग्रह एकबार अवश्य पढिये ...	)॥
मागीत मनोरमा (नोटकीकी राहमे) ...	≈)
सागीत नेमचन्द्रिका (नाटकीका राहम) ...	≈)
जैनभजनसग्रह (चार भी लिखी है)	≈)
स्तोत्रगतक (अनेक रागोंमे १०० स्तुतियां है) .	≈)
प्रश्नोत्तरमाला (चर्चाकी पुस्तक है) ..	-)
तत्वार्थसूत्रजी मूल	-)
पचमगल पाठ	)॥
बारहमासा राजुलजी . ..	)॥
बारहमासा सीताजी	)।
बारहमासा मुनिजी ...	)।
बारहमासा वज्रदत ...	)॥
वैराग्य भावना	)।
जखडी पदसग्रह .	)।
दश आरती	)।
निर्वाणकाण्ड भाषा	)।
धर्मपचीसी ..	)।
हुक्का निषेध ...	)।
दुखहरण विनती	)।
सकटहरण विनती	)।
बारह भावना सग्रह ..	)।
समाधिमरण (एक विनती सहित) ..	)।
परमार्थ जखडी, बा० राजुल सागरमे	)।
पुकार पचीसी	)।
जैनबालगुटका (बालकोंको पढाइये) ...	)।
इष्ट छत्तीसी निर्वाणकाण्ड गाथा ...	)॥
बाईसपरीषह, बारह भावना सहित	)॥
प्रश्नोत्तर नेमराजुल	)॥
आलोचनापाठ अर्थसहित ...	)॥
ब्याहला नेमिनाथ	)।
सामायक भाषा...	)।
सप्तऋषि पूजा	)।
निशभोजन भुंजन कथा	)।
भक्तामर सस्कृत व भाषा	-)
विदेशी खाड निषेध)॥ } दोनो १०० इकट्ठी लेने	
वृद्धापेका विवाह)॥ } से २ रु० सैकडा	

नियमावलि ।

१ बार आनेसे कमकी पुस्तकें नहीं भेजते हैं ।
२ एक किस्मकी ५ पु इकट्ठे लेनेसे १ मुफ्त ।
३ डांक खर्च पाससे देते हैं ग्राहकोंको सिर्फ मनीआर्डर फीस देना होगी ।

मिलनेका पता —
बाबू वीरसिंह जैनी, इटावा (U. P.)

जैनमित्र.

वैशाख शुक्ल २ श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४३३ ता० १४ मई सन् १९०७ ईस्वी ।

सम्पादकीय टिप्पणियां ।

मोरेना (ग्वालियर) में धर्म परिचालनार्थ दूकानकी बिक्रीके प्रमाणसे नित्य धर्मादा देनेकी परिपाटी है, हमारी समझमें यह बिलकुल ठीक ही है । अनुमान ४ वर्षसे श्रीमान् किशोरीलाल कुन्दनलालजीने दूकान खोलकर उसी मोरेनाकी शोभाको बढाया है, परन्तु आप धर्म और की-र्तिके कट्टर शत्रु जान पडते हैं । आपसे धर्मादाका द्रव्य मागनेपर उत्तर मिलता था कि जब मंदि-रजीमें रुपयोंकी जरूरत होगी तभी दे देवेंगे । आपको विश्वासपात्र जानकर मोरेनाके भाइ-योंने धर्मादाकी सम्पूर्ण सिलक भी आपकी दूकान पर जमा कर दी थी । अब जरूरतके समय रुपया मांगनेपर धर्मादा तो दूर किनार रहा डिपाजिट द्रव्य देनेको भी लटके दे रहे हैं पेच भी आपने अच्छा खेला है, कि दूकानका नाम भी बदल डाला है । अगर यह समाचार सच है तो हम नहीं कह सक्ते कि चीटीअसनवत संचित किये हुए मंदिरजीका द्रव्य हजमकर लेनेसे उन देव-द्रव्यभक्षी महाशयका कहा तक कल्याण होगा । वहाकी जातिके पचायतको चाहिये कि वे जातिकी रीतिसे रुपया वसूल करें ।

स्त्री सभा—चैत शुक्ल दशमीको प्रातःकाल कानपुरमें स्त्री सभा हुई । रामप्यारीबाई, पार्वतीबाई नन्हीं बाई, चमेली बाई, जस्सो बाई, और अन्य साध्वी स्त्रियोंने धार्मिक विषयों पर वक्तृतादी, और कई स्त्रियोंने लेख पढ़ कर सुनाये । स्त्रीसमाजमें धार्मिक शिक्षा की बड़ी आवश्यक्ता है जिस प्रकार गाड़ीका एक चक्र जीर्ण शीर्ण होनेसे वह ठीक री-तिसे मार्ग क्रमण नहीं कर सक्ती, उसी तरह स्त्रीके अपढ़ होनेसे वह गृह कार्योंके सम्पादन करनेमें असमर्थ होती है ।

जैनपद्धतिके अनुसार विवाह—हर्ष है कि हमारी जैन जाति मिथ्याविवाहपद्धतिसे बहुत कुछ विमुख हो चली है. नांदगांवसे समाचार मिले हैं कि तीन विवाह आर्षविधिके अनुसार हुए । खूबी यह कि विवाहकर्ताओंने धार्मिक कार्योंमें यथाशक्ति द्रव्यप्रदानकर सोनेमें सुगंध कर दी है. आशा है कि हमारे जैनी भाई समय के फेरसे डूबी हुई धार्मिक प्रथाओंका उद्धार करने में यथा-शक्ति प्रयत्नशील हुआ करेंगे ।

(१) वर—हंसराज भीकचद गोंदेगाव जिला नासिक.

कन्या—पेमराजजी बाकलीवालकी पुत्री, श्री मंदिरजीको १०१) और नादगाव जैनपाठशाला को ११) दिये

२ वर—दगडूराम महादेराम लुहाडे भाडवड जिला नासिक ।

कन्या—गोपालदास सोनी श्रीगोंदानगरवालोंकी पुत्री. १०१) श्री मदिरजीको दिये ।

३ वर—हंसराज मगनीराम कासलीवाल.

कन्या—किसुनदास भौंसा गोंदेवालोंकी पुत्री. १०१) मंदिरजीको और ९) जैन पाठशालाको दिये ।

जैनविवाह—श्रीयुत श्रेष्ठिवर्य्य माणिकचंद हीराचदजी जे. पी के कनिष्ट भ्राताके सुपुत्र तारा-चंदजीका विवाह मिती वैसाख सुद ८ को होने-वाला है । हमको सूरतसे एक प्रतिष्ठित सम्वाददाता द्वारा यह समाचार प्राप्त हुए हैं कि उक्त विवाह में सुदी ७ को वेश्याका नाच होनेवाला है । हमको ऐसा भरोसा नहीं हो सकता है कारण कि उक्त सेठजी दि० जैन महासभा मथुराके सभापति हो चुके हैं और दि० जैनप्रान्तिकसभाबम्बईके सभापति हैं आप हमारी जैन समाजके अग्रेसर समझे जाते हैं । आपके द्वारा इस विषयके कई वार प्रस्ताव पास हो चुके हैं । आप प्रत्येक धार्मिक कार्योंमें प्रीति रखते है । वेश्या नृत्यको सेठ साहिब देखना भी पसंद नहीं करते है ।

अगर वहांके आगन्तुक महाशयोंके सत्का-रार्थ और विनोदार्थ ही कार्य किया जाता है तो उसके बदले आप गायनसमाज, कोई विनोदवाले खेल अथवा कोई शिक्षाप्रद नाटक कर । सत्कार कीजियेगा । जैसा कि श्वेताम्बरी भाई वहांपर करते हैं । सेठ माणिकचंद हीराचंदजीको तथा सेठ नवलचंद हीराचंदजीको हमारा कहना अनधिकर न होगा परन्तु इस अधम प्रथाको बंद करनेका प्रयत्न अवश्य करेंगे । हम सेठजीके कनिष्ठ भ्राता-जीका ध्यान इस ओर अधिक आकर्षित कर इसके बद करनेकी प्रार्थना करते हैं ।

श्री सम्मेद सिखरजीके भावी अनर्थ रोकनेके लिये दिगम्बरी जैनी भाइयोंकी सभा ।

विदित हो कि तारीख ६ मई ०७ ई० सोमवारकी रात्रिको ८ बजे दूसरा भोईवाडा बम्बईके मन्दिरमें दिगम्बरी जैनभाइयोंकी एक बड़ी सभा एकत्रित हुई थी । सभापतिका आसन श्रीमान् सेठ माणिकचन्दपानाचन्दजीने ग्रहण किया था । प्रथम ही पंडित धन्नालालजी काशलीवालने सभा सम्मिलित होनेके मुख्य उद्देशको इस प्रकार सूचित किया कि डिपुटीक-मिश्नर हजारीबाग श्री सम्मेदशिखरजीके प-र्वतकी कुछ जगह अंग्रेजों वा अन्य मतावलम्बियोंको बगले मकानात बनानेकेलिये पट्टेकी रीतिपर देना चाहते हैं, कारण यह मालूम होता है कि पर्वतके निकट रेल आजानेसे वहां अंग्रेजादि अपने रहनेकेलिये (उत्तम आवहवा वा स्थान देखकर) बगले बनाना चाहते है । इसलिये उन-का लक्ष्य प्रथम ही इस धर्मक्षेत्रपर पड़ा है। उन्हें यह मालूम नहीं है कि ' धर्मस्थाने कृतम् पापं वज्रलेपो भविष्यति ' इत्यादि ॥ पश्चात् श्रीयुत बाबू शीतलप्रसादजी लखनऊ निवासीने इस बातका समर्थन किया कि यह १४ लाख जैनियोंका सर्व तीर्थोंमें महान पावन तीर्थ है । ज-हांसे अनन्तानन्त तीर्थंकर परमदेव तथा ऋषि मुनि मोक्ष पधारे हैं, और पधारेंगे, इस शैलकी कंकरी २ हमारी परम पूज्य है । जैनी लोग इस पर्वतको जिस पवित्र भावसे मानते, पूजते, और वन्दते हैं, वह संसारमें प्रगट है । कारण जैनी लोग स्नानादि बाह्यशुद्धि पूर्वक अष्ट द्रव्य ले पर्वतके ऊपर नगे पाव जाते हैं, और भाव-पूर्वक पूजन स्तवन कीर्तन करते हैं, शैलकी प्रदक्षिणा करते और अर्घ चढाते हैं, कहा तक कहा जावे जैनी लोग इस पर्वतकी सम्पूर्ण पवित्र भूमिमें कहीं भी किसी प्रकारका अविनय नहीं करते । जिस प्रकार मंदिरजीको पूजते है उससे भी अधिक भक्तिभावसे इस पर्वतको पूजते हैं । परन्तु शोक है कि अब वहीं अपवित्रता हो-

नहार दिखती है "अहिंसा परमो धर्मः" के पालन करनेवाले जैनियोंके ही तीर्थपर जब इस प्रकारकी उत्कट हिंसा होने लगी तो इससे बडा और क्या अन्याय होगा? कारण मास मदिरासेवी साहिब जब वहां रहेंगे, तो स्पष्ट ही है कि वे शिकार खेलेंगे, अग्नि प्रज्वलित करेंगे, मल मूत्र क्षेपण करेंगे, और महान अपवित्रता वा अविनय करेंगे। "प्रोद्दीप्ते भवनेतु कूप खननं प्रत्युद्यम.की दशा" अर्थात मकानमें अग्नि लगनेके पीछे कूप खोदनेमें क्या कार्यकी सिद्धि हो सक्ती है? नहीं! अभीसे प्रयत्न करना आवश्यक है। इस लिये प्रत्येक पञ्चायतीसे डिपुटी कमिश्नर हजारीबागके पास इस कार्यके विरोधमें तार भेजे जाना चाहिये, तथा २,४ योग्य प्रतिनिधियोंको भी २९ मईको शिखरजी पहुचना चाहिये, और प्रार्थनापत्र भी जाना चाहिये, जैन जातिके वकीलोंको इसके हेतु कोशिश करनेकी प्रार्थना करना चाहिये। कमेटीकी ओरसे शिखरजीके रक्षार्थ कार्यवाही करनेका भार बाबू धन्नूलालजी अटर्नी जोडासाका मदनमोहन चटर्जी लैन नं० ४ को दिया है. बम्बई सभाकी ओरसे डिपुटी कमिश्नरको तार दिया जावे. इत्यादि। पश्चात् मिस्टर मालगावेने इस बातको पुष्ट किया कि बम्बईसे ९ सज्जनोंको अवश्य ही इस अवसरपर सिखरजी जाना चाहिये, धर्मरक्षाके लिये प्राण तक समर्पण कर देना अभीष्ट है। हमारी प्रार्थना गवर्नमेंट अवश्य सुनेगी. कारण श्रीमती महारानी विक्टोरियाजी अपने ढिंडोरेमें यह कह गई हैं "कि गवर्नमेंट किसीके धर्मकार्यमें हस्तक्षेप नहीं करेगी।" तत्पश्चात भाई मौजीलालजीने यह प्रस्ताव पेश किया कि एक तार गवर्नमेंट आफ इंडियाको देना चाहिये जिसमे वह इजकशन निकाले कि डिपुटीकमिश्नर एका एक पहाड़परकी जगह पट्टेपर देकर बगले बनानेका हुक्म न देने पावें, जब तक कि अन्तिम फैसला नहीं हो जावे। सिवाय इसके उपदेशकभंडारमहासभाके मंत्री बाबू सूरजभानुजी वकीलको लिखा जावे कि वे उपदेशकों द्वारा इस बातका अन्दोलन करें, बम्बई प्रांतिक सभाके उपदेशक भी मुख्य २ स्थानोंपर जाकर यथोचित प्रयत्न करें। अन्तमें सर्व सभाकी ओरसे यह प्रस्ताव पास हुआ कि डिपुटीकमिश्नर हजारीबागको तार भेजा जावे (जिसकी नकल नीचे लिखी है) चंदेके विषयमें विचार करनेके लिये मुखिया नियत किये जावें. इन्जकशनके विषयमें बहुतसे महाशय सहमत थे परन्तु इन्जकशनका विचार नियत कमेटीके आधीन किया गया इस प्रकार कार्यसम्पादन होनेके पश्चात् जयध्वनिके साथ सभा विसर्जन की गई.

तारकी नकल.

Digambar Jain community of Bombay protest against granting building leases to Europeans &c on Parsnath Hill as it will cause extreme dissatisfaction to the entire Jain society The whole hill being sacred nothing should be done there to hurt the religious feelings of Jains, as carrying of flesh, wines and other forbidden things on the hill is totally against Jain views hence such proposals should entirely dropped

श्री सम्मेद सिखरजी पहाड़ पर यूरोपियन लोगोंको बगले आदि न बनाने के विषयमें डिप्युटी कमिश्नर हजारीबाग पर बहु ओरसे तार और विनयपत्रोंकी वरसा हो रही है। अभीतक, कलकत्ता, बम्बई, शोलापुर, सूरत, अहमदाबाद, राजकोट खंभात, भावनगर, लीम्बडी, पालीताना, पाटण, इन्दौर, बडनगर, वढवाण, मद्रास, आदि स्थानोंसे तार दिये गये हैं। इस कार्य में दिगम्बर श्वेताम्बर दोनो भाइयों की ओरसे प्रयत्न हो रहा है। आशा है कि अन्य स्थान के भाई भी इस कार्य में प्रयत्न करेंगे.

तमाखू।

राजेन्द्र कुमारको तमाखू पीते खाते देखकर पंडितजी कहते हैं।

तमाखु पत्र राजेन्द्र भज माज्ञानदायकम्।
तमाखु पत्र राजेन्द्र भज माज्ञानदायकम् ॥१॥

हे राजपुत्र राजेन्द्र! आप श्री गणपति की सेवा करे जो (गणेश) लक्ष्मी और ज्ञान के दायक हैं। हे राजेन्द्र आप तमाखू न सेवन करें यह (तमाखू) अज्ञान की वृद्धि करने वाली है।

राजेन्द्र बोले कि महाराज! इस पृथ्वीतलमें सार वस्तु तमाखू ही है. यथा —

बिडौजाः पुरा पृष्टवान् पद्मयोनिं
धरित्रीतले सारभूतं किमस्ति ॥
चतुर्भिर्मुखैरित्यवोचद्विरिञ्चि-
स्तमाखुस्तमाखुस्तमाखुस्तमाखुः २

अर्थ—प्राचीन कालमें इन्द्रने ब्रह्माजीसे पूछा कि, हे महाराज, इस पृथ्वीतलमें सार वस्तु क्या है? तो ब्रह्माजीने अपने चारों मुखोंसे यह कहा कि, तमाखुस्तमाखुस्तमाखुस्तमाखुः,

तब पंडितजीने कहा कि भाई, तुम तो धनाढ्य श्रीमान् राजराजेन्द्र हो, तमाखू की चाट लगे पीछे दरिद्री भी इसको नहीं छोड सकते हैं। यथाः—

दारिद्र्यशीलोऽपि नरस्तमाखुं नैव मुञ्चति।
निवारितोऽपि मार्जार स्तमाखुं नैव मुञ्चति ३॥

दरिद्री मनुष्योंको हम बहुत उपदेश देते हैं कि, हे भाइयो! तुम तमाखू पीना छोड़ दो परन्तु (उस बिलावकी तरह जो उस मूसेको नहीं छोडता है) वे तमाखू पीना या खाना नहीं त्यागते हैं।

तब राजेन्द्र कुमार कहते है कि —

श्रीकृष्णः पूतनायाः स्तनमलमपिबत् कालकूटेन पूर्ण। प्रस्कन्नं भूप्रदेशे किमपि च पिबतो यस्तदास्य वक्रात् ॥ तस्मादेषा तमाखुः सुरवरपरमोच्छिष्टमेतद्दुरापम्। स्तुत्वा नत्वा मिलित्वा ह्यनिशमतिमुदा सेव्यते वैष्णवाग्र्यैः ॥४॥

अर्थ—जिस समय श्रीकृष्णचन्द आनन्दकन्दने राक्षसी पूतना का जहर लगाया हुआ मल सहित स्तन चूसा था, उसवक्त पृथ्वीपर उनकी उच्छिष्टके दूधके छींटे पड़ गये थे, उससे यह तमाखू बनी है। इस वास्ते विष्णुभक्तोंको श्रीमन्नारायणकी महादुर्लभ उच्छिष्टि (जूठन) स्तुति नमस्कार पूर्वक सबजने मिल कर रात्रिदिन हर्षयुक्त सेवने योग्य है।

पं० भाई राजेन्द्र! तो क्या तमाखू श्रीकृष्णजीकी जूठन है? चिलम पीनेवालोंके हस्तस्पर्शसे चिलम भी जूठी हो जाती है और ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ये सब ही उस ही चिलमसे पीते हैं। बल्कि कितनी ही जगह शूद्रभी उसी चिलमसे पीते हैं इसवास्ते चिलम पीनेवाले सबकी झूठन खाते अथवा पीते हैं। परन्तु मैंने तो कलिकाल रूप राजके चौबदार तमाखूसे ऐसी बातें प्रत्यक्ष की हैं।

भ्रातः कस्त्वं तमाखुर्गमनमिह कुतो वारिधेः पूर्वपारात् कस्य त्वं दण्डधारी न हि तव विदितं श्रीकलेरेव राज्ञः। चातुर्वर्ण्यं विधात्रा विविध विरचितं ब्रह्मणा धर्महेतोरेकीकर्तुं बलात्तन्निखिलजगति रे शासनाद्यागतोऽस्मि ॥५॥

अर्थ—हे भाई तूं कौन है? मै तमाखू हूं, किधरसे आगमन हुआ और कहां जाते हो? समुद्रके उस पारसे इस पारतक आता हूं। तुम किसके चौबदार हो? क्या तुमको अब तक विदित नहीं! श्री कलिकाल महाराजाका। तुम किस वास्ते इस भरत क्षेत्रमें आये हो? श्री कलिकाल दुष्ट राजकी आज्ञा प्रवर्तानें आया हूं। श्री कलिराजकी क्या आज्ञा लाये हो? श्री कलिमहाराजकी आज्ञा है कि युगके आदिमें

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार वर्ण अपना अपना धर्मकर्म पालन करनेको स्थापन किये गये थे, अब कलिमहाराजने मुझे आज्ञा दी है कि "हे तमाखू तू भरत क्षेत्रके आर्यखण्डमें जाकर चुरट, चिलम, चर्वण, चूरण, सतकी गोली आदिरूप धारण कर चारों वर्णोंको एककार कर दे." बस इस ही आज्ञाकी पैरवी करानेको मैं कलिकालके चोबदार रूपमें आई हूं। जो मुझको सेवन करेंगे उन मनुष्योंको धर्म कर्म पुरुषार्थ धन और सर्वस्वसे भ्रष्ट कर कलिकालके कीट बना दूंगी।

तब राजेन्द्र कुमार बोले:—

सुपर्णपरिसेवितस्तदनुसाधुपूगान्वितो
द्विजावनमहापटुस्तदनुसारसधानभाक्
सदैव सुधयाशनं भवति यस्य विष्णो समस्तमाखुरिति सेव्यतां भवति वै यतो रागिता॥६॥

श्रेष्ठ नागर वेलके पत्रमें चूना कत्था और श्रेष्ठ सुपारीके साथ तमाखू मिलाके खानेसे दांत पुष्ट होते हैं और मुख लाल हो जाता है इस वास्ते नित्य सेवन करना चाहिये.

अर्थ तमाखू पक्षमें

तब पंडितजी कहते हैं कि भाई तुमने अपना व्यसन पोषण करने हेतु ऐसा शब्दार्थ लगा लिया है इस श्लोकका अर्थ तो इस तरह है —

सुपर्णेन गरुडेन सेवितः।
साधूनां पूगैः संघैरन्वितः।

द्विजा द्विजन्मानो ब्राह्मणादयस्तेषामवन रक्षणं तस्मिन्महासमर्थः। सारं श्रेष्ठवस्तुमोक्षादि तस्य सधानं संधि भजति। सुधयामृतेन यस्य भोजनं भवति। यतो विष्णोरगागिता विषयेष्वप्रीतिजायते।

अर्थात् गरुड महाराजकर सेवित, सत्पुरुषोंकी ससदि सहित सोभित, ब्राह्मणोंकी रक्षा करनेमें महासमर्थ, मोक्षादिसार सुखके दाता, और श्रेष्ठ आत्मरसका भोजन करनेवाले श्रीविष्णु, हरि, या शिव जिनकी सेवा करनेसे वैराग्य उत्पन्न होता है ऐसे प्रभुका सदा सेवन करना योग्य है-ऐसा अर्थ है। तमाखू सेवनका अर्थ मानना अपना विषय और व्यसन पोषण करना है. देखो वैद्यकमें भी तमाखूके वास्ते ऐसा कहा है—

न स्वादु नौषधमिदं न च वा सुगन्धि
नाक्षिप्रियं किमपि शुष्कतमाखुचूर्णम्।
किंचाक्षिरोगजनकं च तदस्य भोगे
बीजं नृणां न हि न हि व्यसनं विनान्यत् ७

हे भाई! इस तमाखूमें न तो कुछ स्वाद है. न यह किसी रोगकी औषधि है, न इसमें कुछ सुगन्धि है, न यह देखनेमें प्रिय है। किंतु सेवन करनेवालोंके नेत्रोंकी ज्योतिमन्द हो जाती है और अनेक प्रकारके नेत्र विकार उत्पन्न हो जाते हैं। आह! यह तमाखू तो एक कुव्यसनका बीजही है. और इसके सिवाय विलायती सिगरेट जिनमें स्पिरिट (शराब) लगी रहती है पीनेवालोंके खासी दम और कफके रोग कर देती है। हमारे हिन्दू भाई कैसे भोले हैं कि अभीसे कलिके कीट बने जाते हैं। अरे! विवेकी लोग तो सिगरेटका त्याग करते जाते हैं और इसका प्रचार कम करनेकेलिये सरकारी कानून जारी कराते हैं और हम लोग जो पूर्ण विवेकियोंकी सन्तान हैं, जाति और धर्मका गुमान रखते हैं उन लोगोंकी देखादेखी भी खोटी वस्तुका त्याग नहीं करते हैं। सत्य है "जो ऊंचे हैं सो नीचे होंगे" अथवा 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।" ऐसा जान, हितमान, विषयसुखमान, कालकूट समान इस तमाखू को उच्चश्रेणीके शिक्षित अशिक्षित सब मनुष्योंको त्याग करनाही श्रेय है.

अलम्

सुन्दरलाल वैनाडा.
आगर (मालवा)

UNION (यूनियन) संहति॥

विष्णुर्वा त्रिपुरांतको भवतु वा ब्रह्मासुरेन्द्रोऽथवा।
भानुर्वाशशलक्षणोऽथ भगवान्बुद्धोऽथ सिद्धोऽथवा॥
रागद्वेषविषार्तिमोहरहितः सत्वानुकम्पोद्यतो
यः सर्वैः सह संस्कृतो गुणगणैस्तस्मै नमः सर्वदा॥१॥

अर्थ—जो सम्पूर्ण गुणयुक्त और रागद्वेषादि अवगुणों कर रहित सर्व जीव मात्रके हितमें सदा काल उद्यमवन्त ऐसा कोई (विष्णु, शिव, ब्रह्मा, भानु, चन्द्र, भगवन्, सिद्ध) भी हो उसहीको नमस्कार है। दुनियामें प्रत्येक वस्तु क्या छोटी क्या बडी सबमें मेल या मिलावट या संहति किसी न किसी अंशमें पाईही जाती है। कितनी ही वस्तु ऐसी हैं जो और वस्तुओंके साथ मिलानेसे अपने निजरूपको परिवर्तन कर देती हैं, अपने गुणको त्याग देती हैं, और अनेक प्रकार नये रग प्रगट करती हैं। चीजोंके मिलापमें जो गुण और दोष प्रगट होते हैं उनका असर चैतन्य और जड दोनों पदार्थोंपर होता है। पदार्थोंके मिलनेसे वह मिश्र पदार्थ भी नूतन बन जाता है। दुनियामें जैसा मेल जड और चैतन्यमें है, वैसा ही जड और जड़में तथा चैतन्य चैतन्यमें भी है। परन्तु जड और चैतन्यके मेलको तोडनेवाली, जड और जड़के मेलको फोड़नेवाली, चैतन्य और चैतन्यको छुडानेवाली एक कोई ऐसी वस्तु दुनियामें है जिसका न भाग हो सकता है, न मेल हो सकता है। क्या आप उसको जानते हैं? उसका नाम काल! समय! वक्त! जमाना! या Time है। क्या समयको आप जोड़ सकते हो? क्या वह समय जिस वक्त वङ्गभङ्ग हुआ था आजके इस समयसे मिल सकता है? क्या वङ्गभङ्ग होनेसे वङ्गमें किसी तरहकी हानि है। यदि उस वङ्गमें हानि है तो क्या वङ्ग जानता है? जानना तो चैतन्य है। मेरे हाथमें एक सोनेका कङ्कण था रात्रिको चोर आया, यह हाथसे निकाल तो न सका परन्तु उसको काटकर आधा कङ्कण ले गया। हानि तो कङ्कणकी हुई परन्तु जडके साथ इस चैतन्यके राग भावका कुछ सम्बन्ध होनेके कारण कङ्कणका भङ्ग होना और चोरके हाथ पडकर फिर न मिलनेसे चैतन्यमें विकार भाव होकर उसकी जो हानि हो रही है उसे न तो कङ्कण जानता है न चोर जानता है न वङ्ग जानता है। हां! वङ्गभङ्ग होनेसे जो हानि, या विकारभाव उत्पन्न हुआ है वह वङ्गके स्वामी याने कङ्कणके स्वामीके हुआ है, परन्तु कङ्कणको काटनेवाला वङ्गका भङ्ग करनेवाला उस हानिको नहीं पहचानता है।

अब यदि मेरा कङ्कण किसी तरहसे मुझे मिल-जाय या वङ्गका सङ्ग हो जाय तो मेरे मनकी खुशी और आल्हादकी सीमा किसीसे नापी जाती है क्या? यदि कङ्कणके आधे टुकडे की जो चोरके हाथमें गया है खोज करनेके पहले मेरे पासके टुकडेकी रक्षाकर उसकाही कङ्कण बनाकर पहन लूं तो मेरे हाथकी शोभा तो न जायगी? कङ्कण वजनमें हलका तो रहेगा परन्तु रहेगा असली सोनेका। यदि सोनेमें और धातु मिलवाकर (जो सोनेसे बहुत कम कीमत की है) वजनमें पहलेके कङ्कण बराबर बनवा लूं तो क्या कुछ बुराई है? अरे भाई! सर्व सुवर्णही भ्रष्ट हो जायगा। कङ्कणकी चमक दमक हाथकी शोभा दोनोंही जाती रहेगी तो सुवर्णमें सुवर्णही मिलाओ और कङ्कण बनाओ। देखो कौओंमें कौवे ही अच्छे लगते हैं बगलोंकी पङ्क्तिमें बगलाही. घोडोंमें घोडे, गधोंमें गधे. चावलोंमें यदि दाल मिला दोगे तो अवश्य खिचडी हो जायगी इस वास्ते मेल भी वही श्रेय है जिसमें सुवर्णका सुवर्ण बना रहे और उसके भाव और स्वभावमें न्यूनता न हो। हां कहीं आटामें नमक या चटनीमें

मिरच मसाला, या दूधमें मीठा डालकर स्वादिष्ट बनाते हो तो वहांतक ही मजा है जहांतक स्वाद है । अधिक मिलानेसे सर्व भ्रष्ट हो जायगा. रोटी खारी हो जायगी. चटनीका स्वाद बिगड जायगा, दूधका गुण चला जायगा. ऐसेही सुवर्णमें सुहागा, गेरू, खटाई आदि साध्य पदार्थोंकी आवश्यकताएं जिससे सुवर्णकी कांति बढजाय उनको भी भूल मत जाओ । और उनको प्रयोगसे अलग भी मत रख छोडो और न उनको जुदाही कर दो, यदि ऐसा करोगे तो मनवांछित कल्याणकी प्राप्ति न होकर, सुवर्ण भी कुवर्ण हो जायगा. यथाः—

संगतिः श्रेयसी राजन्विगुणेष्वपि बन्धुषु
तुषैरपि परिभ्रष्टा न प्ररोहन्ति तण्डुलाः २

अर्थात् हे महाराज अपने भाई जो निर्गुण भी हों तो उनकी बेइज्जती न करके उनके साथ मिलनाही कल्यानकारी है जैसे चावल जबतक अपने सदासे साथ रहने वाले छिलकेके साथ है तबतक ही उसमें फिरसे पैदा होनेकी सामर्थ्य और यदि छिलका तुच्छ समझकर जुदाकर दिया जायगा तो फिर वह चावल न ऊगेगा. अथवा नीतिमें भी कहा है कि:—

अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका ।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः ॥ ३ ॥

अर्थात् छोटे छोटे तृणोंसे रस्सा बनाया गया है जिससे बडे २ उन्मत्त हाथी बान्ध लेते हैं इसका कारण यही है कि उन तृणोंमे मेल है. इस वास्ते छोटी छोटी चीजेंभी मेलके कारणसे अधिक सामर्थ्यवान हो जाती हैं परन्तु हैं एक ही सुवर्ण (जाति) की. बनियेकी दुकान ही क्यों न देखिये जुवार की राशिमें जुवार, गेहूंमें गेहूं, चनेंमें चना, घनेंमें घना । भावार्थ—सर्व जिन्सके साथ हम जिन्स मिलनेसे ही शोभा पाती है. परन्तु पंसारीकी दुकान पर चलिये और पंचमेवा खरीद लीजिये या गरम मसाला खरीद लीजिये या ठंडाईका मसाला ले लीजिये तब आपको मालूम पडेगा कि अलग अलग किस्म की चीजें मिलकर क्या मजा देती हैं । अथवा किसी बीमार के वास्ते वैद्यराजसे नुसखा लिखा लीजिये फिर कैसी कैसी जडी बूटियां मिलाई जाती हैं. परन्तु सुवैद्यराज दवाईकी पहचान, गुण अवगुण, रोगीकी हालत, उमर, योग्यता, आदि देखकर लिखता है और उतनेही प्रमाणकी दवाइयां मिलनेसे गुणकारी होंगी । इससे स्पष्ट सिद्ध है कि बिना विज्ञान के मेलभी अवगुण करता है. इसवास्ते मेल करना, और मेल नहीं भी करना दोनों बातें सिद्ध होती हैं. अर्थात् एक पहियसे रथ नहीं चलेगा. जैसे कहा है:—A chariot will not go on one wheel. अब यह जान गये कि अच्छी तरह हानि लाभ पहचान कर मेल करना ही कल्याणकारी है. विना मेलके कार्य सिद्ध नहीं हो सकता. बल्कि उलटी हानि है क्यों कि ऊपर सिद्ध हो चुका है कि:—

Union is strength. एकता एक शक्ति है परन्तु एकता का मूलकारण वात्सल्य भाव, प्रीति भाव, नम्रता, या सहनशीलता है। जिसके विना मेल हो ही नहीं सकता । एक रूप हुए विना मेल ही कैसा. रस्सा बनाते समय सब तृणोंको कूटकर भिजोकर नम्रकर लेते हैं तब रस्सा बट जाता है. इसी तरह वैद्यराजजीके नुसखेकी दवाइयें भी कूट पीटकर एक रूप चूर्ण कर ली जाती हैं तब उपयोगी होती हैं। ऐसे ही जब तक वात्सल्य, प्रीति, नम्रता, सहनशीलता, क्षमा, इत्यादि, एकताके पुष्टकारी गुण जबतक कौम, समाज, धर्म, या फिरकोंमें नहीं हैं तब तक उनमें मेल कैसा ? जिनमें जातिस्वभाव बैर पाया जाता है जैसे स्वान, मार्जार, सर्प, नकुल, इत्यादि तो इनमें मेल नहीं हो सकता जब तक समान गुण न मिल जायगे.

यथा:——प्रकृति मिले मन मिलत है अन मिलतें न मिलाय । दूध दही तें जमत है कांजी तें फट जाय ॥ १ ॥

अब गौर करनेका समय है कि जब जड पदार्थोंमें ही ऐसे अवगुणी पदार्थके साथ बहुगुणी पदार्थको मिलानेसे विकार हो जाता है और पदार्थ ही जड़ मूलसे नाश हो जाता है तो मनुष्योंमें जिनकी प्रकृति, उत्तम क्षमादि गुण, करुणाभाव, वात्सल्य भाव, सहनसीलता आदि गुण जब बराबर न मिलेंगे तब तक एकता क्यों कर संभव है.

हा यदि किसी एक भी गुणकी बराबरी होगी तो उस गुणके ही मिलान होनेसे और सत्यतासे गुणोंमें भी किसी कदर एकता हो जाय. अगर मौका मिले तो ऐसा संभव है उसमें निमित्त कारण भूत होनेसे ऐसी एकता हो सकती है. परन्तु उसमें भी प्रीति आदि गुण किसी तरह भङ्ग नहीं हो तब.

यथा:——" Love, like a creeper withers and dies, if it has nothing to embrace or those well united trees, which stand together in a clump resist the fiercest winds, because each supports the others."

भावार्थ—यह है कि बेल और वृक्षोंको ही क्यों न देखिये उनमें ऐसी प्रीति होती है कि यदि बेलको वृक्षका सहारा न मिलेगा तो बढ़ रीका फूलना और सरसब्ज रहना कहां ? ऐसे ही वृक्ष जो आपसमें मिलकर जबड़ पकड़ लेते हैं वेही आंधियोंके झोंकोंका सामना कर सकते हैं क्योंकि एकको सहायता एकको है. अब यह विदित हुआ कि एकताको दृढ़ करनेके हेतु प्रीति और एक दूसरेको सहायता देना है. न कि द्वेष और एक दूसरेको मार खाना. देखिये द्वेष करनेवाले और फाड़ खानेवालोंमें एकता नहीं हो सकती और उनकी उन्नति भी नहीं हो सकती । यथाः—बादशाहने पूछा कि "क्यों बीरबल कुत्तीके बच्चे तो आठ आठ इकदमसे होते हैं और लोग इनको पालते भी हैं परन्तु इनके झुंडके झुंड देखनेमें नहीं आते और भेडें जिनको रास्ते चलते ही दुष्ट लोग मार डालते हैं और एक दो ही बच्चा जनती हैं इनके गल्लेके गल्ले गडरियोंके यहां पाये जाते हैं इसका क्या कारण है ?" बीरबरने १९ दिन बाद जवाब देनेको कहा. इस अवसरमें बादशाहकी हवा खोरीके रास्तेपर दो बाड़े बनवाकर एक बाड़ेमें भेड़ें, और एकमें कुत्ते इकट्ठे करवाये और कुत्तोंके वास्ते रोटी और भेडोंके वास्ते दानेका प्रबन्ध करनेका नोकरोंको हुक्म दे रक्खा था कि जब बादशाह व बीरबल उधर होकर गुजरें तो वक्तपर मौजूद रक्खें । पंद्रहवें दिन बीरबल बादशाह अकबरके संग हवा खाने गये तो अर्ज की कि "जहांपना एक तमाशा देखने योग्य है" और नोकरोंको हुक्म दिया कि "भेड़ोंका बाडा खोलकर सब भेड़ोंको मैदानमें लाकर दाना डालो" नोकरोंने हुक्मकी तामील की और सब भेडें ऊपर तले पड़कर चुप चाप अपना दाना चर चुकीं और बाडेमें बन्दकर दी गई । तत्पश्चात हुक्म दिया कि "रोटियोंके टुकडे कर जमीनपर डाल दो और कुत्तोंको बाडेमेंसे जंजीर खोलकर छोडदो." कुत्तोंके छोडनेकी देर थी कि एक दूसरे को फाड़ खाना और बुरी तरहसे भौंकना शुरू कर कोलाहल मचा दिया और धूल उड़ाने लगे और रोटियां किरकरी कर दीं यहां तक कि दसबीस कुत्ते घायल भी हो गये और बोचार सिसकने लग गये. रोटियां खाना धूल में मिला दिया. ऐसा हाल देख बादशाहने समझ लिया कि जिनमें द्वेष और [illegible] फाड़ खाना है वो उनका [illegible] किस तरह रह सकता है. भावार्थ

पवित्र औषधालय की सच्ची स्वदेशी आजमूदा औषधियाँ

॥ असली चीज अपूर्व आनंद दायक धातु बल वर्द्धक ॥

शालिम मिश्री का मुरब्बा

ये मुरब्बा स्वदेशी चीनी की मिश्री और औषधियों से स्वादिष्ट बनाया जाता है इस के सेवन करने से बीसो प्रकार का प्रमेह धातु क्षय पेशाब या दस्त के आगे या पीछे धातु का गिरना स्वप्न दोष दिमाग की कमजोरी सिर का घूमना दिल का धड़कना आंखों के आगे अन्धकार सा मालूम होना उत्साह शून्य आलस्य फुर्ती का न होना आदि धातु सम्बंधी वा कमजोरी से उत्पन्न हुई समस्त बीमारियां ४० दिन में निश्चय नाश होकर दिल दिमाग में ताक़त शरीर में फुर्ती आंखों में रोशनी उन्मत्त हस्ती कासा पराक्रम प्रघट करता है इस मुरब्बा के खाने वाले का वदन और चेहरा सुर्ख क्रांति को प्राप्त होता है विषेक उत्तमताये है कि जिस समय इस को खाओ उसी समय से दिल को तरावट और प्यास की अधिकता को दूर कर अनेक गुण प्रघट होने लगते हैं अधिक प्रशंसा से क्या लाभ इस के खाने वाले को जो जो अकथनीय आनंद प्राप्त होगा वोस्वयं अनुभव कर लेगा यदि निरोगी पुरुष भी इस को सेवन कर लेंगे तो उन का धातु बल कभी कम न होगा हमारे कहने से इस को अवश्य २ मगाकर परीक्षा कीजिये यदि दो चार दिन खाने से गुण न करे तो वापिस कर लिया जायगा' कीमत ४० दिन खाने को आधा सेर मुरब्बा का १ डिब्बा २) डाक खर्च ।≈) आधा डिब्बा डाक सहित १।)

मनमोहना महा सुगंधित
॥ केश भूषण तैल ॥

इस के लगाने से केश नागिन्द रेशम के हो जाते हैं दिमाग में तरावट तथा ताकत बदन में लगाने से स्याहता दूर कर क्रांति निकाल देता है इस के आगे चमेली आदि का कना का निरर्थक है क्योंकि इस की सुगन्धू से इतर की जरूरत नहीं दूसरे लाभ दायक भी है कीमत फी शीशी ।–) दरजन का ३)

॥ कर्पूरादि तैल ॥

इस की शीतल सुगंध इतनी उत्तम है कि इस के लगाने से कैसी ही गर्मी के मारे दिल घबराता हो या सिर में दर्द होता हो या दिमाग की खुश्की गर्मी के मारे सिर चक्कर खाता हो या सिर में से गर्म भवक निकलती हो तो वहां इस तैल को लगाया तुरंत ही सिर की सारी तकलीफ दूर हो कर दिमाग में तरावट आंखों में रोशनी लगाते ही ठंडक पहुंचाता है और मन को प्रसन्न रखता है कीमत फी शीशी ॥) १२ शी० का ५)

च्यवनप्रकाश अवलेह ॥

इस के खाने से गर्मी की समस्त बीमारियां फौरन दूर कर जाती हैं जैसे पित्त ज्वर दाह जलन सूखी खांसी बुखार में खून का आना तपेदिक प्यास का बार २ लगना वीर्य दोष आदि अनेक रोग नाश होकर बल वीर्य बढ़ता है मन को प्रसन्न रखता है कीमत १ डिब्बा १)

नपुंसक त्वारि घृत ॥

इस को गुप्त भाग पर लगाने से किसी कारण से प्राप्त हुई शिथलतावा नसों की कमजोरी आदि सर्व प्रकार की नपुंसकता नाश करके पुरुषत्व शक्ति प्राप्त होती है कीमत १)

स्त्री संजीवन अवलेह ॥

इस के खाने से लाल प्रदर श्वेत प्रदर आदि कैसा ही कोई दोष क्यों न हो जाते २ बंद करता है कमजोरी तथा पैर का दर्द वा जलन सिर का घूमना भूख का कम लगाना सुस्ती रहना घर के कार्यों में मन न लगना और शरीर में ज्वर व्यापक रहना मासिक धर्म की अशुद्धता आदि स्त्रियों के अनेक रोगों को ये स्त्री संजीवन अवलेह नाश कर बलबढ़ाता रूप या उत्साह पैदा करता भूख बढ़ाता है कीमत १ डिब्बा १॥)

पता–श्री रूपचन्द्र जैन वैद्य मुहल्ला लालपुरा–इटावा सिटी

दवा मंगाने वाले ... हिन्दी भाषा में लिखकर पत्र भेजें दवा डाक से घर बैठे पहुंचा देंगे

॥ जरूरी सूचना ॥

विदित रहे कि हमारे यहां सर्व प्रकार के रोगों की पवित्र स्वदेशी शीघ्र गुणकारी दवा तैयार रहती है रोग का नाम का लक्षण लिखकर मंगाइये और तीन चार दिन परीक्षा कीजिये यदि दवा गुण न करे तो दवा के बदले मूल्य फेर देंगे इस वास्ते हम अपनी दवाइयों की अधिक प्रशंसा नहीं लिखते हाथ कंगन को आरसी क्या और जो साहब हमारी दवा मंगाकर बेचना चाहें या घनाई बांटना चाहें उनको दस रुपया से ऊपर मंगाने से २५) रु० सैकड़ा कमीशन काटकर भेजेंगे अधिक हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखो आठ आने से कमकी दवा का वी० पी० पार्सल नहीं भेजा जायगा सब दवा का डाक खर्च जिम्मे ग्राहकों के रहताहै दवा का विधि विवरण पत्र दवा के साथ भेजा जाता है

स्वदेशी पवित्र साबुन ॥

ये साबुन हम ने अपने हाथ से बहुत पवित्र तैयार कराया है इस के लगाने से शरीर की कांति निकल आती है विशेष उत्तमता ये है कि इससे दाद खाज नहीं रहती और थोड़ा खर्च होता है सुगन्धित भी खूब बनायाहै की० १ डिब्बा ।) दरजनका २॥)

॥ वज्रक्षार लवण ॥

इस का गुण और स्वाद सुलेमानी नमक से सहस्रगुणा अधिक है इस में से १ माशा खाने से कैसा ही क्यों न पेट का दर्द क्यों न हो खाने की देर पर जाने की देर न होगी विशेष उत्तमता ये है कि इस को भोजन के पीछे ४ रत्ती खाना शुरू करने से मन प्रसन्न होता है भोजन हजम हो कर भूख प्रबल हो जाती है इस के खाने से उदर के सम्पूर्ण रोग नाश को प्राप्त होते हैं कीमत की शीशी ॥)

॥ दांत का मंजन ॥

इस मंजन की बड़े २ सेठ साहूकारों ने भी प्रशंसा की है क्योंकि इस के लगाने से दांतों का हिलना या दर्द का होना मसूढ़ों का फूलना आदि सब रोग तीन ही दिन लगाने से नाश हो कर दांत पक्के मजबूत सफेद मोती समान चमकने लगते हैं इसकी सैकड़ों डिब्बी पारसल द्वारा जा रही हैं कीमत १ तोलाकी डिब्बी ।) दरजन का २॥)

॥ सुलेमानी नमक ॥

ये हाजमा जायकेदार भी खूब है इस की प्रशंसा व्यर्थ है इसे तो सब जानते ही हैं कीमत की शी० ।) १२ शी० २॥)

॥ बाल उड़ाने का चूर्ण ॥

इस में से थोड़ासा चूर्ण बालों पर लगा दो तीन मिनट में बाल साफ न हों तो चौगुनी कीमत वापिस, की डिब्बी ।) १२ डिब्बी २॥)

॥ खांसी की गोली ॥

इस गोलियों से सूखी या तर कैसी ही खांसी क्यों न हो, खाते खाते बन्द करती है। इस से यहां पर हर हमें में सैकड़ों क्या हजारों रोगी आराम होते हैं कीमत १०० गोली ।) मुफ्त बांटने के लिये ५०० गोली १)

॥ दाद नाशक घृत ॥

ये घी दाद के लिये इतना अकसीर है कि कठिन से कठिन दाद क्यों न हो फ़ौरन आराम करती है दवा क्या जादू है कीमत की डिब्बी ।) १२ का २॥) छोटी डिब्बी ≈) १२ का १)

॥ शीतल सुरमा ॥

इस के लगाने से आंख की जलन दाह कोहीं की कटन आदि गर्मी के सब विकारों को दूर कर आंख में लगाते ही ठंडक पहुंचाता है की० की शी० ॥) बहुत उत्तम शीशे की सलाई की० ।)

नवीन समाचार

अभी कुमिल्ले के उपद्रव को हुए थोड़े ही दिन बीते होंगे कि जौनपुर से फिर एक भयानक खबर आई है वहां पर मुसल्मानों ने हिन्दुओं को मारा पीटा और जब पुलिस को रिपोर्ट दी गई तब वह खड़ी देखती रही भगवान् इन मुसल्मानों को सुमति दें।

प्रयाग के कुछ सज्जनों ने विचार किया है कि जापान आदि देशों से लौटे हुए विद्यार्थियों को सहायता देकर जिस २ विषय का उन्हों ने अभ्यास किया हो वैसे ही कामों को कारखाना यहां भारतवर्ष में आरम्भ करवा दिया जाय विचार तो अच्छा है।

अब की बार मेरठ में नौचन्दी का मेला बड़ी धूम धाम से हुआ यद्यपि १६ मार्च तक के लिये इश्तहार था पर १९ मार्च तक सरकारी आज्ञा से मेला रहा। प्रान्तीय छोटेलाट ने ही प्रब की बार प्रदर्शिनी खोली थी।

इटावा से बदली होकर जब नये कलक्टर साहब आये हैं आशा तो है कि नया कसाई खाना उठवा देंगे और प्रजा का धन्यवाद ग्रहण करेंगे॥

अलीगढ़ कालेज का झगड़ा आखिर खतम हो गया जो ६ विद्यार्थी निकाले गये थे उन्हें रखलेने का विचार निश्चय हो गया पर नवाब मोहसिनुलमुल्क बहादुर अब कम से आगे से झगड़ा नहीं रखना चाहते हैं।

पता—श्री रूपचन्द्र जैन वैद्य मुहल्ला लालपुरा—इटावा सिटी

जब तक मेढ़ों की तरह सहनशीलता और नम्रता न होगी तबतक एकता कैसी? यदि बाहरसे दुनियां की व्योहारमें किसी तरह एकता का साधन करें तो भी अन्तरङ्ग परिणामोंके स्वच्छ हुए बिना ऐक्य होना कठिन है जैसे एक समय अग्निसे मिलते हैं (शरीर स्पर्श करते हैं) और एक समय अपनी स्त्रीसे शरीरस्पर्श करते हैं। उन दो समयोंमें परिणामोंमें कितना फरक रहता है। भावार्थ यह है कि चैतन्य या जड़ कोईका भी मिलाप हो बिगाड़ सुधार चैतन्यका और जड़ दोनोंका होता है. और चैतन्यके स्वभावमें फर्क पड़नेसे अधर्म होता है। क्यों कि "वत्थु सहावो धम्मो" जो चैतन्य का स्वभाव है उसमें फरक पड़ने से धर्म का नाश होता है और जहां धर्मका नाश होता है वहां एकता नहीं और जहां एकता नहीं वहां कल्याण नहीं. इसवास्ते एकता करने और एकता चाहनेवालोंको इतने गुणोंकी समानता करनी चाहिये. यथाः—

क्षमा, नम्रता, निष्कपटता, सत्य, निर्लोभता, अपने अपने धर्ममें तत्परता, दान, दूसरे दुखी जीवोंका निस्पृह सहायक होना, ब्रह्मचर्यमें सावधान रहना (जिना न करना.) किसीसे वृथा बैर न बढ़ाना, अधिक गुणवानको देखकर खुश होना और उससे वह गुण सीख लेना, गुणीके दोषोंको प्रगट न करना, क्योंकि ऐसा कहा है.

If a lamp placed on the floor of a room it casts a shadow, but if another lamp is placed the shadow of both is removed. अर्थात् गुणवान् भी विना ऐब नहीं होता जैसे लेम्पके नीचे अंधेरा होता है परन्तु यदि दूसरी लेम्प उसकेपास रख दी जाय तो दोनोंका अंधेरा (छाया) दूर हो जाता है. ऐसे ही गुणवानसे गुणवान मिलकर एक दूसरेकी ऐबजोई न करें बल्कि अपने २ ऐब अपने अपने जबानसे प्रगट कर क्षमा करा लेवें। सर्व जीवधारियोंपर दया करना और नुकसान पहुंचानेवालोंके साथ मध्यस्थ रहना, हिंसा न करना यदि इन गुणोंमें समान हों तो उससे मुख्यतः मेल करना। अर्थात् खाना पीना बैठना उठना सबकाल संग रहना आदि व्योहारी कार्य करें, परन्तु इसमें शादी करना शामिल नहीं है इस बातका ख्याल पूरे तौरसे रखना चाहिये. क्योंकि पूर्वजोंकी आज्ञा है कि, गुणीसे गुणी ही मिलनेसे एक कांति रह सकती है और सुख और शांती प्राप्त हो सकती है अन्यथा नहीं, जैसे कहा है—

"यथोरेव समं वित्तं ययोरेव समं कुलम्।
तयोर्मैत्री विवाहश्च न तु पुष्टविपुष्टयोः॥"

अर्थात् वित्तादिक विभूतिकर तथा कुलाचारकर जो समान हैं उनके साथही मित्रता और विवाहादि सम्बन्ध कल्याणकारी हो सकते हैं, नहीं तो किसी समयमें आपसमें प्रीति भङ्ग और स्वभावमें विकृति उत्पन्न हो जाती है. हां जिसमें गुण हो उससे वह गुण ग्रहण करनेके हेतु बराबर उससे एकता, प्रीति और सम्बन्ध करना; यह ज्ञानवानोंका मत है. यहांतक कि पशु पंखियोंमें जो गुण हैं वह गुण उनसे सीखना मनुष्यका धर्म है न कि उनसे विवाह इत्यादी करना या जो, चीजें वे खाते हैं खाने पीने लग जाना. और यह ख्याल रखना चाहिए कि मणिधारी सर्प भी जहरीला होता है. जबतक उसके विषको बचाकर मणि लेलेनेकी सामर्थ्य न हो तबतक उससे मित्रता, एकता या मेल कैसा? हां! जो कांटा पांवमें चुभ गया है उसको दूसरे कांटे या सुईसे उखाड़कर फेंक देना. यहांतक ही कांटे या सुईसे मेल करना चाहिए न कि उस सुईको जो कांटेको निकालनेके विचारसे हाथमें ली है कांटेको निकालनेके बजाय अपने पांवमें ठोंक लेना पहलेसे भी अधिक दुखदाई हो जाती है. ऐसे गुण दोष विचार एकता भी वहांही तक श्रेय है जहां तक पूर्वजोंकी आज्ञा (धर्म) भङ्ग न हो। इत्यलम्।

सुन्दरलाल बैनाडा आगर (मालवा)

जरा सुन लीजिये।

श्रीसम्मेद शिखरजीपर भावी अनर्थ और आवश्यक प्रार्थना।

साधर्मी सद्गृहस्थो! अपने जैनमित्र तथा जैनगजटके गत कई अङ्कोंमें शिखरजीविषयक भावी अनर्थके समाचार सुने होंगे और आपको पूर्णतया ज्ञात हो गया होगा कि डिपुटी कमिश्नर हजारीबाग शिखरजीपरकी पावन भूमिको अंग्रेज तथा अन्य धर्मियोंको पट्टेकी रीतिसे बंगले वा मकानात बनानेके लिये राजा पालगंजकी तरफसे देना चाहते हैं तथा इस विषयमें सलाह करनेकेलिये उन्होंने पहले ता. २६ मार्चको नोटिस निकाला था कि "दिगम्बरी श्वेताम्बरी मुखिया भाई हमसे तारीख ९ मईके अनुमान मिलें ठीक तारीख हम फिर नियत करेंगे" इस नोटिसको देखते ही अनादिकालसे तीर्थंकरोंके समान पवित्र पर्वतोंको पूज्य माननेवाले जैनी भाइयोंके चित्त व्याकुल हुए। कानपुरमें जो तत्काली भारतवर्षीय दि. जैन महासभाका नैमित्तिक अधिवेशन अभी हुआ था उसमें ता. १२ अप्रे. को १००० भाइयोंने इस बातको नापसन्द की और डिपु. कमिश्नर साहिबको प्रार्थना रूप पत्र भेजा। इसके उत्तरमें डिपुटीकमिश्नर साहिबने ता. १२ अप्रेल का लिखा हुआ जो पत्र भेजा है उससे बहुतही दुखप्रद परिणाम विदित होता है. इसी बीचमें फलटणमें दक्षिण महाराष्ट्र जैनसभा और दिग. जैन प्रान्तिक सभा बम्बईका संयुक्त अधिवेशन हुआ था, वहां भी १००० मनुष्योंने इस बातकी अरुचि प्रगट की थी और प्रार्थनारूप तार भेजा था। अन्यान्य स्थानोंसे भी तार या पत्र गये हैं परन्तु इतना होनेपर भी डिप्युटीकमिश्नर साहिबने जो दूसरा नोटिस निकाला है उसके पढ़नेसे होश उड़ जाते हैं उसकी नकल इसप्रकार है। नोटिस ता. २९ अप्रेल १९०७ ई.—

"The Deputy Commissioner desires to point out that he is unable to do any thing contrary to the interesl of the proprietor in the matter of Parasnath Hill The Jains have no rights on the Hill except to their actual temples and if they claim rights to the land on the Hill it will be quite unpossible for the Deputy Commissioner &c., insist on any conditions favourable to Jains being put into building leasis granted by the proprietor and the manager, as thus would senvaisty prejudice the proprietor's interest If however no legel claims are preperred, the Deputy Commissioner hopes to be able to secure that in granting leases conditions will be inserted that shall effectnally prevent any interference with the Jain's worship on thr Hill"

भावार्थ—डिपुटी कमिश्नर हजारीबाग इस पारसनाथ पर्वत के सम्बन्ध में कोई ऐसी बात नहीं कर सके जिससे पर्वतके मालिकको हानि पहुंचे, जैनियोंका पर्वत पर कोई एक हक नहीं है सिवाय उन खास मन्दिरों के जो वहां बने हुए हैं और यदि वे पहाड़ का जमीन पर अपना एक हक मांगेंगे तो डिपुटी कमीश्नर बंगले वा मकानात बनने के पट्टे देते हुए कोई भी ऐसी शर्त नहीं रख सकेंगे जो जैनियों के लाभको हो क्योंकि हक मांगनेसे पहाड़के मालिकके फायदेमें धक्का लगेगा, तौभी। यदि कोई कानूनी कार्य वाही नहीं की जावेगी तो डिपुटी कमिश्नर पहाड़के

ऊपर जैनियों की पूजा करनेमें हानि न पहुंचे इस बातका पट्टे देते समय स्मरण रखने की आशा करते हैं ।"

प्रिय महाशयो ! उपर्युक्त नोटिससे यह तो स्पष्ट विदित होता है कि पट्टे दिये जावेगें परन्तु जिनको दिये जावेंगे उन अंगरेज वां अन्यधर्मियोंको जिन्हें नई रेल निकलने के कारण जरूरत पड़ी है ।

विचारने की बात है कि जिस पर्वत की प्रदिक्षणा कर जैनी अर्घ चढावें, जिस पर जूता पहिन कर न चढें, उसपर गाव बसने का प्रयत्न हो रहा है यह बात जैनियोके हृदय को क्यों न कम्पायमान करेगी ? अत· यह सर्व भारतवर्षीय जैनीमात्र का कर्तव्य है कि वे तन मन धनसे इस धर्म क्षेत्रकी रक्षा शीघ्र करें । अब ता. २१ मईके बदले २९ मई नियत हुई है उस समय दिग. श्वेताम्बरी भाइयों को शिखरजीपर अवश्य पधारना चाहिये. प्यारे दयालु सज्जनो! आप उस दयामयी धर्मके अनुयायी हो जिसकी छाप पृथ्वीतलके विधर्म मात्रपर छा रही है, प्रत्येक बालक मुक्तकंठसे आपके अहिंसा धर्म की प्रशंसा करता है । इस धर्मके परमहितोपदेशक धर्मचक्रप्रवर्तक तीर्थंकर परम भट्टारक हैं जिन्होंने पावन सम्मेद शिखरजीकी स्थलीसे मुक्ति लक्ष्मीको प्राप्त की है । महाशयो तीर्थंकरोंका मुख्यतया निर्वाणक्षेत्र श्रीसम्मेदाचलही है, आज इस क्षेत्रमें निकृष्ट कालवश अभाग्यस तीर्थंकरोंके दर्शन नहीं होते है तो क्या हम उनके मोक्षकल्याणक स्थान को विस्मरणकर कृतघ्नी बनें ? नहीं ! कदापि नहीं ! जो धर्म आत्महितकारी है वह मुख्यत ऐसेही धर्म क्षेत्रमें प्रादुर्भूत और स्फुरायमान होता है । सभ्यजनो ! जिस शिखरजीके नाम मात्र स्मरण करनेसे हमारे शरीरका रोम २ प्रफुल्लित होता है, पापकी निर्जरा होती है, नेत्र भक्तिसुधासलिलसे डबडबा आते है, मन दर्शनकी उत्कण्ठासे शरीरके बाहर भागना चाहता है, और हमारे परिणाम अती व निर्मल हो जाते है, उसी पर्वतपर अब अभक्षभक्षक महानुभावोंका निवास हो यह कितनी हृदयविदारक घटना है । जिस तीर्थके हम दूसरे प्रत्यक्ष दर्शनकर अमित आनन्दामृत आस्वादन करते, और नम्रीभूत हो अष्टाङ्ग नमस्कार करते हैं, उसी गिरिराजपर अब आत्मीक भावोंको कलुषित करनेके लिये अशुभ कार्य होनेवाला है । जिस पर्वतको हम विधिवत् पूजते तथा जहांकी कंकरी २ को हम असख्यात मुनियोंकी मुक्ति होनेसे पूज्य मानते हैं, आज वहां पूज्यताकी पवित्रतामें न्यूनता होनहार ऐसे कलुषता होनेके कारण उपस्थित हो रहे हैं । आपने अनुमान कर लिया होगा कि पर्वतपर विधर्मियोंके आवास होनेसे हर एक प्रकारका आरम्भ होना प्रारम्भ होजावेगा साहबलोग हिरणादि प्राणियोंके प्राण व्यपरोपण करेंगे, उनके गौराङ्ग कौतुकी लड़के निरपराधी पक्षियोंकी शिकार, करेंगे मास मदिराका सेवन करेंगे, भट्ठी चूल्हे सिलगाकर जीवोंका नाश करेंगे, नीहार श्लेष्मके असत् व्यवहारसे भी वे कदापि नहीं चूकेंगे; इत्यादि अनेक धर्म विरुद्ध अपावन हिंसक कार्य इस पावन पर्वत पर होने लगेंगे । जिनका स्मरणमात्र करनेसे परिणामों की निर्मलता निर्मूल हो मलिनता छाजाती है फिर जब धर्म शैल पर प्रत्यक्ष ऐसे कृत्य देखेंगे तब परिणामों की दशाका कहना ही क्या है शोक ! महत् शोक ! ! दैव न करे कि यह असमीचीन कार्य होने पावे ।

धर्मालु जैनी भाइयो ! अब घोर निद्रामें सोनेका समय नहीं है, आशाको छोड़ निराशाका आश्रय लेना श्रेयस्कर है, धर्म रसातलमें धसता चला जाता है इसके वज्रपापके भागी सबको होना पड़ेगा, सचेत हो कमर कसिये और परमपूज्य क्षेत्रकी रक्षा कीजिये । "तन दे धन दे लाज दे एक धर्मके काज" की नीतिका हृदयमें अङ्कुरारोपण कर लीजिये, किसी प्रकार उत्साह हीन न हूजिये, "यतो धर्मस्ततोजय" समझिये अपने कर्तव्यको लक्ष्यमें लीजिये और प्रयत्न कीजिये मनोरथ मात्रसे कार्यकी सिद्धि नहीं हो सक्ती है ।

हमारा कर्तव्य क्या है अब इसपर ध्यान दौडाना चाहिये, जैनीमात्रका धर्म है कि भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र मात्रकी रक्षा करनेमें सम्मिलित रहें यह तो फिर तीर्थराज हैं जिनके दर्शन वर्तमान १४ लाख जैनियोंको अभीष्ट है, फिर हमको इस घोर अनर्थके रोकनेका प्रयत्न क्यों नहीं करना चाहिये । भ्रातृगणो ! आज कल अदालती मुकदमोंमें, वा सरकारसे प्रार्थना करने, समझाने आदिमें अधिकांश द्रव्य खर्च पडता है तब कहीं दैवसे कार्यकी सिद्धि होती है इसलिये धनिक महाशयोंको विशेष लक्ष्य देना चाहिये, बिना इस सहायताके कार्यका चलना कठिन है, इसलिये प्रत्येक नगर तथा ग्रामके जैनी भाइयोंको चाहिये कि अपनी पंचायती इकट्ठी करें, डिपु. कमिश्न. हजारीबागको तार भेजें कि हम पहाड़के ऊपर मांसाहारी व्यक्तियोंके बंगले आदिका बनना धर्मके सर्वथा विरुद्ध समझते हैं । पंचायतीकी ओरसे उक्त २९ मईके पूर्वही शिखरजीपर जो प्रतिनिधि भेजें उनके नाम तथा–प्रेषित तार की नकल मेरेपास भेज देनेकी कृपा करें तथा इसकेलिये योग्य चन्दा भी करके भेजें जिससे कि तीर्थक्षेत्र कमैटी द्वारा इस बातका पक्का प्रबन्ध किया जाय । आप लोगोंको मालूम होगा कि तीर्थक्षेत्र कमैटीमें खर्चकेलिये कोई फण्ड नहीं है किन्तु यह कमैटी अनुमान ७०००) रु की कर्जदार है जो शिखरजीकी बीसपंथी कोठीके मुकद्दमेमें खर्च हो चुका है इसके सिवाय छह–सातसौ रुपया सालाना दफ्तरका खर्च है । अत· बिना द्रव्यकी सहायताके पूरा उद्योग नहीं हो सक्ता है ।

यह अवसर चूकनेका नहीं है । आप लोगोंको यह भी ज्ञात हो कि यदि आप अच्छी कोशिस करेंगे तो सरकार आपकी प्रार्थनापर ध्यान दे स्वीकार करेगी । क्योंकि तीर्थस्थानोंके आसपास अंगरेजादिके बगले होना किसी प्रकारसे ठीक नहीं है यह बात सरकारको भी स्वीकृत है जिसका उदाहरण इस प्रकार है । श्री ऋषभदेवजी जिसको केशरिया नाथजी भी कहते हैं गाव धुलेव जिला उदयपुरमें हैं, उस गावके बाहर एक सूर्यकुण्ड नामका तलाव है उसके किनारे एक पत्थरपर अंगरेजी, हिन्दी और उर्दूमें निम्न लिखित लेख खुदा हुआ है —

"To all whom it concerns the Shrine of Rikhabdev being one held in great sanctity by the Hindus of Gujrat and other countries, gentlemen and others encamping at the place are requested not to kill peafowl or peageons in the neighbourhood or to catch the fish in the small pucka tank near the village or to kill animals there"

Kherwarah,
22nd May 1854

(Sd.) JOHN C BROOKE,
Captain,
Sule-Hilly Tracks, Mewar.

अर्थात्—सर्वको विदित हो कि श्री ऋषभदेवजीका मन्दिर गुजरात और अन्य देशोंके हिन्दुओंसे पवित्र माना जाता है, सम्पूर्ण महाशयोंसे प्रार्थना है कि जो इस स्थानपर ठहरें वे इसके आसपास मोर कबूतर आदि पक्षियोंको न मारें, न

छोटे तलावकी मछलियोंको पकडे, न यहां पशुओंका संहार करे।

खरवाडा २२-९-१८९४ई. (द:) जान सी. ब्रूक. कप्तान सब हिल्डी टूक, मेवाड

इस आज्ञाका फल यह है कि आंगरेज आदि उस ग्रामसे २ मालकी दूरीपर ठहरते है।

आप लोगोंको यह भी प्रगट किया जाता है कि डिपुटीकमिश्नर साहिबसे मिलने वा उनके समझानेका भार स्वीकार करनेकी प्रार्थना सुयोग्य धर्मात्मा नीतिनिपुण श्रीयुत बाबू धन्नूलालजी अग्रवालजैन, अटर्नी (वकील) न. ४ मदनमोहन चटर्जी लैन, जोडासाकू, कलकत्तासे की गई है। आशा है कि वह हर्षपूर्वक स्वीकार करेंगे। उन्होंने इसकार्यके करनेकी इच्छा प्रगट की है। हमारे अन्य, जातिहितैषी वकीलोंको भी इसे अपना परमधर्म समझकर अवश्य २९ मईको शिखरजी पहुंचना चाहिये और डिपु. किम साहिबको समझानेका प्रयत्न करना चाहिये। जो महाशय इस अवसरपर तीर्थराजकी भावपूर्वक रक्षामें दक्ष होकर दर्शन करेंगे वे अवश्य ही दर्शनमोहनी प्रकृतिको क्षयकर अक्षय मोक्ष सुखके स्वामी बनेंगे। जो वकील साहब इस विषयमें कुछ पूछना चाहें वा सहायता चाहें वे हमसे पत्रव्यवहार करें।

भारतवर्षीय दिगम्बरजैन तीर्थक्षेत्रकमेटीके सभासदों (members) से प्रार्थना है कि वे इस कार्यमें हरएक प्रकारसे तन, मन, धन द्वारा सहायता करें। स्वयम् आवें वा अन्यान्य योग्य भाइयोंको शिखरजी भिजावें। अन्तमें सर्व पचायतियोंसे निवेदन है कि तीर्थराजकी रक्षाके हेतु यथोचित चन्दा करके द्रव्यकी सहायता शीघ्र करें इत्यलम्।

प्रार्थी—

हिराबाग, गिरगांव, बम्बई १०-५-०७ई माणिकचन्द हीराचन्द जे.पी. महामंत्री भारतवर्षीय दिग जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी—

स्याद्वादपताका।

पाठक महाशय। एक दिन तो वह था कि इस भारतभूमिपर सर्वत्र ही स्याद्वादमतकी पताका (धुजा) फहराती थी, अर्थात् उस समय ऐसा कोई भी विद्वान् नहीं था जो स्याद्वादी विद्वानोंके सम्मुख शास्त्रार्थमें खड़ा हो सके। उस समयके उपदेशोंका इस भूमिपर ऐसा प्रभाव पड़ा कि नरकमें पहुंचानेवाली वैदिकहिंसाका प्रचार सर्वथा लोप होकर उसकी जगहें जहां तहां अहिंसा धर्मका ही डंका बजता था किन्तु आज वह समय है कि जहां तहां हिंसा प्रचारके कारखाने खुल रहे हैं। जो वैदिकहिंसा आजतक इस पवित्र आर्यभूमिपरसे विलुप्त हो गई थी वह अब शीघ्रही प्रचारमें आनेवाली है क्यों कि अंगरेजी विद्याने प्राय सबके दिलसे मांस मदिरादिक अभक्ष्यपदार्थोंकी घृणा उठा दी है, यदि एकान्तमें बैठकर इन सबका मूल कारण विचारा जाय तो मालूम होता है कि चार पांचसौ बरसोंसे स्याद्वादमतावलम्बी विद्वानोंके परम अहिंसामय उपदेशामृतके अभावसेही ऐसा विपरीत मार्ग चल पडा है। अब यदि फिरसे उस उत्तम समयके देखनेकी प्रतीक्षा हो तो जिस प्रकार बने स्याद्वाद विद्याके सिद्धान्त और अलभ्य उपदेशोंका यत्र तत्र प्रचार होना चाहिये—

परन्तु—

खेद है कि आजकल हमारी जैनसमाजमें ऐसे विद्वानोंका सर्वथा अभाव है जो कि, इस प्राचीन स्याद्वाद विद्याकी समीचीनतया प्रकाश कर सकें। जिनको हम इस विद्याके अद्वितीय विद्वान् समझते थे वे परमपूजनीय प्रातःस्मरणीय गुरुवर्य पंडित शिरोमणि **श्रीबलदेवजी** आगरा निवासी थे, वे आज इस समाजमें विद्यमान नहीं रहे—इस समाजमें अपनी विद्याके समझनेवाले पात्रका अभाव समझकर मानो अपनी विद्या साथही ले गये। उनके पश्चात् जिनको इस विद्याके अच्छे जानकार समझते हैं वे एक मात्र श्रीमान् विद्वद्वर्य पं० **गोपालदासजी** बरैया हैं सो वे आजकल अपने गार्हस्थ्यधर्म निर्वाहार्थ ऐसा व्यापार करते है कि जिससे उनको इस विद्याके प्रकाश करनेके लिये समय ही नहीं मिलता तथापि उक्त महाशयने जैनमित्रके द्वारा **जैनसिद्धान्तदर्पण** सरीखे स्याद्वाद विद्याके प्रकाश करनेवाले लेख प्रकाशित करना प्रारम्भ किया है।

यद्यपि हमारा आदि कर्तव्य अभीतक पूर्ण नहीं हुआ है जितनी विद्या पढ़नेकी हमारी इच्छा है उतनी नहीं पढ सका हूं अद्यापि **स्याद्वादपाठशालाका** ही का विद्यार्थी होकर स्याद्वादविद्याका अध्ययन कर रहा हूं जो कि कई वर्षोंमें भी इच्छानुसार प्राप्त नहीं कर सकूंगा—परन्तु एक तो इस पर्यायका भरोसा नहीं कि—कब पूरी हो जाय. दूसरे न्यायदिवाकर पंडित पन्नालालजीकी भेंट होनेसे कानपुरकी प्रतिष्ठापर प्रकच्छकर्त्ताओंकी समीचीन कार्यवाइयोंके देखनेसे चित्तमें एकदम जोस भर आया कि इस समय मुझेभी कुछ न कुछ स्वकर्त्तव्य निश्चय करके कार्य क्षेत्रमें प्रवेश करना सीखना चाहिये नहीं तो अशिक्षित और जिनमतानभिज्ञ नेतृगणोंके द्वारा जैन समाजको बडे भारी अंधकूपमें गिरना पडैगा, जिससे समीचीन स्याद्वादविद्या भी अतलस्पर्श अज्ञान समुद्रमें विलुप्त हो जायगी—इस कारण हमने अनेक महाशयोंकी सम्मतिसे विद्याध्ययनकी छुट्टियोंके समय यथासाध्य परिश्रम करके **स्याद्वादपताका** नामकी एक मासिक पत्रिका प्रकाशित करनेका मानस किया है।

इस पत्रिकामें मासिक **जैनमित्रके** समान न्यूनाधिक ४० पृष्ठ रहेंगे, उनमें स्याद्वादमतसार, जैनतत्त्वादर्श (जैनसिद्धान्तदर्पण) समयसार नाटक संस्कृत टीका और वचनिका वगेरहसहित, तथा एक प्राचीन उपन्यास, ग्रंथसमालोचन, सामायिक विवेचन आदि ऐसे विषय रहेंगे कि सर्वसाधारण जैनी भाइयोंके सिवाय भिन्नधर्मी विद्वानोंके पढने और आदर करने योग्य भी हों। ऐसी उच्च दरजेकी मासिक पत्रिकाके प्रकाशित करनेमें प्रथम तो श्रीमान् विद्वद्वर्य प० गोपालदासजी सरीखे विद्वानोंकी पूर्ण सहायता चाहिये दूसरे धनवानोंकी भी पूर्ण सहायता चाहिये। क्योंकि इसमें दो विद्वान् अवैतनिक परिश्रम करेंगे तो भी छपाई वगेरहमें न्यूनाधिक १९०) रुपये माहवारी खर्च पडैगा।

इसका वार्षिक मूल्य सर्वसाधारणके लिये २॥) रु. और धनाढ्य, रईस, जमीदारोंसे ९) रुपये, किन्तु भिन्नधर्मी विद्वानोंसे कुछ नहीं लिया जायगा।

जो महाशय छह महीनेके भीतर इसका मूल्य भेज देंगे उनको **जीवंधरचरित्र** नामका अति उपयोगी नीतिका भंडारस्वरूप उत्तम उपन्यास ग्रन्थ भेटमें भेजा जायगा—

और—

जो महाशय एक साथ ५०) रुपये भेजकर इसकी सहायता करेंगे वे इस पत्रिकाके संरक्षक व यावज्जीव ग्राहक समझे जायगे। उनको पत्रिका व उपहारके ग्रन्थोंकी एक एक प्रति विना मूल्य भेजी जायगी।

यह पत्रिका कमसे कम ३०० ग्राहकोंकी मंजूरी आनेपर प्रकाशित होगी। इसलिये सर्व साधारण जैनी भाइयोंसे और खास करके विद्वानों और धनाढ्य महाशयोंसे प्रार्थना है कि इस पत्रिकाको

ग्राहक बनानेके सिवाय हरप्रकारसे सहायता देकर मेरे इस प्रथम उत्साहको बढावें ।

जो महाशय ग्राहक बने वा सहायता देवें वे अपना नाम व पूरा पता हिंदी अक्षरोंमें लिखकर फिलहाल नीचे लिखे पतेसे पत्रव्यवहार करें ।

जैनसमाजका हितैषी दास—
गणेश प्रसाद जैन
ठि. श्री स्याद्वादपाठशाला काशी
पो. बनारस सिटी

नवीन समाचार ?

खुल गया—सेठ प्रेमचद मोतिचंद दिगम्बर-जैन बोर्डिंग स्कूल अहमदाबाद जो प्लेगके कारण बन्द था अब १३ मई ०७ से पुन. खुल गया है । विद्यार्थियोंको शीघ्र दौडना चाहिये ।

संस्कृत विद्यालय—श्रीमान् सेठ माणिकचंद हीराचन्दजीके सुपुत्र सेठ प्रेमचंद मोतीचन्दजी द्वारा ६०००) से उदयपुरमें संस्कृत विद्यालय खुला है जिसकी रिपोर्ट आगामी अकमें प्रकाशित की जावेगी.

इस मासकी ७ तारीखसे बिजलीकी ट्राम बम्बईमें चलने लगी है । बिजलीके तार टूटनेसे दो तीन आदमियोंका घात हो चुका है । अब तमाम वस्तीमें तार लग रहे हैं देखिये आगेको इनसे कितने मनुष्योंका कल्याण होता है ।

मंगोलियामें एक ऐसा वृक्ष है कि जिसके खानेसे गाय, भैस, घोडा आदि जानवरोंको नसा चढा करता है ।

छुटीमें फुरसत—आजकल ग्रीष्मकालकी छुटीमें कोर्ट बन्द हैं, वकील बारिस्टरोंको प्राय. सावकाश है. यदि हमारे जैनी वकील और धनी गुनी महाशय शिखरजी पहुंचकर तीर्थराजके रक्षार्थ साहिब डिपुटी कमिश्नर हजारीबागके समीप अपना दुख सुनावें, और इस धार्मिक कार्यमें साफल्य प्राप्त करें, तो छुटीके दिन सार्थक हो जावेंगे. जाति और धर्म सेवाका यह अच्छा अवसर है । आशा है इस फुरसतके समयको निरर्थक न विता कर तीर्थराजकी रक्षा और वन्दना करके "एक पंथ दो काज" का लाभ उठावेंगे ।

डेनमार्कमें सर्व मनुष्य पढे लिखे रहते हैं । और भारतमें अनपढों का नम्बर ही सबसे ऊंचा है ।

श्रीसम्मेद शिखरजी पहाडपर मकान बनवानेके विषयमें ता. ८ अप्रेलको सननामे डिप्यूटी कामश्नर हजारीबागको तार और चिट्ठी भेजी गई है कि वहांपर अंग्रेजोंके मकान आदि न बनाये जाय । हम लोगोंके धार्मिक कार्योंमें बडा विघ्न होगा ।

सूरतसे भी ता. ६—६—०७ को तार दिया गया है । इन्दौरसे १९० महाशयोंकी दस्तखती अर्जी भेजी गई है ।

मोर्सी (अमरावती) से भी एक तार उपर्युक्त विषयमें दिया गया है और वहासे किसी महाशयके जानेका भी विचार है ।

छगनलालजी मंत्री जैन मंडल जोधपुर द्वारा समाचार मिला है कि वहा से भी एक तार हजारीबाग भेजा गया है

पंजाबमें अशांति—लाला लाजपतरायजी और अजीतसिंघको सरकारकी ओरसे देश निकालेका हुक्म हुआ है । लाला लाजपतरायको बुलाकर उनको मोटर गाडीमें बैठाया और पूर्ण तेजीसे उस गाडीको मीआनमीर, वहासे खास गाडीमे कलकत्ता तथा वहामे बरमा लेजाकर रक्खा है । देश भक्तोंको इसप्रकार सरकार की ओरसे कठोरता की जा रही है इससे देश में शान्तिके बदले अशाति ही फैलेगी। सरकारके ध्यान देने योग्य है ।

श्रीमन् मुनि महाराज मोहनलालजी श्वेताम्बरी साधुका ता० ९ को सुरतमें देवलोक हुआ । आप अच्छे महात्मा थे ।

एटनामें ज्वालामुखी फटा है जिससे आग और धुवा बहुत निकलता है ।

मेंदरगीमें बिम्बप्रतिष्ठा—गत अकमें प्रतिष्ठा के समाचार पाठकों ने अवलोकन किये होंगे । और भी समाचार अव प्राप्त हुए हैं जो कि नीचे लिखे जाते हैं ।

चैत्र सुदी ९ को श्रीयुत गोतम मोतीचंद वकीलकी अध्यक्षतामें द्वादशानुप्रेक्षा पर व्याख्यान किये गये थे तथा चैत्र सुदी १० को आलद पाठशालाके विद्यार्थी माणिकचंद मानचंद और विद्यार्थिनी नवल बाईकी परिक्षा ली गई तथा उक्त बाईने जिस की आयु ९ वर्ष की होगी "स्त्रीकर्तव्य "पर एक सुन्दर ललित भाषण दिया और जैनियोंका अत्याचार प्रगट किया कि हम मा बापकी रक्षा में है परन्तु मा बाप ही हमारी रक्षा न करके हम को बूढे और अयोग्य वरके साथ रुपयोंके लोभसे ढकल देते हैं इसका पचायतमें फैसलाभी नहीं होता यह बडा अन्याय है, हम अबला हैं हम समर्थ नहीं हैं पर कुछ कर नहीं सकती । आदि ऐसे मिष्ट शब्दोंमें भाषण दिया । सर्व उपस्थित मडली अवाक हो गई । श्रीयुत सेठ लीलाचंद हेमचंदने ५)सेठ सखाराम नेमिचंदन २) और अमीचद वीरचंदने २) ऐसे कुल ९) रु० पारितोषक दिया । पश्चात् माई पानाचद रामचदने पुष्टीकरण किया और कहा कि मंडलीने इस कृत्यको इस बाईके इशारेसे सुना होगा अब सर्व मंडलीको चाहिये कि इस कन्याविक्रय निन्दकार्यको मंडलीमेंसे उठा देवें आदि ।

मिति चैत्र सुदी ११ को सेठ रावजी नानचंदके सभापतित्वमें दो प्रस्ताव पास हुए ।

१ कन्याविक्रयवाले विवाहमें जीमनको नहीं जाना चाहिये ।

२ सोला वर्षके उपर लड़कीकी शादीवालेके यहा भी जीमणको नहीं जाना चाहिये ।

रिपोर्ट दौरा दीपचंदजी उपदेशक

१—६—०७ पाठकुला (शोलापुर) जिन दर्शनपर १ घन्टा व्याख्यान दिया लोग धर्ममें कमरुचि रखते हैं सेतवाल जैनियोंकी गृहसख्या २० जिन मदिर १ है ।

२-६ ०७ पैनुर-सभामें शास्त्र स्वाध्याय और जल गालन क्रिया पर व्याख्यान दिया । उपस्थित जनसख्या २० थी यहाके जैनी धर्मके कदर शत्रु जान पडते है वार २ बुलाने परभी सभामे नहीं आये ।

६-९-०७ माडे—जैनमदिर ३ गृहसंख्या १० हैं सम्यकदर्शनपर वक्तृताकी सभामें २० स्त्री पुरुष उपस्थित थे दूसरे दिन शास्त्र स्वाध्याय पर उपदेश दिया ६ महाशयोंने शास्त्र स्वाध्यायका और कोई कोईने शास्त्र सुननेका प्रण किया । तीसरे दिन श्रावकाचार की रीतिया बतलाई गईं । यहाके भाईयोंने सभा करनेका वचन दिया है ।

प्लेग औषधालय—श्रीयुत फतहलालजी गोधा बहुत दिनोंसे औषधि विना मूल्य बांट रहे हैं आपने हजारों आदमियोंको इस प्लेगकी तेगसे वचाया है । जिनको औषधि चाहिये वे विना मूल्य निम्नलिखित पतेमे मगा सकते हैं । प्रति दिन ९ या १० पार्सल रवाने की जा रहीं हैं ।

फतहलालजी गोधा
मऊ छावनी (इन्दौर)

मध्यप्रदेशीय दिगम्बर जैनी भाईयोंको सूचित किया जाता है कि यहां दिगम्बरजैनबोर्डिंग हाउसमें कमसे कम १० विद्यार्थियों की जगह खाली है ।प्रायमरी पास विद्यार्थी व हाई स्कूल और कालेजके विद्यार्थी भरती हो सकते हैं विनय पत्र इस पतेसे आना चाहिये ।

नारायण राव सेक्रेटरी
दि० जैन बोर्डिंग हाउस,
जबलपुर.

विविध विषय।

श्रीमान पंडित जवाहारलालजी शास्त्रीके लिखनेपर जैन गजटके दसरसे पेशगी एक वर्षके मूल्यका वी. पी. मेरे नाम आया उसमें ६ अंक निकले फिर एक महीने तक कुछ न आया. लाचार कई पत्र सम्पादक और उस सम्पादकको लिखे तो अंक ७-८-९-१३ फिर इकदम आये अब भी ११ १२ और १० वे अंक नहीं आये और न प्रति सप्ताह उसका आना आरंभ हुआ. क्या यही प्रबंध सराहनीय हो सकेगा? एक ग्राहक।

श्रीयुत पन्नालालजी वैसाखिया—गढाकोटा (सागर) से सूचित करते है कि मैने श्री शिखरजी, गिरनारजी, और सोना गिरजीको ७९) रु० देनेका विचार किया था. परन्तु उक्त स्थानोंमें विश्वास नीय प्रबन्ध न होनेके कारण मै चाहताहू उपर्युक्त रु० किसी मन्दिरजीके जीर्णोद्धारमें लगाऊ। अतएव जहांपर जीर्णोद्धारकी आवश्यकता हो वहांके पंच हमको उपर्युक्त पतेसे सूचना करै।

समाधिमरण कलकत्तेके **वंशीधर मारमलजीके** सुपुत्र **जीनमलजी** शीतज्वरसे अचानक ग्रसित हो गये थे. उस होनहार युवकको डाक्टरी (अंग्रेजी) दवाका तो पूर्वहीसे त्याग था. परन्तु रोगका दारा होते ही औषधि और क्रमसे अन्न पानादि का परिग्रहका त्यागकर दिया. द्वितीय चै. शुक्ला त्रयोदशीको नमोकार मंत्रका स्मरण और धर्मश्रवण करते २ शरीर पिंजरसे उनके प्राण पखेरू उड गये. दुखित अनाथोंके रक्षार्थ ४०) और श्रीजिनमंदिरजीके हेतु ९) प्रदानकर चंचल लक्ष्मीको सार्थककर गये है सल्लेखना इसीको कहते है.

भाऊलाल विद्यार्थी नांदगांव से सूचित करते है कि बम्बई से जो पिंडखजूर आती है उसकी चटाई (थैली) में कभी चटाईके बंध और कभी चमडे के बंध लिप रहते है इस लिये जैनियोंको पिंडखजूर न खाना चाहिये।

श्रीयुत सूरजलालजी छावडा खजांची वेट (भरतपुर) के सुपुत्र फूलचंदका विवाह मिती द्वितीय चैत्र शुक्ला पञ्चमीको श्रीयुत मुरलीधर पटवारीकी कन्याके साथ जैन विवाह पद्धति अनुसार निर्विघ्नतासे समाप्त हुआ। आपने मंदिरजीको १४) और महाविद्यालयको ९) अर्पण किये विवाहमें अनेक राज्य कर्मचारी उपस्थित हुए थे।

जिला छिन्दवाड़ा (बड़ा)—कालदोषसे यहांके जैनी भाइयोंमें अनैक्य भाव हो रहा था, धार्मिकरुचि मन्दतर हो रही थी, स्वाध्याय, शास्त्र सभा आदि सब शिथिल अवस्थाको प्राप्त होते जाते थे, परन्तु समय एकसा नहीं रहता है समय की उलट और मानके आवेषसे सबका विपर्य्यय परिणमन होता है, ऐसे ही अवसर पर सिवनी छपरा निवासी बुधमलजी पाटणीका आगमन हुवा उन्होंने सभा एकत्रित करके रोचक संभाषण दिया और भाइयोंको सचेत किया कि आप अपनी पूर्व अवस्थाका विचार कर सुधारकी चेष्टा करें, जिस समय जैसी बात असर करनेवाली होती है हो ही जाती है परिणाम यह हुवा कि वहांके भाइयोंने सरलता रूपी सलिलसे अपने कलुषित परिणामोंको प्रक्षालित कर स्वाध्याय करनेकी प्रतिज्ञा ली, शास्त्रसभामे भी बराबर आनेका विचार प्रगट किया यहां पाठशाला होनेकी उत्कट आवश्यक्ता दर्शाई गई जिसमे दोतीन अग्रसरोंने यह कार्य चलना स्वीकृत किया। वास्तवमें अज्ञान भावसे ईर्षा बुद्धि विरोध आदि भभक उठता है जिसके उपशमन करनेके लिये विद्यारूपी जलके अतिरिक्त कोई उपचार नहीं है।

सिवनी छपारा—स्थान सुप्रसिद्ध है जहां कि श्रीमान शेठ गोपाल साहजीके तुल्य गुनाढ्य और धनाढ्य २-४ हो गये है, यहा परवार मण्डलीके बहुतसे गृह है जिनके पुत्र प्रपौत्र पुत्रिकाएं जैन पाठशालाके न होनेसे धर्मविद्यासे अनभिज्ञ बनी रहती है। जिस प्रकार यहा १६-१७ जैन मन्दिर गत कुछ वर्षोंमें निर्माण किये गये है उसी प्रकार यदि धनिक महाशय इसी आवश्यक्ता पर लक्ष्य देकर, चाहे तो प्रत्येक अपनी २ सामर्थ्यसे उतनीही पाठशाला स्थापित कर सक्ते है परन्तु शोक है कि इस समय वहा एक भी पाठशाला नहीं है इस स्थानपर यह प्रबन्ध हो जावे तो बहुत शीघ्र योग्य पण्डित तय्यार हो सक्ते है। यदि यहाकी जैन मण्डली एकताका आश्रयसे विचार करेंगी तो शीघ्रही यह कार्य हो जावेगा पूर्ण आशा है कि श्रीमन्त शेठ **पूरण साहजी** आदि महाशय हमारी प्रार्थनापर ध्यान देंगे।

प्राप्ति

हिन्दी केशरी—हिन्दुस्थानमे हिन्दी भाषाके जितने राजकीय विषयक पत्र निकलते हैं वे प्राय निरालाही ढंग लिये हुए पाये जाते है, और यथार्थ स्वदेशाभिमानसे बहुधा कोरे ही रहते है, हर्ष है कि सहयोगी हिन्दीकेशरी इस अभावको पूरा करनेमें समर्थ हुआ है मराठी, गुजराती, बंगला वगैरह अन्य भाषाओंके पोलीटिकल विषयक पत्रोंमें आजकल मराठी केशरीका विशेष सम्मान है. इसी कारण हिन्दी रसिकोंके हितार्थ हिन्दीकेशरी उसका बहु अंश अनुकरण किया करता है. लेख राजकीय विद्वत्तासे भरे पूरे रहते है भाषाकी शैलीभी उत्तम है हिन्दी साहित्यके रुचिया उससे अवश्य लाभ उठा सके है मराठी केशरीके बीस सहस्र ग्राहकोंके समक्ष इसकी ग्राहक संख्या (यद्यपि दिनोंदिन बढ़ रही है तौभी!) वर्तमानमें पासंग मात्र है. जिन हिन्दी प्रेमियोंके हृदयमें देशहितकी किंचित भी गंध है, वे इस होनहार और देशोपकारी पत्रके ग्राहक बनने और बनानेमें कभी कमी नहीं करेंगे.

नागरी प्रचारक बाबू गोपाललाल खत्री द्वारा मासिक सम्पादित होता है। लेख उपयोगी, और छपाई सफाई अच्छी है। मूल्य १) वार्षिक

मिलनेका पता—नागरी प्रचारक लखनऊ।

खत्री हितकारी—बालमकुन्दजी शर्मा (नैपाली खपरा बनारस द्वारा मासिक सम्पादित और प्रकाशित होता है। लेख अच्छे और छपाई भी अच्छी है। मूल्य वार्षिक ॥) है।

१ प्रायश्चित्ताभिषेक (पूजसार) इन्द्रनन्दि) २ जैनाभिषेक (पूज्यपाद) ३ अकलंक प्रायश्चित श्रीयुत टोडुजी मन्नालाल द्वारा हस्त लिखित प्राप्त हुई है। हम उनके कृतज्ञ है।

आवश्यक्ता

नागपुरकी दि० जैन संस्कृतपाठशालाके पढनेकेलिये ९ विद्यार्थी भरती करनेकी आवश्यकता है। विद्यार्थीयोंको ९ वर्षतक रहकर पढना होगा। बीचमें जानेसे उनको दी हइ स्कालरशिप वसूल की जायगी वे विद्यार्थी प्रथम भरती किये जायेंगे जो विलेज व टाउन स्कूलकी परीक्षा पास हों। रहनेको स्थान और ९) रु० मासिक स्कालरशिप दी जायगी। प्रार्थनापत्र आनेसे सब खुलासा कर लिया जायगा।

सेठ नत्थुसाव मोतीसाव ठरकी
मंत्री, विद्याविभाग
नागपुर.

उपदेशककी आवश्यक्ता, हिन्दी, गुजराती, मराठी आदि किसी भी भाषाके जानने वाले एक योग्य उपदेशककी आवश्यकता है। धर्म सिद्धान्तोंसे अनभिज्ञ न हो, तनख्वाह २० से ३० रु. तक दी जा सकती है।

ठाकुरदास भगवानदास झवेरी
मंत्री उपदेशक भंडार
रत्नाकर पेलेस बम्बई

शुरमा ! शुरमा ! ! शुरमा ! ! !

जैनग्रन्थ रत्नाकर कार्यालयके सिवाय हमारा एक **स्वदेशी कार्यालय** नामका विभाग है । जिसमें १० वर्ष हुए अनेक प्रकारके शुरमें बनते हैं और सब भाइयोंके नेत्रोंकी रक्षार्थ सहायता पहुंचाई जाती है । हमारे यहांके बने हुए शुरमें सर्व साधारण और जैन समाजमें प्रसिद्ध हैं जिन २ महाशयोंने हमारे यहांसे एक बार एक शीशी मगाई है, वे आज तक हमारा ही शुरमा मगाते हैं और अपने दोस्तोंकेलिये भी मगा देते हैं इसकारण हमने इसके विशेष इस्तहार न देकर जो भाई इस शुरमेसे अपरिचित हैं उनको इसके प्रत्यक्ष गुण दिखानेके लिये **सर्वप्रकारके सुरमेकी २००० शीशियें विना मूल्य** बतौर नमूनेके वितरण करनेका प्रबंध किया है सो जिनको इस शुरमेसे अपने अमूल्य नेत्रोंकी रक्षा करना हो, वे नीचे लिखे शुरमोंमेसे चाहे जिस प्रकारके शुरमेकी एक शीशी मंगा लेवैं परन्तु डाकखर्च और पेकिंग खर्चके लिये ≡) आनेके टिकट चिट्ठीके साथ अवश्य ही भेजने होंगे एक भाईको एक ही शीशी भेजी जायगी ।

* **काला शुर्मा नं० १** यह शुर्मा हमेशह नेत्रोंमें लगानेसे सब रोग वा आखोंकी गर्मी नष्ट करके ज्योतिको बढाता है । मूल्य आधे तोलेकी शीशीका ॥) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

* **कालाशुर्मा नं २** इस सुरमेको प्रात काल और सोते समय लगानेसे नेत्रोंके सब रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं । यह शुरमा बहुत बढिया और ठंडा है—इस शुरमेको भोपालपटनमके तहसीलदार साहब मूलचंदजी परवार प्राय ८ वर्षसे लगाते हैं इन्होंने अपने अनेक हितैषी उहदेदारोंको इस शुरमेके भक्त बनाये हैं उनके अनेक प्रशंसा पत्र हमारे पास हैं हम उन्हें न छपाकर इतना ही कहते हैं कि १ शीशी मगाकर अवश्य ही आजमा लेवे । मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

***सफेद शुरमा नं० ४** इस सुरमेको सवेरे तथा शामको चार बजे लगाकर ५ मिनिटके बाद नं० २ का ठंडा शुरमा लगाया जाय. धुंद नजला, दृष्टिमन्दता, रतोंदा आदि नेत्रके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं । असली मधुसे (शहदसे) सलाई भिजोकर अथवा शुरमेको मधुमें मिलाकर सलाईसे लगाया जावे तो एक वर्षतकका फूला भी प्रायः कट जाता है परन्तु शहद असली न होगा और उसमें खांडकी चासनी वगैरह मिली होगी तो उल्टा नुकसान करैगा. मूल्य डेढ मासेकी शीशीका १) नमूना आधा मासा ।

***नयनामृत अर्क नं० ८** इसको सलाईसे दिनरातमे तीन चार बार लगानेसे नं० १ के मुवाफिक गुण करता है । मूल्य ।) नमूना मुफत ।

* **तरल सुरमा (अर्क) नं० ९.** मूल्य ॥) वृद्धों व विधवा स्त्रियोंके लिये है । तथा दुखती आईहुई आंखोंके लिये तो यह रामबाण है तीन चार दिन तक दिनरातमे ४ बार लगानेसे दुखती आई हुई आखोंको आराम कर देता है । एक २ सीसी सब गृहस्थोंको अपने घरमे रखना चाहिये, जो महाशय, दुखती आंखोंवालोंको मुफत बांटना चाहें उन्हे हम इसे बहुत किफायतसे भेज सकते हैं।

मिलनेका पता—पन्नालाल जैन

मालिक, स्वदेशी कार्यालय.

ठि० हीराबाग पो० गिरगांव-मुंबई.

पवित्र स्वदेशी कशमीरी केशर ।

सूरज छाप वगैरह विलायती केशरमें शराब वगैरह अशुद्ध पदार्थोंका मेल होता है यह बात अब जगत्प्रसिद्ध हो गई है इसकारण मुम्बईके स्वेताम्बरी भाइयोंने पंचायती करके स्वदेशी पवित्र कशमीरी केशरकेलिये एक दुकान खोल दी है, और काशमीरमे खास जैनीभाई भेजकर गांव २ के किसानोंसे खरीदकर केशरका संग्रह करके सर्वत्र पवित्र केशरके पहुचानेका प्रबंध किया है । अनेक भाइयोंने इस केशरमे भी अशुद्ध पदार्थ मिले हुये बताये थे इसकारण भारतवर्षके जगत्प्रसिद्ध पदार्थ विज्ञानके प्रोफेसर गज्जर महाशयके कारखानेमे यह केशर भेजकर परीक्षा कराई तो उन्होंने नीचें लिखा सार्टीफिकट भेजा है ।

TECHNO CHEMICAL LABORATORY,
Director—Prof T K gajjar
M A B S E A C S
Girgaum Tram Terminus.
Bombay, 9th February 1907

THE SWADESHI Co,
Mandvi Bombay

Dear Sirs,

The Sample of Swadeshi Saffron sent by you has been found to be a pure genuine Sample of Saffron unmixed with any adulterants

Yours faithfully,
(Sd) D D KANGA,
Anatytial Chemist.

इस कारण हमको पूर्णतया विश्वास होनेपर हमने भी दिगम्बरीय जैन समाजमे इस केशरका प्रचार करनेके लिये जैनमित्रमे इस्तहार दिया है सो जिन भाइयोंको यह पवित्र केशर चाहिये (अगर हमारा विश्वास हो तो) हमसे ही मगाया करें । अन्य जगहसे मगायेंगे तो असली पवित्र केशर मिलना मुशकिल है । मूल्य १।) रु. तोला । पाव रतल, आधा रतल या एक रतल इकट्ठी लेनेसे ४५) रु रतल है । रतल ३९ तोलका होता है । यह भाव थोडेही दिन रहैगा क्योंकि माल बहुत थोडा रह गया है सो शीघ्र ही भाव चढ जायगा ।

मिलनेका पता—

पन्नालालजैन मालिक स्वदेशी कार्यालय ।

ठि० हीराबाग-पोष्ट गिरगांव (मुंबई.)

बंबईके छपे शुद्ध जैनग्रंथ ।

शाकटायनव्याकरण प्रक्रियासंग्रह ...	३।)
तत्त्वार्थसूत्र मूल बम्बईका छपा हुआ शुद्ध पाठ	≈)
कातन्त्ररूपमाला व्याकरण संस्कृत ...	१)
जैननित्यपाठसंग्रह १६ पाठोंका रेशमी गुटका संस्कृत	।≈)
बनारसीविलास व बनारसीदासजीका जीवनचरित्र	१॥)
ब्रह्मविलास (भगवतीविलास) ...	१॥)
द्रव्यसंग्रह मूल, छाया, अन्वय, हिंदी मराठी अर्थसह	।=)
रत्नकरंडश्रावकाचार अन्वयार्थसहित-फिरसे छपा	।)
सप्तभंगितरंगिणी भाषाटीकासहित	१)
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय अन्वयार्थ और भाषाटीकासहित	१।)
पंचास्तिकाय संस्कृतटीका और भाषाटीकासहित	१॥)
अंजनासुंदरी नाटक-बहुत बढिया	॥)
सुकुमाल उपन्यास—बाबू जैनेन्द्रकिशोरजीकृत	।≈)
जैनबालबोधक दूसरा भाग ,, छपगया	॥)
बालबोधव्याकरण प्रथमभाग संस्कृतका हिंदीमें	।≈)
बालबोधव्याकरण दूसराभाग छपगया	।=)
चौवीसठाणाकी चर्चा नयी छपी	।~)

जैनपदसंग्रह प्रथमभाग ।

कविवर दौलतरामजीके पदोंकी प्रशंसा करनेकी जरूरत नहीं है । सबही बालगोपाल उनके भजनोंके प्यासे रहते हैं । उनके एकही पदके पाठसे चित्त सब दुःख भूलकर आनन्दसागरमें गोते लगाने लगता है । प्रत्येक जैनीके घरमें यह पुस्तक रहना चाहिये । पहली वार दौलतविलासके नामसे हमने यह संग्रह छपवाया था, जो हाथोंहाथ उठ गया । अबकी बार छहढाला निकालकर जैन पदसंग्रहके नामसे निर्णयसागरके जगत्प्रसिद्ध टाइपमें छपवाया है । मूल्य भी पहलेकी अपेक्षा कम अर्थात् सिर्फ छह आना रक्खा है । अबकी वार प्रत्येक कठिन शब्दपर टिप्पणी दी गई है, और बहुतसे नवीनपद भी संग्रह किये है ।

जैनबालबोधक द्वितीयभाग ।

जिसकी लोगोंको वर्षोंसे चाह थी । जैन पाठशालाओंके अध्यापकोंने जिसके विषयमें लिख लिखकर हमको तंग कर डाला, जिसके विना जैन परीक्षालयके क्रमकी पढाई नहीं हो सकती थी, वह जैनबालबोधका दूसरा भाग तयार हो गया । पुस्तक कैसी बनी है, इसकी प्रशंसाकी जरूरत नहीं है । जैनियोंके प्रसिद्ध जैनमित्रके सम्पादकने इसकी प्रशंसा की है । प्रत्येक जैनी बालकको तो यह पुस्तक पढना ही चाहिये, किन्तु प्रौढ पुरुषोंको भी इसके पढनेसे लाभ होगा । निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई देखने योग्य है । मूल्य आठ आना पोष्टेज अलग ।

मंगानेका पत्ता—पन्नालाल जैन—

पोष्ट गिरगांव—बम्बई ।

'कर्नाटक' प्रेस, मुंबई.

Registered No. B. 283.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा मास्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
दूसरा भोईवाड़ा पो० कालबादेवी बम्बई ।

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

वर्ष ८ वां] ज्येष्ठ कृष्णा २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द । ता० २९ मई सन् १९०७ ईस्वी । [अंक १५ वां ।

दिगम्बरजैनपरीक्षालय बम्बई ।

सम्पूर्ण जैन पाठशालाओंके व्यवस्थापकों तथा अध्यापकोंको विदित हो कि, आगामी आषाढ मासके कृष्णपक्षमें सम्पूर्ण पाठशालाओंकी परीक्षा लेनेका प्रबन्ध किया गया है । इस लिये प्रवेशिकापरीक्षा और पंडितपरीक्षाके कौन कौनसे खंडमें कितने २ विद्यार्थी परीक्षामें बैठेंगे, इसकी सूचना हमको शीघ्र मिलनी चाहिये, जिससे प्रश्नपत्रादि तयार करानेमें सुभीता पड़े । इस वर्ष कारण विशेषसे प्रत्येक विषयमें अलग २ परीक्षा लेना निश्चय किया है ।

प्रत्येक पाठशालामें शिक्षक कितने है, बालक कितने हैं, शिक्षण किस पद्धतिसे होता है, आदि सब बातोंका खुलासा भी लिखिये । जिनके पास पठनक्रम व नियमावली न हो, हमसे मगा लेवें ।

रावजी सखाराम दोसी
मंत्री परीक्षालय—शोलापुर



मनरञ्जन तैल ।

यह दुनियां भरमे खुशबूकी खान और चित्तको गद गद करनेवाला है ।

हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंके मथनकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है। इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठडक पहुचती है। बदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूर होकर लोहू और ताकत बढ़ती है। फी शीशी ॥=) डा. ख. ।)

खांसी की दवा ।

इस दवाको खानेसे खासी तथा तर स्वास छातीका दर्द आदि कफ सम्बन्धी रोग फौरन दूर हो जाते है। की० ॥) शीशी डा० ≈)

निमकसुलेमानी ।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, बदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजिलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, बवासीर प्रमेहनाशक है। स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है। फी शीशी ॥) डा. ख. अलग

दंतकुसुमाकर ।

इसके लगानेसे दांतोंका हिलना मसूडोका फूलना, खूनदर्द आदि आराम हो दांत मोतीकी तरह चमकते है। रोज लगानेसे दांत आजन्म दृढ बने रहेंगे। फी डिब्बी ।)

दवा दादकी ।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर भगाती है। फी डिब्बी ।)

गंधकवटी ।

यदि बालकोंको हमेशा स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसे मगाइये इससे बच्चोका ज्वर खासी दस्त वायुरोग दूर होकर खूब मोटा ताजा हो जाता है इसकी गोली रोज खिलाना चाहिये. कीमत. ॥) सी. डा. ≈

पंचतिक्तवटिका ।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है। इसमे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते है। किं०॥)डा.=)

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई

प्रमेहनाशक अपूर्वताकतकी दवा ।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनकी सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना, प्रसगकी इच्छा न होना, नपुंसकता, नाताकती, कमरमें दरद, थोड़ा चलनेसे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुशकी वा जर्दी, बदनमें, फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्बलता, रगोंकी कमजोरी. उठती जवानीमें कुचालसे पैदा हुई नामर्दी,, आदि सब रोग जडसे नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है। जिसमें उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आखोंमें रोशनी, बदनमें फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है। मूल्य १ डिब्बाका २॥), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १३) खर्च माफ.

श्वासारिष्ट ।

इससे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है। कीमत १) डा० ॥)

नपुंसकत्वारि तैल ।

इसके लगानेसे गुप्तभागसबंधी सर्व प्रकारके रोग दूर होते है। फी सीसी १) डाकखर्च =)

प्रदरांतक चूर्ण ।

इससे स्त्रियोके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस सैंबधी सर्व विकार दूर होते हैं। कीमत १) डा० =)

नयनामृत सुरमा ।

इसके लगानेसे आखोंका जाला धुन्ध, फुली, पानी, बहना, सुर्खी, पत्थर आदि नेत्ररोग दूर होते है और ज्योति बढाता, ठडक रखता और पढ़ते २ आखों नहीं थकती है। फी शीशी १) लगानेकी सलाई ।

अर्क कपूर ।

यह हैजा व अतीसारकी अक्सीर दवा है और बदहजमी पेचिस मरोडको भी लाभ कारी है। फी सी० ।) दोसे कम न भेजेंगे.

शिरदर्द नाशन तैल ।

यथा नाम तथा गुण की०॥) सी. डा० ≈)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य,
आयुर्वेदीय औषधालय—इटावा (U. P)

उत्तम और सस्ते जैनपुस्तक ॥

जैनग्रन्थसंग्रह

छप गया ! छप गया !! छप गया !!! जिस पुस्तकके लिये ग्राहकगण चिट्ठियोंकी भरमार कर रहे थे वही फिर दूसरी बार छप गई साथही मूल्य भी कम कर दिया है इसमें छोटी बडा सस्कृत और भाषाकी ५० पुस्तकोंका संग्रह है परदेशमें केवल यही एक पुस्तक पास रखना काफी है सुन्दर टाईपसे पुष्ट कागजपर छपी और जिल्द बन्धी है जल्दी न मगानेसे पछताना होगा कि ०॥) डा० माफ ।

व्याख्यानरत्नमाला ।

विद्या, धर्म, सत्सगति, कुरीतिके विषयमें ४ भाग	≠)
नवीन होली सग्रह, एकवार अवश्य पढिये ...	)॥
सगीत मनोरमा (नोटकीकी राहमें) ..	=)
सगीत नेमचन्द्रिका (नोटकीकी राहमें) ...	=)
जैनभजनसग्रह (चाले भी लिखी है)	=)
स्तोत्रशतक (अनेक रागोमें १०० स्तुतियां है) .	=)
प्रश्नोत्तरमाला (चर्चाकी पुस्तक है) ...	-)
तत्वार्थसूत्रजी मूल	-)
पञ्चमङ्गल पाठ	)॥
बारहमासा राजुलजी	)॥
बारहमासा सीताजी	)।
बारहमासा मुनिजी	)।
बारहमासा वज्रदत ...	)॥
वैराग्य भावना	)।
अध्यात्म पचासा ...	)।
दश आरती	)।
निर्वाणकाण्ड भाषा	)।
धर्मपचासा . .	)।
हुक्का निषेध ...	)।
दु खहरण विनती . ..	)।
सकटहरण विनती	)।
बारह भावना सग्रह	)।
समाधिमरण (एक विनती सहित) ..	)।
परमार्थ जकडी, बा० राजुल सोरटमे .	)।
पुरार पचीसी	)।
जैनबालगुटका (बालकोंका पढाइये) ...	)।
इष्ट छत्तीसी निर्वाणकाण्ड गाथा ...	)॥
बाईसपरीषह, बारह भावना सहित	)॥
प्रश्नोत्तर नेमराजुल	)॥
आलोचनापाठ अर्थसहित	)॥
ब्याहला नेमिनाथ	)।
सामायक भाषा	)।
सप्तऋषि पूजा	)।
निशिभोजन भुजन कथा	)।
भक्तामर सस्कृत व भाषा	-)

विदेशी खांड निषेध)॥ } दोनों १०० इकट्ठी लने
वृद्धापेका विवाह)॥ } से २ रु० सैंकडा

नियमावली ।

१ चार आनेसे कमकी पुस्तकें नहीं भेजते हैं ।
२ एक किस्मकी ५ पु इकट्ठी लेनेसे १ मुफ्त ।
३ डाक खर्च पाससे देते है ग्राहकोंको सिर्फ मनीआर्डर फीस देना होगी ।

मिलनेका पता —
बाबू वीरसिंह जैनी, इटावा (U. P.)

जैनमित्र.

जेष्ठ कृष्णा २ श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४३३ ता० २९ मई सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणि।

जातिभेदके विषयमें एक यूरोपियन की सम्मति।

आसामके भूतपूर्व चीफकमिश्नर भारतहितैषी सर हेनरी काटन के. सी. एस. आईने अपनी न्यू इंडिया नामक पुस्तकमें भारतवासियों और अंग्रेजोंके वैमनस्य पर विचार करते हुए लिखा है कि, "दोनों जातियोंके (अंग्रेज तथा भारतवासियोंके) परस्परके मेल मिलाप होनेमें जो कठिनाईया हैं, उनके विषयमें सर्व साधारण ऐंग्लोइंडियन लोगोंके जो विचार हैं, उनको लंदनमें इंडियन एसोसियेशन नामक सभाके अधिवेशनमें सर लिपेल ग्रिफिन महाशयने भलीभांति इस प्रकार प्रगट किया है कि, जबतक हिन्दूलोग अंग्रेजोंके साथ भोजन नहीं करेंगे और जबतक हिन्दू रमणियोंका साधारण समाजमें समागम नहीं होगा, तबतक पूर्व और पश्चिमके लोगोके परस्पर सामाजिक मेलजोलमें कठिनाई बराबर बनी रहेगी; क्योंकि जातिभेद और देशभेद ही इन दोनोंकी जुदाईका मूल कारण है। यह सम्मति ऐंग्लोइंडियन लोगोंके विचारोंको पुष्ट करती है, किन्तु इस सम्मतिका आधार केवळ ऊपरी बातोंपर ही निर्भर है। हिन्दू लोग न तो मुसलमानोंके साथ भोजन करते हैं और न देशी क्रिस्तानोंके साथ। न वे ऐसे हिन्दूके साथ ही भोजन करते हैं कि, जिसने यूरोपकी यात्रा की हो। हिन्दुओंकी भिन्न २ जातियोंमें ही न तो आपसमें भोजन व्यवहार है, और न विवाह व्यवहार। तथापि उनके सम्बन्ध शिथिल नहीं है। और जातिपांतिकी प्रणालि भारतवर्षकी भिन्न २ जाति उपजातिके सामाजिक समागममें कभी बाधक नहीं हुई है। हिन्दू और मुसलमान रमणियां सर्वसाधारण समाजेंम यद्यपि नहीं आती हैं, और इसीभांति वे उस सामाजिक मेलमिलापसे भी जिसमें कि, उनके पुरुष संयुक्त होते हैं सर्वथा अनभिज्ञ हैं; तथापि हिन्दू और मुसलमानोंके परस्परका सामाजिक मेलजोल बहुत ही घनिष्ठ है।" काटन साहबकी उक्त सम्मतिपर हमारे देशके उन बाबू लोगोंको विचार करना चाहिये, जो भारतवर्षकी उन्नतिमें जातिभेदको बाधक समझते हैं, और आचारविचारको भुलाकर सबके एकसाथ खानेमें ही देशोन्नतिके तत्त्वको छुपा हुआ समझते हैं।

विदेशी शक्कर अपवित्र नहीं है।

शोलापुरके शेठ हीराचंद नेमिचन्दजीने हमारे पास एक लेख भेजा है, उसमें उन्होंने मेसर्स मारटिन एन्ड कम्पनी कलकत्ताके "जार्डन साहब" के एक लेखका उल्लेख किया है, जो उन्होंने कलकत्तेकी प्रदर्शनीमें पढाथा उससे जान पडता है, कि, अंग्रेज व्यापारियोंको अब अपने शक्करके व्यापार की रक्षा करनेकी चिन्ता हो गई है। वे अब अन्य उपाय न देखकर लोगोंको धोखा देकर अपनी स्वार्थसिद्धि करनेके प्रयत्नमें हैं। परन्तु काठकी हंडी बहुत दिनतक नहीं चढ़ सकती। विलायती वस्तुओंकी शुद्धताकी पोल अच्छी तरह खुल चुकी है। अब किसीके बहकानेसे लोग अपना धर्मभ्रष्ट करनेको उद्यत नहीं होंगे। जार्डन साहब फरमाते हैं "हिन्दुस्थानमे जो शक्कर बनती है, वह हड्डीके कोयलोंसे साफ की जाती है। क्योंकि यहा रससे गुड बनाकर फिर शक्कर बनानेकी प्रथा है, इससे उसमें विना हड्डीके कोयलेका उपयोग किये काम ही नहीं चल सकता है यदि रससे गुड़ न बनाकर सीधी शक्कर बनाई जाती, तो हड्डियोंकी आवश्यकता न होती। विदेशोंमें रससेही सीधी शक्कर बनानेकी पद्धति है। इसलिये वह केवल गंधकके तेजाबसे साफ हो जाती है। उसमें हड्डी, खून वगैरह अपवित्र चीजोंका सर्वथा उपयोग नहीं किया जाता।" समझे पाठक! साहिब बहादुर कैसे सत्यवक्ता है? यहाकी शक्कर अपवित्र होती है, और विदेशी सर्वथा पवित्र! संक्षेपमें आपसे पहले शायदही किसी विदेशीने ऐसा कहनेका साहस किया होगा। एक और साहिबके भाईबंद पुस्तकों, अखबारों और रिपोर्टोंमें लिखते हैं कि, विदेशी शक्करके साफ करनेमें खून, हड्डी, थूक, कफ और कोढियोंके सड़े मुर्दे तक काममें लाये जाते हैं, अनेक लोग अपनी आंखोंसे विदेशी कारखाने देखकर इस बातको सही बतला रहे हैं, और डाक्टर लोग विदेशी शक्करको अस्वास्थ्यकर सिद्ध कर रहे हैं, दूसरी ओर जार्डनसाहब अपने व्यापारको गिरते देखकर विदेशी शक्करको पवित्र बनानेका राग अलापते हैं। सुनते हैं, मारटिन कम्पनी विदेशी शक्करकी बडी भारी व्यापारी कम्पनी है। शायद इसीलिये जार्डन साहब यह विषम प्रयत्न करनेको तत्पर हुए हैं। पाठकोंको सोचना चाहिये कि, यदि साहिब बहादुरके कथनानुसार विदेशी शक्कर पवित्र होती, तो स्वयं गवर्णमेंटकी ओरसे इस बातका प्रतिवाद किया जाता, और उन अखबारोंका मुंह बन्द किया जाता, जो निरन्तर विदेशी शक्करकी बनावटकी एकसे एक अधिक घृणास्पद बातें प्रकाशित किया करते हैं। गौरांगोंके स्वार्थकी हानि हमारी गवर्णमेंट कभी सहन नहीं करती। और विदेशी व्यापारियोंको अपनी शक्करकी पवित्रताका दावा होता, तो क्या वे अभीतक चुप बैठे रहते? न जाने कबके जमीन आसमान एक कर डालते। पार्लीमेंटतकमें यह विषय उपस्थित किया जाता। परन्तु गौरांग समाज सर्वथा निश्चेष्ट है, तब हम मौनं अर्ध सम्मतिके अनुसार क्यों न विदेशी शक्करको अपवित्रताकी आकर समझें? जार्डन सा० ने हिन्दुस्थानकी शक्करमें जो अपवित्रताका आरोप किया है, वह केवल उन कारखानोंकी शक्करको लक्ष्य करके है, जो अंग्रेजोंके द्वारा परिचालित हो रहे हैं। साहबी प्रकृतिही ऐसी है कि, वह अर्थसिद्धिके सन्मुख अपवित्रताको कुछ चीज नहीं समझती। इसीलिये इस हिन्दुस्थानकी पवित्र भूमिमें भी वे उसी राक्षसी प्रक्रियासे शक्कर बनाते हैं, जिससे उनके स्वदेशमें बनती है, और देशी शब्दको लांछित करते हैं। यद्यपि किसी अंशमें उक्त कारखानोंकी शक्कर देशी कहलाती है, परन्तु यथार्थमें वह विदेशीही है। उससे हमें उसी प्रकाररहना चाहिये, जिस तरह विदेशीसे डरते हैं। असली पवित्र शक्कर वह है, जो पुरानी प्रक्रियासे देशी कारखानोंमें तयार होती है। उनमें किसीप्रकारकी अशुद्धताकी शंका नहीं की जा सकती। सुना है कि कलकत्तेके आसपास खजूरके झाड़ोंसे और मद्रास प्रान्तके तिनवेली जिलेमें ताड़से शक्कर बनानेके कई अंग्रेजी कारखाने हैं जिनमें हड्डियोंके चूर्णका उपयोग किया जाता है। अतएव वहांकी शक्करको स्वदेशी समझकर बुद्धिमानोंको धोखेमें नहीं आना चाहिये।

ऐसे समयमें जब कि लोगोंकी श्रद्धा प्राचीन ग्रन्थोंके पठम पाठनकी ओर बढ़ रही है, और लोग यह समझने लगे हैं कि, हमारे धर्मका सर्वस्व संस्कृत प्राकृत ग्रन्थोंमेंही है, तब इस प्रयत्नकी बड़ी भारी आवश्यकता है कि, उनके सन्मुख वे ग्रन्थ सरल भाषा-टीका करके उपस्थित किये जावें। वर्तमानमें हमारे यहां एक भी भाषाग्रन्थ ऐसा नहीं है, जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्योंके आचारोंका विचार हो। यद्यपि श्रावकाचारके बहुतसे ग्रन्थ प्रचलित हैं, परन्तु उनमें उन बातोंका वर्णन नहीं है, जिनसे वर्णव्यवस्थाका सम्बन्ध है। सूतक, प्रेतक दायभाग, नित्यक्रिया, सोलह संस्कार आदि विषय त्रिवर्णाचार ग्रन्थोंके सिवाय अन्यत्र नहीं मिल सकते। उनके विना हमारे समाजमें आचार सम्बन्धी बडा भारी विप्लव मच रहा है। और हम लोग संस्कारहीन हो रहे है। इसलिये यदि कोई धर्मात्मा धनिक इस समय किसी त्रिवर्णाचारको भाषा टीकासहित मुद्रित कराके वितरण करें अथवा स्वल्पमूल्यमें विक्रय करें, तो समाजको बडा भारी लाभ हो, और उन्हें अनन्त पुण्यका बंध हो, क्योंकि शास्त्रदान सारीखा दूसरा दान नहीं है।

त्रिवर्णाचार सम्बन्धी ग्रन्थोंके प्रचारकी आवश्यकता।

श्वेताम्बरी भाइयोंने हजारीबागके डिपुटी कमिश्नरको लिखा है कि शिखरजीका पहाड हमारा है; दिगाम्बरियोंका नाम तक भी नहीं लिया। यद्यपि हाईकोर्टसे यह बात तय हो चकी है कि दिगम्बरी श्वेताम्बरी दोनों संप्रदायोंका तीर्थराज पर समान हक है. परन्तु नहीं मालूम श्वेताम्बरी भाई क्यों [१] अपना २ ही राग गाया करते है, फिर इस समय यह मोका भी नहीं है भाइयो! दोनों समूह एकमत होकर पवित्र भूमिकी रक्षा-करो और अविनयसे बचाओ,—इसीमें भलाई है।

बार २ प्रेरणा करने और प्रार्थनपत्र भेजने पर भी कानपुरकी प्रतिष्ठाका व्योरा हमें प्रगट नहीं हुआ. और न उसकी खुलासा रिपोर्ट जैन गजटमें ही मुद्रित कराई गई. यह बड़े खेदकी बात है. हा! सहयोगी जैन गजटने इस सम्बन्धमें किसी रीतिसे बहुत कुछ प्रगट किया है परन्तु उससे हमें तोष नहीं हो सक्ता. आशा है कि कानपुरके जैनी भाई प्रमाद छोड़कर प्रतिष्ठाकी रिपोर्ट भजनेकी कृपा करेंगे।

जैनगटके सम्पादनका भार श्रीमान् बाबू जुगलकिशोरजीने स्वीकार किया है, आप जैन जातिकी सेवा करके अपना जीवन सफल करनेको समर्थ हुए हैं यह जानकर हमें सन्तोष हुआ है भगवान आपके मनोर्थ पूर्ण करें. आप गोमठसारादि सच्छास्त्रोंमें कुशल हैं. इसलिये निर्मूल विवादोंको छोडकर धार्मिक और स्वदेशी विषयोंसे जैनजगटकी शोभा बढावेंगे।

फलटनके जैनी भाइयोंने जैनविवाहपद्धतिका अच्छा सन्मान किया है. वे लोग सम्बन्ध (सगाई) करते समयही ठहराव कर लेते है। और सम्बन्धीसे खुलाशा कह देते हैं कि विवाह आर्षविधि अनुसार होगा. अगर आपको स्वीकार हो तो नातेदारी कीजिये अन्यथा नहीं। वर्तमानमें यहा ७ विवाह शास्त्रविहित रीत्यानुसार हुए है। फल्टनके भाइयो! तुह्मारे साहस, पुरुषार्थ, ऐक्य, और श्रद्धानको धन्य है. आपही सदश महाशयोंके द्वारा इस जैन जातिका उद्धार होगा. आपके विना मिथ्याविवाहपद्धति रूप कुटिल शत्रुका ध्वंश होना क्यों कर संभव है. देखें कहा २ के जैनी फल्टण का अनुकरण करके हमें सन्तोष देते हैं. बहुधा देखा गया है कि अशिक्षित और मिथ्या हठग्राही मनुष्यों (खासकर मुखियाओं) के द्वारा इस धर्म कार्यमें विघ्न डाले जाते हैं वे पुरानी लकीरके फकीर. गाली (क्लिष्ट) गीत वा भडैओंके रुचिया, और स्त्रियोंके हुक्ममें चलनेवाले, हजार कहने पर भी अपनी हठ नहीं छोडते. मूर्ख! पवित्र जैन धर्म वा पुत्र पुत्रीके घातक बनते हैं और कांचके बदले रत्न खो बैठते हैं। उन्हें इस हट और मूर्खताका पस्त्य अवश्य मिलैगा। पाठको! विचार तो करो कि कहां तो परमपूज्य ऋषिप्रणीत पवित्र धर्म-रीत्यानुसार विवाह, और कहा मिथ्यात्व पोषक कुरीतिया [१] जो सच्चे श्रद्धानी हैं, जैनधर्मकी प्रभावना चाहते हैं, अपने पुत्र पुत्रीके हितैषी है, और मोक्षमार्गमें प्रवृति रखते हैं, वे मिथ्या पद्धति से शादी करके अपने धन और धर्म की बरबादी कभी न करेंगे. जैनपद्धति के अनुसार विवाह करने से भगवानकी आज्ञाका पालन होता है, प्रभावनागकी वृद्धि होती है. जैन धर्मका अंकुर पुष्ट होता है. अन्यधर्मियोंके चित्तमेंभी प्रतिष्ठा बढ़ती है. वर कन्याकी आयु सुखसे बीतती है दोनोंको शीलव्रत ग्रहणकर लेनेसे असदाचार नहीं होता. कर्मकाजमें भी धर्मकाज हो जाता है बुरे कामोंमें धन नहीं लगने पाता, संसारमें कीर्ति मिलती है, रात्रिको रसोई नहीं बननेसे विपुल हिंसाका बचाव होता है, जल छाननेका प्रबंध रहता है. रंडी भडुओंके मनोर्थके मन मनहीमें रहने हैं, अश्लील गीत जिनसे भावी संतानको बड़ी चोट लगती है नहीं गाये जाते, जैनधर्मविहित गीत गाये जानेसे श्रोताओंको उपदेश मिलता है, पंचनमोकारका स्मरण और उच्चारण होता है, शास्त्रसभा वा सामाजिक सभाओंके होनेसे धर्म और समाजका बल बढ़ता है, मंदिर पाठशाला वा अनथालयको द्रव्यकी प्राप्ति हो जाती है, मिथ्यात्वका अंकुर सूख जाता है. जैनविवाहपद्धति अनुसार विवाह करनेवालोंकी चाह और उन्हें द्रव्यप्राप्ति होनेसे विद्यावृद्धि होती है, तथा पडितोंकी सख्या बढती है, और जैनमित्रमें उनका नाम प्रकाशित किया जाता है, तथा धार्मिक सभाओंकी ओरसे पदक और सार्टीफिक्ट मिलते हैं.

कविता।

मत्तगयन्द।

मोर अभाग अनुग्रह आपतें,
दाम कौ नाम रह्यौ ढिग नाहीं।
तैसहिं ज्ञान पराक्रम हाय।
नसौ सिगरौ न रह्यौ हम पाही॥
पै कवि 'श्रावक' भाग्य प्रभावतें,
धर्मकी शर्म रही है सदाहीं।
मो ठगि। मोरसके मिस नर्क,
हटान पठावत क्यों गहवांहीं [१]॥ १॥

मनहर।

यदपि दिखाऊ नहिं तदपि टिकाऊ खूब,
अतिहू पवित्र शुद्ध योग सनमान हैं।
फट फट नसि जाय आवें तौ हु आधे दाम,
श्रावकस्वदेशी माल गुणको निधान हैं॥
वाकौ परचार किये बाढै धर्म छावै सुख,
निधन हू नर वेग होत धनवान हैं।
तापै कोउ २ सठ तजत न नीच हठ,
गहत विदेशी गुन करत बखान हैं॥

मत्तगयन्द।

ऊपर चीकनी चांदनीसी छबि,।
भोरेसे लोग हियें ललचावें।
नेह चलै नहि चार दिना,
लगें दाम घने कुल कान नसावें॥

---

१ भारतकी ओरसे सरकारके प्रति ऐसी प्रार्थना है।

सीधौं बनावत नाम न धाम,
पिता पति औरके और बतावें।
ऐसी विदेशी छिनारनके,
छलछदको 'श्रावक' पार न पावें ॥ ३ ॥

देवरी निवासी बुद्धूलाल श्रावक.

भाइयो !

सावधान ! सावधान सचेत हो जाइये।

श्रुतपंचमी

नामक

सर्वोत्कृष्ट महापर्व आ गया है।

यह पर्व प्रत्येक वर्षकी ज्येष्ठ सुदी ५ पंचमीको माना जाता है। हमारे पूर्वाचार्योंने धवल जयधवलादि बडे २ ग्रंथ सबसे पहिले ज्येष्ठ सुदी पचमीको रचना प्रारभ किया था इसी कारण इस पंचमीको श्रुतपंचमी नाम रखकर इसको महापर्व स्थापन करके इस दिन प्रतिवर्ष श्रुतस्कन्धविधान करनेकी आज्ञा दी थी, सो ही समस्त देशके जैनी इस पर्वके दिन उपवास पूर्वक सरस्वतीदेवीका पूजन विधानादि करते थे—कालदोषसे भट्टारक महाशयोंके प्रमादसे इस देशमेसे यह पर्व प्राय उठ गया, परन्तु दक्षिण कर्णाटक देशमें अब भी यह पर्व बराबर मनाया जाता है। आज कल हमारे जैनी भाई अपनी व अपने पवित्र जैनधर्मकी उन्नति करनेमें हरप्रकारसे तत्पर हुये है इसकारण दो वर्षसे हमने इस पर्वको फिरसे प्रचार करके तरक्की देने, तथा हमारे भाइयोंको स्मरण दिलानेके लिये प्रार्थना की थी जिससे अनेक जगहके भाई इस पर्वका यथाशक्ति उत्सव करने लगे हैं इस बार भी इस पर्वका स्मरण दिला कर सम्पूर्ण स्थानोंके व प्रत्येक मंदिरके पंच महाशयोंसे प्रार्थना है कि, पचमीसे पांच सात दिन पहिले प्रत्येक मंदिरजीके शास्त्रभडारको खोलकर विनयके साथ सब शास्त्रोंको धूपमें सुखावें और आदिसे अंत तक एक एक पन्ना गिनकर उत्तम वेष्टनसे (जिसमें ठंडी हवा व सरदी नहिं पहुचे) बांधकर समस्त शास्त्रोंको विराजमान करें—जो ग्रंथ बाहर जिन भाइयोंको स्वाध्यायार्थ दिया हो, वा थोड़े बहुत पत्रे दिये हों। सबको मगा कर एकत्र करके तथा कोई पत्र फट गया व गल गया हो तो फिरसे नवीन लिखाकर पूरा कर, पंचमीके दिन मंदिरजीमें योग्यस्थान या चौकमें विराजमान करके, उनकी श्रुतस्कंधविधानपूर्वक पूजा करना चाहिये। तथा आरती उतारना चाहिये और उसी वक्त जिन धर्मात्मा महाशयोंको भंडारमें नये शास्त्रजी विराजमान करना हो तो विराजमान कर देना चाहिये, यदि ग्रंथ लिखे हुये तैयार नहीं हों तो ग्रथ लिखानेके लिये द्रव्य दे देना चाहिये, जो अगले वर्षकी श्रुतपंचमीतक ग्रंथ आ जावें। तथा जिनको वेष्टन देना हो उन्हें वेष्टनसे ही जिनवाणी माताकी सेवा करना चाहिये। जिनको भंडारमें दान न करके पढ़ने वाले विद्यार्थियों, वा स्वाध्यायनिरत त्यागी भाइयोंको शास्त्रदान करना हो तो इसी दिन दान करनेसे अतिशय पुण्यबंध व ज्ञानावरणी कर्मका क्षय होगा. यह पर्व जिनवाणी माताकी सेवा, पूजा, विस्तार करनेके लिये है, सो जिस भाईसे जैसी सेवा पूजा बनै, जिससे जितना शास्त्र दान हो सकै, यथाशक्ति आजके दिन करना ही चाहिये। पूजनके पश्चात् सभा करके उसमें शास्त्र दानका माहात्म्य वर्णन करके सब भाइयोंको यथाशक्ति शास्त्रदान करनेकी प्रेरणा करना चाहिये।

जिनके यहा श्रुतस्कंध विधान न हो उन्हें जो सरस्वती पूजा भाषा व सस्कृत जो हो उसीसे करना चाहिये और जिन्हे छपे ग्रथसे परहेज न हो उन्हें भाई बद्रीप्रसाद जैन बुकसेलर पो० बनारस सिटीसे अथवा प० कलापा भरमापा निटवे जैनेन्द्र प्रेस कोल्हापुरसे श्रुतपंचमीकथा व विधान मंगा लेना चाहिये. मूल्य =) आने मात्र है =)॥ की टिकट भेजनेसे यह पुस्तक फौरन आ सकती है।

अंतमें सब भाइयोंसे प्रार्थना है कि इस वर्ष जो जो महाशय प्रथमसे ही इस पर्वको मनाना स्वीकार करें वे एक कार्ड द्वारा मुझे सूचना देंगे तो बडी कृपा होगी क्योंकि मुझे भी हर्ष होनेसे पुण्य होगा।

जैन समाजका—हितैषी दास—पन्नालाल जैन।

१—जो विदेशी मालको स्वदेशी कहके और स्वदेशी दूकानका नाम आदि डाल कर बेचते हैं उनके प्रति.

विचित्र उन्नति

आजकलके समयमें अंगरेजोंकी उन्नतिको देखकर हर एक कौम और धर्मवाले अपनी २ उन्नति और धर्मके कार्यमें लगे हुए है, इसी तरह हमारे जैन जातिके पाश्चात्य विद्याके ज्ञाता ग्रेज्युएट महाशयोंके हृदयमें भी अपनी जाति और धर्मकी उन्नति करनेकी अभिलाषा उत्पन्न हुई है, इस बातको देखकर चित्त अत्यन्त आल्हादित होता है; परन्तु जब हम इन नवीन रोशनीके युवक गणोंकी ओर दृष्टिपात करते हैं तो हमें बड़ा खेद उत्पन्न होता है कि जिस को देखकर उन्नतिकी इच्छा उत्पन्न हुई, उनके कारणोंकी नकल बनाकर स्वयम् अपने धर्म वा जातिकी उन्नतिकी जड़ काट रहे हैं. पाठकगण! अंग्रेज लोगोंने जो कुछ उन्नति की है उसमें उन्होंने किन २ कारणोंको अवलंबन किया है और हमारे नवयुवक किन २ कारणोंको अंगीकार करते हैं इसको विचारिये। अंग्रेज लोग अपने धर्मके नियमानुसार वर्ताव करना, जातीय प्रेम बढ़ाना, देशभक्ति दरसाना, स्वदेशकी पोषाख आदिकको न छोड़ना, अपने देशकी भाषाका प्रचार करना, और अपने धर्म वा जातीय मन्तव्योंको दूसरोंके हृदयमें ठसाना आदि कारणों द्वारा अपनी उन्नति कर रहे है। और हमारे नवयुवक अपना धर्म वा जातिकी उन्नतिकी इच्छा करके—अपनी भाषा, भेष, आचरण, धर्म, मतव्य, और जातीय प्रेमको त्याग कर विदेशीय भाषा, भेष, धर्म, मन्तव्यादिको धारण कर अपने धर्मकी उन्नति मानते हैं। यह कितनी बडी भूलकी बात है। इसीका एक प्रत्यक्ष उदाहरण हमारे नवयुवक एम्. ए. की एक चिठ्ठी द्वारा पाठकोंको प्रगट किया जाता है। जो कि—

इग्लेण्डकी चिठ्ठी

वर्तमानवर्षके जैनगजट अङ्क १३ में छपी है। यह चिठ्ठी जैनयंगमेन्स एशोशिएशनके सेक्रेटरीके नाम बाबू जुगमन्दिरलालजीकी लिखी हुई है। बाबू साहिब अपनी चिठ्ठीमें फरमाते हैं कि "आपके एशो. का ध्यान करतेही मुझे महावीर स्वामीके समयका ध्यान आ जाता है जब जैनी लोग दिगम्बरी और स्वेताम्बरी नहीं जानते थे. वरन सब एक दृढ एकता सम्पन्न जाति बने हुए थे। जैनमतकी शिक्षाके रेशमी रस्सोंसे अपनी कौमके लोग भाईबन्दी मुहब्बत और मजहबी एकतासे जकड़े हुए थे। कालके दोषसे ये रस्से कट गये और हमारी पुरानी कौमके टुकडे २ हो गये। जिसका एक फल यह हुआ कि हममें आज उस ताकतका दशवा हिस्सा भी नहीं है जो गौतम स्वामीजीसे धर्माचार्य और जम्बूस्वामीजीके समयमें थी और न हममें उस जमानेकीसी नेकी है।"

प्रिय वाचकवृन्द ! यह बात सच है कि श्रीवीरभगवान्‌के समयमें जैनी लोग दिगम्बरी श्वेताम्बरी नहीं जानते थे। और सब एकताके दृढ बंधनमें बंधे हुए थे और आज ये सब बातें नहीं हैं। यदि आप लोग इसके मूल कारणपर ध्यान देंगे तो आपको पहले समयमें उत्सूत्रताभाव और वर्तमानमें उत्सूत्रग्राही नजर पड़ेगी। देखिये—पहिलेके लोग अपने २ समस्त कर्त्तव्य कर्म, चाहे वे लौकिक हों वा पारमार्थिक, अपने २ आचार्योंकी आज्ञानुसार ही करते थे. आचार्योंके वाक्योंपर उनकी निःशङ्क श्रद्धा थी। यही कारण था कि सब लोग प्रत्येक कार्यमें बडे उत्साहके साथ शामिल होते थे। उस समयके उत्सूत्री अर्थात् आचार्योंके वाक्योंको न माननेवाले लोग मिथ्यात्वीके नामसे पुकारे जाते थे। इसप्रकार जैनी और मिथ्यात्वी ये दो सम्प्रदाय पहले भी विद्यमान थीं। जैनी लोगोंमें यह अनुत्सूत्रता पाचवें श्रुतकेबली श्रीभद्रबाहु स्वामी तक बराबर चलती रही। श्रीभद्रबाहुके शिष्य स्थूलभद्राचार्य प्रथमही उत्सूत्र निकले, अर्थात् जब पटनामें बारह वर्षका दुष्काल पडा था और आचार्य वर्य श्रीभद्रबाहु स्वामीको निमित्तज्ञान द्वारा पहले ही मालूम हो गया था तो उन्होंने अपने २४००० शिष्योंको वहांसे दक्षिण देशको चलनेकी आज्ञा दी। सबको प्रतिबोधित किया कि यहा दुष्कालके कारण तुम लोगोंका चारित्र भ्रष्ट हो जायगा। परन्तु उनकी इस आज्ञाका उल्लंघन उनके शिष्य स्थूलभद्रने किया. श्रीभद्रबाहु १२००० शिष्यों सहित दक्षिणकी ओर प्रस्थान कर गये और स्थूलभद्र अपने १२००० शिष्यों सहित वहीं विराजमान रहे। जिसका फल यह हुआ कि दुष्कालमें उनका चारित्र भ्रष्ट हो गया, कपड़े धारण करना पड़ा, हाथमें लकड़ी रखनी पड़ी। दुष्काल बीतनेपरभी उन्होंने यह सहज मार्ग न छोड़ा और कुछ नये मन्तव्य मानकर यह श्वेताम्बर सम्प्रदाय चलाया। इसप्रकार पहिले समयमें जैसे उत्सूत्र मिथ्यात्वी और जैनी ऐसे दो सम्प्रदाय थे उसी तरह जैनियोंमें उत्सूत्र लोग होनेसे श्वेताम्बर और सनातन मार्गावलम्बी दिगम्बरी ऐसे दो सम्प्रदाय हुए। यह एक निश्चित नियम है कि जो उत्सूत्र होता है वह अवश्य अनैक्य फैलाता है। दायानन्दादिकोंने उत्सूत्र होकर ही अलग मत चलाया है।

वर्तमान समयमें नवीन शिक्षा और दीक्षासे यह उत्सूत्रता इतनी बढ़ गई है कि प्राय. ग्रेजुएट किंवा अंडर ग्रेजुएटोंके दिमागमें स्वतंत्रताकी बू भर गई है। प्राय. ये अपने विचारोंके अनुसार स्वतन्त्र चलने लगे हैं। इन्होंने स्वतन्त्रतासे उच्छृंखल हो कर प्रायः जाति कुल धर्म कर्मकी मर्यादा छोड़ दी है। इस समय जो जन इस जाति व धर्मादिकके परिचालक हैं उनको वे उच्छृंखललोग खुले मुखसे अप शब्द कहने लगे। बस यही उच्छृंखलता और भी अनैक्य फैलानेका कारण है। यह एक साधारण बात है कि जब आप अपने स्वतन्त्र विचारोंके अनुसार निखिल कार्य करेंगे और मैं भी अपने स्वतन्त्र विचारोंके अनुसार ढाई चावलकी खिचडी अलहदी पकाऊंगा तो "भिन्नरुचिर्लोक:" के अनुसार सब लोगोंके विचार भिन्न २ हो जायंगे। और इस तरह अनैक्य सहज रीतिसे फैल जायगा और सच फैलता जाता है।

एकता तभी हो सकेगी जब कि सब लोग किसी एक मार्गपर आरूढ होकर चलेंगे। पृथक् २ मार्गोंमें चलनेवाले स्वतन्त्रताप्रिय लोगोंमें स्वप्नमेंभी कभी एकता नहीं हो सकती। बरन यों कहनेमें भी अत्युक्ति न होगी कि ऐसे लोग जितने इकट्ठे होंगे उतनेही मतप्रवर्त्त होंगे। इस लिये शास्त्र मार्गसे चलना एकताका और उसके विमुख चलना अनेकताका कारण है। किंतु बाबू साहबने स्वयं एकताका कारण जैनमतकी शिक्षा ही बतलाई है इसलिये उन्हींके कथनानुसार कहना चाहिये कि पहलेके लोग जैनमतकी वास्तविक शिक्षासे शिक्षित थे। इस लिये उनमें परस्पर एकता और मुल्हबत बनी हुई थी. परन्तु ज्यों २ इस शिक्षा परसे लोगोंका लक्ष्य उठता गया, इसके पढ़ने पढाने प्रचार करनेवाले आदि घृणित दृष्टीसे देखे गये, और इसके विपक्षभूत इगलिश देवीकी तन्मय उपासना ज्यों २ अधिक बढ़ने लगी, और उसके प्रसादसे दिमाग उच्छृंखल हो गये, त्यों २ अनेकता बढ़ती गई और बढती जा रही है। जिनमें इस शिक्षाका कुछभी अंश है वे अभी तक एकताके दृढ सूत्रमे बंधे हुए हैं और जिनमें वह नहीं है वे स्वयं अलग हो गये हैं, हो रहे हैं, और होना चाहते हैं। बस यही आपकी उच्छृंखलता जैन कौमके टुकड़े करनेवाली और उसमें वढ़ी फैलानेवाली है।

आगे चलकर बाबू साहिबने लिखा है कि "पूर्व समयमें सुधारके ढंग और थे और इस कालके और हैं। मन्दिरों और शास्त्र सभाओंके वसीलोंके सिवाय पहले तरक्कीकी कोई सूरत नहीं थी। अंगरेजी तालीम और मगरबी कौमोंके ढंग देखकर हिन्दुस्थानने सुधारके नये तरीके सीखे हैं। हर जगह क्लब एशोसिएशन सोसायटी और उनकी मीटिंग (Meetings) होतीं है और उनके द्वारा हम ख्यालात और हरकात, अपने भाइयोंकी सहायता और थोडीबहुत रहनुमाई करते हैं। इन नये औजारोंके साथ हमारे पास मसाला भी नया तयार है अर्थात् नये ख्यालात और उनके द्वारा नई २ उन्नतिके रास्ते हमारे साम्हने मौजूद हैं।

प्रिय पाठक वृन्द ! उक्त बाबू साहिबको अंगरेजी तालीम और मगर्बी कौमके ढग देखकर कितनी बड़ी अकल पैदा हो गई है। कि क्लब सोसाईटी आदिसे तो उन्नति होती है और शास्त्र सभादिकोंसे नहीं। जिन मन्दिरोंमें प्रतिदिन लोग इकट्ठे होते हैं, प्रत्येक मन्दिरोंमें अनेक शास्त्र विराजमान हैं, जिनको अनेक लोग पढ़ते पढ़ाते और स्वाध्याय करते हैं, शास्त्र सभायें हजारों गावोंमे प्रतिदिन होती हैं, जिनमे विद्वान लोग आचार्योंके कहे हुए लौकिक और पारमार्थिक दोनों प्रकारके अभिप्राय बतलाते हैं। उनकी तो आप अवहेलना करते है और एसोशिएशन् जो कि वर्ष दिनमें किसी एक जगह सिर्फ दोदिन तीन २ घंटेके लिये होती है, उसे उन्नतिका उपाय बतलाते हैं। जो शास्त्र सभायें वर्ष दिनमें ३६५ घंटेसे भी अधिक होती हैं और जिनमें अधिकाश लोग इकट्ठे होते है उनसे तो उन्नति नहीं होगी। और एसोसियेशन जो कि वास्तवमें धर्मकी जड़ काट रही है, वर्षमें ६ घंटेही होकर धर्मकी सब उन्नति कर डालेगी। इस एशोसिएशनके द्वारा आपके नये नये स्वतन्त्रता धर्मभ्रष्ट होना शूद्रोच्छिष्टखाना आदि नये २ ख्यालात पैदा होते हैं वही आपके औजार हैं और उनके साथ धर्मात्मा और धर्मज्ञ लोगोंको गाली सुनाना उनको जानवर कहना आदि मसालाभी तैयार है। इन औजारोंसे धर्म कर्मकी जड़ काट कर ऊपरसे मसाला लगाकर विलायत जाने और कुर्सीपर बैठ मेजपर रखकर बिसकुट आदि खानेका रास्ता साफ किया जाता है। बस यही आपकी एसोसिएशनका कर्त्तव्य और उन्नति है। हमें अफसोस है कि आप विलायतमें रहकर भी यह न सीख सके कि विलायतवालोंने अपनी उन्नति किसप्रकार की है। और हम वास्तवमें उन्नतिके

मार्गमें लगे हैं या नहीं। माळूमी। जरा ध्यान पूर्वक विचारिये कि अंगरेजोंने लौकिकोन्नति की है या पारमार्थिकोन्नति। इस विषयमें आपभी खुले शब्दोंसे कहेंगे कि इन्होंने अपनी लौकिकोन्नति विशेष की है और वह उन्नति भाषा आचरणादिके प्रचार करनेसे ही हुई है। भाषाकी उन्नति देखिये कि भारतवर्षमें ३० करोड मनुष्योंकी आबादी है और उसमें योरोपियन लाख सवा लाखसे अधिक न होंगे। उन्होंने अपने सुभीतेके लिये ही भारतवर्षमें इंगलिश विद्याका प्रचार किया। नहीं तो यह कब हो सकता था कि एक लाख मनुष्योंके सुभीतेके लिये ३० करोड तो दूसरी भाषा पढ़ें और ३० करोडोंके लिये एक लाख मनुष्य दूसरी भाषा न पढ़ें। जापानने जो एक ही पीढीमें अपनी उन्नति कर डाली है उसका यही कारण है उसने समस्त शिक्षा अपनी भाषामें दी। और भारतकी अवनतिका यही कारण है कि उसने प्राय अपनी भाषा छोड दी। आपकी एशोसिएशन भी तन्मय है। सदा अंगरेजीमें लैक्चर होते हैं। जिसे कतिपय लोगही समझते हैं (यह भी एक पालिसी है) यह उन्नतिका मार्ग नहीं है अपनी भाषा चालढाल खोकर केवल अवनतिही करना है। दूसरे यह है कि हम लोग अंगरेजोंकी तरह केवल लौकिकोन्नतिमेंही नहीं लगे है किन्तु हमें मुख्यतया धर्मोन्नति करना है। धर्मोन्नति धर्मके प्रचार करनेसे होगी और धर्मका प्रचार धर्मात्माओंसे होगा। उनकी अवहेलना करनेसे धर्मकी अवहेलना समझी जाती है। देखिये श्रीसमन्तभद्रस्वामीजीके वाक्य—स्मयेनयोऽन्यानत्येति धर्मस्थान् गर्विताशयः। सोऽत्येति धर्ममात्मीय न धर्मो धार्मिकैर्विना॥ भाईसाहिब! यदि सचमुच आपको धर्मोन्नति करना है तो सीधे मार्गसे चलिये। धर्मोन्नति होनेसे लोकोन्नति स्वयं हो जायगी। गेहूं उत्पन्न करनेके लिये खेत बोनेसे भूसा स्वयं उत्पन्न होता है। यदि आप चाहें, और धर्मज्ञ लोगोंकी सम्मतिसे काम करें, तो आप इसी एसोशिएशनसे बहुत कुछ उन्नति कर सकते हैं। मैं अन्तःकरणसे सदा यही चाहता रहता हूं कि आप लोगोंमें सुबुद्धि हो और आप लोग सीधे मार्गसे चलकर धर्मकी ध्वजा फहरावें। आगे चलकर आपने लिखा है "इन कैसोंसे हम एक कठिन काम किया चाहते हैं वह यह है कि हमारे प्राचीन धर्मकी मोहिनी मूर्ति जिसको झूठ और अधर्मने ढकलिया है उसको हम इन दुश्मनोंसे छुडाकर फिर उसको उतनीही पूजनीय बनावें जितनी वह पहिले थी" हमारे पाठकोंको उपर्युक्त लेखसे मालूम हुआ होगा कि धर्मकी प्राचीन मूर्ति कैसी थी और उसको झूठ और अधर्मने किस प्रकार ढक लिया है। झूठ और अधर्मका अर्थ यथार्थस्वरूपसे परान्मुखता है और वह उत्सूत्र लोगोंमें विद्यमान है। क्योंकि वे यथार्थ धर्मका घातकर उत्सूत्र हुए हैं इसलिये उस धर्मकी मूर्त्तिको यथार्थ पूजनीय बनानेके लिये सबसे पहिले उत्सूत्रलोगोंको उत्सूत्रता छोडनी होगी और आगमानुसार अपना वर्त्तव करना होगा। यह बात ध्यानमें रखना चाहिये कि धर्मसे भ्रष्ट होकर धर्म मूर्त्ति प्रगट नहीं कर सकते। एसोशिएशन सरासर धर्मच्युत प्रस्तावोंको पास कर रही है वह किस तरह धर्ममूर्त्ति प्रगट कर सकेगी?। यदि आपको यह कार्य करनाही है तो धर्मज्ञ पुरुषोंसे सहायता लीजिये और उनकी आज्ञानुसार चलिये। तभी कुछ हो सकेगा. अन्यथा स्मरण रखिये कि आपक यह कर्त्तव्य किसी दिन विपरीत फल देगा।

फिर चलकर बाबू साहबने लिखा है "सबसे बडा काम जो जैनियोंको करना है वह इस बुरे सबकको भूलना है कि मै स्वेताम्बर हू और मै दिगम्बर हू. जो कोई इन दो शाखाओंमे बैर बढानेकी कोशिश करे, या इनके एक होनेमें बाधक हो; मैं तो उसको अपनी जातिका दुश्मन और अपने धर्मका कातिल गिनता हू"। अब बाबू साहिबसे पूछना है कि दोनों शाखोंके मनुष्य इस सबकको कैसे भूल सकते है? इसके भूलनेके दो उपाय हो सकते हैं प्रथम यह कि दिगम्बर लोग अपना मत छोड़कर श्वेताम्बर हो जावें अथवा श्वेताम्बर अपना मत छोडकर दिगम्बर हो जाय और द्वितीय यह कि दोनोंही अपना २ मत छोडकर एक तृतीय पंथ अवलम्बन करें। इनमेंसे यदि आप पहला पक्ष विचारते हों तो यह आपका विचार असंभव है। जो मन्तव्य सात २ आठ २ लाख मनुष्योंके हृदयोंमें दृढ रहा है वह कैसे छूट सकता है? किंवा दिगम्बरीय मार्ग जो कि यथार्थ मार्ग है वह कैसे छोड़ दिया जाय? और क्यों छोडनेका उपदेश दिया जाय?। क्या सत्यको छोडकर झूठको ग्रहण करनाही यथार्थ न्याय और मगरबी ढंग है? और यही आप सीखे हैं? और आपके नये ख्यालातोंमें इसीको उन्नति कहते हैं? खेद है कि आप सत्यध्वज भारत और परम सत्यध्वज जैनियोंकी सन्तान होकर ऐसा सबक सीखे और सीख रहे हो, यथार्थ मार्गको छोड़ अयथार्थ मार्गमें प्रवेश करना किसीकोभी इष्ट नहीं है। कदाचित आपके खयालशरीफमें ऐसा हो कि श्वेताम्बर अपना मत छोड़ देंगे सो यह भी कभी नहीं हो सकता। वे लोग अपना मत छोड़कर दिगम्बरीय हो जायगे यह बात तो अलग रही वे लोग आपसे बात भी करना नहीं चाहते। जिसका नमूना एसोसिएशनके मेम्बरोंको कलकत्तेमें मिल चुका है। कलकत्तेमें एसोसिएशनके कुछ एक मेम्बर बाबू बद्रीदासजी श्वेताम्बरसे मिलने गये थे परन्तु वे सब एक अवहेलनाकी दृष्टिसे देखे गये। ऐसी दशामें वे आपसे कब मिल सकते हैं? श्वेताम्बरोंमें जो मन्दिरमार्गी और स्थानकवासी (ढूंढिया) ऐसी जो दो शाखाएं हैं उसमें ही जब मारामारी चलती है तो वे दोनों ही अपना मत छोडकर तुम्हारा मत कब स्वीकार करेंगे? सामान्य तीर्थक्षेत्रादि कार्योंमेंही जब वे आपके जबर्दस्त प्रतिद्वन्दी है सरासर आपका घात कर रहे हैं तो वे अपने एक भिन्न मतको कभी नहीं छोड़ सकते। इसलिये दूसरा पक्ष भी नहीं बन सक्ता. और यदि आप तृतीय मार्गका अवलम्बन करेंगे तो उपर्युक्त समस्त दोष आवेंगे और अश्रेयस्कर होगा. इसलिये दोनोंको अपना २ सबक भूलना असम्भव है। इन दोनों मतोंमें बैर बढ़ानेकी कोशिश करते कोई भी नजर नहीं आता, हां श्वेताम्बरियोंकी ओरसे पूज्य तीर्थक्षेत्रोंपर कभी २ कुछ चमत्कार दिखाई पडता है। परन्तु दोनोंके एक होनेमें थोडेसे धर्मज्ञ बाधक अवश्य है जिनको आप कातिल और दुश्मन समझते हैं।

हम आपसे पूछते हैं कि कातिल और दुश्मन किसे कहते हैं? जो जिस वस्तुको नष्ट करना चाहे उसको उसका दुश्मन और कातिल कहते हैं और इसके प्रतिपक्षभूत जो उसकी कीर्त्ति बढावे उसको पुष्ट करे वह मित्र और पोषक कहा जाता है। धर्मके नेता पण्डितगण जो कि धर्मके गूढ रहस्योंको जानते है। उसे प्रकाशक कहते हैं, उसकी ख्याति होते देखकर उसकी रक्षाके लिये यथासाध्य उपाय करते और करते है, इसलिये वे तो धर्मके पोषक मित्र हैं, पण्डित लोग कीसीमे कभी बैर बढाना पसन्द नहीं करते उन्हें सदा स्मरण रहता है कि "द्वेष सदा पापका कारण है और प्रशस्त राग पुण्यका कारण है

और राग द्वेष दोनोंही संसारके कारण हैं। जो लोग शास्त्रानभिज्ञ हैं व भलेही द्वेष और अनेकता फैलावें बरन यों कहना चाहिये कि आप सहशा बाबू लोगही संगठित संघमें खलबली मचाकर दिनोंदिन द्वेष और अनेकता फैला रहे है। निर्दोष आचार्योंके वाक्योंको मनन करनेवाले पण्डित भला कैसे द्वेष और अनेकता फैला सकते हैं? इस लिये कहना चाहिये कि पण्डित गण धर्मोन्नतिके मूल कारण है और जो लोग उसकी जड काटना चाहते हैं किंवा काट छाटकर किसी दूसरेमें मिलाना चाहते है अथवा उसे जडसे नाशकर अपनाही अन्यमत प्रवर्त्ताना चाहते हैं किंवा उसकी आज्ञासे विमुख चलते हैं वास्तवमें वे ही इसके दुश्मन और कातिल है। धर्मकी आज्ञा मानना, वा फैलाना ही उसकी वृद्धि और पुष्टि करना है और उसकी आज्ञासे विमुख चलाना तथा विमुख चलनेका स्वयं दृष्टान्त बनकर उपदेश देना आदि धर्मका कतल करना है। जनाब बाबू साहिब! जरा गौर कीजिये तो आपको स्वयं मालम हो जायगा कि आप और आपकी एसोसिएशन किस बुरी हालतसे धर्मका घात कर रही है। हमे खेद होता है कि जो एसोसिएशन बाबू लोगोमें धर्म फैलानेके लिये दि० जैन धर्मसरक्षिणी महासभाकी एक शाखारूप प्रगट हुई थी वही आज उस धर्मकी जडकाट रही है और उसके मुख्य मेम्बर आप धर्मके रक्षक और पोषक महाशयोंको दुश्मन और कातिल शब्दसे पुकारते हैं। यह कितना बडा घोर अन्याय तथा पाप है? ऐसी अवस्थामें बाबूसाहिबही कहें कि धर्मोन्नति कैसे हो सकती है?

आगे चलकर बाबूजीने लिखा है "मेरा स्वतन्त्र विचार यह है कि अगर हम लोग पण्डितोकी मददसे और अपने कौमके मुखिया लोगोंकी हमदर्दी और कोशिशसे एकता प्राप्त नहीं कर सकने तो जैनियोंके दिन हो ही चुके और दो चार सौ वर्षमें यह धर्म ससारसे बिलकुल उठ जायगा" इसका अभिप्राय यह है, पण्डित और जातिके मुखिया लोग एकता करनेमें बाधक हैं; जबतक ये जीते जागते रहेंगे एकता नहीं हो सकेगी और एकता न होनेसे धर्म (एसोसिएशनका धर्म भ्रष्ट खिचडीरूप मन्तव्य) न रहेगा बाबू साहिबके इस फिकरेसे किस धर्मात्माके हृदयपर चोट न लगी होगी। हाय! हाय! आज इन धर्मविमुख बाबू लोगोंसे धर्मात्मा और जातिके मुखियाओं (पंचों) को ऐसे बुरे शब्द सुनने पढते हैं। अवश्यही बाबू साहिबको ऐसे शब्द लिखते हुए कुछ भी थकावट न हुई होगी। अस्तु। हम बाबू साहिबसे निवेदन करते है कि वे इस लेखके पिछले भागको फिर एकवार बांच जावें। आप चाहते है कि सब लोग जिस वृक्षकी छायामें बैठे है वे उसीको काट डालें। अर्थात् पंच और पण्डित लोग जो कि धर्मको चलाने और माननेवाले हैं वे जबतक भ्रष्ट न होंगे तब तक उन्नति नहीं होगी? बाहरी अक्लद डियर फ्रेन्ड! हम फिर एकवार चेताते हैं कि आप जो यह एकताका स्वप्न देख रहे है वह किसी कालमें नहीं हो सकती। कोटिश यत्न करनेपरभी धर्म सम्बन्धी विरुद्ध विषयोंमें एकता नहीं हो सकती और जो अविरोधी विषय है उनमें अनेकताका अभाव है इसलिये आपका और आपकी एसोशिएशनका सब परिश्रम व्यर्थ है केवल गरीब धर्मात्मा भाइयोंके रुपये खराब करना है।

आगे आप एकता करने वालोंको धन्यवाद देते है और फिर लिखते है "मुझे उम्मेद है कि कलकत्तेके एसोशिएशन के सालाना जलसेमें आप एक एज्यूकेशन इस मजमूनपर भी पास करेंगे, और लोगोंको इस बातपर आमादा करेंगे, कि अपने स्वेताम्बरी और दिगम्बरी भाईयोंसे आपसमें शादी व्याह, खाना पीना, मन्दिरोंमें आना जाना, इन सब बातोंमे कोई फर्क न करें वाह! इस फिकरेके लिखनेमें तो बाबूसाहिब अपना घर भी भूल गये। जनाब! श्वेताम्बर और दिगम्बरीयोंमें शादी विवाहका अभाव ही कहा है। दृष्टान्त हूमड जातिको देख लीजिये और विश्वास न हो तो उस जातिके अग्रेसर शा० माणिकचन्द हीराचन्दजी जे पी. से दर्याफ्त कर लीजिये। आप श्वेताम्बर और दिगम्बरियोको लिये फिरते है परन्तु आपके घरमें (अगरवाल जातिमें दि. जैन और वैष्णवादि भिन्न धर्मियोंमें भी धडाधड शादी विवाह हो रहे हैं यदि आप भूल रहे है तो अपनी जातिके अग्रेसर प. मेवारामजी से पूछ लीजिये। उनकी कितनी कन्यायें वैष्णवोंके घर हैं और वैष्णवोंकी उनके घर हैं। जिनके साथ शादी विवाह है अवश्यही उनके साथ खाना पीना है। आश्चर्य है कि जैन गजटके उ. स. नेभी इसके निबध करनेमें अपनी टाग अडा दी है। आप अपने कोंभी भूल गये। जरा सम्पादकजीसे ही पूछ लिया होता। अस्तु। परन्तु जो जाति भिन्न २ रहैं उनके साथ न तो शादी विवाह नहीं हो सकता है और न भिन्न आचार विचारवालोंके साथ खाना पीना। यह बात धर्मविरुद्ध है इतना ही नहीं किन्तु वैद्य और डाक्टरोंके भी असंमत है। भिन्न जातिमें विवाहादि होनेसे खच्चर सदृश संकर जाति उत्पन्न होगी और फिर वह खच्चरकी तरह निःसन्तान होकर वहीं नष्ट हो जायगी।

२०।९।०७ बेलगांव } शेष फिर हितैषी निवेदक लालाराम जैन

श्रीमान् सेठ माणीकचंद हीराचन्दजी जे· पी· के भ्रमणकी संक्षिप्त रिपोर्ट।

आगरा—ता. २९ मार्चको मुम्बईसे चलकर ता. २६ की शामको आगरे आए। यहा ता. १ अप्रैल तक रहे— दिगम्बर जैन बोर्डिङ्गकी स्थापना कराई जिसकी रिपोर्ट जैनमित्रमें मुद्रित हो चुकी है—

अजमेर—ता १ अप्रैलको चलकर २ को अजमेर आए—रायबहादुर सेठ नेमीचदजीने योग्य रीतिसे स्वागत किया सुवर्णकी अयोध्या तथा कैलाश देखा—श्री आदिनाथ स्वामीके पंचकल्याणकभाव बहुत उत्तम रीतिसे प्रदर्शित किये गए है परन्तु जहा ये विराजमान है वहांपर धूल पड जानेके कारण ग्लानित शोभाको दिखलाते हैं इनको साफ रखनेका यत्न होना चाहिये—मेयोकालेज, दयानन्द अनाथाश्रम, हिंदू औषधालय तथा जैन औषधालय देखा। दयानन्द अनाथाश्रममें ६३ कन्या तथा १३० बालक भिन्न २ अवस्थाके हैं—लडकोंको लौकिक व धार्मिक शिक्षणके साथ २ शिल्पका कार्य्य, कपडा बुनना व सीना, दरी, निवाड, मर्नीवेग, मोजे बनाना, तथा कुर्सी टेबुलादि बनाना, रंगना, सिखाया जाता है कपडेके जूते बहुत अच्छे बनते हैं जो १। रु० में मिलते हैं। बालिकाओंकोभी सीना परोना पाकक्रियाका शिक्षण दिया जाता है योग्य होनेपर कन्याओंका विवाह करा दिया जाता है तथा लडकोंको उद्यममें लगा देते हैं। एक दयानन्द प्रेस है उसमें उनको काममें लगा लेते है, तथा एक दयानन्द हाईस्कूल है। बहुत योग्य बालकोंको वहां पढनेकेलिये भेज देते हैं सन्

१९०९ की रिपोर्टसे विदित हुआ कि तीन लड़कोंने रेलवे वर्कशापमें १२) से १८) मासिककी। एकने १०) मासिकपर कपड़ा सीनेकी नोकरी पाई, दो मोजे आदि बनाने लगे जो रु. १९) और १९) मासिक पैदा करते हैं—जो कारखाना चलता है उसमें रु. ३९७३॥≡)॥। की पूंजी है माल वेंचकर ७७७≡)॥। का नफा रहा—इसके अतिरिक्त बालकोंने कारीगरी भी सीखी—इस अनाथाश्रमको देखकर यह कहना पड़ता है कि हिसारके अनाथालयको भी इसीके अनुसार अनाथोंको उपयोगी बनाकर व धर्म सिखलाकर अपनी आजीविका तथा जीवोंको उद्धारके सन्मुख कर देना चाहिये—इस अनाथाश्रमके सब बच्चे अपने हिन्दूधर्मके अच्छी तरह जानकार पाये गए—रात्रिको श्री मंदिरजीमें सभा हुई प. नरसिंहदासजीके मंगलाचरणपूर्वक सीतलप्रसादजीने विद्योन्नतिपर भाषण दिया—सेठ साहिबने १०) जैन तथा १०) हिन्दू औषधालयको भेज दिये—

उदयपुर ता. २ को चलकर ३ को उदयपुर आए—स्टेशनपर स्वागत हुआ—यहा ता. ९ व अप्रैल तक ठहरे—प्रतिदिन खंडेलवालोंके मंदिरजीमें सभा होकर धार्मिक व सामाजिक विषयोंपर व्याख्यान दिये जाते थे। ता. ३ की सभामें सेठ साहिबने प्रगट किया—कि मेरी भावज रूपा बाई अपने स्वर्गवासी पुत्रके स्मरणार्थ रु. १०००) प्रदान करती है उदयपुरकी पाठशाला जो दो वर्षसे उनके निजीकोषसे चलरही है उसका खर्च अब इस ध्रुव द्रव्यके व्याजसे चलाया जावे—यह रुपया हीराचंद गुमानजी जैनबोर्डिङ्गहौसकी प्रबन्धकारिणी कमेटीमें जमा रहेगा ता. ९ को पाठशालाका स्थान परिवर्तित किया गया और "सेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगम्बरजैनपाठशाला उदयपुर" इस नामका पाटिया लगाया गया—और पाठशालाके प्रबन्धार्थ १३ महाशयोंकी एक कमेटी बनाई गई सभापति छोगालालजीसाह मुनीमजवारमल मूलचंदजीभंडारी कालूरामजी और रंगलालजी, तथा प्रतिचतुर्दशी को एक जैन धर्मवर्धिनीसभाका होना निश्चित हुआ यहा छ जातियोंके २९९ घर तथा ४ जैन मंदिर व १ नसिया हैं।

परसाद गांव ता. ६ को चलकर तांगेद्वारा ३० मील पर परसाद गांवमें आए—यह १०० घरका एक गांव है जहा ४० घर दि. जैनी नागदा जातिके हैं मुखिया गौतमचंद बालचंद, खेमराज व शास्त्रवक्ता भाई दुलीचंदजी हैं।

१ जैन मंदिर है शिखर गिर पड़ा है जिसके बनानेका प्रबन्ध हो रहा है पाठशाला नहीं थी सो खोलना स्वीकार की ९) मासिक सहायता सेठजीने देना कबूल की।

धुलेवगांव पोष्ट रिखबदेवे जिला मेवाड ता. ७ को सवेरे चलकर श्री रिखबदेवजी अर्थात् केशरियाजीमें आए यहा १०० घर दि. जैनियोंके है सर्व साधारण दूकानदारी करते है. मुखिया सेठ—वच्छराजजी सेठ छगनलालजी है। गांवमें ब्राह्मण गोटी लोग अपने घरोंपर लोगोंको ठहराते हैं तथा सर्व प्रकारका आराम दे इच्छित द्रव्यकी प्राप्ति करते हैं—सेठजी हेमचद गौतमचंद किशनजी गोटीके घरमे ठहरे ता. ८ को दो पहरतक रहे श्रीऋषभदेवजीका मंदिर बहुत विशाल एक किलेके समान पत्थरका बना हुआ है सर्वके बाहर मदिरके चारों ओर एक बडा भारी ऊंचा कंगूरेदार पत्थरका कोट है जिसको सागवाडा निवासी हूमड ज्ञातीय दिगम्बर जैनी सेठ धनजीकरणजीने सम्वत् १९६३ में बनवाकर पूर्ण किया. इसकी भीतपर १ लेख खुदा है जिसकी नकल जो पढ़ी गई वह आगे मुद्रित है फाटकपर दो हाथी श्याम पत्थरके हैं भीतर जाकर मध्यमें अनेक सुन्दर नक्कासी करके संयुक्त देवदेवियों तथा मूर्तियों करके आच्छादित एक वृहत मदिर संगमर्मर पत्थरका है जिसके ४८ शिखर ऊंचे २ है शिखरोंपर कलशें नहीं चढे हैं सो भडारसे शीघ्र बनना चाहिये—

इस बृहत मदिरके भीतर जानेसे श्रीरिषभदेवजीका बडा मंदिर मध्यमें तथा चारों ओर अन्तर वेदिया ४ के सिवाय, शिखरबंध है बड़े मदिरजीके सामने फाटकपर हाथीके ऊपर नाभिराजा और मरुदेवीजीकी मूर्ति शोभित है जिनके दोनों ओर चरण बने हैं एक तरफ एक पत्थर है उसपर १ शिलालेख है जो सम्वत १८७१ का लिखा है—

बड़े मंदिरजीके भीतर आगे ८ खंभोका १ दालान मनोज्ञशिल्पकलासे संयुक्त है उसके आगे भीतर को ऊंचेपर वेदीके बाहर दूसरा दालान है उसके मध्यमें पूजा करनेका स्थान बना है जहा पर पूजाकी सामग्री रख लेते हैं। इस स्थानके एक बगलमें एक भैरोंकी मूर्ति बनी है जहां १ ब्राह्मणका छोकरा बैठा हुआ अन्यमतके भैरोंके पाठ पढ़कर पूजा कराता है उसके बगलमें १ छोटीसी गजभरकी पत्थरकी मसजिद बनी है—लोग कहते हैं कि मुसलमान लोग फाटकपर आकर इसको मानते है—इस दालानके आगे मध्यमें दो दरवाने है उसके आगे जाकर ३।७ फूट ऊची पद्मासन श्यामवर्ण अतिमशौम्य परम दिगम्बर श्री ऋषभ देवजीकी मूर्ति है—इसमें कोई सम्वत नही है—मूर्ति चतुर्थकालकी विदित होती है इसके चारों ओर १ धातुपटमें अन्य दिगम्बर मूर्तिया अकित हैं—इस परम शौम्य दिगम्बर मूर्तिका प्रात काल जल और दुग्धसे न्हवन करके, पीछे केशर चढाते हैं। विचारवान तो केवल चरणपर, और अन्यजन सारे शरीरको रग देते हैं। तथा चरणपर पुष्प चढ़ाते लोग मुखके सिवाय सारे अग और मस्तकको पुष्पोंसे ढक देते हैं। ७ से १२ बजे तकके अनुमान दर्शन ठीक रीतिसे नहीं होते पश्चात् सर्व अगको शुद्ध करते हैं ब्राह्मण गोटीलोग सब काम करते हैं। अगोंमें केशर बहुत जड जानेके कारण कूंचीसे मूर्तिको बहुत घर्षण पडता है। एक चरणकी अंगुलिया इसी कारण स्पष्ट विदित नहीं होतीं—एक बजेके अनुमान फिर जल और दूध चढता है, पश्चात् इस मूर्तिको सुवर्ण और रत्नोंकी आंगी तथा मुकुट पहिनाया जाता है, और फिर पुष्पादि चढाए जाते हैं, रात्रिको आंगी उतारकर सारे अगमें गुलाल चढ़ाई जाती है—आगी चढ़ाना कबसे प्रारम्भ हुई इस बातकी खोज करने पर भट्टारक क्षेमकीर्ति तथा यहांके श्रावकोंसे मालूम होता है कि सम्वत १७०२ में महाराजके अगमें आगीका आरोप होना प्रारम्भ हुआ—इस बडी मूर्तिके आगे दरवाजेके बाहर कई दिगम्बर जैन मूर्तिया विद्यमान हैं—बडे मंदिरको छोड़कर सामने मरुदेवी नाभिराजाके बाई ओरसे घूमते हुए वेदिया मिलती हैं १ दालानमें ४ वेदिया हैं जिनमें श्यामवर्ण ४ मूर्तिया हैं, २ संवत १७४६ की प्रतिष्ठाकारक क्षेमकीर्ति भट्टारक, २ संवत् १७६७ व १७६८ प्र० का० विजयरत्न भट्टारक। इसके आगे १ दालानमें ७ वेदिया है जिनमें ७ मूर्तियां क्रमसे सम्वत १७३४ प्र० का० यशकीर्ति भट्टारक, १७७९, १७७३ प्र० का० देवेन्द्रकीर्ति भ०, १७६०, १७६७, १७६४ प्र० का० भ० त्रिभुवनकीर्ति, १७३४, *

* प्रतिष्ठाकारक भट्टारकोंके नाम नहीं पढे गए इससे सम्वत दिये गए हैं।

इसके आगे पूजनकी दालानके ठीक बगलमे १ बड़ी कोठरी और उसके आगे दालान है को-ठरीमें १ बडी श्याम मूर्ति शांतिनाथ स्वामीकी सम्वत १७९२ प्र० का० भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति, तथा २ सफेद प्रतिमाएं बगलमें हैं। बाहर कोठरीके दो आलोंमें, तथा दो बडे एकदरोमें दो श्याम मूर्तियां हैं लेख प्रगट नहीं—

इसके बगलमें एक बड़ा दालान लम्बा है जिसकी १९ वेदियोंमें १९ श्याम वर्णकी प्रतिमाएं हैं सं १७९४,१६१२,१७६८,१७४६, १७९६,१७६७,१७७२,१७६० की प्रतिमाएं हैं जिनके प्रतिष्ठाकारक भट्टारक है इनमें १ श्यामवर्ण आदिनाथजीकी प्रतिमा सवत १७९४ की धुलवके सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारकद्वारा प्रतिष्ठित, तथा हूमड जातीय सेठकानूकी भार्य्याने प्रतिष्ठा करवाई, दूसरी १ शातिनाथ स्वामीकी स. १७४६ की है प्रतिष्ठाकारक मूलसचय सरस्वती गच्छ सकल कीर्ति देवेन्द्र कीर्ति परेश्रीस कीर्ति, प्रतिष्ठा कराई सूरतवासी हूमड जातीय विमलदास माणकजी नेमिदास आदिने। इसके पीछे १ सहश्रकूट चैत्यालय है। फिर ऋषभदेवजीके बडे मंदिरजीके पीछे १ वेदीमे प्रतिमा शांतिनाथजीकी सं१७६८ प्रतिष्ठाकारक भट्टारक सुमतिकीर्तिजी, पीछे १ बड़ी वेदीमें १ श्याम वर्णकी प्रतिमा है लेख नहीं है। बगलमें देवना पत्थरके चरण तथा १ श्यामवर्ण प्रतिमा है फिर एक छोटी वेदीमें वासुपूज्य स्वामीकी प्रतिमा सम्वत् १७६८ भट्टारक नरेन्द्रकीर्ति महुआ वासी हूमडजातीय साह दादा मानजी—

फिर बड़े मंदिरजीके दूसरी बगलमें एक दालानमें अलग २ प्रतिमा विराजमान है, ३ आले बीचमें खाली पड़े हैं इनमें दो प्रतिमा सम्वत् १८६२ की भट्टारक पद्मकीर्ति, इस दालानके आगे सामग्री धोनेकी वेदी है इसके बगलमें १ बड़ी बेदीमें १ श्याम वर्णकी बडी प्रतिमा हैं लेख नहीं है इसके आगे कोठी है जहां रोकड़िये व मुनीम बैठते हैं। इसके आगे मुख्य मंदिरके साम्हने हाथीके बाईं ओर एक दालानमें तीन प्रतिमाएं और १ धातुका चौवीसी पट है—

यह सब वेदियां पत्थरकी बनी हुई हैं मंदिरजीके शिखरों वस्तम्भो पर नक्काशीका वैसाही काम है जैसा कि आबूके प्रसिद्ध जैन मंदिरजी में है—

इन सर्व प्रतिमाओं वा शिखर आदिके देखनेसे स्पष्ट विदित होता है कि यह सर्व दिगम्बर जैनियोंकी भक्तिका नमूना है जिन्होंने लाखों रुपया खर्च किया है। वर्तमानमें उदयपुरका सर्व भंडार व हिसाब किताब राजा उदयपुरके पास है। राजाने १ कमेटी उदयपुरके ८ भाइयोंकी नियत की है जिसमे २ वैष्णव भाई व अन्य सब श्वेताम्बर जैनी है अपने दिगम्बर जैनी कोई नहीं है। मुख्य मेम्बर मेहतामनोरसिंहजी, मगनलालपूजावत् मेहताबखतसिंहजी हाकिम (वल्लभकुल)। भंडारकी तरफसे श्वेताम्बरी रीतसे पूजन व आरती आंगी आदि होती है। परन्तु दिगम्बरी पूजन भंडारसे नहीं होती। धुलेवके दिगम्बरजैनी अपनी सामग्री लेजाकर पूजन करते हैं। एकही वेदीमें एक ओर श्वेताम्बरी और दूसरी ओर दिगम्बरी पूजन होती है वेदी छोटी होनेसे दिगम्बरियोंको पूजनमें बहुधा दिक्कत उठानी पडती है। मंदिरजीमें शास्त्रोंकी कोई अलमारी नहीं है। केवल १ पूजापाठकी पुस्तक देखनेमें आई। बडी मूर्तिके सिवाय अन्य जो दिगम्बर मूर्तिया चारों ओर विद्यमान है उनपरभी आंगीका श्रृंगार करना सम्वत १८४२ से आरम्भ हुआ है ऐसा सुन पड़ा है, यह कितने बडे दुःखकी बात है ? कि दिगम्बर भट्टारकोंद्वारा प्रतिष्ठित नग्न दिगम्बर मूर्तिया आभरण आदिसे विभूषित कर दी जावें। परन्तु यह सब अपने भाइयोंके प्रमादका फल है हमारे सोते रहनेसे हमारा सारा अधिकार इस मनोहर मंदिरके भीतरसे प्राय. बहिष्कृत किया हुआ ही मालूम होता है—मंदिरके मुनीम ब्राह्मण ओंकारलालजी जोशी हैं—यहाके भंडारखातेमें जो आमदनी होती है उसमेंसे ३९) सैकडा १ ब्राह्मण पाडेको दियाजाता है जिसका कि किसी समय मंदिरपर पूर्ण अधिकार हो गया था। ऐसा सुनते हैं कि यह मंदिर भट्टारकोंके आधीन था एक भट्टारक अपने किसी पंडितको सुपुर्दकर कहीं चलगए फिर लौटकर बहुत वर्षोंतक नहीं आए तथा उनकी गैर हाजरीमें श्रावकोंने कुछ ख्याल नहीं किया बस अधिकार पंडोंका हो गया। अब कई वर्षसे राजा उदयपुरके आधीन है जो रास्ता उदयपुरसे धुलेव जानेको है उसमें पाडे धावडासे गांव धुलेवतक दो मीलके अनुमान रास्ता बहुतही खराब है, घोडोंको व बैलोंको बहुत तकलीफ होती है तथा बरसातमें तो बहुतही दुःख होता होगा। यहांपर लखों रुपये भंडारमें हैं फिर इस रास्तेमें पक्की सडकका न बनना आश्चर्यकारी है कमेटीको इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिये। यहा गांवमें १ हिन्दीका मदरसा भंडारकी तरफसे है जिसमें २ अध्यापक हैं परन्तु धर्म शिक्षणका प्रबन्ध नहीं है—धुलेवके आसपास बहुतसे गावोंमें कोई भी मदरसा नहीं है कमेटी तथा महाराजउदयपुरको उचित है कि यहांके भंडारके द्रव्यसेही सब गावोंमें एक एक मदरसा खुलवा देवें तथा धुलेवमें एक बड़े मदरसे और उसके साथ एक बोर्डिङ्गका प्रबन्ध करै जिसमें बाहरके गावोंके लडके रहकर उच्चशिक्षा प्राप्त कर सकें। इस गांवके बाहर एक सूर्जकुडनामका तालाव है जिसके किनोर एक पत्थर पर यह लेख है—

(शेष आगे)

समालोचना।

काव्यकला निधि—श्रीमान् साहित्यानुरागी बाबू जगन्नाथ प्रसादजी भानु कविराजके उद्योगसे वैद्यवर महावीर प्रसादजी (वीर कवि) द्वारा सम्पादित होकर कौंढ (मिरजापुरसे) निकला है, पत्र पुराना है बीचमें ठोकर खा गया था। श्रीभानु कविराजका आश्रय पा अब फिरसे सम्हला है भगवान सदा प्रकाशित रक्खें। नाम सुधानिधिके पलटे कलानिधि रख लिया है, हेतु कुछ भी हो, पर हमें पहिलेसे मीठा लगा है कविता अच्छी निकलती है, कोई २ कविमहाशयोंने स्वदेश भक्तिका परिचय दिया है, और सवैया वा कवित्तके अतिरिक्त अन्य वृत्तोंमें भी परिश्रम किया है, हम हृदयसे इसकी उन्नतिके अभिलाषी हैं। गद्य पद्य दोनो अगोंसे सजा हुआ कलानिधि देशभरमें चमकेगा और भाषा साहित्यकी उन्नतिका कारण होगा ऐसी हमें आशा है अनाभ्यासी और खींचतानकर जबर दस्ती तुकें मिलानेवाले कवियोंको टिप्पणी द्वारा सूचना दे दी जाती है यह भी अच्छा है। परन्तु "टेढी सीधी समस्यापूर्ति छपाना ही जिन्हें अभीष्ट हो, वे साधारण मूल्यसे अधिक देकर छपा सक्ते हैं" यह बात हमारे पसन्दनहीं आई, सम्पादक महाशय विचार करें। पत्रमें श्रृङ्गार रसकी गौणता रहेगी यह सन्तोषकी बात है. समस्याएं और लेखके विषय भी बढ़िया रक्खे गये हैं. काव्य प्रेमियोंको अपनी योग्यता बढ़ानेका अच्छा मौका है। पत्र मासिक है, मूल्य १॥) मात्र है।

मिलनेका पता.

मेनेजर काव्य कलानिधि कौंढ (मिरजापुर)

उपदेशक दीपचन्दजीका दौरा

कुर्डवाड़ी (शोलापुर) १९-५-०७ जैन मंदिर १ ग्रह संख्या १६ है. सभा स्थापित करनेका हेतु वक्तृता दी—

धाराशिव उर्फ उसमनाबाद १३-५-०७ ई. २० स्त्री पुरुष सभामें उपस्थित थे पाठशाला और सभा स्थापित करनेके विषयमें व्याख्यान दिया. सम्पूर्ण मंडलीके एकत्रित होनेके विचाराधीन रक्खा।

बार्सी—१७-५-०७ ग्रह संख्या ५० जिन मंदिरजी १ हैं विद्याके लाभ सुनाये लाइब्रेरी स्थापित करने और पाठशाला ठीक रीतिसे चलानेका अनुमोदन किया।

सेंदरी—२१-५-०७ शास्त्र स्वाध्याय, रात्रिभोजन त्याग पर उपदेश दिया ८ महाशयोंने शास्त्र स्वाध्याय और ५ सज्जनोंने रात्रिभोजन त्यागकी प्रतिज्ञा ली।

शिखरजीका तार।

विदित हो कि श्री सम्मेद शिखरजीसे मिस्टर ए. बी. मालगावेका (जो कि बम्बईसे तीर्थक्षेत्र कमेटीकी ओरसे डेप्युटेशनमें गये थे) ता २८ मई को एक तार आया है जिसमें प्रगट हुवा है कि " Giving land on lease postponed till August " अर्थात् जगहका पट्टे पर देना अगस्त महीने तक मुलतबी रखा गया है। इसका सविस्तर वृत्तान्त पत्र आनेसे प्रगट होगा अगामी अंकमें मुद्रित किया जावेगा।

प्राप्ति स्वीकार।

श्री सम्मेद शिखरजीपर परमतावलम्बियोंके बंगले आदि बननेके विरोधमें कोशिस करनेके हेतु निम्नलिखित स्थानोंसे द्रव्यकी सहायता ता. २४ मई ०७ ई. पर्यन्त हुई है:—

५०) दिगम्बर जैन पचान बुरहानपुर.
२१) लाला कामता प्रसादजी बहगमघाट
२१) दिग० जैन पचान, नीमच.
१३॥) जैन खण्डेलवाल श्रावक, कोपरगांव.
२०) गोविन्दराव राघोजी, नांचणगाव (वर्धा)
१२०) दिग० जैन पचान, भिवानी.
१००) लाला बद्रीदासजी, लखनउ.
५०) बा. अजितप्रसादजी वकील, लखनउ
११२॥) महासभाके अधिवेशन कानपुरमें आये.
९९) पचललितपुर रु. १००) बाद मनिआर्डर खर्च. रु. १)
९॥।=) मूलचन्दजी बरुवा सागर रु. बाद मनीआर्डर खर्च, =)
३॥।≡) लाला नेमीचन्दजी लोकपुर धरमचंद पवरपुरका बाद मनीआर्डर खर्च.

कुलटोटल ५०५।≈)

कई स्थानोंके पंचों तथा उदारशील महाशयोंने चंदा और भी भेजना स्वीकार किया है आशा है कि वे शीघ्रता करेंगे। उपर्युक्त द्रव्य-सहायकोंको मैं कमेटीकी ओर से कोटिश. धन्यवाद देता हू।

प्रार्थी—

आफिस हीराबाग, गिरगाव, बम्बई ता २४-५-०७ ई.	माणिकचन्द हीराचन्द जे. पी. महामंत्री, ती क्षे. कमेटी,

प्रेरित पत्र।

क्षमाप्रार्थनाका जबाब।

पाठक महाशय! जैनगजटके उपसम्पादक बाबू जैनेन्द्र किशोरजीने जैनगजट अंक १८ पृष्ट ६ में एक क्षमाप्रार्थनाका पेरा छापा है उसमें आपने मुझसे भी क्षमा मागी है क्योंकि आपने अपने पवित्र लेखोंमें मुझे "नादान मित्र" आदि पदवीसे भूषित किया था। परन्तु अब बाबू साहबको मालूम हो गया है कि "इनके विरुद्ध लिखना हमारा सब अन्याय कार्य था" इसी कारण आप अपनेको इस अन्याय कार्य करनेके अपराधी समझकर मुझसे क्षमा प्रार्थना करते हैं सो मैं भी इन्हें क्षमा प्रदान करता हू. परन्तु—आपने प्रातस्मरणीय श्रीमान् विद्वद्वर्य पंडित गोपालदासजीका विना कारण ही जितना अविनय किया है वह किसी प्रकार भी क्षम्य नहीं हैं इस महापापका प्रायश्चित, आपको अवश्य ही भोगना पडैगा जिसके लिये आपको तैयार रहना चाहिये।

बडे हर्षकी बात है कि आप शीघ्रही एक जैनबंधु नामका मासिकपत्र निकालकर फिर भी जैनजातिकी सेवा करनेके लिये तत्पर हुये हैं परन्तु मेरी समझमें आपकी सेवाको यह जाति कदापि नहीं चाहती। यदि आपकी सेवासे यह जाति प्रसन्न रहती तो जैनगजटकी वर्तमान दुरवस्था कदापि न होती और न आपसे जैनगजटका विछोह होता।

यदि जैनजातिकी पवित्र सेवाका आनंद लेनेकी इच्छा हो तो अहर्निश जैनग्रंथोंका स्वाध्याय करके जैनधर्मसे कुछ परिचित हो जाइये और जैनधर्मके जानकार जैनी विद्वानोंके चरणोंकी कुछ काल सेवा करके आशीर्वाद ग्रहण कीजिये अन्यथा आपका जैनबन्धुके प्रकाश करनेमें परिश्रम करना जैनगजटवत् व्यर्थ ही जाता दीखता है।

आपका हितैषी
वही नादान मित्र
पन्नालाल जैन।

नवीन समाचार।

फूलबहिनकन्याशाला, नवापुरा, सूरत।

इस कन्याशालाको खोलनेके लिये ता. २३ मई-को शेठ माणिकचन्दपानाचंदजीकी चन्दावाडीमें सबेरे ९ बजेके समय एक भारी सभा हुई। सभापति शेठ हरीभाई देवकरणके प्रपौत्र शेठ हीराचन्दजी हुए थे, मंगलाचरणके पश्चात् भाई मूलचन्द किशनदासजीने कन्याशाला स्थापित होनेकी हकीकत इस प्रकार वर्णन की। यह शाला शेठ माणिकचन्द हीराचन्दजीकी परलोकवासिनी सुपुत्री "फूलकौर" की यादगारमें खोली जाती है, इसके लिये शेठजीने ५०००) रु. एक मुश्त प्रदान किये हैं तथा दो वर्ष पर्यन्त खर्चमें जो कमी रहे उसकी पूर्ति करनेका प्रण किया है. इस शालाके सुप्रबन्धार्थ १९ महाशयोंकी एक मैनेजिङ्ग कमेटी नियत की है। इस शालामें धार्मिक तथा व्यवहारिक शिक्षा दी जावेगी। पश्चात् शेठ चुन्नीलाल झवेरचन्द तथा बाबू सीतलप्रसादजीने बालकोंकी अपेक्षा कन्याओंके सिखलानेकी अधिक आवश्यक्ता है यह निरूपण किया, जिसके प्रभावसे निम्न लिखित महाशयोंने इसके फण्डमें उसी समय द्रव्य अर्पण किया।

पश्चात् सर्व भाई कुंभकलश लेकर "नवापुरा" पहुचे, शालाके मकानमें सरस्वती पूजन की गई तथा २५ कन्यायें उसी समय भर्ती हुई।

शे० नवलचन्द हीराचन्दजीने अपने पुत्र तारान्दके विवाहके हर्षमें	२५०)
बुद्धिमती मगन बाई	२५०)
तारीबाई (भगिनी मगनबाई)	१२५)
फूलकौरकी माता (स्वर्ग गामिनी)	१२५)
बाई मैनाबाई (हरीभाई देवकरन) शोलापुर	५१)
,, रावजी नानचन्द "	४१)
झूमाबाई (फकीरचद हेमचन्दजीकी विधवा)	५१)
ममाबाई (शे चुन्नीलाल झवेरचदजीकी माता)	२५)
शे. जयचन्द मानचन्द पूना	२५)
,, चुन्नीलाल हेमचन्द	१५)
,, ठाकुरदास भगवानदास	१५)
,, कुदनलाल कपूरचन्द	११)
कुल रु०	९८४)

शुरमा ! शुरमा ! ! शुरमा ! ! !

जैनग्रन्थ रत्नाकर कार्यालयके सिवाय हमारा एक **स्वदेशी कार्यालय** नामका विभाग है । जिसमे १० वर्ष हुए अनेक प्रकारके शुरमे बनते है और सब भाइयोंके नेत्रोंकी रक्षार्थ सहायता पहुचाई जाती है । हमारे यहांके बने हुए शुरमे सर्व साधारण और जैन समाजमें प्रसिद्ध है जिन २ महाशयोंने हमारे यहांसे एक बार एक शीशी मगाई है, वे आज तक हमारा ही शुरमा मगातेहै और अपने दोस्तोंकेलिय भी मगा देते है इसकारण हमने इसके विशेष इश्तहार न देकर जो भाई इस शुरमेसे अपरिचित है उनको इसके प्रत्यक्ष गुण दिखानेके लिये **सर्व प्रकारके शुरमेकी २००० शीशियें विना मूल्य** बतौर नमूनेके वितरण करनेका प्रबध किया है. सो जिनको इस शुरमेसे अपने अमूल्य नेत्रोंकी रक्षा करना हो, वे नीचे लिखे शुरमोंमेसे चाहे जिस प्रकारके शुरमेकी एक शीशी मगा लेवे परतु डाकखर्च और पेकिंग खर्चके लिय ≈) आनेके टिकट चिट्ठीके साथ अवश्य ही भेजने होंगे एक भाईको एक ही शीशी भेजी जायगी ।

* **काला शुर्मा न० १** यह शुर्मा हमेशह नेत्रोंमें लगानेसे सब रोग वा आखोंकी गर्मी नष्ट करके ज्योतिको बढाता है । मूल्य आधे तोलेकी शीशीका ॥) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

* **कालाशुर्मा न २** इस सुरमेको प्रात काल और सोते समय लगानेसे नत्रोंके सब रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाते है । यह शुरमा बहुत बढिया और ठडा है—इस शुरमेको भोपालपटनमके तहसीलदार साहब मूलचदजी परवार प्राय ८ वर्षसे लगाते है इन्होंने अपने अनेक हितैषी उहदेदारोंको इस शुरमेके भक्त बनाये है उसके अनेक प्रशसा पत्र हमारे पास हैं हम उन्हें न छपाकर इतना ही कहते है कि १ शीसी मगाकर अवश्य ही आजमा लेवें । मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

***सफेद शुरमा नं० ४** इस सुरमेको सबेरे तथा शामको चार बजे लगाकर ५ मिनिटके बाद न० २ का ठडा शुरमा लगाया जावे धुंद नजला, दृष्टिमन्दता, रतौंदा आदि नेत्रके समस्त रोग नष्ट हो जाते है । असली मधुसे (शहदसे) सलाई भिजोकर अथवा शुरमेको मधुमे मिलाकर सलाईसे लगाया जावे तो एक वर्षतकका फूला भी प्राय: कट जाता है परतु शहद असली न होगा और उसमें खांडकी चासनी वगैरह मिली होगा तो उल्टा नुकसान करेगा. मूल्य डेढ मासेकी शीशीका ५) नमूना आधा मासा ।

***नयनामृत अर्क न० ८** इसको सलाईसे दिनरातमें तीन चार बार लगानेसे न० १ के मुवाफिक गुण करता है । मूल्य ।) नमूना मुफत ।

* **तरल सुरमा (अर्क) न० ९** मूल्य ॥) वृद्धों व विधवा स्त्रियोंके लिये है । तथा दुखनी आईहुई आखोंके लिये तो यह रामबाण है तीन चार दिन तक दिनरातमें ४ बार लगानेसे दुखनी आइ हुई आंखोंको आराम कर देता है । एक २ सीसी सब गृहस्थोंको अपने घरमे रखना चाहिये, जो महाशय, दुखती आंखोंवालोंको मुफत बाटना चाहे उन्हे हम इसे बहुत किफायतसे भेज सकते है ।

पवित्र स्वदेशी कशमीरी केशर ।

सूरज छाप वगैरह विलायती केशरमे शराब वगैरह अशुद्ध पदार्थोंका मेल होता है यह बात अब जगत्प्रसिद्ध हो गई है इसकारण मुम्बईके स्वेताम्बरी भाइयोंने पचायती करके स्वदेशी पवित्र कशमीरी केशरकेलिये एक दुकान खोल दी है और काशमीरमें खास जैनीभाई भेजकर गांव २ के किसानोंसे खरीदकर केशरका सग्रह करके सर्वत्र पवित्र केशरके पहुचानेका प्रबध किया है । अनेक भाइयोंने इस केशरमे भी अशुद्ध पदार्थ मिले हुये बताये थे इसकारण भारतवर्षके जगत्प्रसिद्ध पदार्थ विज्ञानके प्रोफेसर गज्जर महाशयके कारखानेमे यह केशर भेजकर परीक्षा कराई तो उन्होंने नीचे लिखा सार्टीफिकट भेजा है ।

Techno Chemical Laboratory
Director Prof T K Gajjar
M A B S E A C S
Girgaum Tram Terminus
Bombay 9th February 1907

THE SWADESHI Co.,
Mandvi Bombay

Dear Sirs

The Sample of Swadeshi Saffron sent by you has been found to be a pure genuine Sample of Saffron unmixed with any adulterants

Yours faithfully,
(Sd) D D KANGA,
Analytical Chemist

इस कारण हमको पूर्णतया विश्वास होनेपर हमने भी दिगम्बरीय जैन समाजमे इस केशरका प्रचार करनेके लिये जैनमित्रमे इस्तहार दिया है सो जिन भाइयोंको यह पवित्र केशर चाहिये (अगर हमारा विश्वास हो तो) हमसे ही मगाया करे । अन्य जगहसे मगायेंगे तो असली पवित्र केशर मिलना मुशकिल है । मूल्य १।) रु तोला । पाव रतल, आधा रतल या एक रतल इकट्ठी लेनेसे ४५) रु. रतल है । रतल ३९ तोलेका होता है । यह भाव थोडेही दिन रहेगा क्योंकि माल बहुत थोडा रह गया है सो शीघ्र ही भाव चढ जायगा ।

मिलनेका पता—

पन्नालालजैन मालिक स्वदेशी कार्यालय ।
ठि० हीराबाग-पोष्ट गिरगांव (मुंबई.)

स्याद्वादपताका ।

यद्यपि हमारा आदि कर्तव्य अभीतक पूर्ण नहीं हुआ है अर्थात् जितनी विद्या पढनेकी हमारी इच्छा है उतनी नहीं पढ सका हूं अद्यापि स्याद्वादपाठशालाकाशीका विद्यार्थी होकर स्याद्वादविद्याका अध्ययन कर रहा हूं जो कि कई वर्षोंमें भी इच्छानुसार प्राप्त नहीं कर सकूंगा—परन्तु इस पर्यायका भरोसा नहीं कि—कब पूरी हो जाय. इस कारण मुझेभी कुछ न कुछ स्वकर्त्तव्य निश्चय करके कार्य क्षेत्रमें प्रवेश करना सीखना चाहिये नहीं तो अशिक्षित और जिनमतानभिज्ञ नेतृगणोंके द्वारा जैन समाजको बडे भारी अधकूपमें गिरना पडैगा, जिससे समीचीन स्याद्वादविद्या भी अतलस्पर्शी अज्ञान समुद्रमें विलुप्त हो जायगी—लाचार हमने अनेक महाशयोंकी सम्मतिसे विद्याध्ययनकी छुट्टियोंके समय यथासाध्य परिश्रम करके **स्याद्वादपताका** नामकी एक मासिक पत्रिका प्रकाशित करनेका मानस किया है ।

इस पत्रिकामें मासिक जैनमित्रके समान न्यूनाधिक ४० पृष्ठ रहैंगे, उनमें स्याद्वादमतसार, तत्त्वार्थसार (जैनसिद्धान्तदर्पण) समयसारनाटक भाषा टीका और वचनिका वगैरसहित, तथा एक प्राचीन उपन्यास, ग्रंथसमालोचन, सामयिक विवेचन आदि ऐसे विषय रहैंगे कि सर्वसाधारण जैनी भाइयोंके सिवाय भिन्नधर्मी विद्वानोंके पढने और आदर करने योग्य भी हो । ऐसी उच्च दरजेकी मासिक पत्रिकाके प्रकाशित करनेमें प्रथम तो श्रीमान् विद्वद्वर्य प० गोपालदासजी सरीखे विद्वानोंकी पूर्ण सहायता चाहिये दूसरे धनवानोंकी भी पूर्ण सहयता चाहिये । क्योंकि इसमें दो विद्वान् अवैतनिक परिश्रम करेंगे तौ भी छपाई वगैरहमें न्यूनाधिक (१५०) रुपये माहवारी खर्च पडैगा ।

इसका वार्षिक मूल्य सर्वसाधारणके लिये २॥) रु. और धनाढ्य, रईस, जमींदारोंसे ५) रुपये है । किन्तु भिन्नधर्मी विद्वानोंसे कुछ नहीं लिया जायगा ।

जो महाशय छह महीनेके भीतर इसका मूल्य भेज देंगे उनको **जीवंधरचरित्र** नामका अति उपयोगी नीतिका भंडारस्वरूप एक उत्तम उपन्यास ग्रन्थ भेटमें भेजा जायगा—

और—

जो महाशय एक साथ ५०) रुपये भेजकर इसकी सहायता करेंगे वे इस पत्रिकाके सरक्षक व यावज्जीव ग्राहक समझे जायगे । उनको पत्रिका और उपहारके ग्रंथोंकी एक एक प्रति विना मूल्य भेजी जायगी ।

यह पत्रिका कमसे कम ३०० ग्राहकोंकी मञ्जूरी आनेपर प्रकाशित होगी । इसलिये सर्व साधारण जैनी भाइयों और खास करके विद्वानो और धनाढ्य महाशयोंसे प्रार्थना है कि इस पत्रिकाके ग्राहक बनानेके सिवाय इसको हरप्रकारसे सहायता देकर मेरे इस प्रथम उत्साहको बढावेंगे ।

जो महाशय ग्राहक बनें वा सहायता देवें वे अपना नाम व पूरा पता हिंदी अक्षरोंमें लिखकर फिलहाल नीचे लिखे पतेसे पत्रव्यवहार करें ।

जैनसमाजका हितैषी दास—

गणेश प्रसाद जैन,
ठि. श्रीस्याद्वादपाठशाला, काशी
पो० बनारस सिटी.

'कर्नाटक' प्रेस, मुंबई

Registered No. B. 288.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छपने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

जैनमित्र

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
दूसरा भोईवाडा पो० कालबादेवी
बम्बई।

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

वर्ष ८ वां] ज्येष्ठ शुक्ल २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द। ता० १३ जून सन् १९०७ ईस्वी। [अंक १६ वां।

दिगम्बरजैनपरीक्षालय बम्बई।

सम्पूर्ण जैन पाठशालाओंके व्यवस्थापकों तथा अध्यापकोंको विदित हो कि, आगामी आषाढ़ मासके कृष्णपक्षमें सम्पूर्ण पाठशालाओंकी परीक्षा लेनेका प्रबन्ध किया गया है। इस लिये प्रवेशिकापरीक्षा और पंडितपरीक्षाके कौन कौनसे खडमें कितने २ विद्यार्थी परीक्षामें बैठेंगे, इसकी सूचना हमको शीघ्र मिलनी चाहिये, जिससे प्रश्नपत्रादि तयार करनेमें सुभीता पड़े। इस वर्ष कारण विशेषसे प्रत्येक विषयमें अलग २ परीक्षा लेना निश्चय किया है।

प्रत्येक पाठशालामें शिक्षक कितने है, बालक कितने है, शिक्षण किस पद्धतिसे होता है, आदि सब बातोंका खुलासा भी लिखिये। जिनके पास पठनक्रम व नियमावली न हो, हमसे मगा लेवें।

रावजी सखाराम दोसी
मंत्री परीक्षालय—शोलापुर

आवश्यकीय सूचना।

हमारे ग्राहक अनुग्राहक महाशय पता तबदील कराने वा अन्य संबंधमें पत्रादि भेजते हैं तो प्यारी हिंदीको छोड़ बहुधा भिन्न २ भाषाओं वा विचित्र अक्षरोंका उपयोग करते हैं; ऐसा करनेसे हमें और उन्हें दोनोंको दुख और हानि की संभावना है. जैनमित्र हिंदीका पत्र है और उसकी लिपि नागरी है। इस लिये हर प्रकारकी चिट्ठी पत्री हिंदीहीमें आना चाहिये. अन्यथा उन्हें रद्दीमें आसन लगाना पडैगा इसी प्रकार ग्राहक नंबर न लिख भेजनेसे कदाचित विलम्बसे अथवा बिलकुल उत्तर न मिलेगा.

जैनमित्रमें स्थानका घाटा होनेसे बाहरके आये हुए लेखोंका बहुत कम सन्मान होता था. ऐसा करनेसे हमारे लेखक और सम्वाददाता प्राय उत्साहहीन हो गये हैं, उनसे निवेदन है कि ताजे समाचार और ललित लेख भेजनेकी कृपा किया करेंगे तो उन्हें अवश्य स्थान मिलेगा।

संपादक

जापान के लिये वजीफा

जैन भूषण राय फूलचंदजी इन्जीनियर ने सहारणपुर के अधिवेशन पर १००) मासिक का वजीफा ३ वर्षके लिये नियत किया था, जिसे बाबू माणिकचंदजी ने लेना स्वीकार किया था. परंतु अब वे किसी विशेष कारण से नहीं जाना चाहते. इसलिये नोटिस दिया जाता है कि जो जैन महाशय इस वजीफे के वास्ते प्रार्थी हों, वे अपना प्रार्थनापत्र और योग्यताके सर्टीफिकेट नीचे लिखे पते पर भेजें; और यह भी लिखे, कि किस विषयकी शिक्षा पानेके लिये जाना चाहते हैं.

पता—चेतनदास, सेक्रेटरी
दी. जै. यं. मे. ए. आफ इंडिया
कर्नैलगंज इलाहाबाद

पुरस्कार—संस्कृत विद्याका प्रचार तथा लौकिक पारमार्थिक विद्यामें कुशल संस्कृतीय पंडितोंकी प्राप्तिके क्या २ उपाय हैं इस विषयमें सर्वोत्तम लेख लिखनेवालेको १०) दस रुपया पारितोषक दिया जावेगा. २९ जुलाई तक लेख जैनमित्रके आफिसमें आ जाना चाहिये।

दाता
दोसी सखाराम माणिकचंद।

प्लेग औषधालय—श्रीयुत फतेलालजी गोधा बहुतकालसे विना मूल्य औषधि बाट रहे हैं आपने हजारों मनुष्योंको प्लेगकी तेगसे बचाया है जिन्हें औषधि चाहना हो, वे निम्न लिखित पतेपर।) या॥) के टिकट डांक व्ययके हेतु भेजकर मगा सक्ते हैं

पता—फतेहलालजी गोधा
मऊ छावनी (इन्दौर)

पंडित चाहिये—यहा त्यागी पन्नालालजीका चौमासा है उनके पढानेके लिये एक जैन पंडितकी आवश्यकता है; जो जैन मतके तत्वोंका जानकार हो, आचरण योग्य हो, संस्कृतका भी ज्ञाता हो, वेतन २०) से २९) तक मासिक दिया जावेगा. विशेष हाल पत्रादि द्वारा विदित हो सक्ता है—

पता—कस्तूरचंद जैन, रतनत्रय मंडली
भीलवाडा.



मनरञ्जन तैल ।

यह दुनियां भरमे खुशबूकी खान और चित्तको गद गद करनेवाला है ।

हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको मथनकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है। इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठंडक पहुचती है। बदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूर होकर लोहू और ताकत बढ़ती है । फी शीशी ॥≡) डा. ख. ।)

खांसी की दवा ।

इस दवाको खानेसे खांसी तथा तर स्वास छातीका दर्द आदि कफ सम्बन्धी रोग फौरन दूर हो जाते हैं । की० ॥) शीशी डा० ≡)

निमकसुलेमानी ।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, बदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, ववासीर प्रमेहनाशक है। स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है । फी शीशी ॥) डा. ख अलग

दंतकुसुमाकर ।

इसके लगानेसे दांतोंका हिलना मसूड़ोंका फूलना, खूनदर्द आदि आराम हो दांत मोतीकी तरह चमकते हैं। रोज लगानेसे दांत आजन्म दृढ बने रहेंगे। फी डिब्बी ।)

दवा दादकी ।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर भगाती है । फी डिब्बी ।)

गंधकवटी ।

यदि बालकोंको हमेशा स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसे मंगाइये इससे बच्चोंका ज्वर खांसी दस्त वायुरोग दूर होकर खूब मोटा ताजा हो जाता है इसकी गोली रोज खिलाना चाहिये. कीमत. ॥) सी. डा. ≡

पंचतिक्तवटिका ।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है। इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते है। किं०॥)डा.≡)

जगद्विख्यात पवित्र १० वर्षकी आजमाई हुई

प्रमेहनाशक अपूर्वताकतकी दवा ।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनकी सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना, मसगकी इच्छा न होना, नपुंसकता, नाताकती, कमरमें दरद, थोडा चलनेसे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुशकी वा जर्दी, बदनमें, फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्बलता, रगोंकी कमजोरी, उठती जवानीमें कुचालसे पैदा हुई नामर्दी,, आदि सब रोग जड़से नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है । जिसमें उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आखोंमे रोशनी, बदनमे फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है। मूल्य १ डिब्बाका २।॥), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १३) खर्च माफ.

श्वासारिष्ठ ।

इसमे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है । कीमत १) डा० ॥)

नपुंसकत्वारि तैल ।

इसके लगानेसे गुप्तभागसबधी सर्व प्रकारके रोग दूर होते है । फी सीसी १) डाकखर्च ≡)

प्रदरांतक चूर्ण ।

इसमे स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस संबंधी सर्व विकार दूर होते है । कीमत १) डा० ≡)

नयनामृत सुरमा ।

इसके लगानेसे आखोंका जाला धुन्ध, फुली, पानी, बहना, सुर्खी, पत्थर आदि नेत्ररोग दूर होते हैं और ज्योति बढ़ाता, ठडक रखता और पढ़ते २ आखों नहीं थकती हैं। फी शीशी १) लगानेकी सलाई ।)

अर्क कपूर ।

यह हैजा व अतीसारकी अक्सीर दवा है और बदहजमी पेचिस मरोडकी भी लाभ कारी है । फी सी० ।) दो से कम न भेजेंगे.

शिरदर्द नाशन तैल ।

यथा नाम तथा गुण की०॥) सी. डा० ≡)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य, आयुर्वेदीय औषधालय–इटावा (U. P)

उत्तम और सस्ते जैनपुस्तक ॥

जैनग्रन्थसंग्रह

छप गया ! छप गया !! छप गया !!! जिस पुस्तकके लिये ग्राहकगण चिट्ठियोंकी भरमार कर रहे थे वही फिर दूसरी बार छप गई साथही मूल्य भी कम कर दिया है इसमे छोटी बडी सस्कृत और भाषाकी ५० पुस्तकोंका सग्रह है परदेशमें केवल यही एक पुस्तक पास रखना काफी है सुन्दर टाईपसे पुष्ट कागजपर छपी और जिल्द बधी है जल्दी न मगानेसे पछताना होगा किं ०॥) डा० माफ ।

व्याख्यानरत्नमाला ।

विद्या, धर्म, सत्सगति, कुरीतिआदिके विषयमें ८ भाग	।)
नवीन होली सग्रह, एकबार अवश्य पढ़िये ...	)॥
सांगीत मनोरमा (नौटकीकी राहमें) ...	≈)
सांगीत नेमचन्द्रिका (नौटकीकी राहमें) ...	≈)
जैनभजनसग्रह (चालें भी लिखी हैं)	≈)
स्तोत्रशतक (अनेक रागोंमें १०० स्तुतियां है) .	≈)
प्रश्नोत्तरमाला (चर्चाकी पुस्तक है) ...	-)
तत्वार्थसूत्रजी मूल	-)
पञ्चमङ्गल पाठ	)॥
बारहमासा राजुलजी	)॥
बारहमासा सीताजी	)।
बारहमासा मुनिजी	)।
बारहमासा व्रजदल	)॥
वैराग्य भावना	)।
अध्यात्म पचासा	)।
दश आरती	)।
निर्वाणकाण्ड भाषा	)।
धर्मपच्चीसी	)।
हुक्का निषेध	)।
दु:खहरण विनती	)।
सकटहरण विनती	)।
बारह भावना सग्रह	)।
समाधिमरण (एक विनती सहित) ...	)।
परमार्थ जकडी, वा० राजुल सोरठर्स	)।
पुकार पचीसी	)।
जैनबालगुटका (बालकोंको पढाइये) ...	)॥
इष्ट छत्तीसी निर्वाणकाण्ड गाथा ...	)॥
बाईसपरीषह, बारह भावना सहित	)॥
प्रश्नोत्तर नेमराजुल	)॥
आलोचनापाठ अर्थसहित	)॥
ब्याहला नेमिनाथ	)।
सामायक भाषा	)।
सप्तऋषि पूजा	)।
निशिभोजन भुंजन कथा	)।
भक्तामर सस्कृत व भाषा	-)
विदेशी खाड निषेध)॥ } दोनो १०० इकठी लेनेसे २ रु० सैकडा	
बुढापेका विवाह)॥ }	

नियमावली ।

१ बार आनेसे कमकी पुस्तकें नहीं भेजते हैं ।

२ एक किसमकी ५ पु इकठ्ठी लेनेसे १ मुफ्त ।

३ डांक खर्च पाससे देते हैं ग्राहकोंको सिर्फ मनीआर्डर फीस देना होगी ।

मिलनेका पता —

बाबू चौरसिंह जैनी, इटावा (U. P.)

जैनमित्र.

ज्येष्ठ शुक्ला २ श्रीवीरनिर्वाण संवत्
२४३३ ता० १३ जून सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

जैनियोंका सर्वस्व छुवा जाता है

श्री सम्मेद सिखरजीपर बंगले बाधनेके वास्ते डिपुटी कमिश्नर हजारीबागकी ओरसे जो नोटिस निकला था उसके विषयमें निषेध करनेके हेतु तार देनेकी सूचना सम्पूर्ण जैन जातिको दी गई थी, और प्रत्येक पचायतकी ओरसे दो दो चार चार टेलिग्राम नियमित तिथिको भेजनेकी प्रार्थना की गई थी। उसके अनुसार सब सज्जनोंकी ओरसे अनुमान साढेचारसौ निषेधसूचक तार और कई अर्जिया डिपुटी कमिश्नर हजारी बागके पास पहुंची हैं. और डिपुटी कमिश्नरके चित्तपर उसका बहुत ही असर हुआ है। बहुतसे तार एकदम आनेके कारण उन्होंने अनुमान किया था कि उक्त तारिखको जैनियोंकी ओरसे करीब २००० मनुष्य पहाडपर उपस्थित होंगे. परन्तु वहा पहुंचनेपर केवल ३०, ४० मेम्बर दृष्टिगत हुए. तब तो उनके हृदयसे जैनियोंका गौरब बिलकुल उठ गया और पहुचे हुए प्रतिनिधियोंसे निष्प्रेहताके साथ बातचीत करना प्रारभ किया. उनके चित्तपर उन अमित तारों और दरखास्तोंका कुछ भी प्रभाव विदित नहीं होता था. यदि जिस जोशके साथ तार दिये गये थे वैसेही प्रत्येक स्थानसे प्रतिनिधि महाशयोंका शुभागमन हुआ होता तो जैनियोंके धर्मस्नेहका साहिब-बहादुरके चित्तपर अच्छा प्रभाव पडता और उसका परिणामभी आशातीत होता.

हमें जैनियोंकी ऐसी शिथिलता देखकर अत्यन्त खेद होता है. परन्तु अब भी प्रार्थना करते हैं कि जिस समय लेफिटनेंट गवर्नर साहिब पहाडका मौका देखकर बंगले बांधनेको पट्टे देनेके लिये आवेंगे उस अवसरपर प्रत्येक पंचायतीकी ओरसे दस दस, बीस बीस प्रतिनिधि जरूर भेजे जाना चाहिये और उनके खर्चका प्रबध पचायतकी ओरसेही होना चाहिये. नहीं तो अपनी अपूर्व सम्पत्तिका आप स्वय खो बैठेंगे। इस लिये तीर्थक्षेत्र कमेटीकी ओरसे सिखरजी पहुंचनेकी तारीखसे सूचना मिलनेपर बिना विलम्ब पहुंचकर धर्मस्नेहका परिचय देवें. गिरिराजकी भक्तिका यही उत्तम अवसर है हमारे मुखिया और धनाढ्य भाइयोंको इस बातपर अवश्य ध्यान देना चाहिये।

कलकत्ता यूनीवर्सिटीमें जैन साहित्य।

सहयोगी जैनके द्वारा यह जानकर कि, "इस वर्ष कलकत्ता युनिवर्सिटीकी एम. ए. परीक्षाके पठनक्रममें जैन साहित्यको स्थान दिया गया है." हर्ष हुआ। साथ ही इस बातका विचार हुआ कि, बम्बई, और इलाहाबादकी यूनिवर्सिटियोंमें जिनमें कि सबसे प्रथम स्थान जैन साहित्यको मिलना चाहिये अभीतक इस बातकी चर्चा क्यों नहीं है? मद्रास यूनिवर्सिटीमें जैन साहित्य कई वर्ष पहले भरती हो चुका है। परन्तु यथार्थमें बगाल और मद्रासमें जैन साहित्यकी उतनी आवश्यकता नहीं थी, जितनी बम्बई और इलाहाबाद में है. क्योंकि इन दोनो ही प्रान्तोंमें जैनियोंकी बस्तीका बहुत बडा भाग है, जब कि मद्रास तथा बंगालमें उसका दशाश भी नहीं है। इसके सिवाय बम्बई तथा इलाहाबादकी यूनिवर्सिटियोंसे दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा बम्बई, दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभा और शायद महासभाकी ओरसे कई प्रार्थनायें भी की जा चुकी हैं, जब कि बंगाल और मद्रासमें इसके लिये तत्रस्थ जैनियोंके द्वारा कुछभी प्रयत्न नहीं हुआ है। हम उक्त दोनों यूनिवर्सिटियोंके कार्यकर्त्ताओंका ध्यान इस ओर आकार्षित करते हैं, और आशा करते हैं कि वे बहुत जल्दी अपने कोर्समें जैन साहित्यको भरती करके अपने इस एक बडे भारी लाछनको धो डालेंगे, जो कि समदर्शी निष्पक्ष पुरुषोंमें नहीं होना चाहिये। जैन साहित्यको स्थान न देकर वे न केवल उस अपूर्व साहित्यका जो अपने सहयोगियोसे किसी बातमें कम नहीं है, अपमान करती हैं वरन अपनी पक्षपातिता भी सिद्ध करती हैं। उन्हें मद्रास तथा कलकत्ता युनिवर्सिटीकी निष्पक्षता गुणग्राहकताकी ओर देखकर उनसे सबक लेना चाहिये, जिन्होंने प्रेरणा (प्रार्थना)के बिना ही जैन साहित्यको अपना आभारी बनाया है। बंगाल और मद्रासका उपर्युक्त उदाहरण लेकर अब हम लोगोंको भी एकवार फिरसे बम्बई इलाहाबाद तथा पंजाब की युनिवर्सिटियों के निकट प्रार्थना पत्र भेजना चाहिये और यथाशक्ति प्रयत्न करके अपने जगच्छिरोमणि जैनसाहित्यका गौरव प्रगट करके उसे उच्चासन पर आरूढ करना चाहिये।

अमेरिका में वैष्णव धर्मका प्रचार।

पाश्चात्य देशोंने चाहे जितनी उन्नति करली हो, वे उन्नतिके शिखर तक पहुच चुके हों, परन्तु इसमें सन्देह नही है कि धर्मोन्नतिका अभी वे ओनामा (ओंनम) ही पढ रहे हैं। यही कारण है कि, वहाके लोगोंका ध्यान भारतीय धर्मोंकी ओर थोडे ही प्रयत्नमें सविशेष रूपसे आकर्षित हो जाता है। यहाका सामान्यसे सामान्य धर्म उन लोगोंके चित्तपर बहुत असर करता है। क्योंकि यहाके सामान्य धर्मोंमे भी जो तत्त्वविद्या है, वह वहाके किसी भी धर्ममें नहीं है। इसके सिवाय वहाके शिक्षित समाजमें धार्मिक हठ तथा पक्षपात बहुत कम है। इससे हृदय तुष्टि होनेपर वे स्वतंत्रतासे प्रत्येक धर्मका त्याग और ग्रहण कर सकते हैं। यूरोपकी अपेक्षा अमेरिकामें यह बात अधिक है। हमारे बहुतसे पाठक जानते होंगे कि कुछ वर्ष पहले श्रीविवेकानन्द सन्यासीने वहाके अनेक लोगोंको अपना अनुयायी बनाया था। उनके पश्चात् उनके शिष्यगण तबसे बराबर इस विषयमें प्रयत्न करते आये हैं और उसमें सफलता प्राप्त कर रहे है। अभी हालही एक सन्यासीकी चिट्ठीका कुछ अश श्रीव्येंकटेश्वर समाचारमें मुद्रित हुआ है। उससे विदित होता है कि, "उक्त सन्यासी महाशय ४ वर्षसे अमेरिकामें भ्रमण कर रहे हैं। इस बीचमें उन्होंने ३००० मनुष्योंको वैष्णवधर्मका उपासक बनाया है। आजकल 'कालीफोर्निया' के 'लसएंजलिस' नगरमें वे रहते हैं। वहा उन्होंने एक श्रीकृष्णका मन्दिर बनवाया है वहां बहुतसे वैष्णव रहते हैं। प्रतिदिन नामसंकीर्तन पूजन आरती आदि कार्य होते हैं। सन्यासीजी अपने धर्म ग्रन्थका प्रतिदिन अंग्रेजीमें व्याख्यान सुनाते हैं। इत्यादि।" देखा पाठक! धर्मकी उन्नति इसे कहते हैं। कई वर्ष हुए मि० वीरचद

गांधीने अमेरिकाके चिकागो नगरमें जैन धर्मका उपदेश देकर वहां एक "गांधी सोसाइटी" स्थापित की थी। उसके अनुयायी भी वहां सैकडों लोग हो गये थे, परन्तु उनकी मृत्युके पश्चात्, अब उक्त सोसाइटीका केवल नाम शेष रह गया है। हमारे समाजमें उन्नति २ चिल्लानेवाले सैकडों बी. ए. एम. ए. है, परन्तु उनमें कोई भी भाईका लाल ऐसा नहीं है, जो यहां कुछ दिन धर्मविद्याका अध्ययन करके अमेरिका जैसे सुदूरवर्ती प्रान्तके जड विज्ञानवादी लोगोंको जिनशासनका उपदेश देकर उद्धरित करनेका प्रयत्न करै। यदि प्रयत्न किया जावेगा, तो हमको पूर्णतया विश्वास है कि, अच्छी सफलता होगी। परन्तु प्रयत्नके लिये स्वार्थत्याग सत्यनिष्ठा, साहस, पुरुषार्थ और परोपकार आदि गुणोंकी आवश्यकता है, जिनकी यहां गंध भी नहीं है। हम लोगोंके भाग्यसे वर्तमानमें ऐसा शिक्षित समुदाय जन्म ले रहा है, जो समाज संशोधनके नामसे हमारे यहांकी पुरानी चाल ढालोंको रोंधता हुआ जातिधर्मके विचारोंपर नाक भौंह सिकोडता हुआ समाजमें एक विचित्र खलबली पैदा कर देनेको ही अपना परम कर्तव्य समझता है। अमेरिका जैसे सुदूरस्थ देशोंमें जाकर कार्य करना तो एक बडा भारी कठिन कार्य है, धर्मकर्ममें शिथिल होते हुए अपने ही भाइयोंको जागृत करनेवालोंका ही हमारे यहां टोटा है, क्या किया जावे?

कन्याविक्रयकी निंद्य पद्धति कैसे बन्द हो।

गत वर्ष दमोह जिलेके कुडलपुर अतिशय क्षेत्रपर कन्याविक्रय बन्द करनेके लिये व्याख्यानादि ए थे और तत्रस्थ पंचोंने उसके बन्द करनेके लिये प्रतिज्ञा की थी। तदनुसार एक सम्वाद दाताके द्वारा हमको यह जानकर बडा हर्ष हुआ कि, उक्त जिलेमें यह प्रथा धीरे २ बन्द हो रही है। वहांके लोगोंने इसे बन्द करनेके लिये जिस युक्तिका अवलम्बन किया है, वह अतिशय श्लाघनीय और सब लोगोंके अनुकरण करनेके योग्य है। हमारे सम्वाददाता लिखते हैं कि, जैतपुर (सागर)के बलारे सिंगईने अपने लडकेकी सगाई कुदपुरा (दमोह) की एक विधवा स्त्रीकी लडकीके साथ की थी। उसमें लडकीकी माने लडकेवालेसे १००) ठहरा लिया था, तदनुसार लडकेवाला पेशगी रुपया लकर उसे देनेके लिये गया। परन्तु यह बात जब वहांके पंचोंको मालूम हुई, तो उन्होंने उभयपक्षवालोंसे कहा, कि यदि रुपया ले देकर यह विवाह होगा, तो हम लोग तुम्हारे यहां सर्वथा भोजन पान न करेंगे। यह सुनकर लडकीकी माने अपनी दरिद्रताकी शिकायत की तब पंच सज्जनोंने उसके सम्बन्धीजनोंसे तथा दो एक उदार पुरुषोंसे कह कर कुछ चन्दा करा दिया, जिससे विवाह कार्य अच्छी तरहसे सम्पादन हो जावे। लडकीकी मा इससे सतुष्ट हुई है। विवाह शीघ्र होनेवाला है। इसी प्रकारकी एक घटना नसोंदा (दमोह) में हुई है। "वहां एक विवाहमें खमरिया (दमोह) की एक स्त्री आई थी, जिसने अपनी लडकीका द्विरागमन (गौना) लडके वालेसे कुछ रुपया लेकर किया था। यह मालूम होते ही विवाहमें जो लोग आये थे, उन्होंने कहा कि, यदि उक्त स्त्री विवाहमें रहेगी, तो हम लोग भोजन नहीं करेंगे, क्योंकि उसने कन्याविक्रयका अपराध किया है। तब विवाहवालेने उस स्त्रीको वहांसे चले जानेके लिये बाध्य किया। इससे लाचार होकर उसे अपना जेवर उतार कर उसी समय पंचोंकी मार्फत अपनी लडकीको दे देना पडा।" हम इस पवित्र पुण्य कार्यमें अग्रसर होनेवाले दमोह जिलेके सज्जनोंको धन्यवाद देते हैं, और अन्य प्रान्तके भाइयोंसे प्रार्थना करते हैं कि, वे उक्त युक्तिका आश्रय लेकर कन्याविक्रयके महत्पापसे अपनेको बचावें।

जैनमित्र अ. १४ में मुद्रित तमाखूके लेख का हमारे भाईयों पर अच्छा असर हुआ है. भाई मुकुटचंदजी नगलसरूपसे लिखते है कि, यहां एक सभा एकत्रित कर उक्त लेख सुनाया गया उसके प्रभावसे भाई रोशनलालजी, भाई ज्योतीप्रसादजी और मुंशीलालजीने (जो तमाखूके सख्त भक्त थे) जन्म पर्यन्त तमाखू पीने का परित्याग किया

जैन पद्धति अनुसार विवाह–हमें भाई मोतीलालजी कलकत्ताद्वारा समाचार मिले हैं कि भाई गोविन्दरामजी कस्तूरचंदजी देवपुर निवासीने अपनी कन्याका विवाह जैन पद्धति अनुसार किया. धन्य है! ऐसे ही साधर्मी पुरुषों द्वारा धर्मका महत्व विस्तृत होगा।

साथही सखारामजी दोशी शोलापूरसे लिखते है कि मै भुयार नामक ग्राम को विवाह के लिये गया था, कन्या पक्ष की ओरसे आर्ष विधि अनुसार व्याहका साजबाज हो रहा था परन्तु वर पक्ष की ओरसे यह धार्मिक कृत्य अस्वीकार हुआ. इसी प्रकार ईश्वरीदास छोगालालजी मऊवाले अपनी कन्याका विवाह जैन धर्म रीत्यानुसार करनेके प्रयत्नमे थे परन्तु वरके पिता इन्दौर निवासी शोभालालजी विघ्नरूप हुए. दोनों वर पक्षने उत्तर दिया कि पूर्वकालसे प्रचलित पुरुषाओंकी प्रथा नहीं छोड सक्ते। हम नहीं जानते कि आपलोग पूर्व पुरुषो की कौन २ प्रथाएं पकडे हुए है? या केवल इसी एक क्रूर प्रथाके भक्त बने हुए है—हाय! सपूर्ण कल्याणोकी करनेवाली आर्षपद्धतिको छोड कर उस मिथ्यात्वमय कुपद्धतिको पूर्व प्रथा बतलाई. आर्ष संस्कारोंको विसरण करनेहीसे वर्तमान सन्तान, ज्ञान हीन और निर्बल होती जाती है. पाठको! यदि तुम्हें धर्मका कुछभी अभिमान है, तो मिथ्या पद्धतिको तिलांजुली देकर आर्ष विधिसेही अपने पुत्र पुत्रियोंके विवाह किया कीजिये जिससे उन युगल दम्पति को निरन्तर सुख प्राप्त हो तथा उनकी सन्तान सबल और ज्ञानपूर्ण हो.

सुना है कि–मऊके सेठ मूलचंद जवेरचन्दजीने अपने घर के सन्मुख चैत्यालय बना लिया है. इससे अब बडे मंदिरजी पर आपकी बिलकुल निगाह नहीं है, यहां तक कि पूजन प्रक्षाल तक नहीं होती धन्य है! सामर्थ्यवानो का यही धर्म है!! अगर यह समाचार सच है तो बडी लज्जाजनक बात है. भाई जवेरचदजी एक सज्जन महाशय है आपको इतनाही इशारा बहुत है. आशा है कि भविष्यमें यह शिकायत नहीं रहेगी।

लक्ष्य दीजिये।

श्री सम्मेद शिखरजीके समाचार और हमारा कर्तव्य।

प्रिय पाठक गण! अपने "जैनमित्र" के गत कई अंकोंमें शिखरजीके भावी अनर्थके समाचार सुने थे, जिनको सुन कर आपका हृदय अत्यन्त असन्तुष्ट और सन्तापित हुवा होगा। कारण ऐसा कौन जैनी है जो जैनियोंके प्राणसे प्यारे परम पूज्य पर्वतको इस प्रकार अपवित्र होता हुवा देख, खेदखिन्न न हुवा हो और उसने आंसू नहीं टपकाये हो वह तीर्थराज जहांसे तीर्थंकरादि अष्टमधरा (मोक्ष

शिला) के स्वामी हुए हैं, वह निर्वाण कल्याणक भूमि जिसके दर्शनसे हम आत्म कल्याणके अभिमुख होते हैं, वह भारतवर्षका शृङ्गार जिसकी देव देवाङ्गना दिव्य भावसे पूजन-वंदन-कीर्तन करती हैं, वह धर्मक्षेत्र जिसकी वंदना करनेमे भव भवान्तरके पाप क्षय होते हैं, आज उसी जैन-सर्वस्व पर विधर्मीय आक्रमण होनहार देख हमारा सदय हृदय विदीर्ण होता है परन्तु प्रयत्न करना हमारा परम कर्त्तव्य है ।

महाशयो ! आप जानते हैं कि डिपुटी कमिश्नर हजारी बागने ता. २९ मईको दिगम्बरी श्वेताम्बरी मुखियाओंको शिखरजी शैलकी जगह पट्टेकी रीतिसे बंगले बनानेके लिये देनेके विषयमें बात चीत करनेको शिखरजीपर बुलवाया था उसका क्या परिणाम हुवा वही आप लोगोंको सुनाना परम आवश्यक है -

ता. २९ मईको सवेरे ७ बजे मधुवनमें श्वेताम्बरी कोठीके उपरी हातेमें एक सभा हुई. जिसमें हजारीबागके डिपुटी कमिश्नर मिस्टर कैमी साहिब वा गिरेडीके मेजिस्टेट मिस्टरजेम्स पधारे थे। इस प्रसङ्गपर दिगम्बर-श्वेताम्बर सम्प्रदायके निम्न लिखित महाशय उपस्थित थे जिनकी कि जैन जाति बहुत अनुग्रहीत है-दिगम्बरी भाइयोंके नाम-भारत वर्षीय दि जैन तीर्थक्षेत्र-कमेटीके ओरसे बाबू धन्नूलालजी अग्रवाल जैन अटर्नी कलकत्ता, दि जैन पचान कलकत्तासे बाबू परमेष्ठी दासजी खुरजेवाले, शे मटरु मलजी शे. दयानन्दजी, बाबू छन्नूलालजी जोहरी (प्रवन्धक तेरापथी शिखरजी कोठी) जयपुरसे शे मरव सुखजी खजाञ्ची, पचान फीरोजपुर (पञ्जाब) से ला. देवीसहायजी, तीर्थक्षेत्र कमेटी तथा बम्बई सभाकी ओरसे ला. प्रभूदयालजी कानपुर दोशी पानाचंद रामचंद, तिलोकचन्द सखाराम, शे सखाराम माणिकचंद, मिस्टर मालगावे ए. बी. आगरासे माणिकचन्दजी

श्वेताम्बरी भाइयोंकी ओरसे-राय बहादुर बद्रीदासजी, रायमहाराज बहादुरसिंहजी, राय-मुन्नीलालजी बहादुर, राय विजयसिंह बहादुर शे. लामचन्द मोतीचन्दजी आदि २४ महाशय उपस्थित थे.

डिपुटी कमिश्नर साहिबने समामें पहाड़पर बंगले बाधनेका इरादा प्रगट किया, और कहा कि हवा खोरीके लिये कलकत्तेसे अंगरेजोंको दार्जिलिंग जानेमें बहुत कष्ट तथा व्यय पड़ता है, कलकत्तेकी आब हवा ठीक नहीं है, इस लिये नजदीकही एक उत्तम आब हवाका स्थान (सेनीटेरियम) यह पर्वत मालूम होता है, इस लिये हमारी पीडापर लक्ष्य देकर अहिंसा धर्मके पालक जैनियोंको बंगले बनानेके लिये जगह देनी चाहिये । तब उत्तरमें दिगम्बर भाइयोंकी तरफसे बाबू धन्नूलालजीने इस पर्वतकी पूज्यता प्रगटकी और इससे हमारे धर्मको धक्का पहुंचेगा ऐसा निवेदन किया। फिरोजपुरवाले देवीसहायजीसे डिपुटीकमिश्नरके वाक्य न सहे गये वे एकदम जोशसे बोल उठे " हम अहिंसा-धर्मके पालक हैं इस लिये पर्वतपर किसी प्रकारकी हिंसा होना बहुत अनुचित समझते हैं । आपलोग शिकार खेलना, मास भक्षण करना, शराब पीना आदि कार्य नहीं छोड सक्ते. इसीसे हम बङ्गले बनना अस्वीकार करते हैं । इस अवसरपर अदालती कागजात हाइकोर्टका फैसला आदि दिखाये. परन्तु साहिब बहादुरने रंचमात्र लक्ष्य नहीं किया वरन आग्रहसे उन्होने यह फरमाया कि बगला ब नाना निश्चय हो गया है इसमें हम कोई उजर नहीं सुनेंगे. पहाडपर जैनियोंका सिवाय उन मन्दिरोंके कोई हक नहीं हैं ऐसा हाईकोर्टके फैसलेमें तय हो चुका है । अगर तुह्मारा मन्दिर विषयक कोर्ट उजर होतो जहां २ आप लोगोंके मन्दिर हैं उनके आसपास थोडी जगह छोड दी जावेगी और ऐसी किसी जगहपर बगले नहीं बांधे जावेंगे जिससे आपके यात्रियोंको त्रास हो. पश्चात् डिपु. कमि साहिबने इसमें सबकी राय पूछी तब सब भाइयोंने कहा कि यह धर्मकी बात है जिसके कि १४ लाख जैनी अनुयायी हैं हम अकेले इसका जवाब नहीं दे सक्ते हैं इसके लिये हमे तीन चार मासकी मोहलत चाहिये। परन्तु साहिबने कहा मोहलत नहीं मिल सक्ती ता. २६ को प्रात काल पहाडपर आकर कौनसी जगह पर बंगले बनाना चाहते हैं यह निश्चय करनेका ठहराव हुवा। पश्चात ९॥ बजे सभा विसर्जन हुई ।

ता. २६ की रिपोर्ट-श्री कुंथनाथ स्वामीकी टोंकके पास सबेरे साढे आठ बजे एक सभा हुई जिसमें दिगम्बरी भाई बाबू धन्नूलालजी अटर्नी, ला. देवीसहायजी, शे. सखसुखजी, वा डायाभाई उपस्थित थे. श्वेताम्बरी राय बद्रीदासजी, लामचन्द मोतीचन्दजी आदि आठ महाशय हाजिर थे. डिपु. कमि. साहिबने फरमाया कि श्रीचन्द्राप्रभुस्वामीकी टोंकसे पार्श्वनाथ स्वामीकी टोंक पर्यन्त उपरकी चौकी-पर जहा २ मन्दिर हैं उनके नजदीक हम बंगले नहीं बनावेंगे. परन्तु श्री पार्श्वनाथ स्वामीकी टोंकके नीचे जहा डाक बगला बना हुवा है उसकी समरेखामें दो तीन पहाडी हैं, नीचे कई टेकडी हैं उनपर तथा चंद्रप्रभकी टोंकके पश्चिम तरफ जो २ टेंकडी हैं उन सबपर हम बगले बाधनेके लिये पट्टे देंगे. तथा महावीर स्वामीका टेकरीके नीचेकी तरफ एक बंगलेके पाससे होकर जो रास्ता गया है उसकी दाहिनी बाजूपर दस बारह बंगले बाधे जावेंगे. यदि इन १० बंगले बाधनेमें जैनियोंको कोई विघ्न होता दीखे तो उस जमीनकी उपजकी जो आमदनी राजाको होती है उसके प्रमाण द्रव्य प्रदान [illegible] और एक इकरार नामा राजासे लिखवा लेवें कि यहा किसीको बंगले बाधनेके लिये जमीन नहीं दी जायगी वा यहा कोई धर्म विरुद्ध कार्य नहीं होने पावेगा । साहिबने कहा कि यह सब एक लाखके अन्दाज रुपये देनेसे तय हो जावेगा, यह रुपया हम लेवेंगे और पहाडपर साहिब लोगोंके आने जानेके सुभीतेके लिये एक अच्छी सड़क बनवावेंगे वा पानीका हौज बाधेंगे ।

इस विषयमे भी साहिबने जैनियोंकी राय पूछी परन्तु सबने यही कहा कि दो तीन महीने बाद सब जैन जातिसे पूछकर हम उत्तर देवेंगे इसके लिये मोहलत मिलनी चाहिये परन्तु उन्होंने कहा कि मोहलत तो नहीं दे सक्ते । इतना है कि अगस्तके महीनेमें छोटे लाट. (Lieutenant Governor) पहाड़पर आकर जमीन देखेंगे, हम हुकुम देंगे पश्चात् जमीन पट्टेपर दी जावेगी । इसके पहले हम अपनी रिपोर्ट गवर्नमेंटको भेजेंगे जिसके साथमें किस तरह पट्टे (Leases) दिये जाना चाहिये उसका फार्म भी भेजेगे । अत एव इन दो महीनोंमें पहलेहीसे जो कुछ जैनियोंको करना होवे कर लेवें, इस प्रकार बात चीत होनेके अनन्तर सभा विसर्जन हुई ।

भाइयो ! सावधान ! सावधान !

तारीख २९ मईको जैनजातिके धनाढ्यों वा वकील बारिस्टरोंको शिखरजी पहुंचनेकी प्रेरणा की गई थी. पंचायतोंको अपनी ओरसे प्रतिनिधि भेजनेके लिये लिखा गया था। परन्तु खेद है कि, उन्होंने हमारी प्रार्थनापर बिलकुल ध्यान नहीं दिया । डिपु. कमि. ने अपने नोटिसमें खुल्लम खुल्ला लिख दिया था कि जैनियोंका सिवाय मन्दिरोंके पर्वतपर कुछ हक

नहीं है. और बगले बनानेका भी दृढ़ विचार दर्शा दिया था उससे भी जैनियोंके नेत्र नहीं खुले यह कितनी लज्जाकी बात है ? घरके कामके वास्ते मनुष्य लाख दूसरे काम छोड़कर सैकडो कष्ट उठानेपर भी अपने अभीष्ट स्थानपर पहुचता है परन्तु मोह मदिराको पीकर हमारा सत्यार्थ घर कौन है ? कर्तव्य क्या है ? हितैषी कौन है और परभवमे हमारे साथ क्या जावेगा ? इसका विचार नहीं करते है । धर्म तो पङ्गु है धर्मात्माओके ही चलानेसे चलता है । कारण "न धर्मो धार्मिकैर्विना" ऐसी जैनागमकी साक्षी है, और धर्मका क्षेत्र तीर्थस्थान है । तिर्थ क्षे. कमे. के पास ४५० से अधिक तार पहुचे थे और इसीसे उन्हें आशा थी कि दो चार हजार जैनी शिखरजी आये होगे परन्तु कुल ४०-५० जैनी ही पहुचे । यह कितनी आश्चर्य और खेदकी बात है साहिबने दृश्यको देखकर समझ लिया होगा कि जैनियोमें वास्तविक अन्तरङ्ग भक्ति नहीं है केवल कागजी घोडे दौडाते हैं ।

सज्जनो ! अब अपने कर्तव्यकी ओर लक्ष्य दीजिये, उन्होने बगले बनानेका तो पक्का इरादा दर्शा दिया है अब हमे आगे कार्यवाही चलाकर पूर्ण आन्दोलन करना चाहिये, पचायतीकी ओरमे प्रत्येक शहरसे लाट साहब (Viceroy) तथा पश्चिमीय बगालके छोटेलाट (Lieut Governor Western Bengal) को अर्जी भेजनी चाहिये जिनमे स्वस्थानके आबालवृद्ध जैनियोंके तथा निकटवर्ती ग्रामके जैनियोंके हस्ताक्षर होना चाहिये । अर्जीमे निम्न लिखित कारण निरूपण करना आवश्यकीय है —

(१) यह सम्पूर्ण पर्वत अनादिकालसे जैनियो द्वारा पवित्र माना गया है ।

(२) इसपर आजतक कोई बादशाही मकान वा अन्य किसी भिन्न धर्मीका हवा खानेका बंगला नहीं बनाया गया है ।

(३) इस पर्वतपर यदि मास मदिराभक्षी लोग रहेंगे तो अवश्य जीव वध, आखेट आदि हिंसके कृत्य होंगे जिन्हें जैनी कदापि सहन नहीं कर सक्ते ।

(४) जैनी सारे पर्वतको जैन मदिरके समान मानते है इसी लिये चर्मके जूते पहन कर इसपर नहीं चढ़ते हैं ।

(५) पर्वतकी पवित्रताको हाईकोर्ट बंगालने पर्वाके केसके जजमेंट ता० २८ मार्च १८९३ में भलीभाति स्वीकृत किया है ।

(६) राजा पालगंजने भी इकरारनामा जैनियोंके साथ १६ मई १८७२ में किया है उसमें लिखा है कि जैनधर्मके विरुद्ध कोई काम पर्वतपर नहीं किया जायगा ।

(७) प्रतिवर्ष लाखों यात्री बन्दनाको आते हैं जब वे धर्मक्षेत्रपर अगरेजोंके बंगले और उनके आरभको देखेंगे तो उनका धर्मवासनायुक्त चित्त कलुषित हो जावेगा और वे तीर्थयात्राके महत् पुण्यसे वञ्चित हो जावेंगे ।

अत सरकारसे प्रार्थना है कि वह इस पर्वतकी पवित्रताको रक्षित रक्खे । हवाखोरीके लिये इस धार्मिक पर्वतको छोडकर बंगालका कोई और पर्वत जो अन्य धर्मका भी तीर्थ न हो, तलाश कर लिया जाय इत्यादि ।

ये अर्जिया २९ जूनके पहले २ भेज दी जाना चाहिये तथा उसकी सूचना कमिश्नर हजारीबागको तथा यहा भी कर देना चाहिये ।

पर्वतकी रक्षाके लिये प्रचुर द्रव्यकी आवश्यकता पडेगी इस निर्वाण भूमिके लिये रुपया देना मानो भवभवान्तरमे शुभगति और अटूट समृद्धिको प्राप्त कर लेना है, हम प्रतिवर्ष शादी विवाहादि सासारिक कार्योंमे लक्षों रुपया पानीके तुल्य बहाते है उसमे कुछ लाभ नहीं है. लक्ष्मी चंचला है इससे जो कुछ सुकृत कर लेंगे वही हमें लाभदायक है । अन्यथा द्रव्य कौन लाया और कौन ले जावेगा ? अतएव आपसे मेरी यही प्रार्थना है कि यदि आप सच्चे हृदयसे धर्मक्षेत्रकी रक्षा करना चाहते हों तो यही अवसर है पश्चात् "कूप खोदवो है वृथा जलन लगे जब गेह" के तुल्य सब प्रयत्न वृथा है ।

हमें आशा है कि दिगम्बर जैन सम्प्रदायके उदारशील धर्मज्ञ श्रीमन्त महाशय हमारी प्रार्थनापर पूर्ण लक्ष्य देंगे । और सर्व महाशयोसे निवेदन है कि वे इस विषयमे पूर्ण उद्योग करें और हमसे पत्रव्यवहार करें, तथा सर्व साधारण भाई अपनी शक्ति अनुसार द्रव्यादि की सहायता भेजें जिससे इस विषयकी पूर्ण कोशिश की जाय ।

हम तीर्थक्षेत्रकमेटीकी ओरसे बाबू धन्नूलालजी अटार्नी तथा अन्यान्य सज्जनोंको कोटिश. धन्यवाद देते हैं जिन्होंने तीर्थराजकी रक्षाके हेतु शिखरजी जानेका परिश्रम किया और वहांके दर्शनकर अपना जीवन साफल्य प्राप्त किया है । इत्यलम् ।

आफिस | जैन जन हिताकाक्षी—
हीराबाग, गिरगाव, बम्बई ता. २-६ ०७ | माणिकचंद हीराचंद जे पी. महामत्री ती क्षेत्रकमेटी

भारत वाक्य

सुन्दरी

दसविंशत कोटमें एक सपूत,
हते करवे हिय शीतलताई ।
तनसों मनसों धनसों रुचिसों,
भरपूर करी तुमने सिवकाई ॥
दुख जाय सुनाऊ अहो किनसों ?
तुमरे बिन कौन हमें सुखदाई ?।
करके निरआश्रित राय लजापत,
हाय ! किते गये आश विहाई ॥

मनहर

जाकी सुकीरति छाई देशदेशान में,
सुनिकें विदेशी ताह हिय में जरत हैं ।
जाको वित गौरव शील कलाकौशल शिल्प
बुद्धिबल पौरुष कवीश उचरत हैं ॥
'श्रावक, सुकवि कहे मेवा भाति भांतिनके,
जाकी सुपीक भूमि माहि अति फरत हैं॥
ताके पूत हाय आज फटेहाल खाली हाथ,
लांगे पेट नागे पग अभागे फिरत है ॥

सोरठा.

अहो ! धन्य जापान,
भलो रूसदल दलमल्यो ॥
श्रावक सुधी सुजान,
याही कौ पौरुष कहत ॥

देवरी निवासी बुद्धलाल श्रावक.

१ भारतके

चिट्ठी पत्री ।

देवरी (सागर)—प्लेगका आगमन हुआ था, परन्तु नगरवासियोंके भाग्यसे वह शीघ्रही शात हो गया । इस प्रान्तमे कन्याविक्रयकी विशेषता देखी जाती है। जातिके मुखियाओंका ध्यान इस ओर सर्वथा नहीं है इसीसे अब जवान लडकोंका विवाह भी सौ दोसौ रुपया दिये विना नहीं हो सकता । कोई २ लडकीवाले घरमें जायदाद होते हुए भी वर पक्षसे रुपया लिये विना

संतुष्ट नहीं होते। इसका कारण यह है कि पंचायत उनकी मर्यादामें कुछ भी न्यूनता नहीं समझती। पंचगण मूंछों पर ताव दे देकर उस पाप द्रव्यको भक्षण करते हैं। बड़े २ आचार विचारवाले धर्मात्मा भी यह प्रतिज्ञा नहीं कर सकते, कि ऐसे कन्याविक्रयके विवाहका अन्न हम नहीं खावेंगे। यहांसे ४ कोस पर एक गौरझामर नामका ग्राम है वहांके सबसुखबडकुर नामक सज्जनने अपनी ४१–६० वर्षकी उमरमें हालही २००) में एक बालिका खरीदी है। खेद है कि, कई संतान होते हुए भी आप विवाह तृष्णाको क्षीण नहीं कर सके। ८–९ कोसकी दूरी पर एक टंडा ग्राम है। वहाके एक प्रतिष्ठित कुलके सज्जनने १००) लेकर अपनी लड़की एक मूर्ख ग्रामीणके गले बाध दी है। यद्यपि आपके घरमें इतनी जायदाद है कि, खुशीसे एक क्या चार लडकियोंका विवाह कर सकते थे। इस प्रांतमें प्रतिवर्ष ऐसे सैंकडों विवाह होते है। न जाने यहाकी पंचायतिया इस दुष्प्रथाको दूर करनेके लिये कब उद्यत होंगी? यहाके तीन लडके काशी स्याद्वादपाठशालामें पढनेके लिये गये थे, परन्तु खेद है कि, उनके चतुर चूडामणि कुटुम्बियोंने उन्हे साल साल छह छह महीनेमें ही वहासे बुला लिया, और जरा जरासी उमरमें उनका विवाह कर दिया! अब वे अर्द्धदग्ध बनकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। बालकोंके हितचिन्तक ऐसे माता पिताओंको शतश धन्यवाद है। दो तीन वर्ष हुए यहा एक पंचायती मन्दिरकी नीव पडी थी, परन्तु आपसी लड़ाई झगडोंके कारण वह अभी तक ज्यों की त्यों पड़ी है। यहाकी पचायती सरीखे लडाई झगडे शायद ही कहीं दूसरी जगह होते होंगे। पंचायती बल इतना घट गया है कि, लोग जातीय मामलोंको सरकारी अदालतोंतक ले जाने लगे हैं। इत्यलम्।

क्ष।

गौरझामर जिला सागर—यहापर परवार जैनियोंके ४१ घर हैं, तड़ दो हैं, परस्परके लड़ाई झगड़े सदा लगे रहते हैं. पंचायती जोर बहुत घट गया है यहांके परमसुख तथा सबसुखबडकुरने अपनी एक भैंस और भुवानीबडकुर तथा बालचन्द विनैकयाने अपनी दो गायें निर्दयी कसाइयोंके हाथ बेच डाली हैं। जैनियोंके नामको बट्टा लगाने वाली इस निंद्य पापरूप कार्रवाईको यहांके सब लोग जानते हैं, परन्तु खेद है कि, बिरादरीकी ओरसे उक्त पाप कर्म करने वालोंको कुछ भी दंड नहीं दिया जाता। और सब लोग उनके साथ खाने पीनेमें कुछ भी संकोच नहीं करते। इसके सिवाय यहांकी बिरादरीमें श्रीवीनाजीके प्रस्तावके अनुसार विलायती शक्कर सर्वथा बन्द कर दी गई थी, और सब लोग उसकी पालना भी कर रहे है। परन्तु धर्ममूर्ति सबसुख बडकुरने हालहीमें पांवने मिठयाको छह गठ्ठे शक्कर बेचकर, न केवल पापकी प्रवृत्ति की है बल्कि इस प्रांतकी सम्पूर्ण बिरादरीके प्रस्तावकी बेइज्जती की है. प्रस्तावके अनुसार उनपर ५१) दंड होना चाहिये था, परन्तु अभीतक यहांकी पंचायती इस विषयमें चुपचाप है ऐसा नहीं होना चाहिये हमको आशा है कि गौरझामर और उसके आसपास के भाई इन दोनो जातीय मामलोंकी ओर ध्यान देंगे

एक परवार.

प्राप्तिस्वीकार.

श्री सम्मेद शिखरजीपर अगरेज तथा अन्य मतावलम्बियोको बगले न बनाने देनेकी कोशिस करनेके लिये निम्नलिखित स्थानोंसे ता. ४ जून १९०७ पर्यंत द्रव्यकी सहायता प्राप्त हुई है —

१०८।=) ता. २४ मईतक, विगत गत अङ्कमें मुद्रित है जिसमें भूलसे १०५।=) छपगये हैं.

१००) दिगम्बर जैन पचान लखनऊ.
५०) „ „ „ धूलिया.
५०) लाला सोहनलालजी अम्बाला
५६) श्रीयुत फतेलालजी गोधा, मऊ.
५) भरमप्पा तवनप्पा रामदुर्ग.
२) देवीराम गनेशलालजी शाहपुरा.

७७१।=) कुल योग.

निम्नलिखित महाशयोंने इसप्रकार द्रव्य भेजनेका प्रण किया है उन्हे दो बार सूचना की गई परन्तु अभीतक रकम नहीं आई है अब वे शीघ्रता करेंगे—

पंचान परण्डा १७६) रु. पचानतागा १००) पंचानदुर्ग २१) रु. लाला सालिग्रामजी हाथरस ५०) रु. लाला बेनीरामजी उत्तमचन्दजी आगर ५०) रु.

उपर्युक्त उदार शील महाशयोंको हम कोटिश धन्यवाद देते हैं, और प्रार्थना करते हैं कि जिन्होने अभी तक द्रव्य नहीं भेजा है वे भी कृपाकर शीघ्रता करेंगे। इसके सिवाय अनेक स्थानोंके पचो तथा तीर्थक्षेत्र कमेटीके मेम्बर महाशयोंने भी प्रण किया है कि हम सहायता देवेंगे। यहां यह लिखना अनुचित न होगा कि भारत वर्षीय दिग. जैनतीर्थक्षेत्र कमेटी जिसकी स्थापना तीर्थोंके सुधारके लिये ही है उसकेपास अद्यापि कोई फण्ड नहीं है जिससे कि आवश्यकतानुसार तीर्थोंका सुधार किया जाय, किसी तीर्थपर धर्मशाला नहीं है, कहींके मन्दिर-जीर्ण हो रहे हैं इत्यादि।

अतएव सर्व मेम्बरों तथा अन्य सामर्थवाले धनिक महोदयोंसे हमारी यही प्रार्थना है कि यदि आप सच्चेहृदयसे अपने परमपवित्र पूजनीय निर्वाण क्षेत्र वा अतिशय क्षेत्रों की रक्षा, सुस्थिति और सुव्यवस्था करना चाहते हों तो अवश्यही द्रव्यसे सहायता कीजिये, कोरी बातोंसे कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है। यह सार्वजनिक धार्मिक कार्य है। इसमें जो भाई द्रव्य देते है उन्हें प्राप्तिस्वीकार की रसीद भेजदी जाती है और उनकी इच्छाके अनुकूल वह द्रव्य तीर्थके सुधारमें लगा दिया जाता है। भावार्थ जबतक दफ्तरखर्च तथा इसपेक्टर जो तीर्थपर यथेष्ट प्रबन्ध करनेके वास्ते दौरा करता रहे उसके खर्च का प्रबन्ध न हो जावेगा किसी प्रकारसे तीर्थोंके सुधार होनेकी सभावना नहीं हो सक्ती है, प्रतिवर्ष श्वेताम्बरीयादिकों के तीर्थ विषयक झगडे खड़े होते रहते हैं इसके लिये अदालतोंमें मुकदमें लड़ने पडते हैं जिसमें बहुत द्रव्य खर्च होता है, तीर्थोंके भण्डारोंकी आमदनी भी बहुत कम होती जाती है—अब कहिये कहांसे द्रव्य लगाया जावे? अन्तमें हताश होकर हमें हाथपर हाथ रखके बैठना पडेगा और तीर्थपर विधर्मी अपना पूरा पूरा अधिकार जमा लेंगे। इस हेतुसे मेरी हाथ जोड़कर सब भाइयोंसे प्रार्थना है कि आप शक्तिके अनुसार द्रव्यसे सहायता करें। हमारा यही कर्तव्य है कि चंचललक्ष्मी पुण्ययोगसे सम्प्राप्त हुई है उसे अपने हाथसे सुकृतमें लगावें जिससे कि इस भवमें कीर्ति उपार्जन कर, परभवमें उत्तम गति और समृद्धिको प्राप्त कर सकेंगे।

तीर्थक्षेत्र कमेटीमें फण्ड होनेकी बडी आवश्यकता है जिसके द्वारा तीर्थोंपर यदि विधर्मीय आक्रमण होवे तो एकदम अदालती कार्यवाहीसे रोक दिया

जा सक्ता है, हर एक समय स्थान २ को चंदा करनेकी प्रेरणा करतें रहना अनुचित मालूम होता है तीर्थक्षेत्र कमेटीके मेंबरोंका लक्ष्य इस ओर आकर्षित होना चाहिये इत्यलम्.

आफिस प्रार्थी—

हीराबाग, गिरगांव, बम्बई ता. ९-६-०७. } माणिकचन्द हीराचन्द, जे पी, महामन्त्री ती. क्षे कमेटी.

उपदेशक दीपचन्दजीका भ्रमण

गनेगांव (उसमनाबाद) ता. २२ और २४ मई. दो सभाएं हुई प्रथम दिन ५०, और दूसरे दिन १०० नरनारी उपस्थित हुए थे बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय और आर्षपद्धति पर वक्तृता दी सेठ माणिकचद मोतीचन्दजी परढा वालोंके अनुमोदनसे श्री सम्मेद शिखरजीके लिये २२) चंदा हुआ.

रामकुंड (कुथलगिरि) २६-५-०७ उपस्थित सख्या ३० के अनुमान थी तीर्थस्थानके कर्तव्य और भक्षाभक्ष्य पर व्याख्यान दिया उपस्थित जनोने यथाशक्ति अभक्ष्यका त्याग किया कुथलगिरिका प्रबन्ध बिलकुल ठीक नहीं है मंदिरोंके किवाड नव नव, दश दश बजे तक नहीं खुलते लोग दर्शनोंसे विमुख रह जाते हैं सब मुनीम तथा अन्यान्य कर्मचारी अपने २ घरु कामोंमें लगे रहते हैं और तीर्थभडारसे तनख्वाह पानेपरभी काम ठीक रीतिसे नही देखते यद्यपि हिसाब तैयार करके किसी प्रकार रक्खा है परतु भेजनेमें सकुचते है, सब अविकार ग्रामके पचोका है परतु वे यथार्थ देख रेख नहीं रखते जब कभी तीर्थपर आते हैं तो उन कर्मचारियोंकी चापलूसीमें भूलजाते है और उनसे कुछ भी नहीं कहते, इसी तरह किसी भी धनी या मंदिरके मालिककी बेहद चापलूसी कर डालते और उसके आगे २ नाचते है, जिससे वह विजीटर्सबुकमें अच्छा २ लिख देते हैं, गरीब आवे तो उसकी कुछ भी परवाह नहीं करते। ये लोग आपसमें मिलकर रुपया भी खा जाते हैं और हिसाबमें सफाई बतला देते हैं तीर्थकी ओरसे १,२ आदमी पट्टा करानेको भी घूमते हैं जिससे क्या आता? और क्या जमा होता है? सो कुछ भी खबर नहीं पड़ती.

खरडा (अहमदनगर) १-६-०७. जैनी मनोंके ३० गृह हैं. सभामें केवल १६ स्त्री पुरुष उपस्थित हो सके थे. सो भी धर्मोपदेश न सुनकर उठ उठ कर चले गये. ठीक है. सर्प डसौ जब जानिये रुचिसौं नीम चबाय। कर्म डसौ तब जानिये जिनवानी न सुहाय॥ दूसरे दिन पुन: सभा की उन्नतिपर व्याख्यान प्रारंभ किया परन्तु पूर्व लिखित गति फिर भी हुई।

सोनारी (शोलापुर) ४ जून ०७।३९ नरनारी उपस्थित थे कन्याविक्रयके निषेध और असार ससारकी अवस्थापर वक्तृता दी, सम्पूर्ण सज्जनोंने ध्यान पूर्वक सुनकर अनुमोदन किया अन्यस्थानोंकी अपेक्षा यहाके जैनी भाई धर्मके रुचिया हैं। यहा एक पक्का मंदिर बहुत दिनका बना हुआ है मार्गशीर्षमें प्रतिष्ठा होनेवाली है

श्रेष्टिवर्य्य माणिकचन्द पानाचंदजी जे. पी. का पर्यटन

गत १५ वें अंकसे आगे,

सूर्य कुड तालाब परका लेख अंग्रेजीमें है जिसका उल्था यह है

सबको विदित हो कि रिषभदेवजीका मंदिर गुजरात और अन्य देशोंके हिन्दुओंमें बहुत पवित्र माना जाता है इसलिये इस स्थान पर जो साहिब ठहरें उनसे प्रार्थना है कि वे मोर आदि पक्षियोंको इसके आसपास कहीं परभी न मारे। और गावके पास जो छोटा पक्का तालाब है उसकी मछलिया न पकडें और न पशुओंका वध करें

खरवारा २२ मई सन १८९४ } जान मी. ब्रूक कप्तान, पहाडी मुल्क उदयपुर

इस सूचनाका फल यह है कि अंग्रेज आदि लोग गांवसे दो मीलकी दूरी पर अपने डेरे करते हैं। जिन सज्जनोंको धुलेबके विषयमें अधिक समाचार जानना होवे, वे छगनलाल महता दूकान सेठ धनराज रतनचंद पोष्ट रकबदेव जिला मेवाड़से पत्र व्यवहार करें रिषभ देवजीमें ईडरके पंचोंकी बनवाई हुई बडी धर्मशाला भी है ठहरनेका आराम है दिगम्बर यात्री भी बहुत आते हैं

परसादगांव—यहांपर भाइयोंको पाठशालाके लिये उत्तेजित किया तथा दो महिनेके लिये १०) रुपया सेठजीने दिये

उदयपुर—तालाबके बीचमें राजा साहिबका शिवमहल देखा जिसमें कांचकी नकासीका काम अतिप्रशंसनीय है, चितेरा पन्नालाल बल्द गोपाल मेवाडा सुतार कांजीकी हाटमें रहता है यह सब काम उसीके हाथका किया हुआ है यहांके पहाड़ोंमें संगमर्मर पत्थरकी खानि है

नकल शिलालेख धुलेव मंदिर

श्री आदीश्वरजी आदिनाम महा छे। सकल जिनेश्वर पद प्रणमि प्रणमि सरस्वती माय श्री गुरूना पद अनुसारि करौं बुद्धि उपाय॥ आदि जिनेश्वर मंदिरे दिसे दुर्ग उत्तंग, चन्द कीर्ति सुखि तहा ——मन तणे रंग॥ हे डा धडक देशमेवाडमें, जुहापापर सुजाण। राजकरे तह राजवी भीमसिंह राजंत। हिन्दूपति पातशातले, समोवड अर्कप्रताप। गुण गंभीर सायस मो कल्प तरु समसाख॥ सम्बत १८६३ आषाढ़ सुदी ३ गुरूवारे मुहूर्त जो करचो भली तरे पूजा कीधी, मूल सघ गच्छ सरस्वती बलात्कार गणधार। कुन्द कुंद सूरीवर भलो सआना १ तह ते उधार अनुक्रमें, ले सकलकीर्ति गच्छ। पतेतह पट्टे गुरू शोभतो भुवन कीर्ति नमुपाय॥ ज्ञान भूषण पटि प्रगट विजयकीर्तिसूरी सुभचंद सूरीवर सदा सुमति कीर्ति नमुगुणकीर्ति गुरु गुवातले चांदि भूषणतस पाट राम कीर्ति पाट सोभते रायके —— पद नन्दि पाटे सुयश देवेन्द कीर्ति गुण अरखेमकीर्तिपट उजलो नरेद्र कार्ति मनहार। विजय कीर्ति पट गुरु नेमीचन्द भवतार। चंद्रकीर्ति चन्दसमो रामकिर्ति सुख कार। यश कीर्ति सुरीना सद उदयो पुण्य अकूर करी प्रतिष्ठा दुर्गतणी जल ल्याओ भर पूर॥ बागड देश सोहावनो सागनपुर वर ग्राम। सया पति सायर लिया मणो सुन्दर सोने नाम॥ संघी धनजी करणजी कसनजी सुतजान कमलेश्वर गोत्र तणुय सब रणवाना भार्या आनन्द कुवरजे सुत माणकचन्द। जेह भार्या कने बदि निर्मली आणक देवी तेह सुत वजेचन्दजी॥ शिय पुण्यवन्त गुणवन्त वालमदे भार्या भली शीलवंती तसुसंत सुत नवलचन्द जनमीये पुत्री हंसी जीण पुण वंत प्रत्योघण गुण कलानि, जिन चन्द कीर्ति गुरु उजला करणे दुर्गनु —— यश कीर्ति गुरु निर्मले करी प्रतिष्ठामनरंगंगथी वजेचन्दजीवली गुरु आज्ञा प्रतिपालक यशलीये अति उज्जलो यशकीर्ति तणु प्रताप भट्टारकजी श्री नयरल —— ईस्वरजी —— जी धरमचंदजी पंडितजी किशनजी पंडितमोतीचन्दजी रावतजीगोतसीघजी कुंवरजी हूमड़ ज्ञातीय वृद्ध शाखाय गांधि वजेचन्दजी सुत नवलचंदजी चरंजीव जती भाग कीरेण

लिपिकृतं धुलेवनगरे-श्रीरस्तु कल्याणमस्तु, जोतसी दौलतरामजी—भट्ट कृपाशंकरजी.

यहा पत्थरका सीमेंट चक्कियों द्वारा पिसवाकर राजासाहिबके काममें लाते हैं यह सीमेंट बहुत उत्तम होता है यदि यहां मैसीन लाकर पत्थरका सीमेंट तयार किया जावे तो बहुत बड़ा लाभ हो और विदेशी सीमन्टका उपयोग फिर न करना पडे.

रात्रिको सभा की गई बालविवाह वा दोपा लेने आदिके निषेधमें उपदेश दिया गया. यहां बहुतसे भाइयोंने नानाप्रकारकी प्रतिज्ञाएं लीं, बत्तीस महाशयोंने स्वाध्यायकी, ४ ने जन्म पर्यन्त दर्शन की, दो भाइयोंने इस बातकी प्रतिज्ञा ली कि हम अपनी कन्याका विवाह १२ वर्षसे पहिले न करेंगे. एक स्त्रीने यह प्रण किया कि हम रजोदर्शनके ९ वें दिन दर्शन करेंगे. पंडित कन्हैयालालजी नागदा पाठशालाके अध्यापक बहुत ही सुयोग्य और धर्मात्मा हैं भाषा धर्मशास्त्र अच्छी तरह पढाते है. हम यहां हाकिम बखतसिंहजी साहिबसे मिलने गये, बहुत योग्य और बुद्धिमान हैं। उनसे प्रार्थना की कि, कमेटीमें कोई दिगम्बर भाई भी मेम्बर होना चाहिये तथा दो मील सडक ठीक होना चाहिये तिसपर उत्तर मिला कि हम कमेटीमे पेशकर दोनो बातोंका विचार और प्रबंध करावेंगे.

पश्चात रतलाम और सूरत होते हुए बम्बई आये।

शीतलप्रसाद ।

श्री शिखरजी विषयक सभा.

विदित हो कि ता. ९ जून १९०७ रविवार मिती ज्येष्ठ वदी १४ को रात्रीके ७॥ बजे हीराबाग धर्मशालाके लेकचर हालमें दिगम्बरी जैन भाईयोंकी एक आम सभा, एकत्रित हुई। प्रथमही पण्डित लालारामजीने मङ्गलाचरण किया और इस कमेटीके मुख्य उद्देश्यको भले प्रकार निरूपण किया। पश्चात् शेठ माणिकचन्दजी जे. पी. ने खुर्जावाले शे. रामस्वरूपजीको सभापतिका आसन ग्रहण करनेके लिये प्रस्ताव किया, श्रीयुत पदमचंद भूरामलजीके पुष्टी करणसे उन्होंने आसन अलंकृत किया। दोशी पानाचंद रामचन्दजीने जो बम्बईसे डेप्यूटेशनके साथ शिखरजी पधारे थे, शिखरजीकी ता. २५—२६ मईकी रिपोर्ट वर्णनकी। पश्चात बाबू घासीरामजीने प्ररूपण किया कि शिखरजीपर बङ्गले न बनने देनेके लिये प्रत्येक शहरके जैनियोंको—लाटसाहिब, लेफ्टनेंटगवर्नर तथा पार्लिमेन्टको अर्जी भेजना चाहिये उन्होंने एक अंगरेजी अर्जीका निबन्ध (मसौदा) भी पढकर सुनाया. इस अर्जीमें कुछ हीनाधिक करनेके लिये दोशी पानाचंदजीने कहा। और इसके प्रतिपक्षमें बाबू सीतल प्रसादजीने निवेदन किया, पश्चात् पण्डित धन्नालालजीने इस बात पर विचारनेके लिये १५ महाशयोंकी एक कमेटी नियत होनेकी आवश्यक्ता दिखलाई तदनुसार निम्न लिखित महाशय इस कमेटीमें चुने गये.—

१ शे. हरमुखराय अमोलकचन्दजी, २ शे जुहारमलजी मूलचन्द, ३ शे. माणिकचन्द पानाचन्दजी, ४ शे. गुरुमुखरायजी सुखानन्द, ५ शे. पदमचंदजी भूरामल, ६ पण्डित धन्नालालजी काशलीवाल, ७ शे नाथारंगजी गांधी, ८ बाबू घासीरामजी, ९ बाबू सीतलप्रसादजी, १० बाबू ज्योतीप्रसादजी, ११ बा फूलचन्दजी पाटणी, १२ दोशी पानाचन्द रामचन्द, १३ मिस्टर ए. बी. मालगावे, १४ शे. चुन्नीलाल झवेरचन्द, १५ पारख लल्लूभाई प्रेमानन्द। पश्चात् पण्डित धन्नालालजीने छोटे वा बडे लाटसाहिबके पास डेप्युटेशन भेजनेका प्रस्ताव पेश किया बाबू सीतलप्रसादजी तथा पानाचन्दजीने उसकी पुष्टि करते हुए यह दर्शाया कि दिगम्बर जैन जातिके धनाढ्यों वा डिगरी—खिताबधारकोंको डेप्युटेशनमें जाना चाहिये, विद्या वा विभवसे युक्त सज्जनोंके जानेसे ही पूरा असर पडेगा. बाबू धन्नूलालजी अटर्नी कलकत्ताकी भी इसी प्रकार सम्मति है. पश्चात् पं. धन्नालालजीके कहनेसे डेप्युटेशनमें निम्न लिखित १३ सभ्य गण चुने गये —

१ शे. माणिकचन्द हीराचन्दजी जे. पी., २ शे. गुरु मुखरायजी सुखानन्द, ३ शे. रामस्वरूपजी खुर्जावासी, ४ शे. पदमचन्दजी भूरामल, ५ शे नाथारंगजी गांधी, ६ मिस्टर ए. बी मालगावे ७ बाबू ज्योतीप्रसादजी ८ बाबू सीतलप्रसादजी ९ पं. धन्नालालजी १० बा घासीरामजी ११ दोशी पानाचन्द रामचंद १२ शे. तिलकचंद सखारामजी १३ शे. सखाराम माणिकचंदजी। इसके सिवाय अन्यान्य स्थानोंके श्रीमन्तों वा वकील बैरिस्टरोंको भी इसमें शामिल होनेकी प्रेरणा की जावेगी.

पश्चात् बा. फूलचन्दजी ने मिस्टर मोर्ले को भी अर्जी भेजने का प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसमें यह दर्शाया जावकि १००—२०० अंगरेजोंके लिये बङ्गले बनाकर १४ लाख जैनियोंको संक्लेशित करना सर्वथा न्यायके विरुद्ध है तदनन्तर श्रीमान्—रामस्वरूपजीने यह निरूपण किया कि जैन जाति जिसप्रकार संसारिक व्यापारमें कुशल है उसीप्रकार उसे मोक्षके प्राप्त होने योग्य व्यापारमें लवलीन होना अभीष्ट है। तीर्थोंकी रक्षा मुख्यतया करना हमारा कर्तव्य है इसलिये हमें यह अत्याचार न होने देनेकी चेष्टा करना चाहिये.

पश्चात् पण्डित धन्नालालजीने प्रगट किया कि हमारे नवदेव पूज्य हैं उनमें जिनमंदिर भी पूज्य गिना गया है अर्थात् शिखरजीपर प्रतिमा तथा चरण पादुका विराज मान हैं इस कारण यह सम्पूर्ण पर्वत् हमारे मन्दिरके तुल्य है अत इसमें किसी प्रकारकी अपवित्रता होना हम सहन नहीं कर सक्ते है इस प्रकार भी अर्जीमें लिख देना चाहिये. उक्त सभापति साहिबने भी दर्शाया कि अर्जीमें ये २ बातें और दर्जकी जावें—(१) पार्श्वनाथ स्वामी हमारे २३ वें तीर्थंकर हैं और इस पर्वतका भी नाम—पार्श्वनाथ पर्वत इससे सिद्ध होता है कि यह जैनियोंकाही पर्वत है. (२) अगरेज लोग जिसप्रकार "जेरूसलम" को पूज्य गिनते और दूसरोंके आक्रमणसे बचाते है उससे कहीं बढके यह पर्वत जैनियोंको पूज्य है। अत. इसपर अविनय नहीं होना चाहिये अन्तमें ता० १० को पुन कमेटी की जावे। जिसमें किसी वकीलके द्वारा अर्जी बनवाकर सर्व जैनियोंके हस्ताक्षर सहित अर्जी भेजी जावे और १ वर्ष की मुहलत बढानेका विचार (जिसकी सूचना तीर्थक्षेत्र कमेटीकी ओरसे पाठकोंको दी गई है) रद्द किया जावे। पश्चात् बात जय ध्वनि के साथ सभा विसर्जन हुई।

एक दर्शक।

बम्बई सभाकी ओरसे लेफ्टिनेंट गवर्नर सा० बंगाल, वा वाइसराय सा० और स्टेट सेक्रेटरी मार्ले साहिबकी सेवामें भेजनेके लिये तयार की हुई अर्जियोंका हिंदी तर्जुमा.

मान्यवर महाशय।

हम नीचे हस्ताक्षर करनेवाले बम्बईके दिगम्बर-जैन अत्यन्त आदर वा नम्रतापूर्वक नीचे लिखे थोडेसे शब्दोंमें अर्ज करते है. आशा है कि अवश्य ध्यानपूर्वक गौर करेंगे.—

भारतवर्षीय दिगम्बरजैन तीर्थक्षत्रकमेटीने डिपुटी कमिश्नर हजारीबागके नोटिस ता० २६-३-०७ के अनुसार एक डेप्युटेशन मिस्टर धन्नूलाल अटर्नी कलकत्तेके अधिकारमें भेजा था जिसने डिपुटी कमिश्नर हजारीबागसे मधुवनमें मुलाकातकी। जो वार्तालाप उनसे हुआ वह जैनियोंको बहुत निराश करनेवाला है अन्तमें डिपुटी कमिश्नरने बयान किया कि यूरूपियन लोगोंने पार्श्वनाथ पहाड़को सेनेटिरियम (हवाखानेयोग्य) पसन्द किया है और वे उसपर बंगले बनाना चाहते हैं इसके विरोधमें बहुत जोर देकर कहा गया कि, यह कुल पर्वत जैनियोंका एक मंदिर है जिसे वे बहुत पूजनीय मानते हैं, इस कारण इसपर उनके धार्मिक विश्वासके विरुद्ध कोई बात नहीं की जा सक्ती. परन्तु डिपुटी कमिश्नर सा ने कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया. यद्यपि चहु ओरसे अनुमान ४५० तार और कई अर्जिया उनके पास गईं थीं जिनमे बंगले बांधनेके विरुद्ध अभिप्राय दर्शाया गया था अतएव हम सब लोग आपका ध्यान निम्न लिखित कारणोंपर आकर्षित करते हैं जिनमे जैन सम्प्रदायके परमपवित्र पर्वत श्रीपार्श्वनाथजीपर बंगले बांधनेके विचारका निषेध किया गया है.

१. यह पर्वत प्रत्येक प्रकारके जैनियोंके लिये इस संसारमें सबसे पवित्र स्थान है और उनके यहा जो नव देवता माने गये है उनमेसे यह एक देवता है, नीचेसे ऊपर तक पहाडकी कंकरी मात्रका स्पर्शन या दर्शन जैनियोंके लिये अत्यन्त पवित्र, पूज्य और सुखदायक है. जैनियोंमें सबसे अधिक धनाढ्य और लोकमान्य ग्रहस्थको ऐसा साहस नहीं हो सक्ता कि इस पवित्र पर्वतपर जूते पहिन कर चढ़े। यदि कोई दूसरा पहिन कर जावे तो उसको देखकर उनका दिल काप उठेगा वे दुखित होवेंगे और उसे फौरन रोक देवेंगे. लोग पर्वतपर और उसके आसपास बंगले बनावें, शिकार खेलें, मास पकावें, मदिरा पीवें, इत्यादि विचार प्रगट होते ही जैनियोंके दिलमें आग भभक उठेगी और वे जोशमें आजावेंगे, वे कोई भी हिंसाका कार्य धर्मके नियमानुसार कदापि सहन नहीं कर सक्ते. जिस समय डिपुटी कमिश्नर हजारी बागने डेप्युटेशनके साम्हने शिखरजीपर यह बयान किया कि हम पर्वतपर शिकार खेलने गये थे परन्तु हमें शिकार नहीं मिली उस समय यह सुनकर उपस्थित जैनियोंको जो दुख हुआ वह अकथनीय है और अन्य जैनी भाइयोंको (जो वहां उपस्थित नहीं थे) ऐसे समाचार सुनकर जो दुख हुआ है वह भी बयानसे बाहर है।

२ अनादि कालसे जैनियोंके तीर्थंकर तथा असंख्यात ऋषि मुनि इस पर्वतके भिन्न २ स्थानोंसे मोक्ष गये हैं अतएव टोंकोंसे अतिरिक्त इस पर्वतकी कंकरी २ भी जैनियोंको पूज्य है जिस प्रकार इसाई लोग बैतुल मुकद्दर (जेरुसेलम गिरजा) को पूज्य मानते हैं उससे भी अधिक जैनी लोग कुल पार्श्वनाथ पहाडको पूज्य मानते हैं।

३ जो इकरारनामा राजा पालगज और जैनियोंसे १६-९-१८७२ में हुआ है उसमें जैनियोंके धार्मिक हक अच्छी तरह माने गये हैं।

४ जो जजमेंट कलकत्ता हाईकोर्टमें २८ मार्च सन १८९३ ई० को हुआ है उसमें भी कुल पर्वत ऊपरसे नीचे तक जैनियोंका पवित्र माना गया है।

५ पहिलेके हिन्दू मुसलमान राजामहाराजाओंने जिस प्रकार धर्मकी रक्षाकी है उससे कहीं अधिक वर्तमान गवर्नमेंटने आज पर्यन्त जैनियोंके धार्मिक हक और श्रद्धाकी रक्षा की है।

६ पर्वतपर बंगलोंके दर्शनमात्र होनेसे जैनियोंके हृदयको असह्य चोट पहुचेगी. और धर्मश्रद्धाकी वह डोरी जिसके वर्धनार्थ हजारों यात्री दूरदूरसे आते हैं वा दर्शनमात्रसे पापकी निर्जरा करते हैं शिथिल हो जावेगी।

७ यदि पर्वतपर कोई भी जगह बंगले बाधनेके वास्ते पट्टेपर दी जावेगी तो जैन संप्रदाय यह समझेगी कि हमारी धार्मिक रुचि वा आज्ञाका उलघन किया गया है, जैनसम्प्रदाय भारतवर्षीय प्राचीन संप्रदायोंमेंसे एक है। विधर्मी राजाओं वा अंग्रेज सरकारने इस बातके बहुतसे प्रमाण दिये है कि जैनी लोग बहुत धनाढ्य, बुद्धिवान, शान्तिशील, दयालु और राज्यभक्त हैं

८ थोडेसे बंगले बनाकर चौदह लाख जैनियोंको सक्लेशित करना और धार्मिक नियमोंको तोड़ना ब्रिटिश न्यायके सर्वथा विरुद्ध है।

९ इस सम्मेद शिखरजीके पहाड़से जैनियोंके श्री पार्श्वनाथस्वामी तीर्थंकर अपने शिष्यवर्ग सहित अन्तिममोक्षगामी हुए हैं इस लिये हम समस्त पर्वतको पार्श्वनाथका मंदिर मानते है इसी कारण सम्पूर्ण पहाड़का नाम पार्श्वनाथ पहाड़ प्रसिद्ध है.

१० जब मांस मदिरा निषेधक लोगोंके मुहल्लोंमें गवर्नमेंट किसी प्रकारकी हिंसा नहीं होने देती तब तो जैनियोंके मंदिरमें प्रत्यक्ष भावी हिंसा रोकना उसका परम कर्तव्य है—

इसलिये सरकारसे हम बम्बईके समस्त दिगम्बर जैन निवेदन करते हैं कि डिपुटी कमिश्नर हजारीबागने इस पर्वतपर बंगले बनानेका जो इरादा प्रगट किया है वह इकदम रोक दिया जावे

प्रार्थी

सकल पंचान, दिगम्बर जैन बम्बई.

नोट—इस प्रकारकी अर्जिया बम्बई सभाकी ओरसे बंगालके लेफ्टिनेंट गवर्नर सा०, वाइसराय सा० और स्टेटसेक्रेटरी सा० को भेजी हैं. इस लिये प्रत्येक स्थानके भाइयोंको उचित है कि एक सभा करके उक्त हाकिमोंकी सेवामें एक एक तार तुरत भेजे और ऊपर लिखे मजमूनकी दरख्वास्तें २९ जूनके पूर्व भेजकर धर्मरक्षामें यत्नशील होवें।

विविध समाचार।

नया अखबार—बम्बईसे एक दैनिक अंग्रेजी अखबार निकलनेवाला है, जो सात लाख रुपयेकी पूंजीसे निकाला जावेगा। इसे स्वदेशी सज्जनोंकी एक लिमिटेड कम्पनी निकालेगी। बड़े २ प्रतिष्ठित हिन्दू पारसी इसके डाइरेक्टर होंगे। पर सम्पादक कोई विदेशी पुरुष होगा। जो भारतसे महानुभूति रखनेवाला होगा क्यों? क्या देशमें योग्य विद्वान् सम्पादक नहीं मिल सकता था?

राजनैतिक संन्यासी—सुप्रसिद्ध बाबू श्यामजी कृष्णवर्माने दश हजार रुपया इसलिये देना स्वीकार किया है कि, उससे धार्मिक संन्यासियोंके समान राजनैतिक सन्यासी तयार किये जावें। जिस तरह धार्मिक सन्यासी सर्वत्र भ्रमण करके धार्मिक जोश फैलाते है, उसी प्रकार ये सन्यासी सर्वसाधारणमें राजनैतिक चर्चाका प्रचार करेंगे। यह दान बडी दूरदर्शितासे किया गया है।

भारतवासियोंकी दरिद्रता और भारतका धन—मि० डिगबी नामक प्रसिद्ध अंग्रेजका मत है कि भारत "वासियोंकी दरिद्रताके प्रधान दो कारण हैं। एक भारतीय शिल्पका विनाश और दूसरा भारत धन शोषण। हम लोगोंने (अंग्रेजोंने) भारतीय कारीगरीको नष्ट कर दिया है और १८३४ से १८३९ ई० तक (इक नमिष्ठ पत्र सम्पादककी गणनाके अनुसार) एक हजार करोड़ (१० अरब) रुपया भारत वासियोंसे लिया है। यह रुपया यदि भारतमें ही रहता

और वार्षिक ५) सेकडेके व्याज पर भारतके किसान तथा कारीगरोंको उधार दिया जाता, तो इतने दिनोंमें व्याज समेत पाच सहस्रकोटिसे कम नहीं होता।"

कुत्तोंकी मौत—नेमचन्दजी सेठी आगरा (मालवा) से लिखिते हैं कि यहा शहर और छावनीके कुत्तोंको गोलीसे मार डालने की आज्ञा फौजी अफसरों और डाक्टर साहिबकी ओरसे की गई है. जहा कहीं कुत्ता नजर आता है फौजवाले गोलीसे उडा देते हैं. अनुमान १०० निरपराध कुत्तोंकी मौत हो चुकी है. यदि एक मनुष्य चोरी करै तो क्या सभी मनुष्य चोर कहे जा सक्ते हैं? नहीं, नहीं!! कदापि नहीं! इसी प्रकार एक कुत्ता पागल होनेसे सब कुत्तों की जान लेना हमारी समझमें सर्वथा अन्याय है। अजी डाक्टर साहिब! इस पशुहत्याके सिवाय क्या पागल कुत्तेकी कोई औषधि नहीं है? बाइबिलमे ईश्वरकी आज्ञा है कि नर हिंसा मतकर. सो क्या नर का मतलब मनुष्यही समझते है? नहीं पशु पक्षियों मे भी नर होते हैं।

बंबई धर्मशाला—सेठ हीराचद गुमानजी धर्मशालामें (जो "हीराबाग" कावसजी पटेलके तालावके समीप कादा वडीके नाकेपर है) १ मई ०६ से ३१ मई०७ ई० तक २७७ यात्रियोंने विश्राम किया। उनमे दिगम्बर जैन ४१, श्वेताम्बर जैन २९, वैष्णव ११६ ब्राह्मण क्षत्री आदि ९१ थे.

मुंज—श्रीयुत तनतप्पा रामचन्द्रप्पा सिटी सन्मते हलकरणीने श्रवणबेलगुलके स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक पट्टाचार्य द्वारा अपने चिरंजीव गुणपाल और कलप्पा वागीके सुपत्र भूपालका जैनविधि अनुसार यज्ञोपवीत कराया है, धन्य है। धर्म प्रभावना इसीको कहते हैं.

जैनमंदिर जीर्णोद्धार—नरसिंहपुरमें बहुत दिवससे एक मदिर अति जीर्ण अवस्थाको प्राप्त हो गया था. श्रीमती राजरानी वेवा सवाईसिंघई पन्नालालने मरते समय उस मदिरके जीर्णोद्धारके हेतु २००) अर्पण किया, तथा उसी निमित्त २००) के अंदाजन प्रथम लगा है और हालहीमें २५) रु० श्रीमती गोरीबाई वेवा सवाईसिंघई हीरालालने भी अर्पण किया है। इस प्रकार आशा है कि मंदिरकी मरम्मत योग्य रीतिसे हो जायगी। मरम्मतआदि करानेका भार बाबू मौजीलालजी (नरसिंहपुरवालोंने) लिया है। वे अपनी नौकरीकी छुट्टीमें इस कार्यको करेंगे। आशा है कि यह कार्य शीघ्र सम्पादन होगा। जीर्ण मंदिरोद्धार महत् पुण्यका कार्य है।

टीकरी—जिला मेरटसे समाचार मिले हैं कि महीनेमें दो वार जैन बालसभा हआ करेगी. हर्ष है.

मन्दसौर—जनकपुरा स्थान पर श्रीमान् सा० रिखबदासजीके सभापतित्वमें जैनी भाईयोंकी एक बडी सभा हुई, उपस्थित स्त्री पुरुषोंकी संख्या ५००—६०० थी; श्रीयुत सेठ लक्ष्मीचन्दजी घीयाने धर्मोन्नतिपर अच्छा व्याख्यान दिया. पश्चात् जीवदया और कुरीति संशोधन पर व्याख्यान दिये गये. हमारे जैनी भाई धर्मोन्नतिमें बद्धपरिकर हुए हैं. परिणाम अच्छा ही होगा।

युक्तप्रदेश—हरदोई कमोलिया—यहां के सब लोगोने मिलकर विदेशी भ्रष्ट चीनीको कभी न छुवेंगे ऐसी प्रतिज्ञा करली है, धन्य है।

मध्यप्रदेश—खंडुवा—स्वदेशी चीनी बिलकुल उठ गई, उसके स्थानमें बनारसी चिनीका व्यवहार होने लगा है. स्वदेशी कपडा, टोपी, साबुन आदि भी अधिकतासे मिलने लगे हैं।

मध्यप्रदेश वर्धा—यहाके मारवाडी भाइयोंने पचायत द्वारा यह निश्चित किया है कि जिस के यहा शादी विवाहमें गंदे गीत गाये जावेंगे उसको ११) दड होगा. कई विवाह हो भी गये जिनमें इस नियम की पालना की गई है।

कर्मकार्यमे धर्म कार्य—श्रीमान् सेठ जीवराज प्रेमचदजी मेंदरगीसे लिखते हैं कि "श्रीमान् गुलाबचदजी नानचन्दजीके भ्रातृवर्य रावजीकी भार्याके आगरनी (आठवें महिने) के उत्साहार्थ नागमपुर गया था आपके उद्योगसे जैनी अजैनी भाईयोंकी एक सभा हुई. उपस्थित जनसंख्या १२५से अधिक थी. मैंने शिक्षाके लाभ और व्यर्थ व्ययके विरोधमें तथा बालचंद देवचंदजी नींबकरने स्वदेश उन्नतिपर वक्तृता दी, और गुलाबचन्द दकामराजजीकी पुत्रीने स्त्री शिक्षापर उत्तम प्रकार से व्याख्यान दिया तब गुलाबचंद नानचदजीने प्रसन्न होकर उस पुत्रीको १) पारितोषक दिया. पश्चात् नानचद अमीचंद पढरपुरकरने उपरोक्त बातोंका पुष्टिकरण किया और करतालध्वनिके साथ सभा विसर्जन हुई।

हिंदुस्थानकी कुल रेल्वे कम्पनियोको गतवर्षमें ४४ करोड रुपयोंकी प्राप्ति हुई है।

फल ईस्टर्नबंगालरेलवेके एक गोरेने सबइन्स्पेक्टरने गाडीमें एक हिंदुस्थानी स्त्रीका सतीत्व भंग किया था अपराधीको ६ महीनेका कठिन कारागार हुआ.

केसर गंज (मेरट) के लगभग २९० बडे २ व्यापारियों और दुकान दारोंने विदेशी चीनीका व्यापार छोड देनेका निश्चय किया है. उन लोगोंने यह भी निश्चय किया है किबची हुई चीनी दस दिनमें खपाई जावे, सब व्यापारियोने प्रतिज्ञा पत्रपर हस्ताक्षर किये हैं। वहांके फ्लेबार भी निश्चय करने वाले हैं कि हम लोग विदेशी चीनीके वोरे न उठावेंगे, शाबास!

बडोत—जिला मेरटके जैनी भाइयोंके प्रमाद वशात् वहाकी सभा अस्त हो गई थी. हर्ष है कि उन्होंने पुन उद्योग करके प्रति चतुर्दशीको सभा करना निश्चित किया है, सभा संस्थापक भाई सिखरचंदजी लिखते है कि लोगोंमे धर्म रुचि बिलकुल कम है, उपदेशकका आना अत्यावश्यक है, मंत्री महोदय कृपाकर प्रबध करें यहा एक पाठशाला है। विद्यार्थी३० हैं पंडित बोधराजजी योग्य शिक्षक हैं.

आवश्यकीय सूचना।

हमें पाठशालाके लिये एक सुयोग्य जैनी अध्यापक की आवश्यक्ता है. वेतन १५) से २०) तक योग्यतानुसार दिया जावेगा. दरखास्त भेजनेका पता यह है—

रघुनाथदास बाबूलाल जैनी
मु० नगलैसरूप
पो. अहारन (आगरा)

प्रार्थना—सम्पूर्ण जैन पाठशालाओं की प्रवेशिका और विशारद परीक्षा श्रावण कृष्ण अष्टमी (गुजराती आषाढ वदी ८) से होगी; इस लिये सम्पूर्ण पाठशालाओंके शिक्षकों, और प्रबंधकर्ताओं मे प्रार्थना की जाती है कि हमारे भेजे हुए फार्मोंकी खाना पूरी करके जेष्ट शुक्ल १५ तक मत्री परीक्षालयके पास पहुंच जाना चाहिये अगर किसी स्थानपर फार्म न पहुंचे हों तो कृपा कर "रावजी सखारामजी दोषी मंत्री जैन परीक्षालय शोलापुर" के पते पर पत्र द्वारा सूचना देकर फार्म मगा लेवें; अथवा विद्यार्थियोंकी नामावली (पिता का नाम, अवस्था कौन खंडमें परीक्षा देना है आदि लिख कर) उक्त पते पर नियमित तिथि तक पहुंचा देवें. यदि उक्त तिथि तक फार्म वा नियमावली नहीं पहुंचेगी तो पाश्चात् स्वीकार न होंगे।

जैनमार्तण्ड।

नामक मासिक पुस्तक वर्ष मध्य प्रान्तसे निकलती हैं. अच्छे २ जैन धर्मोन्नतिकारक लेख छपते हैं. जैनी भाइयोंको इसके ग्राहक अवश्य होना चाहिये. मूल्य डाक व्यय सहित ६।) है.

पत्ता.—पंडित जयचन्दजी श्रावणे जैन,
वर्धा—मध्यप्रान्त.

आवश्यक्ता।

श्री बनेडाजी अतिशय क्षेत्रके लिये एक सदाचारी वृद्ध या सद्गृहस्थ की आवश्यकता है, जो अपने कल्याणार्थ नित्य जिन पूजन करै, उसे जीविकाके लिये १०) रुपया मासिक तक दिया जायगा। पत्र इस पतेसे भेजना चाहिये—

हजारीलाल जैन।
ठि० सरूपचन्दजी हुकमचन्दजीकी दूकान इन्दौर.

' कर्नाटक ' प्रेस बम्बई ।

Registered No. B 288.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटा-ने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छ-पेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रो-त्तरके लिये जवाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनिआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
दूसरा भोईवाड़ा पो० कालबादेवी
बम्बई ।

जैनमित्र

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र । | प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

वर्ष ८ वां] आषाढ कृष्णा २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द । ता० २७ जून सन् १९०७ ईस्वी । [अंक १७ वां ।

दिगम्बरजैनपरीक्षालय बम्बई ।

सम्पूर्ण जैन पाठशालाओंके व्यवस्थापकों तथा अध्यापकोंको विदित हो कि, आगामी आषाढ मासके कृष्णपक्षमें सम्पूर्ण पाठशालाओंकी परीक्षा लेनेका प्रबन्ध किया गया है । इस लिये प्रवेशिकापरीक्षा और पंडितपरीक्षाके कौन कौनसे खंडमें कितने २ विद्यार्थी परीक्षामें बैठेंगे, इसकी सूचना हमको शीघ्र मिलनी चाहिये, जिससे प्रश्नपत्रादि तयार करानेमें सुभीता पड़े । इस वर्ष कारण विशेषसे प्रत्येक विषयमें अलग २ परीक्षा लेना निश्चय किया है ।

प्रत्येक पाठशालामें शिक्षक कितने हैं, बालक कितने हैं, शिक्षण किस पद्धतिसे होता है, आदि सब बातोंका खुलासा भी लिखिये । जिनके पास पठन-क्रम व नियमावली न हो, हमसे मंगा लेवें ।

रावजी सखाराम दोसी
मंत्री परीक्षालय—शोलापुर

आवश्यकीय सूचना ।

हमारे ग्राहक अनुग्राहक महाशय पता तबदील कराने वा अन्य संबंधमें पत्रादि भेजते हैं सो प्यारी हिंदीको छोड़ बहुधा भिन्न २ भाषाओं वा विचित्र अक्षरोंका उपयोग करते हैं; ऐसा करनेसे हमें और उन्हें दोनोंको दुख और हानि की संभावना है. जैनमित्र हिंदीका पत्र है और उसकी लिपि नागरी है । इस लिये हर प्रकारकी चिट्ठी पत्री हिंदीहीमें आना चाहिये. अन्यथा उन्हें रद्दीमें आसन लगाना पडैगा इसी प्रकार ग्राहक नंबर न लिख भेजनेसे कदाचित विलम्बसे अथवा बिलकुल उत्तर न मिलेगा.

जैनमित्रमे स्थानका घाटा होनेसे बाहरके आये हुए लेखोंका बहुत कम सन्मान होता था. ऐसा करनेसे हमारे लेखक और सम्वाददाता प्राय: उत्साह हीन हो गये है, उनसे निवेदन है कि ताजे समाचार और ललित लेख भेजनेकी कृपा किया करेंगे तो उन्हें अवश्य स्थान मिलेगा ।

संपादक

सूचना·

उन युवाओंको सूचित किया जाता है जो अपढ और व्यापारिकक्रियासे अनभिज्ञ होनेके कारण उदर पोषणार्थ व्यापार नहीं कर सके किंतु नौकरी करके पराधीनताका दुःख सहन करने में अशक्य रहते हैं, ऐसे युवाओंको चाहिये कि वे हमारे पास अपना नाम, ग्राम, पता, ठिकाना और चालचलनका सारटिफिकट भेजें जैनयंगमेन्स एसोसियेशन आफ सेन्ट्रलप्राविंस (मध्यप्रदेश) ऐसे युवाओंको वजीफा देकर शिल्पशिक्षा दिला वेगी जिसमें कमसे कम १५) रु. मासिक प्राप्तिकर सकेंगे व्यापारार्थ द्रव्य (पूंजी) भी एसोसियेशन ही देवेगी अतएव हमारे युवा भ्राताओंको योग्य है कि शीघ्रही प्रार्थनापत्र भेजें जो जैनीभाई ऐसे युवकोंको अपने २ ग्राममें देखें उन्हें उचित है कि युवाओंसे सम्मति लेकर यदि वे पठित (पढ़े हुए) होवें तो उन्हींके हस्ताक्षरसे और यदि वे बिना पठित हों तो आप लिखकर मेरे पास भेजनेकी कृपा करें । प्रार्थी जैनी होना चाहिये ।

प्रार्थना भेजनेका पता,

सूरजमल जैन, सेक्रेटरी
जैन यंगमेन्स् एसोशियेशन आफ सी. पी.
हरदा जि. होशंगाबाद.

सम्पूर्ण जैन भाइयोंको विदित हो कि अहमदाबाद स्वेताम्बर जैनकान्फरंसके प्रस्तावं न. १४ के अनुसार जो अपने परमपूज्य श्री तीर्थंकर भगवानकी तसवीरें वेंची जाती हैं उनके बन्द करनेकी विशेष आवश्यकता है इस लिये ऐसी तसवीरों का क्रयविक्रय होता हो तो उसकी नकल और वेचनेवाले वा छापनेवालेका नाम और ठिकाना हमें लिख भेजें ताकि उचित प्रबन्ध किया जावे ।

असिस्टेंट सेक्रेटरी जैनश्वेताम्बर कानफरंस
गिरगांव, बम्बई.



मनरञ्जन तैल ।

यह दुनियां भरमें खुशबूकी खान और चित्तको गद गद करनेवाला है ।

हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको मथनकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है। इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठडक पहुचती है। वदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूर होकर लोहू और ताकत बढ़ती है। फी शीशी ॥=) डा. ख. ।)

खांसी की दवा ।

इस दवाको खानेसे खासी तथा तर स्वास छातीका दर्द आदि कफ सम्बन्धी रोग फौरन दूर हो जाते हैं। की० ॥) शीशी डां० ≈)

निमकसुलेमानी ।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, वदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, ववासीर प्रमेहनाशक है। स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है। फी शीशी ।।) डा. ख. अलग

दंतकुसुमाकर ।

इसके लगानेसे दांतोंका हिलना मसूढोंका फूलना, खूनदर्द आदि आराम हो दात मोतीकी तरह चमकते हैं। रोज लगानेसे दात आजन्म दृढ़ बने रहेंगे। फी डिब्बी ।)

दवा दादकी ।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर भगाती है। फी डिब्बी ।)

गंधकवटी ।

यदि बालकोंको हमेशा स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसे मंगाइये इससे बच्चोंका ज्वर खासी दस्त वायुरोग दूर होकर खूब मोटा ताजा हो जाता है इसकी गोली रोज खिलाना चाहिये. कीमत. ॥) सी. डां. ≈

पंचतिक्तवटिका ।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है। इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते हैं। किं०॥)डां.≈)

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई

प्रमेहनाशक अपूर्वताकतकी दवा ।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनकी सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना, प्रसगकी इच्छा न होना, नपुंसकता, मातकती, कमरमें दरद, थोड़ा चलनेसे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुशकी वा जर्दी, बदनमें, फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्बलता, रगोंकी कमजोरी. उठती जवानीमें कुचालसे पैदा हुई नामर्दी,, आदि सब रोग जडसे नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है। जिसमें उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आखोंमें रोशनी, बदनमें फुर्ती बढ़ती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है। मूल्य १ डिब्बाका २।।।), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १३) खर्च माफ.

श्वासारिष्ट ।

इससे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होना है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है। कीमत १) डां० ॥)

नपुंसकत्वारि तैल ।

इसके लगानेसे गुप्तभागसबंधी सर्व प्रकारके रोग दूर होते हैं। फी सीसी १) डाकखर्च ≈)

प्रदरांतक चूर्ण ।

इससे स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस संबंधी सर्व विकार दूर होते हैं। कीमत १) डा० ≈)

नयनामृत सुरमा ।

इसके लगानेसे आखोंका जाला धुन्ध, फुली, पानी, बहना, सुर्खी, पखर आदि नेत्ररोग दूर होते हैं और ज्योति बढाता, ठडक रखता और पढते २ आंखों नहीं थकती हैं। फी शीशी १) लगानेकी सलाई ।)

अर्क कपूर ।

यह हैजा व अतीसारकी अक्सीर दवा है और वदहजमी पेचिस मरोडको भी लाभ कारी है। फी सी० ।) दो से कम न भेजेंगे.

शिरदर्द नाशन तैल ।

यथा नाम तथा गुण: की०॥) सी. डां० ≈)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य,
आयुर्वेदीय औषधालय-इटावा (U. P.)

उत्तम और सस्ते जैनपुस्तक ॥

जैनग्रन्थसंग्रह

छप गया ! छप गया !! छप गया !!! जिस पुस्तकके लिये ग्राहकगण चिट्ठियोंकी भरमार कर रहे थे वही फिर दूसरी बार छप गई साथही मूल्य भी कम कर दिया है इसमें छोटी बडी संस्कृत और भाषाकी ५० पुस्तकोंका सग्रह है परदेशमें केवल यही एक पुस्तक पास रखना काफी है सुन्दर टाईपसे पुष्ट कागजपर छपी और जिल्द बधी है जल्दी न मगानेसे पछताना होगा कि ०॥) डां० माफ ।

व्याख्यानरत्नमाला ।

विद्या, धर्म, सत्सगति, कुरीतिआदिके विषयमें ८ भाग	।)
नवीन होली सग्रह; एकवार अवश्य पढिये ...	)॥
सांगीत मनोरमा (नौटकीकी राहमें) ...	≈)
सांगीत नेमचन्द्रिका (नौटकीकी राहमें) ...	≈)
जैनभजनसग्रह (चालें भी लिखी हैं)	≈)
स्तोत्रशतक (अनेक रागोंमें १०० स्तुतियां हैं)...	≈)
प्रश्नोत्तरमाला (चर्चाकी पुस्तक है) ...	-)
तत्त्वार्थ सूत्रजी मूल	-)
पंचमङ्गल पाठ	)॥
बारहमासा राजुलजी	)॥
बारहमासा सीताजी	)।
बारहमासा मुनिजी	)।
बारहमासा वज्रदत्त	)॥
वैराग्य भावना	)।
अध्यात्म पचासा	)
दश आरती	)।
निर्वाणकाण्ड भाषा	)।
धर्मपच्चीसी	)।
हुक्का निषेध	)।
दु खहरण विनती	)।
संकटहरण विनती	)।
बारह भावना सग्रह	)।
समाधिमरण (एक विनती सहित) ...	)।
परमार्थ जकडी, बा० राजुल सोरठमें .	)।
पुकार पच्चीसी	)।
जैनबालगुटका (बालकोंको पढाइये) ...	)॥
इष्ट छत्तीसी निर्वाणकाण्ड गाथा	)॥
बाईसपरीषह, बारह भावना सहित	)॥
प्रश्नोत्तर नेमराजुल	)॥
आलोचनापाठ अर्थसहित	)॥
ब्याहला नेमिनाथ	)।
सामायक भाषा	)।
सप्तऋषि पूजा	)।
निशिभोजन भुंजन कथा	)।
भक्तामर संस्कृत व भाषा	-)

विदेशी खांड निषेध)॥ } दोनों १०० इकट्ठी लेने
वृद्धापेका विवाह)॥ } से २ रु० सैकडा

नियमावली ।

१ चार आनेसे कमकी पुस्तकें नहीं भेजते हैं ।
२ एक किस्मकी ५ पु इकट्ठी लेनेसे १ मुफ्त ।
३ डांक खर्च पाससे देते हैं ग्राहकोंको सिर्फ मनीआर्डर फीस देना होगी ।

मिलनेका पता—
बाबू वीरसिंह जैनी, इटावा (U. P.)

जैनमित्र.

आषाढ कृष्णा २ श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४३३ ता० २७ जून सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

महासभा और संयुक्त प्रान्तिकसभा।

हम कई बार लिख चुके हैं कि, महासभा अभी तक एक संयुक्त प्रान्त मात्रकी एक प्रान्तिक-सभा समझी जाती है। जब तक लोगोंके चित्तसे यह भाव दूर नहीं होगा, तब तक महासभाकी जैसी चाहिये, वैसी उन्नति नहीं हो सकेगी। इस लिये महासभाको जिस प्रकारसे सर्वदेशीयत्व प्राप्त हो, सारे भारतवर्षके जैनियोंकी जिस रीतिसे उसकी ओर सहानुभूति हो और जैनीमात्रके चित्तपर उसका जिस प्रकारसे गौरव स्थापित हो वही यत्न करना चाहिये। हमारी समझमें वह यत्न यही हो सकता है कि, पहिले संयुक्त प्रदेशकी एक प्रान्तिकसभा स्थापित की जावे, जिसके कार्यकर्ता और सभासद युक्त प्रान्तके निवासियोंमें से चुने जावें। अन्यान्य प्रान्तिक सभाओंका महासभाके साथ जो सम्बन्ध है, वही इसका रहेगा। महासभाकी नाईं इसके भी प्रतिवर्ष अधिवेशन होंगे। इस प्रान्तिकसभाके स्थापित हो चुकनेपर पंजाब, युक्तप्रान्त, मालवा, मध्यप्रान्त, बऱ्हाड, बुन्देलखंड, बंबई और दक्षिण महाराष्ट्र इसप्रकार छह सात प्रान्तिकसभायें महासभाकी अनुगामिनी होजावेंगी, उस समय सम्पूर्ण प्रान्तिक सभाओंकी प्रबन्धकारिणी कमेटीकी रायसे प्रत्येक प्रान्तके एक एक दो दो योग्य पुरुष महासभाके कार्यकर्त्ता चुने जावें। और प्रत्येक प्रान्तके कमसे कम पचीस पुरुष महासभाके मेम्बर बनाये जावें। महासभाकी प्रबन्धकारिणी कमेटीमें भी सब प्रान्तोंके सभासद रहें। इतना सब हो चुकने पर वार्षिक अधिवेशनका प्रबन्ध किया जावे। वार्षिक अधिवेशन प्रतिवर्ष पृथक २ प्रान्तके पृथक् २ स्थानों में हों, और वे स्थान क्रमसे प्रान्तिक सभायें निश्चित करैं। अर्थात् पहिले वर्ष बम्बई प्रान्तिकसभा अपने प्रान्तके किसी मुख्य स्थान को निश्चित करै, तो दूसरे वर्ष युक्त प्रान्तिक सभा करै और तीसरी वर्ष बऱ्हाड प्रान्तिक सभा। जिस प्रान्तमें अधिवेशन हो, उस प्रान्तकी प्रान्तिकसभा अधिवेशन सम्बन्धी प्रबन्धके लिये एक कमेटी बनावे, जिसमें स्थानीय लोगोंके सिवाय दूसरे स्थानोंके भी उत्साही सज्जन मेम्बर हों। यदि ये अधिवेशन तीर्थक्षेत्रों पर किये जावें, तो थोड़े परिश्रममें बहुत कुछ सफलता प्राप्त हो सकती है। यह हमारा दिग्दर्शन मात्र है। इसे लेकर महासभाके परिचालकगण सुधारके मार्गको औरभी विस्तृत तथा कंटक रहित कर सकते हैं। आशा है कि, हमारा यह विचारक्रम पाठकोंको पसन्द आवेगा।

राधनपुर राज्यमें गोवध बन्द।

गुजरातमें राधनपुर (पालनपुर) नामका एक रक्षित राज्य है। वहाके नव्वाबने जो कि हालही गद्दीनशीन हुए हैं एक आज्ञा प्रचलित की है कि 'हमारे राज्यमें अबसे कोई भी गोवध न करने पावेगा। यदि कोई इस आज्ञाका उल्लंघन करेगा तो कठोर दंडका भागी होगा। नव्वाबके इस कृत्यसे न केवल यहांकी हिन्दू, जैन, मुसलमान प्रजा प्रसन्न हुई है वरन सारे भारतवासी जिनके हृदयमें जीवदया अथवा देशकी दशाका ज्ञान है प्रसन्न हुए हैं। आशा है कि नवाब साहबने जिस दूरदर्शिताकी नीतिसे राज्यशासन करनेका प्रारंभ किया है, उससे अपनी प्रजाके परम प्रिय बनकर वे अपने राज्यको बहुत जल्दी उन्नतिके शिखर पर पहुंचावेंगे। एक मुसलमान राज्यके इस पवित्र कर्मको देखकर अन्यान्य हिन्दू राजाओंको जो कि गायको माताके तुल्य पूजनीय मानते हैं कुछ लज्जित होना चाहिये। और अब भी सचेत होकर गोकुलकी रक्षा करनी चाहिये। गोकुलकी रक्षा करना जिस प्रकार धर्म दृष्टिसे महत्वका कार्य है उसी प्रकार देशके हितके विचारसे भी है। आज भारतवर्षमें यदि प्रति सप्ताह लाखों गायें न कटी जातीं तो यह रुपयेका तीनपाव घी बिकनेका मौका न आता और घी दूधके दर्शन न मिलनेसे यह बलहीन साहसहीन, संतान न दिखलाई देती, देशको जीवित और पुरुषार्थ सम्पन्न बनाये रखनेके लिये घी दूधकी बड़ी भारी आवश्यकता है। इसके सिवाय भारत वर्ष कृषिप्रधान देश है। यदि गोवंशका इस तरह नाश होता रहेगा, तो कृषिकर्म किस तरह होगा? वर्तमान समयमें ही बैल इतने मँहगे होगये हैं कि, बेचारे किसान बड़ी कठिनाईसे उन्हें खरीद सकते हैं। यदि यह गोहिंसा बन्द न हुई, तो न जाने बैल और कितने मँहगे बिकेंगे और किसानोंकी क्या दुर्दशा होगी। अवश्यही राधनपुर नबाबने इन्हीं सब बातोंको विचारकर इस पुण्य कार्य का अनुष्ठान किया है। इस लिये हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं। सुनते हैं नवाब साहिबने अपने राज्यमें मुफ्त शिक्षा देनेकी आज्ञा भी जारी की है, जो राज्यके उन्नत होनेमें एक प्रधान साधन है। प्रजाके सौभाग्यसेही ऐसे नरेशोंकी प्राप्ति होती है, जो प्रजाको सुखी करनेके लिये अहर्निश प्रयत्न करते रहते हैं।

विलायतमें अविवाहितोंकी संख्या।

सभ्य विलायतमें जो न होवे, सो थोड़ा है। वहांकी सब ही बातें विचित्र होती हैं। वहां जैसी स्वतंत्रता अन्यत्र कहीं भी दिखलाई नहीं देती। परन्तु अब उस सीमाधिक स्वतंत्रताके फल वहावाले चखने लगे हैं। प्रसिद्ध हुआ है कि, इग्लेंड और वेल्समें मिलकर १०१९३१८० आदमी अविवाहित है। इनमें ४३०१९७८ पुरुष, ४९९४२७१ स्त्रियां १२४११०७ विधवायें और ९९०३३० कुमारियां अविवाहित हैं। इन दोनों देशोंकी मनुष्य संख्या कुल मिलकर तीनकरोडके अनुमान है। इस हिसाबसे वहां एकतिहाईसे भी अधिक मनुष्य अविवाहित हैं। जिस देशमें विधवा विवाहकी सम्पूर्ण रूपसे स्वतंत्रता है, पाठकोंको सोचना चाहिये, वहां अविवाहितोंकी इतनी अधिकता क्यों है? और उस देशके लिये यह अधिकता कितनी अनिष्टकर है। सुनते हैं स्वतंत्रताके प्रतापसे वहांपर स्त्रियोंकी ऐसी अनेक सभायें स्थापित हैं, जिनका उद्देश्य अविवाहित रहकर जीवन व्यतीत करनेका है। अविवाहित रहनेका अभिप्राय यह नहीं है कि वे ब्रह्मचर्यसे अपने जीवनको उत्कृष्ट बनाया चाहती हैं, किन्तु यह है कि गर्भधारण करके प्रसवका महाकष्ट उठाना उन्हें पसन्द नहीं है। अपने सुखमय जीवन को वे दुःखमय नहीं बनाना चाहतीं। कुमारिका अवस्था में ही उन्हें सम्पूर्ण सुख प्राप्त करने की स्वतंत्रता है। यही कारण है

कि, वहां कुमारियों की संख्या बढ़ रही है। विधवाओं और दूसरे अविवाहितों की संख्या बढ़नेका कदाचित् यह कारण हो कि, एक तो वहां एक पुरुष एकसे अधिक विवाह नहीं कर सकता, दूसरे वहा कोर्टशिपकी पृथाका जोरशोर है, इससे विना परस्परकी पसन्दगीके विवाह नहीं होते। ऐसी दशामें हजारों स्त्रियां तो इस कारण विवाह अथवा पुनर्विवाह नहीं करपातीं कि, उन्हें विवाह योग्य पुरुषही नहीं मिलते और हजारों पुरुष इस कारण अविवाहित रहतेहैं कि, उन्हें कोई पसन्द नहीं करता। भगवान् हमारे देशवासियोंको सुबुद्धि देवे कि, वे अपने देशको इस विषम स्वतंत्रतासे बचाये रक्खें। ऐसी स्वतत्रताको दूरसे ही नमस्कार हैं। विद्वानोंने कहा है, **न स्त्री स्वातंत्र्यमर्हति।**

जैनियोंके नवीन मासिक पत्र।

यह बात सर्व साधारणमें प्रसिद्ध है कि, वर्तमानमें उन्नतिके सबसे प्रधान उपाय समाचार पत्र हैं। जिस समाजमें जितनाही समाचार पत्रोंका प्रचार होगा वह उतनाही उन्नत होगा। अभी तक हमारा समाज इस विषयमें बहुत पीछे पड़ा हुआ है। इने गिने चार पाच पत्र हमारे समाजमें है और उनमेंभी अनेक सख्या पूर्ण करनेवाले हैं। श्वेताम्बर समाज यद्यपि सख्याकी अपेक्षा हम लोगोंसे न्यून है, परन्तु हम देखते हैं और इस विषयमें कई वार लिख भी चुके है कि उसमें पत्रोंकी सख्या सतोषप्रद है। तीन चार साप्ताहिक, छह सात मासिक और अनेक ग्रन्थप्रकाशक पत्र उनमें बहुत अच्छी दशामें निकलते हैं। यही कारण है कि आज श्वेताम्बर समाज उन्नतिके मार्गमें खूब तेजीसे दौड रहा है। शिक्षादि सबही कामोंमें सबसे अग्रेसर बनता जाता है। हर्षकी बात है कि, इस वर्ष हमारे समाजमे भी उनकी नाईं प्रस्फुरण दिखलाई देता है। यदि विघ्न उपस्थित न हुए तो आशा है कि आगामी वर्षमें कई एक मासिकपत्र हमारे समाजमें जन्म लेंगे। जैनप्रभाकर बाबू जैनेंद्रकिशोरजी आरासे, स्याद्वादपताका पंडित गणेशप्रसादजी वर्णी–बनारससे और आर्हतमतप्रभारणीपत्रिका बाबू सूरजमलजी हरदासे निकलने वाले हैं। इनके सिवाय अहमदाबादके जैनबोर्डिंगसे जो दिगम्बरजैन नामका पत्र निकलनेवाला था वह भी शायद आगामी वर्षमें निकलेगा। और भी एक दो पत्रोंका गुप्त रूपसे आयोजन हो रहा है। इस विचारसे आगामी वर्ष जैनियोंके लिये कुछ कल्याणकारी सा जान पड़ता है। परन्तु जहां तक हमारा अनुभव है, अभी वह समय नहीं आया है, जब ग्राहकों के भरोसे पत्र निकाले जावेंगे। विशेष कर हमारा समाज तो इस विषयमें सबसे पश्चात्पद है। इस लिये व्यय वगैरह का ध्रुवप्रबंध करके पत्र निकालने का प्रयत्न किया जावेगा. तो अच्छा होगा। इस के सिवाय नोटिसों के द्वारा ग्राहकों की आशाप्रद संख्या होना कठिन है। इस लिये यदि पत्र प्रकाशकगण ग्राहक बढ़ानेके लिये कोई दूसरा प्रयत्न करें, तो अच्छा हो। वह प्रयत्न खास ग्राहक बढानेके लिये किसी उपदेशकका दौरा है। एक उपदेशक छह महीनेके दौरेमें कमसे कम हजार ग्राहक बना सकता है, जिसका खर्च ज्यादा से ज्यादा २९०) के होगा। हमारी समझमें आगामी लाभ और समाज हितके ख्यालसे यह खर्च किसी पत्रको भारी न होगा। उपदेशक, पत्रके ग्राहक बढानेके सिवाय सभाओंके मन्तव्यादि प्रकाशित करने तथा धर्मोपदेश देनेका कार्य भी करसकेगा। आशा है कि, पत्र प्रकाशकगण हमारे इस विचार पर ध्यान देंगे। यहा यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि, पत्रोंका सम्पादन कैसा होना चाहिये। पत्र प्रकाशकों को स्वय इस का विचार कर लेना चाहिये।

बुंदेलखंडमें जैनमन्दिरोंकी दुर्व्यवस्था।

बुंदेलखडमे जैनमन्दिरोंका जितना बाहुल्य है, शायदही उतना दूसरे किसी प्रान्तमें होगा। यहापर ऐसे ग्राम नगर बहुत थोडे मिलेंगे, जहां जैनियोंका अस्तित्व होगा और जैनमन्दिर न होंगे। साधारण ग्रामोंमें भी जहा तीस तीस चालीस चालीस घर जैनियोंके हैं, चार चार छह छह वरन इससे भी अधिक मन्दिर देखे जाते हैं और नये २ बनते ही जाते हैं। जहा तक मुझे अनुभव है, प्रतिवर्ष यहां कमसेकम दोसौ तीनसौ मन्दिर बनते होंगे। एक तो इस प्रान्तमें पत्थर अधिकतासे मिलता है, इस कारण बहुत थोडे द्रव्यमें मन्दिर तयार होते हैं, दूसरे अन्य जैनजातियोंकी अपेक्षा परवार तथा गोलापूरवोंमें जिनकी कि यहापर अधिकता है, धर्मसम्बन्धी उदारता अधिक है। पाठकोंको सुनकर आश्चर्य होगा कि, इस प्रान्तका ऐसा गृहस्थ जिसकी पूंजी अधिकसे अधिक चार पाच हजार रुपया होती है, मन्दिर बनानेमें तीन चार हजार रुपया लगा देता है। पचास हजारकी पूंजीवाला परवार पच्चीस तीस हजार रुपया लगाकर गजरथ चलवाकर संघी (सिंघई) बन जाता है। यदि कोई गिनती करेगा, तो इस प्रान्तमें कई हजार संघी सवाईसंघियोंके घर मिलेंगे, गोलापूरवोंमें तो बहुत थोडे मनुष्य ऐसे मिलेंगे जो सिंघईके खिताबसे खाली है। जहातक मेरा अनुभव है, इन जातियोंमें कृपणताकी मात्रा कुछ कम नहीं है. परन्तु मान मर्यादा के लोभमें मन्दिर प्रतिष्ठादि कार्य करनेके लिये वे अपना सारा घर होम देनेके लिये तयार रहते हैं। यह मान मर्यादा का लोभ रायबहादुर, सी. आई ई, पदोंके लोभसे कुछ कम नहीं है। पूर्व कालमें जब यह प्रान्त मन्दिरों से खाली था, धर्माचार्य भट्टारकोंने शायद यह खिताबी लोभ देकर धर्ममार्गकी प्रवृत्तिका मार्ग खोला होगा, ऐसा जान पडता है। जो हो. यहाके जैनियों का धर्मौदार्य्य देखकर प्रसन्नता होती है और एकवार उन्हे शतश धन्यवाद दिये विना नहीं रहा जाता।

इस प्रान्तमें मन्दिरोंका जितना बाहुल्य है, खेद है कि, अज्ञानका भी उससे कम बाहुल्य नहीं है। जहा देखो तहा 'लकीर के फकीर' दिखलाई देते हैं। कोई यह नहीं सोचता कि, अति सर्वत्र वर्जित है। जिसके जरा रुपया बढा कि वह मन्दिर बना कर अपना नाम करनेके लिये कमर कसता है। वह यह नहीं विचार सकता कि, अब इस गांवमें अधिक मन्दिरों की जरूरत नहीं है, मुझे रुपया लगाना ही है, तो वे पुराने मन्दिर जो जीर्णशीर्ण हो रहे हैं उन की मरम्मत करा दूं, मन्दिरों की पूजाका कोई बन्दोबस्त नहीं है, वह कर दूं। पूजन करनेवाला शास्त्र वाचनेवाला कोई नहीं है, मैं एक दो लड़कोंको स्कालर्शिप देकर उन्हें विद्याभ्यास कराके पंडित बना दूं, अथवा ग्राममें ही एक पाठशाला खोल दूं। मन्दिरोंमें शास्त्रोंका सग्रह नहीं है, कहींसे लिखवाकर मगा दूं। अथवा उपकरण नहीं हैं, बनवा दूं। वह समझता है, मन्दिर बनवानेके सिवाय इन कामोंसे नाम स्थिर नहीं रह सकता। इन कामोंमें मेरा रुपया व्यर्थ जावेगा।

इस पश्चोत्तम बुद्धिका फल यह हुआ है कि, हजारों मन्दिर गिरकर खंडहर बन रहे हैं, उनकी प्रतिमायें खंडित पड़ी है। हजारों मन्दिरोंमें न तो पूजा होती है और न दीपक जलता है। जहां द्रव्य मिलती है, वहां पूजन करनेवाले नहीं मिलते, और जहां पूजन करनेवाले हैं, वहां द्रव्य नहीं मिलती। यह दशा देखकर बहुत दुःख होता है, और नवीन मन्दिर प्रतिष्ठाकारकोंकी उदारताकी भी निन्दा किये बिना नहीं रहा जाता, जो बिना विचारे वा बिना देशकाल भावका विचार किये की जाती है।

मैं अपने बुंदेलखंडके भाइयोंका विशेषकर पंचायतके मुखियाओंका ध्यान इस ओर आकर्षित करता हूं, और आशा करता हूं कि अब समयके अनुकूल वे इस मेढियाधसानसे अपनी जातिको मुक्त करेंगे, और अनावश्यक उदारतासे द्रव्यको बचाकर ऐसे कार्योंमें लगावेंगे, जिससे जैन शासनकी नींव मजबूत होनेकी आशा हो। ऐसा किये बिना केवल नवीन २ मन्दिर बनवाकर और प्रतिमाओंको प्रतिष्ठित कराकर पुराने मंदिरों और पुरानी प्रतिमाओंकी अवहेलना–अविनय करानेसे परवार तथा गोलापूरब जातिका उद्धार नहीं होगा उद्धार होनेका मार्ग दूसरा है उसकी ओर कदम बढाओ। देखो, ससारमे क्या हो रहा है।

एक हितचिन्तक।

अपवित्र चीनी।

आजकल केवल धर्मकी दुहाई देकर यदि किसीको विशेष कर नवशिक्षित समाजको कुछ समझाना चाहें तो सफलता नहीं होती। धर्माधर्मके विचारसे लोगोंकी प्रवृत्तिमें कुछ फेरफार नहीं किया जा सकता। आधुनिक पाश्चात्य विद्वानोंके वाक्यकोही बहुतेरे पढ़ूदू वेदवाक्य मानते हैं अतएव आज हम एक सुपण्डितों द्वारा परिचालित (Dr. Walter E. Elfrink. Editor of the "The Chicago Vegetarian Magazine") "निरामिष भोजियोंकी पत्रिका" के प्रमाणोंसे सिद्ध करते हैं कि हमारे देशकी पूर्व प्रचलित चीनी विदेशी चीनीकी अपेक्षा सब प्रकार श्रेष्ठ है। विदेशी चीनी केवल हिन्दू मुसलमानोंहीके विरुद्ध नहीं है वरन स्वास्थ्यको भी हानिकारक है। हमारे पूर्वजोंने सब विषयोंकी अच्छी तरह विवेचना कर अपवित्र पदार्थोंको अभक्ष्य ठहराया है। आज कलके महाबुद्धिमान लोग अपने शास्त्रोंपर आस्था नहीं रखते और विदेशी गुणग्राही लोग हमारेही शास्त्रोंसे कुछ थोड़ा बहुत लेकर बकुचेके बजाज बन बैठे हैं। त्राटक (Crystal gazing) मोहिनी विद्या (Hypnotism) किसीके मनकी बात कह देना अथवा किसीके मनकी चिन्ताको जान लेना (Thought reading Telepathy आदि विद्याओंको लेकरही दूरवालोंने धूम मचा रक्खी है।

विलायतके मोनी विद्या कालेजके स्वामी (College of Psycology Occult sciences) और अदृश्य जगत् Invisible world Hypnotism आदि पत्रोंके सम्पादकने (Prof. Hayslip) शिक्षा रूपसे सरल विश्वासका अवलम्बन कर जो पत्र लिखा है उसका अवलोकनकर निश्चय होता है कि, एक ऐसा दिन आवेगा जब समस्त पृथ्वीके अधिकांश लोग हिन्दुओंके चरणोंमें आश्रय ग्रहण करेंगे अमेरिकाके जग विख्यात मोहिनी विद्याविशारद XLdMatt sege A. M. ph D. LLD. डाक्टर सेजकी भी हिन्दूधर्म पर आस्था देख कर यही विश्वास होता है कि एक दिन हिन्दू योगशास्त्रपर संसार लट्टू हो जायगा।

ये सब गुणग्राही पण्डित एक बिन्दुमात्र योग शास्त्रको पाकर जिस प्रकार अपना माथा खपाते है उसे देखकर सब लोग आनन्दसे पुलकित होते हैं।

अभी थोडे दिन हुए बङ्गालके एक जिमीदार मार्किनसे एकसौ रुपयेमें एक प्राणायाम करनेकी मशीन लाये हैं। परंतु क्या कभी मशीनोसेभी प्राणायाम किया जा सक्ता है? तथापि उनके उद्यम और आत्मानुसन्धान करनेका प्रयत्न प्रशसनीय है। और वे लोग धन्य हैं। देखिये मासप्रिय लोगोंके निवासस्थान मार्किन नगरमें भी आजदिन बहुतसे निरामिष भोजी मनुष्य वर्तमान हैं। और हमारे चिरसभ्य देशमें सात्विक आर्य सन्तान होनेपर भी बहुतसे लोगोंका भक्ष्याभक्ष्यका विचार रखना तथा मासाशियोंकी भाति पवित्रापवित्रका ज्ञान हृदयसे निकाल देना कितने लज्जाकी बात है।

हम लोगोंका यहांतक अधःपात होगया है कि आज विलायती चीनीकी अपवित्रताके विषयमें विदेशियोंके वाक्योंको उद्धृत करनेकी आवश्यकता हुई हैं। इसको अपने दुर्भाग्यके सिवाय और क्या कहें।

डाक्टर साहबने इस विषयमें जो कुछ कहा है सुननेके योग्य है। विदेशी चीनी केवल हिन्दुओंकेही धर्मके विरुद्ध हो यह बात नहीं है। यह चीनी मुसलमानोंके भी धर्मविरुद्ध है।

सबसे पहले देखनेकी बात यह है कि विदेशी चीनीके साफ करनेमें गोरक्त डाला जाता है। केवल यही नहीं शूकर आदि अनेक पशुओंके शरीर भी इसके काममें लाये जाते हैं। मुर्दोंके हाड़ जला कर उसकी खाकसे यह चीनी स्वच्छकी जाती है। जो लोग हाड़ बटोर बटोर कर ले जाते है वह किसी बातका विचार नहीं करते। गौ, शूकर, घोडा, शृगाल, कुत्ते, बिल्ली, आदि सब ही की हड्डिया इकट्ठी की जाती हैं। ऐनीमल चारकोल Animal Charcoal का अर्थ क्या है कोई समझता है? इसका अर्थ है पशुओंकी राख। क्या यह हिंदू मुसलमान दोनोंके धर्म विरुद्ध नहीं है? इसके अतिरिक्त विलायतवाले और जो जो पदार्थ मिलाते हैं वह उदरमें जाकर बिष समान अपकार करते हैं। इनमेंसे मारवल पत्थरका चूरा और खनिज नील इनका नामही यथेष्ट है। सब जानते हैं कि यह दोनो हानिकारक होते है। विलायती चीनीकी अपेक्षा ब्राउन सुगर वा लालचीनी अधिक पवित्र होती है। स्वास्थ्यवित् पण्डितगण सन् १८९० ई० में इस बातको निश्चय कर चुके हैं तथापि इन विषयोंपर कुछ ध्यान न देकर हिन्दू मुसलमान इस चीनीको व्यवहार करते हैं। पवित्र खाद्य आईन प्रचलनके साथही साथ यह प्रश्न उदय हुआ था कि कलकी चीनी, दानेदार चीनी इन दोनोंमें सबसे अच्छी कौनसी है। चीनी स्वच्छ करते समय रङ्ग बदलनेके लिये एक प्रकारकी नीलवर्ण खनिज द्रव्य द्वारा उसका रङ्ग बदलना पड़ता है।

इस प्रक्रियाको अङ्गरेजी भाषामें ब्लीचिङ्ग कहते है। इससे चीनीका मिठास कम हो जाता हैं और उसमें विषाक्त पदार्थ मिल जाते है। इसके सिवाय चीनीको बहुत सफेद बनानेके लिये मिठाई वाले उसमें चाकमिट्टीका चूर्ण भी मिला देते है।

इस बिषयकी और भी बहुत सी बातें हैं उन सब पर विचार करनेसे अच्छी तरह समझमें आ सकता है कि विलायती चीनीकी अपेक्षा लाल (ब्राउन) चीनी उत्तम और व्यवहार करने योग्य होती है। चीनी साफ करनेके समय बैलका सुखाया हुआ रक्त और नाना प्रकारकी हड्डियोंका चूर्ण प्रयोजित होता है।

यह बड़े सौभाग्यकी बात है कि नये खाद्य आईनके प्रचलित होनेसे इस चीनीके अवगुण प्रका-

शित होगये हैं रंदीत एक प्रकारका विष होता है विलायती चीनी खानेसे धीरे धीरे यह विष पेटमें सञ्चित होता रहता है और अन्तमें नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होकर अकाल मृत्यु होजाती है।

डाक्टर वाप्टरने स्वदेशी आन्दोलनके पक्षपाती होनेके कारण इस चीनीको वर्जित नहीं ठहराया किन्तु वास्तवमें यह स्वास्थ्यको हानि पहुचाती है इसीलिये उन्होंने इसके विरुद्ध अपनी सम्मति प्रकाशितकी है।

डाक्टर वाप्टर कहते हैं "दानेदार लाल चीनी कलकी चीनीकी अपेक्षा सुस्वादु, सुमिष्ट और उपादेय होती है यह सर्व सम्मतिसे स्वीकृत होचुका है। चीनीके भीतर जो स्वाभाविक लवण रहता है वही पुष्टिकारक होता है कलकी चीनीको साफ करते समय यह लवण नष्ट होजाता है इसी लिये यह अवगुण कारक होजाती है।"

वर्तमान समयमें इसका अधिक प्रचार होनेका मूल कारण यदि विचार किया जाय तो सिवाय सस्ती होनेके और कुछभी मालूम नहीं होता। इसमें अब किञ्चिन्मात्र भी सन्देह नहीं रहा। इसका व्यवहार करना धर्म विरुद्ध है इसके रोकनेके प्रयत्नमें अगणित लेख प्रकशित हो चुके हैं असंख्य व्याख्यान दिये जाचुके हैं कितनीही पुस्तकें तयारकी गईं हैं और सब लोगोंको पूर्ण रीतिसे विदित हो चुका है कि इसमें हड्डियां पडती है. गोरक्तसे यह स्वच्छकी जाती है और कितनी कितनी घृणित प्रक्रियाओं द्वारा यह तयार होती है परन्तु इस परभी अभी इसकी भारत वर्षमें आमदनी बन्द नहीं हुई। गोरक्तके नामसे हिन्दू मात्रकी आखोंमें खून उतर आता था यदि कोई किसीके सामने गोरक्तका नाम भी उच्चारण करता तो हिन्दू सन्तान अपनी जानपर खेल जाताथा परन्तु हाय आज वेही हिन्दू गोरक्त मिश्रित घृणित पदार्थसे अपना मुँह मीठा करके भी मुह दिखलाते हैं। धन्य है उनकी धर्ममर्यादा, धन्य है स्वधर्माभिमान, धन्य है उनका धर्म प्रेम। केवल थोड़ी सस्ती मिलनेके कारणही सब मर्यादा उलंघन करनेको तयार हो जाते हैं। ऐसी जातिका नेता होकर अपना मुँह काला करना है। इस समय भारत वर्ष और हिंदुओंकी जो दुर्दशा होरही है इससे हृदय विदीर्ण होता है शरीर रोमाञ्चित होता है परंतु जो जाति इतनी अन्धी होरही है कि अपने धर्म कर्मकी ओर दृष्टिपात नहीं करती अपने हानि लाभका विचार नहीं करती उसकी ऐसी दुर्दशा होना स्वाभाविक बात है। विदेशी चीनीसे अपना धन परदेश चला जा रहा है धर्मके मुखपर शतमुख प्रहार हो रहा है परंतु वाह भाई! बहादुरो! वाह!! थोड़ेसे धनके लोभसे इन सबकी परवाह न कर अपना मुँह मीठा किये जाते हो, धिक्कार है। देश और धर्मको चूल्हेमें डाला अपने शरीरका तो ख्याल करो विलायती डाक्टर कह रहे हैं कि इसके द्वारा नाना प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं। इसका विष शरीरमें प्रविष्ट होकर अकाल मृत्यु होती है तब भी यदि इसको खाते रहो तो तुम और तुह्मारा भाग्य।

(श्री व्यंकटेश्वर समाचार)

गोरक्षा।

हाय २! लोग कितना अनर्थ कर रहे हैं। जो दूध भारतका प्राणस्वरूप है, जो बैल भारतके पद स्वरूप हैं, जिनके बिना वह एक पद भी नहीं चल सकता, लोगोंने उसी दूधका न्हास कर मानों भारत-हत्याका बीडा उठाया है, बैलोंका संहार कर भारतको लगडे बनानेका उद्योग साधन किया है। यहा प्रश्न हो सकता है कि, इसमें अपराध किसी एक विशेष जातिका होगा, सबके सिर अपराध आरोपना ठीक नहीं। परंतु ऐसा समझना भ्रम पूर्ण है। इस समय गौवंश निर्मूल करनेका अभिप्राय किसी एक विशेष जातिको नहीं लगाया जा सकता। इसमें सबही भारतवासी समान रूपसे अपराधी हैं।

महृदय पाठक! पशुओंका क्रयविक्रय जिन बाजारों या मेलोंमें होता हो, जरा वहा पधारकर आप मेरी बातका पुष्टीकरण कर ले। आप वहा उच्चवर्णी यज्ञोपवीतधारी व्यक्तिको देखेंगे कि, रस्सीसे बंधी हुई गाय हाथमें लिये कसाईका अभिवादन कर रहा है। कितनेक लोग मध्यस्थ बनकर गाय बैलोंका गला कसाइयोंके हाथ सौंपवा रहे हैं, क्रेता विक्रेता दोनों लोभावर्त्तमें पड़े बिचारे वाणीहीन परोपकारी पशुओंके प्राण हरनेको यम रूपमें दिखाई देंगे। इतना देख लेनेपर आपका यह आक्षेप खण्डित हो जावेगा कि, इसमें किसी एक विशेष जातिका अपराध है। और आप सहसा कह उठेंगे, ओह! भारतके लोग इतने नीचे गिर गये, कि, अब उनके ऊपर उठनेकी आशा ही न रही।

जो पशु जीतेमें हम लोगोंका उपकार करें, मरनेपर भी हमारे काम आवें, उनके साथ हमारा ऐसा अमानुषिक वर्ताव सर्वथा निंदनीय है। तरुणाईमें काम लेकर हमारी विदेशी सरकार हम लोगोंको घर बैठे पेन्शन देती है, पर बिन पशुओं द्वारा हमारा यथार्थ जीवन सफल होता है, हम उनके कृतज्ञ न हो, अकाल मृत्युके पजेमें फँसा देते हैं।

हाय! जो गाय अपने बछडेको अपने पैरोंसे बंधी देखती हुई हमें दूध देनेमें कृपणता नहीं करती, जो बैल ईश्वरप्रणीत तृण खाकर हमारे लिये नाना प्रकारके अन्न उपजानेमें सहायक होते हैं, हमारी उनके साथ यह कृतघ्नता! कि, उनके वंशका नाश करने ही को कटिबद्ध हो रहे हैं।

लोग कहते हैं, बाल्यविवाहने भारतमें निर्बल सतानका प्रादुर्भाव किया, यह बात किसी अंशमें सत्य होनेपर भी सर्वथा सत्य नहीं है। पूर्व कालिक लोग बलिष्ठ होते थे क्यों? इसका हेतु आप सोच चुके होंगे, घर२ दूध दही और घी का बाहुल्य था, गरीबसे गरीबका भी बच्चा प्रातःकाल होते ही ताजा दूध पीनेको पाता था, भोज्य पदार्थोंमें घी पानीके स्थान डाला जाता था, और सस्ते अन्नके साथ सस्ता घी दूध खाकर मनुष्य पुष्टता पाता था।

बहुत पुरानी बात जाने दीजिये, अभी वे लोग जीवित हैं, जिन्होंने पक्के छ सेरका घी एक रुपयाका लेकर खाया है। एक पैसेका एक सेर अच्छा दूध आसानीसे मिला करता था, एक रुपयाके मनभर चांवल तथा डेढ़ दो मन गेहू बिका करते थे, तब बलिष्ठ सतान पैदा हुआ करती थी, तभी कर्त्तव्य परायण और अध्यवसायी हुआ करते थे! निश्चिन्त रहनेके कारण ही उन्हें सुखका प्रादुर्भाव था, बल रहनेसे ही वे साहसी, पराक्रमी और बुद्धिशाली थे। आज भारत इसी घी दूधको खोकर ऐसा असाहसी और निर्बल हो रहा है—कि, कर्त्तव्य—क्षेत्रमें आरंभ शूरत्व दिखलानेके अतिरिक्त अधिक देरलों फल हाथ आनेतक ठहरही नहीं सकता।

अतएव हम सब भारतवासियोंका प्रधान कर्त्तव्य है कि, जिस तरहसे हो, इस दुःखदायिनी प्रथाको रोकें! इस भयावह स्रोतको यहीं बंद कर दें, इसमें देर करना मानो अपने सुखमयी जीवनको जोखिममें डालना है। देखिये! पूर्व कथित बातें

हमें स्वप्नके समान भी प्रतीत नहीं होती। आज तीनपाव अमिश्रित घी एक रुपयामें मिलना कठिन है। थनदुहा. एक रुपयका आठसेर दूध नहीं मिलता। यदि थोड़े दिन इस विषयमें और उपेक्षा की गई, तो जिस प्रकार हाथी कहीं २ श्रीमानोंके यहां दर्शनीय पदार्थ रह गया है, गाय बैल भी वैसेही कहीं २ रह जावेंगे। तब विवश होकर भारतवासी अपने प्राण और धर्मको मशीनों (यंत्रों) और होटलोंको सौंपदेंगे। मशीनें खेतीका काम करेंगी, और होटलें पका हुआ खाना देंगी। इसके सिवाय जो लोग शरीरको पुष्ट और बलवान बनाया चाहेंगे, वे पवित्र घी दूधके अभावमें मांस भक्षण करने लगेंगे।

आज इस विषयमें यदि लोग चेष्टा करें, तो आसानीसे कर सकते हैं। सरकारसे सहायता मांगनेकी इस विषयमें कोई आवश्यकता नहीं है। उसने हमें धर्मस्वतंत्रता दे रक्खी है। उसका इतना आभार हमपर अत्यधिक है। हमें चाहिये कि, जो लोग कसाइयोंके हाथ पशुविक्रय करें, उनके साथ सच्चा बायकाट किया जाय, इस देशके निवासी मात्रको गोरक्षामें समान रूपसे योग देना चाहिये। जो मुसलमान हठमें आकर इस निन्दनीय कर्मको करना चाहते हैं, उन्हें अडगान अमीर हबीबुल्लह साहिबकी नसीहत शिरोधार्य्य करना चाहिये। देश धर्मको समझ उसमें अपना भी वैसाही कल्याण जैसा कि हिन्दुओंका है सोचकर, इस बुरे कामसे हाथ खींच लेना चाहिये। गायकशी रोकनेसे इस्लामकी रौनक फीकी नहीं पड़ सकती। उसमें जीनत लानेकी दूसरी बातें है। वे इख्तियार करो, दूसरोंके नाहक दिल न दुखाओ। रहे हिन्दू, सो जन संख्याके लेखे यही अधिक हैं। कृषिका भाग इन्हींके अधिकार में हैं। विक्रता विशेष यही हैं। गोवधका मूल इन्हींके हाथमें है। हिन्दुओंके अग्रगण्य लोग गोविक्रेताको जाति दण्ड दे प्रबंध कर सकते हैं। सहजहींमें कार्यकी पूर्ति हो जानेसे देशका मंगल हो सकता है। अभी समय है, चेतो और शीघ्र प्रबंध करो, विलायती कपड़े और विलायती चीनीके बहिष्कारसे गोवध का रोकना बड़ी कीमती बात है इसके लिये हमारा जो उद्योग चला है वह अत्यल्प है। एक दो गोशाला खोल कर दो चार हजार गाय बैल पालनेसे काम नहीं चल सकता, और न यह प्रथा उपयुक्त ही हो सकती है। हर एक आदमी अपने २ पशु आसानीसे पाल सकता है। हां! वे लोग जो पशु पालनेमें असमर्थ हुए हों, जिन्हें अर्थकी आवश्यकता आपडी हो, उन्हें श्रीमान् लोग चाहे चन्देसे, चाहे निजसे अर्थकी सहायतादे पशु पालन करा सकते हैं। सो भाई! जिस तरह योग्य जानो इस बुरी प्रथाको रोकनेका शीघ्र प्रयत्न करो। इसमेंही भारतवासियोंका कल्याण है। वर्तमान और २ आन्दोलनोंसे यह आंदोलन बहुत बढ़कर है जिसमें सरकारसे भी हमारा कोई विरोध नहीं हो सकता और न वह हमारे इस शुभ कृत्यमें हस्तक्षेप करेगी। आशा है कि भारतीय लोग मेरे आवेदन पर ध्यानदे पुण्य लाभ प्राप्त करेंगे और घरकी लगी इस आगको शातकर फिर आग लगानेका यत्न करेंगे। हिन्दूमुसलमानोंके मध्य इससे बढ़कर प्रेम करनेका दूसरा उत्तम उपाय नहीं है। संसारकी सम्पूर्ण जातियोंमें जैनी लोग सबसे अधिक अहिंसा प्रिय और दयालु समझे गये हैं। उनके लिये इस उपदेशकी आवश्यकता नहीं थी। परन्तु मेरे पडोसके ग्रामके एक दो जैनियोंने अपने कई पशु कसाईयोंके हाथ बेचे हैं यह जानकर दुःखी हो मैंने यह लेख जैनी भाइयोंके मुख्य पत्रमें छपनेको भेजा है। आशा है कि, जैनी भाई सचेत होजावेंगे और इस कलंकसे अपनी जातिको सर्वथा अलिप्त रखनेका शीघ्र प्रयत्न करेंगे। समय बड़ा बुरा आरहा है इसमें जो न हो सो थोड़ा है।

गोवधसे उत्पीड़ित
मीरकवि देवरी (सागर)

विद्या की प्रशंसा।

सवैया.

नहिंचाह इती अब या जगमें,
खल लम्पट और लबारन की है।
ना व्यसनीनकी ना तृषनीनकी,
ना मृषा भाषी गमारन की है॥
ना ऋणमारन ना व्रतधारन,
ना सठ चोर जुवारन की है।
जिसकी कवि श्रावकजी जगमें,
गुन भूर भरे गुन धारन की है॥ १

दोहा

सम्पतिके अभिमानमें, बिन विद्या नहिं सीख।
चोरक दिनमें धन गयें, घरघर मांगत भीख॥ २
जो नर सम्पति हीन पै, भूषित बुद्धि विशाल।
श्रावक तासु प्रभावतें, सुखसों वितवत काल॥ ३
अन्न वस्त्र धन पायकें, मितप्रद भुंजत काल।
पै विद्या धनसों रहत, जावत जीव निहाल॥ ४
या विधि उत्तम जानके, क्रमशाह गहु नित ज्ञान।
स्वारथ परमारथ सकल, साधहु मित्र सुजान॥ ५

सोरठा.

जिन जन संचय कीन्ह, यह अनुपम धन श्रम सहित।
यदपि द्रव्य कुल हीन, तदपि तुच्छ तिन ढिग नृपति॥ ६

श्रावक

आरा निवासी श्रीमान् बाबू देवकुमारजीका दक्षिण पर्यटन।

श्रीगजपंथ—प्रथम चैत्र वदी १२ को आरासे चलकर जबलपूर होते हुए चैत्र सुदी १ निर्वाण क्षेत्र श्रीगजपंथाजी पहुंचे. दो दिन धर्मध्यानमें विताये. तीर्थक्षेत्रके वही खाते और हिसाबकी जाच की, कागजात सही पाये गये। प्रबंध सराहनीय है।

बम्बई—प्रथम चैत्र सुदी ३–अनेक प्रस्तावोंके साथ एक सरस्वती भवन खोलनेकी बात चलाई १०००) रु. इकमुश्त तथा ४ वर्ष तक २९०) वार्षिक सहयता देनेका प्रण किया और सभाकी ओरसे इस विषयकी प्रेरणा करनेके लिये बाबू शीतल प्रसादजी मंत्री ठहराये गये और श्रीमान सेठ माणिकचन्द पानाचन्दजी, जे. पी., वा श्रीमान सेठ हुक्मचन्दजी इन्दौरकी दस्तखती चिट्ठिया देनेके लिये सूचना कीगई जिसकी रिपोर्ट जैनमित्रमें छप चुकी है।

पालीताना—प्र. चैत्र सु. ९–बड़ौदाके जिन मन्दिरोंकी वन्दना करते हुए २३ मार्चको पालीताना पहुचे वहांके मुनीम धर्मचन्दजी बहुत योग्य लौकिक और धार्मिक विद्यामें चतुर हैं धर्म रुचिमें यथानाम तथा गुणको सार्थक करते है। तीर्थ क्षेत्रोंमें जितने मुनीम वर्तमानमें देखे गये है उनमें आप १ ही हैं। ३४) जीवदया आदि खातोंमें दिये; मुनीम धरमचंदजीने भी साथमें दक्षिण यात्राकरना स्वीकार किया।

जूनागढ़—प्रथम चैत्र सुदी ९–परमानन्द पूर्वक श्री गिरनारजीका दर्शन पूजन किया। भंडार और जीवदयादि खातोंमें ३२) दिये। धर्मशालाके मुनीमोंसे वही खातेके विषयमें पूछा तो उत्तर

मिला कि, तीर्थक्षेत्रकमेटीकी ओरसे किसी भी पुरुषके आनेपर हिसाब दिखा दिया जावेगा। आशा है कि तीर्थक्षेत्र कमेटीके मंत्री महोदय किसी योग्य व्यक्तिको भेजकर जांच करा लेंगें। वहाके मुनीम सा० ने ६ माहका हिसाब बाबू सा० के समीप भेजनेका वचन दिया है, आशा है कि निवाहना होगी।

अंकलेश्वर—द्वि. चै. व. ४-मार्गमे धर्मचंदजी निज वचनानुसार मिल गये थे। यहांके भाई धर्मके बड़े रुचिया हैं। कन्याशालाका अवलोकन किया। श्रीमती ललिताबाईजी १२ कन्याएं पढाती हैं। थोडी संस्कृत और रत्नकरंडश्रावकाचारकी शिक्षा दी जाती है। परीक्षा ली। पाठिका और बालिकाओंका परिश्रम प्रतीत होता है। उन्हें योग्यतानुसार पुरस्कार दिया। भाई धर्मचंदजीने पाठशालाके हेतु अपना १ मकान पाठशालाके लिये अर्पण कर दिया है। यहासे छै मीलकी दूरी पर सजौद नामक ग्राममें श्रीशीतलनाथजीकी वन्दनाकर जन्म सार्थक किया।

शोलापुर—दि. चैत्र वदी ८—श्रीमती विदुषी ललिता बाई भी अंकलेश्वरसे साथ होगई थीं। बम्बई और पूना होते हुए शोलापुर पहुचे। चतुर्विधि दान शालाका निरीक्षण किया और संस्कृत शालाकी परीक्षा ली। यथाउचित पुरुस्कार वितरण किया। श्रीमान शेठ हीराचद नेमचदजीका इसकी उन्नतिकी ओर विशेष लक्ष्य है। शिक्षक और विद्यार्थीयोंका श्रम प्रशंसनीय है। सभा हुई. बाबू साहिब और अन्य २ पुरुषोंने सरस्वती भडार सरक्षण और धार्मिक विषयोपर वक्तृतादी। स्त्री सभामें श्रीमती ललिताबाई तथा सेठ हीराचंद नेमचंदजीकी सुपुत्री कंकूबाई और बाबू देवकुमारजीकी कनिष्टभ्रातृपत्नी चदाबाई ने अति मनोहर व्याख्यान दिये.

बेंगलूर—द्वि. चैत्र वदी १३—रायचूर होते हुए बेंगलूर आये। यहांके सब स्त्री पुरुष स्नेहपूर्वक मिले, दो दिन धर्म चरचा होती रही. पढी हुई स्त्रियोंने परीक्षा दी। पाठशाला खोलनेका प्रस्ताव स्वीकार हुआ जिसके परिचालनार्थ ९) मासिकपर एक जैन ब्राह्मण नियत किया। बाबू देवकुमारजीने ११ मासके लिये ९) मासिक और धरमचंदजीने १ माहके लिये ९) देकर एक वर्षका प्रबध कर दिया

हैसूर—द्वि. चैत्र वदी ३०—यहा २९, ३० घर जैन ब्राह्मणोंके भी हैं जो उपाध्याय कहाते हैं। वे अपनेको भरतजीके बनाये हुए ब्राह्मणोंके वंशज बतलाते हैं। वे अन्य ब्राह्मणों और जैनी भाइयोंसे विरोध और अरुचि रखते हैं. इसलिये बाबू सा० ने पंडित ज्ञानेश्वरजीसे जैनी भाइयोंसे मेल रखनेके विषयमें प्रार्थना की और अब परस्पर मेल होनेकी आशा है। साहु वर्धमानैयाजी ७ विद्यार्थियोंको, और साहु अनन्तजैयाजी ३ विद्यार्थियोंको भोजनादि सहायता देते हैं वे विद्यार्थी इंग्लिश भाषाका अभ्यास करते है। आप दोनो सज्जनोंने एक बोर्डिंग खोलनेका विचार किया है जो शीघ्रही खुलेगा। सभाएं दो हुईं। पहिली सभामें २ विद्यार्थियोंने अंग्रेजीमें व्याख्यान दिया। जिसपर प्रसन्न होकर बाबू सा० ने उचित पुरुस्कार और उत्तम २ पुस्तकें दीं तथा शास्त्राभ्यास करनेका उपदेश किया दूसरी सभामें जैन धर्मके माहात्म्य और प्राचीनत्वपर मैं (नेमीसागर ब्रह्मचारी) ने व्याख्यान दिये.

श्रवणबेलगुल—द्वि. चैत्र सुदी ९—दूर २ के प्रतिष्ठित और धर्मात्मा सज्जन रथयात्राके सुभौसरमें उपस्थित हुए थे। जिन २ के द्वार परसे श्रीजीकी सवारी पधारती थी सब लोग (स्वमती परमती) अपने २ घरको तोरणादिसे सुसज्जित करते तथा हाथमें मगल आरती और भेंटलेकर श्रीजीकी आरती उतारते थे. यहा भी ३९ घर उपाध्याय (जैन ब्राह्मणों) के हैं। दो वर्षसे सभा होती है। सस्कृत शाला भी है जिसको मैसूर सरकारकी ओरसे ३०) मासिक सहायता मिलती है। प्रथम सभा संस्कृत विद्यार्थियोंकी बाबू देवकुमारजीके सभापतित्वमें हुई. जैनी अजैनी ४०० के लगभग उपस्थित थे विद्यार्थियोंने संस्कृत और करनाटकी भाषामें अच्छा भाषण किया दूसरी सभा श्रीमान भट्टारक चारुकीर्तिस्वामीजीके सभापतित्वमें हुई आपने सप्ततत्वपर गभीर ध्वनिसे उत्तम व्याख्यान दिया पश्चात् बाबूसाहिब और दौर्बलिशास्त्रीजीने धर्मपर वक्तृता दी। बालविवाह रोकने और उपाध्याय लोगोंको पढानेके लिये प्रस्ताव पास किया गया, गोमठ स्वामीके पहाडपर विधर्मी लोग द्वेषभावसे अविनय और मूर्ति खंडन करते हैं. उन दुष्टोंका खोज और शासन करानेके लिये गवर्नमेंटको अर्जी देनेका विचार हुआ। पहरे और फाटकका बन्दोबस्त किया गया। वहां मुसलमान लोग मांसकी दूकाने रखते थे वे भी बन्द किये गये। जोड़े पहिनकर पहाड पर जानेकी मनाहीकी गई। तीसरी सभामें बाबू सा० ने पूर्व सभामें वक्तृता देनेवाले विद्यार्थीयोंको ३२॥।) नगद और उपयोगी पुस्तकें उपहाररूपमें वितरण कीं। १००) देकर उस सभाके लाइफ मेम्बर हुए तथा गोमठ स्वामीके पादाभिषेकके हेतु १०८ कलश बनानेके लिये १९०) प्रदान किये। एक स्त्री सभा भी हुई जिसमें श्रीमती ललिता बाई, वा चदा बाई और यशस्वीअम्मा (दौर्बलि शास्त्रीजीकी भगिनी)ने धर्मका स्वरूप, कन्या पाठशाला और स्त्रीसभा पर ललित व्याख्यान दिये। जिसके प्रभावसे स्त्रीसभा स्थापितकी गई और २२९) चन्दाकरके एक कन्या शाला खोली गई उपाध्याय लोगोंको स्कालरशिप देनेके लिये बाबू साहिबने १२०), वर्धमानैयाजीने १००), चारुकीर्तिस्वामीजीने ५०) और अनन्तराजैयाजीने ५०) वार्षिक देना स्वीकार किया. बाबू सा० ने उपाध्याय लेगोंको भोजन कराये और उचित दक्षिणा भी दी। फिर १ मासिक पत्र निकालनेके लिये २००) देना स्वीकार किया इसकी पूर्ण सहायता करनेका प्रण वर्धमानैयाजी और अनन्त राजैयाजीने भी किया है। इसी अवसर पर बाबू सा० ने स्वामीचारुकीर्तिभट्टारकजीके द्वारा अपने स्वर्गवासी लघुभ्राता बाबूधर्मकुमारजीकी धर्मपत्नी चन्दाबाईजीको (जिनका जन्म वैष्णव सप्रदायमें हुआ है) प्रायश्चित पूर्वक मत्र संस्कार कराया।

धर्मस्थल—यहाके मालिक चंदैयाहिंगडेजीसे मूलबद्रीजीकी सभामें आनेके लिये प्रार्थना की।

वेनूर—बाहूबलि स्वामीजीके दर्शन हुए.

अपूर्ण.

नेमीसागर

मनो विनोद।

(१)

राजा भोज को निरन्तर अपरिमित द्रव्य दान करते हुए देखकर उनके प्रधान मंत्रीको बडी भारी चिन्ता हुई कि, इस तरहसे राज्यकोप कैसे स्थिर रहेगा। इस लिये उसने इस विषयमें राजा को सचेत करनेका विचार किया, परन्तु सन्मुख कहने के लिये साहस न हुआ तब एक दिन राजाके शयनागारकी एक भीतपर उसने यह वाक्य लिख दिया;

'आपदर्थे धनं रक्षेत्'

अर्थात् 'आपत्ति कालके लिये धनकी रक्षा करना चाहिये।' रात्रि कालमें भोज ने इसे पढा और उसके आगे एक दूसरा चरण लिख दिया,

'श्रीमतामापदः कुतः'

अर्थात् 'श्रीमानों को आपत्ति क्यों होने लगी ?' दूसरे दिन मन्त्रीने उसे देखकर फिर एक चरण लिखा;—

'साचेदपगता लक्ष्मीः'

अर्थात् 'यदि वह लक्ष्मी चली जावे तो ?' इस के उत्तरमें राजाने चौथा चरण लिखकर श्लोक को पूरा कर दिया कि,

'संचितार्थो विनश्यति'

अर्थात्—'तो एकट्ठा किया हुआ भी नष्ट होजावेगा।' इसे पढ़कर सहृदय मंत्रीने राजाके पैरोंपर गिरकर क्षमा मांगी और अपनी भूल स्वीकार की।

(२)

एक मारवाडीकी किसी कविसे मित्रता थी। आप चाहते थे, मैं भी कविता करना सीख लू, इसके लिये कविसे आग्रह किया करते थे। कविभी उन्हें थोडा बहुत बतला दिया करते थे। एक वार गगा स्नानसे लौटते हुए वे एक तुकबन्दी कर लाये, 'बहती हैं श्रीगंग, एजु बहती हैं श्रीगंग' और कविसे बोले, इस की दूसरी तुक आप बना दीजिये। तब कविने मुसकुरा कहा, हा! लो, **ओनामासी धंग, एजू ओनामासी धंग।** सुनकर मारवाडी लज्जित हो गया।

प्रश्न

(१) अक्षतोंको केसरसे रगकर पुष्प मानना कौनसे आचार्यकी आज्ञा किस ग्रंथके आधार पर है ?

(२) खोपरेकी चिटककी नैवेद्य तथा उसी चिटकको रंगकर दीपक मानकर पूजामें चढ़ाना कौनसे ग्रंथके आधार पर है ?

(३) हरे पुष्प फल पूजनके समय अर्घमें चढ़ाना चाहिये या नहीं ?

(४) पूजाके समय घृतका दीपक या शुद्ध देशी कपूर काममें लाना चाहिये या नहीं ?

उत्तराभिलाषी
नेमीचन्द्र सेठी,
ठि. विनोदी राम बालचन्द।
आगरकेम्प (मालवा.)

जयबोलो !

श्री सर्वांगपवित्र जैनसर्वस्व निर्वाणक्षेत्र सम्मेदशिखरजीकी जय !

धर्मालु दयालु जैनबन्धुगण !

सावधान! सावधान! आपने श्रीशिखरजीपर बंगले बनानेके विचारको श्रवण किया होगा जिससे आपका सदय हृदय शोकग्रसित व्यथित क्षोभित और नितान्त पीडित हुवा होगा, गौराङ्गोके अविचारितरम्य विचारको देख आपके नेत्र अरुण हो पानीसे डबडबा आये होंगे, बाहुयुगल स्फुरायमान होने लगी होंगी और शरीर नखसे सिखतक रोमाचित वा कण्टकित हो चिन्तासागरमें निमज्जित हो रहा होगा। वास्तवमें धर्मात्माओंको धर्मायतनके अपवित्र होनेके तुल्य अन्य क्या सन्तापका कारण हो सक्ता है परन्तु "विपति धैर्यम्" ही सत्पुरुषोंका सहज आभूषण है चित्तको ढाढस दे प्रयत्न शील बन उद्योगक्षेत्रमें पदार्पण करना यही जैनमात्रका असामान्य कर्तव्य है।

गत पत्रोंमें अनेक वार कर्तव्यकी सूचना कर दी गई है पुनः उल्लेख करना पिष्टपेषण मात्र है, इतना ही कह देना अलम् होगा कि मौनावलम्बन करनेका समय नहीं है अब छोटे—बड़े लाट साहिबोंको अपनी पुकार सुनाना चाहिये, स्थान २ से तार अर्जिया जाना चाहिये, वे समझते हैं जैनी लोग टोंक मात्र ही पूजते हैं परन्तु अपनेको अच्छी तरह सिद्ध कर देना अभीष्ट है कि सम्पूर्ण पर्वत हमें मंदिरके समान पूज्य हैं. जब राजाके इकरार नामे और हाईकोर्टका जजमेंट से स्पष्ट ही है कि जैनधर्मको विघ्नकारक कोई कार्य पर्वतपर नहीं होगा और जैनी चाहे जहा मदिरादि बनासकेंगे तो फिर इससे बलिष्ट क्या प्रमाण आवश्यक है ? पूर्ण आशा है कि परधर्ममें हस्तक्षेप न करनेका बाना रखनेवाली सरकार हमारी अर्जपर अवश्य ध्यान देगी.

शिखरजी जैनसम्प्रदायको प्राणसे अधिक हैं इसके माहात्म्यको आचार्योंने ग्रन्थोंमें सविस्तर वर्णन किया है जब "कालायसं हि कल्याणं कल्पते रस योगतः" अर्थात् लोहा रसायनके योगसे सुवर्ण हो जाता है तो धर्मचक्रप्रवर्तक तीर्थंकरोंके योगसे यह परमपूज्य धर्मस्थान हो जावे इसमें क्या आश्चर्य है ? इतना ही नहीं यहां अनेक अतिशय सदासे होते चले आये हैं. कई जन्मान्धोंने यहाकी रज आंज कर अपने नेत्रोंकी ज्योतिको सम्प्राप्त की है यहांकी भूमिके प्रभावसे छोटे २ बालक जो दस पैंड भी चलनेमें सँकुचाते हैं वे भी यहाकी वन्दना करते हुए कई मील पैदल प्रफुल्लित वदन चलते हैं, पर्वतपर रात्रिको अनहद दुंदुभिध्वनि होती है और देवदेवाङ्गना सान्द्रभक्तिभार से नम्रीभूत हो सागीत गीत गाते नृत्य करते हैं, किंबहुना इस दिव्यशैलकी शुद्धभावसे वंदना करनेसे नरकपशुगतिकी आयु नहीं बंधती है, इसकी महिमा अचिन्त्य है, तीनलोकमें सबसे पूज्य भूमि यही है, यहांतक कि प्रलय होने पर भी इसके स्थानका चिन्ह बना रहता है, ऐसे सुरनरखगविद्याधर वंदित पर्वतको अपवित्र करनेके वचन मात्रही सुनकर १४ लाख जैनियोंका चित्त डगमगा गया है क्या सरकार थोडे अंगरेजोंके आरामके लिये लाखों जैनियोंको दुःखित करना योग्य समझती है ? यह तो वही बात हुई; कि एक दिन कई गौराङ्गोंके कौतुकी लड़के पत्थरोंसे तालावके मेंडकोंकी शिकार कररहेथे, इतनेमें ही कोई दयालु युवक बोलउठा आप क्या करते हैं ? आपका तो खेल है परन्तु बिचारे मण्डूकोंकी जान जाती है। यही दशा जैनियोंकी हो रही है, आशा है कि गवर्नमेंट शांतशील राजभक्त प्रजाके धर्मस्थान पर बंगले कदापि नहीं बनावेगी, अन्यत्र स्थान खोज लेना सुकर साध्य है।

धर्मात्मा सत्पुरुषो! जागो! सचेत होजावो! असावधानीसे सर्वस्व हरण हो जावेगा पश्चात् घरमें अग्नि लगने पर कूप खोदनेके तुल्य सब यत्न निष्फल होगा। देखते २ जैनियोंका महान्तीर्थ अपवित्र हो जावे यह जैनियोंको बडी लज्जाकी बात है, जब धर्मस्थानकी रक्षा न होसकी तो धर्मकी सत्ता उठ गई ऐसा समझा जायगा देखिये सीताजीने वनमें छोडे जानेपर रामचद्रजीको कहला भेजा था कि मुझे छोडी वैसा अपना धर्म मत छोड देना, निकलंकदेवस्वामीने धर्मरक्षणार्थ अपने प्राण तक अर्पण कर दिये थे तो क्या अब उनकी अनुयायी सम्प्रदाय उसी प्रकार अपने धर्मक्षेत्रकी रक्षा करनेसे वंचित रहेगी ? नहीं ऐसी संभावना नहीं है, यदि जैनियोंमें जैनत्व होगा तो अवश्य अपने तन मन धनादिक अर्पण करके इस महान् पूज्यशैलकी रक्षाकी जायगी. क्यों साहेब आप पूजन समय स्थापनामें चढ़ाये हुए पुष्पोंको विसर्जन होनेके पश्चात आशिकारूपसे मस्तक पर क्यों चढ़ाते हैं बस!! इसका यही उत्तर है कि हमारे अभिमत पंचपरमेष्ठी इन्हीं पर आकर विराजे थे, उन्हींके

संस्पर्शसे यह पूज्यभावको प्राप्त हुए हैं, उसी प्रकार तीर्थंकरादिकोंके योगसे यह शैलेश भी पूज्य होनेसे क्या हमारे उसी प्रकार मान्य नहीं है, अवश्य है।

अब इस निर्वाणक्षेत्रके बचावके उपायकी ओर लक्ष देना चाहिये—अनेक साधन संघटित होनेपर भी द्रव्य विना सब निर्बल होते हैं आज कल—"द्रव्यं सर्वार्थसाधनम्" न्यायोक्तिके अनुसार सर्व कार्य द्रव्यसे संसिद्ध होते हैं—इसका प्रथमही प्रबन्ध हो जाना चाहिये। देखा जायतो दिगम्बरी भाइयोंको तीन चार लाख कोई बड़ी बात नहीं है, इस धर्मके महान कार्यमें धनिकवरोंको दिलोजानसे दिलखोलकर लक्षों भेट करना चाहिये। देखिये एक श्वेताम्बरीने टोकोंके चहुंओर परकोटा बनावादेनेके लिये सवालाख रुपया देना स्वीकार किया है, क्या दिगम्बरी धनाढ्य द्रव्यसहायतामें इनका अनुकरण नहीं करेंगे? किसी महत् कविन लक्ष्मीको मेघकी उपमा देकर अन्योक्तिसे धनवानोंको शिक्षा दी है वह इस प्रकार है—

> वितर वारिद वारिदवातुरे
> चिरपिपासित चातकपोतके।
> प्रचलिते मरुते क्षण मन्यथा
> क च भवान् क पयः क्व च चातक॥

अर्थात्—हे मेघ! चिरकालसे प्यासे चातकके बच्चेके लिये पानी प्रदान कर, नहीं तो क्षणमात्रमें पवन चलेगी तब तू तो कहीं जायगा, तेरा पानी कहीं उड़जायगा और चातक कहीं (प्यासाका प्यासाही) रह जायगा, भावार्थ—धनाढ्यो! आवश्यक कार्यके लिये द्रव्य अर्पणकरो, अन्यथा जो कुछ लक्ष्मी पुण्ययोगसे मिली है वह पापके उदय होते ही विलाजायगी, तुह्मारे पास भी कुछ नहीं रहेगा और कार्य भी अधूरा पडारहजायगा. साराश—लक्ष्मी बिजली, इन्द्रधनुष जलबुद्बुदवत् चंचल है, इसको सदुपयोगमें लगादेना यही उभयलोकमें सुखका कारण है, आशा है कि श्रीमन्तगण मेरी प्रार्थनापर लक्ष्य देंगे इत्यलम् परिपल्लवितेपु।

धर्मसेवक—

हीराबाग, बम्बई. ता. २४-६-०७ — बुधमल पाटणी, सिवनीछपारा निवासी.

उपदेशक दीपचंदजीका भ्रमण।

सोनारी—शोलापुर ७, जून ०७—सभाएं दो हुईं, उपस्थित नरनारी प्रथमदिन २० और दूसरे दिन ३० थे, दशलाक्षणधर्मपर व्याख्यान दिया भाइयोंने शास्त्रसभा करना निश्चित किया है, गांधी पदमसी अमीचन्दजीने सभासद होना स्वीकार किया।

केम—१२-६-०७ श्री सेठ रामचन्दजी चतुरके सभापतित्वमें पुरुषार्थपर व्याख्यान हुआ। ३ महाशयोंने शास्त्रस्वध्याय, ६ ने शास्त्रश्रवण, और एकने जिनदर्शनकी प्रतिज्ञा ली।

अक्कलकोट—१७-६-०७ ई. ७९ नरनारी सभामें उपस्थित थे जिनमंदिर १ है विद्याके विषयमें व्याख्यान दिया, श्रीमान सेठ जीवराजजी और श्रीयुत हीराचंद बापूजीने नियुक्त विषयका मधुर ध्वनिके साथ पुष्टीकरण किया. उपस्थित जनोंने सहर्ष अनुमोदन किया।

मेदरंगी—(कुर्डवाड़) जिन मदिर १ ग्रह संख्या ११ है अनुमान ४० स्त्रीपुरुष सभामें उपस्थित थे. नित्य शास्त्रसभा होती है. अनेक भाई नियमसे स्वाध्याय करते हैं धर्मपर मैने (दीपचन्द उपदेशकने) और यहांके मुखियाभाई बालचंद रामचंदजीने भाषण किया, ६ महाशयोने और भी शास्त्र स्वाध्याय करनेका प्रण किया।

प्राप्तिस्वीकार।

(गताङ्कसे आगे)

श्रीसम्मेदशिखरजी महान् पवित्र तीर्थराजपर अपवित्रताके कारण युरोपियन आदिकोंके बंगले न बनने पावें इसके प्रयत्नके लिये जिन २ स्थानोंके धर्मालु सज्जनोंने द्रव्यसे सहायता प्रदान की है उन्हें कोटिशः धन्यवाद है।

ता. ९ जूनसे २२ जून ०७ पर्यन्त—

७७१।-) ता. ४ जून तक, बिगत गत अंकोंमे मुद्रित है।

७१)	समस्त पंचान	गढाकोटा (जि. सागर)	
२९)	,,	,,	दुर्ग
११)	,,	,,	मनोहर थाना
१६६)	,,	,,	निंबगांव केतकी
८७)	,,	,,	फलटण
३०)	खेरीज	निंबगांव आदि	
१२२॥)	समस्त पंचान	हरदा	
३७०)	,,	,,	बारामती
१११)	,,	,,	मलकापुर (बरार)
१००)	,,	,,	गया

१८९४॥।-)

माणिकचंद पानाचंद जे. पी.

वायसरायको टेलीग्राम।

विदित हो कि ता. १८ जून को हीराबागमें एक सभा हुई जिसमें शिखरजी विषयक अनेक प्रस्ताव पेश किये गये निदान सर्व सम्मति अनुसार महामंत्री भारतवर्षीय दिगम्बरजैनतीर्थक्षेत्रकमैटीकी ओरसे वायसरायको निम्नलिखित तार भेजा गया—

"Committee strongly protests against granting leases to Europeans etc for erecting bangulowes on Parasnath Hill or its vicinity which is Jains Jeruselum. The Hill being most sacred flesh eating, drinking, hunting etc can not be allowed there If leases granted unbounded dissatisfaction will prevail among Jains His Honour Lilut Governor may kindly be directed to drop the proposal entirely, for which kindness Jains will ever remain grateful to his Excellency, Committee solicits early intimation"

अर्थात्—"कमैटी इस बातको दृढतासे निषेध करती है कि युरोपियन आदिकों श्री पारसनाथ पर्वतपर वा आजू बाजूमें जो जैनियोंका जेरूसलम है बंगले बनानेके लिये पट्टेसे जगह न दी जावे. पर्वत परम पूज्य है इस कारण वहां मांस भक्षण, मदिरापान शिकार आदि नहीं हो सक्ती है. यदि पट्टे दिये जावेंगे तो अप्रमाण असन्तोष जैन सम्प्रदायमें फैल जायगा अतएव आप कृपा करके मान्यवर लेफ्टनेंटगवर्नर साहबको ताकीद कर देवेंगे जिससे कि वे इस विचारको सर्वथा हटा देवें इस अनुग्रहसे जैनी चिरकालतक आपके आभारी बने रहेंगे, कमैटी इस विषयक शीघ्र सूचना मिलनेकी प्रार्थना करती है"

विविधि समाचार।

पंडित पन्नालालजी बाकलीवालका जैन ग्रंथरत्नाकर कार्यालय हीराबाग (बम्बई) में है आपकी भातृकन्या हीराबागके धर्मशालामें खेल रहीथी.

वह अचानक गायब हो गई चहुंओरसे दौड़ धूप होने लगी पर थोड़ी देरमें लड़की घरपर आगई पूछनेपर कहने लगी कि, एक मनुष्य मुझे कांधे पर टांग लेगाया था और मुंह बंदकर दिया था. कि मैं इच्छा रखते हुए भी चिल्ला नहीं सक्तीथी दूसरे मोईवाड़ेमें पहुंचनेपर उस दुष्टका कंधा थक गया होगा इसलिये जब एक कंधेसे दूसरे कंधेपर रखने लगा तब मेरा मुंह खुल गया और मैं चिल्लाई. एक मारवाड़ी भाईने मेरी आवाज सुनकर उस मनुष्यको डांट लगाई तो वह मुझे छोड़कर भाग गया। मारवाड़ीने कृपाकर उस कन्याको घर तक पहुंचवा दिया था कन्याकी अवस्था ८ वर्षके लगभग होगी शरीरपर भूषण वसन भी अधिक नहीं थे.

श्रुत पंचमी—पंडित पन्नालालजी द्वारा लिखित (जैनमित्रमें मुद्रित) लेखका अच्छा असर हुआ है बम्बई, इलाहाबाद, बेलगांव, अंजनगांव, बनारस आगरा आदि स्थानोंके भाइयोंने श्रुतपचमीके उत्साह मानेनेके सम्बधमें पत्र भेजे हैं जिन्हें हम स्थानाभावसे मुद्रित नहीं कर सके परन्तु उन सज्जनोंसे प्रार्थना करते हैं कि इसी प्रकार प्रतिवर्ष जिन वाणीकी सेवा करते रहेंगे और जिन स्थानोंके भाइयोंने यह महतपर्व नहीं मनाया हो उन्हें भविष्यके लिये चेताते हैं—और बनारस निवासी बाबू छेदीलालजीको धन्यावाद देते हैं जिन्होंने जिनवाणीके जीर्णोद्धारके हेतु ५०) निजकोषसे प्रदान किया आगरेके भाई वेस्टनादि उपकरण प्रदानकर धन्यवादके पात्र हुए हैं—

बम्बईमें स्त्रीसभा—इसकी जन्मदात्री आरानिवासी श्रीमान बाबू देवकुमारजीकी धर्मधुरंधरा पत्नी जी गुलाबदेई हैं. आपका शुभागमन ही इस धर्मवर्धक सभाके जन्मका कारण है उक्त श्रीमती और श्रीमती मगनबाईजीके उद्योगसे २० जूनके २ बजे दिनको दूसरे मोईवाड़ेमें एक स्त्रीसभा हुई उपस्थित संख्या ३० के लगभग थी अध्यक्षाका स्थान सुसभ्यता दर्शाते हुए श्रीमती गुलाबदेईने ही स्वीकार किया तथा आपही ने श्रीमुखसे मंगलाचरण उच्चरित किया, पश्चात पंडित पन्नालालजी बाकलीवालकी भ्रातृपुत्री श्रीमती गुलाबीबाईने स्त्रीशिक्षाका निबंध बहुत उत्तम रीतिसे पढ़ा कविता बांचनेकी रीति मनमोहक और प्रशंसनीय थी, इसके अनन्तर बाबू साहिबकी कनिष्टभ्रातृपत्नी चंदाबाईने धर्म विषयपर सुललित ध्वनिके साथ वक्तृतादी और अपनी दक्षिण यात्राकी सार गर्भित बातें विदित कीं आपकी भाषण शैली परम प्रशंसनीय है तदनन्तर श्रीमान छगनमलजी बाकलीवालकी भार्याने धर्म शिक्षणका विवेचन किया अन्तमें श्रीमान श्रेष्ठिवर्य माणिकचन्द पानाचन्दजी जे. पी. की सुपुत्री श्रीमती विदुषी मगन बाईने उपस्थित स्त्रियोंका आभार मानते और व्याख्याता महिलाओंको धन्यवाद देते हुए धर्म शिक्षा और गृहस्थीधर्मपर प्रभावशाली व्याख्यान दिया। और श्रीमती गुलाबीबाई और छगनमलजी की पत्नीने स्त्री शिक्षाकी उत्तम २ पुस्तकें उपस्थित स्त्रियोंको वितरण कर अनन्त धन्यवाद और सुयश प्राप्त किया है.। हर्ष है कि प्रतिमास ऐसी सभा करनेका निश्चय किया गया है आशा है कि हमारी जाति हितैषिणी श्रीमती मगनबाईजी श्रीमती गुलाबदेईके लगाये हुए इस शुभाङ्कुरको सदा सिंचन करती रहेंगीं।

शोकदायक मृत्यु—हमें यह लिखते अत्यन्त दुःख होता है कि जयपुर निवासी वैद्यवर बच्चूलालजी इस दुःखमयी धराधामको छोडकर परलोकवासी हुए उनके २ पुत्र ३ बालिका और भार्याके लियेही नहीं सम्पूर्ण जयपुर निवासियोंको ज्येष्ठ शुक्ला चतुर्थीका दिन अति दुखदाई हुआ। साधुस्वभावी और वैद्यक विद्यामें निपुण होनेके कारण जयपुर नरेशका आपपर विशेष स्नेह था आप प्रजाके भी पूर्ण प्रेमभाजन थे बीमारीके समय महाराजने किसीभी प्रकारके उपायमें त्रुटु नहीं कीं परंतु मृत्युके आगे किसीका वश नहीं चलता अब उनकी विधवा स्त्री और अनाथ सन्तानकी लाज महाराजहीके हाथ है।

शिखरजी सम्बन्धी कार्यवाही

बम्बई के दिगम्बर जैनियोंकी ओर से स्टेट सक्रेटरी, छोटे वा बड़े लाट साहेबको—ता० १४ जून को अर्जी भेजी गई थी, ता० २४ मई तक निम्न लिखित स्थानोंसे भी अर्जी भेजी गई हैं:—सतना, खलवा, बेलगांव, बर्धा, बीना इटावा, सूरत, मैहर. शोक है कि मैहर तथा सूरतसे हमारी अर्जी की ही नकल भेज दी गई है।

खुरजा में सभा—ता० २८ जून को एकत्रित होगी, श्रीमन्त, वकील, बारिस्टर सभी पधारेंगे. वाइसराय के पास डेप्युटेशन जाने की तजवीज की जायगी तथा भारत वर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमैटी का अधिवेशन भी होगा आशा है इस सम्मेलनमें तीर्थ रक्षा का यथेष्ट प्रबन्ध किया जायगा और शिखरजी का भावी अनर्थ वारण किया जायगा।

नवीन जैन बोर्डिंग हाउस—गिरगांव ट्राम्बे टर्मिनसके पास शेठ गोकुलभाई मूलचन्दकी ओरसे "दि गोकुल भाई मूलचन्द जैन बोर्डिंग हाउस" पहली जूनसे खुल गया। शेठ गोकुल भाई श्वेताम्बर सम्प्रदायके उपासक हैं।

कोट पाटलूनका कायदा—धागंधाके ठाकुर साहबने प्रस्ताव किया है कि, "हमारे राज्यके सम्पूर्ण कर्मचारी बिना कोट पाटलून पहने आफिसोंमें काम करनेको नहीं आसकेंगे।" प्रस्तावमें एक त्रुटि रह गई है उसे भी यदि ठाकुर साहब पूर्ण कर देते तो अच्छा होता। वह यह कि "कर्मचारियोंकी औरतें बिना गौन बूट पहने बाहर न निकल सकेंगी।"

विलायती सभ्यताकी धींगामस्ती—ता० ४ मईसे लंदनमें पार्लीमेंटका एक खास चुनाव हुआ था, उसमें दो साहबोंके बीच वोट (मत) एकत्र करनेके लिये खूब लठालठी हुई। एक साहब की मेम साहबाने अपने पतिके लिये एक सभा की थी, उसमें दूसरे साहबके पक्षवालोंने आकर 'हा हा' 'ही ही' मचाते हुए तालियां तथा सीटी बजाना और पैर पटकना शुरू किया। अनेक सभ्य बहुत से चूहे साथ लाये थे,। ज्यों ही उन्होंने उन्हें छोड़ा कि, स्त्रियां घबड़ाहटसे भागने लगीं। एक साहबने एक मिस साहब को निशाना बनाकर एक अंडा मारा कि, बेचारी के गुलाबी गाल पर निशान बन गया। इस तरह की सभ्य धींगामस्तीसे आखिर वह सभा छितर बितर हो गई। धन्य री सभ्यता!

उपदेशक चाहिये।

हमें हिन्दी या मराठी या गुजराती अच्छी तरह जाननेवाले ऐसे उपदेशकोंकी आवश्यका है जो जैनधर्मके तत्वोंको जानते हैं। यदि थोड़ी बहुत संस्कृत भी जानते हों तो उत्तम हो। वेतन २० से ३०) तक मिल सकेगा.

ठाकोरदास भगवानदास जौहरी
मंत्री उपदेशक भंडार दि० जै० प्रा० सभा।
बम्बई।

शिक्षक चाहिये।

ईडर जैन पाठशाला के लिये एक जैनी पंडितकी आवश्यकता है, जो संस्कृत भाषा और जैन धर्मके तत्वोंका जानकार हो। मासिक वेतन २०) से २५) तक दिया जासक्ता है. दरख्वास्त नीचे लिखे पते पर आना चाहिये.

लल्लूभाई लखमीचन्द चौकसी,
मुम्बादेवी बम्बई.

शुरमा ! शुरमा !! शुरमा !!!

जैनग्रन्थ रत्नाकर कार्यालयके सिवाय हमारा एक **स्वदेशी कार्यालय** नामका विभाग है । जिसमें १० वर्ष हुए अनेक प्रकारके शुरमें बनते हैं और सब भाइयोंके नेत्रोंकी रक्षार्थ सहायता पहुचाई जाती है । हमारे यहांके बने हुएं शुरमें सर्व साधारण और जैन समाजमें प्रसिद्ध हैं जिन २ महाशयोंने हमारे यहासे एक बार एक शीशी मगाई हैं, वे आज तक हमारा ही शुरमा मगातेहैं और अपने दोस्तोंकेलिये भी मगा देते हे इसकारण हमने इसके विशेष इश्तहार न देकर जो भाई इस शुरमेसे अपरिचित हैं उनको इसके प्रत्यक्ष गुण दिखानेके लिये **सर्वप्रकारके शुरमेकी २००० शीशियें विना मूल्य** बतौर नमूनेके वितरण करनेका प्रबध किया है सो जिनको इस शुरमेसे अपने अमूल्य नेत्रोंकी रक्षा करना हो, वे नीचे लिखे शुरमोंमेंसे चाहे जिस प्रकारके शुरमेकी एक शीशी मंगा लेवें परतु डांकखर्च और पेकिंग खर्चके लिये ⅃) आनेके टिकट चिट्ठीके साथ अवश्य ही भेजने होंगे एक भाईको एक ही शीशी भेजी जायगी ।

* **काला शुर्मा न० १** यह शुमा हमेशह नेत्रोंमें लगानेसे सब रोग वा आखोंकी गर्मी नष्ट करके ज्योतिको बढाता है । मूल्य आधे तोलेकी शीशीका ॥) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

* **कालाशुर्मा नं २** इस सुरमेको प्रातःकाल और सोते समय लगानेसे नेत्रोंके सब रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं । यह शुरमा बहुत बढिया और ठडा है—इस शुरमेको भोपालपटनमके तहसीलदार साहब मूलचदजी बरबार प्राय ८ वर्षसे लगाते हैं इन्होंने अपने अनेक हितैषी उहदेदारोंको इस शुरमेके भक्त बनाये हैं उनके अनेक प्रशसा पत्र हमारे पास हैं हम उन्हें न छपाकर इतना ही कहते हैं कि १ शीसी मगाकर अवश्य ही आजमा लेवें । मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

***सफेद शुरमा नं० ४** इस सुरमेंको सबेरे तथा शामको चार बजे लगाकर ५ मिनिटके बाद न० २ का ठंडा शुरमा लगाया जावे. धुंद नजला, दृष्टिमन्दता, रतौंदा आदि नेत्रके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं । असली मधुसे (शहदसे) सलाई भिजोकर अथवा शुरमेको मधुमें मिलाकर सलाईसे लगाया जावे तो एक वर्षतकका फूला भी प्रायः कट जाता है. परतु शहद असली न होगा और उसमें खांडकी चासनी वगैरह मिली होगी तो उल्टा नुकसान करैगा. मूल्य डेढ मासेकी शीशीका १) नमूना आधा मासा ।

***नयनामृत अर्क नं० ८** इसको सलाईसे दिनरातमें तीन चार बार लगानेसे नं० १ के मुवाफिक गुण करता है । मुल्य ।) नमूना मुफत ।

* **सरल शुरमा (अर्क) नं० ९** मूल्य ॥) वृद्धों व विधवा स्त्रियोंके लिये है । तथा दुखती आईहुई आंखोंके लिये तो यह रामबाण है तीन चार दिन तक दिनरातमें ४ बार लगानेसे दुखती आई हुई आंखोंको आराम कर देता है । एक २ सीसी सब गृहस्थोंको अपने घरमें रखना चाहिये, जो महाशय, दुखती आंखोंवालोंको मुफत बांटना चाहें उन्हे हम इसे बहुत किफायतासे भेज सकते हैं।

पवित्र स्वदेशी कशमीरी केशर ।

सूरज छाप वगेरह विलायती केशरमें शराब वगेरह अशुद्ध पदार्थोंका मेल होता है यह बात अब जगत्प्रसिद्ध हो गई है इसकारण मुम्बईके स्वेताम्बरी भाइयोंने पंचायती करकें स्वदेशी पवित्र कशमीरी केशरकेलिये एक दुकान खोल दी है, और काशमीरमें खास जैनीभाई भेजकर गाव २ के किसानोंसे खरीदकर केशरका सग्रह करकें सर्वत्र पवित्र केशरके पहुचानेका प्रबध किया है । अनेक भाइयोंने इस केशरमे भी अशुद्ध पदार्थ मिले हुये बताये थे इसकाण भारतवर्षके जगत्प्रसिद्ध पदार्थ विज्ञानके प्रोफेसर गज्जर महाशयके कारखानेमें यह केशर भेजकर परीक्षा कराई तो उन्होंने नीचें लिखा सार्टीफिकट भेजा है ।

TECHNO CHEMICAL LABORATORY,
Director—Prof T K gajjar
M A B S E & C S
Girgaum Tram Terminus
Bombay, 9th February 1907

THE SWADESHI Co,
Mandvi Bombay.

Dear Sirs,

The Sample of Swadeshi Saffron sent by you has been found to be a pure genuine Sample of Saffron unmixed with any adulterants.

Yours faithfully,
(Sd) D D KANGA,
Anatytial Chemist

इस कारण हमको पूर्णतया विश्वास होनेपर हमने भी दिगम्बरीय जैन समाजमें इस केशरका प्रचार करनेके लिये जैनमित्रमें इस्तहार दिया है सो जिन भाइयोंको यह पवित्र केशर चाहिये (अगर हमारा विश्वास हो तो) हमसे ही मगाया करे । अन्य जगहैंसे मगायेंगे तो असली पवित्र केशर मिलना मुशकिल है । मूल्य ११) रु. तोला । पाव रतल, आधा रतल या एक रतल इकट्ठी लेनेसे ४५) रु रतल. है । रतल ३९ तोलेका होता है । यह भाव थोडेही दिन रहैगा क्योंकि माल बहुत थोडा रह गया है सो शीघ्र ही भाव बढ जायगा ।

मिलनेका पता—

पन्नालालजैन मालिक स्वदेशी कार्यालय ।
ठि० हीराबाग–पोष्ट गिरगांव (मुंबई)

स्याद्वादपताका ।

इस पत्रिकामें मासिक जैनमित्रके समान ४० पृष्ट छपा करेंगे । जिसमें स्याद्वादमतसार, तत्त्वार्थसार (जैन सिद्धांतदर्पण) समयसार नाटक तीन चार टीका सहित, प्राचीन उपन्यास, ग्रंथसमालोचन व सामयिक लेख जैनी अजैनी सबके पढनेलायक छपैंगे । जो माहाशय ६ मासतक मूल्य भेजकर ग्राहक बनेंगे उनको क्षत्रचूडामणि परसे बनाया हुआ 'जीवंधर' उपन्यास विना मूल्य भेजा जायगा ।

इसका वार्षिक मूल्य सर्व साधारणके लिये २॥) रु और धनाढ्य, रईस, जमीदारोंसे ५) रु. लिया जायगा परतु भिन्नधर्मी विद्वानोंसे कुछ नहीं लिया जायगा । जो महाशय ५०) रु एकदम सहायता देंगे उनको पत्र और भेटके पुस्तक यावज्जीव विनामूल्य भेजैंगे । पत्रिका १०० ग्राहक हो जानेपर छपैगी इसकारण शीघ्र ही भाइयोंको ग्राहक बन जाना चाहिये ।

पत्र भेजनेका पता—**गणेशप्रसाद जैन,**
ठि० स्याद्वादपाठशाला, काशी ।
पोष्ट—बनारस सिटी ।

* भक्तामरस्तोत्र ।

अन्वय, हिन्दी अर्थ भावार्थ और कविवर भाई नाथूराम प्रेमी कृत नवीन भाषा पद्यानुवाद सहित ।

इसमें रत्नकरडके समान पहिले प्रत्येक श्लोकका अन्वयानुगत पदार्थ लिखकर फिर प्रत्येकका भावार्थ लिखा है । पश्चात् हरिगीतिका और नरेन्द्र छन्दमें उसकी सुन्दर कविता बनाई गई है, जिसमें मूलका कोई भी भाग नहीं छोडा है । यहां उदाहरणार्थ आठवें श्लोकका एकही पद्य हम नकल करते है,—

जिननाथ अस जिय जानिकै, यह आपकी विरदावली । है समझ थोरी तऊ प्रारँभ, करत हों सुउतावली ॥ सो हरहिंगी मन सज्जनके, तुव प्रभावहिंसों भली । जलबिन्दु ज्यों परि कमल दलपैं, दुतिधरै मुकताफली ॥ ८ ॥

टिप्पणीमें अनेक प्रतियोंसे इकठ्ठे करके पाठान्तर और कठिन शब्दोंके अर्थ दिये हैं । श्रीमानतुग महाराजका चरित्र भी दिया गया है । अभी तक ऐसी कोई भी टीका नहीं छपी । पाठशालाओंके विद्यार्थियोंके लिये यह बडे कामकी चीज है । मूल्य मात्र ।) रक्खा है ।

तत्त्वार्थसूत्रकी बालबोधिनी भाषाटीका ।

तत्त्वार्थसूत्र हम लोगोंका परम पूज्य और मान्य ग्रन्थ है । इसे प्रत्येक जैनी पढना पढाना अपना परम धर्म समझते हैं । इसकै एकबारके पाठ मात्रसे एक उपवासका फल होता है । यह ग्रन्थ जैसा उपयोगी है और जैनधर्मके पदार्थोंका अटूट समुद्र जिस-प्रकार इसमें भरकर गागरमें सागरकी कहावत सिद्ध की गई है, उसके कहनेकी जरूरत नहीं है । इसकी प्रशसा प्रगट करनेके लिये इस ग्रथपर जो अनेक टीकायें बनाई गई हैं, वे बस हैं । परन्तु खेद है कि, अभीतक इसकी कोई ऐसी टीका छपकर प्रकाशित नहीं हुई, जो पढनेवाले विद्यार्थियोंकी समझमें सहजमें ही आ सके । अभीतक, जो टीकायें छपी हैं, वे विशेष ज्ञानियोंके समझने योग्य हैं, बालकोंके लिये जिस क्रमसे होनी चाहिये, उस क्रमसे नहीं हैं । इस अभावकी पूर्तिके लिये हमने यह भाषाटीका तयार की है । यह टीका भाइयोंमें बाचनेके लिये भी बडे कामकी है । साधारण भाई भी इससे सूत्रोंका अर्थ बांचकर समझ सकते हैं । रत्नकरंडके समान इसमें भी पद पदका अर्थ किया गया है । और विशेष बातें भावार्थ तथा टीकामें लिखी गयी है । इसको एक बार पढ लेनेसे फिर सर्वार्थसिद्धि आदि बडी टीकाओंके पढनेमें गति हो जावेगी । यह टीका विद्यार्थियोंके बडे ही कामकी है । इसे विना गुरुके पढकर विद्यार्थी बडी सुगमतासे परीक्षा दे सकता है । जहांतक बना है, प्रत्येक पदार्थके लक्षण व स्वरूप इसमें संक्षेपतासे लिखे गये हैं । मूल्य मात्र १२ आने रक्खा गया है । पाठशालाओंके प्रबधकर्त्ताओंको नमूनेके लिये इसकी एक एक प्रति जरूर मंगानी चाहिये ।

मिलनेका पता—**पन्नालाल जैन,**
मालिक—**जैन ग्रंथ रत्नाकरकार्यालय,**
पो० गिरगांव, बम्बई

'कर्नाटक' प्रेस बम्बई।

Registered No. B. 288.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जात है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा मास्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटा-ने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छ-पेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रो-त्तरके लिये जबाबी कार्ड अथवा टिकट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेमे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
दूसरा भोईवाडा पो० कालबादेवी
बम्बई।

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतज्जिनानुबन्धित्वाजैनमित्र इतीष्यते॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

वर्ष ८ वां] आषाढ शुक्ला २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द। ता० १२ जुलाई सन् १९०७ ईस्वी। [अंक १८ वां।

सुशीला उपन्यास।

कारण वशात जैनमित्रके प्रत्येक अंकके साथ हम पाठकोंको सुशीला उपन्यास भेंट नहीं कर सके है, पाठक क्षमा करें। गताङ्कके साथ सुशीलाका १ फार्म पाठकोंके पढनेमें आया ही होगा और अब वर्षान्ततक जैनमित्रके साथ सुशीलाका एक फार्म निकला करेगा.

आवश्यकीय सूचनाएं।

हमारे ग्राहक अनुग्राहक महाशय पता तबदील कराने वा अन्य सम्बंधमें पत्रादि भेजते हैं तो प्यारी हिंदीको छोड बहुधा भिन्न २ भाषाओं वा विचित्र अक्षरोंका उपयोग करते हैं; ऐसा करनेसे हमें और उन्हें दोनोंको दुख और हानि की संभावना है. जैनमित्र हिंदीका पत्र है और उसकी लिपि नागरी है। इस लिये हर प्रकारकी चिट्ठी पत्री हिंदीहीमें आना चाहिये. अन्यथा उन्हें रद्दीमें आसन लगाना पड़ैगा इसी प्रकार ग्राहक नंबर न लिख भेजनेसे कदाचित विलम्बसे अथवा बिलकुल उत्तर न मिलेगा.

जैनमित्रमें स्थानका घाटा होनेसे बाहरके आये हुए लेखोंका बहुत कम सन्मान होता था. ऐसा करनेसे हमारे लेखक और सम्वाददाता प्रायः उत्साह हीन हो गये हैं, उनसे निवेदन है कि ताजे समाचार और ललित लेख भेजनेकी कृपा किया करेंगे तो उन्हें अवश्य स्थान मिलेगा।

क्लार्क

लेखक और सम्वाद दाता महाशयोंसे भी प्रार्थना है कि कागजके एकही ओर, और हाशिया छोड़कर लेख लिखा करें अन्यथा उन्हें स्थान मिलनेमें सन्देह है

सम्पादक.

विज्ञापन।

विदित हो कि श्रीसिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूटके म-न्दिरोंका जीर्णोद्धार हो रहा है, धर्मशाला, वापिका, कोट आदिका कार्य चालू है। मेलेपर जैनी भाई एकत्रित होते हैं और इस कार्यके लिये रुपया लिख जाते हैं, रुपयोंकी उगाहीके लिये भाई हीरालालजी सवाईराम छावड़ा भेजे जाते हैं भाइयोंको चाहिये कि वे रुपये देवेंवें और रसीद लेलेवें।

सेठ सूरजी सूरजमल इन्दौर.

डिपुटीकमिश्नर हजारीबागकी सूचनानुसार लेफ्टनेंट गवर्नर अगस्त मासमें शिखरजीपर आवेंगे और बंगलोंके लिये पट्टे देनेकी तजवीज करेंगे यद्यपि कोई तारीख नियत नहीं हुई है तो भी हरएक पंचायतीको इस आवश्यक अवसरपर अपने २ यहासे दस वीस प्रतिनिधियोंको शिखरजीपर भेज-नेका प्रबन्ध कर लेना चाहिये. इतना और ध्यानमें रक्खें कि, शिखरजीकी रक्षाके लियेदौड़ धूप करनेको अब २०–२५ दिन रहे हैं अतएव भारतवर्षकी महासभा वा प्रान्तिक सभाओंके मंत्रियोंका यह प्रधान कर्तव्य है कि वे अपने २ प्रान्तमें उपदेशकों का दौरा करावें, शिखरजी विषयक आन्दोलन वा जा-गृति करें और चंदा करके यहा भेज देवें जिससे तत्काल तीर्थ रक्षाका उपाय अमलमें लाया जाय. धनाढ्योंको अटूट पुण्य सचय करनेका अच्छा मौका मिला है और चंचला लक्ष्मीसे भवान्तरमें अचल-पद पानेका यही प्रसङ्ग है अतएव श्रीमन्तोंको अ-पनी उदारताका शीघ्र परिचय देना चाहिये।

माणिकचन्द हीराचन्द, जे. पी.
महामंत्री, तीर्थक्षेत्र कमेटी.

जैनमित्र.

आषाढ शुक्ला २ श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४३३ ता० १२ जुलाई सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

दिगम्बरी भाइयोंको चेतावनी

सूरत निवासी एक श्वेताम्बरी भाईने श्रीसम्मेद शिखरजीपर टोंकोंके चहुओर कोट बनानेके हेतु सवालक्ष रुपया प्रदान किया है. जिसका काम शीघ्रही प्रारभ किया जावेगा. यद्यपि तीर्थराजपर दोनो सम्प्रदायोंका समान हक़ है. और हर सप्रदायके यात्री स्वेच्छानुसार चाहे जब पूजा वन्दना कर सक्ते हैं, एक दूसरेके धर्मध्यानमें बाधक नहीं हो सक्ते। परन्तु जब श्वेताम्बरियोंकी ओरसे परकोटा घिर जावेगा तब तो दिगम्बरियोंकी वह स्वतंत्रता जाती रहेगी। कारण परकोटेके दरवाजोंकी चाबी श्वेताम्बरियोंके हाथमे रहनेसे वे अपनी इच्छानुसार खोलेंगे और अपनी इच्छानुसार चाहे जब बन्द करेंगे. दिगम्बरियोंकी भक्ति भावना श्वेताम्बरियोंकी इच्छापर अवलबित रहेगी, दिगम्बरियोंको ताला बन्द होनेकी सूचना पातेही निकल जाना पड़ेगा, अथवा बन्द हो जानेपर कैद रहना पड़ेगा। साराश श्वेताम्बरी जैसा नचावेगे दिगम्बरियोंको नाचना पड़ेगा, उनके भजन पूजनमे बाधा होगी वा समय २ पर दु ख और अपमान सहना पड़ेगा। इसलिये हम दिगम्बराम्नायी मुखियाओं, तीर्थक्षेत्रकमेटीके मेम्बरों और अधिकारियोंको सचेत करते हैं कि वे पहिलेहीसे इसका उचित प्रबंध करा लेवें नहीं तो वर्तमानमें नखमात्रसे ध्वंश होने योग विष वृक्षके प्रबल होनेपर कुठारसे भी काटनेको समर्थ न हो सकेंगे।

गोकुलभाई मूलचन्द जैन बोर्डिंग।

श्वेतांबरजैन कानफ्रेंसकी तरफसे जो श्वेतांबर जैन बोर्डिंग स्कूल खुलनेवाला था वह जून महीनेमें खुल गया। परन्तु लोगोंको जैसी आशा थी वह पूरी नहीं हुई केवल १९ विद्यार्थियोंके लिये जगह की गई है। एन्ट्रेस पास विद्यार्थी भरती किये जाते हैं। उनको केवल रहनेके लिये मकान पलंग प्रकाश आदिका प्रबंध है। स्कालरशिप आदिका कुछ प्रबंध नहीं जान पडता। इसका भी अभी ट्रूस्ट नहीं हुआ है। हम सहर्ष अनुमोदन करते हुए चाहते है कि इसका ट्रूस्ट होकर इमसे चिरकाल तक विद्यार्थियोंको लाभ पहुंचता रहे।

एक दूसरा बोर्डिंग जो लालबागमें बना रक्खा है उसमें विद्यार्थियोंके भोजनादिकका भी प्रबंध है और इसमें अंग्रेजीकी पहली क्लाससे ही भरती किये जाते है।

तीर्थोंपर अपनी पुस्तैनी जायदाद और जै य मै ए को शिक्षा।

जैन श्वेताम्बर मेगजीनमे 'एक मियानमें दो तलवार नहीं रह सकती' शीर्षक एक लेख शान्तिविजयजीका लिखा हुआ है आपने अपने लेखमें श्वेताम्बर दिगम्बरके एक होनेका खडन किया है। आपके इस विषयमे हम कुछ भी कहना नहीं चाहते और न हम दोनो सम्प्रदायोंमें धर्म सम्बन्धी एकता चाहते है। परन्तु उसी लेखमें आपने जो निखिल गिरनार सम्मेदशिखर आदि तीर्थोंको अपनी पुस्तैनी जायदाद समझी है यह आपका बडा भारी भ्रम है। आपने उन तीर्थोंको अपनानेके लिये अनेक फ़ुरमान फरमा डाले हैं। परन्तु यह नहीं लिखा कि जिनको हम अपना लिखते २ थके जाते है, कलम टूटी जाती है, शाही सूखी जाती है, उन्हीं तीर्थों और उनके मन्दिरोंमें मूल नायक प्रतिमा जिन परसे अपना और पराया होनेका दार मदार है वे सब दिगम्बर आम्नायकी ही हैं। यदि आप मक्सीजी गिरनार आदिका दृष्टान्त देकर यह उक्त यथार्थ समाचार भी लिख देते तो आपको एक भी फ़ुरमाना फरमानेकी जरूरत न होती। न फिर किसीको कुछ लिखनेकी आवश्यकता होती। आपने दिगम्बरियोंसे इस विषयके सबूत इस प्रकार मागे है जैसे रात्रिमे फैला हुआ अन्धकार समस्त लोकपर अपना दावा रखकर प्रकाशसे सबूत मागता हो परन्तु महाशय! सूर्योदय होते ही इसका निर्णय हो जाता है। मक्सीजीमें दिगम्बरियोंका हक़ है प्रतिमायेंभी दिगम्बरियोंकी हैं। दिगम्बरियोंकी सरलतासे आपको दर्शन करनेको जगह दी गई है। उस पर भी आप अपने ही कह रहे हैं। इस प्रकारके लेखोंसे अशान्ति फैलाना श्रेयस्कर नहीं है।

ऐसे २ लेखोंसे जै. य. मेन्स एसोशियेशनको शिक्षा लेनी चाहिये कि जो एकता होनेकी डीग मार रही है। हमारी समझमें नहीं आता कि, जब दोनों तीनों सम्प्रदायें एकता होनेमें धडाधड विरोध दिखला रहे हैं तब यगमे०ए० कैसे एकता कर सकेगी। हमारी सदा यही मनोकामना रहती है कि जिन धर्मके प्रसादसे इसको अब भी सुबुद्धि हो।

'जैन' पेपरना सम्पादकने पोतानी फरजनी समज.

वाचक वर्गने मालुम छे के पेपरोना संपादको दुनीआने आत्मिक, नैतिक, सासारिक धार्मिक वीगेरे सघळा विषयोनो बोध आपे छे ने अपक्षपातो लखाणो थी अने पोताना स्वतत्र अभिप्रायो थी सारी शीखामण आपी जगतना मोटा भाग पर सारी असर करे छे. उत्तम प्रतिना सम्पादको सर्वना भलामां रही सर्वने लाभथाय एवा लेखो आपे छे अने पोताना पक्षपात रहीत विचारो दर्शावी दुनीआने सारे मार्गे दोरेछे; मध्यमप्रतिना संपादको पोताना अथवा पोतानी कोमना भलामा रही एवा लेखो आपेछे ने विचारो दर्शावे छे के जेथी करीने बीजाने अथवा बीजी कोमने नुकसान पोहोंचे नही, परंतु अधम प्रतिना सपादको पोताना अने पोतानी कोमनाज लाभमाटे मथ्या करेछे तेमा कदापि बीजाने अथवा बीजानी कोमने नुकसान थाय अथवा पोतानी कोमने खोटे रस्ते दोरवी पडे तो पण स्वार्थने माटे खोटु नाधारी तेवु अघटित पगलु पण भरवा अचकाता नथी.

'जैन' पेपर वाचता सर्व ग्रहस्थोए ता. १३ मी जून नो १२ मो अने ता २० जूननो १३ मो अंक वाच्या हशे जेना "गिरनारजी ना डुगर पर पाचमी टुंक पर दिगंबर जैन भाइओ तरफथी छत्री काडी नाखी बीजुं कांइ करवामा आवतो प्रयत्न" अने "जुनागढमा उभुथयेलु तोफान" ए बंने मथाळावाळा लेखो वांच्या थशे. उपरनामा पहेला मथाळा वाळो लेख जे ग्रहस्थोए वांच्यो हशे तेमने ते लेखनी आखी ढब अने पक्षपाती शब्दो अने वलण उपरथी लाग्यु हशेके ए लेख लखनार सम्पादक उपर लखेला ३ जा भागमा लेखी शकाय. कारणके ते लेख प्रथमथी तपासता मालुम पडे छे

के गिरनारजी उपर पाचमी टुकनी छत्री जुनी थवा थी तेने कोई ि गंबर गृहस्थ तरफथी धार्मिक भाव प्रगट थवाथी अमुक रकम खरची नवी करावा माडीछे आटुंक दिगंबर श्वेताम्बर अने ऊंच हिंदु कोमने सरखी रीते माननीय छे आ बाबतमा संपादक लेखने मथाळे 'छत्री काढी नाखी बीजु काइ करवांमा आवतो प्रयत्न' ए लखी वाचक वर्गने अधपीछोडो ओराडी विरुद्ध लागणी उस्केरे छे. खरी रीते छत्री जूनी थयेली होवाथी तेने तेज जगापर नवी सारी करवानी छे जे माटे दरेक जैनी ने हक छे.

लेखनो त्रीजो फकरो वाचवाथी मालुम पडशे के लेखकनो हेतु द्वेष बुद्धी थी लखवानो छे

चोथा फकरामा ते सपनी वात फक्त मुखथीज उच्चर्या करे छे पण अंदरथी पोल छे. सम्पादक साहेबने याद हशे के श्वेतांबर दिगंबर वच्चे ऐक्यता करवानुं प्रथम पगलु अलाहाबादना जैन यंगमेन्स एसोसीएसने "जैन गझेट" इग्रेजी मा काढी कर्यु छे जेनो संपादक दिगबर छे. लेखके याद राखवु के जो आवा द्वेषी लखाण थी सप थतो होय तो आपना पत्रने पांच वर्ष जेटली लांबी मुदत थई तो पण सप न थयो तेज आपना पक्षपाती लखाणनी पूरी साबीती छे, पांचमा फकरामा लखे छे के 'बने तरफ मोटा मान्यवर गृहस्थो छे छता पण आवी अशांतिनु कारण शु ?' प्रथम कारण तो आपना आवा पत्रनी हयाति अने बीजु तीर्थक्षेत्रोनी देखरेख राखनार गृहस्थोनी एक आंखे साकडा विचार थी जोवानी पद्धति आ बने कारणोनी साबीती जोइती होय तो हु लखीशके आपत्रनु लखाण पोतानुं सारु सारु करी वगर कारणे बीजानी खोड काडवानी टेव वाळू छे. लेखकने याद हशेके मुंबाइनी श्वेताबर कान्फरन्स वखते पण आपनुं पेत प्रकासता हता ते वखते न्याय दृष्टी मरहुम शेठ फकीरभाइए सामळवा प्रमाणे आपने खानगी रीते टपको लख्यो हतो त्यारे आप जरा शात रह्या हता ने बीजा कारणनी साबीती माटे दूर जवानु नथी पण आशरे सात आठ वरस उपरनो श्रीशीखरजीनो पगथीआ संबंधीनो केस, मक्षीजीनो अघडो अने एवा बीजा दाखला मोजुद छे. आ बधीं दाखलाओमां आपना अग्रेसरोनी हरकत करवानी रीति (Offensive Policy) छे ने अमारा अग्रेसरोनी बचाव करवानी रीति (Defensive Policy) छे.

आगळ चालता दसमा फकरामा अमारा मान्यवर श्रीमान् झवेरी शेठ माणेकचद पानाचद ने संबोधी शीखामण आपे छे के कोर्ट दरबारमा पइसा बरबाद करवा करता तेनो सारो उपयोग थाये तो सारो. पण भाइनेखबरज क्या छे के अत्यार सुधीमा जेकाम गिरनार उपर थय छे तेमा उमदा विचार वाळा शेठजीनो हाथज नथी. मने मळेली हकीकत प्रमाणे एम छे के छत्री नवी करावबा माटे जूनागढ दरबारनी परवानगी प्रथम मेळवीछे तेमा श्वेताबर भाइओए पोतानी दुरोजनी रीती प्रमाणे दखल करवाथी तोफानीओना मुचरका लइ जामीनपर छोडी पोताना सीपाइओ मूकी दिगबर भाइओने काम करवा दे छे आवी हकीकत होवा थी दीवान साहेब तथा कारभारी वर्ग श्वेताबर भाइओ तरफ गुस्से थया छे ने ता ३० मी जूनना १३ मा अकमा जणाव्या प्रमाणे तेमनी मुलाकात लेवा ना पाडी छे श्वेताबरी कारभारीओ दरेक तीर्थक्षेत्रो उपर एवी चाल चाले छे के दरेक तीर्थक्षेत्रोना रजवाडा साथे एमने बनाव ओछो रहे छे. पालीताणा, शीखरजी जूनागढ वीगेरेना दाखला ताजा छे अमारा शेठ माणेकचद पानाचद तो हरेक वखते कोर्टमा जता पइसो अटकावी सारा कार्योमा खरचावबाज प्रयत्न करेछे तेनो ाच वरस उपरनो ताजो दाखलो याद हशे जेमा कलकत्तावाळा विरोध विलाशी राय बाहादुर शेठ बद्रीदास श्री शीखरजीना परम पवीत्र डुगरपर श्री पार्श्वनाथजीनी टुकनी छत्री प्रथम जूनी हती ते करता मोटी बीजा रुपनी करी तेमा छुपी रीते प्रतिमा बीराजमान करवा अघटीत प्रयत्न करता हता ते वखते उक्त जवेरी शेठ माणिकचद भाइए बीजा त्रणना डेप्युटेशन सहीत हजारीबाग कोर्टमाथी (Injunction) मनाई हुकम लीधो हतो ने रायबहादुरनी आबरु अने पइसाने बर ाद थतो अटकाव्यो.

मारा विग्रह उत्पादक सपादकनी जाणनी बाहार नहीं हशे के केटलाक वरस उपर शीखरजी उपरनी चोवीसमा थी वीस दरेडीनी छत्रीओ कोई श्वेतांबरी भावीक गृहस्थो तरफ थी नवी करावरावी ओछे. छत्री नवीकरावबी एतो नजीवी वात छ पण आपना केटलाक गृहस्थोए जूनां पुज्य चरण सुध्धात उपाडी बीजे ठेकाणे पधराव्या छे ने केटलाक जूना पगलांने बदले नवां पधराव्यां छे. आ कया शास्त्रनाप्रमाण थी छे के नवां बेसाडवा ? आ काम ओछु पाप बांधवा जेवूं छे ? बळी याद देवराववानी फरज पडे छे के मक्षीजी, केसरीआजी, गिरनारना मोटा मंदीर वीगरे देरासरोमां जरा तस्दी लइ तपासशो तो मालुम पडशे के जे चक्षुवाळी प्रतिमाओ आप जुओ छो. ते दिगंबरी आम्नायनी छे ने नीशानी तरीके तेमने लगोटके कंदोरे प्रथम हता नहीं. वळी तेना उपरना लेखोमा दिगबर आचार्योना गच्छोना नाम हजु पण मालुम पडे छे. आटलु आटलु थया छतां दिगंबर भाइओ खामोसखाइ बेसी रहे छे त्या फकत तमारुं नकामु जोर अजमाववाना हेतु थी तमो दरेक जगो ए हलो करो छो, मार खाओ छो. आबरुने पइसानो व्यय करो छो ने पाछा पडो छो ते करतां तमारीज शीखामण प्रमाणे ते पइसा अने आबरुनो खरच सारा मार्गे करो तो जैनकोमने लाभ थाय.

कदापि आवी हकीकत तथा सपादकनी फरजनी आपने समजना होय तो कोई जूना अनुभवी सपादकनी पासे थी शीखवु वधारे लाभप्रद थशे.

ता. ३०-९-०७ ना १३ अकमां ते भाइ लखे छेके 'घणेस्थळे अमारा श्वेताबरी भाइओये दिगबर भाइओने सहाय आपीछे –'ते भाइ आवो एक पण दाखलो आपी सर्वने जाणगार करशे तो उपकार थशे । उपकार कीधो तो नथी छता कहीं बतावबु ए सुज्ञ पुरुषनु भुषण नथी.

आ सपादक अने सर्व श्वेताम्बर भाइओने मारी नम्र सुचना छे के जैनना सिद्धात प्रमाणे न्याय 'आपणु तेवु बीजानु' मानवा मा छे तो आवा अमुल्य सिद्धातने कोरे मुकी चालवु ए आगळ उपर डुबवानो रस्तो छे माटे तेमनकरता पोताना स्वतंत्र विचार थी धर्मनी लागणी सहित जोशे तो मालुम पडशे केखरी ात शु छे । न्याय विना चालनारने आ सूचना नथी.

सपादक साहब जरा वधारे स्पष्ट थइ लखशे के आ अशांतिनु कारण आप शु धारो छो. ने माहीती ना होय तो आपना अग्रेसरोने पूछीने पण जणाववा कृपा करशो.

आटलु छतां आपने लागतुं होय के छत्री नवी करवी खोटुं छे तो आज सुधीमां करेली बधी जगोनी छत्रीओ माटे जैन कोमनुं कमीशन बेसाडी वीचार चलावो. अथवा आ रीपेर कामउपर आपना कोई भावीक गृहस्थ तरफ थी ते छत्री चादी –सोना–अथवा हीरा–रत्न जडीत जोवाने ऊभे घणाज आनंद पामी शुं.

आ बधु आपने फक्त आगळ उपर वाचकवृंदने अवळे रस्ते ना दोरवा माटे सुचना छे पण खरो रस्तो ए छे के जैन कोमनी पंदर लाखनी वस्तीमा श्वेतांबर—दिगंबरनी संख्या अडधो अडध छे ने तेमा स्थानक वाशी बाद करीए तो दिगबर कोमनी संख्या श्वेतांबर देरावासी करतां वधी जशे. तेमांथी सरखी संख्या मां सम्य लायक गृहस्थोनी एक कमीटी नीमवीने तेमने बंने कोमोना मुख्तीआर बनावी तेमना हाथमा दरेक तीर्थक्षेत्र उपरना कजीआ पतावना सोंपवा. ने दरेक तीर्थ उपर जइ त्यांनी साबीती—दस्तावेज जोइ जेनो हक होय तेने स्वाधीन करे ने बीजां बाकी ना तीर्थो उपर हक अने हद नक्की करे. आवी रीते ज्यां सुधी सीधो प्रमाणीक रस्तो लेवामा नही आवे त्या सुधी एक पक्ष तरफ थी जो हरकत उत्पन्न थशे तो बीजा पक्षे बचाव करवा जवुज पडशे. सप अमोने तेना खरा अर्थमा वहालो छे ने ते बदल अमो कोई पण नुकमान खमवा तइयार छीए, माटे भवीष्यमा फायदो थाय तेवां पगला भरवामा आप प्रयत्न करसो तो अमो साहायभूत थइशु तथास्तु

L. P.

आरा निवासी श्रीमान् बाबू देव-कुमारजीका दक्षिण पर्यटन

(गतांकसे आगे)

मूलवद्री—वैसाख वदी ३०—रत्नप्रतिमा और सिद्धान्त शास्त्रकी वन्दना कर जन्म सफल किया सिद्धान्त ग्रंथ लिखे जा रहे है, बालबोध लिपिके ४०००० श्लोक और कर्नाटकी लिपिके ८००० श्लोक अवशेष है. लिखाईका काम बडी सुस्तीसे चलता है प्रबंधक महाशयसे विशेष लक्ष्य देनेके लिये प्रार्थना है। रथ यात्राके मौकेपर वैसाख सुदी १० से वैसाख सुदी १९ तक एक बड़ी सभा हुई जिसमें २००० नर नारी उपस्थित थे कार-कलके भट्टारक स्वामी ललितकीर्ति भी पधारेथे। कहते हैं कि ५० वर्षसे कभी ऐसी सभा नहीं हुई है. भानेजा (अलिया) संतान रोकनेका प्रयत्न किया गया अंग्रेजी पढ़े विद्यार्थियोंने और स्वामी चारुकीर्ति जीने धर्मके विषयमें, तथा धरमचन्दजीने निर्माल्य भक्षण वेश्यानृत्य और आतिशबाजीके विरोधमें व्याख्यान दिया. प्रभाव यह हुआ कि बहुतस मनुष्योंने निर्माल्य भक्षण और वेश्यानृत्य करानेका त्याग किया। गत जेष्ट शुक्ला पंचमीको जो संस्कृत पाठशाला खोली गई थी उसके स्थायी कोषमें स्वामी चारुकीर्तिजीने ११०००) पहिले और ४०००) इसवक्त, जैनसभा और पाठशालाके मंत्री गुमान श्रेष्ठीजीने ५००) पहिले वा १५००) वर्तमानमें, और अन्य २ सज्जनोंने ४०० रु. चदा आज पर्यन्त देना स्वीकार किया। चंदैया हिंगडेजी धर्मस्थलने ५०००) तथा दोहुम्मा सेठतीजी और इनके दोनों पुत्रोंने ९०००) उक्त शालाके गृहके हेतु देना स्वीकार किया और बाबू सा० ने २५०) तथा गोविन्ददासजीने २०) वार्षिक देना स्वीकार किया। मूलवद्रीके श्रुत भडार और भट्टारकजीकी तीन चार अलमारियोंमें प्रतिष्ठित अमूल्य प्राचीन ग्रंथोंके दर्शनकर अत्यानन्द हुआ. ग्रन्थोंकी और भी खोज करनेके लिये एक मंदिरमे गये. दूसरे मजलेपर एक अंधेरी कोठरीमे बडे २ पाच छह सन्दूकोंमें जीर्ण ग्रथ भरे हुए थे कई ग्रंथोंकी दीमक और कीडोने कुगति कर डाली थी. देखतेही हृदय कंपित हो गया. और नेत्रोंसे अश्रुबिन्दु आ गये. थोडेसे ग्रंथ उजालेमें लाकर देखनेसे मालूम हुआ कि यह सब ग्रथ प्राचीन कालके लिखे हुए संस्कृत प्राकृतमय ताडपत्रपर है लिपि ऐसी सुन्दर और स्पष्ट है मानो देव लिखित ही है. उनके सुधार और यथार्थ रक्षाके लिये भट्टारकजी और मुखिया भाइयोंसे प्रार्थना की कि, सब ग्रन्थोंको उस प्रकाश-शून्य कोठरीमेंसे निकलवाकर किसी सुयोग्य स्थानमें पधरावें तथा वेस्टन पाटिया, अलमारी आदिसे रक्षित करें. जिससे उनके एक टुकडे मात्रका भी अविनय न होने पावे, और माहवारी सभा करके उनके उद्धारके प्रयत्न सोचे और किये जावें, उन सज्जनोंने हमारे कहे अनुसार काम भी प्रारंभ कर दिया है और चालू रहेगा। जिसके खर्चके वास्ते बाबू सा० ने १००) दे दिये है शेष जितना खर्च और पड़ेगा उसका बिल आनेपर भेज दिया जावेगा। पूर्व कालमें यहाके लोगोंके प्रमादसे असंख्य ग्रंथ मिट्टी रूप होकर समुद्रार्पण किये गये हैं जिससे अमूल्य २ वैद्यक और ज्योतिषके अनेक शास्त्रों का अभाव होगया। अब आशा है कि बचे हुए ग्रंथोंकी रक्षा करने में वे लोग उद्यत रहेंगे. कहते हैं कि कुछ काल पूर्व यहां ऐसे २ विद्वान थे जो सूत पकडके नब्ज (नाड़ी) और रोग का अनुमान कर लेतेथे तथा नाम मात्र बतला देनेसेही होनहार सारी व्यवस्था, हानि लाभ, रोग, शोक बतला देतेथे और ठीक २ जन्म पत्र बनादेते थे. यह सब उन्हीं जैन शास्त्रों के ज्ञान का प्रतिफल था जो आज दीमक के भक्ष्य हुए जाते हैं. हाय भगवान् !

मेंगलोर—जेष्ट वदी २—मूडूवद्रीके पश्चिममें २२ मीलकी दूरी पर है यहा एक बोर्डिंग खुलनेकी बड़ी जरूरत है, जिसके लिये कारकलकी सभामें प्रेरणा की गई। प्रतिफलमें २ वर्षके चालू दस विद्यार्थीयोंके, खर्चेके लिये १४९) वार्षिक चन्दा हुआ और १००) वार्षिक बाबू सा०ने दिये.

कारकल—जेठ वदी ४—यहा प्रान्तभरके प्राय सभी मुखिया जन एकत्रित हुए थे, सभाएं दो हुई, यहाके भट्टारक ललितकीर्ति स्वामीजीने संस्कृत पाठशालाके ध्रुव कोषमे ४०००) और १९) मासिक तथा ९ विद्यार्थियोंको एक वर्षतक भोजन वस्त्र देना स्वीकार किया, और बाबू देवकुमारजीने ९ वर्षतक १००) वार्षिक सहायता देनेका अविचल प्रण किया, पश्चात् इस प्रान्तके जमीदार भाइयोंने एक वर्षका जमीन लागान (रेव्यून कदाय) ध्रुव फडमे देनेका वचन दिया. जेष्ठ शुक्ला ५ के शुभ मुहूर्तमे पाठशाला खलेगा भगवान उसे चिरस्थाई करें। १ हृदयवेधी वार्ता पाठकोंको सुनाते है कि, कुछ वर्ष पूर्व यहाके ५०० ग्रंथ जलकर भस्म हो गये खेद। खेद!!

वराग—जेठ वदी ७—यहा ५०० सद्ग्रन्थोंका भडार हैं भट्टारकजीकी अनुपस्थिति होनेके कारण दर्शनोंसे वंचित रहे।

हूमुचा—जेठ वदी १०—यहाके भट्टारकजीके समीप ३०० ग्रंथ प्राय. ताडपत्रपर है आप उनकी ठीक २ व्यवस्था रखते है

बेलगांव—जेठ वदी १४—बेलगाव और शाहपुरके मध्य होसूरमठमे ज्ञानोत्कर्ष वाचनालय नामका पुस्तकालय है वहा १ सभा की गई। अंकले चौगले आदि प्रसिद्ध २ पुरुष सभामे सम्मलित हुए थे मासिक सभा करना निश्चित हुआ। एक स्त्री सभा भी हुई कन्याशालाके विषयमें चन्दाबाईका व्याख्यान हुआ १००) वार्षिक चंदा हुआ एक कमेटी शालाके परिचालनार्थ स्थिर की.

कोल्हापूर—जेठ सु. १ बोर्डिंगका निरीक्षण किया अंग्रेजी तथा संस्कृतमें परीक्षा ली और पुरस्कार वितरण

यहां पुत्र होते हुए भी भानजा उत्तराधिकारी होता है ऐसा करनेसे कई कुटुम्ब नष्ट हो गये हैं, वा अधिस द्रव्य सरकारी कोषमें पहुंचाया गया है.

किया बोर्डिंगके रजिस्टर आदिकी जाच की धर्म शिक्षणकी विशेषतापर लक्ष्य देनेको कहा गया प्रबंध अच्छा है। यहांके कोई २ श्रावकगण बोर्डिंगसे अरुचि रखते थे अंग्रेजीकी विशेषता और धार्मिक विद्याकी गौणता उन्हें बिलकुल नहीं भाती थी कारण हमारी सरकार इंग्लिश शिक्षाका प्रचार स्वयं कर रही है। बाबू साहिबने उन्हें नम्रता पूर्वक समझाया कि, सरकारी स्कूलोंमें धर्मशिक्षण बिलकुल न मिलनेसे अंग्रेजी सीखे हुए विद्यार्थी बहुधा भ्रष्ट और धर्म विमुख हो जाते हैं। इसी कारण यह प्रयत्न किया गया है, इससे उन्हें बहुत कुछ तोष हुआ। यहा एक ब्रह्मचारीजी है जो बोर्डिंगके विद्यार्थियोंको प्रतिदिन आध घंटा असर कारक उपदेश देते हैं आपके सदुपदेशसे बहुत कुछ लाभकी आशा है। एक सभा हुई जिसमें जैनधर्मके महत्त्व और विद्योन्नति पर बाबू साहिबने भाषण किया। मासिक सभा करनेका निश्चय हुआ उपस्थित भाइयोंने दस्तखत कर दिये.

बम्बई—जेठ शुक्ला ३ को बम्बई आये और श्रुत पचमीका महोत्सव करनेके लिये मुखिया महाशयोंसे प्रार्थना की बाबू सा० की प्रेरणा से स्थानीय मुखिया महाशयोंने स्वीकार कर श्रुति पंचमीके प्रभातही सस्कृत वा भाषाके सम्पूर्ण शास्त्रजी का तख्तोपर विराजमान कर भक्ति पूर्वक श्रुतस्कध पूजन पाठ किया। उस समयका अपूर्व आनन्द अकथनीय था आशा है कि यह महोत्सव ऐसे ही भक्तिभावसे प्रतिवर्ष हुआ करेगा। सायकालको लाला बैजनाथ जीके सभापतित्वमें हीराबागके लेक्चर हालमें १ बडी सभा हुई जिसमें पंडित लालारामजी ने मगलाचरण किया मैने (नेमीसागर ब्रह्मचारी) बाबू सा० के पर्यटनका ३ माहका साराश और श्रीमान् पडित जवाहरलालजी शास्त्री ने श्रुतपचमी का माहात्म्य वर्णन किया। सरस्वतीभवनके सहायतार्थ बाबू सा०ने चार वर्ष तकके लिये २५०) वार्षिक और श्रीमान् श्रेष्ठिवर्य माणिकचद पानाचंदजी जे. पी. ने १२५) वार्षिक ४ वर्षतक, रामचन्द गुलाबचदजीने २५) वार्षिक ४ वर्षतक, चुन्नीलाल हेमचन्दजीने २०) वार्षिक ४ वर्षतक, और निहालचंद गिरधारीलालजी जौहरीने ११) वार्षिक ४ वर्ष तक देना स्वीकार किया। हर तरहके वादानुवादके अनन्तर पडितवर्य धन्नालालजी और बाबू शीतलप्रसादजीके अनुरोधसे यह निश्चित हुआ कि, बम्बई की प्रोविन्सियल सभा कमसे कम १००) वार्षिकका प्रबंध करके यह धर्मका कार्य दि. जै. प्रान्तिक सभा बम्बईको सौंप दे और बम्बई प्रान्तिक सभाकी ओरसे नगर २ ग्राम २ को योग्य पंडित भेजे जाकर ग्रन्थोंकी सूची तयार कराई जावे और प्रत्येक भंडारके ग्रंथोंकी सभाल की जावे—

प्रान्तिक सभा इस कार्यको प्रारम करै परन्तु यह कार्य जैनमित्र अंक १२ की रिपोर्टके अनुसार सरस्वत्यालयका अकुरारोपण रूप समझा जाय। अन्तमें यह प्रण करता हुआ बाबू देवकुमारजी के देशाटन का संक्षिप्त विवरण समाप्त करता हूं कि, दक्षिण कानडा और मैसूर प्रान्तमें भ्रमणकर वहांके जैन ग्रंथोंकी सूची आयोजित करूगा। बाबू साहिबके लगाये हुए उत्तम पौधे अहर्निशि वृद्धिकर मधुर फल देवें. इति

नेमिसागर ब्रह्मचारी.

निर्माल्य स्तोत्र।

हे निर्माल्य देव। पचमकालमें तुह्मारे प्रचड पराक्रमको, और बढते हुए राज्य विस्तारको देख कर हम लोग साष्टाग नमस्कार करते हैं। आपको आश्चर्य होगा कि, जो लोग आपके स्पर्शसे भी अतिशय डरते थे, आज नमस्कार क्यों कर रहे हैं। परन्तु हमे इसमे विस्मय जैसी कोई बात नहीं दिखती। गति ही ऐसी है। जिन अग्रेजोंके स्पर्शसे हमारे यहाके कुलीन लोगोंको स्नान करना पडता था आज उन्हींके साथ होटलकी मेजपर एक साथ भोजन करना गौरवका कारण समझा जाता है। कल जिस क्षुद्र जापानका कोई नाम नहीं जानता था, आज उसीके युवराजको सम्राट एडवर्ड जैसे अमित बलशाली महाराज द्वारा सम्मान होता है। साराश यह है कि "लोग ऊगतेके पांव पडते है, डूबतेके नहीं।"

कृपानाथ! इतने दिनोंतक आपके पराक्रमका परिचय न मिलनेसे हम लोग आपकी सेवामें उपस्थित न हो सके, इसका हमको बडा खेद है। हम लोगोंमें समाचारपत्रोंके पढनेवाले लोग नाम मात्रको हैं, इसलिये दुनियामें क्या होता है, इसका ज्ञान हमें समयपर नहीं होसकता। और इसीसे हम अभीतक यही समझे हुए थे कि, धर्मराज का राज्य पूर्वकी नाईं व्यवस्थित पद्धतिसे चल रहा है। उनके औदार्य, सतोष, सत्य, संयम, आदि कर्मचारी बडे ही प्रबल हैं। उनके सन्मुख दूसरेकी दाल नहीं गल सकती। परन्तु अब मालूम हुआ कि, धर्मराजके प्रायः सभी स्थानोंमें आपकी ही तूती बोलती है। धर्मराजका शासन कहनेमात्रको है। उनके प्रधान २ कर्मचारी अस्तीफा दे रहे हैं, जिससे राज्यमें बडी भारी अराजकता फैल रही है। नये कर्मचारी जो भरती हुए हैं, वे देखने में तो धर्मराजके विश्वस्त सेवक बनते हैं, परन्तु यथार्थमें वे धर्म की ओटमें आपकी चोट करते हैं। यदि कुछ दिन यही हाल रहा, तो निश्चय है कि, एक दिन आप धर्मराजके सिंहासन पर आरूढ हो जावेंगे। यह जानकर हमको बडी खुशी हुई है कि, अधिकाश बडे २ सिद्धक्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों, और मन्दिरों में आपका अधिकार हो चुका है। वहाके खजाची, प्रबधकर्त्ता, मुनीम, पुजारी, नौकर चाकर सब आपके परमभक्त परिचारक बन गये हैं। धर्म कर्मकी वहां कुछ भी प्रतिष्ठा नहीं है। दक्षिण, कर्णाटक और गुजरात में तो आपका स्वतंत्र राज्य है। भट्टारक और उनके शिष्य पंडित गण वहांके सूबेदार हैं। प्रत्येक मंदिर तीर्थ और धर्मादे का द्रव्य उनके पुरुषाओं की स्वतत्र सम्पत्ति है, मंदिरोंके खर्चके लिये लगी हुई जागीरें उनके भोगोपभोगोंकी साधनभूत हैं। वहाके मदिरोंमें जो द्रव्य चढता है, उसको हजम करनेवाले भी यही महाशय हैं. इसमें वे कुछ दोष नहीं समझते। वहांके कई पंडितोंने तो एकवार उस द्रव्यको अदूषित—उपादेय सिद्ध करने तकका साहस किया था। क्यों? इसलिये कि उस प्रान्तके सब ही पडित पुजारी उस विषयमें अपराधी बन रहे हैं। फिर उन्हें पडौसी धर्मका निर्वाह करनेके लिये दोषमुक्त करनेका प्रयत्न करना ही चाहिये था। अनेक तीर्थोंमें चढे हुए द्रव्यकी बिक्री की जाती है, और उससे जो रुपया आता है, वह तीर्थ-भंडारमें जमा होता है, अथवा तीर्थसम्बन्धी अन्यान्य कामोंमें लगता है। सारांश यह है कि, चारों ओर आपके शासनकी ही धूम है।

हे कलिकाल चक्रवर्ती! धर्मराज्यके शासनको आपके अज्ञानादि कर्मचारियोंने छिन्न भिन्नकर डाला है, बडी अराजकता फैलाई है। जिस ग्रामके मन्दिरमें १०) हैं, वहीं मारामार होती है वैमनस्य फैलता है, मुकदमेबाजी होती है। हर कोई उन्हें डकारजानेको चाहता है। भादोंकी चौदसको इसी कारण कलहकारिणी नाम प्राप्त हुआ है। धर्मका डर सर्वथा नहीं रहा है। लोग जो कुछ थोडे बहुत धर्म कार्य करते हैं वे सब दिखानेके लिये करते हैं।

परन्तु महाराज एक बड़ी बुरी बात सुनी है। कुछ लोग आपके विरुद्ध बलवा करनेको खड़े हुए हैं। बड़े २ विद्वान् और धनवान् उसमें शामिल हैं। वे सब प्रतिष्ठित और जगन्मान्य हैं। अखबारोंमें उन्होंने जो लेख प्रकाशित किये हैं, उनसे जान पड़ता है कि, वे आपका सर्वनाश करनेको उतारू हुए हैं। शायद एक दो तीर्थोंको उन्होंने छीन भी लिया है। यद्यपि हमें भरोसा है कि, आपके बलके सन्मुख वे कोई वस्तु नहीं है, और जिन स्थानोंको उन्होंने अपने अधिकारमें किया है, उन स्थानोंमें भी अभी आपके अनेक भक्तजन रहते हैं। तौ भी यह कुछ थोड़े भयकी बात नहीं है। शत्रु और रोगको कभी छोटा नहीं समझना चाहिये हमारी समझमें समयके अनुकूल अब आपको एक कमेटी संगठित करना चाहिये, जिसके द्वारा शत्रुपक्षके उपायोंको नष्ट करनेके लिये प्रतिपक्षी उपाय सोचे जावें। कमेटीकी कार्यकारिणी समितिके मेम्बर उन लोगोंको बनाना चाहिये, जो किसी मन्दिर या तीर्थका कमसे कम हजार रुपया निगल गये हों। इससे कम हैसियतके लोग साधारण सभाके ही मेम्बर हो सकेंगे। कमेटी का प्रथम अधिवेशन गिरनारजी में हो और यदि उचित समझा जावे, तो प्रतापगढ़मे कोई योग्य पुरुष सभापति बनानेके लिये चुना जावे।

आज पहिला ही दिन है, इस लिये हम लोग आपको अधिक कष्ट नहीं देना चाहते और पुनः २ नमस्कार करके विदा लेते हैं। हो सकेगा, तो फिर कभी सेवामें उपस्थित होने का प्रयत्न करेंगे। भूयात्पुनर्दर्शनमित्यलम्।

भवदीय—प्यारी प्रजा।

हमारा प्राणप्यारा हमसे जुदा हुआ जाता है।

शैर-शिकायत अब तो हम हरबार सबसे उनकी सुनते हैं। कलेजा थामकर रह जाते हैं सर अपना धुनते हैं।

होरहा जुल्मो सितम जो कौमपर इस वक्त आह
करके कोशिस उसके टाले बिन नहीं होता निबाह
गरचे गहरी नींद सोया ही करेंगे आप अब
देखतेही देखते सब धर्म तीरथ होंतबाह

हम सदैवसे यह बात सर्व मतावलम्बियोंके मुखसे सुनते चले आ रहे हैं कि, जैनमतवाले बड़े धनाढ्य हैं, दानी हैं, धर्मात्मा हैं, धर्म तथा परोपकारपर तन मन धन न्यौछावर कर डालते है। परंतु जब किसी समय इन लोगोंकी परीक्षा होती है तब हमको इसके विपरीत ज्ञान होता है और अत्यन्त आश्चर्य उत्पन्न होता है बल्कि लोगोंके कहनेका विश्वास जाता रहता है। परंतु फिर जब हमारी दृष्टिमें धनाढ्य पुरुषोंकी सूची गुजरती है तथा यह बात कर्णगोचर होती है कि अमुक सेठजीने लाखों मुद्रा लगाकर श्री जिनबिम्ब प्रतिष्ठोत्सव कराया है तथा अमुक लाला साहबने अपनी संतानके विवाह कार्यमें सहस्रों रुपया व्ययकर डाला है तब हमको फिर लोगोंकी बातका दृढ श्रद्धान होता है कि वास्तवमें जैनी लोग बहुत ही धनवान हैं। परंतु विचार यह होता है कि जैनी लोग धनाढ्य हो कर भी विद्योन्नति तथा धर्मोन्नति आदिक शुभ कार्योंकी ओर दृष्टि क्यों नहीं देते। परन्तु छिनेकमें हमारा यह ख्याल दूसरी डगर पर पलट जाता है कि धनाढ्य पुरुष ऐसे ऐसे सूक्ष्म कार्योंमें हस्ताक्षेप करना अपना गौरव नहीं समझते हैं। वह किसी ऐसे समयका बचाव करनेको तत्पर रहते है कि जो जैन समाज पर अत्यत कठिनाई लाने वाला हो—परतु इन धनी पुरुषोंके विचारके प्रतिकूल साधारण जैनियोंका ऐसा मत है कि, जो उन्नतिके करनेवाले हैं वे धनीही हैं इसी कारणसे उन्नतिके मार्गमे रोडा अटकाये धनी लोगोंकी राह देखते हैं कि, कब थैलीका मुंह खुलै और कब उन्नतिका झंडा शिखर पर चढै--इसलिये धनी पुरुष तो साधारण मनुष्योंको तथा साधारण मनुष्य धनी पुरुषोंको उन्नतिके मार्ग खुलनेका बाधक समझ कर दोषी ठहराते हैं इस ही कारणसे आजकालमे जैन धर्मकी उन्नति न होकर चारोंओर अवनतिकी दामनि दमक रही है। आज हम इस उन्नतिके विषयमें अधिक न करके उस शोकमई कथा (श्री सम्मेद शिखरजी पवित्र तीर्थराजपर डिप्टी-कमिशनर हजारीबागकी बंगले बनानेके लिये जमीन देनेकी दृढ प्रतिज्ञा) का वर्णन करते हैं कि जिसके कारणसे चौदह लाख जैनी व्याकुल हो उठे हैं। प्रिय भ्रातृगणो! जरा विचार करके देखो कि श्री सम्मेद सिखरजीको आपके शास्त्रोंमें महानतीर्थ माना है तुम्हारे चौवीस तीर्थंकरोंमेंसे सिवाय ४ के बाकी सब इसी स्थानसे मोक्षगामी हुये हैं तथा अनंतानंत मुनि इसी पवित्र क्षेत्रसे निर्वाण भूमिको गये हैं इसी लिये इस क्षेत्रके कंकर, धूल, पत्थर जो कुछ हैं सर्व आपके पूजनीय द्रव्य हैं। इसी कारण राजा रंक "(जो जैनी हैं) सबही नगे पैर शुद्ध चित्त होकर तीर्थराजपर जाते हैं और तीर्थराजपर मल मूत्र थूकादिक अपवित्र वस्तुको कोई भी नही डालते। तात्पर्य यह है कि शास्त्राज्ञानुकूल उक्त तीर्थराजको अत्यंत पवित्र मानते हैं। और अगर गौर करके देखा जावे तो सर्व मतावलम्बी इस बातको मानेंगे कि जैनियोंमें यदि महान् तीर्थ है तो श्री सम्मेद शिखरजी (पारसनाथ) ही है। जब उक्त तीर्थराज परम्परासे आपके कल्याणक कर्ता तथा अत्यत पूजनीय स्थान चला आता है तब न मालूम आप तीर्थराजको अपवित्र होनेसे क्यों नहीं बचाते। भ्रातृगणो। यह उन्नतिका मार्ग नहीं है कि धनाढ्य पुरुष साधारण पुरुषोंपर और साधारण पुरुष धनाढ्य पुरुषोंपर भरोसा किये हाथपर हाथ धरे तमाशा देखा करें। बल्कि यह एक सख्त मुसीबतका सामना है जो कि धनी गुनी तथा सर्व साधारण पुरुषों द्वारा कार्यकारी हो सक्ता है अर्थात् तीर्थराजकी रक्षा चौदह लाख जैनियों करके ही होगी। प्रियबंधुओ! यह समय मौनावलंबनका नहीं है, यह वक्त आलस्यका नहीं है, यह काल लोभका नहीं है। बल्कि यह ऐसा समय है कि चौदह लाख जैनी एक चित्त होकर शोर मचावें, यह शोर केवल घरके आगन तथा श्रीजिनालयोंकी दीवाल तक ही टकराकर न रह जावे बल्कि इस शोरकी गूंज गवर्नर जनरल (लार्ड मिंटो) तथा भारत-सचिव (मिष्टर जान मार्ले) तथा पार्लीमेंटके दोनों दलोंके सभासदोंके कानोंमें भरे, जावें। और धनको पानीकी भाति बहावें, हिम्मत कमर बाध कर खड़े हो जावें। तो पूर्ण विश्वास है कि तीर्थराजका बाल बाका नहीं होगा और यह बात याद रखने योग्य है कि हमारे शास्त्रोंमें राज्य नीति भी मुख्य धर्म कहा है इस लिये तुम्हारा काम भारत की उन्नति चाहने वालोंकी भांति लडभिडकर रक्त बहाने का नहीं है बल्कि शांतिभावसे नम्रता पूर्वक अपने स्वामीको दुख सुनाना ही तुम्हारा कर्तव्य है। तुम्हारे इस विपत्तिकालमें सर्व हिन्दू समाज (हिन्दी केशरीके कथनानुसार) अत्यंत क्लेशित हैं परंतु वह केवल बाहरी कोलाहल करके क्या कर सक्ती है? यह तुम्हारा ही काम है कि धर्मक्षेत्रके हेतु तन, मन, धन लगाओ तथा अपने गृह कार्य तजकर धर्मकार्य में तत्पर हो जाओ। तथा शीघ्र ही सचेत होकर पूर्ण कोशिस करके तीर्थराजकी रक्षा करो। और यह बात खूब विचार

कर देख लो कि जिस तीर्थक्षेत्रकी आप मन बचन काय कर विनय करते है जिस तीर्थराजको अपने आत्मकल्याण अर्थात् मोक्षका मार्ग मान रक्खा है (मान क्या रक्खा है बल्कि है)। उस तीर्थक्षेत्रकी बंगले बन जाने और यूरुपियन लोगोंका बास हो जानेपर ऐसी विचित्र काया पलट (मिट्टीपलीद) होगी कि आप देख देखकर आंसू बहाया करेंगे और हाथ मल मल कर पछताया करेंगे। फिर तो वही कहावत होगी कि, (अब पछितायें होत का ? चिडिया चुन गई खेत) हम आगामी दशाका जो कि बंगले बननेपर होगी फोटू खींचकर आपका व्यर्थ समय नष्ट करना नहीं चाहते । हम यही चाहते है कि आप न्यायशीला गवर्नमेंटसे (तीर्थराजको पवित्र तथा कल्याणकारी जताकर) प्रार्थना करो कि डिप्टी कमिश्नर साहब हजारीबागकी राय हमारे दयामई धर्मका घात करनेवाली है और धर्मके घात होनेसे हमारा सर्वस्व हरण हो जायगा और इस सर्वस्व हरणसे हमको अत्यत क्लेश तथा दुःख उठाना पडैगा—जब आपके न्यायी राज्यमें हम दीन जैनियोंको क्लेश तथा दुख उठाना पडा तब हमारे सुखका मार्ग क्या हो सक्ता है ? हम आज अपनी न्यायवान मृतमाता विक्टोरियाके उस घोषणा पत्रकी याद दिलाते है कि जिसमें उन्होंने साधारण तौर से जाहिर किया था कि " मै किसीके धर्ममें हस्ताक्षेप नहीं करूंगी" बस इसी घोषणा पत्रके अधार पर आज सर्व मतावलैम्बियोंको मतसम्बन्धी आजादी हासिल है और इसी कारणसे हम जैनी लोग निर्भय होकर सदैव अनेक उत्सव करते है जिनमें हमारा धर्म आपपर भले प्रकार जाहिर है। इस कारण आप दयादृष्टि तथा न्याय नीतसे डिप्टी कमिश्नर साहबकी रायको न मान करके हम लोगोंके कल्याणको कर्ता उक्त तीर्थक्षेत्रपर बंगले न बनाइये। न कोई हस्ताक्षेप भी कीजिये । प्रियबंधुवर्गो ! अब शीघ्र कोशिस करके तीर्थ राजको बचाओ और जिस तारीखको बंगालके लेफ्टिनेंट गवर्नर तीर्थराज पर मौका देखनेके लिये जावें उस तारीख को कोटिगृह कार्य त्याग कर वहा जाओ और प्रार्थना करो । जिससे उनको भी दृढ प्रतीति हो-जावे कि जैनियोंको यथार्थमें सच्चा प्रेम और ममत्व इस तीर्थराजसे है । मुझे दृढ विश्वास है कि फिर तीर्थराज अवश्य ही तीर्थराज हो जावेगा।

जोती प्रशाद
ए० जे० देवबंद.

प्राप्तिस्वीकार

(गतांकसे आगे)

परम पावन निर्वाणक्षेत्र श्री सम्मेद शिखरजी पर विधर्मियों के बगले आदि न बनने पावें इसके प्रयत्नार्थ जिन २ स्थानों के धर्मालु दयालु उदार शील सज्जनोंने द्रव्यसे सहायता की है उन को मै कमैटीकी ओरसे कोटिश: धन्यवाद देता हू.

ता. २३ जून ०७ से ६ जुलाई ०७ ई. तक जो द्रव्य प्राप्त हुवा है उस की सूची —

१८६४।।।-) ता. २२ जून तक, गत अंको में मुद्रित है.
१७८।।) समस्त पंचान परण्डा.
१७) जगदलपुर जि. बस्तर के तीन भाईयोंके.
२) मोतीचन्द रामचन्दजी संघवी गणेगाव.
२।) खुशालचन्दजी नादगाव.
१००) समस्त पचान इण्डी.
८।=) भाई भावीमोदी हरीरामजी गाडर वारा.
१५) मोतीलालजी श्रावक.
५०) दिग जैन सभा मूडवद्री मा. चारुकीर्ति पट्टाचार्य्य.
११५) समस्त पचान टीकमगढ.
६०) ,, ,, राजनादगाव
१३७।।) ,, ,, पुणताबा जि. अहमदनगर.
३५) ,, ,, झालरापाटन.
६।।।=) ,, ,, हरदा (एक भाई पर जो बाकी रहा था)
१०) भाई प्रेमजी रावजी वखारिया, डोंगरपुर.

२६१२।-) कुलयोग.

आशा है कि अन्यान्य स्थानो के पच इसी प्रकार द्रव्य एकत्रित करके भेजेंगे—इस कार्य में ढील न करेंगे, कारण शिखरजी की रक्षाका जो प्रबन्ध हो रहा है उसमें अधिकाश द्रव्यकी आवश्यक्ता है। दिगम्बरी जैनी भाइयोसे प्रार्थना है कि वे उदार चित्तसे ऐसे महत् पुण्यके कृत्यमें अवश्य स्वतंत्र रूपसे सहायता प्रदान करें द्रव्य क्षणस्थायी है इस को परमार्थ में लगाना यही विवेकी जीवोंका प्रधान कर्तव्य है ।

आफिस—हीराबाग. पो. गिरगांव बम्बई ता. ७-७-०७. } माणिकचन्द हीराचन्द महामंत्री ती. क्षे. कमैटी.

आर्जियां भेजी गई—प्रगट हो कि हमारी सूचनानुसार कई स्थानोंके दिगम्बर जैन भाईयोंने लेफ्टर्नेट गवर्नर तथा वायसराय साहबकी सेवामें अर्जिया भेजी है जैसे:—नजीबाबाद, गया, कोल्हापुर, सिवनीछपारा, मलकापुर, टीकमगढ़, नादगांव, बाराबाकी, बड़ोदा, करनल, सोनकच्छ, हरदा, सांभर मोरेना, मन्दसोर तथा कई स्थानोंसे तार भी भेजे गये है यथा.— ललितपुर, जबलपूर साभर, शिमला इत्यादि.

महामंत्री तीर्थक्षेत्र कमैटी.

मास्टर दीपचन्दजी उपदेशकका भ्रमण ।

मेंदरगी—(कुरुंदवाड) २३—६—०७—जिन मंदिर १ व ग्रह संख्या ११ है सभामें ३५ नरनारी उपस्थित थे व्यर्थव्यय पर भाषण हुआ सरस्वती भडार बढानेका विचार निश्चित हुआ.

दुधनी—(कुरुन्दवाड) २६ से ३० जून तक—अनुमान २० नरनारी सभामें नित्य उपस्थित होते थे अनेक स्त्री पुरुषोंने शीलव्रत शास्त्र स्वाध्यायके यम नियम रूप प्रण किये भाई कस्तूरचदजीकी पुत्री चचलाबाईने योग्य सुशिक्षा प्राप्त की है वर्तमानमें पद्मपुराणजीका स्वाध्याय करती है सेठ लालचद हीराचदजीने बम्बई सभाके सभासद होना स्वीकार किया उपदेशक भंडारके लिये ३७) रु. चदा हुआ जिसकी सूची इसप्रकार है ।

२) सेठ हीराचद रखबचदजी
५) गाधी शिवचन्द आशारामजी
२) गाधी अम्बावीदास आशारामजी
५) गाधी खेमचद अम्बावीदासजी
११) शा० ज्योतीचद भीमचदजी
५) शा० हीराचंद जेठीरामजी
२) शा० लीलाचंद पदमचंदजी
५) शा० कस्तूरचंद खेमचन्दजी

३७)

प्रेरित ।

प्रेरित पत्र व लेखोंके सपादक जुम्मेवार नहीं है

सम्पादक जैनमित्रजी !

वर्तमान मासमें किसी कारण वश मेरा जाना मध्यप्रदेशके अन्तर्गत सिवनी—छपारा प्रान्तके लख-

नादौन कम्बेमें हुआ, वहांपर मुझे देशी शक्करकी आवश्यकता हुई, मैंने अपने नौकरको भेजकर बाजारसे शक्कर मगवाई, और उसे ताकीद कर दी, कि दूकानदारसे यह कहकर लाना कि यदि देशी न होगी, तो लौटादी जावेगी पश्चात्तापके साथ कहना पडता है, कि कई जगहसे शक्कर मंगवाई, पर विशुद्ध देशी खाड न मिली, ज्यों २ लोगोंको देशधर्मके विषयमें ध्यान दिलाया जाता है, त्यों २ स्वार्थी लोगोंको अधर्म करनेका अच्छा सुभीता हाथ आता है, तीन भाग देशी खाडमें एक भाग विदेशी पिसी खाड मिलाकर थोडेसे अर्थ लोभमें पड़कर लोग पापकर्मका विचार नहीं करते यह कैसे खेदकी बात है, लोग व्यर्थ वर्तमान सरकारको दोषी कहकर अपने पापकर्मोपर आवरण डालते हैं। जब मैंने अन्वेषण किया, तो मेरे खेदकी सीमा और बढ गई, कि प्राय शक्कर बेचनेवाले (थोक फरोश) जैनी थे, दो चार जैनी सज्जनोंसे मैंने नम्रभावसे पूछा, कि क्या यहा आप लोग देशी खांडका वर्ताव नहीं करते? उत्तर मिला, कि हम लोग खाते तो नहीं है, पर बेचनेमें कुछ हानि नहीं समझते।

हाय! धर्म-मर्म्मके अभावने जैनजातिके उन अनुयायी सज्जनोंसे ऐसा पोच और घृणित उत्तर दिलाया यदि वे लोग धर्मके तत्त्व (अहिंसा) को समझते, तो ऐसा कहने और करने दोनोंसे लजाते, अधिक पूछ ताछसे जाना गया, कि उनके मुखिया लोग सिवनीमें रहते हैं यदि वे प्रबंध करे, तो हो सकता है। गत वर्ष बम्बईसे शेठ माणिकचद पानाचंदजी सिवनी पधारे थे, उस समय उन्हों ने विदेशी खाडका प्रश्न उत्थापित किया था, आशा की गई थी, कि उनके कथनपर लोग ध्यान देकर इस पापकर्मसे वञ्चित होंगे, पर उसका केवल इतनाही असर (प्रभाव) हुआ, कि लोगोंने प्रत्यक्षमें खाना छोड दिया, क्योंकि उसी समय एक जैनी सज्जनने जो कि हलवाईका काम भी करते है, शक्करका नमूना लाकर दिखलाया, कि हम लोग तो इस खांड़को व्यवहारमें लाते हैं, जब बारीकीसे देखा गया, तो उसमें विदेशी खांड़ मिश्रित पाई गई, उपस्थित सज्जन अवाक रह गये।

मैंने अतमें विनयपूर्वक इतनाही कहा, कि जिस जैनजातिसे देशके लोगोंको इस विषयमें बडा भरोसा था, ` स्वयं भूलपर हैं, यह अत्यंत दुःख, लज्जा, पश्चात्ताप और खेदका हेतु है, थोड़ेसे जीवनके लिये अपने उपर ऐसे पापकर्म करके अत्याचार करना मानव धर्म्मसे परे है; मैं आशा करता हूं, कि न केवल सिवनी-छपारेके जैनी, वरञ्च समस्त भारतके जैनियोंको उचित है, कि वे अपने धर्मके मूलमंत्र 'अहिंसा परमोधर्मः' की पुष्टि करें, न कि मूलोच्छेदन कर अपने धर्मकी असारता दिखावें।

शुभचिंतक, मीर.

देवरी (सागर) में कन्याविक्रय प्रतीकारकी प्रतिज्ञा।

बडे हर्षका विषय है कि, जिस देवरीकी पंचायत आपसके लडाई झगडोंके कारण बदनाम हो रही है, और न जहा कोई सभा पाठशाला है, उसी देवरीमें जेठ सुदी १३ की रात्रिको एक ऐसा कार्य हो गया है, जिसकी सब ही विचारवान मनुष्य प्रशसा किये बिना न रहेंगे। वह कार्य कन्याविक्रयकी प्रथाके बन्द करनेका है। जैनमित्रके गत १६ वें अकमें इस प्रान्तमें कन्याविक्रयकी अधिकता है, इस विषयक जो एक चिट्ठी छपी है, उसे बाचकर यहाके लोग लज्जित हो रहे थे कि, इसी समय यहाके सुप्रसिद्ध बडकुर लटोरेलालकी कन्याके विवाहमें अनुमान ३०० परवार भाइयोंका समागम हुआ। और अवसर देखकर बम्बईप्रवासी भाई नाथूराम प्रेमीने गजके मदिरमें एक सभा करके जिसमें कि, जैनपुर, गौरझामर महाराजपुर, सहजपुर, टडा, बीना, बारहा, नरसिंहपुर आदि ग्रामोंके १५० के अनुमान सज्जन उपस्थित थे, एक प्रभावशाली व्याख्यान देकर कन्याविक्रयकी निंद्य रीतिके दोष वर्णन करके लोगोंके हृदयमें उससे अतिशय घृणा उत्पन्न कर दी। फल यह हुआ कि, उसी समय सब भाइयोंने धर्मकी शपथ करके निम्न लिखित प्रस्ताव स्वीकार किया —

"आज हम सब लोग इस बातकी शपथ करके प्रतिज्ञा करते है कि, जो कोई परवार (ग्राम तथा परग्रामका) अपनी लडकीका विवाह लड़केवालेसे रुपया पैसा अथवा किसी प्रकारकी सहायता लेकर करेगा, उसके यहा भोजन पानादि सर्वथा नहीं करेंगे, चाहे वह हमारा रिश्तेदार अथवा कुटुम्बी ही क्यों न हो। इसके सिवाय हम यह भी निश्चय करते हैं कि, यदि हमारे ग्राममें कोई गरीब मोहताज आदमी अपनी लडकीका विवाह करना चाहेगा, और वह रुपया लगानेमें असमर्थ होगा, उसको हम लोग अपनी २ हैसियतके अनुसार चन्दाकर देंगे, और सहूलियतसे विवाह करा देंगे। चन्दामें चारों तडके पच शामिल होंगे, परन्तु विवाह अपनी २ तडमें होवेगा फिल हाल हम लोग नीचे लिखे माफिक चन्दा देना मंजूर करते हैं।

२) लटोरेलाल बडकुर।
३) फदाली सिंघई।
५) मूलचन्द सिंघई।
४) परसादीलाल बजाज।
५) मनू मोदी।
४) भैयालाल बजाज।
४) नाथूराम पाडे।
४) दुलीचन्द प्यारेलाल।
४) खूबचन्द चौधरी।
२) सुखलाल चौधरी।
१) श्रीवशीधर भाइजी।
२) कितूरलाल चौधरी।
१) विहारीलाल चौधरी।
१) मूलू पाडे।
१) सुक्के चौधरी।
२) मनमोहन चौधरी।
२) नन्हू मोदी।
२) टूंडे मोदी।
२) नाथूराम सगरया।
१) रामकिशुन मोदी।
१) मूलूमोदी।
१) मोहनलाल चौधरी।
१) नन्हूं चौधरी।
० चऊमोदी
० कुंजी सिंगई
१) दलपत मोदी।
१) भैयालाल बडकुर।

दूसरे ग्रामोंके जो भाई उपस्थित थे, उन लोगोंके जीमें इस विक्रयकर्मसे घृणा तो पूरे तौरसे उत्पन्न हो गई थी परन्तु बिना अपने ग्रामके मुखियोंके वे लोग कुछ न कर सकैं, तो भी सब लोगोंने इस बातका निश्चय किया और देवरीके मुखियाओंने उसका अनुमोदन किया कि, आगामी अतिशयक्षेत्र श्रीवीनाजीके मेलेपर इस प्रान्त भरके लिये

खूब दृढताके साथ यह प्रस्ताव मंजूर कराया जावेगा। बडकुर लटेरेलालजीने इस बातका पक्का वचन दिया है, इससे खूबआशा है कि, आगामी पौषमास तक यहांके और ५०–६० ग्रामोंसे भी कन्याविक्रयकी दुष्प्रथाका काला मुंह हो जावेगा।

सब सज्जनोंका हितैषी

सुखलाल चौधरी

समाचार।

देवरी (सागर) में एक परवार बुंदेलखडका आकर रहने लगा था उसके साथ लडके बच्चे भी थे दो वर्ष तक उसने यहाकी परवार विरादरीके साथ खूब खाया पिया और धर्म कार्योंमे संग दिया। एक दिन उसके ग्रामके आदमी जब अचानक यहासे निकले तब उन्होंने पहिचान कर प्रगट किया कि इसकी स्त्री एक गहोई जातिकी विधवा है जो बहुत दिनमे लापता हो गई थी यह सुनकर यहाके भाइयोंने उसके साथ खानपान छोड दिया है। परन्तु खेद है कि अभी तक किसीने भी अपने इस पापका प्रायश्चित नहीं किया है विद्वानोमे सम्मति लेकर उन्हें इस पापसे अवश्यही निर्वृत्त होना चाहिये

बेलगाव—२४ जून ०७ को बेलगाव और समीपी ग्रामवासी भाईयोंकी सिखरजी विषयक सभा हुई स्टेट सेक्रेटरी सा०, वाइसराय सा०, और लेफ्टिनेट गवर्नर सा० को अर्जिया देनेका प्रस्ताव पास हुआ। जब छोटेलाट सा० सिखरजी पर जमीन तजवीज करने जावे उस समय एक डेप्युटेशन भेजनेका निश्चय किया गया सम्पूर्ण सज्जनोंने शक्तियानुसार द्रव्य देनेका वचन दिया है

बंबई सेठ हीराचन्द गुमानजी हीराबाग धर्मशालामें नीचे लिखे मुताविक मनुष्योंने विश्राम किया

श्वेताम्बर	८८
दिगाम्बर	५१
वैष्णव	९७
ब्राह्मण क्षत्री आदि.	३३६
	५७२

यदि किसी भाई को जैन धर्म सम्बन्धी विद्याध्यन करना हो तो नीचे लिखे पतेपर आकर यथेष्ठ विद्याध्यन करै.

गोपालदास वरैया

नाईपाडा, आगरा,

स्त्री सभा—जबलपुर जैन बोर्डिंग स्कूलके वार्षिकोत्सवपर श्रीमान सेठ माणिकचन्द हीराचदजी, जे. पी., और बाबू देवकुमारजीके साथ विदुषी मगनबाई और विदुषी चंदाबाई पधारी थीं आपके उद्योगसे २३, २५, और २९ जूनको स्त्री सभाए हुई, विदुषी मगनबाई गौरीबाई अकलेश्वर निवासिनी विदुषी ललिताबाई, विदुषी चंदाबाई, मुन्नीबाई (स्वेताम्बरी) आदि सुशिक्षित स्त्रियोंने स्त्री शिक्षा, कन्याशालाकी आवश्यकत्ता, विदुषी चन्दाबाईकी दक्षिण यात्राका वृतान्त, परोपकार चतुर्विधदान, पातिव्रत धर्म, सास बहूका परस्पर व्यवहार, ऐक्य आदि विविध विषयोंपर व्याखान हुए उपस्थित स्त्रियोने कन्याशालाके हेतु २८१॥) चंदा एकत्रित किया जबलपूर जैन कन्याशाला वा अन्यान्य स्थानोंकी कन्याओं और स्त्रियोकी परीक्षा ली गई २० कन्याओंको विदुषी मगनबाई और विदुषी चंदाबाईकी ओरसे स्त्रियोपयोगी पुस्तकें ओढनी (वस्त्र विशेष) और दो अध्यापिकाओंको साडिया विनरण की गई। २५ जूनकी सभामें ट्रेनिंग कालेजकी श्रीमती लेडी सुपरिंटेंडेंट साहिबाका शुभागमन हुआ था. उस दिन अध्यक्ष्याका स्थान आपहीने कृपा कर स्वीकार किया था आपने स्त्री सभाका प्रचार उत्तम समझ हर्ष प्रगट किया उस दिन उपस्थित सख्या ३०० से के लगभग हो गई थी। २९ जूनकी सभामें श्रीमती कौशल्या देवी (आर्य समाज उपदेशिका) भी अचानक आ पधारी थीं आपने स्त्री कर्तव्य पतिसेवापर धारा प्रवाही भाषण किया और मगनबाईजीने उनका उपकार मानकर गाली निषेधका विशेष विवेचन किया जिसके प्रभावसे अनेक स्त्रियोंने यम रूप और अनेकोंने नियमरूप गाली न गानेका प्रण किया।

जबलपुर मे सभा—२७-६-०७ को पंडित गिरधारी लालजीके सभापतित्वम एक वृहत सभा हुई बाबू देवकुमारजीके अनुरोधसे सिखरजीपर बंगले बननेका रोकनेकी चेष्टा करनेके लिये कमेटी बनाई गई। चदा एकत्रित करके कन्याशाला और स्त्री शाला खोली गई, सिंघई नारायणदासजीने संस्कृतशाला खोलना स्वीकार किया और मुन्नालालजी राजकुमारने एक वर्ष तक शिक्षा देनेका भार लिया। सिंघई नारायणदासजीकी ओरसे एक भोजनालय भी खोला गया जिसमें असमर्थ दिगम्बर जैनियोंको तीन दिन तक भोजन दिया जावेगा।

वार्षिकोत्सव—दिगम्बर जैन बोर्डिंग स्कूल जबलपूर का वार्षिकोत्सव २५ जूनको अतीव समारोहके साथ हुआ सभापतिका आसन आरा निवासी बाबू देवकुमारजीने ग्रहण किया था उपस्थित सख्या ५०० के लगभग होगी भाई नारायणरावजी मत्रीने रिपोर्ट पढकर सुनाई बोर्डिंग के सहायतार्थ २०८५) एकत्रित हुए। विदेशी गरीब बालकोंको अपनेही गावमें रहकर हिन्दीकी योग्यता प्राप्त करने तथा बोर्डिंग स्कूलमें भरती होने योग्य होने तक स्कालर्शिप दी जानेके लिये १०००) रु. चदा हुआ

शोकदायक मृत्यु—हमें यह लिखते अत्यन्त खेद होता है कि आकलूज निवासी श्रीमानसेठ पानाचद नाथाजी मिती जेष्ट शुक्ला ९ को इस असार धराधमसे प्रस्थान कर गये अवस्था आपकी ५५ वर्षकी होगी आप बम्बई प्रान्तिक सभाके उपसभापति थे। आपके किये हुए शुभ कार्य पाठकगणोंपर प्रगट ही हैं. कहते हैं कि मरनेके पूर्व आपने आलूजके भाइयोंमें परस्पर फैली हुई द्वेषाग्निको समूल बुझा दिया था और दोनों तडोंको एक करके अपने मृत्यु समयका स्मारक बना गये हैं। आपने अपने कुटुम्बी जनोंको समीप बुलाकर प्रतिज्ञा करवाई थी कि मेरे मरनेके पश्चात् कोई भी न रोवे और न कोई तिलमात्र भी खेद करै योंतो पृथ्वीके भार रूप अनेक स्त्रीपुरुष सदा ही आते जाते रहते हैं परन्तु ऐसे साधर्मी और जातिहितैषी सज्जनका वियोग सुनकर हमें अतिशय शोक हुआ है। इस संसारको इसी प्रकार अनित्य जानकर उनके कुटम्बीजन धैर्मावलम्बन करेंगे और उन्हीके समान सत्कार्य और धर्मोन्नति करनेमें सदा तत्पर रहेंगे

गढाकोटा हिरदेनगर (जि० सागर) से सोधिया दरयावसिंहजी लिखते हैं कि इस ग्राममें मोरस शक्करका सर्वथा प्रचार था सिर्फ जैनीमात्र अपनी जेवनार, शादी आदिमें देसी शक्कर का उपयोग करते थे खुशीकी बात है कि यहांके मालगुजार नायक हरप्रसादजी तथा स्वदेशीके प्रेमी छतरपुरिया पन्नालालजी वा सेठ अमरसिंहजी हजारीलालजीके पूर्ण उद्योगसे मिती ज्येष्ठ वदी ८. बाजे गाजेके साथ इस भ्रष्ट चीनीका नग्र निकाला किया गया. मौजूद मिठाई भिक्षुकोंको बाट दी गई और शेष भ्रष्ट चीनी दमोहको वापिस करदीगई इस सत्कार्यके लिये हम यहांके शक्करके व्यापारियों, हलवाइयों और उक्त सज्जनोंके आभारी है। आशा है कि भविष्यमें भी ऐसे सदुद्योगोंमे उक्त महाशय कटिबद्ध रहेंगे.

जैनमार्तण्ड.

नामक मासिक पुस्तक वर्धा मध्य प्रान्तसे निकलना है वार्षिक मूल्य डाकव्यय सहित ॥।) बारह आना है। १६ वें अंकमें ६।) छपगये हैं पाठक मशोधन कर पढे,

श्री हुकमचद दिगम्बर जैन बोर्डिंगस्कूल मालवा इन्दोर नशियाजीके लिये १ एक सुयोग्य उत्साही, धार्मिक, संस्कृत और इंग्रेजीमे एन्ट्रेन्सकी योग्यता रखनेवाले जैनी सुपरिन्टेन्डेन्टकी आवश्यक्ता है। योग्यतानुसार २०) से २५) तक वेतन दिया जा सक्ता है जिन सज्जनोंकी इच्छा हो वे मय सर्टिफिकेटोंकी नकलके अपना निवेदन पत्र भेजें.

हजारीलाल जैन,

मंत्री हुकमचद दिगम्बर जैन बोर्डिंगस्कूल,

मालवा इन्दौर

श्रीमती स्याद्वादपाठशाला काशी बनारसमें में ऐसे १५ (पन्द्रह) जैन विद्यार्थियोंके लिये स्थान खाली है, जो या तो प्रवेशिका पास किये हुए हों। या ऐसी योग्यता रखते हों कि दो वर्ष में प्रवेशिका पास कर सकें।

पत्रव्यवहारका पता—

सुपरिन्टेन्डेन्ट श्रीस्याद्वादपाठशाला, काशी,

भदैनीघाट पोष्ट—बनारस सीटी।

उदयपुरसे भाई कालूरामजीसे विदित करते हैं कि यहां क्षुल्लकजी महाराज श्री १००८ वल्लभसागरजीका शुभागमन हुआ था. आठ दिन रहकर धर्मोपदेश देते रह आप साधर्मी और शान्तिशील महात्मा हैं. ४६ दोष ३२ अन्तराय टालकर मुनियोंकी विधिसे आहार लेते हैं त्रकालसामायक करते और रात्रिको मौन धारण करते हैं। आपके सदुपदेशसे अनेक स्त्रीपुरुषोंने भांति २ के व्रत नियम ग्रहण किये, ये महाराज पहिले ९ साल तक श्वेताम्बरामनायमें रहे हैं परन्तु अनुमान १ वर्ष हुए कि उच्च श्रेणी चढ़नेके लिये शिखरजीके पहाड़पर क्षुल्लकजी महाराज कुन्दसागरकी साक्षी देकर श्रीजैन दिगम्बर दीक्षा गहण की है आप जोधपुर तरफके रहनेवाले मालूम पडते है हालमें चितोड़गढ पधारे हैं। धन्य है।

आर्षविधि अनुसार विवाह—हर्षकी बात है कि फूलवाडा नगरमें लाला जवानमलजीके सुपुत्र फूलचंदजीका विवाह जैनपद्धति अनुसार होगया. जैनमहासभाके उपदेशक पंडित गणधर लालजी द्वारा विवाह विधि कराई गई. वरात माडलगढ़के समीप महुआको गई थी. वैश्यानृत्य आदि कुरीतियां नहीं होने पाईं. श्रीजिनमंदिरजी महुवाको ५०१), श्रीअतिशयक्षेत्र चूलेश्वरजीको ६१), अनाथालय औषधालय आदिको ७३) प्रदान किये। पंडित गणधरलालजीके सारगर्भित व्याख्यान धार्मिक विषयोंपर हुए अनेक भाइयोंने दर्शन, स्वाध्याय, और शीलव्रत ग्रहण किये। भाई धरमचदजी चौधरी, जोरामलजी गोधा, और कस्तूरचंद गोधाकी ओरसे विद्यार्थियोंको उपहार वितरण किया। सम्पूर्ण जैनीभाईयोंसे प्रार्थना है कि अपने सन्ततिका विवाह इसी रीत्यानुसार करके धर्मकी बढवारी करेंगे।

शुरमा ! शुरमा ! ! शुरमा ! ! !

जैनग्रन्थ रत्नाकर कार्यालयके सिवाय हमारा एक **स्वदेशी कार्यालय** नामका विभाग है । जिसमें १० वर्ष हुए अनेक प्रकारके शुरमें बनते हैं और सब भाइयोंके नेत्रोंकी रक्षार्थ सहायता पहुंचाई जाती है । हमारे यहांके बने हुए शुरमें सर्व साधारण और जैन समाजमें प्रसिद्ध हैं जिन २ महाशयोंने हमारे यहांसे एक बार एक शीशी मगाई हैं, वे आज तक हमारा ही शुरमा मगातेहैं और अपने दोस्तोंकेलिये भी मगा देते हैं इसकारण हमने इसके विशेष इस्तहार न देकर जो भाई इस शुरमेसे अपरिचित हैं उनको इसके प्रत्यक्ष गुण दिखानेके लिये **सर्व-प्रकारके शुरमेकी २००० शीशियें विना मूल्य** बतौर नमूनेके वितरण करनेका प्रबध किया है. सो जिनको इस शुरमेसे अपने अमूल्य नेत्रोंकी रक्षा करना हो, वे नीचे लिखे शुरमोंमेंसे चाहे जिस प्रकारके शुरमेकी एक शीशी मंगा लेवैं परतु डाकखर्च और पेकिंग खर्चके लिये ≶) आनेके टिकट चिट्ठीके साथ अवश्य ही भेजने होंगे एक भाईको एक ही शीशी भेजी जायगी ।

*** काला शुर्मा नं० १** यह शुर्मा हमेशह नेत्रोंमें लगानेसे सब रोग वा आखोंकी गर्मी नष्ट करके ज्योतिको बढाता है । मूल्य आधे तोलेकी शीशीका ॥) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

*** कालाशुर्मा न २** इस शुरमेको प्रात काल और सोत समय लगानेसे नत्रोंके सब रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं । यह शुरमा बहुत बढिया और ठडा है—इस शुरमेको भीपालपटनमके तहसीलदार साहब मूलचदजी परवार प्राय. ८ वर्षसे लगाते है इन्होंने अपने अनेक हितैषी उहदेदारोंका इस शुरमेके भक्त बनाये हे उनके अनेक प्रशसा पत्र हमारे पास हैं हम उन्हें न छपाकर इतना ही कहते ह कि १ शीसी मगाकर अवश्य ही आजमा लेवें । मूल्य आधे तोलकी शाशीका १) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

***सफेद शुरमा न० ४** इस शुरमेको सबेरे तथा शामको चार बजे लगाकर ५ मिनिटके बाद न० २ का ठडा शुरमा लगाया जावे. ध्वद नजला, दृष्टिमन्दता, रतौंदा आदि नत्रके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं । असली मधुसे (शहदसे) सलाई भिगोकर अथवा शुरमेको मधुमें मिलाकर सलाईसे लगाया जावे तो एक वर्षतकका फूला भी प्रायः कट जाता है परतु शहद असली न होगा और उसमें खाडकी चासनी वगैरह मिली होगी तो उल्टा नुकसान करेगा. मूल्य डेढ मासेकी शीशीका १) नमूना आधा मासा ।

***नयनामृत अर्क नं० ८** इसको सलाईसे दिनरातमें तीन चार बार लगानेसे न० १ के मुवाफिक गुण करेता है । मूल्य ।) नमूना मुफत ।

*** तरल शुरमा (अर्क) नं० ९** मूल्य ॥) मर्दों व विधवा स्त्रियोंके लिये है । तथा दुखनी आईहुई आखोंके लिये तो यह रामबाण है. तीन चार दिन तक दिनरातमें ४ बार लगानेसे दुखती आई हुई आंखोंको आराम कर देता है । एक २ शीशी सब गृहस्थोंको अपने घरमें रखना चाहिये, जो महाशय, दुखती आंखोंवालोंको मुफत बांटना चाहें उन्हे हम इसे बहुत किफायतसे भेज सकते हैं।

पवित्र स्वदेशी कशमीरी केशर ।

सूरज छाप वगेरह विलायती केशरमें शराब वगैरह अशुद्ध पदार्थोंका मेल होता है यह बात अब जगत्प्रसिद्ध हो गई है इसकारण मुम्बईके स्वेताम्बरी भाइयोंने पचायती करके स्वदेशी पवित्र कशमीरी केशरकेलिये एक दुकान खोल दी है, और काशमीरमें खास जैनीभाई भेजकर गांव २ के किसानोंसे खरीदकर केशरका सग्रह करके सर्वत्र पवित्र केशरके पहुचानेका प्रबध किया है । अनेक भाइयोंने इस केशरमें भी अशुद्ध पदार्थ मिले हुवे बताये थे इसकारण भारतवर्षके जगत्प्रसिद्ध पदार्थ विज्ञानके प्रोफेसर गज्जर महाशयके कारखानेमें यह केशर भेजकर परीक्षा कराई तो उन्होंने नीचे लिखा सार्टीफिकट भेजा है ।

TECHNO CHEMICAL LABORATORY,
Director--Prof T K gajjar
M A. B S E. & C S
Girgaum Tram Terminus.
Bombay, 9th February 1907

THE SWADESHI Co,
Mandvi Bombay.

Dear Sirs,

The Sample of Swadeshi Saffron sent by you has been found to be a pure genuine Sample of Saffron unmixed with any adulterants.

Yours faithfully,
(Sd) D D KANGA,
Anatytial Chemist

इस कारण हमको पूर्णतया विश्वास होनेपर हमने भी दिगम्बरीय जैन समाजमें इस केशरका प्रचार करनेके लिये जैनमित्रमें इस्तहार दिया है सो जिन भाइयोंको यह पवित्र केशर चाहिये (अगर हमारा विश्वास हो तो) हमसे ही मगाया करें । अन्य जगहसे मगायेंगे तो असली पवित्र केशर मिलना मुशकिल है । मूल्य १।) रु. तोला । पाव रतल, आधा रतल या एक रतल इकट्ठी लेनेसे ४५) रु रतल है । रतल ३९ तोलेका होता है । यह भाव थोडेही दिन रहेगा क्योंकि माल बहुत थोडा रह गया है सो शीघ्र ही भाव चढ जायगा ।

मिलनेका पता —

पन्नालालजैन मालिक स्वदेशी कार्यालय ।
ठि० हीराबाग—पोष्ट गिरगांव (मुंबई)

स्याद्वादपताका ।

इस पत्रिकामें मासिक जैनमित्रके समान ४० पृष्ठ छपा करेंगे । जिसमें स्याद्वादमतसार, तत्त्वार्थसार (जैन सिद्धांतदर्पण) समयसार नाटक तीन चार टीका सहित, प्राचीन उपन्यास, प्रथसमालोचन व सामयिक लेख जैनी अजैनी सबके पढनेलायक छपैंगे । जो माहाशय ६ मासतक मूल्य भेजकर ग्राहक बनेंगे उनको क्षत्रचूडामणि परसे बनाया हुआ 'जीवंधर' उपन्यास विना मूल्य भेजा जायगा ।

इसका वार्षिक मूल्य सर्व साधारणके लिये २॥) रु और धनाढ्य, रईस, जमीदारोंसे ५) रु. लिया जायगा परतु भिन्नधर्मी विद्वानोंसे कुछ नहीं लिया जायगा । जो महाशय ५०) रु. एकदम सहायता देंगे उनको पत्र और भेटके पुस्तक यावज्जीव विनामूल्य भेजैंगे । पत्रिका ३०० ग्राहक हो जानेपर छपैगी इसकारण शीघ्र ही भाइयोंको ग्राहक बन जाना चाहिये ।

पत्र भेजनेका पता—गणेशप्रसाद जैन,
ठि० स्याद्वादपाठशाला, काशी।
पोष्ट—बनारस सिटी।

* भक्तामरस्तोत्र ।

अन्वय, हिन्दी अर्थ भावार्थ और कविवर भाई नाथूराम प्रेमी कृत नवीन भाषा पद्यानुवाद सहित ।

इसमें रत्नकरण्डके समान पहिले प्रत्येक श्लोकका अन्वयानुगत पदार्थ लिखकर फिर प्रत्येकका भावार्थ लिखा है । पश्चात् हरिगीतिका और नरेन्द्र छन्दमें उसकी सुन्दर कविता बनाई गई है, जिसमें मूलका कोई भी भाव नहीं छोडा है । यहां उदाहरणार्थ आठवें श्लोकका एकही पद्य हम नकल करते हैं,—

जिननाथ अस जिय जानिकै, यह आपकी विरदावली । है समझ थोरी तऊ प्रारंभ, करत हौं सुखलावली ॥ सो हरहिंगी मन सज्जनके, तुव प्रभावहिंसों भली । जलबिन्दु ज्यों परि कमल दलपैं, दुतिधरै मुकताफली ॥ ८ ॥

टिप्पणीमें अनेक प्रतियोंसे इकट्ठे करके पाठान्तर और कठिन शब्दोंके अर्थ दिये हैं । श्रीमानतुंग महाराजका चरित्र भी दिया गया है । अभी तक ऐसी कोई भी टीका नहीं छपी । पाठशालाओंके विद्यार्थियोंके लिये यह बडे कामकी चीज है । मूल्य मात्र ।) रक्खा है ।

तत्त्वार्थसूत्रकी बालबोधिनी भाषाटीका ।

तत्त्वार्थसूत्र हम लोगोंका परम पूज्य और मान्य ग्रन्थ है । इसे प्रत्येक जैनी पढना पढाना अपना परम धर्म समझते हैं । इसके एकबारके पाठ मात्रसे एक उपवासका फल होता है । यह ग्रन्थ जैसा उपयोगी है और जैनधर्मके पदार्थोंका अटूट समुद्र जिस प्रकार इसमें भरकर गागरमें सागरकी कहावत सिद्ध की गई है, उसके कहनेकी जरूरत नहीं है । इसकी प्रशसा प्रगट करनेके लिये इस ग्रथपर जो अनेक टीकायें बनाई गई हैं, वे बस हैं । परन्तु खेद है कि, अभीतक इसकी कोई ऐसी टीका छपकर प्रकाशित नहीं हुई, जो पढनेवाले विद्यार्थियोंकी समझमें सहजमें ही आ सके । अभीतक, जो टीकाये छपी हैं, वे विशेष ज्ञानियोंके समझने योग्य हैं, बालकोंके लिये जिस क्रमसे होनी चाहिये, उस क्रमसे नहीं हैं । इस अभावकी पूर्तिके लिये हमने यह भाषाटीका तयार की है । यह टीका भाइयोंमें बाचनेके लिये भी बडे कामकी है । साधारण भाई भी इससे सूत्रोंका अर्थ बांचकर समझ सकते हैं । रत्नकरण्डके समान इसमें भी पद पदका अर्थ किया गया है । और विशेष बातें भावार्थ तथा टीकामें लिखी गयी हैं । इसको एक बार पढ लेनेसे फिर सर्वार्थसिद्धि आदि बडी टीकाओंके पढनेमें गति हो जावेगी । यह टीका विद्यार्थियोंके बडे ही कामकी है । इसे बिना गुरुके पढकर विद्यार्थी बडी सुगमतासे परीक्षा दे सकता है । जहांतक बना है, प्रत्येक पदार्थके लक्षण व स्वरूप इसमें संक्षेपतासे लिखे गये हैं । मूल्य मात्र १२ आने रक्खा गया है । पाठशालाओंके अध्यक्षोंको नमूनेके लिये इसकी एक एक प्रति जरूर मंगानी चाहिये ।

मिलनेका पता—पन्नालाल जैन,
मालिक—जैन ग्रंथ रत्नाकरकार्यालय,
पो० गिरगांव, बम्बई

' कर्नाटक ' प्रेस बम्बई ।

Registered No. B. 288.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमे व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबी कार्ड या टिकट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
दूसरा भोईवाडा पो० कालबादेवी
बम्बई।

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

वर्ष ८वां] श्रावण कृष्णा २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द। ता० २७ जुलाई सन् १९०७ ईस्वी। [अंक १९ वां।

जरूर बांचिये।

सर्व साधर्मी धनी गुनी गृहस्थोंको प्रगट हो कि मान्यवर लेफ्टनेंट गवर्नर बगाल, ४ सितम्बरको शिखरजी पर आनेवाले है। इस प्रसङ्गपर जैनसम्प्रदायके पण्डितोंको शिखरमाहात्म्यादि प्राचीन आर्ष ग्रन्थोंसे, वकील, बैरिस्टर सालिसिटर महाशयोंको जजमेंट पिगरी केस (चर्बीका मुकद्दमा) वा इकरारनामेंसे, कारवारियोंको सनद दस्तावजोंसे और सर्व साधारणको अपनी गाढ भक्तिसे सिखरजीकी सर्वांग पूज्यताका फोटो खीचकर दिखा देना चाहिये। प्रत्येक स्थानके पंचोंका यह प्रधान कर्तव्य है कि १०–२० प्रतिनिधियों (Delegates) को अपनी ओरसे अगस्त मासके अन्तमें शिखरजी भेज देवें। अब केवल सवा महिना अवशेष है, शिखरजी सम्बन्धी दौड़ धूप–और पूर्ण आन्दोलन करनेका यही मौका है। महासभा वा प्रान्तिक सभाके मंत्रियोंको अभीष्ट है कि, वे यथोचित स्थानोंमें उपदेशकोंका दौरा करावें, शिखरजी सम्बन्धी जाग्रति करें और पंचायतोंसे चंदेकी प्रेरणा करें। दिगम्बरी धनवन्तोंको उदार चित्तसे ऐसे परमार्थके कार्यमें यथेष्ट सहायता करनी चाहिये–उक्त मौकेपर सहस्रो जैनियोंको शिखरजी पधारना चाहिये। निश्चित तिथिको विना विलम्बके रवाने होजाना चाहिये। अन्तरङ्गकी भक्तिका आदर्श अर्जियो वा तारोंमे ऐसा नहीं विदित होता जैसा कि वहा उपस्थित हो सन्मुखमें पुकार करनेसे हो सकेगा. यदि जैनी भाइयोने ता. २९ मईके तुल्य वहां–जानेसे अवहेलना की, तो फिर सदाके लिये पश्चत्ताप करते रहेंगे "गया वख्त फिर हाथ आता नही." अतएव लाख गृह कार्य छोड़कर उस समय अवश्य २ शिखरजी पधारनेका प्रबन्ध कीजिये, जिसमे विधर्मियोंको पट्ठे देनेका विचार रद्द कर दिया जावे।

निवेदक—

हीराबाग आफिस— ता० २३-७-०७. } माणिकचंद हीराचन्द जे. पी. महामंत्री तीर्थक्षेत्र कमैटी.

आवश्यक सूचना।

लाट साहबका अर्जी या तार सम्बन्धी उत्तर

विदित हो कि, श्रीमान् लाट साहब (Miceroy) को ता. १४ जुलाईको बम्बई दिगम्बरजैन सम्प्रदायकी ओरसे जो अर्जी भेजी थी, तथा ता. १८ जून ०७ को भारतवर्षीय दिगंबरजैनतीर्थक्षेत्र कमेटीके महामंत्रीके ओरसे जो तार भेजा गया था, उनका जबाब शिमलासे लाट साहबने ता. १६ जुलाई ०७ ई. को अपने डिपुटी सेक्रेटरी जी. बी. एच. फेल स्क्वायर G B. H Fell, Esu.,) के पत्र नम्बर २७५४, १७४९ के द्वारा भेजा है, उसका मतलब यह है कि—

आपकी अर्जी, पारसनाथ पहाड जो हजारीबाग जिलेमें है उस पर मकानात बनानेको पट्टे देने बाबत ता. १४ जूनकी आई है (तथा तार जो ता. १८ जूनका आया है) उसकी पहुच लिखनेको मुझे आज्ञा दी गई है।

२. उत्तरमे मैं आपको प्रगट करता हू कि, मान्यवर लेफ्टनेंट गवर्नर साहब बगालने अगस्तके अन्तमें वा सिप्टेम्बरकी आदिमें शिखरजी जाकर वहांकी तपास (inquiry) करनेका इरादा प्रगट किया है। उस समय जैन सम्प्रदायको अपने मन्तव्य दर्शानेका पूरा मौका दिया जायगा। मै यह भी प्रगट करता हूं कि, जब तक मान्यवर लेफ्टनेंट गवर्नर वहांकी चौकसी न कर लेवेंगे, पर्वतके पट्टेकी कार्यवाही नहीं की जावेगी।

माणिकचन्द हीराचन्द।

जैनमित्र.

श्रावण कृष्णा २ श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४३३ ता० २७ जुलाई सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

हमारी पूंजीसे विदेशी बेंक और विदेशी-व्यापार।

चतुर अंग्रेजव्यापारियोंने अपने बाह्यचाकचिक्यमें हमको इस तरह मोहित कर रक्खा है कि, हमलोग अपने हिताहितको बिलकुल भूल गये है। अंग्रेजी बेंकोंके स्थापित होनेके पहले हमारे यहाके वे लोग जिनकी आमदनी खर्चमें अधिक है, अपने बचनके द्रव्यको व्याजके लोभसे देशके बडे २ कोठीवाल हुडीवाल महाजनोंके यहा जमा कर देते थे। और कोठीवाले उस एकत्रित द्रव्यको साहसी उद्यमी कारीगरोंको, व्यवसायियोंको तथा किसानोंको देकर देशके शिल्पव्यापारकी वृद्धि किया करते थे, साथ ही अधिक व्याज लेकर आप भी नफा उठाते थे। परन्तु ज्यों ही विदेशी धनको जोंककी तरह चूसनेवाले अंग्रेजोंके बेंक यहापर स्थापित हुए, त्यों ही हमारे यहाके कोठीवाल महाजन हाथपर हाथ रक्खे हुए रह गये। हमारे भोले भाईयोंने इन विदेशी बेंकोंकी मनोहारिणी सामिग्री, नवीन पद्धति और लेन देनकी सफाई देखी कि, महाजनी कोठियोंसे रुपया निकाल निकालकर उनमें जमा करना प्रारंभ कर दिया। यह नहीं सोचा कि, इससे हमारे देशका हित होगा या अहित। फल यह हुआ कि, जिस पूंजीसे यहाके निर्धन कारीगरों तथा व्यवसायीलोगोंको सहायता मिलती थी, और कोठीवाल महाजन लाभ उठाते थे, उसीसे विदेशीव्यापार चटक उठा और विदेशीव्यवसायी सहायता पाकर नये नये कलकारखाने खोलकर हमारा सर्वस्व हरण करने लगे। साथ ही हमारे यहांके कारीगर तथा व्यवसायी निरुद्यमी होकर भूखों मरने लगे और देशीव्यापार रसातलको जाने लगा।

हिन्दुस्थानके बेंकोंकी सन् १९०३ की रिपोर्ट देखनेसे जान पड़ता है कि, यहापर बंगाल बेंक, बम्बई बेंक, आदि रजिष्टर्ड जाइंट स्टॉक बेंकोंकी कुल पूंजी करीब १ करोड ४० लाख रुपया थी। इस पूंजीसे उस समय विदेशी व्यापारियोंने १४ करोड ९० लाखका विदेशी व्यापार किया। अर्थात् १०० का विदेशी व्यापार १० की पूंजीमें किया। तबसे विदेशी व्यापार अब तक बराबर बढ रहा है, परन्तु आश्चर्य है कि, उक्त बेंकोंकी पूंजी ज्योंकी त्यों बनी है। क्यों? इसलिये कि, हमारे यहाके अनभिज्ञ लोग देशी महाजनोंके यहासे रुपये निकाल निकालके उनमें जमा कर रहे है, फिर विदेशी बेंकवाले ऐसा मुफ्ती धन पाकर अपनी पूंजी क्यों लगाने चले? विदेशी बेंकोंके चाकचिक्यने यहाके लोगोंको किस शीघ्रतासे आकर्षित किया, यह जाननेके लिये यही उदाहरण बस होगा कि, सन् १८९९ में हम लोगोंने उनमें २१ करोड और १९०० में ३४ करोड रुपये जमा किये थे। रजिष्टर्ड बेंकोंके सिवाय यहापर विदेशियोंके प्रायव्हेट बेंक भी बहुत है। सन् १९००में अनुमान १५ करोड रुपये उनमें भी हमलोगोंने जमा किये थे। अर्थात् उसवर्ष हमने विदेशियोंको विदेशी व्यापार करने और मालामाल बनानेके लिये ४९ करोडकी पूंजी अपने हाथमें दे दी। यदि यही पूंजी हमारे यहाके व्यवसायोमें लगती, तो देशको कितना लाभ होता? खेद है कि, विलायतीव्यापारियोंकी कूटनीतिके परदेमें आज तक हमलोग इस बातको न जान सके। अस्तु, हमको अब भी सचेत हो जाना चाहिये और अपने प्राणस्वरूप धनको विदेशी बेंकोंमे निकालकर स्वदेशी बेंकोंमे जमा करके देशके व्यापारमे सहायता देनी चाहिये। इसके सिवाय देशके धनिकगणो तथा महाजनोंको चाहिये कि, पुरानी पद्धतिकी कोठियों—पेढियोंके स्थानपर वर्तमान कालके अनुसार नये २ बेंक खोलकर अपनी सत्य पद्धतिसे लोगोंका विश्वास सम्पादन करें, जिससे वे स्वयं स्वदेशी बेंकोंमें अपना द्रव्य जमा करानेको उत्सुक होवे।

जो लोग इस अंधविश्वासमें पडे हुए हैं कि, विदेशी बेंकोंमें किसी बातका भय नहीं है, वे बड़ी गलती पर हैं। यही विश्वास हमारे सत्यानाशका द्वार है। उन्हें जानना चाहिये कि, गतवर्ष मद्रासकी अकेली अरबथनाट कम्पनीने ३ करोड़ रुपयेका दिवाला निकाला था, और वह भी ऐसा कि, लोगोंको रुपयेमें एक आना भी नहीं मिल सका। इसी तरह मद्रासकी बिनी कम्पनीके बेंकने भी दिवाला पटका है। दो तीन वर्ष पहले बम्बईकी वाट्सन कम्पनीने और २५ वर्ष पहले आगरा बेंकने दिवाला निकाला था। फिर कैसे समझा जावे कि, देशी कोठियो अथवा बेंकोंकी अपेक्षा विदेशी बेंकोंमें रुपया जमा कराना अच्छा है। हमारी समझमें तो देशीबेंक यदि औरोंकी अपेक्षा अधिक दिवाला निकालें, तौ भी उन्हींमें रुपया जमा कराना चाहिये, क्योंकि उनमें डूबा हुआ रुपया आखिर देशमे रहता है। परन्तु विदेशी बेंकोंका रुपया तो सात समुन्दरके पार चला जाता है। क्या अरबथनाट कम्पनी द्वारा तीनकरोड रुपयाकी हानि हम लोगोंके अंधविश्वासका प्रायश्चित्त नहीं है?

स्वदेशी आन्दोलनसे लाभ।

देशको सुख—वैभव—सम्पन्न बनानेके लिये वर्तमान समयमें इससे बढकर कोई उपाय नहीं है कि, देशके लोग अपने देशके बने हुए पदार्थोंसे ही अपनी आवश्यकताओंको पूरी करें। जिस तरह अपने माता पिता भाइयोंसे हम प्रेम करते है, उसी प्रकार अपने देशके बने हुए पदार्थोंसे प्रेम करें। यही स्वदेशी आन्दोलनका अभिप्राय है। इस स्वदेशी आन्दोलनसे विदेशी व्यापारियोंके स्वार्थकी हानि होती है। इसलिये उन लोगोंसे जहा तक बन पडता है, ऐसा प्रयत्न करते हैं, जिससे स्वदेशी आन्दोलनका उलटा फल प्रगट किया जावे और स्वदेशी प्रेमी अपने कर्तव्यसे निराश हो जावें। परन्तु बुद्धिमानोंको उनके धोखेमे नहीं आना चाहिये, और सपत्तिशास्त्रके इस नियमपर ध्यान रखके कि "जिस वस्तुका व्यवहार कम होता है, उसकी आय भी कम होने लगती है" अपनी प्रतिज्ञामें अचल रहना चाहिये। जब बिलायती शक्करका गाव गाव, नगर नगर बडी तेजीसे बहिष्कार हो रहा है, और स्वदेशी शक्करका व्यवहार बढ रहा है। तब किसीके इस कहनेपर कैसे विश्वास कर लेना चाहिये कि, 'बिलायती शक्कर' जितनी पहले व्यवहारमें आती थी, उससे अब अधिक आती है? हम जो कुछ करते हैं, उसका फल मिल रहा है, और आगे मिलेगा। इतने थोड़े समयमें हमारे आन्दोलनसे २५—३० के अनुमान नई कपड़ेकी मिलें खुल चुकी हैं।

सन् १९०५-१९०६ में कलकत्ता बन्दरमें २१ करोड ४४ लाख रुपयेका विलायती कपडा उतरा था, परन्तु १९०६-०७ में केवल १८ करोड ६२ लाखका उतरा है। कहिये, एक सालमें एक प्रांतके द्वारा कुछ कम तीन करोड रुपया लाभ क्या थोडा है? यदि अपनी प्रतिज्ञामें अटल रहकर हम लोग काम करते जावेंगे, तो एक दिन ऐसा आवेगा, जब हमारे यहां विलायतका एक धागा भी न आने पावेगा।

हमारे पत्रोंमें जैनसमाचारोंकी कमी।

हमारे समाजमें शिक्षा और उत्साहकी कमी होनेसे हमारे समाचारपत्र प्राय: जैन समाचारोंसे कोरे रहते हैं। प्रत्येक ग्राम, प्रत्येक नगरमें ऐसे २ कार्य हो जाते है, जो वर्णन करने योग्य होते है। परन्तु कोई भी सज्जन उन्हें समाचारपत्रोंमें छपनेके लिये नहीं भेजते। लाचार हम लोग या तो दूसरे पत्रोंसे कुछ यहा वहाके समाचार छाटकर अपने पत्रोंको भर लेते है, या समाचार छापते ही नहीं है। परन्तु ऐसा करते हुए हमको खेद अवश्य होता है। यदि हमारे हजार ग्राहकोंमेंसे १००-५० ग्राहक ही ऐसे उत्साही निकल आवे, जो अपने यहाके ताजे सम्वाद भेजनेकी कृपा कर दिया करें, और यह कुछ कठिन काम भी नहीं है, टूटीफूटी भाषामें सत्यार्थबात हर कोई पढा लिखा लिख सकता है, तो हमारे पत्रकी एक बडी भारी त्रुटि पूर्ण हो जावे। समाचारपत्र नाम धारण करके समाचारोंसे कोरे रहना शोभा नहीं देता। इसके सिवाय प्रत्येक स्थानके समाचार प्रकाशित होते रहनेसे लोगोंके उत्साहकी वृद्धि होती है, अन्याय करनेवालोका अपमान होता है, समाजका बल बढता है, एक दूसरेकी देखादेखीसे धर्मकार्य होने हैं और लोगोंको नानाप्रकारका अनुभव प्राप्त होता है। हम आशा करते है कि, पाठकगण हमारे इस नोटपर विचार करेंगे, और निरन्तर अपने यहाके ताजे समाचार भेजते रहनेकी कृपा किया करेंगे। उनके भेजे हुए सम्वाद बडी खुशीसे छापे जावेगे। साथ ही जो महाशय हमेशाके लिये हमारे सम्वाददाता बनेंगे, उन्हें हम जैनमित्र भेंटमें भेजनेका प्रयत्न करेंगे।

सम्पादकीय स्कूलमें उपसम्पादकीय भ्रम।

सहयोगी हिन्दीकेसरीने पजाबी तथा भाला आदिके सम्पादकोंको जैलमें जाते देखकर सम्पादकीयस्कूल शीर्षक एक परिहासयुक्त नोट किया था, उसमें जहलखानोंको स्कूल, जुर्मानेको स्कूल फीस, दंडसंग्रहकी दफा १२४ (अ) १५३ (अ) और ५०० को पठनविषय, और जैलकी अवधिको कोर्सकी अवधि कल्पना करके लाहौर, पूना आदि स्थानोंको स्कूलोंके स्थान बतलाये थे। यह भी लिखा था, जो इस स्कूलमें उत्तीर्ण हो जाते है, उन्हें 'देशभक्त'की उपाधि मिलती है, और वे बडी आदरकी दृष्टिसे देखे जाते है। इसका साराश यह है कि, जो स्वदेशके लिये जैल जाते हैं, वे देशभक्त और सत्कारभाजन बनते है। परन्तु हमारे जैनगजटके उपसम्पादक महाशयने अपनी तीक्ष्ण बुद्धिसे इस नोटको सच्चा अकल्पित, समझकर अपने सम्पादकसमाजके समान सम्पादकीयस्कूलके खोलनेकी खुशी मना डाली। साथ ही प्रार्थना कर डाली कि, स्कूलकी फीस अभी बहुतकम करनी चाहिये, क्योंकि इतने रुपये देनेकी सामर्थ्य बहुत कम देखी जाती है। सम्पादकीयस्कूलसे पत्रव्यवहार करनेका ठिकाना "सैक्रेटरी जन्मभूमि आफिस, ३३ करोड स्वतत्रता स्ट्रीट स्वराज्य" ऐसा स्पष्ट और शीघ्रबोधप्रद लिखा था। अफसोस है कि, तो भी आप लेखके परिहासको न समझ सके। सम्पादकोंके द्वारा ऐसी भूल नहीं होनी चाहिये। (यह नोट स्थान न मिलनेसे अभी तक पडा रहा था।)

खजुराहोके मन्दिर।

गतवर्षके अक २२-२३ में खजुराहोके जैन मन्दिरोंके विषयमें एक लेख लिखा जा चुका है। उसमें वहाके मदिरोंका सामान्य वर्णन और सक्षिप्त इतिहास जितना प्राप्त हो सका, हमने लिखा था। अब मईकी सरस्वतीमें इस विषयका एक अच्छा लेख निकला है। उसमें विशेष खूबी यह है कि, वहाके बडे २ मन्दिरोंके ७ फोटो दिये है, जिनके देखनेसे साक्षात् दर्शनके सदृश आनन्द प्राप्त होता है। जिननाथ और आदिनाथ नामके दो जैनमन्दिरोंके भी उसमें फोटू है। हम अपने पाठकोंसे सिफारिश करते हैं कि, वे सरस्वतीका उक्त अंक मँगाकर अवश्य ही पढ़ें। यहापर हम उन बातोंका उल्लेख कर देना उचित समझते हैं, जिनका जिकर हमारे पूर्वलेखमें नहीं हुआ है।

जिस खजुराहोका आज लोग नाम तक नहीं जानते और जो अब एक छोटासा ग्राम मात्र है, वही खजुराहो हजारों वर्ष तक बडेभारी प्रान्तकी राजधानी रहा है। बुन्देलखडका प्राचीन नाम जजोती, जझोती या जझावती था। जजोतिया (यजुर्होता) ब्राह्मणोंकी अधिकता होनेसे ही शायद इस प्रान्तने जजोती नामसे प्रसिद्धि पाई होगी। जजोती प्रान्तका नाम सबसे पहले चीनीयात्री हुएनसगके ग्रंथमें मिलता है, जो सातवीं शताब्दिमें यहा आया था। उसने खजुराहो राजधानीका विस्तार शामिल बतलाया है, और लिखा है कि, साधु और सन्यासियोंहीकी उसमें अधिक बस्ती है। १०२२ ईस्वीमें महमूदने कालिंजरपर चढाई की थी। उसके साथ आबूरिहान नामक एक इतिहासलेखक था। पहले पहल उसीके लेखमें खजुराहोका नाम पाया जाता है। इसके पश्चात् १३३५ ई० में आनेवाले इब्नभटूटा नामक लेखकने अपने ग्रन्थमें खजुराहोका उल्लेख किया है।

कनिंहाम साहबका अनुमान है कि, हुएनसगके समय खजुराहोमें ब्राह्मणोंका राज्य था। उसके अनन्तर गुप्तवशीय राजाओंका हुआ और सबसे पीछे चन्देलोंका। महमूदकी चढाईके समय वहा नन्दराय नामक राजा था। खजुराहो मैदानमें था, इसलिये वहाके किलेका रहना कुशलपूर्ण न समझ कर वह कालिजरके पहाडी किलेमें चला गया। वहासे कुछ काल पीछे उसने या उसकी सताननें महोबामें रहना पसन्द किया। बारहवें शतकके अन्ततक चन्देलवशीय राजाओंने अपनी राजधानी महोबेमें रक्खी। परन्तु जब तेरहवें शतकके प्रारभमें कुतुबुद्दीनऐबकने कालपी और महोबेको जीत लिया, तबसे चन्देलराजा फिर कालिंजरमें रहने लगे। जब तक चन्देल महोबेमें रहे, तब तक खजुराहो धीरे २ अवनति करता गया, परन्तु महोबा छोडते ही तो यह सर्वथा श्रीविहीन हो गया।

खजुराहो गावके चारों तरफकी भूमि मन्दिरों और उनके खडहरोंसे घिरी हुई है। कुछ मन्दिर करार नामक नालेके तटपर भी हैं जो कि, गांवसे कोई मील भर है। ये टूटे फूटे मन्दिर दूर दूर तक चले गये है। इन इमारतोंके फैलावके देखनेसे हुएनसगका लिखा हुआ विस्तार ठीक जान पड़ता

है । हुएनसंगके लिखे हुए तत्कालीन इमारतोंके वर्णनसे यह सिद्ध है कि, कमसे कम ईसाकी पहली सदीमें खजुराहो अस्तित्वमें था । अर्थात् वहांके कोई २ खंडहर दोहजार वर्षके पुराने हैं।

हमारे पहले लेखमें जो ७ जैनमन्दिर बतलाये गये हैं, उनके नाम इस प्रकार है,-पार्श्वनाथ, आदिनाथ, पार्श्वनाथ, जिननाथ, सेतनाथ (शान्तिनाथ), आदिनाथ, और घटाई (गन्थाई)। घटाई मन्दिरको सरस्वती सम्पादकने बौद्धमन्दिर बतलाया है, परन्तु वह यथार्थमें जैनमन्दिर है । शायद जनरल कनिंहामके पहले लेखके आधारसे उन्होंने ऐसा लिखा है । दूसरी वार अवलोकन करनेपर कनिंहाम साहबने स्वयं उसे जैनमन्दिर स्वीकार किया है और उके सब मन्दिरोंमें प्राचीन माना है । जिननाथका मन्दिर बहुत बडा और दर्शनीय है । उसकी बाजूके एक लेखसे विदित होता है कि, राजा धंगके राज्य कालमें भव्यपाहिलने ९५४ ई० मे इस मन्दिरके लिये कई बाग संकल्प कर दिये । इस मन्दिरका वर्णन करते हुए सरस्वतीसम्पादकने लिखा है कि "जैनमूर्तियोंके बीचमें हिन्दू देव देवियोंको स्थान मिला है।" सो शायद जिनविम्बोंके दोनो ओर यक्षयक्षणियों अथवा इन्द्रोंकी मूर्तिया देखकर उन्हें यह भ्रम हुआ है । हिन्दू देव देवियोंके समान ही इन यक्षादिकोंकी मूर्तिया होती हैं । और जैनशास्त्रानुसार वे जिन प्रतिमाओंके साथ रक्षकके समान रहती है । एक धनिक जैनीने इस मन्दिरकी मरम्मत करा दी है, जिससे अब वह बिलकुल नया मालूम होता है । क्या वर्तमानमें कोई धर्म्मात्मा जैनी अन्यान्य मन्दिरोंकी भी इसी प्रकार मरम्मत करानेको पुण्यकार्य समझनेवाले नहीं है ?

नाथूराम प्रेमी ।

प्राचीन नाममाला ।

कालचक्रके फेरसे परिवर्तन होते होते यहांतक हो गया है कि, प्राचीनकालमें हमारे यहाके देशों नगरों वा ग्रामोंके जो नाम प्रसिद्ध थे, उन नामोंसे अब यहांके स्थानोंका पता लगाना कठिन हो गया है । इसलिये प्राचीन ग्रन्थोंका पठन अध्ययन करनेवालोंको प्राचीन देशों वा नगरोंका नाम वर्तमानमें क्या है, यह जाननेकी बडी उत्कंठा रहती है । यदि उक्त सज्जनोंको यह विषय विदित हो जावे, तो उनके स्वाध्याय कार्यमें बहुत कुछ सहायता मिलनेकी संभावना है, इसी अभिप्रायसे यह लेख हिन्दीप्रदीप नामक मासिकपत्रसे सग्रह किया जाता है ।

अङ्ग--गंगाके दक्षिण तटसे कोशिकी नदी तकका भूभाग अंगदेश कहलाता था । अब इस समय भागलपुरके पासका सब देश इसमें शामिल है । इस की राजधानी प्राचीन समयमे चम्पा थी, जिसे लोमपादपुरी कर्णपुरी या मालिनी भी कहते हैं । जेनरल कनिंगहामके मतमे चम्पा भागलपुरसे १४ मील पूर्व थी । चम्पापुरी के नामसे वहा एक स्थान अब भी प्रसिद्ध है, जो हम लोगोंका पवित्र तीर्थक्षेत्र है ।

अन्तरवेदी अन्तरवेद या दोआवा--प्रयागसे हरिद्वार पर्यन्त, गगा और यमुनाके बीचका देश ।

अन्ध्र--यह अब तिलङ्गानाके नामसे प्रसिद्ध है । इसकी पश्चिमीसीमा घाटपर्वत थी । १५० मील लम्बी कोलर नामकी झील यहा ही है ।

अम्बा--ससुरखंदेरी एक छोटी नदी जो फतहपुरके पाससे निकल प्रयागके पश्चिम यमुनामे जा मिली है ।

अर्द्धजान्हवी--कावेरीनदी । **अर्बुदगिरि**--आबूका पहाड़ ।

अलकनन्दा--गंगाकी एक शाखा ।

अश्मक--दक्षिणका एक देश । किसी २ का मत है कि, त्रावनकोरका नाम अश्मक है ।

अवन्ती--इसका दूसरा नाम विशाला है । यह शकारि विक्रमादित्यकी राजधानी थी । वर्तमानमें इसे उज्जैन कहते है । मालवाका दूसरा नाम अवन्ती है । अवन्तीके उत्तरमें एक छोटासा राज्य था, जिसकी राजधानी चर्मण्वती या चम्बलके तटपर दशपुर थी, जो ढोलपुर या धवलपुरके नामसे प्रसिद्ध है ।

आनर्त--सौराष्ट्र भी इसीका नाम है । अब यह काठियावाड़के नामसे प्रसिद्ध है । पहले इसकी राजधानी द्वारका थी, पीछे वल्लभीपुर हुई । पुरानी द्वारका हालकी द्वारिकासे ७५ मील दक्षिणपूर्वको रैवतक (गिरनार) के समीप जूनागढके पास थी । वल्लभीपुर भावनगरसे १० मीलपर वायव्यकोणमें था, उसके पुराने खंडहर अब भी पाये जाते हैं ।

आभीर--कोकणदेशके दक्षिणताप्तीनदीके पश्चिम विंध्य पर्वतके ऊपरका देश ।

इन्द्रप्रस्थ--पुरानीदिल्लीके नामसे प्रसिद्ध है। यह यमुनाके बाये तटपर हस्तिनापुरसे ३० मील नैर्ऋत्यकोणकी ओर है ।

इरावती--रावीनदी, लाहोर इसी नदीपर है ।

उत्कल--उडीसा--ताम्रलिप्ता नदीके दक्षिण कपिशा नदी तक । इसका दूसरा नाम ओड है ।

एकचक्रा--आरा जिला । **कक्ष**--काठियावाडसे लगा हुआ कच्छ या भुज्ज नामसे प्रसिद्ध है ।

करतोया--दीनाजपुर और रंगपुर जिलेमे यह नदी बही है ।

कर्मनाशा--यह नदी बनारसके पूर्व विन्ध्यपर्वतसे निकल गगामे जा मिली है ।

कलिङ्ग--उडीसाके दक्षिण गोदावरी और समुद्रके सगम तकका देश। अब इसे कारोमंडल है।

काशीकोशल--यह अयोध्या और काशीके बीचका कोई देश था ।

काञ्ची--प्राचीन सममें यह द्रविड़देशकी राजधानी थी । यह शिवकाची और विष्णुकाची ऐसे दो हिस्सोंमें बटी है । शिवकाचीको काजीवरम् कहते है ।

काम्बोज--यह देश गिलगिटसे बलक या बाल्लीकको हिन्दूकुश पहाडके द्वारा अलग करता हुआ लद्दाक तक फैला है ।

कामरूप--कामरू कामाक्षा--एक प्राचीन राज्य जो करतोया नदीसे आसामके छोर तक फैला हुआ था । इसका विस्तार उत्तरकी ओर हिमालय और पूर्वकी ओर चीन तक था । इसकी राजधानी प्रागज्योतिष ब्रह्मपुत्र या लौहितानदके दूसरे तट पर थी । (शेष आगे)

श्रीसम्मेद शिखरके प्रति सम्बोधन।

(१)

अहो त्रिलोकीनाथ-चरन-रज-धारन वारे ! ।
दरस परसतें अगनितपापपछारनहारे ! ॥
मंगलमय-मुनिमंडलके मनमोहन ! प्यारे ! ।
जगजीवनसर्वस्व ! जैनवृष-प्राणअधारे ! ॥

(२)

अहो शान्तिके मूर्तिमन्तथल ! विमल मनोहर ! ।
जीवघाततें रहित ! सहित नाना अतिशय कर ॥

कलिहूमें सुरगनतें पूजित ! पूज्य नामके ।
पर्वतराज "समेद ! " सुनहु मम वचन कामके ॥

(३)

छोरहु ध्यानसमाधि, गयो अब बीत समय वह ।
निरुपद्रव है रहे जामुमें सौख्य शान्ति लह ॥
लख्यो न कबहु अनत कालसों हुइ है जैसो ।
कठिन पापमय समय अहो ! आयो अब तैसो ॥

(४)

ध्यान हुताशनमें मुनिजन जहँ कर्मविपाके ।
कियो पान निज अनुभवको अमृतरस पाके ॥
अब ताही छातीपै तेरी नरपशु पगधरि !
भून भून गोमास खाहिंगे, सुरापान करि ॥

(५)

भक्ति भावभर मघवाको जहँ नृत्य मनोहर ।
होत रह्यौ सुरनरसुखकारी समय समयपर ॥
तहा हाय ! अब मदमाते साहब लोगनको ।
गोरिनके सँग नाच होइगो, अमन चैनको ॥

(६)

एक जीवको घात जहा, अति अचरजकारी ।
तहा हनहिंगे हाय ! जीव नित अमित शिकारी ॥
होन रही जहँ गंधोदककी, वृष्टि सुपावन ।
तहा नीचनर छेपहिंगे, मलमूत्र ! घिनावन ॥

(७)

कहाँ कहा लगि और, सर्व सक्षेप यही है ।
दिव्य देह तुव होतहिगी अब "नरकमही" है ॥
यासो कहत सचेत होहु ! होवहु ! ! होवहु !!! पुनि !
छाडि अचलता अचल ! करहु अब लगि उपाय चुनि

(८)

यदपि क्षमाभृत नाम, तिहारो तदपि क्षमाको —
समय नाहिं यह रह्यौ, मौनको धीरजनाको ॥
अहै नीतिको वचन, "शठं प्रतिशाठ्यं" कीजे ।
अथवा "विष अंकुरको पहले ही नश दीजे" ॥

(९)

सुनी पुराननतें तुव महिमा, अगम अपारी ।
शासनरक्षक देव करे, नित सेव तिहारी ॥
इहि अवसरपर जो नहिं इत, निजबल अजमै है ।
समय चूकि धरनीधर ! कर मल मल पछतैहै ॥

(१०)

अथवा बलको काम कहा ! इत है विचार यों ।
"चुटकीसो मर जाइ ताहि तरवार मार क्यों?
एकबार हू दुखतें जो, करि है कंपित सिर ।
लैं ऊंची उच्छ्वास ज्वाल करि है पुनि बाहिर ।

(११)

तो ये सब भावी बँगले, छिनमें परि जै है ।
धँसि जै हैं तुव उदरमाहिं, ज्वालन जरि जैहै ॥
धर्मघातके पातकको फल, यों मिलि जैहै ।
करन अनुकरन आगे इक, पटतर रहि जैहै ॥

देवरी (सागर)
६–७–०७

तीर्थराजसेवक—
नाथूराम प्रेमी।

त्रिवर्णाचारके विना समाज भ्रष्ट हो रहा है।

गत जैनमित्रमें जो एक टिप्पणीके द्वारा त्रिवर्णाचारकी आवश्यकता बतलाई गई है, वह बहुत उचित है। मै आशा करता हू कि, धर्मात्मा धनिकगण उसके प्रकाश करनेके लिये बहुत शीघ्र प्रयत्न करेंगे। यह बडे भारी पुण्यका कार्य है। इसके विना जैनियोंमें विशेषकर हमारे प्रान्तके निवासियोंमें बडा अत्याचार हो रहा है। लोग उच्छृखल हो रहे है। जो जिसके जीमें आता है, करता है। सूतक, प्रेतक, मुडन, विवाह, आदि सब ही सस्कार विनाविधिके ऊटपटाग किये जाते है। न कोई ग्रन्थका आधार है, और न कोई नियम है। इस वर्ष हमने देखा है कि, कई एक मृतक सूतक जो दश दश दिनमें शास्त्रानुसार होने चाहिये, वे पञ्चक वगैरहकी जरा २ सी अडचण बतलाकर लोगोंने पाच पाच, सात सात दिनमें कर डाले हैं। रजोधर्मके विषय यहा सर्वथा म्लेच्छाचार हो रहा है। रजोवती स्त्रिया लीपना, पोतना, पानी भरना तो क्या, कहीं २ आटापीसना भी नहीं छोडती है। मुडनकर्म दो दो, तीन तीन महिने तकके बच्चोंके कर डाले जाते है। विवाहमें फेरोंके वक्त मंत्रादिकोंका सर्वथा उच्चारण नहीं किया जाता। पुरोहित पडित कोई नहीं बुलाया जाता। स्त्रिया ही सब कुछ कर लेती हैं। उस समय वे मर्दोंको मडलसे निकाल कर कह देती है. "यहा तुम लोगोंका कुछ काम नहीं है, हम सब कर लेंगी।" शिखा क्यों रखना चाहिये, यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये या नहीं, गर्भाधानसंस्कार कैसे होता है, श्राद्ध, तर्पण, आचमन, क्या पदार्थ है, वैश्योंके कर्म कौन २ हैं, श्रावकोंकी नित्यक्रियाओंकी विधि क्या है, आदि सब ही बातोंसे यहांके लोग अनभिज्ञ हैं। और इन सबके कारण यहांके विजातीय लोग जैनियोंसे बहुत घृणा करने लगे हैं। यदि त्रिवर्णाचारका कोई ग्रन्थ भाषाटीकासहित प्रकाशित हो जावे, तो लोग अपने कर्तव्योंको समझने लगें, और उनके अनुसार आचरण भी करने लग जावें। खुशीकी बात है कि, यहा तेरहपथ बीसपथका झगडा प्राय. नहीं है। आर्ष वाक्योंमें श्रद्धा करनेवाले लोग है, इस लिये यहा त्रिवर्णाचारके अनुसार बहुत जल्दी प्रवृत्ति हो सकती है।

जहातक मै जानता हू, अन्यान्य प्रान्तोंमें भी इस ग्रन्थकी कम आवश्यकता नहीं होगी। बहुत कम प्रदेश ऐसे होंगे, बल्कि एक प्रकारसे होंगे ही नहीं, जहा त्रिवर्णाचारके अनुसार सम्पूर्ण रूपसे लोग चलते होंगे। आश्चर्य नहीं कि, हमारे इस प्रान्तके समान ही सर्वत्र अधाधुधी हो। इस लिये मैं अपने समाजके धनिक मुखियोंका ध्यान इस ओर आकर्षित करता हू कि, वे इन असदाचारोंको समाजसे निकालनेका वही प्रयत्न करें, जिसके करनेकी जैनमित्रने राय दी है।

देवरी (सागर)
१४–६–०७

समाजका सेवक—
नाथूराम प्रेमी।

धरेजा और विधवाविवाह।

जैनमित्र के पाठक जानते है कि, दक्षिण प्रान्तमे एक दक्षिणमहाराष्ट्रजैनसभा नामकी सस्था है। थोडे ही समयमें उसने अपने प्रान्तमें जागृति उत्पन्न करके अनेक कार्य ऐसे किये है, जिनकी प्रशसा करनेमें कुछ भी सकोच नहीं होता। गत वर्षसे इसके अनेक मुखियाओंमें विधवाविवाहकी चरचा चल रही है। यद्यपि उसके वार्षिक अधिवेशनके समय इस विषयका प्रस्ताव रखनेमें विरोध किया गया था, और इसलिये वह सभामें उपस्थित भी नहीं हो सका था, परन्तु जून जुलाईके जिनविजयको देखनेसे प्रतीत हुआ कि, महाराष्ट्रसभा अब इस विषयको दबाये नहीं रख सकती। शायद उसकी इच्छा है कि, यह विषय शीघ्र ही निर्णीत हो जाना चाहिये। जो हो हम इस लेखमें यह बतलाना चाहते हैं कि, सभाके मुखिया धरेजेका स्थान पुनर्विवाहको क्यों देना चाहते हैं, और इसके सिवाय क्या जातीय सुधारका कोई दूसरा मार्ग नहीं है ?

दक्षिण महाराष्ट्रसभा जिस प्रान्तकी अधिकारिणी है, उस प्रान्तमें प्रायः चतुर्थ, पंचम और कासार ये

धन करते हुए अर्थात् यह देखते हुए कि, मार्गमें कोई जन्तु तो नहीं है जिसका प्रमादसे घात हो जावे, गमन कर रहे हैं। रतनचन्द विचारता है, अहो! मुनिराजोंकी दया कैसी अपूर्व और लोकोत्तर है। भला जीवोंका परमबन्धु इनके समान और कौन होगा? जिनकी दृष्टिमें शत्रुमित्र, तृणकंचन, राजा रंक, मूर्ख विद्वान् सब एक समान हैं। पंचमहाव्रतरूप इनके एक अपूर्व सम्पत्ति है। अन्य कोई भी परिग्रह इनके पास नहीं है। शरीरसे ऐसी निस्पृहता कहीं भी नहीं देखी जाती। बाइसपरीषहको सहन करते हुए कामके बाणोंको विफल करना इन्हींका काम है। यद्यपि नाना प्रकारकी तपस्याओंसे इनका शरीर क्षीण हो गया है, परन्तु प्रभा चतुर्गुणी है। सामान्य पुरुषोंमें यह दिव्यप्रभा दिखाई नहीं देती। तपके प्रभावसे इन्हें अवधिज्ञान प्राप्त हो गया है, इसीसे इन्होंने मुझे रतनचंद कहकर संबोधित किया था। वाह! यह भी कैसी दिव्य शक्ति है। इससे दूर २ के विषय स्मरण मात्रसे प्रत्यक्षवत् हो जाते हैं। इसीसे अनुमान होता है कि, एक ज्ञान ऐसा भी है, जिसमें तीन लोकके त्रिकालगत पदार्थ हस्तामलक हो जाते हैं। आत्मापर एक प्रकारका आवरण होता है, जिससे कोई आत्मा अधिक ढका रहता है, कोई उससे कम, और कोई उससे भी कम। अर्थात् किसी पुरुषको कम ज्ञान होता है, किसीको उससे अधिक और किसीको उससे भी अधिक। तब बुद्धि स्वयं स्वीकार करती है कि, कोई आत्मा ऐसा भी है, जो इस आवरणसे सर्वथा रहित है, उसको सर्वज्ञ कहते हैं और उसके ज्ञानको केवलज्ञान कहते हैं। इसी अवस्था और इसी ज्ञानको प्राप्त करनेके लिये मुनियोंका यह प्रयत्न है। इसीको जैनमार्ग कहते हैं। यही आत्माका स्वभाव है। अब मुनिराजोंकी कृपासे मैं भी इस स्वभावके प्राप्त करनेका उद्योग करूंगा। अहा! वह समय कब आवेगा, जब मैं मुनिव्रत अंगीकार करके अपने आत्मकल्याणमें लगूंगा।

मेरे कब व्है है या दिनकी सुघरी
मेरे कब व्है है०—टेक।
तन विनवसन असनविन वनमें,
निवसों नासादृष्टि धरी। १
पुन्य पाप परसों कब विरचों,
परचों निजनिधि चिर विसरी।
तज उपाधि सज सहज समाधी,
सहों धाम-हिम-मेघ-झरी ॥ २
कब थिर जोग धरों ऐसो मुहि,
उपल जान मृग खाज हरी।
ध्यान कमान तान अनुभव सर
छेदों किह दिन मोह अरी ॥ ३ ॥
कब तृन कंचन एक गनों अरु,
मनि जडतालय शैलदरी
दौलत सतगुरु चरनसेव जो,
पुरवो आश यहै हमरी ॥ ४ ॥

इस प्रकारके नाना विचारोंमें मग्न हुए रतनचंदने देखा कि, मैं एक उद्यानमें पहुंच गया हूं। इसके पहले अन्यमनस्क होनेके कारण उसे यह मालूम नहीं था कि, मैं कहां चल रहा हूं। परन्तु मुनिराज जिनके साथ वह आया था, जब खड़े हो रहे, तब वह भी खड़ा हो गया। उस समय उसने देखा कि, एक ऊंची शिलापर एक महामुनि विराजमान हो रहे हैं और आगत मुनि मस्तक नम्र किये उन्हें नमस्कार कर

रहे हैं। शिलाके चारों ओर भी बहुतसे मुनि बैठे हुए हैं, जिनकी सख्या ५० से कम नहीं है। ऐसा जान पड़ता है, शिलास्थित महामुनि किसी व्याख्यानका प्रारभ करना चाहते हैं और यह मुनिपरिकर उसके सुननेके लिये उत्कंठित हो रहा है। महामुनि संघाधीश आचार्य और मुनिगण शिष्यसम्प्रदायमें हैं। महामुनिके शरीरसे एक विलक्षण प्रभा प्रस्फुटित हो रही है, जिसके दर्शन मात्रसे उनका मुख्यत्व, तथा महत्व प्रगट होता है। उनके मुखमंडलकी सोमता, शीलता, प्रसन्नता और सरलता देखते ही बनती है। मौन धारण किये हुए भी उनका शान्तशरीर ससारके वैरागतत्त्वका निरूपण करता हुआ सा दीख पडता है। उनके चारों ओर जो मुनिपरिकर हैं, वह भी एक शान्तिताकी श्रेणी है। सब ही दिगम्बरमुद्राके धारण करनेवाले मोक्षमार्गके पथिक हैं। साराश उस पुन्य परिषत्में सर्वत शान्ति वैराग्यकी अनुपम धारा बह रही है।

जिस स्थानमें यह परिषद विराजमान था, वह स्थान बड़ा ही सुहावना जान पडता था। नानाप्रकारके सुन्दर वृक्षोंकी पंक्ति चहुंओर धीर गंभीर भावसे खड़ी थी। मानों मुनियोंके संसर्गसे उसने ये गुण प्राप्त किये हों। बीचमें थोड़े २ अन्तरपर अनेक वसतिकायें बनी हुई थीं, जो किसी धर्मात्माने मुनियोंके विश्रामके लिये बनवाई थीं। सैकड़ों बड़ी २ शिलायें यत्र तत्र पड़ी थीं, जिनपर बैठकर मुनिगण ध्यानस्थ होते थे। वसतिकाओंके आसपास छोटी २ हरी २ दूब जो मुनियोंके कमंडलुओंके जलसे जम आई थी, बड़ी भली मालूम होती थी। मृगगण निडर होकर उसे चरते थे। मानों मुनियोंके उस रक्षितराज्यमें उन्होंने अपना स्वाभाविक डरपोंकपन भुला दिया था। जो हरिण जरासी आहट पाते ही सिरपर पैर रखके चौकड़ी भरने लगते हैं, वे ही उस निर्भय स्वर्गभूमिसे टाले नहीं टलते थे। पक्षीगण भी आनन्दकलरव करते हुए स्वच्छन्दतासे यहां वहां उड़ते फिरते थे।

रतनचन्दने उस दिव्यमंडलीको देखकर तत्काल ही साष्टांग नमस्कार किया और कहा, "नाथ! इस शरणागतकी रक्षा करो—दुर्जय कर्मोंके पंजेमें फँसे हुए इस दीनातिदीनको बचाओ। अनन्तकाल बीत गया; अब ये कर्मोंके अत्याचार सहे नहीं जाते।" यह सुन कर महामुनिने आसन्नभव्य जानकर रतनचन्दको दयादृष्टिसे निरीक्षण करते हुए धर्मवृद्धि दी और कहा, भव्य! शान्त हो, चित्त स्थिर कर, तेरी इच्छा बहुत जल्दी पूर्ण होगी। तुझे अपने घरका विषम चरित्र देखकर जो वैराग्य प्राप्त हुआ है, वह अडोल रहेगा और उसके कारण ससार कारागृहसे तुझे थोड़े ही समयमें छुट्टी मिल जावेगी। योगीश्वरका आशीर्वाद सुनकर उत्तप्त उद्विग्नचित्त रतनचन्दको कुछ सतोष हुआ। और नवागतमुग्धवधूके अननुभूत पति-समागम-सुखकी कल्पनाओंके समान जैनेश्वरीदीक्षाप्राप्तिके सुखकी विचारतरंगोंमें वह फिर गोते खाने लगा।

इधर योगीश्वरने अपना व्याख्यान प्रारंभ किया। अत्याचार सम्बन्धी अनेक गूढ विषयोंको बड़ी सुगम भाषामें नानाप्रकारके दृष्टान्त दार्ष्टा-

न्तोंसे उन्होंने सबके हस्तामलक कर दिया। उनकी अपूर्व उपदेशशक्तिके प्रभावसे सम्पूर्ण श्रोताओंके हृदयकपाट खुल गये। सबही धन्य-धन्य करने लगे। तदनन्तर रतनचन्दने हाथ जोड़कर निवेदन किया, भगवन्! अब इस जिज्ञासुकी ओर भी दृष्टि कीजिये और कृपाकर बतलाइये कि, आत्माका हित क्या है?

योगीश्वर—भव्यात्मन्! आत्माका यथार्थ-हित आत्माके निजस्वभावकी प्राप्ति है। जैसे अपनी विपुल सम्पत्तिके खो जानेसे लोग दुःखी होते हैं और जब तक वह फिर न मिल जावे, तब तक सुखी नहीं हो सकते, उसी प्रकार निज-स्वभावरूप सम्पत्तिके लुप्त हो जानेसे ये सम्पूर्ण प्राणी दुःखी हो रहे हैं, और उस सम्पत्तिको पुनः प्राप्त किये विना कदापि सुखी नहीं हो सकते। यद्यपि संसारके सब ही प्राणियोंकी यह इच्छा रहती है कि, हमें सुखकी प्राप्ति हो; और दुःख हमारे पास भी न फटकने पावे, परन्तु हजार प्रयत्न करने पर हजार सिर पटकने पर भी वे सुखी नहीं हो सकते। जिसको देखिये वही दुखी दिखलाई देता है। जिससे पूछिये वही आपको दुखियोंका शिरोमणि बतलाता है और जहां सुनिये वहां दुःख ही दुःख सुनाई पड़ता है! जानते हो, इसका कारण क्या है? यही कि, वे सुखके यथार्थ स्वरूपको नहीं जानते हैं, और दुःखमें ही सुखकी कल्पना किया करते हैं। परन्तु जो अज्ञानी अंगारको सुन्दर शीतल मानकर हाथमें ले लेता है, क्या वह उससे जलकर दुःखी नहीं होता? अवश्य होता है। इसी प्रकार दुःखमें सुखकी कल्पना करनेसे उन्हें दुःख सुखरूप नहीं हो जाता, दुःख ही रहता है। सो ये प्राणी इस भ्रामक सुखकी प्राप्तिका प्रयत्न तो करते रहते हैं, परन्तु यथार्थ सुखरूप निजस्व-भाव सम्पत्तिको सर्वथा भूल गये हैं, जो कि आत्माका सच्चा हित है।

रतनचन्द—नाथ! तो उस आत्महित आत्मसुख अथवा आत्मस्वभावको हमलोग क्यों भूल रहे हैं? एक दो चार नहीं, किन्तु जब सब ही प्राणी उसे पानेका प्रयत्न नहीं करते, तब इसका कोई असाधारण कारण होना चाहिये।

योगी०—हां! उस आत्मस्वभावपर एक प्रकारका दुर्निवार परदा पड़ा हुआ है, जिससे हम उसे देख नहीं सकते, विचार नहीं सकते और विना गुरुके उपदेशके समझ नहीं सकते। यही कारण है कि, सामान्य जीवोंकी प्रवृत्ति उसकी ओर नहीं होती। प्रत्येक पदार्थमें स्वभाव और विभाव दो प्रकारकी शक्तियां रहती हैं। स्वभाव स्वकृत शक्ति है। विभाव परकृत विकारशक्ति है। स्वभाव शक्ति कभी नष्ट नहीं होती, परन्तु विभाव-शक्ति विकार कारणोंके पृथक् होते ही नष्ट हो जाती है। और जब तक विभावशक्ति व्यक्त रहती है, तब तक स्वभावशक्ति अव्यक्त रहती है। और उस अव्यक्त अवस्थामें ही अल्पबुद्धि समझ नहीं सकते कि, उसका अस्तित्व है या नहीं। जैसे जलका शीतलपना उसका स्वभाव है और उष्णपना विभाव है। शीतलपना स्वयं होता है, परन्तु उष्णपना अग्निके सयोगसे होता है। जब तक

अन्यान्य कर्मचारियोंने भी महाराजके विचारका अनुमोदन किया, और बैठक समाप्त की गई। सब लोग अपने २ घर गये और महाराज शयनागारकी ओर चले गये। बहुत दिनके पीछे उस दिन उन्होंने महाराणी मदनवेगाके साथ प्रेमसभाषण किया।

दूसरे दिन थोड़ेसे सवारोंको साथ लेकर विक्रमसिंह मामूली ढगसे विजयपुर पहुचे। उनके एकाएक आनेसे महाराज रणवीरसिंहको आश्चर्य और हर्ष हुआ। उन्होंने बड़े प्रेमसे उनका स्वागत सत्कार किया। और दूसरे दिन सवेरे ही उनके आगमनकी खुशीमें एक बड़ा भारी दरबार किया। उस समय अपने सम्बन्धी जौहरी श्रीचन्द, सम्पूर्ण राज्यकर्म-चारियों और नगरके प्रतिष्ठित पुरुषोंसे मिलकर विक्रमसिंहने प्रसन्नता प्रगट की और यथोचित वार्तालाप किया। इसके पश्चात् वे सुशीला, जयदेव, तथा भूपसिंहकी चर्चाका उपक्रम करना ही चाहते थे कि, इतनेमें दो पुरुष दो गठरी पीठपर लादे हुए दरबारमें उपस्थित हुए।

गठरियोंमें क्या है, और ये लोग क्या कहते हैं, यह जाननेके लिये लोग अतिशय उत्कंठित हुए। महाराज रणवीरसिंह आगत पुरुषोंको पहिचान कर प्रसन्न हुए और बोले, क्यों! कुशल तो है? तब उनमेंसे एकने कहा, हां, महाराज! आपकी कृपासे उदयसिंह और बलवन्त दोनों ही आज अपनी कैदमें आ गये हैं। और ईश्वरने चाहा, तो आज मध्याह्न श्रीमती सुशीलादेवी भी बन्धनमुक्त होकर यहां आ जावेगी। यह सुनते ही विशेषकर पिछले वाक्यको, महाराज विक्रमसिंह आनन्दसे उछल पड़े। मेघपटलोंके फट जानेसे चन्द्रमाका बिम्ब जिस तरह खिल उठता है, उसी प्रकार उनका शोकग्रस्त मुख प्रसन्नतासे खिल उठा। इतनेमें दूसरे पुरुषने दोनों गठरी खोलकर दोनों कैदियोंको सचेत किया। तब होशमें आकर कैदियोंने अपनेको एक अचिन्त्य स्थानमें हथकड़ी बेड़ियोंसे विवश देखा। विक्रमसिंहने कहा, क्यों उदयसिंह! अब भी तुम अपनी बुराइयोंसे सतृप्त हुए कि नहीं? परन्तु उसने उत्तर नहीं दिया। इसी प्रकार बलवन्तसे भी कई प्रश्न किये, परन्तु कुछ उत्तर नहीं पाया। तब महाराज रणवीरसिंहकी आज्ञासे वे दोनों कारागृहमें भेज दिये गये। वहा उनके कारण पहरे आदिका जबर्दस्त प्रबन्ध किया गया।

इसके पश्चात्, दरबार बरखास्त किया गया और एक एकान्त स्थानमें दोनों नरेशों, मंत्रियों, और श्रेष्ठि श्रीचन्द्रने मिलकर सूर्यपुर राज्यके और कैदियोंके सम्बन्धमें बहुत कुछ विचार किये। इसपर भी विचार किया गया कि, भूपसिंह तथा जयदेवके अन्वेषण करनेके लिये और क्या उपाय किये जावें।

सुशीलाके आनेके समाचारसे श्रेष्ठि श्रीचन्द्र और उनके कुटुम्बीजन प्रसन्न हुए, परन्तु जयदेवके वियोगके स्मरणसे उनकी वह प्रसन्नता फीकी रही।

एकादशपर्व।

रतनचंद मुनिराजके साथ २ जा रहे हैं। आगे मुनिराज हैं, पीछे रतनचंद हैं। मुनिराज ईर्यापथ शो

एक गीदड़का है, जो एक वार अपने यहा कैद रह चुका है। उसमे महाराज निहालसिंहकी सर्वथा सम्मति नहीं है। वे स्वयं बड़े न्यायी और सज्जन राजा हैं। मुझे विश्वास है कि, यदि वे अपने पुत्रका यह दुराचार सुन पाते, तो उसे अवश्य ही दंड देते। ऐसी अवस्थामें सूर्यपुरपर चढ़ाई करना न्यायसंगत नहीं है।

विक्रमसिंह—यदि ऐसा है और निहालसिंहपर तुम्हारा इतना बड़ा विश्वास है, तो फिर उन्हें एक पत्रके द्वारा इस विषयकी सूचना क्यों नहीं दी जाती? जिसमें वे उदयसिंहको दंडित करके यदि उसकी कैदमें सुशीला हो, तो छुड़ाकर हमारे यहा भिजवा दें।

शूरसेन—परन्तु ऐसा करनेमें एक बडा भारी डर यह है कि, यदि उदयसिंहको यह बात मालूम हो जावेगी और उसके अधिकारमें सरस्वती होगी तो "मरता क्या न करता" की नीतिके अनुसार न जाने वह क्या अनर्थ करनेपर उतारू हो जावे? और यह संभव नहीं है कि, उसे इस बातकी खबर न हो। क्योंकि राज्यके प्रधान २ कर्मचारी उससे मिले हुए हैं। इस लिये मेरी समझमें जबतक खूब विचार न कर लिया जावे, पत्रादि लिखना भी उचित नहीं है।

विक्रमसिंह—प्रत्येक कार्य विचार करके करना चाहिये, यह ठीक है। क्योंकि अविचारपूर्वक कार्य करनेका ही यह फल है, जो आज इस दुःखके देखनेका समय आया है। हाय! वह कितनी बड़ी राजनैतिक भूल थी, जिससे एक विदेशी पुरुषको जो एक वार अक्षम्य अपराध कर चुका था, मैंने अपना विश्वासपात्र सेवक बना लिया था। परन्तु "यह भी नहीं करना" "वह भी नहीं करना" तब क्या हमेशा इसी प्रकार निश्चेष्ट बैठे रहना चाहिये? तुम्हारे जासूसोंने भी कोई आशाप्रद कार्य करके नहीं दिखलाया, जिससे कुछ धैर्य हो। भला! तुम ही कुछ कहो, उन्होंने कुछ किया है?

शूरसेन—नहीं महाराज! ऐसा न समझिये। जासूस लोग बराबर काम कर रहे है। सुशीलाका पता लग चुका है। रेवती बहुत जल्दी उसको छुडाके लावेगी। वहा उसकी माया अच्छी तरहसे फैल रही है। मुझे वहाकी रिपोर्ट दूसरे तीसरे दिन बराबर मिला करती है।

विक्रम०—देखो शूरसेन! तुम्हारी बातोंपर मुझे बडा भारी भरोसा है, और अभी जो कुछ तुमने कहा है, वह संतोषयोग्य है। परन्तु वर्तमानमें मेरा चित्त ऐसा उद्विग्न और आकुलित रहता है कि, प्रयत्न करनेपर भी स्थिर नहीं हो सकता। यदि तुम्हारी सम्मति हो, तो इस समय विजयपुर जाकर महाराज रणवीरसिंह तथा अपने सम्बंधीसे मिल आऊ। उनके परामर्शसे चित्त कुछ स्थिर होगा, और जी भी बहला रहेगा। सिवाय इसके उनकी सम्मतिसे कुछ प्रयत्न भी हो सकेगा।

शूरसेन—महाराज! विचार उत्तम है। मेरी भी राय है कि, आप थोडे दिनोंके लिये विजयपुर जा आवें। ईश्वरने चाहा, तो आपके लौटनेके पहले ही सुशीला विलासपुरमें आ जावेगी। साथ ही उदयसिंह और बलवन्त भी अपने चेहरे पर कालिख लगाये हुए आ जावेंगे।

उष्णपना रहता है, तब तक शीतलपना अव्यक्त रहता है। परन्तु शीतलपनाके व्यक्त होते ही उष्णपना नष्ट हो जाता है। इस उष्ण जलमें हाथ डालनेमे जैसे वह आदमी जिसने कभी शीतल जल नहीं देखा सुना है, यह अनुमान नहीं कर सकता कि, जलमें शीतलपना भी होता है, उसी प्रकार स्वभावशक्तिको भूले हुए जीव उसके प्राप्त करनेका प्रयत्न नहीं कर सकते हैं। क्योंकि विभावके कारण वह शक्ति अव्यक्त रहती है। यह विभाव ही एक प्रकारका परदा है, जिसका अनादिकालसे आत्माके साथ सम्बन्ध है। इसीके कारण आत्मा, पराधीन, दुःखान्तरित और पापबीजरूप क्षणभगुर सांसारिक सुखोंको सुख मान करके संसारमें भटकता फिरता है, और स्वतन्त्र, सदास्थिर, एकस्वभावी सुखसे अभी तक वंचित है। जबतक वह परदा आत्माके आगेसे सर्वथा न हट जावेगा, तबतक उसका निजस्वभाव प्रगट नहीं हो सकता।

रतन०—योगिनाथ! मुझ अल्पज्ञकी समझमें सामान्य कथनसे यह बात नहीं आई कि, सचेतन आत्माके साथ उस जड़ रूप परदेका सम्बन्ध कैसे हो सकता है। इसलिये कृपा करके उस परदेका और उसके सम्बन्धका स्वरूप विस्तृतरूपसे समझानेकी कृपा कीजिये।

योगी०—रतनचन्द! जल्दी समझमें आनेके लिये सामान्य विविक्षासे यह विषय कह दिया गया है। परन्तु परदा कहनेका अभिप्राय यहां केवल इतना है कि, आत्माके स्वभावपर एक प्रकारका कोई आवरण पड़ा हुआ है। जिससे उसके सम्पूर्ण गुण ढँके हैं। इसीको जैनशासनमें कर्मावरण कहते हैं। अब यह जानना चाहिये कि, कर्मावरण क्या चीज है।

अनन्त आकाशके ठीक बीचमें जैसे एक पूरे मृदंगके ऊपर आधा मृदंग रक्खा हो, इस आकारका लोक संस्थित है। यह स्वयंसिद्ध है। इसका न कोई बनानेवाला है और न अन्त करने वाला। अनादि कालसे ऐसा है, और ऐसा ही रहेगा। इसकी उंचाई चौदह राजू और विस्तार ७-१-५-१ राजू अर्थात् मूलमें ७ राजू, मध्यमें १ राजू, ब्रह्मस्वर्गके अन्तमें ५ राजू और अन्तमें एक राजू है। घनवात घनोदधिवात और तनुवात इन तीन वायु मंडलोंसे वेष्टित हुआ उन्हींकी शक्तिविशेषसे आकाशमें ठहर रहा है। इस लोकमें जीव, पुद्गल धर्म, अधर्म और काल ये पांच द्रव्य हैं। इनमें पूर्वकथित अनन्त आकाशद्रव्यको मिलानेसे छह द्रव्य कहलाते हैं। इन छह द्रव्योंमें एक आकाश द्रव्य सर्वव्यापी तथा सम्पूर्ण द्रव्योंका आधारस्वरूप है। अर्थात् पहले जीवादि पांचों द्रव्योंके ठहरनेका स्थान है। और शेष पाचों द्रव्य अल्पक्षेत्रव्यापी तथा आधेयस्वरूप हैं। अर्थात् जितने आकाशमें शेष पांच द्रव्य विद्यमान हैं, उसको तथा उन पाच द्रव्योंको मिलाकर लोक कहते हैं'

रतनचन्द०—भगवन्! लोक का स्वरूप मैं समझ गया हूं, परन्तु द्रव्यका स्वरूप अभी तक नहीं जाना है, सो कृपाकरके समझाइये।

योगी०—अनन्त गुणोंके समुदायको द्रव्य कहते हैं। अर्थात् प्रत्येक द्रव्यमें अनन्त गुण

होते हैं। इनमें कुछ तो सामान्य गुण हैं और कुछ विशेष गुण हैं। जो गुण दूसरे द्रव्योंमें पाये जावें अर्थात् एक द्रव्यमें जो गुण हों, वे दूसरे द्रव्योंमें भी पाये जावें, उन गुणोंको सामान्य गुण कहते हैं और जो गुण अन्य द्रव्योंमें न पाये जावें, केवल एक ही द्रव्यमें हों, उन्हें विशेषगुण कहते हैं। जैसे जीवका प्रदेशवत्व सामान्य गुण है। क्योंकि जीवके सिवाय पुद्गलादि द्रव्योंमें भी वह पाया जाता है। अर्थात् पुद्गल, धर्म, अधर्मादि द्रव्य भी प्रदेशवान् होते हैं। और चेतना असाधारण विशेष गुण है। क्योंकि जीवके सिवाय अन्य कोई भी द्रव्य चेतनावान् नहीं है। यद्यपि प्रत्येक द्रव्यमें विशेषगुण भी अनन्त होते हैं, परन्तु उनमें एक विशेषगुण ऐसा होता है, जो लक्षणस्वरूप होता है। मिले हुए अनेक पदार्थोंमेंसे किसी एक पदार्थको भिन्न करनेके हेतुको लक्षण कहते हैं। जैसे कि, चैतन्य कहनेसे अनेक द्रव्योंमेंसे वह जीवद्रव्य भिन्न करके समझ लिया जाता है, जो चेतनायुक्त है। जिस गुणमें पदार्थ प्रतिभासित होता है, उसको चेतना कहते हैं। अत एव जीवका निर्दोष असाधारण लक्षण चेतना है। इसी प्रकार पुद्गलका लक्षण मूर्तत्व अर्थात स्पर्श-रस—गन्ध—वर्ण वन्त है। धर्मद्रव्यका लक्षण जीव पुद्गलके गमन करनेमें सहकारित्व (सहायक) रूप है। अधर्म द्रव्यका लक्षण जीव पुद्गलकी स्थितिमें सहकारित्वरूप है। आकाशका लक्षण जीवादिक द्रव्योंको अवकाशदातृत्वरूप है और कालद्रव्यका लक्षण जीवादिक पदार्थोंके परिणमन करानेमें सहकारित्वरूप है। द्रव्योंका संक्षेपसे यही स्वरूप है।

इन छह द्रव्योंमें एक जो पुद्गलद्रव्य है, जिसे कि जड़ तथा अजीव भी कहते हैं और जिसका लक्षण ऊपर कह दिया गया है, उसके मुख्य दो भेद हैं। एक अणु और दूसरा स्कन्ध। पुद्गलके सबसे छोटे खडको अणु तथा परमाणु कहते हैं और अनेक परमाणुओंके समूहको स्कन्ध कहते हैं। इनके अनेक भेद हैं, जिनमेंसे एक स्कन्ध विशेषको कार्माणवर्गणा कहते है, जो कि संसारमें प्राय: सर्वत्र भरी हुई हैं, और जिनकी संख्या अनन्त है। जिस प्रकार आगमें तपाया हुआ लोहेका गोला जलमें डालनेसे वह अपने चारों तरफके जलको खींचता है, उसी प्रकार यह आत्मा रागद्वेषसे संतप्त होकर कार्माणवर्गणाओंको अपने चारों ओरसे आकर्षित करता है। इस कार्माणवर्गणा और जीवके सम्बन्धको बंध कहते हैं। और जीवसे सम्बन्धप्राप्त कार्माणवर्गणाको ही कर्म कहते हैं। इनके कारण आत्माके ज्ञानादिक गुणोंका घात होता है अर्थात् ज्ञानादिक गुण ढँक जाते हैं। इसीसे इन्हें कर्मावरण अथवा कर्मरूपी परदा कहते हैं।

रतन०—मुनिनाथ ! आत्मा रागद्वेषादिके कारण संतप्त होकर कर्मबन्ध करता है, यह ठीक है। परन्तु रागद्वेषादि भी तो आत्माके स्वभाव नहीं है। विभाव हैं, जो कि परकृत होते हैं। अतएव यह बतलाइये कि, उनका उत्पन्न करनेवाला कौन है ?

था कि, सुशीला अमुक स्थानमें रक्खी गई हैं और उदयसिंह उसे किसी प्रकारसे वश करनेके प्रयत्नमें है। इसी लिये उन्होंने सूर्यपुरमें अपनी योगमाया फैलाई थी। सो उसके प्रभावसे उन्होंने उदय और बलवन्तको तो कैद कर लिया, परन्तु सुशीला हाथ न आई।

योगलीलामें जो उन्होंने नाना प्रकारके चमत्कार दिखलाये थे, वे सब जाली थे। विजयपुर और विलासपुरके जो जासूस सुशीलादिका पता लगानेको आये थे, वे ही नाना प्रकारके वेष धारण करके अंधे लँगडे बहरे बनकर आते थे, और फिर भस्ममात्रसे अपनेको अच्छे हुए बतलाते थे। अनेक लोग ऐसे भी चारों ओर फैल गये थे, जो लोगोंसे मिलकर योगिराजकी झूठी प्रशंसा करते थे। इसी विलक्षण चालाकीसे बलदेवसिंह और रेवतीने सूर्यपुरको अंधा बना दिया था। परन्तु अफसोस है कि, जिस मुख्य कार्यके लिये उन्होंने इतने सब आडम्बर किये थे, वह सिद्ध न हुआ। सुशीला फिर लापता हो गई।

दशमपर्व।

जिस दिनसे सुशीला, जयदेव तथा भूपसिंहकी किसी विपत्तिमे फँस जानेकी वार्ता सुनी है, उस दिनसे महाराज विक्रमसिंह निरंतर उदास और सचिन्त्य रहा करते हैं। किसी भी राज्यकार्यमें उनका जी नहीं लगता। सदा एकान्तस्थानमें बैठे हुए वे अपने भाग्यकी गतिपर विचार किया करते हैं। उनकी पुत्रस्थानीया प्राणप्यारी सरस्वती (सुशीला) क्या खोई है, ऐसा जान पडता है, उनकी सरस्वती (बुद्धि) भी उसके साथ खो गई है। वे बड़े दूरदर्शी और विद्वान् समझे जाते थे, परन्तु इस समय मोहके वशसे उनमें न धीरता रही है, और न दृढता। यद्यपि सुशीला आदिकी खोजके लिये उनके बुद्धिमान मंत्री अनेक गुप्तचर भेज चुके हैं, और प्रतिदिन आश्वासन दिया करते हैं, परन्तु इससे उन्हें संतोष नहीं होता है।

एक दिन उन्होने यह विचार कर कि, "बैठे रहनेकी अपेक्षा कुछ करना अच्छा है" अपने शूरसेन मंत्री और दो चार वयोवृद्ध तथा विशेषज्ञ राज्यकर्मचारियोंको एकान्तमें बुलाकर एक बैठक की। उसमें प्रस्ताव किया गया कि, रेवती तथा रणवीरसिंहकी चिट्ठियोंसे अब इसमें तो सन्देह रहा ही नहीं कि, सुशीला आदिपर जो विपत्ति आई है, उसका कर्त्ता उदयसिंह है। ऐसी अवस्थामें सूर्यपुरपर चढाई क्यों न की जावे ? और उसे कैद करके सुशीला आदिका पता उसीसे क्यों न लगाया जाय ? सूर्यपुरका राज्य हमसे कुछ जबर्दस्त नहीं है और न वहा कुछ ऐसी तयारी है, जिससे हमें डरनेका कोई कारण हो। इसके सिवाय यदि हम चढाई करेंगे, तो विजयपुर राज्यसे भी हमें सहायता मिले विना न रहेगी। और जहातक मेरा ख्याल है, अपनी सेना भी किसी प्रकार शिथिल नहीं है।

शूरसेन मन्त्री—महाराज ! आपका प्रस्ताव बहुत उचित है। परन्तु वह तब काममें लाया जाता, जब सूर्यपुर राज्यने अपने साथ खुलेमैदान शत्रुता की होती। यह कार्य केवल

तीनों जातियां बसती हैं। और इन तीनों जातियोंमें अनुमान दो सौ वर्षसे पाट अर्थात् धरेजे करनेकी प्रथा चल रही है। कहते हैं, उस समय जबसे कि, इसका प्रारंभ है, कोल्हापुरनरेश (तत्कालीन) का एक जैनी अभिन्न-हृदय मित्र था। दैवात उसकी स्त्रीका देहान्त हो गया, जिससे वह बहुत उदास रहने लगा। यद्यपि वह अपना दूसरा विवाह कर सकता था, परन्तु उस समय बालविवाह का प्राबल्य होनेसे प्रौढ़ कन्यायें नहीं मिल सकती थीं, और अवस्थाका उतार होनेके कारण आठ दश वर्षकी कन्याके साथ विवाह करना सर्वथा अनुचित जान पडता था, इस लिये महाराजने सलाह दी कि, हमारी जातिके समान किसी प्रौढ विधवाके साथ धरेजा क्यों नहीं कर लेते। मित्रने कहा, ऐसा करनेसे मैं जातिसे पतित हो जाऊंगा। और धर्माचार्य भट्टारक महाराज इसकी आज्ञा भी नहीं देंगे। महाराजने भी सोचा यदि भट्टारक महाशय आज्ञा दे देवें, तो यह कार्य हो सकता है। कोल्हापुर राज्यकी ओरसे वहाके भट्टारकको उस समय बहुत जागीर थी। इस लिये उस स्वत्वको प्रगट करते हुए उन्होंने भट्टारकसे इस विषयकी व्यवस्था मागी, परन्तु उन्होंने सर्वथा इंकार कर दिया। तब राजाने अप्रसन्न होकर उनकी जागीर जप्त कर ली, और वे उस राज्य से निकलकर कहीं अन्यत्र चले गये। परन्तु "लोभ पापको बाप बखाना"। कहते है। कई वर्षके बाद जागीरके लोभसे अधीर होकर भट्टारकजीने पाट रखनेकी (धरेजेकी) आज्ञा दे दी। और गई हुई जागीर पुन प्राप्त कर ली। बस! धरेजा जारी हो गया, भट्टारक महाराजकी आज्ञा ले लेकर लोग धरेजा करने लगे। पापकी बेल बहुत जल्दी बढती है, अतः इस थोडेसे समयमें इसने इतना जोर पकड़ा कि, उक्त तीनों जातियोंकी निम्न श्रेणीके लोग सौमें नब्बे (१०० में ९०) के हिसाबसे धरेजेके भक्त हो गये है। कुलीन और श्रेष्ठ घरानेके लोगोंमें अलबत्तह इसका आदर कम है, परन्तु सौमें पाचसे कम अब वे भी नहीं है।

जिनके यहा एक बार धरेजा (पाट) हो जाता है, वे लोग लोगोंकी दृष्टिमें कुछ नीचे गिने जाने लगते है। कुलीन घरानेके लोग अर्थात् जिनके यहां धरेजा नहीं होता है, उनके साथ बेटी व्यवहार नहीं कर सकते हैं। सम्पूर्ण मांगलिक कार्योंमें उनका निरादर होता है, अर्थात् वे लोग शामिल नहीं किये जाते। किसी उत्सवमें उनका आना अमंगल समझा जाता है। जिनमन्दिरके गर्भगृहमें वे प्रवेश नहीं कर सकते और न उन्हें जिनप्रतिमाओंके स्पर्श करनेका अधिकार रहता है। इतना होनेपर भी एक बात बडे आश्चर्यकी है कि, इन लोगोंके साथ खानपानमें कोई प्रतिबन्ध नहीं है। सब लोग एकसाथ खा-पी सकते हैं।

जब किसीको धरेजेकी आवश्यकता होती है, तब वह पुरुष भट्टारक महाराजके पास जाता है, और प्रार्थना करके दश पचास रुपये भेंट देता है। बस धरेजेका आज्ञापत्र मिल जाता है। यद्यपि द्रव्यके लोभमें पडकर भट्टारकोंने यह पद्धति चलाई थी, तौ भी उस समय धरेजेमें योग्यता अयोग्यताका विचार किया जाता था। परन्तु अब तो लोभने गजब कर डाला है। रुपयोंकी योग्यता अयोग्यतासे धरेजेकी व्यवस्था दी जाने लगी है। जिसका फल यह हुआ है कि, आज भट्टारक महाराजकी भेंट करके बेचारा कोई गृहस्थ बनता है कि, कल वह रक्खी हुई बीबी किसी दूसरेसे ही राजी हो जाती है, और वह दूसरा भी महाराजको कुछ भेंट देकर उसे अपनी बना लेता है। इस तरह स्त्रियोंको अंग्रेजसमाजकी नाईं इच्छानुसार चाहे जितने पति रखनेकी स्वतंत्रता प्राप्त हो गई है, जिससे चतुर्थादि तीनों जातियोंका सत्यानाश हो रहा है।

इस अन्यायसे दुःखी होकर ही शायद महाराष्ट्र सभाके कुछ मुखिया यह चाहते है कि, विधवा पुनर्विवाह जारी करके एक पतिके जीते जी दूसरा पति करलेनेकी दुष्प्रथा रोक दी जावे। परन्तु हमारी समझमें यह विचार कीचडसे कीचड छुटानेके प्रयत्न सरीखा अविचारितरम्य है। जब तक स्त्रिया सुशिक्षिता न हो जावे, तब तक उनका स्वभाव दुर्निवार है। उनको पतिपारायणा और सुशीला बनानेके लिये धर्मशिक्षाके सिवाय और कोई दूसरा उपाय नहीं है। इसके बिना वे तुम्हारे बनाये हुए हजारों प्रतिबन्धोंको सहज ही तोड सकती हैं। माना कि, आपलोग उन्हें अपने नवीन प्रयत्न अर्थात् पुनर्विवाहसे एक पतिके जीते जी दूसरापति नहीं करने देंगे, परन्तु जब वे व्यभिचारपर उतारू ही होंगी, और उन्हें एक पति पसन्द नहीं आवेगा, तब छुपे करके दुष्कर्म करनेमें उन्हें कौन बाधा दे सकता है? और यदि ऐसा वे कर सकीं, तो जिस गुप्त पापके रोकनेके लिये धरेजा अथवा पुनर्विवाहकी विधि की जाती है, उसीको एक प्रकारसे उत्तेजना मिली कहलाई। इसके सिवाय जब वे अपने पुनर्विवाहमें पाये हुए पतिसे प्रसन्न न होंगी, और तुम्हारा प्रतिबन्ध उन्हें उसकी मौजूदगीमें दूसरा पति करनेके लिये रोकेगा, तब क्या जैसा कि दूसरे समाजोंमें देखा जाता है, विषप्रयोगादिसे उसका घात करके वे अपनी इच्छा पूरी न कर सकेंगी? यद्यपि यह कार्य बडे साहसका है, परन्तु जो लोग स्त्रियोंके चरित्रसे परिचित है, वे इसे असंभव नहीं कह सकते। अच्छे २ कुलीन घरोंकी स्त्रियां अपने पतियोंको अपने सुखका काटा समझके मार डालती हैं, और उसके पीछे धनकी अधिकारिणी होकर यथेष्ट पाप किया करती है। ऐसे सैंकडों मामले हमारी आंखोंके साम्हने आया करते हैं। फिर वे लज्जाहीन स्त्रिया जो अपना पुनर्विवाह करा सकती हैं, ऐसा कर्म करने लगें तो क्या आश्चर्य है? एक बात और भी है, वह यह कि, पुनर्विवाहकी प्रथा तुमने जारी भी कर दी और तुम्हारे जातीय कानूनसे किसी भी स्त्रीको एक पतिके रहते दूसरा पति करनेकी स्वतंत्रता भी नहीं रही। परन्तु जब उसका चित्त उस पतिसे विरक्त होगा और वह खुलेवाला कहने लगेगी, मैं तेरे यहा नहीं रहती, अथवा कोई दुष्कर्म करने लगेगी, तब क्या वह पति बेशर्म बना हुआ उसके पैर ही पडता रहेगा? इन सब बातोंपर विचार करनेसे यह पुनर्विवाहका प्रयत्न हमेंतो व्यर्थ ही सूझता है। यदि एक पतिके रहते दूसरे पतिके करनेकी रीतिको बन्द करनेके लिये ही सभाके मुखियोंका प्रयत्न है, तो वे पाट (धरेजे) की रीतिके साथ ही एक नियम अपनी जातिका और भी क्यों नहीं बना देते कि, एक पतिके जीते जी कोई भी स्त्री दूसरा पाट नहीं कर सकेगी। बस एक इसी नियमसे पुनर्विवाह वालोंकी इच्छा पूरी हो सकती है।

यहा एक प्रश्न यह उठता है कि, पाटकी आज्ञा देनेका कार्य भट्टारकोंका है। वे लोग बडी कठिनाईसे यह नियम स्वीकार करेंगे। क्योंकि ऐसा करनेसे उनकी आमदनीका एकद्वार बन्द हो जावेगा। परन्तु पाटकी रीतिको बन्द करके पुनर्विवाहकी रीतिको जारी करना भी तो सहज नहीं है। हमारी समझमें तो यह उससे भी

कठिन है। क्यों कि इसमें भी तो भट्टारकगण बाधा उपस्थित करेंगे। और उसमें भी तो उन्हें द्रव्यकी क्षति होगी। यदि भट्टारक महाशयोंसे समाजकी ओरसे प्रार्थना की जावेगी, और प्रयत्न किया जावेगा, तो हमारी समझमें वे उसे खुशीसे स्वीकार कर लेंगे। और कल्पना करो कि, उन्होंने स्वीकार नहीं भी किया, तो प्रत्येक पंचायतियोंके द्वारा इसका प्रयत्न कराना चाहिये। सिद्धि कठिनतासे होगी, परन्तु होगी अवश्य।

यदि पुनर्विवाहके प्रस्तावकोंका अपने प्रस्तावमें केवल उपर लिखी हुई कुरीतिके रोकनेका अभिप्राय है, तो वह इस तरहसे रोकी जा सकती है। परन्तु यदि प्रस्तावके भीतर कोई गूढ पॉलिशी है, तो अवश्य ही हमारे विचार उन्हे मान्य नहीं होंगे। वह पालिशी यह हो सकती है कि, पुनर्विवाह जब जातिमान्य हो जावेगा, तब उन लोगोंको जो कि, धरेजा करनेवाले है, और जातिसे कुछ नीचे समझे जाते है, यह स्वत्व होगा कि, कुलीन लोगोंमे किसी बातमें कम न समझे जावें। इसके सिवाय पुनर्विवाहकी प्रथा जब चल पडेगी, और वह कोई निन्द्यकार्य न समझा जावेगा, तब वे कुलीनलोग जिनमे अभी १०० मे ९ धरेजा करनेवाले है, थोडे ही समयमें एकमेक हो जावेगे, और चतुर्थ, पंचम तथा कासार समाजमे पातिव्रत सर्वथा उठ जावेगा। इस लेखको समाप्त करनेके पहले अपने दक्षिणमहाराष्ट्र भाईयोमे हम एक प्रार्थना करते है, वह यह कि, आपके समाजसे हमको जितना चाहिये, उतना परिचय नहीं है। यह जो कुछ विचार लिखे है, आपकी जातिके ही एक विद्वान् सज्जनसे पछताछ कर लिखे है। इस लिये सभव है कि, इसमे कुछ भूलें हो गई हों! परन्तु अनेक बाते विचारने योग्य भी होंगी, इस लिये आप लोग इस आन्दोलनको समझबूझ कर करें। चाहिये तो एसा कि, यह विवादास्पद विषय सभा तथा उसके मासिकपत्रके द्वारा चलाया ही न जावे, क्योंकि इसके विवादमे विरोध बढकर अन्य जो करने योग्य कार्य है, वे रह जावेंगे। और जो चलाया है, तो इसका विचार अवश्य ही रक्खें कि, "धरेजा (पाट) सरीखे निन्द्य कर्मसे एक तो आप लोगोंकी जाति यों ही लाछित और जैनियोंकी कलंकस्वरूप हो रही है, फिर पुनर्विवाहके प्रपंचद्वारा कहीं ऐसा न हो कि, सर्वथा पापपंकमें निमग्नकर पातिव्रतके नामसे ही रहित कर दी जावे। कुलीन घराने इस कालिमासे बचे रहैं, वही उपाय करना श्रेष्ठ है।" इत्यलम् विज्ञेषु।

बम्बई। २०-७-०७. } भवदीय— बुद्धूलाल श्रावक।

पत्रोंकासार।

गुणावाजीमे धर्मशाला।

यहांसे १॥ मीलकी दूरीपर श्री गौतमस्वामीका निर्वाणक्षेत्र श्री गुणावाजी है। यहा छह महीने तक यात्रियोंकी भीड ज्यादा रहती है। स्टेशन नवादापर उतरना पडता है। यात्रियोंको उतरनेके लिये कोई धर्मशाला नहीं है, इसलिये उन्हें बहुत कष्ट उठाना पडता है। ६ बजे शाम अथवा ९ बजेकी गाडीमे आये हुए यात्रियोंको रात्रिमें ही १॥ मील जानेकी दिक्कत होती है, इसलिये वेचारे नाना प्रकारके कष्ट उठाकर जिधर तिधर मकानोंमें आरजू मिन्नतसे रहकर रात्रि व्यतीत करते है और सवेरे बैलगाडीसेअथवा किसी तरहसे क्षेत्रको जाते है। अतएव यहा धर्मशालाकी बडी भारी आवश्यकता है। यह बडे मौकेकी जगह है। खेद है कि, अभी तक किसी धर्मात्माका ध्यान इस ओर नहीं गया। मै ९-१० महीनेसे यहा एक दूकान करके रहने लगा हू। धर्मात्माओंको मेरी प्रार्थना-पर ध्यान देकर द्रव्य सहायता भेजना चाहिये। मै भी उसमें यथाशक्ति सहायता देनेको तयार हू। मेरा पता—लक्ष्मीनारायण जैनी, नवादा (गया)।

केशरकी सहज परीक्षा।

पवित्र स्वदेशी केशरके विषयमें प्रोफेसर गज्जरका सर्टिफिकेट जैनमित्रमें छपा है। उससे सर्वसाधारण भाइयोंका विश्वास बढा है। परन्तु और भी सुभीतेकी परीक्षा यह सिद्ध की है कि, अपवित्र केशर चन्दनसे घिसकर कटोरीमे रक्खो। और सूख जानेपर कटोरी धो डालो, तो कटोरीमें कालिमाकासा दाग रह जाता है। परतु पवित्र केशरको किसी तरकीबसे कटोरीमें रखकर धोवो तो पीछे दाग नहीं रहता। इसी प्रकार भगवानके चरणों पर लगानेसे दूसरेदिन प्रक्षालके समय अपवित्र केशरका दाग दिखलाई देता है, परन्तु पवित्र केशरका नहीं दिखलाई देता। सब भाइयोंके सुभीतेके लिये इसे प्रकाशित कर दीजिये।

रामचन्द्र अभयचन्द्र, बावी.।

प्राचीन लहना।

उसमनाबादसे एक कोसपर लहना नामका एक पहाड़ है। वहापर मैं दर्शन करने गया था। रास्ता पहाड़ी है। पहाडको कोलकर मंडप मन्दिर प्रतिमा आदि बनाये गये हैं। पहले यहा पर १०९ लहने थे, परन्तु वे विना मरम्मत और विना देख-रेखके नष्ट हो गये हैं। अब सिर्फ २-३ बाकी रह गये है। जो हैं वे गिरनेको तैयार हैं। दो लहने अभी इतने २ बडे है कि, उनमें दो-हजार आदमी बैठ सकते हैं। इन लहनोंमें कोठरिया भी हैं। जिनमेसे दो तीन कोठरियोंमें शान्तिनाथ, पार्श्वनाथ आदि तीर्थंकरोंकी प्रतिमा है। यह स्थान जैनियोंकी प्राचीनता तथा अतिशय प्रगट करता है। स्थान रमणीय तथा आगमका है।

दीपचंद—उपदेशक।

जबलपुर बोर्डिंगकी रिपोर्ट।

उक्त रिपोर्टका मैने निरीक्षण किया। पठनक्रम और परीक्षाफल तो संतोषजनक है, परन्तु यह नहीं लिखा कि, विद्यार्थी कहा और किन २ कक्षाओंमे पढते है। बोर्डिंगके विद्यार्थियोंको सस्कृत पढानेका प्रयत्न करना चाहिये। प्रबन्धकारिणी सभामें केवल जबलपुर, नरसिंहपुरके ही महाशयोंके नाम है। मेरी समझमे सागर, कटनी, दमोह, छिंदवाडा और सिवनीके भी एक २ दो २ महाशयोंके नाम शामिल करना चाहिये! श्री पन्नालालजी सुप्रिंटेंडेंटने यहापर कहा था कि, सवाईसिंगई खेमचन्द लक्ष्मीचन्दजीकी ओरसे १०१) वसूल हो गया है, परतु रिपोर्टमे यह बकाया बतलाया है। भूलका सशोधन होना चाहिये।

लक्ष्मीचन्द पाटणी, छिंदवाडा।

सच्चीमाकी परीक्षा।

किसी राजाके दरबारमें एक मुकद्दमा पेश हुआ। उसमें दो स्त्रिया वादी और प्रतिवादी थीं। एक कहती थी, यह लडका मेरा है और दूसरी कहती थी, नहीं, यह लडका मेरा है। वे दोनों एक सेठकी स्त्रिया थीं। उनमें से जो बडी थी, उसका यह पुत्र था। बालकपनसे उस लडकेकी छोटी माका लडकेपर अतिशय प्रेम था, इस कारण वह बालक समझता था कि, यही मेरी मा है। जब तक सेठ जीते रहे, यह ममत्वबुद्धि सामान्य और विनोदशीला बनी रही, परन्तु उनके मरते ही दोनोंमें झगडा होने लगा और आखिर वह राज्यद्वारपर पहुंचा। छोटी

माके पक्षमें यद्यपि कोई उचित सुबूत पेश न हो सके, और साक्षियोंसे बडी माका ही वह लडका सिद्ध हुआ, परतु अज्ञान बालक यही कहता रहा कि, छोटी सेठानी मेरी मा है। इसलिये विवादका अन्त नहीं हुआ। अतमे राजाने हुक्म दिया कि, एक तीक्ष्ण करवतसे इस बालकके दो बराबर २ टुकडे कर दिये जावें और दोनों स्त्रियोंको एक २ दे दिया जावे। हुक्मकी देर थी कि, करवत लाई गई। दर्शकगणोंके हृदय विस्मय-शोकसे उछलने लगे और बडी सेठानी चिल्ला उठी, महाराज पुत्र! मेरा नहीं है, छोटी सेठानीका है, मारिये नहीं। मै इसका मुख देखकर ही खुश होऊगी। परंतु छोटी सेठानी स्तब्ध खडी रही। तब राजाने जान लिया कि, यह पुत्र बडीका है। परतु एकवार फिर परीक्षा करनेके लिये उससे कहा, यदि तू इसकी जान बचाना चाहती है, तो एवजमे अपनी जान दे। सुनते ही वह प्राण देनेको तयार हो गई। बस, फैसला दे दिया कि, पुत्र बडी सेठानीका है और बलात् दिलवा भी दिया। ठीक यही कथा श्री-सम्मेदशिखरजीके विषयमें घटित होती है। अग्रेज लोग इस पर्वतपर तीक्ष्ण करवत चलाना चाहते है और दिगम्बर तथा श्वेताम्बर उसकी दो मातायें है। ससार और न्याय कर्मचारी निरीक्षक है। अब यह सच्ची वत्सलताकी परीक्षाका समय है। देखें दोनोंमेसे कौन पुत्र इस पर्वतराजको कठोर करवतसे बचाकर सदाके लिये अपने पुत्रको पाकर बडी सेठानीके समान सुखी होता है। हे दिगम्बरियो और हे श्वेताम्बरियो! जान पडता है, आपकी सच्ची परीक्षाके लिये ही सरकारने यह फद रचा है। अत शीघ्र ही अपनी वत्सलता बताइये, नहीं तो पर्वतराज चला जावेगा। वह तुम दोनोंमेसे किसीका भी नहीं रहेगा।

लालचन्द सेठी, आगर (मालवा)

पंचायती बलका संहार।

पचायतियोंका सबसे बडा बल बहिष्कार है। अपराधीको जातिसे बहिष्कार कर देनेसे ही वह एक प्रकारसे अपने पापका फल पा चुकता है। बहिष्कृत नहीं हो जाऊं, इसी लिये वह पंचायतको डरता है। और अपने आचरणको अच्छा बनानेके प्रयत्नमें रहता है। परन्तु अब यह बल प्रायः नष्ट हो गया है। लोगोंकी दृष्टिमें पंचायत अब एक छोटीसी चीज रह गई है। इसका कारण अनेकता और पक्षपात है। अब यदि पंचायत किसीको जातिसे बहिष्कृत (अलग) करती है, तो दो चार आदमी उसमें मिल कर एक अलग तड बना लेते है। और अपराधीको पाप और जातीय दडसे निर्भय कर देते हैं। इसके सिवाय जातिसम्बन्धी झगडोंको लोग सरकारी अदालतोंतक ले जाने लगे हैं, इससे पचायतियोंकी रही सही ताकत और भी रसातलको चली जा रही है। अब यदि कोई पुरुष व्यभिचार करे, अथवा कोई स्त्री गर्भपात करे, तो उसे जातिके बीसों आदमी जानते हुए भी पंचायतमें यह बात कहनेका साहस नहीं कर सकते कि, इसने अमुक कर्म किया है। क्योंकि जो कोई कहता है, अपराधी अदालतमें जा कर उसी पर नालिश ठोक देता है। इतना ही नहीं किन्तु जातिके अनेक महाशय उसके सहायक भी बन जाते है, जिससे बेचारेपर जहलकी नौबत तक आ जाती है। और सरकारी अदालतें जैसा कुछ न्याय करती है, सो सब ही जानते है। रुपयेके जोरसे जितने चाहे गवाह बनाकर, अपराध चाहे जिस ओर सुबूत करा लीजिये। हमारे इस प्रान्तमें ऐसे मामले दिनपर दिन बढते जाते हैं। हमारी जाति अन्याय और दुराचारोंका ठिकाना बनती जाती है। लोग स्वच्छन्द हो रहे है। जो जिसके जीमें आता है करता है। कोई रोक टोक नहीं कर सकता। यदि यहाके पच लोग अब भी नहीं चेते, तो आगे न जाने क्या २ अनर्थ होने लगेंगे। जहातक मै जानता हू यदि पचोंमे एका और बुद्धि हो, तो पचायती कार्योंमे सरकार हस्तक्षेप नहीं कर सकती। इसलिये कोई भी जातिय मामले अदालतों तक नहीं जाने देना चाहिये। और न पचायती कार्योंमें किसीका पक्ष करके तडे बनाना चाहिये। क्योंकि ऐसा करनेसे हमारा ही सत्यानाश होता जाता है। किसीके थोडेसे मोह तथा पक्षमें पडके जातिभरको दुराचारिणी बनाना अच्छा नहीं है। १०-७-०७.

नाथूराम प्रेमी-देवरी।

विविध समाचार।

तम्बाकूका खर्च—हिसाब लगाया गया है कि, संसारभरमें प्रतिवर्ष दो करोड़ मन तम्बाकू पैदा होता है। अर्थात् लोग प्रतिवर्ष ९० करोड रुपया थूकने सूंघने और फूंकनेमें उडा देते हैं।

इंग्लेंडमें अनाज—हिसाबसे जाना गया है कि, इग्लेंडमें जितना अनाज उत्पन्न होता है, उससे वहाके निवासी वर्षमें सिर्फ ९१ दिन भरपेट अन्न खा सकते हैं। यदि हिन्दुस्थान अपना पेट काटके अन्न न भेजे, तो वहावालोंको २७४ दिन भूखे रहना पडे। जर्मनीकी भी यही अवस्था है, वह अपने अन्नसे १०२ दिन पेट भर सकता है। बेचारा भारत अपरिमित अन्न उत्पन्न करके भी आप भर पेट खानेको तरसता है। यहाके प्राय १० करोड मनुष्य जन्मभर एक वक्त भोजन करके दिन काटते हैं!।

नमकपर सरकारी टेक्स—हिन्दुस्थानमे बेशुमार नमक उत्पन्न होता है। परन्तु हम लोगोंका भाग्य ऐसा है कि, वह हमको यह प्रकृतिदत्त पदार्थ भी खाने नहीं देता। जिस नमकके उत्पन्न करनेमें सिर्फ तीन पैसा खर्च होता है, उसपर हमारी दयालु सरकार ढाई रुपया टैक्स लेती है, अर्थात् तीन पैसेका नमक ढो रुपया पौने नौ आनेमें पडता है। कांग्रेसकी प्रार्थना और कोशिससे इस टैक्समें कुछ न्यूनता हुई है।

तिब्बतमे ग्रन्थोका भंडार—तिब्बतमें बहुतसे प्राचीन ग्रन्थ प्राप्त हुए है, उनमें अनेक ग्रन्थ सस्कृत तथा प्राकृतके भी है, जो भारतमें सर्वथा लुप्त हो चुके थे। आठ व्याकरणोंमे जिस चान्द्र व्याकरणका नाम है, वह भी वहा प्राप्त हुआ है। बगालकी रायल एशियाटिक सुसाइटीकी ग्रन्थमालामें उक्त ग्रन्थ प्रकाशित होगे। संभव है कि उक्त ग्रन्थसग्रहमे जैनग्रन्थ भी निकलेंगे।

उपदेशकका व्याख्यान—आषाढ वदी १० को इन्दौरमें रामासाके मदिरमें प० कस्तूरचन्दजीका गृहस्थ धर्मके विषयमे व्याख्यान हुआ। सभापतिका आसन प० पन्नालालजी काशलीवालने गृहण किया था।

जैनबोर्डिंगकी कमेटी—इन्दौरका शेठ हुकमचन्द दि. जै बो. स्कूल अभीतक शेठ हुकमचन्दजीके अधिकारमे था। हर्ष है कि, शेठ माणिकचन्दजी बम्बईकी प्रेरणासे एक १५ महाशयोंकी कमेटी स्थापित होकर अब उसके अधिकारमें यह बोर्डिंग कर दिया है। शेठ हुकमचन्दजी कमेटीके सभापति हुए है।

सस्ती शुद्धकेशर—शेठ हुकमचन्दजी इन्दौरवालोंने अपनी कपडेकी दूकानमें एक डिपो खोला है, जिसमें असली शुद्ध केशर हमेशा तयार मि-

लती है और पडतलके भाव १-) एक रुपया एक आना तोलेमें प्रत्येक भाईको दी जाती है ।

सरकारी स्कूलमें पारितोषिक—सेठ हुकमचन्दजीने इन्दौरके सरकारी स्कूलका निरीक्षण करके १००) का पारितोषिक वितीर्ण किया था, जिसके उपलक्ष्यमें इन्स्पेक्टर आफ स्कूलसने धन्यवाद-पत्र भेजा है ।

नमकमें हड्डी—सागर जिलेसे एक भाई लिखते हैं, यहांपर जो कांसिया नामका नमक आया है, उसमें रेत और हड्डी मिली रहती है । भाइयोंको परीक्षा करके उसे काममें लाना चाहिये । वर्तमानमें धर्मरक्षा बडी कठिन हो गई है ।

जैनी प्रोफेसर—जिन विजयके भूतपूर्व सम्पादक मि० अण्णापा बाबाजी लठ्ठे एम्. ए. कोल्हापुरके राजाराम कालेजमें अंग्रेजीके प्रोफेसर नियुक्त हुए हैं ।

जीववध बन्द—सुनते हैं, गोंडलके ठाकुर साहबने यह आज्ञा प्रचलित की है कि, म्हार (चमार), माग (कोष्टी) वगैरह कोई भी लोग हमारे राज्यमें जीते हुए जानवरोंको न मारें । ठाकुर साहबकी भूतदया प्रशंसनीय है ।

काया पलट—जैनगजटने अब जैनमित्र जैसा आकार धारण किया है । लाला जुगलकिशोरजी मुख्तार-देवबन्द (सहारणपुर) के सम्पादित किये हुए तीन अंक निकले हैं । पत्र सुधरनेके लक्षण दिखलाई देते हैं ।

लाट साहबकी चिट्ठी—श्री सम्मेदशिखरजी विषयक तार चिठ्ठीयोंके उत्तरमें लाट साहब शिमलेसे लिखते हैं, छोटे लाट साहब सिनम्बरके शुरूमें अथवा अगस्तके अन्तमें मौके पर आवेंगे, उस समय आपलोग उनसे कहना सुनना । ख्याल किया जावेगा । तब तक पट्टे नहीं दिये जावेंगे ।

सांपसे मौतें—हिसाब लगाया गया है कि, प्रतिवर्ष सांपके काटनेसे साठ हजार मनुष्य मरते हैं । यदि सांपके काटते ही घावसे दो दो तीन २ इंच ऊपरकी ओर सुतली रस्सी अथवा और किसी तरहसे दो तीन बंध जोरसे लगा दिये जावें, जिसमें रक्तका प्रवाह बन्द हो जावे और फिर घावको चाकू या उस्तरेसे खूब गहरा करके गरम पानी घंटे आध घंटे डाला जावे, तो विषाक्त रक्त निकल जानेसे रोगी अच्छा हो जाता है ।

अलंकारचिन्तामणि—जैनियोंका लुप्तप्राय अलंकारका ग्रन्थ अलंकारचिन्तामणि छपके तयार हो गया है ।

पुस्तक समालोचना—हमारे पास अनेक पुस्तकें समालोचनार्थ आई हैं, स्थान न मिळनेसे अभीतक उनकी समालोचना न हो सकी, अब शीघ्रता की जावेगी ।

जीवहिंसाका इकरार नामा—फलटणके शेठ मोतीचन्द मलूकचन्दजीके चिरंजीवि वेणीचन्दकी बारात सासकल नामक ग्रामको गई थी । वहां प्रतिवर्ष सैकडों जीवोंका बलिके लिये बध होता था । अर्थात् भिन्नधर्मी लोग देवताओंके लिये जानवरोंको मारते थे । हर्षका विषय है कि, शेठ मोतीचन्दजीने बहिरोबाका मन्दिर बनवानेके लिये भिन्नधर्मी लोगोंको २००) देकर उनसे एक इस किस्मका इकरारनामा स्टाम्पपर लिखवा कर रजिष्टरी करा लिया है कि, हम लोग अथवा हमारे वंशज आयन्दा कभी, कोई, किसी हेतुसे कैसाही संकट पडनेपर किसी जीवका घात तथा अंगच्छेदादि न करेंगे, यदि करें, तो तुम्हें अथवा तुम्हारे वारिसोंको २०००) दंडका देवेंगे । इकरारनामा १९ जुलाई १९०७ को लिखा गया है । गांवके सब लोगोंकी उसपर सही है । शेठ मलूकचन्दजीके इस कृत्यसे हम बहुत प्रसन्न हुए । सच्ची जीवदया इसीको कहते हैं । और सातिशय पुण्यका बंध ऐसे ही शुभ कर्मोंसे होता है । वह पुत्ररत्न चिरकाल तक संतति संपत्तिवान् होकर जीओ, जिसके विवाहमें ऐसा पवित्र कार्य हुआ है । विवाह कार्योंको ऐसे ही पुण्य कार्योंसे मांगलिक बनाना चाहिये ।

प्राप्ति स्वीकार श्रीसम्मेद शिखरजी ।

(गतांकसे आगे)

ता ७ जुलाई २२ जुलाईसे ०७ ई० पर्यंत द्रव्य प्राप्तिकी सूचीः—

२६१२।-) ता० ६ जुलाई तक, पिछला जमा
२५) समस्त पंचान हसवा (जि. गया) ।
१०) भाईराम अभयचन्द कोठारी, मोकलगांव ।
५) विनियाबाई महुवा.
५) पण्डित चैराजी महुवा,
४५) समस्त पंचान किणी (सतारा)
५०) पंचान नांदगांव.
३६४।-)॥ समस्त पंचान आलन्द.
७५) ,, ,, बीड (अहमदनगर नीजाम स्टे.)
२००) लाला दयाचन्द निहालचंदजीकी विदुषी मौसी मनोहरीबाई—नकूड.
१००) ,, छज्जूमलजीकी पत्नी श्रीमती मह्लोबाई—नकूड (सहारनपुर)
२५) ,, कन्हैयालालजीकी पत्नी श्रीमती पिसतोबाई नकूड.
५) श्रीमती बादामीबाई नकूड
५१) रा रा बाबाजी पायप्पा पिटाले—सांगली.
३२) समस्त पंचान—जैसीनगर (जि सागर)
७७॥) ,, ,, बिजोलिया, आरोली, खेडी (मेवाड़)
१०५) ,, ,, इण्डी
५) शेठ कन्हैयालालजी मोनासाजी, मोरसी
२३) समस्त पचान, बोरसद, मा पारेख जेठालाल प्रेमानंद.
१००) ,, ,, बेडकीहाल (बेलगांव)
२००) ,, ,, कोटा, रियासत.
२५) शेठ भूपाल अप्पा जिरगे, कोल्हापुर.
१) मास्टर चुन्नीलालजी, जबलपुर
६।=) ला उमरावसावसुखसिंह, बारा सिवनी.
५०) समस्त पचान आगर ।
२१) ,, ,, दुधेगाव (सतारा)
३१॥=) ,, ,, सोनारी
५) बाबू विशम्भरसहायजी डि इ. गोंडा ।
२) ,, महेशप्रसादजी, स्टे. मास्टर, गोंडा,

४२७२=)॥ कुलयोग.

प्रार्थी—
माणिकचन्द हीराचन्द.

नोटिस ।

दिगम्बरजैनसंस्कृतपाठशाला जबलपुरके लिये एक दिगम्बरजैन संस्कृतअध्यापककी आवश्यकता है, जो संस्कृत और धार्मिक विषयोंकी उच्च-शिक्षा दे सके । तथा वैद्यक विषयका भी ज्ञाता हो; जो औषधालयका काम कर सके । श्रीजीकी पूजन करै और रात्रिको शास्त्रश्रवण भी करावै । वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा । प्रार्थनापत्र सर्टीफिकेट समेत शीघ्र भेजें ।

सिंघई दालचंद नारायणदास,
लार्डगंज, जबलपूर.

ग्राहकोंको सूचना।

जैनमित्रका ८ वा वर्ष समाप्त होनेपर आया, परन्तु हमारे कई ग्राहक महोदयोंने अबतक जैनमित्रका वार्षिक मूल्य भेजनेकी कृपा नहीं की और न वी पी. भेजनेकी आज्ञा दी। इसलिये उनसे प्रार्थना है कि, शीघ्र मनीआर्डर भेजनेकी कृपा करें। अन्यथा हम समझ लेंगे कि, वे वी. पी. के अभिलाषी हैं।

मेनेजर.

अलंकारचिन्तामणिः

भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणीतः

यह अलकारशास्त्रका ग्रंथ जिनसेनआचार्यका बनाया हुआ है, यह ग्रंथ दिगबरजैनपरीक्षालयके पठनक्रममें रक्खा है। मूल्य बार आना पोष्टेज अलग।

मगानेका पता--रावजी सखाराम दोशी,

शोलापूर, सिटी.

चलो! दौड़ो!! शीघ्रता करो!!!

सिर्फ थोडी २ प्रतिया बाकी है। विक जानेपर हम नहीं दे सकैंगे। और इन पुस्तकोंकी दुवारा छपनेकी आशा नहीं है। इसीसे कहते है कि शीघ्र मगा लीजिये।

५) रुपये का माल १) रुपये में

गौरीनागरी कोष

५९० पृष्ट लगभग पांच हजार शब्द।

जिसकी पाच वर्षसे धूम पडरही थी, वह अब छप कर तयार हो गया. यह कोष बडे बडे विद्वानोंकी मण्डली द्वारा ९ वर्षके निरन्तर उद्योगसे तैयार हुआ है ऐसा उत्तम कोष आजतक नहीं बना और न आगेको आशा है। यह बी० ए० पास मास्टर है. १) रुपया में उम्र भर के लिये नौकर होता है। हिन्दी, उर्दू, प्राकृत, संस्कृत, अरबी, फारसी, इत्यादि शब्दों के मायने पूछेंगे, तौ पहले हिंदी में बतावेगा फिर अंगरेजीमें समझावेगा। वकील, मुख्तार, पण्डित, मास्टर, ग्रन्थकार, लेखक आदि सबका सहायक है। हिन्दीहितैषी भूतपूर्व छोटे लाट मेकडानल बहादूर तथा रीवांनरेश और टेक्स्ट बुक कमेटी पजाबने भी इसको पसन्द किया है और बहुतसे स्कूलके इन्स्पेक्टर एवं मास्टरों ने इसे खरीदा है। ट्रान्सलेशन (हिन्दीसे अंग्रेजी और अंग्रेजीसे हिन्दी) करनेवालेके बड़े कामका है। अतएव स्कूलके विद्यार्थी हिन्दी अंग्रेजीमें योग्यता प्राप्त करनेके अभिलाषी एवं अध्यापक (मास्टर) इसे खरीदने से न चूकें।

सौदामिनी! सौदामिनी!! सौदामिनी!!!

नवन्यास! उपन्यास!! हरोन्यास!!!

'भारतेन्दु' के भूतपूर्वसम्पादक श्री राधाचरण गोस्वामी (वि० वा० म्यू० क० औ० मै०) की ललित लेखनीसे लिखित प्रेम की छटा। रस की छटा!! ११ अकों में वटा!!

अभी बंड आवतात और हावभाव से छपा है. जिस पर लक्ष्मीकी कृपा है, उसीसे =) दाम)॥ डाक महसूल पाकर झगडा रफा और हिसाब सफा है, घडी भर दिल लगाना नफा है, क्या इसमे कोई खफा है? पुस्तकें कम! बिक्रीका बाजार सरगर्म, सौदा नर्म। और इसके मर्मको रसिक लोगही जानते हैं। इसमें वासवीं सदीका चित्र इनलाइटैंगीका चरित्र सच्चा मित्र, सौदामिनीकी पवित्र प्रीति घनश्यामकी विचित्र रीति प्रेमकी अकाट्य नीति, गुरुजनोंकी भयानक भीति, सबके सीन अपने २ अवसर पर दिखलाये गये हैं। उपन्यास क्या नाटक है, चेटक है तमाशा है। पूरा देखे विना जी नहीं मानता।

बालाबोधिनी--यदि गृहस्थको स्वर्गधाम बनाना चाहते हों और अपनी स्त्रियों तथा पुत्रबधुओं एवं पुत्रियों को उच्च कोटिकी स्त्री शिक्षा देना चाहते हों, तो इस पुस्तकको अवश्य खरीदो! इसमें नियमानुसार पुत्रीको नीतिशिक्षा का उपदेश किया गया है। मा, बाप, भाई, बहन, वगड परोसन सास, श्वशुर, ननद इत्यादि किस के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिये और पतिकी कितनी सेवा शुश्रुषा करने से स्त्री सती, साध्वी और पतिव्रता कहला सकती है। पतिव्रता धर्म का अखण्ड पुण्य सञ्चय करके क्योंकर दोनों लोक का सुख भोग सकती हैं। मूल्य।~)

नीचे लिखी पुस्तकोंकी सिर्फ दश २ के करीब प्रतिया बाकी है। अतएव विशेष शीघ्रतासे आर्डर भेजिये।

पांचसौ व्यापार मू० १) रु०

वह पुस्तक किस्सा नहीं है जो एक वार पढकर रख दो. इसमें रंग, रोगन, साबुन, वार्निश आदि करीब पाचसौंकि शिल्प विद्या लिखी है. इसमेंकी एक भी चीज सीख लेनेसे मनुष्य स्वतन्त्र व्यापार कर सकता है। ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं जिस के कामकी बात इस में नहीं मिलै। मू० १) रु०

व्यंजनप्रकार मू० ≈)

प्राय मनुष्योंको भोजन के ही ठीक न बननेसे अनेक प्रकारके रोगों में फंस कर कष्ट उठाना पड़ता है। इस पुस्तकमें इन्हीं परम आवश्यक बातोंका उल्लेख है। साधारण दालरोटी मे लेकर लड्डू जलेबी, इमरती, वाळूशाही इत्यादि और सब प्रकार के नमकीन पदार्थ आदि २ कई प्रकार से लिखे गये हैं पुस्तक विशेष लाभदायक सचित्र और खरीद कर देखने योग्य है.

राजकुमार उपन्यान मू० ≈)

यह रोचक उपन्यास एक बगालकी शिक्षित महिलाने लिखा है और रोचक एव खरीदनेके लायक है।

अशर्फियोकी थैली सिर्फ।) में देते हैं अंग्रेजी सीखनेकी कल मू० ~)॥

नागरी जाननेवाला खुद अंग्रेजी बोलना और समझना सीख जाता है।

नागरीके दफ्तर मू०।~)

इसमें नागरीमें रहननामा बैनामा तमस्सुक आदि सब प्रकारके राजकीय व और व्यावहारिक कार्य लिखे हैं। पुस्तक प्रत्येक मनुयष्को अपने पास रखनी चाहिये।

सूचना--फीस मनीआर्डर खरीदारोंको जुदा देना होगा और पत्र भेजते समय जैनमित्रका हवाला अवश्य दो।

मिलनेका पत्ता--

मैनेजर सारस्वत कम्पनी,

मेरठ सिटी.

शुरमा ! शुरमा ! ! शुरमा ! ! !

जैनग्रन्थरत्नाकरकार्यालयके सिवाय हमारा एक **स्वदेशी कार्यालय** नामका विभाग है । जिसमें १० वर्ष हुए अनेक प्रकारके शुरमें बनते हैं और सब भाइयोंके नेत्रोंकी रक्षार्थ सहायता पहुचाई जाती है । हमारे यहांके बने हुए शुरमें सर्व साधारण और जैन समाजमें प्रसिद्ध हैं जिन २ महाशयोने हमारे यहांसे एक बार एक शीशी मगाई है, वे आज तक हमारा ही शुरमा मगाते है और अपने दोस्तोंकेलिये भी मगा देते है इसकारण हमने इसके विशेष इश्तहार न देकर जो भाई इस शुरमेसे अपरिचित है उनको इसके प्रत्यक्ष गुण दिखानेके लिये **सर्व प्रकारके शुरमेकी २००० शीशिये विना मूल्य** बतौर नमूनेके वितरण करनेका प्रबंध किया है सो जिनको इस शुरमेसे अपने अमूल्य नेत्रोंकी रक्षा करना हो, वे नीचे लिखे शुरमोंमेसे चाहे जिस प्रकारके शुरमेकी एक शीशी मगा लेवे परन्तु डांकखर्च और पेकिंग खर्चके लिये ≈) आनेके टिकट चिट्ठीके साथ अवश्य ही भेजने होंगे एक भाईको एक ही शीशी भेजी जायगी ।

* **काला शुर्मा नं० १** यह शुमा हमेशह नेत्रोंमे लगानेसे सब रोग वा आखोंकी गर्मी नष्ट करके ज्योतिको बढाता है । मूल्य आधे तोलेकी शीशीका ॥) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

* **कालाशुर्मा नं २** इस सुरमेको प्रात काल और सोते समय लगानेसे नत्रोंके सब रोग शीघ्र ही नष्ट हो जाते है । यह शुरमा बहुत बढिया और ठडा है—इस शुरमेको भोपालपटनमके तहसीलदार साहब मूलचदजी परवार प्राय ८ वर्षसे लगाते है, इन्होने अपने अनेक हितैषी उद्देदारोंको इस शुरमेके भक्त बनाये हैं उनके अनेक प्रशंसा पत्र हमारे पास है हम उन्हें न छपाकर इतना ही कहते है कि १ शीसी मगाकर अवश्य ही आजमा लेवे । मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १) नमूनेकी शीशी पाव तोलेकी ।

***सफेद शुरमा न० ४** इस शुरमेको सबेरे तथा शामको चार बजे लगाकर ५ मिनिटके बाद न० २ का ठडा शुरमा लगाया जावे धुंद नजला, दृष्टिमन्दता, रतौंदा आदि नेत्रके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं । असली मधुसे (शहदसे) सलाई भिगाकर अथवा शुरमेको मधुमे मिलाकर सलाईसे लगाया जावे तो एक वर्षतकका फूला भी प्राय. कट जाता है परन्तु शहद असली न होगा और उसमें खांडकी चासनी वगैरह मिली होगी तो उल्टा नुकसान करेगा मूल्य डेढ मासेकी शीशीका १) नमूना आधा मासा ।

***नयनामृत अर्क न० ८** इसको सलाईसे दिनरातमें तीन चार बार लगानेसे न० १ के मुवाफिक गुण करता है । मूल्य ।) नमूना मुफत ।

* **तरल सुरमा (अर्क) न० ९** मूल्य ॥) वृद्धों व विधवा स्त्रियोंके लिये है । तथा दुखती आईहुई आंखोंके लिये तो यह रामबाण है तीन चार दिन तक दिनरातमें ४ बार लगानेसे दुखती आई हुई आंखोंको आराम कर देता है । एक २ शीसी सब गृहस्थोंको अपने घरमे रखना चाहिये, जो महाशय, दुखती आंखोंवालोंको मुफत बाटना चाहें उन्हे हम इसे बहुत किफायतसे भेज सकते है।

पवित्र स्वदेशी कशमीरी केशर ।

सूरज छाप वगेरह विलायती केशरमें शराब वगेरह **अशुद्ध** पदार्थोंका मेल होता है यह बात अब जगत्प्रसिद्ध **हो गई है** इसकारण मुम्बइके स्वताम्बरी भाइयोंने पचायती करके स्वदेशी पवित्र कशमीरी केशरकेलिये एक दुकान खोल दी है, और काशमीरमे खास जैनीभाई भेजकर गाव २ के किसानोंसे खरीदकर केशरका सग्रह करके सर्वत्र पवित्र केशरके पहुचानेका प्रबध किया है । अनेक भाइयोंन इस केशरमें भी अशुद्ध पदार्थ मिले हुये बताये थे इसकारण भारतवर्षके जगत्प्रसिद्ध पदार्थ विज्ञानके प्रोफसर गज्जर महाशयके कारखानेम यह केशर भेजकर परीक्षा कराई तो उन्होंने नीचें लिखा सार्टीफिकट भेजा है ।

TECHNO CHEMICAL LABORATORY
Director - Prof T K Gajjar
M A B S E & C S
Girgaum Tram Terminus
Bombay 9th February 1907

THE SWADESHI Co,
Mandvi Bombay

Dear Sirs,
The Sample of Swadeshi Saffron sent by you has been found to be a pure genuine Sample of Saffron unmixed with any adulterants

Yours faithfully,
(Sd) D D KANGA,
Anatytial Chemist

इस कारण हमको पूर्णतया विश्वास होनेपर हमने भी दिगम्बरीय जैन समाजमें इस केशरका प्रचार करनेके लिये जैनमित्रमें इस्तहार दिया है सो जिन भाइयोंको यह पवित्र केशर चाहिये (अगर हमारा विश्वास हो तो) हमसे ही मगाया करे । अन्य जगहसे मगायेंगे तो असली पवित्र केशर मिलना मुशकिल है । मूल्य १।) रु तोला । पाव रतल, आधा रतल या एक रतल इकट्ठी लेनेसे ४५) रु रतल है । रतल ३९ तोलका होता है । यह भाव थोडेही दिन रहैगा क्योंकि माल बहुत थोडा रह गया है सो शीघ्र ही भाव चढ जायगा ।

मिलनेका पता—
पन्नालालजैन मालिक स्वदेशी कार्यालय ।
ठि० हीराबाग-पोष्ट गिरगांव (मुबई)

भूधर जैन शतक ।

सबके कठ करने योग्य अतिशय सरल और हृदयद्रावक कविता भूधर शतक सरीखी दूसरी नहीं है । यह भूधरदासजीकी सम्पूर्ण कविताका चुना हुआ एक सार है । इतने सस्ते मूल्यमे यह कभी नहीं बिका । निर्णयसागरमें टिप्पणी सहित छपा है । मगानेमें शीघ्रता कीजिये । मूल्य ढाई आने ।

श्रावकवनिता बोधनी ।

यदि आपको अपनी गृहलक्ष्मियोंको और धर्म कर्ममें सहायता देनेवाली सच्ची गृहलक्ष्मियां बनाना है, तो. ॥) भेजकर इस पुस्तकको मँगवाइये । बडी अच्छी पुस्तक है । गन्नौरके लाला जयदयालजीने इसे बनाई है और रतलामके पं. दरयावसिंहजीने शुद्ध करके छपवाई है ।

* भक्तामरस्तोत्र ।

अन्वय, हिन्दी अर्थ भावार्थ और कविवर भाई नाथूराम प्रेमी कृत नवीन भाषा पद्यानुवाद सहित ।

इसमें रत्नकरडके समान पहिले प्रत्येक श्लोकका अन्वयानुगत पदार्थ लिखकर फिर प्रत्येकका भावार्थ लिखा है । पश्चात् हरिगीतिका और नरेन्द्र छन्दमें उसकी सुन्दर कविता बनाई गई है, जिसमे मूलका कोई भी भाग नहीं छोडा है । यहा उदाहरणार्थ आठवें श्लोकका एकही पद्य हम नकल करते है,—

जिननाथ अस जिय जानिकै, यह आपकी विरदावली । है समझ थोरी तऊ प्रारंभ, करत हों सु उतावली ॥ सो हरहिगी:मन सज्जननके, तुव प्रभावहिसों भली । जलबिन्दु ज्यों परि कमल दलपै, दुति धरै मुकताफली ॥ ८ ॥

टिप्पणीमे अनेक प्रतियोंसे इकट्ठे करके पाठान्तर और कठिन शब्दोंके अर्थ दिये है । श्रीमानतुग महाराजका चरित्र भी दिया गया है । अभी तक ऐसी कोई भी टीका नहीं छपी । पाठशालाओंके विद्यार्थियोंके लिये यह बडे कामकी चीज है । मूल्य मात्र ।) रक्खा है ।

तत्त्वार्थसूत्रकी बालबोधिनी भाषाटीका ।

तत्त्वार्थसूत्र हम लोगोंका परम पूज्य और मान्य ग्रन्थ है । इसे प्रत्येक जैनी पढना पढाना अपना परम धर्म समझते हैं । इसके एकबारके पाठ मात्रसे एक उपवासका फल होता है । यह ग्रन्थ जैसा उपयोगी है और जैनधर्मके पदार्थोंका अटूट समुद्र जिस प्रकार इसमें भरकर सागरमें सागरकी कहावत सिद्ध की गई है, उसके कहनेकी जरूरत नहीं है । इसकी प्रशंसा प्रगट करनेके लिये इस ग्रथपर जो अनेक टीकाये बनाई गई है, वे बस है । परन्तु खेद है कि, अभीतक इसकी कोई ऐसी टीका छपकर प्रकाशित नहीं हुई, जो पढनेवाले विद्यार्थियोंकी समझमें सहजमे ही आ सके । अभीतक, जो टीकायें छपी है, वे विशेष ज्ञानियोंके समझने योग्य हैं, बालकोंके लिये जिस क्रमसे होनी चाहिये, उस क्रमसे नहीं है । इस अभावकी पूर्तिके लिये हमने यह भाषाटीका तयार की है । यह टीका भाइयोंमे बाचनेके लिये भी बडे कामकी है । साधारण भाई भी इससे सूत्रोंका अर्थ बाचकर समझ सकते हैं । रत्नकरंडके समान इसमें भी पद पदका अर्थ किया गया है । और विशेष बातें भावार्थ तथा टीकामे लिखी गयी हैं । इसको एक बार पढ लेनेसे फिर सर्वार्थसिद्धि आदि बडी टीकाओंके पढनेमें गति हो जावेगी । यह टीका विद्यार्थियोंके बडे ही कामकी है । इसे बिना गुरुके पढकर विद्यार्थी बडी सुगमतासे परीक्षा दे सकता है । जहांतक बना है, प्रत्येक पदार्थके लक्षण व स्वरूप इसमें सक्षेपतासे लिखे गये हैं । मूल्य मात्र १२ आने रक्खा गया है । पाठशालाओंके प्रबंधकर्त्ताओंको नमूनेके लिये इसकी एक एक प्रति जरूर मंगानी चाहिये ।

मिलनेका पता—**पन्नालाल जैन,**
मालिक—**जैनग्रंथरत्नाकरकार्यालय,**
पो० गिरगांव, बम्बई ।

' कर्नाटक ' प्रेस बम्बई ।

Registered No. B 288.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जवाबी कार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
दूसरा भोईवाड़ा पो० कालबादेवी
बम्बई ।

ॐ जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

वर्ष ८ वां] श्रावण शुक्ला २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द । ता० ११ अगस्त सन् १९०७ ईस्वी । [अंक २० वां ।

आवश्यक सूचना ।

सर्व जैनी भाइयोंको विदित हो कि ता. ४ सितम्बरके बदले ता० २८ अगस्त ०७ ई० नियत हुई है । उस दिन मान्यवर लेफ्टनेंट गवर्नर बंगाल शिखरजी आवेंगे और श्री सम्मेदशिखरपर्वतकी पवित्रता विषयक जैनियोंसे वादानुवाद करेंगे । अतएव ता० २३ अगस्त तक जैन सम्प्रदायके पण्डितों, वकीलों, वैरिस्टरों, शेठ साहूकारों तथा सर्व साधारण साधर्मी महाशयोंको शिखरजीमें अवश्य २ उपस्थित हो जाना चाहिये । पण्डितोंको जैनशास्त्रोंसे शिखरजी सम्बन्धी उल्लेख संग्रह करना चाहिये और वकीलोंको पिगरीकेस जजमेंट, इकरारनामा आदिसे पर्वतके पवित्रतासम्बन्धी प्रमाण देने चाहिये । यह समय अमूल्य है और जैनियोंका अमूल्य पूज्य तीर्थराज १४ लाख जैनियोंका परम पूजनीय निर्वाण क्षेत्र है, इस समय अपनी भक्तिका परिचय वहां पहुंचकर साक्षात्कार करना चाहिये । ता० २९ मईके समान जैन समाजको वहां जानेसे विमुख नहीं होना चाहिये । देखें, तीर्थेश्वरकी भक्तिके प्रेरे कितने सभ्य वहां पधारते हैं । प्रतिष्ठित पुरुषोंको इस अवसरपर जानेसे कदापि मुंह न मोड़ना चाहिये ।

जरूरी बात यह है कि, प्रत्येक समाजके शिखरजी भेजनेके लिये प्रतिनिधियोंका चुनाव करना चाहिये और उनके नाम पहले हमारे पास लिख कर भेज देने चाहिये, कारण डिपुटी कमिश्नर हजारीबागको प्रतिनिधियोंकी सूचना अवश्य देनी होगी । शीघ्रता कीजिये ।

कार्यालय हीराबाग.
बम्बई ४ । ८ । ०७

माणिकचंद हीराचन्द
जे. पी.
महामंत्री तीर्थक्षेत्रकमैटी.

जजमेंटकी कापियां ।

प्रगट हो कि श्री, शिखरजी (पारसनाथ) पर्वतके चर्बीके केसकी हाईकोर्ट बगालके जजमेंटकी छपी हुई कापियां तयार हैं । दिगम्बरजैन वकील, बैरिस्टरोंको विना मूल्य भेजी जावेंगी और अन्य जैनी भाइयोंको अग्रिम मूल्य ।≈) आनेसे भेजी जावेंगी, जिन्हें आवश्यता हो, इस पतेसे मंगा लेवें ।

महामंत्री—तीर्थक्षेत्र कमैटी,—
हीराबाग, गिरगांव. मुम्बई.

अलंकारचिन्तामणिः

भगवज्जिनसेनाचार्यप्रणीतः

यह अलंकारशास्त्रका ग्रंथ जिनसेनआचार्यका बनाया हुआ है, यह ग्रंथ जिनजैनपरीक्षालयके पठनक्रममें रक्खा है । मूल्य बार आना पोष्टेज अलग ।

मंगानेका पता.—रावजी सखाराम दोशी,
शोलापुर, सिटी.

नकशे और उपहार ।

जैन बालसभा टीकमगढके पुस्तकालयमें चौबीस तीर्थंकरोंके माता, पिता, जन्मस्थान आदि १६ स्थानोंके नकशे एकत्रित किये गये हैं. जो कि मंदिरोंमें लगानेके लिये प्रत्येक जैनीको डाक खर्चके लिये केवल आध आनेका टिकट आनेपर विना मूल्य भेजे जाते हैं । जिन्हें चाहिये आध आनेका टिकट भेजकर मंगा लें । तथा जो विद्यार्थी श्रावक शुदी १२ तक विद्या विषयमें सबसे उत्तम लेख लिखकर हमारेपास भेजेगा, उसे १ उत्तम पुस्तक जिसका मूल्य प्राय. १) रु. है भेंटमें भेजी जावेगी ।

मोनेसा मंत्री जैन बालसभा ।
टीकमगढ़ (झांसी)

सभासदोंसे प्रार्थना ।

बम्बई सभाके सभासदोंकी सेवामें जैनमित्र विना मूल्य भेजा जाता है. परन्तु अनेक सज्जनोंने उसके भरण पोषण और सभा परिचालनके हेतु सभासदी फीस अबतक भेजनेकी कृपा नहीं की । इसलिये उनसे प्रार्थना है कि, सभासदी फार्ममें लिखे मुताबिक रुपया मनीआर्डरद्वारा भेजें, अथवा वी. पी. भेजनेकी आज्ञा देवें । धर्मके कार्यमें प्रमाद करना उचित नहीं है ।

सहायक महामंत्री ।



मनरञ्जन तैल ।

यह दुनियां भरमे खुशबूकी खान और चित्तको गदगद करनेवाला है ।

हमने यह तेल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंको मथनकर अत्यन्त सुगन्धित और लाभदायक बनाया है। इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठडक पहुचती है। वदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूर होकर लोहू और ताक्त बढ़ती है। फी शीशी ॥≡) डा ख. ।)

खांसीकी दवा ।

इस दवाको खानेसे खांसी तथा तर स्वास छातीका दर्द आदि कफ सम्बन्धी रोग फौरन दूर हो जाते हैं। की० ॥) शीशी डा० ≤)

निमक सुलेमानी ।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, वदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, ववासीर प्रमेहनाशक है। स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है। फी शीशी ॥) डा. ख अलग

दंतकुसुमाकर ।

इसके लगानेसे दातोंका हिलना मसूडोंका फूलना, खूनदर्द आदि आराम हो दात मोतीकी तरह चमकते हैं। रोज लगानेसे दात आजन्म दृढ़ बने रहेंगे। फी डिब्बी ।)

दवा दादकी ।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर भगाती है। फी डिब्बी ।)

गंधकवटी ।

यदि बालकोंको हमेशा स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसे मंगाइये इससे बच्चोंका ज्वर खांसी दस्त वायुरोग दूर होकर खूब मोटा ताजा हो जाता है इसकी गोली रोज खिलाना चाहिये. कीमत. ॥) सी. डा. ≤)

पंचतिक्तवटिका ।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है। इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते हैं। की० ॥) डा. ≤)

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई

प्रमेहनाशक अपूर्वताकतकी दवा ।

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनकी सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना, प्रसंगकी इच्छा न होना, नपुंसकता, नाताकती, कमरमें दरद, थोडा चलनेसे थकावट आना, भूख कम लगना, चेहरेकी खुश्की वा जर्दी, बदनमें, फुर्ती न रहना, शरीरकी दुर्बलता, रगोंकी कमजोरी. उठती जवानीमें कुचालसे पैदा हुई नामर्दी,, आदि सब रोग जडसे नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है। जिसमें उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आखोंमें रोशनी, बदनमें फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है। मूल्य १ डिब्बाका २॥), २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १३) खर्च माफ.

श्वासारिष्ट ।

इससे सब तरहका श्वास (दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है। कीमत १) डा० ॥)

नपुंसकत्वारि तैल ।

इसके लगानेसे गुप्तभागसबंधी सर्व प्रकारके रोग दूर होते है। फी सीसी १) डाकखर्च ≡)

प्रदरांतक चूर्ण ।

इस्से स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस सबंधी सर्व विकार दूर होते है। कीमत १) डा० ≡)

नयनामृत सुरमा ।

इसके लगानेसे आखोंका जाला धुन्ध, फुली, पानी, बहना, सुर्खी, पत्तर आदि नेत्ररोग दूर होते हैं और ज्योति बढाता, ठंडक रखता और पढ़ते २ आखों नहीं थकती हैं। फी शीशी १) लगानेकी सलाई ।)

अर्ककपूर ।

यह हैजा व अतीसारकी अक्सीर दवा है और वदहजमी पेचिस मरोडको भी लाभ कारी है। फी सी० ।) दो से कम न भेजेंगे.

शिरदर्द नाशन तैल ।

यथा नाम तथा गुण. की० ॥) सी. डा० ≤)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य, आयुर्वेदीय औषधालय—इटावा (U. P.)

उत्तम और सस्ते जैनपुस्तक ॥

जैनग्रन्थसंग्रह

छप गया ! छप गया !! छप गया !!! जिस पुस्तकके लिये ग्राहकगण चिट्ठियोंकी भरमार कर रहे थे वही फिर दूसरी बार छप गई साथही मूल्य भी कम कर दिया है इसमें छोटी बडी संस्कृत और भाषाकी ५० पुस्तकोंका सग्रह है परदेशमें केवल यही एक पुस्तक पास रखना काफी है सुन्दर टाईपसे पुष्ट कागजपर छपी और जिल्द बधी है जल्दी न मगानेसे पछताना होगा किं० ॥) डा० माफ।

व्याख्यानरत्नमाला ।

विद्या, धर्म, सत्सगति, कुरीतिआदिके विषयमें ८ भाग	।)
नवीन होली सग्रह, एकवार अवश्य पढिये ...	)॥
सांगीत मनोरमा (नौटकीकी राहमें) ..	≈)
सांगीत नेमचन्द्रिका (नौटकीकी राहमें) ...	≈)
जैनभजनसंग्रह (चालें भी लिखी हैं)	≈)
स्तोत्रशतक (अनेक रागोंमें १०० स्तुतियां है) .	≈)
प्रश्नोत्तरमाला (चर्चाकी पुस्तक है) ...	‐)
तत्वार्थ सूत्रजी मूल	‐)
पञ्चमङ्गल पाठ	)॥
बारहमासा राजुलजी	)॥
बारहमासा सीताजी	)।
बारहमासा मुनिजी	)।
बारहमासा वज्रदत	)॥
वैराग्य भावना	)।
अध्यात्म पचासा ...	)।
दश आरती	)।
निर्वाणकाण्ड भाषा	)।
धर्मपच्चासी . ..	)।
हुक्का निषेध	)।
दु खहरण विनती	)।
सकटहरण विनती	)।
बारह भावना सग्रह	)।
समाधिमरण (एक विनती सहित) ...	)।
परमार्थ जकडी, वा० राजुल सोरठमें .	)।
पुकार पचीसी	)।
जैनबालगुटका (बालकोंको पढाइये) ...	)॥
इष्ट छत्तीसी निर्वाणकाण्ड गाथा ...	)॥
बाईसपरीषह, बारह भावना सहित	)॥
प्रश्नोत्तर नेमराजुल	)॥
आलोचनापाठ अर्थसहित	)॥
व्याहला नेमिनाथ	)।
सामायक भाषा...	)।
सप्तऋषि पूजा	)।
निशिभोजन भुजन कथा	)।
भक्तामर संस्कृत व भाषा	‐)

विदेशी खांड निषेध)॥ } दोनों १०० इकट्ठी लेने
बुढापेका विवाह)॥ } से २ रु० सैकडा

नियमावली ।

१ चार आनेसे कमकी पुस्तकें नही भेजते हैं।

२ एक किस्मकी ५ पु इकट्ठी लेनेसे १ मुफ्त।

३ डांक खर्च पाससे देते हैं ग्राहकोंको सिर्फ मनीआर्डर फीस देना होगी।

मिलनेका पता:—

बाबू वीरसिंह जैनी, इटावा (U. P.)

जैनमित्र.

श्रावणशुक्ला २ श्रीवीरनिर्वाण संवत्
२४३३ ता० ११ अगष्ट सन् १९०७ ईस्वी ।

सम्पादकीय टिप्पणियां ।

स्वदेशी आन्दोलनका फल ।

थोड़े ही दिनोंमें स्वदेशी आन्दोलनसे आशातीत लाभ हुआ है । यदि इसी तरहसे यह आन्दोलन दश पांच वर्ष जारी रहा, तो हम-लोगोंकी दरिद्रता दूर हो जावेगी । हमारे यहां नये २ कारखानों और व्यापारिक सस्थाओंकी स्थापना होना इसी आन्दोलनका फल है । गत एक ही वर्षमें हिंदुस्थानमें ३ करोड ६७ लाख रुपयोंकी पूंजीसे १५ नवीन पेढियां स्थापित हुई हैं, एक करोड़ २१ लाखकी पूंजीसे ९ आगबोट कम्पनियां खडी हुई हैं, स्वदेशी माल विकनेके ४५ बड़े २ स्टोर स्थापित हुए हैं, एक दियासलाईका तथा एक कांचका कारखाना खुला है । २२ कपासका सूत बनानेवाली और कपडा बुननेवाली नवीन मिलें स्थापित हुई हैं, और शकर, तैल, कागज, कतरनी, आदिके अनेक कारखाने स्थापित होनेके सम्मुख है । क्या एक वर्षमें इतनी औद्योगिक उन्नति होना थोड़ी है ? श्रीजी हमारे धनिकगणोंको सुबुद्धि देवें, जिसमें वे अपनी पूंजीको व्याजके देशघाती व्यापारसे निकालकर इसी प्रकारके नवीन कल कारखानोंमें लगाकर देशकी दशाको सुधारनेका प्रयत्न करें । यह सुनकर हमको बडी भारी प्रसन्नता हुई कि, इन्दौरके सेठ हुकमचन्दजी एक कपड़ेकी मिल बहुत जल्दी खोलना चाहते हैं, तथा वहांके एक दो धनिक और भी इसी प्रकारका प्रयत्न कर रहे हैं । हमारी जातिमें अनेक धनिक ऐसे हैं, जो ऐसे बड़े २ व्यापारोंको चलाकर मनमाना लाभ उठा सकते हैं । अहमदाबाद और बम्बईमें भी, बड़े २ श्वेतांबर धनिक देखे जाते हैं, वे इन्हीं मिलोंके प्रसादसे हुए हैं । देखें, हमारे दिगम्बरी धनिक उनका अनुकरण करके कब लाभ उठानेके लिये प्रस्तुत होते हैं ।

लेफ्टेनेन्ट गवर्नर बंगालका आश्वासन ।

बरहामपुरके जैनियोंने गत २९ जुलाईको "लेफ्टेंट गवर्नर साहब बंगालको एक एड्रेस दिया था। उसके उत्तरमें लाटसाहबने कहा, मैं देख चुका हूं कि, जैन जातिने अपने एड्रेसमें पार्श्वनाथपर्वतपर बंगला बांधनेके विषयमें खास इशारा किया है । और आशा की है कि, मान्यवर गवर्नरके सम्मुख इस विषयकी सब बातें जब पेश होंगी, तब हमको कृपारूप उत्तर मिलेगा, यह बात प्रसन्न होने योग्य है । मैं सूचित करता हूं कि, मुझको इस विषयमें भारतके प्रत्येक विभागमें रहनेवाले जैनियोंकी ओरसे अर्जियां मिली हैं । उनपर ख्याल करके मैने डिपुटी कमिश्नरको सूचना दी है कि, वे इस विषय सम्बन्धी अपने सब ख्यालात मेरे साम्हने पेश करें । सैक्रेटरीयट और हाई कोर्टमें इस विषय सम्बन्धी पुराने मुकद्दमोंके कागजात पेश करनेके लिये भी आज्ञा दी गई है । ता० ४ सितम्बरको (पीछे २८ अगस्त मुकर्रर हुई है) पार्श्वनाथ पर्वतपर जानेका मैंने निश्चय किया है । वहा सम्पूर्ण जैनियोंकी अर्जिया सुनकर वादानुवाद किया जावेगा । जो लोग आज यहा मानपत्र देनेको उपस्थित हुए हैं, उन्हें उक्त समयपर वहां पहुंचनेके लिये मैं न्योता देता हू और विश्वास करता हू कि, उनका मुझपर किया हुआ विश्वास पक्का होगा । जैनजातिके धार्मिक विचारोंको जान बूझकर कभी जरा भी हानि नहीं पहुंचाई जावेगी । साहब बहादुरके इन वाक्योंसे आशा तो बहुत कुछ होती है, परतु वर्तमान राजनीतिका रग ढंग देखकर कुछ चिन्तित भी होना पड़ता है ।

दिन नजदीक आ गये हैं ।

गत अंकमें प्रकाशित हुआ था कि, ९ सितम्बरको छोटे लाट शिखरजी का मौका देखने आवेंगे, परन्तु पीछे से यही निश्चय हुआ है कि, २८ अगस्तको ही वे वहां पहुंच जावेंगे । अर्थात् हमारे आगामी अंकके पहुंचनेके पहले ही भाइयोंको वहांके लिये रवाना हो जाना पड़ेगा । इसी लिये कहते हैं कि, दिन बहुत नजदीक आ-गये हैं । अभी से विचार करके प्रत्येक पंचायतीसे दो २ चार २ प्रतिनिधियोंका जाना निश्चित हो जाना चाहिये । जितने अधिक भाई वहां उपस्थित होंगे, उतना ही अच्छा होगा । कार्यमें उतनी ही अधिक सफलता प्राप्त होनेकी आशा होगी । सम्मेदशिखरजीकी सच्ची तीर्थयात्राका समय यही है । इस समय जानेसे जो पुण्य होगा, वह दूसरे समय नहीं हो सकता । पवित्र तीर्थक्षेत्रके उपसर्ग निवारण करनेका यह समय है । इस समय यदि शक्तिको छुपाई, तो सदा के लिये भक्तिके एक पथसे पतित हो जाओगे । इस लिये प्यारे भाइयो ! एकवार साहस करके तीर्थराजकी सेवामें उपस्थित होनेका प्रयत्न करो । देखो, अंग्रेज प्रभुओंके कर्णविवरोंमें तुम्हारी भीषण आक्रंदनध्वनि प्रवेश करती है, या नहीं । इस मौके पर अंग्रेजी राज्यने जो प्रत्येक समाजको धार्मिक स्वतंत्रता दे रक्खी है, यह केवल प्रतारणाके लिये है, या सच है । इसकी भी परीक्षा हो जावेगी ।

हूंमड जातिमें विवाह ।

फलटणके श्रीमाणिकचन्द रावजी दोसी बडे उद्योगी पुरुष हैं । उन्होंने फलटणके गोरजी (विवाह करानेवाले पुरोहित) के द्वारा एक विवाह कोष्टक तयार कराके हमारे पास भेजा है । उसे देखकर हम बहुत प्रसन्न हुए । यदि सब लोग अपने २ प्रान्तके जैनियोका प्रतिवर्ष ऐसा विवाह-कोष्ट तयार कर सकें, तो जातिकी यथार्थदशा ज्ञात होते रहनेसे बहुत कुछ सुधार हो सकते हैं । कोष्टकमे बतलाया गया है कि, इस वर्ष फलटण प्रान्तमें कुल ४३ विवाह हुए हैं, जिनमें से दशा हूंमडोंके २४ और बीसा हूंमडोंके १९ हुए हैं । यह भी बतलाया गया है कि, इस वर्ष ४३ मेंसे १६ विवाह जैनविवाहपद्धतिके अनुसार हुए हैं । इस से जान पडता है कि, हूंमड भाइयोंमें जैनपद्धतिको खूब जोर मिल रहा है । शायद ही कोई दूसरी जैनजाति ऐसी होगी, जिसमें प्रतिशत ३७ के हिसाबसे जैनविधिके अनुसार विवाह होने लगे हों । इस विषयमे हूंमड भाइयोंको जितने धन्यवाद दियें जावें, उतने थोड़े हैं । अन्य भाइयोंको उनका अनुकरण करना चाहिये । हूंमड जातिमें कन्याविक्रय (दापा) का बड़ा जोर शोर है । जिसमें बीसा हूंमडोंकी दशा देखकर तो हम चकित हो गये । उनके यहां १९ मेंसे १९ विवाह दापा लेकर किये गये हैं । दशा हूमड़ों में २४ मेंसे ७ विवाह ऐसे हुए हैं । और दापा अर्थात् विक्रय-धन भी थोड़ा नहीं, सुनकर जी घबड़ाता है ।

एक विवाहमें कन्याके पिताको छह हजार रुपयेकी प्राप्ति हुई है। १ में पांचहजारकी, ६ में दो दो ढाई ढाई हजारकी, २ में सत्रह सत्रहसौकी और ३ में पन्द्रह पन्द्रह सौ रुपयेकी दक्षिणा लेकर कन्याके माता पिता सफलजन्मा हुए हैं। धनिक कहलाने वाली हूंमड़ जातिका यह कृत्य बड़ा ही घृणित है। जिस जातिमें अनेक प्रसिद्ध २ नेता पुरुष मौजूद हैं, उसी जातिसे यह गुलामीका व्यापार नहीं दूर हो सकता, तो और किससे आशा की जावे? हूंमड जातिमें विवाहयोग्य पुरुषोंकी अपेक्षा विवाहयोग्य कन्याओंकी सख्या अधिक जान पड़ती है। इसी कारण वर न मिलनेसे उसमें लडकियोंका विवाह प्रौढ़ अवस्थामें होता है। ४३ विवाहोंमें २८ विवाह ऐसे हुए हैं, जिनमें कन्याओंकी अवस्था २४ वर्षसे ऊपर थी। ११ वर्षसे नीचे एक भी विवाह नहीं हुआ है। पुरुषोंका विवाह भी प्रौढ वयमें होता है। सोलह वर्षसे नीचेका एक भी विवाह नहीं हुआ है। बीससे तीसके भीतर २ इक्कीस और ३१ से ४० के भीतर २ छह विवाह हुए हैं। इसके आगे वृद्धविवाह है, सो उसकी भी कमी नहीं है। ४० से ५६ वर्ष तककी उमरमें ६ विवाह हुए है। यह कितने शोक तथा आश्चर्यकी बात है कि, एक ओर कन्याओंके लिये वर नहीं मिलते, और दूसरी ओर कन्याविक्रयका तथा वृद्धविवाहका जोर शोर बढ़ रहा है।

सम्मेदशिखरजीपर स्वत्व किसका है।

यह कितने खेदकी बात है, कि बाहरी शत्रुसे रक्षापानेके लिये भी हमारे देशके लोग अपने घरमें एकता करना नहीं जानते। अपने चिरकालीन द्वेषोंको उन्हे शत्रुओंके सम्मुख ही प्रचंड करनेका मौका मिलता है। हम और श्वेताम्बरी कितने ही पृथक् और एक दूसरेके विरोधी हैं, परन्तु दूसरे लोगोंके लिये आखिर हम एक हैं। खेद है कि, कई एक छोटी प्रकृतिके लोग इस तत्त्वको भूल जाते हैं और अपने हाथसे अपना घात करते हैं। श्वेताम्बरी भाइयोकी ओरसे अकसर ऐसी कोशिशें की जाती है। कई लोग वर्तमान सम्मेदशिखरजीके मामलेमें भी इसी प्रकारके षड्यंत्र चला रहे हैं। उन्हें इस बातका स्वप्नमें भी विचार नहीं है कि, अपने अपनेकी खेंचातानीमें ही तीसरेके पौबारह होते हैं। दो बिल्लियोंको बन्दरसे न्याय करानेमें जो फल मिला था, वही हमें मिलेगा। हमने सुना है कि, कई श्वेताम्बरी सज्जन इस विपत्तिके समयमें और सब छोड़कर इस बातके सिद्ध करनेका प्रयत्न कर रहे हैं कि, इस पर्वतपर श्वेताम्बरियोंका स्वत्व विशेष है, क्योंकि वे पार्श्वनाथके उपासक हैं, और इस पर्वतका पार्श्वनाथ नाम है। दिगम्बरी महावीरके उपासक हैं, और महावीरका निर्वाण अन्य किसी पर्वतपर हुआ था। परन्तु यह उनका छल मात्र है। यथार्थमें सम्मेदशिखर दिगम्बरियोंका मुख्य तीर्थ है। श्वेताम्बरियोंका मुख्य तीर्थ पालीताना (सिद्धाचल) है। क्योंकि हमारे यहा सम्मेदशिखर अनादिकालसे २४ तीर्थंकरोंका निर्वाणक्षेत्र है। और अनन्तकाल तक रहेगा। कारणवश इस कालमें वहा ४ तीर्थंकरोंका निर्वाण नहीं हुआ है, परन्तु यथार्थमें वह २४ तीर्थंकरोंका ही निर्वाणक्षेत्र है। इस लिये ससारमें उसके समान हमारा पवित्र पर्वत अन्य नहीं है। परन्तु श्वेताम्बरियोंके ग्रथोंके अनुसार जहा तक हम जानते है, पालीताना अर्थात् सिद्धाचल ही २४ तीर्थंकरोंका अनादिकालसे निर्वाणस्थान है, और आगामी अनतकाल तक रहेगा। परंतु कालदोषसे इस वार २० तीर्थंकरोंने सम्मेदशिखरसे मोक्षप्राप्ति की है, जो कि अपवादरूप है। इस लिये पालीतानाके समान सम्मेदशिखर उनका मुख्यतीर्थ नहीं हो सकता। और यह तो कोई बात ही नहीं है कि, दिगम्बरी महावीरके उपासक हैं और श्वेताम्बरी पार्श्वनाथके। कोई भी जैनी इस बातपर विश्वास नहीं कर सकता। क्योंकि जैनी, चाहे वह किसी आम्नायका हो, चौवीसोंको मानता है। आशा है कि, निष्पक्ष श्वेताम्बरी भाई हमारे इस नोटपर विचार करेंगे जो कि इच्छा न रहते हुए भी हमें लिखना पडा है।

राजपुरुषोंका कथन कहां तक ठीक है।

सरकारी कानून बुरे नहीं हैं, परन्तु उनका व्यवहार बुरी रीतिसे किया जाता है। हमारे पवित्र क्षेत्रपर बगले बनाकर राजपुरुष सरासर अन्याय करना चाहते हैं, परन्तु कानूनका अभिप्राय रक्षित रखनेके लिये राजकर्ता बहिरेव मनोहरः बनकर कहते हैं, जैनियोंके धर्ममें हम कुछ भी हस्तक्षेप नहीं करेंगे! उनका कथन है कि, जहांपर हम बंगला बनावेंगे, वह जगह जैनियोंका तीर्थ नहीं है। जैनियोंकी पूज्य भूमि वही है, जहां कि उनके मन्दिर बने हुए हैं। २४ टेकड़ियोंके सिवाय अन्य जो टेकड़िया हैं, वे पूज्य नहीं हैं, और न उन्हें पार्श्वनाथ पर्वत कहते हैं। इसके सिवाय किसीके पूछनेपर मि० मार्लीने पार्लीमेंटमें कहा है, कि सन् १८६२ से ६८ तक वहांपर सरकारी सेना रह चुकी है, जिसका एक बंगला अभी तक बना हुआ है। उस समय जैनियोंने इसका कुछ भी विरोध नहीं किया था, इस लिये अब भी उनके विरोधका कोई कारण नहीं दिखता। तीसरी बात अधिकारीगण यह कहते है कि, वहांपर जो भील वगैरह रहते है, वे हिंसा करते है, फिर अंग्रेजोंके करनेमें क्या हर्ज है?

ये तीन बातें दिखलाकर अधिकारीगण अपने अन्यायको कार्यमें परिणत करना चाहते हैं, परन्तु यथार्थमें ये तीनों ही कारण पोच है। पहले विषयमें इतना ही कहना बस होगा कि, जब प्रत्येक जैनी यात्री उस सम्पूर्ण भूमिकी प्रदक्षिणा देकर अपना जन्म सफल करते हैं, तब वह तीर्थस्वरूप क्यों नहीं? वहांपर अनादिकालसे अनन्त जीवोंका मोक्ष हुआ है, फिर यह कैसे सभव है कि, २४ टेंकड़ियोंकी अतिरिक्त भूमिपर नहीं हुआ है। वहांकी अंगुल अंगुल भूमि पूज्य है, और यही प्रगट करनेके लिये जैनी सारे पर्वतकी प्रदक्षिणा किये विना अपनी यात्राको सफल नहीं मानते। दूसरी बातका उत्तर यह है कि, सन् ६२ में विरोध अवश्य किया गया था, परन्तु मुकद्दमा नहीं चला गया था, क्यो कि उस समय लोग सरकारके विरुद्ध लड़ना अच्छा नहीं समझते थे। पिगरी केसके जजमेंटमे भी यह बात स्वीकार की गई है। इसके सिवाय उस समय न तो छावनी बननेकी पहले कोई इत्तला दी गई थी, और न आजके समान रेल तार तथा समाचार पत्रोंका प्रचार था, जिससे सम्पूर्ण जैनियोंको उसकी खबर पाने और जाकर विरोध करनेका तथा मुकद्दमा लड़नेका मौका मिलता। हम तो समझते हैं, छावनी वहां हुई थी या नहीं, इसकी खबर अब तक भी बहुत थोड़े लोगोंको है। पहले जो हुआ था, वह अन्याय ही था आर अब जो उसका प्रमाण देकर यह कृत्य किया जावेगा तो और भी महा अन्याय होगा। तीसरी बातके विषयमें हमें जहां तक मालूम है, वहा कोई भी भील हिंसाका कार्य नहीं कर सकता है, और शायद कोई छुप कर करता भी हो, तो वह प्रमाणभूत नहीं हो सकता, परन्तु बंगलेवाले तो खुलेखाम घोर कृत्य करेंगे, और उनसे कोई कुछ नहीं कह स-

केगा। इस लिये राजपुरुषोंका कथन सर्वथा अनुचित है। उसका अर्थ सिवाय इसके और कुछ नहीं है कि, हम जो कुछ करते हैं, ठीक करते हैं। तुम्हारी इसमें कोई हानि नहीं होगी।

ऐसे समयमें अब हमारा कर्तव्य क्या है, यह प्रत्येक भाईको विचारना चाहिये, और वह हमारी समझमें यही है कि, २८ तारीखको सब भाई वहांपर उपस्थित होवें, और अपनी शक्तिभर सरकारके अन्यायका विरोध करें। सब प्रकारके शास्त्रीय तथा कानूनी, प्रमाण देकर यह सिद्ध कर देवें, कि सरकार जो करना चाहती है, वह बड़ा भारी जुल्म अत्याचार और प्रजाके हकपर कुठार चलाना है। इतने पर भी यदि कुछ सुनाई न हो, तो सबको अंग्रेजी राज्यकी जय मनाते हुए अपने शोकके आसुओंसे भारतभूमिको प्लावित करना चाहिये। नाथूराम प्रेमी।

पूजनविषयकप्रश्नोंका उत्तर।

जैनमित्रके पिछले किसी अंकमें आगरनिवासी श्रीयुत नेमिचन्द्रजीने कुछ प्रश्न किये है। अपनी बुद्धिके अनुसार इस लेखमें मै उन्हीं प्रश्नोंके उत्तर देनेका प्रयत्न करता हूं। निर्णय करनेके अधिकारी विद्वान् जन हैं।

१. भगवान् उमास्वामीकी आज्ञा है—

पद्मचम्पकजात्यादिस्रग्भिः सम्पूजयेज्जिनान्।
पुष्पाभावे प्रकुर्वीत पीताक्षतभवैः सभै॥

अर्थात् "नानाप्रकारके कमल चम्पक आदिके फूलोंकी मालाओंसे जिनदेवकी पूजा करै। और यदि पुष्प नहीं मिल सकें, तो पीले अक्षतोंमें फूलोंकी कल्पना करके पूजा करै।" सारांश यह है कि, यदि फूलोंका अभाव हो, तो पीले चावल काममें लावै। ऐसा नहीं कि, होते हुए भी पीले चावल चढ़ाये जावें। यही प्राचीन मार्ग है।

२. नारियलकी चिटकोंको दीपक या नैवेद्यकी कल्पना करके चढाना, आचार्योंकी आज्ञाके विरुद्ध है। इस विषयका शास्त्रोंमें कहीं उल्लेख नहीं मिलता। और न इस समय शुद्ध घृतादि पदार्थोंका अभाव है, जो उक्त प्रकारकी कल्पना करनी पड़े। और यदि ऐसा है, तो व्रती श्रावकोंके कामोंमें भी वे पदार्थ नहीं आने चाहिये। क्योंकि उन्हें भी तो अशुद्ध पदार्थोंके भक्षणकी आज्ञा नहीं है। आपको यदि एक दिन भी इच्छित पदार्थ नहीं मिलता, तो सैकड़ों प्रयत्न उसके लिये करते हैं, परन्तु भगवत्पूजनके लिये इस प्रकारकी मनमानी गढ़न्त करके काम निकालते हैं। किसीने कहा है।

नालिकेरोद्भवैः खण्डैः पीतरक्तीकृतैरहो।
पूजन शाश्वत कस्माद्रीतिर्निस्सारिताधुना॥
निद्रागारविवाहादौ दीपदीपालिकालिभिः।
प्रयत्नेन कृतो दीपः पूजने निंद्यते कुत॥
गणनाथमुखात्पूर्व सूरिभि किम निश्चित।
पुष्पदीपादिभिश्चार्हन् पूज्यो नो वेति तद्वद॥
असत्यत्यागिभि प्रोक्त चेन्मिथ्या तत्कथ कथ।
बोधत्रिक विना शुद्ध मत्प्रश्नस्योत्तरं कुरु॥
आरब्धपुष्पदीपैश्च पूजयन्तो हि मानुषाः॥
दुर्गतिं प्रययुश्चेत्ति विस्तर वद शास्त्रतः।
यतोऽस्माक भवेत्सत्या प्रतीतिस्तव भाषिते।
नो दृष्ट शास्त्रसन्दोहश्चेद्वृथा कुपथन्त्यज॥

जिन महाशयोंको यह मत स्वीकृत नहीं है, उन्हें चाहिये कि, उपर्युक्त प्रश्नोंका शास्त्रानुसार समाधान करें। पद्मनंदि पंचविंशतिका, उमास्वामिश्रावकाचार, भावसंग्रह, आदिपुराण, वसुनन्दिश्रावकाचार, यशस्तिलक, नवकार श्रावकाचार, त्रिवर्णाचार और प्रतिष्ठापाठ आदि निखिलधर्मग्रन्थोंकी इस विषयमें आज्ञा है कि, नाना प्रकारके पवित्र व्यंजनोंका नैवेद्य चढ़ाना चाहिये, तथा घृत, कपूर, तैलादि पदार्थोंका दीपक प्रज्वलित करना चाहिये। जिन्हें किसी प्रकारका सन्देह हो, वे उपर्युक्त ग्रन्थोंका अवलोकन करें।

३. हरित फल और पुष्पोंमें किसी प्रकारका दोष प्रतीत नहीं होता, इसकारण उन्हें पूजामें अवश्य ही चढाना चाहिये। कोई २ निर्वृत्तिमार्गी सचित्त सावद्यजनित दोष बतलाकर निषेध करते है, परन्तु यह उनकी भूल है। पडितचूडामणि श्रीसमन्तभद्र स्वामीने कैसा अच्छा कहा है, उसपर ध्यान देकर पूजाकार्य करना चाहिये।

पूज्य जिन त्वर्चयतो जनस्य
सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ।
दोषायनालं कणिका विषस्य
न दूषिका शीतशिवाम्बुराशौ॥

अर्थात् "पूज्य जिनदेवकी पूजा करते हुए मनुष्यको बड़ी भारी पुण्यकी राशिमें लेशमात्र सावद्यकर्म पापोपार्जन करनेमें समर्थ नहीं हो सकता है। जिसप्रकार विषकी कणिका शीतल सुखकारी समुद्रजलको दूषित नहीं कर सकती।" जिन महाशयोंको इस श्लोकके अर्थमें कुछ शंका हो, वे श्रीप्रभाचन्द्राचार्यकृत संस्कृतटीका देखकर समाधान कर लें।

चतुर्थ प्रश्नका उत्तर दूसरे प्रश्नके उत्तरमें दे दिया गया है। इस लेखमें कुछ अनुचित लिखा गया हो, तो उदार विद्वान् क्षमा करें। क्योंकि मैं अज्ञ हूं।

काशी—
१३—७—०७ } उदयलाल काशलीवाल।

अशौचविचार।

(अंक १२ से आगे)

यदि पुत्रीका मरण अथवा प्रसूति उसके माता पिताके घर हो, तो उनको तीन रात्रि पर्यन्त और उनके अन्य कुटम्बको एक दिनका सूतक मानना चाहिये।

यदि पुत्रीके घर उसके माता पिताका मरण हो, अथवा अन्यत्र हो, तो दश दिनके भीतर पुत्रीको तीन दिनका सूतक मानना चाहिये।

यदि भाईके घर बहिन अथवा बहिनके घर भाईका मरण हो, तो प्रत्येकको तीन तीन दिनका सूतक कहा है। यदि प्रत्येकको एक दूसरेके घरपर मृत्यु न होकर अन्यत्र हुई हो, तो पक्षिणी अर्थात दोदिन एक रात्रि अशौच मानना चाहिये। इतना विशेष है कि, बहिनका सूतक उसके भाईकी स्त्रीको नहीं होता और भाईका सूतक उसके बहिनके पतिको नहीं होता। उनको केवल स्नान मात्र करना पड़ता है।

यदि नाना, नानी, मामा, मामी, दौहित्र, (पुत्रीका पुत्र) भानजा और फुआ ये अपने घर मरें, तो तीन दिनका और अन्यत्र मरें तो दो दिन एक रातका सूतक मानना चाहिये। परंतु यदि उनका मरण दश दिनके बाद सुननेमें आवे, तो केवल स्नान मात्रसे शुद्धि हो जाती है।

जो अति व्याधिसे दुःखी हो, कृपण हो, ऋणी हो, जो कभी प्रातःकालादिककी कोई क्रिया न करता हो, जो मूर्ख हो, जो स्त्रीके अतिशय वशमें हो, जो व्यसनोंमें सदा लीन रहता हो, जो सदा पराधीन रहता हो, जो श्राद्ध दानादिक न करता हो, जो नपुंसक हो, पाखंडी हो, पापी हो, पतित (जातिच्युत) हो, और जो दुष्ट हो, उसका सूतक भस्मान्त पर्यंत हैं। अर्थात् जब तक ऐसे लोगोंका शरीर जलकर भस्म न हो जाय, तब तक ही सूतक मानना चाहिये। यदि उनके शरीरकी दग्ध क्रिया करनी पड़ी हो, तो तीन दिनका सूतक मानना चाहिये।

इस जिलेके भीतर भी कई स्थानोंमें पत्थर पड़े हैं, जिनपर नाना प्रकारके चित्र और जिनप्रतिमा खुदी हुई हैं । जिन दिनों ये मन्दिर विद्यमान होंगे, उन दिनों जैनमतका कैसा प्रभाव तथा महात्म्य होगा इसका अनुमान करने और जैनधर्मकी वर्तमान दशा तथा उक्त मन्दिरोंकी कारागृह जैसी अवस्था देखनेसे अविरल अश्रुपात होता है ।

१५।६।०७ बम्बई } लालाराम जैन ।

भारतकी भावी भलाईका उपाय ।

भारतवर्षके लीडर (अग्रणी) वही पुरुष हैं जो पढ़े लिखे हैं और जिनमें देशहितैषिता है । इन्हीं लोगोंके हाथमें हमारे देशकी शोकमय अवस्थाका सुधार है । मैंने अपने देशके सुधारके अर्थ बहुत कुछ सोच विचार किया है और मुझे विश्वास है कि भारतवासियोंके लिये सबसे भारी लाभदायक बात सम्बादपत्रोंका पढ़ना है । जिसके द्वारा ज्ञात हो सकता है कि, देशके सुधारके लिये किन २ बातोंकी आवश्यकता है । इसलिये प्रत्येक भारतवासीको यह भी अपना धर्म समझना चाहिये कि, अपने मित्रवर्गोंको ताश, चौसर, शतरञ्ज खेलने और निर्मूल गप्पोंमें काल व्यतीत करनेसे रोकें और उनको इस बातकी प्रेरणा दिलावें कि, वे लोग अपना समय सम्बादपत्र और पुस्तक पढ़नेमें बितावें । हमारे देशभाइयोंका कितना अमूल्य समय केवल गप्पबाजियोंमें ही बीतता है। यदि वे अपने इस अवसरको समाचार पत्रोंके पढ़नेमें व्यतीत करें तो उनकी अवस्था इतनी शोचनीय न हो । देखिये जापानी और इङ्गलिस्तानवासी बच्चेसे लेकर बूढे तक सम्बादपत्रोंका नित्य पढ़ना केवल अपना एक नित्यकर्म ही नहीं समझते बल्कि धर्मके समान मानते हैं । उनके जाति और देशका गौरव सम्बादपत्रही हैं, अतएव वहां दो तीन लाख पत्र छपा करते हैं । इसमें संदेह नहीं कि, भारतवर्षमें निर्धनताके कारण सभी लोग पत्र नहीं खरीद सकते हैं. इसलिये मैं भारतवर्षके समस्त देश हितैषियोंसे सविनय प्रार्थना करता हूं कि, वे लोग जिले २ में और तहसील २ में पुस्तकालय स्थापित करें और करावें । जिसमें उत्तम २ ग्रंथ और पत्र मंगावें जावें और सर्व साधारणको [illegible] कि, अपने फुरसतका [illegible] व्यतीत करें ।

यूरुप और अमेरिका देशके लोग अपने नित्यके काम काजसे छुट्टी पाकर अपने फुरसतका समय पत्रोंके पढ़नेमें बिताते हैं, इसी लिये वहांके लोग अधिक विद्वान, देशहितैषी और गुणवान् हैं । भारतवर्षमें यह काम बड़ी सरलतासे हो सकता है, क्योंकि यहां गांव २ जिले २ में मन्दिर और धर्मशालायें मौजूद हैं जहां उत्तम २ सम्बादपत्र रक्खे रहा करें और लोग जाकर मुफ्तमें पढ़ा करें । इससे कई लाभ तो प्रत्यक्ष ही हैं (१) बिना अधिक खर्च किये ही उत्तम स्थान पढ़नेके लिये मिल सके हैं,(२) मन्दिरोंका सुधार भी इससे बहुत कुछ हो सकता है, (३) सर्वसाधारण अपना काल पढ़नेमें व्यतीत कर सकेंगे और देशकी अवस्था जान जायंगे तो बहुत कुछ देशको लाभ पहुंचा सकेंगे, (४) उनका समय भी व्यर्थ न जायगा, (५) जब लोगोंको मुफ्त समाचारपत्र पढ़नेको मिलेंगे तो वे भी अवश्य ही अपने देशकी बुरी अवस्थाको जान कर उसके सुधारके उपायमें तत्पर होंगे । अतएव अपने देशहितैषी भाइयोंसे प्रार्थना करता हूं कि, यदि वे समझते हैं कि, देशकी अवस्था बहुत ही खराब और हमारी अधोगति है, तो वे लोग अपने दयापात्र देशभाइयोंके हितार्थ प्रत्येक देवमन्दिरों, धर्मशालाओं आदि ऐसे स्थानोंमें धार्मिक पुस्तकालय स्थापित करें । यदि आप लोग इस बातके करनेकी दृढ प्रतिज्ञा कर लें तो थोड़ेहीसे परिश्रममें अपने देशको बड़ा भारी लाभ पहुंचा सकते हैं । मैं प्रत्येक देशहितैषीसे सविनय निवेदन करता हूं कि, इस कार्यके शीघ्र ही करनेपर तत्पर हो जांय, देराइस्माइलखांमें मुझे बहुत कुछ सफलता इस प्रकारसे हुई है, अन्य जिलोंमें भी सफलता न हो इसका कोई कारण नहीं हो सकता है । इसलिये मैं अपने देश भाई, मित्र और धनवान् पुरुषोंको बार २ चेताता हूं कि, मन्दिरों और धर्मशालाओंमें फ्री लाइब्रेरी खुलवा दें, जिनमें उत्तम २ कई पत्र मंगाये जाया करें और लोग उन्हें मुफ्त पढ़ सकें । विचार कर देखिये तो यह कैसे पुण्यका कार्य है । अन्तमें परमेश्वरसे भी प्रार्थना है कि, देशहितैषियोंके इस धर्म कार्यमें सहायता दें ।

टहलराम गङ्गाराम,
जमींदार देहरा इस्माइलखां ।

स्वदेश उन्नति ।

भारतवर्ष भी एक समयमें बहुत ही धनवान देश था, [illegible] अत्यन्त निर्धन हो गया है । और यहांके आठ करोड़ लोग भूखों मरकर गुजारा करते हैं । और इसी निर्धनताके कारण दुर्भिक्ष और महामारी (प्लेग) यहां सदैवके मेहमान बन गये हैं और यहांकी दुर्भिक्षताका भारी कारण यह है कि यहांके कार्य्यालय (कारखानादिक) और लाभदायक व्यापार नष्ट हो गये हैं और केवल कृषी या ब्याज आदिपर लोग गुजारा करते हैं, सर्व साधारणके मूर्खता व निर्धनताके कारण न तो लोग व्यापारादिमें और न कृषीमें किसान लोग उन्नति कर सके हैं । और इसके अतिरिक्त यहांका दान भी बहुत बिगड़ा हुआ है । यद्यपि भारतवासी दूसरे युरुप और अमेरिकाके विद्वान और सभ्य जातियोंकी अपेक्षा ज्यादा दानी हैं परन्तु हमारा दान, विद्या या देशोन्नतिकी ओर नहीं जाता । शास्त्रोंमें दानके विषयमें आज्ञा है कि, सुपात्र याने विद्वान साधु ब्राह्मण या अतिथिकी सेवामें या विद्यालय या पाठशालाओंके स्थापनमें समर्पण हो और कुपात्र याने मूर्खों या दुराचारियोंके देनेमें दाताको पुण्यके बदले महापाप लगता है । क्योंकि मूर्ख लोग दान लेकर गांजा भांग व वेश्याओंको देकर दुराचारी बन जाते हैं यदि दाता लोग इन कुपात्रोंको दान न देते, तो ये लोग न तो मूर्ख होते न ऐसी देशकी अवनति होती ।

(१) आज कल और सब जातियां हर प्रकारसे उन्नति कर रही हैं और विद्या व गणनामें भी बढ़ रहीं हैं, किन्तु भारतवासी हर प्रकारसे घट रहे हैं । क्योंकि भारतवर्षमें दुर्भिक्ष व प्लेगके कारण हर साल ३० तीसलाख मनुष्य मरते हैं और इनकी विधवायें कोई तो वेश्या हो जाती हैं और कोई धर्मको छोड़ ईसाई आदिक बन जाती हैं । और उनके सन्तानोंका भी इसी प्रकार बुरा हाल होता है । दुर्भिक्षोंका भारी कारण यह है कि, भारतवर्षसे हर साल दोसौ करोड़ रुपया अन्य २ देशोंको बाहर निकलता जाता है । क्योंकि लोग स्वदेशी चीजोंको छोड़ विदेशी चीजें ग्रहण करते हैं । (२) कई पुरुष यह भी कहते हैं कि, विदेशी चीजें देखनेमें सुन्दर हैं और इस देशकी बनी हुई वस्तुयें वैसी सुन्दर नहीं होतीं । इसका उत्तर यह है कि, विदेशी वस्तुयें वेश्याकी भांई हानिकारक हैं और स्वदेशी वस्तुयें अपनी धर्मपत्नीकी भांई सुखदायक होती हैं। यह भी सत्य नहीं है कि, विदेशी वस्तुयें सस्ती होती हैं, भारतकी स्वदेशी वस्तुयें सस्ती हैं । क्योंकि [illegible] विदेशी वस्तुओंकी [illegible]

[illegible]

॥ स्वदेशी पवित्र साबुन ॥

[illegible]

॥ अस्तकशूल निवारण तेल ॥

[illegible]

असली कर्पूर

[illegible]

तुलसी चूर्ण

[illegible]

॥ [illegible] की गोली ॥

[illegible]

॥ [illegible] तेल ॥

[illegible]

दुगुने या तिगुने काल तक चलती हैं। अब हर एक भारतवासीको चाहिये कि, धर्मकी रक्षा और देशोन्नतिके लिये सच्चे दिलसे दृढ प्रतिज्ञा करें कि, वह केवल अपने देशकी बनी हुई चीजोंको काममें लावैं। ताकि भारतवर्षका धन विदेशोंमें निकलनेसे बच कर इसी देशमें रहे और फिर यहां हर प्रकारके कारखाने स्थापित हो जाय जिनसे लोगोंको जीविका प्राप्त हो। धनाढ्योंका भी कर्तव्य है कि, वह अपने धनको नये २ कारखानोंके स्थापन करनेमें लगावें। न कि, आज कलकी तरह धनको पृथ्वीमें गाड़ कर या सोना चांदीके भूषण बनानेमें व्यर्थ खोवें।

क्योंकि सबसे अच्छा भूषण विद्या ही है, आज कलके स्वर्ण या चांदीके भूषणोंसे चोरीका डर रहता है और प्राय. इन्हीं भूषणोंके लालचसे चोरिया होती हैं और बच्चे भी प्राय. भूषणोंके कारण जानसे मारे जाते हैं। इस लिये धनवान लोग अपने धनको सोने या चांदीके भूषणोंमें व्यर्थ करनेके बजाय विद्यारूपी उत्तम भूषणके प्रचार या सब प्रकारके कारखानोंके स्थापित करनेमें लगावें। जिससे उनको भी बहुतसा लाभ होगा और देशवासियोंको भी इन कारखानोंसे जीविका मिल जावेगी। और यह बड़े धर्म और पुण्यका काम है। बड़े लाट-साहिबने अपनी एक वक्तृतामें कहा है कि, भारतवर्षका धन आठसौ करोड रुपया इन्हीं स्वर्णादिके भूषणोंमें या पृथ्वीमें गड़ा हुआ व्यर्थ पडा है और यदि यह आठसौ करोड रुपये सब प्रकारके कारखानोंमें लगाये जावें तो कोई भी मनुष्य भूखों न मरे। परमेश्वर भारतवर्षके धनवानोंको देशसेवा और कारखानोंके स्थापित करनेकी ओर प्रेरित करें।

टहलराम गङ्गाराम जमींदार,

देहरास्माइलखां।

कृपा करके इसका अभिप्राय अपने मित्रों और सम्बन्धियोंको सुना कर इस पत्रको किसी विद्वान महाशयोंको दे देवें।

पुस्तकसमालोचन।

[illegible]वनिताबोधनी—इस पुस्तकको लाला [illegible] [illegible]निवासीने लिखी है और पं० [illegible] आदि अनेक विद्वानोंने शुद्ध करके निर्णयसागरमें छपाई है। मूल्य ॥) है, जैनग्रन्थरत्नाकर कार्यालय अथवा सेठ माणिकचन्दपानाचन्दजी बम्बईके यहां मिल सकती है। पुस्तकमें स्त्री-पर्याय, स्त्रीशिक्षा, नित्यचर्या, ऋतुक्रियाविचार, मिथ्यात्वनिषेध, विधवाओंका कर्तव्य और सूतक-निर्णय नामके सात अध्याय है। श्रावकाओंके उपयोगमें आनेवाली अच्छी २ शिक्षाओंका इसमें सग्रह है। हमारे समाजके लिये ऐसी पुस्तककी बडी भारी जरूरत थी। जब तक ऐसे विषयोंकी पुस्तकोंका समाजमे प्रचार न होगा, तब तक सदाचारकी प्रवृत्ति नहीं हो सकती। सरल भाषा और सरल दृष्टान्तोंसे यह स्त्रियोंको बहुत रुचिकर होगी। कई स्थानोंमें इस पुस्तकमें ऐसे विषयोंका वर्णन किया गया है, जिसे सामान्य बुद्धिकी स्त्रिया ग्रहण नहीं कर सकेंगी। यदि लेखक महाशय स्त्रियोंकी योग्यतापर ध्यान देकर सरलतापर ध्यान रखते, तो पुस्तक और भी उपयोगी होती। स्त्रियोंके मासिकधर्मका प्रकरण अपूर्ण है। उसमें जितनी बातोका सग्रह करना चाहिये था, वह नहीं किया गया। आगामी सस्करणमें इस विषयको और भी विस्तारसे लिखना चाहिये। जैनमित्रमें इस विषयका एक विस्तृतलेख निकल चुका है। इसी प्रकरणमे एक जगह लिखा है कि, यदि रात्रिसे रज जाना आरंभ हुआ हो, तो दूसरे दिनसे शुमार करना चाहिये। परन्तु यथार्थमें ऐसा नहीं है। अर्ध रात्रिसे पहले पहले प्रथम दिन गिनना चाहिये। बल्कि किसी २ आचार्यने तो रात्रिके तीन हिस्से करके पहले दो हिस्सोंको प्रथम दिनमें और तीसरेको द्वितीय दिनमें गिननेकी आज्ञा दी है। ५० वें पृष्ठमे दर्शनके लिये जो पाठ लिखा है, उसके प्रथमके ५ श्लोक ठीक नहीं है। क्योंकि उनमें दर्शनकी महिमाका वर्णन है, स्तोत्र नहीं है। स्तोत्र स्तुतिको कहते है। जो कि आगेके ६—७ श्लोकोंमें की गई है। इसकी कोई २ कविता हमको अच्छी नहीं लगी। उसमें अशुद्धियां भी हैं। पृष्ठ ८३ में "**वह नारि महा कुलाङ्गना**" इस पाठसे जाना जाता है, लेखक **कुलाङ्गना**का अर्थ **कुलांगार**-रूपा सममते हैं। परन्तु यथार्थमें कुलांगनाका अर्थ कुलीना, उत्तमस्त्री होता है। मिथ्यात्वनिषेधकी अनेक बातें हमारे विचारसे विरुद्ध हैं। इन थोडेसे सामान्य दोषोंके सिवाय पुस्तक उत्तम और उपादेय है। प्रत्येक जैनीको इसे मंगाकर अपनी बहूबेटियोंको पढ़ाना चाहिये। दो तीन धर्मात्मा भाइयोंने सहायता देकर इस पुस्तकको छपवाई है। शायद इसकी बिक्री हो चुकनेपर प्राप्तद्रव्यसे फिर कोई दूसरी पुस्तक छपाई जावेगी।

जैनजागृति—अथवा श्रीसम्मेदशिखरजी चिषयीं इशारा—श्रीयुक्त आण्णाप्पा नाना लेंगडे शाहपुर (बेलगाव) लिखित। मूल्य एक आना यह पुस्तक मराठी भाषामें लिखी है। एक नाटकका रूपक बनाके अंग्रेजी नीति और जैनियोंकी सम्मेदशिखरजी सम्बन्धी आशाका चित्र खींचा गया है। पुस्तक राजकीय विचारोंसे भरी हुई है। प्रत्येक जैनीके हृदयमें जागृति उत्पन्न करनेके लिये यह पुस्तक मंत्रका कार्य करेगी। लेखकका विचार है कि, हमारी चिट्ठियोंका तारोंका और रुपया एकत्र करनेका कुछ भी फल नहीं होगा। अंग्रेजी राज्यमें हमारी स्वतंत्रता हरण हो गई। इसके विषयमें संताप करते हुए शांतप्पा (एक नाटक-पात्र) ने कहा है, "स्वतन्त्रते! माता स्वतन्त्रते! अहा! इस नाममें कितना मिठास भरा हुआ है? कितनी विलक्षण शक्ति इस नाममें है? कितनी चेतनता इसमे प्रज्वलित हो रही है? पृथ्वीके आज अतिशय गर्व करनेवाले राज्योंका जब नामोनिशान भी नहीं था, तब वैभवगिरिके अतिशय ऊंचे शिखरपर बैठके स्वातंत्र्य सुखका यथेच्छ अनुभव करनेवाले हिन्दुस्थान! वह तेरी स्वतन्त्रता अब कहां है? भाई वह हमें कहा मिलेगी? हे देवगणो! इस देशकी स्वतन्त्रता कहा है? हाय! तुम्हें हमारी पुकार कहासे सुन पडेगी? पंचम कालका उदय होते ही तुमने मर्त्यलोकसे एक प्रकार सबन्ध ही छोड़ दिया। अहो, पर्वतो! वृक्षो! नदीनालाओ! सूर्य चन्द्र ग्रह उपग्रहो! हमारी स्वतन्त्रता देवी कहा है, क्या यह तुम्हें मालूम है? परन्तु हाय! आलसी, मध्यस्थ, स्वाभिमानशून्य जनोंको स्वतंत्रताकी चिंता कहांसे हो! हे पर्वतो! तुम जिस पृथ्वी माताकी छातीपर तपश्चर्याका ढोंग बनाके हमेशासे रहते हो, उसकी दु खावस्थाका क्या तुम्हें कुछ विचार है? नदीनालाओ! रातदिन अपना शरीर सुखाकर तुम समुद्रका पेट भरते हो, तौ भी ग्रीष्मकालमें उसके पाससे तुम्हें यत्किंचित् भी सहायता नहीं मिलती है, इसके विषयमें क्या तुम्हें जरा भी क्रोध नहीं आता!........ धिःकार! धिःकार! भाई शातप्पा, जैसा तेरा मन है, वैसा क्या तेरे भाइयोंका भी है? हजारों तार किये, लाखों आर्जियां भेजीं, अब तक कुछ सुनाई नहीं होती। यह किसका परिणाम है? वही स्वतंत्रताका अभाव, प्यारी स्वतंत्रताका अभाव! ....मेरा तो स्पष्ट विचार है कि, "दीजिये, दीजिये" कहनेसे कोई कुछ नहीं देता!

परन्तु अपने उन बन्धुओंपर क्या वश है ? जो हाथ हाथमरकी अर्जियां लिखनेसे कार्य सिद्ध होनेकी झूठी आशासे छलांगे मार रहे हैं।"

पत्रोंकासार।

जयपुर—हर्षका विषय है कि, महाशय शीलचन्दजी जयपुरमें पधारे हुए हैं। उनका चातुर्मास भी यहीं होगा। इस लिये जिन भाईयोंको जयपुरसे अथवा अन्य स्थानसे प्रतिमा लेनी हों उन भाईयोंको उचित है कि, पहले आपको दिखला देवें। क्योंकि आपको प्रतिमानिर्माणविधिका पूरा परिचय है। इस विषयके सम्बन्धमें पहले भी नकशे छपाकर सूचना दी जा चुकी है। ३०-७-०७ **सुन्दरलाल मोतीलाल।**

तारादेही—(दमोह)-यहाके सब भाइयोंने एक इकरारनामा लिखकर मोरस शक्करका त्याग किया है कि, यदि कोई उसे बेचेगा, खावेगा, अथवा दूसरेको भाड़ेपर ला देगा, तो ११) दड देना होगा। सवाईसिंगई बड़ेराय कीरतरायजीकी शादीमें देशीशक्करके बताशा न मिलनेसे उनके एवजमें सुपारी बांटी गई थीं। २३-७-७०

पूरनचन्द बजाज.

पाटखेडा—(ग्वालियर)-पं० पुरुषोत्तमदास जमींदारकी सहायतासे ग्रामके सब जातिके लोगोंको एकत्र कर विहारीजीके मंदिरमें विदेशी खाड तथा गायबैल वेचनेका व्याख्यान दिया गया। उसके असरसे सब जैनियों तथा भिन्नधर्मी भाइयोंने प्रतिज्ञा की कि, आजसे विदेशी शक्करका व्यवहार बिलकुल नहीं करेंगे, और न गाय बैल कसाइयोंको तथा विना जानें आदमीको बेचेंगे। यदि प्रतिज्ञा भंग करें, तो जातिसे खारिज।

भागचन्द केशरीसिंह बज।

झज्झर (बुलन्दशहर)-से लाला रामस्वरूपजी बद्रीदास लिखते हैं, वर्षाऋतुमें विशेष कर दीपकपर अगणित जीवोंकी हत्या होती है। धर्मात्मा भाइयोंको चाहिये कि, इस हत्यासे बचनेके लिये रक्षपालीका उपयोग करें। यदि शक्तिवान दयालु पुरुष रक्षपाली बनवाकर अधिक नहीं, तो अपने २ गांवों में ही बाट दें, तो थोड़े खर्चमें बहुत पुण्यका लाभ हो सकता है।

बिजोलिया (मेवाड़) से भाई हीरालालजी लिखते हैं, बंगला बनानेका अनर्थ रोकनेके लिये जो चन्दा किया जा रहा है, वह अभीतक बहुत थोड़ा है। कमसे कम दो लाख रुपयेकी जरूरत होगी। देखते हैं कि, धनवान लोग बिलकुल चुपचाप हैं। कोशिश भी पूरी २ नहीं हो रही है। हमारी जातिमें कमसे कम ५० धनवान १०००) चन्दावाले, १०० धनवान ५००) चन्दा देनेवाले और कई हजार सौ, पचास, दश, पांच, तथा रुपया आठ आना देनेवाले चन्दा देनेको तयार हो सकते हैं, और उससे लाख रुपये बातकी बातमें हो सकते हैं। हमने यहा जरासा प्रयत्न किया था कि, सहज ही ४-५ गावोंसे ७७॥) का चन्दा हो गया। हमारा सर्वस्व जा रहा है। हमारा रुपया इस समय काममें न आवेगा, तो और कब आवेगा ?

कन्यापाठशाला, पहाड़ी धीरज देहली—का वार्षिकोत्सव मिती श्रावण कृष्णा ४ को बड़े समारोहके साथ हो गया। लाला दमडीलालजी रहीसने सभापतिका आसन स्वीकार किया था। वार्षिक रिपोर्ट सुननेके बाद बाबू गेंदीलालजी प्रोफेसर हिंदू कालेज, हकीम कल्याणरायजी और लाला शंकरदासजीकी ११ वर्षकी पुत्री बीबी गेंदोंने स्त्रीशिक्षापर व्याख्यान दिये। लाला सोहनलालजी और बाबा भागीरथजीने परीक्षा ली। लड़कियोंकी संख्या २८ है। उपस्थित परिश्रमी लड़कियोंको इनामें और मिठाई वितरण की। यहापर एक लडकोंकी भी पाठशाला है। जिसकी वार्षिकपरीक्षा पंडित गौरीलालजीने ली थी। दो विद्यार्थियोंको उपहार दिया गया— **जग्गीमल मेनेजर,**

प्रथमवार्षिकीरपोर्ट कन्याशाला जबलपूर—विदुषी मगनबाईके द्वारा स्थापित इस कन्याशालाका १ वर्ष समाप्त हुआ। अध्यापिकाएं २ हैं, वे १०) और ६) मासिक वेतनपर योग्य काम देती हैं। पुत्रियोंकी संख्या १९ है। पढ़ाई दूसरी कक्षा तक हुई है, ११ जूनको बाबू नारायणरावजी मंत्रीने परीक्षा ली, परिणाम प्रशंसनीय रहा। बाबू दीपचंदजी सुप्रिंटेंडेण्ट स्याद्वादपाठशाला, गोविंद लाहनू मैसदेही, शास्त्री जवाहिरलालजी जयपुर आदि सज्जनोंने कन्याशालाका निरीक्षण कर प्रसन्नता प्रगट की है। इस वर्षमें ५२०।≈)। की प्राप्ति हुई है, जिसमेंसे १४९॥।-) शाला परिचालनके खर्चमें व्यय हुआ है। शेष ३७०॥≈)। सिंघई नारायणदासजी कोषाध्यक्षके यहां जमा है। **पन्नालाल।**

गिरनारजीका झगडा—गिरनारजीकी पांचवीं टोंककी छत्रीके जीर्ण हो जानेसे जबलपुरके सिंगई नारायणदासजीने एक नवीन छत्री बनानेके लिये द्रव्य सहायता दी है। उसके बनानेके लिये जूनागढ़ राज्यसे आज्ञा लेकर काम शुरू किया गया था। परन्तु खेद है कि, श्वेतांबरी भाइयोंने इसमें विघ्न किया। अपने आदमी भेजकर छत्री तुड़वा डाली। हमारे सिपाहियोंको मारा पीटा। एक दोको घायल भी किया। इसपर दिगम्बरी कारखानेकी ओरसे श्वेतांबारियोंके ११ मनुष्योंपर मुकद्दमा चलाया गया है। आसामी वारंटसे पकड़े गये हैं और अभी तक हाजतमें हैं। "उलटा चोर कोतवालको दंडे" इस कहावतके अनुसार श्वेताम्बरीभाइयोंने स्वय मारपीट करके दिगम्बरी कारखानेके ४ आदमियोंपर नालिश की थी, परन्तु खुशीकी बात है कि, अदालतने इस मुकद्दमेको खारिज कर दिया है। दूसरा मुकदमा श्वेताम्बरी भाइयोने हुजूर अदालतमें इस विषयक किया था कि, पुलिस हम लोगोंको पाचवीं टोंकपर नहीं जाने आने देती है। इसकी पैरवीके लिये ७५) रोज फीस देकर एक वकील बुलाया गया था, परन्तु मुख्यदीवान मिरजा अब्बासअलीबेगने भी कुछ सुनाई नहीं की। अर्जी नामंजूर कर दी गई। श्वेताम्बरी भाइयोंके धर्मद्रव्यको बिना कारण ऐसी मुकद्दमेबाजी और वकीलोंमें बरबाद होते देखकर खेद होता है। ऐसा नहीं होना चाहिये। **बंडी मन्नालाल माणिकलाल।**

विविध समाचार।

पापियोंकी खुराक—पेरिस शहरके पापियोंको खानेके लिये प्रतिदिन १७६०००० भेड़ें और ४७७००० ढोर मारे जाते हैं!! तब फिर पेरिसनगरको राक्षस नगर क्यों न कहें ?

पुराना अखबार—१६३१ ई० में सबसे पहले एक अखबार निकला था, उसमें अनेक निबंध वहांके राजा तेरहवें लुईने लिखे थे।

काबुलमें स्वदेशी—स्वदेशी आन्दोलनकी हवा अमीरसाहबके साथ अफगानिस्थानमें पहुंची है। वहाके मुल्ला लोग बडे उत्साहसे विदेशी चीजोंके त्यागनेका उपदेश देते हैं।

शक्करकी आमदनी—गतवर्ष हिन्दुस्थानमें ४६११२४ टन शक्कर विदेशोंसे आई थी। पवित्र भारतभूमिके आर्य कहलानेवाले लोगोंके पेट इतनी बुरी चीज हजम करनेवाले बन चुके हैं। देखें यह पवित्र खाद्य कब तक भारतवासियोंके माथ्यमें है।

अजीब पुस्तक—इंग्लैंडके सर्व संग्रहके पुस्तकालयमें एक प्राचीन पुस्तक है, जिसका वजन १०० पौंड है। उसकी उंचाई ७ फुट है।

सम्पादकोंको जैल—आज कल सम्पादकों-पर शनिकी दृष्टि हो रही है। कलकत्तेके युगान्तर पत्रको एक सालका और लाहौरके इंडिया तथा हिन्दुस्थानके सम्पादकोंको पांच पांच सालकी जैल हुई है। सरकार अच्छा नहीं करती है। इससे स्वदेशी आन्दोलनका दब जाना असंभव है।

तबदीली—सुनते हैं, हजारीबागके डिपुटी कमिश्नरकी वहांसे तबदीली हो गई है। आपने ही जैनियोंसे कहा था, बगलोंका पट्टा देना बन्द नहीं हो सकता। उनकी जगहपर जो साहब आये हैं, वे भले आदमी सुने जाते हैं।

इन्दौरमें मिल—इन्दौरके प्रसिद्ध शेठ हुकमचन्दजी एक कपडेका मिल खोलनेवाले है। इमारत बनने लगी है, और सुनते हैं यंत्रादिकोंका आर्डर भी दिया जा चुका है।

औद्योगिक फंड—बम्बईके श्वेताम्बरी भाइयोंने एक फंड खोला है, जिसके द्वारा बेरोजगार जैनियोंको रोजगारमें लगानेकी और विविध प्रकारके व्यापार कार्य सिखलानेकी कोशिश की जावेगी। बडा अच्छा कार्य है। हमारे धनिकगणोंको भी इसका अनुकरण करना चाहिये।

शराबपर आफत—स्वदेशी आन्दोलनसे शराबकी आमदनी बहुत कुछ घटी है। सरकारी रिपोर्टमें बतलाया गया है कि, १६ लाख १४ हजार २९७ रुपयेकी शराब विलायतसे कम आई है॥ देशी शराबकी खप भी थोडी हुई है। जान पडता है, लोग अब सचेत होने लगे हैं। सब कुछ तो खो बैठे, क्या अब तक भी शराबखोरी नहीं छोडेंगे।

भाटियोंमें स्वदेशी—गत रविवारको बम्बईके कच्छी तथा हाछाई भाटियोंने विदेशी चीनीके त्यागनेका प्रस्ताव पास किया है। अबसे वे स्वदेशी शक्करको वर्तावमें लावेंगे।

अशुद्ध देशीशक्कर—हिन्दुस्थानमें भी कई ऐसे शक्करके कारखाने हैं, जिनके मालिक गोरे हैं। और उनमें अशुद्ध शक्कर बना करती है। व्यंकटेश्वरके एक संवाददाता लिखते हैं कि, मैंने बर्ड एन्ड कम्पनीकी मुजफ्फर लाकरिया और कानपुरकी सरस्वती और नर्मदा नामक शक्करकी परीक्षा की है। और उसमें वह अशुद्ध सिद्ध हुई है। लोग शुद्ध चीनीमें अशुद्ध विदेशीचीनी मिला देते हैं।

परीक्षा पास—जबलपुर जैनबोर्डिंगके सब विद्यार्थी स्कूलक्लासोंमें पास हो चुके हैं। अमृतलाल नामका एक विद्यार्थी इन्ट्रेन्स परीक्षामें पास हुआ है।

बोर्डिंगमें आवश्यकता—जबलपुर जैनबोर्डिंगमें प्रायमरी पासशुदा विद्यार्थियोंकी आवश्यकता है। अंग्रेजी तथा संस्कृत पढ़नेकी इच्छा रखनेवालोंको प्रार्थनापत्र भेजना चाहिये।

आयुर्वेदमार्तंड—फर्रुखनगरके पंडित जियालालजी जैनी पहले ज्योतिष रत्न थे। अब सुना है कि, उन्होंने वैद्यक विद्यामें भी ख्याति लाभ की है। नासिकमें अभी हाल ही जो 'राष्ट्रीयवैद्यक सम्मेलन' हुआ था, उसमें उन्हें आयुर्वेदमार्तंडकी पदवी मिली है। खुशीकी बात है।

आश्चर्य—मुनीम रतीरामजी पावापुरीसे लिखते हैं। पटनामें एक श्रावक भाईके पुत्रको शीतला निकली हैं, उसके घावमेंसे बिच्छू, कानखजूरे सदृश कीडे निकलते हैं।

टीकमगढ़—आषाढ़ शुक्ला १४ को बालसभाका अधिवेशन धूमधामके साथ हुआ। हरप्रसाद विद्यार्थीने सभाके लाभ, फुन्दीलाल विद्यार्थीने दयाधर्म, और रामदास विद्यार्थीने रात्रिभोजनत्यागपर व्याख्यान दिये और बाबू माणिकचन्दजी पोष्टमास्टरने सबके व्याख्यानोंको पुष्ट करते हुए सभाकी अनुमोदना की। अनेक भाइयोंने रात्रिको जलपान करनेका त्याग किया। और अन्तमें भगवानदासजीने जयध्वनिके साथ सभा विसर्जन की।

दीपचन्द उपदेशकका भ्रमण—अहमदाबाद (गुजरात) २३ जौलाई ०७—दिगम्बर जैनबोर्डिंगस्कूल श्रीमान सेठ प्रेमचन्द मोतीचन्दजीकी ओरसे स्थापित है। भोजनशाला तथा धर्मशिक्षण आदिका प्रबंध ठीक है। बालकोंकी धर्मशिक्षणमें परीक्षा ली, फल अच्छा रहा। धर्माचरणकी ओर ध्यान देनेकी आवश्यकता है। बोर्डिंगमे एक सभा भी की और बालकोंके कर्तव्यपर व्याख्यान दिया।

अंग्रेजप्रभुओंकी लीला और जैनी प्रजाका कर्तव्य—इस हैडिंगका एक लेख ता. ३ अगस्तके हिंदी केसरी (नागपुर) में बडा जोशीला और प्रत्येक जैनीके पढ़ने योग्य छपा है।

प्राप्तिस्वीकार श्रीसम्मेदशिखरजी

(गतांकसे आगे)

ता. २३ जुलाईसे ५ अगस्त ०७ ई. तक। ४२७२=)॥ ता. २२ जुलाईतक, पिछलाजमा.

२९) पंचान शाहपुर (बुरहानपुर जि)
१२-) शे. जवाहरलालजी बंडा (सागर)
१००) रा. रा. भूपाल अप्पा जिरगे कोल्हापुर।
२२४॥।) पंचान बाढ़ (जि. पटना)
१२<-)॥ " बेलगांव।
२९१।≈)॥ " शाहपुर, होसूर।
२०।≈)। " कुडची (बेलगांव)
४१) पंचान पिठोरिया (सागर)
७।) " बिलासपुर।
२९) " दरयाबाद (बांराबंकी)
७९) " महाराजपुर।
९०) " सागोद (कोटा)
१०) " बीना, अतिशय क्षेत्र
९॥) " ईसुरपुर (सागर)
२९) " बारहा (सागर)
९) रा रा. पदमप्पा ईंगली, किटर (बेलगांव)
२) रा. रा. मानकचन्द सूरचन्द, सासवद
९१) पंचान सासवद।
१९०) बालहितकारिणी सभा-पनागर (जि. जबलपुर)
१०९) पचान मिजार (बेंगलोर, दक्षिण)
९१) भाई सुन्दरलालजी फूलचन्द-टोंक।
१९) ,, मोतीलाल भायजी-बीना (सागर)
९०) पंचान नीमच।
३३१) पंचान बीसपंथी—टोंक।
९०) लाला धनकुमार नेमीदासजी, टिकयतनगर (बाराबाकी)
४४) पंचान बजरंगगढ़।
९१॥।) पंचान नीमावर।
<=) ,, कैमोरी (जि. जबलपुर)
२९) ,, माटापारा ,,
७) ,, नगला सिकन्दर (जि. आगरा)
९०) शेठ बींझालाल तुलसीदास—चोपडा
४) सा. टीकमदास गुलाबदास चोपडा
<३) पंचान बारा (कोटा)
३९) ,, टंडा (सागर)
१०।) ,, केवलारी (सागर)
६॥।-) ,, सीहरमऊ (सागर)
१००) ,, सागर।
३९॥-) ,, मोडलिम्ब (शोलापुर)

६९९१।)॥ कुलयोग

भूल संशोधन—गत अंकमें भाई कन्हैयालालजीकी पत्नी श्रीमती पिसतोबाई नकूड जि. सहारनपुरके रु. २९) छप गये थे, सो ९०) रु. समझना।

उपर्युक्त जैनी भाइयोंने श्रीसम्मेदशिखरजी पर्वतरक्षामें जो सहायता दी है, उसके लिये मैं उन्हें कमेटीकी ओरसे कोटिशः धन्यवाद देता हूं। आशा है कि, अन्यस्थानोंके भाई भी इसी प्रकार शिखरजीकी कार्यवाहीमें सहायता देंगे।

प्रार्थी—

कार्यालयः हीराबाग गिरगांव बम्बई ता. ४ अगस्त ०७ई. } माणिकचन्द हीराचन्द जे. पी. महामंत्री तीर्थक्षेत्र कमेटी.

ताकतकी दवा च्यवनप्राश।

दुर्बलता और कृशताको दूर करने और शरीरमें बलका सञ्चार एवं शरीरको हृष्ट पुष्ट करनेमें महर्षि सेवित च्यवनप्राशकी भांति दूसरी औषधि ईजात नहीं हुई यह महात्मा चरकने लिखा है—

यह प्रत्यक्ष फलप्रद है।

महौषधि भले चंगे और बीमार शरीरमें सेवनीय है, इसके सेवन करनेसे खांसी, यक्ष्मा, बिगड़ा हुआ जुकाम, ज्वर भंग और अनेक प्रकारके वीर्यगत रोग इससे आराम होते हैं।

नियमसे कुछ दिन "च्यवन प्राश" सेवन करनेसे क्षुधावृद्धि, देहपुष्टि और इन्द्रिय सामर्थ्य जन्मती है। जवानीके अत्याचारोंके कारण जिनका स्वास्थ्यभग धातु क्षीण और शरीर जीर्ण शीर्ण हो गया है उनके हकमें च्यवनप्राश अमोघ महौषधि है। वह प्रथम दर्जेकी स्तम्भक, धातु पौष्टिक एवं कामोद्दीपक है।

दिमाग अर्थात् भेजेकी निर्व्बलताको जो अधिक विषय भोग, शराब आदि पीने और जियादह पढ़ने पढानेकी मेहनत तथा बिकालत आदि दिमागी काम करनेसे हो जाती है इसके सेवनसे रफे हो जाती है और बच्चे इसको खाकर मेधावी और हृष्ट पुष्ट होते हैं। यह खानेमें स्वादिष्ट है और इसका गुण चिरस्थायी है।

आयुर्वेद—शास्त्रमें कहा गया है कि पूर्वकालमें इस महौषधिका सेवन कर वृद्ध च्यवन ऋषि जवान हो गये थे जिन लोगोंने काडलीवरआयल वगैरा विलायती धर्म्मनाशक, घृणित दवाओंके सेवनसे कुछ लाभ नहीं पाया हो वे लोग इस प्रत्यक्ष फलदाता विशुद्ध च्यवनप्राशको एकबार सेवन कर इसकी उपकारिता शक्ति देखें। एक पाव च्यवनप्रकाशका मूल्य २) रु० और एक सेर इकट्ठा लेनेसे ६) रु०।

अनेकप्रकारकी गुण दायक औषधियोंका सूची पत्र अवश्य मंगा कर देखिये

मिलनेका पता—वैद्यवर पं० सूर्य्यप्रसाद शर्म्मा आयुर्वेद मार्तंड (आ० यु० केसम्य, मेरठ सिटी.

५) रुपये का माल १) रुपये में

गौरीनागरी कोष

५५० पृष्ठ लगभग पांच हजार शब्द।

जिसकी पांच वर्षसे धूम मच रही थी, वह अब छप कर तयार हो गया. यह कोष बड़े बड़े विद्वानोंकी मण्डली द्वारा ५ वर्षके निरन्तर उद्योगसे तैयार हुआ है ऐसा उत्तम कोष आजतक नहीं बना और न आगेको आशा है। यह बी० ए० पास मास्टर है. १) रुपया में उम्र भरके लिये नौकर होता है। हिन्दी, उर्दू, प्राकृत, सस्कृत, अरबी, फारसी, इत्यादि शब्दों के मायने पूछोगे, तो पहले हिंदी में बतावेगा फिर अंगरेजीमें समझावेगा। वकील, मुख्तार, पण्डित, मास्टर, ग्रन्थकार, लेखक आदि सबका सहायक है। हिन्दीहितैषी भूतपूर्व छोटे लाट मेकडानल बहादुर तथा रीवानरेश और टेक्स्ट बुक कमेटी पंजाबने भी इसको पसन्द किया है और बहुतसे स्कूलके इन्स्पेक्टर एवं मास्टरोंने इसे खरीदा है। ट्रान्सलेशन (हिन्दीसे अंग्रेजी और अंग्रेजीसे हिन्दी) करनेवालेके बडे कामका है। अतएव स्कूलके विद्यार्थी हिन्दी अंग्रेजीमें योग्यता प्राप्त करनेके अभिलाषी एव अध्यापक (मास्टर) इसे खरीदने से न चूकें।

सौदामिनी ! सौदामिनी !! सौदामिनी !!!

नवन्यास ! उपन्यास !! हरोन्यास !!!

'भारतेन्दु' के भूतपूर्वसम्पादक श्री राधाचरण गोस्वामी (वि० वा० म्यू० क० औ० मै०) की ललित लेखनीसे लिखित प्रेम की छटा। रस की छटा !! ११ अंकों में बटा !!

अभी बंडे आवताब और हावभाव से छपा है. जिस पर लक्ष्मीकी कृपा है, उसीसे =) दाम)॥ डांक महसूल पाकर झगडा रफा और हिसाब सफा है, घड़ी भर दिल लगाना नफा है, क्या इससे कोई खफा है? पुस्तकें कम ! बिक्रीका बाजार सरगर्म, सौदा नर्म। और इसके मर्मको रसिक लोगही जानते हैं। इसमें बासवीं सदीका चित्र इनलाइटेंगीका चरित्र, सखा मित्र, सौदामिनीकी पवित्र प्रीति घनश्यामकी विचित्र रीति प्रेमकी अकाट्य नीति, गुरुजनोंकी भयानक भीति, सबके सीन अपने २ अवसर पर दिखलाये गये हैं। उपन्यास क्या नाटक है, चेटक है तमाशा है। पूरा देखे विना जी नहीं मानता।

बालाबोधिनी—यदि गृहस्थको स्वर्गधाम बनाना चाहते हो और अपनी स्त्रियों तथा पुत्रवधुओं एवं पुत्रियोंको उच्च कोटिकी शिक्षा देना चाहते हो, तो इस पुस्तकको अवश्य खरीदो। इसमें नियमानुसार पुत्रीको नीतिशिक्षाका उपदेश किया गया है। मा, बाप, भाई, बहन, वगड़ परोसन सास, श्वशुर, ननद इत्यादि किसके साथ कैसे व्यवहार करना चाहिये और पतिकी कितनी सेवा शुश्रुषा करनेसे स्त्री सती, साध्वी और पतिव्रता कहला सकती है। पतिव्रता धर्मका अखण्ड पुण्य सञ्चय करके क्योंकर दोनों लोकका सुख भोग सकती है। मूल्य।-)

नीचे लिखी पुस्तकोंकी सिर्फ दश २ के करीब प्रतियां बाकी है। अतएव विशेष शीघ्रतासे आर्डर भेजिये।

व्यंजनप्रकार मू० ≡)

प्राय मनुष्योंको भोजनके ही ठीक न बननेसे अनेक प्रकारके रोगोंमें फस कर कष्ट उठाना पड़ता है। इस पुस्तकमें इन्हीं परम आवश्यक बातोंका उल्लेख है। साधारण दालरोटीसे लेकर लड्डू जलेबी, इमरती, बालूशाही इत्यादि और सब प्रकारके नमकीन पदार्थ आदि २ कई प्रकारसे लिखे गये हैं पुस्तक विशेष लाभदायक सचित्र और खरीद कर देखने योग्य है

राजकुमार उपन्यास मू० ≡)

यह रोचक उपन्यास एक बंगालकी शिक्षित महिलाने लिखा है और रोचक एवं खरीदनेके लायक है।

अशर्फियोकी थैली सिर्फ।) में देते हैं अंग्रेजी सीखनेकी कल मू० -)॥

नागरी जाननेवाला खुद अंग्रेजी बोलना और समझना सीख जाता है।

नागरीके दफ्तर मू० ।-)

इसमें नागरीमें रहननामा बैनामा तमस्सुक आदि सब प्रकारके राजकीय व और व्यावहारिक कार्य लिखे हैं। पुस्तक प्रत्येक मनुष्यको अपने पास रखनी चाहिये।

सूचना—फीस मनीआर्डर खरीदारोंको जुदा देना होगा और पत्र भेजते समय जैनमित्रका हवाला अवश्य दो।

मिलनेका पता—
मैनेजर सारस्वत कम्पनी,
मेरठ सिटी.

दशलाक्षणि पर्वके लिये जैनग्रन्थोंकी तयारी ।

और कम मूल्य ।

प्यारे धर्मात्मा भाइयो ! भादोंका पवित्र महिना सम्मुख आ गया है । इन दिनोंमें प्रत्येक जैनीकी रुचि धर्म साधनकी ओर होती है । परन्तु सच्चा मार्ग दिखलानेवाले शुद्ध सुन्दर और सस्ते ग्रन्थोंके विना धर्मसाधना ठीक नहीं हो सकती । इस लिये हमने रातदिन परिश्रम करके खास इसी पर्वके लिये अनेक ग्रन्थ तयार कराये हैं । अभीतक पूजन पाठके जितने ग्रन्थ छपे थे, वे बहुत अशुद्ध थे और अशुद्ध पाठके पढनेसे पूजन अर्चनका जितना फल मिलना चाहिये, उतना नहीं मिलता तथा दोष भी लगता है । इसकारण अबकी बार अनेक भाइयोंके आग्रहसे हमने पूजन विषयके निम्नलिखित तीन चार ग्रन्थ निर्णयसागर प्रेसमें बहुत ही सुंदर सुपाठ्य तयार कराये हैं । अत जिन भाइयोंको जरूरत हो, उन्हें एकबार मगाकर अवश्य ही दर्शन करना चाहिये, और पवित्र दिवसोंमें उनका पाठकर पुण्य उपार्जन करना चाहिये । भादों सुदी १४ तक भाषापूजा सग्रह १), चौबीसी पाठ १), दशलक्षण पूजा भाषार्थ सहित, ।), तत्वार्थ सूत्रकी बालबोधनी टीका ।।।), भूधर जैन शतक≈)।। और जैनपदसग्रह (दौलत विलास) ।≈) ये साढेतीन रुपयेकी, छह पुस्तकें एक साथ मगानेवालेको सिर्फ २।।।) में भेज देंगे । अथवा तत्वार्थसूत्रकी बालबोधनी टीकाको छोडकर उक्त पुस्तकें लेनेवालेको बालबोधनी टीका मुफ्तमें उपहार स्वरूप भेजी जावेगी। डाकका खर्च ग्राहकोंको देना होगा । भादोंके बाद यह नियम नहीं रहेगा ।

भाषापूजासंग्रह ।

इस ग्रन्थमे पहले सस्कृत भाषा नित्यनियमपूजाके (जो अलग भी पांच आनेमें मिलती है) सिवाय भाषा देवपूजा, सरस्वती पूजा, गुरुपुजा, अकृत्रिम चैत्यालयोंकी पूजा, सिद्धचक्रपूजा, पचमेरुपूजा, नदीश्वरपूजा, सोलह कारणपूजा, दशलक्षणधर्मपूजा, रत्नत्रयपूजा, निर्वाणक्षेत्रपूजा, वृन्दावनकृत समुच्चयपूजा, रामचन्द्रकृत समुच्चयपूजा, चन्द्रप्रभ पूजा, शांतिजिनपूजा, पार्श्वनाथपूजा, और महावीरपूजाका संग्रह है । इसके सिवाय एक अपूर्व ग्रन्थ जिसका किसीने कभी नाम न सुना होगा, इसके साथ लगाया है । यह ग्रन्थ कविवर हरिचन्द्रकृत पंचकल्याणमहामहोत्सव है । नानाप्रकारके छदोंमें जमक और अनुप्रास मिलाकर भगवानके पांचों कल्याणका इसमें बडी उत्तमतासे वर्णन किया है । यमक मिलानेमें इन्होंने कविवर वृन्दावनजीका भी नम्बर ले लिया है । इस पुस्तकमें प्रत्येक मत्र आह्वानन स्थापनादि तथा आचली टेक आदि सब जगह शुद्धता पूर्वक लिखी गई है । अष्टकोंमें जल चदन आदि प्रत्येक पदमें सब जगह आंचली लगाई गई है, जिससे पत्र लौटनेका वारवार कष्ट न उठाना पडे । पोथी साइजमें पुष्ट कागजोंपर बडे अक्षरोंमें ऐसी सुन्दरतासे यह ग्रन्थ तयार हुआ है कि, आप दर्शन करते ही प्रसन्न हो जावेंगे। मूल्य मात्र १) है । प्रत्येक मन्दिरमें यह पोथी रखनी चाहिये ।

कविवृन्दावनकृतचौवीसीपाठ ।

[illegible] छपके बिक गया, परन्तु एक भी और शुद्ध नहीं छपा । छपनेवालोंने इसकी कविताकी बडी दुर्दशा की । यह ग्रन्थ अबकी वार इसे हमने इसके न रहते भी भाइयोंके उपकारके लिये तयार कराया है । शुद्धताके विषयमे इतनेसे ही समझ लीजिये कि, खास कविवर वृन्दावनजीके हाथकी लिखी हुई प्रथम पुस्तकपरसे जो हमे काशीमें उन्हींके भंडारसे प्राप्त हुई थी, इसे छपवाया है । कागज पुष्ट और छपाई निर्णयसागरकी है । इसमें भी प्रत्येक अष्टकमें जगह २ आंचली और प्रत्येक पदमें ॐह्रीं आदि शुद्ध मत्र लगाये गये है, जिससे पूजा करने वालोंको यथेष्ट फलकी प्राप्ति हो । ऐसा करनेसे यह ग्रन्थ पहल आकारमे बडा हो गया है । इसकी उत्तमताके साम्हने १) मूल्य कुछ चीज नहीं है । पोथी साइजमे यह भी बडी सुदरतासे छपा है ।

सं० दशलक्षणपूजा प्राकृत जयमाला और अर्थ सहित ।

दशलक्षण पर्वके समयसूत्रजीके पहले यह बांची जाती है, और एक धर्मका वर्णन प्रतिदिन सुनाया जाता है। दशलक्षणव्रत करनेवाले इसकी एक एक जयमाला रोज बाचते हैं। लोग प्राकृत नहीं जानते है और प्रतियां सब जगह शुद्ध नहीं मिल सकती है । इसलिये उन्हें इसके पढनेमें बडी कठिनाई होती है । सो इसके छप जानेसे वह कष्ट अब नहीं होगा । पडित लालारामजीने इसकी टीका की है । और सब छोटे बडे इसे बाचकर अर्थ समझ सकेंगे । प्रत्येक मदिरजीमें इसकी एक एक प्रति रहनी चाहिये । मूल्य मात्र ।)

तत्त्वार्थसूत्रकी बालबोधिनी भाषाटीका ।

तत्त्वार्थसूत्र हम लोगोंका परम पूज्य और मान्य ग्रन्थ है । इसे प्रत्येक जैनी पढना पडाना अपना परम धर्म समझते हैं । इसके एकबारके पाठ मात्रसे एक उपवासका फल होता है । यह ग्रन्थ जैसा उपयोगी है और जैनधर्मके पदार्थोंका अटूट समुद्र जिस प्रकार इसमें भरकर गागरमें सागरकी कहावत सिद्ध की गई है, उसके कहनेकी जरूरत नहीं है । इसकी प्रशसा प्रगट करनेके लिये इस ग्रथपर जो अनेक टीकायें बनाई गई हैं, वे बस हैं । परन्तु खेद है कि, अभीतक इसकी कोई ऐसी टीका छपकर प्रकाशित नहीं हुई, जो पढनेवाले विद्यार्थियोंकी समझमें सहजमें ही आ सके। अभीतक, जो टीकायें छपी हैं, वे विशेष ज्ञानियोंके समझने योग्य हैं, बालकोंके लिये जिस क्रमसे होनी चाहिये, उस क्रमसे नहीं हैं । इस अभावकी पूर्तिके लिये हमने यह भाषाटीका तयार की है। यह टीका दशलक्षणोंके दश दिनमें बाचनेके लिये भी बडे कामकी है । साधारण भाई भी इससे सूत्रोंका अर्थ बाचकर समझ सकते हैं । रत्नकरंडके समान इसमें भी पद पदका अर्थ किया गया है । और विशेष बातें भावार्थ तथा टीकामें लिखी गयी हैं । इसको एक बार पढ लेनेसे फिर सर्वार्थसिद्धि आदि बडी टीकाओंके पढनेमें गति हो जावेगी । यह टीका विद्यार्थियोंके बडे ही कामकी है । इसे विना गुरुके पढकर विद्यार्थी बडी सुगमतासे परीक्षा दे सकता है । जहांतक बना है, प्रत्येक पदार्थके लक्षण व स्वरूप इसमें संक्षेपतासे लिखे गये हैं । मूल्य मात्र १२ आने रक्खा गया है। पाठशालाओंके प्रबधकर्त्ताओंको नमूनेके लिये इसकी एक एक प्रति जरूर मंगानी चाहिये ।

मिलनेका पता—पन्नालाल जैन,
मालिक—जैनग्रंथरत्नाकरकार्यालय,
पो० गिरगांव, बम्बई ।

भक्तामरस्तोत्र ।

अन्वय, हिन्दी अर्थ भावार्थ और कविवर भाई नाथूराम प्रेमी कृत नवीन भाषा पद्यानुवाद सहित ।

इसमें रत्नकरडके समान पहिले प्रत्येक श्लोकका अन्वयानुगत पदार्थ लिखकर फिर प्रत्येकका भावार्थ लिखा है । पश्चात् हरिगीतिका और नरेन्द्र छन्दमें उसकी सुन्दर कविता बनाई गई है, जिसमें मूलका कोई भी भाग नहीं छोडा है । यहां उदाहरणार्थ आठवें श्लोकका एकही पद्य हम नकल करते है,—

जिननाथ अस जिय जानिकै, यह आपकी विरदावली है । समझ थोरी तऊ प्रारँभ, करत हों सु उतावली ॥ सो हरहिगी मन सज्जनके, तुव प्रभावहिसों भली । जलबिन्दु ज्यों परि कमल दलपै, दुति धरै मुकताफली ॥ ८ ॥

टिप्पणीमें अनेक प्रतियोंसे इकट्ठे करके पाठान्तर और कठिन शब्दोंके अर्थ दिये हैं । श्रीमानतुग महाराजका चरित्र भी दिया गया है । अभी तक ऐसी कोई भी टीका नहीं छपी । पाठशालाओंके विद्यार्थियोंके लिये यह बडे कामकी चीज है । मूल्य मात्र ।) रक्खा है ।

भूधरजैनशतक ।

सबके कंठ करने योग्य अतिशय सरल और हृदयद्रावक कविता भूधरशतक सरीखी दूसरी नहीं है । यह भूधरदासजीकी सम्पूर्ण कविताका चुना हुआ एक सार है । इतने सस्ते मूल्यमें यह कभी नहीं बिका । निर्णयसागरमें टिप्पणी सहित छपा है । मंगानेमें शीघ्रता कीजिये । मूल्य ढाई आने ।

अलंकार चिन्तामणि ।

अभी तक यह ग्रन्थ सर्वथा लुप्त था । सोलापुरके शेठ सखारामजीने इसका जीर्णोद्धार कराया है । जैनियोंका यह सबसे पहला अलंकारका ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है । जैन साहित्यसागर कितना विस्तीर्ण है, यह इस ग्रन्थके देखे विना नहीं जाना जा सकता । सैकडों अश्रुतपूर्व प्राचीन ग्रन्थोंके इसमें उदाहरण दिये हैं । सस्कृत साहित्य प्रेमियोंको यह ग्रन्थ अवश्य देखना चाहिये । मूल्य ।।।)

और भी

बम्बई, कोल्हापुर, तजौर आदि स्थानोंकी छपी हुई सब प्रकारकी जैन पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं । सूचीपत्र मगाइये ।

शुद्ध कशमीरी केसर अब नहीं मिलेगी

भाइयो ! नई केसर अब कार्तिकमें आवेगी। काशमीरमें पुरानी केसर अब नहीं रही । जो है वह नकली है । रंग देकर बनाई हुई है । भादोंके लिये थोडासा संग्रह और है सो जिनको चाहिये शीघ्र मगा लेवें भादोंबाद इसका बेचना बद कर दिया जायगा । क्योंकि असली केसर प्राप्त होना कठिन है ।

भाइयोंकादास—पन्नालाल जैन.

' कर्नाटक ' प्रेस बम्बई ।

Registered No. B 288.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डांकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा मास्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बँटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जवाबीकार्ड अथवा टिकट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
दूसरा भोईवाड़ा पो० कालबादेवी
बम्बई।

जैनमित्र

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते॥

प्रत्येक छिनीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

वर्ष ८ वां] भाद्रपद कृष्णा २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द। ता० २५ अगस्त सन् १९०७ ईस्वी। [अंक २१ वां।

प्राप्तिस्वीकार श्रीसम्मेदशिखरजी।

(गतांकसे आगे)

श्री सर्वांग पवित्र अनादि निधन परमपूज्य सम्मेद शिखरजीपर अपवित्रताके कराण बगले न बनने पावें इसलिये जहा २ के भाइयोंने द्रव्यमें सहायता की है उसकी सूची·—ता. ४ अगस्तसे १८ अगस्त तक.

१९९१।)॥ पिछला जमा.
१०) संगप्पा मलापा अंकले बेलगाव।
५) अणा बाबाजी कैंदरे कोल्हापुर।
७५।≈) पंचान अमाना (जि. दमोह)
१०) „ सोनपुर (जि. जबलपुर)
१०) „ बडा (जि. सागर)
५१) „ शिरपुर (रिसोद)
४०) देवीदास चिमन्याजी रिसोद (जि. वासिम)
२१) पंचान अलीगंज (जि. एटा)
१९) पंच जैन क्लर्क पेशावर।
२००) पंचान अमरावती।
११।) „ सारंगपुर (जि. इन्दौर)
२५) शेठ शिवभगस सूरामल टोंक (अमीरगंज)
११४) पंचान आष्टी (जि. शोलापुर)
९०) „ नायडोंगरी (जि. नासिक)
४०१) „ टोंक रियासत।
१२५) „ झालरापाटन।
११७।) „ मुगावली जि ग्वालियर।
१५) माई मोतीलाल भावजी बीना।
५०) पंचान सिंगोली जि. नीमच।
११) माई हजारीलाल छिगनमल अनारगंज-तखता (टोंक)
१०) पदमप्पा बालप्पा दुगे रायबाग (बेलगांव)
११) भाई गौरीलाल माधोजीके पुत्र अनारगंज (टोंक)
११) पचान हराल (जि. आकोला)
३०) „ कोलारस (ग्वालियर)
२५॥≈) शेठ रतनचन्दसा कपूरचंदसा खण्डवा।
५) टूंडेलाल टीकाराम चौधरी हीरापुर (जि. सागर)
१९१) पंचान नांदगांव (जि. नासिक)
१२५, „ सतना।
५) रामचन्द्र सतप्पा सांगली कोल्हापुर
१००।) पंचान कटनी मुरवाडा।
७२।) पंचान सहडोल जि. "
३१) „ पिंडर, गोरेला "
२५॥) „ सैंठी "
११) „ मैसहरी "
४) रहपुरा
१००) „ मंदसोर शहर।
२४।॥) पुरुषोत्तम आकाप्पा खतली हुकेरी।
१०१) कातमार सरमन्ना शेठाभाई मूडबद्री।
१५०) पंचान मूडबद्री मा. पट्टाचार्य्य चारुकीर्तिजी
७॥≈) बालगोडा चिनप्पा गगापा हर्डहिंगला (दक्षिण प्रा.)
३१) पचान छीपा बडोदाराज (कोटा)
१०४) „ कारकल (मंगलोर) मा. एम्. नेमीराज अइया।
५०।) „ मुल्हैडा (जि. मेरठ)
१।) पाच विद्यार्थी जैन बोर्डिंग जबलपुर।
१२४) पचान अमर पाटन (जि. सतना)
१९।) सावंतप्पा तवनप्पा आदाई, मु. डरखम (दक्षिण प्रा.)
७९॥) पंचान देवलाम बोक्टा (जि. नासिक)
२५) माई छिगनीराम कचरदास, देवलाम बोक्टा (जि. नासिक)
२४) माई रतनचंदजी गुलाबचंद नासिक मा. अनन्तराज प्राणनंद गनपंथा
५०) मायप्पा नेमप्पा मु. हनगंडी जि. बीजापुर।

९) मुकुन्द राजाराम बहादुर दोनगांव (बुल-दाना)
१) श्रीमती जिनाबाई आरग
१९) पचान कुम्भोज (कोल्हापुर)
२१) वेंकटेश देवीदासजी दोनगांव (बुलदाना)
९४) पंचान काष्ठासंग कारंजा ।
१०) लालचंद मोदी मुंगेली (जि. ग्वालियर)
१२) पंचान खिलकडा (कुसकी)
९९) ,, गोंदिया ।
१९) ,, नागौध (जि. सतना)
२४१) शेठ तनसुखदासजी मुकुन्दरामजी खं-डवा (गुप्तरूपसे)
११९) पचान सिहोरा (सागर)
९०) ,, तुमकुर (जि. मैसूर)
५०) लाला निरंजनलालजी की माता करनाला
३०) पचान सनावद ।
३९) ,, चरथावल (जि. मुजफ्फरनगर)
२९) ला. अजितप्रसादजी चिलकाना जि. स-हारनपुर ।
१९१) पंचान हरदा मा. भाई चंपालालजी काशा-लीवाल ।
१४०) पचान हुबली मा. कृष्णराव बापूराव मुरसे
२०) दिग. जैन देहाती भाई बडा ।
९०) पंचान घोडासर (जि. अहमदाबाद)
२९) ,, तेंदूखेडा (जि. दमोह)
१०) बाबू हजारीमलजी हेडमास्टर मुंडवा (नसीराबाद)
९) शेठ गौतम फूलचंदजी कोरेगाव (जि सतारा)
९) शे. सखाराम लीलाचंद लौल (जि शो-लापुर)
१) दोषी रामचन्द उजमचंद ,, ,,
१०१) पंचान नाते पुते (जि. शोलापुर)
४८) ,, धौलपुर ।

११८९(७।~)॥ कुलयोग

उपर्युक्त जैनीभाइयोंने श्री शिखरजीकी कार्य-वाहीमें जो सहायता कीहै उसके लिये मैं उन्हें हृदयसे कोटिशः धन्यवाद देता हूं । आशा है कि, अन्यस्थानोंके भाई भी इसी प्रकार श्रीशिखरजी-पर्वतरक्षाफण्डमें द्रव्यसे सहायता दे, अटूट पुण्य लूटेंगे ।

प्रार्थी—
माणिकचंद हीराचन्द
जे. पी.
महामंत्री तीर्थक्षेत्रकमैटी.

कार्यालय हीराबाग.
बम्बई ४.८.०७.

जैनमित्र.

भाद्रपदकृष्णा २ श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४३३ ता० २५ अगस्त सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

बाम्बे युनीवर्सिटीमें जैनग्रन्थ।

बंगाल और मद्रास युनीवर्सिटीमें एक दो जैनग्रन्थ भरती हो चुके हैं। परन्तु अभी तक बाम्बे युनीवर्सिटीमें एक भी जैनग्रन्थ भरती नहीं हुआ है। जब बम्बई प्रान्तमें अन्य प्रान्तोंकी अपेक्षा जैनियोंकी वस्ती कई गुनी अधिक है, तब उनके सुयोग्य ग्रन्थ भरती न किये जावें, यह कोई न्याय नहीं है। इसलिये लोग प्रयत्न कर रहे हैं, कि, युनीवर्सिटीके रजिष्ट्रारोंका ख्याल इस ओर आकर्षित हो। हाल ही श्वेताम्बर भाइयोंकी ग्रेज्युएट एसोसियेशनने इसी प्रकारकी एक दरख्वास्त दी है। साथ ही भरती करने योग्य ग्रन्थोंकी एक सूची भी दी है। उसमें हमारे दिगम्बरसम्प्रदायके सप्तभंगीतरंगिणी, वाग्भट्टालंकार, अलंकारचिन्तामणि, ज्ञानार्णव, नेमिदूत-इन ग्रंथोंके नाम भी दिये हैं। जहांतक हम जानते हैं, नेमिदूतकाव्यके कर्त्ता श्रीवर्द्धमानकवि हैं, परन्तु तालिकामें मेरुतूंगसूरि लिखा है। क्या आश्चर्य श्रीमेरुतुंगका भी कोई नेमिदूत हो। एक दूसरा प्रार्थनापत्र दक्षिणमहाराष्ट्र जैनसमाजकी ओरसे भी दिया गया है। उसमें समाजने अपनी पहली दरख्वास्तका हवाला दिया है, जो उसने सन् १९०१ में इसी विषयमें दी थी। और जैनसाहित्यके लिये युनीवर्सिटीसे न्याय चाहा है। हम आशा करते हैं कि, बाम्बे युनिवर्सिटी उक्त दोनों प्रार्थना पत्रोंपर ध्यान देकर अन्यान्य युनिवर्सिटिओंका अनुकरण करती हुई जैन साहित्यको भी अपने पठनक्रममें स्थान देगी। साथ ही हम युक्तप्रान्त तथा पंजाबप्रान्तके मुखियाओंको सूचित करते हैं कि, वे भी अपनी २ युनिवर्सिटिओंका ध्यान जैनसाहित्यकी ओर आकर्षित करें।

ग्रन्थोंका चुनाव।

युनीवर्सिटिओंमें जैनग्रन्थ भरती करानेका प्रयत्न बहुत दिनसे हो रहा है। इस विषयमें हमारी अनेक सभाओंकी ओरसे अनेक प्रार्थनापत्र भेजे जा चुके हैं, और उनके साथ उपयुक्त ग्रन्थोंकी सूची भी भेजी गई है। परन्तु खेदके साथ कहना पड़ता है कि, अभीतक कोई भी लिष्ट ऐसी पेश नहीं की गई, जो संतोषप्रद हो। यों तो जैन साहित्यमें हमारी पूज्यभावना है, इसलिये हमें अपने सब ही ग्रन्थ अच्छे दिखते हैं, परन्तु दूसरोंके सम्मुख उन्हें उपयुक्त सिद्ध करनेके लिये विशेष विचारकी आवश्यकता है। जबतक युनीवर्सिटीके कर्त्ताओंके हाथमें उनके कोर्सके भिन्नधर्मीय ग्रन्थोंके ठीक जोडके ग्रन्थ हम नहीं दे सकेंगे, तब तक केवल कागजी घोडे दौड़ानेसे कुछ नहीं होगा। इस लिये हमारी समझमें चारों पांचों युनीवर्सिटिओंके कोर्समें जितने संस्कृत ग्रन्थ भरती हों, उन सबकी एक सूची बनाई जावे, और उस सूचीके प्रत्येक ग्रन्थके सम्मुख उसी ग्रन्थकी ठीक योग्यताके जैन ग्रन्थका नाम लिखा जावे। पश्चात् वह सूची प्रार्थनापत्रके साथ प्रत्येक युनीवर्सिटीमें भेजी जावे। आशा है कि, इस प्रयत्नसे हमें बहुत कुछ सफलता प्राप्त होगी। जिस ग्रन्थकी जोड़के जैनग्रन्थकी शोध करना हो, उस ग्रन्थकी एक कापी लेकर किसी एक जैन विद्वान्के पास भेजना चाहिये, और पूछना चाहिये, कि हमारे साहित्यमें इस प्रकारका कौनसा ग्रन्थ है। और विद्वानोंको चाहिये कि, उस ग्रन्थको आद्योपान्त पढ़ें, और फिर उस ग्रन्थको भी जो उसके बदलेमें भरती कराना है, देखें। यदि स्वयं शक्ति नही है, तो अन्यधर्मीय विद्वानोंकी सहायतासे यह काम करें, तब अपनी राय लिखें कि, यह ग्रन्थ उपयुक्त होगा। इस प्रकार एक २ ग्रन्थके बदले कई विद्वानोंकी सम्मति मिलाकर जो ग्रन्थसूची तयार होगी, उसका सब ही विद्वान् आदर करेंगे। और उसे हाथमें लेकर हम खुले शब्दोंमें यह कहनेका साहस कर सकेंगे कि, युनीवर्सिटीके पठनक्रम बनानेवाले पक्षपाती और अन्यायी हैं।

जैनग्रन्थ भरती करानेका एक दूसरा साधन।

जहां तक हम जानते हैं, कह सकते हैं कि, अभी तक किसी भी युनीवर्सिटीमें ऐसा ग्रन्थ भरती नहीं हुआ होगा, जो छपा हुआ न हो। अच्छेसे भी अच्छे ग्रंथ यदि वे छपे हुए नहीं हैं, तो युनीवर्सिटीमें स्थान नहीं पा सकते। इसलिये ग्रन्थ भरती करानेमें उस ग्रन्थका छपकर प्रकाशित होना भी एक साधन माना जा सकता है। जब तक तञ्जौरके "टी. एस. कुप्पूस्वामी शास्त्रीने" गद्यचिन्तामणि और जीवंधरचम्पू ग्रन्थ छपाकर प्रकाशित नहीं किये, तब तक मद्रास युनीवर्सिटीमें कोई भी जैनग्रन्थ भरती नहीं था। परन्तु ज्यों ही वे प्रकाशित हुए कि, उत्तम समझकर भरती कर लिये गये। बंगाल युनीवर्सिटीने भी हाल ही जो जैनग्रन्थ भरती किये हैं, वे पहले छप चुके थे। इसी प्रकार सुनते हैं कि, एक वार खुर्जावाले शेठोंने बनारसकी राजकीय पाठशालामें जैनग्रन्थोंके भरती करानेका प्रयत्न किया था, और वह सफल भी होना चाहता था, परन्तु जब कहा गया कि, जो २ ग्रन्थ भरती होंगे उन्हें छपाना चाहिये, तब शेठ लोग शान्त हो रहे। इसलिये कुछ भी न हो सका। अतएव युनीवर्सिटीमें जैनग्रन्थ भरती करानेके प्रयत्नके साथ २ भरती करने योग्य ग्रन्थोंके मुद्रण प्रकाशनका कार्य भी होना चाहिये। अभी तक जितने ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, सच पूछो, तो वे जैनसाहित्यसागरकी एक लहरके बराबर भी नहीं हैं। जिस समय हम अपने उत्तमोत्तम ग्रन्थ प्रकाशित करेंगे, उस समय विश्वविद्यालयोंके नेता उन्हें स्वयं ही आदरके साथ भरती करेंगे। हमारी प्रेरणाकी भी आवश्यकता न होगी।

शिक्षाकी कमी

हमारी सरकार विदेशी है और हमारे शासक गण विदेशी हैं। इस लिये उनके द्वारा हमें जितनी शिक्षा मिलनी चाहिये, नहीं मिलती। और न सरकार अथवा शासकोंके भरोसे भारतवर्षमें शिक्षाप्रचारकी अब कोई आशा ही शेष रह गई है। क्योंकि जिस शिक्षासे भारतवासियोंका हित संभव है, उसीमें अंग्रेज जातिका अहित है। यही कारण है कि, सैकड़ों वर्षके अंग्रेजी शासनमें भी भारतवर्षमें विद्याका यथेष्ट प्रचार नहीं हो सका। विदेशी व्यापारकी वृद्धि और स्वदेशी शिल्पव्यापारकी सफाई हमारी अविद्यासे ही हुई है। यदि अन्य देशोंकी नाई हमारे देशमें भी शिक्षाका प्रचार होता, तो हम अपना सर्वस्व खोकर इस तरह भूखसे नहीं मरते। जब रेल आदि अनुपयोगी कार्योंमें खर्च करनेके लिये सरकारके पास अरबों रुपया है, और शिक्षाप्रचार जैसे आवश्यक कार्यके लिये वह रुपयेकी तंगी बतलाती

है, तब यह कौन नहीं कहेगा कि, सरकार भारतवासियोंको अज्ञानांधकारमें पड़े रहना ही अच्छा समझती है। जब नैदरलैंडमें ९९, जर्मनीमें ९९, स्वीडिन नार्वेमें ९४, जापानमें ९१, आस्ट्रिया तथा हंगेरीमें ८९, बेल्जियममें ७४, डेनमार्कमें ७१, स्पेनमें ६२, इटलीमें ५७, पोर्टगालमें ४२, ग्रीसमें ३०, रूसमें १२ मनुष्य सैकडे पीछे पढ़े लिखे हैं, और हमारे भारतवर्षमें सैकडा पीछे केवल ६० मनुष्य पढ़े हुए हैं। तब कौन कह सकता है कि, हमारी सरकार हमको पढ़ा लिखाकर उन्नत करना चाहती है? शायद अंग्रेज जातिको भय है कि, यदि यह देश शिक्षित हो जावेगा, तो फिर हमारा यह अंधाधुंध व्यापार नष्ट हो जावेगा और हम लोग कौड़ीके तीन २ बिकते फिरेंगे। जो हो, इस विषयके वादविवादका यह समय नहीं है। अब सरकारकी आशा छोडकर हमको स्वयं अपनी उन्नति करनेके लिये सन्नद्ध हो जाना चाहिये। और सबसे पहले वह प्रयत्न करना चाहिये, जिससे हमारे देशमें कोई भी मनुष्य या स्त्री अपढ न रहने पावे। इसीसे हम सब कुछ करनेमें समर्थ हो सकेंगे। वर्तमान समयमें विना शिक्षाके कोई भी देश अपनी उन्नति नहीं कर सकता। इसलिये इस समयमें धनवानोंको चाहिये कि, वे अपना रुपया केवल विद्याप्रचारके कामोंमें दान करें, विद्वानोंको चाहिये कि, वे अपनी विद्वत्ताको विद्याकी उन्नतिके लिये उपदेशादि देकर खर्च करें और सर्वसाधारणाको चाहिये कि, वे अपने बालक बालिकाओंको विना पढाये लिखाये किसी भी सांसारिक कार्यमें न फँसने दें। यदि हमारे यहाके धनिकगण अपनी जातीय पाठशालाओंके स्थापित करनेके लिये कमर कस लेवें, तो हम सरकारकी अपेक्षाके विना ही यथेष्ट शिक्षा प्रचार कर सकते हैं। ३० करोड भारतवासियोंको स्वय अपनी शिक्षाके लिये ४—६ करोड रुपया खर्च करना कोई बड़ी बात नहीं है। पाठकोंको यह जानकर आश्चर्य होगा कि, शिक्षाप्रचारकी दुहाई देनेवाली हमारी सरकार प्रतिवर्ष इतने बड़े देशके लिये केवल २ करोड़ १६ लाख रुपयेके लगभग खर्च करती है, जब कि छोटेसे इग्लैंडके लिये ९ करोड़ २५ लाख रुपये खर्च किये जाते हैं।

समालोचकका पुनः संस्कार। जयपुरके श्रीयुत मि० जैनवैद्य हिन्दीभाषाके "समालोचक" नामक एक प्रसिद्ध पत्रके प्रकाशक हैं। कुछ दिनसे कारणवशात् समालोचक बन्द हो गया था। परन्तु अब जैनवैद्यजी आशा दिलाते हैं कि, वह आगामी विजयादशमीसे नवीन उत्साह और नवीन रंग ढगसे फिर प्रकाशित होने लगेगा। अबकी बार उसमें चित्र निकालनेका भी प्रबंध हो रहा है। हिन्दीमें समालोचक अपने ढंगका एक ही पत्र होगा। हम अपने साहित्यप्रेमी पाठकोंसे अनुरोध करते हैं कि, वे एकबार समालोचकके ग्राहक बनकर उसके नव्यभव्यलेखोंका आस्वादन करें। साथ ही जैनवैद्यजीसे प्रार्थना करते हैं कि, वे अपने समालोचकद्वारा जैन साहित्यका भी कुछ उपकार करनेका प्रयत्न करें।

मूडबिद्रीमें जैनपाठशाला और सिद्धान्तमन्दिर। मूडविद्रीके धर्माध्यक्ष महात्मा श्रीचारुकीर्तिजी पंडिताचार्यके पत्रद्वारा यह जानकर हमको अतिशय हर्ष हुआ कि, उन्होंने ता० १९ अगस्तको मूडबिद्रीमें एक दिगम्बरजैनपाठशाला स्थापित करनेके लिये १९०००) रुपया और सिद्धान्तमन्दिरके जीर्णोद्धारके लिये १२०००) देकर पट्टाचार्य स्वामियोंके सच्चे कर्तव्यका पालन किया है। यह रुपया उन्होंने उसी दिन वहाके धनिक और पाठशालाके व्यवस्थापक "अरलके गुम्मनश्रेष्ठी" को सौंप दिया है। श्रावक लोग अपनी आन्तरिक श्रद्धासे भट्टारक महाशयों तथा धर्माचार्योंको जो द्रव्य भेंट करते हैं, वह विलाससामग्रियोंके जुटाने अथवा अनाचारमें लगानेके लिये नहीं है, किन्तु ऐसे ही धर्मकार्योंके लिये है। खेद है कि, हमारे धर्माध्यक्षोंने मूर्खतावश सांसारिक वासनाओंमें फँसकर और इस लिये अपनी ओरसे लोगोंमें अश्रद्धा उत्पन्न करके धर्मोन्नति तथा धर्मरक्षाका वह उत्तम द्वार बन्द कर दिया है, जिसके साम्हने हमारों विद्वान् उपदेशकोंका अमित परिश्रम भी तुच्छ है। यदि हमारे लक्षाधीश भट्टारकगण श्रद्धास्पदस्वामी चारुकीर्तिजी पट्टाचार्यका अनुकरण करनेको अब भी तयार हो जावें, अर्थात् सदाचारी बनकर अपने द्रव्यका ऐसे धार्मिक कार्योंमें सदुपयोग करने लगें, तो एक बार फिर भी हम वह दिन देख सकते हैं, जब हमारा सारा जैनसमाज उन्हें अपनी श्रद्धाके सुन्दर सिंहासनपर विराजमान करके विनयवारिसे उनके पादप्रक्षालन करेगा, अन्यथा कौड़ीके तीन तीन बिकनेका समय उपस्थित ही है। श्रीचारुकीर्तिजी स्वामी सच्चे चारुकीर्ति साधु हैं। उनके द्वारा हम कर्णाटक प्रान्तमें बहुत कुछ जागृतिकी आशा रखते हैं।

धर्म और स्वदेशाभिमान।

गत मासके दि हिन्दुस्थान रिव्यूमें 'मिसेस एनीबिसेंट' का लिखा हुआ उक्त शीर्षकका एक लेख प्रकाशित हुआ है। वर्तमानमें वह लेख प्रत्येक धर्मके उपासकके मनन करने योग्य है। श्रीमती बिसेंटके कहनेका तात्पर्य यह है कि, वर्तमान समयमें जो नवशिक्षित धर्मको स्वदेशाभिमानका बाधक समझ कर, उसे तिलांजुली दे केवल राजनैतिक तथा सार्वजनिक कार्योंमें सम्मिलित होनेका आग्रह करते हैं, वे लोग इतिहासके पाठके विरुद्ध वर्ताव करके उल्टी खाते हैं। क्योंकि यथार्थमें जो वस्तु स्वदेशाभिमानकी घातक है, वह धर्म नहीं किन्तु धर्मांधता अथवा मतांधता है। जो लोग यह कहते हैं कि, अनेक मत होनेसे अथवा अनेक धर्म होनेसे स्वदेशाभिमानकी जागृति नहीं हो सकती, वे पृथ्वीके वर्तमान तथा प्राचीन इतिहासको नहीं जानते। मिसेस बिसेंटके विचारसे मनुष्यके शुष्क जीवनमें धर्म ही एक शीतल चेतना है। आत्माकी अनेक निराशाओंमें धर्म ही आशाका संचार करता है। मृत्युके पीछे भी जीवनको स्थिर रखनेवाली अमूल्य (परन्तु वर्तमानमें विपरीत अर्थके कारण विना मूलकी कहलानेवाली) वस्तु धर्म ही है। धर्मका बल यद्यपि अप्रत्यक्ष है, परन्तु इससे उसका अस्तित्व अस्वीकार नहीं किया जा सकता। संसारमें जितनी बड़ी २ प्रजायें छोटे २ समाजोंसे बनी हैं, वे सब धर्मके जोशसे बनी हैं। हजरत पैगम्बरके पहले मुसलमान महाप्रजा कहा थी? परन्तु धर्मका अर्थ संकुचित किया जाता है। वे केवल सिद्धान्तोंपर वादविवाद करनेवाले कारण बनाये जा रहे हैं। उनका शांतिप्रसारक मूलस्वरूप नष्ट करके उन्हें बलात् ही विरोधवर्धक स्वरूप दिया जाता है। और इसी कारण वे अग्निके समान जिस तिसको भस्म कर डालते हैं। परन्तु उनका यथोचित उपयोग करनेसे वे मनुष्यका कल्याण ही करते हैं। इग्लैंडको अनीति तथा राजा चार्लसके जुल्मोंसे बचानेवाला पदार्थ और कुछ नहीं प्यूरिटॅन पंथके लोगोंमें फैला हुआ धर्मका एक जोशही था। वर्तमानमें चाहे जैसी सुधरी हुई तथा स्वतंत्र मतकी गिनी जानेवाली प्रजा भी धर्मके विषयमें सम्पूर्ण तथा चुस्त गिनी जाती है। सुधार तथा धर्मसम्बन्धी स्वतंत्रताके विषयमें इंग्लैंड और फ्रान्स ये दोनों पृथ्वीमें आजकल सर्वश्रेष्ठ हैं, तौ भी हाल ही उनकी क्या स्थिति है? धर्मके ही प्रश्नपर दो-

में देशोंके प्रधानमंडलोंके गिर जानेका भय हो रहा है। इंग्लैंडमें शिक्षासम्बन्धी कायदेका मसविदा लार्डस्सभाने रद किया, इसलिये वहांकी सभाके पास किये हुए मसविदेको रद करनेका जो अधिकार लार्डस् सभाको है, उसे छीन लेनेके लिये वर्तमान लिबरल प्रधानमंडल तयार हुआ है। और यदि उसके उस कार्यमें सहायक होने के लिये प्रजा इंकार करेगी, तो अपने अधिकारका त्याग करनेके लिये भी उक्त मंडल तयार है। चर्च आफ इंग्लेन्डके पंथके खोली शालाओंके विद्यार्थियोंको अपने प्राचीन सिद्धान्त सीखना ही पड़ेंगे, इस प्रकार बलात् शिक्षा देनेके लिये जोर दे रहे हैं। और नॉन कॅनफॉर्मिस्त पंथवाले जिनके पक्षमें वर्तमान सरकार है, उसके विरुद्ध मत दे रहे हैं। अतिशय सहनशील और उदार होने पर भी अंग्रेज प्रजा धर्मसम्बन्धमें कितनी चुस्त है, इस इतिहाससे भलीभांति प्रगट हो जाती है। फ्रान्समें भी प्रधानमंडल रोमनकैथलिक पंथके धर्मगुरुओंके साथ जोशमें आ रहा है। इन तथा और भी अनेक उदाहरणोंसे मिसेस एनीबिसेंट धर्मके जोशके विना प्रजा शव (मुर्दा) रूप हो जावेगी, ऐसा आग्रह करके, स्वदेशाभिमान जागृत करनेके लिये धर्मको छोड देनेकी आवश्यकता नहीं है, यह स्पष्ट बतलाकर फिर समझाती है कि, धर्ममें जो अनेक तत्त्व घुस गये हैं, उन्हें दूर कर देनेसे धर्म स्वदेशाभिमानको असाधारण सहायता पहुंचावेगा। मनुष्यका हृदय धर्मके विना स्थिर नहीं हो सकता। वह धर्मपर आस्था रखनेसे हालाहल विषको भी अमृत समझके एक वार गलेके नीचे उतार सकता है। तथा चाहे जैसी आपत्तिकी टक्कर झेल सकता है। आनरेबिल मि० गोखलेने एक वार कहा था कि, "कोई भी बड़ा कार्य आत्मत्यागके विना नहीं हो सकता" और यह सत्य है। परन्तु वह आत्मत्याग क्या अन्तःकरणमें धर्मका असाधारण प्रवाह हुए बिना उत्पन्न हो सकता है? मनुष्यका स्वभाव स्वार्थकी ओर झुकता है। धर्मके संस्कार ही चाहे वे अपूर्ण ही क्यों न हो, इस स्वार्थवृत्तिके थोड़े बहुत अंकुशमें रखते हैं। और जिसका हृदय शुद्ध होता है, उसे तो धर्म आत्मत्यागीका दिव्यस्वरूप बना देता है। धर्मपंथोंमें धर्मान्धताका अंश जितना मिला हुआ दिखलाई देता है, उतनी हानि अवश्य होती है। तो भी उसमें निकम्मे भागकी अपेक्षा सारभाग बहुत है, और उसीके प्रमाणसे एक पंथवाला दूसरे पंथवालेकी अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ होता है। पंथ थोड़े होवें और जिस मूल धर्ममेंसे वे निकले हों, उसमें पीछे मिल जावें तो उससे एकता अवश्य बढ़ेगी, परन्तु स्वदेशप्रेमी और स्वदेशभक्त बननेके लिये ऐसा होना ही चाहिये, यह नहीं कहा जा सकता, और वह शक्य अथवा संभाव्य भी नहीं है। यदि सुधारकी आवश्यकता है, तो वह इतनी ही कि, प्रत्येक अन्य धर्मावलम्बीको स्वश्रेष्ठताकी तिरस्कार भरी हुई दृष्टिसे नहीं देखना चाहिये, किन्तु परधर्म तथा परधर्मियोंके विषयमें अत्यंत सभ्यता तथा उदारता धारण करके सार्वजनिक हितके कार्योंमें एक साथ मिलकर काम करना चाहिये।

भारतवर्षमें धर्मान्धताकी वर्तमानमें जो स्थिति है, उसकी अपेक्षा यूरोपमें और भी बुरी थी। इस देशमें तो एक सम्प्रदायवाला दूसरे सम्प्रदायवाले देवकी निंदा करता है, अथवा परस्पर भोजन तथा बेटी व्यवहार ही नहीं करता है, और राज्य नियमोंका सर्वथा भंग करनेको उद्यत नहीं होता। परन्तु यूरोपमें आजसे ३०० वर्ष पहले हजारों साम्प्रदायिक लोग परस्पर कतल किये जाते थे, जलावतन किये जाते थे, जीते हुए जला दिये जाते थे, और शूलीपर चढ़ाये जाते थे। बड़े २ राज्य धर्मके लिये खूंखार युद्ध करते थे। और यह स्थिति वहांके अनेक असंस्कारी अशिक्षित प्रदेशोंमें अब भी है। आयर्लेंडके डेरी नगरकी गलियोंमें रोमनकैथलिक और प्रोटेस्टेंट पंथवाले प्रतिवर्ष धर्मके लिये अब भी बहुतसे लोगोंके मस्तक चकनाचूर करते हैं।

मि० एनीबिसेंट कहती हैं कि, "जिस प्रकार इंग्लेंडमें अब सरलतासे रोमनकैथलिक और प्रोटेस्टेंट परस्पर मिलते जुलते हैं, और सार्वजनिक राजकीय रंगभूमिपर हिलमिलके काम करते हैं, उसी प्रकार हिन्दू तथा मुसलमानोंको भी सामान्य राजकीय रंगभूमिपर काम करना चाहिये। क्योंकि दोनोंको अच्छी सरकारकी आवश्यकता है, दोनों अपने देशमें राजकीय हक चाहते हैं, और दोनों ही प्रजाकी आबादीमें तरक्की चाहते हैं। यदि ऐसा है, और दोनों भारतवासी हैं, तथा एक ही प्रजाकी सेवा करते हैं, तो फिर उनमेंसे एक मंदिरमें पूजा करै, और दूसरा मसजिदमें नमाज पढ़े, तो क्या हानि है?

ऐसे उदार और भेदभंजक विचार वर्तमानके शिक्षित समुदायमें बहुतायतसे हैं। वे जब थोड़ी शिक्षा पाये हुए लोगोंमें भी विस्तारसे प्रवेश करेंगे, तब देशमें आजकी अपेक्षा एकताकी वृद्धि अधिक दिखलाई देगी। यदि लोग स्वधर्ममें ही अपना लक्ष्य रक्खेंगे, और भिन्न धर्मोंकी ओर किंचित् भी घृणासे देखना छोड देंगे, तो निश्चय है कि, स्वदेशाभिमान स्फुरायमान हुए विना नहीं रहेगा। जो हानि होती है, वह धर्मांधतासे ही होती है, धर्मसे नहीं। जो आंखें खोलकर पाला जाता है, वह धर्म है, और आंखें बन्द करके पाली जाती है, वह धर्मान्धता है। कभी २ यह धर्मांधता धर्मरहिततासे भी अधिक अपायकारक हो जाती है। यह बात इतिहाससे सिद्ध है। क्योंकि धर्मरहिततासे तो केवल आपका ही नाश होता है; परन्तु धर्मांधता तो प्रतिपक्षीको भी साथ ही नष्ट कर देती है। धर्मांधत्व मनुष्यका बड़ा भारी शत्रु है। वह हृदयका विकाश नहीं होने देता, स्वदेशके विषयमें निःस्पृह बनाता है, और अमुक जातिकी टोली तथा अमुक प्रदेशमें ही सम्पूर्ण प्रेमको संकुचित करनेकी प्रेरणा करता है।

मिसेस बिसेंट अन्तमें कहती हैं कि, देशके इस छोरसे उस छोर तकके समस्त धर्मवालोंमें स्वदेशाभिमानका जोश पैदा करनेके लिये अपने २ धर्मको खूंटीपर रखनेकी नहीं, परन्तु उसमें जितना अंश धर्मांधताका है, उसीके निकाल देनेकी आवश्यकता है। (बम्बईसमाचारके एक लेखके आधारसे)

नाथूराम प्रेमी।

प्राचीन नाममाला।

(२)

कीकट—गयाके जिलेका एक हिस्सा जो गयाके पूर्वमें है।

कुन्तल—चोल देशके उत्तर निजाम हैदराबादकी रियासतका दक्षिण पश्चिमका हिस्सा। इसकी पुरानी राजधानी कल्याणदुर्ग थी।

करूष—शायद यह देश विन्ध्यपर्वतपर था।

कुरुक्षेत्र—थानेश्वरके दक्षिण। उत्तरकी ओर दृशद्वती और दक्षिणमें सरस्वती इन दो नदियोंके बीचका मैदान कुरुक्षेत्र है।

कलूत—जलन्धर—दोआबाके ईशानका प्रदेश जो सतलजके दहिनी ओर है।

कुशावती या **कुशस्थली**—प्राचीन समयमें यह दक्षिण कौशलकी राजधानी थी। नर्मदाके उत्तर और विंध्यके दक्षिण बुन्देलखंडमें रामनगरेके पास। संस्कृतके प्रसिद्ध कवि राजशेखर यहींके राजा थे।

केकय—सिन्धुदेशके समीप विपाशा नदीके पश्चिमका देश। केकयी यहींके राजाकी कन्या थी।

केरल—कावेरीके उत्तर और पश्चिम घाट तथा समुद्रके बीचका देश। कनाड़ा और मालावार भी इसीमें है।

कोशल—वाल्मीकि रामायणके अनुसार सरयू या घाघराके दोनों तटका प्रदेश।

कोशाम्बी—प्रयागसे ३० मील पश्चिम पपोसाके नामसे प्रसिद्ध है, जो अब एक छोटासा ग्राम है और जैनीयोंका तीर्थ है।

कौशिकी नदी—अब इसे कुसी कहते हैं, जो दर्भंगाके पूर्व भागलपुरके उत्तरी हिस्से और पुर्निया जिलेके पश्चिमी हिस्सोंमें बहती हुई गंगामे जा मिली है।

गंडकी नदी—हाजीपुरके पास गगामें मिली है।

गोमती नदी—बनारस और गाजीपुरके बीच गंगामें मिली है।

गोमन्त—कोकणदेशका एक भाग। अब शायद इसी स्थानमें गोआ (पुर्त्तगीज) है।

गौड या पुंड्र—बंगालका उत्तरी हिस्सा।

गान्धार—कन्दहारके चारों ओरका देश, काबुल भी इसीमें शामिल था। (क्रमश)

साधारण भोजनसे लाभ।

पश्चिमी शिक्षाके संस्कारसे प्रजामें अनेक प्रकारका एरफेर हुआ है। सामाजिक प्राचीनपद्धति नष्ट हो गई है, वर्णाश्रमकी स्थिति छिन्नभिन्न हो गई है, आहारविहारमें फरक पड़ने लगा है, और उसके प्रतापसे आहारशुद्धि वा आचारशुद्धिकी सफाई हो गई है। साथ ही सामाजिकरूढ़िके कारण, बालविवाह, वृद्धविवाह, अनमेलविवाह, ब्रह्मचर्यका नाश, वा सांसारिक प्रथाओंके संयोगसे प्रजा शक्तिहीन हो गई है। उस शक्तिकी प्राप्तिके हेतु अनेक यत्न करनेपर भी उसे अकाल मृत्युका सामना करना पड़ता है। भांति २ की जड़ीबूटियां सेवनकर, पहलवान बननेकी लोलुपता बढ़ गई है। जिससे आधुनिक चुटकवैद्यों और अर्द्धदग्ध डाक्टरोंकी भी खूब बनी है। ऐसी हालतमें साधारण भोजनकी इज्जत कौन करेगा? बड़े २ शहरोंमें मादक तथा पौष्टिक पदार्थोंके जैसे शौकीन हैं, वैसे ही गांवखेड़ोंके लोग साधारण भोजनके रुचिया हैं। स्वाभाविक जलपान करनेसे नीरोगता रहती है, यह जाननेपर भी आजकल शहरोंके होटलोंमे अनेक प्रकारके आडम्बर प्रचलित हुए हैं। पाक, मलीदा, चा, बिस्कुट और पकवान आदि शरीरको हृष्टपुष्ट करते हैं, ऐसी झूठी गप्पें [illegible] हैं। इसलिये नीचे लिखे दृष्टान्तपर वि[illegible] भोजनके सम्बन्धमें पूर्व पुरुषाओंकी ही [illegible] हण करना उचित है। "मिसिस मेरी [illegible] एक स्त्री १०९ वर्षकी अवस्था पाकर मृ[illegible] हुई थी। उसके मृतकशरीरकी जांच [illegible] चेन्लनने लिखा है कि, इस स्त्रीकी [illegible] ३२ वर्षकी तरुण स्त्रीके समान सुदृढ [illegible] रीरके सम्पूर्ण अवयव नीरोग और दृ[illegible] थे। डाक्टर चेन्लेनकी इस रिपोर्ट[illegible] डाक्टरोंको बड़ा बिस्मय हुआ था कि, [illegible] चिक अवस्थामें भी ऐसा दृढ शरीर [illegible] कारण है? खोज करनेपर मालूम हुआ कि, [illegible] अन्तके ४० वर्षसे केवल रोटी और दूध [illegible] भोजन करती थी। इन चालीस वर्षोंमें उस[illegible] मास और शाक भक्षण नहीं किया, पानी [illegible] शराब आदि किसी दूसरे प्रवाही पदार्थका [illegible] किया। आजकल हमारे देशमें मदिरा, [illegible] और कई मादक प्रवाही पदार्थोंका उपयो[illegible] से होने लगा है। प्रथम तो वीर्यका भंडा[illegible] चुकते हैं, तिसपर भी गरम और मादक [illegible] रको हास करनेवाले पदार्थोंके उपयोग [illegible] धीरे २ अत्यन्त पतितावस्थाको प्राप्त हुई [illegible] नमें जहां देखो तहां लोग इसी अज्ञानता[illegible] साधन समझ रहे हैं और नष्ट हो रहे हैं। [illegible] धर्मभ्रष्ट बलभ्रष्ट और अन्तमें जीवनभ्र[illegible] है। तौ भी साधारण भोजन और दाल रोटीकी ओर बहुत कम मनुष्योंकी दृष्टि पाई जाती है। अगर ऐसे ही खानपानकी परिपाटी प्रचलित रही, तो प्रजाकी क्या गति होगी, हम अनुमान नहीं कर सकते। इसलिये प्रत्येक व्यक्तिको साधारण भोजन, दाल, भात, रोटीसे ममत्व रखना चाहिये। और अभक्ष्य भक्षण तथा अपेयपान करके डूबती हुई प्रजाको उक्त प्रकारके उपदेशों द्वारा बचाना चाहिये (गुजराती सत्यविजयसे)

मुकुंदलाल श्रावक।

जैनपाठशाला जयपुर।

आषाढ़ कृष्णा ९ को वार्षिकोत्सव हुआ। जयपुर निवासी सभी मुखिया भाई सहर्ष उपस्थित हुए थे। सरस्वतीजीकी पूजाके अनन्तर पाठशालाकी सविस्तर रिपोर्ट पढ़ी गई और विद्यार्थियोंने पाठशालाकी प्रशंसा और जिनवाणीकी स्तुतिरूप भाषण [illegible]

[illegible] (६ सर्ग), दशकुमारचरित, शकुन्तलानाटक, प्राकृतप्रकाश, वामनसूत्रवृत्ति, चन्द्रालोक, वृत्तरत्नाकर—३—अध्याय।

पठन क्रममें अन्य मतावलम्बी शास्त्र सम्मलित होनेसे जैनोन्नतिके मुख्य उद्देशकी पूर्णता नहीं समझी जाती, इस लिये उनके पलटे जैनग्रन्थ ही भरती करनेके लिये महाराजा कलिजके प्रींसिपाल सा०की सेवामें कमेटीने नकशा तयार करके भेजा है।

शास्त्रीय और उपाध्यायकी परीक्षा देने वाले विद्यार्थी राजकीय संस्कृतपाठशालाके [illegible]

वार्षिक परीक्षा देते हैं और सार्टीफिकट भी राजकीय परीक्षकोंके हस्ताक्षर होकर सत्कारसे मिलते हैं। प्रवेशिकाकी उच्चश्रेणियोंकी परीक्षा राज्यकीय प्रबंधसे होती है, परन्तु नीचेकी श्रेणियोंकी मासिक, त्रैमासिक, षाण्मासिक और वार्षिक परीक्षा जयपुरी विद्वानोंद्वारा होती है। प्रवेशिकामें ४ और साहित्योपाध्यायमें ३ विद्यार्थियोंने परीक्षा दी है। फल अभी प्रगट नहीं हुआ। शेष १६४ मेंसे ३५ विद्यार्थी बीमारी आदि कारणोंसे गैरहाजिर थे, अवशेष १२९ मेंसे १०२ विद्यार्थी परीक्षोत्तीर्ण हुए हैं। विद्यार्थियोंसे फीस नहीं ली जाती है। पुस्तकें और आवश्यक सामान भी सब छात्रोंको विनामूल्य दिया जाता है। लौकिक निर्वाहमें असमर्थ परन्तु पूर्ण परिश्रमी विद्यार्थियोंको उनकी योग्यतानुसार मासिक सहायता भी दी जाती है। अन्य ग्रामोंके विद्यार्थी भी यहां विद्याध्ययन करते हैं। उनका प्रबंध बोर्डिंग-हौसके समान पाठशालासे किया जाता है। शिक्षकोंकी संख्या १० है। और ५ अन्य मुलाजिम हैं। शीतकालमें प्रभातके १० बजे से ४ बजे तक और गर्मीमें ७ बजे से १० बजे पर्यन्त शालाका समय नियत है। इसके सिवाय उच्चश्रेणीके विद्यार्थी सर्वदा ही प्रभातसे १० बजे रात्रितक विद्याभ्यास किया करते हैं। जिनके लिये ३ पंडित नियत हैं।

प्रबन्धकारिणीकमेटी प्रतिशुक्रवारको हुआ करती है। समयानुसार विदेशी भाई भी शालावलोकन किया करते हैं। शाला स्थापित होनेके समय विद्यार्थियोंकी संख्या केवल ३१ थी। पढाई रत्नकरण्डश्रावकाचार तक होती थी और मासिकव्यय ५०) रु० था। परन्तु श्रीजीकी कृपासे अब १७१ विद्यार्थी हैं। शास्त्रीयपरीक्षा और जैनसिद्धान्तके चारों अनुयोगोंकी पढाई होती है। व्यय ३००) रु० मासिक है। औसत हाजिरी १३२ संतोषप्रद रहती है। अब तक साहित्यशास्त्रीमें ४, न्यायोपाध्यायमें १, साहित्योपाध्यायमें १०, प्रवेशिकामें २३, इस प्रकार ३८ विद्यार्थी राजकीय प्रबंधानुसार परीक्षोत्तीर्ण हो चुके हैं। और कई छात्र बम्बई मथुरा अजमेर आदि स्थानोंसे परीक्षा देकर उत्तीर्ण हुए हैं। ये सब उत्तम स्थितिमें हैं और इस शालाकी कीर्ति विस्तृत कर रहे हैं। इसी पाठशालाकी शाखारूप एक कन्याशाला ५ वर्षसे स्थापित है। शाला-बालिकाओंके लिये एक योग्य और सुशिक्षित ब्राह्मण अध्यापक और १ अनुचरी नियत है। बालिकाओंकी संख्या ४२ है। कई लड़कियां क्रियाकोष, भक्तामरस्तोत्र, कल्याण-मंदिर, पार्श्वपुराण आदि संस्कृत ग्रंथ अर्थसहित वा वचनिका अध्ययन कर रही हैं। हस्तकलाकौशल्य अर्थात् कशीदा आदिकी भी शिक्षा दी जाती है। कितने ही विद्यानुरागी महाशय लड़कियोंकी धर्म-विद्या और हस्तकौशल्यसे प्रसन्न होकर उन्हें पारितोषिक देते और उत्साह बढ़ाया करते हैं। जैन अनाथालय, औषधालय, कारखाना, शिल्पकम्पनी और इलाका जयपुरकी ग्रामीण पाठशालाओंकी सम्हाल आदिका कार्य भी इसी जैनपाठशालाके अधीन है। आषाढकृष्णा ५ सं० ६३ को १७९०३॥=) सिलक मौजूद थी। १ वर्षमें चंदा ब्याज आदिसे ३२००)॥ की आमदनी हुई है, जिसमेंसे २३९४॥।८) शिक्षकोंके वेतन और समान आदिमें खर्च होकर १८७०८॥।-)॥ बचत रही है।

हस्ताक्षर-मोतीलाल सेठी

प्रबन्धाध्यक्ष।

मनोविनोद।

(१)

शेठ-मुनीमजी! किसी अखबारमें बड़ा छपाईके पैसे नहीं लगैं, एक नोटिस तो छपनेको भेज दो कि, हमको एक पंडितकी जरूरत है।

मुनीम-शेठजी! कैसा पंडित होना चाहिये।

शेठ-लड़कोंको सरसकिरत पढा सकै, दोनों वक्त शास्तर सुना देवै, ठाकुरजीकी पूजा कर लेवै, हकीम हो, जोतिसी हो और झाड़ना फूंकना जानता हो, तो और भी अच्छा। परन्तु अंगरेजी जाननेवाला जरूर हो।

मुनीम-(मनमें) और नाचना गाना भी जानता हो (प्रगट) मतलब यह कि, "पीर बवर्ची भिश्ती खर" सब ही कुछ होना चाहिये। बिहतर है! तनख्वाह क्या दी जावेगी!

शेठ-बीस रुपया! क्यों ठीक है न!

मुनीम-हां! हां! शेठजी! इतनी तनख्वाह क्या थोड़ी है! आजकल तो अंग्रेजी बी, ए, पढे हुए भी इस तनख्वाहमें आ सकते हैं, पंडितोंकी तो बात ही क्या है!

(२)

साहब-शैठ डेखो, हम सुनटा है, टुम स्वडेसी-की डलाली करटा है। बास्टे टुमको राजबहाडुरका खिताब नाही डेने सकटा।

शेठजी-(अदबसे) गरीबपरवर! यह बात झूठ है। मैं नहीं जानता स्वदेशी किस चिड़ियाका नाम है। मैं सरकार अंग्रेजका सच्चा खैरख्वाह हूं। मुझे देशकी तरक्की फरक्कीसे कुछ मतलब नहीं है।

साहब-नेई टुम झूठ बोलटा है। कल हम टुमारे लरकेको स्वडेसी सभामें डेखा है। और टुमारे गर बंगाली बाबू आटा जाटा है। हट जाओ, डेमफूल साम्नेसे।

शेठजी-(पैरोंपर पड़के) हुजूर मा बाप है। वह लड़का शैतान है। बाबू भी उसीके पास आता होगा। अब आयन्दा ऐसा करेगा, तो मैं उसे घरसे निकाल दूंगा। परन्तु खिताब तो हुजूरको दिलाना ही पड़ेगा। क्यों कि उसके विना मैं अब किसीको मुंह नहीं दिखला सकता।

(३)

एक—भाई साहब! कुछ खबर भी है, भादोंका महीना आ गया है।

दूसरा—हां! हां! खूब खबर है। शायद खाने पीनेकी तकलीफके बारेमें आपका इशारा होगा। परन्तु यहां पहलेहीसे बहुतसा शाक सुखाके रख छोड़ा है। और घरमें घी दूधकी भी कमी नहीं है।

एक—तब क्या आप कुछ व्रत उपवास नहीं करते?

दूसरा—नहीं, प्रतिदिन एकासन करता हूं।

एक—तो क्या एकासनमें कुछ कष्ट मालूम नहीं पड़ता।

दूसरा—अजी कष्ट किस बातका! एकासनका मतलब ही यही है कि, दो वक्तका एक वार खा लेना। भाई! सच कहता हूं, दोनों वक्तकी टोटलसे एक आधी ज्यादा भले ही हो जावे, पर कम नहीं होने पाती। हां, एक तकलीफ अलबत्ता होती है, कि शाम सबेरे मन्दिरमें शास्त्र सुनना पड़ता है। और यदि समझमें न आवे अथवा अधिक भोजन करलेनेके सबबसे नींदका झोंका आने लगता है, तो पंडितजी बड़ी फजीहत करते हैं।

(४)

ग्राहक—(अपने मित्रसे) यह मुफ्तहीमें ५) की जूती सिरपर पड़ना चाहती है।

मित्र—भाई कैसी जूती?

ग्राहक—यह देखो न तकाजेका कार्ड आया है कि, जैनमित्रके २१ अंक आपके पास जा चुके,

इस लिये रुपया भेजिये । अथवा हम वेल्यूपेबिल भेजते हैं, उसे २) देकर स्वीकार कीजिये ।

मित्र—आपने उसके २० अंक पढ़े भी तो होंगे? फिर मुफ्ती क्यों बतलाते हो? साफ क्यों नहीं कहते कि, रुपया देना नहीं है ।

ग्राहक—अजी पढ़नेकी कभी फुरसत भी हुई हो तब न ।

मित्र—तब और भी बड़ा बुरा करते हो । यदि आपने १० अंक पढ़ लिये होते, तो फिर भी उसके सम्पादक अथवा मैनेजरको संतोष होता कि, रुपया गड्ढेमें गये, सो तो गये । पर हमने जो कुछ लिखा, उसे ग्राहकने पढा तो सही । जरूर हमारे जातिधर्मसम्बन्धी विचारोंने उसके चित्तपर असर किया होगा । परन्तु आप एक तो उसके लेखोंको नहीं पढते और दूसरे रुपया हजम कर जानेकी चिन्तामें हैं । अच्छा भाई, तुम्हारी मरजी । चिन्ता क्यों करते हो? वी. पी. वापिस कर दो । और चिट्ठिया आवें, उनका उत्तर मत दो । जैनमित्र आफिसमें नादिहन्दोंका कोई खाता अवश्य ही होगा । उसीमें आपके पवित्र नामको स्थान मिल जावेगा । ऐसे उदार ग्राहक मिलनेके कारण ही तो जैनपत्रोंकी दशा संतोषप्रद हो रही है ।

पुस्तक समालोचन ।

श्रीकुन्दकुन्दाचार्योचा जीवनचरित्र—जैनाचा पाचशे वर्षांचा संक्षिप्त इतिहास—श्रीयुत तात्या नेमिनाथ पांगल—बार्सी, इस पुस्तकके रचयिता हैं, और उन्हींके पाससे यह तीन आनेमें प्राप्त हो सकती है । पांगल महाशय मराठीके एक होनहार लेखक हैं । जैनियोंमें ऐतिहासिक पुस्तक लिखनेका उनका यह प्रथम प्रयत्न है । इसलिये हम इस पुस्तकका अभिनन्दन करते हैं । उनकी इस पुस्तके पढ़नेसे सहृदय पाठकोंको यह विचार अवश्य उत्पन्न होगा कि, यदि कोई प्रयत्न करै, तो महावीर भगवान्के पश्चात् आज तकका जैनियोंका श्रृंखलाबद्ध इतिहास बन सकता है और उसके उपयुक्त तत्व हमारे ग्रन्थोंमें मौजूद हैं । उत्साही प्रयत्नशील लेखकोंकी अवश्यकता है । पुस्तक सामान्यतः अच्छी बनी है । इसमें एक जगह वादीभसिंहको जीवंधरचम्पूका कर्त्ता लिखा है । यह ठीक नहीं है । वादीभसिंह गद्यचिंतामणि और क्षत्रचूड़ामणिके कर्त्ता हैं । चम्पूके कर्ता हरिचन्द्र हैं । गौतमके विषयमें लिखा है कि, भगवान्की वीतरागमुद्रा देखकर वह गतमान हो गया । परन्तु यथार्थमें मानस्तंभके दर्शन मात्रसे गौतमका गर्व खर्व हुआ था । जैनी रागद्वेषादिके जीतनेवाले हैं, इसलिये उनके हृदयमें राज्यकी इच्छा प्रबल नहीं होती थी और इसी कारण उन्होंने सार्वभौम होनेका प्रयत्न नहीं किया । लेखकका यह विचार ठीक नहीं है । जैनी रागद्वेषके जीतनेवाले नहीं हैं, किन्तु उनके इष्ट जिनदेव रागद्वेषके जीतनेवाले हैं । गृहस्थावस्थामें राज्य बढानेकी और सार्वभौम होनेकी इच्छाका अभाव नहीं माना जा सकता । धर्मनीतिसे राजनीति पृथक् है । जैनियोंके हाथमें राज्य न रहनेका कोई दूसरा कारण होना चाहिये । कुन्दकुन्दाचार्यके जीवनचरित्रमें उनके बनाये हुए दो चार ग्रन्थोंके नाम न देकर सम्पूर्ण ग्रन्थोंके नाम दिये जाते तो अच्छा होता । उनके बनाये हुए ८४ पाहुडोंके नाम मिलते हैं ।

व्याख्यानरत्नमाला—पुरुषार्थ आदि विषयके छोटे २ कई व्याख्यान हैं । बाबू वीरसिंहजी जैनी—जैन पुस्तकालय इटावा इनके प्रकाशक और प० हजारीलाल जैनवैद्य रचयिता हैं । मूल्य शायद प्रत्येकका आध आना है । हैं तो ये व्याख्यान पर इनकी भाषा पुराने पंडितों जैसी है । विषय धर्मशास्त्रोंसे लिया गया है । साधारण व्याख्यान सीखनेवालोंको इनसे सहायता मिल सकती है ।

ईशूरहस्य—इस छोटीसी पुस्तकमें यह सिद्ध किया गया है कि, ईसाइयोंका पैगम्बर ईसा एक बढइका लडका था । ईसाई लोग जो उसे कुँवारीका पुत्र मानते हैं, सो गलत है । इसके लेखक पं० जगन्नारायण शर्मा, गिरगाव बम्बई, हैं । उन्हींके पाससे पुस्तक मिलेगी ।

बालाबोधिनी (पिताका उपदेश पुत्रीको)—डुमरावके बाबू रामप्रकाशलालद्वारा लिखित और पं० सूर्यप्रसादजी वैद्य—मेरठ द्वारा प्रकाशित । मूल्य पांच आने । यह स्त्रीशिक्षाकी पुस्तक है । पतिसेवा करनेकी इसमें अच्छी शिक्षा दी गई है । प्रत्येक स्त्रीके जानने योग्य बातोंका इसमें संग्रह है । इसलिये सबके पढ़ने योग्य है । परन्तु भाषा बड़ी क्लिष्ट और अरुचि उत्पन्न करनेवाली है । इस दोषके कारण हमारा मन स्वयं इसके पढ़नेमें नहीं लगा । किसी बंगला पुस्तकसे इसका अनुवाद हुआ है, परन्तु मुख्य लेखकका नाम छुपाया गया है । दस्तूरमत, ताच्छिल्य, विद्रूप, मन्दअभ्यास, चिरदिनके निमित्त, अकस्मई, त्रास, सुतरां, आदि शब्द स्वयं पुकारते हैं कि, यह किसी बंगभाषाका अनुवाद है । खेद है कि, "भाषा अच्छी न होनेके कारण अच्छीसे अच्छी पुस्तक भी निकम्मी समझी जाती है । " इस बातपर लेखक तथा प्रकाशकने बिलकुल ध्यान नहीं दिया ।

पुरुषार्थनिबन्ध और जैनतीर्थयात्रा—प० रामलालजी अध्यापक—खंडवा लिखित । पहली पुस्तक आधे फार्मकी और दूसरी डेढ़ दो फार्म की है । तो भी पहलीका मूल्य एक आना और दूसरीका दो आना है । इतना अधिक मूल्य रखना अन्याय है । पहली पुस्तकमें एक छोटासा निबन्ध है । और दूसरीमें १०—१२ तीर्थोंकी यात्राका मार्ग बतलाया है । दोनों पुस्तकें देशोपकारककार्यालय—खंडवासे मिलेंगीं ।

मनमोहनीनाटक—जैनगजटके भूतपूर्व सम्पादक बाबू सूरजभान वकील—देवबन्द (सहारणपूर) लिखित और प्रकाशित । यह नाटक नहीं, किन्तु एक गार्हस्थ्यउपन्यास है । लेखक महाशयने न जाने क्यों इसे नाटक लिखा है । हम इसे पढकर बहुत प्रसन्न हुए । पुस्तक बडी ही रोचक है । एक बार प्रारंभ करके फिर छोड़नेको जी नहीं चाहता । 'आगे क्या हुआ, फिर क्या हुआ, इस प्रकारकी उत्कंठा बढ़ती ही जाती है । बुढ़ियाका भोलापन बांचते २ हृदय भर आता है, मातृभक्ति उमड आती है । और कपूरानीका चरित्र पढ़ते २ वर्तमानकी कर्कशा स्त्रियोंका चित्र सम्मुख होकर फिर जीमें तरगें उठने लगती हैं, कि फूलवंती जैसी गृहकार्यदक्षा कुलस्त्रियोंसे हमारा समाज कब संस्कारित होगा? पुस्तककी भाषा यदि और भी कुछ अच्छी तथा परिमार्जित लिखी जाती, तो विशेष आदर होता । २०० पृष्ठकी पुस्तकका मूल्य बहुत ही थोड़ा अर्थात् चार आने है । यदि यह पुस्तक अन्यत्र प्रकाशित होती, तो कमसे कम आठ दश आनेमें बेची जाती । पुस्तक प्रचारके विचारसे शायद इसकी इतनी थोड़ी कीमत रक्खी गई है । प्रत्येक गृहस्थको इसकी एक २ प्रति लेकर ग्रन्थकर्ताका उत्साह बढ़ाना चाहिये ।

पत्रोंका सार ।

पनागर (जबलपुर)—श्रावण कृष्णा चतुर्दशीको श्रीमान् सिंघई उदयचन्दजीके सभापतित्वमें जैन बालहितकारिणी सभाकी बैठक हुई । पाठशालाके विद्यार्थियोंकी परीक्षा ली गई और बच्चेके

वास्ते प्रेरणा की गई । सरस्वतीभंडारके लिये १२) रु. और पाठशालाके एक वर्षके सहायतार्थ २०४) चंदा किया गया । हर्ष है कि, भाई हीरालाल झब्बूलालजीने ५) मासिक सहायता देनेका वचन दिया है, जो इसी चन्देमें शामिल हैं । आपने यहांके प्राचीन बड़े मंदिरोंके बिगड़े हुए भागका अपनी ओरसे १०) में ठेका देकर सपरिश्रम उपार्जन कीहुई द्रव्यका सद्व्यवहार किया है ।

बाबूलाल–मंत्री ।

गया (साहबगंज)—अष्टान्हिकाजीका पर्व बड़े समारोहके साथ पूर्ण हुआ । आषाढ सुदी ९ से १९ तक बड़े आनन्दामृतकी वर्षा होती रही । नवमीको श्रीसम्मेदशिखरजीकी रक्षाके लिये चन्देका प्रयत्न किया गया । हर्षका विषय है कि धर्मात्मा भाइयोंकी उदारतासे उसी समय ४१२१) का चन्दा हो गया । जरूरत पड़नेपर यह रुपया भिजवाया जावेगा । श्रावण वदी १ के दिन यहाकी, जैनपाठशालाको पुनरुज्जीवित करनेके लिये भी ५७५) का चन्दा हो गया । पाठशालाके लिये १२००) में एक मकान लिया गया है । लक्ष्मीनारायण जैनी–हसवा ।

मैंदर्गी (कुरंदवाड)—ता० १४–८ को रा. रा. जीवराज परमचन्दजीके यहां शेठ बालचन्द रामचन्दजी दोसीकी अध्यक्षतामें एक सभा हुई । रा. फूलचन्द हीराचन्दने स्वदेशी तथा अहिंसा पर व्याख्यान दिया । और उसका पुष्टीकरण श्री मल्लप्पा संगप्पाने किया । रा. कृष्णरावने कृषिविषयपर तथा रा. रामभाऊ बिष्णुदासरने राष्ट्रीय शिक्षणपर व्याख्यान दिया । सभापति साहबने सबके व्याख्यानोंको परिपुष्ट किया ।

फूलचन्द मोतीचन्द ।

इन्दौर—लशकरी मंदिरमें त्रैलोक्यसारजी मंडलविधान २१ दिन तक आनन्दके साथ होता रहा । श्रावण वदी १४ को बड़े समारोहके साथ कलशाभिषेक हुआ । भाई धन्नालालजी सभी भक्तिसे पूजन पढ़ते थे । एक ओरसे स्त्रियां मिष्टध्वनिसे बाजेके साथ पूजन करतीं थीं । श्रीमान् सेठ हुकमचंदजी इन्दौरके भाइयोंको २८ अगस्तको शिखरजी जानेकी प्रेरणा कर रहे हैं । आमने २०, २५ ग्रामोंमें चंदेके लिये चिठ्ठिया भेजी हैं ।

हजारीलाल ।

बुरहानपुर—श्रीमान् लेफ्टिनेंट गवर्नर सा० और गवर्नर जनरल सा० व० को यहांसे तार दिये गये थे । शेठ माणिकचंदजीकी चिठ्ठीके अनुसार भाई सुन्दरलालजीके उद्योगसे सभा की गई । श्रीसम्मेदसिखरजी विषयमें ४००) चंदा करके भेजा गया । केशरीलाल ।

रायपुर—बाबू हीरालालजीके शुभागमनसे सभा की गई । बाबूलालजीने पूजन, स्वाध्याय, मेल, शिक्षा, और विदेशीशक्करके त्यागपर भाषण दिया । शिखरजी विषयक चन्देका भी प्रयत्न किया गया, परन्तु यहांके धनाढ्य सेठ मोहनलालजीकी माताने कुछ भी देना स्वीकार नहीं किया, इससे वह प्रयत्न फलीभूत नहीं हो सका ।

मुकुरचंद ।

पलवल—चिठ्ठी गुमनामकी आई है । आप लिखते हैं कि, यहांके कोई २ जैनी सुरापान करने लगे हैं । यद्यपि हमें विश्वास नहीं होता कि, जैन कुलमें उत्पन्न होकर कोई भी पुरुष इस राक्षसीसे स्नेह रखता होगा । तथापि पलवलके पंचमहाशयोंको हम सचेत करते हैं कि, वे युक्तिपूर्वक अनुसधान करके उन मद्यसेवी, जैनजातिके कलंक रूप दुष्टोंको अवश्य दण्डित करें ।

जयपुर—ज्येष्ठशुक्ल १४, और आषाढ़ कृष्णा १४ को २ पाक्षिक सभाएं हुई । धर्मोन्नति और शिखरजी विषयक व्याख्यान हुए । भाई रंगलालजीने अपनी बहिनका विवाह जैनपद्धति अनुसार किया । और विद्यादानमें ५) रु. प्रदान किये ।

लालचन्दजी पाटणीकी चिठीका उत्तर ।

महाशय ! रिपोर्टके सफा २८ में साफ लिखा है कि, अंग्रेजीकी पहिलीमें ७, दूसरीमें ३, और हाईस्कूलमें पढ़नेवाले २ लड़कोंने परीक्षा दी और पास हुए । इसीसे आपको विदित हुआ होगा कि, ये उन्हीं कक्षाओंके विद्यार्थी हैं । वर्तमानमें बोर्डिंगका कार्य चलानेके लिये स्थानीय मेम्बरोंका प्रबंध किया गया था, यदि प्रबंधकारिणी सभाकी सम्मति होगी तो अन्य स्थानोंके भी मेम्बर चुने जावेंगे । आप लोगोंने चन्देके बाबत सुप्रिंटेंडेंटको उत्तर दिया था कि, कल देवेंगे और सिंघई भूरेसाहु खेमचन्दजीने कहा था कि, जिस वक्त जाने लगो, लेते जाना । सिंघईजीके चंदेकी वसूलीमें सन्देह न जान, वैसा कह दिया था । परन्तु स्थानीय पंचायतीके झगड़ेके कारण चंदेकी वसूलीमें विघ्न हुआ । कई बार पत्र देनेपर भी एक दो महाशयोंके सिवाय किसीने भी उत्तर नहीं दिया । क्या यही सभासद बननेका उत्साह है ? आप अब भी पंचायतीमें शान्ति उत्पन्न करके चन्दा भिजवानेका प्रबंध करें, तो उत्तम हो ।

नारायणराव–मंत्री ।

पिपरिया (जबलपुर) में कार्यवशात् एकवार वहां गया था । दरयाफ्त करनेसे मालूम हुआ कि यहांके जैनी भाइयोंमें विलायतीशक्करका विलकुल प्रबंध नहीं है । कई स्थानोंके अन्य मतावलम्बियोंने भी इस भ्रष्ट चीनीको कृष्णमुख कर दिया है लेकिन यहांके भाई जैनी होकर भी इस अमृतकी नाईं ग्रहण करते हैं । आशा है कि, गढ़ापरगनाके पिपरिया बेलखेड़ा आदि स्थानोंके भाई हमारी प्रार्थनापर अवश्य ध्यान देंगे । पूरनचंद तारादेही ।

ईडर—यहांकी जैनपाठशालामें विद्यार्थियोंकी संख्या ५० हैं । रत्नकरण्डश्रावकाचार, द्रव्यसंग्रह और अमरकोशका अभ्यास करते हैं । सुयोग्य शिक्षककी आवश्यकता है । सं० ६१ और ६२ दो वर्षमें ३८९७)॥। की प्राप्ति व्याज और चंदे आदिसे हुई है, और शिक्षकके वेतन वा इतर सामानमें ९६२)॥। खर्च हुआ है । ४२७॥।) सिलक मौजूद है । पूनमचंद साकलचंद ।

उपदेशकको रिपोर्ट—हरदा, खिलाधार, खातागांव, अंजनास, नेमावर, भादोगांव, हुशंगाबादमें पं० कस्तूरचन्दजी उपदेशक मालवा प्रान्तिकसभाका दौरा हुआ । इन सात ग्रामोंमें ३५० घर जैनियोंके हैं । सब स्थानोंमें व्याख्यान दिये गये । खातेगांवमें ८२५) रु० अंजनासमें १२५) चंदा कराके बम्बई भिजवा दिया । खिलेधारके स्वदेशी आन्दोलनसे भयभीत राजासाहबने व्याख्यान देनेकी आज्ञा नहीं दी । भादोंगांवमें १०,१५ भाइयोंने चिलम पीना छोड़ दिया । होशंगाबाद और हरदेके भाइयोंने शिखरजीके बाबत चन्दा करके बाला २ भेजनेका वचन दिया है । खातागांवसे ७) रु. की और होशंगाबादसे २) की आमदनी उपदेशक फंडमें हुई । हजारीलाल मंत्री–उपदेशक भंडार ।

रायपुर—सरूपनगर जिला आगरामें २, थरौआ जिला एटामें २, हरीकी गंडी जिला आगरामें २, धतिगामें २, आवागढ़में १, और वडगांमें १, विवाह जैनपद्धति अनुसार हुआ । मोतीलालजी ब्रह्मचारी-

का यहां चातुर्मास हुआ है । आप धर्मका अच्छा प्रभाव बढा रहे हैं । आपकी बीमारीकी हालतमें पंचोंने ८ प्रति शास्त्रजीको छीन ली है । ऐसा नहीं चाहिये । हिम्मतपुर (आगरा) में १ मंदिर अधवना पड़ा है, रुपये नहीं है । यही हाल सरूपनगर पोष्ट अहारनका है । जैनी भाइयोंको सहायता करना चाहिये । बाबूलाल ।

विविध समाचार ।

सज्जनकी मृत्यु—खेद है कि, जालना निवासी शेठ ठाकुरदासजी बाकलीवालका गत श्रावण सुदी १ को स्वर्गवास हो गया । आप बड़े धर्मात्मा थे । अभी श्री सम्मेदशिखरजीकी पैरवीको गये थे । वहींसे बीमार होकर आप आये, और कालके गालमें जा पडे । अफसोस ।

विचित्र वृक्ष-आशांटी द्वीपमे एक प्रकारका झाड़ है, जिसमेंसे मक्खन निकलता है । वह दूधके मक्खन सरीखा होता है और वर्ष भर रक्खा रहै, तो भी नहीं सड़ता है ।

ट्रान्सवालमें पूंजी—ट्रान्सवालमें जो सोनेकी तथा दूसरी धातुओंकी खानिया हैं, उनके कारखानोंमें २९ करोड़ पौंडकी पूंजी लगी हुई है । इस पूंजीमें प्रतिशत ८९ पौंड इंग्लैंडवालोंका है । व्यापार इसे कहते हैं ।

सोना-पृथ्वीभरकी सम्पूर्ण खानियोंमेंसे सन् १९०६ में ८ करोड़ २० लाख पौंड कीमतका सोना निकला । सोना इतना अधिक निकलता है, तो भी बिलायती व्यापारियोंकी चालाकीसे वह महँगा ही होता जाता है ।

अभूतपूर्वदान-मि० राक फेलर नामके एक अमेरिकन साहूकारने अमेरिकाके शिक्षाखातेमें गरीब विद्यार्थियोंकी शिक्षाके लिये नौ करोड़ साठ लाख रुपयेका दान दिया है । जिस देशके लोग विद्याकी कीमत जानते हैं, वहां ऐसे ही दान किये जाते हैं ।

बारह पौंडका दावा-डबलिन शहरकी चार कोर्टोंमें १२ पौंडका एक दावा क्रम क्रमसे चलाया गया, और उसमें खर्च ८००० पौंड हुआ ! हमारे हिन्दुस्थानमें भी इस किस्मके सैकड़ों मुकद्दमें प्रतिवर्ष होते हैं ।

विद्याप्रेम—महाराणी अलैकजेंड्रा प्रतिदिन सवेरेके दो घंटे केवल लिखनेमें खर्च करती हैं और हमारे यहांकी धनिक स्त्रियां वही समय खुर्राटे लगानेमें सफल करती हैं ।

बादशाहके नाती—प्रिंस आफ वेल्सके बड़े पुत्र इंग्लैंडकी जहाजी स्कूलमें भरती हुए हैं । उन्हें वहांके दूसरे विद्यार्थियोंकी नाई सबेरेके ७ बजेसे रात्रिके ९॥ बजे तक सब काम टाइमटेबिलके अनुसार करना पडते हैं । वे राजकुलके हैं, ऐसा समझके उन्हें किसी प्रकारकी माफी नहीं दी जाती । इधर हमारे यहाके धनवानोंके लडके या तो सारा दिन ऐश आराममें पूरा करते हैं, या थोड़ा बहुत पढते हैं, तो शिक्षककी प्रार्थना तथा प्रेमसे पढते हैं । अब कहिये, बादशाहके नाती वे हुए कि, ये ।

एकन्नीका सिक्का—निकेल धातुकी एकन्नी चलने लगी । बम्बईकी टकसालमें वह प्रतिदिन एक लाख बीस हजार तयार होती है । इसमें सरकारको ७५) सैकड़ेसे भी अधिक मुनाफा मिलता है । तुगलक बादशाहके चमडेके सिक्केके सिवाय आजतक किसी भी सिक्केमें इतना मुनाफा नहीं हुआ । इसे भी एक प्रकारका अप्रगट टैक्स समझना चाहिये ।

जैनप्रेस—खबर है कि, जैनगजटके लिये एक प्रेस शीघ्र ही खरीदा जानेवाला है । यदि ऐसा हुआ, तो जैनगजटकी दशा बहुत अच्छी हो जावेगी ।

परीक्षा—जैनबोर्डिंगस्कूल बम्बईकी रिलीजस क्लासकी परीक्षा ता० १८ आगस्तको हो गई । परीक्षक बाबू शीतलप्रसादजी थे । आलापपद्धति, तत्त्वार्थसूत्र, पुरुषार्थसिद्ध्युपाय, और द्रव्यसंग्रह इन चार ग्रंथोंमें परीक्षा हुई ।

नवीन जैनग्रन्थ—तझौरके "टी. एस. कुप्पूस्वामी शास्त्री" जैन साहित्यसे अत्यधिक प्रेम रखते हैं । उनके द्वारा पहले गद्यचिंतामणि, जीवंधरचम्पू, और क्षत्रचूडामणि ये तीन जैनकाव्य छपकर प्रकाशित हो चुके हैं । अबकी बार उन्होंने श्रीगुणभद्राचार्य विरचित **जीवंधरचरित्र** नामका ग्रन्थ प्रकाशित किया है । यह ग्रन्थ उन्होंने "दानवीर शेठ माणिकचन्द हीराचन्द" को समर्पण किया है । उपर्युक्त चारों ग्रन्थोंमें श्रीजीवंधर स्वामीकी ही कथा है, यह विलक्षणता है । शास्त्रीजीको यह कथा बड़ी ही रुचिकर हुई है ।

साधुओंकी गिनती—सन् १९०१ की मर्दुमशुमारीमें बतलाया है कि, भारतवर्षमें ५२ लाख साधु भीख मांगनेवाले हैं । परन्तु कह नहीं सकते, इनमें सच्चे साधु कितने हैं । हिन्दू जाति इनके लिये दो करोड़ रु० माहवारी खर्च करती है । यदि यही दान विद्योन्नति अथवा व्यापारोन्नतिमें किया जावे, तो देशको कितना बड़ा लाभ हो, और ये निकम्मे साधू भी मिहनत करके पेट भरने लग जावें ।

विधवाविवाहनिषेध—दक्षिणमहाराष्ट्रजैन सभाके महामंत्री साहबने मराठी जिनविजयमें प्रकाशित कर दिया कि, सभा इस विषयको सर्वथा पसन्द नहीं करती है । मैं भी इसका विरोधी हूं ।

भूल संशोधन—गत २० वें अंकमें देहलीकी कन्यापाठशाला सम्बन्धी लेखमें सभापति साहबका नाम भूलसे लाला दमड़ीलाल छप गया है । पाठक उसे लाला धमंडीलालजी पढें ।

सुशीला उपन्यास—इस अंकमें कारणवश सुशीलाका फार्म नहीं निकाला जा सका ।

आच्छादनाके नकशे—कानपुरकी जैन बालसभाने ५४ आच्छादना दोषोंके रंगीन नकशे छपाये हैं । जिन्हें जरूरत हो, आध आनेका टिकट भेजकर उक्त सभाके उपमंत्री लाला परमेश्वरीदाससे मंगा लेवें ।

बम्बईमें सभा—ता० १२ आगस्तको भोईवाडेके मंदिरमें एक सभा हुई । शेठ गुरुमुखराय सुखानंदजी उसके सभापति हुए । बाबू शीतलप्रसादजीने श्रीसम्मेदशिखरजीपर २८ अगस्तको उपस्थित होनेके लिये प्रतिनिधियोंका चुनाव करनेका प्रस्ताव किया । क्योंकि हजारीबागके डिपुटी कमिश्नरने उनकी नामावली तारद्वारा मंगाई थी । तदनुसार शेठ माणिकचन्द हीराचन्दजी, बाबू फूलचन्दजी पाटणी, बाबूशीतलप्रसादजी, पं जवाहरलालजी शास्त्री ये चार महाशय प्रतिनिधि नियत किये गये । और उनकी सूचना तारद्वारा दे दी गई ।

शोकसम्वाद ।

बडेही शोककी बात है कि बम्बईके सुप्रसिद्ध चुन्नीलालजी जवेरचन्दजीका कल ता० २४-८-०७ के सबेरे स्वर्गवास हो गया । आप दिगम्बरजैनप्रान्तिकसभा बम्बईके एक स्तंभरूप, तीर्थक्षेत्रकमेटीके सूत्रधार तथा अग्रनेता थे । आप जैसे साहसी और धर्मप्रेमी पुरुष हमारे समाजमें बहुत थोड़े हैं । कई महीनेसे आपका स्वास्थ्य बिगड़ा हुआ था, परन्तु उसकी परवा न करके अभी आप श्रीसम्मेदशिखरजीकी पैरवीके लिये गये थे । वहां आपने बड़े उत्साह तथा साहससे अपने कर्तव्योंका पालन किया था । वहींसे आप बीमार आये और आखिर अपने कुटुम्बियों मित्रवर्गों और सारे जैनियोंको दुःखी करके स्वर्गवासकर गये । आपकी आयु केवल ४० वर्षकी थी । अन्त समय आप पांच हजार रुपये धर्मार्थ अर्पण कर गये हैं । आपके कुटुम्बियोंके साथ हमारी सहानुभूति है । श्रीजिनेन्द्र देव आपकी आत्माको सद्गति प्रदान करें दानवीर शेठ माणिकचन्दजीके आप साले थे ।

दशलाक्षणि पर्वके लिये
जैनग्रन्थोंकी तयारी।
और कम मूल्य।

प्यारे धर्मात्मा भाइयो! भादोंका पवित्र महिना सन्मुख आ गया है। इन दिनोंमें प्रत्येक जैनीकी रुचि धर्म साधनकी ओर होती है। परन्तु सच्चा मार्ग दिखलानेवाले शुद्ध सुन्दर और सस्ते ग्रन्थोंके बिना धर्मसाधना ठीक नहीं हो सकती। इस लिये हमने रातदिन परिश्रम करके खास इसी पर्वके लिये अनेक ग्रन्थ तयार कराये हैं। अभीतक पूजन पाठके जितने ग्रन्थ छपे थे, वे बहुत अशुद्ध थे और अशुद्ध पाठके पढनेमें पूजन अर्चनेका जितना फल मिलना चाहिये, उतना नहीं मिलता तथा दोष भी लगता है। इसकारण अबकी बार अनेक भाइयोंके आग्रहसे हमने पूजन विषयके निम्नलिखित तीन चार ग्रन्थ निर्णयसागर प्रेसमें बहुत ही सुंदर सुपाठ्य तयार कराये है। अत जिन भाइयोंको जरूरत हो, उन्हें एकवार मगाकर अवश्य ही दर्शन करना चाहिये, और पवित्र दिवसोंमें इनका पाठकर पुण्य उपार्जन करना चाहिये। भादों सुदी १४ तक भाषापूजा सग्रह १), चौबीसी पाठ १), दशलक्षण पूजा भाषार्थ सहित ।), तत्वार्थ सूत्रकी बालबोधनी टीका ॥।), भूधर जैन शतक=)॥ और जैनपदसंग्रह (दौलत विलास) ।=) ये साढतीन रुपयेकी, छह पुस्तकें एक साथ मगानेवालेको सिर्फ ३॥।) मे भेज देंगे। अथवा तत्वार्थसूत्रकी बालबोधनी टीकाको छोडकर उक्त पुस्तकें लेनेवालेको बालबोधनी टीका मुफ्तमें उपहार स्वरूप भेजी जावेगी। डाकका खर्च ग्राहकोंको देना होगा। भादोंके बाद यह नियम नहीं रहेगा।

भाषापूजासंग्रह।

इस ग्रन्थमें पहले संस्कृत भाषा नित्यनियमपूजाके (जो अलग भी पाँच आनेमें मिलती है) सिवाय भाषा देवपूजा, सरस्वती पूजा, गुरुपूजा, अकृत्रिम चैत्यालयोंकी पूजा, सिद्धचक्रपूजा, पंचमेरुपूजा, नंदीश्वरपूजा, सोलह कारणपूजा, दशलक्षणधर्मपूजा, रत्नत्रयपूजा, निर्वाणक्षेत्रपूजा, वृन्दावनकृत समुच्चयपूजा, रामचन्द्रकृत समुच्चयपूजा, चन्द्रप्रभ पूजा, शांतिजिनपूजा, पार्श्वनाथपूजा, और महावीरपूजाका संग्रह है। इसके सिवाय एक अपूर्व ग्रन्थ जिसका किसीने कभी नाम न सुना होगा, इसके साथ लगाया है। यह ग्रन्थ कविवर हरिचन्द्रकृत पंचकल्याणमहामहोत्सव है। नानाप्रकारके छंदोंमें जमक और अनुप्रास मिलाकर भगवानके पाँचों कल्याणका इसमें बडी उत्तमतासे वर्णन किया है। यमक मिलानेमें इन्होंने कविवर वृन्दावनजीका भी नम्बर ले लिया है। इस पुस्तकमें प्रत्येक मंत्र आह्वानन स्थापनादि तथा ओंचली टेक आदि सब जगह शुद्धता पूर्वक लिखी गई हैं। अष्टकोंमें जल सुगंध आदि प्रत्येक पदमें सब जगह ओंचली लगाई गई है, जिसमें पत्र लौटनेका वारंवार कष्ट न उठाना पडे। पोथी साइजमें पुष्ट कागजोंपर बडे अक्षरोंमें ऐसी सुन्दरतासे यह ग्रन्थ तयार हुआ है कि, आप दर्शन करते ही प्रसन्न हो जावेंगे। मूल्य सिर्फ १) है। प्रत्येक मन्दिरमें यह पोथी रखनी चाहिये।

कविवृन्दावनकृतचौवीसीपाठ।

यह ग्रन्थ कई बार छपके बिक गया, परन्तु एक भी वार शुद्ध नहीं छपा। छपनेवालोंने इसकी कविताकी बडी दुर्दशा की। यह देख अबकी वार इसे हमने इच्छा न रहते भी भाइयोंके उपकारके लिये तयार कराया है। शुद्धताके विषयमें इतनेसे ही समझ लीजिये कि, खास कविवर वृन्दावनजीके हाथकी लिखी हुई प्रथम पुस्तकपरसे जो हमें काशीमें उन्हींके भंडारसे प्राप्त हुई थी, इसे छपाया है। कागज पुष्ट और छपाई निर्णयसागरकी है। इसमें भी प्रत्येक अष्टकमें जगह २ ओंचली और प्रत्येक पदमें ॐ ह्रीं आदि शुद्ध मंत्र लगाये गये हैं, जिससे पूजा करनेवालोंका यथेष्ट फलकी प्राप्ति हो। ऐसा करनेसे यह ग्रन्थ पहले आकारसे बडा हो गया है। इसकी उत्तमताके सामने १) मूल्य कुछ चीज नहीं है। पोथी साइजमें यह भी बडी सुंदरतासे छपा है।

सं० दशलक्षणपूजा प्राकृत जयमाला और अर्थ सहित।

दशलक्षण पर्वमें तत्त्वार्थसूत्रजीके पहले यह बांची जाती है, और एक धर्मका वर्णन प्रतिदिन सुनाया जाता है। दशलक्षणव्रत करनेवाले इसकी एक एक जयमाला रोज बांचते हैं। लोग प्राकृत नहीं जानते हैं और प्रतियां सब जगह शुद्ध नहीं मिल सकती हैं। इसलिये उन्हें इसके पढनेमें बडी कठिनाई होती है। सो इसके छप जानेसे यह कष्ट अब नहीं होगा। पंडित लालारामजीने इसकी टीका की है। और सब छोटे बडे इसे बांचकर अर्थ समझ सकेंगे। प्रत्येक मंदिरजीमें इसकी एक एक प्रति रहनी चाहिये। मूल्य मात्र ।)

तत्त्वार्थसूत्रकी बालबोधिनी भाषाटीका।

तत्त्वार्थसूत्र हम लोगोंका परम पूज्य और मान्य ग्रन्थ है। इसे प्रत्येक जैनी पढना पढाना अपना परम धर्म समझते हैं। इसके एकबारके पाठ मात्रसे एक उपवासका फल होता है। यह ग्रन्थ जैसा उपयोगी है और जैनधर्मके पदार्थोंका अटूट समुद्र जिस प्रकार इसमें भरकर गागरमें सागरकी कहावत सिद्ध की गई है, उसके कहनेकी जरूरत नहीं है। इसकी प्रशंसा प्रगट करनेके लिये इस ग्रंथपर जो अनेक टीकायें बनाई गई है, वे बस हैं। परन्तु खेद है कि, अभीतक इसकी कोई ऐसी टीका छपकर प्रकाशित नहीं हुई, जो पढनेवाले विद्यार्थियोंकी समझमें सहजमें ही आ सके। अभीतक, जो टीकायें छपी हैं, वे विशेष ज्ञानियोंके समझने योग्य हैं, बालकोंके लिये जिस क्रमसे होनी चाहिये, उस क्रमसे नहीं हैं। इस अभावकी पूर्तिके लिये हमने यह भाषाटीका तयार की है। यह टीका दशलक्षणोंके दश दिनमें बांचनेके लिये भी बडे कामकी है। साधारण भाई भी इससे सूत्रोंका अर्थ बांचकर समझ सकते हैं। रत्नकरंडके समान इसमें भी पद पदका अर्थ किया गया है। और विशेष बातें भावार्थ तथा टीकामें लिखी गयी हैं। इसको एक बार पढ लेनेसे फिर सर्वार्थसिद्धि आदि बडी टीकाओंके पढनेमें मति हो जावेगी। यह टीका विद्यार्थियोंके बडे ही कामकी है। इसे बिना गुरुके पढकर विद्यार्थी बडी सुगमतासे परीक्षा दे सकता है। जहांतक बना है, प्रत्येक पदार्थके लक्षण व स्वरूप इसमें संक्षेपतासे लिखे गये हैं। मूल्य मात्र १२ आने रक्खा गया है। पाठशालाओंके प्रबंधकर्ताओंको नमूनेके लिये इसकी एक एक प्रति जरूर मंगानी चाहिये।

मिलनेका पता—पन्नालालजैन,
मालिक—जैनग्रंथरत्नाकरकार्यालय,
पो० गिरगांव, बम्बई।

• भक्तामरस्तोत्र।
अन्वय, हिन्दी अर्थ भावार्थ और कविवर भाई नाथूराम प्रेमी कृत नवीन भाषा पद्यानुवाद सहित।

इसमें रत्नकरंडके समान पहिले प्रत्येक श्लोकका अन्वयानुगत पदार्थ लिखकर फिर प्रत्येकका भावार्थ लिखा है। पश्चात् हरिगीतिका और नरेन्द्र छन्दमें उसकी सुन्दर कविता बनाई गई है, जिसमें मूलका कोई भी भाग नहीं छोडा है। यहां उदाहरणार्थ आठवें श्लोकका एकही पद्य हम नकल करते हैं,—

जिननाथ अस जिय जानिके, यह आपकी विरदावली। है समझ थोरी तऊ प्रारंभ, करत हों सु उतावली॥ सो हरहिगी मन सज्जननके, तुव प्रभावहिसों भली। जलबिन्दु ज्यों परि कमल दलपै, दुति धरै मुकताफली॥ ८॥

टिप्पणीमें अनेक प्रतियोंसे इकट्ठे करके पाठान्तर और कठिन शब्दोंके अर्थ दिये हैं। श्रीमानतुंग महाराजका चरित्र भी दिया गया है। अभी तक ऐसी कोई भी टीका नहीं छपी। पाठशालाओंके विद्यार्थियोंके लिये यह बडे कामकी चीज है। मूल्य मात्र ।) रक्खा है।

भूधरजैनशतक।

सबके कंठ करने योग्य अतिशय सरल और हृदयद्रावक कविता भूधरशतक सरीखी दूसरी नहीं है। यह भूधरदासजीकी सम्पूर्ण कविताका चुना हुआ एक सार है। इतने सस्ते मूल्यमें यह कभी नहीं बिका। निर्णयसागरमें टिप्पणी सहित छपा है। मंगानेमें शीघ्रता कीजिये। मूल्य ढाई आने।

अलंकार चिन्तामणि।

अभी तक यह ग्रन्थ सर्वथा लुप्त था। शोलापुरके शेठ सखारामजीने इसका जीर्णोद्धार कराया है। जैनियोंका यह सबसे पहला अलंकारका ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। जैन साहित्यसागर कितना विस्तीर्ण है, यह इस ग्रन्थके देखे बिना नहीं जाना जा सकता। सैकडो अश्रुतपूर्व प्राचीन ग्रन्थोंके इसमें उदाहरण दिये है। संस्कृत साहित्य प्रेमियोंको यह ग्रन्थ अवश्य देखना चाहिये। मूल्य ॥।)

और भी

बम्बई, कोल्हापुर, तंजौर आदि स्थानोंकी छपी हुई सब प्रकारकी जैन पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं। सूचीपत्र मगाइये।

शुद्ध कश्मीरी केसर
अब नहीं मिलेगी

भाइयो! नई केसर अब कार्तिकमें आवेगी। काश्मीरमें पुरानी केसर अब नहीं रही। जो है वह नकली है। रंग देकर बनाई हुई है। भादोंके लिये थोडासा संग्रह और है सो जिनको चाहिये शीघ्र मंगा लेवें भादोंबाद इसका बेचना बंद कर दिया जावेगा। क्योंकि असली केसर प्राप्त होना कठिन है।

भाइयोंकादास—पन्नालाल जैन.

"कर्नाटक" प्रेस बम्बई।

Registered No. 8 288.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य [illegible] २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमे व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लोटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

जैनमित्र

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जबाबीकार्ड अथवा टिकिट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
दूसरा भोईवाड़ा पो० कालबादवी
बम्बई

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

वर्ष ८ वां] भाद्रपद शुक्ला २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द। ता० ९ सितम्बर सन् १९०७ ईस्वी। [अंक २२ वां।

श्रीदशलाक्षणिक पर्वके लिये व्रतविधान।

भादों सुदी ४ बुधवार-दशलक्षणका पाटास्थापन।

भादों सुदी ५ गुरु० दशलाक्षणिक पचमेरु तथा उज वाली पचमीका उपवास और दशलाक्षण व्रतवालोंको चौथ पांचेका उपवास।

भादों सुदी ७ शनिवार-निर्दोष सप्तमी व्रतका उपवास।

भादों सुदी ८ रविवार-पोसा आठेका उपवास और पोसा। तथा सोलहकारण दशलक्षण व्रतवालोंको सातें आठेका बेला।

भादों सुदी ९ सोमवार-मेरुजीका कलशाभिषेक, और मेरुजी उठाना।

भादों सुदी १० मगल०-सुगन्धदशमीव्रतका उपवास, धूप खेवना, अनन्तव्रतका पाटा स्थापन, और अनन्तव्रतका उपवास (उपरांत ग्यारस)

भादों सुदी ११ बुधवार-दूधाबारस व्रतका उपवास (उपरांत बारस)

भादों सुदी १३ गुरुवार-रत्नत्रयव्रत तेलाका उपवास।

भादों सुदी १४ शुक्रवार-दशलक्षणका कलशाभिषेक।

भादों सुदी १५ शनि०—रत्नत्रयका कलशाभिषेक।

आसोज बदी १ रवि०-सोलहकारणका कलशाभिषेक और क्षमावणीका उत्सव।

प्रतिदिनके कर्तव्य।

प्रात काल ५ बजे उठकर सामायिक प्रतिक्रमण आदि करके भगवानके मंदिरमें आकर पूजाका प्रारम्भ करना चाहिये।

पूजनक्रम—पचामृताभिषेक और सहस्रनामका अर्घावतारण करके देवगुरुशास्त्र, विद्यमानविहरमान, तीस चौबीसी अकृत्रिमचैत्यालय सिद्ध सोलहकारण, दशलाक्षण स्वयंभू पंचमेरु अनन्तव्रत, रत्नत्रय और मन्दिरके मूल नायककी पूजा करनी चाहिये। फिर विशेष व्रतविधानोंकी पूजा करके निर्वाण क्षेत्रोंकी पूजा और पचपरमेष्ठीका अर्घावतारण करके शान्ति विसर्जन करना चाहिये।

पूजन समाप्त हो चुकनेपर शास्त्रजी विराजमान करना चाहिये। उस समय शास्त्रजीके सम्मुख श्रुतस्कधपूजा करके प्रतिदिन दशलक्षण धर्मोंमेसे एक २ धर्मकी व्याख्या और तत्त्वार्थसूत्रका एक २ अध्याय उपस्थित भाइयोंमेंसे जो सबसे अधिक विद्वान् हो, उसके मुंहसे अर्थसहित सुनना चाहिये।

मध्यान्हको पुष्पपूजा करके मंडलविधानपूजा करनेकी विधि है। उसमें पहले सिद्धपूजा (नवदेवताओंकी) करनेकी आज्ञा है। जब तक विधान सम्पूर्ण न हो जावे, तब तक स्थापनाको उठानी नहीं चाहिये। मंडलकी प्रत्येक पूजाकी स्थापना प्रत्येक कोठेमें अथवा मध्यके कोठेमें करनी चाहिये। और पूजाकी सामिग्री भी मंडलके प्रत्येक कोठेमें चढ़ाना चाहिये। यदि कारणवश ऐसा न [illegible], तो एक २ फल अथवा एक २ [illegible] तो चढ़ाना ही चाहिये। विधानके अन्तमें शान्ति विसर्जन पाठ पढ़के कलशाभिषेक करना चाहिये।

सायकालमें दीपककी आरती उतारकर धूपधूज करनी चाहिये। और फिर शास्त्र सभामें धर्मोपदेश सुनना सुनाना चाहिये। इसके पश्चात जातिधर्म और विद्याकी उन्नति सम्बन्धी विचार अथवा सभादिक करना चाहिये।

आसोज बदी १ को रत्नत्रयका कलशाभिषेक करके सम्पूर्ण जैनीभाइयोंको परस्पर मिलकर मनवचनकायपूर्वक अपने वर्ष भरके अपराधोंकी क्षमा मांगना और प्रदान करना चाहिये।

मन्दिरके भंडारका साल भरका हिसाब किताब दुरस्त करके सब भाइयोंको सुना देना चाहिये। यह काम जहां तक हो, पहले कर लेना चाहिये। चतुर्दशीको कलहकारिणी बनाना बडी लज्जाकी बात है।

बम्बई ७-९-०७ } पन्नालालकासलीवाल।

सिर्फ एक एक ग्राहक।

दशलाक्षण महापर्वका मौका है। इन दिनों सबही भाइयोंको धर्मोन्नतिका ख्याल रहता है। हम अपने ग्राहकोंसे प्रार्थना करते हैं कि, यदि वे जैनमित्र से जैनधर्मकी कुछ भी उन्नति समझते हैं, और उसकी तरक्की चाहते हैं, तो इस अंकके साथ जो कार्ड भेजा गया है, उसमें सिर्फ एक एक नवीन ग्राहक का नाम भरकर भेजनेकी कृपा करें। आपलोगोंकी थोडी सी [illegible] सिहनतसे जैनमित्रको एक हजार नवीन ग्राहक मिल सकते हैं। जिससे उसकी दशा बहुत अच्छी हो सकती है। आशा है कि, आप अपने किसी एक पढे लिखे मित्रसे जैनमित्रका ग्राहक बननेके लिये एक बार तो अवश्य ही आग्रह पूर्वक करेंगे। और आपके मित्र २) मात्रके लिये आपकी [illegible] भी नहीं टालेंगे।

मैनेजर जैनमित्र।

क्षमावणीके कार्ड ।

जिन्हें चाहिये, वे चार आने सैकडेके हिसाबसे अयोदशीके पहले २ मंगालेवें । आठ आनेसे कमका वी पी नहीं भेजा जावेगा। जो कम मगावे, वे टिकट डा० म० सहित भेज देवें ।)॥ में ४० कार्ड जाते हैं ।

पन्नालाल जैन, गिरगांव बम्बई ।

उत्तरावली

(भाई नेमीलालजी पोरवारलिखित प्रश्नोंकी ।)

(१) **प्रश्न**—भाद्रपदमें १२, १३ तिथि एक दिनमें आई हैं, जिससे दशलाक्षणी पर्व ९ दिनका करना चाहिये या चौथसे करना चाहिये ?

उत्तर—ऐसी अवस्थामें दशलाक्षणपर्व चतुर्दशीसे प्रारम्भ करना चाहिये ।

(२) **प्रश्न**—अगर तेरस ४ घडी हो और दूसरे दिन चौदस ९ घडी हो, तो चौदसका व्रत किस दिन करना चाहिये ? और ६ घडीकी तिथि जो प्रमाण और व्रत करने योग्य कही गई है, उसका स्वरूप क्या है ?

उत्तर—यदि शुक्रवारको तेरस ४ घडी और शनिवारको चौदस ९ घडी होय, तो चतुर्दशी दो हुई अर्थात् एक शुक्रवारकी और दूसरी शनिवारकी । और जब दो तिथि पडेंगी, तो व्रतमें पूर्व तिथिका ग्रहण करना चाहिये । ६ घडीकी तिथिके बारेमें ऐसा सुनते आये हैं कि, किसी दिन कोई तिथि ५ घडी २५ पलसे कमती होय, तो वह तिथि उससे पहिले दिन और उस दिन उससे आगेकी तिथि माननी चाहिये ।

(३) **प्रश्न**—तत्त्वार्थसूत्र चारों सन्ध्याकालमें बाचना मना है । यह नियम केवल तत्त्वार्थसूत्र ग्रंथके लिये है, या तत्त्वोंके ग्रन्थोंके लिये ? अगर ऐसा है, तो हर एक ग्रंथमें थोडी बहुत तत्त्वचरचा है ही, तो फिर सबका बाचन, अकालाध्ययन हो जावेगा । सामायक प्रतिक्रमण आदि तो त्रिकालसंध्यामें प्रायः आवश्यक बताये हैं और तत्त्वकी चरचा है, फिर अकाल अध्ययन क्यों नहीं होता ?

उत्तर—जब कि सन्ध्याकालमें स्पष्ट रूपसे तत्त्वार्थसूत्र अध्ययनका निषेध है, तब "तत्त्वार्थसूत्र" इस शब्दसे अन्यग्रंथोंका ग्रहण किस प्रकार हो सक्ता है ? और यदि सन्ध्याकालमें अध्ययनसामान्यका निषेध है, तो समस्त ही ग्रन्थ नहीं बाचना चाहिये । अध्ययनसामान्यसे भी सामायकप्रतिक्रमणका निषेध नहीं हो सकता ।

(४) **प्रश्न**—सचित्तका स्वरूप क्या है ? ज्वार, बाजरी आदि शुष्क धान्य वा फल फलावल सचित्त हैं या नहीं ? उसमें उत्पन्न होनेकी सत्ता मौजूद है । हरित भाजी फल आदि अग्निसंस्कारसे अचित्त होता है, या नहीं ? अगर अचित्त होता है, तो हरीके व्रतवालेको खाने योग्य है या नहीं ? पक्कफल पान लौंगादि (हरी) हैं या अचित्त ?

उत्तर—जीवसहितको सचित्त कहते हैं । शुष्कधान्य जिनकी बीज सत्ता है, सचित्त हैं । इसके सिवाय शुष्क, पक्क, तप्त, आम्ल, लवणमिश्रित, तथा यंत्रसे छिन्नभिन्न कदाचित् अचित्त हैं । खाने न खानेके विषयमें व्रतधारियोंसे पूछना चाहिये । उन्होंने जैसा त्याग किया हो, उन्हें वैसा ही निबाहना चाहिये ।



जैनमित्र.

भाद्रपदशुक्ला २ श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४३३
ता० ९ सितम्बर सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

श्रीदशलाक्षणिक पर्वका शुभागमन।

आज द्वितीया है। परसों पंचमीसे श्रीदशलाक्षणिक पर्वका प्रारंभ होगा। हम बडे हर्षके साथ अपने पाठकोंको इस महोत्सवकी बधाई देते हैं। और आशा करते हैं कि, इस जातीय तथा धार्मिक जागृतिके शुभ दिनोंमें वे न केवल बाह्य प्रभावनासे ही अपने जन्मको सफल करेंगे बल्कि अन्तःकरणको भी उत्तमक्षमादि पूज्य धर्मोंकी प्रभावनासे प्रकाशमान करेंगे। क्योंकि ये पवित्र दिन यथार्थमें इसी अभिप्रायसे निर्म्माण किये गये हैं। इस पर्वमें जो कुछ व्रतविधान तथा उत्सव किये जाते हैं, उनको हमने अन्यत्र प्रकाशित किये हैं। परन्तु एक विशेष बातके करनेके लिये पाठकोंसे आग्रह करते हैं। वह यह कि, इन दिनोंमें प्राय समस्त स्त्रीपुरुष मन्दिरमें एकत्र होते हैं, इसलिये एक दो बार सभा करके उन्हें इस बातकी अवश्य याद दिला देवें, कि जैनजातिकी, और जैनधर्मकी पहले क्या दशा थी, और अब क्या है? और इस दशासे उन्नति लाभ करनेके लिये वर्तमान समयके अनुकूल क्या २ साधन हैं। अन्यान्यसाधन आप बतलावें चाहे नहीं, पर कृपाकरके यह उपदेश अवश्य ही देवें कि, प्रत्येक बालक तथा बालिकाको अच्छी तरहसे पढाने लिखानेका जब तक हम प्रयत्न न करेंगे, तब तक हमारी दशा अच्छी नहीं हो सकती। संसारमें सुशिक्षाके बिना किसीकी भी कभी उन्नति नहीं हुई। सुशिक्षा सुखकी जड है।

जैनधर्मके विषयमें मि० हापकीन्सकी सम्मति।

अमेरिकाके मि० हापकीन्स नामक साहबने "भारतके धर्म" नामकी एक पुस्तक लिखी है। उसमें आपने जैनधर्मपर भी कृपा की है। वह कृपा भी ऐसी कि, शायद आज तक किसी भी पाश्चात्य विद्वानने न की होगी। उक्त लेखके अन्तिम वाक्योंसे ही उसकी बानगी प्रगट हो जावेगी। इस लिये हम उन्हें यहां उद्धृत किये देते हैं। जिन्हें पूरा लेख देखना हो, वे सहयोगी सनातनजैनके गत महीनेका अंक मंगाकर देख लें। "जैनी लोग जीवोंके प्रति निःसीम दया प्रगट करते हैं। उनकी इस अत्यन्त आश्चर्यजनक मूर्खता पर बारबार आक्षेप किये जाते हैं......भारतके सम्पूर्ण धर्मोंमें जैनधर्म सबसे थोडा आनन्द देनेवाला है। और स्पष्ट शब्दोंमें पूछो, तो उसके अस्तित्वकी आवश्यकता क्या है? यह बतलानेका कोई केवल हेतु उनके पास नहीं है। जैनियोंने सम्पूर्ण जगत्को एक नैतिक सत्य प्रदान किया है। वह सत्य 'हिंसा नहीं करना' इस प्रकार निषेधार्थक है। परन्तु इस सत्यकी शोध उन्होंने नहीं की है। निस्सन्देह जैनी जिसको एक बडा भारी सत्य मानते हैं, वह दूसरे धर्मोंमें माना जाता था। जैनधर्ममें उसको एक अतिशय बडा स्वरूप दिया गया है। सम्पूर्ण धर्मोंके पालनेवालोंकी अपेक्षा जैनी सबसे काले वर्णके और सुस्त हैं। जैनियोंका साहित्य कुछ वर्णनीय नहीं है। इनके सिवाय जिस धर्मके मुख्य सिद्धान्त ईश्वरका निषेध, मनुष्यपूजाविधान और जीव रक्षण करना हैं। उस धर्मको अस्तित्व पानेका स्वत्व नहीं है। अर्थात् उसका आस्तित्व ही नहीं होना चाहिये। इसी प्रकार विचार विकाशके इतिहासमें कुछ नवीन असर पहुंचावे, ऐसी उसकी धर्मपद्धति भी नहीं है।" बस साहबबहादुरने जैनधर्मपर इसी प्रकारका लेख लिखा है। हम समझते है कि, इसके खडन करनेकी जरूरत नहीं है। क्योंकि वह प्राय. सर्वांग ही अज्ञान और अनुभवशून्यतासे भरा हुआ है। पाठकोंको सिर्फ इतना समझ लेना चाहिये कि, हम लोगोंके प्रमादसे और हमारी कर्तव्यहीनतासे हमारे पवित्र धर्मके विषयमें लोगोंके कैसे बुरे ख्याल जम रहे हैं। क्या हम लोग इस अज्ञानताको मिटानेके लिये कुछ प्रयत्न नहीं कर सकते?

छोटे लाट सा० का उत्तर।

ता २८ को छोटे लाट सरफ्रेजरने जैनियोंके ममोरियलका जो कुछ उत्तर दिया है, वह बाचनेसे यद्यपि "श्री सम्मेदशिखरजीकी पवित्र भूमिपर बंगले नहीं बांधे जावेंगे," ऐसी विश्वास करनेकी इच्छा नहीं होती है। परन्तु उन्होंने जो कहा है कि, "मैं अभी इसका अन्तिम फैसला नहीं सुनाता हू, विचार करके पीछे उत्तर दिया जावेगा" उसपर हममेंसे कुछ लोग सरकारकी न्यायनिष्ठाके वश निराश होना नहीं चाहते। और हम भी नहीं चाहते कि, अभी इसके विषयमें अनुमान प्रमाण लगाकर कुछ निश्चय करें। क्योंकि उस उत्तरके आनेमें भी अब विलम्ब नहीं होगा। लाठ साहबके उत्तरके बडे भारी वाग्जालका सार यह है कि, मैं "मेरा जैनियोंके साथ बहुत स्नेह है। जैनप्रजा बडी राजनिष्ठ है। उनके जीको दुखाना सरकारको कदापि इष्ट नहीं है। परन्तु मैंने जहां तक विचार किया है, मंदिरों तथा खास २ टेकरियोंके अतिरिक्त सारी पर्वतमाला जैनियोंकी पूज्य नहीं है। क्योंकि मै देखता हू कि, जैनी लोग उन्हीं स्थानोंकी पूजा करते हैं। अन्य स्थानोंमें बंगले बननेसे जैनियोंकी पवित्रतामें कुछ हानि नहीं पहुंच सकती। क्योंकि कई स्थान तो इतनी दूर हैं, जो उन्हें अपने मंदिरोंमेंसे दिखलाई भी नहीं दे सकते। इसके सिवाय बहुतसे गांव, तथा संस्थान भी इसी पर्वतमालाके भीतर है। और वहां लोग रहते है, परन्तु उनसे जैनियोंकी धर्मव्यवस्थामें कुछ हानि नहीं पहुंचती। हम लोगोंके ठहरनेके बंगलेका तथा आवागानका भी पहले जैनियोंने विरोध नहीं किया। इस लिये मैं समझता हूं कि, सम्पूर्ण पर्वतको पवित्र माननेकी दलील केवल मात्र आग्रह है। दूसरी बात यह है कि, श्वेताम्बर जैनियोंकी ओरसे जो मानपत्र दिया गया है, उसमें "पार्श्वनाथकी टेकरी" इस प्रकार शब्दका उपयोग किया गया है। परन्तु टेकरी और पर्वत इन दोनों शब्दोंमें क्या फरक है, यह जान लेना चाहिये। टेकरीको पर्वतके साथ जोड़ देना ठीक नहीं है। वह स्थान अनेक टेकरियोंकी एक माला है। तुम्हारे धर्मगुरुओंने सम्पूर्ण पर्वतमेंसे जो सुन्दर टेकरी थी, उसे पसन्द की, यह बडी प्रसन्नताकी बात है। उस टेकरीके किसी भी स्थलमें बंगला वगैरह बननेसे मुझे भी दुःख होगा। परन्तु तुम्हें टेकरीके जमींदारके हकका ख्याल रखना चाहिये और उसका यथोचित बदला देकर अपनी पवित्रता बनाये रखनेके लिये स्थिर प्रबंध कर लेना चाहिये। यह स्थान बहुत रमणीय और सुखप्रद है, इस लिये यहां डिपुटी कमिशनर सा० ने केवल अंग्रेजोंके लिये नहीं, परन्तु सब लोगोंके सुख सुभीतेके लिये सेनेटेरियम बनानेका विचार किया है। और उनकी यह योजना पसन्द करनेलायक है। परंतु मैं तुम्हारे पर्वतकी पवित्रता बनी रहे, इसके साथ सहानुभूति रखता हूं और तुम्हारे पूजन तथा ध्यानके समय तुम्हारा चित्त सांसारिक विषयोंकी ओर आकर्षित हो, यह देखनेके लिये मैं प्रसन्न नहीं हूं।" इसी प्रकार इधर उधर झूलते हुए लाठ साहबने जैनियोंको आशा और निराशाके झूलेमें झुलानेवाली बडी विचित्र खींच दी है। अन्तिम फलके प्रकाशित हो चुकनेपर उसकी ठीक २ विवेचनायें आवेंगी। देखना है कि, जैनी भाइयोंके आने जानेमें तथा तार और पत्र व्यवहारमें जो लगभग पचास साठ हजार रुपयेके खर्च हुआ है। उसका फल क्या यही निकलता है कि, "तुम कुछ भी कहो, हमको जो करना होगा वही करेंगे" अथवा कुछ हृदयको शीतल करनेवाला।

हमारे समाजके पंडित और बाबू।

मुनियोंके संघकी रक्षा करनेके लिये श्रीविष्णुकुमार मुनिने अपने आत्मकल्याणस्वरूप स्वार्थका त्याग करके—चरित्रबंधनको शिथिल करके वामनरूप धारण किया था। श्रीनिकलंकभट्टने डूबते हुए जैनधर्मका उद्धार करनेके लिये अपनी अपेक्षा अपने भाईका जीवित रहना अधिक उपयोग समझके अपना प्यारा शरीर शत्रुओंके हाथ सौंप दिया था। सीसौदिया वंशकी मर्यादा रखनेके लिये अथवा मेवाडराज्यकी मूंछ रखनेके लिये वीरकुलशिरोमणि राणा प्रतापसिंहने स्त्री पुत्रों सहित जंगलमें भूख प्याससे दिन काटे थे, और इटलीके देशभक्त वीर मेजिनीने इटली देशको स्वतंत्र करनेके लिये राज्यपुरुषों द्वारा बारंबार अपमान और कारागारका क्लेश सहन करना कुछ भारी न समझा था। इससे स्पष्ट है कि, समाजकी, धर्मकी, और देशकी भलाईके लिये स्वार्थका त्याग करना पड़ता है, अपने सुखदुःखका, मानापमानका, हानिलाभका और तो क्या समय पड़ने पर प्राणोंका उत्सर्ग भी करना पडता है। परोपकारका व्रत ऐसा ही दुर्धर है। अपने प्राणोंकी अपेक्षा दूसरेके प्राणोंका मूल्य जो अधिक समझते हैं, वे ही इसे धारण कर सकते हैं। बड़े धीर, वीर, क्षमावान्, साहसी, जितेन्द्रिय और उद्यमी पुरुषोंके लिये यह व्रत निर्माण हुआ है।

जैनसमाज, जैनधर्म और जैनीप्रजाकी वर्तमान अवस्था बड़ी ही शोचनीय है। यदि इतिहासके पत्र लौटकर कोई जैनियोंकी प्राचीन अवस्थासे वर्तमान अवस्थाका मिलान करे, और शुद्ध चित्तसे उस पर विचार करे, तो विष्णुकुमारको मुनिसंघकी रक्षा करना जितना आवश्यक समझ पड़ा था, निकलंकदेवको अपना जीवन दे देना जिस कारण उचित प्रतीत हुआ था, मेवाड़ाधिपति प्रतापसिंहने मूल फल खाकर दिन काटना जिस कारण अच्छा समझा था और मेजिनीने जिसकारण अपमान और कारागारकी व्यथा सुखसे सहन की थी, वे सब बल्कि उससे भी अधिक रोमांचकर कारण आज हमारे समाजके धर्मके और देशके साम्हने उपस्थित हैं। हमें मुनिसंघकी रक्षा करना है (बल्कि स्थापना भी करना है), डूबते हुए जैनधर्मको बचाना है, जैन समाजकी तथा जैनधर्मकी मर्यादाको बचाना है और अपने देशको विदेशी हाकिमोंके अत्याचारोंसे बचाकर स्वराज्यके स्वत्व सम्पादन करना है। इसलिये इस समय हमको विष्णुकुमार जैसे महात्माओंकी श्रीनिकलंकभट्ट सरीखे जीवन उत्सर्ग करनेवालोंकी, महाराणाप्रतापसिंह सदृश धीरवीरोंकी और वीर मेजिनी जैसे देशभक्तोंकी आवश्यकता है। ऐसे नररत्नोंके उत्पन्न हुए बिना वर्तमान विपत्तिसे छुटकारा पानेकी आशा करना ऐतिहासिक पाठके विरुद्ध है।

कई वर्षोंके सतत उद्योगसे और जमानेके उलट फेरसे हमारे समाजके अंगोंमें एक प्रकारकी स्फुरणशक्ति सञ्चालित हुई है। जिससे कुछ दिन पहले ऐसा ज्ञान होने लगा था, कि अब जैनसमाजके अग्रसर होनेमें कुछ विलम्ब नहीं है। परन्तु देखते २ वह शक्ति ऐसी क्षीण हुई जाती है कि, फिरसे ओनामासीधंका पाठ प्रारंभ करना पड़ेगा, और अब तकका किया हुआ सब मिट्टीमें मिल जावेगा। खूब अनुशीलन करके निश्चय किया है कि, इसके कारण समाजके नेतागण हैं। शकटके (गाड़ीके) दोनों चक्र जब तक एकसे सुदृढ, सुवृत्त, और सदाचारी न होंगे, तब तक उसका चलना असंभव है। इसी प्रकार समाजका उन्नतिके मार्गमें अग्रसर होना एकसे सुदृढ सुवृत्त और सदाचारी अगुओंके बिना नहीं बन सकता।

यों तो जितने नेता हैं, उनके उतने ही भेद हैं। परन्तु सामान्यतः हमारे समाजके नेताओंके दो भेद हो सकते हैं, एक पंडित और दूसरे बाबू। जो लोग पुरानी रीति भांतिके आचार विचारके अनुयायी तथा कट्टर सम्प्रदायी हैं, उनकी गणना पंडितोंमें करनी चाहिये और जो पश्चिमी शिक्षा दीक्षासे दीक्षित हैं और उसीके अनुसार अपनी उन्नति करना सभव समझते हैं, उनकी गणना बाबुओंमें करनी चाहिये। यद्यपि इन दोनों प्रकारके अगुओंका अन्तिम उद्देश्य "जैनधर्म तथा जैनसमाजकी उन्नति करना" यह एक ही है, परन्तु उद्देश्य साधनके कारणोंमे दोनोंका मतभेद है। लोग समझते हैं कि, किसी भी कार्यके करनेमे मतभेद नहीं होना चाहिये। परन्तु यह विचार ठीक नहीं है। मतभेद होना बुरा नहीं है, वरन प्रस्तुत कार्यसिद्धिके मार्गको अधिक विस्तृत तथा कण्टकरहित करनेवाला है। परन्तु दुर्भाग्यका विषय है कि, शिक्षाकी न्यूनताके कारण इस मतभेदने सर्वनाशका रूप धारण कर लिया है। दोनों ओरके मुखिया इस मतभेदके चक्करमें अपने २ उद्देशको भी भूल गये हैं। और मतभेदको विचारभेदका नहीं किन्तु जैन बौद्ध अथवा हिन्दू मुसलमान जैसे मतभेदका रूप देकर उसे क्लेशकर बना रहे हैं।

प्रत्येक देशकी सभा सुसाइटियोंमें मतभेद है। पार्लीमेंट जैसी महती राजसभा भी मतभेदसे खाली नहीं है। उसमें लिबरल और कंसरवेटिव आदि दलोंकी निरन्तर खटकती है। दूर क्यों जाते हो, इंडियन कांग्रेसको ही देखो न! उसमें भी गरम और नरम दो दल हो गये हैं। राजनैतिक पत्रोंके पढ़नेसे जाना जाता है कि, वे एक दूसरेके कितने कट्टर विरोधी हैं। मतभेद होना कोई शत्रुता नहीं है। एक स्वाभाविक बात है। इसलिये उसके कारण वे लोग अपने उद्देश्यसे न कभी च्युत होते हैं, न उदास होते हैं और न एक दूसरेके अशुभचिंतक बनकर घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं।

मिसेस एनी बिसेंटका एक लेख हमने गतांकमें लिखा था। उसमें जिस प्रकार उन्होंने बतलाया है कि, धर्मभेद होना अनर्थकारी नहीं है किन्तु धर्मांधता होना अनर्थकारी है। उसी प्रकार हमारी समझमें मतभेद बुरा नहीं है, परन्तु उसमें अंधे हो जाना अथवा उसका अनुचित उपयोग करना बुरा है। और उस अनुचित उपयोगके रोकनेसे ही हमारा कल्याण होगा।

अब यह देखना चाहिये कि, हमारे मुखियाओंके द्वारा मतभेदको यह मूल स्वरूप क्यों प्राप्त हुआ है। हमारी समझमें इसमें नीचे लिखे कारण हैं।

१ अहंकार—अहंकार मनुष्यका शत्रु है। इस दुष्टने बड़े २ प्रभावशाली राज्योंको मिट्टीमें मिला दिया है। यदि पेशवा सरकारके प्रतिनिधिके हृदयमें अहंकारबुद्धि उत्पन्न न होती और उसके द्वारा भरतपुरके महाराज सूरजमल आदिकी सम्मतिकी अवमानना तथा भर्त्सना न होती, तो महाराष्ट्र वीरोंका जीता हुआ दिल्लीका सिंहासन मुसलमानोंके हाथ पड़ना कब संभव था? आज किसी पंडित महाशयसे ग्रेज्युएट बाबू लोगोंके विषयमें पूछिये, तो वे उन्हें धर्मशून्य, श्रद्धाहीन, नास्तिक, भ्रष्ट आदि अनेक पदवियोंसे भूषित करके कहेंगे, बेचारे क्या जानें कि, धर्म किस चिड़ियाका नाम है। उन्होंने तो केवल विधवाविवाह एकखानपान, विजातियोंमें विवाह आदिके लिये एसोसियेशन बनाई है। और किसी बाबूसे पंडितोंके विषयमें पूछिये, तो वे कहेंगे, धर्म वर्म चिल्लाके कानकी झिल्लियां फाड़ डालते हैं। बेचारे कुछ पढ़े न लिखे, नियमके शत्रु, नवीनउन्नतिके द्वारोंसे अपरिचित, भला, इनसे क्या उन्नति होगी? एक महाविद्यालय खोल रक्खा है, उससे क्या होगा? यही न कि दश पांच उन्हीं जैसे पंडित बन जावेंगे, जो बीस २ पच्चीस २ रुपयेके कहीं अध्यापक हो जावेंगे। इस तरह एक दूसरेको तुच्छ समझकर आपको विद्वानोंका शिरोमणि समझते हैं। फिर कहिये, ऐसी दशामें दोनोंमें सद्भाव कहांसे उत्पन्न हो? जातिधर्मकी सेवा इस प्रकार अहंकारसे नहीं, किन्तु अपनेको सबका दास समझनेसे हो सकती है। कहते हैं कि, यूरोपमें एक स्वदेशभक्त हो गया है, जो मजदूरों और कृषकोंसे मिलकर उन्हें बड़ा बनाकर अपनी स्वदेशभक्तिके तत्त्व उनके हृदयमें प्रवेश करता था। मुखिया महाशयोंको सोचना चाहिये कि, लोगोंका ध्यान जातिधर्मकी सेवा करनेकी ओर यों ही बहुत कम होता है। इसपर यदि, तुम्हारे अहंकारकी ताड़ना उन्हें सहना पड़ेगी, तो वे किस लिये तुम्हारे समीप खड़े होंगे?

२ पक्षपात—मनुष्य मात्र अपूर्णबुद्धि है। इसलिये संभव है कि, जिस बातको मैं लाभदायक समझ रहा हूं, यथार्थमें हानिकारक हो। ऐसा विचार करके प्रत्येक मनुष्यको दूसरेकी बात सुनना चाहिये। और खूब ध्यानसे सुनना चाहिये। फिर दोनोंपर विचार करके अपनी सम्मति स्थापन करना चाहिये। विद्वानोंका यही सिद्धान्त है। परन्तु यहां उसके सर्वथा विरुद्ध है।

पंडितजी एक बात बहुत ही उचित और मान्य कह रहे होंगे, परन्तु उनके प्रतिपक्षी बाबू उसे सुनेंगे ही नहीं। अथवा सुनकर नाक भौंह सिकोड़ने लगेंगे। इसी प्रकार बाबूसाहबकी सर्वथा उपादेय सम्मति भी पंडितजीके विचारमें हेय जँचेगी। काम पड़ेगा, तो वे उलटे सीधे हेतु देकर उसका खंडन कर देनेमें भी न चूकेंगे। नीतिमें कहा है कि, "शत्रोरपि गुणा वाच्या" अर्थात् शत्रुके भी गुणोंका वर्णन करना चाहिये। परन्तु खेद है कि, संकुचितहृदयके लोग इसके विरुद्ध आचरण करनेहीमें अपनी प्रशंसा समझते हैं। यही पक्षपात है। सामाजिक तथा धार्मिक कार्योंको चौपट करनेवाला यही है। मुखियागणो हम लोग तुम्हारे हाथमें अपनी उन्नति अवनतिका सर्वाधिकार देकर तुम्हें समाजके एक उच्च न्यायासनपर बैठाते हैं। सो क्या इसलिये कि, तुम वहां भी पक्षपातका चश्मा अपनी आंखोंपर चढ़ाये रहना। छिः यदि तुम पक्षपात करते हो, तो याद रक्खो कि, विना प्रयत्नके ही उस सिंहासनसे पतित हो जाओगे। राजाका कर्तव्य है कि, यदि उसका पुत्र भी अपराध करै, तो पक्ष छोड़के उसे दंड देवै। जो राजा पुत्रके पक्षमें पतित हो जाता है, चाहे दूसरोंको उचित दंड भले ही देता हो, पर वह हमारी दृष्टिमें पतित ही है। हम यह नहीं कहते कि, पंडितगण और बाबूगण अपना २ पक्ष छोड देवें। किन्तु यह चाहते है कि, पंडितोंकी बात निष्पक्ष होकर बाबू सुनें और बाबुओंकी पंडित सुनें। पीछे यदि मतभेद हो, तो उसका योग्य रीतिसे खंडन मंडन करें।

३ असहिष्णुता—प्रत्येक बुद्धिमानको विशेषकर मुखियाको सहिष्णु होना चाहिये। यह एक सुन्दर अलंकार है। नीति कहती है कि, "यदि शत्रु भी कुछ अपने विरुद्ध कह रहा हो, तो उतावली मत करो, उसे सुन लो, और सहनकरके विचार करो कि, उसके इस प्रकार कहनेका कारण क्या है। पीछे यदि उचित समझो, तो उसका सरलतासे प्रतीकार करो।" यह बात हमारे मुखियोंमें और शायद उनके अनुयायियोंमें भी नहीं है। किसीने किसी कार्यका विचार अथवा उसका उपक्रम किया और वह शायद उसके प्रतिपक्षीको अनुचित जँचा कि, उसने एक लेख बड़ी लम्बी चौड़ी टीकाके साथ (केवल कार्यकी टीका नहीं, कर्त्ताकी भी) किसी समाचारपत्रमें प्रकाशित कर दिया। जिसमें भी इतनी सहनशीलता कहां कि, टीकाकारने यदि मूर्खताकी है तो हम चुप हो जावें। इधर "सेरपर सवासेर" का हिसाब किताब है। उसी समय उसका और भी बड़ा खंडन करके किसी दूसरे पत्रमें प्रकाशित कर दिया। और मन ही मन यह विचार करके खुश हो लिया कि, हमने भी कैसी खबर ली है? बस हमारे समाजकी सहनशीलताका यही नमूना है। जब सौहार्द रहता है, तब परस्पर बहुत कुछ सहनशीलताका वर्ताव रहता है। एक दूसरेकी कड़ीसे कड़ी आलोचनाएं भी बुरी नहीं लगतीं। परन्तु ज्यों ही इस मतभेद—खैंचताने गला दबाया कि, एक बिन्दुविसर्ग मात्र भी सहन नहीं होता। कभी २ तो यहां तक होता है कि, सीधा और अनुकूल लिखा हुआ भी भ्रमसे अपने पक्षका घातक समझ लिया जाता है और फिर उसपर खंडन मंडन चलाकर "पहाड़ खोदके चूही" निकाली जाती है। इस केशाकेशीका फल कभी २ यह होता है कि, मुखियागण अपने पदका स्तीफा देनेको तयार हो जाते हैं। बल्कि अनेक तो ऐसे मर्म्मच्छेदी वितंडोंसे दुःखी होकर इन कामोंसे सदाके लिये सम्बन्ध छोड देते हैं। हम यह नहीं कहते कि, यह वितंडा अच्छा है। परन्तु यह अवश्य कहेंगे कि, उसको सहन करके अपने पदको छोड देना सच्चे जातिधर्महितैषियोंका कर्तव्य नहीं है। जातिहित देशहितका कार्य इसीलिये तो कठिन है। इसमें मानअपमान सुखदुःख सब एक ओर रख देने पडते हैं। और वितंडा करनेवालोंसे तो कहें ही क्या? उन्हें यह नहीं सूझता कि, हमारा प्रतिपक्षी भी जो कुछ करता है अपने स्वयके लिये नहीं किन्तु जातिहित धर्महितके ख्यालसे ही करता है। यदि उसकी भूल है, तो मीठे शब्दोंमें समझा देनेमें क्या कुछ कष्ट होता है। मीठे शब्दों सरीखा कोई जादू नहीं है। मीठे शब्दोंसे जो काम निकलता है, कठोरतासे उसका शतांश सहस्रांश भी नहीं निकल सकता।

४ छल—इस विषयको लिखते ही हमको दुःख होता है। क्योंकि यह शब्द ही सभ्यसमाजसे बहिष्कृत समझा जाता है। और फिर जातिधर्म सम्बन्धी पुनीत कार्योंमे तो इसकी आवश्यकता ही क्या है? परन्तु क्या किया जावे, लोग धार्मिक सामाजिक संस्थाओंको भी अपनी समझने लगते हैं। और फिर उन्हें उन संस्थाओंको अपने पक्षमें स्थिर रखनेका इतना मोह हो जाता है कि, उसके लिये उन्हें कभी २ छलनीतिसे काम लेना पड़ता है। नियमावलीके नियमोंकी भाषाके प्रस्तावोंकी पाडुलिपि तयार करनेमें, प्रबंधकारिणी कमेटीके चुनावमें, सब्जैक्टकमेटीमें प्रस्ताव पास करानेमें, सभासदोंका कोरम नियत करनेमें, किस नामके लेख लिखनेमें, चन्दा खोलनेमें, अधिवेशनोंकी रिपोर्ट प्रकाशित करनेमें, तथा इनके सिवाय और भी बहुतसे कामोंमे कपटनीतिका प्रयोग किया जाता है। परन्तु ऐसा करना समाज और संस्थाओंके लिये घातक है। जो लोग ऐसा करते हैं, वे समाजके धर्मके और प्रजाके शत्रु हैं। ऐसे कृत्योंसे संस्थाओंकी ओरसे लोगोंका विश्वास हट जाता है। और फिर वह बड़ी कठिनाईसे सम्पादन होता है। हमें प्रगट रूपमें अपने मतके अनुयायी लेख लिखकर तथा उपदेशादि देकर अपनी शक्ति बढ़ानी चाहिये और उसके जोरसे अपने पक्षके अनुकूल प्रस्ताव पास कराना चाहिये। इसी प्रकार हमसे भिन्न विचारवालोंको भी अपना पक्ष प्रबल करना चाहिये। परन्तु लोगोंको धोखा देकर अथवा भुलाकर उनसे अपने अनुकूल हां हां कहला लेना, सर्वथा अन्याय है। इसका फल अच्छा नहीं होता है। सार्वजनिक संस्थाओंके सम्बन्धमें जो कार्य होवें, उनके सब समाचार ठीक समयपर सबके पास पहुंच जाना चाहिये। कोई भी बात गुप्त—अप्रकाशित रखना छल है। एक बार किसी बातका प्रकाशित करना जरूरी न हो, परन्तु यदि पीछेसे उसके विषयमें लोगोंको कुछ शंका हो, तो उसे तत्काल प्रकाशित कर देना चाहिये। जिसमें किसीको भ्रम तथा अविश्वास करनेका अवसर ही नहीं मिलै। गत एक दो वर्षोंमें ऐसे अनेक कार्य हुए हैं, जिनके कारण हमको यह विषय लिखना पडा। मतभेदमें अधताकी वृद्धि करनेमें यह छल प्रधानकारण हुआ है।

अदूरदर्शिता, असूया (ईर्षा), अनुदारता (हृदयकी संकीर्णता), और भ्रातृभावका अभाव आदि बहुतसे कारण बाबू और पंडितगणोंके विरोधमें सहायक हैं। उन सबका वर्णन करनेकी हमारी इच्छा थी, परन्तु लेख बढ जानेके भयसे ऐसा नहीं किया जा सका। अब पंडित और बाबूगणोंकी एकताकी आवश्यकता बतलाकर हम यह लेख समाप्त करेंगे और वारान्तरमें शेष विषयोंपर विचार करेंगे।

अनेक अनुभवी विद्वानोंका मत है कि, अब भारतवर्षकी उन्नति केवल प्राच्य प्रणालीसे अथवा केवल पाश्चिमात्य प्रणालीसे नहीं हो सकती। किन्तु दोनोंके संयोगसे होगी। इसलिये दोनोंके

ज्ञानकी आवश्यकता है । सारांश यह है कि, हमारी उन्नति न केवल पंडितोंसे होगी, और न केवल बाबुओंसे । क्योंकि पंडितगण पाश्चात्य प्रणालीसे अनभिज्ञ है, और बाबूगण धर्मकर्मसे अपरिचित हैं । और उन्नति दोनोंके संयोगके विना नहीं हो सकती । यदि केवल बाबुओंके हाथमें यह काम सौंप दिया जावेगा, तो वे उसका रूप ही परिवर्तन कर डालेंगे और यदि पंडितोंके हाथमें दे दिया जावेगा, तो उनसे कुछ भी न हो सकेगा । यदि बाबूगणोंके पथप्रदर्शक पंडितगण बने रहे, तो वे बहुत कुछ कार्य कर सकते हैं । और यदि पंडितगणोंके चलनेमें बाबुगण सहायता देते रहें, तो वे भी बहुत कर सकते है । परन्तु पृथक् २ कुछ भी नहीं कर सकते । प्रो० जुगमन्दरलालजीने बाबुओंकी ओरसे ठीक ही कहा है कि, "अगर हम लोग पंडितोंकी मददसे एकता प्राप्त नहीं कर सकेंगे, तो समझ लो कि, जैनियोंके दिन हो ही चुके ।" इसी प्रकार यह भी कहना चाहिये कि, "यदि पंडितगण बाबुओंके साथ सद्भाव (मतभेद भले ही हो,) उत्पन्न करके काम नहीं कर सकें, तो जैनधर्मकी उन्नति हो चुकी ।"

प्यारे मुखियाभाइयो ! समयको देखो, अपनी २ ढाई चावलकी खिचडी तुम तो अलग पकाते रहोगे, परन्तु यहा समाज डूबा जाता है । हम सब तुम्हारे ही भरोसे बैठे हैं । यह समय परस्परकी लडाईका नहीं किन्तु काम करनेका है । दोनों एक दूसरेको गले लगाकर, कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण होओ । यदि तुम समाजहित, धर्महितका व्रत ग्रहण करनेमें अपनी शोभा समझते हो, तो अब छोटे बडेका, मान अपमानका, सुख दुःखका ख्याल जीसे निकाल दो और कुछ करके दिखाओ । विष्णुकुमार, निकलंकदेव, प्रतापसिंह आदिके चरित्रोंको पढो और उनका मनन करो । उक्त महात्माओंके चरित्र तुम्हें अपने व्रतमें निश्चल करके तुम्हें उन्नतिका विस्तीर्ण निष्कटक मार्ग बतलानेमें सहायक होंगे । और यदि तुम्हारी स्वार्थपरता तुम्हें ऐसा नहीं करने देती है, तो जाओ । यह परोपकारव्रत तुम जैसे कायर पुरुषोंके लिये नहीं है । तुमसे हम अपनी उन्नतिकी आशा नहीं रखते । जब कभी इस वीरप्रसू रत्नगर्भा भूमिमें अकलंक निकलंक जैसे महात्मा उत्पन्न होंगे । क्योंकि "कालोह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी" है । तब ही हम अपनी व्यथा उन्हें सुनाकर दुःखमोचनकी भिक्षा मांगेंगे ।

नोट—हमारे समाजमें समाचारपत्रोंकी जैसी कुछ बेकदरी है, उससे उम्मेद तो नहीं है कि, जिनके लिये यह गीत गाया जाता है, उनके श्रवणपुटोंको सुननेका अवकाश मिल जावेगा । परन्तु भादोंका महीना है और दशलाक्षणिक महापर्व सन्मुख हो रहा है। शायद हमारी इच्छा पूर्ण हो जावे, इसलिये परिश्रम किया है । विद्यार्थी लोग जैनमित्र अकसर पढते हैं। उन्हें चाहिये कि, वे अपने पडितजीको ऐसे समयपर जब कि, चुटकी दो चुटकी सुघनीसे उनका मस्तिष्क प्रकाशमान हो रहा हो, यह लेख पढके सुना दें, और बाबूलोग पाटलून तथा जूता खोलनेकी अडचनके मारे यह तो हमको विश्वास है कि, मन्दिरमें आते नहीं है । परन्तु बडे बूढोंके डरसे अथवा जाति धर्मके ख्यालसे दशलाक्षणिक पर्वमें शायद एक दो बार आ निकलें, तो हम अपने पाठकोंसे प्रार्थना करते हैं कि, वे यह लेख उनके हाथमें किसी अगरेज पडितका बडा नामी लेख कह कर दे देवें । इस परिश्रमके बदलेमें विद्यार्थियोंको दो चार चटपटे चुटकिले और पाठकोंको एक दो लेख अच्छे लेख सुनानेका विचार है ।

जातिका सेवक—नाथूराम प्रेमी ।

व्यापारका ज्ञान ।

(लेखक—बुद्धूलाल श्रावक देवरीनिवासी ।)

पृथ्वीतलपर जितने देश हैं, उनका जल, पवन, धरती, भाषा, और व्यवहार एकसा नहीं है, भिन्न २ प्रकारका है । इस देशमें जो पदार्थ उत्पन्न होते हैं, वे उस देशमें नहीं होते, और जो २ कला कौशल्य इस देशवासियोंको आते हैं, वे दूसरे देशवालोंको नहीं आते । और प्रसगवशात् मनुष्यको सब ही वस्तुओंकी आवश्यकता होती है । इस लिये यहाकी वस्तुएं वहा और वहांकी यहा लाई जाती है। इसीको व्यापार कहते हैं। व्यापार मनुष्यका जन्मसाथी है । उसके विना आज तक उसका न कभी निर्वाह हुआ है और न कभी आगे होने की आशा है । और मनुष्य जैसे २ सुचतुर होते जाते हैं, तैसे २ उनकी आवश्यकताएं बढती जाती है । अब तक यहां वाफके यन्त्रोंकी आवश्यकता नहीं थी, परन्तु अब खूब हुई है । क्योंकि रेलगाडी मिलें और छापेखाने चलानेके लिये वे पहिले चाहना पडते है और उनके (वाष्पयंत्रोंके) तयार करनेके लिये लोहा, कोयला, और शिल्पज्ञान आवश्यक है । वह इग्लेंडमें विशेष है, इससे वे यंत्र वहां ही अच्छे बनते हैं । अधुना भारतमें नहीं होते । इस लिये उन्हें इग्लेंडसे ही यहां लाना चाहिये, और आते भी है । इसी प्रकारसे कपास, रेशम, आदि पदार्थ भारतवर्षमें जैसे अच्छे होते हैं वैसे, विलायतमें नहीं होते । अतः वे यहासे विलायतको जाते है । यही सब व्यापारका स्वरूप है ।

एकमार्गी मनुष्य व्यापारके कामका नहीं है, चार-जरबी होना चाहिये । उसे सारे संसारका ज्ञान होना अवश्य है । वर्तमानमें कौन पदार्थ कहा महगा विकता है, वह सस्ता कहां है, किस जरियेसे खरीदनेमें वह सस्ता पडेगा, किस मार्गसे किस प्रकारसे लानेमें खर्च कम लगेगा, ये सब बातें उसे भले प्रकार जानना चाहिये । तब ही व्यापारमें लाभ होगा और आलस्य वा अज्ञानतासे उसे किंचित्काल भी बन्द कर रखनेमें हानि प्रगट ही है, इस लिये सदा सावधान रहना चाहिये ।

उपर्युक्त बातोंके सिवाय व्यापारके अभ्युदयके लिये साख (दर) की बडी जरूरत है । उस साखका मोल प्रत्यक्ष पूजीसे कहीं बढकर है । साखसे पूजी मिल जाती है, परन्तु पूजीमे साख नहीं मिलती । साख बनाये रखनेका साधन यह है कि, अपनी पूजी और शक्तिके अन्दाजसे व्यापार किया जावे "उतनहिं पाव पसारिये, जितनी चादर होय" । हिसाब और पत्रव्यवहार ठीक २ रहे । लेना देना तत्काल लिख लेनेसे हिसाबमें प्राय भूल नहीं होती । आजकी आई हुई चिट्ठी कलको न रक्खी जावे, वरन उसी दिन जबाब दिया जावे । और जबाबमें तिलमात्र सन्देह अथवा अपूर्णता न रहे । ऐसा करनेसे काम, वक्तके वक्त और ठीक होता है तथा गौरव और प्रभाव भी बढता है । जैसे मनुष्यसे काम पडे, उसके साथ वैसा ही वर्ताव करना चाहिये । सामान्यतासे लोगोंकी ऐसी समझ है । जिसप्रकार चोर और लुटेरे लोग साधुओंसे सत्यभाषण करते हैं । इसके अनेक उदाहरण है । उसी प्रकारसे ईमानदार तथा साखदार लोगोंका वर्ताव देखके बुरे लोग भी प्राय. ईमानसे तथा पत राखके चलनेका प्रयत्न करते हैं ।

आज कल अकाल आदि सकटोंके समय रेलगाडी अथवा अग्निबोटके द्वारा वहाका माल यहा लाने और यहाका माल वहा ले जाने वा रकम सम्हालनेमें विशेष सावधानी रखना पडती है। क्योंकि प्रवासमें नानाप्रकारके मनुष्योंका समागम हुआ करता है और वे सब मनुष्य एकसे नहीं होते ।

कोई २ चोर दगाबाज और घातक भी होते हैं। उनके द्वारा काम निकाल लेना जरा मुश्किल बात है। परन्तु सावधानीसे चलनेमें सब कुछ निभ जाता है। किन्तु दक्षता चाहिये, आलस्य और गँवारपनेका काम नहीं है। दक्षतासे सब कठिनाइयां सुलभ हो जाती हैं। सच्चे ईमानदार मनुष्यके साथ काम करनेका प्रसंग आनेपर बुरे मनुष्य भी रास्तेपर आकर सत्यताका आश्रय लेने लगते हैं। उसके बिना उनका निर्वाह नहीं होता। उन्हें स्वयं अच्छे बननेकी इच्छा होती है। जेहलखानोंके कैदी भी वहां अपनी साख दिखलाकर मुखिया (नम्बरदार) बन जाते हैं। इसी प्रकार व्यापारी मनुष्य भी धीरे २ मार्गपर आनेका प्रयत्न करते रहते हैं।

व्यापारका बडा विस्तृत कारभार सम्पूर्ण भूमडलपर फैला हुआ है। इसीके पेटमें उद्योग, ज्ञानप्रसार, धर्मप्रसार, द्रव्यप्राप्ति, और राज्यप्राप्ति भी स्थित है। वर्तमान समयमें जरा स्वस्थ चित होकर भले प्रकार शोध करो, तो व्यापार करनेवालोंमें ही धनाढ्य लोग अधिक निकलेंगे। और संसारके बहुअंश मनुष्योंका उदरपोषण व्यापारहीसे हो रहा है। क्योंकि उनमें ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं मिलेगा, जिसे कुछ न कुछ काम करना न आता हो। फिर कोई एक दमडीकी रुई बेचें अथवा कोई लाखों रुपयेके मालसे भरे हुए जहाजोंके जहाज खरीदे, उन सबका व्यापारहीमें समावेश होगा। यद्यपि व्यापार एक बडी व्यापक विद्या है, परन्तु उसमें ऐसी विचित्रता है कि, अन्यविद्याओंके शिक्षकोंके समान उस विद्याके गुरू नहीं पाये जाते, और न उसके सिखानेकी कहीं कोई पाठशाला है। जितने व्यापारी हैं, वे अपनेसे बडे व्यापारीके शिष्य और अपनी अपेक्षा छोटे व्यापारीके गुरु है। जिस स्थानपर लैन देन होता है, वह चाहे घर हो, बन्दर हो, जगल हो, बाजार हो, दूकान हो, खेत हो, अथवा मंदिर हो वह स्थान व्यापार सीखनेकी पाठशाला है। इस शालाका टाईमटेबल नहीं है और न छुट्टीके दिन वा समय नियत है। यह शाला सृष्टिके आरंभसे बढती चली आई है और जैसे २ विद्याचारसम्पन्नता बढती जावेगी, वैसे २ यह स्वयं वृद्धि पावेगी। उसके प्रचारका प्रयत्न करनेकी आवश्यकता नहीं है।

इस व्यापार विद्यामें एक और चमत्कार है कि, अन्य विद्याओंके समान यह पुस्तकमें संग्रह नहीं हो सकती कारण यह अत्यन्त विस्तृत है। उसका लिखा-जाना असंभव है, अथवा ऐसा कहिये, वह इतनी अत्यल्प है कि, उसके लिखनेकी आवश्यकता नहीं है। क्यों कि साधारण रीतिसे देखो तो माल सस्ता लेना, मंहगा बेचना अथवा पैसेमें खरीदकर सवा पैसेमें बेचना यही व्यापारका अत्यन्त सीधा स्वरूप है। परन्तु जहां तक अनुभव हुआ है, वहा तक यही कह सकते हैं कि, सहवास और उम्मेदवारीसे (व्यापारियोंके पास रहकर काम करनेसे) इस विद्याकी शिक्षा मिलती है। वह कैसे आती जाती है, यह बात कहीं परीक्षा देकर प्रगट करनेकी नहीं है। व्यापार करना आने लगा, पैसेके दो पैसे बनाना आने लगे, यही विद्या पूर्ण होनेका सर्टीफिकट है। इसके सैकडों उदाहरण बाजारोंमें तथा सब प्रकारके कार्यालयोंमें दृष्टिगत होते हैं। व्यापारिक विद्या सीखनेका अर्थ 'कुछ सीखनेको नहीं' ऐसा भी होता है अथवा उसके सम्पूर्ण सीखनेके लिये आयु यथेष्ट नहीं है, यह भी होता है। परन्तु इतना अवश्य है कि, यह विद्या पाठशालाओंमें जाकर नहीं सीखी जाती है, केवल अनुभवसे प्राप्त होती है। इसकी शाखाएं अपार है और वे वचनअगोचर हैं। तथा इस विद्याके जाने बिना मनुष्यका जीवन पूर्ण नहीं होता।

व्यापार विद्याके सम्बन्धमें अधिकाश लोगोंके मस्तिष्कमें यह आक्षेप आ विराजा है कि, असत्य भाषण किये बिना व्यापारका परिचालन नहीं होता। व्यापारके मार्गपर कदम रखते ही असत्यका दल आ घेरता है, ऐसा लोग कहा करते हैं, परन्तु यह बात यथार्थ नहीं है। हा पदार्थकी खरीदकी अपेक्षा कुछ अधिक रकम मागनी पडती है। परन्तु यह असत्यभाषण नहीं है। क्यों कि यह सभी ग्रहक जानते हैं कि, नफा लिये बिना व्यापार नहीं चल सकता। अमुक पदार्थकी असली खरीद इतनी है ऐसा कोई २ व्यापारी कहा करते हैं और असत्य बोलते हैं। परन्तु व्यापारीको इस अडचनमें नहीं पडना चाहिये, क्यों कि ग्राहकको मूल कीमत सुनानेका कोई खास नियम नहीं है। जितनी कीमत लेना हो, उतनी माग ली, बस, हुआ!! और कीमतका मान बाजारमें पदार्थोंके संग्रह (स्टाक) और खपपर निर्भर है। वह कुछ व्यापारीके हाथकी बात नहीं है। फिर असली खरीद सुनाने और असत्य बोलकर पाप कमानेकी क्या जरूरत है? बहुतसे चतुर और अनुभवी लोगोंको ऐसा जान पड़ता है कि, राज्यकार्योंमें असत्यभाषण किये बिना छुटकारा नहीं है, इसी कारण सच्चे झूठेके मिश्रणको कारस्थान कहनेकी परिपाटी है। परन्तु इसमें लोगोंकी गलती नहीं, क्योंकि ऐसे उदाहरणोंसे इतिहास भरा पड़ा है। इतने बडे ज्ञाता और अधिकारी प्रिंस बिस्मार्कने स्वयं अपने मुंहसे एक बार स्वीकार किया था कि, राज्यकार्यमें मुझे बादशाहके देखते हुए झूठ बोलना पडा था। परन्तु ग्लाडस्टनसाहबने लगातार चौदह बरसकी दीवानगिरीके (मंत्री पदके) कामर्में कभी असत्य भाषण वा असत्य आचरण नहीं किया। यह बात उनके मित्र ही नहीं, वरन शत्रु भी कुबूल करते हैं। अर्थात् सत्यके विषयमें यह बात है कि, उसे ग्रहण करके हमेशा चलना ही चाहिये। यह उचित तथा आवश्यक है। परन्तु अपनी सम्पूर्ण मनोवृत्तियोंको औरोंपर प्रगट करना ही किसीका फर्ज नहीं है और न इसके लिये वह बाध्य है। ग्राहकको खरीदकी रकम बतानेका कोई कायदा नहीं है, इसलिये उपर्युक्त आक्षेप बिलकुल निराधार और भ्रममूलक है।

व्यापारमे अल्पलाभके हेतु अतिश्रम करना पडता है, और क्षुद्र मनुष्योंसे सम्बन्ध रखना पडता है, यह अतिलोभका लक्षण है। इसलिये उसमें सकोच होता है। परन्तु वैसा किये बिना व्यापार भी तो न चलेगा, यह बात ध्यानमे रखकर हमे वैसी ही आदत डालना चाहिये। कार्य एकबार करना पड़ा कि, फिर उसमें कुछ बुराई नहीं मालूम होती।

(मराठी बालबोधसे.)

भारतवासियोंकी मुकदमाबाजीसे दुर्दशा।

भारतवर्षीय जो किसी समय बहुत धनवान, धर्मात्मा और सत्यवादी थे, आज कल वे निर्धन, दुराचारी और झूठे बतलाये जाते हैं। धर्मशास्त्रोंमें लिखा है कि, "सत्यमेव परमो धर्मः" अर्थात् सत्य बोलना ही धर्मका लक्षण है। जिन्होंने भारतवर्षकी सभ्यताके इतिहासको पढा है, उनको ज्ञात है कि विदेशियोंने जो इस देशमें केवल यात्रा या भ्रमण करनेके लिये आये थे, उस समयके लोगोंकी बडी प्रशंसा की है कि, वह लोग बडे सच्चे थे। क्योंकि वह झूठ बोलना बडा पाप समझते थे। यदि आज

कल भारतवर्षीय बडे झूठ बन गये हैं, तो इसका मुख्य कारण मुकदमाबाजी है ।

मुकदमेबाजीमें तरह २ के खर्चके सिवाय खुशामद करनी पडती है । कैसे शोककी बात है कि, भाइयों और सम्बन्धियोंके मुकद्दमें अपनी जातिके मुखियों और पंचायतको छोड़ रईश लोग विदेशियोंकी खुशामद करते है और अपनी जातिके लिये न्याय और सत्यका ख्याल छोड़ झूठे २ गवाह बनानेसे भी नहीं डरते । और निर्धनताके कारण लोग ३ या ४ आनेके लिये गङ्गाजली या कसम खाकर भी झूठी गवाही देते है । यह तो प्रसिद्ध है कि, बहुधा अदालतोंकी काररवाईमें लोग १०० मे से ८० हिस्से झूठ फरेब करते है और जितना झूठ अदालतमें कसम लेकर लोग बोलते है, उतना झूठ घरमें वा बाहरमें नहीं बोलते । चूंकि अदालतोंमें झूठ बोलनेकी आदत पड जाती है, इसलिये लोग झूठे बन जाते है और यह तो प्रसिद्ध है कि, एक मछली सारे जलको मैला कर देती है । अब तमाम दुनियामें भारतवर्षीय झूठ और फरेबी मशहूर हो गये है । और कोई लायक और विद्वान् जाति भारतवासियोंपर भरोसा नहीं करती । इन लोगोंमेसे जो मुकदमाबाजी करते है । वे जातियां जिनको हम केवल अविद्याके कारण नीच कहते हैं, बहुत अच्छी है । क्योंकि वह सब लोग अपने सारे झगडे और मुकद्दमे अपनी जातिकी पचायतोसे तय कराते है । कभी यह लोग सरकारी अदालतोंका मुह नहीं देखते । और इसीलिये यह सब लोग मुकदमाबाज जातियोंकी निस्वत बहुत सच्चे है । इसी कारण जो लोग कि अपनी जातियोंके मुखियोंको छोड़ मुकदमेबाजी करते है, वह लोग बहुत बुरा करते हैं । इस मुकदमाबाजीमे कई रियासतें और हजारों रईश तबाह हो निर्धन बनकर ९) ९) रुपये माहवारीकी नौकरी करते फिरते है । जब तक भारतवर्षके तमाम लोग सच्चे दिलसे यह प्रतिज्ञा नहीं करेंगे कि, हम जैसे कि शास्त्रोंमें लिखा है अपने झगडे या मुकद्दमे केवल अपनी जातिके मुखियों और पंचायतोंमे फैसला करायेंगे और मुकदमाबाजीमें न पड़ेंगे, तब तक इस देशकी हालत नहीं सुधरेगी और जो लोग कि स्वदेशी वस्तुओंको छोड़ विदेशी वस्तुओंको ग्रहण करें या पंचायती और अपनी जातिके मुखियाको छोड़ मुकदमबाजीमें पडेंगे, उनको जातिसे निकाल कर सम्बन्ध नहीं तोडेंगे, तब तक कभी भी यह लोग न सुधरेंगे । परमेश्वर आप लोगोंको इस शुभ कार्य्यमें सहायता दें ।

टहलराम गङ्गाराम—
जमीन्दार, डेरा इस्माइलखा ।

संसार असार है ।

वर्तमान समयमे यदि सदृष्टिद्वारा अवलोकन किया जाय, तो जैनसमाजमें धर्म-मर्मज्ञ विद्वान् इने गिने ही दृष्टिगोचर होते है । तिसमें चारित्रमार्गके आराधक तो शायद ही दो चार हो तो हो । इस कलिकालमें बहुधा अनुभव करनेसे यह भी सिद्ध होता है कि, जो विद्वान् और विशेषकर चारित्रवान् होता है, उसके पाणिग्रहणकी स्वर्ग लक्ष्मी भी उत्कट अभिलाषिनी रहती है । यही कारण है कि इस पवित्र धर्मकी धारक जैनजाति दिन २ सच्चे विद्वानो और चारित्रधारियोंसे रहित हीनावस्थाको प्राप्त होती जाती है । उन महान् पुरुषोंके स्थानकी पूर्ति एक प्रकारसे दुष्कर ही नहीं किन्तु असभव सी हो रही है । क्योंकि स्वजातियोंके प्रमाद तथा दौर्बल्य और विजातियोंकी अज्ञतासे अथवा यो कहिये कि, कालक्रमानुसार नवीन कलके खनकनेवाले कल्दारोंमें बहुधा आरंभहीसे २५ सैकडा खोट मिल रहा है ।

खेदका विषय है कि, अभी अल्पकाल पूर्व ही श्रीमान् ग्रहत्यागी अनन्तरामजी ब्रह्मचारीने इस धातुमय औदारिक शरीरको (जो ग्लानिका स्थान पर रत्नत्रयकी निकटतावश पूज्यनीय हो सकता है) परित्याग किया था कि, अचानक ही २८ वर्षकी अल्पायुमें मिती भाद्रपद वदी ३ सोमवारको सिद्धान्तरहस्यज्ञ श्रीमान् वर्णी दौलतरामजीने भी वही गति स्वीकार की । संक्षिप्त व्यवस्था इस प्रकार है कि, श्रावणशुक्ला ९ को आपने १) भर आहार पश्चात् तेला और त्रयोदशीको १ छटाक मात्र प्रासुक जल लिया, पश्चात् चतु प्रकार आहार त्याग सावधानी सहित सन्यासमरण किया । आध घंटे पूर्वसे आपने सर्व प्रकार वस्त्रादि परिग्रह त्याग निर्ग्रंथावस्था धारण की थी और पावोंमें वायुरोग होते हुए भी ३ मिनट पेस्तर पद्मासन लगाकर विराजे थे। पश्चात ३ मिनटके नमोकार स्मरण करते २ स्वर्गलक्ष्मीके द्वारा आकर्षित हो गये । उस समय वहा दलपतपुरके श्रीयुत संघी जवाहिरलालजी मूलचन्दजी, तथा बंडा जैनपाठशालाके अध्यापक भाई मूलचन्दजी आदि कई धार्मिक सज्जन उपस्थित थे । उन्होंने दश दिन पूर्वसे श्रीमानका भली भांति वैयावृत्त कर धर्मध्यान सहित समाधिमरण कराया और दीर्घ पुण्यलाभ किया । इसके लिये हम उनके अत्याभारी हैं । यह कह देना भी कुछ अनुचित न होगा कि, ज्येष्ठ महीनेमें मैं (दरयावसिंह) तथा गढाकोटाके ४-५ अन्य भाई उक्त श्रीमान्से मिलने तथा सिद्धक्षेत्रके दर्शन निमित्त नैनागिरजी (रेसंदगिरजी) गये थे । उस समय किसी अन्य ग्रामस्थ सज्जनने अंदाजसे उनकी चेष्टा देखकर कहा था कि, आपका मरण इसी ज्येष्ठमें होगा । तब आपने फरमाया कि, "तुम ज्येष्ठ भर गढाकोटाहीमें रहना, यदि अवसर आया तो बुला लूगा ।" मै तदनुसार ज्येष्ठ भर वहीं रहा । परन्तु आयुकर्म कुछ शेष था, अथवा यों कहिये कि, उनकी सेवाके योग्य मुझ मंदभागीकी योग्यता न थी । अतएव २ महीने पश्चात् यह असह्य वेदना उपस्थित हुई । आप तबहीसे धर्म ध्यानमे विशेष सावधान रहते थे । अर्थात् आप सदा काल. कषायसंल्लेखनामें प्रयत्नशील रहते थे ।

आप संस्कृतके विद्वान् और सिद्धान्त शास्त्रो तथा अध्यात्म ग्रंथोंके रहस्यज्ञ एव श्रावकाचारके मर्मज्ञ और तदनुसार सदाचरणके धारक थे । यद्यपि तीव्रतपस्याके कारण आपका शरीर अस्थि पजर मात्र रह गया था, क्योंकि आपने जिह्वा इन्द्रीको ऐसा वश कर लिया था कि छह२ महीने तक आप केवल एक ही रस ग्रहण करते थे। ऐसा होनेपर भी आप सम्यक ज्ञानचारित्रद्वारा प्रबल थे । आपने स्वल्पावस्था ही मे गोमट्टसार जी के मूलगाथा कंठस्थ कर लिये थे । इसके सिवाय उक्त ग्रंथकी केशववर्णी टीकाका भी आपने अभ्यास किया था । उसीके बल से आपने जीवकांड तथा कर्मकाडकी छंदोबद्ध रचना की थी, जो कि उनके शिष्य ब्रजलालजी (वि० स्याद्वाद पा० काशी) के पास है । इसके सिवाय आपने कई पूजा, स्तोत्र, पदादि भी अध्यात्म शैलीके रचे थे । कविता आपकी अच्छी होती थी ।

आप पर्यटनके समय यदि किसी ग्राममे ठहरते, तो वहांके अन्यमतावलम्बी किसानादि भी आकर आपका उपदेश रुचिपूर्वक सुनते थे । फिर भी उपदेश ऐसा असरकारक होता था कि, वे लोग भी हिंसादि पाप और अभक्ष्यादि त्याग देते थे ।

बहुधा लोगोंका कथन है कि, इस पंचमकालीय विद्वानोंकी बहुसंख्या हलवाईके समान परो-

पकारी है स्वोपकारी नहीं । इस बातको असत्य करनेके लिये मानों आपने जन्म लिया था । आपने सम्पूर्ण तीर्थक्षेत्रोंकी वन्दना करने और कई प्रसिद्ध २ प्रतिष्ठाओंमें पधारनेके पश्चात् यह निश्चय किया था कि, इस निकृष्ट कालमें कई प्रान्तोंमें तो धर्मसाधन अति कठिन और एक प्रकारसे असभव ही है । इसलिये हम बुन्देलखण्ड प्रान्तहीमें और खासकर रेमदीगिरजी (नैनागिरजी) में ही रहकर धर्मसाधन करेंगे । अतएव उज्जैन प्रतिष्ठोत्सवके पश्चात् आप उक्त स्थानपर ही रहते थे ।

आप बालब्रह्मचारी थे । ऐसा नहीं कि, " **नारि मुई घर संपति नाशी, मूंड मुड़ाय भये सन्यासी** " किन्तु आपने छुटपनमें सगाई होने पर भी विवाह नहीं कराया था । और रात्रि दिवस विद्याभ्ययनमें व्यतीत किया था । बुन्देलखण्ड प्रान्तमें यह पद्धति है कि, एक मन्दिर बनाने और गजरथ चलानेमें सघी, दोमें सवाई सघी, तीनमें सेठ और ९ में श्रीमतकी पदवी दी जाती है । इस लिये उस प्रान्तके धनाढ्योंका चित्त बहुधा मन्दिर बनवाने और प्रतिष्ठा करानेके सिवाय धर्मविद्याकी उन्नतिकी ओर किंचित भी नहीं था । इसी कारण उस प्रान्तमें बहुधा विद्वानोंका एक प्रकारसे अभावसा पाया जाता है । इस त्रुटिकी ओर हमारे प्रशसनीय वर्णीजीका ध्यान बहुत था । इसलिये २ वर्ष पूर्व श्रीरेमदीगिरजीके मेलेपर श्रीयुत सेठ राय मोहनलालजी पिंडरआवालोंकी सम्मति पूर्वक बडा (सागर) मे एक रेमंदीगिर जैनपाठशाला नियत होनेका प्रस्ताव किया । आपकी इच्छा होते ही तत्काल ३५००) ध्रौव्य द्रव्य और ६००) वार्षिक चन्दा पाच वर्षके लिये हो गया । आज उस पाठशालामें ३० विद्यार्थी विद्याभ्ययन कर रहे हैं । जिनमें १४ १५ की भोजन व्यवस्था भी पाठशालाकी ओरसे है । हाल ही १५ विद्यार्थियोंने प्रवेशिका प्रथम खंडकी परीक्षा देकर उत्तीर्णता पाई है । यह श्रीमानका परम सराहनीय कार्य दीर्घकाल तक जैनजातिका उपकारक रहेगा ।

यद्यपि श्रीमान् सरीखे ज्ञानी तपस्वीके अल्पावस्थामें अचानक स्वर्गवाससे बुन्देलखंड प्रान्तके जैनियोंकी ही नहीं, किन्तु सम्पूर्ण भारतवर्षीय जैनजातिकी महत हानि हुई है । तथापि कालक्रम रोकना दुर्निवार जान सन्तोष करना और इसी प्रकार क्षण २ क्षय होनेवाली आयुके सद्व्यय करनेकी चिन्ता करना अवश्य है । हम आशा करते हैं कि, उक्त महोदयके मित्र, शिष्य और भक्त खासकर बडा और उस प्रान्तके जैनी भाई उनकी सम्पत्ति स्वरूप " रेमदीगिर जैनपाठशाला " को स्थायीरूपसे चलाकर उनकी स्वर्गस्थित पवित्रात्माको संतोषित करेंगे और निज हितमें प्रवर्तेंगे । यही हमारी आन्तिम प्रार्थना है और उनके प्रिय शिष्य वृजलालजी यदि उक्त महोदयका विस्तृत जीवन चरित्र प्रथक् पुस्तकाकार प्रकाशित करेंगे, तो धन्यवादके भागी होंगे ।

धर्मसेवक—

पं० गौरीलाल दरयावसिंह सांधिया,

इन्दौर ।

श्रीसम्मेदशिखरजीकी रिपोर्ट ।

ता० २४ को श्रीमान् दानवीर शेठ माणिकचन्द हीराचन्दजी बम्बईसे कई प्रतिनिधियोंके साथ आये । उसी दिनसे भारतके प्राय प्रत्येक प्रान्तके धर्मात्मा सज्जनोंका आना प्रारभ हुआ । और अजमेरके रायबहादुर शेठ नेमिचन्दजी, खुजाके रायबहादुर शेठ नत्थीमलजी, इन्दौरके शेठ हुकमचन्दजी, शेठ कल्याणमलजी भरतपुरके रायबहादुर घमडीलालजी, जबलपुरके शेठ गरीबदासजी, खुरईके श्रीमन्त मोहनलालजी, सिवनीके शेठ पूरनसाहजी, नागपुरके शेठ नेमीलालजी, हैद्राबादके राजा ज्ञानचन्द्रजी, महसूरके शेठ अनन्तरामजी अय्या, मूडबिद्रीके भट्टारक श्रीलक्ष्मीसेनजी पट्टाचार्य, सहारणपुरके लाला रूपचन्दजी, कलकत्ताके शेठ परमेष्ठीदासजी, बाबू धन्नूलालजी अटनी, हजारीबागके शेठ शिवनारायणजी, मलगावके वकील मि० चागुले, नजीबाबादके बाबू जुगमंदरदासजी, छिदवाडके शेठ मुखलालमलजी, दिल्लीके वकील लाला प्यारेलालजी, और रईस लाला मुल्तानसिंहजी, आदि सबहू प्रतिष्ठित २ सज्जन उपस्थित हो गये । सम्पूर्ण दिगम्बरी भाइयोंकी सख्या अनुमान २५०० के होगी । सबहीके चित्त अपने परम पूज्य सिद्धक्षेत्रकी रक्षाके लिये तल्लीन हो रहे थे । श्वेताम्बरी समाजकी ओरसे केवल २५ महाशय उपस्थित थे, जिनमे बम्बईके शेठ वीरचन्द दीपचन्दजी, रतनचन्द खमचन्दजी, मोहनलाल मगनलालजी, अहमदाबादके शेठ लालभाई दलपतभाई और मुर्शिदाबाद तथा कलकत्ताके दो चार मुखिया शेठ थे ।

ता० २६ को भारतवर्षीय दि० जैनतीर्थक्षेत्रकमेटीका अधिवेशन लाला सुलतानसिंहजी रईसके सभापतित्वमें हुआ । उसमें कमेटीका तयार किया हुआ मेमोरियल पढकर सुनाया गया और मेम्बरोंके दस्तखत कराकर वह लाठ साहबकी सेवामें भेज दिया गया । पश्चात् यह मालूम हुआ कि, लाठ साहबने थोडेसे ही प्रतिनिधियोंको बुलाया है, इसमे २६ नाम मजूर किये गये । तथा यह प्रस्ताव पास हुआ कि, लाठ साहबके साथ पर्वतका निरीक्षण करते समय प्रतिनिधिगण उन्हें उसकी पवित्रता अच्छीतरहसे समझा देवें ।

रातको ८ बजे मंदिरजीमें फिर सभा हुई, जिसमें केसके सम्बन्धमें अपने प्रमाणादि पेश किये गये । उसी समय ६५ प्रतिनिधि चुने गये ।

ता० २७ के सबेरे लाठ सा० आये और मधुबनमें चापानी पीकर दिगम्बरी कोठीमें आये । राजा ज्ञानचन्दजी, रायबहादुर घमडीलालजी आदिने स्वागत किया । थोडी-देर धर्मशाला तथा मंदिरका निरीक्षण करके लाठ साहब अपनी पत्नी तथा अन्य अफसरों सहित पहाडपर चले गये । उस समय डिपुटी कमिश्नर हजारीबागने फरमाया कि, डेलीगेटोंके नाम थोडे होने चाहिये । इसलिये ता० २८ का मुख्य २ भाइयोंके विचारसे सिर्फ २५ नाम पत्रद्वारा भेजे गये ।

आजके दिन देहलीवालोंके डेरेपर सभा हुई । उसमे तेरहपथीकोठीके हिसाबका पता न लगनेके कारण तथा उक्त कोठीके मैनेजर लाला स्वरूपचन्दजी कलकत्तावालोंसे हिसाब किताब सम्बन्धी प्रश्नोंका उत्तर सतोषजनक न मिलनेके कारण खेद प्रगट किया गया । तथा उसी समय भारतवर्षके सम्पूर्ण धनाढ्यो तथा पंडितोंकी सम्मतिसे निम्नलिखित ७ महाशयोंकी कमेटी आगामी प्रबन्ध करनेके लिये तथा पुराना हिसाब किताब समझनेके लिये बनाई गई ।

१ शेठ हरसुखराय अमोलकचन्दजी—कलकत्ता ।
(कोषाध्यक्ष)
२ बाबू धन्नूलालजी अटर्नी हाईकोर्ट—कलकत्ता ।
(सेक्रेटरी)

३ शेठ हुकमचन्दजी	इन्दौर ।
४ बाबू प्यारेलालजी वकील	देहली ।
५ शेठ शिवनारायणजी	हजारीबाग ।
६ सघी गरीबदासजी	जबलपुर ।
७ लाला रूपचन्दजी	सहारणपुर ।

उसी दिन दूसरी सभा तेरहपथी कोठीमे हुई । वहा सब भाइयोंने इस बातकी स्वीकारता करके दस्तखत किये ।

ता० २८ को १०॥ बजे प्रतिनिधियोंसे मिलनेका समय नियत हुआ था । परन्तु डोलियोंके अप्रबन्ध तथा मौसिमकी खराबीके कारण सिर्फ १५ भाई (दिगम्बरी) समयपर पहुच सके । दूसरे लोगोंको विलम्ब हो गया । इस लिये लाठ साहबने उन्हीं १५ प्रतिनिधियोंको साथ लेकर पार्श्वनाथ स्वामीकी टोंकसे लेकर कुथुनाथ स्वामीकी टोंक तक निरीक्षण किया । तथा सीतानाले तक साथ साथ आये । उस समय स्थान स्थानपर दिगम्बरी यात्री अपनी आन्तरिक भक्तिसे वन्दना कर रहे थे, और पर्वतराजकी मगलकामनाके लिये अर्घावतारण कर रहे थे । उस दिन प्राय सब लोगोंने उपवास किया था । लाठ साहबने उनसे स्वय मिलकर बहुतसे प्रश्न किये और उत्तर पाये । लाठ साहबके इस प्रश्नपर कि आप लोगोंको कोई तकलीफ तो नहीं है, श्रीयुक्त अण्णापा फडयापा चौगुलेने कहा कि, हुजूर कहनेमे सकोच तो अवश्य होता है, परन्तु कहे विना रहा नहीं जाता कि, आप चमडेके जूते पहने हुए चल रहे है, इससे हमें अपार कष्ट हो रहा है ! एक प्रार्थना और भी है कि, आप जब तक इस पवित्र भूमिपर रहें, अभक्ष्यभक्षण न करें । लाठ साहबने धर्मप्राण जैनियोंकी उक्त दोनों बातोंपर ख्याल करनेकी प्रतिज्ञा की । राजा ज्ञानचंदजीने पहाडपर चार प्रकारके फोटो लिये । पश्चात् लाठ साहब २ बजे अपने बंगलेको लौट गये । उस समय कुछ दिगम्बरी और ७-८ श्वेताम्बरी प्रतिनिधियोंने साहबसे सलाम की । वे लोग समयपर नहीं आ सके थे ।

ता० २९ को सवेर लाठसाहब पहाडसे उतरकर श्वेताम्बरी कोठीमें चा पानी लेकर श्वेताम्बरी मन्दिरका निरीक्षण करने गये। वहांसे आकर दिगम्बरी मन्दिरमें आये । उस समय उनके पैरोंमें कपडेके जूते थे। मन्दिरका निरीक्षण करके उन्होंने स्वामी लक्ष्मीसेनजी भट्टारकसे वार्तालाप किया। और फिर दिगम्बरियोंके बनाये हुए सभामडपमें उपस्थित होकर मुख्य मुख्य प्रतिनिधियोंसे परिचय किया। पश्चात् लाला सुलतानसिंहजी रईसने एड्रेस पढ़के सुनाया। जिसके उत्तरमें लाठ साहबने एक स्पीच दी और फरमाया कि, मै इस समय आखिरी हुक्म नहीं देता हू। परन्तु यह मुझे मालूम हुआ कि, आप लोग पवित्र मानते हैं! इत्यादि। परन्तु उनके उत्तरसे किसीको भी सतोष नहीं हुआ। लाठ साहब चले गये।

३ बजे फिर एक बडी भारी सभा हुई। उसमें सभापतिका आसन शेठ पूरणसाहु सिवनीवालोंने ग्रहण किया। उसमें कई प्रकारके विचार किये गये। फिर रातको भी एक सभा हुई, जिसमें पर्वतरक्षाके लिये चन्दा करनेकी उत्तेजना दी गई, तथा एक कमेटी चन्दा जमा करने तथा पर्वतरक्षा करनेके लिये बनाई गई।

मौजीलाल।

पत्रोंका सार।

फीरोजपुर—छावनी फीरोजपुरमे ता. २८, २९, ३० अगस्तको समवसरण पाठ खूब नृत्य गानके साथ हुआ। सब भाइयोंने श्रीसिखरजी पर्वतकी जयमनाते हुए शक्तिके अनुसार व्रत आकडी ग्रहण की। यहांसे सेठ रामलालजी रामपतिजी ता० २३ अगस्तको सिखरजी गये है। देवीसहाय।

फीरोजपुर—यहा एक औषधालय सेठ रामलालजी खुशीरामजीकी तरफसे अनुमान ३ वर्षसे स्थापित है। जिस किसी भाईको किसी किस्मकी दवा मगाना हो, तो रामलालजी खुशीरामजी छावनी फीरोजपुरके पास पत्र भेजकर मगा लेवे।

वैद्यराज पतीराम।

फीरोजपुर—शेठ रामलालजीकी ओरसे अनुमान ३ वर्षसे १ पाठशाला जारी है। जो विद्यार्थी पढनेको आना चाहे या जो महाशय अपने पुत्र प्रपौत्रोंको विद्यालाभ कराना चाहे, उपर्युक्त पतेपर भेज दें। भोजनखर्च दिया जावेगा। चम्पाराम जैन।

उदयपुर—मिती श्रावण शुक्ल १४ को मदिरजीमें सभा हुई। धर्मोन्नति और विद्योन्नतिपर भाषण होनेके पश्चात् कालूराम सागानेरियाने सिखरजीके उपसर्ग बाबत् सर्व पंचोंसे चदा करनेकी प्रार्थना की (८३॥=) चंदा एकत्र करके सेठ माणिकचन्दजी बम्बईकी सेवामें भेजा गया। यहां एक पंडितजी संस्कृतके ज्ञाता हैं। गोमटसारजी त्रिलोकसारजीका भी ज्ञान है। (३०) मासिक लेंगे, जिन्हें बुलाना हो हमें पत्र लिखें। कालूराम मंत्री जैनपाठशाला।

होसूर (बेलगाव) ता. २८ अगस्तको बंगालके लेफिनेट गवर्नर सिखरजी पधारेंगे। उनको श्रीजिनेश्वर भगवान् सद्बुद्धि दे। इसलिये बेलगाव शहापुर और होसूरके सब जैन स्त्रीपुरुषोंने अपना २ नित्य व्यवसाय बन्द करके उक्त तिथिको सारादिन उपवास और पूजन प्रक्षालन आदि धर्मध्यानहीमें बिताया। लाट महोदय जैनी भाइयोंकी आशा पूर्ण करें। भरमण्णा पदमाण्णा पाटील।

लोधीखेडा (छिंदवाडा) आरारोट सफेद चिकना जो बम्बईसे आता है, सो किस पदार्थसे बनता है। वह देशी है या विदेशी? सुजन जन जैनमित्र द्वारा या कार्ड द्वारा हमारी शका निवारण करें। ताकि भक्ष्याभक्ष्यका ज्ञान हो, क्योंकि यहांपर आरारोटकी जलेबी बनती हैं और सब जैनी भाई खाते है। नारायण सुखासाव परवार।

जयपुर—भाद्रपद कृष्णा अष्टमीको जैनागम पाठशालामे धर्मविषयक नाटक था। आमतौरपर सूचना पत्र दिये गये थे। पर खेद है कि, बहुत कम जैनी भाई उपस्थित हुए थे, जहा देखो तहा धर्मोन्नतिकी पुकार हो रही है। पर हाय! हमारे भाइयोंके चित्त पर बिलकुल असर नहीं होता। मत्री रीडिंग क्लब।

टीकमगढ़—श्रावण शुक्ला १४ जैन बालसभाका जल्सा हुआ। हरप्रसाद, रामदास विद्यार्थी और नन्हेंलालजीने विद्याविषयपर तथा फुन्दीलालजी अर्गीवालोने बालविवाहके निषेधमें व्याख्यान दिया। पं० दरयावसिंहजीने इन सबका अनुमोदन किया। भाई भगवानदासजीने अन्तमगल किया। प० दरयावसिंहजीने ग्रामान्तरोंसे आये हुए विद्याविषयक लेख सुनाकर उनमेसे नेगी हीरालाल देवरीवालेको कातंत्ररूपमालाव्याकरण सोनेसा मत्रीकी ओरसे तथा अन्य चार विद्यार्थियोंको शील कथादि पुस्तकें उपहारमें देना निश्चित कीं। भाई वृन्दावनजीने एक विद्यार्थीको आर्यमतखडनकी पुस्तक देनेको कहा। आगामी जो विद्यार्थी एकतापर लेख लिखेगा, उसे (१) की पुस्तक दी जावेगी।

स. सि. धर्मदास।

आलन्द—(शोलापुर)—यहाकी जैनसभाका नाम बदलकर श्रीधर्मसंरक्षणी दि० जै० सभा रक्खा गया है। लीलचन्द हीराचन्द नामक विद्यार्थीकी सगाई मुरुमके मोतीचन्दकी कन्याके साथ हुई है। पंचायतमें जो सगाईका इकरारनामा लिखा जाता है, उसमें यह भी लिखा गया है कि, विवाह जैनपद्धतिसे होगा। यह बहुत अच्छा हुआ। इकरारनामेमें यह बात पहले ही लिखी जाया करेगी, तो पीछे इस विषयमें किसी पक्षकी ओरसे विरोध न हो सकेगा। यहांके शेठ अमीचन्द मोतीचन्दजीकी भार्या श्रीमती केशरबाईने मासोपवास (३२ दिन तक निराहार) धारण किया है। आज दश उपवास हो चुके हैं। इस भाद्रपद मासमें धर्मसम्बन्धी उत्सव धूमधामसे होनेकी आशा है। ३०-८-०७ हीराचन्द कोठारी।

केसली (सागर) से बाबू वृन्दावनजी माष्टर लिखते है कि, विलायतीशक्कर और स्वदेशीशक्करकी ऐसी चुनी हुई परीक्षाओंका शोध करके प्रकाशित करना चाहिये, जिन्हें साधारण लोग सरलतासे कर सकें। क्यों कि आज कल लोभी व्यापारी देशीके नामसे ही अकसर विदेशी शक्कर बेचते हैं। इसके सिवाय स्वदेशीशक्करके प्रसिद्ध २ कारखानों तथा विश्वस्त व्यापारियोंके नाम भी प्रकाशित होना चाहिये। जिनके यहासे शक्कर मगानेमें सुभीता हो।

विविधसमाचार।

न्यूयार्कमें अखबार—अमेरिकामें समाचार पत्रोंके पढनेका बेहद शौक बढा हुआ है। अखबारोंका खर्च वहां एक खाने पीने आदिके समान आवश्यक समझा जाता है। अकेले न्यूयार्क शहरमे प्रतिदिन सेबरे निकलने वाले दैनिक अखबारोंकी सब मिलाकर सात लाख कापियों बिकती हैं। सध्याको निकलने वाले अखबार भी इसी तरह बिकते हे।

नवीन मिल—सुनते है, शोलापुरके शेठ हरीभाइ देवकरणने कपडेकी एक नवीन मिल स्थापित करनेका निश्चय कर लिया है। वहां एक आध और भी मिल खडी होनेकी खबर है। हमारे जैनी शेठियोंका ध्यान भी इस उद्योगकी ओर हुआ है, यह खुशीकी बात है।

लोहका कारखाना—बम्बईके प्रसिद्ध धनिक ताताकी लोहेकी कम्पनीके दो करोड और कई लाखके शेअर्स निकाले गये थे। वे बातकी बातमें बिक गये। स्वदेशीके नामसे भारतमें इतनी शीघ्र रुपया एकत्र हो जाना मंगलसूचक है।

जैनपताका—कलकत्तेसे बहुत शीघ्र इस नामकी एक मासिकपत्रिका प्रकाशित होने वाली है।

परीक्षाफल—बम्बईके जैनपरीक्षालयका फल हमारेपास आ गया है। आगामी अंकमें प्रकाशित किया जावेगा।

पढे लिखे जैनी—६९१७८७ पुरुषोंमें ३२५२८६ पुरुष पढे लिखे है, जिनमें अंग्रेजी जाननेवाले ९२८३ है। और ६४२२४९ स्त्रियोंमें ११४४५ स्त्रियां पढी हुई है। उनमें ८१ इंग्रेजी भी पढी हुई है।

हीराबागधर्मशाला बम्बईमे अगस्त महीनेमें १०४ दिगम्बरी, ३५ श्वेताम्बरी और ३६४ वैष्णव ठहरे जिनमें १८३ यात्री और ३२० मुसाफिर थे।

हीराबाग दवाखाना मे एक महीने मे १२५१ रोगियोंको दवा दी गई। जिनमें २१६ दिगम्बर जैन और ८३ श्वेताम्बर जैन थे।

ताकतकी दवा च्यवनप्राश।

दुर्बलता और कमजोरीको दूर करने और शरीरमें बलका सञ्चार एवं शरीरको हृष्ट पुष्ट करनेमें महर्षिसेवित च्यवनप्राशकी भांति दूसरी औषधि ईजाद नहीं हुई यह महात्मा चरकने लिखा है—

यह प्रत्यक्ष फलप्रद है।

महौषधि भले चंगे और बीमार शरीरमें सेवनीय है, इसके सेवन करनेसे खांसी, यक्ष्मा, बिगडा, हुआ जुकाम, ज्वर भंग और अनेक प्रकारके वीर्यगत रोग आराम होते हैं।

नियमसे कुछ दिन "च्यवन प्राश" सेवन करनेसे क्षुधावृद्धि, देहपुष्टि और इन्द्रिय सामर्थ्य जमती है। जवानीके अत्याचारोंके कारण जिनका स्वास्थ्यभग्न धातु क्षीण और शरीर जीर्ण शीर्ण हो गया है उनके हकमें च्यवनप्राश अमोघ महौषधि है। वह प्रथम दर्जेकी स्तम्भक, धातु पौष्टिक एवं कामोद्दीपक है।

दिमाग अर्थात् भेजकी निर्बलताको जो अधिक विषय भोग, शराब आदि पीने और जियादह पढने पढानेकी मेहनत तथा बिकालत आदि दिमागी काम करनेसे हो जाती है इसके सेवनसे रफे हो जाती है और बच्चे इसको खाकर मेधावी और हृष्टपुष्ट होते हैं। यह खानेमें स्वादिष्ट है और इसका गुण चिरस्थायी है।

आयुर्वेद—शास्त्रमें कहा गया है कि पूर्वकालमें इस महौषधिका सेवन कर वृद्ध च्यवन ऋषि जवान हो गये थे जिन लोगोंने काडलीवरआयल वगैरा विलायती धर्म्मनाशक, घृणित दवाओंके सेवनसे कुछ लाभ नहीं पाया हो वे लोग इस प्रत्यक्ष फलदाता विशुद्ध च्यवनप्राशको एकवार सेवन कर इसकी उपकारिता शक्ति देखें। एक पाव च्यवनप्रकाशका मूल्य २) रु० और एक सेर इकट्ठा लेनेसे ६) रु०।

अनेकप्रकारकी गुण दायक औषधियोंका सूची पत्र अवश्य मंगा कर देखिये

मिलनेका पता—वैद्यवर पं० सूर्य्यप्रसाद शर्म्मा आयुर्वेदमार्तंड (आ० यू० के सभ्य), मेरठ सिटी.

५) रुपये का माल ३) रुपये में

गौरीनागरी कोष

५९० पृष्ठ लगभग पांच हजार शब्द।

जिसकी पांच वर्षसे धूम पकरही थी वह अब छप कर तयार हो गया. यह कोष बडे बडे विद्वानोंकी मण्डली द्वारा ९ वर्षके निरन्तर उद्योगसे तैयार हुआ है ऐसा उत्तम कोष आजतक नहीं बना और न आगेको आशा है। यह बी० ए० पास मास्टर है. ३) रुपया में उम्र भरके लिये नौकर होता है। हिन्दी, उर्दू, प्राकृत, संस्कृत, अरबी, फारसी, इत्यादि शब्दों के मायने पूछोगे, तो पहले हिंदी में बतवेगा फिर अंगरेजीमें समझावेगा। वकील, मुख्तार, पण्डित, मास्टर, ग्रन्थकार, लेखक आदि सबका सहायक है। हिन्दीहितैषी भूतपूर्व छोटे लाट मेकडानल बहादुर तथा रीवांनरेश और टेक्स्ट बुक कमेटी पंजाबने भी इसको पसन्द किया है और बहुतसे स्कूलके इन्स्पेक्टर एवं मास्टरोंने इसे खरीदा है। ट्रान्सलेशन (हिन्दीसे अंग्रेजी और अंग्रेजीसे हिन्दी) करनेवालेके बडे कामका है। अतएव स्कूलके विद्यार्थी हिन्दी अंग्रेजीमें योग्यता प्राप्त करनेके अभिलाषी एवं अध्यापक (मास्टर) इसे खरीदने से न चूकें।

सौदामिनी! सौदामिनी!! सौदामिनी!!!

नवन्यास! उपन्यास!! हरोन्यास!!!

'भारतेन्दु' के भूतपूर्वसम्पादक श्री राधाचरण गोस्वामी (वि० वा० म्यू० क० औ० मै०) की ललित लेखनीसे लिखित प्रेम की छटा। रस की छटा!! ११ अंकों में बटा!!

अभी बडे आवताव और हावभाव से छपा है जिस पर लक्ष्मीकी कृपा है, उसीसे =) दाम)॥ डाक महसूल पाकर झगडा रफा और हिसाब सफा है, घड़ी भर दिल लगाना नफा है, क्या इससे कोई खफा है? पुस्तकें कम। बिक्रीका बाजार सरगर्म, सौदा नर्म। और इसके मर्मको रसिक लोगही जानते हैं। इसमें बीसवीं सदीका चित्र इनलाद्टैगीका चरित्र, सच्चा मित्र, सौदामिनीकी पवित्र प्रीति घनश्यामकी विचित्र रीति प्रेमकी अकाट्य नीति, गुरुजनोंकी भयानक भीति, सबके सीन अपने २ अवसर पर दिखलाये गये हैं। उपन्यास क्या नाटक है, चेटक है तमाशा है। पूरा देखे विना जी नहीं मानता।

बालाबोधिनी—यदि गृहस्थको स्वर्गधाम बनाना चाहते हो और अपनी स्त्रियों तथा पुत्रवधुओं एवं पुत्रियों को उच्च कोटिकी की शिक्षा देना चाहते हो, तो इस पुस्तकको अवश्य खरीदो। इसमें नियमानुसार पुत्रीको नीतिशिक्षाका उपदेश किया गया है। मा, बाप, भाई, बहन, पडोसन सास, श्वशुर, ननद इत्यादि किसके साथ कैसे व्यवहार करना चाहिये और पतिकी कितनी सेवा शुश्रुषा करनेसे स्त्री सती, साध्वी और पतिव्रता कहला सकती है। पतिव्रता धर्मका अखण्ड पुण्य सञ्चय करके क्योंकर दोनों लोकका सुख भोग सकती है। मूल्य।-)

नीचे लिखी पुस्तकोंकी सिर्फ दश २ के करीब प्रतियां बाकी है। अतएव विशेष शीघ्रतासे आर्डर भेजिये।

व्यंजनप्रकार मू० ≡)

प्राय मनुष्योंको भोजनके ही ठीक न बननेसे अनेक प्रकारके रोगोंमें फंसकर कष्ट उठाना पड़ता है। इस पुस्तकमें इन्हीं परम आवश्यक बातोंका उल्लेख है। साधारण दालरोटीसे लेकर लड्डू जलेबी, इमरती, बालूशाही इत्यादि और सब प्रकारके नमकीन पदार्थ आदि २ कई प्रकारसे लिखे गये हैं पुस्तक विशेष लाभदायक सचित्र और खरीद कर देखने योग्य है.

राजकुमार उपन्यास मू० =)

यह रोचक उपन्यास एक बंगालकी शिक्षित महिलाने लिखा है और रोचक एवं खरीदनेके लायक है।

अशर्फियोंकी थैली सिर्फ।) में देते हैं। अंग्रेजी सीखनेकी कल मू० -)॥

नागरी जाननेवाला खुद अंग्रेजी बोलना और समझना सीख जाता है।

नागरीके दफ्तर मू०।-)

इसमें नागरीमें रहननामा बैनामा तमस्सुक आदि सब प्रकारके राजकीय व और व्यावहारिक कार्य लिखे हैं। पुस्तक प्रत्येक मनुष्यको अपने पास रखनी चाहिये।

सूचना—फीस मनीआर्डर, खरीदारोंको जुदा देना होगा और पत्र भेजते समय जैनमित्रका हवाला अवश्य दो।

मिलनेका पता—
मैनेजर सारस्वत कम्पनी,
मेरठ सिटी.

दशलाक्षणि पर्वके लिये जैनग्रन्थोंकी तयारी । और कम मूल्य ।

प्यारे धर्मात्मा भाइयो ! भादोंका पवित्र महिना सन्मुख आ गया है । इन दिनोंमें प्रत्येक जैनीकी रुचि धर्म साधनकी ओर होती है । परन्तु सच्चा मार्ग दिखलानेवाले शुद्ध सुन्दर और सस्ते ग्रन्थोंके विना धर्मसाधना ठीक नहीं हो सकती । इस लिये हमने रातदिन परिश्रम करके खास इसी पर्वके लिये अनेक ग्रन्थ तयार कराये हैं । अभीतक पूजन पाठके जितने ग्रन्थ छपे थे, वे बहुत अशुद्ध थे और अशुद्ध पाठके पढनेसे पूजन अर्चनका जितना फल मिलना चाहिये, उतना नहीं मिलता तथा दोष भी लगता है । इसकारण अबकी बार अनेक भाइयोंके आग्रहसे हमने पूजन विषयक निम्नलिखित तीन चार ग्रन्थ निर्णयसागर प्रेसमें बहुत ही सुंदर सुपाठ्य तयार कराये हैं । अतः जिन भाइयोंको जरूरत हो, उन्हें एकबार मगाकर अवश्य ही दर्शन करना चाहिये, और पवित्र दिवसोंमें उनका पाठकर पुण्य उपार्जन करना चाहिये । भादों सुदी १४ तक भाषापूजासंग्रह १), चौवीसीपाठ १), दशलक्षणपूजा भावार्थ सहित ।), तत्त्वार्थसूत्रकी बालबोधनी टीका ॥।), भूधर जैनशतक=)॥ और जैनपदसंग्रह (दौलत विलास) ।=) ये साढेतीन रुपयेकी, छह पुस्तके एक साथ मगानेवालेको सिर्फ ३॥।) में भेज देंगे । अथवा तत्वार्थसूत्रकी बालबोधनी टीकाको छोडकर उक्त पुस्तकें लेनेवालेको बालबोधनी टीका मुफ्तमें उपहार स्वरूप भेजी जावेगी। डाकका खर्च ग्राहकोंको देना होगा । भादोंके बाद यह नियम नहीं रहेगा ।

भाषापूजासंग्रह ।

इस ग्रन्थमें पहले संस्कृत भाषा नित्यनियमपूजाके (जो अलग भी चार आनेमें मिलती है) सिवाय भाषा देवपूजा, सरस्वती पूजा, गुरुपूजा, अकृत्रिम चैत्यालयोंकी पूजा, सिद्धचक्रपूजा, पंचमेरुपूजा, नंदीश्वरपूजा, सोलहकारणपूजा, दशलक्षणधर्मपूजा, रत्नत्रयपूजा, निर्वाणक्षेत्रपूजा, वृन्दावनकृत समुच्चयपूजा, रामचन्द्रकृत समुच्चयपूजा, चन्द्रप्रभपूजा, शांतिजिनपूजा, पार्श्वनाथपूजा, और महावीरपूजाका संग्रह है । इसके सिवाय एक अपूर्व ग्रन्थ जिसका किसीने कभी नाम न सुना होगा इसके साथ लगाया है । यह ग्रन्थ कविवर हरिचन्द्रकृत पंचकल्याणमहामहोत्सव है । नानाप्रकारके छंदोंमें यमक और अनुप्रास मिलाकर भगवानके पांचों कल्याणका इसमें बडी उत्तमतासे वर्णन किया है । यमक मिलानेमें इन्होंने कविवर वृन्दावनजीका भी नम्बर ले लिया है । इस पुस्तकमें प्रत्येक मंत्र आह्वानन स्थापनादि तथा आचली टेक आदि सब जगह शुद्धतापूर्वक लिखी गई हैं । अष्टकोंमें जल सुगंध आदि प्रत्येक पदमें सब जगह आचली लगाई गई है, जिससे पत्र लौटनेका बारंबार कष्ट न उठाना पडे । पोथी साइजमें पुष्ट कागजोंपर बडे अक्षरोंमें ऐसी सुन्दरतासे यह ग्रन्थ तयार हुआ है कि, आप दर्शन करते ही प्रसन्न हो जावेंगे। मूल्य मात्र १) है । प्रत्येक मन्दिरमें यह पोथी रखनी चाहिये ।

कविवृन्दावनकृतचौवीसीपाठ ।

यह ग्रन्थ कई बार छपके बिक गया, परन्तु एक भी बार शुद्ध नहीं छपा । छपानेवालोंने इसकी कविताकी खूब ही दुर्दशा की । यह देख अबकी बार इसे हमने इच्छा न रहते भी भाइयोंके उपकारके लिये तयार कराया है । शुद्धताके विषयमें इतनेसे ही समझ लीजिये कि, खास कविवर वृन्दावनजीके हाथकी लिखी हुई प्रथम पुस्तकपरसे जो हमे काशीमें उन्हींके भंडारसे प्राप्त हुई थी, इसे छपवाया है । कागज पुष्ट और छपाई निर्णयसागरकी है । इसमें भी प्रत्येक अष्टकमें जगह २ आचली और प्रत्येक पदमें उन्हीं आदि शुद्ध मंत्र लगाये गये हैं, जिससे पूजा करनेवालोंको यथेष्ट फलकी प्राप्ति हो । ऐसा करनेसे यह ग्रन्थ पहले आकारसे बडा हो गया है । इसकी उत्तमताके साथ १) मूल्य कुछ और नहीं है । पोथी साइजमें यह भी बडी सुंदरतासे छपा है ।

सं० दशलक्षणपूजा प्राकृत जयमाला और अर्थ सहित ।

दशलक्षण पर्वमें समस्त सूत्रजीके पहले यह बांची जाती है, और एक धर्मका वर्णन प्रतिदिन सुनाया जाता है । दशलक्षणव्रत करनेवाले इसकी एक एक जयमाला रोज बांचते हैं । लोग प्राकृत नहीं जानते हैं और प्रतियां सब जगह शुद्ध नहीं मिल सकती हैं । इसलिये उन्हें इसके पढनेमें बडी कठिनाई होती है । सो इसके छप जानेसे वह कष्ट अब नहीं होगा । पंडित लालारामजीने इसकी टीका की है । और सब छोटे बडे इसे बांचकर अर्थ समझ सकेंगे । प्रत्येक मंदिरजीमें इसकी एक एक प्रति रहना चाहिये । मूल्य मात्र ।)

तत्त्वार्थसूत्रकी बालबोधिनी भाषाटीका ।

तत्त्वार्थसूत्र हम लोगोंका परम पूज्य और मान्य ग्रन्थ है । इसे प्रत्येक जैनी पढना पढाना अपना परम धर्म समझते हैं । इसके एकबारके पाठ मात्रमें एक उपवासका फल होता है । यह ग्रन्थ जैसा उपयोगी है और जैनधर्मके पदार्थोंका अटूट समुद्र जिस प्रकार इसमें भरकर गागरमें सागरकी कहावत सिद्ध की गई है, उसके कहनेकी जरूरत नहीं है । इसकी प्रशंसा प्रगट करनेके लिये इस ग्रंथपर जो अनेक टीकायें बनाई गई हैं, वे बस हैं । परन्तु खेद है कि, अभीतक इसकी कोई ऐसी टीका छपकर प्रकाशित नहीं हुई, जो पढनेवाले विद्यार्थियोंकी समझमें सहजमें ही आ सके । अभीतक, जो टीकायें छपी हैं, वे विशेष ज्ञानियोंके समझने योग्य हैं, बालकोंके लिये जिस क्रमसे होनी चाहिये, उस क्रमसे नहीं हैं । इस अभावकी पूर्तिके लिये हमने यह भाषाटीका तयार की है । यह टीका दशलक्षणीके दश दिनमें बांचनेके लिये भी बडे कामकी है । साधारण भाई भी इसके सूत्रोंका अर्थ बांचकर समझ सकते हैं । रत्नकरंडके समान इसमें भी पद पदका अर्थ किया गया है । और विशेष बातें भावार्थ तथा टीकामें लिखी गयी हैं । इसको एक बार पढ लेनेसे फिर सर्वार्थसिद्धि आदि बडी टीकाओंके पढनेमें मति हो जावेगी । यह टीका विद्यार्थियोंके बडे ही कामकी है । इसे विना गुरुके पढकर विद्यार्थी बडी सुगमतासे परीक्षा दे सकता है । जहांतक बना है, प्रत्येक पदार्थके लक्षण व स्वरूप इसमें संक्षेपतासे लिखे गये हैं । मूल्य मात्र १२ आने रक्खा गया है । पाठशालाओंके प्रबंधकर्ताओंको नमूनेके लिये इसकी एक एक प्रति जरूर मगानी चाहिये ।

नोट—ज्ञानार्णव तथा बृहद्द्रव्यसंग्रह ग्रन्थके तयार होनेमें कारणवश एक महिनेका विलम्ब हो गया है । इसलिये अभी कोई न मगावें ।

भक्तामरस्तोत्र ।

अन्वय, हिन्दी अर्थ भावार्थ और कविवर भाई नाथूराम प्रेमी कृत नवीन भाषा पद्यानुवाद सहित ।

इसमें रत्नकरंडके समान पहिले प्रत्येक श्लोकका अन्वयानुगत पदार्थ लिखकर फिर प्रत्येकका भावार्थ लिखा है । पश्चात् हरिगीतिका और नरेन्द्र छन्दमें उसकी सुन्दर कविता बनाई गई है, जिसमें मूलका कोई भी भाग नहीं छोडा है । यहां उदाहरणार्थ आठवें श्लोकका एकही पद्य हम नकल करते हैं,—

जिननाथ अस जिय जानिके, यह आपकी बिरदावली । है समझ थोरी तऊ प्रारंभ, करत हौं सु उतावली ॥ सो हरहिगी मन सज्जनके तुव प्रभावहिसों भली । जलबिन्दु ज्यों परि कमल दलपै, दुति धरै मुकताफली ॥ ८ ॥

टिप्पणीमें अनेक प्रतियोंसे इकट्ठे करके पाठान्तर और कठिन शब्दोंके अर्थ दिये हैं । श्रीमानतुंग महाराजका चरित्र भी दिया गया है । अभी तक ऐसी कोई भी टीका नहीं छपी । पाठशालाओंके विद्यार्थियोंके लिये यह बडे कामकी चीज है । मूल्य मात्र ।) रक्खा है ।

भूधरजैनशतक ।

सबके कंठ करने योग्य अतिशय सरल और हृदयद्रावक कविता भूधरशतक सरीखी दूसरी नहीं है । यह भूधरदासजीकी सम्पूर्ण कविताका चुना हुआ एक सार है । इतने सस्ते मूल्यमें यह कभी नहीं बिका । निर्णयसागरमें टिप्पणी सहित छपा है । मगानेमें शीघ्रता कीजिये । मूल्य ढाई आने ।

अलंकार चिन्तामणि ।

अभी तक यह ग्रन्थ सर्वथा लुप्त था । शोलापुरके सेठ सखारामजीने इसका जीर्णोद्धार कराया है । जैनियोंका यह सबसे पहला अलंकारका ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है । जैन साहित्यसागर कितना विस्तीर्ण है, यह इस ग्रन्थके देखे विना नहीं जाना जा सकता । सैकडों अश्रुतपूर्व प्राचीन ग्रन्थोंके इसमें उदाहरण दिये हैं । संस्कृत साहित्य प्रेमियोंको यह ग्रन्थ अवश्य देखना चाहिये । मूल्य ॥।)

और भी

बम्बई, कोल्हापुर, लाहौर आदि स्थानोंकी छपी हुई सब प्रकारकी जैन पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं । सूचीपत्र मगाइये ।

शुद्ध कशमीरी केसर अब नहीं मिलेगी

भाइयो ! नई केसर अब कार्तिकमें आवेगी । काश्मीरमें पुरानी केसर अब नहीं रही । जो है वह नकली है । रंग देकर बनाई हुई है । भादोंके लिये थोडासा संग्रह और है सो जिनको चाहिये शीघ्र मंगा लेवें भादोंबाद इसका बेचना बंद कर दिया जावेगा । क्योंकि असली केसर प्राप्त होना कठिन है ।

भाइयोंकादास—पन्नालाल जैन.

"कर्नाटक" प्रेस बम्बई ।

Registered No. B. 288.

नियमावली ।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सर्वत्र डाँकव्ययसहित केवल २) दो रुपया है ।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेटस्वरूप दिया जाता है ।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा माष्टरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है ।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटाने न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

जैनमित्र

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्यनियमके विरुद्ध न होंगे ।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्रोत्तरके लिये जवाबीकार्ड अथवा टिकट भेजना चाहिये ।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये ।

मैनेजर—जैनमित्र,
दूसरा भोईवाड़ा पो० कालबादेवी
बम्बई

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र ।

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः ।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते ॥

प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है ।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया ।

वर्ष ८ वां] आश्विन कृष्णा २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द। ता० २३ सितम्बर सन् १९०७ ईस्वी। [अंक २३ वां।

पुजारी स्तोत्र ।

दशलाक्षण पर्व था ! चतुर्दशीके दिन अन्यान्य सब कामोंको गौण करके प्रातःकालही मैं स्नानादि करके जैन मदिरमें भगवद्दर्शनके लिये गया। मन्दिरका गर्भगृह भव्यजनोंसे ठसाठस भरा हुआ था। एक ओर भक्त जन कविवर द्यानतराय कृत पूजाका पाठ उच्चस्वरसे उच्चारण कर रहे थे। और अपनीअपनी समझके अनुसार सबही कोई आपको तानसेनका परदादा अथवा गंधर्वसेन बनाने की कोशिश कर रहे थे, दूसरी ओर एक परदे की ओटमें स्त्रियां बैठी हुई थीं। उनमेंसे कोईतो अपने २ वस्त्राभूषणोंकी प्रशंसामें मशगूल थी, कोई चौका चूल्हेकी बातें करती थीं, कोई अपने २ पतियोंका दुःखसुख रो रही थीं। और कोई २ महाभाग्या जो पढी लिखी थी, उन कर्कश स्वरोंके साथ अपने कोमलकंठ मिलाकर पाठ पढ़ावती थीं। तीसरी ओर अर्थात वेदीके सन्मुख शुभ्रवस्त्रधारी पुजारियोंकी श्रेणी थी। जो जिनेन्द्र देवको चारों ओरसे घेरे हुए थी। और दर्शनाभिलाषी जीवों पर वही उपकार करती थी, जो दर्शनावरणी कर्म आत्माके साथ करता है। दर्शकोंकी नजर बचाकर बारंबार प्रभुदा कुमुदवनमें भेजती हुई दृष्टि उन्हें परागके लोभी भौंरों की उपमासे भूषित करती थी। पूजा पढ़ने वालोंके साथमें उनका गुण २ करना जो हमारी उक्त उपमाको और भी आनन्दकारी बनाता था। मैंने यह दृश्य देखकर सोचा, चलो जी तुम्हें इस झगडेसे क्या सम्बन्ध है, जो कर्त्ता सो भोगता, क्यों कि देवद्वारे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति। तुम्हें तो दर्शनसे मतलब है, सो करो, और अपनी रास्ता मापो। इसी विचारसे मैंने णिसही णिसही मंत्रका उच्चारण किया। बूढे पुराने लोगोंके मुंहसे सुन रक्खा है कि, इससे उच्चारणसे यदि कोई देव आदि भगवान्के सम्मुख हो, तो, एक ओर हो जाते हैं, परन्तु उस दिनतो वे नररूपधारी पुजारी भी अलग नहीं हुए। इससे मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने बहुत चाहा कि, कोई पुजारी महाशय जरा भी संधि देवें, तो मैं भगवानका रूप देखलू। परन्तु उन्हें दया न आई। आखिर मैंने उस समय दर्शनस्तोत्र पढ़ना फिजूल समझकर निम्नलिखित पुजारी स्तोत्रका पाठ करना प्रारंभ किया।

हे शुभ्रवस्त्रधारी पुजारियो ! तुम्हें बारंबार नमस्कार हो। बगुलोंके समान तुम्हारी लीलाका पता पाना बड़ी टेढी खीर है। नहीं जाना जाता कि, तुम योगिसुलभ मुद्रा बनाये हुए भगवद्भक्तिमें तल्लीन हो, अथवा किसी दूसरी ही चिन्तामें एकाग्र हो रहे हो। अतएव हे बकभक्तो ! तुम धन्य हो।

हे पंचमकालके धर्माधिकारियो ! तुम्हें शतवार नमस्कार हो। शुभ्र मेघोंके समान निरर्थक ऊष्मा बढानेके सिवाय तुममें एक बूंद भी सच्ची भक्तिकी दिखलाई नहीं देती है। तौ भी भगवानके दरबारमें तुम्हें सबके आगे आसन मिलता है, जिससे लोगोंको भगवानके दर्शन भी दुर्लभ हो जाते हैं। काले मेघोंको हमने गर्जन करते हुए अनेकबार सुना है, परन्तु तुम सफेद होकर भी कभी २ गगनभेदी नाद करते हो। अतएव अचरजकारियो ! तुम धन्य हो।

हे धर्मध्वजो ! तुम्हें सहस्रवार नमस्कार है। तोतोंकी समान तुम्हारी राम २ की रटन सुनकर लोग समझते है कि, तुमश्रद्धालुओंकी नाक हो। और ज्यादा पढ़े लिखे न होनेपर भी उन पंडितोंसे अच्छे हो, जो जिन पूजामें खडे होनेसे जी चुराते है। परन्तु तुममेंसे अनेक ऐसे भी हैं, जो दर्शनीय बननेके लिये धर्मात्माओंमें अपना नाम लिखानेके लिये और शायद सट्टेमें ज्यादा नफा उठानेके लिये यह सब आडम्बर रचते हैं। अतएव हे मायावियो ! तुम धन्य हो।

हे वेषविन्यास—प्रिय महात्माओ तुम्हें लक्षवार नमस्कार हो ! तुम्हारे पूजा पाठका अतिशय शुद्ध उच्चारण सुन सुनकर उन पाठोंके बनानेवाले स्वर्गस्थित कवि लोगोंकी आत्मायें बड़ी लज्जित

होती है कि, हाय ! हम लोगोंने इन पाठोंको प्रारंभमें ही ऐसा शुद्ध क्यों नहीं बनाया ? तुम्हारे ओं ह्री आदि मंत्रको सुनकर जिसमें संस्कृत और भाषा दोनोंकी ही बेहद मिट्टी खराब की जाती है, अच्छे २ व्याकरणाचार्य कौमुदीके पन्ने उलटने पुलटने लगते हैं, तुम्हारे कंठसे निकलते हुए छन्दोंमें रबर सरीखी वृद्धिन्हास शक्ति देखकर कविगण अवाक् हो जाते हैं, और कभी २ आकाश पातालके कुलाबे मिलानेवाली तुम्हारी अर्थ करनेकी विलक्षण चतुराईको देखकर पंडितगण कानमें उंगलियां डालते हैं । अतएव हे प्रकाण्ड पंडितो ! तुम धन्य हो ।

हे भगवान्के नजदीकी देवताओ ! तुम्हें अनन्त-वार नमस्कार है । तुम केवल भगवान्के ही नहीं किन्तु भागवानोंके भी पक्के भक्त हो । ज्योंही तुम्हा-री नजर उन कल्दार दाताओं पर पडती है, त्योंही एक रकाबीमें अष्टद्रव्य सजाकर तुम अर्घ लेके आगे दौडते हो । मानों शेठजीके ही अर्घ चढ़ाना तुम्हारा इष्ट है । उस समय तुम्हें यह आशा जरूर रहती है कि, शेठजी आज खरीद बिक्रीके लिये अवश्यही कुछ आज्ञा देंगे । कभी २ शेठानियोंको भी तुम अर्घ देते हो । परन्तु न जाने उन्हें शेठजीसे तुम्हारी सिफारिश करनेकी याद रहती है, या नहीं ।

इस प्रकार कहांतक कहें, हे पुजारी महाशयो ! तुम्हारी महिमा अपरम्पार है । जिसे वर्णन करनेके लिये हमारे पास अवकाश नहीं है । तौभी आशा है कि, आपलोग इस स्तोत्रपर विचार करेंगे । इस-के उपहारमें मै केवल यही चाहता हूं कि, आप-लोग शास्त्रकी आज्ञानुसार वेदीके सम्मुख खड़े न हुआ करें, जिसमें आपके दर्शनोंके साथ २ भगवद्-र्शनकी प्राप्ति हमको हो सके । और भूलसे यदि इस स्तोत्रमें कुछ अयुक्त कहा गया हो, तो क्षमा करें । क्योंकि, आपलोगोंकी मन्दिरव्यापिनी शक्ति बहुत प्रबल है । उससे मैं बहुत डरता हूं ।

स्तुतिभक्तिं न जानामि नैव जानामि पूजनं ।
विनोदेन प्रवक्ष्यामि क्षमस्व पूजारिगण! ॥

भवदीय—भक्त ।

भूल हो गई है—२१ वें अंकमें मेरे नामसे जो लेख छपा है कि, सोहनलालजीकी माताने रुपया देनी स्वीकार नहीं किया । वह सर्वथा गलत है । मुझसे हुई है, आप क्षमा करें । मुकुरचन्द

जैनमित्र.

आश्विन कृष्णा २ श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४३३
ता० २३ सितम्बर सन् १९०७ ईस्वी ।

सम्पादकीय टिप्पणियां ।

खम्मामि सव्व जीवाणं
सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूदेसु
वैरं मज्झ ण केणवि ॥

श्री सोलह कारण, दशलाक्षण, रत्नत्रयादि पर्वोंको आनन्दमङ्गलपूर्वक समाप्त करके हम अपने ग्राहकों, अनुग्राहकों, सहायकों, लेखकों और पाठकोंसे क्षमाकी प्रार्थना करते हैं । आशा है कि, सम्पूर्ण महाशय मन वचन कायकी शुद्धतापूर्वक उत्तम क्षमा प्रदान करेंगे ।

लाटसाहबका उत्तर और श्रीसम्मेद शिखरजीकी रक्षा ।

जो विचारते थे, वही हुआ । वर्तमानमें सरकारकी न्यायपद्धतिने जिस प्रकार करवट बदला है, लाटसाहबने उसीका अनुसरण करते हुए उत्तर दे डाला । लाटसाहबके उत्तरमें बाहरी सहानुभूति दिखलानेवाले शब्दाडम्बर और "रामाय स्वस्ति और रावणाय स्वस्ति" के गूढ तत्त्वके सिवाय और कुछ भी नहीं है । उत्तरका साराश गताङ्कमें प्रगट कर दिया गया था । इस अंकमें उसका सम्पूर्ण अनुवाद प्रकाशित किया जाता है । जिन भाइयोंको सरकारी न्यायकी श्रद्धाके कारण हमारे कथनमें सन्देह हो वे उसे पढकर संतोष प्राप्त करें, और देखें कि, उनकी न्यायी गवर्नमेंटने चौदह लाख जैनियोंके सुकोमल हृदयपर किसप्रकार वज्राघात करनेका उपक्रम किया है । पहले कई प्रतिष्ठित पुरुषोंके कहनेसे विदित हुआ था कि, लाटसाहबके उस मुकद्दमेमें जो उनके उत्तरके अन्तमें लटकाया गया है और जिसका सारांश यह है कि "वह मैं अन्तिम आज्ञा नहीं देता हूं ।" कुछ आशाका स्थान बाकी है, परन्तु अब वह ख्याल भी जीसे निकाल देना चाहिये । सरकारने एक प्रकारसे निश्चय ही कर चुकी है कि, वह पर्वत सेनेटेरियम बनाया जावेगा । परन्तु क्या हम लोग इस अन्यायका कुछ भी प्रतीकार नहीं कर सकेंगे ? क्या हमारा पवित्र स्थान सचमुच म्लेच्छोंका विश्राम विहार स्थल बन जावेगा, और हम लोग देखते रहेंगे ? नहीं, हमें प्राणार्पणसे पर्वतरक्षाकी चेष्टा करनी होगी । रक्षाका मार्ग अब भी बाकी है । हम तो चाहते थे कि, शान्तिप्रिय जैनप्रजाको सरकारके विरुद्ध खडे होनेका अवसर न आवे । परन्तु अब उपायान्तर नहीं है । सरकारके विरुद्ध मुकद्दमा चलाये बिना सिद्धिकी आशा नहीं रही । इसलिये अब हम सबको एकत्र होकर हाईकोर्टसे लेकर प्रिवीकौंसिलतक मुकद्दमा लडनेके लिये तयार हो जाना चाहिये । जिस राज्यमें किसी एक मनुष्यका भी दुखाना अपराध समझा जाता है, उस राज्यमें चौदह लाख जैनियोंके चौदह लाख हृदय दुखाना क्या न्याय समझा जावेगा ? अथवा जिस राज्यमें जैनियोंकी वस्तीमेंसे भी कोई कसाई मासकी टोकरी नहीं ले जा सकता है, उस राज्यमें क्या जैनियोंके पवित्र तीर्थपर साहब लोगोंका मद्यमास भक्षण करना अपराध नहीं समझा जावेगा ? नहीं ऐसा समझनेके लिये अभी कोई कारण नहीं है । किसी प्रजाका जी दुखाना राज्यके लिये कितना भयंकर है । और भारतवासियोंकी समझमें धर्मकी कीमत प्राणोंसे कितनी अधिक है अंग्रेज अधिकारियोंमें इस तत्त्वके जाननेवाले लोगोंका अभाव नहीं हो गया है, तो अवश्य ही जैनियोंका उनके पवित्र पार्श्वनाथ पर्वतपर जो स्वत्व है, वह सदाके लिये स्थिर रक्खा जावेगा ।

श्री सम्मेदशिखरजीकी तेरहपथी कोठी ।

भादों वदी ४ को मधुवनमें जो एक विराट सभा हुई थी । और तेरहपंथी कोठीका प्रबन्ध करनेके लिये जो खास सज्जनोंकी कमेटी बनाई गई थी, उसके समाचार गतांकमें प्रकाशित हो चुके हैं । हर्षका विषय है कि, कमेटीको अपना कार्य प्रारंभ करनेका उपक्रम हुआ है । शेठ परमेष्ठीदासजी तथा बाबू बच्चूलालजी आदमी कलकत्ताकी ओरसे एक सूचना प्रकाशित हुई है । उसमें लिखा है कि, तेरहपंथी कोठीमें जो आय पूजन होता है, उसके हिसाब कितावका कुछ पता नहीं है, इसलिये अब आगे जो भाई उक्त कोठीके भंडारमें चन्दा रुपया, उपकरण आदि देना चाहें वे शिखरजीकी वर्तमान कोठीपर न भेजकर शेठ हरसुखराय अमोलकचन्दजी कलकत्ताके नामसे भेजें, और रसीद मंगावें । जब तक तेरहपंथी कोठीका प्रबन्ध नहीं हुआ है, तब तक उसके भंडारमें रुपया आदि देना बडी भारी मूर्खता है । यह बात प्रत्येक मनुष्य समझ सकता है । क्योंकि भंडारोंमें जो रुपया दिया जाता है, वह सद्व्यय करनेके लिये दिया जाता है । यदि उसका दुरुपयोग होता है, तो हम क्यों अपने कौडी २ एकत्र किये हुए द्रव्यको बहा देंगे । यदि हमारे तेरहपंथी भाई उक्त सूचनाके अनुसार बर्ताव करेंगे और कमेटी कार्यतत्परता दिखलावेगी, तो वीसपंथी कोठीके समान इस कोठीका प्रबंध भी शीघ्र हो जावेगा ।

श्रीसम्मेद शिखरजीपर लाट साहबके बूट ।

हमको यह सुनकर अतिशय दुःख हुआ कि, ता० २८ अगस्तको जब छोटे लाट साहब श्रीसम्मेद शिखरजीका निरीक्षण करनेके लिये गये थे, तब चमडेके जूते पहने हुए गये थे । हमारी ओरके जो प्रतिनिधिगण साथमें थे, उनमेंसे किसीकी भी यह हिम्मत न हुई कि, लाट साहबको ऐसा करनेसे रोक देवें । साहबी भयके मारे पर्वतकी सारी पवित्रता और भक्ति प्रतिनिधियोंके हृदयसे कूच कर गई । सुनते हैं, जिस समय लाट साहब कपडे आदि पहनकर तयार हुए थे । उन्होंने उपस्थित प्रतिनिधियोंसे पूछा था कि, क्यों मै अब तयार हो गया चलूं ? परंतु किसी महाभाग्यने नम्रतासे भी यह न कहा कि, हुजूर ! यहां चमडेके जूते पहनकर चलना हम लोगोंके विचारसे विरुद्ध है । हमको इससे कष्ट होता है । हमारे मुखियोंकी यह कितनी बडी भारी भूल है ? धर्मक्षेत्रकी रक्षा करनेके लिये और उसकी पवित्रता सिद्ध करनेके लिये क्या ऐसी ही कमहिम्मती और धर्माभिमानशून्यतासे काम लिया जाता है ? जिन्हें हुजूरकी मर्जीके विरुद्ध एक बिंदु विसर्गमात्र भी कहनेका साहस नहीं हो सकता, क्या ऐसे ही लोग हमारे अग्रनेता बननेके योग्य हैं ? हमने यहांतक भी सुना है कि, लाट साहबने चलते समय पूछा था कि, क्यों इस तरह चलनेमें कुछ हर्ज तो नहीं है ? तब किसी मममशिरसिमर्पितं देहि पदपल्लवमुदारम् गीतके प्रेमीने उत्तरमें

कह दिया था, हुजूरके इस तरह जानेमें कोई हर्ज नहीं है। अर्थात् यह देवस्थान हुजूरके बूट देवोंसे अधिक पवित्र नहीं है। और इसी लिये श्रीमान अण्णापाफड़याया चौगुलेने जब सीतामालेपर साहबसे जूता पहननेके कारण दुःख प्रगट किया था, तब उन्होंने कहा था कि, मेरा अपराध नहीं है, आप लोगोंने उस समय क्यों नहीं रोका। यद्यपि हमको इस बातपर विश्वास नहीं होता है कि, लाट साहबके पूछनेपर भी किसीने "आपके चलनेमें कोई हर्ज नहीं है." यह कह दिया होगा। परतु यदि ऐसा हुआ है, तो बड़ी ही लज्जाकी बात है। ऐसी खुशामदको धिक्कार है सहस्त्रवार धिक्कार है, जो धर्मका घात होता हुआ देखकर भी गला नहीं छोड़ती है। यह उसी खुशामदका ही फल है, उसी बुद्धिका ही फल है (जिसने लाट साहबको जूता पहने हुए जानेसे नहीं रोका था) जो लाट साहबने अपने उत्तरमें नि संकोच होकर कह दिया कि, सारा पर्वत पवित्र नहीं हो सकता है। खुशामदी महाशय तो समझते होंगे, हमारी इस प्रवृत्तिसे लाट साहब प्रसन्न हो जावेंगे, परतु यहा उलटा ही फल हुआ। न जाने हमारे देशसे इस सर्व नाशकारिणी खुशामदका काला मुंह कब होगा, और उसके स्थानमें कल्याणकारी धर्माभिमान, देशाभिमान, कब विराजमान होगा।

लाट साहबका उत्तर।

शिखरजीके मामलेमें सरकारसे न्याय मिलनेकी बहुत कुछ आशा थी। बल्कि लाट साहबका उत्तर सुनकर भी कई लोग निराश नहीं हुए थे। परंतु लाट साहबका उत्तर खासा विषकुम्भ पयोमुख है। उस मीठा समझना बड़ी भारी भूल है। अब जो लोग उनके अन्तिम उत्तरकी ओर टकटकी लगाये हुए हैं, उन्हें भी आशा छोड़ देना चाहिये। क्योंकि वर्तमानमें अंग्रेजी राज्यका सूत्र जिन लोगोंके हाथमें है उन लोगोंकी न्याय-पद्धति कुछ और ही प्रकारकी हो गई है। अब लोग अंग्रेजोंके असली स्वरूपको जान गये हैं। वे सहजमें सीधे होनेवाले देवता नहीं हैं। वे अपना विचार न बदलेंगे और बंगले बनानेकी हट कदापि न छोड़ेंगे।

गवर्मेंटकी मुख्य कमाऊ पुत्रिया E.I.R. और B.N.R. कंपनियां अपने हेडआफिस बनाना चाहती हैं। और बहुत से रेल्वेके कर्मचारी अंग्रेज आदि रहना चाहते हैं। गोमोहा दोनों लाइनोंका जंकशन है। वहां स्टेशन भी बड़ा बनाया गया है। ईसरी स्टेशन निमोनियाघाटसे बहुत बड़ा है। और इसी पर्वतके कारण बी. एन. आर. ने भी अपना स्टेशन बनाया है। सो ऐसा समझना चाहिये कि, अब जैनियोंको इन प्रबल शक्तियोंका मुकाबिला करना होगा। सुना जाता है कि, सरकारकी ये प्यारी बेटिया गुप्त रीतिसे अपना जोर लगा रही हैं। शायद यही कारण है कि, गवर्नमेंट गरीब जैनी प्रजाके धर्मरूपी प्राणोंकी हत्या करनेमें जरा भी नहीं शर्माती है।

लाट साहब कहते हैं कि, पालगंजके राजा पार्श्वनाथसिंह सम्मेदशिखरके स्वामी हैं। परन्तु यथार्थमें राजा पालगंज वहाके ऐसे स्वामी नहीं हैं, जो जैनियोंके विरुद्ध होकर कोई कार्यवाही कर सकें। वे पर्वतकी देखरेख करनेवाले मैनेजर मात्र हैं। जो पर्वत हजारों लाखों वर्षसे जैनियोंके अधिकारमें है, उसका मालिक क्या एक २०० वर्षका स्थापित हुआ पर्वत राज्य हो सकता है? कभी नहीं। जो जमीन २० वर्ष भी किसीके कब्जेमें रहती है, वह उसीकी हो जाती है, चाहे उसका मालिक दूसरा ही हो। फिर हजारों वर्षसे जो पर्वत जैनियोंके अधिकारमें चला आ रहा है, उसपर क्या एक कलके राजाका स्वत्व साबित हो सकता है? और हजारों वर्षका स्वत्व छीन लिया जा सकता है? क्या यह बात किसीकी समझमें आ सकती है। जिस पहाडको हम हजारों वर्षसे पूजते आये हैं। और जिसका शास्त्रोंके द्वारा पूजना सिद्ध है, उसको अपना सिद्ध करनेके लिये हम लोग और दूसरा सुबूत क्या दे सकते हैं? क्या पूजन वन्दन करना कोई सुबूत नहीं है? हमारी समझमें तो अभीतक जितनी कार्यवाही हुई हैं, सबही नाजायज हैं। क्योंकि पर्वतपर हक हमारा है। वहा बगले बनानेके लिये जमीन देनेवाले राजा पालगंज कौन हो सकते हैं? राजा स्वयं दिगम्बर जैनी हैं। और इसके सिद्ध करनेके लिये इतना ही प्रमाण बस है कि, उनके घरमें एक दिगम्बरियोंका मन्दिर है। और पंचायतियोंका यह नियम है कि, जो चीज धर्मार्थ अर्पण की जाती है, उसपर पंचायती हक रहता है, न कि उसके देनेवालेका अथवा मालिकका। बल्कि हमारे यहां तो पंचायतियोंको यहातक अधिकार है कि, अगर कोई जातिच्युत कर दिया जावे, तो वह मन्दिरमें नहीं आ सकता, चाहे वह उस मन्दिरका मालिक ही क्यों न हो। अतएव राजा पालगंज पर्वतके मालिक समझ भी लिये जावें तो भी वे उसके अधिकारी नहीं हो सकते। वे समस्त जैनियोंके प्रस्तावको माननेके लिये बाध्य होंगे और उनके उत्तराधिकारी भी पंचायती नियमका उल्लंघन नहीं कर सकेंगे।

राजा पालगंजके साथ श्वेताम्बरी भाइयोंने जो शर्तें की हैं, उसका कारण यह है कि, राजा स्वयं दिगम्बरी हैं। और जब राजा दिगम्बरी हैं, तब दिगम्बरियोंके हक स्वयंसिद्ध हैं ऐसी अवस्थामें श्वेताम्बरी भाइयोंने १५००) सालाना देकर राजासे अपने धर्मकार्यके लिये जो हक सम्पादन किये हैं, उनसे राजाका सर्वाधिकार सिद्ध नहीं हो सकता। इसके सिवाय दिगम्बरी लोग चढी हुई द्रव्यको निर्माल्य समझते हैं, इस लिये वे उस द्रव्यको उठाना अच्छा नहीं समझते हैं। परन्तु श्वेताम्बरी लोग उस द्रव्यको एकत्र करके बेच दिया करते हैं और उसके बदलेमें राजा पालगजको ठेकेकी तौरपर सालाना रुपया देते हैं। परन्तु इससे राजाका यह अधिकार सिद्ध नहीं हो सकता कि, वह स्वतंत्र रूपसे पर्वतका स्वामी है। क्योंकि जैसा ऊपर कह चुके हैं कि, वह दिगम्बरी है और पंचायती नियमके अनुसार वर्ताव करनेके लिये बाध्य है।

इसे सारा संसार जानता है कि, पार्श्वनाथ पर्वत जैनियोंका है। और हजारों वर्षसे वे उसकी पूजा करते हैं। इतनेपर भी जब आज सरकार हमसे पूछती है कि, अपना स्वत्व प्रगट करनेवाला कोई लिखित सुबूत पेश करो। तब कल वह प्रत्येक स्थानके मन्दिरोंके पास कसाईखाना अथवा शराबखाना खोलनेके लिये तयार होगी और उन मन्दिरोंके अधिकारी अथवा प्रबन्धकर्ता यदि ऐसा करनेका विरोध करेंगे, तो वह चट पूछेगी कि, तुम्हारा हक क्या है? पेश करो। यदि उसके पास कोई पट्टा आदि न होगा, तो आगे उस मन्दिरको उठा देनेका भी दावा करेगी। क्योंकि हजारों मन्दिर ऐसे देखे जाते हैं, जिनके हकके लिखित सुबूत उनके अधिकारियोंके पास नहीं हैं।

शिखरजीपर एक पुराना बंगला बना हुआ है, उसका उदाहरण देकर सरकार पूछती है कि, उसका विरोध जैनीयोंने क्यों नहीं किया परंतु इससे जैनी बंगला बनानेके विरोधी नहीं हैं, यह सुबूत नहीं हो सकता। एक आदमीको अन्यायपूर्वक फांसीपर लटकाते समय यदि उसके भाई

कोई उसका विरोध करनेको तयार न हो, तो उससे यह सिद्ध नहीं हो सकता कि, लोग फांसीपर लट-कानेके विरोधी नहीं है। सरकार अन्यायपर अ-न्याय करती है, और दूसरा अन्याय करनेके लिये पहलेकी मिशाल देती है, इससे सिवाय इ-सके कि, उसे दूसरा अन्याय करना ही है और क्या समझा जा सकता है ? जिस समय वह बंगला बना था उस समय ५७ के बलवेका आतंक लोगोंके जीमें बैठा हुआ था और लोग सरकारके विरुद्ध खड़े होकर लाभ उठानेके अंग्रेजी नियमसे भी अ-परिचित थे। इसी कारण उन्होंने वह अन्याय सहन कर लिया था, जिसे सरकार अब अपने पक्षका समर्थक बना रही है। अभीतक हम सम-झते थे, उक्त बंगलेमें कोई धर्म विरुद्ध कृत्य नहीं होते हैं. परंतु अब सरकार याद दिलाती है, और मालूम हुआ है कि, वहा अधर्माचरण होता है, तो क्या चिन्ता है, हम लोग अब भी उसके विरुद्ध मुकद्दमा चला सकते हैं और अपने धर्मकी रक्षा करनेके लिये हमारा यह कर्तव्य है।

अन्तमें यह कह देना भी उचित होगा, कि हम लोग शान्तिप्रिय है। हमको लड़ना पसद नहीं है हम केवल अपने धर्मकी रक्षा चाहते हैं। इसलिये अग्रेज प्रभुओंसे प्रार्थना करते है कि, हमारी चौदह लाख गर्दनोंपर छुरी मत चलाओ। हम लोग भूखे रह सकते हैं, गाली सुन सकते हैं, मार खा सकते है, और बड़े २ से बडे अन्यायोंको मौनपूर्वक सहन कर सकते है, परतु धर्मका घात होता हुआ नहीं देख सकते। एकवार उस निष्पक्षनीतिपर दृष्टिपात करो जिसके द्वारा वाडम साहबका फैसला किया गया था, और उसीका अनुमरण करो। जिससे संसारमें कीर्ति हो, और भारतवासी प्रजा तुम्हारे निष्पक्ष न्यायछत्रके नीचे निरन्तर रहनेके लिये अपने इष्ट देवोंसे प्रार्थना करती रहै।

कलकत्ता ता० ९-९-०७   मौजीलाल।

स्त्रीरक्षा।

(२)

गत ग्यारहवें अंकमें यह लेख अपूर्ण प्रकाशित हुआ था। तबसे अबतक इसके पूर्ण करनेका अव-सर नहीं मिला। परन्तु अब यह वर्ष समाप्त हो-नेको आया है, इस लिये इसको पूरा कर देना ही उचित प्रतीत होता है। नीति वाक्यामृतका प्रत्येक वाक्य बड़ाही गंभीर और अमृततुल्य आनन्दका देनेवाला है। इस लिये पाठकोंसे प्रार्थना है कि, वे नीति वाक्यामृतसे उद्धृत किय हुए लेखोंको अवकाशके समय खूब विचारपूर्वक बाचा करें। हमारा विचार है कि, अवकाश मिलनेपर इस उक्त ग्रन्थके एक दो लेखोंका आशय और भी प्रकाशित करेंगे।

किसी स्त्रीके घरमें जाना ऐसा भयंकर है, जैसे मेंढकका सर्पके बिलमें प्रवेश करना। परस्त्रीके घरसे आया हुआ पदार्थ कभी नहीं खाना चाहिये। राजाको चाहिये कि, वह अपने खाने पीनेके पदार्थोंकी रक्षा करनेके लिये स्त्रियोकी योजना न करै। अर्थात् रसवती (रसोई) सम्बन्धी कार्यकी देखरेख स्त्रियोंके जिम्मे नहीं रक्खे। चाचालता और स्वतंत्रता चाहनेवाली स्त्रियां ऐसा कौनसा अनर्थ है, जो नहीं कर सकतीं ? सुनते है कि, स्वतंत्रता चाहनेवाली मणिकुंडला राणीने विषमिले हुए मद्यगडूष (शरावके कुरले) से अपने पति अज राजाको मार डाला था। शूरसेन देशमें वसन्त-मतीने अलक्तसे रगे हुए अधरके संयोगसे किसीके प्राण ले लिये थे। और दशार्ण देशकी वृकोदरी नामक स्त्रीने सुरति समयमें विष लपेटी हुई मेखला (करधनी—तागडी) के सघर्षसे किसी कामी पुरु-षको यमलोक पहुचा दिया था। और भी इस प्रकारके अनेक उदाहरण हैं।

स्त्रिया अमृत और मदिरा (शराब) से भरी हुई वापिकाके समान क्रीडा सुखकी उपकरण हैं। उनका कार्य और अकार्यके देखनेमें क्या अधिकार है ? लड़के बच्चोंकी पालना करनेमे, शरीरका श्रृंगार करनेमें, गृहसम्बन्धी कार्योंमें, और पतिके शयन समयमें स्त्रियोंको स्वतत्रता है, अन्यत्र नहीं। अर्थात् ये कार्य स्त्रियोंको स्वतत्र होकर करने देना चाहिये. परन्तु अन्य कार्योंमें उन्हें परतत्र रखनाही ठीक है। स्त्रीमें अतिशय आसक्त होकर यदि उसे पूरी स्वतंत्रता दे दी जावे, तो वह तलवारके समान अपने पतिके विदारण करके उसके हृदयमें विश्राम लेती है। जो पुरुष स्त्रीके वशीभूत रहता है, वह नदीके प्रवाहमें पड़े हुए वृक्षके समान बहुत कालतक सुखसे नहीं रह सकता। मुसी (खड्गयष्टि) के समान मुट्ठीमें रहनेवाली स्त्री किस पुरुषको आन-न्दित नहीं करती ? स्त्रियोंको अत्यधिक व्युत्पन्न नहीं करना चाहिये अर्थात् बहुत ज्यादा नहीं पढ़ाना चाहिये। क्योंकि यद्यपि शास्त्रका उपदेश स्वभावसे ही अच्छा होता है, परंतु वह स्त्रियों और ख-स्त्रियों (हथियार बन्दों) के हृदयमें पहुंच कर अ-नर्थकारी हो जाता है।

वेश्या—प्रेम किसकी प्राणहानि धनहानि और मानहानि नहीं करता ? वेश्या धनका अनुभव करती है, किसी पुरुषका नहीं। क्योंकि कामदेवके समान रूपयौवन सम्पन्न पुरुषसे भी वह प्रीति नहीं लगाती, यदि वह धनहीन हो तो। वह पुरुष कभी सुखी नहीं हो सकता, जो अपने वीर्य और धनको वेश्याओंमें व्यय करता है। वह पशु-ओंसे भी महापशु है। जो अपने धनसे वेश्याओंका घर भरता है, वह वेश्यागामी पुरुष कितना ही धनाढ्य क्यों न हो, चिरकालतक सुखानुभव नहीं कर सकता। अच्छी तरहसे रक्षा की हुई और अपने घरमें रक्खी हुई भी वेश्या अपनी परपुरुषसंगमकी प्रकृतिको नहीं छोडती। लोभमें फंसकर दूसरे पुरु-षकी सेवा करती ही है।

जो जिसकी प्रकृति है, उसे विधाता भी नहीं मिटा सकते। खीर खिलानेपर भी क्या कुत्ता अप-वित्र आहार और हड्डिया चबाना छोड़ देता है ? दूधशक्कर पीता हुआ भी सर्प क्या अपने विषको त्याग देता है ? बन्दरको कितना ही पढाओ समझा-ओ, पर वह अपनी चपलता नहीं छोडता। गन्नेके रससे सिंचन की हुई भी नीम कड़वी रहती है।

क्षेत्र और वीजका विकार सतानमें भी उत्पन्न हुआ करता है। स्त्री और पुरुष दोनोंका विशुद्ध कुल, परम्पर प्रेम, सदा प्रसन्नता, अच्छे कार्योंमें समय व्यतीत करना और गर्भाधानके समय श्री सरस्वती-देवीके आवाहन मंत्रसे पवित्र किये हुआ परमान्न अर्थात् खीरका भोजन करना ये उत्तम पुत्ररत्न उत्पन्न करनेके उपाय हैं। अर्थात् इस प्रकार नियमपूर्वक चलनेवाले स्त्रीपुरुषोंके उत्तम पुत्र जन्म लेते हैं। असमान रूप कुल अवस्था—स्नेह—सदाचारवाले स्त्रीपुरुषोंसे अच्छी संतानकी आशा करना व्यर्थ है। गर्भावस्थामे स्त्रीको किसी प्रका-रका शारीरिक मानसिक कष्ट पहुंचाना बड़ा अन्याय है। गर्भकी रक्षा बड़ी सावधानीसे करनी चाहिये।

लाटसाहबके उत्तरका अनुवाद।

गृहस्थो ! तुम्हारा मानपत्र स्वीकार करनेसे मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है। जैनजाति कैसी शुभचिन्तक है, तुम्हारे पाससे इस विषयका विश्वास प्राप्त कर-नेकी कोई आवश्यता नहीं है। परन्तु केवल सरकारके साथही नहीं किन्तु सरकारी अफसरोंके साथ भी

तुमने जो उसमे सम्बन्ध जोड़ रक्खा है, उसकी ओर इस समय ध्यान आकर्षित करना अप्रासंगिक नहीं होगा । जैनजातिके दोनों सम्प्रदायोंके इतने अधिक प्रतिनिधिगण जिनमेंसे कितने एक हिन्दुस्थानके पृथक २ प्रान्तवासी जैनियोंके प्रतिनिधिस्वरूप और अनेक यात्राके लिये यहा आये हैं, तथा जो अपने यहां इस विषयकी चरचा करनेके लिये एकत्र हुए हैं, उन सबकी मुलाकातसे मुझे बहुत आनन्द होता है । तुममेंसे जो लोग कल टेकड़ीपर मेरे साथ गये थे, उन्होंने देखा होगा कि, हमको जो यात्री मिले थे, उनमेंसे अनेक लोग उस प्रान्तके थे, जिस प्रान्तसे मेरा बहुत कालतक सम्बन्ध रहा है, और उन्होंने मेरा बहुत सत्कार किया था । उसका कारण यह है कि, जैनियोंमें मेरे बहुत मित्र हैं ।

तुम कहते हो कि, पार्श्वनाथ पर्वतपर अंग्रेजोंके बंगले बननेके लिये बडे भारी विस्तारमें जमीन पट्टोंपर देनेकी जो योजना की गई है, उसे सुनकर हम लोगोंको बडी भारी चिन्ता हुई है, और एक मानपत्रमें उस दरख्वास्तका हेतु "पवित्रस्थलको सासारिक मौज शौकके स्थल" में बदला गया है । इस विषयमें मैं आज अन्तिम फैसला नहीं दे सकूंगा, क्योंकि ऐसे ऐसे विषयोंका विचार बहुत सावधान होकर करना चाहिये, और उस फैसलेको सावधानीसे नोट करना चाहिये । परन्तु तुम बहुत दूरसे मेरे साथ इस बातकी चरचा करनेके लिये आये हो, इसलिये इस विषयसम्बन्धी मै अपने यथार्थ विचार तुम्हें सुनाये विना जाने दूं तो मैं समझता हूं कि, तुम बहुत निराश होओगे । मैं जो अनुमान कर सकता हूं । उन्हें सीधी तौरसे और सब प्रकारसे तुम्हें बतलानेकी मेरी इच्छा है । कल तुम्हारे अनेक प्रतिनिधियोंके साथ मैंने इस प्रश्नकी चरचा की, उस समय तुममेंसे जो हाजिर थे, वे मेरे विचारोंका अनुमान कर सके होंगे । मैं उनका आगे जिकर करूंगा । और तुम एक या दो ऐसे मनुष्य जो इस विषय सम्बन्धी पूरी २ जानकारी रखते हों, तथा तुम्हारे विचार प्रगट करने वाले हों, इस विषय सम्बन्धी कोई नई बात छिड़नेपर मैं उनके साथ तत्सम्बन्धी सलाह कर सकूं, नियत करोगे, और उनका नाम तथा एड्रेस मुझे सूचित करोगे, तो मैं बहुत प्रसन्न होऊंगा ।

प्रारंभमें स्पष्टरीतिसे और वजन डालकर मैं प्रगट करना चाहता हूं कि, डिपुटी कमिश्नरकी दरख्वास्त तुम जिस प्रकारसे समझे हो, और उससे तुम्हें जो चिन्ता हुई है । उसके विषयमें मैं सहानुभूति रखता हूं । तुम पार्श्वनाथके पर्वतको हमेशा पवित्र समझते आये हो, और उसकी पवित्रता बनाये रखनेकी तुम्हारी इच्छा है । इस इच्छाके साथ मै सच्चे दिलसे सहानुभूति प्रगट करता हूं ।

डिपुटी कमिश्नरकी योजना ।

डिपुटी कमिश्नरने अपनी योजना जमींदारके हकका विचार करके गढ़ी है । उस योजनाका स्तंभ पार्श्वनाथपर्वत सेनेटेरियमके तौरपर उपयोगमें लानेसे अंग्रेज तथा हिन्दू दोनोंको लाभ होगा, इस विचारपर खडा किया गया है । पर्वतको पवित्र माननेवाले तुम लोग भी इस स्थलका सुन्दर दृश्य शीतल ऋतु तथा ठंडी हवा चाहते हो । तुममेंसे अनेक लोग बंगालसे सर्वथा अपरिचित हैं । परन्तु तुममेंसे अनेक सज्जन ऐसे भी हैं कि, जो मुझे यह प्रगट करनेमें अनुमोदक होंगे कि, बगालमें शीतल पर्वतकी आवश्यकता है । और अंग्रेजोंके लिये नहीं तो भी भारतवार्षियोंके लिये तो अवश्यही बगालमें सेनेटेरियमके लिये यह एक अतिशय योग्य स्थान है । हिमालय पर्वतकी चोटियोंपर जानेमें जो कठिनाइया पड़ती है, उनका यहा अनुभव नहीं करना पडता है । इसी प्रकार यहा ऋतुओंमें भी अधिक फेरफार नहीं होता है, और थोड़ेसे भी अवकाशमें लोग यहा आ जा सकेंगे, अतएव सेनेटेरियम बनानेकी योग्यता इस स्थलमें बहुत अधिक है ।

इसी कारण डिपुटी कमिश्नर साहबने अपनी योजना गढ़ी है । और जैसा कि मैंने प्रगट किया है, उसमें ऐसा बहुअंश जान पडता है, जिससे वह पसन्द होगी । परन्तु मैं फिर भी कहता हूं कि, इस पर्वतकी पवित्रता बन सके, वहातक रक्षा करनेकी तुम्हारी इच्छाकी ओर मैं सहानुभूति रखता हूं । कदाचित् डिपुटी कमिशनरने तुम्हारी लागनीपर पूरा विचार नहीं प्रगट किया होगा । परन्तु मै तुम्हें विश्वासपूर्वक बतलाता हूं कि, पार्श्वनाथपर्वतकी मुलाकात लेनेसे इस विषयके सम्बन्धमें मेरी तुम्हारी ओरकी हार्दिक सहानुभूति बहुत दृढ़ हो गई है । कुंथुनाथके मन्दिरके पास जो सुन्दर जमीन है, उसपर तथा चरणों और मन्दिरोंके निकट दूसरे प्रकारकी योग्यता रखनेवाले स्थलोंमें बंगला बांधे जावें तो उन्हें देखकर मैं बहुत दुखी होऊंगा । जिस समय तुम ध्यानमें अथवा पूजामें बैठे हो, उस समय तुम्हारा ध्यान ससारिक विषयोंकी ओर आकर्षित होवे, यह देखनेके लिये मैं सर्वथा राजी नहीं हूं ।

दो विचारणीय बातें ।

ऐसा होनेपर भी इस विषय सम्बन्धी दो बातें ऐसी हैं, जिन्हें ध्यानसे बाहर नहीं जाने देना चाहिये । और इन दो बातोंकी ओर मैं तुम्हारा ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । इस विषयके सम्बन्धमें कोई वाजिब फैसला जिसका कि, स्थायी लिखा जाना संभव है, करना हो, तो ये दो बातें ध्यानमें रखना चाहिये । पहली बात यह है कि, जिस टेकरीपर हम सब एकत्र हुए है, वह एक टेकरी नहीं, परन्तु टेकरियोंकी माला है । भारतीय जैन श्वेताम्बरोंकी ओरसे मुझे जो मानपत्र दिया गया है, उसमें उन्होंने बहुत वाजिब रीतिसे "पारसनाथकी टेकरी" इस प्रकार प्रगट किया है । परन्तु सामान्य रीतिसे दोनों मानपत्रोंसे उसे "टेकरी" बतलाई है इन दोनों शब्दोंका फर्क अच्छी तरहसे जान लेना चाहिये । टेकरीका पर्वतके साथ नहीं मिला देनी चाहिये । सम्पूर्ण पर्वतकी अतिशय सुन्दर टेकरीका तुम्हारे पुराने धर्मगुरुओंने पसन्द की, इस लिये गृहस्थो ! मैं तुम्हें मुबारिकवादी देता हूं । टेकरीपर ऐसे अनेक स्थल हैं, जो मकानोंके लिये बहुतही अच्छे हैं । परन्तु मैं उन स्थानोंपर मकानात बँधते देखकर बहुत दुखी होऊंगा । आसपास रहने वाले लोगोंकी तुम्हारे मन्दिरोंपर दृष्टि न पड़ने पावे, इस प्रकारकी रक्षाके लिये तुम दीवालें बनालोगे, तो मुझे उनसे संतोष नहीं होगा । किन्तु टेकरीपरके सम्पूर्ण मन्दिरोंके आसपासकी शान्तिता तथा चारोंओरका सुन्दर दृश्य रक्षित रखनेके लिये मैं तुम्हें सहायता करनेकेलिये प्रसन्न होऊंगा ।

इस हेतुसे मैंने जैसाकि ऊपर कहा है, उक्त टेकरीके मालिकके हकोंका विचार करना और उसका लाभ उठानेवालोंकी मार्फत उनके साथ रहकर काम लेना आवश्यक है । उक्त टेकरीकी मालिकीके विषयमें किसी प्रकारका विरोध नहीं है । वह जमीन्दारकी मालिकीमें है । तुम उस टेकरीपर पूजा करनेका लिखित स्वत्व रखते होओगे, और जमीन्दारके साथ इकरार करके तुमने कुछ स्वत्व सम्पादन किये होंगे, वे टेकरीपर पूजा करने देनेके ही नहीं किन्तु टेकरीके किसी भागपर मकान बनानेके योग्य जमीन पट्टेपर देनेका अपना

हक अमलमें नहीं लानेके लिये तुम उसे कहो, तो वह जमींदार उस हकका उपयोग नहीं करनेके लिये उसका पूरा बदला मांग सकता है, और तुम्हें वह बदला देना चाहिये ।

सम्पूर्ण पार्श्वनाथ पर्वत पवित्र नहीं है ।

जिस दूसरी बातकी ओर मैं तुम्हारा चित्त खींचना चाहता हूं, वह यह है कि, यद्यपि उक्त टेकरीकी पवित्रता तथा शान्तिता रक्षित रखनेकी तुम्हारी इच्छासे मेरी सहानुभूति है । तौ भी सम्पूर्ण पार्श्वनाथकी टेकरी एक समान रीतिसे पवित्र है, ऐसा माननेमें तुमसे मेरा मतभेद है । सारी टेकरी पवित्र बतलाई जानेकी बात जैनियोंके आगामी मुकद्दमेके साथ ठीक नहीं बैठती । टेकरीका साक्षात करनेवाला प्रत्येक मनुष्य जो कारण देख सकता है, उससे यह बात उलटी है । और तुम मुझे अतिशय मानके साथ कहनेकी आज्ञा दोगे, तौ मैं कहूंगा कि, यह विस्तृत विचार शास्त्रके विरुद्ध है । और जैनियोंने अभीतक जो प्रवृत्ति धारण कर रक्खी है, यह बात उसके भी विरुद्ध है । क्योंकि उनके वर्तमान प्रतिनिधि सारी टेकरीको पवित्र बतलानेकी जो इच्छा रखते हैं, वैसी पवित्रताका अभीतक दावा नहीं किया गया है । इस विषयके सम्बंधमें जो नोट किये गये है, उनपरकी कितनी एक स्वीकारताओंके विषयमे मै नहीं कहूगा, परतु मै यह बात विश्वासपूर्वक कहता हू कि, पार्श्वनाथ मंदिरके पूर्वकी सुंदर कतारपर जो अनेक मदिर है और हजारो यात्री उनकी वदना करते हैं । परतु पश्चिमकी ओर एक भी मदिर नहीं है । और उस ओरकी टेकरियोंपर एक भी यात्री नहीं जाता है । तीन दिनसे मैं यहापर हूं । और इस बीचमें प्रतिदिन जितने घंटे हो सके, मैंने इन टेकरियोंकी टोकोंपर व्यतीत किये हैं । और मै समझता हूं कि, मैं बहुत अच्छी रीतिसे यह बतला सकूंगा कि, तुममेंसे किसीने भी जो भाग नहीं देखे होंगे, उन भागोंपर मै गया हूं और उन भागोंका मैंने शोध किया है । तुम अपने पवित्र मंदिरोंके दर्शन करते हो, और उनके भीतर ध्यान धारण करके बैठतेहो, परंतु ऐसी अनेक टेकरियां, टोंकें और ऊंचे सपाट मैदान हैं कि, जिन्हें तुमने कभी नहीं देखा होगा, और जो तुम्हारे मन्दिरोंसे (अनेक मील) दूर हैं । उनमेंसे अनेक तो तुम्हारे मन्दिरोंकी जगहसे दिखाई भी नहीं देते हैं । इससे यह नहीं कहा जा सकता कि, वहां बसनेके लिये मकान बनानेसे तुम्हारी पूजा अथवा तुम्हारे ध्यानमें खलल पहुंचेगा, अथवा सासारिक जीवनकी ओर तुम्हारा ध्यान आकर्षित होगा ।

और जैसा कि मैंने कहा है, सम्पूर्ण टेकरी एक समान रीतिसे पवित्र है । और वह जैनियोंकी धार्मिक क्रियाओंके लिये ही पवित्र है ऐसी जो दलीलें की जाती हैं, वे यथार्थतासे विरुद्ध हैं । टेकरियोंके ऊपर चा का बगीचा तथा मजदूरोंके रहनेके लिये मकान हैं । टेकरीपर ग्राम तथा संस्थान हैं । टेकरीपर एक बडा बगला है जिसमें मैं ठहरा हूं । इसके सिवाय टेकरीपर फौजी सिपाहियोंके लिये सुखशान्तिकी छावनी है । यात्रियोंके मार्गके समीप सुअर चरानेका खेत तथा चर्बीका कारखाना स्थापित करके जैनियोंका जो मर्मच्छेद किया गया है, उसके साथ मैं अपनी सहानुभूति प्रगट नहीं कर सकता । मैं नहीं समझता कि, उक्त मुकद्दमेके इतिहासमें यह विषय बाचकर मुझे जितना बुरा लगा है, उतना किसी जैनीको बुरा लगा होगा । और तुम्हारी धार्मिक प्रीतिका घात स्पष्ट रीतिसे रद करनेवाला जजोंका फैसला बाचकर मुझे प्रसन्नता हुई थी । परन्तु मुझे कल जैनियोंने बतलाया था, और मुकद्दमाके समय भी जैनियोने कहा था कि यह धर्मघात करनेवाला उपद्रव जब तक खडा न हुआ था, तब तक चा के बागीचेके सम्मुख उनका विरोध नहीं था । कल जैनियोंने मुझे ऐसा भी बतलाया था कि, गावों तथा संस्थानोंके सम्मुख भी उनका विरोध नहीं था । क्योंकि ग्रामवासी निरापराधी हैं । और मन्दिरमें पूजा करनेवाले तथा ध्यान धरनेवाले लोगोंके कार्यमें उनकी बसीहतसे कुछ हरकत नहीं पहुंचती है ।

मुझे विश्वास है कि, सम्पूर्ण टेकरीको पवित्र प्रगट करनेका और केवल जैनियोंकी पूजाके लिये उसके रक्खे जानेका दावा भूलसे किया गया है । उस दावेके करनेमें मेरी बतलाई हुई बातें भुलाई जाती हैं । और यह भूल पार्श्वनाथका बडा भारी विस्तार और मेरे बतलाये हुए स्थल भूल जानेसे हुई है । और मेरी समझके अनुसार इस प्रकारका दावा करना अनुचित है । तुम्हारे मन्दिरों तथा यात्राके स्थलोंसे दूरकी जगहोंके सम्बन्धमें मैंने जो खुलासा किया है, उनके ऊपर मनुष्योंकी बसीहतसे टेकरीकी पवित्रता तथा शान्तिताको किसी प्रकारकी हरकत नहीं पहुंचती है । उनमें की बहुतसी बस्तियां ऐसी हैं, जिनका कभी विरोध नहीं किया गया है । और शेषके सम्बन्धमें कारण बतलाये जानेपर विरोध बन्द कर दिया गया है । तुम ध्यान लगाते हो, तथा पूजा करते हो, तब उस भागके मकानों की ओर तुम्हारा चित्त नहीं खिंचता है और कितने एक तो तुम्हारे पवित्र मन्दिरोंमेंसे दिखलाई भी नहीं दे सकते हैं । ऐसे मकानोंके सम्मुख विरोध करना अतिशय अनुचित है । और मै साथ हिम्मतके कहूंगा कि, संयोगोंको देखते हुए ऐसा करना स्वार्थपन है । पूर्व समयमें मकान बनानेका तुमने विरोध नहीं किया है, और मैं नहीं समझता हूं कि, भविष्यमें तुम उनके साम्हने विरोध करोगे । मैं ऐसी आशा नहीं दिला सकता हूं कि, इन स्थलों सम्बन्धी अपना हक अमलमें नहीं लानेके लिये मैं जमींदारको ललचानेकी कोशिश करूगा ।

ग्रहस्थो! इस विषयमें मैंने अपने विचार स्पष्ट रीतिसे प्रगट किये हैं । मैं खुलासा कर चुका हूं कि, यह मेरा अन्तिम फैसला नहीं है । परन्तु मुकद्दमे का इतिहास, भेजी हुई सैकडों अर्जियां तथा सरकारी दलीलें बाचके. और पार्श्वनाथ पर्वतका स्वय साक्षात्कार करनेसे तथा जैन जातिके प्रधान २ ग्रहस्थ यहा उपस्थित हैं, उनके साथ चरचा करनेसे मै कुछ अनुमान कर सका हू, उन्हें प्रगट किया है, मन्दिरोंके आसपास शान्तिता बनाये रखनेकी तथा ध्यान और पूजनके समय सासारिक जीवनकी ओर जाता हुआ तुम्हारा ध्यान रोकनेकी जो तुम्हारी इच्छा है, उसके साथ मेरी हार्दिक सहानुभूति है । परन्तु मैं समझता हूं कि, तुम्हें हानि न पहुचे. इस प्रकारका अपना हक अमलमें लानेवाले जमींदारको रोकनेकी कोशिश करना अनुचित है, ऐसा तुम स्वीकार करोगे । जमींदारके हितकी रक्षा करनेवालोंकी मार्फत तुम उसकी समझौती कर सकोगे ऐसी मुझे आशा है । जिससे अपने मंदिरोंके आसपास तुम जिस प्रकारकी पवित्रता तथा शान्तिता प्राप्त करना चाहते हो, वह तुम अपने तथा अपने वंशजोंके लिये प्राप्त कर सको. और इस प्रश्नका हमेशाके लिये स्थायी निबटेरा हो जावे ।

मेरा तथा लेडी फ्रेजरका तुमने जो जीजानसे सत्कार किया है, उसके बदले मैं तुम्हारा आभार मानता हूं । मैं आशा करता हूं, कि इस विषयका फैसला दूसरोंके हकोंका तथा जैनियोंकी धार्मिक प्रीतिका ख्याल करके किया जावेगा ।

दिगम्बर जैन परीक्षालय बम्बईका परीक्षाफल ।

प्रवेशिका प्रथम खंड ।

नम्बर	नाम प्रतिपालक समेत	स्थान	ग्रन्थ	पारितोषिक	प्राप्त नम्बर	पुरस्कारदाता।
१	मुन्नालाल फुन्दीलाल	ललतपुर	द्रव्यसग्रहजी	१)	६१	पंडित पन्नालालजी। मालिक जैनग्रथरत्नाकर
२	चतुरभुज रघुनाथ	,,	,,	२)	६७	,
३	महादेवप्रसाद मोतीलाल	लाडनू	,,	३)	६८	,
४	चुन्नीलाल शाहुकुवरजी	दि जैन बोर्डिंग स्कू० इन्दौर	लघुव्याकरण षडलिंग	३)	६०	फूलचन्दजी अजमेरा बम्बई
५	सीमधरदास अमनालाल	जयपुर	,	१)	४७	,
६	गोकलचन्द गणेशलाल	,	,,	२)	५६	,,
७	मालीलाल नन्दलाल		,	०	३४	,
८	मनोहरलाल पाटनी	,,	क्षत्रचूडामणि	३)	४१	विरधीचन्द चादवडजी बम्बई

प्रवेशिका द्वितीय खंड ।

१	चतुभुज रघुनाथ	ललतपुर	रत्नकरड श्रावकाचारजी	०	६२	
२	रामप्रताप खेतर्सींग	,		३)	७५	रामजीदास प्रभूदयालजी कानपूर
३	ठाकुरदास रामप्रसाद	,,	,,	०	५१	
४	कालूराम चौधरी	,,	,,	०	३८	
५	रामप्रसाद नन्हूल	,,	,,	०	३३ पास	
६	परमानन्दु बसोरे	,,	,	०	५८	
७	नमचद रामसरूप	कानपूर	,	०	४५	
८	मुन्नीलाल गुलजारीलाल	,,	,	१)	७०	ऐ
९	चन्द्रनाथ धरमापा	बेलगांव	,,	२)	७१	ऐ
१०	चुन्नीलाल कुवरजी	दि जैन बोर्डिंग स्कू० इन्दौर	,,	०	६६	
११	पन्नालाल भीमराज	,,	,	०	६२	
१२	नेमिचन्द मुखलाल	जयपूर	लघु व्याकरण तिङन्त	३)	३८	लीलाचन्द हेमचन्दजी हिरोली
१३	महादेव प्रसाद मोतीलाल	लाडनू	,	४)	५४	ऐ

प्रवेशिका तृतीय खंड ।

१	शान्तिनाना देसमाने	शोलापूर	तत्वार्थसूत्र	०	५६	
२	चंदापा जिनापा	,	,,	३)	७६	रामजीदास प्रभूदयालजी कानपुर
३	कोंडिबा दत्तात्रय	,,	,,	०	४०	
४	गणपति भाऊ कस्तूरे	,,	,,	०	६९	
५	माणिक गोविंद कटके	,,	,,	४)	७७	ऐ
६	शंकर पंढरीनाथ	,,	,,	१)	७४	ऐ
७	जसकौरी बाई बाप सम्मू- दयाल	कानपूर	,,	०	५१	
८	नेमिचंद सुखलाल	जयपूर	चन्द्रप्रभुकाव्य	२)	२४	लीलाचद हेमचंदजी हिरोली

परीक्षकोंके नाम ।

प्रवेशिका प्रथम खंड ।

द्रव्यसंग्रह—श्री. नाथूराम प्रेमी देवरी
लघुव्याकरण षडलिङ्ग—श्री पं नन्दलाल बम्बई
क्षत्रचूडामणि ४ लम्ब—बन्सीधर विद्यार्थी मोरेना

द्वितीय खंड ।

रत्नकरंडश्रावकाचार—वासुगोपाळशास्त्री शोलापूर
लघुव्याकरण तिङन्त—श्री पं नन्दलाल बम्बई

तृतीय खंड ।

तत्वार्थसूत्र सार्थ— { श्री भोलीलाल शेठी (परीक्षक) जयपुर
भरमण्णा बमगा उपाध्ये (निरीक्षक) बम्बई }
चद्रप्रभ काव्य १-२-३-४-५—श्री गौरीलालजी पंडित इंदौर

विशारद परीक्षा प्रथम खंड ।

सागार धर्मामृत अर्ध—कल्लापा भरमापा निटवे कोल्हापूर
(कौमुदी) व्याकरण स्त्रीप्रत्ययान्त-प यमुनादत्तजी मथुरा
(शाकटायन) ,, ,, प बंशीधरशास्त्री बम्बई
धर्मशर्म्माभ्युदय ५ सर्ग, वाग्भट्टालकार अर्ध } —प अमनलालजी प्रयाग
न्यायदीपिका तर्कप्रमाणान्त—प गौरीलालजी इंदौर

द्वितीय खंड ।

सागार धर्मामृतपूर्ण—श्री कल्लापा भरमापा निटवे— कोल्हापूर
(कौमुदी) व्याकरण चातुर्थिकान्ता—कृष्णाचार्य शास्त्री नागपूर
(शाकटायन) ,, ,, प बंशीधरशास्त्री बम्बई
धर्मशर्म्माभ्युदय १२ सर्ग, वाग्भट्टालकार पूर्ण } —प जवाहिरलालजी साहित्यशास्त्री जयपूर
न्यायदीपिका पूर्ण—प गोपालदासजी बरैया मोरेना

तृतीय खंड ।

सर्वार्थसिद्धि अ० १-२—प. बन्सीधर विद्यार्थी मोरेना
धर्मशर्म्माभ्युदय पूर्ण, क्षत्ररत्नाकर } —प बंशीधरशास्त्री अध्यापक बम्बई

चतुर्थ खंड ।

सर्वार्थसिद्धि ३-४-५-६—पं नरसिंहदासजी अजमेर
व्याकरण पूर्ण—पं किशोरीवल्लभ वैद्य बम्बई
जीवन्धरचम्पू ७ लम्ब—प नेमिजिनदास शास्त्री श्रवण बेलगुळ

पंचम खंड ।

सर्वार्थसिद्धि ७-८-९-१०—प बालबकम इंदौर
प्रमेयरत्नमाला पूर्ण—पं गोपालदास बरैया मोरेना

शास्त्रीय परीक्षा प्रथम खंड ।

जैनेन्द्रव्याकरण प्रथम अध्याय—पंडित गोपालदासजी मोरेना

सशोधन ।

रायपुर—फोरजाबादके पचोंने हीरालालजी ब्रह्मचारीसे उनकी बीमारीकी अवस्थामें ८ हजार छीन लिये हैं। यह बात गत २१ वें अंकमें अ. कमें अशुद्ध छप गई थी। मोतीलालकी जगह हीरालाल होना चाहिये। प्रकाशक

विशारद परीक्षा।

प्रथम खंड।

विद्यार्थियोंके नाम।	पाठशालाका स्थान।	सागार धर्मामृत अर्ध (१)	व्याकरण श्री प्रत्ययान्त(२)	न्यायदीपिका तर्कप्रमाणान्त (३)	धर्मशर्माभ्युदय वाग्भटालंकार अर्ध (४)
नन्दनलाल तोताराम।	बम्बई	३८	×	×	×
रामप्रसाद चुन्नीलाल।	,,	४८	८५	५७	४५
खूबचंद उदयरामजी।	,,	६५†	५५	८५*	९१*
गजाधर चुन्नीलाल।	,,	६०	५५	५५	६०‡
उल्फतराय भिकारीदास।	,,	६१‡	७५	६५†	८०†
खिरापा आणापा।	कोल्हापुर	६६*	६३‡	×	३५
बाबू तवनापा।	,,	५०	६०	×	४०
काळापा जिनापा।	,,	५४	७१†	×	४०
ए. बि शांतराजय्या धरणापा।	श्रवणबेलगुल	×	×	६०	×
शोल्वरसु पोमयऊ।	,,	×	×	६१‡	×
अनत राजय्या कक्षिपण्ण।	,,	×	×	५१	×

(१) इस विषयमें * ४) † ३) ‡ २) पारितोषिक परीक्षालयसेही दिया गया है

(२) इस विषयमें * ५) † ४) ‡ ३) श्री रेवचन्दधनजी गुजोटीवालोंकी ओरसे पारितोषक दिया गया है

(३) इस विषयमें पदमचद भूरामलजीकी ओरसे * ४) † ३) ‡ २) पारितोषक मिला है

(४) इस विषयमे हरीचन्द पदमचन्दजीकी ओरसे * ५) † ४) ‡ ३) पारितोषक दिया गया है

विशारद परीक्षा।

द्वितीय खण्ड।

विद्यार्थियोंके नाम।	उनके पाठशालाका स्थान।	सागार धर्मामृत पूर्ण अ	व्याकरण चातुर्थिकान्ता ब	न्यायदीपिका पूर्ण स	धर्मशर्माभ्युदय १२ सर्ग वाग्भटालंकार क
नन्दनलाल तोताराम।	बम्बई	३४‡	×	×	×
रामप्रसाद चुन्नीलाल।	,,	३८	३७	३४‡	५१
खूबचद उदयराम।	,,	४८†	६५‡	२७*	७६*
वासुदेव नेमिनाथ।	कोल्हापुर	×	६७†	×	३३ पास
कलापा आणापा।	,,	५२*	७४*	×	५५‡
पार्श्वदास राजाराम वैद।	जयपुर	×	४७॥	३५†	५८†

अ—इस विषयपर हरीभाई देवकरणकी ओरसे * ५) † ४) ‡ ३) पारितोषक मिला है

ब—इस विषयपर भी हरीभाई देवकरणकी ओरसे * ६) † ५) ‡ ४) पारितोषक मिला है

स—इस विषयपर * ५) † ४) ‡ ३) हेमचन्द साकलाजीका पारितोषक है

क—इस विषयपर माणिकचन्द पानाचन्दजीकी ओरसे * ६) † ५) ‡ ४) पारितोषक मिला है

विशारद परीक्षा।

खण्ड	नाम प्रतिपालकसमेत	स्थान	ग्रंथ	मार्क	पुरस्कार	पुरस्कार दाता
तृतीय	नन्दनलाल तोताराम	बम्बई	धर्मशर्माभ्युदय सतल्लाकर	६१	६)	माणिकचद पानाचदजी
चतुर्थ	,,	,,	सिद्धान्त कौमुदी	३६	८)	हरीचन्द पदमचन्दजी
चतुर्थ	,,	,,	जीवधर चम्पू	४४	४)	गोतमचंद नेमचन्दजी
पंचम	,,	,,	प्रमेयरत्न मालापूर्ण	३४	५)	गोतमचन्द लीलाचन्दजी
तृतीय	आणापा फडयापा चौगुले बी ए, एल, एल, बी.	बेलगाव	सर्वार्थसिद्धि अध्या. १–२	६६	५)*	
चतुर्थ	,,	,,	,, अ० ३,४,५,६	४०	३)	
पंचम	,,	,,	,, अ ७,८,९,१०	८३	८)	

* आपको स्वर्ण पदक देनेका प्रबंध किया गया है जो वार्षिक अधिवेशनके समय प्रदान किया जावेगा

शास्त्रीय परीक्षा।

निद्धामल खूबचंद	स्याद्वाद पाठशाला बनारस	व्याकरण जैनेन्द्र प्रथम अध्याय	४५	८)	नाथारंगजी गांधी
कुमारय्या पाणिहिमके	,,	,,	४४	७)	नाथारंगजी गांधी

प्राप्तिस्वीकार श्रीसम्मेदशिखरजी

ता १९ अगस्तसे ३ सितम्बर पर्यन्त

११८६७।≈)॥ पिछला जमा।
९≋) पचान आडोमा जि सागर।
१२) " शेरगढ जि. मथुरा।
६१) देवरीकलां (सागर)
१) गौरेलाल जैन विद्यार्थी माथुर लखनऊ।
५) सवाई सिंघई मूलचदजी कैमोरी जि जबलपुर।
१०) श्यामलाल जैन दरौली जि सारन।
१०) पचान अमरमौ जि. सागर।
२) " मडदेवरा पो शाहगढ।
१०) श्रीचद जैन चिलकाना जि सहारनपुर।
५) भाईरडलालजीकी पत्नी चिलकाना।
१००) पचान रियासत भोपाल।
१९॥) भगवानदासजीकी पत्नी चिलकाना।
१०) भाई हीरालाल हमराज व्यावर (नयानगर)
२५) बालदेलाल आत्माराम चिलकाना।
१३५) पचान चिलकाना।
७५) लाला होशयारसिंहजीकी पत्नी चिलकाना।
२१०) पचान कठूमर जि. अलवर।
१००) ,, कोलियाखेडा (भोपाल)
६००) पचान नयानगर व्यावर।
१००) लाला गिरनारी लालजी टेहरी। जि गढवाल।
५) सिंघई मूलचदजी देवरी कलां।
३॥≋) विद्यार्थी ९ सहारनपुर विद्यालय।
५०) पचानकन्नाद जि चालीसगांव।
१५) ,, जातरा।
१२५) ,, बिनौली जि मेरठ।
६०) ,, उडेसर जि मैनपुरी।
१३५) ,, हमन, मा–पायप्पापुजारी।
८०) ,, चिलकाना।
५००) ,, मूडबद्री मा स्वामी चारुकीर्तिजी पट्टाचार्य्य।
१११) ,, फतहपुर सीकर।
३४०।) ,, पौरवार मा पन्नालालजी।
७०) ,, कुटेसरा जि मुजफ्फरनगर।
२२५) आठ महाशय सुजानगढ।
३४) भाई परमानन्दजी डोंगरगढ जि रायपुर।
३६≈) पचान कटगी जि जबलपुर।
२५) दादा भरमप्पा हेरवाडे जि कोल्हापुर।
१५) पचान करीपुर जि सागर।
२०८।) ,, मोहोल जि शोलापुर।
१००) ,, कारंजा जि आकोला।
१२१) ,, शाहपुर।
४००) ,, झांसी।
१७५) ,, कामटी जि नागपुर।
१३।) ,, अबला जि टोंक।
५५) भाई घीसूलाल सेठी पिसागन जि अजमेर
२५॥।≤)॥पचान अनन्तपुरा जि सागर।
१३॥−)॥ ,, सिमरिया जि. सागर।
१२९॥≤) ,, कासगज जि एटा।
२४॥।) ,, [illegible] (बुंदेलखंड)
४७) ,, तारादेही जिला दमोह।
१०) भाई छेदीलाल मुलईलाल।

१००) पंचान वार्दाकुई ।
१००) ,, वसाका जि बाराबाकी ।
२३) सानन्द जि अहमदाबाद ।
५) भाई दरयावलाल गुलाबचन्द कामठी ।
५१) पचान भुसावल ।
३१) ,, छपरौली जि मेरट ।
१००) रा रा इन्द्रचरमदा पायप्पा हुमन ।
१७३॥) पचान रामगढ जि अलवर ।
१२५) ,, नोगावा ता रामगट ।
५३॥) ,, मुबारिकपुर ,,
९५) , अलावडा ,,
४०) ,, मिल्कपुर ,
१३) ,, बरखाडा ।
६४॥≈) ,, पथरिया ।
५३१) ,, खरडा उर्फ शिवपट्टन ।
३०) ,, तलवाहट जि झांसी ।
६४) ,, परांत जि शोलापुर ।
२०) ,, कुनपुरा पो महाराजपुर ।
२५) पचान टेवरी जि जबलपुर ।
६७≈) , राजाखेडा जि धौलपुर ।
२०५॥।) केकडी ।
५२) ,, महरू जि केक ।।
१०॥।≈।) ,, पीपलाज ,,
५) ,, वसून्दा ,,
५) ,, सदारी ,
५) ,, कादेरी ,,
७५) ,, दुधरी ,,
५१) भाई गनेशराज वन्छराज कालेडा जि केकडा ।
५०) पचान देवली जि केकडी ।
१२) ,, छावनी ।
३५॥) , बघरो जि केकडी ।
७) , देवगाव ,
१) , खडज ,
८५) , भीलाडा ।
२००) , इलचपुर ।
१००) ,, छबडा (टोंक)
५३॥-) अलीनगर जि गोरखपुर ।
३९॥-) ,, संपानेरी जि अजमेर ।
५२≡) , झांसी ।
२५०) ठकुरो, स्यामोली ओमर्वनी जि एटा
२३॥) पद्मावली पीर बार बादा ।
९) लाला गिरधारीलालजीकी पत्नी चिलकाना ।
५) , दीपचन्दजीकी पत्नी ,
३२८) पचान शिवपुर जि झांसी ।
३४) , खातौली जि झांसी ।
५०) चौधरी अमरसिंह धरमदास छतरपुर
१९) पचान फतहपुर सीकर ।
१६८) ,, पिरावा ।
१८॥) ,, गौरझामर जि सागर ।
१०) नारायण सेठ रावसाहब, सुलतानपुर
५०) सावलकोका अनन्त माडाहरला जि कोल्हापुर
१०१) पंचान नांदगांव ।
४४) ,, बडनेरा जि अमरावती ।
११।) ,, मखियाव अहमदाबाद)
४१) मूलचंदजी शराफ बरवासागर जि झांसी ।
१७॥।) पचान बघेरा जि अजमेर ।
५) लालजीराम स्कूल मास्टर रोहतकमंडी
३६२॥≈) पचान उदयपुर ।
५) नानावली बडेकरकी पत्नी मानगाव (कोल्हापुर)
२) दादा गोंदा पाटीलकी पत्नी मानगाव ।
१६३) पचान आवागढ जि एटा ।
१८) ,, मऊ पो नयागांव ।
३५) ,, लुवारी जि सुस्मारी ।
२५) अर्णसिंह ता वासिम ।
१०) चद्रयन वरमन भरमप्पा श्रवण वेलगुल ।
४१) पचान फरहा जि मैनपुरी ।
५०) मगमलाल काश्मीरीलाल करनाल ।
२०)पचान करडगाला चिकोडी ।
३५) जवाहरलाल नारायणदास बाराबांकी ।
१००) पचान पूसद जि एओतमाल ।
१३१) छहमहाशय टिमर्नी जि होशगाबाद ।
१२५) पचान राजगढ जि अलवर ।
१७५) शे वागमल धन्नालाल आमझरा (इन्दौर)
५१) साहबदीन वलद धनपतराय बाराबांकी ।
१०) मित्रसेनजी मुजफ्फरनगर ।
६०) हरखचन्दजी बजाज बहरच ।
१०) शिवबगसजी फोजमल पाटणी चपानेर (अजमेर)
२५०) पचान नरसिंहपुरिया उदयपुर ।
२५) ,, मेदुरजाना अमरावती ।
५१) रमुमल दयालदासजी बाराबांकी ।
६६) पचान मनोहरथाना जि कोटा ।
४०) ,, चिरगांव जि झांसी ।
१००) ,, दसाहूमड गढा बासगाव ।
४७॥) , चपानेर (अजमेर)
११।-) ,, नुहमर्दा हिम्मतपुर (आगरा)
१८) ,, हिम्मतपुर (आगरा)
४९-) , जलेसर टाउन जि एटा ।
७१) ,, चित्तोडा (उदयपुर)
८५) , कमावर खेडा उर्फ कलन्दाबाद ।
१४।-) , आनसिंह (आकोला)
१७०) सवाइ सिंघई टुडेलाल मडावरा (झांसी)
१०२) समैया पचान होशगाबाद ।
८०) पचान नवाबगज बाराबांकी ।
४५) पचान होशगाबाद ।
३०) ,, अटेर (ग्वालियर)
२५) मुन्नालालजी इरादेनगर जि आगरा ।
११) जोधराज रघुनाथ मारवाडी वासिम जि आकोला
३४।) रामचद चौधरी टीकमगढ जि झांसी
२०१) पचान जगाधरी जि आम्बाला ।

२३४४२॥) **कुलयोग** ।

भूल संशोधन-गताककी प्राप्तिस्वीकारमे मृगावली जिला ग्वालियरके भूलसे १६७।) लिखे गये हैं, उन्हे २६७।) समझना चाहिये और पचान **सीहौरा** जिला सागरके १६९) छपे हैं, उन्हे पचान **सीहौर** जिला भोपाल समझें

नोट-ता० ४ सितम्बरको १८) और ३०) के दो मनीआर्डरकूपनपर नाम ग्राम न होनेसे हमारे यहां बिना नाम ग्रामके जमा हैं, जिन भाइयोंके हों, वे शीघ्र सूचित करें ।

प्रार्थी—

कार्यालय-हीराबाग पोष्ट गिरगांव, बम्बई ता १९-१९०७ } **माणिकचन्द हीराचन्द** जे पी महामंत्री तीर्थक्षेत्र कमेटी.

मधुवन—श्रीसम्मेद सिखरजी मधुबन उपरैली कोठीके श्रीपार्श्वनाथजीके आदि मंदिरमें भाद्रपद शुक्ला एकादशी बुधवारके सायंकालकी आरती उतारते समय धूप खेवतेही धूप दान बराबर एक घटा हिलता रहा । जयपुर जिलेके अनुमान७९ यात्रियोंने भी यह घटना प्रत्यक्ष देखी है । मालूम होता है कि, कोई नवीन आश्चर्य जनक वातो होवे । कदाचित पहाडपर बंगले बननेसे कुछ खराबी न हो

मूलचद पुजारी

डिपाजिट हैं—हमारे किसी ग्राहक महोदयने बार २ उधरका तिरस्कार करनेपर भी २॥) ढाई रुपयेका मनीआर्डर भेज दिया है हमने कूपनपर नाम धाम होनेके भरोसेपर ले लिया था परन्तु कूपनपर लिखा है कि, जैन मित्र और सुशीलाका मूल्य भेजा है जयचन्द । हमारे यहां कई जयचद ग्राहक है हम किस जयचन्दका मूल्य जमा करें और किनको सुशीला भेज देवें सो हमारे ध्यानमें नहीं आता मनीआर्डर भेजनेवाले जयचदजीसे प्रार्थना है अपना नाम, धाम और ग्राहकनम्बर लिख भेजनेकी कृपा करें हमें विश्वास हो इसलिये हमारी दस्तखती रसीदमनीआर्डर पत्रके साथ आना चाहिये

बुद्धूलाल क्लार्क

सिर्फ एक एक ग्राहक ।

हम अपने ग्राहकोंसे प्रार्थना करते हैं कि यदि वे **जैनमित्र** से जैनधर्मकी कुछ भी उन्नति समझते हैं, और उसकी तरक्की चाहते हैं, तो गत अकके साथ जो कार्ड भेजा गया है, उसमें सिर्फ **एक एक नवीन ग्राहक** का नाम भरकर भेजनेकी कृपा करें । आपलोगोंकी थोडी सी जबानी मिहनतसे जैनमित्रको एक हजार नवीन ग्राहक मिल सकते हैं। जिससे उसकी दशा बहुत अच्छी हो सकती है । आशा है कि, आप अपने किसी एक पढे लिखे मित्रसे जैनमित्रका ग्राहक बननेके लिये एक वार तो अवश्य ही आग्रह पूर्वक कहेंगे । और आपके मित्र २) मात्रके लिये आपकी जबान भी नहीं डालेंगे ।

मैनेजर जैनमित्र ।

ताकतकी दवा च्यवनप्राश।

दुर्बलता और कृशताको दूर करने और शरीरमें बलका सञ्चार एवं शरीरको हृष्ट पुष्ट करनेमें महर्षिसेवित च्यवनप्राशकी भांति दूसरी औषधि ईजाद नहीं हुई यह महात्मा चरकने लिखा है—

यह प्रत्यक्ष फलप्रद है।

महौषधि भले चंगे और बीमार शरीरमें सेवनीय है, इसके सेवन करनेसे खांसी, यक्ष्मा, बिगड़ा हुआ जुकाम, ज्वर भंग और अनेक प्रकारके वीर्यगत रोग आराम होते हैं।

नियमसे कुछ दिन "च्यवन प्राश" सेवन करनेसे क्षुधावृद्धि, देहपुष्टि और इन्द्रिय सामर्थ्य जमती है। जवानीके अत्याचारोंके कारण जिनका स्वास्थ्यभग धातु क्षीण और शरीर जीर्ण शीर्ण हो गया है उनके हकमें च्यवनप्राश अमोघ महौषधि है। वह प्रथम दर्जेकी स्तम्भक, धातु पौष्टिक एवं कामोद्दीपक है।

दिमाग अर्थात् भेजेकी निर्बलताको जो अधिक विषय भोग, शराब आदि पीने और जियादह पढ़ने पढानेकी मेहनत तथा विकालत आदि दिमागी काम करनेसे हो जाती है इसके सेवनसे रफे हो जाती है और बच्चे इसको खाकर मेधावी और हृष्टपुष्ट होते हैं। यह खानेमें स्वादिष्ट है और इसका गुण चिरस्थायी है।

आयुर्वेद—शास्त्रमें कहा गया है कि, पूर्वकालमें इस महौषधिका सेवन कर वृद्ध च्यवन ऋषि जवान हो गये थे जिन लोगोंने काडलीवरआयल वगैरा विलायती धर्म्मनाशक, घृणित दवाओंके सेवनसे कुछ लाभ नहीं पाया हो वे लोग इस प्रत्यक्ष फलदाता विशुद्ध च्यवनप्राशको एकवार सेवन कर इसकी उपकारिता शक्ति देखें। एक पाव च्यवनप्राशका मूल्य २) रु० और एक सेर इकट्ठा लेनेसे ६) रु०।

अनेकप्रकारकी गुण दायक औषधियोंका सूची पत्र अवश्य मगा कर देखिये

मिलनेका पता—वैद्यवर पं० सूर्य्यप्रसाद शर्म्मा आयुर्वेदाचार्य (आ० बु० के सभ्य, मेरठ सिटी.

५) रुपये का माल ३) रुपये में

गौरीनागरी कोष

५९० पृष्ठ लगभग पांच हजार शब्द।

जिसकी पांच वर्षसे खूब पढ़रही थी वह अब छप कर तयार हो गया. यह कोष बड़े बड़े विद्वानोंकी मण्डली द्वारा ९ वर्षके निरन्तर उद्योगसे तैयार हुआ है ऐसा उत्तम कोष आजतक नहीं बना और न आगेको आशा है। यह बी० ए० पास मास्टर है. ३) रुपया में उम्र भरके लिये नौकर होता है। हिन्दी, उर्दू, प्राकृत, संस्कृत, अरबी, फारसी, इत्यादि शब्दों के मायने पूछोगे, तो पहले हिंदी में बतावेगा फिर अगरेजीमें समझावेगा। वकील, मुख्तार, पण्डित, मास्टर, ग्रन्थकार, लेखक आदि सबका सहायक है। हिन्दीहितैषी भूतपूर्व छोटे लाट मेकडानल बहादुर तथा रीवांनरेश और टैक्स्ट बुक कमेटी पजाबने भी इसको पसन्द किया है और बहुतसे स्कूलके इन्स्पेक्टर एवं मास्टरोंने इसे खरीदा है। ट्रान्सलेशन (हिन्दीसे अंग्रेजी और अंग्रेजीसे हिन्दी) करनेवालेके बड़े कामका है। अतएव स्कूलके विद्यार्थी हिन्दी अंग्रेजीमें योग्यता प्राप्त करनेके अभिलाषी एवं अध्यापक (मास्टर) इसे खरीदने से न चूकें।

———

सौदामिनी! सौदामिनी!! सौदामिनी!!!

नवन्यास! उपन्यास!! इरोन्यास!!!

'भारतेन्दु' के भूतपूर्वसम्पादक श्री राधाचरण गोस्वामी (वि० वा० म्यु० क० ऑ० मै०) की ललित लेखनीसे लिखित प्रेम की छटा। रस की छटा!! ११ अंकों में बटा!!

अभी बड़े आवताब और हावभाव से छपा है. जिस पर लक्ष्मीकी कृपा है, उसीसे =) दाम)॥ डाक महसूल पाकर झगड़ा रफा और हिसाब सफा है, घड़ी भर दिल लगाना नफा है, क्या इससे कोई खफा है? पुस्तकें कम! बिक्रीका बाजार सरगर्म, सौदा नर्म। और इसके मर्मको रसिक लोगही जानते हैं। इसमें बीसवीं सदीका चित्र इनलाइटैनीका चरित्र, सच्चा मित्र, सौदामिनीकी पवित्र प्रीति घनश्यामकी विचित्र रीति प्रेमकी अकाट्य नीति, गुरुजनोंकी भयानक भीति, सबके सीन अपने २ अवसर पर दिखलाये गये हैं। उपन्यास क्या नाटक है, चेटक है तमाशा है। पूरा देखे बिना जी नहीं मानता।

बालाबोधिनी—यदि गृहस्थको स्वर्गधाम बनाना चाहते हो और अपनी स्त्रियों तथा पुत्रवधुओं एवं पुत्रियों को उच्च कोटिकी की शिक्षा देना चाहते हो, तो इस पुस्तकको अवश्य खरीदो। इसमें नियमानुसार पुत्रीको नीतिशिक्षाका उपदेश किया गया है। मा, बाप, माई, बहन, बगड़ परोसन सास, श्वशुर, ननद इत्यादि किसके साथ कैसे व्यवहार करना चाहिये और पतिकी कितनी सेवा शुश्रुषा करनेसे स्त्री सती, साध्वी और पतिव्रता कहला सकती है। पतिबिना धर्मका अखण्ड पुण्य सञ्चय करके क्योंकर दोनों लोकका सुख भोग सकती है। मूल्य।-)

नीचे लिखी पुस्तकोंकी सिर्फ दश २ के करीब प्रतिया बाकी है। अतएव विशेष शीघ्रतासे आर्डर भेजिये।

व्यंजनप्रकार मू० ≥)

प्राय मनुष्योंको भोजनके ही ठीक न बननेसे अनेक प्रकारके रोगोंमें फंसकर कष्ट उठाना पड़ता है। इस पुस्तकमें इन्हीं परम आवश्यक बातोंका उल्लेख है। साधारण दालरोटीसे लेकर लड्डू जलेबी, इमरती, बालूशाही इत्यादि और सब प्रकारके नमकीन पदार्थ आदि २ कई प्रकारसे लिखे गये हैं पुस्तक विशेष लाभदायक सचित्र और खरीद कर देखने योग्य है.

राजकुमार उपन्यास मू० ≥)

यह रोचक उपन्यास एक बंगालकी शिक्षित महिलाने लिखा है और रोचक एवं खरीदनेके लायक है।

अशर्फियोंकी थैली सिर्फ।) में देते हैं। अंग्रेजी सीखनेकी कल मू० -)॥

नागरी जाननेवाला खुद अंग्रेजी बोलना और समझना सीख जाता है।

नागरीके दफ्तर मू०।-)

इसमें नागरीमें रहननामा बैनामा तमस्सुक आदि सब प्रकारके राजकीय व और व्यावहारिक कार्य लिखे हैं। पुस्तक प्रत्येक मनुष्यको अपने पास रखनी चाहिये।

सूचना—फीस मनीआर्डर खरीदारोंको जुदा देना होगा और पत्र भेजते समय जैनमित्रका हवाला अवश्य दो।

मिलनेका पत्ता—
मैनेजर सारस्वत कम्पनी,
मेरठ सिटी.

"कर्नाटक" प्रेस बम्बई।

Registered No. B. 293.

नियमावली।

१ इस पत्रका अग्रिम वार्षिकमूल्य सहित डांकमहसूलसहित केवल २) दो रुपया है।

२ दिगम्बरजैन प्रा०स० बम्बईके मेम्बरोंको यह पत्र भेंटस्वरूप दिया जाता है।

३ विद्यार्थियोंको उनके अध्यापक अथवा मास्तरकी सिफारिशसे यह पत्र आधे मूल्यमें दिया जाता है।

४ प्राप्त लेखोंमें व्याकरणसम्बन्धी संशोधन करने तथा समालोचना करने और छापने न छापने तथा वापिस लौटा-न लौटानेका सम्पादकको अधिकार है।

५ विज्ञापन छपवाई व बँटवाईका रुपया पेशगी लिया जाता है।

६ इस पत्रमें वे ही विज्ञापन छपेंगे व बटेंगे जो अश्लील और राज्य-नियमके विरुद्ध न होंगे।

७ विज्ञापन छपवाने बँटवानेकी दर तथा विशेष नियम जाननेके लिये मेनेजरसे पूछना चाहिये और पत्री-त्तरके लिये जवाबीकार्ड अथवा टिकट भेजना चाहिये।

८ चिट्ठी पत्री व मनीआर्डर वगैरह इस पतेसे भेजना चाहिये।

मैनेजर—जैनमित्र,
दूसरा भोईवाड़ा पो० कालबादेवी
बम्बई।

जैनमित्र

जिनमित्रस्तु सर्वेषां पदार्थानां प्रकाशकः।
एतज्जिनानुबन्धित्वाज्जैनमित्र इतीष्यते॥

हिन्दी भाषाका पाक्षिकपत्र। | प्रत्येक द्वितीयाको प्रकाशित होता है।

प्रकाशक और सम्पादक—गोपालदास बरैया।

वर्ष ८ वां] आश्विन शुक्ला २ संवत् १९६४ विक्रमाब्द। ता० ९ अक्टोबर सन् १९०७ ईस्वी। [अंक २४ वां।

विशेष सूचना.

बहुधा देखा गया है कि, हमारे ग्राहकगण सम्पादकके नाम चिट्ठी भेजते हैं कि, हमारे पास अमुक अंक नहीं पहुंचा अथवा हमारा मूल्य क्यों जमा नहीं हुआ ? अथवा इतनी बाकी क्यों निकाली ? अथवा इसके भांति २ के अपशब्दोंका उपयोग करके अपनी सभ्यताका परचिय देते हैं चूंकि हिसाब किताबमें भूल हो जाना कुछ आश्चर्य नहीं है और होभी जाती है, अथवा डाकघरकी भूलसे कभी २ कोई अंक भी ग्राहकोंको नहीं मिलता. यह हम मानते हैं। परन्तु सम्पादकको लेन देनसे कुछ प्रयोजन नहीं है. इस विषयमें हमें लिखो और सभ्यशब्दोंके पल्टे ग्राहक नम्बर लिख दिया करो। तथा लिपि हिन्दुस्थानी लिखा करो।

मैनेजर.

आगामी अंक—

पाठक महाशय। इस अंकपर जैनमित्रका ८ वा वर्ष पूर्ण हो गया। अब नवनें वर्षका प्रथमाङ्क आगामी वीर सम्वत २४३४ कार्तिक सुदी २ को निकलेगा।

खुलासा।

बेळगांव निवासी अण्णापाफडयांपाचौगले बी. ए. एल. एल. बी. जो विशारद परीक्षाके ३, ४ और ५ खंडमें उत्तीर्ण हुए हैं उन्हें १९) इनाम और मेडिल मिलने बाबत गत अंकमें मुद्रित है। विदित हो कि, वह इनाम बनवारीलाल चादमलजीकी ओरसे ५) चुन्नीलाल झवेरचंदजीकी तरफसे ६) और सखाराम नेमचंदजीकी ओरसे ८) मिलेगा तथा मेडिल परीक्षालयसे दिया जावेगा।

सुशीला उपन्यास।

विचार था कि, इस वर्षके अन्तमें सुशीला उपन्यास पूर्ण कर दिया जावेगा. परन्तु कारण वश ऐसा नहीं किया जा सका। इसका हमें खेद है। पाठकगण थोडा धैर्य और भी धारण करें आगामी वर्षके दो तीन अंकोंमें ही उसकी पूर्ति कर दी जावेगी।

डिपाजिट हैं.

हमारे किसी ग्राहक महोदयने बार २ उरदूका तिरस्कार करनेपर भी २॥) ढाई रुपयेका मनीआर्डर भेज दिया है. आपने कूपनपर लिखा है कि, जैनमित्र और सुशीलाका मूल्य भेजा है. जयचन्द। हमारे यहां कई जयचंद ग्राहक हैं हम किस जयचन्दका मूल्य जमा करें और किनको सुशीला भेज देवें सो हमारे ध्यानमें नहीं आता। मनीआर्डर भेजनेवाले जयचंदजीसे प्रार्थना है अपना नाम, धाम और ग्राहकनम्बर लिख भेजनेकी कृपा करें. हमें विश्वास होनेकेलिये हमारी दस्तखती रसीदमनीआर्डर, पत्रके साथ आना चाहिये.

बुद्धूलाल क्लार्क.

सभासदोंके प्रति निवेदन.

बम्बई प्रान्तिकसभाके मेम्बरोंकी सेवामें जैनमित्र विना मूल्य भेजा जाता है। हमें जहांतक अनुभव है हम कह सक्ते हैं कि, इस पाक्षिक उपदेशकने सभ्यजनोंकी यथेष्ठ सेवा करनेमें कोताही नहीं की। परन्तु खेद है कि, अनेक सभासद्गणोंने उसके पोषण और सभापरिचालनके हेतु सभासदीफीस भेजनेकी कृपा नहीं की। यह धर्मका कार्य है। इसमें प्रमाद करना ठीक नहीं है. इसलिये सुजनो। मनीआर्डर भेजनेकी अथवा वी. पी. मंगानेकी कृपा कीजिये।

फूलचन्द पाटनी सहायक महामंत्री।

जैनहितैषी पुरानापत्र।

पाठक महाशय। आगामी दिवालीसे यह पत्र भी प्रतिमास मनोविनोदक विशेष लेखोंसे भूषित होकर प्रकाशित होता रहेगा। जिसके प्रत्येक अंकमें एक फारम (१६ पृष्ठ) किसी मनोहर उपन्यास व नाटकका भी अवश्य छपता रहेगा। आगामी मूल्य भेजनेवालोंको २) रुपये मूल्यका काशीनिवासी कविवर वृन्दावनजीके जीवन चरित्र सहित "वृन्दावनविलास" नामका अद्भुतपूर्व कवितासंग्रहग्रन्थ भेंटस्वरूप दिया जायगा।

जैनसमाजका हितैषीदास—पन्नालाल जैन।

आवश्यक सूचना ।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्रकमेटी कार्यालय—हीराबाग बम्बईसे, श्री सम्मेदशिखरजी, चम्पापुरीजी, सोनागिरिजी, रामटेकजी, नयनागिरिजी, भातकुलीजी, मुक्तागिरिजी, सिद्धवरकूट, तालनपुर, बैनाडा, बडाली, सजोद, कुंथलगिरि, स्तवनिधि, बाहुबलजी, गोमठस्वामी, मूडबद्री, वरांग, कारकल, अन्तरीक्षपार्श्वनाथजी, उक्सपद्मावती, दहीगांव, द्रोणागिर, पावापुरी, रत्नपुरी, बडवानी, विघ्नहरपार्श्वनाथ, सत्रुंजा, मागीतुंगी, गजपंथा, तारगा और गिरनारजीके मुनीमोंके पास व्यवस्था सूचक वा हिसाब करनेके दो २ फार्म भेजे गये हैं। इन तीर्थोंके प्रबन्धकर्ता महाशयोंसे प्रार्थना है कि, दीपमालिका निकट आ गई है। इस लिये तीर्थपरका जमाखर्चका हिसाब ठीक २ रखना चाहिये. और दीपमालिका तकका हिसाब मुनीम—मंत्री वा अपने हस्ताक्षर सहित यहा भेज देना चाहिये. तीर्थकी व्यवस्था भी स्पष्ट २ भरके दीपमालिकासे पहले भेज देना चाहिये। तीर्थ, क्षेत्रोंके सुधारका विचार कमेटी तभी कर सकेगी जब वहांकी व्यवस्था वा हिसाब मालूम हो। आशा है कि, आपलोग हिसाब किताबकी सम्हाल अभीसे करते रहेंगे. जिससे दीपावालीपर हिसाब भेजनेमें बडा सुभीता होगा। मुनीम वा यात्रियोंके कर्तव्य भी भेज दिये गये हैं उनका यथोचित उपयोग करेंगे। यदि कारणवशात् उक्त तीर्थोंमेंसे कहींपर फार्म न पहुंचे तो वे यहांसे मगालेवें।

प्रार्थी—

हीराबाग गिरगांव ता ३-१०-०७ } माणिकचन्द हीराचन्द जे पी महामंत्री तीर्थक्षेत्र कमेटी

सूचना.

चूंकि मालवा दिगम्बर जैनप्रान्तिकसभाके विद्याखातेके मंत्री लालाभगवानदासजी बडनगर (मालवा) नियत किये गये हैं. अतएव अध्यापकोंके चाहनेवालों और अध्यापकीके उम्मेदवारोंको उक्त महाशयके नामसे ही पत्रव्यवहार करना योग्य है।

प्रेषक

दरयावसिंह सोंधिया इन्दौर.

अवश्यक्ता है।

कानपूर जैनऔषधालयके लिये एक सुयोग्य वैद्यकी आवश्यकता है. वेतन योग्यतानुसार दिया जावेगा. पत्रव्यवहार इस पतेपर करना चाहिये।

ला० शम्भूदयाल मंत्री, जैन बड़ा मंदिर, कानपूर.



मनरञ्जन तैल।

यह दुनियां भरमें खुशबूकी खान और चित्तको गद्गद् करनेवाला है।

हमने यह तैल अनेक आयुर्वेदीय ग्रन्थोंके मथनकर अत्यन्त सुगन्धित और कामदायक बनाया है। इससे बाल तथा शिरके सर्व रोग दूर होकर दिमागमें तरावट और ठंडक पहुंचती है। बदनमें मालिश करनेसे श्यामता दूर होकर लोहू और ताकत बढ़ती है। फी शीशी ॥≈ डा. ख. ।)

खांसीकी दवा।

इस दवाको खानेसे खासी तथा तर स्वास छातीका दर्द आदि कफ सम्बन्धी रोग फौरन दूर हो जाते हैं। की० ॥ शीशी डा० ≈

निमक सुलेमानी।

इसके नित्य सेवनसे खाना जल्द हजम होकर भूख खूब लगती है, बदहजमी, हैजा, खट्टी डकार छातीजलन, कब्ज, पेचिश, वायु, शूल, पित्तरोग, बवासीर प्रमेहनाशक है। स्वाद व गुणकी ज्यादा तारीफ वृथा है। फी शीशी ॥) डा. ख अलग।

दंतकुसुमाकर।

इसके लगानेसे दांतोंका हिलना मसूडोंका फूलना, खूनदर्द आदि आराम हो दात मोतीकी तरह चमकते हैं। रोज लगानेसे दात आजन्म दृढ बने रहेंगे। फी डिब्बी ।)

दवा दादकी।

इस दवासे किसी तरहकी तकलीफ नहीं होती है और न बुरी बू आती तथा दादके दादाको तगादाकर भगाती है। फी डिब्बी ।)

गंधकवटी।

यदि बालकोंको हमेशा स्वस्थ रखना चाहते हो तो इसे मगाइये इससे बच्चोंका ज्वर खांसी दस्त वायुरोग दूर होकर खूब मोटा ताजा हो जाता है इसकी गोली रोज खिलाना चाहिये. कीमत. ॥) सी. डां. ≈)

पंचतिक्तवटिका।

यह संसारमें ज्वरकी एक मात्र औषधि है। इससे सब तरहके ज्वर समूल नष्ट होते हैं। की० ॥) डा. ≈)

जगद्विख्यात पवित्र २० वर्षकी आजमाई हुई.

प्रमेहनाशक अपूर्वताकतकी दवा.

इसके सेवनसे स्वप्नदोष वीर्यका पानीके समान पतला होना, बदनकी सुस्ती, धातुक्षीणता, बीसों प्रकारके प्रमेह, दिशा होते मूत्रके साथ धातुपात होना, शिरका घूमना, प्रसगकी इच्छा न होना, नपुंसकता, नाताकती, कमरमें दरद, थोडा चलनेसे थकावट आना भूख कम लगना चेहरेकी खुशकी वा जर्दी बदनमें फुर्ती न रहना शरीरकी दुर्बलता रगोंकी कमजोरी, उठती जवानीमें कुचालसे पैदा हुई नामर्दी आदि सब रोग जडसे नष्टकर नया वीर्य पैदा करती है। जिसमें उत्तम सन्तान शरीरमें बल, दिमागमें ताकत, आखोंमें रोशनी, बदनमें स्फुर्ती बढती और नवीन युवावस्थाका सौख्य दिखाती है। मूल्य १ डिब्बाका २॥,) २ डिब्बा ५), ३ डिब्बा ७), ६ डिब्बा १२), खर्च माफ

श्वासारिष्ट।

इससे सब तरहका (श्वास दमा) कफ आदि फौरन दूर होता है और शरीर हृष्टपुष्ट हो जाता है। कीमत १) डा० ॥)

नपुंसकत्वारि तैल।

इसके लगानेसे गुप्तभागसबंधी सर्व प्रकारके रोग दूर होते हैं। फी सीसी १) डाकखर्च ≈)

प्रदरांतक चूर्ण।

इससे स्त्रियोंके सब तरहके श्वेत लाल प्रदर और उस सबंधी सर्व विकार दूर होते हैं। कीमत १) डा० ≈)

नयनामृत सुरमा।

इसके लगानेसे आखोंका जाला धुन्ध, फुली, पानी बहना, सुर्खी, पखर आदि नेत्ररोग दूर होते हैं और ज्योति बढाता, ठंडक रखता और पढते २ आंखों नहीं थकती हैं। फी शीशी १) लगानेकी सलाई ।)

अर्ककपूर।

यह हैजा व अतीसारकी अक्सीर दवा है और बदहजमी पेचिस मरोडको भी लाभ कारी है। फी सी० ।) दो से कम न भेजेंगे.

शिरदर्द नाशन तैल।

यथा नाम तथा गुण. की० ॥) सी. डा० ≈)

मंगानेका पता—हजारीलाल जैन, वैद्य, आयुर्वेदीय औषधालय—इटावा (U. P.)

जैनमित्र.

आश्विन शुक्ला २ श्रीवीरनिर्वाण संवत् २४३३
ता० ९ अक्टोबर सन् १९०७ ईस्वी।

सम्पादकीय टिप्पणियां।

मधुवनपर एक विचित्र घटना हुई है।

धूप खेवते ही मधुवनके पार्श्वनाथ मंदिरका धूपदान बराबर १ घंटा हिलता रहा जिसके समाचार गताङ्कमें प्रगट कर चुके हैं। यह आश्चर्य जनक घटना क्यों हुई इसका अन्दाज भी हमारे सम्बाददाताने अच्छा लगाया है। सम्मेदशिखरकी यह घटना सुनकर और सरकारी स्वार्थप्रियतापर विचार करके हमारे चित्तमें अनेक तरंगें उठा करती हे। भगवन्! तुमने मक्सी आदि कई स्थानोंपर जैनधर्मकी प्रभावना प्रसरित की थी। फिर तीर्थराजपर ऐसा अन्याय होते देख हवाखोरोंके रुचिया स्वेताङ्गोंको क्यों न सचेत करोगे। भगवन्! तुमने धुपदान हिलाकर मानो सूचना ही कर दी है कि, गिरिराजपर अंग्रेजी बगले बननेसे जैनजातिमें हलचल मचेगी, मानो आपने विदित कर दिया है कि, बने हुए बंगले स्थिर न रह सकेंगे, मानो आपने यह दरसाया है कि, ससार बिजलीवत चचल है। क्षणस्थायी राज्य पाकर हे अंग्रेजो! अन्याय न करो, हठ ना करो। यह कार्य उत्तम नहीं है इसलिये अपने विचार बदल डालो। या दूसरा स्थान हवाखोरीके लिये तजवीज करो।

जैनधर्मकी रक्षाके लिये आकाशवाणी होती है, इन्द्रका सिंहासन और आकाशके नक्षत्र कम्पायमान होते हैं फिर धूपदानका कंपित होना कोई बडी बात नहीं है। सुदर्शनसेठकी सूली सिंहासन हो गई थी, सीता सतीके चरण पड़ते ही अग्निकुंड जलमय हो गया था, द्रोपदीका वस्त्र कोसों तक बढ़ता गया था, विष्णुकुमारने अपने हाथसे पर्वत भेद दिया था और तीन कदममें सारे संसारको माप लिया था, यह सब जैनधर्म हीका प्रसाद है। प्रभो! इतने मात्र संकेतसे गौरांगोंके विचार न बदलेंगे। उन्हें प्रजाके सुखदुःखसे प्रयोजन नही है, उन्हें अपने जातिभाइयोंके हित और सुखके हेतु गिरिराजपर सेनेटेरियम बनानेसे प्रयोजन है। यह पांडव और हरि हलधरका जमाना नहीं है, पाषाणमय प्रतिमाकी उंगलीसे दुग्ध बहता हुआ देख विस्मित होनेवाले बादशाहका जमाना नहीं है, यह विज्ञानविद्यामें निपुण अंग्रेज महाराजका जमाना है, धूपदानके हिलने मात्रसे वे न चेतेंगे. अगर तीर्थराजका उपसर्ग निवारण करना है, जैनधर्मकी मर्यादा रखना है, निरुपाय और पराधीन जैनियोंके शोकाग्निसे प्रज्वलित हृदयोंमें शान्ति उत्पन्न करना है तो कोई अच्छा असरकारक अतिशय दिखाओ। अर्थात् बंगालके छोटे ल० सा० के हृदयमें सद्बुद्धि प्रदान करो अथवा हजारीबागके डि० क० के विचार बदल दो।

जैसे अपने प्राण अपनेको प्रिय है वैसेही दूसरोंको भी अपने प्राण प्रिय हैं

दशहरा हिंदूलोगोंका तेव्हार है इस दिन सभी हिन्दूभाई यथाउचित उत्सव मनाते है, राजेरजवाडोंमें तो इस पर्वका जलूस बडाही भयंकर होता है। क्योंकि पूजामें सामान्य पदार्थोंके अतिरिक्त जीवहत्त्याका भी बहुधा उपयोग होता है। सो भी ऐसे वैसे जीवधारियोंकी हत्या नहीं की जाती वरन खासे पंचेंद्रिय बकरे भैसे आदिके शरीरोंमे उनके प्रियप्राण विलग किये जाते है हमारे सभ्यता सम्पन्न देशमें यह कैसी बुरी प्रथा है और यहाके दयालु राजाओंके निर्मल यशके समक्ष यह कुक्रिया कैसी कलंकरूप है. ऐसी विपुल हिंसा क्यों की जाती है, जब कभी यह प्रश्न उठता है तो धर्म और पूर्वप्रथाका आश्रय लिया जाता है परन्तु हम कहे देते हैं कि, जिस शास्त्रमें हिंसाका पोषण है वह शास्त्र नहीं है कुशास्त्र है, जिस धर्ममें हिंसा की जाती है वह धर्म नहीं है अधर्म है और जो मनुष्य मांस भक्षण करता है वह मनुष्य नहीं है राक्षस है। अहिंसा ही धर्मका मूल है। इसलिये दूसरेके प्राणोंको अपने समान गिननेवाले पृथ्वीपाल महोदयो! तुम धर्मकी आड़में होकर ऐसी हत्या मत करो पुन्यके बदले पापके बोझसे अपनेको भारी मत करो। अगर तुम पूर्वप्रथा बतलाते हो तो कहो तुम कौन २ प्रथाएं अपने पुरुषाओंकी पकड़े हुए हो? और पुरुषाओंसे भी तो चूक होना संभव है वे कुछ सर्वज्ञ नहीं थे। सारांश हमारे कहनेका यह है कि, हिंसाको धर्म मानना अथवा पूर्वप्रथा बतलाना बड़ी भारी भूल है। आशा है कि, हमारे भारतवर्षीय राजामहाराजा और देवीके भक्तगण हमारी प्रार्थनापर विचार करेंगे और जैनीभाइयोंसे प्रार्थना करते हैं कि, वे इस पर्वमें हिंसा करनेवाले महाशयोंको अहिंसा धर्मका महत्व विदित करें और उन्हें इस कुत्सित कर्मसे बचावें।

जैनपताका।

हर्षका विषय है कि, कलकत्तेसे बाबू अमोलकचन्दजी द्वारा सम्पादित होकर जैनपताकाका प्रथम अंक प्रकाशित हो गया। सहयोगिनी पताकाका हम इस समय केवल स्वागतही करते हैं। क्योंकि यह उसका प्रथम दर्शन है। कुछ दिन उसकी गति मति निरीक्षण करके हम अपनी सम्मति प्रगट कर सकेंगे। जैनियोंमें सम्वादपत्रोंकी जो कि उन्नतिके सबसे बड़े साधन हैं, बहुत न्यूनता है। उनकी सहायता करना प्रत्येक जैनीका कर्तव्य है इसलिये हम अपने पाठकोंसे पताकाके ग्राहक होनेकी सिफारिश करते हैं। मूल्य १।) मात्र है। पत्र लिखनेका पता—श्रीयुत बाबू अमोलकचदजी लुहाडा १७।१ शिवतल्ला स्ट्रीट कलकत्ता है।

भारतमें शक्करके कारखाने।

बंगलाकी "देशेरकथा" नामक पुस्तकके परिशिष्टमें लिखा है, "गत १८९४ में सब मिलकर २६४ कारखाने थे। १९०० में उनकी संख्या घटकर २०३ हुई, और १९०१—०४ में वही केवल २१ रह गई। बीटकी शक्करका प्रसार बढ़नेसे देशके शक्करके व्यापारियोंकी कैसी शक्ति हुई है, वह क्या और भी अधिक स्पष्ट करके दिखाना पडेगी। बिदेशी शक्कर गोशूकरादि पशुओंके रक्तसे अथवा स्मशान भूमिओंसे एकत्र किये हुए अस्थिमय कोयलोंके सहियोगसे परिष्कृत होती है। इसी कारणसे आज कल कोई भी निष्ठावान हिन्दू तथा मुसलमान विदेशी शक्करका व्यवहार नहीं करते हैं। जो लोग खाद्याखाद्यका विचार करना भी कुसंस्कार मूलक समझते हैं, उन्हें भी विदेशी शक्करका व्यवहार करना अनुचित है। क्योंकि ऐसा करनेसे स्वदेशी-शर्कराके व्यापारियोंके अनशन-मृत्यु-जनित पापके भागी उन्हें होना पडता है" यह नोट हमने इस लिये उद्धृत किया है कि, जो लोग विदेशी शक्कर को अशुद्ध नहीं समझते हैं, अथवा स्वदेशीआन्दोलन तथा बायकॉटसे नाक भौंह सिकोड़ते हैं, उनके हृदयमें

भी उक्त २४३ कारखानोंसे अपनी उदरपोषणा करने वाले व्यापारियों तथा मजदूरोंके भूखों मरने पर कुछ तरस आवै, जो वेचारे अपनी पुस्तानुगत जीविकाको खोकर त्राहि त्राहि कर रहे हैं। अहिंसाधर्मके पालनेवाले भाइयो! अब भी चेतो और इस विलायती शक्करका कालामुंह करो।

श्रीवीतरागाय नमः।

मुरैनामें नवीन पाठशाला।

बहुत दिनोंसे इस कामका प्रारंभ करना चाहते थे परन्तु प्रत्येक कार्यकी सिद्धि तथा प्रारम्भमें काल भी एक कारण है। वह हमारा कार्य जिसका कि, बहुत दिनोंसे विचार तथा पुरुषार्थ करते थे. आज दिन शुरू हो गया। इस कार्यको जिस प्रकार करना चाहते थे उसी प्रकारसे शुरू हुआ है। अब भी देवाधिदेवसे प्रार्थना इस विषयकी करते हैं कि, इस कार्यके बाधक कारण आपके स्मरण तथा स्तवनसे उत्पन्न हुए पुण्यके द्वारा विलयको प्राप्त हो। जिससे कि, यह कार्य प्रतिदिन निर्विघ्न वृद्धिको प्राप्त होता रहे।

इस पाठशालामें सम्पूर्ण कार्योंकी योजना इस प्रकार है—पाठशालामें अध्यापक अवैतनिक हैं। विद्यार्थी अपनी स्कालरशिपका प्रबन्ध जिस प्रकार सुभीता हो सकै उसी प्रकार दूसरे स्थानोंसे करते हैं। मकान, रसोइया तथा खिदमतगारका प्रबन्ध यहांपर कर रक्खा है इसमें ६) रु. माहवार प्रत्येक विद्यार्थीसे लेकर भोजन कराया जाता है। धर्मशास्त्र काव्य, न्याय और व्याकरणकी पढाईका क्रम नीचे लिखेंगे। जिस विद्यार्थीकी जैसी योग्यता हो वह उसी कक्षामें भर्ती किया जाता है। जैनधर्मशास्त्रके रहस्यके जिज्ञासु विद्यार्थियोंको जरूर आना चाहिये। इस कार्यको वृद्धिंगत करनेमें हम प्रतिदिन प्रयत्न करते हैं। इस प्रबन्धमें विद्यार्थी तथा धनकी जिस प्रकार सम्पत्ति बढैगी उसीप्रकार इस प्रबन्धकी तरक्की होती जायगी।

श्रीमती दिगम्बरजैनसिद्धान्त-पाठशाला (मुरेना)

अस्याः पठनक्रमः।

(शास्त्रीयकक्षायाः)

प्र. खण्डे एक वर्षे गोमट्टसारस्य जीवकाण्डम्।
राजवार्तिकालंकारस्य चतुरध्यायी वा।

द्वि. ,, ,, गोमट्टसारस्य कर्मकाण्डम्।
राजवार्तिका वशिष्टपूर्णभागो वा।

त्रि. ,, ,, लब्धिसारक्षपणासारौ।
पञ्चाध्यायी वा।

(पंडितकक्षायाः)

प्र. खण्डे एक वर्षे पञ्चमाध्यायान्ता सवार्थसिद्धिः, पूर्णा न्यायदीपिका, चन्द्रप्रभस्याधं सर्गसप्तकम्, अलंकारचिन्तामणि-पूर्वभागश्च।

द्वि. ,, ,, सर्वार्थसिद्धि पूर्णा, चन्द्रप्रभचरितं पूर्णम्, अलंकारचिन्तामणेरुत्तर-भाग, सागारधर्मामृतम्, आलाप-पद्धति, प्रमेयरत्नमाला च।

(प्रवेशिकायःकक्षायाः)

प्र. खण्डे एक वर्षे जैनव्याकरणस्य पूर्वार्द्धम्, स्वामि-कार्तिकेयानुप्रेक्षा च प्राग्लोकानुप्रेक्षाया।

द्वि. ,, ,, तद्व्याकरणोत्तरार्द्धम्, स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षा पूर्णा च।

यहांपर सायंकालमें विद्यार्थियोंको उपर्युक्त क्रमके अतिरिक्त बही खाता वा उसकी फैलावट वगैरह भी सिखाई जाती हैं।

प्रधानाध्यापक तथा प्रबंधकर्त्ता,

गोपालदास बरैया।

मुरैना (राज्य ग्वालियर.)

धन बड़ा है कि, धर्म ?

भारतवासी चिरकालसे धनकी अपेक्षा धर्मको बड़ा समझते थे। परन्तु विधर्मी राजाके शासन और शिक्षाके कौशलसे अब उनके निकट धर्मका आदर कम होकर धनका आदर बढ़ा है। जब किसी तीर्थका धर्मबल घटता है, तब उसका अधःपतन होनेमें कुछ भी विलम्ब नहीं होता। इतिहास इस विषयके सैंकड़ों प्रमाणोंसे भरा पड़ा है। इस देशमें भी दिखलाई दे रहा है कि, धर्मानुरागकी कमीके साथ २ भारतवासी पशुसे भी अधमाधम हो गये हैं। भारतभूमि दुर्भिक्ष, महामारी और प्लेगकी लीलाभूमि हो गई है।

विदेशी शक्कर गाय तथा सूअरके रक्तसे मिश्रित करके परिष्कृत की जाती है। इस शक्करका शरबत बनानेसे प्यालेकी तलीमें विवर्ण—रक्त—कणिकाओंका अस्तित्व जान पड़ता है। यह जानकर भी भारतवासी इस शक्करको भक्षण करनेमें घृणा नहीं करते हैं। देवपूजामें इस शोणित-मिश्रित शक्करका व्यवहार करके नरकका मार्ग साफ करते है। जो लोग पाश्चिमी शिक्षाके प्रसादसे धर्मको एक कुसंस्कार समझते हैं, वे भी जानते हैं कि, पाश्चिमी विज्ञानवादियोंके मतसे भी रक्त मिश्रित शक्कर आरोग्यताके लिये अतिशय हानिकारी है। परन्तु उन्हें ऐसा ही कुछ मोह हो रहा है कि, विदेशी शक्कर व्यवहार करनेके लोभको रोकनेमें वे सर्वथा असमर्थ हैं। तब कहो कि, अधःपतन और किसको कहते हैं?

हम पूछते हैं कि, धर्मकी अपेक्षा क्या धन बड़ा है? विलायती शक्करका रंग उज्वल शुभ्र नेत्रोंको ठंडा करने वाला है। परन्तु इससे क्या अग्निके मुखमें पड़ते हुए पतंगकी तरह उस शुभ्रोज्ज्वल शक्करको भक्षण करके हमें अपना धर्म और स्वास्थ्य खो देना चाहिये? पतंग दीपशिखाकी उज्वलतामें मोहित हो पंख जलाकर निःसीम दुःखका अनुभव करता है, और अन्तमें अपना अस्तित्व भी खो देता है। हमें भी तो यही करते हैं।

इस विलायती वा जावा शक्करकी उज्ज्वलता शुभ्रता ही क्या हमे मोहित करके हमारा सर्वनाश नहीं करती है? और यदि ऐसा है तो समझ लो कि, हममें और पतंगमें कुछ भी भेद नहीं है। हम इस पुण्यभूमि भारतमें जन्म ग्रहण करके पतंगसे अधिक उन्नत नहीं हो सकते हैं? धिक्कार है, हमारी मूर्खताको! हम सरीखे धर्मद्रोही पापिष्ट कुलाङ्गारोंका अस्तित्व इस पृथ्वीसे जितने शीघ्र नष्ट हो जावे, उतना ही जगत्का मंगल समझना चाहिये।

विशुद्ध शक्करकी दर ७) मनसे लेकर ८) मन तक है। उत्कृष्ट बनारसी शक्कर १०॥) रु० से लेकर १२॥) रु० मन है। और अपवित्र तथा अस्वास्थ्यकर जर्मन शक्करका मूल्य ७॥) मन, जावा शक्करकी ६।) से ७।) मन है। मूल्यके इस थोडेसे फेरफारके कारण देशी शक्करकी खप इस देशमें बहुत थोड़ी हो गई है। विदेशी राजशक्तियां भारतके भोजनमें धूल झोंकनेके लिये अपने यहांके शक्करके कारखानेवालोंको अपने खजानेसे द्रव्यकी सहायता करती हैं। इसी कारणसे विदेशी शक्कर भारतीय बाजारोंमें इस प्रकार सस्ती बिकती है। आज यदि भारतमें कोई हिन्दू व हिन्दनिवासी

मुसलमान राजा होता, तो वह अवश्यही यहांके शक्करके व्यापारियोंको द्रव्यकी सहायता देता। परन्तु विधर्मी और विदेशी अंग्रेजोंके द्वारा हम लोग ऐसी सहायताकी आशा नहीं रखते हैं। इस लिये यदि धर्म और स्वास्थ्यकी रक्षा करना है, तो हमें बाह्य चाकचक्यका मोह छोड़कर किंचित अधिक मूल्य देकर देशी शक्कर खरीदना चाहिये।

सबही जानते हैं कि, हमारे देशमें धर्मका गौरव ही सबकी अपेक्षा अधिक है। सो वही गौरव क्या अब इतने दिनमें नष्ट हो जावेगा? पृथ्वीकी प्रसिद्ध २ जातियोंका अस्तित्व क्यों लोप हो गया? रोमन, ग्रीक, मिशनरी, क्याल्डीय, आसीरीय, आदि जातिया आज कहां हैं? उनका अस्तित्व क्यों नष्ट हो गया? और भारतवासी लाख लाख वर्षसे सब कुछ सहते हुए अब भी प्राय. पूर्वकीनाई अथवा अस्तित्व और स्वातंत्र्य बनाये रखनेके लिये कैसे समर्थ हुए? एक धर्मके बलसे ही लाखों वर्ष व्यतीत हो जानेपर हम लोगोंका अस्तित्व नष्ट नहीं हुआ है। यह सब इतिहास लेखक गण कहते हैं। हमारा शास्त्र कहता है कि, धर्मोरक्षति रक्षितः अर्थात धर्म रक्षित होनेपर ही धर्माचरण करनेवालेकी रक्षा करता है। सो क्या भारतवासी उसी धर्मके आश्रयसे विच्युत हो जावेंगे? धर्मका आश्रय छोडकर भारतवासियोंका अस्तित्व पृथ्वीपृष्ठपर कितने दिन रह सकता है?

देशी शक्करके मूल्यकी अधिकता निष्ठावान भारतवासियोंकी गिनतीमें कभी नहीं आ सक्ती. गतवर्ष एक चौदह वर्षका बालक विदेशी सुलभ पदार्थोंकी मायामें मुग्ध हुए एक पुरुषसे बोला था, कि, कोई भी निंद्य पदार्थ चाहे वह कितनाही सुलभ क्यों न हो, जिस प्रकार ग्रहण करने योग्य नहीं हो सकता उसी प्रकारसे अपवित्र विदेशी कपडे, शक्कर, केशर, नमक आदि पदार्थ अल्पमूल्यवान होनेपर भी इस देश वासियोंकी नजरमें आदरणीय नहीं हो सकते। इस चौदह वर्षके बालकके हृदयकी पवित्रता और धर्मभावकी प्रबलता देखकर इस देशके अनेक अस्सी वर्षके बुड्ढेका मस्तक लज्जासे नीचा हो जाता है। न जाने हमारे देशवासी इस बालककी समझका अनुकरण कब करेंगे।

नानाप्रकारके पापोंसे हमारा देश दुर्भिक्ष और महामारीका लीलास्थल बन रहा है। इतनेपर भी और पाप बढ़ानेकी क्या आवश्यकता है? धन और सुन्दरताके लोभमें पड़कर भाई भारतवासियो! अब और भी अधर्मकी कीचड़में मत पड़ो! थोड़ेसे आन्न पैसोंके लोभमें अपवित्र विदेशी पदार्थोंका व्यवहार मत करो! यदि देशी शक्कर नहीं मिलती है, तो गुड खानेका अभ्यास करो. इसमें तुम्हारे धर्म और स्वास्थ्य दोनोंकी रक्षा होगी! चर्बीकी पालिश किये हुए अपवित्र कपडे पहनकर नरकका मार्ग परिष्कृत मत करो! सामान्य मूल्यके हेरफेरमें पड़कर अपवित्र केशर, कर्पूर आदि पदार्थ मत खरीदो! नेत्रोंकी थोडीसी परितृप्तिके लिये अशुद्ध पदार्थोंकी पालिश किये हुए मिट्टीके प्याले रकाबियोंसे खाद्यद्रव्योंको दूषित मत करो। हम अधर्म-पाप बहुत कमा चुके। अब और क्या आवश्यकता है? यदि धर्म है, तो सब कुछ है। सब प्रकारसे मंगल होगा। भारतवासियोंका धर्म ही एक बडा हथियार है। हमारा राज्य गया, धन गया, सन्मान गया, गौरव गया—केवल एक धर्म है उसे हम अभीतक ज्यों त्यों करके बचाये हुए हैं। धनकी अपेक्षा धर्म बड़ा है यह बात ध्यानमें रखनी होगी! आशा है कि, देशवासी इसे नहीं भूलेंगे।

(हितवादीके एक लेखकी छाया)

बिहार
ता. २९।९।०७. } नाथूराम प्रेमी,

जिनवाणीजीर्णोद्धारके समाचार

(पन्नालाल द्वारा लिखित)

सेठजीसे प्रार्थना।

विदित हो कि, जिस समय आगरा निवासी श्रीमान् विद्वद्वर्य पडित बलदेवदासजी विद्यमान थे उस समय आकलूननिवासी सेठ नाथारंगजी वालोंके मालिक श्रीमान् शेठ रामचदनाथाजी आगरा गये थे और उक्त पंडितजी साहबसे भेंट हुई तो उन्होंने सेठ रामचद नाथाजीसे अतिशय अनुरोध किया कि "पतितोद्धारिणी श्रीमती जिनवाणीका जीर्णोद्धार करके महाप्रभावनागका पुण्य सञ्चय करना हो तो सबसे पहिले अष्टसहस्री नामके न्यायग्रथको छपाकर प्रसिद्ध करो" जिस परसे उक्त सेठ साहबने सहर्ष स्वीकार किया कि, मैं शीघ्र ही आपकी इच्छाको पूर्ण करूगा। उन्होंने बंबईमें आते ही उसके लिये इस्तहार छपाकर ग्राहक बनाना प्रारंभ कर दिया था जिसके समाचार सुनकर पंडितजीको बड़ा भारी आनंद हुआ था. मुझसे भी हमेशह पूछते रहते थे कि, अष्टसहस्रीका काम कहांतक हुआ और कबतक छपना प्रारंभ हो जायगा इत्यादि। परन्तु अभीतक हमारे सुननेमें नहीं आया कि, उक्त सेठजीने अष्टसहस्रीके जीर्णोद्धारमें क्या क्या किया है। अब सेठजीसे प्रार्थना है कि, वे शीघ्रही अपनी प्रतिज्ञाको पूर्ण करेंगे।

दूसरे

श्रीप्रमेयकमलमार्त्तण्डका जीर्णोद्धार।

जिस प्रकार उक्त पंडितजी महाराज उक्त सेठ साहबसे अष्टसहस्रीके जीर्णोद्धारार्थ अनुरोध किया था. उसी प्रकार इस दासको भी कभी २ चिट्ठीद्वारा अनुरोध करते रहते थे कि, तुम क्या भाषाके ग्रंथोंको छपाते हो. जैनन्याय तथा, अध्यात्मशास्त्र (समयसारादि) और राजवार्त्तिक, श्लोकवार्त्तिक वगैरहका जीर्णोद्धार कराओ जिससे जिनमतकी प्रभावना अन्यमती विद्वानोंमें हो. परन्तु इन महान् ग्रंथोंके जीर्णोद्धार करानेमें हजारों रुपये लगते हैं, हमारे धर्मात्मा सेठिया लोगोंने मेला प्रतिष्ठादिमें ही जिनधर्मकी प्रभावना समझ रक्खी है। हमारी क्या सामर्थ्य है जो इन बड़े २ ग्रथोंका जीर्णोद्धार करावें? परतु उपाय करते २ मुम्बईके निर्णयसागर प्रेसके मालिक सज्जनोत्तम सेठ रा. रा. तुकाराम जावजीसे प्रार्थना की तो उन्होंने कहा कि, यदि तुम प्रत्येक ग्रंथकी तीन २ सौ तथा चार २ सौ प्रतिके आगामी ग्राहक बना देओ तो हम प्राचीन जैनग्रंथोंका जीर्णोद्धार कराते रहेंगे, तिसपरसे मैंने सबसे पहिले तो मूलग्रंथोंका एक गुटका छपानेका अनुरोध किया सो उन्होंने 'सनातनजैनग्रंथमाला प्रथम गुच्छक' इस नामसे छापा है। इसके पश्चात् समयसारके कलशोंकी अध्यात्मतरंगिणी नामक सस्कृत टीका शुद्धतापूर्वक लिख करके दी है। तत्पश्चात् पार्श्वाभ्युदय काव्य (जो कि मेघदूतकाव्यके प्रत्येक पादकी समस्यापूर्ति करके भगवज्जिनसेनाचार्य महाराजने कालिदासका गर्व खर्व किया था) सटीक छपानेके लिये लिखा सुधा कर तैयार किया है। ये ग्रथ शीघ्र ही छपैंगे। तत्पश्चात् उक्त पडितजीकी इच्छानुसार सबसे पहिले आचार्यवर्य श्रीप्रभाचद्रजी कृत प्रमेयकमलमार्तण्ड नामक जैनन्यायके महानग्रंथका जीर्णोद्धार कराना उचित समझकर इसीको लिखवाना व शुधवाना प्रारंभ किया. परन्तु निर्णयसागरके मालिकने कहा कि, ये महान् ग्रंथ है इसमें कमसेकम तीन हजार रुपये

हमको लगाना पड़ेगे सो इसके तीन चारसौ ग्राहक पहिले बनाना चाहिये। तब हमने धनाढ्य महाशयोंसे पत्रव्यवहार किया तो ३०० प्रतिके ग्राहक पांच महाशय हो गये अर्थात् १०० प्रतिके ग्राहक तो श्रीमान् दानवीर सेठ माणिकचंद हीराचंदजी जे. पी. ५० प्रतिके ग्राहक श्रीमान् सेठ हीराचंद नेमचंदजी आनरेरी मजिस्ट्रेट शोलापुर, ५० प्रतिके शोलापुरनिवासी श्रीमान्सेठ हीराचंद अमीचंदजी, ५० प्रतिके ग्राहक श्रीमान्सेठ हरीभाई देवकरणजीवाले सेठ बहालचंद रामचंदजी शोलापुर और ५० प्रतिके ग्राहक सेठ देवचंद चतुरकी तरफसे उनकी पुत्री उगरबाई भर्त्तार अमीचंद कस्तूरचंद उसमानाबादवाली बनी है। इस प्रकार ३०० ग्राहक हो जानेसे गत श्रुतपंचमीके दिनसे श्रीप्रमेयकमलमार्तंडजी छपना प्रारंभ हो गये हैं इस ग्रंथकी कीमत ४) रुपयेके भीतर २ होगी और सबको पौणी कीमतमें दिया जायगा। यदि और कोई महाशय इस जिनवाणी जीर्णोद्धारका पुण्योपार्जन करना चाहैं तो कमसेकम पांच पांच प्रतिके ग्राहक बन जावैं। जो जो महाशय छपनेसे पहिले २ ग्राहक बनेंगे उन सबका नाम ग्रंथके साथ जीर्णोद्धार करानेवालोंमें धन्यवाद सहित छपाया जायगा।

तीसरे

बलदेवजैनशास्त्रमाला।

पाठक महाशयो! हमारी जैन समाजमेंसे अद्वितीय विद्वान् सज्जनोत्तम वृत्यग्रगण्य श्रीमान् पंडित बलदेवदासजीका स्वर्गवास हो गया। यदि श्वेताम्बरी भाइयोंमें ऐसे अद्वितीय विद्वान्का परलोकवास होता तो लाखों रुपयोंके द्वारा उनके नामको स्मरण करानेवाली पाठशाला, सभा, मासिक पुस्तक, पुस्तकालय स्थापन हो जाते। क्योंकि उनके यहां एक संस्कृत विद्याके जानकार श्रीआत्मानंदजी संवेगी साधुका परलोक होनेपर जगह २ उनके नामसे सभा पाठशाला, पुस्तकालय, मासिकपत्र चलाये जाते हैं। उसीप्रकार एक साधारण विद्वान् कवि रायचंदजी भाई थे उनके स्मरणार्थ प्रायः १९ हजारका चंदा करके प्राचीन ग्रंथ उद्धारार्थ एक "रायचंद जैनशास्त्रमाला" द्विमासिक पुस्तक छपाई जाती है जिसमें दिगम्बरी, श्वेताम्बरी दोनों प्रकारके उत्तमोत्तम प्रभावना करनेवाले ग्रंथोंका जीर्णोद्धार होता रहता है। परंतु खेद है कि, हमारी दिगम्बर जैन समाजके एक सूर्यसमान विद्वानके अस्त हो जानेपर भी उनकी स्मृतिके लिये कुछ भी न किया जाय?

इस स्मृतिकार्यका स्थापन करना सबसे प्रथम तो आगरानिवासी भाइयोंका कर्त्तव्य है फिर समस्त देशके विद्वान् व धनाढ्य भाइयोंका कर्त्तव्य है। देखते हैं कि, अब कौन २ महाशय क्या क्या करते हैं. हमने एक दिन पंडितजीकी विद्वत्ताकी प्रशंसा करके निर्णयसागरके मालिक श्रीमान् शेठ तुकारामजी जावजीके निकट प्रस्ताव किया, तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया कि, प्रमेयकमलमार्तण्डादि जो जो जैनग्रंथ छपावो उन सबपर बलदेवजैनशास्त्रमाला नाम ही छपाया करो ऐसे विद्वान्की स्मृति तो अवश्यही रहनी चाहिये। सो पाठक महाशय! जिन २ ग्रंथोंके जीर्णोद्धारका ऊपर उल्लेख किया है वे ग्रंथ और आगेको समयसारजी, राजवार्त्तिकजी, शाकटायनव्याकरण, श्लोकवार्तिकजी, गोमट्टसारजी आदि बड़े २ ग्रंथोंका इसी बलदेवजैनशास्त्रमालाके द्वारा जीर्णोद्धार किया जायगा।

हालमें समयसारजी व गोमट्टसारजी व राजवार्तिकजीका कुछ २ संशोधनादिकार्य चल रहा है. प्रमेयकमलमार्तंडादिके पश्चात् इनका प्रारंभ किया जायगा। परन्तु इन सबसे पहिले,—

शाकटायनव्याकरणकी अमोघवृत्ति।

नामकी बड़ी टीकाके जीर्णोद्धारकी बड़ी भारी आवश्यकता है. क्यों कि, इस समय अन्यमतके पाणिनीय व्याकरणका ही सब जगह प्रचार है पाणिनीयके समान और कोई भी वैयाकरणी "न भूतो न भविष्यति" ऐसा अनेक विद्वान् कहते, और समझते है. परन्तु जिस समय पाणिनीयसे भी प्राचीन शाकटायन महाव्याकरणकी महावृत्ति प्रसिद्धिमें आवैगी तो विद्वत्समाजको मालूम होगा कि, पाणिनीयसे पहिले भी जैनबौद्धाचार्य बड़े २ वैयाकरणी हो गये हैं। यद्यपि हमने एक अन्यमती पुस्तकविक्रेताकी सहायतासे शाकटायनकी प्रक्रियाका जीर्णोद्धार कराया है. परन्तु जब तक अमोघवृत्तिका प्रकाश न होगा तबतक उसका प्रचार अन्यमतियोंमें वा सरकारी संस्कृत कालेजोंमें होना कठिन है, इस कारण जिनवाणी माताके उद्धारक विद्वान और धनाढ्य महाशयोंसे हमारी प्रार्थना है कि, आप लोग यदि प्रमेयकमलमार्तंडके समान इसके पचीस २ पचास पचास प्रतिके ग्राहक बन जावैं तो हम प्रमेयकमलमार्तण्डसे भी पहिले अर्थात् एक वर्षके भीतर इस महान्व्याकरणका जीर्णोद्धार करा देवैं। यह अमोघवृत्ति २०००० श्लोकोंमें पूर्ण हुई है इस पर श्रीप्रभाचन्द्राचार्यकृत न्यास भी है इसके जीर्णोद्धारमें कमसे कम चार पांच हजार रुपये खर्च पड़ेंगे छपनेपर इसकी कीमत बहुतसे बहुत ५) रु० १ प्रतिकी रक्खी जायगी। प्रथमसे ग्राहक बनैंगे उनको ४) रुपयेमें दी जावेगी और इसके जीर्णोद्धारमें प्रथम सहायक होनेवालोंमें उनका नाम धन्यवादसहित प्रसिद्ध किया जायगा। देखें कौन कौन जिनवाणीमाताके भक्त हैं जो अपनी माताके जीर्णोद्धारार्थ कोशिश करते हैं।

२९–९–०७ जैनसमाजका हितैषी दास.

पन्नालाल जैन,

चातुर्मासवर्णन।

पावस (१)

रोलाछंद

सरित कूप सर भरत, अन्न घृत तुम निपजावत।
जगत हरित तुम करत, विज्जुछबि तुम दरसावत॥१
तुम महँ रहत पुनीत, परब अष्टम नन्दीसुर।
सोलह कारण पंच, पहुप दसलक्षण तुव उर॥ २॥
तीन रतन जुत शोभित, तुम तन अनुपम पावस।
असन वसन जल जनक, कहें कवि श्रावक सावस॥३
पै यह दोष विशेष, भई मतिहीन चकोरी।
निशिपतिके भ्रम मूल, लखत वह दिनकर ओरी॥४
ज्यों नर कर मद पान, आपनी सुधि विसरावै।
बनिता भगनी मातु, आदिको भेद भुलावै॥ ५॥
तुव निपजित जल असन, सेय त्यों जैनी भैया।
निज सुधिबुधि च्युत भये, डार भवदधि बिचनैया॥
यद्यपि भादों माहिं, नियम बृत स्वय धरत हैं।
तद्दपि तोर प्रभाव; जान हित, अहित करत हैं॥७॥
केशर मिश्रित मास, घिसहिं चदन चरचावैं।
सजहिं सरुचि वसुद्रव्य, बहुरि निज तन लिपटावैं॥८
कहुं कहु कूर कपूर, विदेशी अशुचि घिनावन।
दहत करमवन दहन, मनहुनिज सदन दहावन॥९॥
कहुं २ झाड़ फनूस, विदेशी लटक रहे हैं।
कहुं २ गोल गिलोब, कांचके दमक रहे हैं॥१०॥
गद्दी चौंर अछार, पताका सभी विदेशी।
चमक दमक पर रीझि, बनत हैं धरमहितैषी॥११
दुलह यदपि कुमार, तासु सँग युवति बिठावैं।
साठी बाबा संग, हाय कन्या परणावैं॥ १२॥
जिनकी वैस किशोर, ज्ञानगुन ग्रहण करनकी।
कुसमय भोग कुभोग, करत दुरगति हैं तनकी॥ १३॥

गये आर्षविधि भूल, शूल शिव मारग बोवें।
लेवें मिथ्याकाच, सांच मणि अपनो खोवें ॥ १४ ॥
तापर विधवाव्याह, करनको कमर कसी है।
पावस तोर प्रभाव, हाय चित कुमति बसी है ॥ १५ ॥
नहीं पास निज दरब, काढ कलवारो लावें।
सुत तनुजाके व्याह, मौजसौं ताहि उड़ावें ॥ १६ ॥
तनक प्रशंसा हेतु, आपनो सरबस खोवें।
साथ मुसन्डे गये, आप भर जीवन रोवें ॥ १७ ॥
मंदिर जीरण शीर्ण, हाय! बहु विनस रहे हैं।
तौहू रचहिं नवीन, बृथा धन खरच रहे हैं ॥ १८ ॥
रंडी मुंडी भाड, आदिमें माल उड़ावें।
गजट मित्रको मूल्य, खात शठ नहीं लजावें ॥ १९ ॥
वी पी. देहिं फिराय, पत्र उत्तर नहि देवें।
नादिहन्दको पदक, आप हर्षित है लेवें ॥ २० ॥
इत्यादिक यह कथा, अमित ह पावस तोरी।
श्रावक कह किमि सकै, मोर मति है अति थोरी ॥ २१ ॥

शेष फिर—

देवरीनिवासी बुद्धूलाल श्रावक।

दि० जैन प्रा० सभा मालवेका साधारण अधिवेशन.

भाद्रपद शु १३ की रात्रिको ८ से १० बजे तक प्रा० सभाका साधारण अधिवेशन हुआ। प्रथम ही लाला हजारीलालजी मत्री उपदेशक भडारने मंगलाचरण करके उसीके अभ्यन्तर बहुत उत्तम रीतिसे प्रभावक शब्दोंमें मिथ्यात्वका निषध किया। और कई धर्मसम्बन्धी क्रियाओंमें जो अनाचार फैल गये हैं उनकी समालोचना की.

पश्चात् भाई गट्टूलालजी जौहरीने प्रस्ताव किया कि, आज की सभामें श्रीमान् सेठ हुकमचन्दजी सभापति हों इसका समर्थन श्रीयुत सेठ वालचंदजी व जौहरी फतेहलालजीने किया. और सर्व सम्पति पूर्वक उक्त सेठ सा० ने सभाका आभार मानते हुए सभापति होना स्वीकार किया.

पीछे पं. गौरीलालजी सहकारी महामंत्रीने सभाके उपदेशक भंडार, विद्याखाते, बोर्डिंग व तीर्थ-क्षेत्र खातेकी ६ महीनेकी रिपोर्ट व बोर्डिंगसे प्रवेशिकामें पास हुए दो विद्यार्थियोंका रिजल्ट सुनाया। जिसको सुनकर सभासद प्रसन्न हुए। इसके पश्चात सभापति साहिबने प्रस्ताव पेश किया कि, इस अधिवेशनपर जो पं. गौरीलालजी सहकारी महामंत्री नियत किये गए हैं परन्तु पंडि-तजीको बोर्डिंग सम्बन्धी कार्योंकी अधिकतासे इस कार्यके सम्पादन करनेमें बहुत अड़चन पड़ती है अतएव मेरी रायमें मास्तर दरयावसिंहजी सोंधिया सहकारी महामंत्री नियत किये जावें और अभीतक जो दरयावसिंहजी विद्याखातेके मंत्री थे। सो आगेके लिये लाला भगवानदासजी बड़नगरवाले विद्याखातेके मत्री नियत किये जांय. इसका अनुमोदन जौहरी फतेहलालजी वा लाला हजारीलालजीने किया और वह सम्पति पूर्वक प्रस्ताव पास होकर मुनासिब काररवाई होना ऐसी तजवीज हुई.

बाद जौहरी चुन्नालालजीने पुर्णधन न लेनेके प्राचीन प्रस्तावको मुद्दत पूरी हो जानेके सबब पक्का होनेके लिये पेश किया. जिसका समर्थन सेठ हुकमचन्दजी व सेठ अमोलकचन्दजीने इसका भलीभांति प्रयोजन समझाकर किया चारों गोंटके पंचोंने इस विषयमें बहुत कुछ सोचने विचारने बाद आगे फिर पेश होनेकी तजवीज की और जैकारेके साथ सभा विसर्जन हुई।

द्वितीय दिवस चतुर्दशीकी रात्रिको ८ से ९ $\frac{1}{2}$ बजे तक लशकरी मंदिरजीमें सभा हुई जिसमें (दरयावसिंह सोंधिया) मैंने मंगलाचरण किया और भाई हजारीलालजीने अन्याय और अभक्ष्य निषेधपर दृष्टान्तों युक्त व्याख्यान देकर विद्योन्नतिकी आवश्यक्ता बताई। अन्तमें भाई मुन्नालालजी बाकलीवालने व्याख्यानका अनुमोदन भली भांति करते हुए सभा विसर्जन की.

धर्मसेवक—दरयावसिंह सो०
सहकारी महामत्री,
इन्दौर।

प्रश्न।

कईएक भारतवासी सज्जनोंकी सम्मति पढ़ने और सुननेसे ज्ञात होता है कि, मिट्टीका तेल स्वास्थ्यादिके लिये हानिकारक है। और ऐसा प्रतीति भी होता है। परन्तु प्रश्न यह है कि, क्या कोई धर्मात्मा विद्वान पुरुष अंग्रेजी या किसी और भाषाकी मौतवर पुस्तक या अखबारका नाम बतला सक्ता है जिसमें मिट्टीके तेलकी हानियां विदेशी विद्वानोंने ऐसीही साफ २ लिखी हों। जैसी चुरट, तम्बाखू, विदेशी चीनी आदिकी लिखी हैं। तथा भारतवर्षके हरएक मजहबके विद्वानोंसे प्रार्थना है कि, आप भी देश और धर्म रक्षाके हेतु कष्ट उठाकर धार्मिक और वैद्यक ग्रंथों अथवा प्रमाणिक युक्तियोंसे सिद्ध करें कि, उपरोक्त दुर्गंधित और भ्रष्ट पदार्थोंके सेवनसे धर्म, देश, और स्वास्थ्यको क्या २ हानियां पहुचती हैं। समस्त सम्पादकों और विद्वानोंसे प्रार्थना है कि, इस प्रश्न तथा इसके उत्तरसे देशको लाभ पहुचानेकी कृपा अवश्य करें।

देशसेवक,
हीरालाल गुप्त रुड़की.

'योग्यायोग्यविचारोऽयं रागान्धानां कुतो भवेत्।,'

हाय! आज हमारे समाजमें इसी वाक्यका समर्थन-हो रहा है। क्या इस पवित्रधर्मके उद्धार करनेवाले अकलकादि सदृश कोई ऋषि महर्षि हैं? क्या इसवत न्याय करनेवाले और विद्वानोंका आदर करनेवाले गुणग्राही नृपति हैं! नहीं! नहीं! आज जैनसमप्रदायमें ज्ञानरूप हस्तावलम्बन देकर ससार समुद्रसे पार करनेवाले बड़े २ राजा महाराजाओंके सम्मुख विपक्षियोंके मिथ्यापक्षको पराजितकर जैनधर्मकी विजयपताका विस्तृत करनेवाले, भव्योंके हृदयमे सम्यधर्मके श्रद्धानरूप प्रभाकरके प्रकाशित करनेवाले मुनीश्वरोंका सर्वत्र अभाव ही है। हाय उन महर्षियोंके न रहते परिग्रह और हिंसाप्रिय अज्ञ गुरुओंके मिथ्या-उपदेशमे अनेक पाखण्ड और पथ प्रचलित हो रहे हैं, जो अपने २ पक्षोंको कुतर्कों द्वारा सिद्ध करके विचारे अज्ञ पुरुषोंका मिथ्यावाग्जालमें फसानेके लिये अनेक चेष्टाए किया करते हैं। ऐसे कुगुरुओं द्वारा मोक्षपुरीका मार्ग मिलना नितान्त असभव है। वे वावीस परीषहके सहन करनेवाले, मोक्षमार्गके प्रकाशक, तरन तारन श्रीगुरु अब नहीं हैं। जैनियोंके पापकर्मके उदयसे सब गुरुओंका अभाव हो गया है। इसी प्रकार धर्मरक्षक, नीतिशास्त्रके ज्ञाता, मुनिपालक, खलसालक राजाओंकी भी सफाई हो गई है, तथा जैनियोंके हाथसे राज्य सत्ता निकल गई है। उपर्युक्त दोनोंके अभावसे ही हमारी अधोदशा हो गई है। स्वराज्यके अभावसे राज्य दण्ड और सुगुरुओंके अभावसे धर्मदंड मिट गया है और हम अव्याहत होकर धर्म कर्म खो बैठे है। तथा शास्त्रोक्त जप, तप, सयमकी भी शोचनीय दशा हुई है। साधुओंके पालने योग्य स्नान न करने और दंतधावन न करके घिनावना मुख बनाये रहनेकी कियाए श्रावकोंने ग्रहणकी है। ऐसे कुत्सित व्यवहारोंपर भी यदि कोई सुशिक्षित पुरुष आक्षेप करता है, तो प्राय. अपढ भाइजी लोग उनके गलेके हार बन बैठते हैं, जिससे वे बेचारे यथार्थ बोध प्राप्त करनेसे वंचित रहते हैं। क्योंकि आज कल हमारे समाजमें भाइजी लोगोंके वचन सर्वज्ञप्रणीत वचनोंसे भी अधिक माननीय हो रहे हैं। और सुशिक्षित विद्वानोंके वचनोंका निरादर होता है। इसका कारण यह है कि, भाइजी लोगोंके पक्षमें प्राय: समाजके अशिक्षित हमारे पंसारी तथा वनिये लोग रहते हैं और विद्वानोंके पक्षमें विरले ही सज्जन होते हैं। इसका मूल कारण अज्ञता है जैनियोंने अपने नित्य नैमित्तिक मुख्य कार्योंको प्राय: छोड़ ही दिया है। वे थोड़ेसे चांवल चढ़ाकर या मालाके दो चार दाने सटकाकर भगवानकी जल्दी २ अर्चना करके

या भाइजी लोगोंके मुखसे शुद्धाशुद्ध सूत्र या भक्तामरका पाठ सुनकर कृतकृत्य हो जाते हैं। इसीसे हम लोगोंका गौरव प्रताप आदि उठ गया है। पूर्वकालमें श्रावकके बालकको देखकर विधर्मियोंका मुख स्तब्ध होता था, क्यों कि बाल्यावस्था हीसे हमारे पूर्वज न्याय, व्याकरण और धार्मिक सिद्धान्तोंका अध्ययन करते थे। आज उनकी सन्तान उपहासके योग्य हो गई हैं। जहा जाइये, वहा जैनियोंके १००, २०० घर, सुन्दर विशाल मदिर, दो चार भाईजी, दो चार सिंघई आदि सब ठाट देखनेमें आवेगा। परन्तु विद्वानोंमे वह स्थल कोरकोर पाया जावेगा। जहां कहीं एक दो विद्वान है भी, तो उन्हें कल्पित कलक लगाना श्रावकोंका स्वाभाविक कर्म हो गया है। क्या जैनियोंको स्नान, मुखधावन, पूजन, सध्या, वन्दन, इत्यादि कर्म करनेकी आवश्यक्ता नहीं है ! है ! अवश्य है !! परन्तु सुशिक्षकोंका अभाव है। यदि योग्य शिक्षक होते, तो आज यह जाति अध पतन क्यों करती ? जो श्रावक अहर्निशि शुभकर्मके आश्रयके लिये सभा, पूजन शास्त्रस्वाध्याय आदिमें व्यतीत करते, थे, वहा आज कलह विवाद वेश्याओंके नृत्य करा अपने विषयकषायोंको पुष्ट करके समय व्यतीत करते है। और धार्मिक कार्योंमें दश बुलावे जावें, तौ भी कृपा नहीं करते है। उदाहरण लीजिये, मालवा प्रान्तिकसभाके उपदेशक कस्तूरचन्दजीका निवासस्थान भोपाल है, इस लिये वे सालमें कई वार यहां आते हैं। परन्तु व्याख्यानसभाका कुछ भी प्रबन्ध नहीं होता। यदि सभा हुई भी तो कोई सुननेको नहीं आता। वेचारे आवें, कैसे, रागके बढानेवाले नृत्य देखने से फुरसत भी मिले ! जब कि, दूसरे सम्प्रदायवाले ढुंढिया श्वेताम्बरी आदि व्याख्यान सुननेके लिये मेघ मयूरवत उत्सुक रहते है, तब हमारे भाई अन्य कार्योंमे अपना द्रव्य लगाना सफल समझते हैं।

भोपालके मुखिया भाइयोंसे हम पूछते हैं कि, आपका यह कृत्य कहा तक धर्मानुकूल है। और इससे नवीन सतानके कोमल हृदयपर क्या असर पडेगा ? भाइयो ! मुखिया उन्हें कहते हैं, जो जाति धर्म सम्बन्धी अनेक त्रुटियोंको दूर करते हुए उन्नतिका उपाय रातदिन विचारा करते है। और बुरे कर्म करने वालोंको भयभीत रखते हैं। परन्तु जब मुखियालोग स्वय निद्यकार्योंमे प्रवृत्त होते है तब फिर होनहार सन्तानका क्या ठिकाना है ?

भाइयो ! स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य मत करो। निद्रावस्थासे सचेत होकर योग्यशिक्षाका प्रचार करो, ताकि दड मिलनेकी कोई आवश्यकता ही न रहे। क्योंकि इस पवित्र धर्मकी शोचनीय अवस्था हो रही है। क्या इस जैनजाति रूपी नौकाको डूबते हुए देखकर तुम्हारे कठोर हृदयमें दयाका सचार नहीं होता ? यदि होता है तो फिर अनैक्य स्वार्थपरायणताको नाश करके आचार्य मुनियोंके मार्गपर क्यों नहीं चलते हो ? श्रीजिनेन्द्रदेवसे प्रार्थना है कि, वे भोपालके मुखियोंको समाजसुधारकी सद्बुद्धि प्रदान करें।

मोतीलाल विद्यार्थी भोपाल।

पत्रोंका सार।

इन्दौर—श्रीसिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूटजीके निम्नलिखित प्रबधोंके लिये एक लाख रुपयोंकी आवश्यकता है इसलिये हिसाब किताब रखने और अन्य २ ग्रामोंमें जाकर वसूली करनेके लिये ६२) मासिकके दो गुमाश्ता नियत किये गये है आशा है कि, सम्पूर्ण धर्मस्नेही सज्जन जैनीभाई इस धर्मकार्यमें अवश्यही सहायता प्रदान करेंगे। रुपया देकर रसीद अवश्यही ले लेना चाहिये।

(१) तीनों मदिरजीके प्रक्षाल और पूजन नैवेद्यका बन्दोबस्त करना है।

(२) जिनमदिरकी मरम्मत होना है।

(३) मदिरजीके चारोतरफ कोटका काम शुरू हुआ है।

(४) यात्री लोगोंके ठहरनेके लिये धर्मशालाका काम आरभ हुआ है।

(५) नर्मदाका पानी दूर पडनेसे यात्री लोगोंको बडी अडचन होती है इस लिये बावडी खुदवानेका काम शुरू है।

(६) दुखित भुखित प्रवासी लोगोंको भोजन दिये जानेका प्रबध करना है।

(७) मदिरजीकी जमीन बाबत मकुन्दराव भूरेसीगजी सीलाणीवालोंके मुकद्दमेंमे अनुमान ५०००) खरच होगा।

विदित हो कि, २५०००) स्वीकार हो चुके हैं जिसकी नामावली पीछे विदित करेंगे।

भूरजी सूरजमल मोदी मलहारगज, इदौर

बारसी—यहा तीस चालीस वर्षसे दशलाक्षिणिक महोत्सव बडी धूमधामके साथ हुआ करता है इस वर्ष भी प्रात समय भगवानका अभिषेक सबभाई तथा भगिनीगण एकत्र होकर देखते थे, पश्चात कोई तत्वार्थसूत्रजी और कोई व्रतकथा पढते थे। अनेक भाई एकभुक्त करते थे और जीमते वक्त घटानाद करके रोटी खाते थे सायकालको भगवानकी पचपूजा, सोडसकारण, दशलाक्षण, अनन्तव्रत, सुगन्ध दशमी, मेरु पूजा आदि करते थे, और रात्रिको शास्त्र श्रवण करते थे रोशनाई और आराइश दर्शनीय थी, पूजाके समय बडे २ भाईजी नृत्य करते थे, दशलाक्षणिक पर्वमे गणेशोत्साह शुरू होनेसे लोगोका जमाव अन्ततक नहीं रहता पूर्णमाके दिन नवग्रह यक्ष पूजा हुई उस समय एक मनुष्यके अगमें पिशाच आ गया था किसी २ दिन पारणे हुआ जिसमें स्वदेशी शक्करका फैलाव किया गया था मिस्टर पागलका भी एक दिन कीर्तन हुआ

एक समदर्शी.

जगदलपुर-(रायपुर) यह नगर इन्द्रावतीनदीके किनारेपर बसा है। जनसख्या चार हजारके लगभग है। कपडेका पहिनाव बहुत कम है। जगली मनुष्य बहुधा पत्ते पहिनते हे बल्कि नांगे भी रहते है। कानमे पीतलका गहना बहुत पहिनते हैं, यहां तककि, फी आदमीके बदनपर दस सेर तक गहनेका बोझ लद जाता है। कुवारके महीनेमे प्रतिवर्ष **दशहरेका** उत्सव होता है। जिसका समाचार लिखते हृदयमें वज्राघातसा होता है परन्तु साहसपूर्वक लिखे देता हू। दशहरेके उत्सवमें कुल रियासत वस्तर और आसपासके ग्रामोंके मनुष्य एकत्र होते है जल्सा तीन दिन तक होता है। राजा साहिबको रथारूढ करके वस्तीमें घुमाते हैं। रथमे दतेश्वरी देवीकी स्थापना भी की जाती है। इस उत्सवमे बकरा, भैंसे, इतने हते जाते हैं जो लिखनेसे वाहिर है। जब कोई दयावान जैनी इन मनुष्योंसे प्रश्न करता है कि, निरर्थक इतनी जीवहिंसा क्यों करते हो ? तब उत्तर मिलता है कि, देवीजीके प्रसन्नतार्थ, और प्राचीन पद्धति भी है। यहाके कुलीन अकुलीन, राजा, प्रजा, प्राय सभी मांसस्नेही हैं। धानकी पैदाइश अधिक होती है। यहांका गुडभी खानेमें अच्छा होता है और परिश्रम करनेसे उसकी देशी शक्कर भी बन सक्ती है—विदेशी शक्कर शहरभरमें बन्द है। यह अच्छी बात है। यदि उपर्युल्लिखित जीवहत्याकी कुप्रथा बन्द की जावे तो परम उत्तम हो। आशा है कि, न्यायशील राजासा० अवश्य इस ओर लक्ष्य देंगे कडोरेलाल मुन्नालाल

मुडवारा-(जबलपुर) जैनमदिर २ हैं स्थानीय भाई उनका प्रबध ठीक रखते हैं। इन सज्जनोंने अनुमान दससहस्र मुद्रा व्यय करके अत्यन्त सुन्दर और सुखप्रद शालाग्रह बनवाया है। परन्तु खेद है कि, विद्यार्थियोंकी सख्या अत्यल्प होनेसे पाठशालाका कार्य यथावत नहीं चलता। भाई कन्हैयाललजी रतनचद्रजी सवाई सिंघई (जिनके प्रयत्नसे यह शिक्षाग्रह ऐसा उत्तम बना) का उत्साह प्रशसनीय है। श्रीयुत पडित शिखरचन्द्रजी जैन, तथा श्रीयुत पडित वशगोपालजीशर्मा स्थानीय भाइयोंकी ओरसे बालकोंको शिक्षा देते हैं, मासिक व्यय ४०)के लगभग है। हम धन्यवाद देते हुए आशा रखते हैं कि जिन्होंने इतना रुपया व्यय करके पाठशालाका ग्रह तैयार करवाया है वे अपनी लक्ष्मीका और सद्व्यवहार कर इसे बोर्डिंगहौस बनानेकी कृपा करेंगे यह मुकाम बुंदेलखड और दमोहके समीप होनेसे बोडिंगहौसकी आवश्यक्ता रखता है हम दानवीर सेठ **माणिकचद हीराचंदजी** जे पी का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हैं कि, वे इस कार्यके करनेमें यहाके भाइयोंको उत्साहित करनेके लिये यहा पधार कर दीन बालकोपर कृपाकरें। तथा उपर्युक्त सिघईजी सा० को भी उचित है कि, व इस कार्यके करनेके हेतु उत्साहित रहें तथा अन्य भाइयोंको उत्तेजना देवें।

बाबूलाल पनागर।

मनोहरथाना—११) पहिले और हालमे २६) चदा श्रीसिखरजीके रक्षार्थ किया गया। आजतक यहा कोई विद्वान या उपदेशक नहीं आया। केवल जैनमित्र और जैनगजट मात्र ही यहा उपदेशकरूप आया करते है उन्हें सम्पूर्ण भाई सस्नेह सुनाते और सुनते है। यहा माधौपुरसे एक वैष्णव पडितजी पधारे थे, आपने सब वैष्णव भाइयोंको उपदेश किया, जो रात्रिको भोजन नहीं करता वह महापातकी है। १ सूर्यके रहते जो दो बार भोजन करता है, उसके पापका टिकाना नहीं है ऐसी शास्त्राज्ञा है। तब मैंने श्रीमान् पडित लक्ष्मीचन्दजी लश्करवालोंसे प्रार्थना करके अन्यमतके शास्त्रोंमें रात्रि भोजन निषेधका जबाब मगाया। श्रीमानने १३ पुराणोंके श्लोक पूरे पते समेत भेज भी दिये। उन्हें देखकर माधौपुर निवासी पडितजी बहुत बिगडे और कहने लगे कि, तुम्हें हमारे ग्रथ देखनेसे क्या मतलब है। हर्ष है कि, कई निष्पक्ष वैष्णव भाइयोंने पडितजीके विरुद्ध जिनाज्ञाको स्वीकार किया और रात्रि भोजन त्याग करनेका अभिप्राय प्रगट किया। **रामचन्द्र**

बम्बई—भारतवर्षके जैनशास्त्रोंकी सूची तयार करानेके हेतु श्रुतपचमीके महोत्सवपर श्रीमान् बाबू देवकुमारजी रहीसके उद्योगसे चारवर्षके लिये ४३१) वार्षिक चदा स्वीकार हुआ था हर्ष है कि, सेठ नाथारगजी गांधी सोलापुरने इस शुभ कार्यके सहायतार्थ चार वर्षके लिये १५०) वार्षिक स्वीकार कर क्षणस्थायी द्रव्यको सार्थक किया है। धन्य है। उस दिनकी सभामें निश्चित किये हुए ६००)

मे अब थोडी ही कसर है । बम्बईके सुजनोंसे प्रार्थना है कि, इस कार्यको शीघ्रही प्रारम करदेवें अथवा प्रान्तिक सभाके स्वाधीन करदेवें । श्रावक ।

प्राप्तिस्वीकार श्रीसम्मेद शिखरजी।

श्री सर्वोत्तम परमपावन सम्मेद शिखरजीपर अप्रमाण हिंसा और विघ्नके उत्पन्न करने वाले विधर्मियोंके बगले बनने न पावें ऐसी मनोकामना वा भक्तिसे जिन जैनी सज्जनोंने द्रव्य भेजा है उसकी सूची

ता ४ सितम्बरसे ३० सितम्बर ०७ तक ।

२३४४२॥) पिछला जमा ।
७५) पचान खेरवाडा जिला मेवाड ।
१८) नाम वा स्थान अप्रगट है, गत जैनमित्रका नोट देखिये ।
३०) ,, ,, ,,
४३) पचोरी दुवाचन्द रूपचन्दजी खेरवाडा ।
३) पंचान पिडरा जि बिलासपुर ।
२५) ,, खलेसर जि रीवा ।
१८) ,, कटनी जि जबलपुर ।
२२१) ,, नागपुर मा नत्थूसा नारायणसा ।
७५) ,, मालथौन जि सागर ।
४६॥) ,, खनयाधाना जि झांसी ।
१२) ,, गुढर जि झांसी ।
५) ,, देखो जि झांसी ।
१५) ,, अछरोनी ,,
५) ,, पुरागे ,,
५) ,, चमरेडवा ,,
२३) ,, मोहारी ,,
५) ,, ननीवामोर ,,
९) ,, पिपरी ,,
३५=) ,, मुडरा ,,
२) ,, पडरा ,,
२०=) ,, बडी वामोर ,,
७१) पचान नयाखेडा जि झांसी ।
१०) ,, गरेटो ,,
७) ,, बरदुवा ,,
३) ,, कन्दारी ,,
१) ,, मरद्मोहासा ,,
२२७) ,, नानोता जि सहारनपुर ।
३०) ,, बण्डा जि सागर ।
६४=) ,, केकडी जि मेरठ ।
६1) ,, भाई कन्हैयालाल जाडनमल ताडा जि० मेरठ
७) ,, शंकरलालजी मुवारीपुर जि० मुजफ्फरनगर
९१॥) पचान पाटन जि० जबलपुर ।
२) कन्हैयालालजी हजारीलाल महियर ।
५) डो बेनी प्रसादजी, जि० जबलपूर
५००) पंचान मिरजापुर ।
३४२) ,, शाहाकोडा जि० सागर ।
२००) ,, करहल ।
२७) ,, सासनी जि० अलीगढ ।
४२५) ,, बरोत जि. मेरठ ।
५१) ,, बावली ,,
२४) ,, जोहोडी ,,
२१) ,, सिनोली ,,
१०१) ,, सरूरपुर ,,
१०) पचान तीधी जि मेरठ ।
५) ,, बरौली ,,
१८॥) ,, धनोरा ,,
५१) ,, कोटीला आगरा ।
२५०) , खेकडा जि मेरठ ।
१०=)॥ ,, उमरेठ ,, छिन्दवाडा ।
१) गिरधारी लालजी सिंघई मोहोना जि. सागर
४) पचान गुलची, खिरई, बारी, दसरू जि सागर.
५१) मूलचन्दजी जमीन्दार बरुवा सागर जि झांसी
१०॥) पचान खेरकट जि झांसी ।
८) ,, किम्यारो ,,
११८॥) ,, अकलतरा जि बिलासपुर ।
४॥) ,, छपरा जि सागर ।
७) सखाराम वेणीचंद मोहोल जि शोलापुर
२०) मोतीचंद वेणीचंद पेनूर जि शोलापुर
१३०) पचान सरनौ जि एटा ।
१००) ,, करौली जि राजपूताना ।
८५) ,, रीवाँ रियासत ।
१९६) ,, पछार जि ग्वालियर ।
३१॥) पचान माडा जि शोलापुर ।
९८॥) ,, सिलवानी जि भोपाल ।
१५०) ,, मोरेना रियासत ग्वालियर ।
७३॥) टूंडे चौधरी चिमन सिंघई मोजेपूरे विरधा जि झांसी ।
१०१) पचान पन्ना ।
४६।) पचान नेवरा जि रायपुर ।
२०) गोपालसा नागोसा वासिम जि आकोला ।
४६) मूलचंद सवाई सिंघई केसली जि सागर
५७॥।≋) देहाती जैनी बाजार टीकमगढ मा. मास्टर दरयावसिंहजी
४०) पचान गुढा जि झांसी ।
१०) ,, चिणाव पो चिरगाव जि झांसी
१७) ,, पाटखेरा पो पछार ।
४५०) ,, भेलसा ।
१७५) ,, पिरथीपुर पोस्ट बरुवासागर ।
२५) ,, बरुवासागर जि झांसी ।
२५) ,, नामदा जि उदयपुर ।
११) ,, ननोरा रि ललितपुर ।
२१) , नगला खेडी जि० मुजफ्फुरनगर ।
६३) मोहनलाल मुन्नालालजी औरंगाबाद ।
१५०) पचान रानीपुर जि० झांसी ।
४) पंडित विरधीचंदजी सोनेगांव ।
१०) मनदल सिंघई भीकमपुर जि० झांसी ।
१०) पचान शाहगढ जि० सागर ।
२५) ,, तारनपंथी बादा ।
३९॥-) बनारसीदासजी तथा दलीपसिंहजीकी पत्नी कैराना जि० मुजफ्फरनगर ।
६००) रा रा बन्डैया येवालोर (दक्षिण)
२०1) पचान हवसे—मोहगाव ता० सौसर जि० छिन्दवाडा
५७) दहीगांव जि शोलापुर ।
६५) पंचान बावीना जि० झांसी ।
१०९=) ,, गलियाकोट जि० डुंगरपुर ।
८) बाबू बेनीप्रसादजी आदि ४ सज्जन खुडवानसा, जी आई पी
१५०) पचान हरदा ।
४६) ,, मऊ रानीपुर ।
१२१) ,, चन्देरी जि० झांसी ।
१००) ,, राणापुर ।
५०) ,, शाहपुर जि० अजमेर ।
५) सुवना पायप्पा वेदाकिहाल जि० धारवार ।
१०१) पचान मारोला जि० कोटा ।
६२) ,, गणेशपुर जि० जबलपुर ।
५०) ,, छतरपुर जि० झांसी ।
१०) लाला नेमदासजी मंगलसेनजी शिमला ।
७००) पचान भोपाल ।
२५) ,, करेली जि० नरसिंहपुर ।
६०) ,, लखनादौन
२०) ,, नवगज (बुंदेलखण्ड)
५) धरमचंद फुलचंदजी इडपुर जि० पूना ।
२४॥) हेमराज मगाप्रसाद झांसी ।
११॥।-) पचान सोजना जि० झांसी ।
५३) ,, डीग रियासत भरतपुर ।
२३) उदयचन्दजी चपालाल चन्देरी जि० झांसी ।
१०) पचान सावलवाडी बुधगाव जि० सितारा ।
९) हरलालसा शीतलसा पोरवार मलकापुर जि० बुलाढना ।
२५) पचान भणादा पो खेरवाडा जि० मेवाड ।
३२) ,, गम्भीर जि० दिल्ली ।
१७५) ,, देवबन्द जि० सहारनपुर ।
२६॥) ,, बरगी जि० जबलपुर ।
५) हजारीलालजी केदारीलाल नरसिंहपुर कन्देली ।
५) लालचन्दजी ,,
३१०) शेठ विरजलाल चन्दरभान ललितपुर ।
३५०) पचान एटा ।
१८) ,, छुई खदान रियासत मा सम्पा जैन गजट ।
५) रिखब कृष्णाजी दयीपुर जि० अमरावती मा. सम्पा जैन गजट ।

३२४२७)॥। **कुलयोग ।**

भूल संशोधन—गतांककी प्राप्तिस्वीकारमे पचान झांसीके ५२≋) छपे हैं सो ५२।≋) समझना चाहिये ।

प्रार्थी—

कार्यालय—**हीराबाग** पो गिरगांव बम्बई । ता २-१०-०७	**माणिकचन्द हीराचन्द** जे पी महामंत्री तीर्थक्षेत्र कमेटी ।

समाचार ।

लाडनू- (मारवाड) भाई धनसुखदास भैरोंदानजी श्रावक लिखते हैं कि, भाद्रपदमें यहां इस प्रकार तपस्या हुई उपवास ५३८, बेला ६२, तेला ४२, चोला १७, पंचोला ११, तथा श्रीयुत झामीरामजीकी बाई बृद्धीजीने दसलक्षणके दिनोंमें १० दिन पर्यन्त और उनकी पत्नीने

जीने आहार जलादिका त्याग करके धर्म सेवन किया इसके अतिरिक्त दो स्त्रियोंने ८ दिन तक आहारका त्याग किया। इन दिनोंमें तेरह द्वीपका मडल माडा था इनसे अधिक आनंद रहा देवाधिदेवकी कृपासे यहांपर प्रतिदिन धर्मकी उन्नति होती जाती है।

अम्बहटा (सहारनपुर)–भाई मनसबरायजी लिखते है कि, यहा अनुमान एक वर्षसे कन्याशाला जारी है, २४, २५ कन्याए पढती हैं, भादों सुदी १३ को परीक्षा ली गई, परिणाम अच्छा रहा। पचायतीकी ओरसे पुस्तकें स्याही, कलम, और मिठाई वितरण की गई अपूर्व आनन्द रहा। आशा है कि, शालाका काम निर्विघ्नतासे चलता रहा तो स्वल्प कालमें ही कन्याए खूब होशयार हो जावेगी।

सकोट (एटा)–भाई बनारसीदासजी विद्यार्थी लिखते हैं कि, भादों बदी १४ से सुदी २ तक समोसरन पाठ अत्यानन्दके साथ हुआ दो सभाए भी हुई। कई भाइयोंने शास्त्र श्रवण करने तथा स्वाध्याय करनेके नियम लिये। तथा धर्म, बुद्धि और बलको नष्ट करनेवाला विदेशी शक्करका त्याग वदन किया गया।

बडवाहा–भाई भीकमा स्वड्डसाजी लिखते हैं यहांके भाई बडे धर्मात्मा हैं श्री सम्मेद शिखरजीके बारेमें ५०१) चन्दा किया है। यहा दो बरससे जैन पाठशाला थी परन्तु अब बन्द हो गई है। आशा है कि, धर्मस्नेही जैनी भाई पुन उद्योग करेंगे।

ईडर—से माणिकभाईजी लिखते हैं कि, यहा दशलक्षणी पर्व भले प्रकार हुआ अहमदाबाद बोर्डिंग स्कूलके मास्टर माणिकलालजीके शुभागमनसे धर्मकी प्रभावना अच्छी रीतिसे हुइ। कई भाइयोंने रात्रिभोजन और अष्टमी चतुर्दशीके दिन हरित त्याग करनेका नियम लिया। भादवा सुदी चतुर्दशीके दिन तक पूजन होता था, सो अब कार्तिक शुक्ला पूर्णमा तक होनेका प्रबध तीनों दिगम्बरीय मंदिरोंमे हुआ।

आलन्द—हीराचदजी कोठारी लिखते है कि, यहा पर श्रीमती केशरबाईने जो मासोपवास करनेका प्रण किया था सो अर्हत कृपासे निर्विघ्न समाप्त हुआ। भाद्रपद शुक्ला पचमीसे चतुर्दशी तक बडी धूम धाम हुआ करती थी पचमेरु और अनन्त चौदसका पूजन बहुतही आनन्दके साथ हुआ तत्त्वार्थका अर्थ प्रतिदिन एक अध्यायका हुआ करता था। अद्याय १, २, ३ ४, ५, ९ का दादा बाबगोंडा शास्त्रीजीने, अध्याय छटवें का हीराचन्द सखाराम कोठारीजीने, अध्याय सातवेंका माणिकचन्द मोतीचदजीने और अध्याय आठवेंका अर्थ रावजी सखारामजी दोसी शोलापुरने किया। भाद्रपद शुक्ला तृयादशीको रावजी नानचदजी शोलापुरके अध्यक्षत्वमे सभा हुई सभा स्थापित होनेका कारण बतलाया गया। नियमोंके फार्म वितरण किये गये। अध्यक्ष महोदयने लाइफ मेम्बर होना और माणिकचद मोतीचन्दजीने सभाके सहायतार्थ १०१) रु देना स्वीकार किया। इसके सिवाय और कई महाशयोंने भी सभासद और लाइफ मेम्बर होना स्वीकार किया है। जलयात्राके समारोहके समय बाहर गावकी मडलीके भी अनुमान १०० भाई उपस्थित थे

जापानमें ४–५ गांवमें एक और हिन्दुस्थानमें ५–५ गांव पीछे एक पाठशाला है। जापानमें प्रति सैकडा ९८ लडके और ६५ लडकियां पाठशालाको जाती हैं परन्तु भारतवर्षमें यह सख्या १९, और २ है। जापानमें लौकिक शिक्षाके लिये प्रतिवर्ष ७८५२५००० और हिन्दुस्थानमें ३०३००००० रुपया व्यय किये जाते हैं।

ग्वाटीमालामें एक प्रकारकी मक्खियां हैं जिनको चार चार आखें होती हैं वे दो आखोंका उपयोग पानीके पदार्थ देखनेमे करती हैं और दोसे पृथ्वीतलके पदार्थ देखती हैं।

श्यामनरेसकी सतान सख्या १०० है

फ्रांसकी नाटक मडलियां अपनी प्राप्तिका दशमांश द्रव्य धर्मार्थ देती हैं वह रकम प्रतिवर्ष ३००००० पौड होती है।

रा० रा० बालगगाधर तिलक और गोखले आदि सज्जनोंने पूनामें मद्यपान निषेधक मंडळी स्थापित की है।

हमारा भाग्योदय

(मानोत जिल्लापर्वणी)

हर्ष है कि यहांपर श्री श्री श्री ११८ श्रीयुत गृहत्यागी जिनसेवी पार्श्वसागरजी ब्रह्मचारीका शुभागमन हुआ। आषाढ शुक्ल अष्टमीको आपके चातुर्मासकी यथाविधिस्थापना की गई। आपके उपदेशके प्रारभमें मनुष्य भवकी दुर्लभता श्रवण कर सर्व भाइयोने चार महीना शास्त्र सुननेका नियम लिया उपदेशके क्रममें ज्ञानार्णव धर्मपरीक्षा ग्रथ रक्खे गये। थोडेही दिनोंमे धर्मपरीक्षा पूर्ण होनेके समय अनेक भाइयोंने वा स्त्री समूहने अनेक व्रत नियम लिये।

भाद्रपदमे प्रात कालके ६ बजेसे ९ बजेतक पूजनानतर षोडसकारण भावनाका व्याख्यान और स्वामिकार्तिकेयानुप्रेक्षाका उपदेशादि महीना पर्यंत होता रहा। भा० व० १ को प्रथम दर्शनविशुद्धि भावनाके व्याख्यानसे हम सब लोग जो श्रावक कहलाते थे और चडी मुडीआदि कुदेवोंकी घरमें स्थापना करके पूजते थे सो उसही दिनसे सम्पूर्ण मडलीने कुदेवोंका तो तर्पण ही कर दिया। इसी प्रकार ३ री भावना (शीलव्रतेस्वनतिचार) के व्याख्यानसे बहुतसे भाइयोंने १ महीनेका स्वस्त्री त्याग भी किया और इस जाति (जैसवाल वा सैतवाल) मे जो "पुनर्विवाह" होता था उसका भी कई भाइयोंने त्याग किया–और ४ थी भावना (अभीक्ष्णज्ञानोपयोग) के व्याख्यानसे भी (गनोबा, बाळारामजी, यादवजी, लहानापा माणिकचदजी पडेकर, भाऊराव, दगडूरामजी, वर्धमानजी, बाळाराम परभणकर, दाजीबाबोगार इत्यादि) कई भाइयोंने आजन्मपर्यंत स्वाध्यायका नियम लिया महीने भरके व्याख्यानानुसार समस्त भाइयोंने और भी व्रत नियम लिये जो लेख बढ जानेके भयसे नहीं लिखे गये और रात्रिको पूजनका प्रचार था सो भी बद किया गया। अतमें क्षमावनीके दिन दिग्पालादि देवताओंके निमित्त बलिदान कुष्माडफल (काटकर और सिंदूर डालकर जीवदानका सकल्प करके) का बलिदान किया जाता था सो भी बंद किया गया हाय! नमालूम किस दुरात्माने अहिंसा धर्मपर कालिमा लगाई. अश्विन कृष्ण १ को रथ यात्राका समारम्भ बडे समारोहके साथ राजमार्ग होकर गीत नृत्य वादित्रादि परजन पुरजन सब लोग जयजयकार सहित श्रीमद्देवाधिदेवको जिनागारमें सिंहासनारूढ किये गये। अन्तमें बडे आनदके साथ आरती उत्तारनकर हर्षके साथ सभा विसर्जन हुई हर्ष है कि, "कुन्डलीक आपा" लाड (एक आसिका मिथ्यात्वी) जो कि, महान् मिथ्यात्वीथा उसने समस्त मिथ्याधर्म छोडकर जिनधर्मको अगीकार किया और रोहणी व्रतभी ग्रहण किया रात्रि भोजन, कंदमूल, अनछनाजल, आदिकात्याग किया, और जिनदर्शनादिका नियम लिया–धन्य है।

निवेदक

संतोषावहावोंडे जैन

सावधान।

सुना है कि, मालवाप्रान्तकी तरफ राजमल नामका कोई उपदेशक पर्यटन करता है. और अपनेको पण्डित लक्ष्मीचन्दजी लश्करका शिष्य बतलाता है, उक्त पण्डितजीके पूछनेसे मालूम हुवा कि उनका कोई शिष्य उपदेशकी नहीं करता है, एक राजमल नामका किंचित् पढाया हुवा व्यक्ति है. जो खण्डेलवाल है और झालरापाटनमें रहता है। अतएव जैनी भाइयोंको सूचना दी जाती है कि, राजमल उपदेशकका विश्वास करके कोई उन्हें शिखरजी आदिका चन्दा न दें, किंतु जो चन्दा करें वह यहा भज देवें–दिगम्बर जैन महासभा और बम्बई वा मालवा प्रान्तिकसभाकी ओरसे कोई राजमलजी उपदेशक नियत नहीं है।

माणिकचन्द हीराचन्द, जे. पी

महामंत्री तीर्थक्षेत्र कमैटी

जाहिरात।

होनहार ग्राहकगण.

जैनमित्रका ८ वा वर्ष पूर्ण होगया सो २ महाशय नवीन ग्राहक बनना चाहते हों वे कृपाकर अपना नाम धाम पूरा पत्ता लिखकर भेजनेकी कृपा करें अथवा वी. पी. भेजनेकी आज्ञा भेजें. वर्षके आरंभसे ग्राहक हो जानेसे हिसाब किताबमें अच्छा सुभीता रहता है. चिट्ठीमें नये ग्राहक यह शब्द अवश्य लिख देना.

मेनेजर.

ताकतकी दवा च्यवनप्राश।

दुर्बलता और कृशताको दूर करने और शरीरमें बलका सञ्चार एवं शरीरको हृष्ट पुष्ट करनेमें महर्षिसेवित च्यवनप्राशकी भांति दूसरी औषधि ईजाद नहीं हुई यह महात्मा चरकने लिखा है—

यह प्रत्यक्ष फलप्रद है।

महौषधि भले चंगे और बीमार शरीरमें सेवनीय है, इसके सेवन करनेसे खांसी, यक्ष्मा, बिगड़ा, हुआ जुकाम, ज्वर भंग और अनेक प्रकारके वीर्यगत रोग आराम होते हैं।

नियमसे कुछ दिन "च्यवन प्राश" सेवन करनेसे क्षुधावृद्धि, देहपुष्टि और इन्द्रिय सामर्थ्य जमती है। जवानीके अत्याचारोंके कारण जिनका स्वास्थ्यभंग धातु क्षीण और शरीर जीर्ण शीर्ण हो गया है उनके हकमें च्यवनप्राश अमोघ महौषधि है। वह प्रथम दर्जेकी स्तम्भक, धातुपौष्टिक एवं कामोद्दीपक है।

दिमाग अर्थात् भेजेकी निर्ब्बलताको जो अधिक विषय भोग, शराब आदि पीने और जियादह पढने पढानेकी मेहनत तथा विकालत आदि दिमागी काम करनेसे हो जाती है इसके सेवनसे रफे हो जाती है और बच्चे इसको खाकर मेधावी और हृष्टपुष्ट होते हैं। यह खानेमें स्वादिष्ट है और इसका गुण चिरस्थायी है।

आयुर्वेद—शास्त्रमें कहा गया है कि, पूर्वकालमें इस महौषधिका सेवन कर वृद्ध च्यवन ऋषि जवान हो गये थे जिन लोगोंने काडलीवरआयल वगैरा विलायती धर्म्मनाशक, घृणित दवाओंके सेवनसे कुछ लाभ नहीं पाया हो वे लोग इस प्रत्यक्ष फलदाता विशुद्ध च्यवनप्राशको एकबार सेवन कर इसकी उपकारिता शक्ति देखैं। एक पाव च्यवनप्रकाशका मूल्य २) रु० और एक सेर इकट्ठा लेनेसे ६) रु०।

अनेकप्रकारकी गुण दायक औषधियोंका सूची पत्र अवश्य मंगा कर देखिये

मिलनेका पता—वैद्यवर पं० सूर्य्यप्रसाद शर्म्मा आयुर्वेदमार्तंड (आ० यु० के सम्य, मेरठ सिटी.

५) रुपये का माल ३) रुपये में

गौरीनागरी कोष

५५० पृष्ठ लगभग पांच हजार शब्द।

जिसकी पांच वर्षसे धूम पड़रही थी वह अब छप कर तयार हो गया. यह कोष बड़े बड़े विद्वानोंकी मण्डली द्वारा ५ वर्षके निरन्तर उद्योगसे तैयार हुआ है ऐसा उत्तम कोष आजतक नहीं बना और न आगेको आशा है। यह बी० ए० पास मास्टर है. ३) रुपया में उम्र भरके लिये नौकर होता है। हिन्दी, उर्दू, प्राकृत, संस्कृत, अरबी, फारसी, इत्यादि शब्दों के मायने पूछोगे, तो पहले हिंदी में बतावेगा फिर अंगरेजीमें समझावेगा। वकील, मुख्तार, पण्डित, मास्टर, ग्रन्थकार, लेखक आदि सबका सहायक है। हिन्दीहितैषी भूतपूर्व छोटे लाट मेकडानल बहादुर तथा रीवानरेश और टेक्स्ट बुक कमेटी पंजाबने भी इसको पसन्द किया है और बहुतसे स्कूलके इन्स्पेक्टर एवं मास्टरोंने इसे खरीदा है। ट्रान्सलेशन (हिन्दीसे अंग्रेजी और अंग्रेजीसे हिन्दी) करनेवालेके बडे कामका है। अतएव स्कूलके विद्यार्थी हिन्दी अंग्रेजीमें योग्यता प्राप्त करनेके अभिलाषी एवं अध्यापक (मास्टर) इसे खरीदने से न चूकें।

सौदामिनी! सौदामिनी!! सौदामिनी!!!

नवन्यास! उपन्यास!! हरान्यास!!!

'भारतेन्दु' के भूतपूर्वसम्पादक श्री राधाचरण गोस्वामी (वि० वा० म्यू० क० औ० मै०) की ललित लेखनीसे लिखित प्रेम की छटा। रस की छटा!! ११ अंकों में बटा!!

अभी बंड आवताव और हावभाव से छपा है. जिस पर लक्ष्मीकी कृपा है, उसीमें =) दाम)॥ डाक महसूल पाकर झगडा रफा और हिसाब सफा है, घड़ी भर दिल लगाना नफा है, क्या इससे कोई खफा है? पुस्तकें कम! बिक्रीका बाजार गर्म, सौदा नर्म। और इसके मर्मको रसिक लोगही जानते हैं। इसमें बीसवीं सदीका चित्र इनलाद्टैगीका चरित्र, सच्चा मित्र, सौदामिनीकी पवित्र प्रीति घनश्यामकी विचित्र रीति, प्रेमकी अकाट्य नीति, गुरुजनोंकी भयानक भीति, सबके सीत अपने २ अवसर पर दिखलाये गये हैं। उपन्यास क्या नाटक है, चेटक है तमाशा है। पूरा देखे विना जी नहीं मानता।

बालाबोधिनी—यदि गृहस्थको स्वर्गधाम बनाना चाहते हो और अपनी स्त्रियों तथा पुत्रवधुओं एवं पुत्रियों को उच्च कोटिकी की शिक्षा देना चाहते हो, तो इस पुस्तकको अवश्य खरीदो। इसमें नियमानुसार पुत्रीको नीतिशिक्षाका उपदेश किया गया है। मा, बाप, भाई, बहन, पड़ौस परोसन, सास, श्वशुर, ननद इत्यादि किसके साथ कैसे व्यवहार करना चाहिये और पतिकी कितनी सेवा शुश्रूषा करनेसे स्त्री सती, साध्वी और पतिव्रता कहला सकती है। पतिव्रता धर्मका अखण्ड पुण्य सञ्चय करके क्योंकर दोनों लोकका सुख भोग सकती है। मूल्य ।-)

नीचे लिखी पुस्तकोंकी सिर्फ दश २ के करीब प्रतियां बाकी है। अतएव विशेष शीघ्रतासे आर्डर भेजिये।

व्यंजनप्रकार मू० ≈)

प्राय मनुष्योंको भोजनके ही ठीक न बननेसे अनेक प्रकारके रोगोंमें फसकर कष्ट उठाना पड़ता है। इस पुस्तकमें इन्हीं परम आवश्यक बातोंका उल्लेख है। साधारण दालरोटीसे लेकर लड्डू जलेबी, इमरती, बालूशाही इत्यादि और सब प्रकारके नमकीन पदार्थ आदि २ कई प्रकारसे लिखे गये हैं पुस्तक विशेष लाभदायक सचित्र और खरीद कर देखने योग्य है

राजकुमार उपन्यास मू० ≈)

यह रोचक उपन्यास एक बंगालकी शिक्षित महिलाने लिखा है और रोचक एव खरीदनेके लायक है।

अशर्फियोंकी थैली सिर्फ ।) में देते हैं। अंग्रेजी सीखनेकी कल मू० -)॥

नागरी जाननेवाला खुद अंग्रेजी बोलना और समझना सीख जाता है।

नागरीके दफ्तर मू० ।-)

इसमें नागरीमें रहननामा बैनामा तमस्सुक आदि सब प्रकारके राजकीय व और व्यावहारिक कार्य लिखे हैं। पुस्तक प्रत्येक मनुष्यको अपने पास रखनी चाहिये।

सूचना—फीस मनीआर्डर खरीदारोंको जुदा देना होगा और पत्र भेजते समय जैनमित्रका हवाला अवश्य दो।

मिलनेका पता—

मैनेजर सारस्वत कम्पनी,

मेरठ सिटी.

शुरमा ! शुरमा !! शुरमा !!!

काला शुरमा नं १ यह शुरमा हमेशह नेत्रोंमें लगानेसे सब रोग वा आंखोंकी गर्मी नष्ट करके ज्योतिको बढाता है मूल्य आधे तोलेकी शीशी ॥)

काला शुरमा नं २ इस शुरमेको प्रात काल और सोते समय लगाते रहनेसे नेत्रोंके सब रोग शीघ्रही नष्ट हो जाते हैं. यह शुरमा बहुत बढिया और ठंडा है. इस शुरमेको भोपालपरमके तहसीलदार साहब मूलचंदजी परवार प्राय ८ वर्षसे लगाते हैं इन्होंने अपने अनेक हितैषी उहदेदारोंको इस शुरमेका भक्त बनाये है उनके प्रशसा पत्र हमारे पास है हम उन्हे न छपाकर इतना ही कहते हैं कि १ शीसी मंगाकर अवश्य ही आजमा लेवे। मूल्य आधे तोलेकी शीशीका १)

सफेद शुरमा नं ४ इस शुरमको सबेरे तथा सामको ४ बजे लगाकर ५ मिनिटके बाद नं २ का ठंडा शुरमा लगाया जावे तो धुंद, नजला, दृष्टिमन्दता, रतोंदा आदि नेत्रके समस्त रोग नष्ट हो जाते हैं। असली मधुसे (महदसे) सलाई भिजोकर अथवा शुरमेको मधुमें मिलाकर सलाईसे लगाया जावे तो एक वर्षतकका फूला भी प्राय कट जाता है परन्तु शहद असली न होगा और उसमें खांडकी चासनी वगेरह मिली होगी तो उल्टा नुकसान करेगा। मूल्य डेढ मासेकी शीशीका १)

*** तरल सुरमा (अर्क) नं ९ मूल्य ॥)** वृद्धा व विधवा स्त्रियों लिये है।, तथा दुखती आई हुई आंखोंके लिये तो यह रामबाण है तीन चार दिन तक दिनरातमें ४ बार लगानेसे दुखती आई हुई आंखोंको आराम कर देता है। एक २ शीसी सब गृहस्थोंको अपने घरमें रखना चाहिये।

पता—पन्नालाल जैन मुम्बई. नं ४,

भाषापूजासंग्रह।

इस ग्रन्थमें पहले संस्कृत भाषा नित्यनियमपूजाके (जो अलग भी पांच आनेमें मिलती है) सिवाय भाषा देवपूजा, सरस्वती पूजा, गुरुपूजा, अकृत्रिम चैत्यालयोंकी पूजा, सिद्धचक्रपूजा, पञ्चमेरुपूजा, नंदीश्वरपूजा, सोलहकारणपूजा दशलक्षणधर्मपूजा, रत्नत्रयपूजा, निर्वाणक्षेत्रपूजा, वृन्दावनकृत समुच्चयपूजा, रामचन्द्रकृत समुच्चयपूजा, चन्द्रप्रभ पूजा, शांतिजिनपूजा, पार्श्वनाथपूजा, और महावीरपूजाका संग्रह है। इसके सिवाय एक अपूर्व ग्रन्थ जिसका किसीने कभी नाम न सुना होगा, इसके साथ लगाया है। यह ग्रन्थ कविवर हरिचन्द्रकृत पंचकल्याणमहामहोत्सव है। नानाप्रकारके छंदोंमें यमक और अनुप्रास मिलाकर भगवानके पांचों कल्याणकका इसमें बडी उत्तमतासे वर्णन किया है। यमक मिलानेमें इन्होंने कविवर वृन्दावनजीका भी नम्बर ले लिया है। इस पुस्तकमें प्रत्येक मंत्र आह्वानन स्थापनादि तथा आचली टेक आदि सब जगह शुद्धता पूर्वक लिखी गई है। अष्टकोंमें जल सुगंध आदि प्रत्येक पदमें सब जगह आचली लगाई गई है, जिसमें पत्र लौटनेका वारवार कष्ट न उठाना पडे। पोथी साइजमें पुष्ट कागजोंपर बडे अक्षरोंमें ऐसी सुन्दरतासे यह ग्रन्थ तयार हुआ है कि, आप दर्शन करते ही प्रसन्न हो जावेंगे। मूल्य मात्र १) है। प्रत्येक मन्दिरमें यह पोथी रखनी चाहिये।

कविवृन्दावनकृतचौवीसीपाठ।

यह ग्रन्थ कई बार छपके बिक गया, परन्तु एक भी बार शुद्ध नहीं छपा। छपानेवालोंने इसकी अवश्यकता न रहते भी भाइयोंके उपकारके लिये तयार कराया है। शुद्धताके विषयमें इतनेहीसे समझ लीजिये कि, खास कविवर वृन्दावनजीके हाथकी लिखी हुई प्रथम पुस्तकपरसे जो हमें काशीमें उन्हींके भंडारसे प्राप्त हुई थी, इसे छपवाया है। कागज पुष्ट और छपाई निर्णयसागरकी है। इसमें भी प्रत्येक अष्टकमें जगह २ आंचली और प्रत्येक पदमें ॐ ह्रीं आदि शुद्ध मंत्र लगाये गये है, जिससे पूजा करनेवालोंको यथेष्ट फलकी प्राप्ति हो। ऐसा करनेसे यह ग्रन्थ पहले आकारसे बडा हो गया है। इसकी उत्तमताके सामने १) मूल्य कुछ चीज नहीं है। पोथी साइजमें यह भी बडा सुन्दरतासे छपा है।

* जैनपदसंग्रह प्रथमभाग।

कविवर दौलतरामजीके पदोंकी प्रशंसा करनेकी जरूरत नहीं है। सबही बाल गोपाल उनके भजनोंके प्यासे रहते हैं। उनके एक ही पदके पाठसे चित्त सब दुःख भूलकर आनन्दसागरमें गोते लगाने लगता है। प्रत्येक जैनीके घरमें यह पुस्तक रहना चाहिये पहलीबार **दौलतविलास**के नामसे हमने यह संग्रह छपवाया था, जो कि हाथोंहाथ उठ गया। अबकी बार छहढाला निकालकर जैनपदसंग्रहके नामसे निर्णयसागरके जगत्प्रसिद्ध सुंदर टाइपमें छपवाया है। मूल्य भी पहलेकी अपेक्षा कम अर्थात् सिर्फ छह आने रक्खा है। अबकी बार प्रत्येक कठिन शब्दपर टिप्पणी दी गई है और बहुतसे नवीनपद भी संग्रह किये हैं।

तत्त्वार्थसूत्रकी बालबोधिनी भाषाटीका।

तत्त्वार्थसूत्र हम लोगोंका परम पूज्य और मान्य ग्रन्थ है। इसे प्रत्येक जैनी पढना पढाना अपना परम धर्म समझते है। इसके एकबारके पाठ मात्रसे एक उपवासका फल होता है। यह ग्रन्थ जैसा उपयोगी है और जैनधर्मके पदार्थोंका अटूट समुद्र जिस प्रकार इसमें भरकर गागरमें सागरकी कहावत सिद्ध की गई है, उसके कहनेकी जरूरत नहीं है। इसकी प्रशंसा प्रगट करनेके लिये इस ग्रंथपर जो अनेक टीकायें बनाई गई हैं, वे बस हैं। परन्तु खेद है कि अभीतक इसकी कोई ऐसी टीका छपकर प्रकाशित नहीं हुई, जो पढनेवाले विद्यार्थियोंकी समझमें सहजमें ही आ सके। अभीतक, जो टीकायें छपी हैं, वे विशेष ज्ञानियोंके समझने योग्य हैं, बालकोंके लिये जिस क्रमसे होनी चाहिये, उस क्रमसे नहीं हैं। इस अभावकी पूर्तिके लिये हमने यह भाषाटीका तयार की है। यह टीका दशलक्षणोंके दश दिनमें बांचनेके लिये भी बडे कामकी है। साधारण भाई भी इससे सूत्रोंका अर्थ बांचकर समझ सकते हैं। रत्नकरंडके समान इसमें भी पद पदका अर्थ किया गया है। और विशेष बातें भावार्थ तथा टीकामें लिखी गयी हैं। इसको एक बार पढ लेनेसे फिर सर्वार्थसिद्धि आदि बडी टीकाओंके पढनेमें गति हो जावेगी। यह टीका विद्यार्थियोंके बडे ही कामकी है। इसे विना गुरुके पढकर विद्यार्थी बडी सुगमतासे परीक्षा दे सकता है। जहांतक बना है, प्रत्येक पदार्थके लक्षण व स्वरूप इसमें संक्षेपतासे लिखे गये हैं। मूल्य मात्र १२ आने रक्खा गया है। पाठशालाओंके प्रबंधकर्ताओंको नमूनेके लिये इसकी एक एक प्रति जरूर मगानी चाहिये।

* भक्तामरस्तोत्र।

अन्वय, हिन्दी अर्थ भावार्थ और कविवर भाई नाथूराम प्रेमी कृत नवीन भाषा पद्यानुवाद सहित।

इसमें रत्नकरंडके समान पहिले प्रत्येक श्लोकका अन्वयानुगत पदार्थ लिखकर फिर प्रत्येकका भावार्थ लिखा है। पश्चात् हरिगीतिका और नरेन्द्र छन्दमें उसकी सुन्दर कविता बनाई गई है, जिसमें मूलका कोई भी भाग नहीं छोडा है। टिप्पणीमें अनेक प्रतियोंसे इकट्ठे करके पाठान्तर और कठिन शब्दोंके अर्थ दिये हैं। श्रीमानतुंग महाराजका चरित्र भी दिया गया है। अभी तक ऐसी कोई भी टीका नहीं छपी। पाठशालाओंके विद्यार्थियोंके लिये यह बडे कामकी चीज है। मूल्य मात्र ।) रक्खा है।

जैनबालबोधक द्वितीयभाग।

दिवाली तक कमती मूल्य सिर्फ छह आना।

जिसकी लोगोंको वर्षोंसे चाह थी। जैनपाठशालाओंके अध्यापकोंने जिसके विषयमें लिख लिखकर हमको तंग कर डाला, वह जैनबालबोधकका दूसरा भाग तैयार हो गया। इसमें श्रीभट्टाकलंक, समन्तभद्र, गौतमगणधर, राजा श्रेणिकादि बडे २ पुरुषोंके चरित्र, सम्यग्दर्शनादि तत्त्व विषय, दिवाली होलीकी तथा नीतिकी कथा आदिके उत्तम २ पाठ दिये गये हैं। प्रत्येक जैनी बालकको तो यह पुस्तक पढाना ही चाहिये, किन्तु प्रौढ पुरुषोंको भी इसके पढनेसे लाभ होगा। निर्णयसागरकी सुन्दर छपाई देखने योग्य है।

भूधरजैनशतक।

सबके कंठ करने योग्य अतिशय सरल और हृदयद्रावक कविता भूधरशतक सरीखी दूसरी नहीं है। यह भूधरदासजीकी सम्पूर्ण कविताका चुना हुआ एक सार है। इतने सस्ते मूल्यमें यह कभी नहीं बिका। निर्णयसागरमें टिप्पणी सहित छपा है। मंगानेमें शीघ्रता कीजिये। मूल्य ढाई आने।

अलंकार चिन्तामणि।

अभी तक यह ग्रन्थ सर्वथा लुप्त था। शोलापुरके शठ सखारामजीने इसका जीर्णोद्धार कराया है। जैनियोंका यह सबसे पहला अलंकारका ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। जैन साहित्यसागर कितना विस्तीर्ण है, यह इस ग्रन्थके देखे विना नहीं जाना जा सकता। सैकडों अश्रुतपूर्व प्राचीन ग्रन्थोंके इसमें उदाहरण दिये हैं। संस्कृत साहित्य प्रेमियोंको यह ग्रन्थ अवश्य देखना चाहिये। मूल्य ॥।)

और भी

बम्बई, कोल्हापुर, तंजौर आदि स्थानोंकी छपी हुई सब प्रकारकी जैन पुस्तकें हमारे यहां मिलती हैं। सूचीपत्र मगाइये।

बडे साइजके कार्ड।

मोटे दुरंगे—सवा रुपया हजार। एक रंगके इकहरे एक रुपया हजार डाक खर्च जुदा। फुटकर लेनेवालोंको अढाई आना और दो आना सैकडा। थोडे कार्ड मंगानेवालोंको टिकट मय डाकखर्चके पहले ही भेज देना चाहिये। पोष्टेज अनुमान बारह आना हजार लगता है।

पन्नालाल जैन—गिरगांव—बम्बई।

“कर्नाटक” प्रेस बम्बई।